तन्त्र ग्रन्थमाला नं० ६

हिन्दी मन्त्रमहार्णव

(देवी खण्ड)

सम्पादक-अनुवादक

राम कुमार राय

प्राच्य प्रकाशन

जगतगंज, वाराणसी-२२१००२

नवीन संस्करण २०००

प्रकाशक :

प्राच्य प्रकाशन

लमही, (पोस्ट - वाया सारनाथ)

वाराणसी - २२१००७ (भारत)

© प्रेमचन्द महताब राय शोध संस्थान

लमही, (पोस्ट - वाया सारनाथ)

वाराणसी-२२१००७ (भारत)

मूल्य ४००/- रुपये

कम्प्यूटर कम्पोजिंग एवं यंत्र चित्रावली का रेखांकन

संजय कुमार राय द्वारा आर. के. कम्प्यूटर्स, मलदहिया, वाराणसी

मुद्रक :

अनूप प्रिन्टिंग वर्क्स, लमही, (पोस्ट – वाया सारनाथ), वाराणसी – ७

Tantra Granthamala No. 6

Hindi Mantra Maharnava

(Devi Khand)

Text with Hindi Translation by

Ram kumar Rai

प्राच्य प्रकाशन

PUJAN BHANDAR
18, Sri Ram Road, LUCKNOW.
☎ 230044

PRACHYA PRAKASHAN
Varanasi - 221002

निष्प्रभावी बनाना, इत्यादि अनेक अलौकिक प्रतीत होने वाले कार्य इस मन्त्रशास्त्र द्वारा ही सम्भव होते थे। आज भी यदि साधना द्वारा इस शास्त्र को सिद्ध कर लिया जाय तो कुछ भी असम्भव नहीं है। परन्तु अब न तो किसी में इतना धैर्य है और न इस शास्त्र की विधियाँ ही कहीं एकत्र सुलभ हैं। मन्त्रमहोदधि (नौका टीका युक्त) के प्रकाशन से इस कमी को बहुत अंशों तक दूर किया गया है, किन्तु उसमें संग्रहीत मन्त्रों का क्षेत्र अपेक्षाकृत सीमित होने से एक और अधिक विस्तृत संग्रह की आवश्यकता का सदैव अनुभव किया जा रहा था।

प्रस्तुत 'मन्त्र महार्णव'में इस कमी को पूरा करने का प्रयास किया गया है। जैसा इसका नाम है वैसे ही इसका गुण है। इसमें सभी प्रमुख देवताओं, दैत्यों, यक्षों, गन्धर्वों, किन्नरों, योगिनियों, अप्सराओं, देवकन्याओं, नागकन्याओं, राक्षसों और प्रेतादिकों से सम्बद्ध मन्त्र तथा उनके अनुष्ठान के सम्पूर्ण विधान को विधिवत और क्रमानुसार प्रस्तुत किया गया है। इनके अतिरिक्तभारत की प्राचीन रसायन क्रिया, इन्द्रजाल कल्पादि, स्वप्नसिद्धि, कर्णपिशाचिनी, पुत्रोत्पत्ति और अन्यान्य काम्यकर्मों से सम्बद्ध यथाशक्ति सम्पूर्ण विधियों और तत्सम्बन्धी सामग्री को प्रस्तुत किया गया है। इसमें ऐसी सुगम रीतियाँ बताई गई हैं जिनसे अल्पज्ञ भी सरलता से अनुष्ठान करते हुये अपने इष्ट को सिद्ध कर सकते हैं क्योंकि इष्टदेवता का मन्त्रोद्धार, देवासन, प्राणप्रतिष्ठा, आवरण पूजा, षोडशोपचार पूजन, स्तोत्र, कवच हृदय, सहस्रनाम आदि सम्पूर्ण पञ्चाङ्ग एक ही स्थान पर विधिवत और क्रमानुसार प्रस्तुत किया गया है।

अन्यान्य स्थानों पर हमने पुराने और दूषित पाठों को संशोधित करके प्रस्तुत किया है। अनेक नवीन सामग्री भी इसमें जोड दी गई है जिससे पूर्वकाल में प्रकाशित मूलमन्त्रमहार्णव की अपेक्षा प्रस्तुत संस्करण अधिक विश्वसनीय उपयोगी, और अनेक मौलिकताओं, से युक्त है।

मन्त्रशास्त्र की गोपनीयता को सुरक्षित रखने तथा अनधिकारियों के हाथ में न पड़ने देने की दृष्टि से मन्त्रों तथा अनुष्ठान-विधियों को संस्कृत में प्रच्छन्न रूप से कूट भाषा में व्यक्तकिया जाता है। इसी कारण, कुछ लोग मन्त्रशास्त्र के ग्रन्थों को अनुवाद सहित प्रस्तुत करने का विरोध करते हैं। परन्तु आज के वैज्ञानिक युग में इस शास्त्र की प्रामाणिकता को सिद्ध करने तथा इसके प्रति आस्था को पुन: प्रतिष्ठित करने के लिए इसे सर्वसुलभ बनाना आवश्यक है जिससे मन्त्र सिद्धि के परिणामस्वरुप तज्जनित फलों की पुष्टि हो सके। इसी उद्देश्य से हमने हिन्दी अनुवाद सहित ग्रन्थ को प्रस्तुत करने का निश्चय किया है जिससे यह सर्वोपयोगी हो सके। अनधिकार चेष्टा से बचाने के लिए शास्त्र को ही लुप्त कर देना उचित नहीं है। फिर, स्वयं इस शास्त्र में ही लिखा है कि अनावश्यक और अनाधिकारिक प्रयोग का परिणाम स्वयं ऐसे साधक के लिए घातक होता है। अत: मेरा विचार है कि इस प्राचीन विज्ञान को गुप्त रखने की अपेक्षा सुलभ बनाकर इसके व्यापक प्रयोग से इसकी प्रभावोत्पादकता की पुष्टि कर देने से इसकी प्राचीन मर्यादा की पुन: प्रतिष्ठा और सर्वसाधारण की इसमें आस्थावृद्धि होगी। आज जो सर्वत्र यह धारणा बन गई है कि मन्त्र-तन्त्र सब मिथ्या हैं, इसका भी प्रतिकार होगा।

इन्हीं उद्देश्यों से मैंने मन्त्र महार्णव को हिन्दी अनुवाद सहित प्रस्तुत करने का निश्चय किया है। फिर भी, यह एक अत्यन्त गूढ विषय है और अनेक परम्पराओं तथा ग्रन्थों के लुप्त हो जाने से अनुवाद की कठिनाई और अपनी अल्पज्ञता को देखते हुए मैं यह नहीं कह सकता कि इस कार्य में मुझे कहाँ तक सफलता मिली है। यदि किसी भी पाठक को कहीं कोई त्रुटि प्रतीत हो तो उनसे निवेदन है कि वे उससे मुझे अवगत कराने की कृपा करें जिससे भावी संस्करणों में मैं उनका निवारण करके ग्रन्थ को और अधिक प्रभावी बना सकूं।

राम कुमार राय

विषय-सूची

प्रथम तरङ्ग : गायत्रीतन्त्र १-६०

ब्रह्मगायत्री पुरश्चरण विधान १। गायत्री के वर्णों के ऋषि, छन्द, देवता आदि ३। गायत्री शापविमोचन ६। गायत्री पुरश्चरण के प्रयोग ७। होमप्रकार १४। कार्यपरक प्रयोग १६। परमहंस गायत्री २०। ब्रह्मगायत्री २०। सरस्वती गायत्री २१। विष्णु गायत्री २१। लक्ष्मी गायत्री २१। नारायण गायत्री २१। श्रीरामगायत्री २१। जानकीगायत्री २२। लक्ष्मणगायत्री २२। हनुमद्गायत्री २२। गरुड गायत्री ३२। श्रीकृष्णगायत्री २३। गोपालगायत्री २३। राधिकागायत्री २३। परशुरामगायत्री २३। नृसिंहगायत्री २३। हयग्रीवगायत्री २४। शिवगायत्री २४। रुद्रगायत्री २४। दक्षिणामूर्तिगायत्री २४। गौरीगायत्री २४। गणेशगायत्री २५। षण्मुखगायत्री २५। नन्दीगायत्री २५। सूर्यगायत्री २५। चन्द्रगायत्री २५। भौमगायत्री २५। पृथिवीगायत्री २६। अग्निगायत्री २६। जलगायत्री २६। आकाशगायत्री २६। पवन (वायु) गायत्री २६। इन्द्रगायत्री २७। कामगायत्री २७। गुरुगायत्री २७। तुलसीगायत्री २७। देवीगायत्री २७। शक्तिगायत्री २८। दुर्गागायत्री २८। जयदुर्गागायत्री २८। अन्नपूर्णागायत्री २८। कालीगायत्री २८। तारागायत्री २८। षोडशी (त्रिपुर सुन्दरी) गायत्री २९। भुवनेश्वरीगायत्रीमन्त्र २९। भैरवीगायत्री २९। छिन्नमस्तागायत्री २९। धूमावती गायत्री २९। बगलामुखी गायत्री ३०। मातङ्गीगायत्री ३०। महिषमर्दिनीगायत्री ३०। त्वरितागायत्री ३०। गायत्री कवच ३०। गायत्रीपञ्जरस्तोत्र ३६। गायत्रीस्तवराज ४३। गायत्री सहस्रनाम ४५। गायत्रीतत्त्व ५७। गायत्र्युपरिषद् ५८। गायत्रीचक्रम ५८।

द्वितीय तरङ्ग : दुर्गातन्त्र ६१-२८४

दुर्गानाम–प्राप्ति ६२। दुर्गापटल ६२। दुर्गाभुवनवर्णन ६४। दुर्गाष्टाक्षर मन्त्रप्रयोग ६७। चण्डिकामालामन्त्रप्रयोग ७२। नवार्णमन्त्रप्रयोग ७४। कार्यपरत्वेन नवार्णैदुर्गापाठे वा पल्लवनिर्णय ८१। कार्यपरत्वनवार्णस्वरुप ८२। षट्प्रयोग : मारण ८४; मोहन ८८; उच्चाटन ९२। वशीकरण ९५। स्तम्भन ९९, विद्वेषण १०२। नवार्णमहामन्त्रस्वरूप १०६। दुर्गास्मृतामन्त्रप्रयोग १०७। शूलिनीदुर्गामन्त्रविधान १०७। दुर्गासप्तशती प्रयोग : चरित्रत्रय रहस्यत्रय निर्णय १११। दुर्गापाठक्रम १११। सप्तशतीपाठेङ्गषट्कस्यमुख्यतामपठने दोष ११२। सप्तशतीपाठ में कवच, अर्गला और कीलक की आवश्यकता ११२। कामनापरत्व से चण्डीपाठसंख्या ११४। सप्तशती का शापोद्धार और उत्कीलन ११६। सप्तशतीस्तोत्रान्तर्गतमन्त्रों के लिये कामनापरत्व से सम्पुट निर्णय ११६। कार्यपरक

सप्तशतीश्लोकान्तर्गत प्रति श्लोक के पाठ–प्रयोग का फल १२३। दुर्गापाठ के नव नाम और उनके लक्षण १२५। नवदुर्गाविधान १२६। नित्यचण्डीविधान १२७। शीघ्रकार्यसिद्ध्यर्थ प्रत्यहं नवचण्डीविधान १२८। नवरात्र में वार्षिक नवचण्डीविधान १२६। शतचण्डीसहस्रचण्डी आदि का विधान और माहात्म्य १३४। दुर्गापूजा पद्धति : माहात्म्य १४१। दुर्गापूजाप्रयोग १५६। दुर्गामखोत्सव १७६। दुर्गा सप्तशती : देवी कवच १८६; अर्गलास्तोत्र १६३ कीलक स्तोत्र १६६; तनत्रोक्तरात्रिसूक्त १६८; श्रीदेव्यथर्वशीर्षम् १६६; दुर्गाशापीद्धार २०४; दुर्गासप्तशती २०५; तन्त्रोक्त देवी सूक्तम् २५८; सप्तशतीरहस्यत्रय २५६ : प्राधानिक रहस्य २५६, वैकृतिक रहस्य २६२, मूर्ति रहस्य २६५; क्षमा याचना २६८; दुर्गाष्टाक्षरी कवच २६८; ब्रह्माण्डमोहनाख्य दुर्गाकवच २७०; दुर्गाकवच (कुब्जिकातन्त्रे) २७०; दुर्गाष्टाक्षरी सहस्रनाम (देवी रहस्यतन्त्रे) २७१; दुर्गाष्टाक्षरीस्तोत्र (देवी रहस्यतन्त्रे) २७५; दुर्गास्तव (हरिवंशे) २७६; दुर्गास्तोत्र (ब्रह्मवैवर्तान्तर्गत प्रकृतिखण्डोक्त) २७७; परशुरामकृत दुर्गास्तोत्र २७८; दुर्गाष्टात्तरशतनामात्मकस्तोत्र २८०, रुद्रचण्डीपाठ २८२।

तृतीय तरङ्ग : दश महाविद्या पद्धति २८५-३४२

दशमहाविद्याओं के नाम २८५। पुरश्चरण से पूर्वकृत्य २८५। प्रातः कृत्य : शौचक्रिया २८८। गृहस्नान प्रयोग २८८। भस्मत्रिपुण्ड्रप्रकार २८६। द्वारपूजा प्रकार २६०। क्षेत्रकीलन २६०। पुरश्चरण विधान २६१। पीठपूजन २६५। पात्रासादन २६६। शङ्खस्थापन २६७। कलशस्थापन २६८। साम्बकलशस्थापन ३०२। घण्टास्थापन ३०२। अखण्ड दीपस्थापन ३०३। प्राणप्रतिष्ठा प्रयोग ३०३। मानसोपचार पूजा ३०४। पाद्यादिपूजन ३०६। माला के संस्कार ३१४। नित्य बलिदान प्रयोग ३१६। छागादिबलिदानप्रयोग ३१६। कुमारीसुवासिनीपूजाप्रयोग ३१६। नित्यहोमप्रकार ३२३। कुलाचार ३२३। शिवाबलिप्रकार ३२८। कुलनायिका ३३२। शक्तिशोधन ३३६। लिङ्गपूजन ३३८। अष्टशक्तिपूजन ३४१। कुलस्तोत्र ३४१।

चतुर्थ तरङ्ग : कालीतन्त्र ३४३-३७८

द्वाविंशत्यक्षरदक्षिणकालीमन्त्रप्रयोग ३४३। दक्षिणकालीमन्त्रभेद ३४८। भद्रकालीमन्त्रप्रयोग ३४६। श्मशानकालीमन्त्रप्रयोग ३५०। (श्यामा)दक्षिणकाली कवच ३५१। दक्षिणकालिका कर्पूरस्तोत्र ३५३। कालीस्तव ३५४। काल्यष्टोत्तरशतनामस्तोत्र ३५५। कालीहृदय ३५६। दक्षिणकाली नाममाला ३५७। कालीसहस्रनामस्तोत्र ३५६। कालीसहस्रनामस्तोत्र ३६१। कालीसहस्रनामावलि ३७२।

पञ्चम तरङ्ग : तारातन्त्र ३७६-४२६

पञ्चाक्षर तारामन्त्र ३७६। द्वात्रिंशत्यक्षरतारामन्त्र प्रयोग ३८६। तारामन्त्रभेद ३८६। ताराभेदैकजटामन्त्रप्रयोग ३८७। नीलसरस्वतीमन्त्रप्रयोग ३८७। महाविद्या

(विद्याराज्ञी) मन्त्रप्रयोग ३८८। वागीश्वरी (सरस्वती) महाकल्प ३९६। सरस्वतीदशाक्षरमन्त्रप्रयोग ४००। एकादशाक्षर सरस्वतीमन्त्रप्रयोग ४०३। द्वितीय एकादशाक्षर सरस्वतीमन्त्रप्रयोग ४०४। सरस्वतीमन्त्र (प्राकृतग्रन्थे) ४०५। एकाक्षर सरस्वतीमन्त्रविधान ४०६। विद्याप्रसङ्गात् कृष्ण देवी (तारणी) महाकल्प ४०६। कात्यायनी महाकल्प ४१०। ताराकवच ४१३। तारास्तोत्र ४१५। ताराशतनामस्तोत्र ४१६। तारातकारादिसहस्रनामस्तोत्र४१७। श्रीताराहृदय ४२६। सरस्वतीस्तोत्र ४२८।

षष्ठ तरङ्ग : षोडशी (त्रिपुर सुन्दरी) श्रीविद्यातन्त्र ४३०-४४०

षोडशाक्षरी षोडशीमन्त्रप्रयोग ४३०। बालात्रिपुरामन्त्र प्रयोग ४४०। त्रिपुरसुन्दरी (षोडशी) कवच ४४८। त्रिपुर (त्रिशक्तिरूपा) लक्ष्मीकवच ४४६। श्रीविद्याकवच ४५०। षोडशीस्तोत्र ४५१। षोडश्यष्टोत्तरशतनामस्तोत्र ४५२। षोडशीसहस्रनामस्तोत्र ४५२। षोडशीहृदय ४५६।

सप्तम तरङ्ग : भुवनेश्वरीतन्त्र ४६१-४७८

एकाक्षरीबीजमन्त्रप्रयोग ४६१। त्र्यक्षरमन्त्रप्रयोग ४६५। त्रैलोक्यमङ्गल भुवनेश्वरीकवच ४६७। भुवनेश्वरीस्तोत्र ४६८। भुवनेश्वर्यष्टोत्तरशतनाम स्तोत्र ४६६। भुवनेश्वरीसहस्रनामस्तोत्र ४७१। भुवनेश्वरीहृदय ४७७।

अष्टम तरङ्ग : त्रिपुरभैरवीतन्त्र ४७६-४६३

त्रिपुरभैरवीमन्त्रप्रयोग ४७६। त्रिपुरभैरवीकवच ४८१। त्रिपुरभैरवीसहस्रनामस्तोत्र ४८५। भैरवीस्तवराज ४६१। भैरव्यष्टोत्तरशतनामस्तोत्र ४६२।

नवम तरङ्ग : छिन्नमस्तातन्त्र ४६४-५११

सप्तदशाक्षरमन्त्रप्रयोग ४६४। छिन्नमस्ताकवच ४६६। छिन्नमस्तास्तोत्र ५०१। प्रचण्डचण्डिका (छिन्नमस्ता) स्तोत्र ५०१। छिन्नमस्ताष्टोत्तरशतनामस्तोत्र ५०२। छिन्नमस्तासहस्रनामस्तोत्र ५०४। छिन्नमस्ताहृदयस्तोत्र ५१०।

दशम तरङ्ग : धूमावतीतन्त्र ५१२-५२४

अष्टाक्षर धूमावतीमन्त्रप्रयोग ५१२। धूमावतीकवच ५१५। धूमावतीस्तोत्र ५१६। धूमावत्यष्टोत्तरशतनामस्तोत्र ५१७। धूमावती सहस्रनामस्तोत्र ५१७। धूमावतीहृदय५२३।

एकादश तरङ्ग : बगलामुखीतन्त्र ५२५-५४२

षट्त्रिंशदक्षरमन्त्रप्रयोग ५२५। बगलामुखीकवच ५३०। बगलामुखी (पीताम्बरा) सहस्रनामस्तोत्र ५३३। बगलामुखीस्तोत्र ५४०। बगलामुखी शतनामस्तोत्र ५४१।

द्वादश तरङ्ग : मातङ्गीतन्त्र ५५३-५७१

द्वात्रिंशदक्षर मातङ्गीमन्त्रप्रयोग ५५३। मातङ्गीभेदेन लघुश्यामामन्त्रप्रयोग ५४७। मातङ्गी दशाक्षरमन्त्रप्रयोग ५५३।· मातङ्गीभेदेन सुमुखीमन्त्रप्रयोग ५५४। मातङ्गी सुमुखीकवच ५५८। मातङ्गीकवच (द्वितीय) ५५६। मातङ्गीस्तोत्र ५६१। मातङ्गी शतनामस्तोत्र ५६१। मातङ्गी सहस्रनामस्तोत्र ५६३। मातङ्गीहृदय ५६६।

त्रयोदश तरङ्ग : कमलात्मिका (लक्ष्मी) तन्त्र ५७२-६०८

एकाक्षर लक्ष्मीबीजमन्त्रप्रयोग ५७२। चतुरक्षर लक्ष्मीबीजमन्त्रप्रयोग ५७५। सप्तविंशत्यक्षर महालक्ष्मीमन्त्रप्रयोग ५७७। द्वादशाक्षर महालक्ष्मीमन्त्रप्रयोग ५८०। त्रयोविंशत्यक्षर लक्ष्मीमन्त्रप्रयोग ५८७। सिद्धलक्ष्म्येकादशाक्षरमन्त्रप्रयोग ५८८। सिद्धलक्ष्मीस्तोत्र ५८८। ज्येष्ठालक्ष्मीमन्त्रप्रयोग ५८६। वसुधालक्ष्मी मन्त्रप्रयोग५६२। लक्ष्मीकवच ५६४। लक्ष्मी स्तोत्र ५६६। कमलाया अष्टोत्तरशतनामस्तोत्र ५६६। लक्ष्मीसहस्रनामस्तोत्र ५६७। लक्ष्मीहृदयस्तोत्र ६०३। लक्ष्मीसूक्त ६०८।

चतुर्दश तरङ्ग : कुमारीतन्त्र ६०६-६३१

वर्षभेदेन कुमारीभेद–निरूपण ६०६। कुमारीणां वर्णभेद ६१०। कुमारीदानक्रमफल ६११। कुमारीपूजाप्रयोग ६११। कुमारीकवच ६१८। कुमारीस्तोत्र ६२१। कुमारीसहस्रनाम ६२३। कुमारीतर्पणात्मकस्तोत्र६३०।

पञ्चदश तरङ्ग : कालिन्दीतन्त्र ६३२-६४४

एकादशाक्षर यमुनामन्त्रपटल ६३४। यमुनाकवच ६३७। यमुनास्तव ६३६। यमुनासहस्रनाम ६३६।

षोडश तरङ्ग : मिश्रतन्त्र (१) ६४५-६६२

आसुरी महाकल्प ६४५। कालरात्रिमन्त्रप्रयोग ६४७। षट्प्रयोग विधान : वशीकरण ६१७; स्तम्भनप्रयोग ६५३। मोहनप्रयोग ६५४। आकर्षणप्रयोग६५४। उच्चाटनप्रयोग ६५५; विद्वेषण ६५६; वार्तालीमन्त्रप्रयोग ६५७ ।

सप्तदश तरङ्ग : मिश्रतन्त्र (२) ६६३-६६२

महिषमर्दिनी मन्त्रप्रयोग ६६३; महिषर्द्दिनी कवच ६६५। रेणुकाशबरीमन्त्रप्रयोग ६६७। अन्नपूर्णा मन्त्रप्रयोग ६६६। अन्नपूर्णाकवच६७३। अन्नपूर्णास्तोत्र ६७४। पृथ्वीमन्त्रप्रयोग ६७५। गङ्गामन्त्रप्रयोग ६७७। मणिकर्णिकामन्त्रप्रयोग ६८०। शीतला मन्त्रप्रयोग ६८२। ज्वालामुखीमन्त्रप्रयोग ६८३। इन्द्राक्षीस्तोत्र ६८४। जैनमते पद्मावतीस्तोत्र : कार्यपरत्व पद्मावतीस्तोत्र पुरश्चरणमन्त्रविधान ६८४।

चित्र सूची

सर्वतोभद्रमण्डल (रङ्गीन) पृष्ठ १ के सामने

ध्यान चित्र : दुर्गाध्यान पृष्ठ ६१ के सामने। कालीध्यान पृष्ठ ३३३ के सामने। ताराध्यान पृष्ठ ३७६ के सामने। षोडशीध्यान पृष्ठ ४३० के सामने। भुवनेश्वरी ध्यान पृष्ठ ४६१ के सामने। त्रिपुराभैरवी ध्यान पृष्ठ ४७६ के सामने। छिन्नमस्ता ध्यान पृष्ठ ४६४ के सामने। धूमावती ध्यान पृष्ठ ५१२ के सामने। बगलामुखी ध्यान पृष्ठ ५२५ के सामने। मातङ्गी ध्यान पृष्ठ ५४३ के सामने। कमलात्मिका (लक्ष्मी ध्यान) पृष्ठ ५७२ के सामने।

यन्त्र–चित्रावली ६६३ से आगे

हिन्दी मन्त्र महार्णव

(देवी खण्ड)

सर्वतोभद्रमण्डल

ॐ

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

हिन्दी मन्त्रमहार्णव

स्त्रीदेवतात्मक द्वितीय खण्ड

प्रथम तरङ्ग

गायत्री तन्त्र

अथ वेदादिगीतायाः प्रसादजननं विधिम् ।
गायत्र्याः सम्प्रवक्ष्यामि धर्मार्थकाममोक्षदम् ॥ १ ॥

ब्रह्मगायत्री पुरश्चरणविधान

गायत्री - तन्त्र प्रारम्भ : वेद, गीता आदि ग्रन्थों की प्रसन्नता प्रदान करनेवाले तथा धर्म, अर्थ, काम और मोक्षदायक गायत्री के पुरश्चरण की विधि मैं कहता हूँ।

नित्यनैमित्तिके काम्ये तृतीये तपवर्द्धने ।
गायत्र्यास्तु परं नास्ति इह लोके परत्र च ॥ २ ॥

नित्य, नैमित्तिक, काम्य और तपोवृद्धि के लिये इस लोक या परलोक में गायत्री से श्रेष्ठ कुछ नहीं है ।

(देवीभागवते) अथातः श्रूयतां ब्रह्मन् गायत्र्याः पापनाशनम् ।
पुरश्चरणकं पुण्यं यथेष्टफलदायकम् ॥ ३ ॥

देवीभागवत में कहा गया है : हे ब्रह्मन्, पापों का नाश करनेवाले यथेष्ट फल देनेवाले पुण्य गायत्री मन्त्र का पुरश्चरण मैं कहता हूँ, उसे सुनो ।

पर्वताग्रे नदीतीरे बिल्वमूले जलाशये ।
गोष्ठे देवालयेऽश्वत्थे उद्याने तुलसीवने ॥ ४ ॥
पुण्यक्षेत्रे गुरोः पार्श्वे चित्तैकाग्र्यस्थलेपि च ।
पुरश्चरणकृन्मन्त्री सिध्यत्येव न संशयः ॥ ५ ॥

पर्वत के शिखर पर, नदी के तट पर, बेल की छाया में, जलाशय में, गोशाला में, देवालय में, पीपल की छाया में, बगीचे में, तुलसीवन में, पुण्य क्षेत्र में, गुरु के निकट तथा जहाँ चित्त एकाग्र हो उस स्थल पर गायत्री का पुरश्चरण करनेवाला निश्चय ही सिद्धि को प्राप्त करता है, इसमें लेशमात्र संशय नहीं है ।

गायत्री छन्दो मन्त्रस्य यथा संख्याक्षराणि च ।
तावल्लक्षाणि कर्तव्यं पुरश्चरणकं तथा ॥ ६ ॥
द्वात्रिंशल्लक्षमानं तु विश्वामित्रमतं तथा ।

गायत्री मन्त्र में जितने अक्षर हैं, उतने लाख गायत्री का पुरश्चरण, परन्तु विश्वामित्र के अनुसार ३२ लाख का पुरश्चरण करना चाहिये ।

जीव हीनो यथा देहः सर्वकर्मसु न क्षमः ।
पुरश्चरणहीनस्तु तथा मन्त्रः प्रकीर्तितः ॥ ७ ॥

जैसे आत्मा से रहित यह शरीर सभी कर्मों में असमर्थ होता है, उसी प्रकार पुरश्चरण के बिना मन्त्र भी असमर्थ होता है ।

ज्येष्ठाषाढी भाद्रपदं पौषं तु मलमासकम् ।
अङ्गारं शनिवारं च व्यतीपातं च वैधृतिम् ॥ ८ ॥
अष्टमीं नवमीं षष्ठीं चतुर्थीं च त्रयोदशीम् ।
चतुर्दशीममावस्यां प्रदोषं च तथा निशाम ॥ ० ··
यमाग्निरुद्रसर्पेन्द्रवसुश्रवणज
मेषकर्कतुलाकुम्भान्मकरं चैव व
सर्वाण्येतानि वर्ज्यानि पुरश्चरणकर्मणि ।

ज्येष्ठ, अषाढ़, भादों, पूष तथा मलभास, मङ्ग वैधृति योग, अष्टमी, नवमी, षष्ठी, चतुर्थी, त्रयोदशी, चतुर्दशी, अमावास्या, प्रदाष, रात्र, यम, अग्नि, रुद्र, सर्प, इन्द्र, वसु, श्रवण तथा जन्म नक्षत्र, मेष, कर्क, तुला, कुम्भ और मकर ये सभी गायत्री के पुरश्चरणकर्म में वर्जित हैं।

चन्द्रतारानुकूले च शुक्लपक्षे विशेषतः ॥ ११ ॥
पुरश्चरणकं कुर्यान्मन्त्रसिद्धिः प्रजायते ।
स्वस्तिवाचनकं कुर्यान्नान्दीश्राद्धं यथाविधि ॥ १२ ॥

चन्द्र तारा के अनुकूल होने पर विशेष रूप से शुक्ल पक्ष में पुरश्चरण करना चाहिये । इससे मन्त्र की सिद्धि प्राप्त होती है । स्वस्तिवाचन तथा नन्दिश्राद्ध भी विधिपूर्वक करना चाहिये ।

विप्रान्सन्तर्प्य यत्नेन भोजनाच्छादनादिभिः ।
प्रत्यंमुखः शिवस्थाने द्विजश्चान्यतमे जपेत् ॥ १३ ॥

ब्राह्मणों को यत्न से भोजन वस्त्रादि के दान से प्रसन्न करके पश्चिमाभिमुख होकर द्विज किसी शिवालय में गायत्री मन्त्र का जप करे ।

आरम्भ दिनमारभ्य समाप्तिदिवसावधि ।
न न्यूनं नातिरिक्तं च जपं कुर्याद्दिनेदिने ॥ १४ ॥

जप आरम्भ करने के दिन से लेकर समाप्ति के दिन तक मन्त्र का जप समान होना चाहिये । जप की संख्या किसी दिन न तो कम हो न अधिक ।

नैरन्तर्येण कुर्वन्ति पुरश्चर्यां मुनीश्वराः ।
प्रातरारभ्य विधिवज्जपेन्मध्यंदिनावधि ॥ १५ ॥

मुनीश्वर लोग पुरश्चरण हेतु प्रातः प्रारम्भ करके मध्याह्न तक निरन्तर जप करते हैं ।

गायत्री चैव संसेव्या धर्मकामार्थमोक्षदा ।
गायत्र्यास्तु परं नास्ति इह लोके परत्र च ॥ १६ ॥

धर्म, अर्थ, काम तथा मोक्ष को सिद्ध करनेवाली गायत्री का जप करना चाहिये । गायत्री मन्त्र से बढ़कर कोई मन्त्र इस लोक और परलोक में नहीं है ।

गायत्री के वर्णों के ऋषि, छन्द, देवता आदि :

अथातः श्रूयतां ब्रह्मवर्णऋष्यादिकांस्तथा ।
छन्दांसि देवतास्तद्वत्क्रमात्तत्त्वानि चैव हि ॥ १ ॥
वामदेवोऽत्रिर्वसिष्ठः शुक्रःकण्वःपराशरः ।
विश्वामित्रो महातेजाः कपिलः शौनको महान् ॥ २ ॥
याज्ञवल्क्यो भरद्वाजो जमदग्निस्तपोनिधिः ।
गौतमो मुद्गलश्चैव वेदव्यासश्च लोमशः ॥ ३ ॥
अगस्त्यः कौशिको वत्सः पुलस्त्यो माण्डुकस्तथा ।
दुर्वासास्तपसां श्रेष्ठो नारदः कश्यपस्तथा ॥ ४ ॥
इत्येते ऋषयः प्रोक्ता वर्णानां क्रमशो मुने ।

हे ब्रह्मन्! अब गायत्री के वर्णों के ऋष्यादि, छन्द, देवता क्रम से कहते हैं, सूनोः वामदेव , अत्रि, वसिष्ठ, शुक्र, कण्व, पराशर, महातेजस्वी विश्वामित्र, कपिल, महान् शौनक, याज्ञवल्क्य, भरद्वाज, तपोनिधि जमदग्नि, गौतम, मुद्गल, वेदव्यास, लोमश, अगस्त्य, कौशिक, वत्स, पुलस्त्य, मण्डूक, दुर्वासा, नारद और कश्यप, हे मुने! ये क्रम से २४ वर्णों के चौबीस ऋषि हैं ।

गायत्र्युष्णिगनुष्टुप् च बृहती पंक्तिरेव च ॥ ५ ॥
त्रिष्टुभं जगती चैव तथाऽतिजगती मता ।
शक्वर्यतिशक्वरी च धृतिश्चातिधृतिस्तथा ॥ ६ ॥
विराट्प्रस्तारपंक्तिश्च कृतिः प्रकृतिराकृतिः ।
विकृतिः संस्कृतिश्चैवाक्षरपंक्तिस्तथैव च ॥ ७ ॥
भूर्भुवः स्वरितिच्छन्दस्तथा ज्योतिष्मती स्मृतम् ।
इत्येतानि च छन्दांसि कीर्तितानि महामुने ॥ ८ ॥

अब छन्द कहते हैं : गायत्री, उष्णिक्, अनुष्टुप्, बृहती, पंक्ति, त्रिष्टुप्, जगती, अतिजगती, शक्वरी, अतिशक्वरी, धृति, अतिधृति, विराट्, प्रस्तारपंक्ति, कृति, प्रकृति, आकृति, संस्कृति, अक्षरपंक्ति, भूः, भुवः, स्वः और ज्योतिष्मती ये क्रम से २४ छन्द कहे गये हैं ।

दैवतानिं शृणु प्राज्ञ तेषामेवानुपूर्वशः ।
आग्नेयः प्रथमं प्रोक्तं प्राजापत्यं द्वितीयकम् ॥ ९ ॥
तृतीयं च तथा सोम्यमीशानं च चतुर्थकम् ।
सावित्रं पञ्चमं प्रोक्तं षष्ठमादित्यदैवतम् ॥ १० ॥

बार्हस्पत्यं सप्तमं तु मैत्रावरुणमष्टमम् ।
नवमं भगदैवत्यं दशमं चार्यमेश्वरम् ॥ ११ ॥
गणेशमेकादशकं त्वाष्ट्रं द्वादशकं स्मृतम् ।
पौष्णं त्रयोदशं प्रोक्तमैद्राग्नं च चतुर्दशम् ॥ १२ ॥
वायव्यं पश्चदशकं वामदेव्यं च षोडशम् ।
मैत्रावरुणिदैवत्यं प्रोक्तं सप्तदशाक्षरम् ॥ १३ ॥
अष्टादशं वैश्वदेवमूनविंशं तु मातृकम् ।
वैष्णवं विंशतितमं वसुदैवतमीरितम् ॥ १४ ॥
एकविंशतिसंख्याकं द्वाविंशं रुद्रदैवतम् ।
त्रयोविंशं च कौबेरमाश्विने तत्त्वसंख्यकम् ॥ १५ ॥
चतुर्विंशतिवर्णानां देवतानां च संग्रहः ।
कथितः परमश्रेष्ठो महापापैकशोधनः ॥ १६ ॥

हे मुनीश्वर ! अब क्रमसे इनके देवता सुनो : प्रथम के अग्नि, दूसरे के प्रजापति, तीसरे के चन्द्रमा चौथे के ईशान, पाँचवे के सविता, छठे के आदित्य, सातवें के बृहस्पति, आठवें के मित्रावरुण, नौवें के भग, दशवें के अर्यमा, ग्यारहवें के गणेश, बारहवें के त्वष्टा, तेरहवें के पूषा, चौदहवें के इन्द्र और अग्नि, पन्द्रहवें के वायु, सोलहवें के वामदेव, सत्रहवें के मैत्रावरुण, अठारहवें के विश्वेदेवा, उन्नीसवें की मातृकायें, बीसवें के विष्णु, इक्कीसवें के वसु, बाइसवें के रुद्र, तेईसवें के कुबेर, चौबीसवें के अश्विनीकुमार – ये चौबीस वर्णों के देवता कहे गये हैं, जो परमश्रेष्ठ और महापाप के शोधक हैं ।

टिप्पणी :

हे मुने ! जिनके श्रवण से साङ्ग जाप का फल होता उन गायत्री ब्रह्मकल्प में कहे गये भिन्न देवता भी क्रम से लिखते हैं – अग्नि, वायु, सूर्य, कुबेर, यम, वरुण, बृहस्पति, पर्जन्य, इन्द्र, गन्धर्व, प्रोष्ठ, मित्रावरुण, त्वष्टा, वासव, मरुत्, सोम, अङ्गिरा, विश्वेदेवा, अश्विनीकुमार, पूषा, रुद्र, विद्युत् ब्रह्म, अदिति – ये क्रम से देवता हैं ।

वर्णानां शक्तयः काश्च ताः शृणुष्व महामुने ।
वामदेवी प्रिया सत्या विश्वा भद्रा विलासिनी ॥ १ ॥
प्रभावती जया शान्ता कान्ता दुर्गा सरस्वती ।
विद्रुमा च विशालेशा व्यापिनी विमला तथा ॥ २ ॥
तमोऽपहारिणी सूक्ष्मा विश्वयोनिर्जया वशा ।
पद्मालया पराशोभा भद्रा च त्रिपदा स्मृता ॥ ३ ॥
चतुर्विंशतिवर्णानां शक्तयः समुदाहृताः ।

अब वर्णों की शक्तियों को क्रम से सुनो : वामदेवी, प्रिया, सत्या, विश्वा, भद्रा, विलासिनी, प्रभावती, जया, शान्ता, कान्ता, दुर्गा, सरस्वती, विद्रुमा, विशालेशा, व्यापिनी, विमला, तमोपहारिणी, सूक्ष्मा, विश्वयोनि, जया, वशा, पद्मालया, परा, शोभा, भद्रा और त्रिपदा ये क्रमसे चौबीस अक्षरों की शक्तियाँ हैं ।

अतः परं वर्णवर्णान्व्याहरामि यथातथम् ॥ ४ ॥
चम्पकातसीपुष्पसन्निभं विद्रुमं तथा ।
स्फटिकाकारकं चैव पद्मपुष्पसमप्रभम् ॥ ५ ॥
तरुणादित्यसंकाशं शङ्खकुन्देन्दुसन्निभम् ।
प्रवालपद्मपत्राभं पद्मरागसमप्रभम् ॥ ६ ॥

इन्द्रनीलमणिप्रख्यं मौक्तिकं कुंकुमप्रभम् ।
अञ्जनाभं च रक्तं च वैदूर्यं क्षौद्रसन्निभम् ॥ ७ ॥
हारिद्रकुन्ददुग्धाभं रविकान्तिसमप्रभम् ।
शुकपुच्छनिभं तद्वच्छतपत्रनिभं तथा ॥ ८ ॥
केतकीपुष्पसंकाशं मल्लिकाकुसुमप्रभम् ।
करवीरश्च इत्येते क्रमेण परिकीर्तिताः ॥ ९ ॥
वर्णाः प्रोक्ताश्च वर्णानां महापापविशोधनाः ।

अब चौबीस वर्णों के रङ्ग कहते हैं : चम्पक तथा अलसी के फूल के समान, मूँगे के रङ्ग के समान, स्फटिक के समान, पद्मरागमणि के समान, तरुण सूर्य के समान, शङ्ख, कुन्द, इन्द्र, प्रवाल, पद्मपत्र के समान, पद्मराग के समान, इन्द्र नीलमणि के समान, मोती, कुंकुम, अंजन के समान, लाल वैडूर्य के समान, शहद के समान, हलदी, कुन्द, दूध, सूर्यकान्ति, शुकपुच्छ, शतपत्र के समान, केंतकी पुष्प के समान, मल्लिका (चमेली) और कनेर के समान – इन चौबीसों को क्रम से रङ्ग जानने चाहिये। ये वर्णों के रङ्ग महापाप को शुद्ध करने वाले हैं ।

पृथिव्यापस्तथा तेजो वायुराकाश एव च ॥ १० ॥
गन्धोरसश्च रूपं च शब्दः स्पर्शस्तथैव च ।
उपस्थं पायुपादं च पाणिवागपि च क्रमात् ॥ ११ ॥
घ्राणं जिह्वा च चक्षुश्च त्वक् श्रोत्रं च ततः परम् ।
प्राणोऽपानस्तथा व्यानः समानश्च ततः परम् ॥ १२ ॥
तत्त्वान्येतानि वर्णानां क्रमशः कीर्तितानि तु ।

पृथ्वी, अप (जल), तेज, वायु, आकाश, गन्ध, रस, रूप, शब्द, स्पर्श, उपस्थ, गुद, चरण, हाथ, वाणी, घ्राण, (नासा), जिह्वा, चक्षु, त्वचा, श्रोत्र प्राण, अपान, व्यान, समान, यह क्रम से सब वर्णों के तत्त्व हैं ।

अतः परं प्रवक्ष्यामि वर्णमुद्राः क्रमेण तु ॥ १३ ॥
सुमुखं सम्पुटं चैव विततं विस्तृतं तथा ।
द्विमुखं त्रिमुखं चैव चतुःपञ्चमुखं तथा ॥ १४ ॥
षण्मुखाधोमुख चैव व्यापकाञ्जलकं तथा ।
शकटं यमपाशं च ग्रथितं सन्मुखोन्मुखम् ॥ १५ ॥
विलम्बम्मुष्टिकं चैव मत्स्यं कूर्मं वाराहकम् ।
सिंहाक्रान्तं महाक्रान्त मुद्गरं पल्लवं तथा ॥ १६ ॥
त्रिशूलयोनी सुरभिश्चाक्षमाला च लिंगकम् ।
अम्बुजं च महामुद्रास्तुर्यरूपाः प्रकीर्तिताः ॥ १७ ॥
इत्येताः कीर्तिता मुद्रा वर्णानां ते महामुने ।
महापापक्षयकराः कीर्तिदाः कान्तिदाः मुने ॥ १८ ॥

अब क्रम से वर्णों की मुद्रा कहते हैं : सन्मुख, सम्पुट, वितत, विस्तृत, एकमुख, द्विमुख, त्रिमुख, चतुर्मुख, पञ्चमुख, अधोमुख, व्यापक,अञ्जली, शकट, यमपाशक, ग्रथित, सन्मुख, उन्मुख, विलम्ब, मुष्टिक, मत्स्य, कूर्म, वराह, सिंहाक्रान्त, महाक्रान्त, मुद्गर, पल्लव, त्रिशूल, योनि, सुरभि, अक्षमाला, लिंग, अम्बुज, (कमल) ये महामुद्रायें गायत्री के चतुर्थ चरणरूप कही गयी हैं । हे महामुने ! ये वर्णों की मुद्रायें कही गयीं जो महापापनाशिनी हैं तथा कीर्ति और कान्ति देती हैं।

गायत्रीशापविमोचन – ब्रह्मशापविमोचन :

ॐ अस्य श्रीब्रह्मशापविमोचनमन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः । भुक्तिमुक्तिप्रदा ब्रह्मशापविमोचनी गायत्रीशक्तिर्देवता । गायत्री छन्दः । ब्रह्मशापविमोचने विनियोगः ।।

विनियोग : इस ब्रह्मशाप विमोचन मन्त्र का ब्रह्मा ऋषि है; भुक्ति तथा मुक्तिप्रदान करनेवाली, ब्रह्मशाप को छुड़ानेवाली गायत्री शक्ति देवता है; गायत्री छन्द है ; ब्रह्मशाप के विमोचन में इसका विनियोग है ।

ॐ गायत्रीब्रह्मेत्युपासीत यद्रूपं ब्रह्मविदो विदुः । तां पश्यन्ति धीराः सुमनसा वाचामग्रतः । "ॐ वेदान्तनाथाय विद्महे हिरण्यगर्भाय धीमहि । तन्नो ब्रह्म प्रचोदयात् । ॐ देवी गायत्री त्वं ब्रह्मशापविमुक्ता भव ।" इस मन्त्र से ब्रह्मशाप का विमोचन करना और इसका तीन दिन पाठ करना चाहिये ।

वसिष्ठशापविमोचन :

ॐ अस्य श्रीवसिष्ठशापविमोचनमन्त्रस्य निग्रहानुग्रहकर्ता वसिष्ठऋषिः । वसिष्ठानुगृहीता गायत्री शक्तिर्देवता । विश्वोद्भवा गायत्री छन्दः, वसिष्ठशापविमोचने विनियोगः ।

विनियोग : इस वसिष्ठशापविमोचन मन्त्र के निग्रहानुग्रहकर्ता वसिष्ठ ऋषि हैं, वसिष्ठानुगृहीता गायत्री शक्ति देवता है, विश्वोद्भवा गायत्री छन्द है, और वसिष्ठशाप विमोचन में इसका विनियोग है ।

ॐ सोहमर्कमयं ज्योतीरात्मज्योतिरहं शिवः । आत्मज्योतिरहं शुक्रः सर्वज्योतिरसोस्म्यहम् । ॐ देवी गायत्री त्वं वसिष्ठशापविमुक्ता भव ।

इसका तीन दिन पाठ करना चाहिये ।

विश्वामित्रशापमोचन :

ॐ अस्य श्रीविश्वामित्रशापमोचनमन्त्रस्य नूतनसृष्टिकर्ता विश्वामित्र ऋषिः । विश्वामित्रानुगृहीता गायत्री शक्तिर्देवता । वाग्देहा गायत्री छन्दः । विश्वामित्रशापमोचने विनियोगः ।

विनियोग : इस विश्वामित्रशापमोचन मन्त्र के नूतन सृष्टिकर्ता विश्वामित्र ऋषि हैं, विश्वामित्रनुगृहीता गायत्री शक्ति देवता है, वाग्देहा गायत्री छन्द है , और विश्वामित्रशापमोचन में इसका विनियोग है ।

ॐ गायत्रीं भजाम्यग्निमुखीं विश्वगर्भाः यदुद्भवा देवाश्चक्रिरे विश्वसृष्टिं तां कल्याणीमिष्टकरीं प्रपद्ये । यन्मुखान्निःसृतोऽखिलवेदगर्भः । ॐ गायत्री त्वं विश्वामित्रशापाद्विमुक्ता भव ।

इसका तीन दिन पाठ करना चाहिये ।

शापोद्धार करने के बाद इस प्रकार करबद्ध प्रार्थना करनी चाहिये :

तथा च : सोहमर्कमयं ज्योतिरर्को ज्योतिरहं शिवः । आत्म ज्योतिरहं शुक्रः शुक्रज्योतिरसोहमोम् ॥ १ ॥ महोविष्णु महेशेशे दिव्ये सिद्धि सरस्वति । अजरे अमरे चैव दिव्ययोनि नमोस्तुते ॥

इस प्रकार प्रार्थना करने के बाद शापरहित शुद्ध गायत्री की भावना करके ध्यान करना चाहिये :

गायत्री ध्यान : ॐ यद्देवैः सुरपूजितं परतरं सामर्थ्य तारात्मिकं पुन्नागांबुजपुष्पनागवकुलीः केशैः शुकैरर्चितम् । नित्यं ध्यानसमस्तदीप्तिकरणं कालाग्निरुद्दीपनं तत्संहारकरं नमामि सततं पातालसंस्थं मुखम् ॥

गायत्री - पुरश्चरण का प्रयोग :

ब्रह्म गायत्री मन्त्र : "ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ महः ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यं ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्। ॐ आपोज्योतीरसोमृतं ब्रह्मभूर्भुवः स्वरोम्" यह सप्तव्याहृत सहित गायत्री मन्त्र है।

अस्य विधानम्। चन्द्रताराादिबलान्विते सुमुहूर्ते शिवालयादिपवित्रस्थले जपस्थानं प्रकल्प्य तत्र दहनखननसंप्लावनादिभिः स्मृत्युक्तैः शोधनोपायैः शुद्धिं सम्पाद्य गोमयेनोपलिप्य तत्रासनभूमौ कूर्मशोधनं कृत्वा अनुष्ठानारम्भं कुर्यात्।

इसका विधान : चन्द्र और तारा के बलवान् होने पर शुभ मुहूर्त में शिवालय आदि स्थान पर जपस्थान कल्पित करके वहाँ दहन, खनन तथा सिञ्चन आदि स्मृतियों में कहे गये शुद्धि के उपायों से संशोधन करके गोबर से लीपकर उस आसनभूमि पर कूर्मशोधन करके अनुष्ठान प्रारम्भ करना चाहिये।

तथा च कर्ता प्रारम्भतपूर्वदिने ब्राह्मे मुहूर्ते चोत्थाय यथोपदेशं शौचं कृत्वा नद्यादौ स्नात्वा प्रातः सन्ध्यादि नित्यकर्म समाप्य आचार्यमाहूय सम्पूज्य तदनुज्ञया सपत्नीकः स्वासने प्राङ्मुख उपविश्य सपवित्रकरः आचम्य प्राणानायम्य सामान्यतो गणपत्यादिस्मरणं कृत्वा देहशुद्ध्यर्थं प्रायश्चित्तं कुर्यात्।

पुरश्चरण करनेवाला पुरश्चरण प्रारम्भ करने के दिन से पूर्व दिन ब्रह्ममुहूर्त में उठकर नियमानुसार शौचादि से निवृत्त होकर नदी, तालाब, कूपादि पर स्नान कर, सन्ध्यावन्दनादि नित्यकर्म समाप्त कर, आचार्य को बुलाकर उसका सत्कार करके पत्नी सहित उत्तम आसन पर पूर्वाभिमुख बैठकर, हाथों को धोकर आचमन करके प्राणायाम करे। तत्पश्चात् सामान्य रूप से गणेश आदि का स्मरण कर देहशुद्धि के लिए प्रायश्चित और उसके बाद संकल्प करे :

देशकालौ संकीर्त्य करिष्यमाणगायत्रीपुरश्चरणेऽधिकारप्रांत्यर्थं कृच्छ्रत्रयममुकप्रत्याम्नायेनाहमाचरिष्ये।

इस प्रकार संकल्प के पश्चात् गोदान करके तिल का होम सुवर्णादि प्रत्याम्नाय द्वारा कृच्छ्र पूरा करके हाथ जोड़कर ब्राह्मणों से कहे : **अमुकशर्मणो मम गायत्रीपुरश्चरणेऽनेन कृच्छ्रत्रयानुष्ठानेनाधिकारसिद्धिरस्त्विति विप्रान् वदेत्।**

तब ब्राह्मण कहें : **"अधिकारसिद्धिरस्त्विति"**

पुनर्देशकालौ संकीर्त्य करिष्यमाणपुरश्चणाङ्गत्वेन पुरश्चरणाधिकारप्राप्त्यर्थं गायत्र्ययुत जपं करिष्ये इति संकल्प्य गायत्र्ययुतं जपेत्।

उक्त संकल्प के बाद एक लाख गायत्री मन्त्र का जप करे।

ततः ॐ तत्सवितुरित्यस्याऽचार्यमृषिं विश्वामित्रं तर्पयामि ॥ १ ॥ गायत्रीछन्दस्तर्पयामि ॥ २ ॥ सवितृदेवतां तर्पयामि ॥ ३ ॥ इति तर्पणं कृत्वा रुद्रं नमस्कृत्य कद्रुदायेत्यादीनि रुद्रसूक्तानि सकृज्जपेत् इति पूर्वदिनकृत्यम्।

तर्पण करके रुद्र को नमस्कार करके कद्रुदाय इत्यादि रुद्रसूक्तों का जप करे। पूर्व दिन का कृत्य समाप्त।

जपप्रारम्भदिने सुमुहूर्ते सपत्नीको यजमानः सुगन्धतैलाभ्यंगपूर्वकमुष्णोदकेन मङ्गलस्नानं कृत्वा शुक्लधौतवामांसि परिधाय यथायोग्यालंकृतो धृतकुंकुमादित्रिपुण्ड्रतिलकः सपवित्रोपग्रहः

स्वासने प्राङ्मुख उपविश्य आचम्य प्राणानायम्य –

जप के प्रारम्भ दिन में शुभ मुहूर्त में सपत्नीक यजमान सुगन्ध तेल लगाकर गर्म जल से मङ्गल स्नान करके स्वच्छ सफेद वस्त्र धारण करके यथायोग्य आभूषण पहनकर केशर आदि का त्रिपुण्ड लगाकर पवित्र सामग्रियों के साथ पूर्वाभिमुख अपने आसन पर बैठकर आचमन करके प्राणायाम करे। तदनन्तर–

देशकालौ संकार्त्य मम इह जन्मनि जन्मान्तरेषु कृतकायिकवाचिकमानसिकसासर्गिकसमस्तपापक्षयार्थं पुत्रपौत्रधनधान्यभिवृद्ध्यर्थं चतुर्विधपुरुषार्थसिद्ध्यर्थं श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं सप्रणवव्याहृतिपूर्वकचतुर्विंशतिलक्षजपात्मकगायत्रीपुरश्चरणं स्वयं विप्रद्वारा वा करिष्ये । यह संकल्प करें

तदंगत्वेन गणेशपूजनं स्वस्तिपुण्याहवाचनं मातृकापूजनं नान्दीश्राद्धमाचार्यजपकर्तृवरणं च करिष्ये इति संकल्प्य गणेशपूजनादिनान्दीश्राद्धान्तं कृत्वा नान्दीश्राद्धान्ते सविता प्रीयतामिति पठित्वा आचार्यजपकर्तृवरणं कुर्यात् । तथा च आचार्यं जपकर्तृंश्चोदंमुखानासनेषूपवेश्य सर्वेषां पादप्रक्षालनं कृत्वा दक्षिणहस्ते वरण द्रव्याणि गृहीत्वा देशकालौ संकीर्त्य मम सकलपापक्षयद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं करिष्यमाणगायत्रीजपपुरश्चरण कर्मणि अमुकगोत्रोत्पन्नममुकवेदशाखाध्यायिनममुकशर्माणं ब्राह्मणमेभिर्गन्धाक्षतताम्बूलस्वर्णांगुलीयकासनमाला कमण्डलु युग्मवासोभिर्जपकरणार्थं आचार्यत्वेन त्वा महं वृणे ।। इति ।।

यह संकल्प करके, गणेशपूजन, नान्दी श्राद्ध आदि करके, उसका अङ्ग होने से गणेशपूजन करके स्वस्तिपुण्याहवाचन मातृकापूजन, नान्दीश्राद्ध, आचार्य तथा जपकर्ताओं का वरण मैं करूंगा यह संकल्प करके गणेशपूजन से लेकर श्राद्ध के अन्त तक क्रिया करके नान्दीश्राद्ध के अन्त में 'सविता प्रीयताम्' यह पढ़कर आचार्य तथा जपकर्ताओं का वरण करे। इसके बाद आचार्य और जपकर्ताओं को उत्तराभिमुख आसनों पर बैठाकर सबके पैर धोकर दाहिने हाथ में वरणंद्रव्यों को लेकर कहे : 'देश-काल के संकीर्तन के साथ समस्त पापक्षय के द्वारा श्रीपरमेश्वर की प्रसन्नता के लिए किये जाने वाले गायत्रीजप-पुरश्चरण कर्म में अमुक गोत्रोत्पन्न, अमुक वेद शाखाध्यायी, अमुक शर्मा ब्राह्मण को इन गन्ध, अक्षत, ताम्बूल, सोने की अंगूठी, आसन, माला, कमण्डलु तथा एक जोड़ा वस्त्र के साथ जप करने के लिए मैं वरण करता हूं।'

आचार्यं वृत्वा ॐ वृतोस्मीति प्रतिवचनान्तरं पृथक्पृथक् हस्तेयज्ञकङ्कणं बद्ध्वा गन्धपुष्पादिभिः सम्पूज्य प्रार्थयेत् ।

इसके बाद आचार्य के 'वृतोस्मि' इस उत्तर के बाद पृथक - पृथक हाथ में यज्ञ - कंकण को बाँधकर गन्ध पुष्पादि से उनकी पूजा करके प्रार्थना करे :

ॐ अस्य यागस्य निष्पत्तौ भवन्तोऽभ्यर्थिता मया । सुप्रसन्नैः प्रकर्तव्यं मद्यज्ञं विधिपूर्वकम् ।। १ ।। अङ्गीकुर्वन्तु कमैतत्कल्पद्रुमसमांशिषः । यथोक्तनियमैर्युक्त जपार्थे स्थिरबुद्धयः ।। २ ।। अस्मिन् यज्ञे मया पूज्याः सन्तु मे नियमान्विताः । अक्रोधनाः शौचपराः सततं ब्रह्मचारिणः ।। ३ ।। जपध्यानरता नित्यं प्रसन्नमनसः सदा । अदुष्टभाषिणः सन्तु मा सन्तु परनिन्दकाः । ममापि नियमा ह्येते भवन्तु भवतामपि ।। ४ ।।

इस यज्ञ की पूर्ति के लिए मैं आप लोगों से प्रार्थना करता हूं कि आप सब अच्छी तरह प्रसन्न होकर मेरे यज्ञ को पूरा करें। मेरे इस कल्पवृक्ष के समान यज्ञ कर्म को आप लोग स्वीकार करें।

आप लोग जप के लिए नियुक्त किये गये हैं । इस यज्ञ में आप लोग मेरे पूज्य हैं अतः

आप सभी स्थिरबुद्धि, नियमों के पालन करने वाले, क्रोधरहित, पवित्र, सदा ब्रह्मचर्य का पालन करने वाले, जप और ध्यान में लगे हुए, नित्य प्रसन्न चित्त रहने वाले, दुष्टों से भाषण न करने वाले तथा दूसरों की निन्दा न करने वाले होवें। यही सब नियम मेरे लिए भी हैं तथा आप लोगों के लिए भी हैं।

इति सम्प्रार्थ्य प्रत्येकं वस्त्रद्वयम् आसनं १ अर्घ्यपात्रं १ आचमनपात्रं १ जलपात्रं १ सुवर्णांगुलीयकं १ मालां १ च दद्यात् । अत्र जापकास्त्वेकविंशतिः २१ न्यूनाधिका वा कार्याः । ततः सर्वे जापका आचम्य प्राणानायम्य :

इस प्रकार प्रार्थना करके जपकर्ताओं को दो वस्त्र, एक आसन, एक आचमनपात्र, एक जलपात्र, एक सोने की अंगूठी, एक माला दे । यहाँ जप करनेवाले इक्कीस होते हैं । इनसे कम या अधिक भी हो सकते हैं । इसके बाद जप करनेवाले आचमन और प्राणायाम करके : "**सूर्यः सोमो यमः कालः सन्ध्ये भूतान्यहः क्षपा । पवमानो दिक्पतिर्भूराकाशं खेचरामराः । ब्रह्मशासनमास्थाय कल्पध्वमिह सन्निधिम्**" यह प्रार्थना करे :

इसके पश्चात् "**देशकाली संकीर्त्य ममामुकशर्मगो यजमानस्य सकलपापक्षयद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं यजमानानुज्ञया गायत्रीपुरश्चरणान्तर्गतामुक सहस्रसंख्यापरिमितविहितगायत्रीजपं करिष्ये ।**

इस प्रकार सभी जापक अपने - अपने प्रतिदिन के जप का संकल्प करके अङ्गन्यास करें। सभी जापकों का जप समान संख्या में होना चाहिये । किसी का कम और किसी का अधिक नहीं होना चाहिये । यहाँ उत्तम जप दो हजार, मध्यम जप ढाई हजार और अधम जप तीन हजार समझना चाहिये ।

इसके पश्चात् तीन प्राणायाम करके न्यास आरम्भ करे।

न्यासाः :

ॐ गुरुवे नमः ॥१॥ गणपतये नमः ॥२॥ दुर्गायै नमः ॥३॥ वेदमातृभ्यो नमः ॥४॥

विनियोग : ॐ प्रणवस्य ब्रह्मा ऋषिः गायत्री छन्दः। परमात्मा देवता । शरीरशुद्ध्यर्थे जपेविनियोगः ।

प्रणवेनऋष्यादि न्यास : ॐ ब्रह्मऋषये नमः शिरसि ॥१॥ गायत्रीछन्दसे नमः मुखे ॥२॥ ॐ परमात्मादेवतायै नमः हृदि ॥३॥ विनियोगाय नमः । सर्वाङ्गे ॥४॥ इति प्रणवेन ऋष्यादि न्यासः ।

विनियोग : सप्तव्याहृतीनां जमदग्निभरद्वाज (तन्त्रान्तरेपि भृगु इति पाठः) अत्रिगौतम-कश्यपविश्वामित्रवसिष्ठा ऋषयः । गायत्र्युष्णिगनुष्टुब्बृहतीपंक्तिस्त्रिष्टुब्जगत्यश्छन्दांसि । अग्निवायु-सूर्यबृहस्पतिवरुणेन्द्रविश्वेदेवा देवताः । सर्वपापक्षयार्थे जपे विनियोगः ।

सप्तव्याहृतीनामृष्यादिन्यास : ॐ जमदग्निभरद्वाजात्रिगौतमकाश्यपविश्वामित्रवसिष्ठ-ऋषिभ्यो नमः शिरसि ॥१॥ गायत्र्युष्णिगनुष्टुब्जगतीछन्देभ्यो नमो मुखे ॥२॥ अग्निवायुसूर्यबृहस्पतिवरुणेन्द्रविश्वदेवदेवताभ्यो नमः हृदये ॥३॥ विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ॥४॥ इति सप्तव्याहृतिनामृष्यादि न्यासः ।

गायत्र्याऋष्यादिन्यास : ॐ गायत्र्याः विश्वामित्र ऋषिः । गायत्री छन्दः । सविता देवता । जपोपनयने विनियोगः । ॐ विश्वामित्र ऋषये नमः शिरसि ॥१॥ गायत्रीछन्दसे नमः मुखे ॥२॥ सवितृदेवतायै नमः हृदये ॥३॥ विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ॥४॥ इति गायत्र्याऋष्यादिन्यासः ।

मन्त्रवर्णन्यास : ॐ भूः नमः हृदये ॥१॥ ॐ भुवः नमः मुखे ॥२॥ ॐ स्वः नमः दक्षांसे ॥३॥ ॐ महः नमः वामांसे ॥४॥ ॐ जनः नमः दक्षिणोरौ ॥५॥ ॐ तपः नमः वामोरौ ॥६॥ ॐ सत्यं

नमः जठरे ॥ ७ ॥ ॐ तत् नमः पादांगुलिमूलेषु ॥ ८ ॥ ॐ सं नमः गुल्फयोः ॥ ९ ॥ ॐ विं नमः जानुनोः ॥ १० ॥ ॐ तुं नमः पादमूलयोः ॥ ११ ॥ ॐ वं नमः लिङ्गे ॥ १२ ॥ ॐ रें नमः नाभौ ॥ १३ ॥ ॐ णिं नमः हृदये ॥ १४ ॥ ॐ यं नमः कण्ठे ॥ १५ ॥ ॐ भं नमः हस्तांगुलिमूलेषु ॥ १६ ॥ ॐ र्गों नमः मणिबन्धयोः ॥ १७ ॥ ॐ दें नमः कूर्परयोः ॥ १८ ॥ ॐ वं नमः बाहुमूलयोः ॥ १९ ॥ ॐ स्यं नमः आस्ये ॥ २० ॥ ॐ धीं नमः नासापुटयोः ॥ २१ ॥ ॐ मं नमः कपोलयोः ॥ २२ ॥ ॐ हिं नमः नेत्रयोः ॥ २३ ॥ ॐ धिं नमः कर्णयोः ॥ २४ ॥ ॐ यों नमः भ्रूमध्ये ॥ २५ ॥ ॐ यों नमः मस्तके ॥ २६ ॥ ॐ नं नमः पश्चिमवक्त्रे ॥ २७ ॥ ॐ प्रं नमः उत्तरवक्त्रे ॥ २८ ॥ ॐ चों नमः दक्षिणवक्त्रे ॥ २९ ॥ ॐ दं नमः पूर्ववक्त्रे ॥ ३० ॥ ॐ यात् नमः ऊर्ध्ववक्त्रे ॥ ३१ ॥ इति मन्त्रवर्णन्यासः ।

पदन्यास : ॐ तत् नमः शिरसि ॥ १ ॥ ॐ सवितुर्नमः भ्रुवोर्मध्ये ॥ २ ॥ ॐ वरेण्यं नमः नेत्रयोः ॥ ३ ॥ ॐ भर्गो नमः मुखे ॥ ४ ॥ ॐ देवस्य नमः कण्ठे ॥ ५ ॥ ॐ धीमहि नमः हृदये ॥ ६ ॥ ॐ धियो नमः नाभौ ॥ ७ ॥ ॐ यो नमः गुह्ये ॥ ८ ॥ ॐ नः नमः जानुनोः ॥ ९ ॥ ॐ प्रचोदयात् नमः पादयोः ॥ १० ॥ ॐ आपोज्योती रसोऽमृतं ब्रह्मभूर्भुवः स्वरोमिति शिरसि ॥ ११ ॥ ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं नमः नाभ्यादिपादांगुलीपर्यन्तम् ॥ १२ ॥ ॐ भर्गो देवस्य धीमहि नमः हृदयादिनाभ्यान्तम् ॥ १३ ॥ ॐ धियो यो नः प्रचोदयात् नमः मूर्द्धादिहृदयान्तम् ॥ १४ ॥ इति पदन्यासः ।

करन्यास : ॐ तत्सवितुर्ब्रह्मणे अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥ १ ॥ ॐ वरेण्यं विष्णवे तर्जनीभ्यां नमः ॥ २ ॥ ॐ भर्गो देवस्य रुद्राय मध्यमाभ्यां नमः ॥ ३ ॥ ॐ धीमहि ईश्वराय अनामिकाभ्यां नमः ॥ ४ ॥ ॐ धियो यो नः सदशिवाय कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥ ५ ॥ ॐ प्रचोदयात् सर्वात्मने करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥ ६ ॥ इति करन्यासः ।

हृदयादिषडङ्गन्यास : ॐ तत्सवितुर्ब्रह्मणे हृदयाय नमः ॥ १ ॥ ॐ वरेण्यं विष्णवे शिरसे स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ भर्गो देवस्य रुद्राय शिखायै वषट् ॥ ३ ॥ ॐ धीमहि ईश्वराय कवचाय हुम् ॥ ४ ॥ ॐ धियो यो नः सदाशिवाय नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ५ ॥ ॐ प्रचोदयात् सर्वात्मने अस्त्राय फट् ॥ ६ ॥ इति हृदयादिषडङ्गन्यासः ।

इस प्रकार न्यास करके ध्यान करें ।

ध्यान : ॐ **मुक्ताविद्रुमहेमनीलधवलच्छायैर्मुखैस्त्रीक्षणैर्युक्तामिन्दुनिबद्धरत्नमुकुटां तत्त्वात्मवर्णात्मिकाम् । गायत्रीं वरदाभयांकुशकशापाशं कपालं गुणं शंखं चक्रमथारविन्दुयुगलं हस्तैर्वहन्तीं भजे ॥ १ ॥ कुमारीमृग्वेदयुतां ब्रह्मरूपां विचिन्तयेत् । हंसस्थितांकुशकरां सूर्यमण्डलसंस्थिताम् ॥ २ ॥ मध्याह्ने विष्णुरूपाञ्च तार्क्ष्यस्थां पीतवासिनीम् । युवतीं सयजुर्वेदां सूर्यम्रडलसंस्थिताम् ॥ ३ ॥ सायाह्ने शिवरूपाञ्च वृद्धां वृषभवाहिनीम् । सूर्यमण्डलमध्यस्थां सामवेद समायुताम् ॥ ४ ॥**

इस प्रकार ध्यान करके मानसोपचार से पूजा करे । इसके पश्चात् सर्वतोभद्रमण्डल रचित पीठ पर मण्डूक से लेकर परतत्व तक के पीठ देवों को सब देवताओं की उपयोगी पद्धति से संस्थापित करके **"ॐ मण्डूकादिपरतत्वान्तपीठदेवताभ्यो नमः"** से पूजा करके अथवा स्व-स्व नामों से पूजा करके नवपीठ शक्ति की पूजा करे । तदनुसार पूर्वादि आठ दिशाओं में : ॐ रां दीप्तायै नमः १। ॐ रीं सूक्ष्मायै नमः २। ॐ रूँ जयायै नमः ३ । ॐ रें भद्रायै नमः ४ । ॐ रैं विभूत्यै नमः ५ । ॐ रों विमलायै नमः ६ । ॐ रौं अमोघायै नमः ७ । ॐ रं विद्युतायै नमः ८ । मध्ये । ॐ रः सर्वतोमुख्यै नमः ॥ ९ ॥ इस प्रकार पीठ शक्तियों की पूजा करे ।

ततः सवर्णादिनिर्मितं यन्त्रं ताम्रपात्रे निधाय घृतेनाभ्यज्य तदुपरिदुग्धधारां जलधारां च दत्त्वाग्न्युत्तारणमन्त्रं पठित्वा स्वच्छवस्त्रेणाशोष्य तदुपरि देव्या अष्टगन्धेन त्रिकोणं कृत्वा तद्बहिर्वर्तुलं तद्बाह्ये अष्टदलं तद्बहिश्चतुरस्रं चतुर्द्वारोपशोभितं यन्त्रं लिखित्वा "ॐ ब्रह्मविष्णु-रुद्रबिम्बात्मकाय सौराय योगपीठाय नमः" । इति मन्त्रेण पुष्पाद्यासनं दत्त्वा पीठमध्ये संस्थाप्य पुनर्ध्यात्वा मूलेन मूर्ति प्रकल्प्य । 'ॐ आगच्छ वरदे देवि अक्षरे ब्रह्मवादिनि । गायत्री छन्दसां मातर्ब्रह्मयोने नमोस्तु ते ॥ १ ॥' इति मन्त्रेणावाह्य गायत्रीमूलमन्त्रेण पाद्यादिपुष्पांतैरुपचारैः सम्पूज्य देव्या आज्ञां गृहीत्वा आवरणपूजां कुर्यात् । तथा च पुष्पाञ्जलिमादाय मूलमुच्चार्य 'ॐ संविन्मये परे देवि परामृतरसप्रिये । अनुज्ञां देहि गायत्री परिवारार्चनाय मे ।' इति पठित्वा पुष्पाञ्जलिं च दद्यात् । इत्याज्ञां गृहीत्वा आवरणपूजामारभेत् ।

इसके बाद सोने आदि से बने यन्त्र को ताम्रपात्र में रखकर घी लगाकर उसके ऊपर दूध की धारा, जल की धारा देकर अग्नि उतारने का मन्त्र पढ़कर सूखे वस्त्र से सुखाकर उसके ऊपर देवी का आठ सुगन्धों से त्रिकोण बनाकर उसके बाहर गोला बनाकर उसके बाहर आठ दल बनाकर उसके बाहर चतुष्कोण रेखा बनाकर उसमें चार द्वारों से शोभित मन्त्र लिखकर "**ॐ ब्रह्मविष्णुरुद्रबिम्बात्मकीय सौराययोगपीठाय नमः ।**" इस मन्त्र से पुष्पाद्यासन देकर पीठ के बीच में रखकर पुनः ध्यान करके मूल से मूर्ति बनाकर "**ॐ आगच्छ वरदे देवि अक्षरे ब्रह्मवादिनि । गायत्रि छन्दसां मातर्ब्रह्मयोनि नमोस्तुते**" इस मन्त्र से आवाहन करके गायत्री मन्त्र से पाद्यादि पुष्पान्त उपचारों से पूजा करके देवी से आज्ञा लेकर आवरण पूजा करे । फिर अँजलि में फूल लेकर मूल का उच्चारण करके "**ॐ संविन्मये परे देवि परामृतरसप्रिये । अनुज्ञां देहि गायत्रि परिवारार्चनाय मे ।**" यह पढ़कर पुष्पाञ्जलि देवे। इस प्रकार आज्ञा लेकर आवरण पूजा प्रारम्भ करे ।

ततः त्रिकोणस्य पूर्वकोणे ॐ गायत्र्यै नमः[१] १ । निर्ऋतिकोणे ॐ सावित्र्यै नमः[२] २ । वायुकोणे ॐ सरस्वत्यै नमः[३] ३ । इति पूजयेत् । ततः पुष्पाञ्जलिमादाय मूलमुच्चार्य 'ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले । भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥ १ ॥' इति पठित्वा पुष्पाञ्जलिं च दत्त्वा पूजितास्तर्पिताः सन्तु इति वदेत् । इति प्रथमावरणम् ॥ २ ॥ (ब्रह्मगायत्रीपूजनयन्त्र देखिये चित्र १)

इसके बाद त्रिकोण के पूर्वकोण में ॐ गायत्र्यै नमः ॥ १ ॥ निर्ऋतिकोणे ॐ सावित्र्यै नमः ॥ २ ॥ वायुकोणे ॐ सरस्वत्यै नमः ॥ ३ ॥ इससे पूजा करे । इसके बाद हाथ में फूल लेकर मूलमंत्र का उच्चारण करके "ॐ अभीष्ठसिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सले । भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम्" इसे पढ़कर पुष्पाञ्जलि देकर "पूजितास्तर्पिताः सन्तु" यह बोले । इति प्रथमावरणाम् । १ ।

वहाँ त्रिकोण के बाहर वृत्त में :

ॐ ब्रह्मणे नमः[४] ॥ १ ॥ ब्रह्म श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः । इति सर्वत्र वदेत् । ॐ विष्णवे नमः[५] । विष्णुश्रीपा० ॥ २ ॥ ॐ रुद्राय नमः[६] । रुद्रश्रीपा० ॥ ३ ॥ इस प्रकार पूजा करके पुष्पांजलि देवे । इति द्वितीयावरण । २ ।

इसके बाद अष्टदलों में पूर्वादि चारों दिशाओं में :

ॐ आदित्याय नमः[७] । आदित्यश्रीपा० ॥ १ ॥ ॐ भानवे नमः[८] । भानुश्रीपा० ॥ २ ॥ ॐ भास्कराय नमः[९] । भास्करश्रीपा० ॥ ३ ॥ ॐ रवये[१०] नमः । रविश्रीपा० ॥ ४ ॥ आग्नेयादिचतुष्कोणेषु ॐ ऊषायै नमः[११] । ऊषाश्रीपा० ॥ ५ ॥ ॐ प्रज्ञायै नमः[१२] ।

प्रज्ञाश्रीपा० ॥ ६ ॥ ॐ प्रभायै नमः[१३] । प्रभाश्रीपा० ॥ ७ ॥ ॐ सन्ध्यायै नमः[१४] । सन्ध्याश्रीपा० ॥ ८ ॥ इस प्रकार आठों दिशाओं की पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवे । इति तृतीयावरण । ३ ।

इसके बाद अष्टदलों में पूर्वादिक्रम से :

ॐ प्रह्लादिन्यै नमः[१५] । प्रह्लादिनीश्रीपा० ॥ १ ॥ ॐ प्रभायै नमः[१६] । प्रभाश्रीपा० ॥ २ ॥ ॐ नित्यायै नमः[१७] । नित्याश्रीपा० ॥ ३ ॥ ॐ विश्वंभरायै नमः[१८] । विश्वंभराश्रीपा० ॥ ४ ॥ ॐ विशालिन्यै नमः[१९] । विशालिनीश्रीपा० ॥ ५ ॥ ॐ प्रभावत्यै नमः[२०] । प्रभावतीश्रीपा० ॥ ६ ॥ ॐ जयायै नमः[२१] । जयाश्रीपा० ॥ ७ ॥ ॐ शांत्यै नमः[२२] । शांतिश्रीपा० ॥ ८ ॥ इस प्रकार आठों दलों की पूजा करके पुष्पाञ्जलि देनी चाहिये । इति चतुर्थावरण । ४ ।

इसके बाद अष्टदलों के मूलों में पूर्वादि क्रम से :

ॐ कांत्यै नमः[२३] । कांतिश्रीपा० ॥ १ ॥ ॐ दुर्गायै नमः[२४] । दुर्गाश्रीपा० ॥ २ ॥ ॐ सरस्वत्यै नमः[२५] । सरस्वतीश्रीपा० ॥ ३ ॥ ॐ विश्वरूपायै नमः[२६] । विश्वरूपाश्रीपा० ॥ ४ ॥ ॐ विशालायै नमः[२७] । विशालाश्रीपा० ॥ ५ ॥ ॐ ईशायै नमः[२८] । ईशाश्रीपा० ॥ ६ ॥ ॐ चापिन्यै नमः[२९] । चापिनीश्रीपा० ॥ ७ ॥ ॐ विमलायै नमः[३०] । विमला श्रीपा० ॥ ८ ॥ इस प्रकार आठों की पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवे । इति पञ्चमावरण । ५ ।

इसके बाद अष्टदलों के मध्य में पूवादि क्रम से :

ॐ अपहारिण्यै नमः[३१] । अपहारिणीश्रीपा० ॥ १ ॥ ॐ सूक्ष्मायै नमः[३२] । सूक्ष्माश्रीपा० ॥ २ ॥ ॐ विश्वयोन्यै नमः[३३] । विश्वयोनिश्रीपा० ॥ ३ ॥ ॐ जयावहायै नमः[३४] । जयावहाश्रीपा० ॥ ४ ॥ ॐ पद्मालयायै नमः[३५] । पद्मालयाश्रीपा० ॥ ५ ॥ ॐ परायै नमः[३६] । पराश्रीपा० ॥ ६ ॥ ॐ शोभायै नमः[३७] । शोभाश्रीपा० ॥ ७ ॥ ॐ पद्मरूपायै नमः[३८] । पद्मरूपाश्रीपा० ॥ ८ ॥ इस प्रकार आठों की पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवे । इति षष्ठावरण । ६ ।

इसके बाद अष्टदलाग्रों में :

ॐ आं ब्राह्मयै नमः[३९] । ब्राह्मीश्रीपा० ॥ १ ॥ ॐ ईं माहेश्वर्य्यै नमः[४०] । माहेश्वरीश्रीपा० ॥ २ ॥ ॐ ऊं कौमार्य्यै नमः[४१] । कौमारीश्रीपा० ॥ ३ ॥ ॐ ॠं वैष्णव्यै नमः[४२] । वैष्णवीश्रीपा० ॥ ४ ॥ ॐ ॡं वाराह्यै नमः[४३] । वाराहीश्रीपा० ॥ ५ ॥ ॐ ऐं इन्द्राण्यै नमः[४४] । इन्द्राणीश्रीपा० ॥ ६ ॥ ॐ औं चामुण्डायै नमः[४५] । चामुण्डाश्रीपा० ॥ ७ ॥ ॐ अः महालक्ष्म्यै नमः[४६] । महालक्ष्मीश्रीपा० ॥ ८ ॥ इस प्रकार आठ मातृकाओं का पूजन करके पुष्पाञ्जलि देवे । इति सप्तमावरण । ७ ।

इसके बाद भूपुर के भीतर पूर्व आदि आठ दिशाओं में :

ॐ सों सोमाय नमः[४७] । सोमश्रीपा० ॥ १ ॥ ॐ बुं बुधाय नमः[४८] । बुधश्रीपा० ॥ २ ॥ ॐ गुं गुरवे नमः[४९] । गुरुश्रीपा० ॥ ३ ॥ ॐ शुं शुक्राय नमः[५०] । शुक्रश्रीपा० ॥ ४ ॥ ॐ भौं भौमाय नमः[५१] । भौमश्रीपा० ॥ ५ ॥ ॐ शं शनैश्चराय नमः[५२] । शनैश्चरश्रीपा० ॥ ६ ॥ ॐ रां राहवे नमः[५३] । राहुश्रीपा० ॥ ७ ॥ ॐ कें केतवे नमः[५४] । केतुश्रीपा० ॥ ८ ॥ इस प्रकार आठों ग्रहों का पूजन करके पुष्पाञ्जलि देवे । इत्यष्टमावरण । ८ ।

ततो भूपूराद्बहिः पूर्वादिक्रमेण इन्द्रादिदशदिक्पालान् वज्राद्यायुधानि च सम्पूज्य पुष्पाञ्जलिं च दद्यात् ॥ इत्यमावरणैर्देवीं दशभिः सम्पूज्य धूपादिनमस्कारान्तं सम्पूज्येत् । ततो गायत्री-

शापमोचनं कृत्वा संस्कृतां मालामादाय हृदये धारयन् सर्वे जापकाः बद्धासनेषूपविष्टाः सुनिश्चलाः जपध्यानसमायुक्ताः नासाग्रमवलोकिनो मौनिनः समाहित-मानसउन्नतगात्रा एकाग्र चित्तेन मन्त्रदेवतां सवितारं ध्यायन्तो मन्त्रार्थं स्मरन्तः सप्तव्याहृतीस्त्यक्त्वा सप्रणवव्याहृतित्रयपूर्वकं "ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि ॥ धियो यो नः प्रचोदयात्" ॥ इति मन्त्रं मध्यंदिनावधिजपेयुः ॥

इसके बाद भूपुर के बाहर पूर्वादि क्रम से इन्द्रादि दश दिक्पालों की तथा उनके वज्र आदि आयुधों की पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवे । इस प्रकार दश आवरणों से देवी की पूजा करके धूपदान से लेकर नमस्कारपर्यन्त पूजा करे । इसके बाद गायत्रीशाप का मोचन करके संस्कृत माला लेकर हृदय में धारण करते हुए सभी जापक स्थिर आसन पर बैठे हुए जप और ध्यान में लगे हुए नासिका के अग्रभाग पर दृष्टि जमाये हुए, मौन व्रत धारण किये हुए, मन को समाधिस्थ किये शरीर को सीधा रखे हुए एकाग्रचित्त से मन्त्र देवता का विस्तारपूर्वक ध्यान और मन्त्रार्थ का स्मरण करते हुए सप्त व्याहृतियों को छोड़कर सप्रणव तीन व्याहृतियों के साथ "ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि । धियो यो नः प्रचोदयात् ।" इस मंत्र को मध्याह्नकाल तक जपे ।

ततो जपान्ते "ॐ त्वं माले सर्वदेवानां प्रीतिदा शुभदा भव ॥ शुभं कुरुष्व मे भद्रे यशो वीर्यं च देहि मे । ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं सिद्ध्यै नमः ॥ इति मालां शिरसि निधाय गोमुखीं रहस्ये स्थापयेत् ॥ न कस्यापि दर्शयेत् ॥ नाशुचिः स्पर्शयेत् । नान्येस्मै दद्यात् ॥ स्वयोनिवद्गुप्तां कुर्यात् । इति जपं कृत्वा त्रिःप्राणानायम्य पूर्वोक्त न्यासं कृत्वा कवचादिना प्रार्थयित्वा पञ्चोपरारैः सम्पूज्य नीराजनं कृत्वा पुष्पाञ्जलिं च दत्त्वा "ॐ गुह्यातिगुह्यगोप्त्री त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम् ॥ सिद्धिर्भवतु मे देवि प्रसन्ना सर्वदा भव ॥ १ ॥" इति देव्या दक्षिणकरे जपसमर्पणजलं च दद्यात् ॥ एवं प्रत्यहं समासंख्य एव जपो न तु न्यूनाधिकः ।

जप के अन्त में "**ॐ त्वं माले सर्वदेवानां प्रीतिदा शुभदा भव । शुभं कुरुष्व मे भद्रे यशोवीर्यश्च देहि मे ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं सिद्धये नमः ।**" इससे माला को शिर पर रखकर गोमुखी को एकान्त में रख देवे, उसे किसी को दिखलाये नहीं, अपवित्र दशा में स्पर्श न करे, अन्य किसी को न दे तथा अपनी योनि के समान गुप्त रक्खे । इस प्रकार जप करके तीन प्राणायाम करके पूर्वोक्त न्यास करके कवच आदि से प्रर्थना करके पञ्चोपचार से पूजा तथा नीराजन करके पुष्पाञ्जलि देकर "ॐ गुह्यातिगुह्य गोप्त्री त्वं गृहाणास्मत् कृतं ज़पम् सिद्धिर्भवतु मे देवि प्रसन्ना सर्वदा भव ॥ २ ॥" इससे देवी के दक्षिण हाथ में जप समर्पण - जल देवे । इस प्रकार प्रतिदिन समान संख्यक जप होना चाहिये । न्यूनाधिक नहीं ।

सर्वे जापका भूमौ शयानाः हविष्यान्नमश्नन्तो ब्रह्मचर्याऽस्पृश्यस्पर्शादिनियमांश्चरेयुः । अस्य पुरश्चरणं चतुर्विंशतिलक्षजपः ॥ जपदशांशतो होमः । तत्तद्दशांशेन तर्पणमार्जनब्राह्मणभोजनं च कुर्यात् ॥

सभी जापक भूमि पर शयन, हविष्य अन्न का भोजन, तथा ब्रह्मचर्य का पालन करते हुए स्पृश्यास्पृश्य के नियमों का पालन करें । इस गायत्री मन्त्र का पुरश्चरण चौबीस लाख जप है । जप का शतांश होम होता है । होम के दशांश से तर्पण, तत्तद्दशांश मार्जन तथा ब्राह्मणभोजन कराना चाहिये ।

देशकालौ संकीर्त्य अद्य पुरश्चरणसाङ्गतासिद्ध्यर्थं होमविधिं करिष्ये ॥ इति सङ्कल्प्य सामान्यतो गणपतिं सम्पूज्य ततः कुण्डे स्थण्डिले वा स्वगृह्योक्तविधिना पञ्चभूसंस्कारपूर्वकं अग्निं प्रतिष्ठाप्य ग्रहपीठे सूर्यादिनवग्रहमण्डलदेवानावाह्य सम्पूज्य कलशस्थापनं कृत्वा कुशकण्डिकां सम्पाद्याघारावाज्यभागौ हुनेत् ॥

होम प्रकार : संकल्प करके गणपति की पूजा करे तदनन्तर कुण्ड या स्थण्डिल पर अपने गृह्यसूत्र के अनुसार पञ्चभूतसंस्कारपूर्वक अग्नि की स्थापना करके ग्रहपीठ पर सूर्यादि नवग्रह मण्डल के देवों का आवाहन कर उनकी पूजा करके कलश स्थापना करके कुशकण्डिका सम्पादित करके आघारावाज्यभाग की आहुति दे ।

'ॐ इदं हवनीयद्रव्यमन्वाधानोक्तदेवताभ्योस्तु न मम ॥' इति यजमानो द्रव्यत्यागं कुर्यात् ॥ ततः सूर्यादि ग्रहेभ्योऽर्कादिसमिच्चर्वाज्याहुतिभिः प्रत्येकमष्टाविंशतिमष्टौ वा हुत्वा तैरैव व द्रव्यैरधिप्रत्यधिदेवताभ्यश्चतुश्च तु:संख्याकाभिः पञ्चलोकपालदिक्पालेभ्यश्च द्विद्विसंख्याकाभिर्जुहुयात् ॥

"ॐ इदं हवनीय द्रव्यमन्वाधानोक्त देवताभ्योस्तु न मम" इस प्रकार यजमान द्रव्य का त्याग करे। इसके बाद सूर्यादि ग्रहों से अर्कादि समिधा, चरु तथा घी की आहुतियों से प्रत्येक को अट्ठाइस या आठ आहुति देकर उन्हीं द्रव्यों से प्रत्येक देवता के लिये चार - चार संख्यक पञ्च लोकपालों तथा दिक्पालों के लिये दो - दो संख्यक आहुतियों से होम करे ।

ततः आवरणदेवताभ्यश्चर्वादिद्रव्यैरेकैकाहुतिभिर्हुत्वां प्रधानहोमं कुर्यात् । तथा च प्रधानदेवसवित्रे चतुर्विंशति सहस्रतिलाहुतिभिस्त्रिसहस्र संख्याकाभिः पायसाहुतिभिस्त-वतीभिर्घृताहुतिभिस्तावंतीभिर्दूर्वाहुतिभि-स्तावतीभिः क्षीरद्रुमसमिधाहुतिभिश्च हुत्वा शेषेण स्विष्टकृद्धोमं कृत्वा समापयेत् ॥ होमकाले 'इदं सवित्रे न मम' इति त्यागः ॥ होमे सप्रणवा व्याहृतिरहिता स्वाहान्ता गायत्री । दूर्वात्रयस्यैकाहुतिः । दूर्वासमिधां दधिमध्वाज्याक्तानां होमः ॥

इसके बाद आवरण देवताओं के लिये चरु आदि द्रव्यों से एक-एक आहुति से प्रधान होम करे। प्रधान सविता देव के लिये चौबीस हजार तिल की आहुतियों से, एक हजार खीर की आहुतियों से, उतनी ही घी की आहुतियों से, उतनी ही दुर्वा की आहुतियों से, उतनी ही क्षीरीवृक्षों की समिधाओं से आहुति देकर शेष से स्विष्टकृत होम करके समापन करे । होम के समय में 'इदं सवित्रे न मम' इससे त्याग करना चाहिये । होम में प्रणव सहित व्याहृति से रहित स्वाहान्ता गायत्री होती है । तीन दूर्वा की एक आहुति होती है । दूर्वा की समिधा को दही, मधु और घी से तर करके होम करना चाहिए ।

ततो बलिदानान्ते मूलादौ संयोज्य "समुद्रज्येष्ठ०" इत्यादिभिर्यजमानस्याभिषेकः ॥ अभिषेकान्ते प्रतिलक्षं तु स्वर्णनिष्कत्रयं तदर्धं वा शक्त्या वा दक्षिणां प्रत्येकब्राह्मणाय दत्वा आचार्याय द्विगुणा दद्यात् ॥ ततो जले सवितारं सम्पूज्य होमसंख्यादशांशेन गायत्र्यंते सवितारं तर्पयामीत्युक्त्वा दुग्धमिश्रितजलेन तर्पणं कुर्यात् ॥ ततस्तर्पण दशांशेन गायत्र्यंते "आत्मानमभिषिंचामि नमः" इति यजमानमूर्ध्न्यभिषेकः ॥ होमतर्पणाभिषेकानां मध्ये समर्थो न भवति चेत् तत्तत्स्थानेतद्द्विगुणो जपः ॥

इसके बाद बलिदान करके मूलादि में जोड़ कर 'समुद्र ज्येष्ठा०' (ऋग्वेद ७, ४९, १) इत्यादि मंत्रों से यजमान का अभिषेक करना चाहिये । अभिषेक के बाद लाख पीछे तीन स्वर्णनिष्क अथवा उसका आधा शक्ति के अनुसार प्रत्येक ब्राह्मण को दक्षिणा देकर आचार्य को दूनी दक्षिणा देना चाहिये । इसके बाद जल में सूर्य की पूजा करके होम की संख्या के दशांश से गायत्री के अंत में 'सवितारं तर्पयामि' यह कह कर दुग्धमिश्रित जल से तर्पण करे। इसके बाद तर्पण के दशांश से गायत्री के अंत में 'आत्मानाभिषिञ्चामि नमः, से यजमान के शिर पर अभिषेक करे। होम, तर्पण और अभिषेक के बीच यदि समर्थ न हो तो उस स्थान पर उससे दूना अभिषेक करना चाहिये ।

तत् अभिषेकसंख्यादशांशं वाधिकं ब्राह्मणान् भोजयेत् ॥ ततो ब्राह्मणान् दक्षिणादिभिः परितोष्य आशीर्वादं गृहीत्वा चतुर्विंशति लक्षात्मकगायत्रीपुरश्चरणं सम्पूर्णमस्त्विति भवन्तो ब्रुवन्त्विति विप्रान प्रार्थ्य ते च गायत्रीपुरश्चरणं सम्पूर्णमस्त्विति ब्रूयः ॥ ततः कर्मपूर्तिकामो विष्णुं स्मरेत् ॥

इसके बाद अभिषेक संख्या का दसवाँ भाग या अधिक ब्राह्मणों को भोजन कराये और दक्षिणा आदि से उन्हें संतुष्ट करके आशीर्वाद लेकर "चौबीस लाख गायत्री मन्त्र का पुरश्चरण सम्पूर्ण हो ऐसा आप लोग कहें' यह ब्राह्मणों से प्रार्थना करे। तब ब्राह्मण बोलें 'गायत्री पुरश्चरण सम्पूर्णमस्तु' । इसके बाद कामनापूर्ति की इच्छा से विष्णु का स्मरण करें।

कर्ता ब्राह्मणैः सह हविष्याशी सत्यवागधःशायी परिगृहीतभूप्रदेशानतिचारी च भवेत् ॥ एवं कृते गायत्रीपुरश्चरणं सिद्धं भवित । सिद्धे च मन्त्रे मन्त्री प्रयोगान् साधयेत् ॥

यजमान ब्राह्मणों के साथ हविष्य का आहार करने वाला, सत्यवादी, भूमि पर शयन करने वाला अपने निर्धारित क्षेत्र से बाहर न जाय। ऐसा करने पर गायत्री पुरश्चरण सिद्ध होता है। मन्त्र के सिद्ध होने पर साधक प्रयोगों को सिद्ध करे। जैसा कि कहा गया है–

तथा च–"गायत्रीच्छन्दोमन्त्रस्य यथासंख्याक्षराणि च ॥ तावल्लक्षाणि कर्त्तव्यं पुरश्चरणकं तथा ॥ १ ॥ जुहुयात्तद्दशांशेन सघृतेन पयोंधसा ॥ तिलैः पत्रैः प्रसूनैश्च यवैश्च मधुरान्वितैः ॥ २ ॥" (शारदातिलके तु शतांशहोमोप्युक्तः) ॥ तेन मया प्रोक्तम् ॥ तथा च- "तत्वसंख्यासहस्राणि मन्त्रविज्जुहुयात्तिलैः ॥ सर्वपापविनिर्मुक्तो दीर्घमायुः स विंदति ॥ ३ ॥

गायत्री मन्त्र के जितने अक्षर हैं उतने लाख पुरश्चरण करना चाहिये । उसके दशवें भाग से घी, दूध और अन्न, तिल, पत्र, पुष्प, मधुर रस से, युक्त यव से होम करना चाहिये । शारदा तिकल में शतांश होम भी कहा गया है। इसीलिये मैंने कहा है–मन्त्रवित् पाँच हजार तिलों की आहुति देवे। जो ऐसा करता है वह सब पापों से मुक्त होकर दीर्घ आयु को प्राप्त करता है।

आयुषेनाज्यहविषा केवलेनाथ सर्पिषा ॥ दूर्वात्रिकैस्तिलैर्मन्त्री जुहुयात्त्रिसहस्रकम् ॥४॥ अरुणाब्जैस्त्रिमध्वक्तैर्जुहयादयुतं ततः महालक्ष्मीर्भवेत्तस्य षण्मासान्नात्र संशयः ॥५॥

साधक आयुष्य के लिये घी, हविष्य या केवल घी से, तीन-तीन दूब से, तिल से तीन हजार आहुति देवे। इसके बाद मधु से युक्त लाल कमलों से आहुति देवे। जो ऐसा करेगा उसे दस मास से महालक्ष्मी की प्राप्ति होगी। इसमें कोई संशय नहीं है।

ब्रह्मश्रियेऽत्र जुहुयात्प्रसूनैर्ब्रह्मवृक्षजैः ॥ बहुना किमिहोक्तेन यथा वत्साधुसाधिता ॥६॥ द्विजन्मनामियं विद्या सिद्धा कामदुधा मता । आमध्याह्नं जपं कुर्यादुपांशु वाऽथ मानसम् ॥७॥

साधक ब्रह्मश्री के लिये पलास के फूलों से होम करे। अधिक कहने से क्या ? यथावत् पुरश्चरण करने से द्विजातियों की यह विद्या सिद्ध होने पर इच्छा को पूर्ण करने वाली मानी गयी है। प्रातः से मध्याह्न काल तक उपांशु जाप या मानस जाप करना चाहिये।

मन्त्रमहोदधौ : हविष्यं निशि भुंजीत त्रिःस्नाय्यभ्यङ्गवर्जितः ॥ व्यग्रतालस्य निष्ठीवक्रोधपादप्रसारणम् ॥८॥ अन्यभाषां त्यजेक्षे च जपकाले त्यजेत्सुधीः ॥ स्त्रीशूद्रभाषणं निन्दां ताम्बूलं शयनं दिवा ॥९॥ प्रतिग्रहं नृत्यगीते कौटिल्यं वर्जयेत्सदा ॥

मन्त्रमहोदधि में कहा गया है कि तीन बार स्नान करना चाहिये, शरीर में तेल नहीं लगाना चाहिये और रात्रि में हविष्य का भोजन करना चाहिये। साधक को व्यग्रता, आलस्य, थूकना, क्रोध करना,

पैर फैलाना, दूसरों से बात करना, अन्त्यज को देखना जप के समय छोड़ देना चाहिये। उसे स्त्री तथा शूद्र से बात करना, निन्दा, पान चबाना, दिन में सोना, दान लेना, नाचना-गाना, कुटिलता करना भी सदा मना है।

भूशय्यां ब्रह्मचर्यं च त्रिकालं देवतार्चनम् ॥१०॥
नैमित्तिकार्चनं देवस्तुतिं विश्वासमाश्रयेत् ।
प्रत्यहं प्रत्यहं तावन्नैव न्यूनाधिकं क्वचित् ॥११॥
एवं जपान्समाप्यान्ते दशांशं होममाचरेत् ।
तर्पणं तद्दशांशेन मार्जनं तद्दशांशतः ॥१२॥
एवं कृत पुरश्चर्यः पुरश्चरणसिद्धये ।
सिद्धे मन्त्रे प्रकुर्वीत प्रयोगान्मनसेप्सितान् ॥१३॥

साधक को चाहिये कि वह भूमि पर शयन करे, ब्रह्मचर्य का पालन करे, तीन समय देवताओं की पूजा करे, नैमित्तिक पूजा, देवता की स्तुति और विश्वास में श्रद्धा रक्खे । ' प्रतिदिन समान ही जप करना चाहिये कम या अधिक नहीं। इस प्रकार जप को समाप्त करके अन्त में दशांश होम करना, उसका दशांश तर्पण करना और उसका दशांश मार्जन करना चाहिये। इस प्रकार पुरश्चरण करने वाला पुरश्चरण की सिद्धि के लिये मन्त्रसिद्ध होने पर यथेष्ट प्रयोगों को करे।

अथ कार्यपरत्वेन प्रयोगो यथा । विद्यार्थी वाग्भवाद्यम् । लक्ष्मीकामः श्रीबीजम् । वश्यार्थी कामबीजम् । संर्वकामार्थी मायाबीजम् । आयुःकामार्थी मृत्युञ्जयचतुरक्षसहितं जपेदिति जपविधिः ।

कार्यपरक प्रयोगः विद्यार्थी को वाग्भवादि बीजप्रयोग, धन चाहने वाले को श्री बीजप्रयोग, वशीकरण करने वाले को काम बीज प्रयोग, सर्वकमार्थी को माया बीज प्रयोग और आयुकामार्थी को चार अक्षर सहित मृत्युञ्जय का जप करना चाहिये। इति जपविधि।

मध्याह्ने मितभुग्मौनी त्रिस्थानार्चनतत्परः ।
जपेल्लक्षत्रयं धीमान्नान्यमानसिकस्तु यः ॥१४॥
कर्मभिर्यो जपेत्पश्चात् क्रमशः स्वेच्छयापि वा ।
यावत्कार्यं न कुर्वीत न लोपेत्तावता व्रतम् ॥१५॥
आदित्यस्योदये स्नात्वा सहस्रं प्रत्यहं जपेत् ।
आयुरारोग्यमैश्वर्यं धनं च लभते ध्रुवम् ॥१६॥

बुद्धिमान साधक मध्याह्न में मितभोजी, मौनी, तीन काल देवपूजन करने वाला, अन्यमना न होकर तीन लाख गायत्री का क्रमशः जप करे पश्चात् स्वेच्छा से करे। जब तक कार्य न करे तब तक व्रत को न छोड़े। सूर्योदय होने पर स्नान करके एक हजार प्रतिदिन गायत्री का जप करे। ऐसा साधक आयु, आरोग्य, ऐश्वर्य और धन निश्चित रूप से प्राप्त करता है।

त्रिरात्रोपोषितः सम्यग्घृतं हुत्वा सहस्रशः ।
सहस्रं लाभमाप्नोति हुत्वाग्नौ खदिरेन्धनम् ॥१७॥

जो तीन रात्रि तक उपवास करके घी से एक हजार खैर की समिधा से आहुति देता है वह एक हजार लाभ प्राप्त करता है।

समिद्भिश्चैव पालाशैर्घृताक्तैश्च हुताशने ।
सहस्रं लाभमाप्नोति राहुसूर्य समागमे ।।१८।।

राहु सूर्य के समागम में अर्थात् सूर्यग्रहणकाल में जो घी से युक्त पलाश की समिधाओं से हवन करता है वह एक हजार लाभों को प्राप्त करता है।

हुत्वा तु खदिरं वह्नौ घृताक्तं रक्तचन्दनम् ।
सहस्रहेम चाप्नोति राहुचन्द्रसमागमे ।।१९।।

घी से युक्त खैर की समिधा तथा लाल चन्दन से चन्द्रग्रहण के समय जो होम करता है वह हजार स्वर्ण प्राप्त करता है।

रक्तचन्दनमिश्रं तु सघृतं हव्यवाहने ।
हुत्वा गोमयमाप्नोति सहस्रं गोमयं द्विजः ।।२०।।

जो द्विज घी सहित लाल चन्दन का समिधा और गोबर के कण्डे की अग्नि में होम करता है वह हजार गायें प्राप्त करता है।

जातीचम्पकराजार्ककुसुमानां सहस्रशः ।
हुत्वा वस्त्रमवाप्नोति घृताक्तानां हुताशने ।।२१।।

जो घी से युक्त चमेली, चम्पा, सफेद मदार के एक हजार फूलों से होम करता है वह वस्त्र प्राप्त करता है।

सूर्यमण्डलविम्बे च हुत्वा तोयं सहस्रशः ।
सहस्रं प्राप्नुयाद्धेम रौप्यमिन्दुमरो हुते ।।२२।।

सूर्यमण्डल के बिम्ब की ओर हजारों बार जल का होम कर मुनष्य स्वर्ण प्राप्त करता है तथा चन्द्रबिम्ब की ओर हजारों बार जल का होम कर चाँदी प्राप्त करता है।

अलक्ष्मीपापसंयुक्ते मल व्याधिविनाशके ।
मुच्येत्सहस्रजाप्येन स्नायाद्यस्तु जलेन वै ।।२३।।

अलक्ष्मी और पाप से संयुक्त व्याक्ति मल, व्याधिविनाशक जल से स्नान करने और एक हजार जप करने पर सभी पापों से मुक्त हो जाता है।

गोघृतेन सहस्रेण लोध्रेण जुहुयाद्यदि ।
चौराग्निमारुतोत्थानि भयानि न भवन्ति वै ।।२४।।

जो गो-घृत से युक्त एक हजार लोध की समिधाओं से होम करता है उसे चोर, अग्नि और हवा से उठने वाले भय कभी प्राप्त नहीं होते।

क्षीराहारो जपेल्लक्षमपमृत्युमपोहति ।

जो केवल दुग्धाहार करके एक लाख जप करता है वह मृत्यु पर विजय प्राप्त कर लेता है।

घृताशी प्राप्नुयान्मेधां बहुविज्ञानसञ्चयाम् ।।२५।।

घृत का सेवन करने वला अनेक प्रकार के विज्ञानों को संचय करने वाली धारणावती बुद्धि को प्राप्त करता है।

हुत्वा वेत सपत्राणि घृताक्तानि हुताशने ।
लक्षाधिपस्य पदवीं सार्वभौमं न संशयः ।।२६।।

अग्नि में घी से युक्त बेंत के पत्तों से जो होम करता है वह लखपति की सार्वभौम पदवी प्राप्त करता है, इसमें कोई संशय नहीं है।

लक्षेण भस्महोमस्य हुत्वा ह्युत्तिष्ठते जलात् ।
आदित्याभिमुखः स्थित्वा नाभिमात्रे जले शुचौ ॥२७॥
गर्भपातातिप्रदराश्चान्ये स्त्रीणां महारुजः ।
नाशमेष्यन्ति ते सर्वे मृतवत्सादि दुःखदाः ॥२८॥

जो पवित्र जलाशय में नाभितक जल में सूर्याभिमुख खड़ा होकर भस्म का एक लाख होम करता है, उसके गर्भपात, प्रदर, मृतवत्सा आदि जो भारी दुःखदायक स्त्रियों के रोग हैं, वे सब नष्ट हो जाते हैं।

तिलानां लक्षहोमेन घृताक्तानां हुताशने ।
सर्वकामसमृद्धात्मा परं स्थानमवाप्नुयात् ॥२९॥

अग्नि में घी से युक्त तिलों का एक लाख होम करने से मनुष्य समस्त कामनाओं की सिद्धि से समृद्ध होकर श्रेष्ठ स्थान को प्राप्त करता है।

यवानां लक्षहोमेन घृताक्तानां हुताशने।
सर्वकामसमृद्धात्मा परां सिद्धिमवाप्नुयात् ॥३०॥

घृत से युक्त यव की एक लाख आहुतियाँ देने से मनुष्य की कामनायें पूरी हो जाती हैं और वह परम सिद्ध को प्राप्त करता है ।

घृतस्याहुतिलक्षेण सर्वान् कामानवाप्नुयात् ।
पञ्चगव्याशनो लक्षं जपेज्जातिस्मृतिर्भवेत् ॥ ३१ ॥
तदेव ह्यनले हुत्वा प्राप्नोति बहुसाधनम् ।
अन्नादिहवनान्नित्यमन्नाद्यं च भवेत्सदा ॥३२॥
जुहुयात्सर्वसाध्यानामाहुत्यायुतसंख्यया ।

घी की एक लाख आहुति देने से मनुष्य सब कामनाओं को प्राप्त करता है। जो व्यक्ति पञ्चगव्य का सेवन करता हुआ एक लाख जप करता है । वह पूर्वजन्म की स्मृतियों को प्राप्त कर लेता है। पञ्चगव्य की ही अग्नि में आहुति देने से मनुष्य बहुत साधनों को प्राप्त करता है। अन्नादि के नित्य हवन करने से अन्नादि खाद्य पदार्थ नित्य प्राप्त होते हैं। इन साध्यों की प्राप्ति के लिए दस हजार होम करना चाहिये।

रक्तसिद्धार्थकान् हुत्वा सर्वान् साधयते रिपून् ॥३३॥

समस्त देवताओं के लिये लाल सरसो से दस हजार आहुतियाँ देकर मनुष्य सब शत्रुओं पर विजय प्राप्त कर लेता है।

लवणं मधुसंयुक्तं हुत्वा सर्ववशी भवेत् ।

मधु से युक्त नमक का होम करके मनुष्य सबको वश में कर लेता है।

करवीराणि च हुत्वा तु रक्तानि ज्वालयेज्जलम् ॥३४॥
हुत्वा भल्लातकं तैलं देशादेव प्रचालयेत् ।

लाल कनेर का होम करने से मनुष्य जल में आग लगा सकता है। भिलावों के तेल का होम कर मनुष्य देश को ही हिला सकता है।

हुत्वा तु निम्बपत्राणि नृणां विद्वेषशान्तये ॥३५॥

नीम के पत्तों का होम करके मुनष्य शत्रुता की शांति कर सकता है।

रक्तानां तण्डुलानां च घृताक्तानां हुताशने ।
हुत्वा बलमवाप्नोति शत्रुभिर्न स जीयते ॥३६॥

लाल चावल तथा घी मिलाकर जो होम करता है वह बल को प्राप्त करता है और शत्रुओं द्वारा पराजित नहीं होता।

प्रत्यानयन सिद्ध्यर्थं मधुसर्पिःसमन्वितम् ।
गवां क्षीरं प्रदीप्तेग्नौ जुह्वतस्तत्प्रशाम्यति ॥३७॥

प्रत्यानयन-सिद्धि के लिये मधु और घी से युक्त गाय के दूध से जो प्रदीप्त अग्नि में होम करता है वह उसे शांत कर देता है।

ब्रह्मचारी मिताहारो यः सहस्रत्रयं जपेत् ।
संवत्सरेण लभते धनैश्वर्यं न संशयः ॥३८॥

जो मनुष्य ब्रह्मचारी रहकर मिताहार करता हुआ तीन हजार जप करता है वह एक वर्ष में धन और ऐश्वर्य प्राप्त करता है, इसमें संशय नहीं है।

शमीबिल्वपलाशानामर्कस्य तु विशेषतः ।
पुष्पाणां समिधश्चैव हुत्वा हेमह्यवाप्नुयात् ॥३९॥

शमी, बेल, पलास तथा विशेष रूप से मदार के फूलों और समिधाओं से जो होम करता है। वह स्वर्ण प्राप्त करता है।

आब्रह्मत्र्यम्बकादीनां यस्यायतनमाश्रितः ।
जपेल्लक्षं निराहारः स तस्य वरदो भवेत् ॥४०॥

जो ब्रह्मा, शिव आदि देवताओं के मंदिर में निराहार रहकर एक लाख जप करता है वह उस देवता से वरदान प्राप्त करता है।

बिल्वानां लक्षहोमेन घृताक्तानां हुताशने ।
परां श्रियमवाप्नोति यदि न भ्रूणहा भवेत् ॥४१॥

घी से युक्त बेलों से एक लाख होम करने से मनुष्य परम लक्ष्मी को प्राप्त करता है, यदि उसने भ्रूण हत्या न की हो।

पद्मानां लक्षहोमेन घृताक्तानां हुताशने ।
प्राप्नोति राज्यमखिलं सुसम्पन्नमकण्टकम् ॥४२॥

घृत से युक्त एक लाख कमलों से जो होम करता है वह सब साधानों से युक्त होकर अकण्टक पूर्ण राज्य प्राप्त करता है।

पञ्चविंशतिलक्षेण दधिक्षीरं हुताशने ।
स्वदेहे सिद्ध्यते जन्तुः कौशिकस्य मतं तथा ॥४३॥

कौशिक के मतानुसार जो व्यक्ति दही और दूध की एक लाख आहुतियों से होम करता है वह मनुष्य अपने इसी शरीर में ही सिद्धि प्राप्त करता है।

एकाहं पञ्चगव्याशी एकाहं मारुताशनः ।
एकाहं च द्विजोन्नाशी गायत्रीजप उच्यते ॥४४॥
महारोगा विनश्यन्ति लक्षजप्यानुभावतः ।

जो मनुष्य एक दिन पञ्चगव्य का आहार तथा एक दिन वायु का आहार करके एक लाख गायत्री का जप करता है उसके जप के प्रभाव से महारोग नष्ट हो जाते हैं।

स्नात्वा शतेन गायत्र्याः शतमन्तर्जले जपेत् ॥४५॥
शतेन यस्त्वपः पीत्वा सर्वपापैः प्रमुच्यते ।

जो मनुष्य सौ गायत्री के जप से स्नान करके सौ गायत्री से जल पीकर जल में सौ गायत्री का जप करता है वह सब पापों से मुक्त हो जाता है।

गोघ्नः पितृघ्नमातृघ्नौ ब्रह्महा गुरुतल्पगः ॥४६॥
स्वर्णहारी तैलहारी यस्तु विप्रः सुरां पिबेत् ।
चन्दनद्वय संयुक्तं कर्पूरं तण्डुलं यवम् ॥४७॥
लवङ्गं सुफलं चाज्यं सिता चाम्रस्य दारुकैः ।
अन्यो न्यूनविधिः प्रोक्तो गायत्र्याः प्राप्तिकारकः ॥४८॥
एवं कृते महासौख्यं प्राप्नोति साधको ध्रुवम् ।

जो गोघाती, पितृघाती, मातृघाती, ब्रह्मघाती, गुरुतल्पगामी, स्वर्णहारी, तैलहारी और सुरापायी हो वह दोनों प्रकार के चन्दन के साथ कपूर, चावल, यव, लवङ्ग, अनार, घी और शक्कर तथा आम की समिधा का होम करने से पापरहित हो जाता है। यह दूसरी छोटी विधि गायत्री की प्राप्ति के लिए कही गयी है।

अन्नाज्यभोजनं हत्वा कृत्वा वा कर्म गर्हितम् ॥४९॥
न सीदेत् प्रतिगृह्णानो महीमपि ससागराम् ।
ये चास्य उत्थिता लोके ग्रहाः सूर्यादयो भुवि ।
ते यान्ति सौम्यतां सर्वे शिवे इति न संशयः ॥५०॥

अन्न, घी तथा अन्य भोज्य पदार्थों का होम करके निन्दित कर्म करने पर भी साधक निश्चित रूप से महासुख प्राप्त करता है। इस प्रकार साधक द्वारा सागर सहित भूमि का दान लेने पर भी वह दुःख नहीं पाता। उसके विपरीत जो सूर्यादि ग्रह होते हैं, वे भी सौम्य हो जाते हैं; हे पार्वती इस में कोई संशय नहीं है।

इति शारदातिलकादिप्रोक्तो ब्रह्मगायत्री पुरश्चरणप्रयोगः ॥

इतिशारदा तिलक प्रोक्त ब्रह्म गायत्री पुरश्चरण प्रयोग समाप्त ।

परमहंसगायत्रीमन्त्र : ॐ परमहंसाय विद्महे महातत्त्वाय धीमहि। तन्नो हंसः प्रचोदयात् ।

षडङ्गन्यास : ॐ परमहंसाय हृदयाय नमः ॥१॥ ॐ विद्महे शिरसे स्वाहा ॥२॥ ॐ महातत्त्वाय शिखायै वषट् ॥३॥ ॐ धीमहि कवचाय हुम् ॥४॥ ॐ तन्नो हंसः नेत्रत्रयाय वौषट ॥५॥ ॐ प्रचोदयादस्त्राय फट् ॥६॥

इसी प्रकार करन्यास भी करना चाहिये ।

हंसमन्त्र : ॐ सोहं सोहं परो रजसे सावदोम् ।

ब्रह्मगायत्रीमन्त्र : ॐ वेदात्मने च विद्महे हिरण्यगर्भाय धीमहि। तन्नों ब्रह्मा प्रचोदयात् ।

षडङ्गन्यासः ॐ वेदात्मने च हृदयाय नमः ॥१॥ ॐ विद्महे शिरसे स्वाहा ॥२॥ ॐ हिरण्यगर्भाय शिखायै वषट् ॥३॥ ॐ धीमहि कवचाय हुम् ॥४॥ ॐ तन्नो ब्रह्मा नेत्रत्रयाय वौषट् ॥५॥ ॐ प्रचोदयादस्त्राय फट् ॥६॥

इसी प्रकार करन्यास भी करना चाहिये।

सरस्वतीगायत्रीमन्त्र : ॐ ऐं वाग्देव्यै विद्महे कामराजाय धीमहि। तन्नो देवी प्रचोदयात्

षडङ्गन्यास : ॐ ऐं वाग्देव्यै हृदयाय नमः ॥१॥ ॐ विद्महे शिरसे स्वाहा ॥२॥ ॐ कामराजाय शिखायै वषट् ॥३॥ ॐ धीमहि कवचाय हुम् ॥४॥ ॐ तन्नो देवी नेत्रत्रयाय वौषट् ॥५॥ ॐ प्रचोदयादस्त्राय फट् ॥६॥

इसी प्रकार करन्यास भी करना चाहिये।

विष्णुगायत्रीमन्त्र : ॐ श्री विष्णवे च विद्महे वासुदेवाय धीमहि। तन्नो विष्णुः प्रचोदयात्।

षडङ्गन्यास : ॐ श्री विष्णुवे च हृदयाय नमः ॥१॥ ॐ विद्महे शिरसे स्वाहा ॥२॥ ॐ वासुदेवाय शिखायै वषट् ॥३॥ धीमहि कवचाय हुम् ॥४॥ ॐ तन्नो विष्णुर्नेत्रत्रयाय वौषट् ॥५॥ ॐ प्रचोदयादस्त्राय फट् ॥६॥

इसी प्रकार करन्यास भी करना चाहिये।

द्वितीय विष्णुगायत्री : ॐ त्रैलोक्यमोहनाय विद्महे आत्मारामाय धीमहि। तन्नो विष्णुः प्रचोदयात्।

तृतीय विष्णुगायत्री : ॐ नारायणाय विद्महे वासुदेवाय धीमहि। तन्नो विष्णुः प्रचोदयात्।

लक्ष्मीगायत्रीमन्त्र : ॐ महादेव्यै च विद्महे विष्णुपत्न्यै च धीमहि। तन्नो लक्ष्मीः प्रचोदयात्।

षडङ्गन्यास : ॐ महादेव्यै च हृदयाय नमः ॥१॥ ॐ विद्महे शिरसे स्वाहा ॥२॥ ॐ विष्णुपत्न्यै च शिखायै वषट् ॥३॥ ॐ धीमहि कवचाय हुम् ॥४॥ ॐ तन्नो लक्ष्मीर्नेत्रत्रयाय वौषट् ॥५॥ ॐ प्रचोदयादस्त्राय फट् ॥६॥

इसी प्रकार करन्यास भी करना चाहिये।

लक्ष्मीमन्त्र : ॐ क्लीं श्रीं श्रीं लक्ष्मीदेव्यै नमः।

द्वितीय लक्ष्मीगायत्री : ॐ महादेवी च विद्महे विष्णुपत्नी च धीमाहि। तन्नो लक्ष्मीः प्रचोदयात्। वा ॐ महालक्ष्यै च विद्महे महाश्रियै च धीमहि। तन्नः श्रीः प्रचोदयात्।

नारायणगायत्रीमन्त्र : ॐ नारायणाय विद्महे वासुदेवाय धीमहि। तन्नो नारायणः प्रचोदयात्।

षडङ्गन्यास : ॐ नारायणाय हृदयाय नमः ॥१॥ ॐ विद्महे शिरसे स्वाहा ॥२॥ ॐ वासुदेवाय शिखायै वषट् ॥३॥ ॐ धीमहि कवचाय हुम् ॥४॥ ॐ तन्नो नारायणो नेत्रत्रयाय वौषट् ॥५॥ ॐ प्रचोदयादस्त्राय फट्।

इसी प्रकार करन्यास भी करना चाहिये।

मूलमन्त्र : ॐ ह्रीं श्रीं श्रीमन्नाराणाय नमः।

श्रीरामगायत्रीमन्त्र : ॐ दशरथाय विद्महे सीतावल्लभाय धीमहि। तन्नो रामः प्रचोदयात्।

विनियोग : ॐ अस्य श्रीरामगायत्रीमन्त्रस्य वामदेव ऋषिः। गायत्री छन्दः। श्रीजानकीवल्लभो देवता। श्रीरामेति बीजम् दशरथायेति शक्तिः। गायत्र्यावाहने जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास : ॐ वामदेवऋषये नमः शिरसि ॥१॥ गायत्री छन्दसे नमः मुखे ॥२॥ श्रीजानकीवल्लभ देवतायै नमः हृदये ॥३॥ श्रीरामेति बीजाय नमः गुह्ये ॥४॥ दशरथायेति शक्तये नमः पादयोः ॥५॥ विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

षडङ्गन्यास : ॐ दाशरथाय हृदयाय नमः ॥१॥ ॐ विद्महे शिरसे स्वाहा । ॥२॥ ॐ सीतावल्लभाय शिखायै वषट् ॥३॥ ॐ धीमहि कवचाय हुम् ॥४॥ ॐ तन्नो रामः नेत्रत्रयाय वौषट् ॥५॥ ॐ प्रचोदयादस्त्राय फट् ॥६॥

इसी प्रकार करन्यास भी करना चाहिये ।

श्रीराममूलमन्त्र : ॐ ह्रां ह्रीं रॉं रामाय नमः ।

श्रीरामतारकमन्त्र : ॐ जानकीकान्ततारक रॉं रामाय नमः ।

जानकीगायत्रीमन्त्र : ॐ जनकजायै विद्महे रामप्रियायै धीमहि । तन्नः सीताप्रचोदयात् ।

षडङ्गन्यास : ॐ जनकजायै हृदयाय नमः ॥१॥ ॐ विद्महे शिरसे स्वाहा ॥२॥ ॐ रामप्रियायै शिखायै वषट् ॥३॥ ॐ धीमहि कवचाय हुम् ॥४॥ ॐ तन्नः सीता नेत्रत्रयाय वौषट् ॥५॥ प्रचोदयादस्त्राय फट् ।६॥

इसी प्रकार करन्यास भी करना चाहिये ।

सीतामूलमन्त्रः ॐ सीं सीतायै नमः ।

लक्ष्मणगायत्रीमन्त्र : ॐ दाशरथाय विद्महे अलबेलाय धीमहि । तन्नो लक्ष्मणः प्रचोदयात् ।

षडङ्गन्यास : ॐ दाशरथाय हृदयाय नमः ॥१॥ ॐ विद्महे शिरसे स्वाहा ॥२॥ ॐ अलबेलाय शिखायै वषट् ॥३॥ ॐ धीमहि कवचाय हुम् ॥४॥ ॐ तन्नो लक्ष्मणः नेत्रत्रयाय वौषट् ॥५॥ ॐ प्रचोदयादस्त्राय फट् ॥६॥

इसी प्रकार करन्यास भी करना चाहिये ।

मूलमन्त्र : ॐ ह्राँ ह्रीं राँ राँ लँ लक्ष्मणाय नमः ।

हनुमद्गायत्रीमन्त्र : ॐ अंजनीजाय विद्महे वायुपुत्राय धीमहि । तन्नो हनुमान् प्रचोदयात् ।

षडङ्गन्यास : ॐ अंजनीजाय हृदयाय नमः ॥१॥ ॐ विद्महे शिरसे स्वाहा ॥२॥ ॐ वायुपुत्राय शिखायै वषट् ॥३॥ ॐ धीमहि कवचाय हुम् ॥४॥ ॐ तन्नो हनुमान् नेत्रत्रयाय वौषट् ॥५॥ ॐ प्रचोदयादस्त्राय फट् ॥६॥

इसी प्रकार करन्यास भी करना चाहिये ।

मूलमन्त्र : ॐ ह्राँ ह्रीं ह्रूँ ह्रैं ह्रौं ह्रः ।

गरुडगायत्रीमन्त्र : ॐ तत्पुरुषाय विद्महे सुवर्णपर्णाय (तन्त्रान्तरे तु सुवर्णपक्षायेति पाठः) धीमहि । तन्नो गरुडः प्रचोदयात् ।

षडङ्गन्यास : ॐ तत्पुरुषाय हृदयाय नमः ॥१॥ ॐ विद्महे शिरसे स्वाहा ॥२॥ ॐ सुवर्णपर्णाण शिखायै वषट् ॥३॥ ॐ धीमहि कवचाय हुम् ॥४॥ ॐ तन्नो गरुडो नेत्रत्रयाय वौषट् ॥५॥ ॐ प्रचोदयादस्त्राय फट् ॥६॥

इसी प्रकार करन्यास भी करना चाहिये ।

मूलमन्त्र : ॐ ग्राँ ग्रीं ग्रूं ग्रैं ग्रौं ग्रः।

श्रीकृष्णगायत्रीमन्त्र :

ॐ देवकीनन्दनाय विद्महे वासुदेवाय धीमहि। तन्नः कृष्ण : प्रचोदयात्।

षडङ्गन्यास : ॐ देवकीनन्दनाय हृदयाय नमः ।।१।। ॐ विद्महे शिरसे स्वाहा ।।२।। ॐ वासुदेवाय शिखायै वषट् ।।३।। ॐ धीमहि कवचाय हुम् ।।४।। ॐ तन्नः कृष्णः नेत्रत्रयाय वौषट् ।।५।। ॐ प्रचोदयादस्त्राय फट् ।।६।।

इसी प्रकार करन्यास भी करना चाहिये।

मूलमन्त्र : ॐ क्लीं कृष्णाय नमः।

द्वितीय श्रीकृष्णगायत्रीमन्त्र : ॐ श्रीकृष्णाय विद्महे दामोदराय धीमहि। तन्नो विष्णु : प्रचोदयात्।

गोपालगायत्रीमन्त्र :

ॐ गोपालाय विद्महे गोपीजनवल्लभाय धीमहि। तन्नो गोपाल : प्रचोदयात्।

षडङ्गन्यास : ॐ गोपालाय हृदयाय नमः ।।१।। ॐ विद्महे शिरसे स्वाहा ।।२।। ॐ गोपीजनवल्लभाय शिखायै वषट् ।।३।। ॐ धीमहि कवचाय हुम् ।।४।। ॐ तन्नो गोपालः नेत्रत्रयाय वौषट् ।।५।। ॐ प्रचोदयादस्त्राय फट् ।।६।।

इसी प्रकार करन्यास भी करना चाहिये।

मूलमन्त्र : ॐ गोपालाय गोचराय वंशशब्दाय नमोनमः।

राधिकागायत्रीमन्त्र : ॐ वृषभानुजायै विद्महे कृष्णप्रियायै धीमहि। तत्रो राधिका प्रचोदयात्।

षडङ्गन्यास : ॐ वृषभानुजायै हृदयाय नमः ।।१।। ॐ विद्महे शिरसे स्वाहा ।।२।। ॐ कृष्णप्रियायै शिखायै वषट् ।।३।। ॐ धीमहि कवचाय हुम् ।।४।। ॐ तन्नो राधिका नेत्रत्रयाय वौषट् ।।५।। ॐ प्रचोदयादस्त्राय फट् ।।६।।

इसी प्रकार करन्यास भी करना चाहिये।

मूलमन्त्र : ॐ राँ राधिकायै नमः।

परशुरामगायत्रीमन्त्र :

ॐ जामदग्न्याय विद्महे महावीराय धीमहि। तन्नः परशुराम : प्रचोदयात्।

षडङ्गन्यास : ॐ जामदग्न्याय हृदयाय नमः ।।१।। ॐ विद्महे शिरसे स्वाहा ।।२।। ॐ महावीराय शिखायै वषट् ।।३।। ॐ धीमहि कवचाय हुम् ।।४।। ॐ तन्नः परशुरामो नेत्रत्रयाय वौषट् ।।५।। ॐ प्रचोदयादस्त्राय फट् ।।६।।

इसी प्रकार करन्यास भी करना चाहिये।

मूलमन्त्र : ॐ राँ राँ ॐ राँ राँ ॐ परशुहस्ताय नमः।

नृसिंहगायत्रीमन्त्र : ॐ उग्रनृसिंहाय विद्महे वज्रनखाय धीमहि। तन्नो नृसिंहः प्रचोदयात्।

षडङ्गन्यास : ॐ उग्रनृसिंहाय हृदयाय नमः ।।१।। ॐ विद्महे विरसे स्वाहा ।।२।। ॐ वज्रनखाय शिखायै वषट् ।।३।। ॐ धीमहि कवचाय हुम् ।।४।। ॐ तन्नोः नृसिंह : नेत्रत्रयाय वौषट् ।।५।। ॐ प्रचोदयादस्त्राय फट् ।।६।।

इसी प्रकार करन्यास भी करना चाहिये।

मूलमन्त्र : ॐ नृँ नृँ नृँ नृसिंहाय नमः।

द्वितीय नृसिंहगायत्रीमन्त्र : ॐ वज्रनखाय विद्महे तीक्ष्णदंष्ट्राय धीमहि। तन्नो नारसिंहः प्रचोदयात्।

हयग्रीवगायत्रीमन्त्र : ॐ वागीश्वराय विद्महे हयग्रीवाय धीमहि। तन्नो हंसः प्रचोदयात्।

षडङ्गन्यास : ॐ वागीश्वराय हृदयाय नमः ।।१।। ॐ विद्महे शिरसे स्वाहा ।।२।। ॐ हयग्रीवाय शिखायै वषट् ।।३।। ॐ धीमहि कवचाय हुम् ।।४।। ॐ तन्नो हंसः नेत्रत्रयाय वौषट् ।।५।। ॐ प्रचोदयादस्त्राय फट् ।।६।।

इसी प्रकार करन्यास भी करना चाहिये।

शिवगायत्रीमन्त्र : ॐ महादेवाय विद्महे रुद्रमूर्तये धीमहि। तन्नः शिवः प्रचोदयात्।

षडङ्गन्यास : ॐ महादेवाय हृदयाय नमः ।।१।। ॐ विद्महे शिरसे स्वाहा ।।२।। ॐ रुद्रमूर्तये शिखायै वषट् ।।३।। ॐ धीमहि कवचाय हुम् ।।४।। ॐ तन्न : शिवः नेत्रत्रयाय वौषट् ।।५।। ॐ प्रचोदयादस्त्राय फट् ।।६।।

इसी प्रकार करन्यास भी करना चाहिये।

मूलमन्त्र : ॐ सं सं सं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ॐ शिवाय नमः।

रुद्रगायत्रीमन्त्र :

ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि। तन्नो रुद्र : प्रचोदयात्।

षडङ्गन्यास : ॐ तत्पुरुषाय हृदयाय नमः ।।१।। ॐ विद्महे शिरसे स्वाहा ।।२।। ॐ महादेवाय शिखायै वषट् ।।३।। ॐ धीमहि कवचाय हुम् ।।४।। ॐ तन्नो रुद्रः नेत्रत्रयाय वौषट् ।।५।। ॐ प्रचोदयादस्त्राय फट् ।।६।।

इसी प्रकार करन्यास भी करना चाहिये।

दक्षिणामूर्तिगायत्रीमन्त्र : ॐ दक्षिणामूर्तये विद्महे ध्यानस्थाय धीमहि। तन्नो धीशः प्रचोदयात्।

षडङ्गन्यास : ॐ दक्षिणामूर्तये हृदयाय नमः ।।१।। ॐ विद्महे शिरसे स्वाहा ।।२।। ॐ ध्यानस्थाय शिखायै वषट् ।।३।। ॐ धीमहि कवचाय हुम् ।।४।। ॐ तन्नो धीशः नेत्रत्रयाय वौषट् ।।५।। ॐ प्रचोदयादस्त्राय फट् ।।६।।

इसी प्रकार करन्यास भी करना चाहिये।

गौरीगायत्रीमन्त्र :

ॐ सुभगायै च विद्महे काममालायै धीमहि। तन्नो गौरी प्रचोदयात्।

षडङ्गन्यास : ॐ सुभगायै हृदयाय नमः ।।१।। ॐ विद्महे शिरसे स्वाहा ।।२।। ॐ काममालायै शिखायै वषट् ।।३।। ॐ धीमहि कवचाय हुम् ।।४।। ॐ तन्नो गौरी नेत्रत्रयाय वौषट् ।।५।। ॐ प्रचोदयादस्त्राय फट् ।।६।।

इसी प्रकार करन्यास भी करना चाहिये।

मूलमन्त्र : ॐ क्लीं ॐ गौं गौरीभ्यो नमः।

गणेशगायत्रीमन्त्र : ॐ तत्पुरुषाय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि। तन्नो दन्तिः प्रचोदयात्।

षडङ्गन्यास : ॐ तत्पुरुषाय हृदयाय नमः ॥१॥ ॐ विद्महे शिरसे स्वाहा ॥२॥ ॐ वक्रतुण्डाय शिखायै वषट् ॥३॥ ॐ धीमहि कवचाय हुम् ॥४॥ ॐ तन्नो दन्तिः नेत्रत्रयाय वौषट् ॥५॥ ॐ प्रचोदयादस्त्राय फट् ॥६॥

इसी प्रकार करन्यास भी करना चाहिये।

षण्मुखगायत्रीमन्त्र : ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महासेनाय धीमहि। तन्न : षण्मुख : प्रचोदयात्।

षडङ्गन्यास : ॐ तत्पुरुषाय हृदयाय नमः ॥१॥ ॐ विद्महे शिरसे स्वाहा ॥२॥ ॐ महासेनाय शिखायै वषट् ॥३॥ ॐ धीमहि कवचाय हुम् ॥४॥ ॐ तन्न : षण्मुखः नेत्रत्रयाय वौषट् ॥५॥ ॐ प्रचोदयादस्त्राय फट् ॥६॥

इसी प्रकार करन्यास भी करना चाहिये।

नन्दीगायत्रीमन्त्र :

ॐ तत्पुरुषाय विद्महे चक्रतुण्डाय धीमहि। तन्नो नन्दिः प्रचोदयात्।

षडङ्गन्यास : ॐ तत्पुरुषाय हृदयाय नमः ॥१॥ ॐ विद्महे शिरसे स्वाहा ॥२॥ ॐ चक्रतुण्डाय शिखायै वषट् ॥३॥ ॐ धीमहि कवचाय हुम् ॥४॥ ॐ तन्नो नन्दिः नेत्रत्रयाय वौषट् ॥५॥ ॐ प्रचोदयादस्त्राय फट् ॥६॥

इसी प्रकार करन्यास भी करना चाहिये।

सूर्यगायत्रीमन्त्र : ॐ भास्कराय विद्महे महातेजाय (तन्त्रान्तरे तु 'महाद्युतिकरायेति पाठ :) धीमहि। तन्न : सूर्य : प्रचोदयात्।

षडङ्गन्यास : ॐ भास्कराय हृदयाय नमः ॥१॥ ॐ विद्महे शिरसे स्वाहा ॥२॥ ॐ महातेजाय शिखायै वषट् ॥३॥ ॐ धीमहि कवचाय हुम् ॥४॥ ॐ तन्न : सूर्य : नेत्रत्रयाय वौषट् ॥५॥ ॐ प्रचोदयादस्त्राय फट् ॥६॥

इसी प्रकार करन्यास भी करना चाहिये।

मूलमन्त्र : ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्र : ॐ विष्णु तेजसे ज्वालामणिकुण्डलाय स्वाहा।

द्वितीय सूर्यगायत्रीमन्त्र : ॐ आदित्याय विद्महे मार्तण्डाय धीमहि। तन्न : सूर्य : प्रचोदयात्।

चन्द्रगायत्रीमन्त्र : ॐ क्षीरपुत्राय विद्महे अमृततत्त्वाय धीमहि। तन्नश्चन्द्र : प्रचोदयात्।

षडङ्गन्यास : ॐ क्षीरपुत्राय हृदयाय नमः ॥१॥ ॐ विद्महे शिरसे स्वाहा ॥२॥ ॐ अमृततत्त्वाय शिखायै वषट् ॥३॥ ॐ धीमहि कवचाय हुम् ॥४॥ ॐ तन्नश्चन्द्रः नेत्रत्रयाय वौषट् ॥५॥ ॐ प्रचोदयादस्त्राय फट् ॥६॥

इसी प्रकार करन्यास भी करना चाहिये।

मूलमन्त्र : ॐ चन्द्रत्त्वां चन्द्रेण क्रीणामि शुक्रेण मृतममृतेनगोरस्मोरतेचन्द्राणि।

भौमगायत्रीमन्त्र :

ॐ अङ्गारकाय विद्महे शक्तिहस्ताय धीमहि। तन्नो भौम : प्रचोदयात्।

षडङ्गन्यास : ॐ अङ्गारकाय हृदयाय नमः ॥१॥ ॐ विद्महे शिरसे स्वाहा ॥२॥ ॐ शक्तिहस्ताय शिखायै वषट् ॥३॥ ॐ धीमहि कवचाय हुम् ॥४॥ ॐ तन्नो भौमः नेत्रत्रयाय वौषट् ॥५॥ ॐ प्रचोदयादस्त्राय फट् ॥६॥

इसी प्रकार करन्यास भी करना चाहिये।

मूलमन्त्र : ॐ अं अङ्गारकाय नम:।

पृथिवीगायत्रीमन्त्र : ॐ पृथिवीदेव्यै च विद्महे सहस्रमूर्त्यै च धीमहि। तन्नो मही प्रचोदयात्।

षडङ्गन्यास : ॐ पृथिवीदेव्यै च हृदयाय नम: ॥१॥ ॐ विद्महे शिरसे स्वाहा ॥२॥ ॐ सहस्रमूर्त्यै च शिखायै वषट् ॥३॥ ॐ धीमहि कवचाय हुम् ॥४॥ ॐ तन्नोमही: नेत्रत्रयाय वौषट् ॥५॥ ॐ प्रचोदयादस्त्राय फट् ॥६॥

इसी प्रकार करन्यास भी करना चाहिये।

मूलमन्त्र : ॐ भूरसिभूतादिरसिश्विस्यधायाभुवनस्यमाहिंसीर्नम:।

अग्निगायत्रीमन्त्र : ॐ महाज्वालाय विद्महे अग्निमध्याय धीमहि। तन्नोऽग्निः प्रचोदयात्।

षडङ्गन्यास : ॐ महाज्वालाय हृदयाय नमः ॥१॥ ॐ विद्महे शिरसे स्वाहा ॥२॥ ॐ अग्निमध्याय शिखायै वषट् ॥३॥ ॐ धीमहि कवचाय हुम् ॥४॥ ॐ तन्नोऽग्निः नेत्रत्रयाय वौषट् ॥५॥ ॐ प्रचोदयादस्त्राय फट् ॥६॥

इसी प्रकार करन्यास भी करना चाहिये।

मूलमन्त्र : ॐ अं अं अग्नये नमः।

द्वितीय अग्निगायत्री : ॐ वैश्वानराय विद्महे लालीलाय धीमहि। तन्नोऽग्निः प्रचोदयात्।

जलगायत्रीमन्त्र : ॐ जलविम्बाय विद्महे नीलपुरुषाय धीमहि। तन्नस्त्वम्बु प्रचोदयात्।

षडङ्गन्यास : ॐ जलविम्बाय हृदयाय नमः ॥१॥ ॐ विद्महे शिरसे स्वाहा ॥२॥ ॐ नीलपुरुषाय शिखायै वषट् ॥३॥ ॐ धीमहि कवचाय हुम् ॥४॥ ॐ तन्नस्त्वम्बु नेत्रत्रयाय वौषट् ॥५॥ ॐ प्रचोदयादस्त्राय फट् ॥६॥

इसी प्रकार करन्यास भी करना चाहिये।

मूलमन्त्र : ॐ जँ जँ ॐ वँ वँ ॐ लँ लँ ॐ जलविम्बाय नमः।

आकाशगायत्रीमन्त्र :

ॐ आकाशाय च विद्महे नभोदेवाय धीमहि। तन्नो गगनं प्रचोदयात्।

षडङ्गन्यास : ॐ आकाशाय हृदयाय नमः ॥१॥ ॐ विद्महे शिरसे स्वाहा ॥२॥ ॐ नभोदेवाय शिखायै वषट् ॥३॥ ॐ धीमहि कवचाय हुम् ॥४॥ ॐ तन्नो गगनं नेत्रत्रयाय वौषट् ॥५॥ ॐ प्रचोदयादस्त्राय फट् ॥६॥

इसी प्रकार करन्यास भी करना चाहिये।

मूलमन्त्र : ॐ गँ गँ ॐ नँ नँ ॐ आँ आँ ॐ गगनाय नमः।

पवन (वायु) गायत्रीमन्त्र : ॐ पवनपुरुषाय विद्महे सहस्रमूर्तये च धीमहि। तन्नो वायुः प्रचोदयात्।

षडङ्गन्यास : ॐ पवनपुरुषाय हृदयाय नम : ॥१॥ ॐ विद्महे शिरसे स्वाहा ॥२॥ ॐ सहस्रमूर्तये च शिखायै वषट् ॥३॥ ॐ धीमहि कवचाय हुम् ॥४॥ ॐ तन्नो वायु : नेत्रत्रयाय वौषट् ॥५॥ ॐ प्रचोदयादस्त्राय फट् ॥६॥

इसी प्रकार करन्यास भी करना चाहिये।

मूलमन्त्र : ॐ पँ पँ ॐ वाँ वाँ ॐ युँ युँ ॐ पवनपुरुषाय नमः।

इन्द्रगायत्रीमन्त्र : ॐ तत्पुरुषाय विद्महे सहस्राक्षाय धीमहि। तन्न इद्रः प्रचोदयात्।

षडङ्गन्यास : ॐ तत्पुरुषाय हृदयाय नमः ॥१॥ ॐ विद्महे शिरसे स्वाहा ॥२॥ ॐ सहस्राक्षाय शिखायै वषट् ॥३॥ ॐ धीमहि कवचाय हुम् ॥४॥ ॐ तन्न इन्द्रः नेत्रत्रयाय वौषट् ॥५॥ ॐ प्रचोदयादस्त्राय फट् ॥६॥

इसी प्रकार करन्यास भी करना चाहिये।

कामगायत्रीमन्त्र : ॐ मन्मथेशाय विद्महे कामदेवाय धीमहि। तन्नोनङ्गः प्रचोदयात्।

षडङ्गन्यास : ॐ मन्मथेशाय हृदयाय नमः ॥१॥ ॐ विद्महे शिरसे स्वाहा ॥२॥ ॐ कामदेवाय शिखायै वषट् ॥३॥ ॐ धीमहि कवचाय हुम् ॥४॥ ॐ तन्नोनङ्गः नेत्रत्रयाय वषट् ॥५॥ ॐ प्रचोदयादस्त्राय फट् ॥६॥

इसी प्रकार करन्यास भी करना चाहिये।

द्वितीय कामगायत्री : ॐ कामदेवाय विद्महे पुष्पबाणाय धीमहि तन्नोनङ्गः प्रचोदयात्।

गुरुगायत्रीमन्त्र : ॐ गुरुदेवाय विद्महे परब्रह्माय धीमहि। तन्नो गुरु : प्रचोदयात्।

षडङ्गन्यास : ॐ गुरुदेवाय हृदयाय नमः ॥१॥ ॐ विद्महे शिरसे स्वाहा ॥२॥ ॐ परब्रह्माय शिखायै वषट् ॥३॥ ॐ धीमहि कवचाय हुम् ॥४॥ ॐ तन्नो गुरु : नेत्रत्रयाय वौषट् ॥५॥ ॐ प्रचोदयादस्त्राय फट् ॥६॥

इसी प्रकार करन्यास भी करना चाहिये।

मूलमन्त्र : ॐ हुँ सँ क्रौं सौ : गुरुदेवपरमात्मने नमः।

तुलसीगायत्रीमन्त्र : ॐ श्रीत्रिपुराय हृदयाय तुलसीपत्राय धीमहि। तन्नतुलसी प्रचोदयात्।

षडङ्गन्यास : ॐ श्रीत्रिपुराय हृदयाय नमः ॥१॥ ॐ विद्महे शिरसे स्वाहा ॥२॥ ॐ तुलसीपत्राय शिखायै वषट् ॥३॥ ॐ धीमहि कवचाय हुम् ॥४॥ ॐ तन्नतुलसी नेत्रत्रयाय वौषट् ॥५॥ ॐ प्रचोदयादस्त्राय फट् ॥६॥

इसी प्रकार करन्यास भी करना चाहिये।

देवीगायत्रीमन्त्र :

ॐ देव्यब्रह्माण्यै विद्महे महाशक्त्यै च धीमहि। तन्नो देवी प्रचोदयात्।

षडङ्गन्यास : ॐ देव्याबह्माण्यै हृदयाय नमः ॥१॥ ॐ विद्महे शिरसे स्वाहा ॥२॥ ॐ महाशक्त्यै च शिखायै वषट् ॥३॥ ॐ धीमहि कवचाय हुम् ॥४॥ ॐ तन्नो देवी नेत्रत्रयाय वौषट् ॥५॥ ॐ प्रचोदयादस्त्राय फट् ॥६॥

इसी प्रकार करन्यास भी करना चाहिये।

मूलमन्त्र : ॐ ह्रौं श्रीं क्लीं नमः।

शक्तिगायत्रीमन्त्र : ॐ सर्वसम्मोहिन्यै विद्महे विश्वजनन्यै धीमहि। तन्नः शक्तिः प्रचोदयात्।

षडङ्गन्यास : ॐ सर्वसम्मोहिन्यै हृदयाय नमः ॥१॥ ॐ विद्महे शिरसे स्वाहा ॥२॥ ॐ विश्वजनन्यै शिखायै वषट् ॥३॥ ॐ धीमहि कवचाय हुम् ॥४॥ ॐ तन्नः शक्तिः नेत्रत्रयाय वौषट् ॥५॥ ॐ प्रचोदयादस्त्राय फट् ॥६॥

इसी प्रकार करन्यास भी करना चाहिये।

दुर्गागायत्रीमन्त्र : ॐ कात्यायन्यै विद्महे कन्याकुमार्यै धीमहि। तन्नो दुर्गा प्रचोदयात्।

षडङ्गन्यास : ॐ कात्यायन्यै हृदयाय नमः ॥१॥ ॐ विद्महे शिरसे स्वाहा ॥२॥ ॐ कन्याकुमार्यै शिखायै वषट् ॥३॥ ॐ धीमहि कवचाय हुम् ॥४॥ ॐ तन्नो दुर्गाः नेत्रत्रयाय वौषट् ॥५॥ ॐ प्रचोदयादस्त्राय फट् ॥६॥

इसी प्रकार करन्यास भी करना चाहिये।

द्वितीय दुर्गागायत्रीमन्त्र : ॐ महादेव्यै च विद्महे दुर्गायै च धीमहि। तन्नो देवि प्रचोदयात्।

जयदुर्गागायत्रीमन्त्र : ॐ नारायण्यै च विद्महे दुर्गायै च धीमहि। तन्नो गौरी प्रचोदयात्।

षडङ्गन्यास : ॐ नारायण्यै च हृदयाय नमः ॥१॥ ॐ विद्महे शिरसे स्वाहा ॥२॥ ॐ दुर्गायै च शिखायै वषट् ॥३॥ ॐ धीमहि कवचाय हुम् ॥४॥ ॐ तन्नो गौरी नेत्रत्रयाय वौषट् ॥५॥ ॐ प्रचोदयादस्त्राय फट् ॥६॥

इसी प्रकार करन्यास भी करना चाहिये।

अन्नपूर्णागायत्रीमन्त्र : ॐ भगवत्यै च विद्महे माहेश्वर्य्यै च धीमहि। तन्नोऽन्नपूर्णा प्रचोदयात्।

षडङ्गन्यास : ॐ भगवत्यै च हृदयाय नमः ॥१॥ ॐ विद्महे शिरसे स्वाहा ॥२॥ ॐ माहेश्वर्य्यै च शिखायै वषट् ॥३॥ ॐ धीमहि कवचाय हुम् ॥४॥ ॐ तन्नोऽन्नपूर्णा नेत्रत्रयाय वौषट् ॥५॥ ॐ प्रचोदयादस्त्राय फट् ॥६॥

इसी प्रकार करन्यास भी करना चाहिये।

कालीगायत्रीमन्त्र :

ॐ कालिकायै विद्महे श्मशानवासिन्यै धीमहि। तन्नोऽघोरा प्रचोदयात्।

षडङ्गन्यास : ॐ कालिकायै हृदयाय नमः ॥१॥ ॐ विद्महे शिरसे स्वाहा ॥२॥ ॐ श्मशानवासिन्यै शिखायै वषट् ॥३॥ ॐ धीमहि कवचाय हुम् ॥४॥ ॐ तन्नोऽघोरा नेत्रत्रयाय वौषट् ॥५॥ ॐ प्रचोदयादस्त्राय फट् ॥६॥

इसी प्रकार करन्यास भी करना चाहिये।

तारागायत्रीमन्त्र : ॐ तारायै च विद्महे महोग्रायै च धीमहि। तन्नो देवी प्रचोदयात्।

षडङ्गन्यास : ॐ तारायै च हृदयाय नमः ॥१॥ ॐ विद्महे शिरसे स्वाहा ॥२॥ ॐ महोग्रायै च शिखायै वषट् ॥३॥ ॐ धीमहि कवचाय हुम् ॥४॥ तन्नो देवी नेत्रत्रयाय वौषट् ॥५॥ ॐ प्रचोदयादस्त्राय फट् ॥६॥

इसी प्रकार करन्यास भी करना चाहिये।

षोडशी (त्रिपुरसुन्दरी) गायत्रीमन्त्र :

ॐ ऐं त्रिपुरादेव्यै विद्महे क्लीं कामेश्वर्यै धीमहि। सौस्तन्नः क्लिन्ने प्रचोदयात्।

षडङ्गन्यास : ॐ ऐं त्रिपुरादेव्यै हृदयाय नमः ॥१॥ ॐ शिरसे विद्महे स्वाहा ॥२॥ ॐ क्लीं कामेश्वर्यै शिखायै वषट् ॥३॥ ॐ धीमहि कवचाय हुम् ॥४॥ ॐ सौस्तन्नः क्लिन्ने नेत्रत्रयाय वौषट् ॥५॥ ॐ प्रचोदयादस्त्राय फट् ॥६॥

इसी प्रकार करन्यास भी करना चाहिये।

द्वितीय त्रिपुरासुन्दरीगायत्रीमन्त्र : ॐ क्लीं त्रिपुरादेव्यै विद्महे कामेश्वरी धीमहि। तन्नः क्लिन्ने प्रचोदयात्।

तृतीय त्रिपुरासुन्दरीगायत्रीमन्त्र : ॐ ऐं वागीश्वर्यै विद्महे क्लीं कामेश्वर्यै धीमहिय्यै सोस्तन्नः शक्तिः प्रचोदयात्। इति षोडशीभेदेन बालागायत्रीमन्त्रः।

भुवनेश्वरीगायत्रीमन्त्र : ॐ नारायण्यै च विद्महे भुवनेश्वर्यै धीमहि। तन्नो देवी प्रचोदयात्।

षडङ्गन्यास : ॐ नारायण्यै च हृदयाय नमः ॥१॥ ॐ विद्महे शिरसे स्वाहा ॥२॥ ॐ भुवनेश्वर्यै शिखायै वषट् ॥३॥ ॐ धीमहि कवचाय हुम् ॥४॥ ॐ तन्नो देवी नेत्रत्रयाय वौषट् ॥५॥ ॐ प्रचोदयादस्त्राय फट् ॥६॥

इसी प्रकार करन्यास भी करना चाहिये।

भैरवीगायत्रीमन्त्र : ॐ त्रिपुरायै च विद्महे भैरव्ये च धीमहि। तन्नो देवी प्रचोदयात्।

षडङ्गन्यास : ॐ त्रिपुरायै च हृदयाय नमः ॥१॥ ॐ विद्महे शिरसे स्वाहा ॥२॥ ॐ भैरव्यै च शिखायै वषट् ॥३॥ धीमहि कवचाय हुम् ॥४॥ ॐ तन्नो देवी नेत्रत्रयाय वौषट् ॥५॥ ॐ प्रचोदयादस्त्राय फट् ॥६॥

इसी प्रकार करन्यास भी करना चाहिये।

छिन्नमस्तागायत्रीमन्त्र : ॐ वैरोचन्यै च विद्महे छिन्नमस्तायै धीमहि। तन्नो देवी प्रचोदयात्।

षडङ्गन्यास : ॐ वैरोचन्यै च हृदयाय नमः ॥१॥ ॐ विद्महे शिरसे स्वाहा ॥२॥ ॐ छिन्नमस्तायै शिखायै वषट् ॥३॥ ॐ धीमहि कवचाय हुम् ॥४॥ ॐ तन्नो देवी नेत्रत्रयाय वौषट् ॥५॥ ॐ प्रचोदयादस्त्राय फट् ॥६॥

इसी प्रकार करन्यास भी करना चाहिये।

धूमावतीगायत्रीमन्त्र :

ॐ धूमावत्यै च विद्महे संहारिण्यै च धीमहि। तन्नो धूमा प्रचोदयात्।

षडङ्गन्यास : ॐ धूमावत्यै च हृदयाय नमः ॥१॥ ॐ विद्महे शिरसे स्वाहा ॥२॥ ॐ संहारिण्यै च शिखायै वषट् ॥३॥ ॐ धीमहि कवचाय हुम् ॥४॥ ॐ तन्नो धूमा नेत्रत्रयाय वौषट् ॥५॥ ॐ प्रचोदयादस्त्राय फट् ॥६॥

इसी प्रकार करन्यास भी करना चाहिये।

बगलामुखीगायत्रीमन्त्र : ॐ बगलामुख्यै च विद्महे स्तम्भिन्यै च धीमहि। तन्नो देवी प्रचोदयात्।

षडङ्गन्यास : ॐ बगलामुख्यै च हृदयाय नमः ।।१।। ॐ विद्महे शिरसे स्वाहा ।।२।। ॐ स्तम्भिन्यै च शिखायै वषट् ।।३।। ॐ धीमहि कवचाय हुमए।।४।। ॐ तन्नो देवी नेत्रत्रयाय वौषट् ।।५।। ॐ प्रचोदयादस्त्राय फट् ।।६।।

इसी प्रकार करन्यास भी करना चाहिये।

अथ मातङ्गीगायत्रीमन्त्र : ॐ मातङ्ग्यै च विद्महे उच्छिष्टचाण्डाल्यै च धीमहि। तन्नो देवी प्रचोदयात्।

षडङ्गन्यास : ॐ मातङ्ग्यै च हृदयाय नमः ।।१।। ॐ विद्महे शिरसे स्वाहा ।।२।। ॐ उच्छिष्टचाण्डाल्यै च शिखायै वषट् ।।३।। ॐ धीमहि कवचाय हुम् ।।४।। ॐ तन्नो देवी नेत्रत्रयाय वौषट् ।।५।। ॐ प्रचोदयादस्त्राय फट् ।।६।।

इसी प्रकार करन्यास भी करना चाहिये।

महिषमर्दिनीगायत्रीमन्त्र :

ॐ महिषमर्द्दिन्यै विद्महे दुर्गायै धीमहि। तन्नो देवी प्रचोदयात्।

षडङ्गन्यास : ॐ महिषमर्द्दिन्यै हृदयाय नमः ।।१।। ॐ विद्महे शिरसे स्वाहा ।।२।। ॐ दुर्गायै शिखायै वषट् ।।३।। ॐ धीमहि कवचाय हुम् ।।४।। ॐ तन्नो देवी नेत्रत्रयाय वौषट् ।।५।। ॐ प्रचोदयादस्त्राय फट् ।।६।।

इसी प्रकार करन्यास भी करना चाहिये।

त्वरितागायत्रीमन्त्र : ॐ त्वरिता देवी विद्महे महानित्यायै धीमहि। तन्नो देवी प्रचोदयात्!

षडङ्गन्यास : ॐ त्वरिता देवी हृदयाय नम : ।।१।। ॐ विद्महे शिरसे स्वाहा ।।२।। ॐ महानित्यायै शिखायै वषट् ।।३।। ॐ धीमहि कवचाय हुम् ।।४।। ॐ तन्नो देवी नेत्रत्रयाय वौषट् ।।५।। ॐ प्रचोदयादस्त्राय फट् ।।६।।

इसी प्रकार करन्यास भी करना चाहिये।

इति श्रीत्र्यधिकपञ्चाशद्देवता गायत्रीमन्त्रे गायत्रीपटलतन्त्रं समाप्तम्।

गायत्री कवच

याज्ञवल्क्य उवाच :

स्वामिन् सर्वजगन्नाथ संशयोऽस्ति महान्मम्। चतुः षष्टिकलानां च पातकानां च तद्वद ।।१।। मुच्यते केन पुण्येन ब्रह्मरूपं कथं भवेत्। देहश्च देवतारूपं मन्त्ररूपं विशेषत : ।।२।। क्रमत : श्रोतुमिच्छामि कवचं विधिपूर्वकम्।

याज्ञवल्क्य ने ब्रह्माजी से कहा : हे समस्त जगत् के स्वामिन्! मेरे हृदय में बहुत बड़ी शङ्का है। चौंसठ कला वाले पापों से मनुष्य किस पुण्य के द्वारा छुटकारा पाता है ? तथा उसका शरीर कैसे मन्त्ररूप, देवतारूप तथा ब्रह्मरूप होता है। मैं क्रम से विधिपूर्वक कवच सुनना चाहता हूं।

तब ब्रह्माजी ने इस प्रकार कवच का उपदेश दिया :

ब्रह्मोवाच :

विनियोग : ॐ अस्य श्रीगायत्रीकवचस्य ब्रह्मविष्णुरुद्रा ऋषय: । ऋग्यजु: सामाथर्वाणिच्छन्दांसि । परब्रह्मस्वरूपिणी गायत्री देवता । भू : बीजम् । भुव : शक्तिः । स्वः कीलकम् । श्रीगायत्रीप्रीत्यर्थे जपे विनियोग : ।

ऋष्यादिन्यास : ॐ ब्रह्मविष्णुरुद्रऋषिभ्यो नमः शिरसि ।।१।। ऋग्यजुः सामाथर्वच्छन्दोभ्यो नमः मुखे ।।२।। परब्रह्मस्वरूपिणी गायत्रीदेवतायै नमः हृदि ।।३।। भू : बीजाय नमः गुह्ये ।।४।। भुवः शक्तये नमः पादयोः ।।५।। स्वः कीलकाय नमः नाभौ ।।६।। विनियोगाय नमः सर्वांगे ।।७।।

करन्यास : ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुरित्यंगुष्ठाभ्यां नमः ।।१।। ॐ भूर्भुवः स्वः वरेण्यं तर्जनीभ्यां नमः ।।२।। ॐ भूर्भुवः स्वः भर्गोदेवस्य मध्यमाभ्यां नमः ।।३।। ॐ भूर्भुवः स्व: धीमह्यनामिकाभ्ययां नमः ।।४।। ॐ भूर्भुवः स्वः धियो यो न : कनिष्ठिकाभ्यां नमः ।।५।। ॐ भूर्भुवः स्वः प्रचोदयात् करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ।।६।।

षडङ्गन्यास : ॐ भूर्भुव : स्वः तत्सवितुरिति हृदयाय नमः ।।१।। ॐ भूर्भुव : स्व : वरेण्यमिति शिरसे स्वाहा ।।२।। ॐ भूर्भुव : स्वः भर्गोदेवस्येति शिखायै वषट् ।।३।। ॐ भूर्भुवः स्वः धीमहीति कवचाय हुम् ।।४।। ॐ भूर्भुव : स्व : धियो यो नः इति नेत्रत्रयाय वौषट् ।।५।। ॐ भूर्भुवः स्वः प्रचोदयादिति अस्त्राय फट् ।।६।।

इति न्यासं कृत्वा करौ बद्ध्वा प्रार्थयेत् । तथा च-वर्णास्त्रां कुण्डिका हस्तां शुद्धनिर्मलज्योतिषीम् । सर्वतत्त्वमयीं वन्दे गायत्रीं वेदमातरम् ।।१।।

इति सम्प्रार्थ्य ध्यानं कुर्यात् ।

अथ ध्यानम् : मुक्ताविद्रुमहेमनीलधवलच्छायैर्मुखैस्त्रीक्षणैर्युक्तामिन्दुनिबद्धरत्नमुकुटां तत्त्वार्थवर्णात्मिकाम् । गायत्रीं वरदाभयांकुशकशां शूलं कपालं गुणं शङ्खं चक्रमथारविन्दयुगलं हस्तैर्वहन्तीं भजे ।।१।।

ॐ गायत्री पूर्वत: पातु सावित्री पातु दक्षिणे ।
ब्रह्मविद्या च मे पश्चादुत्तरे मां सरस्वती ।।१।।
पावकीं मे दिशं रक्षेत्पावकोज्ज्वलशालिनी ।
यातुधानीं दिशं रक्षेद्यातुधानगणार्दिनी ।।२।।
पावमानीदिशं रक्षेत्पवमानविलासिनी ।
दिशं रौद्रीमवतु मे रुद्राणी रुद्ररूपिणी ।।३।।
उर्ध्वं ब्रह्माणी मे रक्षेदधस्ताद्वैष्णवी तथा ।
एवं दश दिशो रक्षेत्सर्वतो भुवनेश्वरी ।।४।।
ब्रह्मास्त्रस्मरणादेव वाचां सिद्धः प्रजायते ।
ब्रह्मदण्डश्च मे पातु सर्वशस्त्रास्त्रभक्षकः ।।५।।
ब्रह्मशीर्षस्तथा पातु शत्रूणां वधकारकः ।
सप्त व्याहृतय : पातु स सदा बिन्दुसंयुत : ।।६।।

वेदमाता च मां पातु सरहस्या सदैवता।
देवीसूक्तं सदा पातु सहस्राक्षरदेवता ॥७॥
चतुः षष्टिकला विद्या दिव्याद्यां पातु देवता।
बीचशक्तिश्च मे पातु पातु विक्रमदेवता ॥८॥
तत्पदं पातु मे पादौ जंघे मे सवितुः पदम्।
वरेण्यं कटिदेशं तु नाभिं भर्गस्तथैव च ॥९॥
देवस्य मे तु हृदयं धीमहीति गलं तथा।
धियो मे पातु जिह्वायां यः पदं पातु लोचने ॥१०॥
ललाटे नः पदंपातु मूर्द्धानं मे प्रचोदयात्।
तद्वर्णः पातु मूर्द्धानं सकारः पातु भालकम् ॥११॥
चक्षुषी मे विकारस्तु श्रोत्रं रक्षेत्तुकारकः।
नासापुटे वकारो मे रेकास्तु कपोलयोः ॥१२॥
णिकारस्त्वधरोष्ठे च यंकारस्त्वधरोष्ठके।
आस्यमध्ये भकारस्तुर्गोकारस्तु कपोलयोः॥१३॥
देकारः कण्ठदेशे च वकारः स्कन्धदेशयोः।
स्यकारो दक्षिणं हस्तं धीकारो वामहस्तके ॥१४॥
मकारो हृदयं रक्षेद्धिकारो जठरं तथा।
थिकारो नाभिदेशं च योकारस्तु कटिद्वयम् ॥१५॥
गुह्यं रक्षतु योकार ऊरू मे नः पदाक्षरम्।
प्रकारो जानुनी रक्षेच्चोकारो जङ्घदेशयोः ॥१६॥
दकारो गुल्फदेशं तु यात्कारः पादयुग्मकम्।
जातवेदेति गायत्री त्र्यम्बकेति दशाक्षरा ॥१७॥
सर्वतः सर्वदा पातु आपोज्योतीति षोडशी।
इदं तु कवचं दिव्यं बाधाशतविनाशकम् ॥१८॥
चतुः षष्टिकलाविद्यासकलैश्वर्यसिद्धिदम्।
जपारम्भे च हृदयं जपान्ते कवचं पठेत् ॥१९॥
स्त्रीगोब्राह्मणमित्रादिद्रोहाद्यखिलपातकैः।
मुच्यते सर्वपापेभ्यः परं ब्रह्माधिगच्छति ॥२०॥
पुष्पाञ्जलिं च गायत्र्या मूलेनैव पठेत्सकृत्।
शतसाहस्रवर्षाणां पूजायाः फलमाप्नुयात् ॥२१॥
भूर्जपत्रे लिखित्वै तत्स्वकण्ठे धारयेद्यदि।
शिखायां दक्षिणे बाहौ कण्ठे वा धारयेद्बुधः ॥२२॥
त्रैलोक्यं क्षोभयेत्सर्वं त्रैलोक्यं दहति क्षणात्।
पुत्रबान्धनवाञ्छीमात्रानाविद्यानिधिर्भवेत् ॥२३॥

ब्रह्मास्त्रादीनि सर्वाणि तदङ्गस्पर्शनात्ततः ।
भवन्ति तस्य तुल्यानि किमन्यत्कथयामि ते ॥२४॥
अभिमन्त्रितगायत्रीकवचं मानसं पठेत् ।
तज्जलं पिबतो नित्यं पुरश्चर्याफलं भवेत् ॥२५॥
लघुसामान्यकं मन्त्रं महामन्त्रं तथैव च।
यो वेत्ति धारणां युञ्जञ्जीवन्मुक्तः स उच्यते ॥२६॥
सप्त व्याहृदयो विप्र सप्तावस्थाः प्रकीर्तिताः।
सप्तजीवशता नित्यं व्याहृती अग्निरूपिणी ॥२७॥
प्रणवे नित्ययुक्तस्य व्याहृतीषु च सप्तसु।
सर्वेषामेव पापानां सङ्करे समुपस्थिते ॥२८॥
शतं सहस्रमभ्यर्च्य गायत्रीपावनं महत् ।
दशशतमष्टोत्तरशतं गायत्रीपावनं महत् ॥२९॥
भक्तिमान्यो भवेद्विप्रः संध्यांकर्म समाचरेत्।
कालेकाले तु कर्त्तव्यं सिद्धिर्भवति नान्यथा ॥३०॥
प्रणवं पूर्वमुद्धृत्य भूर्भुवः स्वस्तथैव च।
तुर्यं सहैव गायत्रीजप एव उदाहृतः ॥३१॥
तुरीयपादमुत्सृज्य गायत्रीं च जपेद्विजः ।
स मूढो नरकं याति कालसूत्रमधोगतिः ॥३२॥
मन्त्रादौ जननं प्रोक्तं मन्त्रान्ते मृतसूतकम्।
उभयोर्दोषनिर्मुक्तं गायत्री सफला भवेत् ॥३३॥
मन्त्रादौ पाशबीजं च मन्त्रान्ते कुशबीजकम्।
मन्त्र मध्ये तु या माया गायत्री सफला भवेत् ॥३४॥
वाचिकस्त्वहमेव स्यादुपांशु शतमुच्यते ।
सहस्रं मानसं प्रोक्तं त्रिविधं जपलक्षणम् ॥३५॥
अक्षमालां च मुद्रां च गुरोरपि न दर्शयेत्।
जपं चाक्षस्वरूपेणानामिकामध्यपर्वणि ॥३६॥
अनामा मध्यमा हीना कनिष्ठादिक्रमेण तु ।
तर्ज्जनीमूलपर्यन्तं गायत्रीजपलक्षणम् ॥३७॥
पर्वभिस्तु जपेदेवमन्यत्र नियमं स्मृतम् ।
गायत्री वेदमूलत्वाद्वेदः पर्वसु गीयते ॥३८॥
दशभिर्ज्जन्मजनितं शतेनैव पराकृतम् ।
त्रियुगं तु सहस्राणि गायत्री हन्ति किल्बिषम् ॥३९॥
प्रातः कालेषु कर्त्तव्यं सिद्धिं विप्रो य इच्छति।
नादालये समाधिश्च संध्यायां समुपासते ॥४०॥

अंगुल्यग्रेण यज्जप्तं • यज्जप्तं मेरुलङ्घने ।
असंख्यया च यज्जप्तं यज्जप्तं निष्फलं भवेत ॥४१॥
विना वस्त्रं प्रकुर्वीत गायत्री निष्फलाभवेत्।
वस्त्रपुच्छं न जानाति वृथा तस्य परिश्रमः ॥४२॥
गायत्रीं तु परित्यज्य अन्यमन्त्रमुपासते ।
सिद्धान्नं च परित्यज्य भिक्षामटति दुर्मतिः ॥४३॥
ऋषिश्छन्दो देवताख्या बीजशक्तिश्च कीलकम्।
नियोगं न च जानाति गायत्रीं निष्फला भवेत् ॥४४॥
वर्णमुद्रा ध्यानपदमावाहनविसर्जनम् ।
दीपचक्रं न जानाति गायत्री निष्फला भवेत् ॥४५॥
शक्तिन्यासस्तथा स्थानं मन्त्रसम्बोधनं परम्।
त्रिविधं यो न जानाति गायत्री निष्फला भवेत् ॥४६॥
पञ्चोपचारकाश्चैव होमद्रव्यं तथैव च ।
पञ्चाङ्गं च विना नित्यं गायत्री निष्फला भवेत् ॥४७॥
मन्त्रसिद्धिर्भवेज्जातु विश्वामित्रेण भाषितम्।
व्यासो वाचस्पतिं जीवस्तुता देवीतपः स्मृतौ ॥४८॥
सहस्रं जप्ता सा देवी ह्युपपातकनाशिनी।
लक्षजाप्ये तथा तच्च महापातकनाशिनी ॥४९॥
कोटिजाप्येन राजेन्द्र यदिच्छति तदाप्नुयात्।
न देयं परशिष्येभ्यो ह्यभक्तेभ्यो विशेषतः।
शिष्येभ्यो भक्तियुक्तेभ्यो ह्यन्यथा मृत्युमाप्नुयात् ॥५०॥
इति श्रीमद्वसिष्ठसंहितायां महात्म्यसहितं गायत्रीकवचं संपूर्णम्।

उपरोक्त कवच में ब्रह्माजी ने १८ वें श्लोक से अन्त तक कवच के महात्म्य तथा फल आदि का वर्णन किया है जिसका सारांश इस प्रकार है :

यह दिव्य कवच सैकड़ों बाधाओं को नष्ट करने वाला है। चौंसठ कलाओं और विद्याओं तथा समस्त ऐश्वर्य की सिद्धि देने वाला है। जो साधक जप के प्रारम्भ में हृदय तथा अन्त में कवच का पाठ करता है वह स्त्री, गो, ब्राह्मण, मित्र आदि के द्रोह आदि समस्त पापों से छूट कर ब्रह्म को प्राप्त करता है। पुष्पाञ्जलि को मूल गायत्री के साथ ही पढ़ना चाहिये। ऐसा करने से साधक एक लाख वर्षों की पूजा का फल प्राप्त करता है। जो साधक भोजपत्र पर इस गायत्री मन्त्र को लिखकर शिखा में, दाहिने हाथ में या कण्ठ में धारण करता है वह तीनों लोकों को कँपा देता है तथा तत्क्षण तीनों लोकों को भस्म कर सकता है। वह पुत्रवान्, धनवान्, श्रीमान् तथा अनेक विद्याओं का निधि बन जाता है। ब्रह्मास्त्र आदि सब अस्त्र उस साधक के शरीर से स्पर्श करते ही उसके तुल्य हो जाते हैं, और अधिक मैं तुमसे क्या कहूं।

जो साधक अभिमन्त्रित गायत्री कवच का मानस-पाठ करता है और नित्य उसका जल पीता है उसे गायत्री पुरश्चरण का फल मिलता है। लघु, सामान्य और महामन्त्र की धारणा को जो साधक जानता है, वह जीवनमुक्त कहा जाता है। हे विप्र, सात व्याहृतियाँ और सात अवस्थाएँ बतायी गयी हैं। सप्तजीवशता व्याहृती सदा अग्निरूपिणी कही गयी है। जो साधक प्रणव अर्थात् (ॐ) तथा व्याहृति (भूः, भुवः, स्वः) नित्य लगा रखता है वह सभी पापों के समूह के उपस्थित होने पर सौ या हजार बार या एक सौ आठ बार इसका जप करके विघ्न से छूट जाता है। जो विप्र भक्तिमान् है उसे सन्ध्या नित्य करनी चाहिये। निर्धारित समय पर उसे जप आदि कर्म करना चाहिये तभी सिद्धि प्राप्त होती है, अन्यथा नहीं।

जप में पहले प्रणव का उच्चारण करके भूः, भुवः, स्वः का उच्चारण करना चाहिये। इसके बाद चौथे चरण के साथ गायत्री का जप करना चाहिये। जो द्विज चौथे चरण को छोड़कर गायत्री का जप करता है वह मूढ कालसूत्र नामक नरक को जाता है। मन्त्र के आदि में जननदोष होता है तथा मन्त्र के अन्त में मृतसूतक दोष होता है। इन दोनों दोषों से रहित गायत्री मन्त्र का ही जप सफल होता है। जिस गायत्री मन्त्र के प्रारम्भ में पाश बीज तथा मन्त्र के अन्त में कुश बीज और मध्य में माया होती है वह गायत्री सफल होती है। वाचिक जप दसगुना, उपांशु जप सौगुना तथा मानस जप हजार गुना फल वाला होता है। इस प्रकार तीन तरह का जप होता है।

रुद्राक्ष की माला तथा मुद्रा किसी को न दिखाये। रुद्राक्ष स्वरूप अनामिका अंगुली के पर्वोपर मध्यमा को छोड़कर कनिष्ठिका के क्रम से तर्जनी के मूल पर्व तक गायत्री का जप करना चाहिये। अंगुली के पर्वो से इस प्रकार मन्त्र का जप करे। अन्यत्र यह नियम कहा गया है : गायत्री वेद का मूल है इस कारण वेद पर्वो पर गाये जाते हैं इसलिए गायत्री मन्त्र भी अंगुलियों के पर्वो पर जपा जाता है। गायत्री का दश बार जप करने से साधक इस जन्म के पापों से छूट जाता है। सौ बार जप करने से पूर्वजन्म के पाप से छूट जाता है और एक हजार गायत्री जप से तीनों युगों में किये पाप से छूट जाता है। जो विप्र सिद्धि चाहता है, उसे प्रातःकाल जप करना चाहिये। सायंकाल शिवालय में समाधि लगानी चाहिये। अंगुली के अग्रभाग से जो जप किया जाता है और मेरु के लंघन पर जो जप किया जाता है तथा बिना गणना के जो जप किया जाता है वह सब जप निष्फल होता है। बिना वस्त्र के गायत्री निष्फल होती है। जो साधक वस्त्रपुच्छ को नहीं जानता उसका परिश्रम व्यर्थ होता है। जो साधक गायत्री को छोड़कर अन्य मन्त्र का जप करता है वह दुर्मति प्राप्त अन्न को छोड़कर इधर-उधर भिक्षा मांगता है। जो ऋषि, छन्द, देवता, बीज, शक्ति, कीलक तथा नियोग नहीं जानता उसके लिए गायत्री निष्फल है। जो साधक वर्ण, मुद्रा, ध्यान, पद, आवाहन, विसर्जन तथा दीपचक्र नहीं जानता उसके लिए गायत्री निष्फल है। शक्तिन्यास, स्थान तथा मन्त्रसम्बोधन इन तीनों को जो नहीं जानता उसके लिए गायत्री निष्फल है। पाँचो उपचार, होमद्रव्य तथा पञ्चांग के बिना गायत्री सदा निष्फल रहती है। व्यास और वृहस्पति को तप द्वारा स्मृति में गायत्री जागृत हुई। वह गायत्री देवी एक हजार जप करने पर उपपातकों को नष्ट करने वाली होती है। एक लाख जप करने पर वह महापापों को नष्ट करती है। हे राजेन्द्र! एक करोड़ जप करने के बाद साधक जो चाहता है वह पा सकता है।

इस गायत्री मन्त्र को दूसरे के शिष्यों को नहीं देना चाहिये। जो भक्त नहीं हैं उन्हें तो विशेष रूप से नहीं देना चाहिये। अपने भक्तियुक्त शिष्यों को इसे देना चाहिये; अन्यथा करने से साधक को मृत्यु का ग्रास होना पड़ेगा।

इति वसिष्ठसंहिता में गायत्री कवच सम्पूर्ण।

गायत्रीपञ्जरस्तोत्रम्

भगवन्तं देवदेवं ब्रह्माणं परमेष्ठिनम्।
विधातारं विश्वसृजं पद्मयोनिं प्रजापतिम् ॥१॥
शुद्धस्फटिकसंकाशं महेन्द्रशिखरोपमम्।
बद्धपिङ्गजटाजूटा तडित्कनककुण्डलम् ॥२॥
शरच्चन्द्राभवदनं स्फुरदिन्दीवरेक्षणम् ।
हिरण्मयं विश्वरूपमुपवीताजिनावृतम् ॥३॥
मौक्तिकाभाक्षवलयस्तन्त्रीलयसमन्वितः ।
कर्पूरोद्धूलिततनुः स्रष्टुर्नयनवर्द्धनम् ॥४॥
विनयेनोपसङ्गम्य शिरसा प्रणिपत्य च।
नारदः परिपप्रच्छ देवर्षिगणमध्यगः ॥५॥

एक बार देवाधिदेव, परमेष्ठी, विश्वसृज, पद्मयोनि, प्रजापति, शुद्ध स्फटिक के समान महेन्द्रपर्वत के शिखर पर विराजमान, पिंगल जटाजूट बाँधे हुए, बिजली की तरह स्वर्ण के कुण्डल पहने हुए, शरद्कालीन चन्द्रमा के समान मुखवाले, कमल के समान शोभित नेत्रों वाले, स्वर्णमय, विश्वरूप, यज्ञोपवीत तथा अजिन धारण किए हुए, मोती के समान आभा वाले, रुद्राक्ष का कंकण धारण किये, वीणालय से युक्त, कपूर से लिप्त शरीर वाले, प्रजापति के आँखों को आनन्द देने वाले, ब्रह्माजी से देवताओं और ऋषियों के साथ नारदजी ने विनय से शिर झुकाकर प्रश्न किया :

नारद उवाच :

भगवन्देवदेवेश सर्वज्ञ करुणानिधे।
श्रोतुमिच्छामि प्रश्नेन भोगमोक्षैकसाधनम् ॥६॥
ऐश्वर्यस्य समग्रस्य फलदं द्वन्द्ववर्जितम्।
ब्रह्महत्यादिपापघ्नं पापाद्यरिभयापहम् ॥७॥
यदेकं निष्कलं सूक्ष्मं निरञ्जनमनामयम्।
यत्ते प्रियतमं लोके तन्मे ब्रूहि पितर्मम् ॥८॥

नारद ने पूछा : हे देवताओं के स्वामिन् करुणानिधे ! मैं यह जानना चाहता हूं कि भोग और मोक्ष का एकमात्र साधन, समस्त ऐश्वर्य का फल देने वाला, द्वन्द्वों से रहित, ब्रह्महत्या आदि पापों को नष्ट करने वाला, पाप आदि तथा शत्रुओं के भय को दूर करने वाला जो एक निरञ्जन, दोषों से रहित सूक्ष्म और संसार में प्रिय हो उस साधन को हे पिता जी आप मुझे बतायें।

ब्रह्मोवाच :

शृणु नारद वक्ष्यामि ब्रह्ममूलं सनातनम्।
सृष्ट्यादौ मन्मुखे क्षिप्तं देवदेवेन विष्णुना ॥९॥
प्रपञ्चबीजमित्याहुरुत्पत्तिस्थितिहेतुकम् ।
पुरा मया तु कथितं कश्यपाय सुधीमते ॥१०॥
सावित्रीपञ्जरं नाम रहस्यं निगमत्रये।
ऋष्यादिकं च दिग्वर्णं साङ्गावरणकं क्रमात् ॥११॥

वाहनायुधमन्त्रास्त्रं मूर्तिध्यानसमन्वितम्।
स्तोत्रं शृणु प्रवक्ष्यामि तव स्नेहाश्च नारद॥१२॥
ब्रह्मनिष्ठाय देयं स्याददेयं यस्य कस्यचित्।
आचम्य नियतः पश्चादात्मध्यानपुरः सरम्॥१३॥

ब्रह्मा ने कहा : हे नारद! उस सनातन, ब्रह्ममूल साधन को मैं कहता हूं जिसे सृष्टि के प्रारम्भ में देवों के देव भगवान् विष्णु ने मेरे मुख में छोड़ा था। यह इस संसार का मूल कारण है। यही इस संसार की उत्पत्ति और स्थिति का कारण है। मैंने इसे बुद्धिमान् कश्यप को बतलाया था। यह सावित्री पञ्जर तीनों नियमों में अत्यन्त रहस्यमय है। ऋषि आदि, दिशाओं के वर्ण, अङ्गोंसहित आवरण, वाहन, आयुध, मन्त्र, अस्त्र तथा मूर्ति के ध्यान से युक्त स्तोत्र मैं स्नेहवश तुम्हें बतलाऊँगा।

हे नारद! इसे ब्रह्मनिष्ठ व्यक्ति को ही देना चाहिये अन्य के लिए यह अदेय है। साधक प्रथम आचमन करके आत्मा का ध्यान और तदुपरान्त इसका पाठ करें :

ओमित्यादौ विचिंत्याथ व्योम हेमाब्ज संस्थितम्।
धर्मकन्दगतज्ञानमैश्वर्याष्टदलान्वितम् ॥१४॥
वैराग्य कर्णिकासीनां प्रणवग्रहमध्यगाम्।
ब्रह्मवेदी समायुक्तां चैतन्यपुरमध्यगाम्॥१५॥
तत्त्वहंससमाकीर्णां शब्दपीठे सुसंस्थिताम्।
नादबिन्दुकलातीतां गोपुरैरूपशोभिताम्॥१६॥
विद्याविद्यामृतत्वादि प्रकारैरभि संवृताम्।
निगमार्गलसंच्छन्नां निर्गुणद्वारवाटिकाम्॥१७॥
चतुर्वर्गफलोपेतां महाकल्प वनैर्वृताम्।
सान्द्रानन्दसुधासिन्धुनिगमद्वारवाटिकाम् ॥१८॥
ध्यानधारणयोगादितृणगुल्मलतावृताम्।
सदसच्चित्स्वरूपाख्य मृगपक्षिसमाकुलाम्॥१९॥
विद्याविद्याविचारत्वाल्लोकालोका चलावृताम्।
अविकारसमाश्लिष्ट निजध्यान गुणावृताम्॥२०॥
पञ्चीकरण पञ्चोत्थभूततत्त्व निवेदिताम्।
वेदोपनिषदर्थाख्य देवर्षिगण सेविताम्॥२१॥
इतिहासग्रहगणैः सदारैरभिवन्दिताम्।
गाथाप्सरोभिर्यक्षश्च गणकिंन्नर सेविताम्॥२२॥
नारसिंहपुराणाख्यैः पुरुषैः कल्पचारणैः।
कृतगानविनोदादिकथालापनतत्पराम् ॥२३॥
तदित्यवाङ्मनोगम्यतेजोरूपधरां पराम्।
जगतः प्रसवित्रीं तां सवितुः सृष्टिकारिणीम्॥२४॥
वरेण्यमित्यन्नमयीं पुरुषार्थफलप्रदाम्।
अविद्यावर्णवर्ज्यां च तेजोवद्गर्भसंज्ञिकाम्॥२५॥

देवस्य सच्चिदानन्दपरब्रह्मरसात्मिकाम् ।
धीमह्यहं स वै तद्वद्ब्रह्माद्वैतस्वरूपिणीम् ॥२६॥
धियो यो नस्तु सविता प्रचोदयादुपासिताम्।
परोसौ सविता साक्षादेनोनिर्हरणाय च ॥२७॥
परोरजस इत्यादि परं ब्रह्म सनातनम्।
आपोज्योतिरिति द्वाभ्यां पाञ्चभौतिकसंज्ञकम् ॥२८॥
रसोकतं ब्रह्मपदैस्तां नित्यां तपिनीं पराम्।
भूर्भुवः सुररित्येतैर्निगमत्वप्रकाशिकाम् ॥२९॥
महर्जनस्तपः सत्यलोकोपरि सुसंस्थिताम्।
तादृगस्या विराड्रूपरहस्यं प्रवदाम्यहम् ॥३०॥
व्योमकेशालकाकाशद्योकिरीटविराजितात् ।
मेघभ्रुकुटिमाक्रान्तविधिविष्णुशिवार्चिताम् ॥३१॥
गुरुभार्गवकर्णान्तां सोमसूर्याग्निलोचनाम् ।
इडापिङ्गलसूक्ष्माभ्यां वामनासापुटान्विताम् ॥३२॥
संध्याद्विरोष्टपुटितां लसद्वाग्भूपजिह्विकाम् ।
सन्ध्यासौद्युमणेः कण्ठलसद्बाहुसमन्विताम् ॥३३॥
पर्जन्यहृदयासक्त वसुसुस्तनमण्डलाम् ।
आकाशोदरवित्रस्तनाभ्यवान्तरदेशिकाम् ॥३४॥
प्रजापत्याख्यजघनां कटीन्द्राणीति संज्ञिकाम्।
ऊरूमलयमेरुभ्यां शोभमानाऽसुरद्विषाम् ॥३५॥
जानुनी जह्नुकुशिक वैश्वदेवसदाभुजाम्।
अयनद्वयजङ्घाद्य सुराद्यपितृसंज्ञिकाम् ॥३६॥
पदांघ्रिनखरोमाणि भूतलद्रुमलांछिताम् ।
ग्रहराश्यक्षदिवर्षिमूर्तिं च परसंज्ञिकाम् ॥३७॥
तिथिमासर्तु वर्षाख्यसुकेतु निमिषात्मिकाम्।
अहोरात्रार्द्धमासाख्यां सूर्यचन्द्रमसात्मिकाम् ॥३८॥
मायाकल्पितवैचित्र्यसन्ध्याच्छादनसम्वृताम् ।
ज्वलत्कालानलप्रख्यां तडित्कोटिसमप्रभाम् ॥३९॥
कोटिसूर्यप्रतीकाशां चन्द्रकोटिसुशीतलाम् ।
सुधामण्डलमध्यस्थां सान्द्रानन्दाऽमृतात्मिकाम् ॥४०॥
वागतीतां मनोरम्यां वरदां वेदमातरम् ।
चराचरमयीं नित्यां ब्रह्माक्षरसमन्विताम् ॥४१॥
ध्यात्वा स्वात्मनिभेदेन ब्रह्मपञ्जरमारभे।
पञ्जरस्य ऋषिश्चाहं छन्दो विकृतिरुच्यते ॥४२॥

देवता च परो हंसः परब्रह्माधिदेवता।
प्रणवो बीजशक्तिः स्यादोंकीलकमुदाहृतम् ॥४३॥
तत्तत्वं धीमहि क्षेत्रं धियोऽस्त्रं यत् परं पदम्।
मन्त्रमापोज्योतिरिति योनिर्हंसः सवेधकम् ॥४४॥
विनियोगस्तु सिद्ध्यर्थं पुरुषार्थचतुष्टये।
ततस्तैरङ्गषट्कं स्यात्तैरेव व्यापकत्रयम् ॥४५॥
पूर्वोक्तदेवतां ध्यायेत्साकारगुणसंयुताम् ।
पञ्चवक्त्रां दशभुजां त्रिपञ्चनयनैर्युताम् ॥४६॥
मुक्ताविद्रुमसौवर्णां सितशुभ्रसमाननाम् ।
वाणीं परां रमां मायां चामरैर्दर्पणैर्युताम् ॥४७॥
षडङ्गदेवतामन्त्रैरूपाद्यवयवात्मिकाम् ।
मृगेन्द्रवृषपक्षीन्द्रमृगहंसासनस्थिताम् ॥४८॥
ऊर्ध्वेन्दुबद्धमुकुटकिरीट मणिकुण्डलाम् ।
रत्नताटङ्कमाङ्गल्यपरग्रैवेयनूपुराम् ॥४९॥
अंगुलीयककेयूरकङ्कणौघैरलंकृताम् ।
दिव्यस्त्रग्वस्त्रसंछन्नरविमण्डलमध्यगाम् ॥५०॥
वराभयाब्जयुगलां शङ्खचक्रगदाकुशाम् ।
शुभ्रं कपालं दधतीं वहन्तीमक्षमालिकाम ॥५१॥
गायत्रीं वरदां देवीं सावित्रीं वेदमातरम् ।
आदित्यपथगां नित्यां स्मरेद्ब्रह्मस्वरूपिणीम् ॥५२॥
विचित्रमन्त्रजननीं स्मरेद्विद्यां सरस्वतीम् ।
त्रिपदाऋषिङ्मयी पूर्वामुखी ब्रह्मास्त्रसंज्ञिका ॥५३॥
चतुर्विंशतितत्त्वाख्या पातु प्राचीं दिशं मम।
चतुष्पादयजुर्ब्रह्मदण्डाख्या पातु दक्षिणाम् ॥५४॥
षट्त्रिंशत्तत्त्वयुक्ता सा पातु मे दक्षिणां दिशम्।
प्रत्यङ्मुखी पञ्चपदी पञ्चाशत्तत्त्वरूपिणी ॥५५॥
पातु प्रतीचीमनिशं सामब्रह्मशिरोऽङ्किता ।
सौम्यां ब्रह्मस्वरूपाख्या साथर्वाङ्गिरसात्मिका ॥५६॥
उदीचीं षट्पदा पातु चतुष्षष्टिकलात्मिका।
पञ्चाशत्तत्त्वरचिता भवपादाश ताक्षरी ॥५७॥
व्योमाख्या पातु मे चोर्ध्वां दिशं वेदाङ्गसंस्थिता।
विद्युन्निभा ब्रह्मसंज्ञा मृगारूढा चतुर्भुजा ॥५८॥
चापेषुचर्मासिधरा पातु मे पावकीं दिशम्।
ब्राह्मी कुमारी गायत्री रक्ताङ्गी हंसवाहिनी ॥५९॥

बिभ्रत्कमण्डल्वक्षस्त्रक्स्रुवान्मे पातु नैर्ऋतीम्।
चतुर्भुजा वेदमाता शुक्लाङ्गी वृषवाहिनी॥६०॥
दराभयकपालाक्षस्त्रग्विणी पातु वारुणीम्।
श्यामा सरस्वती वृद्धा वैष्णवी गरुडासना॥६१॥
शङ्खार्यब्जाभयकरा पातु शैवीं दिशं मम।
चतुर्भुजा वेदमाता गौराङ्गी सिंहवाहना॥६२॥
वराभयाब्जयुगुलैर्भुजैः पात्वपरां दिशम्।
तत्तत्पार्श्वस्थिता स्वस्ववाहनायुधभुषणा ॥६३॥
स्वस्वदिक्षु स्थिताः पान्तु ग्रहशक्त्यङ्गदेवता।
मन्त्राधिदेवता रूपा मुद्राधिष्ठानदेवताः ॥६४॥
व्यापकत्वेन पात्वस्मानापादतलमस्तकम् ।
तत्पदं मे शिरः पातु भालं मे सवितुः पदम् ॥६५॥
वरेण्यं मे दृशौ पातु श्रुती भर्गः सदा मम।
घ्राणं देवस्य मे पातु पातु धीमहि मे मुखम्॥६६॥
जिह्वां मम धियः पातु कण्ठे मे पातु यः पदम्।
नः पदं पातु मे स्कन्धौ भुजौ पातु प्रचोदयात् ॥६७॥
करौ मे च पराः पातु पादौ मे रजसोऽवतु।
ॐ मे नाभिं सदा पातु कटिं मे पातु मे सदा॥६८॥
ओमापः सक्थिनी पातु गुह्यं ज्योतिः सदा मम।
ऊरू मम रसः पातु जानुनी अमृतं मम॥६९॥
जंघे ब्रह्मपदं पातु गुल्फौ भूः पातु मे सदा।
पादौ मम भुवः पातु सुवः पात्वखिलं वपुः॥७०॥
रोमाणि मे महः पातु रोमकं पातु मे जनः।
प्राणश्च धातुस्तत्त्वानि तदीशः पातु मे तपः ॥७१॥
सत्यं पातु ममायूंषि हंसो वृद्धिं च पातु मे।
शुचिषत्पातु मे शुक्रं वसु पातु श्रियं मम॥७२॥
मतिं पात्वन्तरिक्षे सद्धोता दानं च पातु मे।
वेदिषत्पातु मे विद्यामतिथिः पातु मे गृहम् ॥७३॥
धर्मं दुरोणसत्पातु नृषत्पातु सुतान्मम ।
वरसत्पातु मे मायामृतसत्पातु मे सुतान् ॥७४॥
व्योमसत्पातु मे बन्धून् भ्रातॄनब्जश्च पातु मे।
पशून्मे पातु गोजाश्च ऋतजाः पातु मे भुवम्॥७५॥
सर्वं मे अद्रिजा पातु यानं मे पातवृतं सदा।
अनुक्तमथ यत्स्थानं शरीरेन्तर्बहिश्च यत् ॥७६॥

तत्सर्वं पातु मे नित्यं हंसः सोऽहमहर्निशम्।

गायत्री पञ्जर समाप्त, अथ पञ्जर माहात्म्य :

इदं तु कथितं सम्यङ् मया ते ब्रह्मपञ्जरम्॥७७॥
सन्ध्ययोः प्रत्यहं भक्त्या जपकाले विशेषतः।
धारयेद्द्विजवर्यो यः श्रावयेद्वा समाहितः॥७८॥
स विष्णुः स शिवः सोहं सोऽक्षरः स विराट् स्वराट्।
शताक्षरात्मकं देव्यानामाष्टाविंशतिः शतम्॥७९॥
शृणु वक्ष्यामि तत्सर्वमतिगुह्यं सनातनम्।

हे नारद! यह मैंने अच्छी तरह ब्रह्मपंजर बता दिया है। सायं-प्रात : दोनों समय भक्तिपूर्वक प्रगतिदिन जपकाल में विशेषरूप से इसे जो द्विज धारण करता है या दूसरों को समाहित होकर सुनता है, वह विष्णु, शिव, स्वयं मैं अक्षर, विराट् तथा सवाराट् हो जाता है। सौ अक्षरों वाले अट्ठाइस सौ देवीं के जो नाम हैं वे अत्यन्त गुह्य और सनातन हैं। मैं उन सभी को तुम्हें बता रहा हूं :

भूतिदा भुवना वाणी वसुधा सुमना मही॥८०॥
हरिणी जननी नन्दा स विसर्गा तपस्विनी।
पयस्विनी सती त्यागा चैन्दवी सत्यवीरसा॥८१॥
विश्वा तुर्या परा रेच्या निर्घृणी यमिनी भवा।
गोदेधा च जरिष्ठा च स्कन्दिनी धीर्मतिर्हिमा॥८२॥
भीषणा योगिनी यक्षी नदी प्रज्ञा च चोदिनी।
धनिनी यामिनी पद्मा रोहिणी रमणी ऋषिः॥८३॥
सेनामुखी सामयी च वकुला दोषवर्जिता।
सर्वकामदुघा सोमोद्भावाहङ्कारवर्जिता॥८४॥
द्विपदा च चतुष्पदा त्रिपदा चैकषट्पदा।
अष्टापदी नव पदी सा सहस्राक्षरात्मिका॥८५॥
इदं यः परमं गुह्यं सावित्रीमन्त्रपञ्जरम्।
नामाष्टविंशतिशतं शृणुयाच्छ्रावयेत्पठेत्॥८६॥
मर्त्यानाममृतत्वाय भीतानामभयाय च।
मोक्षाय च मुमुक्षूणां श्रीकामानां श्रिये सदा॥८७॥
विजयाय युयुत्सूनां व्याधितानामरोगकृत्।
वश्याय वश्यकामानां विद्यायै वेदकामिनाम्॥८८॥
द्रविणाय दरिद्राणां पापिनां पापशान्तये।
वादिनां वादिविजये कवीनां कविताप्रदम्॥८९॥
अन्नाय क्षुधितानां च स्वर्गाय नाममिच्छताम्।
पशुभ्यः पशुकामानां पुत्रेभ्यः पुत्रकांक्षिणाम्॥९०॥
क्लेशिनां शोकशान्त्यर्थं नृणां शत्रुभयाय च।
राजवश्याय द्रष्टव्यं पञ्जरं नृपसेविनाम्॥९१॥

जो इस परम गुह्य सावित्रीमन्त्र पंजर को, जिसमें अट्ठाइस सौ नाम हैं : सुनता है या सुनाता है

वह मर्त्य अमरता को प्राप्त करता है। भयभीत अभय को प्राप्त करता है। मोक्ष चाहने वाला मुक्ति को प्राप्त करता है। लक्ष्मी चाहने वाला सदा लक्ष्मी को प्राप्त करता है। यह पंजर युद्ध करने वालों को विजय देता है। रोगियों को स्वस्थ करता है। वशीकरण करने वालों को वश्यता प्रदान करता है। जो वेद ज्ञान प्राप्त करना चाहते हैं उन्हें यह विद्या प्रदान करता है। द्ररिद्रों को द्रव्य देता है। पापियों के पाप को शान्त करता है। शास्त्रार्थियों को बाद में विजय प्रदान करता है। कवियों के लिए कवित्य शक्ति प्रदान करता है। भूखों को अन्न देता है। स्वर्ग चाहने वालों को स्वर्ग देता है। पशु चाहने वालों को पशु देता है। पुत्र चाहने वालों को पुत्र देता है। क्लेश पाने वालों को यह शान्ति प्रदान करता है। इस पंजर से साधक के शत्रु को भय प्राप्त होता है। जो राज-सेवा में लगे हैं उन्हें राजा को वश में करने के लिए इस पंजर को देखना चाहिये।। ८६-९१ ।।

भक्त्यर्थं विष्णुभक्तानां विष्णौ सर्वान्तरात्मनि।
नायकं विधिसृष्टानां शान्तये भवति ध्रुवम् ।।९२।।
निः स्पृहाणां नृणां मुक्ति : शाश्वती भवति ध्रुवम्।
जप्यं त्रिवर्णसंयुक्तं गृहस्थेन विशेषत : ।।९३।।
मुनीनां ज्ञानसिद्ध्यर्थं यतीनां मोक्षसिद्धये।

यह पंजर विष्णुभक्तों को पूर्णरूप से उनके हृदय में भक्ति प्रदान करता है। यह पंजर ब्रह्मा से निर्मित समस्त संसार का नायक है और सबको शान्ति प्रदान करता है। निस्पृह लोगों की निश्चितरूप से शाश्वत मुक्ति होती है; विशेषरूप से गृहस्थ को चाहिये कि वह त्रिवर्ग सहित इसका जप करे। मुनियों को ज्ञान की सिद्धि के लिए तथा यतियों को मोक्ष प्राप्ति के लिए इसका जप करना चाहिये।

उद्यन्तं चन्द्रकिरणमुपस्थाय कृताञ्जलि : ।।९४।।
कानने वा स्वभवने तिष्ठञ्छुद्धो जपेदिदम्।
सर्वान्कामानवाप्नोति तथैव शिवसन्निधौ ।।९५।।
मम प्रीतिकरं दिव्यं विष्णुभक्तिविवर्द्धनम्।
ज्वरार्त्तानां कुशाग्रेण मार्जयेत्कुष्ठरोगिणाम् ।।९६।।
अङ्गमङ्गं यथालिङ्गं कवचेन तु साधक : ।
मण्डलेन विशुद्ध्येत सर्वरोगैर्न संशय : ।।९७।।
मृतप्रजा च या नारी जन्मवंध्या तथैव च।
कन्यादिवंध्या या नारी तासामङ्गं प्रमार्जयेत् ।।९८।।
पुत्रानरोगिणस्तास्तु लभन्ते दीर्घजीविन : ।
तास्ता : संवत्सरादर्वाग्गर्भन्तु दधिरे पुन : ।।९९।।
पतिविद्वेषिणी या स्त्री अङ्गं तस्या : प्रमार्जयेत्।
तमेव भजते सा स्त्री पतिं कामवश नयेत् ।।१००।।

साधक को चन्द्रमा के उदय होने पर हाथ जोड़ कर वन में या अपने घर पर शुद्ध होकर इसका जप करना चाहिये। वह उसी प्रकार से सभी कामनाओं की सिद्धि प्राप्त करता है जैसे शिव के निकट। भगवान् विष्णु की भक्ति को बढ़ाने वाला यह दिव्य पंजर मुझे बहुत प्रिय है। साधक ज्वर रोगियों को तथा कुष्ठ रोगियों को कुशा के अग्रभाग से विधि के अनुसार कवच से प्रत्येक अङ्ग का ४९ दिन से मार्जन करे। इससे पुराने रोगी शुद्ध होकर सब रोगों से मुक्त हो जाते हैं। जिस स्त्री के बच्चे होकर

मर जाते हैं या जिसे बच्चे होते ही नहीं, जो जन्म से ही वंध्या है या जो केवल कन्या ही जन्म देती है ऐसी स्त्रियों के अङ्गों का मार्जन करने से उन स्त्रियों को नीरोग और दीर्घजीवी पुत्र प्राप्त होते हैं। ऐसी स्त्रियाँ एक वर्ष के अन्दर गर्भ धारण करती हैं। जो स्त्री पति से विरोध रखती है उसके अङ्गों का मार्जन करने से वह स्त्री उस पति के वश में होकर उसे ही चाहने लगती है।

अश्वत्थे राजवश्यार्थी बिल्वमूले स्वरूपभाक्।
पलाशमूले विद्यार्थी तेजसाभिमुखो रवौ॥१०१॥
कन्यार्थी चण्डिकागेहे जपेच्छत्रुभयाय च।
श्रीकामो विष्णुगेहे च उद्याने श्रीवशी भवेत्॥१०२॥
आरोग्यार्थे स्वगेहे च मोक्षार्थी शैलमस्तके।
सर्वकामो विष्णुगेहे मोक्षार्थी यत्र कुत्रचित्॥१०३॥
जपारम्भे तु हृदयं जपान्ते कवचं पठेत्।
किमत्र बहुनोक्तेन शृणु नारद तत्त्वतः।
यंयं चिन्तयते नित्यं तंतं प्राप्नोति निश्चितम्॥१०४॥

इति श्रीमद्वसिष्ठसंहितायां ब्रह्मनारदसंवादे श्रीमद्गायत्रीपञ्जरस्तोत्रं समाप्तम्।

राजा को वश में करने के लिए पीपल या बेल के वृक्ष के नीचेजप करना चाहिये। विद्या प्राप्ति के लिए पलाश वृक्ष के नीचे जप करना चाहिये। तेज प्राप्ति के लिए सूर्य के सम्मुख जप करना चाहिये। कन्या प्राप्ति के लिए और शत्रु को भय देने के लिए चण्डिका के मन्दिर में जप करना चाहिये। लक्ष्मी की प्राप्ति के लिए विष्णु के मन्दिर में तथा बगीचे में जप करने से लक्ष्मी को वश में किया जा सकता है। आरोग्यप्राप्ति के लिए अपने घर में तथा मोक्षप्राप्ति के लिए पर्वत पर जप करना चाहिये। समस्त कामनाओं की सिद्धि के लिए विष्णुमन्दिर में तथा मोक्षप्राप्ति के लिए कहीं भी जप करना फलदायक है। जप के आरम्भ में देवता का हृदय-स्तोत्र तथा जप के अन्त में कवच का पाठ करना चाहिये। हे नारद! अधिक कहने से क्या लाभ इस जप से मनुष्य जो कुछ सोचता है, उसे वह अवश्य प्राप्त करता है।

इति वसिष्ठसंहितोक्त ब्रह्मनारद-संवाद में श्रीमद्गायत्री पंजरस्तोत्र समाप्त।

गायत्रीस्तवराजः

विनियोग : ॐ अस्य श्रीगायत्रीस्तवराजस्तोत्रमन्त्रस्य विश्वामित्र ऋषिः । सकलजननी चतुष्पदा गायत्री परमात्मा देवता। सर्वोत्कृष्टं परंधाम प्रथमपादो बीजम्। द्वितीयः शक्तिः। तृतीयः कीलकम् । दश प्रणवसंयुक्ता सव्याहृतिका सूर्यपादसहिता व्यापकं मम धर्मार्थकाममोक्षार्थे जपे विनियोगः ।

न्यासं कृत्वा ध्यायेत् ।

अथ ध्यानम् ।

गायत्रीं वेदधात्रीं शतमखफलदां वेदशास्त्रैकवेद्यां चिच्छक्तिं ब्रह्मविद्यां परमशिवपदां श्रीपदं वै करोति । सर्वोत्कृष्टं पदं तत्सवितुरनुपदान्ते वरेण्यं शरण्यं भर्गो देवस्य धीमह्यभिदधति धियो यो नः प्रचोदयादित्यौर्वतेजः ॥ १ ॥ साम्राज्यबीजं प्रणवत्रिपादं सव्यापसव्यं प्रजपेत्सहस्रकम् । सम्पूर्णकामं प्रणवं विभूतिं तथाभवेद्वाक्यविचित्रवाणी ॥ २ ॥ शुभं शिवं शोभनमस्तु मह्यं

सौभाग्यभोगोत्सवमस्तु नित्यम् । प्रकाशविद्यात्रयशास्त्रसर्वं भजेन्महामन्त्रफलं प्रिये वै ॥ ३ ॥ ब्रह्मास्त्रं ब्रह्मदण्डं शिरसि शिखिमहद्ब्रह्मशीर्षं नमोऽन्तं सूक्तं पारायणोक्तं प्रणवमथ महावाक्यसिद्धान्तमूलम् । सूर्यं त्रीणि द्वितीयं प्रथममनुमहावेदवेदान्तसूक्तं नित्यं स्मृत्यानुसारं नियमितचरितं मूलमन्त्रं नमोऽन्तम् ॥ ४ ॥ अस्त्रं शस्त्रहतं त्वघोरसहितं दण्डेनवाजीहतम् आदित्यादिहतं शिरोंतसहितं पापक्षयार्थं परम् । तुर्यान्त्यादिविलोममंत्रपठनं बीजं शिखान्तोर्ध्वकं नित्यं काल नियम्य विप्रविदुषां किं दुष्कृतं भूसुरान् ॥ ५ ॥ नित्यं मुक्तिप्रदं नियम्य पवनं निर्घोषशक्तित्रयं सम्यग्ज्ञानगुरूपदेशविधिवद्देवीं शिखां तामपि । षष्ट्यैकोत्तरसंख्ययानुगत-सौषुम्णादिमार्गत्रयीं ध्यायेन्नित्यसमस्तवेदजननीं देवीं त्रिसंध्यामयीम् ॥ ६ ॥ गायत्रीं सकलागमाथ विदुषां सौरस्य बीजेश्वरीं सर्वाम्नायसमस्तमन्त्रजननीं सर्वज्ञधामेश्वरीम् । ब्रह्मादित्रयसम्पुटार्थकरणीं संसारपारायणीं संध्यां सर्वसमानतन्त्र परया ब्रह्मानुसन्धायिनीम् ॥ ७ ॥ एकद्वित्रिचतुः-समानगणनावर्णाष्टकं पादयोः पादादाप्रणवादिमन्त्रपठने मन्त्रत्रयींसम्पुटाम् । संध्यायां द्विपदं पठेत्परतरं सायं तुरीयं युतं – नित्यानित्यमनन्तकोटिफलदं प्राप्तं नमस्कुमहि ॥ ८ ॥ ओजोसीति सहोस्यवो बलमसि भ्राजोसि तेजस्विनी वर्चस्वी सवितग्निसोमममृतं रूपंधरं धीमहि । देवानां द्विजवर्यतां मुनिगणे मुक्तार्थिनां शान्तिनामोमित्येकमृचं पठन्ति यमिनो यंयं स्मरेत्प्राप्नुयात् ॥ ९ ॥ ओमित्येकमजस्वरूपममलं तत्सप्तधा भादितं – तारं तन्त्रसमन्वितं परतरे पादत्रयं गर्भितम् । आपोज्योतिरसोमृतं जनमहः सत्यं तपः स्वर्भुवर्भूयोभूय नमामि भूर्भुवस्वरोमेतैर्महामन्त्रकम् ॥ १० ॥ आदौ बिन्दुमनुस्मरन्परतरे बालात्रिवर्णोच्चरन् – व्याहृत्यादिसबिन्दुयुक्तत्रिपदातारत्रयं तुर्यकम् । आरोहादवरोहतः क्रमगता श्रीकुण्डलीत्थं स्थिता – देवी मानसपङ्कजे त्रिनयना पञ्चानना पातु माम् ॥ ११ ॥ सर्वे सर्ववशे समस्तसमये सत्यात्मिके सात्विके – सावित्रीसहितात्मके शशियुते संख्यायनीगोत्रजे । संध्यात्रीण्युपकल्प्य संग्रहविधिः सन्ध्याभिधानामके । गायत्रीप्रणवादिमन्त्रगुरुणा सम्प्राप्य तस्मै नमः ॥ १२ ॥ क्षेमं दिव्यमनोरथाः परतरे चेतः समाधीयताम् । ज्ञानं नित्यवरेण्यमेतदमलं देवस्य भर्गो धियन् । मोक्षश्रीर्विजयार्थिनोऽथ सवितुः श्रेष्ठं विधिस्तत्पदं । प्रज्ञामेधप्रचोदयात्प्रतिदिनं यो नः पदं पातु माम् ॥ १३ ॥ सत्यं तत्सवितुर्वरेण्यविरलं विश्वादिमायात्यकम् । सर्वाद्यं प्रतिपादपादरमया तारं तथामन्मन्थम् । तुर्यान्यत्रितयं द्वितीयमपरं संयोगसव्याहृतिम् । सर्वाम्नायमनोन्मनीं मनसिजां ध्यायामि देवीं पराम् ॥ १४ ॥ आदौ गायत्रिमन्त्रं गुरुकृतनियमं धर्मकर्मानुकूलम् । सर्वाद्यं सारभूतं सकलमनुमयं देवतानामगम्यम् । देवानां पूर्वदेवं द्विजकुलमुनिभिः सिद्धविद्याधराद्यैः को वा वक्तुं समर्थस्तव मनुमहिमाबीजराजादिमूलम् ॥ १५ ॥ गायत्रीं त्रिपदां त्रिबीजसहितां त्रिव्याहृतिं त्रैपदाम् । त्रिब्रह्मत्रिगुणां त्रिकालनियमां वेदत्रयीं तां पराम् । सांख्यादित्रयरूपिणीं त्रिनयनां मातृत्रयीं तत्परां त्रैलोक्यत्रिदशत्रिकोटिसहितां संध्यां त्रयीं तां नुमः ॥ १६ ॥ ओमित्येतत्रिमात्रात्रिभुवनकरणं त्रिस्वरं वह्निरूपं त्रीणित्रीणि त्रिपादं त्रिगुणगुणमयं त्रैपुरान्तं त्रिसूक्तम् । तत्त्वानां पूर्वशक्तिं द्वितयगुरुपदं पीठयन्त्रात्मकं तम् । तस्मादेतत्त्रिपादं त्रिपदमनुसरं त्राहि मां भो नमस्ते ॥ १७ ॥ स्वस्ति श्रद्धातिमेधा मधुमतिमधुरः संशयः प्रज्ञकान्तिर्विधा बुद्धिर्बलं श्रीरतनुधनपतिः सौम्यवाक्यानुवृत्तिः । मेधा प्रज्ञा प्रतिष्ठा मृदुपतिमधुरापूर्णविद्याप्रपूर्णम् । प्राप्तं प्रत्यूषचिन्त्यं प्रणवपरवशात्प्राणिनां नित्यकर्म ॥ १८ ॥ पञ्चाशद्वर्णमध्ये प्रणवपरयुते मन्त्रमाद्यं नमोऽन्तम् । सर्वं सव्यापसव्यं शतगुणममितो वर्ममष्टोत्तरंते ।

एवं नित्यं प्रजप्तं त्रिभुवनसहितं तुर्यमन्त्रं त्रिपादं ज्ञानं विज्ञानगम्यं गगनसुसदृशं ध्यायते यः स मुक्तः ॥ १९ ॥ आदिक्षान्तसबिन्दुयुक्तसहितं मेरुं क्षकारात्मकं व्यस्ताव्यस्तम सस्तवर्गसहितं पूर्णं शताष्टोत्तरम् । गायत्रीं जपतां त्रिकालसहितां नित्यं सनैमित्तिकं । चैवं जाप्यफलं शिवेन कथितं सद्भोगमोक्षप्रदम् ॥ २० ॥ सप्तव्याहृतिसप्ततारविकृतिः सत्यं वरेण्यं घृतिः । सर्वं तत्सवितुश्च धीमहि महाभर्गस्य देवं भजे । धाम्नो धामधमाधिधारणमहान् । धीमत्पदं ध्यायते । ॐ तत्सर्वमनुप्रपूर्णदशकं पादत्रयं केवलम् ॥ २१ ॥ विज्ञानं विलसद्विवेकवचसः प्रज्ञानुसंधारिणीम् । श्रद्धामेध्ययशः शिरः सुमनसः स्वस्तिश्रियः स्वां सदा । आयुष्यं धनधान्यलक्ष्मिमतुलां देवीं कटाक्षं परं तत्काले सकलार्थसाधनमहान्मुक्तिर्महत्वं पदम् ॥ २२ ॥ पृथ्वी गन्धोर्च्चनायां नभसि कुसुमता वायुधूपप्रकर्षो । वह्निर्दीपप्रकाशो जलममृतमयं नित्यसङ्कल्पपूजा । एतत्सर्वं निवेद्यं सुखवसति हृदि सर्वदा दम्पतीनाम् । त्वं सर्वज्ञ शिवं कुरुष्व ममता नाहं त्वया ज्ञेयसि ॥ २३ ॥ सौम्यं सौभाग्य हेतुं सकलसुखकरं सर्वसौख्यं समस्तम् । सत्यं सद्भोगनित्यं सुखजनसुहृदं सुन्दरं श्रीसमस्तम् । सौमङ्गल्यं समग्रं सकलशुभकरं स्वस्तिवाचं समस्तम् । सर्वाद्यं सद्विवेकं त्रिपदपदयुगं प्राप्तुमध्यासमस्तम् ॥ २४ ॥ गायत्रीपदपञ्चपञ्चप्रणवद्वन्द्वं त्रिधासम्पुटम् । सृष्ट्यादिक्रममन्त्रजाप्यदशकं देवीपदम् क्षुत्रयम् । मन्त्रादिस्थितकेषु सम्पुटमिदं श्रीमातृकावेष्टितं वर्णान्त्यादिविलोममन्त्रजपनं संहारसम्मोहनम् ॥ २५ ॥ भूराद्यं भूर्भुवस्वस्त्रिपदपदयुतं त्र्यक्षमाद्यन्तयोज्यं । सृष्टिस्थित्यन्तकार्यं क्रमशिखिसकलं सर्वमन्त्रं प्रशस्तम् । सर्वाङ्गं मातृकाणां मनुमयवपुषं मन्त्रयोगं प्रयुक्तं संहारं क्षादिवर्णं वसुशतगणनं मन्त्रराजं नमामि ॥ २६ ॥ वैश्वामित्रमुदाहृतं हितकरं सर्वार्थसिद्धिप्रदम् । स्तोत्राणां परमं प्रभातसमये पारायणं नित्यशः । वेदानां विधिवादमन्त्रसकलं सिद्धिप्रदं सम्पदाम् । सम्प्राप्नोत्यपरत्र सर्वसुखदमायुष्यमारोग्यताम् ॥ २७ ॥ इति विश्वामित्रकृतो गायत्रीस्तवराजः समाप्तः ।

गायत्रीसहस्रनामप्रारम्भः

ॐ कैलासे सुखमासीनं तुषारकरशेखरम् ।
वद्धाञ्जलिर्नमस्कृत्याभ्यर्च्य पृच्छति पार्वती ॥ १ ॥

कैलाश पर्वत के शिखर पर चन्द्रमा का शेखर धारण किये सुख से बैठे महाराज शिव की पूजा करके हाथ जोड़कर पार्वती जी पूछती हैं ।

पार्वत्युवाचः

किं विन्यस्तं त्वया देव स्वशरीरे निरन्तरम् ।
कथमेतादृशी कान्तिः कथं तेष्टौ समृद्धयः ॥ २ ॥
सर्वतत्त्वप्रभुत्वं च कथंकयमथाश्रयेत् ।
कृपया ब्रूहि देवेश प्रसन्नोसि यदि प्रभो ॥ ३ ॥
भगवन्विविधा विद्याः श्रोतुमिच्छामि ते प्रभो ।
इदानीं श्रोतुमिच्छामि गायत्र्याश्च महोत्सवम् ॥ ४ ॥
नाम्नां सहस्रं देवेश कृपया वक्तुमर्हसि ।
यद्यहं प्रेयसी भार्या यद्यहं प्राणवल्लभा ॥ ५ ॥
इति श्रुत्वा वचो देव्याः प्रसन्नः प्रभुरीश्वरः ।
श्रूयतामिति चाभाष्य जगाद जगदम्बिकाम् ॥ ६ ॥

पार्वती बोली : आप अपने शरीर में निरन्तर किसे धारण किये हुए हैं ? आपके शरीर की ऐसी कान्ति कैसे हैं ? कैसे आपको आठों समृद्धियाँ प्राप्त हुई ? समस्त तत्वों पर आपको किस प्रकार अधिकार प्राप्त हुआ ? आप यह सब हमें बतायें । हे देवाधिदेव ! यदि आप प्रसन्न हैं तो यह सब हमें बतायें। हे भगवन् ! मैं आपकी विविध प्रकार की विद्याओं को सुनना चाहती हूं । इस समय मैं गायत्री का महोत्सव सुनना चाहती हूं। हे देवेश ! गायत्री देवी के हजार नामों को भी मैं सुनना चाहती हूं । आप उसे बताने में समर्थ हैं । यदि मैं आपकी प्रिय पात्री पत्नी हूं और यदि मैं आपको प्राणों से भी प्रिय हूं तो आप मुझे यह रहस्य बतायें ।

महादेव उवाच :

शृणु देवि रहस्यं मे कस्याप्यग्रे न चोदितम् ।
गोपितं सर्वतन्त्रेषु सिद्धानां स्तोत्रमुत्तमम् ॥ ७ ॥
सर्वसौभाग्यजनकं सर्वसम्पत्तिदायकम् ।
सर्ववश्यकरं लोके सर्वप्रत्यूहनाशनम् ॥ ८ ॥
सर्ववादिमुखस्तम्भे निग्रहानुग्रहक्षमम् ।
त्वत्प्रीत्याकथयिष्यामि सुगोप्यमपि दुर्लभम् ॥ ९ ॥
सर्वपापक्षयकरं सर्वज्ञानमयं शिवम् ।
परायणानां परमा परब्रह्मस्वरूपिणी ॥१०॥
परा च परमेशानी परब्रह्मात्मिका मता।
सा देवी च वरारोहा चेतसा चिन्तयाम्यहम् ॥ ११ ॥
ऐश्वर्यं च दशप्राप्तिर्वरदादित्वमेव च ।
गायत्र्या दिव्यसाहस्त्रं स्वप्ने चाप्तं मयापि यत् ॥ १२ ॥

पार्वतीजी की यह प्रार्थना सुनकर महादेवजी ने प्रसन्न होकर जगदम्बिका पार्वतीजी से कहा : हे देवी ! सुनो, मैंने इस रहस्य को किसी से भी नहीं कहा है । इसे सब तन्त्रों में गुप्त रक्खा गया है । यह सिद्ध महात्माओं का उत्तम स्तोत्र समस्त सौभाग्य का जनक और समस्त सम्पत्तियों को देने वाला है । संसार में यह सबको वश में करने वाला, समस्त विघ्नों को दूर करने वाला और समस्त शास्त्रार्थियों के ऊपर निग्रह और अनुग्रह करने वाला है । यह यद्यपि अत्यन्त गोपनीय और दुर्लभ है तो भी मैं तुम्हारी प्रीति के कारण इसे तुम्हें बताऊँगा । यह समस्त पापों का क्षय करने वाला समस्त ज्ञानों से परिपूर्ण और कल्याणकारक है । यह गायत्री परायणों में परम ब्रह्मस्वरूपिणी है । इसे परा, परमेशानी तथा परब्रह्मात्मिका माना गया है । यह वरारोहा देवी है । मैं इसकी ही चिन्ता करता हूं । ऐश्वर्य, दशों दिशाओं का प्रभुत्व तथा वर देने के सामर्थ्य आदि के से युक्त गायत्री के ये सहस्र नाम मुझे स्वप्न में प्राप्त हुए थे।

ऋषिरस्य समाख्यातो महादेवो महेश्वरः ।
देवता देवजननी छन्दः सामादि कीर्तितम् ॥ १३ ॥
धर्मार्थकाममोक्षार्थे विनियोग उदाहृतः ।
सर्वभूतान्तरीं ध्यात्वा पद्मासनगतां शुचिः ॥ १४ ॥
ततः सहस्र नामेदं पठितव्यं मुमुक्षुभिः ।
सर्वकार्यकरं पुण्यं महापातकनाशनम् ॥ १५ ॥

इस सहस्रनाम के ऋषि महादेव महेश्वर हैं। देवमाता इसकी देवता हैं। इसका छन्द सामादि है। धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष में इसका विनियोग होता है। पवित्र होकर पद्मासन पर बैठकर सब प्राणियों के अन्दर व्याप्त देवी का ध्यान करके सब कामों को सिद्ध करने वाले, बड़े - बड़े पापों को नष्ट करने वाले तथा पुण्यस्वरूप इस सहस्र नाम को मुक्ति की इच्छा वालों को पढ़ना चाहिये।

ॐ तत्काररूपा तद्रूपा तत्पदार्थस्वरूपिणी ।
तपः स्वाध्यायनिरता तपः कृद्वाग्विदां वरा ॥ १ ॥
तत्कीर्तिगुणसम्पन्नातथ्यवादितपोनिधिः ।
तत्पदेशानुसम्बन्धातपोलोकनिवासिनी ॥ २ ॥
तरुणादित्यसङ्काशातप्तकाञ्चनभूषणा ।
तमोपहारिणी तन्त्रीतन्त्रिपातनिवारिणी ॥ ३ ॥
तलादिभुवनान्तःस्थातारिणी ताररूपिणी ।
तर्करूपितकोशादितर्कशास्त्रविदारिणी ॥ ४ ॥
तर्कवादिमुखास्तम्भाराज्ञां च परिपालिनी ।
तन्त्रसारातन्त्रमातातन्त्रमार्गप्रदर्शिनी ॥ ५ ॥
तन्त्रीतन्त्रविधानज्ञातन्त्रस्थातन्त्रसाक्षिणी ।
तदेकध्याननिरतातत्त्वज्ञानप्रबोधिनी ॥ ६ ॥
तन्नाममन्त्र सुप्रीतातपस्विजनसेविता ।
ॐकाररूपासावित्री सर्वरूपासनातनी ॥ ७ ॥
संसारदुःखशमनीसर्वयागफलप्रदा ।
सफलासत्यसङ्कल्पासत्यासत्यप्रदायिनी ॥ ८ ॥
सन्तोषजननीसारासत्यलोकनिवासिनी ।
समुद्रतनयाराध्यासामगानप्रियासती ॥ ९ ॥
समानासामिधेनीचसमस्तसुरसेविता ।
सर्वसम्पत्तिजननीसम्प्रदासिन्धुसेविता ॥ १० ॥
सर्वोतुङ्गातुङ्गहीनासद्गुणा सकलेष्टदा ।
सनकादिमुनिध्येयासमानाधिकवर्जिता ॥ ११ ॥
साध्यासिद्धासुधावासासिद्धिः साध्यप्रदायिनी ।
सम्यगाराध्यनिलयासमुत्तीर्णासदाशिवा ॥ १२ ॥
सर्ववेदान्तनिलयासर्वशास्त्रार्थवादिनी ।
सहस्रदलपद्मस्थासर्वज्ञासर्वतोमुखी ॥ १३ ॥
समयासमयाचारासत्याषड्ग्रन्थिभेदिनी ।
सप्तकोटि महामन्त्रमातासर्वप्रदायिनी ॥ १४ ॥
सगुणासंभ्रमासाक्षी सर्वचैतन्यरूपिणी ।
सत्कीर्तिः सात्त्विकी साध्वी सच्चिदानन्दरूपिणी ॥ १५ ॥

सङ्कल्परूपिणी सन्ध्याशालाग्राम निवासिनी ।
सर्वोपाधिविनिर्मुक्ता सत्यज्ञानप्रबोधिनी ॥ १६ ॥
विकाररूपा विप्रश्रीर्विप्राराधन तत्परा ।
विप्रिणी विप्रकल्याणी विप्रवाक्य स्वरूपिणी ॥ १७ ॥
विप्रकैवल्यशयना विप्राविप्रप्रसादिनी ।
विप्रमन्दिर मध्यस्था विप्रवादविनोदिनी ॥ १८ ॥
विप्रोपाधिविनिर्मुक्ता विप्रहत्याविमोचिनी ।
विप्रत्रात्री विप्रगोत्रा विप्रगोत्रविवर्धिनी ॥ १९ ॥
विप्रभोजनसन्तुष्टा विष्णुरूपा विनोदिनी ।
विष्णुमाया विष्णुवंद्या विष्णुगर्भा विचित्रिणी ॥ २० ॥
वैष्णवी विष्णुभगिनी विष्णुमायाविलासिनी ।
विकाररहिता वंद्याविज्ञानघन रूपिणी ॥ २१ ॥
विश्वसाक्षी विश्वयोनिर्विश्वामित्र प्रसादिनी ।
विबुधाविष्णुसङ्कल्पाविकल्पा विश्वसाक्षिणी ॥ २२ ॥
विष्णुचैतन्यनिलयाविष्णुस्थाविश्ववादिनी ।
विवेकी विविधानन्दीविजयाविश्वमोहिनी ॥ २३ ॥
विद्याधरी विधानज्ञाविबुधार्थ स्वरूपिणी ।
विरूपाक्षी विराड्रूपा विक्रमा विश्वमङ्गला ॥ २४ ॥
विश्वम्भरा समाराध्या विश्वभ्रमणकारिणी ।
विनायकी विनोदस्था वीरगोष्ठी विवर्द्धिनी ॥ २५ ॥
विवाहरहिता वंद्या विंध्याचलनिवासिनी ।
विद्याविद्याकरी वेद्यावैद्यविद्याप्रबोधिनी ॥ २६ ॥
विमलाविभवा विद्याकिंकस्था किंकसाक्षिणी ।
वीरमध्या वरारोहा वितन्त्रा विश्वनायिका ॥ २७ ॥
वीरहत्या प्रशमनी विनम्रजनपालिनी ।
वीरधाविविधिकारा विरोधिजनवादिनी ॥ २८ ॥
तुकारूपातुतुर्यश्रीस्तुलसीवनवासिनी ।
तुलस्थामातुलातुल्यातुल्यगोत्रीतुलेश्वरी ॥ २९ ॥
तुरङ्गीतुरङ्गारूढातुरङ्गरयमोदिनी ।
तुरङ्गरदनामोहातुलादान फलप्रदा ॥ ३० ॥
तुलामाघ स्नानतुष्टातुष्टिपुष्टि प्रदायिनी ।
तुरङ्गमप्रसन्तुष्टातुलिता तुल्यमध्यगा ॥ ३१ ॥
तुङ्गोत्तुङ्गातुङ्गकुचातुहिनाचलसंस्थिता ।
तुम्बुरादि स्तुतिप्रीतातुषार वपुरीश्वरी ॥ ३२ ॥

तुष्टाचतुष्टजननी तुष्टलोक निवासिनी ।
तुलाधारा तुलामध्या तुलस्थातुलरूपिणी ॥ ३३ ॥
तुरीयगुणगम्भीरा तुर्यनामस्वरूपिणी ।
तुर्यविद्दलास्य संस्था तुर्यशास्त्रार्थ वादिनी ॥ ३४ ॥
तुर्यशास्त्रार्थतत्त्वज्ञा तुर्यवादविनोदिनी ।
तुर्यनादात्तनिलया तुर्यानन्द स्वरूपिणी ॥ ३५ ॥
तुरीयभक्ति जननी तुर्यमार्गप्रदर्शिनी ।
वकाररूपावागीशावरेण्यावरसंस्थिता ॥ ३६ ॥
वरावरिष्ठा वैदेही वैद्यशास्त्रप्रदर्शिनी ।
वैकल्यश्रमणीवाणी वांछितार्थ फलप्रदा ॥ ३७ ॥
वयस्थावयमध्यस्था वयोवस्था विवर्जिता ।
वंदिनीवादिनीवार्यावाङ्मयी वीरवन्दिनी ॥ ३८ ॥
वानप्रस्थाश्रमस्थायिवनदुर्गावनालया ।
वनजाक्षी वनचरी वनिता वनमोदिनी ॥ ३९ ॥
वशिष्ठावामदेवादि वंद्यावंद्यस्वरूपिणी ।
वाल्मीकि वाक्करीवाचा वारूणी वरुणप्रिया ॥ ४० ॥
वैद्यावैद्यचिकित्सा च वषट्कारी वसुन्धरा ।
वसुमाता वसुत्रात्री वसुजन्मविमोचिनी ॥ ४१ ॥
वसुप्रदा वासुदेवी वासुदेवमनोहरी ।
वासवार्चितपादश्रीर्वासवारि विनाशिनी ॥ ४२ ॥
वागीशवाङ्मनः स्थायीवनवासवशावशी ।
वामदेवीवरारोहा वाद्यघोषण तत्परा ॥ ४३ ॥
वाचस्पतिसमाराध्या वगीशा वाक्चकीरवाक् ।
रेकाररूपारेवाचरेवातीरनिवासिनी ॥ ४४ ॥
रेकिणीरेवती रक्षारुद्रजन्मा रजस्वला ।
रेणुकारमणीरम्या रतिवृद्धारतारती ॥ ४५ ॥
रावणादिपदानन्दाराजश्रीराजशेखरा ।
रणमध्यारथारूढारविकोटिसमप्रभा ॥ ४६ ॥
रविमण्डलमध्यस्था रजनीरविलोचना ।
रथाङ्गपाणी रक्षोघ्नी रागिणी रावणार्चिता ॥ ४७ ॥
रम्भादिकन्यकाराध्या राज्यदाराज्यवर्द्धिनी ।
रजताद्रीशऊरुस्था रम्या राजीवलोचना ॥ ४८ ॥
रमावाणीरमाराध्या राज्यदात्री रथोत्सवा ।
रेतोवती रथोत्साहाराजहृद्रोगहारिणी ॥ ४९ ॥

रङ्गप्रवृद्धमधुरारङ्गमण्डपमध्यगा ।
रञ्जिता राजजननी रमारेवारतीरिणी ॥ ५० ॥
राविणी रागिणी राज्याराज राजेश्वरार्चिता ।
राजन्वतीराजनीतिस्तथा रजतवासिनी ॥ ५१ ॥
राघवार्चितपाद श्रीराघवी राघवप्रिया ।
रत्नसागर मध्यस्था रत्नदीपनिवासिनी ॥५२॥
रत्नप्राकारा मध्यस्था रत्नमण्डप मध्यगा ।
रत्नाभिषेक सन्तुष्टा रत्नाङ्गी रत्नदायिनी ॥ ५३ ॥
निकाररूपिणी नित्यानित्यतृप्ता निरञ्जना ।
निद्रात्यय विशेषज्ञा नीलजीमूतसन्निभा ॥ ५४ ॥
नीवारशुकवत्तन्वी नित्यकल्याणरूपिणी ।
नित्योत्सवानित्यनित्या नित्यानन्द स्वरूपिणी ॥ ५५ ॥
निर्विकल्पा निर्गुणस्था निश्चिन्तानिरुपद्रवा ।
निःसंशया संशयघ्नी निर्लोभा लोभनाशिनी ॥ ५६ ॥
निर्भवा भवपाशघ्नी नीतिशास्त्रविचारिणी ।
निखिलागममध्यस्था निखिलागमसंस्थिता ॥ ५७ ॥
नित्योपाधि विनिर्मुक्ता नित्यकर्मफलप्रदा ।
नीलग्रीवानिरीहा च निरञ्जनवरप्रदा ॥ ५८ ॥
नवनीतप्रिया नारीनरकार्णवतारिणी ।
नारायणी निराहारा निर्मला निर्गुणाप्रिया ॥ ५९ ॥
नर्मलानिर्गमाचारा निखिलागमवेदिनी ।
निमिषानिमिषोत्पन्ना निमेषाण्डविधायिनी ॥ ६० ॥
निवातदीपमध्यस्था निश्चिन्ता चिन्तनाशिनी ।
नीलवेणी नीलखण्डा निर्विषा विषनाशिनी ॥ ६१ ॥
नीलांशुकपरीधाना निन्दितानिर्निरीश्वरी ।
निःश्वासाश्वासमध्यस्थामिथोयाननिवासिनी ॥ ६२ ॥
यंकाररूपा यन्त्रेशीयन्त्रयन्त्रायशस्विनी ।
यन्त्राराधनसन्तुष्टा यजमानस्वरुपिणी ॥ ६३ ॥
यशस्विनीयकारस्था यूपस्तम्भनिवासिनी ।
यमघ्नीयमकल्पा च यशःकामायतीश्वरी ॥ ६४ ॥
यामादिर्योगनिरतायतिनिर्दीपहारिणी ।
यातायज्ञायज्ञिया च यज्ञेश्वर पतिव्रता ॥ ६५ ॥
यज्ञयज्ञायजुर्यज्वायज्ञीनिकर कारिणी ।
यज्ञसूत्रप्रदा ज्येष्ठायज्ञकर्मफलप्रदा ॥ ६६ ॥

यवांकुरप्रिया यामा यवनीयवनाधिपा ।
यज्ञकर्त्रीयज्ञभोक्त्री यज्ञाङ्गी यज्ञवाहिनी ॥ ६७ ॥
यज्ञसाक्षी यज्ञमुखी यजुषी यज्ञरक्षिका ।
भकाररूपा भद्रेशीभद्रकल्याणदायिनी ॥ ६८ ॥
भक्तप्रिया भक्तसखी भक्ताभीष्टस्वरूपिणी ।
भक्तिनीभक्तिसुलभाभक्तिदा भक्तवत्सला ॥ ६९ ॥
भक्तचैतन्यनिलया भक्तबन्धविमोचिनी ।
भक्तस्वरूपिणी भर्ग्याभाग्यारोग्यप्रदायिनी ॥ ७० ॥
भक्तमाता भक्तगम्या भक्ताभीष्टप्रदायिनी ।
भास्वरी भैरवी भोगी भवानी भयनाशिनी ॥ ७१ ॥
भद्रात्मिका भद्रदायी भद्रकाली भयङ्करी ।
भगानिष्यंदिनी भाग्याभवबन्धविमोचिनी ॥ ७२ ॥
भीमाभीमनभामङ्गी भंगुरा भीमदर्शिनी ।
भल्लीभल्लीधरा भेरुर्भेरुण्डा भीमपापहा ॥ ७३ ॥
भावज्ञ भोग्यदात्री च भवघ्नी भूतिभूषणा ।
भूतिदाभ मिदात्री च भूपतित्वप्रदायिनी ॥ ७४ ॥
भ्रामरीभ्रमरी भारीभव संसारतारिणी ।
भण्डासुरवधोत्साहा भाण्डवा भाविनोदिनी ॥ ७५ ॥
गोकाररूपा गोमाता गुरूपत्नी गुरुर्गिरा ।
गोरोचनप्रिया गौरीगोविन्द गुणवर्द्धिनी ॥ ७६ ॥
गोपालचेष्टा सन्तुष्टागोवर्धनविवर्द्धिनी ।
गोविन्दरूपिणी गोप्त्री गोप्तृगोत्रविवर्द्धिनी ॥ ७७ ॥
गीतागीतप्रिया गेया गोका गोकुलवर्द्धिनी ।
गोपीगोहत्यशमनीगुणा च गुणविग्रहा ॥ ७८ ॥
गोविन्दजननी गोष्ठागोपदा गोकुलोत्सवा ।
गोचरी गौतमी गोप्त्री गोमुखी गुरुवासिनी ॥ ७९ ॥
गोपालीगोमयीगुण्ठा गोष्ठी गोपुरवासिनी ।
गरुडी गरुडश्रेष्ठा गारुडीगरुडध्वजा ॥ ८० ॥
गम्भीरागण्डकी गङ्गागरुडध्वजवलभा ।
गगनस्था गयावासा गुणवृत्तिर्गुडोद्भवा ॥ ८१ ॥
देकाररूपादेवेशीदृशिनीदेवतार्चिता ।
देवराजेश्वरार्द्धाङ्गी दीनदैन्यविमोचिनी ॥ ८२ ॥
देशकालपरिज्ञानां देशोपद्रवनाशिनी ।
देवमाता देवमोहा देवदानवमोहिनी ॥ ८३ ॥

देवेन्द्रार्चित पादश्रीर्देव देवप्रसादिनी ।
देशान्तरी देवरूपा देवालय निवासिनी ॥८४॥
देशभ्रमणकृद्देवी देशस्वास्थ्य प्रदायिनी ।
देवयानादेवता च देवसैन्य प्रपालिनी ॥८५॥
वकाररूपा वाग्देवी वाचा मानसगोचरी ।
वैकुण्ठदेशिनी वेद्या वायुरूपा वरप्रदा ॥८६॥
वक्रतुण्डार्चितपदा वक्रतुण्ड प्रदायिनी ।
वैचित्री च वसुमतिर्वसुस्थाना वसुप्रिया ॥८७॥
वषट्कारा च चामुण्डावरारोहा वरावरी ।
वैदेहीजननी वेद्या वैदेही शोकनाशिनी ॥८८॥
वेदमाता वेदकन्या वेदरूपा विनोदिनी ।
वेदान्तवादिनी वेदा वेदान्तनिलयामरा ॥८९॥
वेदश्रवा वेदघोषा वेदगाना विनोदिनी ।
वेदशास्त्रार्थ तत्त्वज्ञा वेदमार्ग प्रदर्शिनी ॥९०॥
वैदिककर्म फलदा वेदसागरतारिणी ।
वेदवादा वेदगृह्या वेदाश्वरथवाहिनी ॥९१॥
वेदचक्रा वेदवंद्या वेदाङ्गी वेदवित्कविः ।
श्यकाररूपा श्यामाङ्गी श्यामा श्यामसरोरुहा ॥९२॥
श्यामिका श्यालवृक्षा च शतपत्र निकेतना ।
सर्वदृक्संनिविष्टा च सर्वसम्प्रेमणी सदा ॥९३॥
सव्यापसव्यदा सव्यासध्रीची च सहायिनी ।
सकला सागरा सारा सार्वभौमस्वभाविनी ॥९४॥
सन्तोषजननी सेव्यासर्वेशी सर्वरञ्जनी ।
सरस्वती समाराध्या समदा सिन्धुसेविनी ॥९५॥
सम्मोहिनी सदामोहा सर्वमाङ्गल्यदायिनी ।
समस्तभुवनेशानी सर्वकाम फलप्रदा ॥९६॥
सर्वसिद्धिप्रदा साध्वी सर्वज्ञानप्रदायिनी ।
सर्वदारिद्र्यशमनी सर्वदुःख विमोचिनी ॥९७॥
सर्वरोग प्रशमिनी सर्वपापविमोचिनी ।
समदृष्टिः समगुणा सर्वसाक्षि सहायिनी ॥९८॥
सामर्थ्यवाहिनी संख्यासान्द्रानन्द पयोधरी ।
संकीर्णमन्दिर स्थाना साकेतकुलपालिनी ॥९९॥
संहारी शङ्करी शौरी साकेतपुरवासिनी ।
सम्बोधिनी समुत्तिष्ठा सम्यग्ज्ञानस्वरूपिणी ॥१००॥

सम्पत्करी समानाङ्गी सर्वभाव सुसंस्थिता ।
सम्बोधिनी समानन्दा सन्मार्ग कुलपालिनी ॥ १०१ ॥
सञ्जीविनी सर्वमेधा सभ्यासम्पत्प्रदायिनी ।
समिद्धासमिधासीनासामान्या सामवेदिनी ॥ १०२ ॥
समुत्तीर्णा सदाचारा संहारा सर्वपाविनी ।
सर्पिणीसर्पमाता च सर्पदृष्टविमोचिनी ॥ १०३ ॥
सर्वयागप्रशमिनी सर्वज्ञत्वफलप्रदा ।
संक्रमासंक्रमासिन्धुः सर्गा संग्रामपूजिता ॥ १०४ ॥
संकटा सङ्कटाहारी सकुंकुमविलेपना ।
सुमुखा सुमुखस्थायी साङ्गोपाङ्गार्चनप्रिया ॥ १०५ ॥
संस्तुतासंस्तुतिः प्रीतिः सत्यवादी सदासुखी ।
धीकाररूपाधीमाता धीराधीर प्रसादिनी ॥ १०६ ॥
धीरोत्तमा धीरधीराधीरस्था धीरशेखरा ।
स्थितिर्धैर्यास्थविष्ठा च स्थपतिस्थल विग्रहा ॥ १०७ ॥
धीराधाराधीरवन्द्याधीपतिर्धीरमानसा ।
धीपदाधीपदस्थायी धीशाना धीप्रदासखी ॥ १०८ ॥
मकाररूपामैत्रेयी महामङ्गलदेवता ।
मनोवैकल्यशमिनी मलयाचलवासिनी ॥ १०९ ॥
मलयध्वजराजश्रीर्मीनाक्षी मधुरालया ।
महादेवी महारूपा महाभैरव पूजिता ॥ ११० ॥
मनुविधा मन्त्रमाता मन्त्रवश्या महेश्वरी ।
मत्तमातङ्गगमना मधुरा मेरुमण्डपा ॥ १११ ॥
महागुप्तामहाभूता महाभयविनाशिनी ।
महाशौरी महामन्त्री महावैरिविनाशिनी ॥ ११२ ॥
महालक्ष्मीर्महागौरी महिषासुरमर्दिनी ।
महेशमण्डलस्था च मधुरागमवर्जिता ॥ ११३ ॥
मेधामेधाकरी मेध्यामाधवी मधुमर्दिनी ।
मन्त्रामन्त्रमयी मान्यामाया महिममन्त्रिणी ॥ ११४ ॥
मायारूपामायधारीमायस्थामायवादिनी ।
मायासंकल्पजननी मायामायविनोदिनी ॥ ११५ ॥
मायाप्तपञ्चजननी मायासंहाररूपिणी ।
मायामन्त्रप्रसादा च मायाजनविमोहिनी ॥ ११६ ॥
महापरा महारूपा महाविघ्नविनाशिनी ।
महानुभावा मन्त्रेशी महामङ्गलदेवता ॥ ११७ ॥

हिकारस्था हृषीकेशीहितकाय प्रवर्द्धिनी ।
हीनोपाधिविनिर्मुक्ता हीनलोक विमोचिनी ॥ ११८ ॥
ह्रींकारा ह्रीमती ह्रींह्रींह्रीं देवी ह्रींस्वभाविनी ।
ह्रींमती ह्रींवती हृत्वाह्रींशिवाह्रींकुलोद्भवा ॥ ११९ ॥
हितवादी हितप्रीता हितकारुण्यवर्द्धिनी ।
हिताशिनी हितक्रोधा हितकर्मफलप्रदा ॥ १२० ॥
हिमा हिमसुता हेमा हेमाचलनिवासिनी ।
हेतीहिमप्रदाहाराहोत्राहोतृ हुतप्रदा ॥ १२१ ॥
हिमस्थाहिमजाह्लेमाहितकर्म स्वभाविनी ।
धीकाररूपा धिषणा धर्मरूपा धनेश्वरी ॥ १२२ ॥
धनुर्धरा धराधारा धर्मकर्मफलप्रदा ।
धर्माचारा धर्मसारा धर्ममध्यनिवासिनी ॥ १२३ ॥
धनुर्वेदीधर्वादी धन्या धूर्तविनाशिनी ।
धनधान्या धेनुरूपा धनाढ्या धनदायिनी ॥ १२४ ॥
धनेशी धर्मनिरता धर्मराजप्रसादिनी ।
धर्मस्वरूपा धर्मेशीधर्माधर्म विचारिणी ॥ १२५ ॥
धर्मसूक्ष्मा धर्मसाक्षी धर्मिष्ठा धर्मगोचरा ।
योकाररूपा योगेशीयोगस्था योगरूपिणी ॥१२६॥
योगायोगोपमाराध्या योगमार्गनिवासिनी ।
योगासनस्था योगेशी योगमाया विलासिनी ॥१२७॥
योगायोगोपमाराध्या योगाङ्गी योगविग्रहा ।
योगवासी योगभोगी योगमार्ग प्रदर्शिनी ॥१२८॥
योधायोधवतीयोध्याऽयोध्ययोधनतत्परा ।
योधिनी योधिनीसेव्या योधज्ञानप्रबोधिनी ॥१२९॥
योगेश्वरप्राणनाथा योगीश्वर हृदिस्थिता ।
योगायोगक्षेमकर्त्री योगक्षेमविहारिणी ॥१३०॥
योगराजेश्वरीराध्या योगानन्दस्वरूपिणी ।
नवसिद्धिसमाराध्यानारायण मनोहरी ॥१३१॥
नारायणीनवाधारा नवब्रह्मार्चितासदा ।
नगेन्द्रतनयाराध्या नामरूपविवर्जिता ॥१३२॥
नारसिंहार्चितपदा नवबंधविमोचिनी ।
नवग्रहार्चितपदानवबंधविमोचिनी ॥१३३॥
नैमित्तिकार्थनपदानन्दितारिविनाशिनी ।
नवसूत्रविधानज्ञा नैमिषारण्यवासिनी ॥ १३४ ॥

नवपीठस्थितादेवी नवर्षिगण सेविता ।
नवचन्दनदिग्धाङ्गी नवकुंकुमधारिणी ॥१३५॥
नववस्त्रपरीधाना नवरत्नविभूषणा ।
नवभस्मविदिग्धाङ्गी नवचन्द्रकलाधरा ॥१३६॥
प्रकाशरूपा प्राणेशीप्राणसंरक्षिणीसदा ।
प्राणसंजीविनी प्राणाप्राणाप्राणप्रबोधिनी ॥१३७॥
प्रज्ञाप्रज्ञाप्रभाप्राच्या प्रतीचीप्रबुधाप्रिया ।
प्राचीराप्रणयातस्था प्रभातज्ञानरूपिणी ॥१३८॥
प्रभातकर्मसंतुष्ट प्राणायामपरायणा ।
प्रायज्ञा प्रणवा प्राप्ताप्रवित्तिः प्रकृतिः परा ॥१३९॥
प्रबंधाप्रबुधासाक्षी प्राज्ञाप्रारब्धनाशिनी ।
प्रबोधनिरता प्रेक्ष्या प्रबंधप्राणसाक्षिणी ॥१४०॥
प्रयागतीर्थनिलया प्रत्यक्षापरमेश्वरी ।
प्रणवाद्यन्तनिलया प्रणवादि प्रचोदयात् ॥१४१॥
चोकाररूपा चोरघ्नी चोरबाधाविनाशिनी ।
चेतनाचेतनाशीता चौराचौर्या चमत्कृतिः ॥१४२॥
चक्रवर्तित्वधारी च चक्रिणी चक्रधारिणी ।
चिरञ्जीवी चिदानन्दा चिद्रूपा चिद्विलासिनी ॥१४३॥
चिन्ताचिन्ताप्रशमिनी चिन्तितार्थ फलप्रदा ।
चाम्पेयी चम्पकप्रीताचण्डी चण्डाट्टहासिनी ॥१४४॥
चण्डेश्वरी चण्डमाला चण्डमुण्डविनाशिनी ।
चकोराक्षी चिरप्रीता चिकुराचिकुरप्रिया ॥१४५॥
चैतन्यरूपिणी चैत्रीचेतनाचित्तसाक्षिणी ।
चित्राचित्रविचित्राङ्गी चित्रगुप्तप्रसादिनी ॥१४६॥
चलनाचल संस्थायी चापिनी चलचित्रिणी ।
चन्द्रमण्डलमध्यस्था कोटिचन्द्र सुशीतला ॥१४७॥
चन्द्रानुजसमाराध्याचन्द्रचन्द्रमहोदरी ।
चिर्चितारिश्चन्द्रमाता चन्द्रकान्ता चलेश्वरी ॥१४८॥
चराचरनिवासा च चक्रपाणि सहोदरी ।
दकाररूपा दत्तश्रीर्दारिद्र्यच्छेदकारिणी ॥१४९॥
दन्तिनीदण्डिनीदीनादरिद्रादीनवत्सला ।
दक्षाराध्या दक्षकन्या दक्षयज्ञविनाशिनी ॥१५०॥
दक्षादाक्षायणीदक्षादीक्षादक्षवरप्रदा ।
दक्षिणा दक्षिणाराध्या दक्षिणामूर्तिरूपिणी ॥१५१॥

दयावतीदमवती दनुजादिर्दयानिधिः ।
दन्तशोभानिभा दैवदमनादाडिमस्तनी ॥१५२॥
दण्डादमयतादण्डीदण्डादण्डप्रसादिनी ।
दण्डकारण्यनिलयादण्डकारिविनाशिनी ॥१५३॥
दंष्ट्राकरालप्रवृषी दण्डशोभादलादली ।
दरिद्रारिष्टशमनीदमादमनपूजिता ॥१५४॥
दानवार्चितपादश्रीर्द्रविणीदया ।
दामोदरी दानवारिर्दामोदरसहोदरी ॥१५५॥
दात्रीदानप्रिया दार्वीदानश्रीर्दीनदण्डपा ।
दम्पतीदम्पती दूर्वादधिदुग्धादयादमा ॥१५६॥
दाडिमीबीजसंदोहदन्तपंक्ति विराजिता ।
दर्पणादर्पणस्वच्छाद्रुममण्डलवासिनी ॥१५७॥
दशावतारजननी दशदिग्दीपपूजिता ।
दयादशदिशादश्यादशदाशी दयानिधिः ॥१५८॥
देशकालपरिज्ञाना देशकालविशोधिनी ।
दशम्यादिकलाराध्या दशग्रीवप्रदर्पहा ॥१५९॥
दशापराधशमनीदशवृत्तिफलप्रदा ।
यात्काररूपिणीयाज्ञी यादवीयादवार्चिता ॥१६०॥
ययातिपूजनप्रीता याज्ञिकी याजकप्रिया ।
यादवीयातनायातायाम पूजाफलप्रदा ॥१६१॥
यशस्वीनी यभाराध्या यमकन्यायतीश्वरी ।
यमादियोगसंतुष्टायोगीन्द्रहृदिसङ्गमा ॥१६२॥
यमोपाधिविनिर्मुक्ता यशस्यविधिरच्युता ।
यातनायातनादेहायात्रापापादिवर्जिता ॥१६३॥
इत्येतत्कथितं देविरहस्यं सर्वकामदम् ।
सर्वपापप्रशमनं सर्वतीर्थफलप्रदम् ॥१६४॥
सर्वरोगहरं पुण्यं सर्वज्ञानमयं शिवम् ।
सर्वसिद्धिप्रदं देविसर्वसौभाग्यवर्द्धनम् ॥१६५॥
आयुष्यं वर्द्धतेनित्यं लिखितं यत्रतिष्ठित ।
नचौराग्निभमं तस्य न च भूतभयं क्वचित् ॥१६६॥
किंपुनर्बहुनोक्तेन तथापि च वदाम्यहम् ।
सकृच्छ्रवणमात्रेण कोटिजन्माघनाशनमं ॥१६७॥
महापातक कोटीनां भञ्जनं स्मृतिमात्रतः ।
अपवादकदौर्भाग्यशमनं भुक्तिमुक्तिदम् ॥१६८॥

विषरोगादि दारिद्र्य मृत्यु संहारकारणम् ।
सप्तकोटि महामंत्रपरायण फलप्रदम् ॥१६९॥
शतरुद्रिय कोटीनां जपयज्ञफलप्रदम् ।
चतुःसमुद्रपर्यन्त भूदानं तत्फलं शिवे ॥१७०॥
सहस्रकोटि गोदानफलदं स्मृतिमात्रतः ।
कोट्यश्वमेधफलदं जरामृत्युनिवारणम् ॥१७१॥
कन्याकोटिप्रदानेन यत्फलं लभतेनरः ।
तत्फलं लभतेसम्यङ्नाम्नां दशशतीजपात् ॥१७२॥
यः शृणोतिमहाविद्यां श्रावयेद्वा समाहितः ।
सोपिमुक्तिमवाप्नोति यत्रगत्वानशोचति ॥१७३॥
ब्रह्महत्यादि पापनां नाशः स्याच्छ्रवणेन च ।
किं पुनः पठनादस्यमुक्तिः स्याद नपायिनी ॥१७४॥
इदं रहस्यं परमं पुराणं स्वस्त्ययनं महत् ।
यः सकृद्वापठेत्स्तोत्रं शृणुयाद्वा समाहितः ॥१७५॥
लभते च ततः कामान्ते ब्रह्मपदं व्रजेत् ।
स च शत्रुञ्जयेत्सद्योमातङ्गानिवकेसरी ॥१७६॥

इति श्रीरुद्रयामले शिवपार्वतीसंवादे ब्रह्मप्रोक्तं श्रीगायत्र्या
मन्त्रवर्णात्मकं दिव्यसहस्रनामास्तोत्रं सम्पूर्णम् ।

गायत्रीतत्त्व

विनियोग : श्रीगायत्र्यै नमः । श्रीगायत्रीतत्त्वमालामन्त्रस्य विश्वामित्र ऋषिः अनुष्टुप्छन्दः । परमात्मा देवता । हलो बीजानि । स्वराःशक्तियः । अव्यक्तं कीलकम् । मम समस्तपापक्षयार्थे गायत्रीतत्त्वपाठे विनियोगः ।

ॐ चतुर्विंशतितत्त्वानां यदेकं तत्त्वमुत्तमम् ।
अनुपादि परं ब्रह्म तत्परं ज्योतिरोमिति ॥१॥
यो वेदादौ स्वरः प्रोक्तो वेदान्ते च प्रतिष्ठितः ।
तस्य प्रकृतिलीनस्य तत्परं ज्योतिरोमिति ॥२॥
तत्सदादिपदैर्वाच्यं परमं पदमव्ययम् ।
अभेदत्वं पदार्थस्य तत्परं ज्योतिरोमिति ॥३॥
यस्य मायांश भागेन जगदुत्पद्यतेऽखिलम् ।
तस्य सर्वोत्तमं रूपमरूपस्याभिधीमहि ॥४॥
यं न पश्यन्ति परमं पश्यन्तोपि दिवौकसः ।
तं भूतानिलदेवं तु सुपर्णमुपधावताम् ॥५॥
यदंशः प्रेरितो जन्तुः कर्मपाशनियन्त्रितः ।
आजन्मकृतपापानामपहन्तु दिवौकसः ॥६॥

माहात्म्य :

इदं महामुनिप्रोक्तं गायत्रीतत्त्वमुत्तमम् ।
यः पठेत्परया भक्त्या स याति परमां गतिम् ॥७॥

यह महामुनि ने उत्तम गायत्री तत्व कहा है । जो साधक परम भक्ति से इसका पाठ करता है वह परमगति को प्राप्त करता है ।

सर्ववेदपुराणेषु साङ्गोपाङ्गेषु यत्फलम् ।
सकृदस्य जपादेव तत्फलं प्राप्नुयान्नरः ॥ ८ ॥

साङ्गोपाङ्ग समस्त वेदों और पुराणों के अध्ययन से जो फल कहा गया है वह सब इस स्तोत्र के एक बार के जप से ही प्राप्त हो जाता है ।

अभक्ष्यभक्षणात्पुतो भवति अगम्यागमनात्पूतो भवति सर्वपापेभ्यः पूतो भवति प्रातरधीयानो रात्रिकृतं पापं नाशयति सायमधीयानो दिवसकृतं पापं नाशयति मध्यन्दिनमुपयुञ्जानोऽसत्प्रतिग्रहादिना मुक्तो भवति ।

इसके जप से मनुष्य अभक्षभक्षण के पाप से पवित्र हो जाता है; अगम्यागमन के पाप से मनुष्य पवित्र हो जाता है और सब पापों से पवित्र हो जाता है । प्रातःकाल इसके पाठ से रात्रिकृत पाप नष्ट हो जाता है । सायंकाल पाठ करने से दिन का पाप नष्ट हो जाता है । दोपहर को पाठ करने से अनुचित दानग्रहण के पाप से मनुष्य मुक्त हो जाता है ।

अनुप्लवं पुरुषापुरुषमभिवदन्ति यंयं काममभिध्यायति तत्तदेवाप्नोति पुत्रपौत्रान् कीर्तिसौभाग्यानिचोपलभते सर्वभूतात्ममित्रं देहान्ते तद्विशिष्टो गायत्रीपरम पदमवाप्नोति ।

इति वेदसारे गायत्रीतत्त्वं सम्पूर्णम् ।

इससे साधक पुरुष या पशु को अपने अनुकूल बना लेता है । वह जो - जो चाहता है वह सब प्राप्त कर लेता है । पुत्र, पौत्र, कीर्ति तथा सौभाग्य प्राप्त कर लेता है । समस्त प्राणी उसके मित्र हो जाते हैं और मृत्यु के बाद वह विशिष्ट गायत्री के परम पद को प्राप्त करता है ।

इति वेदसार में गायत्री तत्व सम्पूर्ण ।

गायत्र्युपनिषद्

नमस्कृत्य भगवान याज्ञवल्क्यः स्वयं परिपृच्छति त्वं ब्रूहि भगवन् गायत्र्याउत्पत्तिं श्रोतुमिच्छामि ।

ब्रह्माजी से याज्ञवल्क्य ने स्वयं पूछा : हे भगवन् ! गायत्री उत्पत्ति कैसे हुई, इसे मैं जानना चाहता हूं ।

तब ब्रह्माजी ने इस प्रकार गायत्री उपनिषद का उपदेश दिया :

ब्रह्मोवाच

प्रणवेन ध्याहृतयः प्रवर्तन्ते तमसस्तु परंज्योतिः कःपुरुषः स्वयंभूर्विष्णुरितिहताः स्वांगुल्या कथयेत् मथ्यमालाफेनो भवति फेनाद्बुद्बुदो भवति बुद्बुदादण्डं भवति अण्डवानात्मा भवति आत्मनः आकाशो भवति आकाशाद्वायुर्भवति वायोरग्निर्भवति अग्नेरोंकारो भवति ॐ काराद्व्यहृतिर्भवति व्याहृत्या गायत्री भवति गायत्र्याः सावित्री भवति सावित्र्याः सरस्वती भवति सरस्वत्या वेदा भवन्ति वेदेभ्यो ब्रह्मा भवति ब्रह्मणो लोकाः भवन्ति तस्माल्लोकाः प्रवर्तन्ते चत्वारो वेदाः साङ्गाः सोपनिषदः सेतिहासास्ते सर्वे गायत्र्याः प्रवर्तन्ते यथाग्निर्देवानां ब्राह्मणोमनुष्याणां मेरुःशिखरिणां गङ्गानदीनां

गायत्रीचक्रम्

अक्षर०	ऋष०	छन्दां०	देवताः	वर्णाः	तत्त्वा०	शक्तयः	मुद्राः	कलाः	फलम्	पापहरफलम्	तकारान्तापा-दांगुष्ठयोः	अथ श्लोकाः
त	वसिष्ठः	गायत्री	अग्निः	पीतं	पृथ्वी	ब्रह्मी	सुमुखं	तपनी	आयुष्यम्	अज्ञानदोषहरम्	ॐ तकारपादांगुष्ठ०	प्रणवंपूर्वमुद्धृत्यव्याहृत्यासप्तभिस्तथा।। चतुर्विं
त्स	भरद्वाजः	उष्णिक्	वायुः	श्यामं	अप्	गौरी	संपुटम्	सकला	आरोग्यम्	उपपातकहरम्	ॐ तत्सकरंगुल्फ	शतिगायत्र्याद्विरावृत्त्योपवीतकम् ।। १ ।।
वि	गौतमः	अनुष्टुप्	सूर्यः	श्वेतं	तेजः	प्रभा	विततं	विश्वा	ऐश्वर्यदम्	महापातकहरम्	ॐ विकारंजंघयोः	ब्रह्मणोत्पादितंसूत्रं विष्णुनात्रिगुणीकृतम् ।।
तु	विश्वामित्रः	बृहती	विद्युत्	नीलं	वायुः	नित्या	विस्तीर्णं	तुष्टा	धनदम्	दुष्टग्रहदोषहरम्	ॐ तुकारंजान्वोः	रुद्रेणदीयतेग्रंथिः सावित्र्याचाभिमन्त्रितम्।।२।।
र्व	भृगुः	पंक्तिः	यमः	वह्निः	आकाशं	विश्वा	एकमुखं	वरदा	कामदम्	भ्रूणहत्यादोषहरम्	ॐ र्वकारंऊर्वोः	श्लोकार्द्धेन प्रवक्ष्यामियदुक्तंतग्रंथकोटिषु ।।
रे	शांडिल्यः	त्रिष्टुप्	वरुणः	अतिशुभ्रं	गंधः	भद्रा	द्विमुखं	रेवती	विद्यादम्	अगम्यागमनहरम्	ॐ रेकारंगुदे०	परोपकारःपुण्यायपापायपरपीडनम् ।। ३ ।।
णि	लोहितः	व्यक्तिः	बृहस्पतिः	हरितम्	रसः	विलासिनी	त्रिमुखम्	सूक्ष्मा	कामदम्	अभक्षाभक्षहरम्	ॐ णिकारंलिंगे०	तयादचोप्रनः योयोधिहिमधीस्यवदेर्गो
यं	गर्गः	कान्तिः	पर्जन्यः	अतिपीतं	रूपं	वित्ता	चतुर्मुखम्	ज्ञाना	धनदम्	पुरुषहत्याहरम्	ॐ यंकारंकट्यां	भयणीर्वतुवित्सत ।। शिवः शिवः शिवो
भ	शातातपः	बृहती	इन्द्रः	ताम्रम्	स्पर्शः	काली	पंचमुखम्	भर्गा	सन्ततिदम्	गोहत्याहरम्	ॐ भकारंनाभौ०	जीवः नजीवःकेवलःशिवः ।। पशुपाश–
र्गो	सनत्कुमारः	सत्या	गन्धर्वः	रक्तम्	शब्द	जया	षण्मुखम्	गोमती	अभीष्टदम्	स्त्रीहत्याहरम्	ॐ र्गोकारमुदरे०	स्थितोजीवः पाशमुक्तः सदाशिवः ।। ४ ।।
दे	शनुःशेपः	पंक्तिः	त्वष्टा	श्यामः	वाक्	कान्ता	अधोमुखं	दविका	इष्टकन्यादं.	एनसदोषहरम्	ॐ देकारंस्तनयोः	वसिष्ठशापमोचनं हुंफट्स्वाहा उपसंहार
व	भार्गवः	विराट्	मैत्रावरुणिः	पीतम्	पाणिः	शान्ता	शटकम्	वरा	कान्तिदम्	फायरादोषहरम्	ॐ वकारंहृदये	मुद्राप्रदर्शनम् । प्रणवो भूर्भुवः स्वश्चपुनः
स्य	पाराशरः	विभ्राट्	पौष्णः	विद्युत्	चरणः	दुर्गा	यमपाशः	सिद्धान्ता	चितितसि.	पितृभ्रातदोषहरम्	ॐ स्यकारंकण्ठे	प्रणव संयुताम् । अन्त्योकार समायुक्ता–
धी	पुण्डरीकः	विस्तारपं०	सुरेशः	शुभ्रम्	उपस्थं	सरस्वती	ग्रथितम्	ध्योना	कीर्तिदाय.	पूर्वनीतपापहरम्	ॐ धीकारंमुखे	मन्यतेमनयोःपराम् ।। ५ ।। तदाद्यंचतदा–
म	कुत्सः	कात्यायनी	मरुत्	रक्तः	वायुः	विद्युद्वर्णा	उन्मुखोन्मु.	मर्यादा	सौभाग्यदं	सर्वपापहरम्	ॐ मकारंतालुदेशे	द्यंच कुर्यात्प्रणवसंयुतम् । अद्यांतरिक्षतां–
हि	दक्षः	पंक्तिः	सौम्यः	नीलम्	श्रोत्रम्	विशाला	प्रलंबं	स्फुटा	अभीष्टसि.	प्रतिग्रहदोषहरम्	ॐ हिकारंनासाग्रे	कुर्यादितिपाराशरोब्रवीदिति । योनवांछ–
धि	कश्यपः	त्रिष्टुप्	अंगिराः	रक्तः	त्वचा	विभूतिः	मुष्टिकं	बुद्धिः	त्रैलौक्यमो	प्रायरुवक्षेपहरम्	ॐ धिकारंनेत्रयोः	तिसंतानंमोक्षमिच्छति केवलम् ।। ६ ।।
यो	जमदग्निः	जगती	विश्वेदेवाः	रुक्मसदृ	शंचक्षुः	कमला	मत्स्यः	योगमातरः	पराश्रयप्रदं	मनःसर्वपापहरम्	ॐ योकारंभ्रुवोर्मध्य	प्रत्योंकारमसौकुर्वन्नक्षरंमोक्षमाप्नुयात् ।।७।।
यो	आत्रेयः	महाजगती	अश्विनौ	उद्युत्सूर्य०	जिह्वा	कला	कूर्मः	योगांतरं	देवप्रतिग्र.	इन्द्रपदप्राप्तिः	ॐ योकरंललाटे	गृहेजपं समंविद्योद्रोष्ठेशतगुणोभवेत् नद्यांशत
नः	विष्णुः	महिष्मती	प्रजापतिः	श्वेतः	नासिका	पाप्मा	वराहका	पृथ्वी	त्रैलोक्यदं	विष्णुपदप्राप्तिः	ॐ नःकारंपूर्वमुखे	सहस्रंस्यादनंतंशिवसन्निधौ ।।८।। अग्रेपृष्टे–
प्र	अंगिराः	नृमती	कुबेरः	रोचनाभ्रः	मनः	अचला	सिंहाक्रांतं	प्रभाव	परानुग्रह.	रुद्रपदप्राप्तिः	ॐप्रकारंदक्षिणमुखे	तथावामेसमीपेगर्भमन्दिरे जपं प्रदक्षिणंहोमं–
चो	कुमारः	भूछंदः	शंकरः	चन्द्रसदृशं	अहंकारः	परा	महाक्रांतं	उष्मा	तेजसोति.	ब्रह्मपदप्राप्तिः	ॐ चोकारंप.मुखे	नकुर्यान्नशिवालये।।९।।शिवमध्येजपंकुर्याद–
द	मृगशृङ्गः	भुवः	ब्रह्मा	पीतः	बुद्धिः	भृशीला	मुद्गरं	दिध्यमानं	स्वर्गप्रदम्	सायुज्यपदप्राप्तिः	ॐ दकारंउत्तरमुखे	थवातीर्थमध्यतः यजमानोजापकश्चषण्मा–
यात्	भगः	स्वः	विष्णुः	शुभ्रवर्णः	गुदा	पज्जद्वया	पल्लवं	निरंजनं	सर्वलोकप्र.	सर्वव्यापित्वम्	ॐ यकारंमूर्ध्नि	संचन जीवतीति।। १०।। तकारं सर्वव्यापि ।

वसन्त ऋतूनां ब्रह्मा प्रजापतीनामेवासौमुख्यः गायत्र्याः गायत्रीछन्दोभवति । किंभूः किंभुवः किंस्वः किंमहः किंजनः किंतपः किंसत्यं किंतत् किंसवितुः किंवरेण्यं किंभर्गः किंदेवस्य किंधीमहि किंधियः किंयः किंनः किंप्रचोदयात् । भूरितिभूर्लोकः भुवरित्यन्तरिक्षलोकः स्वरितिस्वर्लोकः महरिति महर्लोकः जनइति जनोलोकः तपइति तपोलोकः सत्यमितिसत्यलोकः ॐ भूर्भुवः स्वरोमिति त्रैलोक्यम् तदसौ तेजः यत्तेजसोग्निर्देवता सवितुरित्यादित्यस्य वरेण्यमित्यन्नमन्नमेवप्रजापतिः भर्गइत्यापो वै भर्गः एतास्तत्वसवदिवताः देवस्येन्द्रोवैदेवयद्दिवन्तदिन्द्रस्तस्मात्सर्वकृत् पुरुषोनाम विष्णुः धीमहि किमध्यात्मं तत्परमं पदमित्यध्यात्मं येन इति पृथिवी वै योनः प्रचोदयात् । कामइमाँल्लोकान्प्रच्यवन् यो नृशंस्योस्तोष्यस्तत्परमोधर्मः इत्येषा गायत्री किंगोत्रा कत्यक्षरा कतिपदा कतिकुक्षिः कतिशीर्षाणि सांख्यायन सगोत्रा गायत्री चतुर्विंशत्यक्षरा त्रिपदा षट्कुक्षिः सावित्रीकेशास्त्रयः पादाभवन्ति कास्याः कुक्षिः कोनि पञ्चशीर्षाणि ऋग्वेदोस्याः प्रथमः पादो भवति यजुर्वेदो द्वितीयः सामवेदस्तृतीयः पूर्वा दिक्प्रथमा कुक्षिर्भवति दक्षिणा द्वितीयापश्चिमा तृतीया उदीची चतुर्थी ऊर्ध्वा पञ्चमी अधरा षष्ठीकुक्षिः व्याकरणमस्याः प्रथमं शीर्षं भवति शिक्षा द्वितीयं कल्पस्तृतीयं निरुक्तं चतुर्थं ज्योतिषामयनं पञ्चमं किंलक्षणं किमु चेष्टितं किमुदाहृतं किमक्षरं दैवत्यं लक्षणं मीमांसा अर्थर्ववेदोविचेष्टितं छन्दोविधिरित्युदाहृतं कोवर्णःकः स्वरः श्वेतोवर्णः षट्स्वराणि इमान्यक्षराणि दैवतानि भवन्ति पूर्वा भवति गायत्री मध्यमा सावित्री पश्चिमा संध्यासरस्वती प्रातः संध्यारक्तारक्त - पद्मासनस्था - रक्ताम्बरधरा - रक्तवर्णा - रक्तगन्धानुलेपना - चतुर्मुखा अष्टभुजा - द्विनेत्रा - दण्डाक्षमालाकमण्डलुस्रुक्स्रुवुधारिणी - सर्वाभरणभूषिता - गायत्री - कौमारीब्राह्मीहंसवाहिनी ऋग्वेदसहिताब्रह्मदैवत्या त्रिपदा गायत्री षट्कुक्षिः पञ्चशीर्षा - अग्निमुखा रुद्रशिवविष्णुहृदया ब्रह्मकवचा सांख्यायनसगोत्रा भूर्लोकव्यापिनी - अग्निस्तत्त्वम् उदात्तनुदात्त स्वरितस्वरमकारः आत्मज्ञानेविनियोगः । इत्येषा गायत्रीमध्याह्नसंध्या श्वेताश्वेतपद्मासनस्था श्वेतांम्बरधरा श्वेतगन्धानुलेपना - पञ्चमुखी - दशभुजा - त्रिनेत्रा - शूलाक्षमालाकमण्डलु कपालधारिणी - सर्वाभरणभूषिता सावित्री - युवती माहेश्वरी वृषभवाहिनी - यजुर्वेदसंहिता रुद्रदेवत्यात्रिपदा सावित्री-षट्कुक्षिः पञ्चशीर्षाअग्निमुखा - रुद्रशिखा - ब्रह्मकवचा भारद्वाजसगोत्रा - भुवर्लोकव्यापिनी वायुस्तत्वम् उदात्तानुदात्तस्वरितस्वरमुकारः श्वेतवर्णः आत्मज्ञाने विनियोगः । इत्येषा सावित्री सायंसंध्या कृष्णाकृष्णपद्मासनस्थाकृष्णाम्बरधरा कृष्णवर्णाकृष्णगन्धानुलेपना कृष्णमाल्याम्बरधरा एकमुखी चतुर्भुजा द्विनेत्रा शङ्खचक्रगदापद्मधारिणी - सर्वाभरणभूषिता सरस्वती वृद्धा वैष्णवी गरुडवाहिनी सामवेदसंहिता - विष्णुदैवत्या त्रिपदा षट्कुक्षिः पञ्चशीर्षा अग्निमुखा विष्णुहृदया रुद्रशिखा ब्रह्मकवचा - काश्यप सगोत्रा स्वर्लोकव्यापिनी सूर्यस्तत्त्वम् उदात्तानुदात्तस्वरितमकारः कृष्णवर्णो मोक्षज्ञाने विनियोगः । इत्येषा सरस्वतीरक्तागायत्री - श्वेतासावित्रीकृष्णवर्णा सरस्वती प्रणवोनित्ययुक्तश्च व्याहृतिषु च सप्तसुसवषामेव पापानां सङ्करे समुपस्थिते । दशशतं समभ्यर्च्य गायत्री पावनी महत् । प्रह्लादोत्रिर्वसिष्ठश्च शुकः कण्वः पराशर । विश्वामित्रो महातेजाः कपिलः शौनको महान् । याज्ञवल्क्यो भरद्वाजो जमदग्निस्तपोनिधिः । गौतमो मुद्‌गल श्रेष्ठो वेदव्यासश्च लोमशः । अगस्त्यः कौशिको वत्सः पुलस्त्यो मण्डुकस्तथा । दुर्वासास्तपसा श्रेष्ठो नारदः कश्यपस्तथा । उक्तात्युक्तातथा मध्या प्रतिष्ठान्यासपूर्विकाः । गायत्र्युष्णिगनुष्टुप् च वृहतीपंक्तिरेव च । त्रिष्टुप् च जगती चैव तथातिजगती मता । शक्वरी शति पूर्वास्यादष्ट्यत्यष्ठी तथैव च । धृतिश्चातिधृतिश्चैव प्रकृतिः कृतिराकृतिः । विकृतिः संस्कृतिश्चैव तथातिकृतिरुत्कृतिः ।

इत्येताश्छन्दसां संज्ञाः क्रमशोवच्मि साम्प्रतम् । भूरिति छन्दो भुवरिति छन्दः स्वरितिच्छन्दो भूर्भुवः स्वरोमितिदेवी गायत्री । इत्येतानि च्छन्दांसि प्रथममाग्नेयं द्वितीयं प्राजापत्यं तृतीयं सौम्यं चतुर्थमैशानं पञ्चममादित्यं षष्ठं बार्हस्पत्यं सप्तमं पितृदैवत्यम् अष्टमं भगदेवत्यं नवममार्यम्णं दशमं सावित्रम् एकादशं त्वाष्ट्रं द्वादशं पैष्णं त्रयोदशमैन्द्राग्नं चतुर्दशं वायव्यं पञ्चदशं वामदेवत्यं षोडशं मैत्रावरुणं सप्तदशं भ्रातृव्यमष्टदशं वैश्वदेव्यम् एकोनविंशं वैष्णवं विंशं वासवम् एकविंशं रौद्रं द्वविंशमाश्विनं त्रयोविंशं चतुर्विंशं ब्राह्मं "दिर्घान्स्वरेण संयुक्तान्बिन्दुनादसमन्वितान् । व्यापकान्विन्यसेत्पश्चाद्दशपंक्त्याक्षराणि च।" द्रुंपुस इति प्रत्यक्षबीजानि । "प्रह्लादिनी प्रभा सत्या विश्वा भद्रा विलासिनी । प्रभावती जया कान्ता शान्ता पद्मा सरस्वती । विद्रुमस्फटिकाकारं पद्मरागसमप्रभम् । इन्द्रनीलमणिप्रख्यं मौक्तिकं कुंकुमप्रभम् । अजनाभं च गाङ्गेयं वैदूर्यं चन्द्रसन्निभम् । हारिद्रं कृष्णदुग्धाभं रविकान्तिसमं भवम् । शुकपिच्छस माकारं क्रमेण परिकल्पयेत् । पृथिव्यापस्तथा तेजो वायुराकाश एव च । गन्धो रसश्च रूपं च शब्दः स्पर्शस्तथैव च । घ्राणं जिह्वा च चक्षुश्च त्वक्छ्रोत्रं च तथापरम् । उपस्थपायुपादादि पाणिर्वागपि च क्रमात् । मनो बुद्धिरहंकारमव्यक्तं च यथाक्रमम् । सुमुखं सम्पुटं चैव विततं विस्तृतं तथा । एकमुखं द्विमुखं च त्रिमुखं च चतुर्मुखम् । पञ्चमुखं षण्मुखं चाधोमुखं चैव व्यापकम् । आञ्जलिकं ततः प्रोक्तं मुद्रितं तु त्रयोदशम् । शकटं यमपाशं च ग्रन्थितं सम्मुखोन्मुखम् । प्रलम्बं मुष्टिकं चैव मत्स्यः कूर्मो वराहकम् । सिंहाक्रान्तं महाक्रांतंमुद्गरं पल्लवंतथा । एतामुद्राश्चतुर्विंशद्गात्र्याः । सुप्रतिष्ठिताः ।" ॐ मूर्ध्नि सह्वाते ब्रह्माविष्णुर्ललाटे रुद्रो भ्रूमध्ये चक्षुषोश्चन्द्रादित्यौ कर्णयोः शुक्रवृहस्पति नासिके वायुदैवत्यं प्रभातं दोषा उभे संध्ये मुखमग्निर्जिह्वा सरस्वती ग्रीवा स्वाध्यायास्तनयोर्वसवः बाह्वोर्मरुतः हृदयं पर्जन्यम् आकाशमपरं नाभिरन्तरिक्षं कटिरिन्द्रियाणि जघनं प्राजापत्यं कैलासमलयौ ऊरू विश्वेदेवा जानुभ्यां जान्वोः कुशिकी जङ्घयोरयनद्वयम् सुराः पितरः पादौ पृथिवी वनस्पतिः गुल्फौ रोमाणि मुहूर्तास्ते विग्रहाः केतुमासा ऋतवः संध्याकालत्रयमाच्छादनं संवत्सरो निमिषः । अहोरात्रावादित्यचन्द्रमसौ सहस्रपरमां देवीं शतमध्यां दशापराम् । सहस्रनेत्रीं देवीं गायत्रीं शरणमहं प्रपद्ये । तत्सवितुर्वरदाय नमः । तत्प्रातरादित्याय नमः । सायमधीयानो दिवसकृतं पापं नाशयति । प्रातरधीयानो रात्रिकृतं पापं नाशयति तत्सायं प्रातः प्रयुञ्जानोऽपापो भवति य इदं गायत्रीहृदयं ब्राह्मणः प्रयतः पठेत् चत्वारो वेदा अधीता भवन्ति सर्वेषु तीर्थेषु स्नातो भवति सर्वैर्देवैर्ज्ञातो भवति सर्वप्रतिप्रत्यूहात्पूतो भवति अलेह्यलेहात्पूतो भवति अचोष्यचोषात्पूतो भवति सुरापानात्पूतो भवति सुवर्णस्तेयात्पूतो भवति पंक्तिभेदनात्पूतो भवति पतितसम्भाषणात्पूतो भवति अनृतवचनात्पूतो भवति गुरुतल्पगमनात्पूतो भवति अगम्यागमनात्पूतो भवति वृषलीगमनात्पूतो भवति ब्रह्महत्यायाः पूतो भवति भ्रूणहत्यायाः पूतो भवति वीरहत्यायाः पूतो भवति अब्रह्मचारी सुब्रह्मचारी भवति अनेन हृदयाधीतेन ऋतुशतेनेष्टं भवति । षष्टि सहस्रं गायत्रीपाभवन्ति । अष्टौ ब्रह्मणान्ग्राहयेत् अर्थसिद्धिर्भवति य इदं गायत्रीहृदयं ब्राह्मणः प्रयतः पठेत् । सर्वपापैः प्रमुच्यते ब्रह्मलोके महीयते ब्रह्मलोके महीयते । इति गायत्र्युपनिषत् सम्पूर्णा ।

इति श्रीमन्त्रमहार्णवे देवीखण्डे गायत्रीतन्त्रे प्रथमस्तरङ्गः ॥ १ ॥

इति गायत्री उपनिषद् समाप्त ।

इति मन्त्रमहार्णव के देवीखण्डोक्त गायत्री तन्त्र में प्रथम तरङ्ग ।

दुर्गा ध्यान

अरुणकमलसंस्था तद्रजः पुञ्जवर्णा
करकलमधृतेष्टाभीतियुग्माम्बुजा च।
मणिमुकुटविचित्रालंकृता कल्पजातैर्भवतु
भुवनमाता सन्ततं श्रीः श्रिये च।।1।।
इन्दुप्रख्यामिन्दुखण्डार्धमौलि
शङ्खाभीष्टाभीतिहस्ता त्रिनेत्राम्
हेमाब्जास्थां पीतवस्त्रां प्रसन्नां
देवीं दुर्गा दिव्यरूपां नमामि।।2।।

पृ० १०६

(नोट : कार्य और अनुष्ठान भेद से श्री दुर्गा के अनेक ध्यान हैं और उनका यथास्थान उल्लेख कर दिया गया है। यहाँ उनमें से केवल एक ध्यान ही दिया गया है।)

द्वितीय तरङ्ग

श्रीदुर्गातन्त्र

श्रीगणेशाय नमः

श्री देव्युवाच :

भगवन्सर्वत्रज्ञ साधकानां जयावह ।
यत्पुरा सूचितं देवदुर्गापञ्चाङ्गमुत्तमम् ॥ १ ॥
सर्वस्वं सर्वदेवानां रहस्यं सर्वमन्त्रिणाम् ।
तदद्य कृपया ब्रूहि यद्यस्ति मयि ते दया ॥ २ ॥

पार्वती से पूछा : हे भगवन ! आप सब तन्त्रों को जानने वाले और साधकों को जय देने वाले हैं। आपने पहले मुझे जिस उत्तम दुर्गा - पञ्चाङ्ग के सम्बन्ध में सङ्केत किया था कि वह सब देवताओं का सर्वस्व है, सब मन्त्र - साधकों का रहस्य है, उसे आज, यदि मुझ पर आपकी दया हो तो, आप बतायें।

भैरव उवाच :

एतद्गुह्यतमं देवि पञ्चाङ्गं तत्त्वलक्षणम् ।
दुर्गायाः सारसर्वस्वं न कस्य कथितं मया ॥ ३ ॥
तव स्नेहात्प्रवक्ष्यामि दुर्गापञ्चाङ्गमीश्वरि ।
गुह्यं गोप्यतमं गुह्यं न देयं ब्रह्मवादिभिः ॥ ४ ॥
या देवी दैत्यदमनी दुर्गेत्यष्टाक्षरात्मिका ।
देवैराराधिता पूर्वं ब्रह्माच्युतपुरःसरैः ॥ ५ ॥
पुरन्दरहितार्थाय वधार्थाय सुरद्विषाम् ।
सैवं सृजति भूतानि राजसी परमेश्वरी ॥ ६ ॥
सात्त्विकी रक्षति प्रान्ते संहरिष्यति तामसी ।
इत्थं गुणत्रयीरूपा सृष्टिस्थितिलयात्मिका ॥ ७ ॥
अष्टाक्षरी महाविद्या सन्ध्यातीता परात्मिका ।
तस्याः पञ्चाङ्गमधुना रहस्यं त्रिदिवौकसाम् ॥ ८ ॥
वक्ष्यामि परमप्रीत्या न चाख्येयं दुरात्मने ।
अभक्ताय न दातव्यमित्याज्ञा पारमेश्वरी ॥ ९ ॥

भैरव ने कहा : दे देवि ! यह तत्त्वलक्षणों वाला पञ्चाङ्ग अत्यन्त गुह्य है। यह दुर्गा का सारसर्वस्व है। मैंने इसे किसी को भी नहीं बताया है। हे ईश्वरि ! तुम्हारी प्रीति के कारण तुम्हें बताऊँगा। ब्रह्मवादियों को चाहिये कि वे इसे अत्यन्त गोप्य समझ कर सदा गुप्त रक्खें, किसी को न देवें। जो देवी, 'दैत्यदमनी' दुर्गा आठ अक्षरों वाली है, पूर्वकाल में ब्रह्मा, विष्णु आदि देवों ने इन्द्र के हित की रक्षा के लिए तथा

राक्षसों के विनाश के लिये जिसकी आराधना की थी, हे परमेश्वरि ! वही राजसी प्रकृति से समस्त प्राणियों की सृष्टि करती है, सात्विकी प्रकृति सें उनकी रक्षा करती है तथा तामसी प्रकृति से उनका विनाश करती है । इस प्रकार वह देवी तीनों गुणों के रूप से सृष्टि, स्थिति तथा विनाश करने वाली है । वह अष्टाक्षरी , महाविद्या, सन्ध्यातीता तथा परात्मिका है । मैं इस समय देवताओं के लिये भी जो रहस्य है, उसे परम प्रीति से तुम्हें बता रहा हूँ । जो भक्त न हो, जो दुरात्मा हो उसे तुम इस रहस्य को न बताना, यह परमेश्वर की आज्ञा है ।

दुर्गानाम प्राप्तिः

(देवीरहस्यतन्त्रे)''तत्रैव च वधिष्यामि दुर्गमाख्यं महासुरम् ।
दुर्गादेवीति विख्यातं तन्मे नाम भविष्यति'' ॥ १० ॥

हिंगुलाद्रि खण्डे उत्तरसंहितायाम् :

आश्विने तु सिताष्टम्यां सङ्गवे तु हतोऽसुरः ।
तया देव्या महाविष्णोस्त्रैलोक्यसुखहेतवे ॥ ११ ॥
रुरुदैत्यस्क पुत्रो यो दुर्गसंज्ञोऽतितापदः ।
तन्नाशकरणेनैव दुर्गानामाऽभवत्किल ॥ १२ ॥

देवी रहस्य में कहा गया है कि "वहीं पर मैं दुर्ग नामक महाराक्षस को मारूँगी, उससे मेरा 'दुर्गा' यह नाम संसार में विख्यात होगा ।" उत्तर संहिता के हिंगुलादि खण्ड में कहा गया है : महाविष्णु के तीनों लोकों की सुख - शान्ति के लिये आश्विन शुक्लपक्ष की अष्टमी को देवी द्वारा राक्षस माया गया जो कि रुरु नामक दैत्य का पुत्र था । उसका नाम दुर्ग था । वह समस्त प्राणियों को बहुत त्रास देता था । उस राक्षस का नाश करने से ही निश्चय करके देवी का 'दुर्गा' यह नाम हुआ ।

तत्रादौ दुर्गापटलप्रारम्भः

दृष्ट्वा तन्त्राण्यनेकानि पुराणानि विशेषतः ।
जगन्मातुश्च दुर्गायाः पटलं कथयाम्यहम् ॥ १३ ॥
नामूलं लिख्यते किञ्चिदिह विज्ञेयमादरात् ।
नैवात्र संशयः कार्यो नानाभेदविधानके ॥ १४ ॥
तन्त्रान्तरेष्वनेकानि विधानानि मुनीश्वरैः ।
कथितानीह दुर्गाया प्रसिद्धानि च सन्ति वै ॥ १५ ॥
देशाद्देशाच्च तेषां वै संग्रहः क्रियते मया ।
साधकानां हितार्थाय श्रीदुर्गायाः प्रसादतः ॥ १६ ॥

अनेक तन्त्रों और पुराणों को विशेष रूप से देखकर जगन्माता दुर्गा का पटल यहाँ मैं कर रहा हूँ । मैं यहाँ मूल के विरुद्ध कुछ नहीं लिख रहा हूँ । यद्यपि विधिविधानों में कुछ भिन्नता हो सकती है तो भी उसमें संशय नहीं करना चाहिये, क्योंकि तन्त्रों में मुनियों ने अनेक प्रकार के विधान कहे हैं । देश - देशान्तर से दुर्गा के प्रसिद्ध विधानों का यहाँ संग्रह किया जा रहा है । दुर्गाजी की कृपा से इससे साधकों को लाभ होगा।

(देवीरहस्यतन्त्रैकपञ्चाशत्तमे पटले)

भैरव उवाच :

श्रीशैलराजशिखरे नानाद्रुमलताकुले ।
वसन्तलक्ष्मीनिलये समासीनमुमापतिम् ॥ १७ ॥
एकदा देवमीशानं शशिशेखरमुत्तमम् ।
उमाश्रितार्धवपुषं देवदानवसेवितम् ॥ १८ ॥
ध्यानासक्ताक्षित्रितयं जटाजूटलतारुणम् ।
भस्माङ्गरागधवलं नारायणनमस्कृतम् ॥ १९ ॥
ब्रह्मादिदेवप्रणतं गन्धर्वजनवन्दितम् ।
यक्षराक्षसनागेन्द्रनागेन्द्रकुल पूजितम् ॥ २० ॥
भैरवं भैरवाकारं गिरीशं परमेश्वरम् ।
उत्थाय विनता भूत्वा पर्यपृच्छत पार्वती ॥ २१ ॥

देवीरहस्य तन्त्र के इक्यावनवें पटल में इस प्रकार दुर्गा तन्त्र का वर्णन है

भैरव बोले : नाना प्रकार के वृक्षलता - गुल्मों से परिव्याप्त पर्वतराज हिमालय पर वसन्तलक्ष्मी - निलय में स्वस्थ चित्त बैठे ईशान, शशिशेखर, उत्तम देव अर्धनारीश्वर, देव - दानवों से सेवित, तीनों नेत्रों से ध्यानमग्न, पिङ्गल जटाजूट वाले, शरीर में भस्म रमाने के कारण धवल वर्ण वाले, विष्णु द्वारा नमस्कृत, ब्रह्मादि देवों द्वारा पूजित, गन्धर्वजनों द्वारा वन्दित यक्ष, राक्षस तथा नागेन्द्र एवं उनके कुलों द्वारा पूजित, भैरव, भैरवाकार, गिरीश, परमेश्वर, शिवजी से विनम्र होकर पार्वतीजी ने उठकर प्रश्न किया ।

श्रीदेव्युवाच :

भगवन्सर्वलोकेश सर्वलोकनमस्कृत ।
गुणातीत गुणाध्यक्ष भूतेश्वर महेश्वर ॥ २२ ॥
सृज्यस्यवसि नित्यान्ते संहरस्यखिलं जगत् ।
चराचरं तत्त्वमेव किंपुनर्जपसि प्रभो ॥ २३ ॥
किं ध्यायसि महादेव सततं भक्तवत्सल ।
वद शीघ्रं दयाम्भोधे यद्यहं प्रेयसी तव ॥ २४ ॥

श्रीपार्वतीजी ने कहा : हे भगवन ! सर्वलोकेश, सर्वलोकनमस्कृत, गुणातीत, गुणाध्यक्ष, भूतेश्वर, महेश्वर ! आप सदा सृष्टि करते हैं, संसार का पालन करते हैं तथा अन्त में समस्त जगत का संहार करते हैं। चराचर सब आप ही हैं, तब आप किसका जप करते हैं ? हे भक्तवत्सल, महादेव, दयानिधे, आप निरन्तर किसका ध्यान करते हैं ? यदि आपकी मैं प्रियपात्री हूँ तो आप मुझे शीघ्र बतायें ।

ईश्वर उवाच :

देवि किं ते प्रवक्ष्यामि रहस्यमिदमद्भुतम् ।
सर्वस्वं सारभूतं मे सर्वेषां तत्त्वमुत्तमम् ॥ २५ ॥
लक्षवारसहस्राणि वारि तासि पुनः पुनः ।
स्त्रीस्वभावान्महादेवि पुनस्त्वं परिपृच्छसि ॥ २६ ॥

अद्य भक्त्या तव स्नेहाद्वक्ष्यामि परमाद्भुतम् ।
देवीरहस्य तन्त्रोक्तं तन्त्रराजं महेश्वरि ॥ २७ ॥
सर्वाङ्गमैकमुकुटं सर्वसारमयं ध्रुवम् ।
सर्वतन्त्रमयं दिव्यं पटलं कथयाम्यहम् ॥ २८ ॥
अनुक्रमणिकां दिव्यां शृणु तन्त्रस्य पार्वति ।
यस्याः श्रवणमात्रेण कोटिपूजाफलं लभेत् ॥ २९ ॥

शिवजी बोले : हे देवि ! उस अद्भूत रहस्य को मैं तुम्हें क्या बताऊँ जो कि मेरा सर्वस्व एवं सारभूत सबसे उत्तम तत्व है । करोड़ों बार मैंने तुमको मना किया है किन्तु तुम नहीं मानती हो और स्त्रीस्वभाव से पुनः पूछती हो । इसलिए अब मैं तुम्हारी भक्ति से तथा तुम्हारे स्नेह के कारण इस परम अद्भुत रहस्य को बतऊँगा । हे महेश्वरि ! देवीरहस्य तन्त्र में कहा गया, समस्त आगमों का शिरमौर, सबका निश्चित सार, तन्त्रराज, सर्वतन्त्रमय दिव्य पटल मैं कह रहा हूँ । हे पार्वती ! उस तन्त्र की अनुक्रमणिका सुनो, जिसके श्रावणमात्र से मनुष्य करोड़ों पूजा का फल प्राप्त करता है ।

श्रीविद्यानिर्णयो देवि मन्त्रसाधनकोपरः ।
शिवमन्त्रप्रकाशख्यो दीक्षाविधिरनुत्तमः ॥ ३० ॥
पुरश्चर्याविधिर्देवि पञ्चरत्नेश्वरीक्रमः ।
होमसाधनकश्चैव यन्त्रपूजा विधिः परः ॥ ३१ ॥
आचारनिर्णयो देवि सर्वमेव प्रकाशितम् ।
तत्रादौ देवि वक्ष्येहं दुर्गाभुवनमुत्तमम् ॥ ३२ ॥

हे देवि ! श्रीविद्यानिर्णय, मन्त्रसाधन, शिव मन्त्र प्रकाश, दीक्षा विधि, पुरश्चरणविधि, पञ्चरत्नेश्वरीक्रम, होमसाधन, यन्त्र पूजाविधि, आचारनिर्णय, यह सब प्रकाशित करूँगा । हे देवि ! उसमें प्रारम्भ में उत्तम दुर्गाभुवन का वर्णन करूँगा ।

अथ दुर्गाभुवनवर्णनम् :

जयं नाम महादिव्यं बहुविस्तारविस्तृतम् ।
नानारत्नसमाकीर्णं सूर्यकोटिसमप्रभम् ॥ ३३ ॥
इन्द्रगोपकवर्णं च चन्द्रकोटिमनोहरम् ।
अप्रमेयमसंख्येयमगम्यं सर्ववादिनाम् ॥ ३४ ॥
इदं दिव्यं जयं नाम भुवनं परमेश्वरि ।
तत्रैव वसते दुर्गा नवरूपात्मिका परा ॥ ३५ ॥
या देवदेवी वरदा सर्वलोकैकसुन्दरी ।
या दुर्गेति स्मृता लोके ब्रह्माण्डोदरवर्तिनी ॥ ३६ ॥
विष्णुना तपसा पूर्वमाराध्य परमेश्वरी ।
महिषस्यासुरेन्द्रस्य वधार्थायावतारिता ॥ ३७ ॥
योगमाया महामाया सर्वदा परमेश्वरी ।
तामेवाहर्निशं ध्याये श्रीविद्यां परमां जपे ॥ ३८ ॥

तामद्याहं प्रवक्ष्यामि विद्याचरणदायिनीम् ।
यां श्रुत्वै व शिवो जातः पञ्चनादात्मकः शिवः ॥ ३९ ॥
यदाशुद्धारिहीना सा दुर्गा निष्कलरूपिणी ।
साक्षाद्भुवनरूपापि महज्ज्योतिः स्वरूपिणी ॥४० ॥

हे परमेश्वरि ! जय नामक महादिव्य, बहुत लम्बा - चौड़ा, नाना रत्नों से सुसज्जित, करोड़ों सूर्यों के समान चमकने वाला, वीरबहुटी के रङ्ग का करोड़ों चन्द्रमा के समान मनोहर, अनुपम, अगण्य और सभी मतवादियों के लिये अगम्य दिव्य जय नामक भुवन है । वहीं पर दुर्गाजी निवास करती हैं, जो देवों की देवी, सारे संसार में एकमात्र सुन्दरी और संसार में दुर्गा नाम से जानी जाती हैं । वह सारे ब्रह्माण्ड में व्याप्त हैं । महिषासुर - वध के लिये विष्णु भगवान पहले तपस्या से परमेश्वरी दुर्गा की आराधना करके उन्हें भूलोक में लाये थे । वह सर्वदा योगमाया, महामाया तथा परमेश्वरी हैं । मैं रातदिन उन्हीं का ध्यान करता हूँ और श्रीविद्या का जप करता हूँ । मैं उन विद्याचरण देने वाली के सम्बन्ध में तुम्हें बताऊँगा जिसे सुनकर ही शिव पञ्चनादात्मक शिव बन गया । जब वह शत्रु से हीन शुद्ध दुर्गा निष्कलरूपिणी रहती हैं तब वह साक्षात्भुवनरूपा होने पर भी ज्योति स्वरूपिणी कहलाती हैं ।

तदाशवह (शबल ?) काले तु ज्योतिरूपे महेश्वरी ।
शिवः प्रभामण्डलतो निर्गतश्चेतनो विभुः ॥ ४१ ॥
अशृणोन्नादमाधारं जगतां बीजमुत्तमम् ।
अवमं सारमायां त्वं सृष्टोग्रे मनुनायकः ॥ ४२ ॥
इति श्रुत्वा परानादं तारमित्युपदीर्यते ।
शिवो जजाप सहसा बीजं त्रिजगतां शिवे ॥ ४३ ॥
तेन मायेति शब्दं स शुश्राव गगनात्ततः ।
इमं भज महेशान सदानन्दालयं परम् ॥ ४४ ॥
बिन्दुनाद मयो देवः शिवोभूत्परमेश्वरः ।
ततो नादं स शुश्राव दृष्टिकर्णविवर्जितम् ॥ ४५ ॥
दुर्गां भजेति स शिवः पञ्चनादात्मकोऽभवत् ।
ततो जप्त्वा पराविद्यामसृजज्जगदम्बिका ॥ ४६ ॥
आदौ वायुं शिवः सुष्ट्वा ततः सृष्टिं यथेच्छया ।
इच्छामात्रं शिवे विश्वं विश्वेश्वरि चराचरम् ॥ ४७ ॥
ससर्ज लवमात्रं स शितिकण्टः शिवः शिवे ।
इति मां गुप्तविद्यां तु लब्ध्वा गुरुपदार्चनात् ॥ ४८ ॥
किं किं न साधयेल्लोके साधको मन्त्रसाधकः ।
वस्त्रं वह्निं च कामं च धनं वृत्तं च साधकः ॥ ४९ ॥
वशीकुर्याद्यथाबुद्ध्या येन तुर्याकुलो भवेत् ।
श्रीचक्रमिदमाधारं देव्या विभवकारणम् ॥ ५० ॥
गुह्यं सर्वस्वम्बायाः पूज्यं साधकसत्तमम् ।
चक्रं लिखेन्महादेवि पूज्यमब्जार्कयोर्दलैः ॥ ५१ ॥

येन देवी महामाया श्रीदुर्गाशु प्रसीदति ।
चक्रेशं पूजयेद्यस्तु नीलाभां दहतीं द्युतिम् ॥ ५२ ॥
वह्नीन्दु सूर्याम्बुरजं मण्डलाकारमर्चयेत् ।
लसन्मुकुटरोचिष्णुः स भवेत्साधकोत्तमः ॥ ५३ ॥
तस्य शङ्खनिभा कीर्तिर्भ्रमते भुवनत्रये ।
ससुरासुरगन्धर्वं वशं याति महेश्वरि ॥ ५४ ॥

हे महेश्वरि ! तब ज्योतिरूप शवह (शबल ?) काल में दुर्गाजी के प्रभामण्डल से चेतन विभु शिव प्रकट हुए । उन्होंने संसार के उत्तम आधारभूत बीजमन्त्र को सुना । तुम्हारी माया के साररूप मन्त्रनायक (ह्रीं) की सर्वप्रथम सृष्टि हुई । उस शक्ति प्रणवरूपी परानाद के उत्पन्न होने पर उसे सुनकर, हे शिवे ! तब सहसा शिव ने तीनों लोकों के उस बीज का जप किया । शिव को आकाश से यह शब्द सुनाई पड़ा कि 'हे महेशान ! इस माया (ह्रीं) शब्द का जप करो जो सदैव आनन्द का परमधाम है ।' बिन्दुनादमय वह शिव तब परमेश्वर हो गये । तब 'दुर्गा का भजन करो' इस दृष्टि - कर्ण - विवर्जितनाद को सुनकर शिव पञ्चनादात्मक हो गये । इसके बाद जगदम्बिका ने परा विद्या का जप करके आदि में वायु की सृष्टि की। तदनन्तर शिव ने यथेच्छया सृष्टि को बनाया । हे महेश्वरि ! शिव की इच्छामात्र के रूप में यह चराचर जगत् है । इस विश्व को शिव ने क्षणमात्र में बना दिया । इस प्रकार मुझे तथा इस गुप्त विद्या को गुरु चरणों की सेवा से प्राप्त करके साधक मनुष्य क्या - क्या नहीं सिद्ध कर सकता । वस्त्र, अग्नि, काम, धन, वृत्त आदि सबको साधक अपनी बुद्धि के अनुसार वश में कर लेता है जिससे कि अन्त में वह ईश्वर का सायुज्य प्राप्त करता है । यह श्रीचक्र देवी का आधार है और यह मनुष्यों के लिये समृद्धि का कारण है । यह अम्बा का सर्वस्व एवं गोप्य उत्तम साधन है । हे महादेवि ! श्रीचक्र लिख करके कमल और सफेद मदार के पत्तों से उसकी पूजा करनी चाहिये जिससे महामाया दुर्गादेवी शीघ्र प्रसन्न होती हैं । जो मनुष्य चक्रेश (श्रीचक्र) नीलाभायुक्त प्रचण्ड तेजोमयी ज्योत्सना, अग्नि, चन्द्रमा, सूर्य तथा कमल के समान सुशोभित मण्डलाकार चक्रेश (श्रीचक्र) की पूजा करता है वह चमकदार मुकुट को धारण किये व्यक्ति के समान समस्त साधकों में श्रेष्ठ साधक प्रकाशित होता है । शङ्ख के समान उसकी उज्जवल कीर्ति तीनों भुवनों में फैलती है । हे महेश्वरि ! मनुष्य, देवता, राक्षस तथा गन्धर्व सहित सभी उसके वश में हो जाते हैं ।

शरासवरसानन्दमयो भूत्वा जपेन्मनुम् ।
खेटकास्तस्य तुष्यन्ति साधकस्याङ्गपूजनात् ॥ ५५ ॥
तस्य रोगा विनश्यन्ति सर्वेशूलादयोऽचिरात् ।
तर्जनीं तव वक्ष्यामि रिपवो यान्ति विद्रुताः ॥ ५६ ॥
तस्य गेहं धनं गावो महिषा विष्टरं गजाः ।
दुर्गा रत्नवती भूमिस्तस्य पीठं मनोहरम् ॥ ५७ ॥
साधकस्य भवेदेवं सम्पत्तिर्बहुधार्चनात् ।
एवं ध्यायेन्महादेवीं दुर्गां दुर्गतिनाशिनीम् ॥ ५८ ॥

शर के उत्तम आसन पर आनन्दपूर्वक बैठकर मन्त्र का जप करना चाहिये । साधक द्वारा अङ्गों की पूजा से ग्रह सन्तुष्ट हो जाते हैं । शीघ्र ही उसके रोग और शूलादि नष्ट हो जाते हैं । तुम्हें तर्जनी बताऊँगा जिससे शत्रु पलायित हो जाते हैं । उस साधक के पास घर, धन, गायें, भैंसें, विस्तरे, हाथियाँ, दुर्गम रत्नों से भरी भूमि, मनमोहक पीठ आदि हो जाते हैं। बहुत दिनों तक पूजा करने से इस प्रकार

की सम्पत्ति प्राप्त होती है। इस प्रकार दुःखों को विनष्ट करनेवाली महादेवी दुर्गा का ध्यान करना चाहिये।

ध्यानेनानेन देवेन्द्रो भविष्यति हि साधकः।
इतीदं देवि तत्त्वं ते कथिंं परमाद्‌भुतम्‌ ॥५९॥
अवक्तव्यमदातव्यं गोपनीयं स्वयोनिवत्‌ ॥६०॥

हे देवि! इस ध्यान से साधक देवताओं का स्वामी इन्द्र बन जाता है। यह अद्‌भुत तत्व मैंने तुम्हें बतलाया है। इसे किसी को नहीं बताना चाहिये तथा अपनी योनि के समान इसे गुप्त रखना चाहिये।

इति दुर्गाभुवन वर्णन समाप्त।

(देवीरहस्यन्त्रे)
अथ दुर्गाष्टाक्षरमन्त्रप्रयोगः
नास्या न्तरायबाहुल्यं नापि मित्रारिदूषणम्‌।
नो वा प्रयाससंयोगो नाचारयुगविप्लवः ॥१॥
साक्षात्सिद्धिप्रदो मन्त्रो दुर्गायाः कलिनाशनः।
अष्टक्षरोष्टसिद्धीशो गोपनीयो दिगम्बरैः ॥२॥

देवी रहस्य तन्त्र में कहा गया है कि इसमें न तो विघ्नों की अधिकता है और न मित्र - अरि के दूषण का शोधन करना है; न अधिक प्रयत्न करना है न कठिन आचार की आवश्यकता है। यह दुर्गा का मन्त्र कलि के दोषों का नाश करने वाला साक्षात्‌ सिद्धिदायक है। यह अष्टाक्षर मन्त्र अष्टसिद्धियों का स्वामी है। दिगम्बरों को चाहिये कि इसको गुप्त रक्खें ॥१-२॥

मन्त्र इस प्रकार है : "ॐ ह्रीं दुं दुर्गायै नमः।"

इसका विधान :

विनियोग : ॐ अस्य श्रीदुर्गाष्टाक्षरमन्त्रस्य महेश्वर ऋषिः। श्रीदुर्गाष्टाक्षरात्मिका देवता। दुं बीजम्‌। ह्रीं शक्तिः। ॐ कीलकाय नम इति दिग्बन्धः। धर्मार्थकाममोक्षार्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास : ॐ महेश्वरऋषये नमः शिरसि ॥१॥ अनुष्टुप्छन्दसे नमः मुखे ॥२॥ श्रीदुर्गाष्टाक्षरात्मिका देवतायै नमो हृदि ॥३॥ दुं बीजाय नमो नाभौ ॥४॥ ह्रीं शक्तये नमो गुह्ये ॥५॥ ॐ कीलकाय नमः पादयोः ॥६॥ नमो दिग्बन्धः इति सर्वाङ्गे ॥७॥ इति ऋष्यादिन्यासः।

करन्यास : ॐ ह्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥१॥ १ ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः ॥२॥ ॐ ह्रूं मध्यमाभ्यां नमः ॥३॥ ॐ ह्रैं अनामिकाभ्यां नमः ॥४॥ ॐ ह्रौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥५॥ ॐ ह्रः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥६॥ इति करन्यासः।

हृदयादिषडङ्गन्यास : ॐ ह्रां हृदयाय नमः ॥१॥ ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा ॥२॥ ॐ ह्रूं शिखायै वषट्‌ ॥३॥ ॐ ह्रैं कवचाय हुम्‌ ॥४॥ ॐ ह्रौं नेत्रत्रयाय वौषट्‌ ॥५॥ ॐ ह्रः अस्त्राय फट्‌ ॥६॥ इति हृदयादिषडङ्गन्यासः।

वर्णन्यास : ॐ नमः शिरसि ॥१॥ ॐ ह्रीं नमो मुखे ॥२॥ ॐ दुं नमो वक्षसि ॥३॥ ॐ गां नमो नाभौ ॥४॥ ॐ यैं नमः पृष्ठे ॥५॥ ॐ नं नमो जान्वोः ॥६॥ ॐ मः नमः पादयोः ॥७॥ इति वर्णन्यासः।

तत्त्वन्यास : ॐ आत्मतत्त्वाय नमः शिरसि ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं विद्यातत्त्वाय नमो मुखे ॥ २ ॥ ॐ दुं शिवतत्त्वाय नमो हृदि ॥ ३ ॥ ॐ गुरुतत्त्वाय नमो नाभौ ॥ ४ ॥ ॐ ह्रीं शक्तितत्त्वाय नमः जङ्घयोः ॥ ५ ॥ ॐ दुं शिवशक्तितत्त्वाय नमः पादयोः ॥ ६ ॥ इति तत्त्वन्यासः ।

मातृकान्यास : ॐ अं आं कं खं गं घं ङं इं ईं हृदयाय नमः ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं उं ऊं चं छं जं झं ञं ऋं ॠं शिरसे स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ दुं लृं टं ठं डं ढं णं लॄं शिखायै वषट् ॥ ३ ॥ ॐ गां एं तं थं दं धं नं ऐं कवचाय हूंम् ॥ ४ ॥ ॐ यैं ओं पं फं बं भं मं औं नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ५ ॥ ॐ नमः अं यं रं लं वं शं षं सं हं लं क्षं अः अस्त्राय फट् ॥ ६ ॥ इति शुद्धमातृकान्यासः ।

एवं करन्यासं कुर्यात् । ततः पद्धतिमार्गेण देवीकलामातृका विन्यस्य पूर्वोक्तषडंगं कृत्वा ध्यायेत् ।

इसी प्रकार करन्यास करना चाहिये । उसके बाद पद्धति मार्ग से देवीकलामातृका का विन्यास और पूर्वोक्त षडङ्गन्यास करके ध्यान करें ।

अथ ध्यानम् :

दूर्वानिभां त्रिनयनां विलसत्किरीटां शङ्खाब्जखड्गशरखेटक शूलचापान् । सन्तर्जनीं च दधतीं महिषासनस्थां दुर्गां नवारकुलपीठगता भजेहम् ॥ १ ॥

इति ध्यात्वा मानसोपचारैः सम्पूज्य ततः सर्वतोभद्रमण्डले पीठपूजां विधाय मण्डूकादिपीठदेवताः पद्धतिमार्गेण संस्थाप्य नवपीठशक्तिःपूजयेत् ।

इससे ध्यान करके, मानसोपचारों से पूजा करके सर्वतोभद्र मण्डल में पीठ पूजा करके, मण्डूकादि पीठ - देवताओं को पद्धतिमार्ग से संस्थापित करके नव पीठशक्तियों की इस प्रकार पूजा करें ॥ १ - ९ ॥

ॐ प्रभायै नमः ॥ १ ॥ ॐ मायायै नमः ॥ २ ॥ ॐ जयायै नमः ॥ ३ ॥ ॐ सूक्ष्मायै नमः ॥ ४ ॥ ॐ विशुद्धायै नमः ॥ ५ ॥ ॐ नन्दिन्यै नमः ॥ ६ ॥ ॐ सुप्रभायै नमः ॥ ७ ॥ ॐ विजयायै नमः ॥ ८ ॥ ॐ सर्वसिद्धिदायै नमः ॥ ९ ॥ इति पूजयेत् ।

ततः स्वर्णादिनिर्मितं यन्त्रपत्रं ताम्रपात्रे निधाय घृतेनाभ्यज्य तदुपरिदुग्धधारां जलधारां च दत्वा स्वच्छवस्त्रेण संशोष्य तस्योपरि श्रीचक्रं चतुर्द्वारं त्रिवृत्तमष्टदलं वृत्तं षडस्रं त्रिकोणं बिन्द्वात्मकयन्त्रमष्टगन्धेन विलिख्य 'ॐ ह्रीं वज्रनखदंष्ट्रायुधाय महासिंहाय पट्' इति मन्त्रेण पुष्पाद्यासनं दत्वा पीठमध्ये संस्थाप्य प्रतिष्ठां च कृत्वा मूलेन मूर्तिं प्रकल्प्य पुनर्ध्यात्वावाहनादिपुष्पान्तैरुपचारैः सम्पूज्य देव्याज्ञाया आवरणपूजां कुर्यात् ।

इसके बाद स्वर्णादि से निर्मित यन्त्रपत्र को ताम्रपात्र में रख कर घी से उसका अभ्यङ्ग करके उसके ऊपर दूध की धारा तथा जल की धारा देकर स्वच्छ वस्त्र से सुखाकर उसके ऊपर चार द्वार वाले, तीन वृत्त वाले, आठ कमलों वाले, गोलाकार, षट्कोण, त्रिकोण, और विन्दुमय श्रीचक्र को अष्टगन्ध से लिखकर 'ॐ ह्रीं वज्रनख दंष्ट्रायुधाय महासिंहाय फट्' इस मन्त्र से पुष्पाद्यासन देकर पीठ के बीच में स्थापित करके उसमें प्राणप्रतिष्ठा करके मूलमन्त्र से मूर्ति की कल्पना करके पुनः ध्यान करके आवाहन से लेकर पुष्पांजलिदान तक उपचारों से पूजा करके देवी की आज्ञा से इस प्रकार आवरण पूजा करे :

पुष्पांजलि लेकर **"ॐ संविन्मये परे देवि परामृतरसप्रिये । अनुज्ञां देहि मे दुर्गे परिवारार्चनाय मे ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं दुं सर्वसिद्धिप्रदाय श्रीचक्राय नमः ।"** इससे पुष्पांजलि दें ।

इस प्रकार आज्ञा लेकर आवरण पूजा करें । (दुर्गायन्त्र देखिये चित्र २)

दुर्गायन्त्रं प्रवक्ष्यामि शृणुष्व ... त्रिकोणं बिन्दुयुक्तं पूर्वं नवकोण समन्वितम् ॥ ... सहितं ... समन्वितम् ... सहितं वज्र भूपुर द्वय संयुतम् ॥

आवरण पूजा :

भुपूर के भीतर पूर्वादि चारों दिशाओं में :

ॐ ह्रीं दुं गं गणेशाय[१] नमः । गणेशश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः इति सर्वत्र ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं कुमाराय[२] नमः कुमारश्रीपा० ॥ २ ॥ ॐ प्रीं पुष्पदन्ताय[३] नमः पुष्पदन्तश्रीपा० ॥ ४ ॥

इस प्रकार द्वारपालों की पूजा करके पुष्पांजलि लेकर मूलमन्त्र का उच्चारण करके "अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले । भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम्" यह पढ़कर पुष्पांजलि देकर विशेष अर्घ से जल बिन्दु डालकर "पूजितास्तर्पिताः सन्तु" यह कहे । इति प्रथमावरणम् ॥ १ ॥

इसके बाद अष्टदलों में पूज्य - पूजक के बीच पूर्व दिशा को अन्तराल मानकर तदनुसार अन्य दिशाओं की कल्पना करके पूर्व दिशा से आरम्भ कर वामावर्त क्रम से : ॐ ब्राह्मी [५]नमः ब्राह्मीश्री० ॥ १ ॥ ॐ नाराण्यै [६]नमः, नारायणीश्री० ॥ २ ॥ ॐ चामुण्डायै [७]नमः चामुण्डाश्री० ॥ ३ ॥ ॐ अपराजितायै [८]नमः अपराजिताश्री० ॥ ४ ॥ ॐ माहेश्वर्यै [९]नमः माहेश्वरीश्री० ॥ ५ ॥ ॐ कौमार्यै [१०]नमः कौमारीश्री० ॥ ६ ॥ ॐ वारह्यै [११]नमः वाराहीश्री० ॥ ७ ॥ ॐ नारसिंह्यै [१२]नमः । नारसिंहीश्री० ॥ ८ ॥ इन आठों की पूजा कर पुष्पांजलि लेकर मूल का उच्चारण करके "अभीष्टसि०" ॐ ह्रीं दुं सर्वाशापूरकाय श्रीचक्राय नमः । इस प्रकार पुष्पांजलि दे । इति द्वितीयावरणम् ॥ २ ॥

इसके बाद अष्टदलाग्रों में पूर्व दिशा से आरम्भ कर वामावर्त क्रम से : ॐ असिताङ्गभैरवाय [१३]नमः । असिताङ्गभैरवश्री० ॥ १ ॥ ॐ रुरुभैरवाय [१४]नमः । रुरुभैरवश्री० ॥ २ ॥ ॐ चण्डभैरवाय [१५]नमः । चण्डभैरवश्री० ॥ ३ ॥ ॐ क्रोधभैरवाय [१६]नमः । क्रोधभैरवश्री० ॥ ४ ॥ ॐ उन्मत्तभैरवाय [१७]नमः । उन्मत्तभैरवश्री० ॥ ५ ॥ ॐ कपालभैरवाय [१८]नमः । कपालभैरवश्री० ॥ ६ ॥ ॐ भीषणभैरवाय [१९]नमः । भीषणभैरवश्री० ॥ ७ ॥ ॐ संहारभैरवाय [२०]नमः । संहारभैरवश्रीपा० ॥ ८ ॥ इस प्रकार आठ भैरवों का पूजन करके पूर्वोक्त पुष्पांजलि दे । इति तृतीयावरणम् ॥ ३ ॥

इसके बाद नव कोण में देव्यग्निकोण से आरम्भ कर वामावर्त क्रम से :

ॐ शैलपुत्र्यै [२१]नमः शैलपुत्रीश्रीपा० ॥ १ ॥ ॐ ब्रह्मचारिण्यै [२२]नमः । ब्रह्मचारिणीश्रीपा० ॥ २ ॥ ॐ चण्डघण्टायै [२३]नमः । चण्डघण्टाश्रीपा० ॥३॥ ॐ कूष्माण्डायै [२४]नमः कूष्माण्डाश्री० ॥ ४ ॥ ॐ स्कन्दमात्रे [२५]नमः । स्कन्दमातृश्रीपा० ॥ ५ ॥ ॐ कात्यायन्यै [२६]नमः । कात्यायनीश्रीपा० ॥ ६ ॥ ॐ कालरात्र्ये [२७]नमः । कालरात्रिश्रीपा० ॥ ७ ॥ ॐ महागौर्यै [२८]नमः । महागौरीश्री० ॥ ८ ॥ सिद्धिदायै [२९]नमः (पाठान्तरेः 'देवदूत्यै नमः') सिद्धिदा श्रीपा० ॥ ९ ॥ इस प्रकार पूजा करके 'अभीष्ट' ॐ ह्रीं दुं अष्टसिद्धिदाय श्रीचक्राय नमः । इससे दूर्वादलांजलिं दे । इति चतुर्थवरणम् ॥ ४ ॥

इसके बाद वृत्त में पूर्वादिक्रम से वामावर्त्त : ॐ अम्बिकायै [३०]नमः अम्बिकाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥ १ ॥ ॐ अष्टाक्षरायै [३१]नमः अष्टाक्षराश्री० ॥ २ ॥ ॐ अष्टभुजायै [३२]नमः अष्टभुजाश्री० ॥ ३ ॥ ॐ नीलकण्ठायै [३३]नमः नीलकण्ठाश्रीपा० ॥ ४ ॥ ॐ जगदम्बिकायै [३४]नमः जगदम्बिकाश्री० ॥ ५ ॥ इससे पूजन करके पुष्पांजलि देवे । इति पञ्चमावरणम् ॥ ५ ॥

इसके बाद वृत्त में प्राचीक्रम से वामावर्त : ॐ शङ्खाय [३५]नमः ॥ १ ॥ ॐ पद्माय [३६]नमः ॥ २ ॥ ॐ खड्गाय [३६]नमः ॥ ३ ॥ ॐ बाणेभ्यो [३८]नमः ॥ ४ ॥ ॐ धनुषे [३९]नमः ॥ ५ ॥ ॐ खेटकाय

[४०]नमः ॥ ६ ॥ ॐ शूलाय [४१]नमः ॥ ७ ॥ ॐ तर्जन्यै [४२]नमः ॥ ८ ॥ इससे अस्त्रों का पूजन करके पुष्पांजलि दे । इति षष्ठावरणम् ॥ ६ ॥

इसके बाद भूपुर में पूर्वादिक्रम से : ॐ लं इन्द्राय [४३]नमः ॥ १ ॥ ॐ रं अग्नये [४४]नमः ॥ २ ॥ ॐ मं यमाय [४५]नमः ॥ ३ ॥ ॐ क्षं निर्ऋतये [४६]नमः ॥ ४ ॥ ॐ वं वरुणाय [४७]नमः ॥ ५ ॥ ॐ यं वायवे [४८]नमः ॥ ६ ॥ ॐ कुं कुबेराय [४९]नमः ॥ ७ ॥ ॐ हं ईशानाय [५०]नमः ॥ ८ ॥ ॐ आँ ब्रह्मणे [५१]नमः ॥ ९ ॥ ॐ ह्रीं अनन्ताय [५२]नमः ॥ १० ॥ उसके बाहर इन्द्रादि के समीप ॐ वं वज्राय [५३]नमः ॥१॥ॐ शं शक्तये [५४]नमः ॥ २ ॥ ॐ दं दण्डाय [५५]नमः ॥ ३ ॥ ॐ खं खड्गाय [५६]नमः ॥ ४ ॥ पां पाशाय [५७]नमः ॥ ५ ॥ ॐ अं अंकुशाय [५८]नमः ॥ ६ ॥ ॐ गं गदायै [५९]नमः ॥ ७ ॥ ॐ त्रिं त्रिशूलाय [६०]नमः ॥ ८ ॥ ॐ पं पद्माय [६१]नमः ॥ ९ ॥ ॐ चं चक्राय [६२]नमः ॥ १० ॥ इससे इन्द्रादि दश दिक्पालों तथा वज्रादि आयुधों का पूजन करके पुष्पांजलि दे । इति सप्तमावरणम् ॥ ७ ॥

इत्यावरणपूजां कृत्वा धूपादिनमस्कारान्तं सम्पूज्य षडङ्गं कृत्वा पुनर्ध्यात्वा देव्येग्रे मालामादाय जपं कुर्यात् । अस्य पुरश्चरणमष्टलक्षं व चतुर्लक्षं वा एकलक्षं वा कुर्यात् तत्तद्दशांशहोमतर्पणमार्जनब्राह्मणभोजनं च कुर्यात् । एवंकृते मन्त्रः सिद्धो भवति । सिद्धे च मन्त्रे मन्त्री प्रयोगान् साधयेत् ।

इस प्रकार आवरण पूजा करके धूपदान से लेकर नमस्कार पर्यन्त षडङ्ग पूजा करके पुनः ध्यान करके देवी के आगे माला लेकर जप करे। इसका पुरश्चरण आठ लाख, चार लाख या एक लाख करे। तत्तद्दशांश होम, तर्पण, मार्जन तथा ब्राह्मण - भोजन कराये। ऐसा करने से मन्त्र सिद्ध होता है। मन्त्र के सिद्ध हो जाने पर साधक प्रयोगों को सिद्ध करे।

तथा च महाचीनक्रमस्थानां साधकानां जयावहः ।
मन्त्रराजो महादेवि सद्यो भोगापवर्गदः ॥ १ ॥

तथा हे महादेवि ! महाचीन की परम्परा से साधना करने वालों के लिए यह मन्त्रराज शीघ्र ही जय देने वाला तथा भोग और मोक्ष देनेवाला होता है।

वर्णलक्षं पुरश्चर्यातदर्धं वा महेश्वरि ।
एकलक्षावधिं कुर्यान्नातो न्यूनं कदाचन ॥ २ ॥
यं विधाय कलौ मन्त्री भवेत्कल्पद्रुमोपमः ।
ततो मन्त्रं जपेन्नित्यं दुर्गाया अष्टसिद्धिदम् ॥ ३ ॥
यं जप्त्वा साधको भूमौ विचरेद्भैरवो यथा ।
स्तम्भनं मोहनं चैव मारणाकर्षणे ततः ॥ ४ ॥
वशीकारं तथोच्चाटं शान्तिकं पौष्टिकं तथा ।
एषां साधनमाचक्षे प्रयोगानां महेश्वरि ॥ ५ ॥
महाचीनक्रमस्थानां साधकानां हिताय च ।
अयुतं तु जपेन्मूलं श्मशाने निशि साधकः ॥ ६ ॥
हुनेद्दशांशतः सर्पिर्यवान्मांसान्मृगच्युतान् ।
स्तम्भनं जायते क्षिप्रं वादिकामिजनाम्भसाम् ॥ ७ ॥

अयुतं प्रजपेद्देवि वटे रुद्राक्षमालया ।
होमो दशांशतः कार्यो घृतपद्माक्षपङ्कजैः ॥८॥
आरग्वधैः स्वधामूलैर्मोहनं जायते क्षणात् ।
देवानां दानवानां च काकथाल्पधिया गृणाम् ॥९॥
अयुतं प्रजपेन्मूलं वने साधकसत्तमः ।
वेतीसीमूलगो वापि हुनेतत्र दशांशतः ॥१०॥
घृतपायसशम्बूकान रिपुर्मृत्युमुखं ब्रजेत ।
अत्युतं प्रजपेद्रोत्री शून्यगारे कुलेश्वरि ॥११॥
होमो दशांशतः कार्यो घृतव्योषधिजीरकै : ।
कपिबीजैरिप प्रातर्भवेदाकर्षणं स्त्रियाः ॥१२॥
अयुतं प्रजपेन्मूलं चत्वरे त्वरितं हुनेत् ।
आज्याब्जेक्षुरसाखंडरक्तापुष्पाणि पार्वति ॥१३॥
शक्रोपि वशेतामेति किं पुनः क्षुद्रभूमिपः ।
अयुतं प्रजपेन्मूलं साधकोश्वत्थमूलके ॥१४॥
हुनेदाज्यं दशांशेन केशान् स्त्रीणां त्वचः कणान् ।
रिपुमुच्चाटयेच्छीघ्रं यदि शक्रसमो भवेत् ॥१५॥
अयुंत प्रजपेन्मूलं सुरद्रुमतले हुनेत् ।
घृताण्डकुक्कुटाङ्गानि नानापुष्पाणि पृच्छकः ॥१६॥
रोगोपद्रवकालस्य सद्यः शांतिर्भविष्यति ।
अयुतं प्रजपेन्मूलं लीलोपवनमण्डले ॥१७॥
होमो दशांशतः कार्यो घृतमीनाज्यमस्तकैः ।
पादैरष्ठभिरीशानि सद्यः पुष्टिः प्रजायते ॥१८॥

हे महेश्वरि ! मन्त्र में जितने वर्ण हैं उतने लाख या उससे आधा पुरश्चरण करे। कमसे कम एक लाख पुरश्चरण करे। इससे कम पुरश्चरण कभी न करे। इस पुरश्चरण को करके साधक कलियुग में कल्पद्रुम के समान हो जाता है। इसलिए दुर्गा के मन्त्र का जप अवश्य करे जो आठो सिद्धियों को देने वाला है। इसका जप करके साधक पृथिवी पर भैरव के समान विचरता है। हे महेश्वरी ! स्तम्भन, मोहन, मारण, आकर्षण, वशीकरण, उच्चाटन, शांतिकरण तथा पुष्टिकरण और इनके प्रयोगों के साधन को मै कहूंगा। महाचीन की परम्परा से साधना करने वालें के हित के लिए रात्रि में मूलमंत्र का दश हजार जप साधक को करना चाहिए। इसका दशांश घी, जव, तथा हिरण के मांस का हवन करना चाहिये। इससे शीघ्र वादी, जन, कामी जन तथा पानी का स्तम्भन होता है। हे देवि ! वट के नीचे रुद्राक्षमाला से दश हजार जप करे। उसका दशांश घी तथा पद्माख और कमलों से होम करे। आरग्वंध तथा स्वधा के मूल से क्षणभर में देव और दानवों का मोहन हो जाता है तब स्वल्पबुद्धि वाले मनुष्यों की क्या कथा ? साधक वन में वेतसी के मूल में दश हजार जप करे तथा वहाँ उसका दशांश, घी, खीर, घोंघा, से होम करे तो शत्रु मृत्यु के मुख में चला जाता है। हे कुलेश्व.रि ! सूने घर में रात में दश हजार जप करे तथा करे तया उसका दशांश घी, सोंठ, जीरा तथा केवाँच के बीजों से होम करे तो प्रायः स्त्री का आकर्षण

होता है। हे पार्वती ! चबूतरे पर दश हजार जप करे और तुरन्त घी, कमल, गन्ने के रस, शक्कर तथा लाल फूलों से होम करे तो इन्द्र भी वश में हो जाता है, साधारण राजा का क्या कहना। पीपल के नीचे दश हजार जप करे तथा दशांश से स्त्रियों के केश तथा चमड़े के टुकड़ों से होम करे तो शीघ्र ही शत्रु का उच्चाटन होता है चाहे वह इन्द्र के ही समान क्यों न हो। प्रश्नकर्त्ता देववृक्ष के नीचे दश हजार जप करे तथा घी, मुर्गे का अण्डा, नाना प्रकार के फूलों का होम करे तो रोग तथा उपद्रवकाल की शीघ्र शांति होती है। लीला उपवन में मूल मन्त्र का दश हजार जप करे तथा दशांश घी, मछली, बकरे के सिर में होम करे तो हे ईशानि ! आठ चरणों में शीघ्र पुष्टि होती है।

(शारदातिलके) राजा विजयते शत्रुन् साधको विजयश्रियम् ।
प्राप्नोति रोगी दीर्घायुः सर्वव्याधिविवर्जितः ॥१९॥
वंध्याभिषिक्ता विधिना लभते तनयं वरन् ।
मन्त्रेणादेन सञ्जातमाज्यं क्षुद्रज्वरापहम् ॥२०॥
गर्भिणीनां विशेषेण जप्तं भस्मादिकं ततः ॥२१॥
इति श्रीदेवीरहस्यतंत्रोक्तश्रीदुर्गाष्टिाक्षरमन्त्रप्रयोगः ।

शारदातिलक में कहा गया है : राजा शत्रु पर विजय प्राप्त कर लेता है। साधक विजय और लक्ष्मी को पा जाता है। रोगी दीर्घायुष्य पाता है और वह सभी व्याधियों से रहित हो जाता है। वन्ध्या स्त्री भी विधिपूर्वक अभिषिक्त होने पर पुत्र को प्राप्त करती है। इस मन्त्र से अभिमंत्रित घी क्षुद्र ज्वर का नाशक होता है। गर्भिणी स्त्रियों के लिए विशेष रूप से इन मन्त्र से अभिमंत्रित भस्म आदि रोगवाधा-नाशक होता है। इति श्री देवीरहस्य तन्त्रोक्त दुर्गा अष्टाक्षर मन्त्र प्रयोग समाप्त ।

अथ श्रीचण्डिकामालामन्त्रप्रयोगः ।

(उक्तं चाथर्वणागमसंहितायाम्) मंत्रो यथा ।

ॐ ह्रः ॐ सौं ॐ ह्रौं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीर्जयजय चण्डिका चामुण्डे चण्डिके त्रिदशमुकुटकोटिसंघट्टितचरणारविन्दे गायत्रि सावित्रि सरस्वति अहिकृताभरणे भैरवरूपधारिणि प्रकटितदंष्ट्रोग्रवदने घोराननयनने ज्वलज्ज्वालासहस्रपरिवृते महाट्टहासधवलीकृत दिगन्तरे सर्वयुगपरिपूर्णे कपालहस्ते गजजिनोत्तरीयभूतवेतालपरिवृते अकम्पितधाराधरे मधुकैटभमहिणसुर। धूम्रलोचनचण्डमुण्डरक्तबीजशुम्भनिशुम्भदैत्यनिकृन्ते महामाये शिवे नित्ये ॐ ऐं ह्रीं ऐन्द्रिआग्नेयि याम्ये नैर्ऋति वरूणि वायवि कौबेरिऐशानि ब्रह्मविष्णुशिवस्थिते त्रिभुवनधराधरे वामे ज्येष्ठे रौद्रि अम्बिके ब्राह्मी माहेश्वरी कौमारी वैष्णवी वाराहींद्राणी ईशानी महालक्ष्मीः इति स्थिते महोग्रविषमहाविषोरगफणामणिमुकुटरत्नमहाज्वालामलमणिमहाहिहारबाहुकहोत्तमांगनवरत्ननिधि कोटितत्त्वबाहुजिह्वावाणीशब्दस्पर्श रूपरसगन्धात्मिके क्षितिसाहसमध्यस्थिते महोज्ज्वल-महाविषोपविषगन्धर्वविद्याधराधिपते ॐ ऐंकारा ॐ ह्रींकारा ॐ क्लींकाराहस्ते ॐ आँ ह्रींक्रीं अनग्नेनग्नेपाते प्रवेशय २ ॐ द्राँ द्रीं शोषय २ ॐ द्राँ द्रीं मोहय २ ॐ क्लौं क्लीं दीपय२ ॐ ब्लूं ब्लूं सन्तापय२ ॐ सौं सौं उन्मादय२ ॐ म्लैंम्लैंमोहय२ ॐ खां खां शोधय २ ॐ द्यां द्यां उन्मादय २ ॐ ह्रीं ह्रीं आवेशय २ ॐ स्त्रीं स्त्रीं उच्छादय २ ॐ स्त्रीं स्त्रीं आकर्षय २ ॐ हुं हुं आस्फोटय २ ॐ त्रूं त्रूं त्रोटय २ ॐ छां छां छेदय २ ॐ कूं कूं उच्चाटय २ ॐ हूं हूं हन२ ॐ ह्मां ह्मां मारय २ ॐ घ्रीं घ्रीं घर्षय २ ॐ स्वीं स्वीं विध्वंसय २ॐ प्लूं प्लूं प्लावय २ ॐ भ्रां भ्रां भ्रामय २ ॐ म्रां स्रां दर्शय २ ॐ दां दां दिशांबन्धय २ ॐ दीं दीं वर्तिनामेकाग्रचित्ताविशिकुरुतेह्नये

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः ॐ फ्रां फ्रीं फ्रूं फ्रैं फ्रौं फ्रः ॐ चामुण्डायैविजच्चे स्वाहा मम सकलमनोरथं देहि सर्वोपद्रवं निवारय २ अमुकं वशे कुरु २ भूतप्रेतपिशाच ब्रह्मपिशाच ब्रह्मराक्षसयक्षयमदूतशाकिनीडाकिनीसर्वश्वापदतस्करादिकं नाशय २ मारय २ भञ्जय २ ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं स्वाहा। इति मालामन्त्रः।

अस्य विधानम्।

विनियोगः ॐ अस्य श्रीचण्डिकामालामन्त्रस्य मार्कण्डेय ऋषिः। अनुष्टुप् छन्दः। श्रीचण्डिका देवता। ॐ ह्रः बीजम्। ॐ सौं शक्तिः। ॐ कीलकम्। मम श्रीचण्डिकाप्रसादसिद्ध्यर्थं सकलजनवश्यार्थं श्रीचण्डिकामालामन्त्रजपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यासः ॐ मार्कण्डेयऋषये नमः शिरसि ॥१॥ ॐ अनुष्टुप्छन्दसे नमः मुखे ॥२॥ ॐ श्रीचण्डिकादेवतायै नमः हृदि ॥३॥ ॐ ह्रः बीजाय नमः गुह्ये ॥४॥ ॐ सौं शक्तये नमः पादयोः ॥५॥ ॐ ह्रौं कीलकाय नमः नाभौ ॥६॥ ॐ विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ॥७॥ इति ऋष्यादिन्यासः।

करन्यासः ॐ ह्रां फां अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥१॥ ॐ ह्रीं फीं तर्जनीभ्यां नमः ॥२॥ ॐ ह्रूं फूं मध्यमाभ्यां नमः ॥३॥ ॐ ह्रैं फैं अनामिकाभ्यां नमः ॥४॥ ॐ ह्रौं फौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥५॥ ॐ ह्रः फः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥६॥ इति करन्यासः।

हृदयादिषडङ्गन्यासः ॐ ह्रां फां हृदयाय नमः ॥१॥ ॐ ह्रीं फीं शिरसे स्वाहा ॥२॥ ॐ ह्रूं फूं शिखायै वषट् ॥३॥ ॐ ह्रैं फैं कवचाय हुँ ॥४॥ ॐ ह्रौं फौं नेत्रत्रयाय वौषट् ॥५॥ ॐ ह्रः फः अस्त्राय फट् ॥६॥ इति हृदयादिषडङ्गन्यासः।

एवं न्यासं कृत्वा ध्यायेत्।

अथ ध्यानम्।

ॐ कल्याणीं कमलासनस्थशुभदां गौरीं घनश्यामलाभाविर्भावित भूषणामभयदामार्द्रैकरक्षैः शुभैः। श्रीं ह्रीं क्लीं वरमन्त्रराजसहितामानन्दपूर्णात्मिकां श्रीशैले भ्रमराम्बिकां शिवयुतां चिन्मात्रमूर्तिं भजे ॥१॥

इति ध्यात्वा मानसोपचारैः सम्पूज्य सुवासिन्याः कुमार्याः पूजांकृत्वा पश्चाज्जपं कुर्यात्। अस्य पुरश्चरणं नित्यमेकविंशत्यधिकशतम् ॥१२१॥ जपेन स्त्री वा पुरुषो वश्यो भवति। तथा च। एकविंशत्यधिकशतजाप्येन वशमानयेत्। स्त्री वापि पुरुषो वापि सत्यं सत्यं न संशयः ॥१॥ राजद्वारे श्मशाने च विवादे शत्रुसंकटे। शत्रोरुच्चाटने चैव सर्वकार्याणि साधयेत्। इत्यथर्वणागमसंहितोक्तश्रीचण्डिकामालामन्त्रविधानम्।

इस प्रकार ध्यान करके मानसोपचारों से पूजन करे और सुवासिनी कुमारी की पूजा करने के बाद जप करे। इसका पुरश्चरण प्रतिदिन एक सौ इक्कीस होता है, इसके जप से स्त्री या पुरुष वश में होते हैं। यह सत्य है यह सत्य है, इसमें कोई संशय नहीं है। राजद्वार में या श्मशान में, विवाद में या शत्रुसंकट में तथा शत्रु के उच्चाटन में यह सब कार्यों को सिद्ध करता है।

इति अथर्वणागमसंहितोक्त चण्डिकामालामन्त्र विधान।

अथ नवार्णमन्त्रप्रयोगः ।

ऋषिरुवाच :

परिपृच्छसि राजेन्द्र चण्डिकापूजनादि यत् ।
तदहं ते प्रवक्ष्यामि यथावदनुपूर्वशः ॥१॥
त्रैलोक्यडामरं मन्त्रं शृणु भूप नवाक्षरम् ।
येन विज्ञानमात्रेण परामैश्वर्यवान् भवेत् ॥२॥
अनेनास्य सिद्धादिविचारो नास्तीति सूतकम् ।

ऋषि बोले : हे राजन ! जो तुम चण्डिका पूजनादि पूछ रहे हो उसे मैं तुम्हें क्रमशः बतला रहा हूँ। यह त्रैलोक्य डामर मन्त्र नव अक्षर का है जिसे तुम सुनो। इसके विज्ञानमात्र से मनुष्य परमैश्वर्यवान् हो जाता है। न तो इसमें कोई सिद्धादि का विचार है और न कोई सूतक।

मन्त्र इस प्रकार है :

"ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे" इति नवाक्षरो मन्त्रः। (ऐं बीजमादीन्दुसमानदीप्तिं ह्रीं सूर्यतेजोद्यतिमद्वितीयम् । क्लीं मूर्तिवैश्वानरतुल्यरूपं तृतीयमानंत्यसुखाय चिंत्यम् । विशुद्धजाम्बूनदकान्ति तुर्यं मुं पश्चमं रक्ततरं प्रकल्प्य। डाषष्ठमुग्रार्तिहरं सुनीलं यै सप्तमं कृष्णतरं रिपुघ्नम्। वि पांडुरं चाष्टममादिसिद्धिं च्चे धूम्रवर्णं नवमं विशालम्। ह्येतानि बीजानि नवात्मकस्य जप्तुः प्रदद्युः सकलार्थसिद्धिम्। इति मन्त्रोद्धारः।)

अस्य विधानम् ।

विनियोग : ॐ अस्य श्रीनवार्णमन्त्रस्य ब्रह्मविष्णुमहेश्वरा ऋषयः । गायत्र्युष्णिगनुष्टभश्छन्दांसि । महाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वत्यो देवताः । नन्दजाशाकम्भरीभीमाः शक्तयः । रक्तदन्तिकादुर्गाभ्रामर्यो बीजानि । ह्रीं कीलकम् । अग्निर्वायुस्सूर्यस्तत्त्वानि । कार्यनिर्देशे जपे विनियोगः ।

ऋष्यादिन्यास : ॐ ब्रह्मविष्णुमहेश्वरऋषिभ्यो नमः शिरसि ॥ १ ॥ गायत्र्युष्णिगनुष्टुप्छन्दोभ्यो नमः मुखे ॥ २ ॥ महाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीदेवताभ्यो नमः हृदि ॥ ३ ॥ नन्दजाशाकाम्भरीभीमाशक्तिभ्यो नमः दक्षिणस्तने ॥ ४ ॥ रक्तदन्तिकादुर्गाभ्रांमरीबीजेभ्यो नमः वामस्तने ॥ ५ ॥ ह्रीं कीलकाय नमः नाभौ ॥ ६ ॥ अग्निवायुसूर्यतत्त्वेभ्यो नमः हृदि ॥ ७ ॥ विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ॥ ८ ॥ इति ऋष्यादिन्यासः ।

इस प्रकार ऋष्यादिन्यास करने के पश्चात् एकादश न्यास इस प्रकार करे :

मातृकान्यास (१) : ॐ ऐं अं आं कं खं गं घं ङं इं ईं हृदयाय नमः ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं उं ऊं चं छं जं झं ञं ऋं ॠं शिरसे स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ क्लीं लृं टं ठं डं ढं णं ॡं शिखायै वषट् ॥ ३ ॥ ॐ चामुण्डा एं तं थं दं धं नं ऐं कवचायहुं ॥ ४ ॥ ॐ यैं ओं पं फं बं भं मं औं नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ५ ॥ ॐ विच्चे अं यं रं लं वं शं षं सं हं लं क्षं अः अस्त्राय फट् । इति मातृकान्यासः प्रथमः । (पूर्वाक्त मार्ग से इस प्रथम मातृकान्यास को करने से मनुष्य देवतासारूप्य प्राप्त करता है ।)

सारस्वतन्यास (२) : ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नमः कनिष्ठयोः ॥ १ ॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नमः अनामिकयोः ॥ २ ॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नमः मध्यमयोः ॥ ३ ॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं तर्जन्योः ॥ ४ ॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं अंगुष्ठयोः ॥ ५ ॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नमः करतलकरपृष्ठयोः ॥ ६ ॥ ॐ ऐं क्लीं नमः पृष्ठे ॥ ७ ॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नमः मणिबन्धे ॥ ८ ॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नमः कूर्परे ॥ ९ ॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नमः हृदये ॥ १० ॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नमः शिरसि ॥ ११ ॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नमः शिखायाम् ॥ १२ ॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नमः कवचे ॥ १३ ॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नमः नेत्रत्रये ॥ १४ ॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नमः अस्त्रे ॥ १५ ॥

इति सारस्वतन्यासो द्वितीयः (यह सारस्वत न्यास करने से जाड़ता नष्ट होती है) ॥ २ ॥

मातृगणन्यास (३) : ॐ ह्रीं ब्राह्मी पूर्वतो मां पातु ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं माहेश्वरी आग्नेये मां पातु ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं कौमारी दक्षिणे मां पातु ॥ ३ ॥ ॐ ह्रीं वैष्वणी नैर्ऋत्ये मां पातु ॥ ४ ॥ ॐ ह्रीं वाराही पश्चिमे मां पातु ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीं इन्द्राणी वायव्ये मां पातु ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं चामुण्डा उत्तरे मां पातु ॥ ७ ॥ ॐ ह्रीं महालक्ष्मीः ऐशान्ये मां पातु ॥ ८ ॥ ॐ ह्रीं व्योमेश्वरी ऊर्ध्वं मां पातु ॥ ९ ॥ ॐ ह्रीं सप्तद्वीपेश्वरी भूमौ मां पातु ॥ १० ॥ ॐ ह्रीं कामेश्वरी पाताले मां पातु ॥ ११ ॥ इति मातृगणन्यासस्तृतीयः (इस न्यास को करने से साधक त्रैलोक्य विजयी होता है) ॥ ३ ॥

नन्दजादिन्यास (४) : ॐ नन्दजायै कमलांकुशमण्डितायै नमः पूर्वाङ्गे मां पातु ॥ १ ॥ ॐ रक्त दन्तिकायै खड्गपात्रहस्तायै नमः दक्षिणांगे मां पातु ॥ २ ॥ ॐ शाकम्भर्यै पुष्पपल्लवसंयुतायै नमः मां पातु ॥ ३ ॥ ॐ दुर्गायै धनुर्बाणहस्तायै नमः वामांगे मां पातु ॥ ४ ॥ ॐ भीमायै शिरःपात्रकरायै नमः मस्तकादिचरणान्तं मां पातु ॥ ५ ॥ ॐ भ्रामर्यै चित्रकांत्यै नमः पादादिमस्तकांतं मां पातु ॥ ६ ॥ इति नन्दजादिन्यासश्चतुर्थः (यह चतुर्थ न्यास मनुष्य को जरामृत्यु से रहित करता है) ॥ ४ ॥

ब्रह्माख्यान्यास (५) : ॐ ब्रह्मणे नमः पादादिनाभिपर्यन्तं सदा मां पातु ॥ १ ॥ ॐ जनार्द्दनाय नमः नाभेः विशुद्धिपर्यन्तं मां पातु नित्यम् ॥ २ ॥ ॐ रुद्राय त्रिलोचनाय नमः विशुद्धेर्ब्रह्मरन्ध्रान्तं सदा मां पातु ॥ ३ ॥ ॐ हंसाय नमः पादयोः मां पातु ॥ ४ ॥ ॐ गरुडाय नमः करयोः मां पातु ॥ ५ ॥ ॐ वृषभाय नमः नेत्रयोः मां पातु ॥ ६ ॥ ॐ गजाननाय नमः सर्वाङ्गे मां पातु ॥ ७ ॥ ॐ आनन्दमयपरमात्मने नमः परापरदेहभागे मां पातु ॥ ८ ॥ इति ब्रह्माख्यन्यासः पञ्चमः (इस पांचवे न्यास को करने से सर्वकामनायें पूर्ण होती हैं) ॥ ५ ॥

महालक्ष्म्यादिन्यास (६) : ॐ महालक्ष्म्यै अष्टादशभुजायै नमः मध्ये मां पातु ॥ १ ॥ ॐ सरस्वत्यै अष्टादशभुजायै नमः ऊर्ध्वं मां पातु ॥ २ ॥ ॐ महाकाल्यै दशभुजायै नमः अधः मां पातु ॥ ३ ॥ ॐ सिंहाय नमः हस्तयोः मां पातु ॥ ४ ॥ ॐ हंसाय नमः नेत्रयोः मां पातु ॥ ५ ॥ ॐ यमाय महिषवाहनाय नमः पादयोः मां पातु ॥ ६ ॥ ॐ महेशचण्डिकाभ्यां नमः सर्वाङ्गे मां पातु ॥ ७ ॥ ॐ महेशचण्डिकाभ्यां नमः पृष्ठे मां पातु ॥ ८ ॥ इति महालक्ष्म्यादिन्यासः षष्ठः (इस षष्ठन्यास से सद्‌गति प्राप्त होती है) ॥ ६ ॥

मन्त्रवर्णन्यास (७) : ॐ ऐं नमः ब्रह्मरन्ध्रे ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं नमः दक्षिणनेत्रे ॥ २ ॥ ॐ क्लीं नमः वामनेत्रे ॥ ३ ॥ ॐ चां नमः दक्षिणकर्णे ॥ ४ ।. ॐ मुं नमः वामकर्णे ॥ ५ ॥ ॐ डां नमः

दक्षिणनासापुटे ॥ ६ ॥ ॐ यैं नमः वामनासापुटे ॥ ७ ॥ ॐ विं नमः मुखे ॥ ८ ॥ ॐ च्चें नमः पायौ ॥ ९ ॥ इति मन्त्रवर्णन्यासः सप्तमः (सातवें न्यास से शीघ्र ही रोगों का क्षय होता है) ॥ ७ ॥

देवीन्यास (८) : ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायैविच्चे पादादि ब्रह्मरन्ध्रान्तम् । इत्यष्टवारं न्यसेत् । इति देवीन्यासोऽष्टमः (इस आठवें न्यास को करने से सभी दुःख नष्ट हो जाते हैं) ॥ ८ ॥

मन्त्रव्यापकन्यास (९) : ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे नमः मस्तकादिपादान्तम् । इत्यष्टवारं न्यसेत् ॥ १ ॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायैविच्चे नमः पादादिमस्तकान्तम् । इत्यष्टवारं न्यसेत् ॥२॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायैविच्चे नमः पूर्वे । इत्यष्टवारं न्यसेत् ॥ ३ ॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायैविच्चे नमः दक्षभागे । इत्यष्टवारं न्यसेत् ॥ ४ ॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायैविच्चे नमः पृष्ठे । इत्यष्टवारं न्यसेत् ॥ ५ ॥ इति मन्त्रव्यापको न्यासो नवमः (मूलमन्त्रकृत इस नवें न्यास से देवता की प्राप्ति होती है) ॥ ९ ॥

षडङ्गन्यास (१०) : ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायैविच्चे हृदयाय नमः ॥ १ ॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायैविच्चे शिरसे स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे शिखायै वषट् ॥ ३ ॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायैविच्चे कवचाय हुं ॥ ४ ॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायैविच्चे नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ५ ॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायैविच्चे अस्त्राय फट् ॥ ६ ॥ इति षडङ्गन्यासो दशमः (इस दसवें न्यास को करने से त्रैलोक्य वशीभूत होता है) ॥ १० ॥

एकादशन्यास : ॐ ऐं खड्गिनी शूलिनी घोरा गदिनी चक्रिणी तथा । शङ्खिनी चापिनी बाणभुशुण्डीपरिघायुधा ॥ १ ॥ सौम्यासौम्यतराशेषसौम्येभ्यस्त्वतिसुन्दरी । परा पराणां परमा त्वमेव परमेश्वरी ॥ २ ॥ यच्च किंचित्क्वचिद्वस्त सदसद्वाखिलात्मिके । तस्य सर्वस्य या शक्तिः सा त्वं किं स्तूयसे तदा ॥ ३ ॥ यया त्वया जगत्स्रष्टा जगत्पात्यत्तियो जगत् । सोपि निद्रावशं नीतः कस्त्वां स्तोतु मिहेश्वरः ॥ ४ ॥ विष्णुः शरीरग्रहणमहमीशान एव च । कारितास्ते यतोतस्त्वां कस्तोतुं शक्तिमान्भवेत् ॥ ५ ॥ इति सर्वाङ्गे न्यसेत् ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं शूलेन पाहि नो देवि पाहि खड्गेन चाम्बिके । घण्टास्वनेन नः पाहि चापज्यानिस्वनेन च ॥ १ ॥ प्राच्यां रक्ष प्रतीच्यां च चण्डिके रक्ष दक्षिणे । भ्रामणेनात्मशूलस्य उत्तरस्यां तथेश्वरि ॥ २ ॥ सौम्यानि यानि रूपाणि त्रैलोक्ये विचरन्ति ते । यानि चात्यन्तघोराणि तैरक्षास्मास्तथा भुवम् ॥ ३ ॥ खडशूलगदादीनि यानि चास्त्राणि तेम्बिके । करपल्लवसङ्गीनि तैरस्मान् रक्ष सर्वतः ॥ ४ ॥ इति सर्वतो न्यसेत् ॥ २ ॥ ॐ क्लीं सर्वस्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्तिसमन्विते । भयेभ्यस्त्राहि नो देवि नारायणि नमोस्तु ते ॥ १ ॥ एतत्ते वदनं सौम्यं लोचनत्रयभूषितम् । पातु नः सर्वभूतेभ्यः कात्यायनि नमोस्तु ते ॥ २ ॥ ज्वालाकरालमत्युग्रमशेषासुरसूदनम् । त्रिशूलं पातु नो भीतेर्भद्रकाली नमोस्तु ते ॥ ३ ॥ हिनस्ति दैत्यतेजांसि स्वनेनापूर्य या जगत् । सा घण्टा पातु नो देवि पापेभ्योऽनः सुतानिव ॥ ४ ॥ असुरासृग्वसापङ्कचर्चितस्ते करोज्ज्वलः । शुभाय खड्गो भवतु चण्डिके त्वां नता वयम् ॥ ५ ॥ इति स्तनयोः ॥ ३ ॥ इत्येकादशो न्यासः ॥ ११ ॥

इस प्रकार एकादश न्यास करने के पश्चात् षडङ्गन्यास करें ।

षडङ्गन्यास : ॐ ऐं हृदयाय नमः ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ क्लीं शिखायै वषट् ॥ ३ ॥ ॐ चामुण्डायै कवचाय हूं ॥ ४ ॥ ॐ विच्चे नेत्रत्राय वौषट् ॥ ५ ॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे अस्त्राय फट् ॥ ६ ॥ इति षडङ्गन्यासः ।

मन्त्रवर्णन्यासः ॐ ऐं नमः शिखायाम् ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं नमः दक्षिणनेत्रे ॥ २ ॥ ॐ क्लीं नमः वामनेत्रे ॥ ३ ॥ ॐ चां नमः दक्षिणकर्णे ॥ ४ ॥ ॐ मुं नमः वामकर्णे ॥ ५ ॥ ॐ डां नमः दक्षिणनासापुटे ॥ ६ ॥ ॐ यैं नमः वामनासापुटे ॥ ७ ॥ ॐ विं नमः वक्त्रे ॥ ८ ॥ ॐ च्चें नमः गुदे ॥ ९ ॥ इति मन्त्रवर्णन्यासः । ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे पादादिमूर्धांतम् इति व्यापकम् अष्टवारंन्यसेत् ।

इस प्रकार न्यास करके त्रिरूपा महाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वती का ध्यान करें ।

अथ ध्यानम् :

"खड्ग चक्रगदेषुचापपरिघाञ्शूलं भुशुण्डीं शिरः शङ्खं सन्दधतीं करैस्त्रिनयनां सर्वाङ्गभूषावृत्ताम् । यांमस्तौत्स्वपिते हरौ कमलजो हन्तुं मधुं कैटभं नीलाश्मद्युतिमास्यपाददशकां सेवे महाकालिकाम् ॥ १ ॥ अक्षस्रक्परशू गदेषुकुलिशं पद्मं धनुष्कुण्डिकां दण्डं शक्तिमसिं च चर्मजलजं घण्टां सुराभाजनम् । शूलं पाशसुदर्शने च दधतीं हस्तैः प्रवालप्रभां सेवे सैरिभमर्दिनीमिह महालक्ष्मीं सरोजस्थिताम् ॥ २ ॥ घण्टाशूलहलानि शङ्खमुसले चक्रं धनुः सायकं हस्ताब्जैर्दधतीं धनान्तविलसच्छीतांशुतुल्यप्रभाम् । गौरीदेहसमुद्भवां त्रिजगतामाधारभूतां महापूर्वामत्र सरस्वतीः मनु भजे शुम्भादिदैत्यार्दिनीम् ॥ ३ ॥

इति ध्यात्वा मानसोपचारैः पूजयेत् ततः पीठादौ रचिते सर्वतोभद्रमण्डले पीठपूजां कृत्वा मण्डूकादिपीठदेवताः पद्धतिमार्गेण संस्थाप्य नवपीठशक्तिः पूजयेत् । तद्यथा ।

इससे ध्यान करके मानसोपचार से पूजा करे । इसके बाद पीठादि पर रचित सर्वतोभद्रमण्डल में पीठपूजा करके मण्डूकादि पीठदेवताओं को पद्धतिमार्ग से स्थापित करके नवपीठ शक्तियों की पूजा करें । तद्यथा ।

पूर्वादिक्रमसे : ॐ जयायै नमः ॥ १ ॥ ॐ विजयायै नमः ॥ २ ॥ ॐ अजितायै नमः ॥ ३ ॥ ॐ अपराजितायै नमः ॥ ४ ॥ ॐ नित्यायै नमः ॥ ५ ॥ ॐ विलासिन्यै नमः ॥ ६ ॥ ॐ दोग्ध्र्यै नमः ॥ ७ ॥ ॐ अघोरायै नमः ॥ ८ ॥ ॐ मङ्गलायै नमः ॥ ९ ॥

इति नव पीठशक्तिः पूजयेत् ततः स्वर्णादिपत्रं ताम्रपात्रे निधाय घृतेनाभ्यज्य तदुपरि दुग्धधारां जलधारां च दत्त्वा स्वच्छवस्त्रेण संशोष्य तस्योपरि त्रिकोणषट्कोणाष्टदलचतुर्विंशतिदलं तस्योपरि चतुःषष्टिदलं च देव्यष्टगन्धेन लिखित्वा तस्योपरि चतुर्द्वारात्मकं भूपुरं विलिख्य,

अर्थात् :

इससे नव पीठशक्तियों की पूजा करें । इसके बाद स्वर्णादि पत्र को ताम्रपात्र में रखकर घी से उसका अभ्यङ्ग करके उसपर दुग्धधारा तथा जलधारा डालकर स्वच्छ वस्त्र से उसे सुखाकर उसपर त्रिकोण, षटकोण, अष्टदल, चतुर्विंशति दल और उसके ऊपर चौसठ दल को देवी के अष्टगंध से लिखकर उसपर चार द्वार वाले भूपुर को लिखकर "ॐ ह्रीं वज्रनखदंष्ट्रायुधाय महासिंहाय फट्" इस मन्त्र से पुष्पाद्यासन देकर पीठ के बीच उसे स्थापित कर उसमें प्राणप्रतिष्ठा करके पुनः ध्यान करके पद्धतिमार्गानुसार पुष्पांजलिप्रदान - पर्यंत उपचारों से पूजा करके पुष्पांजलि लेकर "संविन्मये परे देवि परामृतरसप्रिये । अनुज्ञां देहि मे दुर्गे परिवारार्चनाय मे ॥ १ ॥ इसे पढ़कर और पुष्पांजलि देकर देवी की आज्ञा लेकर आवरण पूजा करे । देखिये चित्र ३ : दुर्गानवार्ण मन्त्रयन्त्रम् ।

आवरण पूजा :

त्रिकोण के पूर्व कोण में : ॐ ब्रह्मसरस्वतीभ्यां नमः[1] । ब्रह्मसरस्वतीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः । इति सर्वत्र ॥ १ ॥ नैर्ऋत्यकोण में : ॐ विष्णुलक्ष्मीभ्यां नमः[2] । विष्णुलक्ष्मीश्रीपा० ॥ ३ ॥ इस प्रकार पूजन करके पुष्पांजलि लेकर "अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले । भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम्" ॥ १ ॥ इसे पढ़कर और पुष्पांजलि देकर " पूजितास्तर्पिताः सन्तु यह कहे । इति प्रथमावरणम् ॥ १ ॥

देवी के उत्तर में : ॐ हिंसाय नमः[4] ॥ १ ॥ देवी के दक्षिण में : ॐ महिषाय नमः[5] ॥ ५ ॥ इस प्रकार पूजन करके पुष्पांजलि दे । इति द्वितीयावरणम् ॥ २ ॥

इसके बाद पूज्य और पूजक के बीच पूर्व दिशा को अन्तराल मानकर तदनुसार अन्य दिशाओं की कल्पना करके प्राचीक्रम से वामावर्त षट्कोण केसरों में : ॐ नन्दजायै नमः६ । नन्दजाश्रीपा० ॥ १ ॥ रक्तदन्तायै नमः७ । रक्तदन्ताश्रीपा० ॥ २ ॥ ॐ शाकंभर्यै नमः८ । शाकंभरीश्री० ॥ ३ ॥ ॐ दुर्गायै नमः९ । दुर्गाश्रीपा० ॥ ४ ॥ ॐ भीमायै नमः१० । भीमाश्रीपा० ॥ ५ ॥ ॐ भ्रामर्यै नमः११ । भ्रामरीश्रीपा० ॥ ६ ॥ इस प्रकार पूजा करके पुष्पांजलि दे । इति तृतीयावरणम् ॥ ३ ॥

अष्टदल में प्राची क्रम से : ॐ ब्राह्मयै नमः[12] । ब्राह्मीश्रीपा० ॥ १ ॥ ॐ माहेश्वर्यै नमः[13] । माहेश्वरीश्रीपा० ॥ २ ॥ ॐ कौमार्यै नमः[14] । कौमारीश्रीपा० ॥ ३ ॥ ॐ वैष्णव्यै नमः[15] । वैष्णवीश्रीपा० ॥४॥ ॐ वाराह्यै नमः [16]। वाराहीश्रीपा० ॥५॥ ॐ नारसिंह्यै नमः [17]। नारसिंहीश्रीपा० ॥ ६ ॥ ॐ ऐंद्र्यै नमः[18] । ऐंद्रीश्रीपा० ॥ ७ ॥ ॐ चामुण्डायै नमः[19] । चामुण्डाश्रीपा० ॥ ८ ॥ इस प्रकार पूजन करके पुष्पांजलि दे । इति चतुर्थावरणम् ॥ ४ ॥

चौबीस पत्रों में प्राची क्रम से : ॐ विष्णुमायायै नमः[20] । विष्णुमायाश्रीपा० ॥ १ ॥ ॐ चेतनायै नमः[21] । चेतनाश्रीपा० ॥ २ ॥ ॐ बुद्ध्यैनमः[22] । बुद्धिश्रीपा० ॥ ३ ॥ ॐ निद्रायै नमः[23] । निद्राश्रीपा० ॥ ४ ॥ ॐ क्षुधायै नमः[24] । क्षुधाश्रीपा० ॥ ५ ॥ ॐ छायायै नमः[25] । छायाश्रीपा० ॥ ६ ॥ ॐ शक्त्यै नमः[26] । शक्तिश्रीपा० ॥ ७ ॥ ॐ परायै नमः[27] । पराश्रीपा० ॥ ८ ॥ ॐ तृष्णायै नमः[28] । तृष्णाश्रीपा० ॥ ९ ॥ ॐ क्षांत्यै नमः[29] । क्षांतिश्रीपा० ॥ १० ॥ ॐ जात्यै नमः[30] । जातिश्रीपा० ॥ ११ ॥ ॐ लज्जायै नमः[31] । लज्जाश्रीपा० ॥ १२ ॥ ॐ शांत्यै नमः[32] । शान्तिश्रीपा० ॥ १३ ॥ ॐ श्रद्धायै नमः[33] । श्रद्धाश्रीपा० ॥ १४ ॥ ॐ कीर्त्यै नमः[34] । कीर्तिश्रीपा० ॥ १५ ॥ ॐ लक्ष्म्यै नमः[35] । लक्ष्मीश्रीपा० ॥ १६ ॥ ॐ धृत्यै नमः[36] । धृतिश्रीपा० ॥ १७ ॥ ॐ वृत्त्यै नमः[37] । वृत्तिश्रीपा० ॥ १८ ॥ ॐ श्रुत्यै नमः[38] । श्रुतिश्रीपा० ॥ १९ ॥ ॐ स्मृत्यै नमः[39] । स्मृतिश्रीपा० ॥ २० ॥ ॐ दयायै नमः[40] । दयाश्रीपा० ॥ २१ ॥ ॐ तुष्टयै नमः[41] । तुष्टिश्रीपा० ॥ २२ ॥ ॐ पुष्टयै नमः[42] । पुष्टिश्रीपा० ॥ २३ ॥ ॐ भ्रांत्यै नमः[43] ॐ भ्रान्तिश्रीपा० ॥ २४ ॥ इस प्रकार पूजन करके पुष्पांजलि दे । इति पञ्चमावरणम् ॥ ५ ॥

चौंसठ दलों में प्राची क्रम और वामावर्त से : ॐ जयायै नमः[44] ॥ १ ॥ ॐ विजयायै नमः[45] ॥ २ ॥ ॐ जयन्त्यै नमः[46] ॥ ३ ॥ ॐ अपराजितायै नमः[47] ॥ ४ ॥ ॐ दिव्ययोग्यै नमः[48] ॥५॥ ॐ महायोग्यै नमः[49] ॥ ६ ॥ ॐ सिद्धयोग्यै नमः[50] ॥ ७ ॥ ॐ माहेश्वर्यै नमः[51] ॥ ८ ॥ ॐ प्रेताश्यै नमः[52] ॥ ९ ॥ ॐ डाकिन्यै नमः[53] ॥ १० ॥ ॐ काल्यै नमः[54] ॥ ११ ॥ ॐ कालरात्र्यै नमः[55] ॥ १२ ॥ ॐ टंकाक्ष्यै नमः[56] ॥१३॥ ॐ रौद्र्यै नमः [57]॥१४॥ ॐ वेताल्यै नमः[58]॥१५॥ ॐ हुंकार्यै नमः[59] ॥ १६ ॥ ॐ ऊर्ध्वकेशिन्यै नमः[60] ॥ १७ ॥ ॐ विरूपाक्ष्यै नमः[61] ॥ १८ ॥ ॐ शुष्कांग्यै नमः[62] ॥ १९ ॥ ॐ नरभोजिकायै नमः[63] ॥ २० ॥ ॐ फट्कार्यै नमः[64] ॥ २१ ॥ ॐ वीरभद्रायै नमः[65] ॥ २२ ॥ ॐ धूम्राग्यै नमः[66] ॥ २३ ॥ ॐ कलहप्रियायै नमः[67] ॥ २४ ॥ ॐ राक्षस्यै नमः[68] ॥ २५ ॥ ॐ घोररक्ताक्ष्यै नमः[69] ॥ २६ ॥

ॐ विश्वरूपायै नमः[७०] ॥ २७ ॥ ॐ भयङ्कर्यै नम[७१] ॥ २८ ॥ ॐ चण्डमार्यै नमः[७२] ॥ २९ ॥ ॐ चण्ड्यै नमः[७३] ॥ ३० ॥ ॐ वाराह्यै नमः[७४] ॥ ३१ ॥ ॐ मुण्डधारिण्यै नमः[७५] ॥ ३२ ॥ ॐ भैरव्यै नम[७६] ॥ ३३ ॥ ॐ ऊर्ध्वाक्ष्यै नमः[७७] ॥ ३४ ॥ ॐ दुमुख्यै नमः[७८] ॥ ३५ ॥ ॐ प्रेतवाहिन्यै नमः[७९] ॥ ३६ ॥ ॐ खट्वांग्यै नमः[८०] ॥ ३७ ॥ ॐ लम्बोष्ट्यै नमः[८१] ॥ ३८ ॥ ॐ मालिन्यै नमः[८२] ॥ ३९ ॥ ॐ मत्तयोगिन्यै नमः[८३] ॥ ४० ॥ ॐ काल्यै नमः[८४] ॥ ४१ ॥ ॐ रक्तायै नमः[८५] ॥ ४२ ॥ ॐ कङ्काल्यै नमः[८६] ॥ ४३ ॥ ॐ भुवनेश्वर्यै नम[८७] ॥ ४४ ॥ ॐ त्रोटिक्यै नमः[८८] ॥ ४५ ॥ ॐ महामार्यै नमः[८९] ॥ ४६ ॥ ॐ यमदूत्यै नम[९०] ॥ ४७ ॥ ॐ करालिन्यै नमः[९१] ॥ ४८ ॥ ॐ केशिन्यै नमः[९२] ॥ ४९ ॥ ॐ दमन्यै नमः[९३] ॥ ५० ॥ ॐ रोमगङ्गाप्रवाहिन्यै नमः[९४] ॥ ५१ ॥ ॐ विडाल्यै नमः[९५] ॥ ५२ ॥ ॐ कामुकालाक्ष्यै नम[९६] ॥ ५३ ॥ ॐ जयायै नम[९७] ॥ ५४ ॥ ॐ अधोमुख्यै नमः[९८] ॥ ५५ ॥ ॐ मुण्डाग्रधारिण्यै नमः[९९] ॥ ५६ ॥ ॐ व्याघ्र्यै नमः[१००] ॥ ५७ ॥ ॐ कांक्षिण्यै नमः[१०१] ॥ ५८ ॥ ॐ प्रेतभक्ष्ण्यै नमः[१०२] ॥ ५९ ॥ ॐ धूर्जट्यै नमः[१०३] ॥ ६० ॥ ॐ विकट्यै नमः[१०४] ॥ ६१ ॥ ॐ घोर्यै नमः[१०५] ॥ ६२ ॥ ॐ कपाल्यै नम[१०६] ॥ ६३ ॥ ॐ विषलम्बिन्यै नम[१०७] ॥ ६४ ॥ इस प्रकार चौंसठ योगिनियों का पूजन करके पुष्पांजलि दे । इति षष्ठावरणम् ॥ ६ ॥

भूपुर के भीतर आंग्नेयादि चारों दिशाओं में : ॐ गं गणेशाय नमः[१०८] । गणेशश्रीपा० ॥ १ ॥ ॐ क्षं क्षेत्रपालाय नमः[१०९] । क्षेत्रपालश्रीपा० ॥ २ ॥ ॐ वं वटुकाय नमः[११०] । वटुकश्रीपा० ॥ ३ ॥ ॐ यां योगिन्यै नम[१११] । योगिनीश्रीपा० ॥ ४ ॥ इस प्रकार द्वारपालों का पूजन करके पुष्पांजलि दे । इति सप्तमावरणम् ॥ ७ ॥

ततो भूपुरे पूर्वादिक्रमेण इन्द्रादिदशदिक्पालान् वज्राद्यायुधानि च सम्पूज्य पुष्पाञ्जलिं च दद्यात् । इत्यावरणपूजां कृत्वा धूपादिनमस्कारातं सम्पूज्य मन्त्रार्थं स्मरन् जपं कुर्यात् । अस्य पुश्चरणं चतुर्लक्षजपः पायसान्नेन दशांशतो होमः तद्दशांशेन तर्पणमार्जनब्राह्मणभोजनं च कुर्यात । एवंकृते मन्त्रः भवति । सिद्धे च मन्त्रे मन्त्री प्रयोगान् साधयेत् । तथा च ।

इसके बाद भूपुर में पूर्वादि क्रम से इन्द्रादि दश दिक्पालों तथा वज्र आदि उनके आयुधों की पूजा करके पुष्पांजलि देवे । इस प्रकार आवरण पूजा धूपदान से लेकर नमस्कार पर्यन्त और कृत्य करके मन्त्रार्थ को स्मरण करते हुए जप करे । इसका पुरश्चरण चार लाख जप है । खीर से दशांश होम तथा उसका दशांश तर्पण मार्जन और ब्राह्मण भोजन करे । ऐसा करने पर मन्त्र सिद्ध होता है । मन्त्र के सिद्ध होने पर साधक प्रयोगों को सिद्ध करे । तथाच :

एवं ध्यात्वा जपेल्लक्षचतुष्कं तद्दशांशतः ।
पायसान्नेन जुहुयात्पूजिते हेमरेतसि ॥ १ ॥
एवं सिद्धे मनौ मन्त्री भवेत्सौभाग्यभाजनम् ।
नव बीजविशुद्धोयं मन्त्रस्त्रैलोक्यपावनः ॥ २ ॥
एवं जपति यो मन्त्री फलं तस्य वदाम्यहम् ।
वश्या भवन्ति कामिन्यो राजानोऽनुचरा इव ॥ ३ ॥
न हस्तिसर्पदावाग्निचोरशत्रुभयं भवेत् ।
सर्वाः समृद्धयस्तस्य जायन्ते चण्डिकाज्ञया ॥ ४ ॥
नश्यन्ति दारुणा रोगाः सत्यं सत्यं न संशयः ।

इस प्रकार ध्यान करके चार लाख जप तथा उसका दशांश खीर से अग्नि में होम करे । इस प्रकार मन्त्र के सिद्ध होने पर साधक सौभाग्य का पात्र हो जाता है । नव बीजों से विशुद्ध तीनों लोकों को

पवित्र करने वाला यह मन्त्र है । इस प्रकार जो साधक जप करता है उसका फल मैं कह रहा हूं । स्त्रियाँ उसके वश में हो जाती हैं । राजे उसके दास हो जाते हैं । उसे हाथी, सर्प, दावाग्नि, चोर और शत्रु का भय नहीं रहता । चण्डिका की आज्ञा से सभी समृद्धियाँ उसे प्राप्त होती हैं । दारुण रोग कष्ट हो जाते हैं । यह सत्य है, सत्य है इसमें कोई संशय नहीं है ।

अनेन विधिना नित्यं यः कुर्याच्चण्डिकार्चनम् ॥ ५ ॥
तस्य तुष्टा महालक्ष्मीर्यच्च दद्याच्छृणुष्व तत् ।
महदैश्वर्यमतुलं त्रैलोक्ये तस्य जायते ॥ ६ ॥
धर्मराजसमायुक्तं पुत्रपौत्रसमाकुलम् ।
तं करोति महालक्ष्मीर्ब्रह्मविष्णुशिवोपमम् ॥ ७ ॥
रिपवः संक्षयं यान्ति तत्स्थानाच्छतयोजनम् ।
तेनैकेन वसन्तोपि न तं पश्यन्ति दस्यवः ॥ ८ ॥
तस्य स्मरणमात्रेण विघ्नानां जायते क्षयः ।
त्रिषु लोकेषु यत्किञ्चित्ससुरासुरदुर्लभम् ॥ ९ ॥
तत्तत्सर्वं समायाति महालक्ष्मीप्रसादतः ।
यो जपेत्परया भक्त्या महालक्ष्मीं तु पूजयन् ॥ १० ॥
स नरो लभते नित्यं पूजाफलमनुत्तमम् ।
सहस्रमस्य मन्त्रस्य नवबीजस्य यो जले ॥ ११ ॥
नाभिमात्रे जपेत्सम्यक् कवित्वं लभते ध्रुवम् ॥ १२ ॥
अयुतं नवतत्त्वस्य राजबन्धनसङ्कटैः ।
जपेत्तदाशु मुच्येत यो मन्त्री चण्डिकाज्ञया ॥ १३ ॥
अस्मिन्नवाक्षरे मन्त्रे महालक्ष्मीर्व्यवस्थिता ।
तस्मात्सुसिद्धः सर्वेषा सर्वदिक्षु प्रदीपकः ॥ १४ ॥

इस विधि से नित्य चण्डिका का पूजन करने से सन्तुष्ट महालक्ष्मी क्या - क्या देती हैं, उसे तुम सुनो । तीनों लोकों में भारी, अतुल ऐश्वर्य उसको प्राप्त होता है । महालक्ष्मी उसे पुत्र - पौत्र से भरापूरा धर्मराज, ब्रह्मा, विष्णु और शिव के समान बना देती हैं । शत्रु सब उसके स्थान से सौ योजन दूर ही विनष्ट हो जाते हैं । अकेले रहते हुए भी शत्रु उसे नहीं पाते । उसके स्मरणमात्र से विघ्नों का नाश हो जाता है । तीनों लोकों में देवों और असुरों के लिए जो दुर्लभ है वह सब महालक्ष्मी के प्रसाद से उसके पास चला आता है । जो भक्ति से महालक्ष्मी की पूजा करता हुआ जप करता है, वह मनुष्य पूजा का सर्वोत्तम फल प्राप्त करता है । जो मनुष्य नाभिमात्र जल में इस नवबीज मन्त्र का जप करता है वह सम्यक कवित्व शक्ति को निश्चित रूप से प्राप्त करता है । जो मनुष्य इस नव तत्वात्मक मन्त्र का दश लाख जप करता है वह चण्डिका की आज्ञा से राज बन्धन और संकटों से शीघ्र मुक्त हो जाता है । इस नवाक्षर मन्त्र में महालक्ष्मी निवास करती हैं । इसलिए सिद्ध किया हुआ यह मन्त्र सबके लिए सभी दिशाओं में प्रदीपक के समान है ।

अन्यत्रापि नवार्णस्य बिल्वमूले मासं जपः ।
बिल्वदलैर्मधुरत्रययुतैर्मासंहोमः ।
दशांशेन क्षीरसंयुतैः कमलैर्होमो वा लक्ष्मीप्राप्तिः ॥ १५ ॥

अन्यत्रापि 'मार्कण्डेयपुराणोक्तं नित्यं चण्डीस्तवं पठन्।
पुटितं मूलमन्त्रेण जपन्नाप्नोति वाञ्छितम् ॥१६॥
आश्विनस्य सिते पक्षे आरभ्याग्नितिथिं सुधीः।
अष्टम्यं तं जपेल्लक्ष दशांश होममाचरेत् ॥१७॥
प्रत्यहं पूजयेद्देवीं पठेत्सप्तशतीमपि।
विप्रानाराध्य मन्त्री स्वमिष्टार्थं लभतेऽचिरात् ॥१८॥
सार्थस्मृतिं पठेच्चण्डिस्तवं स्पष्टपदाक्षरम्।
समाप्ती तु महालक्ष्मीं ध्यात्वा कृत्वा षडङ्गकम् ॥१९॥
अष्टोत्तरशतं मूलं देवतायै निवेदयेत्।
एवं यः कुरुते स्तोत्रं नावसीदति जातुचित् ॥२०॥
चण्डिकां प्रभजन्मर्त्यो धनैर्धान्यैर्यशश्चयैः।
पुत्रैः पौत्रै रुचारोग्यैर्युक्तो जीवेच्छतं समाः ॥२१॥

अन्यत्र भी : नवार्ण का बेल के नीचे एक मास जप करना चाहिये। घी, मधु और शक्कर युक्त बेलपत्रों से एक मास तक होम करना चाहिये। दुग्ध से युक्त कमलों से दशांश होम लक्ष्मी प्राप्ति का हेतु है। अन्यत्र भी : "मार्कण्डेय पुराणोक्त मूलमन्त्र से सम्पुटित चण्डीस्तोत्र को नित्य पढ़ते हुए जप करने वाला मनोवांछित फल पाता है। अश्विन के शुक्लपक्ष में पञ्चमी तिथि से लेकर सुधी साधक अष्टमी पर्यन्त एक लाख मन्त्र जप करे और उसका दशांश होम करे। प्रतिदिन देवी की पूजा करे और सप्तशती का पाठ भी करे। विप्रों का स्वागत - सत्कार करके साधक शीघ्र अपना अभीष्ट प्राप्त करता है। अर्थस्मरण सहित स्पष्याक्षर चण्डी स्तव का पाठ करे। समाप्ति में महालक्ष्मी का ध्यान तथा षडङ्ग पूजन करके एक सौ आठ मूलमन्त्र देवता को निवेदित करे। जो इस प्रकार स्तोत्र पाठ करता है; वह कभी दुःख नहीं पाता। चण्डिका का भजन करता हुआ मनुष्य धनधान्य और यश की राशियों, पुत्रों, पौत्रों, तेज तथा आरोग्य से युक्त होकर सौ वर्ष तक जीता है।

(कार्यपरत्वेन नवार्णे दुर्गापाठे वा पल्लवनिर्णयः हरगौरीतन्त्रे)

ततः सप्तशतीं चैव रहस्यं पल्लवं तथा।
चण्डीपीठे तथा होमे क्रम उक्तो मनीषिभिः ॥२२॥
मन्त्राणां पल्लवो वासो मन्त्राणां प्रणवः शिरः।
शिरः पल्लवसंयुक्तो मन्त्रः कामदुघो भवेत् ॥२३॥
वश्याकर्षणहोमेषु स्वाहान्तः सिद्धिदायकः।
वौषट्पल्लवसंयुक्तो मन्त्रः पुष्ट्यादिसाधकः ॥ २४॥
हुंकारपल्लवोपेतो मारणे ब्राह्मणं विना।
यन्त्रभञ्जनकार्येषु सद्घोरभयनाशने ॥२५॥
वषडंतः प्रकल्प्यस्तु ग्रहबाधाविनाशकः।
उच्चाटने तु सम्प्रोक्तो मन्त्रः फट्पल्लवान्वितः।
नमोंतः शान्तिके पुष्टी प्रणिपाते च कीर्तितः ॥२६॥
(मनुमते) वषड् वश्ये फडुच्चाटे हुं स्तम्भे खे च मारणे।
स्वाहा तुष्ट्यै ठः ठः पुष्ट्यै नमः सर्वार्थसाधने ॥२७॥

(तन्त्रान्तरे) वषड् वश्ये फडुच्चाटे हुं द्वेषे खे च मारणे ।
ठः स्तम्भे वौषडाकर्षे नमः सम्पतिहेतवे ॥ २८ ॥
स्वाहा पुष्टिस्तथा तुष्टिरित्येते मन्त्रपल्लवाः ॥ २९ ॥

हरगौरी तन्त्र में कार्यपकर नवार्ण दुर्गा पाठ में पल्लवनिर्णय :

इसके बाद सप्तशती, रहस्य तथा पल्लव चण्डी पाठ में तथा होम में क्रम विद्वानों ने कहा है । मन्त्रों का पल्लव वस्त्र है तथा प्रणव शिर है । शिर पल्लव से संयुक्त मन्त्र अभीष्ट देने वाला होता है। वश्य, आकर्षण तथा होम में 'स्वाहा' अन्त वाला मन्त्र सिद्धिदायक होता है । वौषट् पल्लव युक्त मन्त्र पुष्ट्यादि साधक है । हुंकार पल्लव युक्त मन्त्र ब्राह्मण के अतिरिक्त मारण में साधक होता है । यन्त्रभञ्जन कार्यों में तथा भारी भय के नाश करने में वषड् अन्त वाले मन्त्र का प्रयोग करना चाहिये; यह ग्रह बाधा का भी विनाशक है । उच्चारण में फट् पल्लवान्वित मन्त्र कहा गया है । नमः अन्त वाला मन्त्र शान्ति, पुष्टि तथा प्रणिपात में कहा गया है । (मनु के मत से) 'वषड्' वश करने में, 'फट्' उच्चाटन में, 'हुँ' स्तम्भन में, आकर्षण में तथा मारण में; 'स्वाहा' तुष्टि में, ठः ठः पुष्टि में तथा नमः सभी कार्यों के सिद्ध करने में समर्थ है । (दूसरे तन्त्र में) वषड् वश करने में, 'फट्' उच्चाटन में, हुँ द्वेषण तथा मारण में, ठः स्तम्भन में, वौषट् आकर्षण में, नमः सम्पत्ति हेतु, तथा स्वाहा पुष्टि और तुष्टि में मन्त्रपल्लव कहे गये हैं ।

(कार्यपरत्वेन नवार्णस्वरूपम्)

वौषडाकर्षणे चादौ मन्त्रान्ते साध्यनामकः ।
तदन्ते वौषडन्ते च जपे द्विजाय मन्त्रवित् ॥ ३० ॥
मन्त्रादौ स्तम्भनं बीजं मन्त्रान्ते साध्यनाम् च ।
नामान्ते च पुनर्बीजमिति ज्ञात्वा मनुं जपेत् ॥ ३१ ॥
वषड् द्वन्द्वं तु वश्यादौ न्यसेन्मन्त्रान्त एव हि ।
साध्यनाम तदन्ते च वषडन्ते जपेत्सुधीः ॥ ३२ ॥
मारणे बीजमादौ च साध्यनाम ततः परम् ।
तदन्ते च मनुं जप्त्वा नामबीजं क्रमात्पठेत् ॥ ३३ ॥
मन्त्रान्ते बीजमुच्चार्यं तदन्ते साध्यनाम च ।
नामान्ते च पुनर्बीजं द्वन्द्वमुच्चाटने स्मृतम् ॥ ३४ ॥
मन्वन्तरं तथा बीजं मन्त्रान्नामानि निर्दिशेत् ।
स्वाहा नमः स्वधा चेति मन्त्रान्ते च पठेत्सुधीः।
एवं ज्ञात्वा प्रयोगांश्च सर्वकर्माणि साधयेत् ॥ ३५ ॥

कार्यपरत्व नवार्ण मन्त्रस्वरूप : मन्त्र को जानने वाला आकर्षण में प्रथम वौषट् तदनन्तर मन्त्र उसके बाद साध्य नाम तथा अन्त में पुनः वौषट् रखकर जप करे । मन्त्र के आदि में स्तम्भनार्थक बीज, मन्त्र के अन्त में साध्य का नाम, नाम के अन्त में पुनः बीज इसे जानकर मन्त्र का जप करना चाहिये । वश्यादि कर्म में दो 'वषट्' मन्त्र के आदि तथा मन्त्र के अन्त में रखना चाहिये । उसके अन्त में साध्य का नाम अन्त में 'वषट्' इस प्रकार मन्त्र का जप करे । मारण में आदि में बीज, उसके बाद साध्य नाम उसके अन्त में मन्त्र का जप कर नाम बीज को क्रम से पढ़े । मन्त्र के अन्त में बीज का उच्चारण करके उसके अन्त में साध्य का नाम, नाम के अन्त में पुनः दो बीज उच्चाटन में कहा गया है । मन्त्र

के बाद बीजमन्त्र से नामों का निर्देश करे। स्वाहा, नमः, स्वधा इन्हें मन्त्र के अन्त में सुधी पढ़े। इस प्रकार प्रयोगों को जानकर सब कर्मों को सिद्ध करे।

उपरोक्त मन्त्रों के स्वरूप : "वषट् ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे अमुकनामानं वषट् में वश्यं कुरुकुरु स्वाहा" इति वश्यम्। "ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे देवदत्तं फट् उच्चाटनं कुरुकुरु स्वाहा" इत्युच्चाटनम्। "क्लीं क्लीं ॐ ऐ ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे देवदत्तं क्लीं क्लीं मोहनं कुरुकुरु क्लीं क्लीं स्वाहा" इति मोहनम्। "ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे देवदत्तं रं रं खेखे मारयमारय रं रं शीघ्रं भस्मी कुरुकुरु स्वाहा" इति मारणम्। "ॐ ठं ठं ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे देवदत्तं ह्रीं वाचं मुखं पदं स्तंभयस्तंभय ह्रीं जिह्वांकीलयकीलय ह्रीं बुद्धिं विनाशयविनाशय ह्रीं ॐ ठं ठं स्वाहा" इति स्तम्भनम्। "ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे देवदत्तं यं यं शीघ्रमाकर्षयाकर्षय स्वाहा" इत्याकर्षणम्।

(कार्यपरत्वेन जपसंख्या)

मारणे दशलक्षं च मोहने द्वाद्वशं तथा।
उच्चाटने चतुर्विंशद्वश्ये कोटि जपेद् बुधः ॥ ३६॥
स्तम्भने षोडशं प्रोक्तं विद्वेषे च त्रयोदशम्।
एतद्राज्ञां प्रकर्तव्यं वैश्येष्वर्द्धं निगद्यते ॥ ३७॥
ब्राह्मणे द्विगुणं देवि शूद्राणामर्द्धकार्द्धकम्।
स्त्रीणां हि द्विगुणं प्रोक्तं यतः सा शक्तिरूपिणी॥ ३८॥

बुद्धिमान मनुष्य मारण में दश लाख, मोहन में बारह लाख, उच्चाटन में चौबीस लाख, वशीकरण में एक करोड़ जप करे। क्षत्रियों के स्तम्भन में सोलह लाख, विद्वेषण में तेरह लाख जप करना चाहिये; वैश्य के लिये इसका आधा जप कहा गया है। ब्राह्मण में इसका दूना तथा शूद्रों में एक चौथाई तथा स्त्रियों में दूना क्योंकि वह शक्तिरूपिणी हैं।

मारणं वर्जितं स्त्रीषु यतश्चा यानि कारयेत्।
स्त्रीषु च मारणं मोहात्कर्तुर्मृत्युर्न्न संशयः ॥ ३९॥

स्त्रियों में मारण वर्जित है इसलिए उनमें अन्य कर्म कराये। जो मोह वश स्त्रियों में मारण करता है उसकी निःसंशय मृत्यु होती है।

(कार्यपरत्वेन दिङ्निर्णयः)

मारणे स्तम्भने वश्ये उच्चाटनविधौ तथा।
दक्षिणस्यां दिशि मुखं मोहने पश्चिमे मुखम्॥ ४०॥
विद्वेषे चोत्तरमुखमासनं शृणु वल्लभे।

मारण, स्तम्भन, वशीकरण तथा उच्चाटन विधि में दक्षिण दिशा की ओर मुख, मोहन में पश्चिम दिशा की ओर मुख, विद्वेषण में उत्तर मुख करना चाहिये।

(कार्यपरत्वेनासननिर्णयः)

मारणे कम्बलं कृष्णं कृष्णाम्बरधरः स्वयम् ॥ ४१॥
मोहने चासनं पीतं पीतवस्त्रधरो बुधः।
रक्तं चोच्चाटने प्रोक्तं रक्तवस्त्रविभूषितः ॥ ४२॥
वश्ये श्वेतं पूर्ववच्च कर्बुरं स्तम्भने तथा।
विद्वेषे चासनं धूम्रं शृणु बद्धासनं प्रिये ॥ ४३॥

मारण में काला कम्बल तथा काला परिधान, मोहन में पीला आसन तथा पीला परिधान, उच्चाटन में लाल आसन तथा लाल परिधान, वशीकरण में सफेद आसन तथा सफेद परिधान, स्तम्भन में चितकबरा आसन तथा चितकबरा परिधान, विद्वेषण में धूमिल आसन तथा धूमिल परिधान होना चाहिये ।

(कार्यपरत्वेन बद्धासननिर्णयः)

मारणे वीरवत्तिष्ठेन्मोहने कटिनम्रकम् ।
उच्चाटने त्रिकोणं वै वश्ये चैकोर्धपादकः ॥ ४४ ॥
कमलं स्तम्भने तिष्ठेद्विद्वेषे पृष्ठपातकः ।
एतद्बद्धासनं प्रोक्तं प्रयोगाणां विधिं शृणु ॥ ४५ ॥

मारण में वीरासन, मोहन में कमर को झुकाकर, उच्चाटन में त्रिकोण तथा वशीकरण में एकोर्धपादक, स्तंभन में कमल, विद्वेषण में पृष्ठपातक आसन सिद्धिदायक होते हैं । ये बद्धासन कहे गये हैं । अब प्रयोगों की विधि सुनो ।

(षट्प्रयोगा यथा तत्रादौ मारणप्रयोगः ।)

कर्तव्यदिवसात्पूर्वं स्नानार्थं चिन्तयेद्बुधः ।
दिनानि विंशतिं वामे पूर्वं कार्यो विधिस्तनोः ॥ ४६ ॥
शरीरशोधनं कार्यं मदिराक्षि विनिश्चितम् ।
द्विजपादोदकं सुभ्रु शतानां सरसां तथा ॥ ४७ ॥
कूपाष्टनवनद्या षड्वापीनां जलं प्रिये ।
एतज्जलं समागृह्य ताम्रकुम्भेषु निःक्षिपेत् ॥ ४८ ॥
पत्रं बकुलवृक्षस्य आश्वत्थं वटनिम्बयोः ।
गोदुग्धेनैव सम्पिष्ट्वा स्नानं कुर्याद्विचक्षणः ॥ ४९ ॥
त्रिपुण्ड्रधारणं कृत्वा ललाटे रक्तचन्दनैः ।
आसने कम्बल कृष्णं कृष्णांबरधरः स्वयम् ॥ ५० ॥
मारणे वीरवत्तिष्ठेद्दक्षिणस्यां मुखे कृते ।

कर्तव्यदिवस से पहले स्नान के लिए बुद्धिमान् चिन्तन करे । बीस दिन तक शरीर की वाम विधि करनी चाहिये । हे मदिराक्षि ! निश्चित रूप से शरीर का शोधन करना चाहिये । हे सुभ्रु ! द्विज का पादोदक, सौ तालाबों का जल, आठ कूपों का जल, नौ नदियों का जल, छ तलैयों का जल, यह सब जल संग्रह करके ताम्र के पात्र में डाल देवे । मौलसरी, पीपल, बरगद तथा नीम के पत्ते गोदुग्ध से पीसकर बुद्धिमान स्नान करे । इसके बाद लाल चंदन से ललाट में त्रिपुण्ड धारण करके आसन पर काला कम्बल बिछा कर स्वयं कालेवस्त्र पहन कर मारण में दक्षिण दिशा में मुख करके वीर के समान बैठे ।

शृणुष्व चापरं कर्म भूमिशोधनमुत्तमम् ॥ ५१ ॥
मारणेनाष्टकोणेन कुर्याद्भमिस्थलं बुधः ।
पञ्चकूपोद्धृतं तोयं गृह्णीयादेकपाणिना ॥ ५२ ॥
श्मशानभस्म सिन्दूरमजारक्तं तिलं तथा ।
गोमयं वृद्धधेन्वास्तु मृदं वंशादधस्तलात् ॥ ५३ ॥
एभिर्विलेपयेद्भूमिमष्टकोणसमन्विताम् ।
स्वदक्षिणकरांगुष्ठाद्गृहित्वा रुधिरं प्रिये ॥ ५४ ॥

भृङ्गराजरसं रक्तचन्दनं केसरोद्भवम् ।
कर्पूरकदलीपत्रजलं हिंगुरसं शुभे ॥ ५५ ॥
एतत्सर्वं च संपेष्य एकस्मिन्कारयेद्बुधः ।
श्मशानकाष्ठमानीय तेन कृत्वा च लेखनीम् ॥ ५६ ॥
नवांगुलप्रमाणां नवार्णयनत्रं लिखेत्सुधीः ।
पूजनं यन्त्रराजस्य जगन्मातुश्शुभे भृणु ॥ ५७ ॥
स्ववामजानुरुधिरं रक्तचन्दनमिश्रितम् ।
पिष्ट्वा सर्षपतैलेन सिन्दूरं कदलीजलम् ॥ ५८ ॥
कुशान्सप्त समान्बध्वा ऊर्णसूत्रेण साधकः ।
तेनैव स्नापयेद्यन्त्रं वामहस्तेन भामिनी ॥ ५९ ॥
रक्तपुष्पं चन्दनं च रक्तसूत्रं च तण्डुलम् ।
सिन्दुरं वटवृक्षस्य दुग्धं बिम्बाफलं तथा ॥ ६० ॥
एतान्सर्वान्विशालाक्षि शोधयेत्साधकस्सदा ।
एतैः प्रपूजयेद्यन्त्रं महामाया प्रसीदति ॥ ६१ ॥

दूसरा भूमिशोधन का कर्म सुनो । सुधी मारण के लिये अष्टकोण भूमिस्थल बनाये । पाँच कूएँ से एक हाथ से निकाला गया जल ग्रहण करे । श्मशान भस्म, सिन्दूर, बकरे का खून, तिल, वृद्ध गाय का गोबर, बसवारी की मिट्टी इन सब से अष्टकोण युक्त भूमि को लीपे । हे प्रिये ! अपने दाहिने हाथ के अंगूठे से रक्त लेकर भाँगरे का रस, लाल चन्दन, केशर, कपूर, केले के पत्र का रस, हिंगुल यह सब पीसकर लेप तैयार करे । श्मशान की लकड़ी से नव अंगुल की कमल बनाकर सुधी नवार्ण मन्त्र लिखे । हे शुभे ! जगन्माता तथा मन्त्रराज की पूजा सुनो । हे भामिनि ! लाल चन्दन मिश्रित अपनी बाईं जाघ का खून, सरसों के तेल के साथ केले के जल में पीसकर सात समान कुशों को उनसे बाँध कर उसी के बाएँ हाथ से यन्त्र को स्नान कराये । लाल फूल, लाल चन्दन, लाल सूत तथा चावल, सिन्दूर, बरगद का दूध तथा बिम्बाफल, हे विशालाक्षि ! इन सबों को साधक सदा शोधन करे । इनसे यन्त्र की पूजा करे । इससे महामाया प्रसन्न होती है । यन्त्र-पूजन का मन्त्र यह है : ॐ जयन्ती मङ्गला काली भद्रकाली कपालिनी । दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोस्तु ते । इति मन्त्रेण सर्वं दद्यात् ।

विस्मृतं न मयोक्तं वै सामान्यं कथितं शुभे ।

हे शुभे ! मुझे जो भूल गया है उसे तो मैंने तुम्हें बतलाया नहीं, जो सामान्य है वही मैंने तुमसे कहा है ।

अतः परं श्रृणुष्वाद्य विधिं धूपस्य निर्मलम् ॥ ६२ ॥
साधकानां ध्रुवं सिद्धिर्धूपेनैव प्रजायते ।
मारणे कारणं देवि धूपमेव निगद्यते ॥ ६३ ॥
धूपमाहात्म्यमतुलं डामरे कथितं माया ।
धूपवार्तां न जानन्ति डामरे विमुख नराः ॥ ६४ ॥
कथंसिद्धिर्भवेत्तेषां विपरीते शुभानने ।

इसके आगे तुम धूप की निर्मल विधि सुनो । साधकों को निश्चित रूप से धूप से सिद्धि होती है । हे देवि ! मारण में धूप को ही कारण कहा गया है । मैंने डामर तन्त्र में धूप का अतुल माहात्म्य कहा ।

डामर से विमुख मनुष्य धूप की वार्ता नहीं जानते । हे शुभानने ! इस विपरीत स्थिति में उन्हें कहाँ से सिद्धि प्राप्त हो ?

गोरोचनं च कर्पूरं काश्मीरवनसम्भवम् ॥ ६५ ॥
एलाफलं लवङ्गं च मृगनाभिः सुरा तथा ।
लम्बकर्णस्य मांसं च गोघृतं सुरभीपयः ॥ ६६ ॥
देवदारु सिता रक्तचन्दनं श्वेतसंज्ञकम् ।
नागरस्तगरो वालक्षरो मोहनगन्धिका ॥ ६७ ॥
एतान्सर्वांस्तु संपेष्य कारयेदेकमिश्रितम् ।
धूपयेद्धूपमन्त्रेण कार्यसिद्धिर्भवेद्‌ध्रुवम् ॥ ६८ ॥
सप्त मन्त्रं पठित्वा तु साधको गद्‌गदाकृतिः ।
एकचित्तं समाधाय धूपं कुर्याद्विचक्षणः ॥६९॥
मारणे कारणं देवि दीपएव निगद्यते ।

गोरोचन, काश्मीरवन सम्भूत कपूर, इलाइची लवंग, कस्तूरी, शराब, लम्बकर्ण का मांस, गोघृत, गाय का दूध, देवदारु, चीनी, लाल चन्दन, सफेद चन्दन, नागरमोथा, तगर, बालक्षर, मोहनगन्धी, इन सब को पीस कर एक में मिला लेवे । इसे धूप मन्त्र से धूपित करे तो कार्यसिद्धि होती है । सात बार मन्त्र को पढ़कर गद्‌गद आकृति वाला होकर एकाग्रचित्त हो बुद्धिमान मनुष्य धूप दे । धूप देने का मन्त्र यह है : ॐ सर्वाबाधाप्रशमनं त्रैलोक्याखिलेश्वरिएवमेतत्त्वयाः कार्यमस्मद्वैरिविनाशनम् । इति मन्त्रेण धूपं दद्यात् ।

लोहदीपः प्रकर्त्तव्यस्तिलस्य तैलमेव च ॥ ७० ॥
पीततैलं गुरुं शुक्लं तैलनिम्बश्च निश्चितम् ।
श्मशानसूत्रमानीय वामहस्तेन भामिनी ॥ ७१ ॥
वर्तिका तेन कार्या तु अंगुलत्रयमिता ।
त्रिकोणां पृथ्वीं लिप्त्वा अंगुलयत्रसम्मिताम् ॥ ७२ ॥
तस्या मध्ये लिखेद्यन्त्रं नवाक्षरयुतं प्रिये ।
लेखनी कीचकी कार्या नवांगुलयुता शुभा ॥ ७३ ॥
लिखेद्यन्त्रं चन्दनेन रक्तेन मधुना सह ।
स्थापयेद्यन्त्रराजस्य अधोभागे च सन्निधौ ॥ ७४ ॥
अस्मिन्दीपे महामायां कालिकां रुधिरप्रियाम् ।
ज्वलज्जिह्वां सदा ध्यायेच्छत्रुसंहारकारिणीम् ॥ ७५ ॥
इति ध्यात्वा महामायां पूजयेद्रक्तचन्दनैः ।
एभिस्तवैश्च मां नित्यमेष मन्त्रे निवेदयेत् ॥ ७६ ॥

हे देवि ! मारण में दीप को ही कारण कहा जाता है । लोहे का दीप बनाना चाहिये और तील का तेल उसमें डालना चाहिये । पीली सरसों का तेल, अगर, कपूर, नीम का तेल निश्चित है । हे भामिनी ! बायें हाथ में श्मशान से सूत्र लाकर तीन अंगुल लम्बी बत्ती बनानी चाहिये । तीन अंगुल माप की त्रिकोण पृथिवी को लीप कर उसके बीच नवाक्षर युक्त यन्त्र लिखना चाहिये । बाँस की नौ अंगुल लम्बी कमल बनानी चाहिये । यन्त्र को लाल चन्दन से मधु से लिखना चाहिये । यन्त्रराज के नीचे भाग के निकट

स्थापित करे । इस दीप में रक्तप्रिय, जलती जीभवाली, रुधिरप्रिय, कालिका, महामाया, शत्रुसंहारिणी को सदा ध्यान करे । इससे ध्यान करके लाल चन्दन से महामाया की पूजा करे एवं इनसे तथा स्तुतियों से यह मन्त्र में निवेदित करे ।

एवं दीपो मया प्रोक्तो मालायाश्च विधिं शृणु ।

इस प्रकार मैंने दीप बतला दिया अब माला की विधि सुनो ।

सर्पास्थिसम्भवा माला कदलीतन्तुग्रन्थिता ॥ ७७ ॥
मारणे कथिता देवि साधकानां हिताय च ।
चण्डिकायै यन्त्रराजे अर्चयित्वा च वीटकम् ॥ ७८ ॥
पश्चादेकैकमुद्धृत्य चर्वयेच्छनकैः सुधी ।
यावज्जपसमाप्तिः स्यात्तावत्ताम्बूलचर्वणम् ॥ ७९ ॥
दशलक्षं जपेन्मन्त्रं वैश्येष्वर्द्धं निगद्यते ।
ब्राह्मणे द्विगुणां देवि शूद्राणामर्द्धकार्द्धकम् ॥ ८० ॥
स्त्रीणां च द्विगुणं प्रोक्तं यतः सा शक्तिरूपिणी ।
मारणं वर्जितं स्त्रीषु यतश्चान्यानि कारयेत् ॥ ८१ ॥
स्त्रीषु च मारणं मोहत्कर्तुर्मृत्युर्न संशयः ।
जपसंख्यादशांशेन नित्य होमं च कारयेत् ॥ ८२ ॥

केले के सूत से गुँथी हुई साँप की हड्डियों की माला हे देवि ! मारण तथा साधकों के हित के लिए कही गयी है । चण्डिका के लिए यन्त्रराज में पान के बीड़े की पूजा करके बाद में सुधी एक-एक उठाकर धीरे - धीरे चबाये । जब तक जप की समाप्ति न हो तब तक पान को चबाना चाहिये । दश लाख मन्त्र का जप करे । वैश्य में आधा कहा जाता है । हे देवि ! ब्राह्मण में दूना तथा शूद्र में चौथाई कहा गया है । स्त्रियों के लिए दूना कहा गया है क्योंकि वे शक्तिरूपिणी हैं । स्त्रियों में मारण वर्जित है इसलिए अन्य कर्म करना चाहिये । मोहवश स्त्रियों में मारण करने से मृत्यु होती है इसमें संशय नहीं है । जप संख्या से दशांश नित्य होम करे । मारण के जप का मंत्र यह है : ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे देवदत्तं रं रं खेखे मारय मारय रंरं शीघ्रं भस्मी कुरुकुरु स्वाहा ।

गोमहिष्योर्घृतं वामे अजादुग्धं च तण्डुलम् ।
लवङ्गं चैव कर्पूरं सर्षपं हिंगुमेव च ॥ ८३ ॥
शाएकुली तु गोधूमस्य गुडेन मिश्रिते शुभे ।
चिञ्चिणीकाष्ठमानीय खनेत्कुण्डं त्रिकोणकम् ॥ ८४ ॥
काष्ठांश्चतुरंगुलान्कृत्वा जुहुयाच्चण्डिकाप्रियाः ।
मन्त्रं नवाक्षरं प्रोक्तं मारणे कथितं मया ॥ ८५ ॥

हे वामे ! गाय, भैंस का घी, बकरी का दूध, लवंग, कपूर, सरसों, हिंगुल, हे शुभे ! गेहूं के आटे में गुड़ मिलाकर बनी पूड़ी । चिंचिडी काष्ठ लाकर त्रिकोण कुण्ड खोदे । लकड़ियों को चार अंगुल का करके चण्डिका का उपासक होम करे । मैंने मारण में यह नवाक्षर मन्त्र कहा है ।

मारणे मोहने वश्ये भोजनं त्वेकमुच्यते ।
तृतीयप्रहरे देवि भोज्यं लवणवर्जितम् ॥ ८६ ॥
माषस्य द्विदलं सुभ्रु तण्डुलं मिलितद्वयम् ।
गोघृतं मधुसंयुक्तं मिश्रितं पयसा प्रिये ॥ ८७ ॥

मारण, मोहन तथा वशीकरण में एक बार भोजन कहा गया है। हे देवि ! तीसरे पहर नमक वर्जित भोजन करना चाहिये। हे सुभ्रु ! हे प्रिये ! उड़द की दाल, चावल, दोनों मिलाकर गाय का घी शहद से युक्त दूध में मिलाकर खाना चाहिये।

प्रभावे भोजनं देव्यायत्प्राप्तं तत्तदेव हि।
भोजने क्लेशसङ्कर्तुः प्रयोगोऽफलदो भवेत् ॥ ८८ ॥
विधिर्वै मन्त्रराजस्य कथितः प्राणवल्लभे।

हे देवि ! भोजन के अभाव में जो प्राप्त हो वही भोजन करे। भोजन में क्लेश करने वाले का प्रयोग असफल होता है। हे प्राणवल्लभे ! मन्त्रराज की यह विधि मैंने बता दी।

शैवेन शाक्तिविप्रेण कर्तव्यं निश्चितं प्रिये ॥ ८९ ॥
मयोक्तं देवि मन्त्रराज चण्डिकायाः प्रियस्य च।
कार्यं विचक्षणेनैव चण्डिकाकिङ्करेण वै ॥ ९० ॥
इति मारणम्।

हे प्रिये ! शैव और शाक्त विप्र द्वारा निश्चित रूप से इसे करना चाहिये। हे देवि ! चण्डिका को प्रिय मेरे द्वारा कहे गये इस मन्त्र का प्रयोग विलक्षणचण्डिका के सेवक को अवश्य करना चाहिये।

इति मारण प्रयोग।

(मोहनेप्रयोगे यथा।)
"कर्तव्यदिवसात्पूर्वं स्नानार्थं चिन्तयेद्बुधः।
दिनानि विंशतिं वामे पूर्वं कार्यो विधिस्तनोः ॥ ९१ ॥
शरीरशोधनं कार्यं मदिराक्षि विनिश्चितम्।
जगपादजलं सुभ्रु वापीसप्त सरस्त्रयः ॥ ९२ ॥
सरितौ द्वे समाख्याते तोयग्रहणकर्मणि।
एषां जलं समानीय संक्षिपेन्मृन्मये घटे ॥ ९३ ॥
आम्रन्पत्रं फलं सुभ्रे पत्रं चामलकपीतयोः।
मेषीदुग्धेन संपेष्य स्नानं कुर्याच्च साधकः ॥ ९४ ॥
त्रिपुण्ड्रं धारणं कृत्वा ललाटे पीतचन्दनैः।
मोहने चासनं पीतपीतवस्त्रधरो बुधः ॥ ९५ ॥
कटिनम्रासने तिष्ठेन्मोहने पश्चिमे मुखम्।

कर्तव्यदिवस से पूर्व बुद्धिमान साधक को स्नान के लिए चिन्तन करना चाहिये। बीस दिन पूर्व शरीर शोधन की विधि करनी चाहिये। हे मदिराक्षि ! शरीर का शोधन निश्चित रूप से करना चाहिये। हाथी के पैर का जल, सात बावली का जल, तीन तालाबों का जल तथा दो नदियों का जल-जल संग्रह में कहा गया है। इनके जल लाकर मिट्टी के घड़े में रक्खें। हे सुभ्रे ! आम के पत्ते, आम के फल, आँवले और सत्यानाशी के पत्ते, भेड़ी के दूध के साथ पीस कर साधक स्नान करे। पीले चन्दन से ललाट में त्रिपुण्ड धारण करे। बुद्धिमान मोहन में पीला आसन तथा पीला वस्त्र धारण करे और कटिनम्रासन से पश्चिम ओर मुख करके बैठे।

शृणुष्व चापरं कर्म भूमिशोधनमुत्तमम् ॥ ९६ ॥
हरिद्राकेतकीपत्रं वंशपत्रं गुडं तथा।
धूपत्रयात्समानीय तोयं पादोद्धृतं शुभम् ॥ ९७ ॥

गोमयं बालवत्सस्य मृदं सरितसङ्गमात् ।
एभिर्भूमिं विलेप्यार्द्धामर्द्धां कुर्यादलेपनाम् ॥९८॥
संयुक्तां या त्रिकोणेन मोहनेषु मयोदितः ।
स्ववामपादरुधिरं गृह्णीयाद्यत्र साधकः ॥९९॥
कर्पूरशुण्ठीविजया अर्कवृक्षपयस्तथा ।
तण्डुलं चन्दनं श्वेतमेकस्मिन्पेषयेद्बुधः ॥१००॥
निम्बकाष्ठस्य कर्तव्या लेखनीचतुरंगुला ।
तया लिखेन्महामायायन्त्रमोक्षप्रदायकम् ॥१०१॥

भूमि के शोधन का दूसरा कर्म भी सुनो । हल्दी, केतकी के पत्ते, बांस के पत्ते, गुड़, तीनों धूप से पादोद्धृत जल लाकर बाछे का गोबर, नदियों के संगम की मट्टी इनसे आधी भूमि लीप कर आधी बिना लीपी संयुक्त भूमि जो मैंने मोहन में त्रिकोण से कही है छोड़ दे । साधक अपने वाम पैर का रक्त लेवे । कपूर, सोंठ, भाँग, मदार का दूध, चावल, सफेद चन्दन सुधी एक में पीसे । नीम की लकड़ी की चार अंगुल की कलम बनानी चाहिये । उसमें महामाया का मोक्षदायक मन्त्र लिखे ।

पूजनं यन्त्रराजस्य जगन्मातुश्शुभे शृणु ।
कर्पूरमिक्षुदण्डस्य रसं तण्डुलचूर्णकम् ॥१०२॥
कृष्णतिलोद्भवं तैलं कुशानि त्रीणि बन्धिता ।
दूर्वया बन्धिता दर्भास्तैः स्नानं कारयेद्बुधः ॥१०३॥

हे शुभे ! जगन्माता तथा मन्त्रराज का पूजन सुनो । कपूर, गन्ने का रस, चावल का चूर्ण, काले तिल का तेल, तीन बँधे कुश, दूब से बँधे दर्भ, इनसे बुद्धिमान स्नान कराये ।

कृष्णपुष्पं तथा कृष्णकज्जलं कृष्णतण्डुलम् ।
कृष्णसूत्रं च सिन्दूरं गवां दुग्धं यवं तथा ॥१०४॥
एभिः पूजा प्रकर्तव्या यन्त्रराजस्य मोहने ।
विस्तृतं न मयोक्तं वै सामान्यं कथितं शुभे ॥१०५॥
अतः परं शृणुष्वाद्य विधिं धूपस्य निर्मलम् ।

काले फूल, काला काजल, काला चावल, काला सूत, सिन्दूर, गाय का दूध, तथा जौ इनसे मोहन में यन्त्रराज की पूजा करनी चाहिये । पूजा का मन्त्र : "ॐ ज्ञानिनामपि चेतांसि देवी भगवती हि सा । बालादाकृष्य मोहाय महामाया प्रयच्छति ।" इति मन्त्रेण पूजयेत् । हे शुभे ! मैंने विस्तृत नहीं केवल सामान्य ही कहा है । इसके बाद आद्य धूप की निर्मल विधि सुनो ।

साधकाना ध्रुवं सिद्धिर्धूपेनैव प्रजायते ॥१०६॥
मोहने कारणं देवि धूपमेव निगद्यते ।
धूपमाहात्म्यमतुलं डामरे कथितं मया ॥१०७॥
धूपवार्तां न जानन्ति डामरे विमुखा नराः ।
कथं सिद्धिर्भवेत्तेषां विपरीते शुभानने ॥१०८॥

साधकों की निश्चित सिद्धि धूप से ही होती है । हे देवि ! मोहन में कारण धूप ही कहा जाता है । मैंने डामर तन्त्र में धूप का अतुल माहात्म्य कहा है । डामर तन्त्र से विमुख धूपवार्ता को नहीं जानते । हे शुभानने ! विपरीत होने पर तब उन्हें कैसे सिद्ध प्राप्त हो ?

कर्पूरं विजयापत्रमर्कपुष्पमजाधृतम् ।
गोधृतं महिषीदुग्धमष्टगन्धं सिता मधु ॥ १०९ ॥
गुग्गुलं लौह वाणं च ऐरण्डं बीजकं तथा ।
एतान्सर्वानिकत्र सम्पेष्य मिश्रयेद्बुधः ॥ ११० ॥
प्रमाणं माषधान्यस्य मत्स्यमांसं क्षिपेद्बुधः ।
धूपं दद्याद्यन्त्रराजे धूपमन्त्रेण साधकः ॥ १११ ॥
दशवारं पठेन्मन्त्रं साधको गद्गदाकृतिः ।
एकचित्तं समाधाय धूपं कुर्याद्विचक्षणः ॥ ११२ ॥
कांस्यदीपः प्रकर्तव्यस्तैलं श्वेतं तिलस्य च ।
कृष्णतैलं श्रीफलस्य तैलं श्वेता सिता मधु ॥ ११३ ॥
रक्तवस्त्रं पथिभ्रष्टं समानीय च साधकः ।
तेनैव वर्तिका कार्या सप्तांगुलसमन्विता ॥ ११४ ॥
लेपयेत्पृथिवीं विद्वान् चतुष्कोणां च द्व्यंगुलाम् ।
यन्त्रराजं लिखेत्तस्मिन्मध्ये प्रीत्या च साधकः ॥ ११५ ॥
दुर्वाया लेखनी कार्या सप्तांगुलयुता प्रिये ।
कपूरेण हरिद्राभ्यां लिखेद्यन्त्रं शुभानने ॥ ११६ ॥
स्थापयेद्यन्त्रराजस्य ऊर्ध्वैभागेऽगुलत्रये ।
पूजयेत्केसरं पीततण्डुलाभ्यां विचक्षणः ॥ ११७ ॥
अस्मिन्दीपे महामायां देवीं कात्यायनीं शुभाम् ।
प्रसन्नवदनां ध्यायेत्सदा संक्लेशनाशिनीम् ॥ ११८ ॥
इति कात्यायनीं ध्यात्वा पूजयेत्पीत चन्दनैः ।
इत्येतत्कथितं वीर इति मन्त्रे निवेदयेत् ॥ ११९ ॥
एवं दीपो मया प्रोक्तो मालायाश्च विधिं शृणु ।

कपूर, भाँग के पत्ते, सफेद मदार के फूल, बकरी का घी, गाय का घी, भैंस का दूध, अष्टगन्ध, चीनी, मधु, गुग्गुल, लोहे का बाण, रेण के बीज, इन सब को पीस कर बुद्धिमान् मिलाये । उड़द के बराबर सुधी मछली का मांस उसमें डाले। इससे धूप मन्त्र के द्वारा मन्त्रराज पर धूप देवे । (धूपमन्त्रः शक्रादयस्सुरगणा निहितेतिवीर्ये तस्मिन्दुरात्मनि सुरारिबले च देव्या तां तुष्टुवुः प्रणतिनम्रशिरोधरांसा वाग्भिः प्रहर्षपुलकोद्गमचारुदेहाः फट्) । साधक गद्गद आकृति होकर दश बार इस मन्त्र का पाठ करे। एकचित्त होकर मनको एकाग्र करके विलक्षण साधक धूप देवे । कांसे का दीपक बनाना चाहिये, तेल सफेद तिल का होना चाहिये । काला तेल, श्रीफल का तेल, सफेद चीनी, मधु, लाल वस्त्र जो मार्ग में गिरा हो उसे लाकर सात अंगुल उसी से बत्ती बनाकर विद्वान् चौकोर दो अंगुल भूमि को लीपे । उसमें प्रेम से मध्य में साधक यन्त्रराज को लिखे । हे प्रिये ! दूब सात अंगुल लम्बी कलम बनानी चाहिये। हे शुभानने ! कपूर और हल्दी से यन्त्र को लिखे । उसे यन्त्रराज के तीन अंगुल ऊपर स्थापित करे। बुद्धिमान पीली सरसों तथा चावल से केसर की पूजा करे । इस दीप में शुभ प्रसन्नवदना महामाया क्लेशनाशिनी कात्यायनी देवी का ध्यान करे । इस प्रकार कात्यायनी का ध्यान करके पीले चन्दन से पूजा करे । हे वीर! यह सब मैंने बताया है, इसे मन्त्र में निवेदन करे । इस प्रकार मैंने दीप बतलाया है, अब माला की विधि सुनो ।

ग्रन्थिता वाजिकेशेन कथिता निम्बबीजिका ॥ १२० ॥
मोहनेषु विधिश्चायं मालायाः प्राणवल्लभे ।
चण्डिकाया यन्त्रराजे अर्पयित्वा च वीटकम् ॥ १२१ ॥
पश्चादेकैकमुद्धृत्य चर्वयेच्छनकैः सुधीः ।
यावज्जपसमाप्तिः स्यात्तावत्ताम्बूलचर्वणम् ॥ १२२ ॥
कार्यं विचक्षणेनैव चण्डिकाकिंकरेण वै ।
जपेत्तु द्वादशं लक्षं वैश्येष्वर्धं निगद्यते ॥ १२३ ॥
ब्राह्मणे द्विगुणं देवि शूद्राणामर्द्धार्द्धकम् ।
स्त्रीणां च द्विगुणं प्रोक्तं यतः सा शक्ति रूपिणी ॥ १२४ ॥
नित्यमेवं जपान्ते च दशांशे होममाचरेत् ।

नीम के बीजों को घोड़े के बाल से गूंथना चाहिये । हे प्राणवल्लभे ! मोहन कर्म में माला की यह विधि है । चण्डिका के मन्त्रराज में पान के बीड़े चढ़ाकर बाद में एक - एक उठा कर सुधी धीरे - धीरे चबाते हुए जब तक जप समाप्त न हो तब तक बुद्धिमान चण्डिका सेवक को चबाना चाहिये । बारह लाख जप करे । वैश्यों में आधा कहा जाता है । हे देवि ! ब्राह्मण में दूना, शूद्रों में चौथाई तथा स्त्रियों में दूना कहा गया है क्योंकि वह शक्तिरूपिणी है । नित्य जप के बाद दशांश से हवन करना चाहिये ।

अजामेष्योर्घृतं देवि गोदुग्धं तण्डुलं यवम् ॥ १२५ ॥
कर्पूरं च तजं यावमेलाशर्करयान्वितम् ।
आम्रकाष्ठं समानीय पञ्चकोणं च कुण्डलम् ॥ १२६ ॥
सप्तांगुलमितान्काष्ठाज्जुहुयात्साधकस्सदा ।
मन्त्रं नवाक्षरं प्रोक्तं मोहने कथितं मया ॥ १२७ ॥
मारणे मोहने वश्ये भोजनं त्वेकमुच्यते ।
तृतीयप्रहरे देवि भोजनं क्षारवर्जितम् ॥ १२८ ॥
माषस्य द्विदलं सुभ्रु तण्डुलं मिलितद्वयम् ।
गोघृतं मधुसंयुक्तं मिश्रितं पयसा प्रिये ॥ १२९ ॥
अभावे भोजनं देव्या यत्तप्राप्तं तदेव हि ।
भोजने क्लेशसंकर्तुः प्रयोगोऽफलदो भवेत् ॥ १३० ॥

हे देवि ! बकरी तथा भेड़ का घी, गाय का दूध, चावल, जव, कपूर, तज, जव का भात इलाइची तथा शक्कर से युक्त । आम की समिधा लाकर पाँच कोनों वाला कुण्ड बनाये । सात अंगुल लम्बी समिधाएँ काट कर साधक सदा होम करे । मैंने मोहन में नवाक्षर मन्त्र बतलाया है । मारण, मोहन और वशीकरण में एक बार भोजन कहा जाता है । हे देवि ! तीसरे पहर क्षार से वर्जित भोजन, उड़द की दाल, चावल मिलाकर गाय के घी तथा मधु से युक्त दूध से खाना चाहिये । देवी के भोजन के अभाव में जो प्राप्त हो वही खाना चाहिये । भोजन में क्लेश करने वाले का प्रयोग असफल होता है ।

विधिर्वै मन्त्रराजस्य कथितः प्राणवल्लभे ।
शैवेन शाक्तविप्रेण कर्तव्यं निश्चितं प्रिये ॥ १३१ ॥
इति मोहनम् ।

हे प्राणवल्लभे ! मैंने मन्त्रराज की यह विधि बतला दी । शैव तथा शाक्त विप्र को हे प्रिये ! इसे निश्चित रूप से करना चाहिये ।

इति मोहन कर्म समाप्त ।

उच्चाटनप्रयोगो यथा ।

कर्त्तव्यदिवसात्पूर्वं स्नानार्थं चिन्तयेद्बुधः ।
दिनानि विंशतिं वामे पूर्वं कार्यो विधिस्तनोः ॥ १३२ ॥
शरीरशोधनं कार्यं मदिराक्षि विनिश्चितम् ।
नन्दीपादजलं वामे कूपत्रयजलं तथा ॥ १३३ ॥
तडागादेकमानीय निःक्षिपेत्काष्ठजे घटे ।
बदरीबर्बुरयोः पत्रं चिंचिणीकाफलातसम् ॥ १३४ ॥
ऊरूथदुग्धे संपेष्य स्नात्वा तूच्चाटने द्विजः ।

कर्तव्य दिन से पूर्व सुधी स्नान के लिए चिन्तन करे । हे वामे ! बीस दिन तक शरीर शोधन की विधि करनी चाहिये । हे मदिराक्षि ! निश्चित रूप से शरीर शोधन करना चाहिये । हे वामे ! बैल के पैर का जल, तीन कूओं का जल, एक तालाब का जल लाकर काठ के घड़े में डाले । बेर और बबूल के पत्ते, इमली का फल, तीसी उरुथ के दूध में पीसकर ब्राह्मण उच्चाटन में स्नान करे ।

शृणुष्व चापरं कर्म भूमिशोधनमुत्तमम् ॥ १३५ ॥
नीलपत्रं च विजया अर्कपत्रं यवं तथा ।
एक कूपोद्धृतं तोयं पद्भ्यां चैव समुद्धृतम् ॥ १३६ ॥
गोमयं बालवत्साया वाल्मीकाच्चा मृदं तथा ।
एभिर्विशोधयेद्भूमिं वर्तुलाकारनिर्मिताम् ॥ १३७ ॥
त्रिपुंड्र धारणं कृत्वा ललाटे रक्तचन्दनैः ।
रक्तवस्त्रासनं प्रोक्तं रक्तवस्त्रविभूषितः ॥ १३८ ॥
तिष्ठेत्तत्र त्रिकोणां वै दक्षिणस्यां मुखे कृते ।
स्ववामपार्श्वजं रक्तं संगृह्य यत्र साधकः ॥ १३९ ॥
निम्बकाष्ठं बिल्वकाष्ठं वदरीकाष्ठमेव च ।
शृङ्गवेररसं हिंगुवाटिकारसमेव च ॥ १४० ॥
एतान्सर्वान्समानीय मिश्रितं कारयेद्बुधः ।
लेखनी दाडिमी कार्या प्रमाणे द्वादशांगुलम् ॥ १४१ ॥
तया लिखेत्स्वयं नग्नो वामहस्तेन निश्चितम् ।

भूमिशोधनरूप उत्तम दूसरा कर्म सुनो । नील के पत्ते, भाँग, सफेद मदार के पत्ते, जव तथा एक कूएँ से पैर से निकाला गया पानी, बछिया का गोबर, बांबी की मिट्टी, इन सब से गोल बनाई गई भूमि का शोधन करे । ललाट में लाल चन्दन से त्रिपुण्ड धारण करके लाल आसन, लाल परिधान से विभूषित त्रिकोण पर दक्षिण दिशा की ओर मुख करके बैठे । अपने बाएँ बगल से साधक रक्त लेकर नीम की लकड़ी, बेल की लड़की, बेर की लकड़ी, अद्रक का रस, हींग, हिंगुपत्री (वाटिका) का रस, सुधी इन सब को लाकर पीस कर मित्रण तैयार करे । बाहर अंगुल आकार की अनार की कलम बनवाये । उससे स्वयं नङ्गे होकर बाएँ हाथ से लिखे ।

पूजनं यन्त्रराजस्य जगन्मातुश्शुभे शृणु ॥१४२॥
हरिद्रा चन्दनं श्वेतं हरितालं जलं वचम्।
कुशानि पञ्च सम्बद्ध्वा कदलीतन्तुना प्रिये ॥१४३॥
स्नापयेत्प्रीतियुक्तेन यन्त्रं शक्तेस्तनुं शुभाम्।
पीतपुष्पं तथा पीतचदन्नं पीत तण्डुलम् ॥१४४॥
सूत्रं पीतं च सन्दिूरमजादुग्धं तथैव च।
एभिः प्रीत्या प्रपूज्येमं यन्त्रराजं विचक्षणः ॥१४५॥
विस्तृतं न मयोक्तं वै सामान्यं कथितं शुभे।

हे शुभे ! जगन्माता का तथा यन्त्रराज का पूजन सुनो। हल्दी, सफेद चन्दन, हरिताल, जल, वचा, केले के रेशे से एक में बँधे पाँच कुश इनसे शक्ति के शुभ शरीररूपी यन्त्र को प्रीतियुक्त मन से नहलाये। (स्नानमन्त्र : ॐ करोतु स्नानः शुभहेतुरीश्वरीशुभानि भद्राण्यर्भिहान्तुचापदः)। पीले फूल, पीला चन्दन, पीला चावल, पीला सूत, सिन्दूर, बकरी का दूध इनसे बुद्धिमान साधक प्रेमपूर्वक मन्त्रराज की पूजा करे। हे शुभे ! मैंने विस्तार से नहीं कहा है, सामान्य ही कहा है।

अतःपरं शृणुष्वाद्य विधिं धपूस्य निर्मलम् ॥१४६॥
साधकानां ध्रुवं सिद्धिर्धूप एव प्रजायते।
प्रयोग कारणं देवि धूपएव निगद्यते ॥१४७॥

इसके बाद धूप की निर्मल विधि सुनो। साधकों को निश्चित रूप से सिद्धि धूप से ही प्राप्त होती है। प्रयोग में कारण हे देवि ! धूप को ही कहा जाता है।

धूपमाहात्म्यमतुलं डामरे कथितं मया।
धूपवार्तां न जानन्ति डामरे विमुखा नराः ॥१४८॥
कथं सिद्धिर्भवेत्तेषां विपरीते शुभानने।
मधूकफलपुष्पैश्च गुग्गुलुं चन्दनद्वयम् ॥१४९॥
हरिद्रा हरितालं च देवदारू च नागरम्।
सिता लवङ्गं कर्पूरं सुरा वालक्षरं मधु ॥१५०॥
मेषीघृतं गोधृतं च महिषीघृतमेव च।
एतान्सर्वांश्च सम्पेष्य कारयेद्धूपमुत्तमम् ॥१५१॥
धूपयेद्धूपमन्त्रेण कार्यसिद्धिर्भवेद्ध्रुवम्।
चतुर्वारं पठेन्मन्त्रं साधको गद्गदाकृतिः।
एकचितं समाधाय धूपं कुर्याद्विचक्षणः ॥१५२॥

मैंने डामर तन्त्र में धूप का अतुल महात्म्य कहा है। डामर से विमुख मनुष्य धूपवार्ता नहीं जानते। हे शुभानने ! उनके विपरीत होने से कैसे सिद्धि प्राप्त हो महुए के फल और फूल, गुग्गुल, दोनों चन्दन, हल्दी, हरिताल, देवदारु, नागरमोथा, चीनी, लवङ्ग, कपूर, शराब, बालछड़ मधु, भेड़ी का घी, गाय का घी, भैंस का घी, इन सबको पीसकर उत्तम धूप बनाये। धूप मंत्र से देवता को धूप देने से निश्चित रूप से कार्य सिद्धि होती है। साधक गद्गदाकृति होकर चार बार मंत्र को पढें। एकचित्त होकर सुधी धूपदान करे। (धूपमन्त्र : ॐ मयूरकुक्कुटवृते महाशक्तिधरेधेक्लीं।)

मृन्मयो दीपकः कार्यस्तैलं चामलकोद्भवम् ।
ऐरण्डतैलं तैलं च मधूकस्य वरानने ॥१५३॥
वर्तिका पीतवस्त्रस्य अंगुलत्रयसम्मिता ।
लेपयेत्पृथिवीं वामे गोमयेन मृदा युताम् ॥१५४॥
त्रितयांगुलसंयुक्ताँल्लिखेद्यन्त्रं सुधीः प्रिये ।
वामपार्श्वे दाडिमस्य करणीया च लेखनी ॥१५५॥
गोधूमचूर्णमध्वाक्तसर्पिषा गौरिकं जतु ।
एभिर्यन्त्रं लिखेद्वामे स्थापयेत्पूर्वदक्षिणे ॥१५६॥
पंचागुलसमायुक्ते पूजयेद्रक्तचन्दनैः ।
दीपमध्ये सदा ध्यायेदुर्गां दुर्गतिनाशिनीम् ॥१५७॥
एवं स्तवाभियुक्तानां देवानां तत्र पार्वती ।
एवं दीपो मया प्रोक्तो मालायाश्च विधिं शृणु ॥१५८॥

हे वरानने ! मिट्टी का दीपक बनाना चाहिये । आँवले का तेल, रेंड का तेल, महुए का तेल, पीले वस्त्र की बत्ती तीन अंगुल परिमाण की बनाये । गोबर, मिट्टी से भूमि को लिपे । हे प्रिये ! तीन अंगुलियों से बायीं ओर सुधी यन्त्र लिखे । अनार की कलम बनानी चाहिये । मधु तथा घी युक्त गेहूं का आटा, गेरू, लाख, इनसे बाएँ ओर यन्त्र लिखे और पूर्वदक्षिण और स्थापित करे । पाँचों अंगुलियों से लाल चन्दन से पूजा करे । दीप के बीच, हे पार्वति ! दुर्गतिनाशिनी दुर्गा का ध्यान करे। 'एवं स्तवाभियुक्तानां देवानां तत्र पार्वती ।' इस मन्त्र से दीप दे । इस प्रकार मैंने दीप की विधि बतला दिया । अब माला की विधि सुनो ।

उच्चाटने प्रवालस्य ऊर्णसूत्रेण ग्रंथिता ।
चण्डिकाया यन्त्रराजे अर्चयित्वा च वीटकम् ॥१५९॥
पश्चादेकैकमुद्धृत्य चर्वयेच्छनकैः सुधीः ।
यावज्जपसमाप्तिः स्यात्तावत्ताम्बूलचर्वणम् ॥१६०॥
कार्यं विचक्षणेनैव चण्डिकाकिङ्करेण वै ।
चतुर्विंशतलिक्षं तु वैश्ये द्वाद्वशलक्षकम् ॥१६१॥
ब्राह्मणे द्विगुणं देवि शुद्राणामर्द्धार्द्धकम् ।
स्त्रीणां च द्विगुणं प्रोक्तं यतः सा शक्तिरूपिणी ॥१६२॥
जपान्ते तद्दशांशेन नित्यहोमं च कारयेत् ।

उच्चाटन में मूँगे की माला ऊन के धागे में गूथकर चण्डिका के यन्त्रराज में पान के बीड़ी की पूजा करने के बाद एक-एक बीड़ा निकाल कर सुधी धीरे-धीरे चबाये । जब तक जप समाप्त न हो तब तक विचक्षण चण्डिका-भक्त को पान चबाना चाहिये । मन्त्र को चौबीज लाख जप कहा गया है । (ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डाय विच्चे देवदत्त फट् उच्चाटनं कुरुकुरु स्वाहेति मन्त्रं जपेत्) । वैश्य में बारह लाख; हे देवि ! ब्राह्मण में दूना, शूद्रों में चौथाई, तथा स्त्रियों में दूना कहा गया है क्योंकि वह शक्तिरूपिणी हैं । जप के बाद दशांश से नित्य होम करना चाहिये ।

गोघृतं महिषीदुग्धं तण्डुलं पीतसर्षमम् ॥१६३॥
देवदारू लवङ्ग च श्रीफलस्य रसस्तथा ।
कुण्डं कृत्वा पञ्चकोणं काष्ठबर्बुरमेव च ॥१६४॥
सप्तांगुलमितान् कृत्वा जुहुयात्प्रेमतत्परः ।
मन्त्रं नवार्णवं प्रोक्तं षट्प्रयोगेषु आहुतौ ॥१६५॥
उच्चाटने यवस्यैव चूर्णं कृत्वा तिलस्य च ।
गुडमिश्रितसंस्कार्या एतैश्च करपट्टिका ॥१६६॥
राजमाषस्य द्विदलं हरिद्रादिविवर्जितम् ।
भोक्तव्यं वामहस्तेन तृतीयप्रहरे शुभे ॥१६७॥
अभावे भोजनं देव्या यत्तप्राप्तं तदेव हि ।
भोजने क्लेशसंकर्तुः प्रयोगोऽफलदो भवेत् ॥१६८॥
विधिर्वै मन्त्रराजस्य कथितः प्राणवल्लभे ।
शैवेन शाक्तविप्रेण कर्त्तव्यं निश्चितं प्रिये ॥१६९॥
इत्युच्चाटनम् ॥३॥

गाय की घी, भैंस का दूध, चावल पीली सरसों, देवदारु, लवङ्ग, बेल का रस, पञ्चकोण कुण्ड बनाकर सात अंगुल लम्बी बबूर की समिधाओं से भक्तिभाव से होम करे। छः प्रयोगों में आहुति के लिये नवार्णमन्त्र कहा गया है। उच्चाटन में जौ तथा तिल का चूर्ण गुड़ से मिलाकर रोटी बनाकर राजमाष की दाल हल्दी के बिना बाएँ हाथ से, हे शुभे तीसरे पहर खाना चाहिये। देवी के भोजन के अभाव में जो मिले वही खाना चाहिये। भोजन में क्लेश करने वाले का प्रयोग असफल हो जाता है। हे प्राणवल्लभे ! यह मन्त्रराज की विधि मैंने कह दी है। शैव तथा शाक्त विप्रों को निश्चित रूप से इसे करना चाहिये।

(वशीकरणप्रयोगो यथा)
कर्त्तव्यदिवसात्पूर्वं स्नानार्थं चिन्तयेद्बुधः ।
दिनानि विंशतिं वामे पूर्वं कार्यो विधिस्तनोः ॥१७०॥
शरीरधोधनं कार्यं मदिराक्षि विनिश्चितम् ।
मृगपादोद्धृतं तोयं कूपैकं प्राणरञ्जने ॥१७१॥
एकादशतडागस्य जलं सरितसंङ्गमात् ।
क्षिप्त्वा कान्ते घटे तोयं वश्यकर्मणि साधकः ॥१७२॥
एतज्जलं च महिषीदुग्धेन पेषयेत्सुधीः ।
स्नानं कृत्वा द्विजो वामे वश्ये वश्येन्द्रियः प्रिये ॥१७३॥
त्रिपुण्ड्रधारणं कृत्वा ललाटे रक्तचन्दनैः ।
श्वेतासने समाविश्य श्वेताम्बरधरः स्वयम् ।
चैकोर्ध्वपादयस्तिष्ठैद्दक्षिस्यां मुखे कृते ॥१७४॥

कर्त्तव्य दिन से पूर्व सुधी साधक स्नान के लिए चिन्ता करे। हे वामे ! बीस दिन पूर्व शरीर की विधि करनी चाहिये। हे मदिराक्षि ! निश्चित रूप से शरीर का शोधन करना चाहिये। हे प्राणरंजने ! हिरन के पैर से उद्धृत जल, एक कूएँ का जल, ग्यारह तालाबों का जल, नदियों के सङ्गम का जल, हे कान्ते ! घड़े में छोड़कर वशीकरण कर्म से इस जल को भैंस के दूध से सुधी पीसे। हे वामे, हे प्रिये ! इन्द्रियों को वश में करके द्विज स्नान करके ललाट में लाल चन्दन से त्रिपुण्ड धारण करके सफेद आसन

पर सफेद परिधान पहन कर, स्वयं बैठकर दक्षिणाभिमुख एक पैर ऊपर करके बैठे।

शृणुष्व चापरं कर्म भूमिशोधनमुत्तमम्।
निम्बपत्रं च हिंगुं च जम्बीरस्य रसं मधु ॥१७५॥
सप्तकूपोद्धृतं तोयं करेण दक्षिणेन वै।
गोमयं नन्दिनो ग्राह्यं वश्येषु भूमिलेपने ॥१७६॥
चतुःकोणयुता कार्या वश्यकर्मणि निश्चितम्।
स्वमूर्ध्नो रुधिरं देवि गृह्णीयाद्वामपाणिना ॥१७७॥
भृङ्गराजरसं सुभ्रु गोदुग्धं प्रथमं तथा।
मधुसिन्दूरकर्पूरदेवदारुत्वचारसम् ॥१७८॥
एकस्मिन्सर्वमुन्नीय लेखनी दूर्वया तथा।
सप्तांगुलप्रमाणेन पृष्ठभागेन संलिखेत् ॥१७९॥

दूसरा उत्तम कर्म भूमिशोधन सुनो। नीम के पत्ते, हींग, नीबू का रस, मधु, दाहिने हाथ से निकाला हुआ सात कूओं का जल, तथा नन्दी का गोबर वशीकरण कर्म में भूमि लीपने के लिए लेना चाहिये। वशीकरण कर्म में चौकोर भूमि बनानी चाहिये। हे देवि ! अपने सिर का रक्त बाएँ हाथ से निकाले। हे सुभ्रु ! भाँगरे का रस, गाय का दूध, मधु, सिन्दूर, कपूर, देवदारु के छाल का रस, एक में सब मिलाकर, सात अंगुल प्रमाण की दूब की लेखनी बनाकर उसके पृष्ठभाग से लिखे।

पूजनं यन्त्रराजस्य जगन्मातुश्शुभे शृणु।
गोदुग्धं महिषीदुग्धमजामेष्योः पयस्तथा ॥१८०॥
एलाफलोद्गतं तोयं कर्पूरं श्वेतचन्दनैः।
चन्दनेनोद्घृतं तैलं सूत्रं पञ्चकुशास्तथा ॥१८१॥
कुशा एकादश प्रोक्तास्तेः स्नानं कारयेत्प्रिये।
श्वेतपुष्पं श्वेतगंधं श्वेतौ तण्डुलसूत्रकौ ॥१८२॥
सिन्दूरं महिषीदुग्धं तिलतैलं गुडं प्रिये।
पूजयेद्यंत्रराजं च महामायाप्रियं शुभे ॥१८३॥
विस्तृतं न मयोक्तं वै सामान्य कथितं शुभे।
अतः परं शृणुष्वाद्य विधिं धपूस्य निर्मलम् ॥१८४॥
साधकानां ध्रुवं सिद्धिर्धूपेनैव प्रजायते।
वश्यकर्माणि वै देवि धूप एव निगद्यते ॥१८५॥

हे शुभे ! तुम जगन्माता के यन्त्रराज का पूजन सुनो। गाय का दूध, भैंस का दूध, बकरी का दूध, भेंड का दूध, इलायची के फल से निकाला जल, कपूर, सफेद चन्दन, चन्दन का तेल, सूत, तथा पाँच कुशा (हे प्रिये ! कुशा ग्यारह कहे गये हैं) इनसे स्नान करना चाहिये। हे प्रिये ! सफेद फूल, सफेद गंध, सफेद चावल, सफेद सूत, सिन्दूर, भैंस का दूध, तिल का तेल, गुड़ से हे शुभे! महामाया को प्रिय यन्त्रराज की पूजा करनी चाहिये। (उपसर्गानशेषांस्तु महामारीसमुद्भवान् तथा विविधमुत्पातं महोत्पातं शमयेन्मम् इति मन्त्रेण सर्वं दद्यात्)। हे शुभे ! मैंने विस्तृत नहीं कहा है। मैंने सामान्य ही कहा है। इसके बाद प्रारम्भ की निर्मल धूप-विधि सुनो। साधकों की सिद्धि निश्चित रूप से धूप से ही होती है। देवि ! वशीकरण में धूप ही कहा जाता है।

धूपमाहात्म्यमतुलं डामरे कथितं मया।
धूपवार्तां न जानन्ति डामरे विमुखा नराः ॥१८६॥

अर्थसिद्धिर्भवेत्तेषां विपरीते शुभानने ।

मैंने धूप का अतुल माहात्म्य डामर तंत्र में कहा है । जो लोग डामर से विमुख हैं, वे धूप के सम्बंध में कुछ नहीं जानते । हे शुभानने ! ऐसे विपरीत लोगों को अर्थसिद्धि कैसे हो सकती है ?

चन्दनद्वयशुण्ठ्यश्च आम्रबीजं च दाडिमम् ॥१८७॥
निम्बबीजत्वचा सुभ्रु देवदारु च गैरिकम् ।
हरिद्रा गुग्गुलुः श्वेतं सर्षपं जीरकद्वयम् ॥१८८॥
लवङ्गं मृगनाभिश्च जम्बीररसमुत्तमम् ।
पिप्पली शर्करा पित्ताघृतं मेष्याः पयश्च गोः ॥१८९॥
एतान्सम्पेष्य कुशलो धूपं दद्यात् विचक्षणः ।
धूपयेद् धूपमन्त्रेण साधको गद्‌गदाकृतिः ॥१९०॥
एकचित्तं समाधाय धूपं कुर्याद्वि चक्षणः ।

सफेद तथा लाल चन्दन, आम का बीज, अनार हे सुभ्र ! नीम के बीज का छिलका, देवदारु, गेरू, हल्दी, गुग्गुल, सफेद सरसों, सफेद जीरा, काला जीरा, लौंग, कस्तूरी, नीबू का उत्तम रस, पीपर, शकर, गोरोचन, भेंड का घी, गाय का दूध, इनको खूब पीसकर कुशल साधक गद्‌गदाकृति होकर धूपमन्त्र से धूप देवे। एकचित्त तथा शान्त होकर बुद्धिमान व्यक्ति धूप देवे । धूप देने का मन्त्र : ''शूलेन पाहि नो देवि पाहि खड्गेन चाम्बिके । घण्टास्वनेन नः पाहि चापज्यानिः स्वनेन च । पश्चोद्धारण स्वाहा । इति मन्त्रेण धूपयेत् ।

वश्यकामनया देवि दीप एवं निगद्यते ॥१९१॥
दीपः पैत्तलिकः कार्यस्तैलं निम्बस्य सार्षपम् ।
अर्कतूलिकया देवि कार्या वर्तिस्त्रयांगुला ॥१९२॥
लेपयेत्पृथिवीं सुभ्रू पश्चांगुलमितां शुभाम् ।
तस्यां लिखेद्यन्त्रराजं दक्षिणे पार्श्वके प्रिये ॥१९३॥

हे देवि ! वशीकरण की कामना में दीप ही कहा जाता है । दीप पीतल का बनाना चाहिये । तेल नीम या सरसों का होना चाहिये । हे देवि ! मदार की रूई से तीन अंगुल की बत्ती बनानी चाहिये । हे सुभ्रू ! पाँच अंगुल परिमाण की शुभ भूमि को लीपे । हे प्रिये ! उसमें दक्षिणपार्श्व में यन्त्रराज को लिखे ।

लेखनी विष्णु वृक्षस्य पश्चांगुलसमन्विता ।
पूजयेद्यन्त्रराजं च सिन्दूरैः पीतसर्षपैः ॥१९४॥
अर्कदुग्धं च गोदुग्धमजादुग्धं हरिद्रिका ।
एभिर्यन्त्रे लिखेद्देवि साधकश्चण्डिकाप्रियः ॥१९५॥
अस्मिन्दीपे सदा ध्यायेत्कालिकां कमलासनाम् ।
भुक्तिमुक्तिप्रदां देवि चारुहाससमन्विताम् ॥१९६॥
इति ध्यात्वा महामायां पूजयेद्‌गन्धचन्दनैः ।
शक्रादयः सुरगणा एष मन्त्रे निवेदयेत् ॥१९७॥
एवं दीपो मया प्रोक्तो मालायाश्च विधिं शृणु ।

पाँच अंगुल परिमाण की विष्णु वृक्ष (पीपल ?) की लेखनी बनानी चाहिये । सिन्दूर और पीली सरसों से यन्त्रराज की पूजा करनी चाहिये । मदार का दूध, गाय का दूध, बकरी का दूध, हल्दी, हे देवि ! इससे चण्डिकाप्रिय साधक यन्त्र को लिखे । इस दीप में कमल पर बैठी कालिका का सदा ध्यान करना चाहिये । हे देवि ! वह देवी भुक्ति और मुक्ति का देने वाली तथा सुन्दर हास से युक्त है। इस

प्रकार महामाया का ध्यान करके गंध तथा चन्दन से पूजा करे तथा इन्द्रादि देवगण को इस मन्त्र में निवेदित करे । इस प्रकार मैंने दीप को बतला दिया अब माला की विधि को सुनो ।

ग्रंथिता वाजिकेशेन कथिता निम्बबीजिका ॥१९८॥
वश्यार्थेषु विधिश्चायं मालायाः प्राणवल्लभे ।
चण्डिकाया यंत्रराजे अर्चयित्वा च वीटकम् ॥१९९॥
पश्चादेकैकमुद्धृत्य चर्वयेच्छनकैः सुधीः ।
यावज्जपसमाप्तिः स्यात्तावत्ताम्बूलचर्वणम् ॥२००॥
कोटिमन्त्रं जपित्वा तु वैश्येष्वर्धं निगद्यते ।
ब्राह्मणे द्विगुणं देवि शूद्राणामर्द्धार्द्धकम् ॥२०१॥
स्त्रीणां च द्विगुणं प्रोक्तं यतः शक्तिरूपिणी ।
जपसंख्यादशांशेन नित्यहोमं च कारयेत् ॥२०१॥
घृतत्रयं समानीय गोदुग्धं तण्डुलं तिलम् ।
शाकुलीं यवचूर्णस्य कर्पूरं च हरिद्रिकाम् ॥२०३॥
निम्बकाष्ठं समानीय कृत्वा च चतुरंगुलाम् ।
शर्करामिश्रितं कृत्वा जहुयाद्भावभक्तितः ॥२०४॥

हे प्राणवल्लभे ! नीमे के बीजों को घोड़े के बाल से गूंथकर माला बनानी चाहिये। वशीकरण कर्म में माला की यह विधि है । चण्डिका के यन्त्रराज में पान के बीड़े की पूजा करने के बाद एक-एक बीड़ा उठाकर धीरे-धीरे सुधी साधक जप की समाप्ति पर्यन्त चबता रहे। एक करोड़ मन्त्र का जप करना चाहिये । वैश्य में आधा कहा जाता है। हे देवि ! ब्राह्मण में दूना, शुद्र में चौथाई तथा स्त्री में दूना कहा गया है क्योंकि वह शक्तिरूपिणी है। चार अंगुल लम्बी नीम की समिधाएँ लाकर शकर लपेट कर भक्तिभाव से हवन करे ।

पंञ्चकोणयुतं कुण्डं सम्पूज्य विधिना ततः ।
मन्त्रो नवाक्षरः प्रोक्तो वश्ये स कथितो मया ॥२०५॥
मारणे मोहने वश्मे भोजनं त्वेकमुच्यते ।
तृतीयप्रहरे देवि भोजनं लवणं विना ॥२०६॥
माषस्य द्विदलं सुभ्रु तण्डुलं मिलितद्वयम् ।
गोघृतं मधुसंयुक्तमिश्रितं पयसा प्रिये ॥२०७॥
अभावे भोजनं देव्या यद्यत्प्राप्तं तदेव हि ।
भोजने क्लेशसङ्कर्तुः प्रयोगोऽफलदो भवेत् ॥२०८॥

इसके बाद विधि से पाँच कोणों वाले कुंड की विधिपूर्वक पूजा करनी चाहिये । मैंने वशीकरण कर्म में नवाक्षर मन्त्र को कहा है। मारण, मोहन तथा वशीकरण में एक समय भोजन करना कहा गया है। हे देवि ! तीसरे पहर बिना नमक के भोजन करे। हे सुभ्रु, हे प्रिये ! उड़द की दाल, भात, गाय के घी, तथा मधु से मिश्रित दूध के साथ खाना चाहिये । देवी के भोजन के अभाव में जो प्राप्त हो उसे ही भोजन करना चाहिये । भोजन में क्लेश करने वाले साधक का प्रयोग असफल होता है।

विधिर्वै मन्त्रराजस्य कथितः प्राणवल्लभे ।
शैवेन शाक्तविप्रेण कर्त्तव्यो निश्चितं प्रिये ॥२०९॥
इति वश्यम् ॥४॥

हे प्राणवल्लभे ! मन्त्रराज की विधि कही गई। हे प्रिये ! शैव तथा शाक्त विप्रों को यह विधि अवश्य करनी चाहिये । इति वशीकरण समाप्त।

स्तम्भनप्रयोगो यथा ।

कर्त्तव्यदिवसात्पूर्वं स्नानार्थं चिन्तयेद्बुधः ।
दिनानि विंशतिं वामे पूर्वं कार्यो विधिस्तनोः ॥२१०॥
शरीर शोधनं कार्यं मदिराक्षि विनिश्चितम् ।
योषित्पादजलं कान्ते विवाहात्स्पर्शवर्जितम् ॥२११॥
कूपत्रयं सरश्चैकं सरित्त्रितसङ्गतम् ।
एषां जलं समानीय संक्षिपेल्लोहके घटे ॥२१२॥
जम्बीरपत्रमेरण्डहरिद्रापत्रजं जलम् ।
पिष्ट्वा च तण्डुले तोये कारयेत्स्नानमद्भुतम् ॥२१३॥
प्रथमो वदरीवृक्षस्तज्जलेन स्वयं प्रिये ।
त्रिपुंड्रधारणं कृत्वा ललाटे रक्तचन्दनैः ॥२१४॥
आसनं कुर्बुरं कृत्वा कर्बुराम्बरधरः स्वयम् ।
तत्र कमलासने तिष्ठद्दक्षिणस्यां मुखे कृते ॥२१५॥

कर्त्तव्य दिन से पूर्व बुद्धिमान साधक स्नान की चिन्ता करे। हे वामे ! बीस दिन पूर्व शरीर की विधि करनी चाहिये। हे मदिराक्षि ! शरीर का शोधन निश्चित रूप से करना चाहिये। हे कान्ते ! विवाह के दिन पति के स्पर्श से वर्जित स्त्री (विवाहदिनात् अन्यदिनं पुरुषहस्तस्पर्शवर्जितायाः पतिसङ्गमवर्जितायाः) के पैर का जल, तीन कूएँ का जल, एक तालाब का जल, तीन नदियों के सङ्गम का जल इन सब जलों को लाकर लोहे के घड़े में डाले। नीबू के पत्ते, एरंड के पत्ते, हल्दी के पत्तों के जल को, चावल के जल में पीसकर अद्भुत स्नान करे। हे प्रिये ! बेर वृक्ष के जल से पहले स्वयं स्नान करे। ललाट में लाल चन्दन से त्रिपुण्ड धारण करके, चितकबरे आसन पर चितकबरा परिधान धारण कर कम्बलासन पर दक्षिणाभिमुख स्वयं बैठे।

शृणुष्व चापरं कर्म भूमिशोधनमुत्तमम् ।
कदलीतोयमाम्रस्य पत्रं गुञ्जाफलं त्वचम् ॥२१६॥
गोमूत्रं कृष्णसरसः सप्त द्विश्च यथाक्रमम् ।
जलं द्वाभ्यां कराभ्यां च ग्राह्यं हरिणजं मलम् ॥२१७॥
स्तम्भने लेपयेद्भूमिं चक्राकारसमन्विताम् ।

भूमिशोधन के उत्तम अन्य कर्म को सुनो। केले का जल, आम के पत्ते, घुंघची का फल, दालचीनी, क्रमशः कृष्ण (काली मिर्च) सात, सरस (दोनों अगर) दोनों हाथों से कूएँ से निकाला हुआ पानी तथा हरिन के मल, इनसे स्तम्भन कर्म में गोलाकार भूमि को लीपे।

मृगरक्तं च कर्णोत्थं वामकर्णत्वचां प्रिये ॥२१८॥
आम्र बर्बुरकाष्ठं च चन्दनी रक्तश्वेतकौ ।
विजया कुटकी शण्ठी सिता च सैन्धवं शुभे ॥२१९॥
गङ्गोदकेन सम्पेष्य लेखनी वंशसम्भवा ।
पञ्चांगुलप्रमाणेन कटिनम्रात्स्वयं लिखेत् ॥२२०॥

हे प्रिये ! हिरन के दाहिने कान का रक्त तथा उसके बायें कान का चमड़ा, आम का काष्ठ, बबूल

का काष्ठा, सफेद चन्दन, लाल चन्दन, विजया, कुटकी, सोंठ, चीनी, सेंधा नमक, हे शुभे ! इन्हे गङ्गाजल से पीसकर पञ्चांगुल प्रमाण बाँस की लेखनी बनाकर कटिनग्रासन से स्वयं लिखे ।

पूजनं यन्त्रराजस्य जगन्मातुश्शुभे शृणु ।
कूपोदकं समानीय मिश्रयेत्कदलीजलैः ॥२२१॥
कुशानि नव सम्बध्य मेषकेशेन निश्चितम् ।
तेनैव स्नापयेद्यन्त्रं प्रीतिपूर्वं शुभानने ॥२२२॥
धूम्रपुष्पं गौरिकं च हरितालं मसूरिका ।
गङ्गायास्सिकताशुद्धं शुद्धं गङ्गोदकं प्रिये ॥२२३॥
चन्दनौ द्वौ मया प्रोक्तौ मेषीदुग्ध तथा प्रिये ।
एभिः पूजा प्रकर्थव्या यन्त्रराजस्य निश्चितम् ॥२२४॥
विस्तृतं न मयोक्तं वै सामान्यं कथितं शुभे ।

हे शुभे ! जगन्माता के यन्त्रराज का पूजन सुनो । कूओं से जल लाकर केले के जल में मिलाये । नव कुशाओं को भेंड़ के बालों से बाँधकर उसी से प्रीतिपूर्वक मन्त्र को स्नान कराये । तीसी का फूल, गेरू, हरिताल, मसूर, हे प्रिये ! इन द्रव्यों से निश्चित रूप से यन्त्रराज की पूजा करनी चाहिये । हे शुभे ! मैंने विस्तार से नहीं कहा है । सामान्य रूप से ही कहा है । (पूजन मन्त्र : शरणागतदीनार्तपरित्राणपरायणे । सर्वस्यार्तिहरे देवि नारायणि नमोस्तु से । इति मन्त्रेण सर्व दद्यात्) ।

अतः परं शृणुष्वाद्य विधिं धूपस्य निर्मलम् ॥२२५॥
साधकानां ध्रुवं सिद्धिर्धूपेनैव प्रजायते ।
स्तम्भने कारणं देवि धूप एव निगद्यते ॥२२६॥
धूपमाहात्म्यमतुलं डामरे कथितं मया ।
धूपवार्तां न जानन्ति डामरे विमुखा नराः ॥२२७॥
कथं सिद्धिर्भवेत्तेषां विपरीते शुभानने ॥२२८॥

अब इसके आगे धूप की निर्मल विधि सुनो । साधकों को धूप से ही सिद्धि होती है । हे देवि ! स्तम्भन में कारण धूप ही कहा जाता है । मैंने धूप का अतुल माहात्म्य डामर तन्त्र में कहा है । डामर तन्त्र से विमुख जन धूप के सम्बंध में नहीं जानते । हे शुभानने ! ऐसे विपरीत लोगों को सिद्धि कैसे प्राप्त हो सकती है ?

अर्कबीजं तथा पुष्पं पत्रं मूलं च काष्ठकम् ।
लवगं हरितालं च हिंगुगैरिकतण्डुलम् ॥२२९॥
बिल्वसारं गुडं तैलं सुगन्धीयं वचं तथा ।
नागरं देवदारुं च पीतसर्षपजं मलम् ॥२३०॥
गोघृतं नवनीतं च सिता पूगीफलं तथा ।
एतैर्धूपो विशेषेण कर्त्तव्यः प्राणवल्लभे ॥२३१॥
स्तम्भने कारणं देवि दीप एव निगद्यते ।
काष्ठादीपः प्रकर्तव्यस्तैलं कृष्णतिलस्य च ॥२३२॥
निम्बतैलं च श्रेष्ठोरु कर्पूरस्य रसस्तथा ।
शणस्य वर्तिका कार्या सप्तांगुलप्रमाणिका ॥२३३॥

विलेप्य पृथिवीं वामे पञ्चकोणयुतां शुभाम् ।
पिप्पली लेखनी कार्या त्रयांगुलयुता प्रिये ॥२३४॥
लिखेद्यन्त्रं विशालाक्षि साधकः प्रेमतत्परः ।
शङ्खतोयं हरिद्रा च जम्बीरस्य रसस्तथा ॥२३५॥
एभिर्लिखेत्सदा यन्त्रं दीपः स्थाप्यश्च दक्षिणे ।
अंगुलत्रयसंयुक्ते पूजयेच्छेतचन्दनैः ॥२३६॥
ध्यायेद्दीपे सदानन्दकारणीं सिन्धुजा शुभाम् ।
सावर्णिस्सूर्यतनय इति मन्त्रे निवेदयेत् ॥२३७॥
एवं दीपो मया प्रोक्तो मालायाश्च विधिं शृणु ।

मदार का बीज, मदार का फूल, मदार का पत्र, मदार की जड़, मदार की लकड़ी, लौंग, हरिताल, हींग, गेरू, चावल, बेल का गूदा, गुड, तेल, सुगन्धि, बच, नागरमोथा, देवदारु, पीली सरसों का कल्क, गाय का घी, मक्खन, चीनी तथा सुपारी, हे प्राणवल्लभे ! इनसे धूप बनाना और 'ज्ञानतोज्ञानतो वापि बलिपूजां तथा कृतांग्रीणि ह्रीं' इस मन्त्र से धूप देना चाहिये । हे देवि ! स्तम्भन में कारण दीप ही कहा जाता है । काठ का दीप बनना चाहिये तथा उसमें काले तिल का तेल, नीम का तेल तथा कपूर का रस डालकर सात अंगुल लम्बी सन की बत्ती बनानी चाहिये । हे वामे ! पाँच कोण युक्त शुभ भूमि को लीपकर तीन अंगुल लम्बी पीपल की लेखनी बनानी चाहिये । हे विशालाक्षि ! साधक प्रेम से तत्पर होकर यन्त्र को लिखे । शङ्ख का जल, हल्दी तथा जम्बीरी नीबू का रस इनसे सदा यन्त्र लिखना चाहिये, उसके दायें तीन अंगुल पर दीप को रखना चाहिये तथा सफेद चन्दन से पूजा करनी चाहिये । दीप सदा आनन्दकारिणी, समुद्र से उत्पन्न शुभ लक्ष्मी का ध्यान करना चाहिये । 'सावर्णिः सूर्यतनयो यो मनुः कथ्यतेष्टमः । निशामय तदुत्पत्तिं बिस्तराद्गदतो मम' इस मन्त्र से सब निवेदित करना चाहिये । इस प्रकार मैंने दीप के बारे में कहा है अब माला की विधि सुनो ।

स्तम्भने स्फटिकामाला तूलिकासूत्र ग्रन्थिता ॥ २३८ ॥
चण्डिकायै यन्त्रराजे अर्चयित्वा च वीटकम् ।
पश्चादेकैकमुद्धृत्य चर्वयेच्छनकैः सुधीः ॥ २३९ ॥
यावज्जपसमाप्तिः स्यात्तावत्ताम्बूलचर्वणम् ।

स्तम्भन में स्फटिक की माला कपास के सूत्र में गूथ कर बनानी चाहिये । यन्त्रराज में चण्डिका के लिए पान के बीडे की पूजा करके बाद में एक - एक उठाकर सुधी साधक को धीरे - धीरे चबाना चाहिये । जब तक जप समाप्त न हो जाय तब तक पान चबाते रहना चाहिये ।

स्तम्भने षोडश लक्षं वैश्येष्वर्धं निगद्यते ॥ २४० ॥
ब्राह्मणे द्विगुणं देवि शूद्राणामर्द्धार्द्धकम् ।
स्त्रीणां च द्विगुणं प्रोक्तं यतः सा शक्तिरूपिणी ॥ २४१ ॥
जपमेव दशांशेन नित्यहोमं च कारयेत् ।
अजाघृतं गोघृतं तु मेषी दुग्धं च तण्डुलम् ॥ २४२ ॥
तिलमैरण्डबीजं च शणबीजं लवङ्गकम् ।
शष्कुली चणकान्नस्य सितया मिश्रितेन च ॥ २४३ ॥
काष्ठं चन्दनवृक्षस्य नवांगुलसमन्वितम् ।
कुण्डं षट्कोणकं कृत्वा जुहूयादेकमानसः ॥ २४४ ॥

स्तम्भन में जप सोलह लाख है । हे देवि ! वैश्यों में इसका आधा, ब्राह्मण में दूना तथा शूद्र में चौथाई जप होता है । स्त्री के लिये दूना कहा गया है क्योंकि वह शक्तिरूपिणी है । 'ॐ ठं ठं ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे देवदत्तं ह्रीं वाचं मुखं पदं स्तम्भय ह्रीं जिह्वां कीलय कीलय ह्रीं बुद्धिं विनाशय विनाशय ह्रीं ॐ ठंठं स्वाहा' इस मन्त्र का जप करना चाहिये । जप के दशांश से नित्य होम करना चाहिये । बकरी का घी, गाय का घी, भेंड का दूध, चावल, तिल, एरण्ड का बीज, शण का बीज, लवङ्ग, चीनी मिले चने के आटे की पूरी, नव अंगुल परिमाण चन्दन वृक्ष की समिधों से षट्कोण यज्ञकुण्ड बनाकर एकाग्रचित्त होकर हवन करे ।

स्तम्भने तु मसूरस्य द्विदलं चणकस्य च ।
तण्डुले मेलयित्वा च भोक्तव्यं साधकेन वै ॥ २४५ ॥
तृतीयप्रहरे देवि साधकेनैव निश्चितम् ।
वर्जितं रसराजेन कार्यसिद्धिर्भवेद ध्रुवम् ॥ २४६ ॥
अभावे भोजनं देव्या यत्तत्प्राप्तं तदेव हि ।
भोजने क्लेशसंकर्तुः प्रयोगोऽफलदो भवेत् ॥ २४७ ॥
विधिर्वै मन्त्रराजस्य कथितः प्राणवल्लभे ।
शैवेन शाक्तविप्रेण कर्तव्यो निश्चितं प्रिये ॥ २४८ ॥

इति स्तम्भनम् ।

हे देवि ! स्तम्भन में मसूर और चने की दाल चावल में मिलाकर तीसरे पहर निश्चित रूप से बिना नमक साधक को खाना चाहिये । देवी के भोजन में से जो प्राप्त हो उसे ही भोजन करना चाहिये । भोजन में कष्ट उठाने वाले का प्रयोग असफल होता है । हे प्राणवल्लभे ! मन्त्रराज की यह विधि मैंने बतला दी है । हे प्रिये ! शैव और शाक्त विप्र साधकों को इसे अवश्य करना चाहिये ।

इति स्तम्भन समाप्त

विद्वेषणप्रयोगे यथा ।
कर्तव्यदिवसात्पूर्वं स्नानार्थं चिन्तयेद्बुधः ।
दिनानि विंशतिं वामे पूर्वं कार्यो विधिस्तनोः ॥ २४९ ॥
शरीर शोधनं कार्यं मदिराक्षि विनिश्चितम् ।

हे वामे ! कर्तव्य दिन के पहले सुधी को स्नान की चिन्ता करनी चाहिये । बीस दिन पूर्व शरीर शोधन की विधि करनी चाहिये । हे मदिराक्षि ! शरीर शोधन निश्चित रूप से करना चाहिये ।

शिशुपादोद्भवं तोयं कूपाद्वादशकं शुभे ॥ २५० ॥
तडागसप्तदश च नदीनां च जलं तथा ।
एतज्जलं समानीय संक्षिपेद्राजते घटे ॥ २५१ ॥
संपेष्य तिलतैलेन स्नानं कृत्वा विशेषतः ।
त्रिपुण्ड्रधारणं कृत्वा ललाटे रक्तचंन्दनैः ॥ २५२ ॥
विद्वेषे चासनं धूम्रं धूम्राम्बरधरः स्वयम् ।
पृष्ठपातासने निष्ठेदुत्तरस्यां मुखे कृते ॥ २५३ ॥

हे शुभे ! बच्चे के पैर का जल, बारह कूएँ का जल, सत्रह तालाबों और नदियों का जल, यह सब जल लाकर चाँदी के घड़े में डाले । तिल के तेल की मालिश करके विशेष रूप से स्नान करे । ललाट में लाल चन्दन का त्रिपुण्ड धारण करके विद्वेषण में धूम्र वर्ण के आसन पर धूम्र वर्ण का परिधान धारण कर उत्तराभिमुख पृष्ठपातासन से स्वयं बैठे ।

शृणुष्व चापरं कर्म भूमिशोधनमुत्तमम् ।
गैरिकं हरितालं च लवणं सैधवं तथा ॥ २५४ ॥
कूपैकाज्जलमानीय कन्याहस्ताद्विचक्षणः ।
पुरीषं वाजिनश्चैव मृदमारण्यसम्भवाम् ॥ २५५ ॥
एभिर्विशोध्य पृथिवीं विद्वेषार्थे जपेद्बुधः ।
उष्ट्रग्रीवोद्भवं रक्तं गृह्णीयाद्दक्षपाणिना ॥ २५६ ॥
एलाफलं तेजपत्रं तत्फलं तत्त्वचा मधु ।
अजादुग्धेन सम्पेष्य करोति मिश्रितं बुधः ॥ २५७ ॥
लेखनी कण्टकी कार्या आम्नायै च शुभेक्षणे ।
त्र्यंगुलस्य प्रमाणेन हस्तं कृत्वा गृहे तथा ॥ २५८ ॥
वामेनैव लिखेद्यन्त्रमिष्टकार्यार्थसिद्धये ।
एषा लेखनकौशल्या मदिराक्षि मयोदिता ॥ २५९ ॥

दूसरा उत्तम भूमिशोधन कर्म सुनो । गेरू, हरिताल, सेंधा नमक के साथ सुधी साधक कन्या के हाथ से एक कूओं से जल निकलवाकर घोड़े की लीद, जङ्गल की मिट्टी, इनसे पृथिवी को शुद्ध करे तथा विद्वेषण के लिये बुद्धिमान् साधक जप करे । ऊँट के गर्दन का रक्त दाहिने हाथ से ले और इलाइची, तेजपात, जायफल, दालचीनी, बकरी के दूध से पीसकर बुद्धिमान साधक मिलावे । हे शुभेक्षणे ! कण्टकी वृक्ष के डाल की तीन अंगुल प्रमाण लम्बी लेखनी लेकर इष्ट कार्य की सिद्धि के लिए बाएँ हाथ से यन्त्र को लिखे । हे मदिराक्षि ! यह लेखन कुशलता मैंने बतला दी ।

पूजनं यन्त्रराजस्य जगन्मातुश्शुभे शृणु ।
लवङ्गं मरिचं शुण्ठी कटुका त्रिफला मधु ॥ २६० ॥
एतान्पिष्ट्वा शुभे तोये पञ्चकूपोद्धृते तथा ।
मिश्रितं मधुना कुर्यात्कुशा द्वादशसम्मिताः ॥ २६१ ॥
बन्धिता शणसूत्रेण स्नापयेच्चण्डिकां प्रिये ।

हे शुभे ! जगन्माता के यन्त्रराज का पूजन तुम सुनो । लवङ्ग, मिर्च, सोंठ, कटुका, त्रिफला, मधु इन्हें पाँच कूओं से निकाले जल में पीसकर मधुसे मिलाकर बारह कुशाओं को इकट्ठा करके सन के सूत्र से बाँधकर हे प्रिये ! चण्डिका को स्नान करावे । "सर्वाबाधा प्रशमनं त्रैलोकस्याखिलेश्वरि । एवमेतत्वया कार्यमस्वद्वैरिविनाशनम् ।" इति मन्त्रेण सर्व दद्यात् ।

भृङ्गराजरसं सुभ्रु चन्दनं श्वेतरक्तकम् ॥ २६२ ॥
सिन्दूरं विजयापत्रमर्कमूलं पयस्तथा ।
एभिः प्रपूजयेद्देवि यन्त्रराजं विचक्षणः ॥ २६३ ॥
विस्तृतं न मयोक्तं ते सामान्यं कथितं शुभे ।
अतः परं शृणुष्वाद्य विधिं धूपस्य निर्मलम् ॥ २६४ ॥

हे सुभ्रु, भृङ्गराज का रस, सफेद तथा लाल चन्दन, सिन्दूर, भँग के पत्ते, मदार की जड़ तथा दूध इनसे हे देवि, बुद्धिमान साधक यन्त्रराज की पूजा करे । हे शुभे, मैंने तुम्हें विस्तार से नहीं कहा है, सामान्य रूप से ही कहा है । इसके आगे निर्मल धूप की आद्य विधि सुनो ।

अथ धूपविधि :

साधकानां ध्रुवं सिद्धिर्धूपेनैव प्रजायते ।
विद्वेषे कारणं देवि धूप एव निगद्यते ॥ २६५ ॥
धूपमाहात्म्यमतुलं डामरे कथितं मया ।
धूपवार्तां न जानन्ति डामरे विमुखा नराः ।
कथं सिद्धिर्भवेत्तेषां विपरीते शुभानने ॥ २६६ ॥

साधकों की निश्चित सिद्धि धूप से होती है । हे देवि, विद्वेषण में कारण धूप ही कहा गया है। मैंने डामर तन्त्र मे बहुत - सा धूममाहात्म्य कहा है । जो लोग डामर तन्त्र से विमुख हैं वे धूप की वार्ता को नहीं जानते । हे शुभानने, ऐसी विपरीत दशा में उनको सिद्धि कहाँ से प्राप्त हो सकती है ?

गुग्गुलुं लोहबाणं च हरिद्रां तजमेव च ।
हिंगुगैरिककर्पूरमासुरीं दालकं मधु ॥ २६७ ॥
लवङ्गं मृगनाभिं च चन्दनद्वयचूर्णकम् ।
कटुकां पिप्पलीं देवदारुं नागरतागरी ॥ २६८ ॥
महिषीघृतदुग्धे च सिताद्वयं गुडं प्रिये ।
एकत्र चूर्णयेत्सर्वान् धूपं कृत्वा विधानवित् ॥ २६९ ॥
पञ्च मन्त्रान्पठित्वा तु साधको गद्‌गदाकृतिः ।
एकचित्तं समाधाय धूपं कुर्याद्विचक्षणः ॥ २७० ॥

गुग्गुल, लोहबान, हल्दी, तज, हींग, गेरू, कपूर, राई, उद्दालक मक्षिका का मधु, लौंग, कस्तूरी, सफेद तथा लाल चन्दन का चूरा, कटुका, पिप्पली, देवदारु, नागरमोथा, तगर, हे प्रिये, भैंस का दूध तथा घी, चीनी, मिश्री तथा गुड़, इन्हें विधान जानने वाला साधक इकट्ठा करके पीसकर धूप बनाकर गद्‌गद आकृति का होकर मन्त्र को पञ्चधा पढ़कर एकाग्रचित्त होकर वह बुद्धिमान साधक धूप देवे । "ॐ इत्थं यदायदा बाधा दानवोत्था भविष्यति । तदातदावतीर्याहं करिष्याम्यरिसंक्षयं नमः । इति मन्त्रं पञ्चधा पठित्वा धूपयेत् ।

विद्वेषे कारणं देवि दीप एव निगद्यते ।
ताम्रदीपश्च गोमूत्रं तैलं श्वेततिलस्य च ॥ २७१ ॥
एरण्डस्य तथा तैलं वर्तिः कार्या च तौलिका ।
दशांगुलप्रमाणेन पृथ्वी लेप्या नवांगुला ॥ २७२ ॥
बर्बुरीलेखनी कार्या ह्यंगुलत्रयनिर्मिता ।

हे देवि, विद्वेषण कार्य में दीप ही कारण कहा जाता है । इसमें ताँबे का दीप, गोमूत्र, सफेद तिल का तेल तथा रेण के तेल में दश अंगुल लम्बी कपास की बत्ती रखना चाहिये । नव अंगुल पृथिवी को लीप देना चाहिये । बबूल की लकड़ी की तीन अंगुल लम्बी लेखनी बनानी चाहिये ।

यवचूर्णेन वामोरु कन्यायाश्च रसेन वै ॥ २७३ ॥
लिखेद्यन्त्रं प्रिये प्रेम्णा दीपः स्थाप्यश्च दक्षिणे ।
अंगुलैकप्रमाणेन पूजयेद्रक्तचन्दनैः ॥ २७४ ॥
दीपमध्ये सदा ध्यायेच्चण्डिकां चण्डनाशिनीम् ।
इति ध्यात्वा महामायां पूजयेद्रक्तचन्दनैः ॥ २७५ ॥
शूलेन पाहि नो देवि इति मन्त्रे निवेदयेत् ।

हे वामोरु, जव का आटा घृतकुमारिका के रस में मिलाकर उससे मन्त्र को लिखे । हे प्रिये, प्रेम से दीपक को देव के दक्षिण भाग में स्थापित करे । एक अंगुल प्रमाण लाल चन्दन के टुकड़ों से पूजा करे । दीप के बीच में चण्डनाशिनी चण्डिका का ध्यान करे । इस प्रकार स्नान करके लाल चन्दन से महामाया की पूजा करे । "शूलेन पाहि नो देवि पाहि खड्गेन चाम्बिके । घण्टास्वनेन नः पाहि चापज्यानिःस्वनेन च" इस मन्त्र से दीप निवेदित करे । इस तरह मैंने दीपक के बारे में बता दिया है । अब माला की विधि सुनो ।

अथ मालाविधि :

विद्वेषे बदरीबीजग्रंथिता कीटरोमकैः ।
माला या च मया प्रोक्ता साधकानां हिताय च ॥ २७७ ॥
चण्डिकायै यन्त्रराजे अर्चयित्वा च वीटिकम् ।
पश्चादेकैकमुद्धृत्य चर्वयेच्छनकैः सुधीः ॥ २७८ ॥
यावज्जपसमाप्तिः स्यात्तावत्ताम्बूलचर्वणम् ।
जपेत्त्रयोदशं लक्षं वैश्येवर्ध्दं निगद्यते ॥ २७९ ॥
ब्राह्मणे द्विगुणं देवि शूद्राणामर्द्धकार्द्धकम् ।
स्त्रीणां च द्विगुणं प्रोक्तं यतः सा शक्तिरूपिणी ॥ २८० ॥
जपान्ते तद्दशांशेन नित्यहोमं च कारयेत् ।

विद्वेषण कर्म में बेर के बीजों को रेशम के धागे से गूथ कर बनायी गयी माला मैंने साधकों के हित के लिए कही है । चण्डिका के लिए यन्त्रराज में पान के बीड़े की पूजा करके बाद में सुधी साधक एक - एक बीड़ा उठाकर धीरे - धीरे चबाये । जब तक जप की समाप्ति न हो तब तक पान चबाना चाहिये । जप तेरह लाख कहा गया है । (जप का मन्त्र : ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे हुं अमुकामुकेन विद्वेषणं कुरु-कुरु स्वाहा) वैश्यों में आधा, हे देवि, ब्राह्मण में दूना तथा शूद्र में चौथाई कहा गया है । स्त्री में दूना कहा गया है, क्योंकि वह शक्तिस्वरूपिणी है । जप के अन्त में उसके दशांश से नित्य होम कराये ।

गोघृतं तिलतैलं च यवं कृष्णातिलाः प्रिये ॥ २८१ ॥
द्विदलं चणकस्यैव कर्पूरं चन्दनं जतुः ।
देवदारु वचा दालमर्ककाष्ठं शुभानने ॥ २८२ ॥
दुग्धं उरूथवृक्षस्य हिंगु गैरिकमेव च ।
काष्ठं पञ्चांगुलमितं कुर्यात्कुण्डं त्रिकोणतः ॥ २८३ ॥
जुहुयाद्वारुणीं पश्चात्साधको विमलाशयः ।
मन्त्रं नवाक्षरं प्रोक्तं विद्वेषे कथितं मया ॥ २८४ ॥
विद्वेषे भोजनं कार्यं देवि गोधूमतण्डुलौ ।
मुनिवृक्षस्य द्विदलं सैंधवेन युतं प्रिये ॥ २८५ ॥
अभावे भोजनं देवि यत्तत्प्राप्तं तदेव हि ।
भोजने क्लेशसंकर्तुः प्रयोगोऽफलदो भवेत् ॥ २८६ ॥
विधिर्वै मन्त्रराजस्य कथितः प्राणवल्लभे ।
शैवेन शाक्तविप्रेण कर्तव्यं निश्चितं प्रिये ॥ २८७ ॥

कार्यं विचक्षणेनैव चण्डिकाकिङ्करेण वै ।
मयोक्तं देवि मन्त्रस्य चण्डिकायाः प्रियस्य च ॥ २८८ ॥
इति डामरे रावणकृते शतहसस्रप्रतिबद्धे चतुःषष्ठोल्लासे
नवार्णमन्त्रराजषट्प्रयोगाः ।

हे प्रिये, गाय का घी, तिल का तेल, जव, काला तिल, चने की दाल, कपूर, चन्दन, लाख, हे शुभानने, देवदारु, वच, दालचीनी, मदार की लकड़ी, उरूथ वृक्ष का दूध, हींग, गेरू, पाँच अंगुल, लम्बी समिधा तथा त्रिकोण यज्ञकुण्ड बनाये । विमल विचारों वाला साधक सुरा का होम करे । मैंने विद्वेषण में नवाक्षर मन्त्र कहा है । हे देवि, हे प्रिये, विद्वेषण में भोजन गेहूं, चावल, मुनिवृक्ष (तूर) की दाल, सेंधा नमक से युक्त करना चाहिये । हे देवि, अभाव में जो प्राप्त हो उसे ही भोजन करना चाहिये । भोजन में क्लेश करने वाले का प्रयोग असफल होता है । हे प्राणवल्लभे, यह मन्त्रराज की विधि मैंने बताया है । शैव तथा शाक्त विप्र साधकों को इसे अवश्य करना चाहिये । जो चण्डिका का सेवक, भक्त और बुद्धिमान् है ऐसे साधकों को इस मेरे द्वारा कहे गये मन्त्र की साधना अवश्य करनी चाहिये।

इति डामर में रावणकृत शतहसस्र प्रतिबद्ध चतुःषष्ठोल्लास में
नवार्णमन्त्रराज षट्प्रयोग ।

नवार्णमहामन्त्रस्वरूपं यथा - मन्त्रो यथा :

"ॐ ऐं ह्रीं क्लीं महादुर्गे नवाक्षरीनवदुर्गे नवात्मिके नवचण्डीमहामाये महामोहे महायोगेगनिद्रे जये मधुकैटभविद्राविणि महिषासुरमर्दिनि धूम्रलोचनसंहन्त्रि चण्डमुण्डविनाशिनि रक्तबीजान्तके निशुम्भध्वंसिनि शुम्भदर्पघ्नि देवि अष्टादशबाहुके कपालखट्वाङ्गशूलखड्गखेटकधारिणी छिन्नमस्तकधारिणी रुधिरमांसभोजिनि समस्तभूतप्रेतादियोगध्वंसिनि ब्रह्मेन्द्रादिस्तुते देवि मां रक्षरक्ष मम शत्रून् नाशयनाशय ह्रीं फट् हूं फट "ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे" इति महामन्त्रः ।

अस्य विधानम् ।

ऋष्यादिकं न्यासादिकं च पूर्ववत् कृत्वा ध्यायेत् ।

इसका विधान : ऋष्यादि न्यास पूर्ववत् करके ध्यान करे ।

अथ ध्यानम् ।

अरुणकमलसंस्था तद्रजःपुञ्जवर्णा करकमलधृतेष्टाभीतियुग्मांबुजा च । मणिमुकुटविचित्रालंकृता कल्पजातैर्भवतु भुवनमाता सन्ततं श्रीः श्रिये च । ॥ १ ॥ इन्दुप्रख्यामिन्दुखण्डार्धमौलिं शङ्खाभीष्टामीतिहस्तां त्रिनेत्राम् । हेमाब्जस्थां पीतवस्त्रां प्रसन्नां देवीं दुर्गां दिव्यरूपां नमामि ॥ २ ॥ पञ्चाशद्वर्णभेदैर्विहितवदनयोः पादहृत्कुक्षिवक्षोदेशां भास्वत्कपर्दाकलितशशिकलामिन्दुकुन्दावदाताम् ॥ अक्षस्रक्कुम्भचिन्तालिखितवरकरां तीक्ष्णपद्मासनस्थामच्छाकल्पामतुच्छस्तनजघनभरां भारतीं तां नमामि ॥ ३ ॥

इति ध्यात्वा नर्वार्णवत् पीठपूजामावरणपूजां च कृत्वा जपं कुर्यात् । अस्य सम्पुटितपाठहोमेऽपि आहुतिसंख्या सप्तशतैव । इति नवार्णमहामन्त्रः । इति नवार्णमन्त्रप्रयोगः ।

इस प्रकार ध्यान और नवार्ण के समान पीठपूजा तथा आवरणपूजा करके जप करे । इसके सम्पुटित पाठ तथा होम में भी आहुति संख्या सात सौ है ।

नवार्ण महामन्त्र - प्रयोग समाप्त ।

अथ दुर्गे स्मृतामन्त्रप्रयोगः ।

मन्त्रो यथा : "ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं कांसो स्मितां हिरण्यप्राकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीं पद्मेस्थितांपद्मवर्णान्तामिहोपह्वयेश्रियम् । ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तोः स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि । यदन्ति यच्च दूरके भयं विन्दति मामिह । पवमानवितज्जहि । दारिद्र्यदुःखभयहारिणि का त्वदन्या सर्वोपकारकरणाय सदार्द्रचित्ता ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं कांसोस्मितांहिरण्यप्राकारामार्द्रांज्वलतींतृप्तान्तपर्यन्ती पद्मेस्थितां पद्मम् वर्णां तामि होपह्वयेश्रियम् । ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे" इति मन्त्रः ।

अस्य विधानम् ।

विनियोग : दुर्गे स्मृता इति मन्त्रस्य हिरण्यगर्भऋषिः । उष्णिक् छंदः । श्रीमहामाया देवता । शाकम्भरी शक्तिः । दुर्गा बीजम् । श्रीं वायुस्तत्वम् । ममचतुर्विधपुरुषार्थसिद्धये जपे विनियोगः ।

ऋष्यादिन्यास : ॐ हिरण्डगर्भऋषये नमः शिरसि ॥ १ ॥ उष्णिकछन्दसे नमः मुखे ॥ २ ॥ श्रीमहामायादेवतायै नमः हृदि ॥ ३ ॥ शाकम्भरीशक्तये नमः दक्षिणस्तने ॥ ४ ॥ दुर्गाबीजाय नमः वामस्तने ॥ ५ ॥ श्रीं वायुत्त्वाय नमः हृदि ॥ ६ ॥ विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ॥ ७ ॥ इति ऋष्यादिन्यासः ।

करन्यास : ॐ दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तोः इत्यंगुष्ठाभ्यां नमः ॥ १ ॥ स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि इति तर्जनीभ्यां नमः ॥ २ ॥ यदन्ति यच्च दूरके भयं विन्दति मामिह मध्यमाभ्यां नमः ॥ ३ ॥ पवमानवितज्जहि अनामिकाभ्यां नमः ॥ ४ ॥ दारिद्र्यदुःखभयहारिणि का त्वदन्या कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥ ५ ॥ सर्वोपकारकरणाय सदार्द्रचित्ता करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥ ६ ॥ इति करन्यासः ।

इसी प्रकार हृदयादि षडङ्गन्यास करके ध्यान करे ।

अथ ध्यानम् ।

केनोपमा भवतु तेऽस्य पराक्रमस्य रूपं च शत्रु भयकार्यतिहारि कुत्र । चित्ते कृपा समरनिष्ठुरता च दृष्टा त्वयेव देवि वरदे भुवनत्रयेऽपि ॥ १ ॥

इति ध्यात्वा मानसोपचारैः सम्पूज्य योनिमुद्रया नत्वा जपं कुर्यात् । महत्कार्ये लक्षमयुतं हसहस्रमष्टोत्तरशतं जप्त्वा सकलकार्यसिद्धिर्भवति दशांशक्षीराज्यहवनं दशांशतर्पणमार्जनसुवासिनिब्राह्मणभोजनं च कुर्यात् ।

इति दुर्गेस्मृतामन्त्रप्रयोगः ।

इस प्रकार ध्यान, मानसोपचारों से पूजा और योनिमुद्रा से नमस्कार करके जप करे । बड़े कार्य में लाख या दश लाख जप करे । हजार तथा एक सौ आठ मन्त्र का जप करने से समस्त कार्यों की सिद्धि होती है । दशांश दूध तथा घी से हवन, और तत्तद्दशांश से तर्पण - मार्जन और सुवासिनी ब्राह्मणभोजन कराना चाहिये ।

इति दुर्गेस्मृतामन्त्रप्रयोग ।

अथ शूलिनीदुर्गामन्त्रविधानम् ।

उक्तं च शारदातिलके । मन्त्रो यथा :

"ॐ ज्वलज्वलशूलिनिदुष्टग्रहान् हुं फट् स्वाहा" इति पञ्चदशाक्षरो मन्त्रः ।

अस्य विधानम् ।

विनियोग : ॐ अस्य श्रीशूलिनीदुर्गामन्त्रस्य दीर्घतम ऋषिः । ककुप्छन्दः । शूलनीदुर्गा देवता । सर्वेष्टसिद्धिये जपे विनियोगः ।

ऋष्यादिन्यास : ॐ दीर्घतमऋषये नमः शिरसि ॥ १ ॥ ककुप्छन्दसे नमः मुखे ॥ २ ॥ शूलिनीदुर्गादेवतायै नमः हृदि ॥ ३ ॥ विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ॥ ४ ॥ इति ऋष्यादिन्यासः ।

करन्यास : ॐ शूलिनी दुर्गे हुं फट् अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥ १ ॥ ॐ शूलिनी वरदे हुं फट् तर्जनीभ्यां स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ शूलिनी विन्ध्यवासिनि हुं फट् मध्यमाभ्यां वषट् ॥ ३ ॥ ॐ शूलिन्यसुरमर्दिनि युद्धप्रिये त्रासय हुं फट् अनामिकाभ्यां हुम् ॥ ४ ॥ ॐ शूलिनी देवसिद्धिसुपूजिते नन्दिनि रक्षरक्ष महायोगेश्वरि हुं फट् कनिष्ठिकाभ्यां फट् ॥ ५ ॥ इति करन्यासः ।

हृदयादिपञ्चाङ्गन्यास : ॐ शूलिनी दुर्गे हुं फट् हृदयाय नमः ॥ १ ॥ ॐ शूलिनी वरदे हुं फट् शिरसे स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ शूलिनी विन्ध्यवासिनि हुं फट् शिखायै वषट् ॥ ३ ॥ ॐ शूलिन्यसुरमर्दिनि युद्धप्रिये त्रासय हुं फट् कवचाय हुम् ॥ ४ ॥ ॐ शूलिनि देवसिद्धिसुपूजिते नन्दिनि रक्षरक्ष महायोगेश्वरि हुं फट् अस्त्राय फट् ॥ ५ ॥ इति हृदयादिपञ्चाङ्गन्यासः ।

इस प्रकार न्यास करके ध्यान करे :

अथ ध्यानम् ।

अध्यारूढां मृगेन्द्रं सजलजलधरश्यामलां पद्महस्तैः शूलं बाणं कृपाण मरिजलजगदाचापपाशांवहंतीम् । चन्द्रोत्तंसां त्रिनेत्रां चतसृभिरिसिमत्खेटकं बिभ्रतीभिः कन्याभिः सेव्यमानां प्रतिभटभयदां शूलिनीं भावयामि ॥ १ ॥

इति ध्यात्वा मानसोपचारैः सम्पूजयेत् । ततः पीठादौ रचिते सर्वतोभद्रमण्डले मण्डूकादिपीठदेवताः दुर्गाः पद्धतिमार्गेण संस्थाप्य नवपीठशक्तिः पूजयेत् । पूर्वादिक्रमेण :

इससे ध्यान करके मानसोपचारों से पूजा करे । इसके बाद रचित पीठादि पर सर्वतोभद्र मण्डल में मण्डूकादि पीठदेवता दुर्गा को पद्धतिमार्ग से स्थापित करके नव पीठशक्तियों की पूर्वादि क्रम से इस प्रकार पूजा करे :

ॐ प्रभायै नमः ॥ १ ॥ ॐ मायायै नमः ॥ २ ॥ ॐ जयायै नमः ॥ ३ ॥ ॐ सूक्ष्मायै नमः ॥ ४ ॥ ॐ विशुद्धायै नमः ॥ ५ ॥ ॐ नन्दिन्यै नमः ॥ ६ ॥ ॐ सुप्रभायै नमः ॥ ७ ॥ ॐ विजयायै नमः ॥ ८ ॥ मध्ये ॐ सर्वसिद्धिदायै नमः ॥ ९ ॥ इस प्रकार पूजन करे ।

ततः स्वर्णादिनिर्मितं यन्त्रं मूर्तिं वा ताम्रपात्रे निधाय घृतेनाभ्याज्य तदुपरि दुग्धधारां जलधारां च दत्त्वा स्वच्छवस्त्रेण संशोष्य "ॐ वज्रनखदंष्ट्रायुधाय महासिंहासनाय हुं फट् नमः" इति मन्त्रेण पुष्पाद्यासनं दत्त्वा पीठमध्ये संस्थाप्य पुनर्ध्यात्वा मूलेन मूर्तिं प्रकल्प्य पाद्यादिपुष्पान्तैरुपचारैः सम्पूज्य देव्या आज्ञां गृहीत्वा आवरणपूजां कुर्यात् । तद्यथा । पुष्पाञ्जलिमादाय मूलमुच्चार्य "ॐ संविन्मये परे देवि परामृतरसप्रिये । अनुज्ञां देहि मे दुर्गे परिवारार्चनाय ते ॥ १ ॥" इति पठित्वा पुष्पाञ्जलिं च दद्यात् । इत्याज्ञां गृहित्वा आवरणपूजां कुर्यात् । तथा च षट्कोणकेसरेषु आग्नेयादिचतुष्कोणेषु मध्ये दिक्षु च ।

इस प्रकार पूजा करने के बाद स्वर्णादि से निर्मित यन्त्र या मूर्ति को ताम्रपात्र में रखकर घी से उसका अभ्यङ्ग करके उसपर दुग्धधरा तथा जलधारा डालकर स्वच्छ वस्त्र से उसे सुखाकर "ॐ वज्रनखदंष्ट्रायुधाय महासिंहासनाय हुं फट् नमः" इस मन्त्र से पुष्पाद्यासन देकर पीठ के मध्य स्थापित करके पुनः ध्यान करके मूलमन्त्र से मूर्ति की कल्पना करके पाद्य से पुष्पांजलि दान पर्यन्त उपचारों से पूजा करके देवी की आज्ञा लेकर आवरण पूजा करे । तद्यथा : पुष्पांजलि लेकर मूलमन्त्र का उच्चारण करके "ॐ संविन्मये परे देवि परामृतरसप्रिये । अनुज्ञां देहि में दुर्गे परिवारार्चनाय ते" यह पढ़कर पुष्पांजलि देवे । इस प्रकार आज्ञा लेकर आवरण पूजा करे । षट्कोण केसरों में आग्नेयी आदि चारों कोणों में तथा मध्य दिशाओं में : देखिये चित्र नं० ४ शूलिनी दुर्गापूजनयन्त्रम् ।

आवरणपूजा : ॐ शूलिनि दुर्गे हुं फट् हृदयाय' नमः हृदयश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

इति सर्वत्र ॥ १ ॥ ॐ शूलिनि वरदे हुं फट् शिरसे स्वाहा[३] शिरः श्रीपा० ॥ २ ॥ ॐ शूलिनि विन्ध्यवासिनि हुं फट् शिखायै वषट्[३] शिखाश्रीपा० ॥ ३ ॥ ॐ शूलिन्यसुरमर्दिनि युद्धप्रिये त्रासय हुं फट् कवचाय[४] हुं कवचश्रीपा० ॥ ४ ॥ ॐ शूलिनि देवि सिद्धसुपूजिते नन्दिनि रक्षरक्ष महायोगेश्वरि हुं फट्[५] अस्त्राय फट् ॥ ५ ॥

इससे पञ्चाङ्गों की पूजा करे । इसके बाद पुष्पांजलि लेकर मूलमन्त्र का उच्चारण करके "अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले । भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ।" यह पढ़कर पुष्पांजलि देकर विशेष अर्घ से जलविन्दू डालकर 'पूजितास्तर्पितास्सन्तु' यह कहे । इति प्रथमावरण ।

इसके बाद पूज्यपूजक के मध्य पूर्व दिशा को अन्तराल मानकर तदनुसार अन्य दिशाओं की कल्पना करके प्राची क्रमसे :

ॐ दुर्गायै नमः[७] । दुर्गाश्रीपा० ॥ १ ॥ ॐ वरदायै नमः[८] । वरदाश्रीपा० ॥ २ ॥ ॐ विन्ध्यवासिन्यै नमः[९] । विन्ध्यवासिनि श्रीपा० ॥ ३ ॥ ॐ असुरमर्दिन्यै नमः[१०] । असुरमर्दिनीश्रीपा० ॥ ४ ॥ ॐ युद्धप्रियायै नमः[११] । युद्धप्रिया श्रीपा० ॥ ५ ॥ ॐ देवसिद्धपूजितायै नमः[१२] ॥ देवसिद्धपूजिताश्रीपा० ॥ ६ ॥ ॐ नन्दिन्यै नमः[१३] । नन्दिनीश्रीपा० ॥ ७ ॥ ॐ महायोगेश्वर्यै नमः[१४] । महायोगेश्वरीश्रीपा० ॥ ८ ॥

इससे आठों शक्तियों की पूजा करके पुष्पांजलि देवे । इति द्वितीयावरण ।

इसके बाद पत्राग्रों में इनके अस्त्रों की पूजा करे :

ॐ चक्राय नमः[१५] ॥ १ ॥ ॐ शङ्खाय नमः[१६] ॥ २ ॥ ॐ खड्गाय नमः[१७] ॥ ३ ॥ ॐ गदायै नमः[१८] ॥ ४ ॥ ॐ चापाय नमः[१९] ॥ ५ ॥ ॐ त्रिशूलाय नमः[२०] ॥ ६ ॥ ॐ बाणेभ्यो नमः[२१] ॥ ७ ॥ ॐ पाशाय नमः[२२] ॥ ८ ॥

इस प्रकार आठ अस्त्रों की पूजा करके पुष्पांजलिं देवे । इति तृतीयावरणम् ।

ततः भूपुरे इन्द्रादिदशदिक्पालान् वज्राद्यायुधानि च पूजयित्वा पुष्पांजलिं च दद्यात् ।

इसके बाद भूपुर में इन्द्रादि दश दिक्पालों की तथा वज्र आदि उनके दश आयुधों की पूजा करके पुष्पांजलि देवे ।

इत्यावरणपूजां कृत्वा धूपादिनमस्कारान्तं सम्पूज्य जपं कुर्यात् । अस्य पुरश्चरणं पञ्चदशलक्षजपः । सर्पिषान्नेन दशांशतो होमः । तत्तद्दशांशेन तर्पणं मार्जनं ब्राह्मणभोजनं च कुर्यात् । एवं कृते मन्त्रः सिद्धो भवति सिद्धो च मन्त्रे मन्त्री प्रयोगान् साधयेत् ।

इस प्रकार आवरणपूजा करके धूपदान से लेकर नमस्कार पर्यन्त पूजा और जप करे । इसका पुरश्चरण पन्द्रह लाख जप है । घी तथा अन्न से दशांश होम होता है । होम से दशांश तर्पण, तर्पण से दशांश मार्जन तथा मार्जन से दशांश ब्राह्मण भोजन होता है । ऐसा करने पर मन्त्र सिद्ध होता है । मन्त्र के सिद्ध हो जाने पर साधक प्रयोगों को सिद्ध करे ।

तथा च :

"मनुमेनं जपेन्मन्त्री वर्णलक्षं विचक्षणः ।
सर्पिषान्नेन वा होमस्तद्दशांशमितो भवेत् ॥ १ ॥
इत्थं जपादिभिः सिद्धं कुर्यात्कर्म निजेप्सितम् ।
अष्टोत्तर सहस्रं यस्तिलैस्त्रिमधुरप्लुतैः ।
नित्यं प्रजुहुयात्तस्य शक्तिः स्यादतिमानुषी ॥ २ ॥

तथा च "बुद्धिमान् साधक इस मन्त्र का पन्द्रह लाख जप करे । घी और अन्न से दशांश होम करना चाहिये । इस प्रकार जपादि से अभीष्ट कर्म को सिद्ध करे । जो मनुष्य मधु, शकर, घी से सिक्त तिलों से एक हजार आठ आहुति द्वारा नित्य होम करता है उसको दैवी शक्ति प्राप्त होती है ।

अष्टोत्तरशतं नित्यं सर्पिषा जुहुयान्नरः ।
वाञ्छितं वत्सरादर्वाक् प्राप्नोति महतीं श्रियम् ॥ ३ ॥
पूर्वं होमो भवेन्नृणां सर्ववांछितसिद्धिदः ।
छुरिकाद्यानि शस्त्राणि जप्तानि मनुना मुना ॥ ४ ॥
संसिक्ताज्यविलिप्तानि वितरन्ति जयश्रियम् ।
अश्वत्थार्कसमिद्भिर्वा तिलैर्वा मधुरोक्षितैः ॥ ५ ॥
होमो वै दिशतिक्षिप्रमीप्सितान्मन्त्रिणो वरान् ।

जो मनुष्य एक सौ आठ आहुति से नित्य होम करता है वह एक वर्ष के अन्दर अभीष्ट फल तथा महती लक्ष्मी को प्राप्त करता है । पहले होम करना मनुष्यों के लिए सभी अभीष्ट फलों तथा सिद्धियों का देने वाला होता है । छुरी आदि शस्त्र इस मन्त्र के जप से अभिमन्त्रित होकर घी से विलिप्त होने पर जप और लक्ष्मी को देते हैं । घी, मधु तथा शर्करा से लिप्त पीपल और मदार की समिधा अथवा तिलों से होम करना शीघ्र ही श्रेष्ठ साधकों को अभीष्ट फल देता है ।

उद्यदायुधहस्तां तां देवीं कालघनप्रभाम् ॥ ६ ॥
ध्यात्वात्मानं जपेन्मन्त्रं स्पृष्ट्वा तं मुञ्चति ग्रहः ।
सर्पाखुवृश्चिकादीनां विषमाशु विनाशयेत् ॥ ७ ॥

हाथों में हथियार लिये हुये घने काले वर्ण वाली देवी का ध्यान करके अपने को छूकर जो जप करे उसे ग्रह छोड़ देता है । साँप, चूहे, बिच्छू, आदि का विष शीघ्र नष्ट हो जाता है ।

मनुनानेन विधिवन्मन्त्रविद्देवताधिया ।
मन्त्रेणानेन सञ्जप्तान्बाणानादाय योधकः ॥ ८ ॥
विमुञ्चेत्प्रतिसेनायां सां द्रुतं विद्रुता भवेत् ।

इस मन्त्र का विधिपूर्वक देवताबुद्धि से जप करके इस मन्त्र से अभिमन्त्रित बाणों को यदि योद्धा शत्रु की सेना पर चलाये तो वह सेना शीघ्र भाग जाती है ।

शूलपाशधरां देवीं ध्यात्वात्मानमनाकुलः ॥ ९ ॥
प्रविशेद्युद्धदेशं यो जित्वायाति स निर्व्रणः ।

शान्त होकर शूल तथा पाश को धारण करने वाली देवी का ध्यान करके जो युद्ध में जाता है वह बिना चोट खाये विजयी होकर चला आता है ।

जुहुयात्तिलसिद्धार्थैर्लक्षमेकं यथाविधि ॥ १० ॥
नामयुक्तं जपेन्मन्त्रं वश्यासौमतिमेष्यति ।
गुटिकां गोमयोत्पन्नां हुत्वाष्टशतसंख्यया ॥ ११ ॥
सप्ताहात्कुरुते मन्त्री विद्वेषं स्निग्धयोर्मिथः ।
गृहीत्वा गोमयं व्योम्नि त्रिसहस्रं जपेत्पुनः ॥ १२ ॥
गमिष्यति द्वारदेशे निखातं स्तम्भकृद्भवेत् ।
बहुनोक्तेन किं सर्वं साधयेन्मनुनामुना ॥ १३ ॥

इति शूलिनीदुर्गामन्त्रप्रयोगः ।

जो मनुष्य तिल और पीली सरसों से विधिपूर्वक एक लाख आहुतियों से होम करता है और अभीष्ट व्यक्ति का नाम लेकर जप करता है उसके वश में उक्त व्यक्ति हो जाता है । गोबर की एक सौ आठ गोलियों से होम करके साधक एक सप्ताह में दो प्रेमियों में विद्वेष कर देता है। गोबर आकाश

में लेकर तीन हजार जो जप करे तो वह गोबर शत्रु के द्वार पर जाकर गड़ जाता है और उसका स्तम्भन कर देता है। अधिक कहने से क्या ? इस मन्त्र से साधक सब कुछ सिद्ध कर सकता है।

इति शूलिनी दुर्गामन्त्र प्रयोग।

अथ दुर्गासप्तशतीप्रयोगः।

तत्रादौ चरित्रत्रयरहस्यत्रयनिर्णयो रुद्रयामले।

उसमें आदि में तीनों चरित्रों तथा तीनों रहस्यों का निर्णय रुद्रयामल में इस प्रकार वर्णित है :

"प्रथमं चरितं प्रोक्तं मधुकैटमघातनम्।
द्वितीयं विद्धि चरितं महिषासुरघातनम् ॥१॥
उत्तरं चरितं ज्ञेयं शुम्भदैत्यवधान्वितम्।
चरितानि जपेत्त्रीणि सरहस्यान्यतन्द्रितः ॥२॥
रहस्यं मन्त्रांत्याध्यायद्वयं त्रयं वा।
"चरितं मध्यमं वापि जपेद्वा चण्डिकामयम्।
नमो देव्या इमं मन्त्रं जपेद्वा कालिकाप्रियम्।"
इति मार्कण्डेय खिलत्वेन प्रसिद्धे ग्रन्थे तुक्तम्।

"पहला चरित्र मधु और कैटभ का संहार है। दूसरा चरित्र महिषासुर का विनाश है। तीसरा चरित्र है शुम्भदैत्य का वध करना। साधक को सचेत होकर रहस्यों सहित तीनों चरित्रों का जप करना चाहिये। रहस्य मन्त्राध्याय के लिये अन्तिम दो या तीन अध्याय, या चडिंकामय मध्यम अध्याय का जप करना चाहिए अथवा "नमो देव्या" यह प्रतीक जिसमें है उसका जप करे जो कालिका को प्रिय है।" यह मार्कण्डेय खिल नाम से प्रसिद्ध ग्रन्थ में कहा गया है।

अथ दुर्गापाठक्रमः।

आधारे स्थापयित्वा तु पुस्तकं वाचयेत्ततः।
हस्ते संस्थापनाद्देवि हंत्यर्धं हि फलं यतः ॥३॥

हे देवि, आधार (रेठल) पर पुस्तक को रख कर पाठ करना चाहिये क्योंकि पुस्तक को हाथ में रखने से आधा फल नष्ट हो जाता है।

पुस्तके वाचनं हस्तं हसस्रादधिकं यदि।
ततो न्यूनस्य तु भवेद्वाचनं पुस्तकं विना ॥४॥

पुस्तक हाथ में लेकर हजार बार से भी अधिक पाठ करने से जितना फल होता है उतना फल बिना पुस्तक के उससे कम पाठ करने से ही प्राप्त हो जाता है।

न स्वयं लिखिलं स्तोत्रं न ब्राह्मणलिपिं पठेत्।
न च स्वयंकृतं स्तोत्रं तथान्येन च यत्कृतम् ॥५॥
यतः करभौ प्रशंसन्ति ऋषिभिर्भाषितं तु यत्।
अनुक्रमात्पठेदेवं शिरःकम्पादिकं त्यजेत् ॥६॥
पठ्यमानाध्यायमध्ये विरामो यदि वा भवेत्।
पुनरध्यायमारभ्य पठेत्सर्वमुदारधीः ॥७॥

स्वयं लिखे या ब्राह्मण से भिन्न व्यक्ति द्वारा लिखे, स्वयं बनाये या अन्य द्वारा बनाये स्तोत्र का पाठ न करे क्योंकि विज्ञ लोग करभों (कर पृष्ठ भागों) की प्रशंसा करते हैं। जो ऋषियों द्वारा निर्मित स्तोत्र या मन्त्र है उसे अनुक्रम से पढ़ना चाहिये। शिर आदि अङ्गों का कँपाना त्याग देवे। पढ़े जाने

वाले अध्याय में यदि । किसी कारण कहीं रुकावट हो जाय तो पाठक उदार होकर उस अध्याय को पुनः प्रारम्भ से पढ़े ।

प्रणवं पूर्वमुच्चार्य स्तोत्रं वा संहितां पठेत ।
अन्ते च प्रणवं दद्यादित्युवाचादिपुरुषः ॥ ८ ॥
न मानसं पठेत्स्तोत्रं वाचिकं तु प्रशस्यते ।

पहले प्रणव (ॐ) का उच्चारण करके स्तोत्र या संहिता का पाठ करे । को मन में नहीं पढ़ाना चाहिये । उच्चारण करके पढ़ना उत्तम माना जाता है ।

नानेन सदृशं स्तोत्रं विद्यते भुवनत्रये ॥ ९ ॥
ततश्चानेन देवेशि तोष्यते प्रत्यहं नरैः ।
धर्मार्थकाममोक्षाणामालयो जायते नरः ॥ १० ॥

इस स्तोत्र के समान तीनों भुवनों में कोई स्तोत्र नहीं है । हे देवेशि, इससे मनुष्यों द्वारा देवी की तुष्टि की जाती है । इसके पाठ से मनुष्य धर्म, अर्थ, काम तथा मोक्ष का आगार बन जाता है ।

सप्तशतीपाठेङ्गषट्कस्य मुख्यतामपठने दोषं चाह ।
"अङ्गहीनो यथा देही सर्वकर्मसु न क्षमः ।
अङ्गषट्कविहीना तु तथा सप्तशती स्तुतिः ॥ ११ ॥
तस्मादेतत्पठित्वैवं जपेत्सप्तशतीं पराम् ।
अन्यथा शापमाप्नोति हानिं चैव पदेपदे ॥ १२ ॥

सप्तशती के पाठ में षडङ्ग की मुख्यता है अतः उसका पाठ न करने में दोष कहा है । "जैसे शरीरधारी अङ्गहीन होने पर सब काम करने में असमर्थ होता है वैसे ही षडङ्गविहीन सप्तशती की स्तुति भी है । इसलिए षडङ्ग का पाठ करके ही परम सप्तशती का जप करना चाहिये । अन्यथा पाठक शाप को प्राप्त होता है और पगपग पर उसे हानि उठानी पड़ती है ।"

रावणाद्याः स्तोत्रमेतदङ्गहीनं निषेविरे ।
हता रामेण ते यस्मात्त्राङ्गहीनं पठेत्ततः ॥ १३ ॥
अङ्गषट्कं विजानीयात्कवचार्गलकीलकैः ।
रहस्यत्रितये नैव सहितैर्मनुजेश्वर ॥ १४ ॥

रावण आदि ने अङ्गविहीन देवीस्तोत्र का पाठ किया था, इस कारण राम से वे मारे गये । इसलिए अङ्गविहीन पाठ न करे । हे मनुजेश्वर, कवच, अर्गला, कीलक ये तीन तथा तीन रहस्य, ये मिलकर षडङ्ग कहलाते हैं, ऐसा जानना चाहिये ।

सप्तशतीपाठे कवचार्गलाकीलकानामावश्यकतामाह उक्तं च देवीमाहात्म्ये :

सप्तशती पाठ में कवच, अर्गला और कीलक की आवश्यकता कही गयी है । देवीमाहात्म्य में कथा इस प्रकार है :

पुरा दशमुखो ब्रह्मन्दिव्यमानो विहायसि ।
गच्छन्नत्यूर्ध्वमार्गः सन्सर्वदिक्षु विचारयन् ॥ १५ ॥
भुविसप्तशतीमालापरायणपरं द्विजम् ।
अवतीर्य समालोक्य किमिदं पठ्यते द्विज ॥ १६ ॥
इत्युक्त्वा प्रददौ छत्रं सन्तुष्टस्तु द्विजोत्तमः ।
स्वपुस्तकं दशास्याय प्रददौ भक्तिदायकः ॥ १७ ॥

हे ब्राह्मन्, प्राचीनकाल में एक बार रावण आकाश में बहुत ऊपर उड़ता हुआ सब दिशाओं में देखता जा रहा था। तब उसने पृथिवी पर सप्तशती माला का जप करते हुए एक ब्राह्मण को देखा। नीचे उतर कर उसने पूछा : हे द्विज, तुम क्या पढ़ रहे हो ? यह कह कर उसने ब्राह्मण को एक छाता दिया। भक्तिदायक ब्राह्मण ने भी प्रसन्न होकर अपनी सप्तशती की पुस्तक रावण को दे दी।

आदाय रावणो दृष्ट्वा शाकम्भर्या मनुस्तवम्।
भीमास्तदृष्टिः सन् स्तोत्रमयाकृष्याविशेषितम् ॥१८॥

भीमादेवी द्वारा लुप्त दृष्टि वाला होकर वह रावण शाकम्भरी के मंत्र - स्तुति से युक्त उस स्तोत्र को लेकर चला गया। कवच, कीलक तथा अर्गला आदि भीमादेवी के द्वारा निकाल दिये जाने के कारण वह स्तोत्र अविशेषित हो गया था।

देवब्रह्म स्तुतियुतं चरित्रत्रितयान्वितम्।
सम्पूज्य पुस्तकं पाठाद्देवास्तु निधनं गताः ॥१९॥
आरुण्याख्यस्ततो दैत्यस्त्रैलोक्यं चातिपीडयन्।
ततो देवा ऋषिस्तोत्रं विना सप्तशतीमनुम् ॥२०॥
जपंतस्तु महाकालं महादेवीमुपासत।
अप्रसन्ना महादेवी देवा ब्रह्माणमाययुः ॥२१॥
शनैर्विष्णुं शनैः शम्भुं दृष्ट्वा सर्वं व्यबोधयन्।

देवब्रह्म स्तुतियुक्त तीन चरित्रों से अन्वित उस पुस्तक का पूजन कर पाठ करने से देवता मृत्यु को प्राप्त हो गये। उस समय अरुण नामक एक दैत्य तीनों लोकों को अत्यन्त पीड़ा देने लगा। तब देवता सप्तशती मन्त्र के बिना ही ऋषिस्तोत्र का जप करते हुए महाकाल तथा दुर्गा की उपासना करने लगे। तब महादेवी दुर्गा अप्रसन्न हो गयीं। तब देवता ब्रह्मा के पास आये। धीरे - धीरे विष्णु को तथा शिव को भी उन्होंने सब बताया।

ईश्वरस्तान् समालोक्य कवचार्गलकीलकैः ॥२२॥
सहसप्तशतीमालामहातन्त्रमुपादिशत्।
ततः प्रसन्ना श्रीदेवी भ्रामरं रूपमाश्रिता ॥२३॥
अनेकभ्रामरैः सार्धमरुणााख्यं महासुरम्।
हत्वा ब्रह्मादिदेवानां भीतानामभयं ददौ ॥२४॥

शिवजी ने उन लोगों को दुःखित देखकर प्रथम कवच, अर्गला तथा उसके बाद कीलक के साथ सप्तशतीमाला महातन्त्ररूप दुर्गापाठ के क्रम का उपदेश किया। इससे देवी ने प्रसन्न होकर भ्रमर रूप को धारण कर लिया और अनेक भ्रमरों के साथ अरुण नामक महासुर को मार कर ब्रह्मादि देवों को अभय प्रदान किया।

ब्रह्मा मृकण्डपुत्राय सुरथाय समाधये।
मार्कण्डेयाय ताभ्यां च प्रसन्ना जगदम्बिका ॥२५॥

ब्राह्मण मृकण्डुपुत्र मार्कण्डेय, क्षत्रियराज सुरथ तथा समाधि नामक वैश्य पर जगदम्बिका प्रसन्न हुई।

जय त्वं च जयन्ती च श्लोकद्वितयमर्गलम्।
मधुकैटभविद्रावि विधात्रीति नवार्णकम् ॥२६॥
कीलकं शङ्करप्रोक्तं कवचं ब्रह्मणा कृतम्।
अर्गलं विष्णुना प्रोक्तमेतत्त्रितयमुत्तमम् ॥२७॥

'जय त्वं' तथा 'जयन्ती मङ्गला' इन प्रतीकों वाले दो श्लोक अर्गला के रूप में कहे जाते हैं। 'मधुकैटभ विद्रावि विधात्री' इस प्रतीक वाले श्लोक को नवार्ण कहते हैं। शङ्कर ने कीलक कहा है; ब्रह्मा ने कवच तथा विष्णु ने अर्गला बनाया है। यह तीनों उत्तम हैं।

अर्गलाकीलके चादौ पठित्वा कवचं पठेत्।
जपेत्सप्तशतीं चण्डीं क्रम एष शिवोदितः ॥२८॥

पहले अर्गला और कीलक पढ़ना चाहिये उसके बाद कवच पढ़े। उसके बाद सप्तशती चण्डी का जप करना चाहिये। ऐसा शिवजी ने कहा है।

अर्गला दुरितं हन्ति कीलकं फलदं भवेत्।
कवचं रक्षयेन्नित्यं तस्मादेतत्त्रयं पठेत् ॥२९॥
अर्गला हृदये यस्य तस्मादर्गलवानसौ।
भविष्यति न सन्देहो नान्यथा शिवभाषितम् ॥३०॥

अर्गला दुःखों को नष्ट करता है। कीलक फलदायक है। कवच नित्य रक्षा करता है। इसलिए इन तीनों का पाठ करना चाहिये। जिसके हृदय में अर्गला है, वह अर्गलवान् होगा, इसमें सन्देह नहीं है। ऐसा शिवजी ने कहा है।

कीलकं हृदये यस्य स कीलितमनोरथः।
कवचं हृदये यस्य स वज्रकवचः प्रभुः ॥३१॥

जिसके हृदय में कीलक है, उसका मनोरथ कीलित है। जिसके हृदय में कवच है वह वज्रकवच वाला स्वामी है।

कामनापरत्वेन चण्डीपाठसंख्या। वाराहीतन्त्रे।

कामनापरत्व से चण्डीपाठ की संख्या वाराहीतन्त्र में इस प्रकार है :

विश उवाच :
चण्डीपाठफलं देवि शृणु त्वं गदतो मम।
एकावृत्त्यादिपाठानां यथावत्कथयाम्यहम् ॥३२॥
सङ्कल्पपूर्वं सम्पूज्य न्यस्याङ्गेषु मनून्सकृत्।
पश्चाद्बलिप्रदानेन फलमाप्नोति मानवः ॥३३॥

शिवजी बोले : हे देवि, चण्डीपाठ का फल मैं बतलाता हूं, तुम सुनो। एक पाठ तथा आवृत्ति पाठों का यथावत् वर्णन मैं कर रहा हूँ। संकल्पपूर्वक न्यासाङ्गों में मन्त्रों का एक बार पूजन करने के बाद बलिप्रदान से मनुष्य फल पाता है।

उपसर्गोपशांत्यर्थं त्रिरावृत्तिः पठेन्नरः।
ग्रहोपशान्तौ कर्तव्या पञ्चावृत्तिर्वरानने ॥३४॥
महाभये समुत्पन्ने सप्तावृत्तिमुदीरयेत्।
नवावृत्तौ भवेच्छान्तिर्वाजपेय फलं व्रजेत् ॥३५॥
राजवश्याय भूत्यै च रुद्रावृत्तिमुदीरयेत्।

उपसर्गों की शान्ति लिए मनुष्य तीन बार दुर्गासप्तशती का पाठ करे।

हे वरानने, ग्रहों की शान्ति के लिए पाँच बार पाठ करना चाहिये। महाभय उपस्थित होने पर सात बार पाठ करना चाहिये। नव बार पाठ करने से शान्ति होती है, साधक वाजपेय यज्ञ का फल पाता है। राजा को वश में करने तथा कल्याण के लिए ग्यारह बार पाठ करना चाहिये।

अर्कावृत्त्या काम्यसिद्धिर्वैरिहानिश्च जायते ॥ ३६ ॥
मन्वावृत्त्या रिपुर्वश्यस्तथा स्त्री वशतामियात् ।
सौख्यं पञ्चदशावृत्त्या श्रियमोप्नोति मानवः ॥ ३७ ॥

बारह बार जप करने से अभीष्टसिद्धि तथा शत्रु का नाश होता है। चौदह बार जप करने से शत्रु और स्त्री वश में होते हैं। पन्द्रह बार जप करने से मनुष्य सुख और लक्ष्मी को प्राप्त करता है।

कल्पावृत्त्या पुत्रपौत्रधनधान्यागमं विदुः ।
राजभीतिविनाशाय विपक्षोच्चाटनाय च ॥ ३८ ॥
कुर्यात्सप्तदशावृत्तिं तथाष्टदशकं प्रिये ।
महाऋणविमोक्षाय विंशावृत्तिं पठेन्नरः ॥ ३९ ॥
पञ्चविंशावर्तनाद्धि भवेद्बन्धंविमोक्षणम् ।

सोलह बार पाठ करने से पुत्र-पौत्र तथा धन-धान्य का आगम होता है। राज के भय से बचने के लिए सत्रह बार पाठ करना चाहिये। शत्रु के उच्चाटन के लिए अट्ठारह बार पाठ करना चाहिये। भारी ऋण से मुक्ति के लिए बीस बार पाठ करना चाहिये। पचीस बार पाठ करने से मनुष्य बन्धन से मुक्त हो जाता है।

सङ्कटे समनुप्राप्ते दुश्चिकित्स्यामये सदा ॥ ४० ॥
जातिध्वंसे कुलोच्छेदे ह्यायुषो नाशमागते ।
वैरिवृद्धौ व्याधिवृद्धौ धननाशे तथा क्षये ॥ ४१ ॥
तथैव त्रिविधोत्पाते तथा चैवातिपातके ।
कुर्याद्यत्नाच्छतावृत्तिं ततः सम्पद्यते शुभम् ॥ ४२ ॥
विपदस्तस्य नश्यन्ति अन्ते याति परां गतिम् ।

भारी सङ्कट के प्राप्त होने पर, असाध्य रोग होने पर, जाति के नाश होने पर, कुल का उच्छेद होने पर, आयु का नाश होने पर, शत्रुओं की वृद्धि में, रोग वृद्धि में, धननाश में तथा क्षय में, तीनों प्रकार के उत्पातों में तथा अतिपातक में मनुष्य को यत्न से सौ बार पाठ करना चाहिये तब शुभ होता है। ऐसा करने पर उसकी विपत्तियाँ नष्ट होती हैं तथा वह अंत में परमगति को प्राप्त होता है।

जयवृद्धौ शतावृत्त्या राजवृद्धौ सदा पठेत् ॥ ४३ ॥
मनसा चिन्तिता देवि सिद्धिरष्टोत्तराच्छतात् ।
शताश्वमेधयज्ञानां फलमाप्नोति सुव्रते ॥ ४४ ॥
सहस्रावर्तनाल्लक्ष्मीरावृणोति स्वयं स्थिरा ।
भुक्त्वा कामान्यथाकामं नरो मोक्षमवाप्नुयात् ॥ ४५ ॥

जयवृद्धि तथा राजवृद्धि में सदा पाठ करना चाहिये। मन से देवी का ध्यान कर एक सौ आठ बार जप करने से सिद्धि प्राप्त होती है। हे सुव्रते, ऐसा मनुष्य सौ अश्वमेध यज्ञों के फलों को प्राप्त करता है। हजार बार पाठ करने पर लक्ष्मी स्वयं स्थिर होकर उसे घेर लेती है। समस्त भोगों को भोगकर मनुष्य अन्त में मोक्ष को प्राप्त करता है।

यथाश्वमेधः क्रतुषु देवानां च यथा हरिः ।
स्तवानामपि सर्वेषां तथा सप्तशतीस्तवः ॥ ४६ ॥
नातः परतरं स्तोत्रं किञ्चिदस्ति वरानने ।
भुक्तिमुक्तिप्रदं पुण्यं पावनानां च पावनम् ॥ ४७ ॥

अथवा बहुनोक्तेन किमन्येन वरानने ।
पञ्चाशदावृत्तिपाठात्सर्वाः सिध्यन्ति सिद्धयः ॥ ४८ ॥

जैसे यज्ञों में अश्वमेध यज्ञ तथा देवों में विष्णु हैं; वैसे ही सभी स्तोत्रों में सप्तशती स्तोत्र हैं । हे वरानने, इससे बढ़कर कोई स्तोत्र नहीं है । यह स्तोत्र भुक्ति तथा मुक्ति को देने वाला पुण्य तथा पावन है । हे वरानने, अधिक इधर - उधर की बातें करने से क्या लाभ ? पन्द्रह बार के पाठ से सभी सिद्धियाँ सिद्ध हो जाती हैं ।

अथ सप्तशत्याः शापोद्धारोत्कीलने कात्यायनीतन्त्रे :

दुर्गा सप्तशती के शापोद्धार तथा उत्कीलन के सम्बन्ध में कात्यायनी तन्त्र में इस प्रकार लिखा है :

त्रयोदशाध्यायं पठित्वा प्रथमं पठेत् ततो द्वादशद्वितीयौ तत् एकादशतृतीयौ चतुर्थदशमौ पञ्चमनवमौ षडष्टमौ सप्तमं द्विवारमिति पाठेन शापोद्धारः ॥ ४९ ॥

तेरहवें अध्याय को पढ़ने के बाद प्रथम अध्याय पड़े । इसके बाद बारहवाँ तथा दूसरा अध्याय पढ़ना चाहिये । तदनन्तर ग्यारहवाँ तथा तीसरा अध्याय, चतुर्थ तथा दशम अध्याय, पञ्चम तथा नवम अध्याय, षष्ठ तथा अष्टम अध्याय पढ़ना चाहिये । सातवें अध्याय को दो बार पढ़ने से शापोद्धार होता है ।

अन्यच्च : ॐ ह्रीं क्लीं श्रीं क्रां क्रीं चण्डिकादेव्यै शापानुग्रहं कुरु कुरु स्वाहा इति पाठादौ सप्तवारं जपेदिति शापोद्धारः ॥ ५० ॥

और "ॐ ह्रीं क्लीं श्रीं क्रां क्रीं चण्डिकादेव्यै शापानुग्रहं कुरु कुरु स्वाहा" इसे पाठ के पहले सात बार जपे । यह शापोद्धार है ।

अथोत्कीलनम् । इत्थं रूपेण कीलेन महादेवेन कीलितमिति सप्तशतीस्तोत्रे शिवशापतदुद्धारः प्रथमं मध्यमचरित्रं पठित्वा ततः प्रथमतृतीयौ पठेदित्युत्कीलनमिति क्वचित् दृश्यते ॥ ५१ ॥

अथ उत्कीलन : इस प्रकार से महादेवजी के द्वारा कीलित किये गये सप्तशती स्तोत्र में शिवशाप से उद्धार : पहले मध्यम चरित्र को पढ़कर पहले तथा तृतीय अध्याय को पढ़े यह उत्कीलन है, ऐसा कहीं पर देखा जाता है ।

अन्यच्च : कीलकं मध्यमादौ च पश्चात्कवचमेव च । प्रथमं चरितं जप्त्वा ततश्चरितमुत्तमम् ॥ ५२ ॥ ततः परं चार्गलां च कीलकं च ततः परम् । एवमुत्कीलनं प्रोक्तं पुरातनमहर्षिभिः ॥ ५३ ॥

अन्य कीलक : पहले मध्य तथा बाद में कवच पढ़ना चाहिये । प्रथम चरित्र का जप करके तब अन्तिम चरित का जप करना चाहिये । इसके बाद अर्गला, और कीलक पढ़ना चाहिये । पुराने महर्षियों ने इस प्रकार उत्कीलन कहा है ।

अन्यच्च : ॐ श्रीं क्लीं ह्रीं सप्तशतीचण्डिके उत्कीलनं कुरु स्वाहा । पाठादौ एकविंशतिजपे तदोत्कीलनम् ॥ ५४ ॥

और भी : "ॐ श्रीं क्लीं ह्रीं सप्तशतीचण्डिके उत्कीलनं कुरु स्वाहा" । इसे पाठ के आदि में इक्कीस बार जप करने पर उत्कीलन होता है ।

अथ जाग्रत्करणम् : ॐ रं सं मूलं रं क्षं ॐ इति सप्तवारजपेन जाग्रद्विद्या भवति । इति ।

अथ जग्रात्करणम् : ॐ रं सं मूलं रं क्षं ॐ" इसे सात बर जपने से विद्या जागृत होती है ।

सप्तशती स्तोत्रान्तरगमन्त्राणां कामनापरत्वेन सम्पुटनिर्णयः ।

सप्तशती स्तोत्रान्तर्गत मन्त्रों के लिए कामनापरत्व से सम्पुटनिर्णय ।

**रात्रिसूक्तं जपेदादौ मध्ये सप्तशतीस्तवम् ।
अन्ते च देवीसूक्तानि रहस्यं तदनन्तरम् ॥ ५५ ॥**

प्रारम्भ में रात्रिसूक्त का जप करना चाहिये, मध्य में सप्तशतीस्तवका, अन्त में देवीसूक्त का और तदनन्तर रहस्य का पाठ करना चाहिये।

चरितेचरिते राजञ्जपेन्मन्त्रं नवाक्षरम्।
शतमादौ शतं चान्ते विधानेन तु सुव्रत॥५६॥

हे सुव्रत, विधान से प्रत्येक चरित के पाठ में नवाक्षर मन्त्र का सौ बार आदि में तथा सौ बार अन्त में जप करना चाहिये।

अन्यच्च: जपेन्नवाक्षरं मन्त्रमथवाष्टोत्तरं शतम्।
शतमादौ शतं चान्ते सप्तशतीं जपेत्॥५७॥

अन्यच्च: महामायामनोरादौ चरितस्यादितोपि वा।
प्रत्यध्यायसमारम्भे तत्समाप्तौ जपेत्तथा॥५८॥
प्रतिश्लोकस्यादितो यद्वा तदन्ते वा पठेन्नरः।
नवार्णमनुना सार्धं सम्पुटोयमुदाहृतः।
सकामः सम्पुटो जाप्यो निष्कामः सम्पुटं विना॥५९॥

और भी :. एक सौ आठ बार नवाक्षर मन्त्र का पाठ करना चाहिये अथवा सौ आदि में तथा सौ अन्त में फिर सप्तशती का पाठ करना चाहिये।

और भी : महामाया मन्त्र के प्रारम्भ में अथवा चरित के आदि में प्रत्येक अध्याय के आरम्भ में तथा उसकी समाप्ति में जप करे। प्रत्येक श्लोक के आदि या अन्त में मनुष्य पाठ करे। नवार्ण मन्त्र के साथ यह सम्पुट कहा गया है। सकाम प्रयोग में सम्पुट से और निष्काम प्रयोग में बिना सम्पुट के जप करना चाहिये।

कात्यायनीतन्त्रे प्रतिश्लोकमाद्यन्तयोः प्रणवेन जपेन्मत्रसिद्धिः॥६०॥

कात्यायनी तन्त्र में कहा गया है कि प्रत्येक श्लोक के आदि तथा अन्त में प्रणव लगाकर जप करने से मन्त्र की सिद्धि होती है।

अन्यच्च: सप्तव्याहृतिपूर्वकं श्लोकं कृत्वा महास्तोत्रं जपेन्मन्त्रसिद्धिः॥६१॥

और भी : सप्त व्याहृतिपूर्वक श्लोक करके महास्तोत्र का जप करने से मन्त्र की सिद्धि होती है।

अन्यच्च: सव्याहृतिकां गायत्रीमादावन्ते वा कृत्वा श्लोकं जपेत् तदा महाफलम्॥६२॥

और भी : व्याहृति पूर्वक आदि और अन्त में गायत्री का जप करके श्लोक जपने से महाफल होता है।

अन्यच्च: प्रतिश्लोकं व्याहृतित्रययुतां गायत्रीं जपेत् तदा महाफलम्॥६३॥

और भी : मनुष्य प्रतिश्लोक तीन व्याहृतियों से युक्त गायत्री को आदि और अन्त में करके श्लोक जपे तो महाफल होता है।

अन्यच्च: प्रतिश्लोकमादादन्ते "जातवेदसे सुनवास सोममरातीयतो निदहाति वेदः। स नः पर्षदतिदुर्गाणि विश्वानावेव सिन्धुं दुरितान्यग्निः" इति ऋचं जपेत्। सर्वकामसिद्धिः॥६४॥

और भी : प्रतिश्लोक के आदि तथा अन्त में "जातवेदसे सुनवामसोममरातीयतो निदहाति वेदः। स नः पर्षदतिदुर्गाणि विश्वानावेव सिन्धुं दुरितात्यग्निः।" इस मन्त्र का जप करने से सब कुछ सिद्ध हो जाता है।

अन्यच्च: ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्। जातवेदसे सुनवास सोममरातीयतो निदहाति वेदः। स नः पर्षदति दुर्गाणि विश्वा नावेव सिन्धुं दुरितात्यग्निः। ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिम्पुष्टिवर्धनम्। ऊर्वारुकमिव

बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् । इति शताक्षरत्र्यम्बकमन्त्रेण सम्पुटीकृत्य मन्त्रं पठेत् । रोगारिक्षयमृत्यून्मूलनं सर्वापद्विनिवारणमभीप्सितप्राप्तिः ॥ ६५ ॥

और भी : "ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि । धियो यो नः प्रचोदयात् । जातवेदसे सुनवास सोममरातीयतो निदहाति वेदः । स नः पर्षदति दुर्गाणि विश्वा नावेव सिन्धुं दूरितात्यग्निः । ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिम्पुष्टिवर्धनम् । उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षयि मामृतात। इस शताक्षर त्र्यम्बक मन्त्र से सम्पुट करके मन्त्र पढ़ना चाहिये । इससे रोग, शत्रु का नाश, मृत्यु का उन्मूलन एवं अभीष्ट की प्राप्ति होती है ।

अन्यच्च : प्रतिश्लोकं शरणागतदीनार्तपरित्राणपरायणे । सर्वस्यार्त्तिहरे देवि नारायणि नमोस्तु ते । इति श्लोकं पठेत् । सर्वकार्यसिद्धिः ॥ ६६ ॥

और भी : प्रत्येक श्लोक को "शरणागतदीनार्तपरित्राणपरायणे । सर्वस्यार्ति हरे देवि नारायणि नमोस्तु ते ।" इस श्लोक से सम्पुट करके पढ़ने से सब कार्यों की सिद्धि होती है ।

अन्यच्च : प्रतिश्लोकं करोतु सा नः शुभहेतुरीश्वरी शुभानि भद्राण्यभिहन्तु चापदः । इत्यर्धं पठेत् सर्वकामाप्तिः ॥ ६७ ॥

और भी : प्रत्येक श्लोक को "करोतु सा नः शुभहेतुरीश्वरी शुभानि भद्राण्यभिहन्तु चापदः ।" इस श्लोकार्द्ध से सम्पुट करके पाठ करना चाहिये ।

अन्यच्च : प्रतिश्लोकम् । एवं देव्या वरं लब्ध्वा सुरथः क्षत्रियर्षभः । सूर्याज्जन्म समासाद्य सावर्णिर्भविता मनुः । इत्याद्यन्तं पठेत् स्वाभीष्टवरप्राप्तिः ॥ ६८ ॥

और भी : प्रतिश्लोक को "एवं देव्या परं लब्ध्वा सुरथः क्षत्रियर्षभः । सूर्याज्जन्म समासाद्य सावर्णिर्भविता मनुः ।" इस श्लोक से सम्पुटित करके पाठ करने से अभीष्ट वर की प्राप्ति होती है ।

अन्यच्च : दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तोः स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि । दारिद्र्यदुःखभयहारिणी का त्वदन्या सर्वोपकारकरणाय सदार्द्रचित्ता । इति श्लोकं प्रतिश्लोकाद्यन्तं पठेत् । सर्वापत्तिनिवारणं स्यात् ॥ ६९ ॥

और भी : "दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तोः । स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि । दारिद्र्यदुःखभयहारिणी का त्वदन्या । सर्वोपकारकरणाय सदार्द्रचित्ता ।" इन श्लोकों से प्रत्येक श्लोक को सम्पुटित करके पाठ करना चाहिये । इससे सभी आपत्तियों का निवारण होता है ।

अन्यच्च : ॐ कांसोस्मि तां हिरण्यप्राकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम् । पद्मे स्थितां पद्मवर्णां तामिहोपह्वये श्रियम् । इति ऋचं प्रतिश्लोकाद्यन्तं पठेत् । लक्ष्मीप्राप्तिः ॥ ७० ॥

और भी : "ॐ कांसोस्मि तां हिरण्यप्राकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम् । पद्मे स्थितां पद्मवर्णां तामिहोपह्वये श्रियम् ।" इस मन्त्र से प्रत्येक श्लोक को सम्पुटित करके पाठ करने से लक्ष्मी की प्राप्ति होती है ।

अन्यच्च : ॐ मनृणा इत्यादि ऋचं प्रतिश्लोकाद्यन्तं पठेत् । ऋणपरिहारः ॥ ७१ ॥

और भी : "ॐ मनृणा" इत्यादि मन्त्र से प्रत्येक श्लोक को सम्पुटित करके पाठ करना चाहिये । इससे ऋण से उद्धार होता है ।

अन्यच्च : ॐ शब्दात्मिका सुविमलर्ग्यजुषां निधानमुद्‍गीथरम्यपदपाठवतां च साम्नाम् । देवि त्रयी भगवती भवभावनाय वार्ता च सर्वजगतां परमार्तिहन्त्री । इति श्लोकं प्रतिश्लोकाद्यन्तं पठेत् । सुखप्राप्तौ दारिद्रदुःखभयमोचने च ॥ ७२ ॥

और भी : "ॐ शब्दात्मिका सुविमलर्ग्यजुषां निधानमुद्‍गीथरम्यपदपाठवतां च साम्नाम् । देवि त्रयी भगवती भवभावनाय वार्ता च सर्वजगतां परमार्तिहन्त्री ।" इस श्लोक से प्रत्येक श्लोक को सम्पुटित करके पढ़ने से सुख की प्राप्ति होती है और दरिद्रता, दुःख तथा भय से मुक्ति मिलती है ।

अन्यच्च : **सर्वबाधाविनिर्मुक्तो धनधान्यसुतान्वितः। मनुष्यो मत्प्रसादेन भविष्यति न संशयः। इति श्लोकं प्रतिश्लोकाद्यन्तं पठेत्। धनधान्यसुखप्राप्तिः ॥ ७३ ॥**

और भी : "ॐ सर्वबाधाविनिर्मुक्तो धनधान्यसुतान्वितः। मनुष्यो मत्प्रसादेन भविष्यति न संशयः।" इस श्लोक से प्रत्येक श्लोक को सम्पुटित करके पाठ करने से धन-धान्य और सुख की प्राप्ति होती है।

अन्यच्च : **या देवी सर्वभूतेषु वृत्तिरूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः। इति श्लोकं प्रतिश्लोकाद्यन्तं पठेत्। मनउत्सवप्राप्तिः ॥ ७४ ॥**

और भी : "या देवी सर्वभूतेषु वृत्तिरूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः।" इस श्लोक से प्रत्येक श्लोक को सम्पुटित करके पढ़ने से मन में प्रसन्नता प्राप्त होती है।

अन्यच्च : **ॐ धर्म्याणि देवि सकलानि सदैव कर्माण्यत्यादृतः प्रतिदिनं सुकृती करोति। स्वर्गं प्रयाति च ततो भवतीप्रसादाल्लोकत्रयेपि फलदा ननु देवि तेन। इति श्लोकं प्रतिश्लोकाद्यन्तं पठेत्। सकलकर्मसुकृतप्राप्तिः ॥ ७५ ॥**

और भी : "ॐ धर्म्याणि देवि सकलानि सदैव कर्माण्यत्यादृतः प्रतिदिनं सुकृति करोति। स्वर्गं प्रयाति च ततो भवतीप्रसादाल्लोकत्रयेपि फलदा ननु देवि तेन।" इस श्लोक से प्रत्येक श्लोक को सम्पुटित करके पढ़ने से समस्त कर्मो का उत्तम फल प्राप्त होता है।

अन्यच्च : **ॐ त्वयैतत्पाल्यते देवि त्वमत्स्यन्ते च सर्वदा। विसृष्टौ सृष्टिरूपा त्वं स्थितिरूपा च पालने। इति श्लोकं प्रतिश्लोकाद्यन्तं पठेत्। सर्वकार्यसिद्धिः ॥ ७६ ॥**

और भी : "ॐ त्वयैतत्पाल्यते देवि त्वमत्स्यन्ते च सर्वदा। विसृष्टौ सृष्टिरूपा त्वं स्थितिरूपा च पालने।" इस श्लोक से प्रत्येक श्लोक को सम्पुटित करके पाठ करने से सब कार्यों की सिद्धि होती है।

अन्यच्च : **ॐ देवि प्रपन्नार्तिहरे प्रसीद प्रसीद मातर्जगतोखिलस्य। प्रसीद विश्वेश्वरि पाहि विश्वं त्वमीश्वरी देवि चराचरस्य। इति श्लोकं प्रतिश्लोकाद्यन्तं पठेत्। सर्वापन्निवृत्तिः। सर्वकामाप्तिश्च। एषु प्रयोगेषु प्रतिश्लोकं। दीपाग्रे नमस्कारकरणे अतिशीघ्रं सिद्धिः ॥ ७७ ॥**

और भी : "ॐ देवि प्रपन्नार्तिहरे प्रसीद प्रसीद मातर्जगतोखिलस्य। प्रसीद विश्वेश्वरि पाहि विश्वं त्वमीश्वरी देवि चराचरस्य।" इस श्लोक से प्रत्येक श्लोक को सम्पुटित करके पाठ करने से समस्त आपत्तियों की निवृत्ति तथा समस्त कामनाओं की प्राप्ति होती है।

इन प्रयोगों में प्रत्येक श्लोक के साथ दीपक के सामने नमस्कार करने से अत्यन्त शीघ्र फल मिलता है।

अन्यच्च : **ॐ रोगानशेषानपहन्सि तुष्टा रुष्टा तु कामान्सकलानभीष्टान्। त्वामाश्रितानां न विपन्नराणां त्वामाश्रिता ह्याश्रयतां प्रयान्ति। इति श्लोकं प्रतिश्लोकाद्यन्तं पठेत्। सकलरोगनाशः स्यात् ॥ ७८ ॥**

और भी : "ॐ रोगानशेषानपहंसि तुष्या रुष्या तु कामान्सकलानभीष्टान् त्वामाश्रितानां न विपन्नराणां त्वामाश्रिता ह्याश्रयतां प्रयान्ति।" इस श्लोक से प्रत्येक श्लोक को सम्पुटित करके पढ़ने से समस्त रोगों का नाश होता है।

अन्यच्च : **सर्वनाशने उपसर्गानशेषांस्तु महामारीसमुद्भवान्। तथा त्रिविधमुत्पातं माहात्म्यं शमयेन्मम। इति श्लोकं प्रतिश्लोकाद्यन्तं पठेत्। सर्वबाधानाशः स्यात् ॥ ७९ ॥**

और भी : "ॐ सर्वनाशेन उपसर्गानशेषांस्तु महामारीसमुद्भवान्। तथा त्रिविधमुत्पातं माहात्म्यं शमयेन्मम।" इस श्लोक से प्रत्येक श्लोक को सम्पुटित करके पाठ करने से सभी बाधाओं का नाश होता है।

अन्यच्च : मेधासि देवि विदिताखिलशास्त्रसारा दुर्गासि दुर्गभवसागरनौरसङ्गा । श्रीःकैटभारिहृदयैककृताधिवासा गौरी त्वमेव शशिमौलिकृतप्रतिष्ठा । इति श्लोकं प्रतिश्लोकाद्यन्तं पठेत् । वाक्सिद्धिः ॥ ८० ॥

और भी : "ॐ मेधासि देवि विदिताखिलशास्त्रसारा दुर्गासि दुर्गभवसागर नौरसङ्गा । श्रीः कैटभारिहृदयैककृताधिवासा गौरीत्वमेव शशिमौलिकृतप्रतिष्ठा ।" इस श्लोक से प्रत्येक श्लोक को सम्पुटित करके पाठ करने से वाणी की सिद्धि प्राप्त होती है ।

अन्यच्च स्तवने : ॐ सर्वमङ्गलमाङ्गल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके । शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोस्तु ते । इति श्लोकं प्रतिश्लोकाद्यन्तं पठेत् ॥ ८१ ॥

और भी : स्तवन में "ॐ सर्वमङ्गलमाङ्गल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके । शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोस्तु ते ।" इस श्लोक से प्रत्येक श्लोक को सम्पुटित करके पाठ करना चाहिये ।

अन्यच्च : भयमोचने । ॐ ज्वालाकरालमत्युग्रमशेषासुरसूदनम् । त्रिशूलं पातु नो भीतेर्भद्रकालि नमोस्तु ते । इति श्लोकं प्रतिश्लोकाद्यन्तं पठेत् ॥ ८२ ॥

और भी : भय को दूर करने में "ॐ ज्वालाकरालमत्युग्रमशेषासुरसूदनम् । त्रिशूलं पातु नो भीतेर्भद्रकालि नमोस्तु ते ।" इस श्लोक से प्रत्येक श्लोक को सम्पुटित करके पाठ करना चाहिये ।

अन्यच्च : दुःस्वप्नपीडापरिहारे शान्तिकर्मणि सर्वत्र तथा दुःस्वप्नदर्शने । ग्रहपीडासु चोग्रासु माहात्म्यं शृणुयान्मम । इति श्लोकं प्रतिश्लोकाद्यन्तं पठेत् ॥ ८३ ॥

और भी : दुःस्वप्न की पीड़ा को दूर करने में "शान्तिकर्मणि सर्वत्र तथा दुःस्वप्नदर्शने । ग्रहपीडासु चोग्रासु माहात्म्यं शृणुयान्मम ।" इस श्लोक से प्रत्येक श्लोक को सम्पुटित करके पढ़ना चाहिये ।

अन्यच्च : परप्रयोगशमने । ततो निशुम्भः सम्प्राप्य चेतनामात्तकार्मुकः । आजघान शरैर्देवीं कालीं केसरिणं तथा । इति श्लोकं प्रतिश्लोकाद्यन्तं पठेत् ॥ ८४ ॥

और भी : दूसरे तान्त्रिक द्वारा किये गये प्रयोग की शान्ति के लिए 'ततो निशुम्भः सम्प्राप्य चेतनामात्तकार्मुकः । आजघान शरैर्देवीं कालीं केसरिणं तथा ।' इस श्लोक से सम्पुटित करके प्रत्येक श्लोक का पाठ करना चाहिये ।

अन्यच्च : अपद्वेषनाशने । तयास्माकं वरो दत्तो यथापत्सु स्मृताखिलाः । भवतां नाशयिष्यामि तत्क्षणात्परमापदः । इति श्लोकं प्रतिश्लोकाद्यन्तं पठेत् ॥ ८५ ॥

और भी : अपद्वेष के विनाश के लिए 'तयास्माकं वरो दत्तो यथापत्सु स्मृताखिलाः । भवतां नाशयिष्यामि तत्क्षणात्परमापदः ।' इससे प्रत्येक श्लोक को सम्पुटित करके पाठ करना चाहिये ।

अन्यच्च : मारणार्थे । ॐ एवमुक्त्वा समुत्पत्य सारूढा तं महासुरम् । पादेनाक्रम्य कण्ठे च शूलेनैनमताडयत् । इति श्लोकं प्रतिश्लोकाद्यन्तं पठेत् ॥ ८६ ॥

और भी : मारण के लिए "ॐ एवमुक्त्वा समुत्पत्य सारूढा तं महासुरम् । पादेनाक्रम्य कण्ठे च शूलेनैनमताडयत् ।" इससे प्रत्येक श्लोक को सम्पुटित करके पाठ करे ।

अन्यच्च : शत्रुपरिहारे । त्रैलोक्यमेतदखिलं रिपुनाशनेन त्रातं त्वया समरमूर्धनि तेपि हत्वा । नीता दिवं रिपुगणा भयमप्यपास्तमस्माकमुन्मदसुरारिभवं नमस्ते । इति श्लोकं प्रतिश्लोकाद्यन्तं पठेत् ॥ ८७ ॥

और भी : शत्रु के नाश के लिए "त्रैलोक्यमेतदखिलं रिपुनाशनेन त्रातं त्वया समरमूर्धनि तेपि हत्वा । नीता दिवं रिपुगणा भयमप्यपास्तमस्माकमुन्मदसुरारिभवं नमस्ते ।" इस श्लोक से सम्पुटित करके प्रत्येक श्लोक का पाठ करे ।

अन्यच्च : शत्रुपराभवार्थे । ॐ या देवीसर्वभूतेषु क्षान्तिरूपेण संस्थिता । नमस्तस्यै नमस्तस्यै

और भी : शत्रु के पराजय के लिए "ॐ या देवीसर्वभूतेषु क्षान्तिरूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः।" इस श्लोक से प्रत्येक श्लोक को सम्पुटित करके पाठ करे।

अन्यच्च : शत्रुमुखस्तम्भने पुत्रप्राप्तिश्च। स्मरन्ममेतच्चरितं नरो मुच्येत सङ्कटात्। मम प्रभावात्सिंहाद्या दस्यवो वैरिणस्तथा। इति श्लोकं प्रतिश्लोकाद्यन्तं पठेत् ॥८९॥

और भी : शत्रु का मुखस्तम्भन तथा पुत्रप्राप्ति के लिए "स्मरन्ममेतच्चरितं नरो मुच्येत सङ्कटात्। मम प्रभावात्सिंहाद्या दस्यवो वैरिणस्तथा।" इस श्लोक से प्रत्येक श्लोक को सम्पुटित करके पाठ करे।

अन्यच्च : विषमचित्तशमने । पुनरप्यतिरौद्रेण रूपेण पृथिवीतले । अवतीर्य हनिष्यामि वैप्रचित्तांस्तु दानवान् । इति श्लोकं प्रतिश्लोकाद्यान्तं पठेत् ॥ ९० ॥

और भी : विषय चित्त की शान्ति के लिए 'पुनरप्यतिरौद्रेण "रूपेण पृथिवीतले । अवतीर्य हनिष्यामि वैप्रचित्तांस्तु दानवान् ।" इस श्लोक से प्रत्येक श्लोक को सम्पुटित करके पाठ करे ।

अन्यच्च : ॐ ज्ञानिनामपि चेतांसि देवी भगवती हि सा । बलादाकृष्य मोहाय महामाया प्रयच्छति । इति श्लोकं प्रतिश्लोकाद्यन्तं पठेत्त्ववश्यं मोहनं च इत्यनुभवसिद्धम् ॥ ९१ ॥

और भी : "ॐ ज्ञानिनामपि चेतांसि देवी भगवती हि सा । बलादाकृष्य मोहाय महामाया प्रयच्छति।" इस श्लोक से सम्पुटित करके प्रत्येक श्लोक का पाठ करने से अवश्य ही मोहन होता है, यह अनुभवसिद्ध है ।

अन्यच्च : ॐ रक्तचामुण्डे तुरु तुरु अमुकं मे वशमानय स्वाहा । अनेन प्रत्यध्यायमाद्यन्तयोः पूजा सर्वान्ते अयुतं जपाः अयुतमन्त्रैश्च होमयेत् कटुतैलेन रक्तचन्दनराजिकासहस्राहुतिमन्त्रेण राजानं वशमानयेत् । मधुनाशोक पुष्पैश्च रात्रौ हुत्वा तु पूर्ववत्। चक्रवर्ती भवेद्वश्यश्चण्डीमन्त्रप्रभावतः । अन्ते शतं ब्राह्मणाः कुमार्यश्च भोजनीयाः ॥ ९२ ॥

और भी : "ॐ रक्तचामुण्डे तुरु तुरु अमुकं मे वशमानय स्वाहा ।" इस मन्त्र से प्रति अध्याय के आदि तथा अन्त में पूजा करनी चाहिये । सबके अन्त में दश हजार मन्त्रों से होम करना चाहिये । कड़वा तेल, लाल चन्दन, राई से एक हजार आहुति देने राजा को वश में लाना चाहिये । पूर्ववत् मधु तथा अशोक के फूलों से रात्रि में होम करने से चण्डी के प्रभाव से चक्रवर्ती राजा वश में हो जाता है । अन्त में सौ ब्राह्मणों और कुमारियों को भोजन कराना चाहिये ।

अन्यच्च : राजवश्ये । तत्किमेतन्महाभाग यन्मोहो ज्ञानिनोरपि । ममास्य च भवत्येषा विवेकान्धस्य मूढता । इति श्लोकं प्रतिश्लोकाद्यन्तं पठेत् ॥ ९३ ॥

और भी : राजा को वश में करने के लिए "तत्किमेतन्महाभाग यन्मोहो ज्ञानिनोरपि । ममास्य च भवत्येषा विवेकान्धस्य मूढता ।" इस श्लोक से प्रत्येक श्लोक को सम्पुटित करके पाठ करना चाहिये ।

अन्यच्च : दुर्जनमोहने । ॐ सा त्वमित्थं प्रभावैः स्वैरुदारैर्देवि संस्तुता । मोहयैतौ दुराधर्षावसुरौ मधुकैटभौ । इति श्लोकं प्रतिश्लोकाद्यन्तं पठेत् ॥ ९४ ॥

और भी : दुर्जनों को मोहित करने के लिए "ॐ सा त्वमित्थं प्रभावैः स्वैरुदारैर्देवि संस्तुता। मोहयैतौ दुराधर्षावसुरौ मधुकैटभौ ।" इस श्लोक से प्रत्येक श्लोक को सम्पुटित करके पाठ करे ।

अन्यच्च : वैरिमोहने । ॐ सैषा प्रसन्ना वरदा नृणां भवति मुक्तये । सा विद्या परमा मुक्तेर्हेतुभूता सनातनी । इति श्लोकं प्रतिश्लोक:धन्तं पठेत् ॥ ९५ ॥

और भी : शत्रु के मोहन के लिए 'ॐ सैषा प्रसन्ना वरदा नृणां भवति मुक्तये । सा विद्या परमा मुक्तेर्हेतुभूता सनातनी ।" इस श्लोक से प्रत्येक श्लोक को सम्पुटित करके पाठ करना चाहिये।

अन्यच्च : ॐ मम् वैरिवशं यातः कान्भोगानुपलप्स्यते । ये ममानुगता नित्यं प्रसादधनभोजनैः । इति श्लोक प्रतिश्लोकंसम्पुटिते श्लोकोक्तं फलम् ॥ ९६ ॥

और भी : "ॐ मम वैरिवशं यातः कान्भोगानुपलप्स्यते । ये ममानुगता नित्यं प्रसादधनभोजनैः ।" इस श्लोक से सम्पुटित करके प्रत्येक श्लोक का पाठ करने से श्लोक में उक्त फल प्राप्त होता है ।

अन्यच्च : ॐ इत्युक्ता सा तदा देवी गम्भीरान्तः स्मिता जगौ । दुर्गा भगवती भद्रा ययेदंधार्यते जगत् । इति प्रतिश्लोकपाठे विद्याप्राप्तिः वाग्वैकृतनाशश्च ॥ ९७ ॥

और भी : "ॐ इत्युक्ता सा तदा देवी गम्भीरान्तस्मिता जगौ । दुर्गा भगवती भद्रा ययेदं धार्यते जगत् ।" इस श्लोक का प्रत्येक श्लोक के पहले पाठ करने से विद्यप्राप्ति होती है तथा वाणी की विकृति का नाश होता है ।

अन्यच्च : मनईप्सितप्राप्त्यै गतप्रयोगप्राप्त्यै च । परितुष्टा जगद्धात्री प्रत्यक्षं प्राह चण्डिका। इत्यर्धं पठेत् ॥ ९८ ॥

और भी : मनकी अभीष्ट प्राप्ति के लिए तथा गत प्रयोग की प्राप्ति के लिए "परितुष्टा जगद्धात्री प्रत्यक्षं प्राह चण्डिका ।" इस आधे श्लोक का पाठ करे ।

अन्यच्च : देवीसन्तोषप्राप्त्यै । स च वैश्यस्तपस्तेपे देवीसूक्तं परं जपन् । तौ तस्मिन्पुलिने देव्याः कृत्वा मूर्तिं महीमयीम् । इति पठेत् ॥ ९९ ॥

और भी : देवी की संतोषप्राप्ति के लिए 'स च वैश्यस्तपस्तेपे देवीसूक्तं परं जपन् । तौ तस्मिन्पुलिने देव्याः कृत्वा मूर्तिं महीमयीम् ।' इस श्लोक को पढ़े ।

अन्यच्च : प्रतिमन्त्रं प्रणवम् (ॐ) पूटितं जपेत् शीघ्रतरकार्यसिद्धिः अत्र त्रिमध्वाक्तकमलैर्होमः ॥ अत्र विप्रतीर्थतोयैर्वा ब्राह्मणभोजनान्ते मार्जनं कुर्यात् ॥ १०० ॥

और भी : प्रत्येक मन्त्र को प्रणव (ॐ) से सम्पुटित करके जप करने से शीघ्र कार्य की सिद्धि प्राप्त होती है । इससे घी, मधु तथा शकर से होम करना चाहिए और ब्राह्मण भोजन के बाद विप्रतीर्थ के जल से मार्जन करना चाहिये ।

अन्यच्च : माया (ह्रीं) श्री (श्रीं) (क्लीं) पुटिते सर्वेष्ट सिद्धिः ॥ १०१ ॥

और भी : माया (ह्रीं) श्री (श्रीं) काम (क्लीं) इनसे सम्पमुटित मन्त्र के जप से समस्त अभीष्ट सिद्ध हो जाते हैं ।

अन्यच्च : प्रतिश्लोकं कामबीज (क्लीं) सम्पुटितस्यैकचत्वारिंशद्दिनानि त्रिरावृत्ती पुत्रप्राप्तिः एकविंशतिदिनपर्यन्तमुक्तरीत्या प्रत्यहं पञ्चावृत्त्या वशीकरणम् ।

और भी : प्रतिश्लोक को कामबीज (क्लीं) से सम्पुटित करके चालीस दिन तक तीन बार जप करने से पुत्र की प्राप्ति होती है । उक्त रीति से इक्कीस दिन तक प्रतिदिन पाँच बार पाठ करने से वशीकरण होता है ।

आकर्षणार्थे द्विचत्वारिंशद्दिनपर्यन्तं कामपुटितस्य दशावृत्तिः ॥ १०२ ॥

आकर्षण के लिए बयालीस दिन पर्यन्त काम (क्लीं) से सम्पुटित स्तोत्र का दश बार पाठ करना चाहिये ।

अन्यच्च : माया बीज (ह्रीं) पुटितस्य फट्पल्लवसहिस्य त्रिसप्तदिनपर्यन्तं त्रयोदशावृत्ती उच्चाटनसिद्धिः तादृशस्यैव चतुश्चत्वारिंशद्दिनपर्यन्तं सर्वोपद्रवनाशः स्यात् ॥ १०३ ॥

और भी : मायाबीज (ह्रीं) से सम्पुटित 'फट्' पल्लव सहित इक्कीस दिन पर्यन्त तेरह बार पाठ करने से उच्चाटन की सिद्धि होती है । उसी तरह का चौवालिस दिन पर्यन्त पाठ करने पर सभी उपद्रवों का नाश होता है ।

अन्यदेकोनपञ्चाशद्दिनपर्यन्तं प्रतिश्लोकम् (श्रीं) इति श्रीबीजसम्पुटितस्य पञ्चदशावृत्ती लक्ष्मीप्राप्तिः सद्यो मोहनसिद्धिश्च ॥ १०४ ॥

और भी : उन्चास दिन पर्यन्त प्रतिश्लोक को श्रीबीज (श्रीं) से सम्पुटित करके पाँच बार पाठ करने से लक्ष्मी की प्राप्ति तथा शीघ्र मोहन की सिद्धि होती है ।

अन्यत् प्रतिश्लोकम् (ऐं) बीजसम्पुटितस्यशतावृत्या विद्याप्राप्तिः ॥ १०५ ॥

और भी : प्रति श्लोक (ऐं) बीज से सम्पुटित करके सौ बार पाठ करने से विद्या की प्राप्ति होती है ।

अन्यच्च : मायादी कूर्चबीजेन सम्पुटितस्य एकादशवृत्ती । सर्वोपद्रवनाशः स्यात् ॥ १०६ ॥

और भी : माया बीज (ह्रीं) तथा कूर्च बीज (हूं) से सम्पुटित करके ग्यारह बार पाठ करने से भी उपद्रवों का नाश होता है ।

कार्यपरत्वेन सप्तशतीस्तोत्रान्तर्गतप्रतिश्लोकप्रयोगेणाह :

कार्यपरक सप्तशती श्लोकान्तर्गत प्रति श्लोक के पाठ प्रयोग का फल इस प्रकार होता है :

ॐ दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तोः स्वस्थैः स्मृतामतिमतीव शुभां ददासि । दारिद्र्यदुःखभयहारिणी का त्वदन्या सर्वोपकारकरणाय सदार्द्रचित्ता । अस्य केवलस्यापि श्लोकस्य कार्यानुसारेण लक्षमयुतं सहस्रं शतं वा जपाः सर्वापत्तिनिवारणं स्यात् ॥ १ ॥

"ॐ दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेष जन्तोः स्वस्थैः स्मृतामतिमतीव शुभां ददासि । दारिद्र्यदुःखभयहारिणी का त्वदन्या सर्वोपकारकरणाय सदार्द्रचित्ता ।" केवल इस श्लोक से ही कार्यानुसार एक लाख, दश हजार या सौ बार जप करने से सभी आपत्तियों का निवारण होता है ।

अन्यच्च : ततो वव्रे नृपो राज्यमविभ्रंश्यन्यजन्मनि । अत्रैव च निजं राज्यं हतशत्रुबलं बलात् । इति मन्त्रस्य लक्षजपे पुनः स्वराज्यप्राप्तिः ॥ २ ॥

और भी : "ॐ ततो वव्रे नृपो राज्यमविभ्रंश्यन्यजन्मनि । अत्रैव च निजं राज्यं हतशत्रुबलं बलात् ।" इस मन्त्र का एक लाख जप करने पर पुनः अपना राज्य प्राप्त हो जाता है ।

अन्यच्च : ॐ दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेष जन्तोः स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि । यदन्ति यच्च दूरके भयं विन्दति मामिह । पवमानवितज्जहि । दारिद्र्यदुःखभयहारिणि का त्वदन्या सर्वोपकारकरणाय सदार्द्रचित्ता । इति कार्यानुसारेण लक्षमयुतं सहस्रं शतं वा जपः सर्वापत्तिनिवारणः त्यात् ॥ ३ ॥

और भी : "ॐ दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तोः स्वस्थै स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि । यदन्ति यच्च दूर के भयं विन्दति मामिह । पवमानवितज्जहि। दारिद्र्य दुःखभयहारिणि का त्वदन्या सर्वोपकारकरणाय सदार्द्रचित्ता ।" कार्यानुसार इसका एक लाख, दस हजार या एक एक हजार या एक सौ जप समस्त आपत्तियों का निवारण करता है ।

अन्यच्च : ॐ भगवत्या कृतं सर्वं न किञ्चिदवशिष्यते । यदयं निहतः शत्रुरस्माकं महिषासुरः । यदि चापि वरो देयस्त्वयास्माकं महेश्वरि । संस्मृतासंस्मृता त्वं नो हिंसेथाः परमापदः । यश्च मर्त्यः स्तवैरेभिस्त्वां स्तोष्यत्यमलानने । तस्य वित्तर्धिविभवैर्धनदारादिसम्पदाम् । वृद्धयेस्मत्प्रसन्ना त्वं भवेथाः सर्वदाम्बिके । इति द्वादशोत्तरशताक्षरो मन्त्रः सर्वकामदः सर्वापन्निवारणश्च ॥ ४ ॥

और भी : "ॐ भगवत्या कृतं सर्व न किञ्चिदवशिष्यते । यदयं निहतः शत्रुरस्माकं महिषासुरः । यदि चापि वरो देयस्त्वयास्माकं महेश्वरि । संस्मृतासंस्मृता त्वं नो हिंसेथाः परमापदः । यश्च मर्त्यः स्तवैरेभिस्त्वां स्तोष्यपत्यमलानने । तस्य वित्तर्धिविभवैर्धनदारादि सम्पदाम् । वृद्धयेऽस्मत्प्रसन्ना त्वं भवेथाः सर्वदाम्बिके ।" यह एक सौ बारह अक्षरों का मन्त्र समस्त कामनाओं को पूर्ण करने वाला तथा समस्त आपत्तियों का निवारक है ।

अन्यच्च : ॐ देवि प्रपन्नार्तिहरे प्रसीद मातर्जगतोखिलस्य । प्रसीद विश्वेश्वरि पाहि विश्वं त्वमीश्वरी देवि चराचरस्य । इति श्लोकस्य यथाकार्यं लक्षायुतसहस्रशतान्यतमे जपे सर्वापन्निवृत्तिः सर्वकामाप्तिश्च । इति श्लोकेन दीपाग्रे केवलमेव नमस्कारकरणे अतिशीघ्रं सिद्धिः ॥ ५ ॥

और भी : "ॐ देवि प्रपन्नार्तिहरे प्रसीद प्रसीद मातर्जगतोऽखिलस्य । प्रसीद विश्वेश्वरि पाहि विश्वं त्वमीश्वरी देवि चराचरस्य ।" कार्य के अनुसार इस श्लोक का एक लाख, दश हजार, एक हजार या एक सौ में से किसी संख्या में जप करने से समस्त आपत्तियों की निवृत्ति और समस्त अभीष्टों की प्राप्ति होती है । इस श्लोक से दीपक के सामने केवल नमस्कार मात्र करने से अतिशीघ्र सिद्धि होती है ।

अन्यच्च : ॐ इत्थं निशम्य देवानां वचांसि मधुसूदनः । चकार कोपं शम्भुश्च भ्रुकुटीकुटिलाननौ । इति श्लोकं त्रिंशत्सहस्रं जपेत् । सम्पत्समृद्धिर्भवति ॥ ६ ॥

और भी : "ॐ इत्थं निशम्य देवानां वचांसि मधुसूदनः । चकार कोपं शम्भुश्च भ्रुकुटीकुटिलाननौ ।" इस श्लोक को तीस हजार जपने से सम्पत्ति तथा समृद्धि प्राप्त होती है ।

अन्यच्च : ॐ नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः । नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम् । इति मन्त्रेण मासं जपः दशांशेन क्षीरसंयुतैः कमलैर्होमो वा लक्ष्मीप्राप्तिः ॥ ७ ॥

और भी : "ॐ नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः । नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम् ।" इस मन्त्र से मास पर्यन्त जप करके दशांश से दुग्धयुक्त कमलों के द्वारा होम करने से लक्ष्मी की प्राप्ति होती है ।

अन्यच्च : ॐ रोगानशेषानपहंसि तुष्टा रुष्टा तु कामान्सकलानभीष्टान् । त्वामाश्रितानां न विपन्नरणां त्वामाश्रिता ह्याश्रयतां प्रयान्ति । इति लक्षं जपेत् रोगनाशः स्यात् ॥ ८ ॥

और भी : "ॐ रोगानशेषानपहंसि तुष्टा रुष्टा तु कामान्सकलानभीष्टान् । त्वामाश्रितानां न विपन्नराणां त्वामाश्रिता ह्याश्रयतां प्रयान्ति ।" इस मन्त्र का एक लाख जप करने से रोग का नाश होता है।

अन्यच्च : इत्युक्ता सा तदा देवी गम्भीरान्तःस्मिता जगौ । दुर्गा भगवती भद्रा ययेदं धार्यते जगत् । इति लक्षं जपेत् विद्याप्राप्तिः वाग्वैकृतनाशश्च ॥ ९ ॥

और भी : "इत्युक्ता सा तदा देवी गम्भीरान्तःस्मिता जगौ । दुर्गा भगवती भद्रा ययेदं धार्यते जगत् ।" इसका एक लाख जप करने से विद्या प्राप्ति होती है । तथा वाणी की विकृति का नाश होता है ।

अन्यच्च : ॐ हिनस्ति दैत्यतेजांसि स्वनेनापूर्य या जगत् । सा घण्टा नो देवि पापेभ्यो नः सुतानिव । इत्यनेन सदीपबलिदानं घण्टाबन्धनेन बालग्रहशान्तिः ॥ १० ॥

और भी : "ॐ हिनस्ति दैत्य तेजांसि स्वनेनापूर्य या जगत् । सा घण्टा पातु नो देवि पापेभ्यो नः सुतानिव ।" इससे दीपक सहित बलिदान और घण्टाबन्धन से बालग्रह की शान्ति होती है ।

अन्यच्च : ॐ इत्थं यदायदा बाधा दानवोत्था भविष्यति । तदातदाऽवतीर्याहं करिष्याम्यरिसंक्षयम् । इति श्लोकस्य लक्षजपे महामारीशान्तिः ॥ ११ ॥

और भी : "ॐ इत्थं यदा यदा बाधा दानवोत्था भविष्यति । तदा तदाऽवतिर्याहं करिष्याम्यरिसंक्षयम् ।" इस श्लोक का एक लाख जप करने पर महामारी की शान्ति होती है ।

अन्यच्च : ॐ सर्वाबाधाप्रशमनं त्रैलोक्यस्याखिलेश्वरि । एवमेव त्वया कार्यमस्मद्वैरिविनाशनम् । इत्यस्य लक्षजपे श्लोकोक्तं फलं सर्वबाधाशमनं च ॥ १२ ॥

और भी : सर्वबाधा प्रशमनं त्रैलोक्यस्याखिलेश्वरि । एवमेव त्वया कार्यमस्मद्वैरिविनाशनम् ।" इसका एक लाख जप करने पर श्लोक में कहे गये फलों की प्राप्ति तथा समस्त बाधाओं की शान्ति होती है ।

अन्यच्च : ॐ एवमुक्त्वा समुपात्य सा रूढा तं महासुरम् । पादेनाक्रम्य कण्ठे च शूलनैनमताडयत् । इति लक्षं जपेत् मारणोक्तावृत्तिभिः फलसिद्धिः ॥ १३ ॥

और भी : "ॐ एवमुक्त्वा समुपात्य सा रूढा तं महासुरम् । पादेनाक्रम्य कण्ठे च शूलनैनमताडयत् ।"

इसका एक लाख जप करना चाहिये । मारण के लिए कही गयी आवृत्ति के बराबर पाठ करने से फल की सिद्धि होती है ।

अन्यच्च : ॐ ज्ञानिनामपि चेतांसि देवी भगवती हि सा । बलादाकृष्य मोहाय महामाया प्रयच्छति । इति श्लोक जपमात्रेण सद्यो मोहनमित्यनुभव सिद्धम् ॥ १४ ॥ इति ।

और भी : "ॐ ज्ञानिनामपि चेतांसि देवी भगवती हि सा । बलादाकृष्य मोहाय महामाया प्रयच्छति।" इस श्लोक के जपमात्र से तत्काल मोहन हो जाता है । यह अनुभवसिद्ध है ।

दुर्गापाठस्य नव नामामि तल्लक्षणानि च :

रहस्योक्तानि नामानि ब्रह्मोक्तानि वदामिते।

देवी के गुप्त नव नामों और उसके लक्षणों को, जिन्हें ब्रह्मा ने कहा था, मैं तुम्हें बता रहा हूँ :

महाविद्या महातन्त्री चण्डी सप्तशतीति च मृतसञ्जीवनी नाम पचमं परिकीर्तितम् ॥ १ ॥ षष्ठं चैव महाचण्डी सप्तमं रूपदीपिका ॥ २ ॥ अष्टमं तु चतुःषष्टियोगिनी नवमी परा ।

१. महाविद्या । २. महातन्त्री । ३. चण्डी । ४. सप्तशती । ५. मृतसञ्जीवनी । ६. महाचण्डी । ७. रूपदीपिका । ८. चतुःषष्टियोगिनी । ९. पराचण्डी - ये देवी के नव नाम हैं ।

एतानि योभिजानाति नामानि नृपनन्दन । जपं विना भवेत्तस्य चण्डिका वरदा सदा ।

हे राजपुत्र, जो दुर्गासप्तशती के इन सभी नामों को जानता है उसे जप के बिना ही चण्डिका सदा वर देती हैं ।

पूर्वोक्तं नवविद्यानां स्वरूपं तत्र चोदितम् ॥ ४ ॥

पूर्वोक्त नव विद्याओं का स्वरूप वहाँ कहा गया है ।

अद्याद्वितीयतृतीयचरितानुक्रमेण च । महाविद्या सप्तशती सर्वतन्त्रेषु गोपिता ॥ ५ ॥

१. आद्य, द्वितीय तथा तृतीय चरितानुक्रम से सप्तशती 'महाविद्या' सभी तन्त्रों में गुप्त रूप से निहित है ।

आद्यंतमध्यचरितं महातन्त्रमितिरितम् ।

२. आद्य, अन्त्य तथा मध्य चरितानुक्रम से महाविद्या को 'महातन्त्री' कहा गया है ।

आदिमध्यान्तचारित्रक्रमाच्चण्डीमहामनुः ॥ ६ ॥

३. आद्य, मध्य तथा अन्त्य चरितानुक्रम से महाविद्या को 'चण्डीमहामन्त्र' कहा गया है ।

मध्यमाद्यन्त चारित्रक्रमात्सप्तशतीति च ।

४. मध्य, आद्य तथा चरितानुक्रम से महाविद्या को 'सप्तशती' कहा गया है ।

इत्यादिमध्यचारित्रन्मृतसञ्जीवनी स्मृता ॥ ७ ॥

५. अन्त, आदि तथा मध्य चरितानुक्रम से महाविद्या को 'भृतसञ्जीवनी' कहा गया है ।

अन्त्यमध्यादिचारित्रान्महाचण्डीति कथ्यते ।

६. अन्त्य, मध्य तथा आद्य चरितानुक्रम से महाविद्या को 'महाचण्डी' कहा गया है ।

रूपं देहीति संयोज्य नवार्णमनुना सह ॥ ८ ॥ सम्पुटत्वेन संयोज्य प्रतिश्लोकं जपेत्तथा । रूपचण्डीति सा प्रोक्ता सर्वाभीष्टफलप्रदा ॥ ९ ॥

७. "रूपं देहि जयं देहि" इस श्लोक को नवार्ण मन्त्र के साथ संयुक्त करके प्रत्येक श्लोक को उससे सम्पुट करके जप करने को 'रूपचण्डी' कहा गया है । यह सभी अभीष्टों को देने वाली हैं ।

योगिनीनां चतुःषष्टियोगात्सप्तशतीमनोः । चतुःषष्टीति सा प्रोक्ता योगसिद्धिप्रदायिनी ॥ १० ॥

८. सप्तशती मन्त्रों से चौंसठ योगिनियों का सम्बन्ध होने से महाविद्या को 'चतुःषष्ठी' कहते हैं ।

यह योगसिद्धि प्रदान करने वाली हैं ।

पराबीजसमायोगात्पराचण्डीति कथ्यते ।

९. पराबीज के साथ संयुक्त होने के कारण महाविद्या को 'पराचण्डी' कहते हैं ।

एवं नवानां भेदानां नामानि च पृथक् पृथक् ॥ ११ ॥ इति

इस प्रकार दुर्गासप्तशती के नव भेदों के पृथक्-पृथक् नाम यहाँ बताये गये हैं ।

नवदुर्गाविधानम् :

नवदुर्गालक्षणं यथा । प्रत्येकं तैस्त्रिभिर्बीजैर्जयादिनवनामभिः । जयां च विजयां भद्रां । भद्रकालीमनन्तरम् ॥ १ ॥ सुमुखीं दुर्मुखीं प्रज्ञां पश्चाद् व्याघ्रमुखीं तथा । अथ सिंहमुखीं दुर्गां नवदुर्गां विदुर्बुधाः ॥ २ ॥

नवदुर्गा के लक्षण इस प्रकार हैं :

जया आदि नव नामों में से प्रत्येक के तीन-तीन बीज हैं ।

१. जया । २. विजया । ३. भद्रा । ४. भद्रकाली । ५. सुमुखी । ६. दुर्मुखी । ७. प्रज्ञा । ८. व्याघ्रमुखी । ९. सिंहमुखी ये नवदुर्गा हैं ।

इस प्रकार विद्वानों ने नवदुर्गा का अभिधान कहा है ।

एवं ज्ञात्वा सप्तशतीं यो जपेत्सुसमाहितः । तस्य देवी सुप्रसना सर्वाभीष्टप्रदा भवेत् ॥ ३ ॥

इस प्रकार सप्तशती को जानकर सुसमाहित होकर जो जप करता है उस पर देवी अत्यन्त प्रसन्न होती हैं और उसे समस्त अभीष्ट फलों को प्रदान करती हैं ।

अस्य विधानम् । कृतनित्यक्रियः स्वयं चन्दनागुरुकुंकुमादिलिप्ताङ्गः सुवस्त्रमाल्याद्यलंकृतः पूजास्थानं गत्वा प्राङ्मुखः स्वासने उपविश्य आचम्य प्राणानायम्य स्वेष्टदेवीं ध्यात्वा हस्ते कुशजलमादाय देशकालौ संकीर्त्य शुक्लपक्षे प्रतिपदमारभ्य नवमीपर्यन्तं नवदुर्गाविधानमहं करिष्ये । इति संकल्प्य देवीं सम्पूज्य देव्यग्रे शालिपुञ्जोपरि स्वर्णादिरचितं कुम्भं नवतन्तुनावेष्टितं चन्दनादिचर्चितं सुधूपितं सहिरण्यं वज्रमुक्ता फलपद्मरागनील मरकतैः पञ्चरत्नैः समायुक्तं मही द्यौरिति भूमिं स्पृष्ट्वा ओषधयः समिति मन्त्रेण धान्यराशिं स्पृष्ट्वा आजिघ्र कलशम् इति कलशं संस्थाप्य इमं मे गङ्गे इति जलेनापूर्य तत्र कुंकुमागुरुकर्पूर चन्दनपंकं कुसुमानि च निःक्षिप्य तस्य मुखे आम्रदलानि निधाय तदुपरि नारिकेलफलाढ्यं सतण्डुलं कलशजातीयं पात्रं निधाय पूर्णा दर्वीति मन्त्रेण मन्त्रयेत् । युवा सुवासा इति रक्तवस्त्रेण वेष्ट्य कुम्भस्य दशदिक्षु पूर्वादिक्रमेणेन्द्रादिदशदिक्पालान् सम्पूज्य ततः स्वर्णादिनिर्मितां देवीप्रतिमां ताम्रपात्रे निधाय घृतेनाभ्यज्य तदुपरि दुग्धधारां जलधारां च दत्त्वा स्वच्छवस्त्रेण सम्प्रोक्ष्य आसनमन्त्रेण पुष्पाद्यासनं दत्त्वा कलशोपरि संस्थाप्य प्रतिष्ठां च कृत्वा पद्धतिमार्गेण षोडशोपचारैः सम्पूज्य न्यासादिकं कृत्वा सप्तशतीपाठं नवार्णमन्त्रजपं च कुर्यात् । प्रत्यहमेकैकामावृत्तिं पठित्वा दशमे दिवसे वक्ष्यमाणविधिना कुण्डादावग्निं संस्थाप्य प्राग्वद्धोमं कृत्वा ब्राह्मणान् कुमारिकाः सुवासिनीश्च पूजाभोजनताम्बूलदक्षिणादिभिः परितोष्य प्रणम्य विसृजेत् ।

इसका विधान :

साधक स्वयं नित्य क्रिया करके चन्दन,अगर, कुंकुम आदि को अपने शरीर पर लगाकर उत्तम वस्त्र तथा माला से अलंकृत होकर पूजा-स्थान पर जाकर पूर्वाभिमुख अपने आसन पर बैठकर आचमन तथा प्राणायाम करके अपनी इष्ट देवी का ध्यान करके हाथ में कुशा तथा जल लेकर 'देशकाल का संकीर्तन करके शुक्लपक्ष में प्रतिपदा से आरम्भ करके नवमी पर्यन्त नवदुर्गा के विधान को मैं करूँगा' इस प्रकार का संकल्प करके देवी की पूजा करके देवी के आगे शालि चवल की राशि पर स्वर्ण आदि

से रचित नव धागे से वेष्टित करके चन्दन आदि से पुजित, धूप से धूपित, हीरा, मोती, पद्मराग, नीलम, मरकत (पन्ना) इन पाँच रत्नों से युक्त घट को 'मही द्यौरिति' मन्त्र से भूमि को छूकर 'आषधयः समिति' मन्त्र से धान्यराशि को छूकर 'आजिघ्र कलशम्' इस मन्त्र से कलश की स्थापना करके 'इमं मे गङ्गे' इस मन्त्र से जल से घड़े को भर कर उसमें कुंकुम, अगर, कपूर, चन्दन का लेप तथा फूल डालकर उसके मुख पर आम के पल्लव रख कर उसके ऊपर कलश के समान ही धातु से बनी ढकनी रखकर उसमें चावल, चावल पर नारियल रख कर उसे 'पूर्णा दवि' मन्त्र से अभिमन्त्रित कर कुम्भ को रक्तवस्त्र से वेष्टित करे तथा दश दिशाओं में पूर्वादि क्रमसे इन्द्रादि दश दिक्पालों का पूजन करे। फिर स्वर्णादि से निर्मित देवी की मूर्ति को ताँबे के बर्तन में रखकर उसका घी से अभ्यङ्ग करके उसपर दुग्धधारा तथा जलधारा देकर स्वच्छ वस्त्र से सुखाकर आसन-मन्त्र से पुष्पाद्यासन देकर कलश के ऊपर रखकर उसमें प्राणप्रतिष्ठा करके पद्धति मार्ग से षोडशोपचारों से पूजा करके न्यासादिक करके सप्तशती का पाठ तथा नवार्ण मन्त्र का जप करे। प्रतिदिन एक-एक पाठ करके दसवें दिन आगे कही गयी विधि से कुण्ड आदि में अग्नि स्थापित करके पूर्ववत् होम करके ब्राह्मणों तथा उत्तम वस्त्र धारण किये हुए कुमारियों को भोजन कराये तथा भोजन के बाद ताम्बूल और दक्षिणा आदि से उन्हें सन्तुष्ट करके प्रणाम करके उनका विसर्जन करे।

अत्रापि स्वयमशक्तिश्चेद्ब्राह्मणद्वारा यथोक्तविधिना जपादि कारयित्वा दक्षिणादिभिः परितोषयेदिति।

यहाँ भी यदि स्वयम् अशक्त हो तो ब्राह्मण द्वारा यथोक्तविधि से जपादि कराकर उन्हें दक्षिणादि से सन्तुष्ट करे।

अस्यैव विधानस्य कृष्णपक्षे षष्ठ्यादिचतुर्दश्यन्तं क्रियमाणस्य कालरात्रिरिति नाम उक्तम्।

कृष्णपक्ष में षष्ठी से चतुर्दशी पर्यन्त किये जाने वाले इसी विधान को 'कालरात्रि' नाम से कहा गया है। तथा च :

तथा च : कृष्णषष्ठीं समारभ्य नवदुर्गाविधानवत्। यो यथा कुरुते जाप्यं कालरात्रिरुदाहृता ॥ १ ॥ महाकालोद्भवं दुःखं कालरात्रिर्व्यपोहति। नवदुर्गाविधानेपि यत्फलं परिकीर्तितम्। कालरात्रिविधानेपि तत्फलं लभते ध्रुवम् ॥ २ ॥ इति नवदुर्गाकालरात्रिसंज्ञकनवचण्डीविधानं समाप्तम्।

"कृष्णषष्ठी से प्रारम्भ करके नवदुर्गा विधान के सामन जो जैसा जप करता है उसे कालरात्रि कहा जाता है। महाकाल के द्वारा उत्पन्न दुःख को कालरात्रि दूर कर देती है। जो फल नवदुर्गा के विधान में कहा गया है वही फल कालरात्रि के विधान में भी निश्चित रूप से मिलता है।"

इति नवदुर्गा कालरात्रिसंज्ञक नवचण्डीविधान समाप्त।

नित्यचण्डीविधानम् :

नित्यचण्ड्यादिजाप्यस्य विधानं ते वदाम्यहम्। शुक्लभूतामवष्टभ्य मासं प्रतिदिनं जपेत् ॥ १ ॥ सकृद्रहस्यसंयुक्तं चण्डिकाचरितत्रयम्। दशांशहोमसहितं सोच्यते नित्यचण्डिका ॥ २ ॥

नित्य चण्डी आदि के जप का विधान मैं तुम्हें बता रहा हूँ। शुक्लपक्ष से प्रारम्भ कर मासपर्यन्त प्रतिदिन रहस्य सहित चण्डिका के तीनों चरित्रों का जप करना चाहिये। जप का दशांश होम करना चाहिये। इस विधान को नित्य चण्डिका कहते हैं।

धनपुत्रयशोदात्री महाव्याधिविनाशिनी। महाभयमहादुःखहन्त्री सौख्य प्रदायिनी ॥ ३ ॥

यह नित्यचण्डी धन, पुत्र और यश देने वाली तथा महारोगों को विनष्ट करने वाली है। यह महाभय, महादुःख को नष्ट कर सुखों को देने वाली है।

इसका विधान इस प्रकार है :

अस्य विधानम् । कृतनित्यक्रियः पूजास्थानं गत्वा पूर्वाभिमुखः स्वासने समुपविश्य आचम्य प्राणानायम्य स्वेष्टदेवतां स्मरन् हस्ते कुशजलमादाय "देशकालौ संकीर्त्य अमुकराशिगते सवितरि शुक्लपक्षे चतुर्दश्याममुकक्षेत्रे अमुकगोत्रोमुकशर्माहममुकफलाप्तये अद्यारभ्य मासमात्रं नित्यचण्डीजपं करिष्ये" इति संकल्प्य प्राग्वत्पूजादिकं कृत्वा मूलं जपित्वा देव्या यच्चरितत्रयं नवार्णादिन्यासपूर्वकं रहस्यं सकृज्जपेत् । कवचार्गलाकीलक पूर्वकमपि पठेत् । एवमेकमासं जपित्वा मासानन्तरं वक्ष्यमाणविधिना कुण्डे स्थण्डिले वाग्निं संस्थाप्य सघृत पायसैस्तिलमिश्रैर्मूलमन्त्रस्य जपदशांशहोमपुरःसरंवक्ष्यमाणविधिना हुत्वा पूर्णाहुतिं च दद्यात् ।

साधक नित्य क्रिया करके पूजास्थान पर जाकर पूर्वाभिमुख अपने आसन पर बैठकर आचमन तथा प्राणायाम करके अपने इष्टदेवता का स्मरण करते हुए हाथ में कुश तथा जल लेकर 'देशकालौ संकीर्त्य अमुकराशिगते सवितरि शुक्लपक्षे चर्तुर्दश्याममुकक्षेत्रे अमुकगोत्रोमुकशर्माहममुकफलाप्तये अद्यारभ्य मासमात्रं नित्यचण्डीजपं करिष्ये" इससे संकल्प करके पूर्ववत् पूजादि करके मूलमन्त्र का जप करके देवी का जो तीन चरित्र है उसका नवार्णादि न्यासपूर्वक रहस्य के साथ एक बार जप करे । कवच, अर्गला तथा कीलक सहित भी पाठ करे । इस प्रकार एक मास तक जप करके मास के बाद आगे कही विधि से कुण्ड में या वेदी (स्थण्डिल) पर अग्नि की स्थापना करके घी सहित तिल मिले खीर से मूलमन्त्र का जप तथा उसके दशांश से होमपूर्वक आगे कही विधि से पूर्णाहुति देवे ।

ब्राह्मणान् कुमारिकाः सुवासिनीश्च सम्पूज्य भोजयित्वा ताम्बूलदक्षिणादिभिः परितोष्य प्रणम्य विसृजेत् । एवं स्वयं कर्तुमशक्तश्चेद्ब्राह्मणद्वारा कारयित्वा तं वस्त्रालङ्कारादिभिर्दक्षिणाभिर्भूयसीभिः परितोषयेत् । एतत्त्रिगुणितं सर्वं नवदुर्गाजपे फलम् । कथितं तदवाप्नोति नित्यचण्डीजपे कृते ।। १ ।। इति नित्य मासचण्डीविधानम् ।

ब्राह्मणों तथा उत्तम वस्त्र धारण किये हुये कुमारियों की पूजा कर उन्हें भोजन कराकर ताम्बूल तथा दक्षिणा आदि से सन्तुष्ट कर प्रणाम करके विसर्जित करे । इस प्रकार स्वयं करने में असमर्थ हो तो ब्राह्मण द्वारा कराकर उसे वस्त्र तथा अलङ्कारादि लम्बी दक्षिणाओं से सन्तुष्ट करे । इससे तिगुना नवदुर्गा के जप में फल है, ऐसा जो कहा गया है वह नित्यचण्डी के जप में साधक पाता है ।

इति नित्य मासचण्डीविधान ।

शीघ्रकार्यसिद्ध्यै प्रत्यहं नवचण्डीविधानम् :

आदौ अनुलोमं त्रयोदशाध्यायान् पठित्वा पश्चाद्विलोमेन पठित्वा पुनः शापोद्धारवत्पठित्वा एवं क्रमेण प्रत्यहं नवचण्डीं कुर्यात् । अल्पकार्ये नव दिनपर्यन्तं मध्यमकार्ये एवविंशतिदिनपर्यन्तं महाकार्ये त्रयस्त्रिंशद्दिनपर्यन्तं मन्त्रं सिध्यत्यनन्तरं जपेत् । जपान्ते पायसतिलाज्यमधुपुष्परसजातीपत्रफलयवव्रीहिसितशर्करायुतैर्दशांशेन नवार्णपीठयुतेग्नौ जुहूयात् । तद्दशांशेन हरिद्राकुंकुमजलेन सन्तर्पयेत् । तद्दशांशेन पायसलड्डुकपञ्चखाद्यैर्भोजयेत् । अत्र मार्जनमेवं कृते शीघ्रकार्यसिद्धिः । इति प्रत्यहं नवचण्डीविधानम् ।

पहले अनुलोम क्रम से तेरह अध्यायों का पाठ करके बाद में विलोम क्रम से पाठ करके पुनः शापोद्धार की तरह पाठ करे । इस क्रम से प्रतिदिन नवचण्डी का पाठ करे ।

छोटे कार्य में नव दिन, मध्यम कार्य में इक्कीस दिन, बड़े कार्य में तैतीस दिन तक मन्त्र को सिद्धि के अनन्तर जपे । जप के बाद, खीर, तिल, घी, मधुपुष्प का रस (महुआ के फूल का रस), चमेली के पत्ते, फल, जव, धान तथा शकर से जप के दशांश से नवार्णपीठ से युक्त अग्नि में होम करे । उससे दशांश से हल्दी तथा कुंकुम के जल से तर्पण करे । तर्पण के दशांश से खीर, लड्डू तथा पञ्चखाद्य (चिरौंजी,

नारियल, खजूर, किशमिश तथा शकर) से भोजन कराये। यहाँ पर इस प्रकार मार्जन करने से शीघ्र कार्य की सिद्धि होती है।

इति दैनिक नवचण्डी विधान।

नवरात्रे वार्षिकनवचण्डीविधानम्।

नवरात्र में वार्षिक नवचण्डी का विधान :

आश्विने शुक्लपक्षे तु कर्तव्यं नवरात्रकम्। प्रतिपदादिक्रमेणैव यावच्च नवमी भवेत्॥ १॥

आश्विन (क्वार) मास के शुक्लपक्ष में नवरात्र व्रत करना चाहिये। शुक्लपक्ष की प्रतिपदा से नवमी पर्यन्त यह विधान करना चाहिये।

अमावस्याद्वितीयावेधे नवरात्रं शुभाशुभम् : यो मां पूजयते नित्यं द्वितीयादिगुणान्विताम्। प्रतिपच्छारदे ज्ञात्वा सोऽश्नुते सुखमव्ययम्॥ २॥ यदि कुर्यादमायुक्तप्रतिपत्स्थापनं मम। तस्य शापायुतं दत्त्वा भस्मशेषं करोम्यहम्॥ २॥ तत्र सा पूर्वाह्णव्यापिनी ग्राह्या। (अस्य विधानम्) तत्राश्विनशुक्लप्रतिपदि पूर्वाह्णे तिलतैलेन कृताभ्यङ्गो यजमानः साधक : कृतनित्यक्रियः सुसंस्कृते शुभे स्थाने सुरम्ये गृहे तोरणाद्यलंकृते कदलीस्तम्भमण्डिते सुधूपद्रव्यधूपिते सुदीपप्रकाशाढ्ये स्वासने प्राङ्मुख : समुपविश्याचम्य प्राणानायम्य 'देशकालौ संकीर्त्य श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीप्रीत्यर्थं सकलमनोरथफलावाप्त्यर्थं चतुर्विधपुरुषार्थसिध्यर्थं नवचण्डीविधानमहं करिष्ये' इति संकल्प्य गणेशपूजनादिकं कृत्वा तस्मिन्गृहे पूर्वस्यां दिशि 'ॐ गजारूढे कादम्बरि देवि इहागच्छ इह तिष्ठ' इत्यावाह्य क्वचित्पीठे संस्थाप्य श्रीकादम्बरि एष ते गन्धः॥ १॥ कादम्बरि इमानि ते पुष्पाणि वौषट्॥ २॥ ॐ कादम्बरि एष ते धूपो नमः॥ ३॥ ॐ कादम्बरि एष ते दीपो नमः॥ ४॥ तदग्रे पात्रान्तरे घृतशर्करासहितं पायसं नानाव्यञ्जनादिसहितं निधाय श्रीकादम्बरि एष ते बलिर्नमः॥ ५॥ इति बलिमुत्सृज्य क्षमस्वेति प्रणमेत्।

अमावस्या तथा द्वितीया का वेध होने पर नवरात्र का शुभाशुभ विचार :

यदि कोई शरद् ऋतु में द्वितीया से विद्ध प्रतिपदा को मेरा पूजन करता है तो उसे मैं दश हजार शाप देकर भस्म कर देती हूँ।

यहाँ पर द्वितीया विद्ध प्रतिपदा जो कही गयी है, वह पूर्वाह्न व्यार्पिनी ली जानी चाहिये। आश्विन शुक्ल प्रतिपदा के दिन पूर्वाह्न में तिल का तेल शरीर में लगाकर यजमान साधय नित्यक्रिया करके सुसंस्कृत शुभ स्थान में तोरणादि से अलंकृत, केले के स्तम्भन से मण्डित उत्तम धूप से धूपित उत्तम दीप से प्रकाशित सुन्दर घर में पूर्वाभिमुख बैठ कर आचमन और प्राणायाम करके "देशकालौ संकीर्त्य श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीप्रीत्यर्थं सकल मनोरथफलावाप्त्यर्थं चतुर्विधपुरुषार्थसिध्यर्थं नवचण्डीविधानमहं करिष्ये" यह संकल्प करके गणेशजी की पूजा आदि करके उस घर में पूर्वदिशा में "ॐ जगारुढे कादम्बरि देवि इहागच्छ इह तिष्ठ" इस प्रकार आवाहन करके "श्रीकादम्बरि एष ते गन्धः॥ १॥ कादम्बरि इमानि ते पुष्पाणि वौषट्॥ २॥ ॐ कादम्बरि एष ते धूपो नमः॥ ३॥ ॐ कादम्बरि एष ते दीपो नमः॥ ४॥" यह कहे। फिर उसके आगे घी, शकर सहित खीर, नाना प्रकार के व्यञ्जनादि से युक्तपात्र रखकर "श्रीकादम्बरि एष ते बलिर्नमः" इससे बलि देकर "क्षमस्व" यह कह कर प्रणाम करे।

तत आग्नेय्याम् ॐ अजवाहने उल्के देवि इहागच्छ इह तिष्ठ इत्युल्कामावाह्य सम्पूज्य बलिं दद्यात्। दक्षिणे ॐ महिषारूढे करालि देवि इहागच्छ इह तिष्ठ इत्यावाह्य सम्पूज्य बलिं च दद्यात्। नैर्ऋत्ये ॐ प्रतवाहने रक्ताक्षि देवि इहागच्छ इह तिष्ठ इत्यावाह्य सम्पूज्य बलिं च दद्यात्। पश्चिमे ॐ श्वेतकौलीरवाहने श्वेताम्बरे देवि इहागच्छ इह तिष्ठ इत्यावाह्य सम्पूज्य बलिं च दद्यात्। वायव्ये

ॐ मृगवाहने हरितां देवि इहागच्छ इह तिष्ठ इत्यावाह्य सम्पूज्य बलिं च दद्यात् । उत्तरे ॐ सिंहवाहने यक्षिणि देवि इहागच्छ इह तिष्ठ इत्यावाह्य सम्पूज्य बलिं च दद्यात् । ईशाने ॐ वृषवाहने कङ्कालि देवि इहागच्छ इह तिष्ठ इत्यावाह्य सम्पूज्य बलिं च दद्यात् । पूर्वेशानयोर्मध्ये ॐ हंसवाहने सुरश्रेष्ठे देवि इहागच्छ इह तिष्ठ इत्यावाह्य सम्पूज्य बलिं च दद्यात् । निर्ऋतिवरुणयोर्मध्ये ॐ अहिवाहने सर्पराज्ञि देवि इहागच्छ इह तिष्ठ इत्यावाह्य सम्पूज्य बलिं च दद्यात् । एवं दशदिक्षु यथाक्रमेणेन्द्रादीनपि सम्पूज्य गृहमण्डले स्वशाखोक्तविधिना नवग्रहान् यथास्थानं सम्पूज्येत् ।

इसके पश्चात् आग्नेयी दिशा में "ॐ अजवाहने उल्के देवि इहागच्छ इह तिष्ठ" इससे आवाहन तथा पूजन करके बलि देवे । दक्षिण दिशा में "ॐ महिषारूठे करालि देवि इहागच्छ इह तिष्ठ" इससे आवाहन तथा पूजन करके बलि देवे । नैर्ऋत्य में "ॐ प्रेतवाहने रक्ताक्षि देवि इहागच्छ इह तिष्ठ" इससे आवाहन और पूजन करके बलि देवे । पश्चिम दिशा में "ॐ श्वेतकौलीवाहने श्वेताम्बरे देवि इहागच्छ इह तिष्ठ" इससे आवाहन और पूजन करके बलि देवे । वायव्य दिशा में "ॐ मृगवाहने हरितां देवि इहागच्छ इह तिष्ठ" इससे आवाहन तथा पूजन करके बलि देवे । उत्तर दिशा में "ॐ सिंहवाहने यक्षिणि देवि इहागच्छ इह तिष्ठ" इससे आवाहन तथा पूजन करके बलि देवे । ईशान दिशा में "ॐ वृषवाहने कङ्कालि देवि इहागच्छ इह तिष्ठ" इससे आवाहन तथा पूजन करके बलि देवे । पूर्व और ईशान दिशाओं के मध्य "ॐ हंसवाहने सुरश्रेष्ठे देवि इहागच्छ इह तिष्ठ" इससे आवाहन तथा पूजन करके बलि देवे । निर्ऋति तथा वारुण दिशाओं के मध्य में "ॐ अहिवाहने सर्पराज्ञि देवि इहागच्छ इह तिष्ठ" इससे आवाहन और पूजन करके बलि देवे । इस प्रकार दशों दिशाओं में यथाक्रम इन्द्र आदि की पूजा करके गृहमण्डल में स्वशाखोक्त विधि से नवग्रहों की यथास्थान पूजा करे ।

ततश्चतुरस्रचतुर्हस्तवेदिकायां सर्वतोभद्रं वाष्टदलं विधाय शालिपुञ्जोपरि स्वर्णादिरचितं कुम्भं नवतन्तुनावेष्टितं चन्दनादिचर्चितं सुधूपितं सहिरण्यं वज्रमुक्ताफलपद्मरागनीलमरकतैः पञ्चरत्नैः समायुक्तं मही द्यौरिति भूमिं स्पृष्ट्वा औषधयः समिति मन्त्रेण धान्यराशिं स्पृष्ट्वा आजिघ्र कलशम् इति कलशं संस्थाप्य । इमं मे गङ्गे इति जलेनापूर्य तत्र कुंकुमागरुकर्पूर चन्दनपङ्ककुसुमानि च निक्षिप्य तस्य मुखे आम्रदलानि निधाय तदुपरि नारिकेलफलाढ्यं सतण्डुलं कलशजातीयं पात्रं निधाय पूर्णा दर्वीति मन्त्रेण मन्त्रयेत् । युवा सुवासा इति रक्तवस्त्रेणावेष्ट्य ततः स्वर्णादिनिर्मितं महिषघ्नीदेवीप्रतिमां[1] ताम्रपात्रे निधाय घृतेनाभ्यज्य तदुपरि दुग्धधारां जलधारां च दत्त्वा

---

[1]मत्स्यपुराणे-जटाजूटसमायुक्तामर्धेन्दुकृतलक्षणाम् । लोचनत्रयसंयुक्तां पद्मेन्दुसदृशाननाम् । अतसीपुष्पवर्णाभां सुप्रतिष्ठां सुलोचनाम् । नवयौवनसम्पन्नां सर्वाभरणभूषिताम् । सुचारुदशनां तद्वत्पीनोन्नतपयोधराम् । त्रिभङ्गस्थानसंस्थानां महिषासुरमर्दिनीम् । त्रिशूलं दक्षिणे दद्यात् खड्गं चक्रं तथैव च । तीक्ष्णबाणं तथा शक्तिं वामतोपि निवेशयेत् । खेटकं पूर्णचापं च पाशमकुंशमूर्ध्वजम् । घण्टां वा परशुं वापि वामतः सन्निवेशयेत् । अधस्तान्महिषं तद्वद्विशिरस्कं प्रदर्शयेत् । शिरश्छेदोद्भवं तद्वद्दानवं खड्गपाणिनम् । हृदि शूलेन निर्भिन्नं निर्यदन्त्रविभूषितम् । रक्तरक्तीकृताङ्गं च रक्तविस्फुरितेक्षणम् । वेष्टितं नागपाशेन भृकुटीभीषणाननम् । सपाशं वामहस्तेन धृतकेशं च दुर्गया । वमद्रुधिरवक्त्रं च देव्या सिंहं प्रदर्शयेत् । देव्यास्तु दक्षिणं पादं सिंहोपरि स्थितम् । किञ्चिदूर्ध्वं तथा वाममंगुष्ठं महिषोपरि । स्तूयमानं च तद्रूपममरैः सन्निवेशयेत् । इतिलक्षणं प्रतिमां कुर्यात् ।

मत्स्य पुराण में कहा है : जटाजूटा से युक्त, अर्धेन्दु से शोभित, तीन आँखों वाली, कमल और चन्द्रमा के सामन मुख वाली, तीसी के फूल की आभा वाली उत्तम नेत्रों वाली, उत्तम प्रतिष्ठा वाली,

स्वच्छवस्त्रेण सम्प्रोक्ष्य आसनमन्त्रेण पुष्पाद्यासनं दत्त्वा कलशोपरि संस्थाप्य प्रतिष्ठां च कृत्वावाहयेत् । तत्र मन्त्रः । एहि दुर्गे महाभागे रक्षार्थं मम सर्वदा । आवाहयाम्यहं देवि सर्वकामार्थसिद्धये ॥ १ ॥ अस्यां मूर्तौ समागच्छ स्थितिं मत्कृपया कुरु । रक्षां कुरु सदा भद्रे विश्वेश्वरि नमोस्तु ते ॥ २ ॥ इत्यावाह्य ॐ जयन्ती मङ्गला काली भद्रकाली कपालिनी । दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वधा स्वाहा नमोस्तु ते । इति मन्त्रेण पुष्पान्तैरुपचारैः सम्पूज्य नवार्णयन्त्रवरणपूजां कृत्वा धूपादिपूजनान्तरे प्रार्थयेत् ॐ महिषघ्नि महामाये चामुण्डे मुण्डमालिनी । द्रव्यमारोग्यविजयौ देहि देवि नमः सदा ॥ १ ॥ भूतप्रेतपिश्चोभ्यो रक्षोभ्यश्च महेश्वरि । देवेभ्यो मानुषेभ्यश्च भयेभ्यो रक्ष मां सदा ॥ २ ॥ सर्वमङ्गलमाङ्गल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके । शरण्यं त्र्यम्बकं गौरि नारायणि नमोस्तु ते ॥ ३ ॥ रूपं देहि यशो देहि भगं भगवति देहि मे । पुत्रान् देहि धनं देहि सर्वान्कामान् प्रदेहि मे ॥ ४ ॥

इसके पश्चात् चार हाथ की चौकोर वेदी पर सर्वतोभद्र या अष्टदल बनाकर शालिधान्य की राशि पर स्वर्णादि से रचित नव तन्तुओं से वेष्टित चन्दनादि से चर्चित, सुधूपित, स्वर्ण, हीरा, मोती, पद्मराग, नीलम, पन्ना आदि पाँच रत्नों से युक्त घट को "महीद्यौः" इससे भूमि का स्पर्श करके "औषधयः समिति" मन्त्र से धान्यराशि को छूकर "आजिघ्र कलशम्" इससे कलश की स्थापना करके "इमं मे गंगे" इससे उसे जल से भरकर कुंकुम, अगर, कपूर तथा चन्दन का पंक तथा फूल उसमें डालकर उसके मुखपर आम्र पल्लव रखकर उसके ऊपर कलश जातीय ढकनी चावल से पूर्ण कर नारियल के साथ घट पर रख कर "पूर्णादर्वि" इस मन्त्र से अभिमन्त्रित करे । "युवासुवासा" इस मन्त्र से रक्त-वस्त्र से आवेष्टित करके स्वर्ण आदि से निर्मित महिषघ्नी देवी की प्रतिमा को ताम्रपात्र में रखकर घी से उसका अभ्यंग करके उसपर दुग्धधारा तथा जलधारा देकर स्वच्छ वस्त्र से अच्छी तरह पोंछकर आसनमन्त्र से पुष्पाद्यासन देकर कलश के ऊपर स्थापित करके उसमें प्राणप्रतिष्ठा करके आवाहन करे । इसमें मन्त्र यह है : "एहि दुर्गे महाभागे रक्षार्थं मम सर्वदा । आवाहयाम्यहं देवि सर्वकामार्थसिद्धये ॥ १ ॥ अस्यां मूर्तौ समागच्छ स्थितिं मत्कृपया कुरु । रक्षांकुरू सदा भद्रे विश्वेश्वरि नमोस्तु ते ।" इससे आवाहन करके "ॐ जयन्ती मङ्गला काली भद्रकाली कपालिनी । दुर्गाक्षमाशिवा धात्री स्वाहा नमोस्तुते" इस मन्त्र से पुष्पांजलिदान पर्यन्त उपचारों से पूजा करके नवार्ण मन्त्र से आवरण पूजा करके धूपादि दान तथा पूजन के बाद प्रार्थना करे । "ॐ महिषघ्नि महामाये चामुण्डे मुण्डमालिनि । द्रव्यमारोग्य विजयौ देहि देवि नमः सदा । भूतप्रेतपिशाचेभ्यो रक्षोभ्यश्च महेश्वरि । देवेभ्यो मानुषेभ्यश्च भयेभ्यो रक्ष माँ सदा ॥ २ ॥ सर्वमङ्गल माङ्गल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके । शरण्यं त्र्यम्बकं गौरि नारायणि नमोस्तु ते ॥ ३ ॥ रूपं देहि यशो देहि भगंभगवति देहि मे । पुत्रान् देहि धनं देहि सर्वान्कामान् प्रदेहि मे ॥ ४ ॥

नवयौवन से सम्पन्न, समस्त आभूषणों से सुभूषित उत्तम दर्शन वाली, वैसे ही उन्नत पयोधरों वाली, शरीर में तीन स्थानों पर बलि वाली, महिषासुर का विनाश करने वाली देवी की प्रतिमा बनानी चाहिये । उसके दाहिने हाथ में त्रिशूल, खड्ग तथा चक्र देवे । तीक्ष्ण वाण तथा शक्ति बाएँ हाथ में देवे । खेटक, धनुष, पाश,ऊपर उठा अंकुश, घंटा तथा परशु बाएँ हाथों में देवे । नीचे सिर कटा भैंसा प्रदर्शित करे । उसी पर सिर कटे हाथ में तलवार लिये हुए दानव, हृदय में शूल से विंधा, पेट से निकले अन्त्र की शोभा वाला, खून से लाल अङ्गों वाला, खून से फड़कती आँखों वाला, नागपाश में लिपटा हुआ, भृकुटी से भीषण मुख वाला, दुर्गाजी द्वारा पाश सहित बालों से पकड़ा गया, मुख से रक्त का वमन करता हुआ राक्षण तथा देवी का सिंह दिखाना चाहिये । देवी का दाहिना पैर सिंह पर समस्थित कुछ ऊपर उठा तथा बायां अंगूठा भैंसे के ऊपर स्थित दिखाना चाहिये । देवताओं द्वारा देवी के इस रूप की स्तुति की जाती हुई स्थिति को प्रतिमा में दर्शाना चाहिये । इन लक्षणों से युक्त प्रतिमा बनानी चाहिये ।

इति सम्प्रार्थ्यमूलमन्त्रजपं कृत्वा आदौ नारायणादीन् नमस्कृत्य कवचार्गलाकीलपूर्वकं चरितत्र्न्यं रहस्यत्रययुतं पठेत् । स्वयमशक्तश्चेद्ब्राह्मणं सम्पूज्य चण्डीपाठार्थं त्वामहं वृणे इति यज्ञसूत्रं बध्वा पूगीफलं सदक्षिणं ब्राह्मणकरे दत्त्वा जापयित्वा पुष्पाञ्जलिं च दत्त्वा नमस्कारं च कृत्वा पद्धतिमार्गेण कुमारीपूजनं कुर्यात् । ततो गुरुपूजनं यथावत्कृत्वा ब्राह्मणपूजनं विधाय ब्राह्मणान् भोजयित्वा ताम्बूलदक्षिणादिभिस्तोषेयेत् ।

इससे प्रार्थना करके मूलमन्त्र का जप करके आदि में नारायण आदि को नमस्कार करके कवच, अर्गला तथा कीलकपूर्वक त्रिरहस्य सहित तीनों चरितों को पढ़े । अगर स्वयं अशक्त हो तो ब्राह्मण की पूजा करके "चण्डी पाठार्थं त्वामहं वृणे" इससे यज्ञसूत्र को बाँधकर दक्षिणा सहित सुपारी ब्रह्मण के हाथ में देकर जप करके पुष्पांजलि देकर नमस्कार करके पद्धति मार्ग से कुमारीपूजन करे । इसके बाद यथावत् गुरुपूजन तथा ब्राह्मणपूजन करके ब्राह्मणों को भोजन कराकर ताम्बूल तथा दक्षिणा आदि के द्वारा उन्हें सन्तुष्ट करे ।

एवं प्रतिपत्कृत्यं विधायैवमेव द्वितीयायां द्विगुणं त्रिगुणं तृतीयायां चतुर्गुणं चतुर्थ्यामिवमेकोत्तरवृद्ध्या कुमारीपूजनं ब्राह्मणसमाराधनं नवम्यन्तं नवम्यां नवगुणं यथा भवति तथा कुर्यात् ।

इस प्रकार प्रतिपदा का कृत्य करके इसी प्रकार द्वितीया में दूना, तृतीयामें तिगुना तथा चतुर्थी में चौगुना इसी प्रकार उत्तरोत्तर बढ़ाते हुए कुमारीपूजन तथा ब्राह्मण का पूजन नवमी तक नवगुना जिस प्रकार हो उस प्रकार करे ।

ततो नवम्यां कृत जपदशांशहोमः कार्यः । तत्र प्रयोगः ।

इसके बाद नवमी को किये गये जप का दशांश होम करना चाहिये । उसमें प्रयोग इस प्रकार है :

नवचण्ड्यां हस्त मात्रं समन्ताच्चतुर्विंशत्यंगुलं कुण्डं स्थण्डिलं वा विधाय तत्र पायसतिलाज्यद्रव्याणि फलपुष्पादिसम्भारान् सम्पाद्य हस्ते कुशजलमादाय देशकालौ संकीर्त्य मया कृतस्य कारितस्य वा जपस्य साङ्गतासिध्यर्थं दशांशेन तिलाज्यपायसादिद्रव्यैर्होमं करिष्ये । इति संकल्प्य आगमोक्तविधिनां पद्धतिमार्गेणाग्निसंस्कारं कृत्वा प्रधानहोमं कुर्यात् ।

नव चण्डी में एक हाथ मात्र चारों ओर चौबीस अंगुल परिमाण का कुण्ड या स्थण्डिल बनाकर खीर, तिल, घी द्रव्यों को, फल-पुष्प आदि सभी सम्भारों को तैयार करके हाथ में कुश तथा जल लेकर, "देशकालौ संकीर्त्य मयाकृत्यस्य कारितस्य वा जपस्य साङ्गतासिध्यर्थ दशांशेन तिलाज्य पायसादि द्रव्यैर्होमं करिष्ये" यह संकल्प करके आगमोक्त विधि से पद्धति मार्ग से अग्नि संस्कार करके होम करे ।

ततः पूर्वोक्तसर्वन्यासान् कृत्वा वह्नौ पीठपूजां कृत्वा देवीमावाह्य वाहनादिमुद्राः प्रदर्श्य षडङ्गं कृत्वा षोडशोपचारैः सम्पूज्य मूलेन शतमेकादशाधिकमाज्याहुतीर्हुत्वा पासयतिलपलाशपुष्पसर्षप पूगीफलाजादूर्वांकुरयवबिल्वफलरक्तगुग्गुलद्रव्याणि तिलमिश्रपायसमेव वा कवचार्गलाकीलकरहस्यैः प्रतिश्लोकं हुत्वा जपस्य दशांशेन प्रतिश्लोकं सप्तशतीमन्त्रोक्तद्रव्याणि तिलपायसं वा जुहुयात् । अध्यायसमाप्तौ उवाचस्थले च पत्रपुष्पफलैः पद्धतिमार्गेण होमः इत्यनेन नवार्णेनच जपदशांशतो होमः । इति होमं कृत्वा नामभिः स्रुवेणाज्यं पायसं पद्धतिमार्गेण जुहुयात् । ततः पुनः प्रधान होमं कृत्वा पद्धतिमार्गेण पूर्णाहुतिं च दद्यात् ।

इसके बाद पूर्वोक्त न्यासों को करके अग्नि में पीठ पूजा करके देवी का आवाहन करके वाहनादि मुद्रा प्रदर्शित करके षडङ्ग करके षोडशोपचारों से पूजा करके मूलमन्त्र से एक सौ ग्यारह आहुति देकर खीर, तिल, पलाश के फूल, सरसों, सुपारी, धान का लावा, दूब के अंकुर, जव, बेल का फल, लाल गुग्गुल इन द्रव्यों को या तिल मिश्रित खीर को ही रहस्यों सहित कवच, अर्गला, कीलक के साथ प्रतिश्लोक

से हवन करके जप के दशांश से प्रतिश्लोक सप्तशती मन्त्रोक्त द्रव्यों या तिल तथा खीर का होम करे। अध्याय की समाप्ति पर जहाँ "उवाच" लिखा है वहाँ पत्रपुष्प तथा फलों से पद्धति मार्ग से होम करे। इस नर्वाण मन्त्र से जप का दशांश होम करना चाहिये। इस प्रकार होम करके नामों से स्रुवा से घी और खीर का पद्धति मार्ग से होम करे। इसके बाद पुनः प्रधान होम करके पद्धति से पूर्णाहुति देवे।

ततः। कर्मशेषं समाप्य मूलमन्त्रेण होमदशांशेन दुग्धमिश्रितजलेन दुग्धेन वा तर्पणं कृत्वा तद्दशांशेन मार्जयेत्।

इसके बाद शेष कर्म समाप्त करके मूलमन्त्र से होम के दशांश से मार्जन करे।

ततः श्रेयःसम्पादनं ततः आचार्यादीन् वस्त्राद्यैः सम्पूज्याचार्याय शतं तदर्धं तदर्धमष्ठौ वा गोमिथुनानि सुवर्णचतुष्टयं दद्यात्। ब्राह्मणाय निष्कद्वयं गोद्वयं च दद्यात्।

इनके पश्चात् श्रेय सम्पादन करके आचार्य आदि की वस्त्र आदि से पूजा करके आचार्य को सौ, पचास या आठ जोड़े गायें, चार सोने की मुद्रा देवे। ब्राह्मण को दो निष्क (स्वर्णमुख) तथा दो गायें देवे।

ततः द्वारपालकेभ्योऽन्येभ्यश्च दक्षिणां च दत्त्वा कलशोदकेन यजमानं सपरिवारं वेदोक्तमन्त्रैः पौराणिकैश्चाभिषिञ्चेयुः। ततो यजमानो नवग्रहाणामुत्तरपूजां कृत्वा विसृज्य आचार्यहस्ते दत्त्वा देवीं सम्पूज्य पद्धतिंमार्गेण छागादेर्नारिकेलस्य वा पद्धतिमार्गेण बलिं दद्यात्। ततः स्नात्वा तिलकं धृत्वा खड्गिनी शूलिनीत्येकेन शूलेन पाहिनो देवीति चतुष्टयेन नमो देव्यै इति पञ्चकेन सर्वस्वरूपे इति पञ्चभिश्च स्तुत्वा नमस्कृत्य पुष्पाञ्जलिं च दत्त्वा प्रार्थयेत्। तत्र मन्त्रः।

इसके बाद द्वारपालों को तथा अन्य सेवकों को दक्षिणा देकर कलशोदक से सपरिवार यजमान को वेदोक्त मन्त्रों से तथा पौराणिक मन्त्रों से अभिषेक करावे। इसके बाद यजमान नवग्रहों की उत्तरपूजा करके आचार्य के हाथ में देवी को देकर पूजा करके बकरे आदि की या नारियल की पद्धति मार्ग से बलि देवे। इसके बाद स्नान करके तिलक देकर "खड्गिनी शूलिनी" इस एक श्लोक से "शूलेन पाहि नो देवि" इन चार श्लोकों से, "नमोदेव्यै" इन पाँच श्लोकों से "सर्वस्वरूपे" इन पाँच श्लोकों से नमस्कार करके पुष्पांजलि देकर प्रार्थना करे। उसमें मन्त्र यह है :

रूपं देहि यशो देहि भगं भगवति देहि मे। पुत्रान्देहि धनं देहि सर्वान्यामांश्च देहि मे। महिषघ्नि महामाये चामुण्डे मुण्डमालिनी। आयुरारोग्यमैश्वर्यं देहि देवि नमोस्तु ते।

इस मन्त्र से प्रार्थना करके "ॐ गुह्यातिगुह्यगोप्त्री त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम्। सिद्धिर्भवतु मे देवि प्रसादात्तव सुन्दरि।" इससे देवी के बाएँ हाथ में जल समर्पण करके मूलमन्त्र से देवी को पुष्प से वासित करके नासिका से हृदय में बैठाने की भावना करके षडङ्ग करे।

इति नवरात्रं कृत्वा दशम्यां देवीं विसर्जयेत्। तत्र मन्त्रः। उत्तिष्ठ देवि चण्डेशि शुभां पूजां प्रगृह्य च। कुरुष्व मम कल्याणमष्टभिः शक्तिभिः सहेति उत्थाप्य दुर्गे देवि जगन्मातः स्वस्थानं गच्छ पूजिते। संवत्सरे व्यतीते तु पुनरागमनाय वै। इमां पूजां मया देवि यथा शक्त्युपपादिताम्। रक्षार्थं त्वं समादाय व्रज स्वस्थानमुत्तम्। इति मन्त्रेण स्वर्णमयीं प्रतिमामाचार्याय दत्त्वा श्लोकं पठेत्। "त्रैलोक्यमातर्देवि त्वं सर्वभूतदयान्विते। दानेनानेन सन्तुष्टा सुप्रीता वरदा भव," इति पठित्वा मृन्मयमूर्त्यादि सर्वम् "उत्तिष्ठ देवि चण्डेशि" मन्त्रेण उत्थाप्य। "गच्छ गच्छ परं स्थानं स्वस्थानं देवि चण्डिके। व्रज स्रोतोजलं वृद्ध्यै स्थीयतां च जले त्विह"। इति जले प्रवाहयेत्। ततोग्निं सम्पूज्य विभूतिं धृत्वा "गच्छगच्छेति" विसृज्य "कृतस्य कर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं यथाशक्ति महालक्ष्मी प्रीत्यर्थं ब्राह्मणान् भोजयिष्ये" इति सङ्कल्प्य "यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या प्रमादात्कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषु यत्।" इति श्लोकौ पठित्वा पूर्णतां ब्राह्मणैर्वाचयित्वा सर्वं

कर्मेश्वरार्पणं कृत्वा सुब्राह्मणान् भोजयित्वा हीनदीनान्धकृपणेभ्योन्नं दत्त्य ताम्बूलदक्षिणादिभिः सन्तोष्य सुहृद्युतो भुञ्जीत ।

इस प्रकार नवरात्र करके दशमी को देवी का विसर्जन करे । उसमें मन्त्र यह है "उत्तिष्ठ देवि चण्डेशि शुभां पूजां प्रगृह्य च । कुरुष्व मम कल्याणमष्टभिः शक्तिभिः सह" इससे उठाकर "दुर्गे देवि जगन्मातः स्वस्थानं गच्छ पूजिते । संवत्सरे व्यतीते तु पुनरागमनाय वै । इमां पूजां मया देवि यथाशक्त्युपपादिताम् । रक्षार्थं त्वं समादाय व्रज स्वस्थानमुत्तमम् ।" इस मन्त्र से सोने की प्रतिमा आचार्य को देकर इस श्लोक को पढ़े : "त्रैलोक्यमातर्देवि त्वं सर्वभूतदयान्विते । दानेनानेन सन्तुष्टा सुप्रीता वरदा भव ।" यह पढ़कर मिट्टी की बनी मूर्ति आदि सब "उत्तिष्ठ देवि चण्डेशि" इस मन्त्र से उठाकर "गच्छ गच्छ परं स्थानं स्वस्थानं देवि चण्डिके । व्रज स्रोतोजलं वृद्ध्यै स्थीयतां च जले त्विह ।" इससे जल में प्रवाहित कर देवे । इसके बाद अग्नि की पूजा करके विभूति धारण करके "गच्छ गच्छ" इस मन्त्र से विसर्जन करके "कृतस्य कर्मणः सांगतासिद्ध्यर्थं यथाशक्ति महालक्ष्मी-प्रीत्यर्थं ब्राह्मणान् भोजयिष्ये" यह संकल्प करके "यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या" तथा "प्रमादात्कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषु यत्" इन दो श्लोकों को पढ़ कर ब्राह्मणों द्वारा पूर्णता-वाचन कराकर समस्त कर्मों को ईश्वर के अर्पण करके अच्छे ब्राह्मणों को भोजन कराकर हीन, दीन, अन्धे तथा गरीब लोगों को अन्न देकर ताम्बूल तथा दक्षिणा आदि से सन्तुष्ट करके मित्र, बन्धु-बान्धवों के साथ यजमान भोजन करे ।

तत्फलम् । नवमीतिथिपर्यन्तं वृद्धपूजाजपादिकम् । एकाहारं व्रती कुर्यात्सत्यादिनियमैर्युतः ॥ १ ॥ क्रीडान्ति विविधैर्भोगैर्देवलोके सुदुर्लभे । नाधयो व्याधयस्तेषां न च शत्रुभयं भवेत् ॥ २ ॥ इन्द्रब्रह्मादयो देवास्तामायान्ति प्रसेवितुम् । अपुत्रो लभते पुत्रं निर्धनो धनवान भवेत् ॥ ३ ॥ अविधो लभते विद्यां सकामश्च मनोरथान् । व्याधयः संक्षयं यान्ति शत्रवः क्षयमाप्नुयुः । न तस्यास्ति भयं किञ्चिद्राजचोराग्निवातजम् ।

इति नवरात्रे वार्षिकनवचण्डीविधानम् ।

इसका फल यह है :

नवमी तिथि पर्यन्त वृद्धपूजा तथा जप आदि को एक समय भोजन कर सत्य आदि नियामों से व्रती रहते हुए करने वाले यजमान देवलोक में भी दुर्लभ विविध भोगों से इस लोक में क्रीडा करते हैं । उन्हें न मानसिक क्लेशहोते हैं, न शारीरिक रोग ही सताते हैं और न उन्हें शत्रु आदि का ही भय होता है । इन्द्र, ब्रह्मा आदि देव उनकी सेवा करने के लिए आते हैं । जिसे पुत्र नहीं होता वह पुत्र प्राप्त करता है, निर्धन धनवान् होता है, विद्याहीन विद्या प्राप्त करता है, कामना करने वालों के अभीष्ठ सिद्ध होते हैं, रोग समाप्त हो जाते हैं, शत्रु नष्ट हो जाते हैं । उसे कोई भय नहीं रह जाता । राजा, चोर तथा अग्नि से भी भय नहीं रहता ।

इति नवरात्र-वार्षिक चण्डीविधान समाप्त ।

शतचण्डीसहस्रचण्ड्यादिविधानम् :

तत्रादौ पूजासामग्री-अशीतिगुञ्जाप्रमाणा कस्तूरी १, तावन्मानं केसरम् २, तावज्जातीफलम् ३, तावान्कर्पूरः ४, एतच्चतुष्टयं पलमात्रं चन्दनेन घर्षयेत् । तेन पलद्वयमनुलेपनं भवति । पलं तु विंशत्युत्तरत्रिंशद्गुञ्जामितम् ५, वस्त्रस्य तु मानामुक्तेः स्त्रीजनपरिधानयोग्यं ग्राह्यम् ६, गद्याणत्रयहेमनिर्मितालङ्काराः स्त्रीजनोचिताः गद्याणमानं तु लौकिकतौलस्यार्धम् ७, पुष्पाणि २५०००-८, पलद्वयमतिः गुग्गुलुः ९, दीपा विंशतिर्घृतपूरिताः १०, कुम्भप्रमाणं घृतं कुम्भस्तु विंशतिद्रोणः, द्रोणस्तु खार्याः खलु षोडशांशः ११, कुडवद्वयमात्रं हविष्यान्नभोजनम् १२, नैवेद्यं पलचतुष्कं कुडवः १३, शतद्वयं नागवल्लीदलम् १४, तदनुरूपं पूगीफलादिकं कूर्परादि च ग्राह्यम्

१५, इति संगृह्य पूजामारभेत्।

प्रारम्भ में पूजा-सामग्री का संग्रह करना चाहिये :

१, कस्तूरी ८० गुञ्जाभर; २, केसर ८० गुञ्जाभर; ३, जायफक ८० गुञ्जाभर; ४. कपूर ८० गुञ्जाभर; ५. चन्दन एक पल।

चन्दन से उपरोक्त चारों वस्तुओं को घिस कर एक रस बनावें। इस प्रकार यह अनुलेपन दो पल हुआ। एक पल ३२० गुंजा के बराबर होता है। वस्त्र का मान नहीं कहा गया है इस कारण स्त्रियों के परिधानयोग्य वस्त्र लेना चाहिये। तीन गद्याण सोने के बने स्त्रियों के आभूषण (एक गद्याण आधे तोले के बराबर होता है), फूल २५०००८, गुग्गुल २ पल, घी से भरे बीस दीपक तथा एक कुम्भ घी (कुम्भ बीस द्रोण के बराबर होता है और एक द्रोण एक खारी का सोलहवाँ भाग होता है), २ कुडव हविष्यान्न भोजन (चार पल का एक कुडव होता है), नैवेद्य १ कुडव, दो सौ पान। उनके ही अनुसार सुपारी तथा कपूर आदि ग्रहण करना चाहिये। इन सब द्रव्यों का संग्रह करके पूजा प्रारम्भ करनी चाहिये।

तत्र अनावृष्ट्याद्यखिलदुरितशान्त्यर्थं राज्यावाप्त्यादिसकलकामनासिद्ध्यर्थं यजमानः शिवालयसमीपे सुसमे भूप्रदेशे भूमिं संशोध्य षोडशस्तम्भसहितं मण्डपं सवितानं चतुर्द्वारं तोरणवेष्टितं कृत्वा दिव्यवस्त्रपट्टदुकूलादिभिर्देवतागारं श्रीगिरिं कृत्वा कदलीस्तम्भविराजितं सुमनोहरं पुष्पमालोपशोभितं शतचण्ड्यां षोडशहस्तं सहस्रचण्ड्यां विंशतिहस्तं मण्डपं प्रसाध्य सर्वदेवोपयोगिपद्धतिमार्गेण स्तम्भतोरणादिप्रतिष्ठापूजनं कृत्वा तदाग्नेयस्तंभे वडवागणेशकूर्मशेषवसुधानां पूजां कृत्वा ताम्रपात्रेर्घ्यमादाय जानुभ्यामवनीं गत्वा "आगच्छ सर्वकल्याणि वसुधे लोकधारिणि। उद्धृतासि वराहेण सशैलवनकामना। मण्डपं कारयाम्यद्य त्वदूर्ध्वं शुभलक्षणम्। गृहाणार्घ्यं मया दत्तं प्रसन्ना शुभदा भवेति" भूम्यै अर्घ्यं दत्त्वा मंडपं विधाय आरंभदिने कर्ता सपत्नीकस्तिलतैलेन कृताभ्यङ्गो भूषिताङ्गः सम्पूर्णकलशहस्तो "भद्रंकर्णेभिरिति" मण्डपं प्रदक्षिणीकृत्य पश्चिमद्वारेण प्रविश्योपविश्य देशकालौ स्मृत्वा "ममामुककामनासिद्ध्यर्थं सनवग्रहमखां शतचण्डीं सहस्रचण्डीं वा ब्राह्मणद्वारा कारयिष्ये। तदङ्गतया विहितं गणेशपूजनं पुण्याहवाचनं मातृकापूजनं नान्दीश्राद्धं चाहं करिष्ये।" इति सङ्कल्प्य तानि यथावत्कृत्वा अत्र शतचण्डीजपे ऋत्विजो नव[१] ९ आचार्यो दशमः सहस्रचण्ड्यां शतमृत्विजः अष्टौ लोकपालाः सर्वेषां मधुपर्कादिना पूजां कृत्वा पद्धतिमार्गेण वृत्वा वस्त्रद्वयमासनद्वयमेकैकमर्घ्यपात्रजल पात्रांगुलीयककर्णभूषणादि दद्यात्। आचार्याय तु द्विगुणम्। ततः आचार्यः भूतापसारणमन्त्रं पठित्वा सर्षपान् विकीर्य पञ्चगव्यैः कुशैः आपो हिष्ठति त्र्यृचेन मण्डपं प्रोक्ष्य स्वस्त्ययनमिति मन्त्रद्वयं पठेत्। ततो मध्यवेद्यां पीठे सुखासने उपविश्य ततः पूजावेद्यां आग्नेय्यां विष्णवे नमः ॥१॥ पूर्वस्यामिन्द्राय नमः ॥२॥ ऐशान्याम् ब्रह्मणे नमः ॥३॥ पश्चिमे गणेशाय नमः ॥४॥ वेदीमध्ये महाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीभ्यो नमः। इति सम्पूज्य आचार्य ईशाने ग्रहवेद्यां ग्राहन् संस्थाप्य सम्पूज्य पद्धतिमार्गेण आसनादिभूतशुद्धप्राणप्रतिष्ठांतर्मातृकाबहिर्मातृकादि मूलविद्यान्यासादिकं कृत्वा कलशस्थापनं कुर्यात्। वेदीमध्ये सर्वतोभद्र-मण्डलं कृत्वा पीठपूजां विधाय पीठदेवताः संस्थाप्य तन्मध्ये हैमरजतताम्रमृन्मयान्यतमं वा कलशं पद्धतिमार्गेण संस्थाप्य रक्तवस्त्रे नवार्णयंत्रं लिखित्वा कलशोपरि स्थापयेत्।

---

१ देवीरहस्यतन्त्रे : नवभिर्ब्राह्मणैः सार्धं कृत्वाचार्यो द्विजोत्तमः। ददाति नव विप्रेभ्य आचार्यश्चचण्डिकामयः। क्रोडतन्त्रे : आयुग्मब्राह्मणैः कार्या शतावृत्तिः सुसिद्धये। देवीमाहात्म्यपठनं युग्मविप्रकृतं तु यत्। निष्फलं च भवेत्सर्वं भूतिनाशः प्रजायते। मन्त्रमहोदधौ : स्नात्वा नित्यकृतिं कृत्वा वृणुयाद्दशवाडवान्। तेनाचार्यसमेतेन क्रम एष मनीषिणाम्। रुद्रयामले : आचार्ये समं विप्रान्वरयेद्दश सुव्रतान्-इति बोध्यम्।

अनावृष्टि आदि समस्त दुःखों की शान्ति के लिए, तथा राज्य प्राप्ति आदि समस्त कामनाओं की सिद्धि के लिए यजमान शिवालय के समीप समतल भूप्रदेश में भूमि का संशोधन करके सोलह स्तम्भों, वितान, चार द्वार, तोरण वेष्टित मण्डल का निर्माण करके दिव्यवस्त्र, पट्ट, दुकूल आदि से देवता के घर को श्रीगिरि करके केलों के स्तम्भों से सुशोभित मनोहर पुष्प और मालाओं से सुशोभित शतचण्डी में सोलह हाथ तथा सहस्रचण्डी में तीन हाथ का मण्डप बनाकर सर्वदेवोपयोगी पद्धति से स्तम्भतोरणादि की प्रतिष्ठा पूजन करके उसके आग्नेय स्तम्भ में बडवागणेश, कूर्म, शेष तथा वसुधा की पूजा करके ताम्रपात्र में अर्घ्य लेकर घुटनों के बल पृथिवी पर बैठ कर : "आगच्छ सर्वकल्याणि वसुधे लोक धारिणि। उद्धृतासि वराहेण सशैलवनकानना। मण्डपं कारयाम्यद्य त्वदूर्ध्वं शुभलक्षणम्। गृहाणार्घ्यं मया दत्तं प्रसन्ना शुभदा भव।" इससे भूमि के लिए अर्घ्य देकर मण्डप बनाकर आरम्भ के दिन पूजनकर्ता यजमान सपत्नीक तील के तेल को शरीर पर मर्दन करके नहाकर आभूषण धारण करके भरे हुए कलश को हाथ में लेकर "भद्रंकर्णेभिः" इस मन्त्र से मण्डप की प्रदक्षिणा करके पश्चिम द्वार से प्रवेश करके देशकालौ संकीर्त्य "ममामुककामनासिध्यर्थं सनवग्रहमखां शतचण्डीं सहस्रचण्डीं वा ब्राह्मण द्वारा करिष्ये। तदङ्गतया बिहितं गणेश-पूजन पुण्याह-वाचनं मातृका-पूजनं नान्दी-श्राद्धं चाहं करिष्ये।" इससे संकल्प करके उनको यथावत पूरा करे। यहाँ शतचण्डी जप में ऋत्विज नव तथा आचार्य दसवाँ होता है। सहस्रचण्डी में सौ ऋत्विजों तथा आठ लोकपालों आदि सबकी मधुपर्क आदि से पूजा करके पद्धतिमार्ग से वरण करके दो वस्त्र, दो आसन, एक-एक अर्घ्यपात्र, जलपात्र, अंगूठी, कानके आभूषण (कुण्डल) आदि देवे। आचार्य के लिए इससे दूना देवे। इसके बाद आचार्य 'भूतापसारणे' मन्त्र पढ़कर सरसों चारों ओर छिटक कर पञ्चगव्य और कुशाओं से 'आपोहिष्ठेति' आदि तीन मन्त्रों से मण्डप का प्रोक्षण करके "स्वस्त्ययनमिति" दो मन्त्रों का पाठ करे। इसके बाद मध्य वेदी में पीठ पर सुखमय आसन पर बैठ कर पूजावेदी पर आग्नेयी दिशा में "विष्णवे नमः ॥ १ ॥ पूर्वस्तामिन्द्राय नमः ॥ २ ॥ ऐशान्याम् ब्रह्मणे नमः ॥ ३ ॥ पश्चिमे गणेशाय नमः ॥ ४ ॥ वेदी के बीच में महाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वतिभ्यो नमः। इसके पूजा करके आचार्य ईशानी दिशा में ग्रहवेदी पर ग्रहों की स्थापना तथा पूजा करके पद्धति मार्ग से आसनादि की भूतशुद्धि, प्राणप्रतिष्ठा, मातृका, बहिर्मातृका आदि मूलविद्यान्यासादिक करके कलश-स्थापन करे। वेदी के बीच में सर्वतोभद्रमण्डल बनाकर पीठपूजा करके पीठ-देवताओं की स्थापना करके उनके बीच सोने-चाँदी-ताँबे या मिट्टी में से किसी एक के कलश को पद्धति मार्ग से स्थापित करके रक्तवस्त्र पर नर्वाण मन्त्र लिखकर कलश पर स्थापित करे।

ततः शतचण्ड्यां (मूर्तिं देव्याः प्रकुर्वीत सुवर्णस्य पलेन वै। तदर्धेन तदर्धेन तदर्धेन महामते) पलेन्न सहस्रचण्ड्यां पञ्चपलेन तदर्धेन तदर्धार्धेन वा महिषमर्द्दिनीप्रतिमां कृत्वा अग्न्युत्तारणप्रतिष्ठापूर्वकमासनमन्त्रेणासनं दत्त्वा तस्मिन्कलशे यन्त्रमध्ये स्थापयित्वा पद्धतिमार्गेण पाद्यादिपुष्पान्तैरुपचारैः सम्पूज्य आवरणपूजां च कृत्वा धूपादिनमस्कारान्तं सम्पूज्य गणेशबटुकक्षेत्रपालयोगिनीभ्यो बलिं दत्वा भूतबलिं दद्यात्। तद्यथा।

इसके बाद शतचण्डी में एक पल से, सहस्रचण्डी में पाँच पल या ढाई पल या सवा पल महिषमर्दिनी की प्रतिमा बनवाकर अग्न्युत्तारण, प्राणप्रतिष्ठापूर्वक आसन-मन्त्र से आसन देकर उस कलश पर यन्त्र को रखकर पद्धतिमार्ग से पाद्य से लेकर पुष्पांजलि दान पर्यन्त उपचारों से पूजा करके आवरण-पूजा करे। तदनन्तर धूपदान से लेकर नमस्कार पर्यन्त पूजा करके गणेश, बटुक, क्षेत्रपाल तथा योगिनियों को बलि देकर इस प्रकार भूतबलि देवे।

"ॐ सर्वपीठोपपीठानि द्वारोपस्तरणेपि च। क्षेत्र-क्षेत्रज्ञसंदोहाः सर्वे दिग्भागसंस्थिताः ॥१॥ योगिनीयोग-वीरेन्द्राः सर्वे यन्त्रसमागताः। नगरे त्वथ वा ग्रामे अटव्यां सरितस्तटे ॥२॥ वापी-कूपेषु वृक्षेषु

श्मशाने च चतुष्पथे नानारूप धरा ये च वटुरूपधराश्च ये ।।३।। सर्वेतत्रैव सन्तुष्टाः बलिं गृहणन्तु मे सदा। शरणागतोस्म्यहं तेषां ते सर्वे मे सुखप्रदाः ।।४।। बलिदानेन सन्तुष्टाः प्रयच्छन्तु ममेप्सितम्। सर्वकार्याणि कुर्वन्तु दोषांश्च ध्नन्तु मे सदा ।।५।।" इनसे सबको बलि देवे।

ततः कुमार्यः प्रत्यहं शतं नव वा पूज्याः । सुवासिनीपुजनं च विधाय द्वितीयदिने द्विगुणं तृतीयदिने त्रिगुणं चतुर्थे चतुर्गुणमिति शतचण्ड्यां कृत्वा सहस्रचण्ड्यां दशोत्तरां वृद्धिं कुर्यात् । पूजां देव्यै समर्प्य सर्वे विप्राः कृताङ्गन्यासः शतं नवार्णमन्त्रं कवचार्गलाकीलकानि च सकृज्जपित्वान्ते रहस्यानि नवार्णं शतं जपेयुः ।

इसके बाद प्रतिदिन सौ या नव उत्तम वस्त्र धारण की हुई कुमारियों की पूजा करनी चाहिये। इनकी पूजा करके दूसरे दिन दूनी, तीसरे दिन तिगुनी, चौथे दिन चौगुनी की पूजा शतचण्डी में करके सहस्रचण्डी में दश-दश आगे बढ़ाये । देवी की पूजा समर्पित करके सभी ब्राह्मण अङ्गन्यास करके सौ नवार्ण मन्त्र, कवच, अर्गला तथा कीलक का एक बार जप कर रहस्य और नवार्ण को सौ बार जपें।

कवचादीनां प्रत्यावृत्तौ नावृत्तिः । एवं प्रथमे एकावृत्तिः द्वितीये द्वितीयावृत्तिः तृतीये तृतीयावृत्तिः चतुर्थे चतुर्थावृत्तिः । एवं शतसहस्रावृत्तयः सम्पद्यन्ते । नित्यक्षीरान्नभोजनमशक्तौ हविष्यान्नं सर्वेषां प्रत्यहं शतं सहस्रं वा ब्राह्मणान् भोजयेत् । एवं चतुर्दिनपर्यन्तं[1] कृत्वा पञ्चमेह्नि होमं[2] कुर्यात् । तद्यथा ।

कवच आदि की प्रत्यावृत्ति में आवृत्ति नहीं होती । इस प्रकार प्रथम दिन एक आवृत्ति, दूसरे दिन दो आवृत्ति, तीसरे दिन तीन आवृत्ति, चौथे दिन चार आवृत्ति इस प्रकार सौ हजार आवृत्तियाँ होती हैं। नित्य दूध और अन्न का भोजन करना चाहिये । असमर्थता में सबके लिए हविष्यान्न प्रतिदिन सौ या हजार ब्राह्मणों को खिलाये । इस प्रकार चार दिन पर्यन्त करके पाँचवें दिन इस प्रकार होम करे :

मण्डपमध्ये ऐशान्यां हस्तमात्रं द्व्यंगुलवप्रां ग्रहवेदीं कृत्वा तत्पश्चिमे च शतचण्ड्यां द्विहस्तं सहस्रचण्ड्यां चतुर्हस्तं कुण्डं स्थण्डिलं वा चतुरस्रं पद्मकुण्डं वा कुर्यात्। वेदीमध्ये ब्रह्माणम् ।। १ ।। उत्तरादिषु सोमादीन् वायुसोममध्यादिक्रमेण अपः १ वसून् २ रुद्रान् ३ द्वादशादित्यान् ४ यक्षान् ५ सर्पान् ६ अप्सरसः ७ गन्धर्वान् ८ ब्रह्मसोममध्ये कुमारम् १ ऋषभम् २ अदितिम् ३ ब्रह्मेन्द्रयोर्मध्ये गुर्गम् १ विष्णुम् २ ब्रह्माग्निमध्ये सुधाम् १ ब्रह्मयममध्ये मृत्युम् १ रोगम् २ ब्रह्मनिऋति मधो गणपतिम् १ ब्रह्मवरुणमधो अपः १ ब्रह्मवायुमध्ये मरुतः १ ब्रह्मपादमूले भूमिम् १ तत्रैव गङ्गादिनदीः धाम्नो धाम्ना इति सप्तसागरान् बहिः सोमादिसन्निधौ क्रमेण गदाम् १ त्रिशूलम् २ व्रजम् ३ शक्तिम् ४ दण्डम् ५ खड्गम् ६ पाशम् ७ अंकुशम् ८ पुनरुत्तरादिषु गौतमम् १ भरद्वाजम् २ विश्वामित्रम् ३ कश्यपम् ४ जमदग्निम् ५ वसिष्ठम् ६ अत्रिम् ७ अरुन्धतीं च। पूर्वादिषु ऐन्द्रीम् १ कौमारीम् २ ब्राह्मीम् ३ वाराहीम् ४ चामुण्डाम् ५ वैष्णवीम् ६ माहेश्वरीम्

---

१ मन्त्रमहोदधौ : एवं चतुर्दिनं कृत्वा पञ्चमे होममाचरेत् । रुद्रयामले : एकं द्वे त्रीणि चत्वारि जपेद्दिनचतुष्टयम् । पञ्चमे दिवसे प्राप्ते होमं कुर्याद्विधा नतः । क्रोडतन्त्रे-त्रिपञ्चसप्तभिर्वापि नवैकादशभिस्तथा ।। अदीर्घदिवसैः क्षिप्रं विदध्याच्चण्डिकामखम् । इति वचनात् ।

२ पायसान्नैस्त्रिमध्वाक्तैर्द्राक्षारम्भाफलैरपि । मातुलिंगैरिक्षुदण्डैर्नारिकेलैः पुरस्तिलैः । जातीफलैराम्रफलैरन्यैर्मधुरवस्तुभिः सप्तशत्या दशावृत्त्या प्रतिश्लोकेन वै हुनेत्। अयुतं नवार्णमन्त्रे । होमः रुद्रयामलेः शर्करां पावसं दूर्वास्तिलांछुक्तान्यवानपि । चण्डीपाठस्य होमे तु प्रतिश्लोके दशांशत । इति होमयेत् ।

७ वैनायकीम् ८ आवाह्य सम्पूज्य बलिं दत्त्वा अग्निस्थापनं कृत्वा प्रधानहोमं समाप्य कवचार्गलाकीलकरहस्यैः प्रतिश्लोकं हुत्वा जपदशांशतो मूलेन जुहुयात्।

मण्डप के मध्य ऐशानी दिशा में एक हाथ को अंगुल ऊँची ग्रहवेदी बनाकर उसके पश्चिम में शतचण्डी में दो हाथ तथा सहस्रचण्डी में चार हाथ का कुण्ड या स्थण्डिल या चौकोर पद्मकुण्ड बनावे। वेदी के बीच में ब्रह्मा को, उत्तर आदि दिशाओं में सोम, आदि को; वायु सोम मध्य आदि क्रम से १. अप, २. वसु, ३. रुद्र, ४. बारह आदित्य, ५. यक्ष, ६. सर्प, ७. अप्सराएँ, ८. गन्धर्व, ब्रह्मा और सोम के बीच १. कुमार, २. ऋषभ, ३. अदिति, ब्रह्मा और इन्द्र के बीच १. दुर्गा, २. विष्णु, ब्रह्मा और अग्नि के बीच सुधा, १. ब्रह्मा और यम के बीच, १. मृत्यु तथा २. रोग, ब्रह्मा और निर्ऋति के बीच गणपति, ब्रह्मा और वरुण के मध्य १. अप्, ब्रह्मा और वायु के मध्य १. मरुत्, ब्रह्मपाद के मूल में १. भूमि, वहीं गङ्गा आदित नदियाँ "धाम्नो धाम्ना" इससे सागर को, बारह सोमादि की सन्निधि से १. गदा, २. त्रिशूल, ३. वज्र, ४. शक्ति, ५. दण्ड, ६. खड्ग, ७. पाश, ८. अंकुश को, पुनः उत्तर आदि दिशाओं में १. गौतम, २. भरद्वाज, ३. विश्वामित्र, ४. कश्यप, ५. जमदग्नि, ६. वसिष्ठ, ७. अत्रि, ८. अरुन्धती को, पूर्वादि दिशाओं में १. ऐन्द्री, २. कौमारी, ३. ब्राह्मी, ४. वाराही, ५. चामुण्डा, ६. वैष्णवी, ७. माहेश्वरी, ८. वैनायकी को आवाहित और पूजित करके बलि देकर अग्निस्थापन करके प्रधान होम समाप्त करके कवच, अर्गला, कीलक तथा रहस्यों के साथ प्रतिश्लोक से होम करके जप के दशांश से मूलमन्त्र से होम करे।

नवरात्रे तु नवम्यामेव होमः। होमस्तु पद्धतिमार्गेण विधिना कुर्यात्। पूजास्विष्टकृदादि सर्वं तद्वत्कुर्यात्।

नवरात्र में तो नवमी के ही दिन होम करना चाहिये। यह होमपद्धतिमार्ग से करना चाहिये। पूजा में स्विष्टकृदादि सब तद्वत् करे।

एतद्दशगुणो विधिरयुतचण्ड्यामेतद्दशगुणो विधिर्लक्षचण्ड्यां शतब्राह्मणैरेव वा चत्वारिंशद्दनैरयुतचण्डी कार्या।

इससे दशगुनी विधि दश हजार चण्डी में तथा उससे दशगुना लक्षचण्डी में या सौ ब्राह्मणों से चालीस दिनो में अयुतचण्डी करना चाहिये।

तत्र प्रथमदिने एकैवावृत्तिः द्वितीयदिने द्वे तृतीये तिस्रः चतुर्थे चतस्रः तैरेव चतुःशतदिनैर्वा लक्षचण्डीत्यादि बोध्यम्।

वहाँ प्रथम दिन एक ही आवृत्ति, दूसरे दिन दो, तीसरे दिन तीन, चौथे दिन चार उन्हीं से चार सौ दिनों तक लक्षचंडी करना चाहिये ऐसा जानना चाहिये।

तथाच। निष्कं सुवर्णमथवा प्रत्येकं दक्षिणां दिशेत्। भोजयेच्च शतं विप्रान्भक्ष्यभोज्यैः पृथग्विधैः १ सुघोरायामनावृष्ट्यां भूकम्पे च सुदारुणे। परचक्रभये तीव्रे क्षयरोग उपस्थिते ॥ १ ॥

राजवश्यादिकार्येषु आयुष्मत्सुतजन्मनि।
महोत्पातविनाशाय पञ्चविंशतियोजने ॥ २ ॥
देशे सर्वत्र शान्त्यर्थ शतचण्डीमिमां जपेत्।

तथा च : "निष्क या सुवर्ण प्रत्येक को दक्षिणा देवे। नाना प्रकार के इन द्रव्यों से सौ ब्राह्मणों को भोजन करावे। भारी अनावृष्टि में, अतिदारुण भूकम्प में, दूसरे राजा के आक्रमण में, तीव्र क्षय रोग के उपस्थित होने पर, राजा के वशीकरण आदि कार्यों में, आयुवृद्धि में, पुत्रजन्म में पच्चीस योजन तक भारी उत्पात के विनाशा के लिए, देश में सर्वत्र शान्ति के लिए इस शतचण्डी का जप करना चाहिये।

क्रोडतन्त्रे । यदायदा सतां ।
हानिरात्मनो ग्लानिरेव च ॥ ३ ॥
तदा कार्या शतावृत्तीरिपुघ्ना भूतिवर्धिनी ।
दुःस्वप्नदर्शने घोरे महामारीसमुद्भवे ॥ ४ ॥
वृष्टिप्रदा शतावृत्तिः कार्या चायुः क्षये तथा ।

क्रोडतन्त्र में कहा गया है : जब-जब सज्जनों की हानि तथा अपने में ग्लानि हो तो कल्याणकारक, शत्रुनाशिनी शतचण्डी का जप सौ बार करना चाहिये । दुष्ट स्वप्न देखने पर, घोर महामारी के होने पर, आयु के क्षय होने पर, वर्षा कराने वाली शतचण्डी का सौ बार जप करना चाहिये ।

महाभये च्छेदयोगे दुर्भिक्षे मरणेपि च ॥ ५ ॥
कुर्यात्तत्र शतावृत्तिं देवीमाहात्म्यकस्य हि ।
अद्भुते च समुत्पन्ने बान्धवानां महोत्सवे ॥ ६ ॥
कुर्याच्चण्डीशतावृत्तिं सर्वसम्पत्तिकारणम् ।

महाभय में, मारकाट में, दुर्भिक्ष में तथा मरण में देवीमाहात्म्य का सौ बार पाठ करना चाहिये । अद्भुत परिस्थिति उत्पन्न होने पर बन्धु-बान्धवों के उत्सव में सर्वसम्पत्तिकारक चण्डी का सौ बार पाठ करना चाहिये ।

शतावृत्त्या भवेदायुः शतावृत्त्या समागमः ॥ ७ ॥
वश्या भवन्ति राजानः श्रियमाप्नोति सम्पदः ।
धनार्थी प्राप्नुयादर्थं पुत्रकामो लभेत्सुतम् ॥ ८ ॥
विद्यार्थी प्राप्नुयाद्विद्या रोगी रोगात्प्रमुच्यते ।
चतुर्वर्गफलावाप्तिकारणं रिपुनाशनम् ॥ ९ ॥
चण्डीशतावृत्तिफलं नास्ति यज्ञे वरानने ।
शताश्वमेधगोमेधवाजपेयफलप्रदा ॥ १० ॥
यतः किं बहुनोक्तेन चण्डीपाठफलं प्रिये ।
प्रत्येकावर्तनं देवि हयमेधेन सम्मितम् ॥ ११ ॥
त्रिरावृत्त्या व्रजेत्कामान् पञ्चवृत्त्या रिपूञ्जयेत् ॥ १२ ॥

सौ बार के पाठ से आयु बढ़ती है । सौ बार के पाठ से बिछुड़े लोगों का समागम होता है । सौ बार के पाठ से राजे वश में होते हैं । सौ बार के पाठ से धन और सम्पत्ति प्राप्त होती है । धनार्थी धन प्राप्त करता है तथा पुत्रार्थी पुत्र प्राप्त करता है । विद्यार्थी विद्या प्राप्त करता है । रोगी रोग से मुक्त हो जाता है । चारों वर्गों की प्राप्ति होती है। शत्रुओं का नाश होता है । हे वरानने, चण्डी के सौ बार पाठ के फल के बराबर यज्ञ का फल नहीं होता । यह शतचण्डी का पाठ सौ अश्वमेधों, गोमेधो तथा वाजपेय यज्ञों का फल देने वाला है । हे प्रिये, अधिक कहने से क्या ? एक बार चण्डी पाठ का फल एक अश्वमेध के बराबर होता है । तीन बार का पाठ कामनाओं को पूर्ण करता है । पाँच बार का पाठ शत्रु को जीत लेता है ।

मन्त्रमहोदधौ :

नृपोपद्रव आपन्ने दुर्भिक्षे भूमिकम्पने ।
अतिवृष्ट्यामनावृष्टौ परचक्रभये क्षये ॥ १३ ॥
सर्वे विघ्ना विनश्यन्ति शतचण्डीविधौ कृते ।
रोगाणां वैरिणां नाशो धनपुत्रसमृद्धयः ॥ १४ ॥

शङ्करस्य भवान्या वा प्रसादान्निकटे शुभम् ।
एवं कृते जगद्वश्यं सर्वे नश्यन्त्युपद्रवाः ॥ १५ ॥
राज्यं धनं यशः पुत्रानिष्टमन्यल्लभेत सः ।

मन्त्रमहोदधि में कहा गया है :

राजा द्वारा उपद्रव उपस्थित किये जाने पर, दुर्भिक्ष पड़ने पर, भूकम्प होने पर, अतिवृष्टि, अनावृष्टि तथा दूसरे राजा के आक्रमण करने पर, शतचण्डी विधि को करने से सभी विघ्न शान्त हो जाते हैं। रोगों और वैरियों का नाश हो जाता है। धन और पुत्र की समृद्धि होती है। शङ्कर या भवानी के प्रसाद से शुभ निकट आ जाता है। ऐसा करने पर जगत् वश में हो जाता है। उपद्रव नष्ट हो जाते हैं। राज्य, धन, पुत्र तथा अन्य जो अभीष्ट होता है, वह सब साधक को मिल जाता है।

रुद्रयामले : सहस्रचण्डीविषये :
सहस्रचण्डीं विधि वच्छृणु विष्णो महामते ।
राज्यभ्रंशो ह्यकस्माच्चेज्जनमारे महाभये ॥ १६ ॥
गजमारेऽश्वमारे च परचक्रभये तथा ।
इत्यादिविविधे दुःखे क्षयरोगादिजे भये ॥ १७ ॥
सहस्रं चण्डिकापाठं कुर्याद्वा कारयेत्तथा ।

रुद्रयामल में सहस्रचण्डी के विषय में यह कहा गया है : हे महामते विष्णो, सहस्रचण्डी को विधिवत् सुनो। यदि अकस्मात् राज्य का नाश हो जाय, जानघातक महामारी आ जाय, हाथियों के मरने का रोग फैल जाय, घोड़ों के मरने का रोग फैल जाय, दूसरे राजा द्वारा आक्रमण हो जाय तथा क्षयरोग का प्रसार हो जाय, अथवा इसी प्रकार के अनेक विधि दुःख उपस्थित हों तब सहस्रचण्डी का पाठ करे या कराये।

जापकास्तु शतं प्रोक्ता विंशद्धस्तस्तु मण्डपः ॥ १८ ॥
भोयकाः सहस्रं विप्रेन्द्रा गोशतं दक्षिणां दिशेत् ।
गुरवे द्विगुणं देयं शय्यादानं तथैव च ॥ १९ ॥
सप्तधान्यं च भूदानं श्वेताश्वश्व मनोहरः ।
पञ्चनिष्कमिता मूर्तिः कर्तव्या वर्धमानतः ॥ २० ॥
अष्टादशभुजां देवीं सर्वायुधविभुषिताम् ।
अन्नं वारि च दातव्यं सहस्रं प्रत्यहं विभो ॥ २१ ॥
शतं वा नियताहारः पयोमानेन वर्तयेत् ।
एवं यश्चण्डिकापाठं सहस्रं तु समाचरेत् ॥ २२ ॥
तस्य स्यात्कार्यसिद्धिस्तु नात्र कार्या विचारणा ॥ २३ ॥
इत्येष पटलो दिव्यो मन्त्रसर्वस्य रूपवान् ।
दुर्गारहस्यभूतोपि गोपनीयो मुमुक्षुभिः ॥ २४ ॥
इति दुर्गापटलः समाप्तः ॥ १ ॥

जप करने वाले सौ कहे गये है। बीस हाथ का मण्डप बतलाया गया है। हजार ब्राह्मणों को भोजन कराना कहा गया है तथा सौ गौवें दक्षिणा के लिए बतलायी गयी हैं। गुरु को दूनी दक्षिणा देनी चाहिये। शय्यादान भी करना चाहिये। सात प्रकार के अन्न, भूमिदान, सफेद घोड़े का दान करना चाहिये। पाँच निष्क की मूर्ति वृद्धिक्रम से बनानी चाहिये। आठभुजाएँ समस्त आयुधों से विभूषित देवी की मूर्ति

बनानी चाहिये । हे विभो, अन्न, जल प्रतिदिन सहस्र व्यक्तियों को देना चाहिये । अथवा सौ व्यक्तियों को केवल दूध मात्र पर नियताहार कराना चाहिये । इस प्रकार जो चण्डिका का एक हजार पाठ करता या कराता है, उसके कार्यों की सिद्धि होती है । इसमें कोई विचार नहीं करना चाहिये । यह मन्त्र का सर्वस्व मूर्तिमान् दिव्य पटल समाप्त हुआ । इस दुर्गारहस्य के होते हुए भी मुमुक्षुओं को चाहिये कि वे इसे गुप्त रक्खें ।

इति दुर्गापटल समाप्त ।

अथ दुर्गापूजापद्धतिप्रारम्भः

तत्रादौ दुर्गापूजामाहात्म्यमुक्तं च पाद्मे सृष्टिखण्डे ।

पद्मपुराण के सृष्टिखण्ड में दुर्गापूजा का माहात्म्य इस प्रकार कहा गया है

भीष्म उवाच :

चण्डिकानुग्रहाद्दैत्या गताः शिष्टा रसातलम् ।
तद्वदस्व महाप्राज्ञ चण्डिकापूजने फलम् ॥१॥
यथा सम्पूज्यते देवी तुष्टा यच्छति यत्फलम् ।
श्रोतुं कौतुहलं मेऽद्य तद्वदस्व सविस्तरम् ॥२॥

भीष्मजी बोले : बचे-खुचे दैत्य चण्डिका देवी की कृपा से रसातल को चले गये । हे राजन्, आप चण्डिका-पूजन का फल कहें । किस प्रकार देवी की पूजा की जाती है जिससे वह प्रसन्न होकर फल प्रदान करती हैं ? आज मुझे इसको जानने की अत्यन्त उत्कण्ठा है । सो आप विस्तार से मुझे सुनायें ।

पुलस्त्य उवाच :

शृणुष्व नृपशार्दूल चण्डिकापूजने फलम् ।
यत्कृत्वा स्वर्गभुङ्मर्त्यः पश्चान्मोक्षं व्रजेद् ध्रुवम् ॥३॥
यत्पूजने फलं देव्या न तत्क्रतुशतैरपि ।
लभ्यते नितरां तात तीर्थदानव्रतादिभिः ॥४॥

पुलस्त्य बोले : हे नृपशार्दूल, चण्डिकापूजन से जो फल होता है उसे आप सुनो जिसे करके मनुष्य स्वर्गभोग कर अन्त में निश्चय ही मोक्ष को प्राप्त करता है । देवी के पूजन में जो फल मिलता है वह सैकड़ों यज्ञों, तीर्थ तथा दान आदि से भी नहीं प्राप्त होता ।

चण्डिकां पूजयेद्भक्त्या यो नरः प्रत्यहं नृप ।
न क्षमस्तत्फलं वक्तुं साक्षाद्देवः पितामहः ॥५॥
अश्वमेधसहस्राणि वाजपेयशतानि च ।
चण्डिकापूजनस्यैव लक्षांशेनापि नो समः ॥६॥
स दाता स मुनिर्यष्टा स तपस्वी स तीर्थपः ।
यः सदा पूजयेद्दुर्गां नानापुष्पानुलेपनैः ॥७॥
धूपैर्दीपैस्तथा भोज्यैः प्रणमेद्वापि भावनीम् ।
स योगी स मुनिः श्रीमांस्तस्य मुक्तिः करे स्थिता ॥८॥
वर्षमेकं तु यो दुर्गां पूजयेद्विजितेन्द्रियः ।
एकाहारो महाबाहो सोऽग्निष्टोमफलं लभेत् ॥९॥

हे राजन्, जो मनुष्य भक्तिपूर्वक प्रतिदिन चण्डिका देवी की पूजन करता है, उसका फल साक्षात् ब्रह्मा भी कहने में समर्थ नहीं हैं । हजारों अश्वमेध तथा सैकड़ों वाजपेय यज्ञ भी चण्डिकापूजन के लाखवें

भाग को नहीं पहुँच सकते। वही दाता, मुनि, यष्टा, तपस्वी तथा तीर्थपायी है जो नाना प्रकार के पुष्पों और अनुलेपनों से, धूप, दीप तथा भोज्यों से भवानी की पूजा करता है और उन्हें प्रणाम करता है। वही योगी, मुनि तथा श्रीमान् है। मुक्ति उसके हाथ में स्थित रहती है। जो अपनी इन्द्रियों को वश में रख कर एक समय आहार करके एक वर्ष तक दुर्गा की पूजा करता है उसे, हे महावाहो, अग्निष्टोम का फल प्राप्त होता है।

पौर्णमास्यां नवभ्यां च अष्टम्यां च नराधिप।
स्नापयित्वा शुभां दुर्गां वाजपेयफलं लभेत् ॥१०॥
शुक्लपक्षे नवम्यां तु अष्टम्यां परमेश्वरीम्।
त्रिकालं पूजयेद्यस्तु चतुर्दश्यां नराधिप ॥११॥
स गच्छति परं स्थानं यत्र देवी व्यवस्थिता।
क्रीडित्वा सुचिरं कालं राजा भवति भूतले ॥१२॥
नवम्यां सोपवासस्तु यः पूजयति चण्डिकाम्।
दशानामश्वमेधानां फलं प्राप्नोति मानवः ॥१३॥
जितेन्द्रियो ब्रह्मचारी शुचिर्भूत्वा तु यो नरः।
चण्डिकां पूजयेद्भक्त्या स याति परमां गतिम् ॥१४॥
स्नानोपवासनियमैः पूजाजागरमार्जनैः।
सर्वकालेषु सर्वेषु चण्डिकां यः प्रपूजयेत् ॥१५॥
विमानवरमारुह्य ध्वजमालाकुलं नृप।
ब्रह्मलोकं नरो गत्वा मोदते शाश्वतीः समाः ॥१६॥
तस्मात्सर्वप्रयत्नेन यथाविभवविस्तरैः।
पूजयेत्सततं दुर्गां महापुण्यफलेच्छया ॥१७॥

हे नराधिप, पूर्णमासी में, नवमी में, अष्टमी में, शुभ दुर्गा को स्नान कराकर मनुष्य वाजपेय यज्ञ का फल प्राप्त करता है। शुक्लपक्ष में नवमी और अष्टमी तथा चतुर्दशी को तीनों कालों में जो देवी की पूजा करता है, वह उस परम स्थान को प्राप्त करता है जहाँ देवी स्वयं निवास करती हैं। वहाँ वह बहुत समय तक आनन्दपूर्वक रहकर पुनः पृथिवी पर राजा बनता है। नवमी के दिन जो उपवास करके चण्डिका का पूजन करता है वह दश अश्वमेध यज्ञों का फल पाता है। जो जितेन्द्रिय, ब्रह्मचारी और पवित्र होकर चण्डिका देवी का पूजन करता है वह परमगति को प्रास होता है। स्नान, उपवास, नियम, पूजा, जागरण तथा मार्जन से सदा और सभी स्थानों में जो चण्डिका का पूजन करता है वह, हे राजन्, विमान पर आरूढ होकर ध्वजा और माला से सुशोभित होकर ब्रह्मलोक को जाकर वहाँ शाश्वतकाल तक आनन्दोपभोग करता है। इसलिए सभी उपायों से अपनी आर्थिक स्थिति के अनुसार महापुण्य के फल की इच्छा से दुर्गा देवी की निरन्तर पूजा करनी चाहिये।

अयने विषुवे चैव षडशीतिमुखे नृप।
मासैश्चतुर्भिर्यत्पुण्यं विधिना पूज्य चण्डिकाम् ॥१८॥
तत्फलं लभते वीर नवम्यां कार्तिकस्य तु।

हे राजन्, दोनों अयनों में (उत्तरायण और दक्षिणायन), विषुव अर्थात् दोनों संक्रान्तियों में (मकरसंक्रान्ति तथा मेषसंक्रान्ति), षडसीति मुख में (२७ नक्षत्रों से युक्त छियासी मुखों वाले चक्र में), चार मासों में विधिपूर्वक चण्डिका की पूजा से जो फल मनुष्य प्राप्त करता है वह फल कार्तिक की नवमी में दुर्गा की पूजा से प्राप्त कर लेता है।

मासि चाश्वयुजे वीर शुक्लपक्षे त्रिशूलिनीम् ॥१९॥
नवम्यां पूजयेद्यस्तु तस्य पुण्यफलं शृणु ।
अश्वमेधसहस्रस्य राजसूयशतस्य च ॥२०॥
तत्फलं लभते वीर दिवि देवगणैर्वृत्तः ।
मासिमासि नरो भक्त्या पूजयेद्यस्तु चण्डिकाम् ॥२१॥
व्रजेत्षाण्मासिकं पुण्यं नवम्यां तु न संशयः ।
मेरु पर्वततुल्योपि राशिः पापस्य कर्मणः ॥२२॥
चण्डिकावैद्यमासाद्य नश्यते दुष्टरोगवत् ।
दुर्गार्चने रतो नित्यं महापातकसम्भवैः ॥२३॥
दोषैर्न लिप्यते वीर पद्मपत्रमिवांभसा ।
छित्त्वा भित्त्वा च भूतानि हत्वा सर्वमिदं जगत् ॥२४॥
प्रणम्य शिरसा देवीं न स पापैर्विलिप्यते ।
सर्वावस्थां गतो वापि युक्तो वा सर्वपातकैः ॥२५॥
दुर्गां दृष्ट्वा नरः सोपि प्रयाति परमं पदम् ।
स्वपंस्तिष्ठन्व्रजन् मार्गे प्रलपन्भोजने रतः ॥२६॥
स्मरते सततं दुर्गां स च मुच्येत बन्धनात् ।

हे वीर, जो आश्विन के शुक्लपक्ष में नवमी के दिन दुर्गा की पूजा करता है, उसका फल सुनो। वह हजार अश्वमेध तथा सौ राजसुययज्ञ का फल प्राप्त करता है। जो व्यक्ति प्रतिमास भक्तिपूर्वक पूजा करता है वह देवताओं के साथ घिरा हुआ उक्त फल प्राप्त करता है। नवमी के दिन पूजा करने से मनुष्य छः महीने की पूजा का फल पाता है इसमें कोई संशय नहीं है। यदि मेरुपर्वत के समान भी पापकर्मों की राशि हो तो वह भी चण्डिका देवी की पूजा से उसी प्रकार समाप्त हो जाती है जैसे वैद्य को देखकर रोग भाग जाते हैं। जो व्यक्ति दुर्गा के पूजन में नित्य लगा हुआ है वह महापातको में लिप्त होने पर भी दोषों से उसी प्रकार छूट जाता है जैसे कमलपत्र पर जल का प्रभाव नहीं होता। समस्त प्राणियों को मारकाट कर तथा सारे संसार को छिन्नभिन्न करके भी देवी को शिर से प्रणाण करने से वह पापों से छूट जाता है। चाहे वह चारों तरफ से पापकर्म में लिप्त ही क्यों न हो, दुर्गाजी को देखकर वह व्यक्ति परम पद को प्राप्त होता है। जो मनुष्य सोते, मार्ग में चलते, बातें करते, भोजन करते हुए निरन्तर दुर्गा का स्मरण करता है, वह बन्धनों से मुक्त हो जाता है।

न तद्देशे तु दुर्भिक्षं न च दुःखं प्रवर्तते ॥२७॥
न कश्चिन्म्रियते राजन्पुज्यते यत्र चण्डिका ।
यो दुर्गां पूजयेन्नित्यं श्वपचो वा जितेन्द्रियः ॥२८॥
भावेन च समायुक्तः सोपि याति परां गतिम् ।
पूजयित्वा तु तां भक्त्या श्रद्धया सर्वमङ्गलाम् ॥२९॥
प्रयाति परमं स्थानं यत्र सा सर्वमङ्गला ।
व्रताभिषेकं यः कुर्यादहोरात्रं नराधिपः ॥३०॥
सूक्ष्मधारेण ताम्रेण भगवत्या विचक्षणः ।
मासि चाश्वयुजे वीर सर्वपापैः प्रमुच्यते ॥३१॥

हे राजन्, जहाँ पर चण्डिका का पूजन होता है, उस स्थान पर न दुर्भिक्ष होता है, न कोई दुःख

होता है और न किसी की मृत्यु होती है। यदि चाण्डाल भी जितेन्द्रिय और श्रद्धाभाव से युक्त होकर नित्य दुर्गा की पूजा करता है तो वह भी परमगति को प्राप्त होता है। हर प्रकार से मङ्गल करने वाली दुर्गाजी की भक्ति से पूजा करके वह परमगति को प्राप्त होता है और उस स्थान को पहुँच जाता है, जहाँ सर्वमङ्गला दुर्गा देवी का निवास है। हे राजन्, जो रातदिन सूक्ष्मधार वाले ताम्र से आश्विन मास में दुर्गा का व्रत और अभिषेक करता है वह सभी पापों से छूट जाता है।

कार्तिके पौर्णमास्यां यः सोपवासोर्चयेदुमाम्।
सोग्निष्टोमफलं विन्देत्सूर्यलोकं च गच्छति ॥ ३२ ॥

जो कार्तिक पूर्णमासी को उपवास के साथ उमा की पूजा करता है वह अग्निष्टोम यज्ञ का फल प्राप्त करता है तथा सूर्यलोक को जाता है।

आषाढे पौर्णमास्यां तु योऽर्चयेदम्बिकां नरः।
सोपवासो महाभागः स याति परमां गतिम् ॥ ३३ ॥
पौर्णमास्यां तु यो माघे पूजयेद्विधिवच्छिवाम्।
सोश्वमेधमवाप्नोति विष्णुलोके महीयते ॥ ३४ ॥

अषाढ़ पूर्णमासी को जो मनुष्य उपवास के साथ अम्बिका का पूजन करता है वह परमगति को प्राप्त होता है। माघ की पूर्णिमा को जो दुर्गाजी की विधिवत् पूजा करता है, वह अश्वमेध का फल प्राप्त करता है और विष्णुलोक में विराजमान होता है।

अयने दक्षिणे यस्तु पूजयेदम्बिकां नृप।
सकृद्गन्धोदकैश्चैव गन्धर्वसदने वसेत् ॥ ३५ ॥
पञ्चगव्येन उक्षित्वा पञ्चचूडाचलं व्रजेत्।
आपः क्षीरं कुशाग्राणि तण्डुला हविरक्षताः ॥ ३६ ॥
सह सिद्धार्थका दूर्वा कुंकुमं रोचना मधु।
अर्घोयं कुरुशार्दूल द्वादशाङ्ग उदाहृतः ॥ ३७ ॥
अनेन पूजयेद्यस्तु स याति परमं पदम्।
दारवेणार्धपात्रेण दत्त्वार्घ्यं विधिवन्नृप ॥ ३८ ॥
देव्यै तदा महाराज अग्निष्टोमफलं व्रजेत्।
अब्दमेकशतं दिव्यं शक्रलोके महीयते ॥ ३९ ॥
गन्धानुलेपनं कृत्वां ज्योतिष्टोमफलं व्रजेत्।
चन्दनेनावलिप्यार्यामग्निष्ठोमफलं व्रजेत् ॥ ४० ॥
विलिप्य कृष्णागरुणा वाजपेयफलं भजेत्।
कुंकुमेन विलिप्यार्यां गोसहस्रफलं भजेत् ॥ ४१ ॥
चन्दनागुरुकर्पूरैः सूक्ष्मपत्रैः सकुंकुमैः।
दुर्गामालिप्य विधिवत्कल्पकोटिं वसेद्दिवि ॥ ४२ ॥
अग्निहोत्रपरे विप्रे वेदवेदाङ्गपारगे।
सुवर्णानां सुवर्णानां शते दत्ते तु यत्फलम् ॥ ४३ ॥
तत्फलं लभते राजन्पूजयित्वा तु चण्डिकाम्।

हे राजन, दक्षिणायन में जो मनुष्य सुगन्धित जल से दुर्गाजी का पूजन करता है वह गन्धर्वों के लोक में निवास करता है। पञ्चगव्य में सिंचन करके पञ्चचूडाचल पर्वत पर जाये। जल, दूध, कुशा,

चावल, हविष्, अक्षत, पीली सरसों, दूब, केसर, गोरोचन,मधु, ये अर्घ्य द्वादशाङ्ग कहलाते हैं । हे कुरुशार्दूल, यदि कोई इन द्रव्यों से दुर्गा की पूजा करता है तो वह परमपद को प्राप्त करता है । हे राजन्, लकड़ी के अर्घमात्र से जो विधिवत् अर्घ्य देकर पूजा करता है वह अग्निष्टोम यज्ञ के फल को प्राप्त करता है । वह एक सौ एक वर्ष तक इन्द्रलोक में आनन्द से निवास करता है । सुगन्धित द्रव्यों का अवलेपन करके साधक ज्योतिष्टोम यज्ञ का फल प्राप्त करता है तथा देवी को चन्दन का अवलेपन करके अग्निष्टोम यज्ञ का फल प्राप्त करता है । काले अगर का देवी को अवलेपन करने से वाजपेय यज्ञ का फल प्राप्त करता है । केसर से देवी का अवलेपन करने से एक हजार गायों के दान का फल प्राप्त करता है । चन्दन, अगर, कपूर, सूक्ष्मपत्र (जङ्गली जीरा) और केसर से दुर्गा का विधिवत् अवलेपन करके एक करोड़ वर्ष तक देवलोक में निवास करता है । हे राजन्, अग्निहोत्र करनेवाले वेदवेदाङ्ग के पारगामी ब्राह्मण को सौ सोने के सिक्के दान देने से जो फल होता है वह चण्डिका की पूजा करने से मनुष्य पा जाता है ।

मालया बिल्वपत्राणां नवम्यां च पुरेण च ॥४४॥
मालाद्वयेन सम्पूज्य दुर्गां देवीं नराधिप ।
विल्ववृक्षस्य पुष्पैश्च राजसूयफलं भजेत् ॥४५॥
करवीरस्य स्रग्भिश्च पूजयेद्यस्तु चण्डिकाम् ।
वाजपेयस्य यज्ञस्य फलं प्राप्नोति मानवः ॥४६॥
द्रोणपुष्पसुस्रग्भिस्तु पूजयेद्यस्तु चण्डिकाम् ।
राजसूयफलं प्राप्य स्वर्गलोके महीयते ॥४७॥
पूजयित्वा तु राजेन्द्र श्रद्धया विधिपूर्वकम् ।
अन्यपुष्पस्य मालाभिः पितृलोके महीयते ॥४८॥
शमीपुष्पस्य मालाभिस्त्वार्यां सम्पूज्य भक्तितः ।
गोसहस्रफलं लब्ध्वा विष्णुलोके महीयते ॥४९॥

जो मनुष्य नवमी के दिन बेल के पत्तों की दो मालाओं से बेल के पत्तों के दोने में बेल के फूलों से देवी की पूजा करता है वह राजसूय यज्ञ का फल पाता है । जो कनेर के फूलों की मालाओं से चण्डिका की पूजा करता है वह वाजपेय यज्ञ का फल प्राप्त करता है और स्वर्गलोके में निवास करता है । हे राजेन्द्र, इसी प्रकार अन्य फूलों की मालाओं से श्रद्धापूर्वक दुर्गा की पूजा करके पितृलोक में निवास करता है । शमी के फूल की मालाओं से भक्तिभाव से देवी की पूजा करके एक हजार गायों के दान का फल पाकर विष्णुलोक में निवास करता है ।

सर्वेषामेव पुष्पाणां प्रवरं नीलमुत्पलम् ।

नीले कमल का फूल सब फूलों में श्रेष्ठ है ।

नीलोत्पलसहस्रेण यस्तु मालां प्रयच्छति ॥५०॥
दुर्गायै विधिवद्वीर तस्य पुण्यफलं शृणु ।
वर्षकोटिसहस्राणि वर्षकोटिशतानि च ॥५१॥
दिव्यमूर्तिधरो भूत्वा रुद्रलोके महीयते ।
सर्वासां पुष्प जातीनां यत्फलं परिकीर्तितम् ॥५२॥
तस्माच्छतगुणं प्राप्य दुर्गालोके महीयते ।
नीलोत्पलस्रजां देवीं पूजयेद्यस्तु चण्डिकाम् ॥५३॥

वाजपेयफलं प्राप्य रुद्रलोके महीयते ।
अलाभे पुष्पजातीनां पत्राण्यपि निवेदयेत् ॥५४॥
पत्राणामप्यलाभे तु औषधीस्तु निवेदयेत् ।
औषधीनामलाभे तु भक्त्या भगवती जिता ॥५५॥

हे वीर, जो एक हजार नीले कमल के फूलों की माला देवी पर विधिवत् चढ़ाता है उसका पुण्यफल सुनो । इस प्रकार पूजा करने वाला मनुष्य दिव्य शरीर धारण करके ग्यारह अरब वर्ष तक रुद्रलोक में आनन्दपूर्वक निवास करता है । जो नीले कमल की माला से चण्डिका की पूजा करता है वह सभी प्रकार के फूलों के जो फल कहे गये हैं उनसे सौ गुना फल पाकर दुर्गा के धाम में निवास करता है। फूलों के अभाव में केवल पत्रों से ही पूजा करनी चाहिये । पत्रों के अभाव में औषधियों से ही पूजा करनी चाहिये । औषधियों के अभाव में केवल भक्ति से भी भगवती प्राप्त हो जाती हैं ।

प्रत्येकमुक्तपुष्पेषु कुशेष्वपि फलं नृप ।
आङ्गिरसेषु तेष्वेव द्विगुणं काञ्चनस्य तु ॥५६॥
मल्लिकामुत्पलं पत्रं शमी पून्नागचम्पकम् ।
कर्णिकारमशोकं च द्रोणपुष्पं विशेषतः ॥५७॥
चन्दनं च जपापुष्पं नागकेसरमेव च ।
यः प्रयच्छति पुण्यात्मा पुष्पाण्येतानि भावतः ॥५८॥
चण्डिकायै नरश्रेष्ठः स च प्रोक्तफलं भजेत् ।
सम्प्राप्य कालाद्राजत्वं चण्डिकानुचरो भवेत् ॥५९॥
पद्माकृतिं च यः कुर्यान्मण्डलं चण्डिकागृहे ।
स ब्रह्मणः पुरं गत्वा मोदते ब्रह्मणा सह ॥६०॥

हे राजन्, पूर्वोक्त फूलों तथा कुशों में प्रत्येक का जो फल कहा गया है यदि वे आंगरिस हों या सोने के हों तो उनका दूना फल होता है । मल्लिका, कमल, शमीपत्र, पुन्नाग, चम्पा, कनेर, अशोक, द्रोणपुष्प, विशेष रूप से चन्दन, अढ़उल का फूल, नागकेसर इन फूलों को जो पुण्यात्मा भावपूर्वक चण्डिका देवी पर चढ़ाता है, हे नरश्रेष्ठ, वह पूर्वोक्त फलों को प्राप्त करता है और समय पर राज्याधिकार प्राप्त कर चण्डिका का अनुचर हो जाता है । जो चण्डिका के मन्दिर में कमल की आकृति बनाता है वह ब्रह्मधाम में जाकर ब्रह्मा के साथ आनन्द करता है ।

शङ्खवर्णं तु यः कुर्यान्मण्डलं विधिवन्नृप ।
स दिव्यं यानमारुह्य चन्द्रलोकमवाप्नुयात् ॥६१॥
नानावर्णेन चूर्णेन कृत्वा मण्डलमुत्तमम् ।
गत्वा माहेश्वरीलोकं मोदते शाश्वतीः समाः ॥६२॥

हे राजन्, जो विधिपूर्वक शङ्खवर्ण का मण्डल बनाता है, वह दिव्य यान पर बैठकर चन्द्रलोक को प्राप्त करता है । जो अनेक प्रकार के चूर्ण से दुर्गा के सम्मुख उत्तम मण्डल बनाता है वह माहेश्वरी लोक में जाकर सदाकाल आनन्दपूर्वक निवास करता है ।

वज्राकृतिं वज्रचूर्णैर्यः कुर्यान्मण्डलं नृप ।
ऐरावतं समारूढ इन्द्राणीलोकमाप्नुयात् ॥६३॥
यः करोति नरो भक्त्या दुर्गायाः पुरतो महत् ।
श्वेतकृष्णैः सितैर्वर्णैः श्रीवत्साङ्कितमुत्तमम् ॥६४॥

मण्डलं स नरो वीर विमानवरमाश्रितः ।
सेव्यमानोप्सरोव्रातैर्व्रजेच्छ्रीलोकमुत्तमम् ॥ ६५ ॥

हे राजन्, जो मनुष्य वज्रचूर्ण से वज्र के समान मण्डल बनाता है, वह ऐरावत हाथी पर सवार होकर इन्द्राणी लोक को जाता है । जो दुर्गा के सामने श्वेत, काले और सफेद वर्णों से श्रीवत्सांकित आकृति भक्तिपूर्वक बनाता है, हे राजन्, वह श्रेष्ठ विमान पर बैठकर अप्सराओं से सेवित उत्तम श्रीलोक को जाता है ।

यः करोति नरो भक्त्या मण्डलं चाम्बिकान्वितम् ।
रमते किन्नरैः सार्धं यावदाभूतसंप्लवम् ॥ ६६ ॥
चक्रैर्वा शतशाखैस्तु क्षीरवृक्षसमुद्भवैः ।
हेमजैश्चापि कलशैर्जलक्षीरघृतान्वितै ॥ ६७ ॥
अनेकवर्णसंयुक्तरक्षतैर्नीरतण्डुलैः ।
य करोति नरो भक्त्या चक्राकारं तु मण्डलम् ॥६८ ॥
चण्डिकायाः पुरो राजञ्जलजैः स्थलसम्भवैः ।
पत्रैः पुष्पैर्यथालाभं सर्वर्तुषूद्भवैः शुभैः ॥ ६९ ॥
वन्यानां सर्वपत्रैश्च पुष्पैश्चैव प्रपूजयेत् ।
शुभं वाप्यशुभं वापि फलं पुष्पं निवेदयेत् ॥ ७० ॥
भक्त्या युतो नरः सर्वं स च देवत्वमाप्नुयात् ।

जो मनुष्य भक्तिभाव से अम्बिका सहित मण्डल बनाता है, वह प्रलयकाल तक किन्नरों के साथ रमण करता है । जो क्षीरी वृक्ष के काष्ठ से, सौ शाखाओं वाले चक्रों से, जल, दूध और घी से पूर्ण स्वर्ण के कलशों से अनेक वर्णों से संयुक्त अक्षत और नीरतण्डुलों से चण्डिका के सामने चक्राकार मण्डल बनाता है, सब ऋतुओं में उत्पन्न होने वाले फूलों और पत्रों में से जो मिले, उनसे तथा जङ्गली फूलों और पत्तों से पूजा करता है तथा जो शुभ या अशुभ फलपुष्प जो मिले उसे देवी को चढ़ाता है, वह मनुष्य देवत्व को प्राप्त होता है ।

नानापुष्पस्य मालाभिर्मण्डपं चण्डिकोपरि ॥ ७१ ॥
यः कुर्याद्विधिवद्भक्त्या विष्णुलोके महीयते ।
कुर्यात्पुष्पगृहं भक्त्या विधिवच्चण्डिकोपरि ॥ ७२ ॥
नवम्यां पूर्वकाले वा विचित्रकुसुमोज्ज्वलम् ।
विमानवरमारुह्य पुष्पदामोपशोभितम् ॥ ७३ ॥
अक्षयं मोदते कालं चण्डिकालयमाश्रितः ।

जो मनुष्य अनेक प्रकार के फूलों की मालाओं से चण्डिका के ऊपर भक्तिपूर्वक मण्डप बनाता है वह विष्णुलोक में निवास करता है । जो नवमी या इससे पहले चण्डिका के ऊपर भक्ति और विधिपूर्वक विचित्र उज्ज्वल फूलों का गृह बनाता है, वह फूलों की रस्सियों से युक्त श्रेष्ठ विमान पर बैठकर चण्डिका के धाम में अक्षयकाल तक आनन्द करता है ।

पूजाविभक्तविन्यासरचनादिषु सर्वतः ।
फलमेव समासेन ज्ञेयं विज्ञानुसारतः ॥ ७४ ॥
घृतपिष्टप्रदीपाद्यैर्घृतमिश्रितपल्लवैः ।
औषधीमिश्च मेध्यामिः सर्वबीजैर्यवादिभिः ॥ ७५ ॥

नवम्यां सर्वकाले तु यात्राकाले विशेषतः ।
यः कुर्याच्छ्रद्धया वीर दिव्यं नीराजनं नरः ॥ ७६ ॥
शङ्खभेर्यादिनिर्घोषैर्महद्भिर्देवनादितैः ।
जयशब्दैः पुष्कलैश्च शिवलोकं स गच्छति ॥ ७७ ॥
लवणेनाक्षतैः कृत्वा देवीनीराजनं परम् ।
तावत्कल्पहसस्राणि स्वर्गलोके महीयते ॥ ७८ ॥
सुवर्णरौप्यवर्णैश्च कृत्वा नीराजनं नरः ।
भगवत्यै महाराज ब्रह्मलोके महीयते ॥ ७९ ॥

पूजाविभक्तिविन्यास, रचना आदि सब स्थानों पर साधारण रूप से ज्ञानवानों के अनुसार फल को जानना चाहिये। हे राजन्, जो घी, आटा, प्रदीप आदि से तथा घी मिश्रित पल्लवों से, पवित्र औषधियों से, यव आदि सभी बीजों से, नवमी में, अथवा सदा विशेष रूप से यात्राकाल में, शङ्ख, भेरी आदि वाद्यों के महान् घोषों से और पुष्कल जयजयकार ध्वनियों से श्रद्धापूर्वक नीराजन करता है वह शिवलोक को प्राप्त होता है। नमक और अक्षतों से जो देवी का नीराजन करता है वह उतने ही समय तक स्वर्गलोक में निवास करता है। हे राजन्, सुनहले और रुपहले वर्णों से देवी का नीराजन करके मनुष्य ब्रह्मलोक में निवास करता है।

त्रिकालं यो नरः कुर्याद्दुर्गायाः पुरतो नृप ।
नृत्यं गीतं च वादित्रं तस्य पुण्यफलं शृणु ॥ ८० ॥
यावन्त्यब्दान्हिकुरुते गीतं नृत्यं च वादितम् ।
तावत्कल्पान्हि राजेन्द्र देवीलोके सुखं वसेत् ॥ ८१ ॥
एकाहमपि यो भक्त्या पञ्चगव्येन चण्डिकाम् ।
स्नापयेन्नृपशार्दूल स गच्छेत्सुरभीपूरम् ॥ ८२ ॥
कपिलापञ्चगव्येन घृतक्षीरयुतेन च ।
स्नानं शतगुणं प्रोक्तमितरेभ्यो नराधिपः ॥ ८३ ॥
वर्षैश्च षट्सहस्राणां पापानां समुपार्जनम् ।
तत्सर्वं विलयं याति तोयेन लवणं यथा ॥ ८४ ॥
घृताभ्यंगेन देव्यास्तु कृतेन विधिवन्नृप ।
तस्मादभ्यञ्जयेद्भक्त्या नित्यं भगवती नृप ॥ ८५ ॥

हे राजन्, जो दुर्गा के सम्मुख तीनों काल में नृत्य, गायन और वादन का आयोजन करता है उसका पुण्य फल सुनो। जितने वर्ष तक मनुष्य गीत, नृत्य और वादन का आयोजन करता है उतने कल्प तक हे राजन्, वह देवीलोक में सुखपूर्वक निवास करता है। जो व्यक्ति एक दिन भी भक्तिपूर्वक पञ्चगव्य से चण्डिका को स्नान कराता है वह गोलोक को प्राप्त होता है। कपिला गाय के घी और दूध से युक्त पञ्चगव्य से देवी को स्नान कराना अन्यों की अपेक्षा हे राजन्, सौ गुना फलदायक होता है। हे राजन्, देवी के देह में विधिवत् घी का अवलेपन करने से छः हजार वर्षों से सञ्चित पाप भी उसी प्रकार नष्ट हो जाते हैं, जिस प्रकार पानी से नमक नष्ट हो जाता है। इसलिये भगवती देवी को सदा भक्तिपूर्वक घी का अवलेपन करना चाहिये।

नवम्यां शुक्लपक्षे तु विधिवच्चण्डिकां नृप ।
घृतेन स्नापयेद्यस्तु तस्य पुण्यफलं शृणु ॥ ८६ ॥

हे राजन्, शुक्लपक्ष की नवमी में विधिपूर्वक चण्डिका को जो घी से स्नान कराता है उसका तुम पुण्यफल सुनो।

दश पूर्वान्दशपरानात्मानं च विशेषतः ।
भवार्णवात्समुद्धृत्य दुर्गालोके महीयते ॥८७॥
क्षीराद्यैः स्नापयेद्यस्तु श्रद्धाभक्तिसमन्वितः ।
चण्डिकां स नरो याति गोलोकं तमसः परम् ॥८८॥
चण्डिकां स्नापयेद्यस्तु नरश्चेक्षुरसेन च ।
सौपर्णकेन यानेन विष्णुना सह मोदते ॥८९॥
यो नरः स्नापयेद्दुर्गां श्रद्धया हेमवारिणा ।
सौवर्णं यानमारूढो मोदते पुरुषैर्दिवि ॥९०॥
रक्तोदकेन विधिवत्स्नापयेच्छ्रद्धयान्वितः ।
चण्डिकां स नरः पूर्वैर्विष्णुलोके महीयते ॥९१॥
स्नापयेद्य उमां देवीं नरः कर्पूरवारिणा ।
सौवर्णयानमारूढः स गच्छेद्यत्र चण्डिका ॥९२॥
चण्डिकां स्नापयित्वा तु श्रद्धयागुरुवारिणा ।
इन्द्रलोकं समासाद्य क्रीडते सह किन्नरैः ॥९३॥

जो व्यक्ति घी से देवी को स्नान कराता है, वह अपने से पूर्व दश तथा अपने से बाद की दश पीढ़ियों का तथा विशेष रूप से अपना उद्धार करके दुर्गालोक में निवास करता है । जो श्रद्धा-भक्ति के साथ दूध आदि से चण्डिका को स्नान कराता है वह अन्धकार से दूर परम गोलोक को प्राप्त होता है । जो मनुष्य गन्ने के रस से चण्डिका को स्नान कराता है वह सौपर्ण यान द्वारा विष्णु के साथ आनन्द करता है । जो मनुष्य दुर्गाजी को सुनहले जल से स्नान कराता है, वह सुवर्ण यान पर बैठकर पुरुषों के साथ देवलोक में आनन्द करता है । जो मनुष्य श्रद्धा से विधिपूर्वक लाल जल से देवी को स्नान कराता है, वह पूर्वपुरुषों के साथ विष्णुलोक में निवास करता है । जो मनुष्य कूपर के जल से उमा को स्नान कराता है, वह सोने के यान पर बैठकर वहाँ चला जाता है जहाँ चण्डिका स्वयं निवास करती हैं । जो मनुष्य अगर के जल से चण्डिका को श्रद्धापूर्वक स्नान कराता है वह इन्द्रलोक जाकर किन्नरों के साथ क्रीड़ा करता है ।

पितॄनुद्दिश्य यो दुर्गां मधुना पायसेन च ।
स्नापयेद्विधिवद्भक्त्या तस्य पुण्यफलं शृणु ॥९४॥
तृप्ता भवन्ति पितरस्तस्य वर्षशतद्वयम् ।
य एवं स्नापयेन्नित्यं स्नानद्रव्यैर्नराधिपः ॥९५॥
युगपद्विधिवद्वीर तस्य पुण्यफलं शृणु ।
अश्वमेधसहस्रस्य राजसूयशतस्य च ॥९६॥
अग्निष्टोमस्य यज्ञस्य स फलं बिंदते नरः ।
स्नापयित्वा नरस्ताम्रैर्वाजपेय फलं ब्रजेत् ॥९७॥
सौवर्णैः स्नापयित्वा च चण्डिकां कलशैर्नृप ।
अश्वमेधफलं प्राप्य ब्रह्मलोके महीयते ॥९८॥
घृतस्नातां तथा दुर्गां समुद्वर्तयते तु यः ।
यवगोधूमजैश्चूर्णैर्घर्षयेच्छर्करेण च ॥९९॥

घृतेन पयसा दध्ना स्नापयेच्चण्डिकां ततः ।
बिल्वपत्रैः सुगन्धाढ्यैर्घर्षयेद्यत्नतः पुमान् ॥१००॥
गोसहस्रशते दत्ते यत्फलं पुष्करे स्मृतम् ।
तत्फलं लभते वीर देव्या उद्वर्तने कृते ॥१०१॥

जो मनुष्य पितरों के उद्देश्य से श्रद्धा-भक्ति पूर्वक दूध और मधु से दुर्गा को स्नान कराता है, उसका पुण्य फल सुनो। उसके पितर दो सौ वर्ष तक तृप्त होते हैं। हे राजन्, जो इन स्नानद्रव्यों के साथ नित्य स्नान कराता है, उनका एक साथ पुण्य फल सुनो। वह मनुष्य हजारों अश्वमेधों तथा सैकड़ों राजसूय यज्ञों का और अग्निष्टोम यज्ञ का फल प्राप्त करता है। मनुष्य ताँबे के घड़ों से देवी को स्नान कराकर वाजपेय यज्ञ का फल प्राप्त करता है। हे राजन्, सोने के घड़ों से देवी को स्नान कराने से मनुष्य अश्वमेध का फल प्राप्त कर ब्रह्मलोक में निवास करता है। जो घी से स्नान किये हुए दुर्गा को जव या गेहूँ के आटे से तथा शकर से उबटन लगाता तथा घी, दूध और दही से चण्डिका को स्नान कराकर तदनन्तर सुगन्ध से युक्त बेल के पत्रों से घर्षण करता है वह हजार गायों के दान का जो फल है तथा पुष्कर में स्नान का जो फल है वही फल वह मनुष्य देवी को उबटन लगाने से प्राप्त करता है।

दत्त्वार्घ्यं विधिवद्भक्त्या दुर्गायै पद्मवारिणा ।
सम्पूज्यमानो गन्धर्वै रमते दिवि देववत् ॥१०२॥
कृतोपवासो विधिवत्स भोगी पुत्रवान्भवेत् ।
उत्तरे ह्ययने यस्तु सोपवासोऽर्चतेम्बिकाम् ॥१०३॥
बहुपुत्रो बहुधनः सः नरः कीर्तिमान्भवेत् ।
इत्येते कथिता वीर पूजाकाला मनिषिभिः ॥१०४॥
कृत्वोपवासं विधिवद्विषुवे योऽर्चयेच्छिवाम् ।
शक्तियान्बहुपुत्रश्च स भवेद्बलवान्नरः ॥१०५॥
योऽर्चयेद्विधिवद्दुर्गा ग्रहणे चन्द्रसूर्ययोः ।
कृत्वोपवासं विधिवत्स भवेत्पुत्रवान्नरः ॥१०६॥
शान्तिकामो नरो यस्तु राहुग्रस्ते दिवाकरे ।
सोपवासोऽर्चयेद्देवीं स गच्छेत्परमं पदम् ॥१०७॥
इत्येते कथिता वीर पूजाकाला मनीषिभिः ।
दुर्गायाः कुरुशार्दूल येषु ब्रह्मादिवं ब्रजेत् ॥१०८॥

विधिवत् भक्तिपूर्वक दुर्गा को कमल के जल का अर्घ्य देकर साधक गन्धर्वों द्वारा पूजित होता हुआ देवताओं की तरह देवलोक में रमण करता है। उत्तरायण में उपवासपूर्वक जो अम्बिका की विधिवत् पूजा करता है वह भोगों को प्राप्त करता हुआ पुत्रों को प्राप्त करता है। उसे बहुत पुत्र, बहुत धन प्राप्त होता है तथा वह यशस्वी होता है। हे वीर, ये सब मनीषियों द्वारा पूजा के काल कहे गये हैं। जो मनुष्य उपवास करके उत्तरायण या दक्षिणायन में शिवा की पूजा करता है, वह शक्तियों से सम्पन्न, बहुत पुत्रों वाला और बलवान होता है। जो सूर्य और चन्द्रमा के ग्रहण में विधिपूर्वक दुर्गा की पूजा करता है, वह पुत्रवान होता है। शान्ति की कामना से जो मनुष्य सूर्यग्रहण में उपवास करके देवी की पूजा करता है, वह परम पद को प्राप्त करता है। हे वीर, ये मनीर्षियों द्वारा पूजा के काल कहे गये हैं जिनमें दुर्गा की पूजा से, हे कुरुशार्दूल, मनुष्य ब्रह्मलोक को प्राप्त होते हैं।

दुर्गाया दर्शनं पुण्यं दर्शनाभिवन्दनम् ।
वन्दनात्स्पर्शनं श्रेष्ठं स्पर्शनादपि पूजनम् ॥१०९॥
पूजनाल्लेपनं श्रेष्ठं लेपनात्तर्पणं स्मृतम् ।
तर्पणान्मांसदानं तु महिषाजनिपातनम् ॥११०॥
अहन्यहनि यो दुर्गा पूजयेद्रुधिरादिभिः ।
कुलानां शतमुद्धृत्य ब्रह्मलोके महीयते ॥१११॥

दुर्गा का दर्शन पुण्यप्रद है; दर्शन से अभिवादन अधिक पुण्यप्रद है; अभिवादन से स्पर्श श्रेष्ठ है; स्पर्श से पूजन श्रेष्ठ है, पूजन से आलेपन श्रेष्ठ है; आलेपन से तर्पण श्रेष्ठ है; तर्पण से भैंस और बकरे की बलि देना श्रेष्ठ है। जो प्रतिदिन रक्त आदि से दुर्गा की पूजा करता है, वह अपने सौ कुलों का उद्धार करके ब्रह्मलोक में निवास करता है।

वरं प्राणपरित्यागः शिरसः कर्तनं वरम् ।
नचापुज्येह भुञ्जीत चण्डिकां चण्डरूपिणीम् ॥११२॥
यश्च देव्या गृहं नित्यं सम्मार्जयति भक्तितः ।
सः भवेद्वलवान्देव सर्वसम्पत्तिसंयुतः ॥११३॥
देव्या गृहं तु यो देव गोमयेनोपलेपयेत् ।
स्त्री पुमान्वा यथावच्च षण्मासाभ्यन्तरे सुर ॥११४॥
स भजेदीप्सितान्कामान्देवीलोकं च गच्छति ।

प्राण का परित्याग उचित है, शिर का कटा देना भी उचित है परन्तु चण्डरूपिणी चण्डिका देवी की पूजा किये बिना भोजन करना उचित नहीं है। जो देवी के घर को भक्तिपूर्वक स्वच्छ करता है, हे राजन्, वह बलवान् और सम्पत्ति से मुक्त होता है। हे देव, जो गोबर से देवी के घर को यथावत् लीपता है, चाहे वह स्त्री हो या पुरुष, वह छः मास के अन्दर इच्छित कामनाओं को प्राप्त करके देवी के धाम को चला जाता है।

पुलस्त्य उवाच :

स्नानकाले महाराज नानावादित्रमङ्गलैः ॥११५॥
जयशब्दैश्च यो दुर्गा तर्पयेत् जलादिभिः ।
सम्पूजयति भक्त्या च गन्धपुष्पादिभिस्तथा ।
स क्रीडते दिवं गत्वा गन्धर्वाप्सरसां गणैः ॥११६॥
कृष्णागुरु सकर्पूरं सिन्दूरं चन्दनं तथा ।
भगवत्यै नरो भूयः पदं दत्त्वा नराधिप ॥११७॥
इह कामानवाप्याथ शिवलोके महीयते ।
गुग्गुलुं सघृतं दत्त्वा दुर्गायै च नरर्षभ ॥११८॥
वर्षार्धं विधिवद्भक्त्या गोसहस्रफलं भजेत् ।
अगुरुधूपमावेद्य सर्वयज्ञफलं भजेत् ॥११९॥
सितागुरुं नरो दत्त्वा गोसहस्रफलं भजेत् ।
सर्वेषामेव धूपानां दुर्गाया गुग्गुलुः प्रियः ॥१२०॥
घृतयुक्तो विशेषेण सततं प्रीतिवर्द्धनः ।
द्वे सहस्रे पलानां तु तथा पलशतद्वयम् ॥१२१॥

दत्त्वा शुक्लनवम्यां तु चण्डिकावल्लभो भवेत् ।
महिषाक्षं घृताक्तं तु दगध्वा बिल्वमथापि वा ॥ १२२ ॥
वाजपेयफलं प्राप्य सूर्यलोके महीयते ।
सकृच्चागुरुधूपेन सर्वमङ्गलप्राप्तिदा ॥ १२३ ॥
शोधयेत्पापकलिकं काञ्चनं दहनो यथा ।

पुलस्त्य ने कहा : हे राजन्, नानाप्रकार के बाजे, मङ्गल और जयजयकार के साथ जो जलादि से दुर्गा का तर्पण करता है तथा भक्तिपूर्वक गन्ध, पुष्प आदि से उनकी पूजा करता है, वह देवलोक जाकर वहां गंधर्वों और अप्सराओं के साथ आनन्द करता है । हे राजन्, काले अगर, कपूर, सिन्दूर तथा चन्दन को जो मनुष्य भगवती को बार-बार चढ़ाता है, वह इस संसार में समस्त कामानाओं को प्राप्त करके शिवलोक में निवास करता है । हे राजन्, घी के साथ गुग्गुल दुर्गाजी पर विधिपूर्वक छः मास तक चढ़ाकर मनुष्य हजार गाय के दान का फल प्राप्त करता है । अगर, धूप दुर्गाजी पर चढ़ाने से मनुष्य समस्त यज्ञों का फल प्राप्त करता है । सफेद अगर देवी पर चढ़ा कर मनुष्य हजार गायों के दान का फल प्राप्त करता है । समस्त धूपों में दुर्गाजी को गुग्गुल अधिक प्रिय है । विशेष करके घी से युक्त गुग्गुल सदा अधिक प्रीति को बढ़ाने वाला है । दो हजार दो सौ पल गुग्गुल नवमी के दिन मनुष्य देवी को चढ़ाकर देवी का प्रिय बन जाता है । महिषाक्ष गुग्गुल घी से संयुक्त करके अथवा बेल को जलाकर मनुष्य बाजपेय यज्ञ का फल पाकर सूर्यलोक में निवास करता है । अगर का धूप एक बार भी देवी को चढ़ाना समस्त मङ्गलों की प्राप्ति कराने वाला है । यह पापों को उसी प्रकार शुद्ध कर देता है जिस प्रकार अग्नि सोने को शुद्ध कर देती है ।

वस्त्राणि सुविचित्राणि सूक्ष्माणि सुमृदूनि च ॥ १२४ ॥
य प्रयच्छति दुर्गायै स गच्छति शिवालयम् ।
सुवर्णघटितं वस्त्रं यो दुर्गायै प्रयच्छति ॥ १२५ ॥
गोसहस्रफलं प्राप्य सूर्यलोके महीयते ।
एवं वित्तानुसारेण फलं ज्ञेयं समासतः ॥ १२६ ॥

जो कोमल, पतले विचित्र वस्त्रों को दुर्गाजी पर चढ़ाता है, वह शिव के धाम जाता है । जो इससे निर्मित वस्त्र दुर्गाजी पर चढ़ाता है, वह हजार गायों के दान का फल प्राप्त करके सूर्यलोक में निवास करता है । संक्षेप से इस प्रकार धन के अनुसार फलों को जानना चाहिये ।

सन्ध्याकाले नवम्यां यो बलिं कुर्यान्नराधिप ।
चण्डिकायतने भक्त्या महिषाजनिपातनैः ॥ १२७ ॥
विमानवरमारुह्य सर्वदेवनमस्कृतम् ।
स गच्छति परं स्थानं यत्र सा चण्डिका स्थिता ॥ १२८ ॥
गुडखण्डाज्यसम्मिश्रमन्नं दत्त्वा नराधिप ।
वैष्णवः सकलं प्राप्य सूर्यलोके महीयते ॥ १२९ ॥
गुडखण्डघृतानां च तथा शर्करया नृप ।
दत्ते चोद्वर्तने देव्यै स याति ब्रह्मणः पदम् ॥ १३० ॥
शाल्योदनं रसानां च प्रपानं विरजस्तथा ।
य प्रयच्छति दुर्गायै स च गच्छेच्छिवालयम् ॥ १३१ ॥
दुर्गामुद्दिश्य पानीयं केतकीगन्धवासितम् ।
यः प्रयच्छति राजेन्द्र स गणाधिपतिर्भवेत् ॥ १३२ ॥

आम्रं च नारिकेलं च खुर्जूरं बीजपूरकम् ।
यः प्रयच्छति दुर्गायै स गच्छेत्परमं पदम् ॥१३३॥
धृतदीपप्रदानेन योऽर्चयेच्चण्डिकां नरः ।
सोश्वमेधफलं प्राप्य चण्डिकानुचरो भवेत् ॥१३४॥
तैलदीपं च यो दद्यात्पूजयित्वा तु चण्डिकाम् ।
नागलोकं समासाद्य क्रीडते सह किन्नरैः ॥१३५॥
आत्मदेहवसादीपं प्रज्वाल्य चण्डिकाग्रतः ।
निवेदयेन्नरो भक्त्या मोदते सोम्बिकालये ॥१३६॥
यः कुर्यात्कार्तिके मासे शोभनां दीपमालिकम् ।
चण्डिकायतने भक्त्या स सूर्यलयमाव्रजेत् ॥१३७॥

नवमी को सायंकाल जो मनुष्य चण्डिका के स्थान पर भक्तिपूर्वक भैंस या बकरे की बलि देता है, वह सब देवताओं से पूजित विमान पर बैठकर उस परम धाम को जाता है जहाँ चण्डिका का स्थान है। हे राजन्, गुड़, खाँड़ तथा घी से मिश्रित अन्न को जो वैष्णव देवी पर चढ़ाताहै , वह सब कुछ प्राप्त करके सूर्यलोक में निवास करता है। हे राजन्, गुड़, खाँड़ घी तथा शकर से जो देवी को उबटन लगाता है वह ब्रह्मधाम को जाता है। जो पवित्र होकर दाल, भात और अनेक प्रकार के रसों का पेय दुर्गाजी को चढ़ाता है वह शिव के धाम को जाता है। जो केतकी से सुवासित जल दुर्गाजी पर चढ़ाता है वह हे राजेन्द्र, दल का नेता हो जाता है। जो आम, नारियल,खजूर और नीबू दुर्गाजी पर चढ़ाता है वह परम पद को प्राप्त करता है। जो मनुष्य घी के दीपक से चण्डिका की पूजा करता है, वह अश्वमेध का फल प्राप्त कर चण्डिका का सेवक बन जाता है। जो मनुष्य तेल के दीपक से चण्डिका का पूजन करता है वह नागलोक को प्राप्त करके किन्नरों के साथ क्रीड़ा करता है। जो मनुष्य अपनी चर्बी चण्डिका के सम्मुख जलाकर भक्तिपूर्वक चण्डिका का पूजा करता है वह चण्डिका के धाम में आनन्द करता है। जो मनुष्य कार्तिक मास में चण्डिका के स्थान पर भक्तिपूर्वक शोभादायक दीपमालिका की रचना करता है वह सूर्यलोक को प्राप्त होता है :

घृतेन कुरुशार्दूल अमायां च स्वशक्तितः ।
विशेषतो नवम्यां तु भक्त्या श्रद्धासमन्वितः ॥१३८॥
तावद्वर्षसहस्राणि ब्रह्मलोक महीयते ।
अश्मसा रमयं कृत्वा नानादीपसमन्वितम् ॥१३९॥
दीपं दत्तं समुद्बोध्य दुर्गायाः पुरतो नृप ।
नरः कल्पायुतं साग्रं दुर्गालोक महीयते ॥१४०॥
चन्द्रांशुनिर्मलं छत्रं मणिमाणिक्यभूषितम् ।
सर्वतः शोभनं कृत्वा नानापुष्पानुलेपनैः ॥१४१॥
दुर्गार्थं पुरतो वीर से याति परमां गतिम् ।
चामरे श्रद्धया देव्यै दत्त्वा च परयान्वितः ।
राजसूयफलं प्राप्य हंसलोके महीयते ॥१४२॥
सम्प्रसारितदेहो या दण्डवत्पतितो भुवि ।
चण्डिकापुरतो वीर स याति परमां गतिम् ॥१४३॥

तत्फलं लभते वीर प्रणम्य शिरसा महीम् ।
दुर्गापूजोपकरणं स्वल्पं वा यदि वा बहु ॥१४४॥
कृत्वा वित्तानुसारेण इन्द्रलोक महीयते ॥१४५॥

हे कुरुशर्दूल, अमावस्या के दिन श्रद्धा-भक्तिपूर्वक अपनी शक्ति के अनुसार जो मनुष्य जितने घी के दीपक जलाता है, उतने हजार वर्ष ब्रह्मलोक में निवास करता है। पत्थर के चूर्ण से निर्मित अनेक दीपों को दुर्गाजी को सम्बोधित करके उनके सामने चढ़ाने से मनुष्य लाखों कल्पों तक दुर्गालोक में निवास करता है। चन्द्रमा की किरणों के समान निर्मल, मणिमाणिक्य से सुभूषित, नाना पुष्पों और अनुलेपनों से युक्त सुन्दर निर्मल छत्र बनाकर हे वीर, जो मनुष्य दुर्गाजी को चढ़ाता है, वह परमगति को प्राप्त करता है। जो मनुष्य परमशक्ति से युक्त होकर देवी को दो चंवर चढ़ाता है वह राजसूय यज्ञ का फल प्राप्त करके सूर्यलोक में निवास करता है। हे वीर, जो मनुष्य चण्डिका के सम्मुख भूमिपर सब शरीर फैलाकर दण्डवत् करता है वह परमगति को प्राप्त करता है। हे वीर, उसी फल को मनुष्य पृथिवी पर अपना शिर टेक कर देवी को प्रणाम करने से भी प्राप्त कर सकता है। दुर्गापूजा का साधन थोड़ा हो या अधिक, अपने धन के अनुसार जितना हो, उसी से दुर्गाजी का पूजन करके मनुष्य इन्द्रलोक को प्राप्त करता है।

पुलस्त्य उवाच :

देवैः पूरा जगत्कर्ता पृष्टो देवः पितामहः ।
ब्रूहि दुर्गार्चनं देव येन तुष्यति चण्डिका ॥१४६॥

पुलस्त्य ने कहा : प्राचीनकाल में जगत्कर्ता ब्रह्मा से देवताओं ने पूछा कि हे देव, आप हमें दुर्गापूजा की वह विधि बतायें जिससे दुर्गाजी सन्तुष्ट होती हैं।

ब्रह्मोवाच :

शम्भुः पूजयते देवीं मन्त्र शक्तिमयीं शुभाम् ।
अक्षमालां करे न्यस्य तेनासौ विभवोद्भवः ॥१४७॥
दुर्गां रत्नमयीं देवाः पूजयामि सदा ह्यहम् ।
तेन प्राप्तं मया चैव ब्रह्मत्वं च सदुर्लभम् ॥१४८॥
इन्द्रनीलमयीं देवीं विष्णुः पूजयते सदा ।
विष्णुत्वं प्राप्तवांस्तेनह्यद्भूतैकं सनातनम् ॥१४९॥
देवीं हेममयी दुर्गाधनदोऽर्चयते सदा ।
तेनासौ धनदो देवो धनेशत्वमवाप्तवान ॥१५०॥
विश्वे देवा महात्मनो रौप्यं देवीं मनोरमाम् ।
यजन्ति विधिवत्तेन विश्वे देवत्वमागतः ॥१५१॥
वायुः पूजयते भक्त्या देवीं पित्तलसम्भवाम् ।
वायुत्वं तेन सम्प्राप्ते ह्यनुत्तमगुणावहम् ॥१५२॥
वसवः कांस्यकां देवीं पूजयन्ति विधानतः ।
प्राप्तास्ततो महात्मानो वसुत्वं तन्महोदयम् ॥१५३॥
अश्विनौ पार्थिवीं देवीं पूजयन्तौ विधानतः ।
तेन तावश्विनी देवौ स्वर्वैद्यौ सम्बभूवतुः ॥१५४॥

ब्रह्मा बोले : शम्भु भगवान् अपने हाथ में रुद्राक्ष की माला लेकर मन्त्र-शक्तिमयी शुभ दुर्गाजी की

पूजा करते हैं। इसी कारण वह समस्त विभवों की उत्पत्ति के केन्द्र हैं। हे देवो, मैं भी उन रत्नमयी दुर्गा की पूजा करता हूँ। उन्हीं से मुझे अत्यन्त दुर्लभ ब्रह्मत्व की प्राप्ति हुई है। विष्णुभगवान् इन्द्रनीलमयी देवी की सदा पूजा करते हैं। उसी कारण उन्हें अद्‌भुत, सनातन, अद्वितीय विष्णुत्व प्राप्त हुआ है। कुबेरजी स्वर्णमयी दुर्गाजी की सदा पूजा करते हैं। उसी कारण कुबेर ने धन के स्वामित्व को प्राप्त किया है। विश्वदेवगण रौप्यमयी मनोरमा देवी की विधिपूर्वक पूजा करते हैं, उसी से उन्हें विश्वदेवत्व की प्राप्ति हुई है। वायु पीतल की बनी दुर्गा देवी की भक्तिपूर्वक पूजा करते हैं, इस कारण विशिष्ट गुणों से युक्त वायुत्व उन्हें प्राप्त हुआ है। वसुगण काँसे की बनी देवी की पूजा विधानपूर्वक करते हैं, इस कारण उन्हें महान् वसुत्व प्राप्त हुआ है। अश्विनी कुमार मिट्टी की बनी देवी की पूजा करते हैं इस कारण ये दोनों देव देवताओ के वैद्य बने हैं।

स्फाटिकीं शोभनां देवीं वरुणर्चयते सदा।
वरुणत्वं च सम्प्राप्तस्तेन चद्धर्या समन्वितम् ॥१५५॥
देवीं रत्नमयीं पुण्यामग्निर्यजति भावितः।
अग्नित्वं प्राप्तवांस्तेन तेजोरूपसमन्वितम् ॥१५६॥
ताम्रां देवीं सदाकालं भक्त्या देवो दिवाकर।
अर्चते तेन सम्प्राप्तं सूर्यत्वं शुभमुत्तम् ॥१५७॥
मुक्ताफलमयीं देवीं सोमः पूजयते सदा।
तेन सोमेन सम्प्राप्तं सोमत्वं सततोज्जवलम् ॥१५८॥
प्रवालकमयीं देवीं पूजयन्ति विधानतः।
तेन ते ग्रहतां प्राप्ता ग्रहाः सूर्योदयोऽनिशम् ॥१५९॥
वारिजां शोभनां देवीं पूजयन्त्यसुरोत्तमाः।
वारिजाश्च महात्मानस्तेन तेऽमितविक्रमाः ॥१६०॥
त्रपुसीसमयीं देवीं यजन्ते पितरः सदा।
पितृत्वं प्राप्य ते सर्वे सम्पूज्याश्च जगत्त्रये ॥१६१॥
तथा लोहमयीं देवीं पिशाचाः पूजयन्ति ताम्।
तेन सिद्धिबलोपेताः प्रयान्ति परं पदम् ॥१६२॥
त्रैलोहिनीं सदा देवीं यजन्ते गुह्यकादयः।
तेन भोगबलोपेताः प्रयान्तीश्वरमन्दिरम् ॥१६३॥
वज्रलोहमयीं देवीं यजन्ते भूतयोनयः।
तेन मुक्ता सुरत्वं च लभन्ते सततं दिवि ॥१६४॥
देवास्तथा यूयमपि यदीच्छथ परां गतिम्।
शिवां मणिमयीमिष्ट्वा लप्स्यध्वे मानसेप्सितम् ॥१६४॥
चण्डिकां पूजयित्वा तु प्रहृष्टेनान्तरात्मना।
कृताञ्जलि पुटो भूत्वा इदं स्तोत्रमुदीरयेत् ॥१६६॥

वरुण देव सुन्दर स्फटिक से निर्मित सुन्दर देवी की सदा पूजा करते हैं, उससे ही उन्हें ऋद्धि से युक्त वरुणत्व प्राप्त हुआ है। अग्निदेव भक्तिपूर्वक रत्नों से निर्मित पुण्यमयी देवी की पूजा करते हैं, उससे उन्हें तेजोरूपयुक्त अग्नित्व प्राप्त हुआ है। सूर्य ताँबे से बनी देवी की सदाकाल पूजा करते हैं, उससे उन्हें शुभ उत्तम सूर्यत्व प्राप्त हुआ है। सोम मोती से बनी देवी की सदा पूजा करते हैं, उससे

उन्हें सदा उज्जवल रहने वाला सोमत्व प्राप्त हुआ है। सूर्यादि ग्रह मूंगे से बनी देवी की विधान से रातदिन पूजा करते हैं, उससे उन्हें ग्रहत्व की प्राप्ति हुई है। असुर श्रेष्ठ तथा वारिज महात्मा जल से बनी देवी की पूजा करते हैं जिससे वे अमित विक्रम वाले हुए हैं। पितर लोक सीसे से बनी देवी की सदा पूजा करते हैं, उस कारण वे पितृत्व को प्राप्त हुए तथा तीनों लोकों में सबसे पूज्य हुए। पिशाच लोग लोहे से बनी देवी की पूजा करते हैं, इस कारण वे सिद्ध तथा बलयुक्त होकर परम पद को प्राप्त करते हैं। गुह्यक आदि तीन धातुओं से बनी देवी की पूजा करते हैं, इस कारण भोग और बल से युक्त होकर वे ईश्वर के मन्दिर में जाते हैं। भूत लोग वज्र लोहे से बनी देवी की पूजा करते हैं, उससे वे मुक्त होकर देवलोक में देवत्व को प्राप्त करते हैं। तुम सभी देव भी यदि परम गति को प्राप्त करना चाहते हो तो मणियों से बनी शिवा देवी की पूजा करके इष्ट फलों को प्राप्त करोगे। चण्डिका देवी की पूजा करके प्रसन्नचित्त हाथ जोड़कर इस स्तोत्र का पाठ करना चाहिये :

स्तोत्रं यथा :

दुर्गां शिवां शान्तिकरीं ब्रह्माणीं ब्रह्मणः प्रियाम्।
सर्वलोकप्रणेत्रीं च प्रणमामि सदाम्बिकाम् ॥१॥
मंगलां शोभनां शुद्धां निष्कलां परमां कलाम्।
विश्वेश्वरीं विश्ववंद्यां चण्डिकां प्रणमाम्यहम् ॥२॥
सर्वदेवमयीं देवीं सर्वदेवनमस्कृताम्।
ब्रह्मेशविष्णुनमितां प्रणमामि सदा उमाम् ॥३॥
विन्ध्यस्थां विन्ध्यनिलयां दिव्यस्थाननिवासिनीम्।
योगिनीं योगविद्यां च चण्डिकां प्रणमाम्यहम् ॥४॥
ईशानमातरं देवीमीश्वरीमीश्वरप्रियाम्।
प्रणतोस्मि सदा दुर्गां संसारार्णवतारिणीम् ॥५॥
दुर्गां संकटहन्त्रीति दुर्गेति प्रथिता भुवि।
सर्वबुद्ध्यधिदेवीयमन्तर्यामिस्वरूपिणी ॥६॥
वैष्णवानां च शैवानामुपास्येयं च नित्यशः।
मूलप्रकृतिरूपा सा सृष्टिस्थित्यन्तकारिणी ॥७॥
सर्वे देवा हरिब्रह्मप्रमुखा मनवस्तथा।
मुनयो ज्ञाननिष्ठाश्च योगिनश्चाश्रमास्तथा ॥८॥
लक्ष्म्यादयस्तथा देव्यः सर्वा ध्यायन्ति तां शिवाम्।
इदं यः पठते स्तोत्रं शृणुयाद्वपि भक्तितः ॥९॥
तदेव जन्मसाफल्यं दुर्गास्मरणमस्ति चेत्।
स मुक्तः सर्वपापेभ्यो दुर्गालोके महीयते ॥१०॥

इति दुर्गापूजनमाहात्म्यम्।

अथ दुर्गापूजाप्रयोगः।

हिमालय उवाच।

देवदेवि महेशानि करुणासागरेम्बिके। ब्रूहि पूजाविधिं सम्य यथावदधुनानिजम् ॥१॥

हिमालय उवाच : हे देवदेवि, हे महेशानि, हे करुणासागरे, हे अम्बिके, इस समय तुम अपनी सम्यक् पूजाविधि हमें बताओ।

श्रीदेव्युवाच ।

वक्ष्ये पूजाविधिं राजन्नम्बिकाया यथा प्रियम् । अत्यन्तश्रद्धया सार्धं शृणु पर्वतपुङ्गव ॥ २ ॥

तत्रादौ चन्द्रतारादिबलान्विते सुदिने सुमुहूर्ते तीर्थपुण्यक्षेत्रनिर्जनस्थानादौ अनुष्ठानयोग्यभूमेः परिग्रहणं कृत्वा तत्र मार्जनदहनखननसंप्लावनादिभिः स्मृत्युक्तैः शोधनोपायैः शुद्धिं सम्पाद्य जपस्थानस्य चतुर्दिक्षु क्रोशं क्रोशद्वयं वा क्षेत्रं चतुरस्रमाहारादिविहारार्थं परिकल्प्य जपस्थानभूमौ कूर्मशोधनं कुर्यात् । ततः पुरश्चरणात् प्राक् तृतीयदिवसे क्षौरादिकं विधाय ततः प्रायश्चित्तांगगतविष्णुपूजाविष्णुतर्पणविष्णुश्राद्धं होमं चान्द्रायणादिव्रतं च कुर्यात् । व्रताशक्तो गोदानं द्रव्यदानं च कुर्यात् । यदि सर्वकर्मणामशक्तिस्ततः प्रायश्चित्तंगगतश्चगव्यप्राशनं कुर्यात् ।

श्रीदेवी बोली : अम्बिका को जैसा प्रिय है वैसी पूजाविधि मैं तुम्हें बताऊँगी । हे पर्वतराज, तुम अत्यन्त श्रद्धा के साथ सुनो । पहले चन्द्र नक्षत्र आदि का बल जिस दिन ठीक हो, उत्तम मुहूर्त हो, उस दिन तीर्थ, पुण्यक्षेत्र, निर्जन स्थान आदि में अनुष्ठान के योग्य भूमि प्राप्त करके मार्जन, दहन, खनन और संप्लवन आदि के द्वारा स्मृति में कहे गये शुद्धि के उपायों से शुद्धि करके जप के स्थान के चारों दिशाओं में चतुष्कोण क्षेत्र में आहार आदि प्राप्त करने की व्यवस्था करके जपस्थानभूमि पर कूर्मशोधन करना चाहिये । इसके पश्चात् पुरश्चरण के पहले तीन दिन मुण्डन, नखच्छेन आदि करके प्रायश्चित के अङ्गभूत विष्णु की पूजा, विष्णु का तर्पण, विष्णु का श्राद्ध, होम और चन्द्रायणादि का व्रत करे । व्रत करने में असमर्थ होने पर गोदान और द्रव्यदान करना चाहिये । अगर सब कर्मों में असमर्थ हो तो प्रायश्चित के अङ्गभूत पञ्चगव्य का प्राशन करना चाहिये ।

इसका मन्त्र तथा अन्य विधियाँ इस प्रकार हैं :

ॐ यत्त्वगस्थिगतं पापं देहे तिष्ठति मामके । प्राशनं पञ्चगव्यस्य दहत्वग्निरिवेंधनम् ॥ ३ ॥

इसके बाद :

मूलं पठित्वा प्रणवेन पञ्चगव्यं पिबेत् । तद्दिने उपवासं कृत्वा अशक्तश्चेत् पयः पानहविष्यान्ने एकभुक्तिव्रतं वा । पुरश्चरणात्पूर्वदिने स्वदेहशुद्ध्यर्थं पुरश्चरणाधिकारप्रात्यर्थं चायुतगायत्रीजपं कुर्यात् तद्यथा ।

मूलमन्त्र का पाठ करके प्रणव के पञ्चगव्य का पान करे । उस दिन उपवास करे । अशक्तावस्था में दुग्धपान या हविष्यान्न भोजन अथवा एक समय भोजन करे । पुरश्चरण से प्रथम दिन स्वदेह शुद्धि के लिए तथा पुरश्चरण की अधिकारप्राप्ति के लिए दश हजार गायत्री का इस प्रकार जप करे ।

देशकालौ संकीर्त्य ज्ञाताज्ञातपापक्षयार्थं करिष्यमाणामुकचण्डीपुरश्चरणाधिकारार्थममुकमन्त्रसिद्ध्यर्थं च गायत्र्ययुतजपमहं करिष्ये । इति संकल्प्य वैदिकगायत्रीम् । ॐ ह्रीं दुं दुर्गायै विद्महे अष्टाक्षरायै धीमहि । तन्नश्चण्डी प्रचोदयात् । इति दुर्गा गायत्रीं वायुतं जपेत् । ततः तस्यां रात्रौ देवतोपास्तिं शुभाशुभस्वप्नं सर्वदेवोपयोगिपद्धतिमार्गेण विचारयेत् । इति पूर्वकृत्यं ।

"देशकालौ संकीर्त्य ज्ञाताज्ञात पापक्षयार्थं करिष्यमाणामुकचण्डी पुरश्चरणाधिकारार्थममुकमन्त्रसिद्ध्यर्थ गायत्र्ययुत जपमहं करिष्ये ।" इससे संकल्प करके वैदिक गायत्री का अथवा "ॐ ह्रीं दुं दुर्गायै विद्महे अष्टाक्षरायै धीमहि । तन्नोश्चण्डी प्रचोदयात् ।" इस दुर्गा गायत्री का दश हजार जप करे । इसके बाद उस रात्रि को देवता की उपासना करके शुभाशुभ स्वप्न का सर्वदेवोपयोगी पद्धतिमार्ग से विचार करे। इति पूर्वकृत्य ।

पुरश्चरणदिवसे श्रीमान्साधकेन्द्रः प्रातःकालात्पूर्वं दण्डद्वयात्मके ब्राह्मे मुहूर्ते प्रातःकृत्यादि तीर्थस्नानान्तं सर्वदेवोपयोगिपद्धतिमार्गेण कृत्वा गृहे स्नानं कुर्यात् । तद्यथा ।

पुरश्चरण के दिन श्रीमान् साधक महोदय प्रातःकाल से दो दण्डपूर्व ब्राह्ममुहूर्त में उठ कर प्रातःकृत्यादि से तीर्थ स्नान तक समस्त कृत्य सर्वदेवोपयोगिपद्धति मार्ग से करके घर में इस प्रकार स्नान करे।

तत्कालिकोद्धृतोदकेन उष्णोदकेन वा स्नानं कृत्वा न तु पर्युषितशीतोदकेन ताम्रादिवृहत्पात्रे जलं गृहित्वा तीर्थान्यावाहयेत् । तत्र मन्त्रः ।

तत्काल कूएँ से निकाले गये जल से या गर्म जल से स्नान करके (बासी जल नहीं) ताम्रादि के बड़े बर्तन में जल लेकर तीर्थों का आवाहन करे। उसमें मन्त्र यह है :

ॐ गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति । नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेस्मिन्सन्निधिं कुरु ॥ १ ॥ इति तीर्थान्यावाह्य ॐ ऋतं च सत्यम् इति मन्त्रेणाभिमन्त्र्य वरुणमन्त्रेण स्नात्वा शुष्कं शुभं कर्पासोत्पन्नं रक्तवस्त्रं प्रयोगोक्तं वा परिधाय ॐ एहि सूर्य सहस्रांशो तेजोराशे जगत्पते अनुकम्पय मां देव गृहाणार्घ्यं नमोस्तु ते ।

ॐ गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति । नर्मदे सिन्धु कावेरि जले स्मिन्सन्निधिं कुरु ॥ १ ॥

इससे तीर्थों का आवाहन करके "ॐ ऋतं च सत्यम् च" इस मन्त्र से अभिमन्त्रित करके वरुणमन्त्र से स्नान करके सूखा सफेद कपास का लाल वस्त्र (प्रयोगोक्त) धारण करके "ॐ सूर्यसहस्रांशो तेजोराशे जगत्पते । अनुकम्पय मां गृहाणार्घ्य नमोस्तु ते ।" इससे सूर्य को अर्घ्य दे।

इति सूर्यायार्घ्यं दत्त्वा स्नानार्द्रवस्त्रं परिपीड्य आचम्यशैवश्चेत्त्रिपुण्ड्रं वैष्णवो द्वादशोर्ध्वपुण्ड्रं तिलकं कुर्यात् । ततो देव्या अगारे स्वमन्दिरे शुचौ देशे गोमयलिप्ते रङ्गमालाभिरलंकृत्य मण्डपं षोडशकदलीस्तम्भनिर्मितं यथोक्तसंख्याकं चतुर्दिक्षु चतुर्द्वारोपशोभितं यथोक्तानि स्ववितानध्वजपताकादिभिरलंकृतच्छत्रचामरमंडितानि एवं मण्डपद्वारदेशमागत्य सर्वदेवोपयोगीपद्धतिदुर्गांमखोत्सवप्रकरणे । चावलोक्य द्वारप्रतिष्ठां कृत्वा अशक्तश्चेत् साधारणं कुर्यात् । तद्यथा । मूलेन फट् इति द्वारं सम्प्रोक्ष्य । पूर्वे । ॐ गां गूं गणेशाय नमः १ । दक्षिणे ॐ क्षां ह्रीं बटुकाय नमः २ । पश्चिमे ॐ क्षां क्षें क्षेत्रपालाय नमः ३ । उत्तरे ॐ यां यूं योगिनीगणेभ्यो नमः ४ । देहल्याम् ॐ गं गंगायै नमः ५ । ऊर्ध्वे ॐ यं यमुनायै नमः ६ । मध्ये ॐ सं सरस्वत्यै नमः ७ । इति पूजयेत् ।

इससे सूर्य को अर्घ देकर स्नानार्द्र वस्त्र को गार का आचमन करके शैव हो तो त्रिपुण्ड्र वैष्णव हो तो द्वादश ऊर्ध्वपुण्ड्र तिलक लगाये। इसके बाद देवी के मन्दिर में या अपने घर में पवित्र स्थान पर गोबर से लिपे मण्डल को रङ्गमालाओं से अलंकृत करके सोलह केले के खम्भों सेनिर्मित चारों दिशाओं में चार द्वारों से सुशोभित तोरण तथा यथोक्त स्ववितान, ध्वजा, पताक आदि से अलंकृत छत्र और चामर से अलंकृत मण्डपद्वार पर आकर सर्वदेवोपयोगिपद्धतिमार्ग से दुर्गायज्ञ तथा उत्सव प्रकरण का अवलोकन करके द्वारप्रतिष्ठा करे । असमर्थ हो तो इस प्रकार साधारण करे :

मूलमन्त्र के साथ "फट् जोड़कर इससे द्वार का सम्प्रोक्षण करके पूर्व में "ॐ गां गूं गणेशाय नमः १ । दक्षिणे ॐ क्षां ह्रीं बटुकाय नमः २ । पश्चिमे ॐ क्षां क्षें क्षेत्रपालय नमः ३ । उत्तरे ॐ यां यूं योगिनीगणेभ्यो नमः ४ । देहल्यां ॐ गं गंगायै नमः ५ । ऊर्ध्वे ॐ यं यमुनायै नमः ६ । मध्ये ॐ सं सरस्वत्यै नमः ७ ।" इससे पूजा करे ।

इति द्वारपूजां कृत्वा गृहान्तः प्रविष्य "गृहीतस्यास्य मन्त्रस्य पुरश्चरणसिद्धये । मयेयं गृह्यते भूमिमन्त्रोयं सिद्ध्यतामिति ॥ १ ॥" इति मन्त्रेण भूमिं संगृह्य क्षेत्रकीलनं कुर्यात् । तद्यथा ।

इस प्रकार द्वारपूजा करके घर के अन्दर प्रवेश करके "गृहीतस्यास्य मन्त्रस्य पुरश्चरणसिद्धये । मयेयं गृह्यते भूमिर्मन्त्रोयं सिध्यतामिति ॥ १ ॥ इस मन्त्र से भूमि लेकर क्षेत्र का इस प्रकार कीलन करे ।

अश्वत्थोदुम्बरप्लक्षाणामन्यतमान्वितस्तिमात्रान् दश कीलान् मूलेन 'अस्त्राय फट्' इति मन्त्रेण अष्टोत्तरशतमभिमन्त्र्य ।

पीपल, गूलर तथा पलाश में से किसी एक की लकड़ी से दश कील बनाकर मूलमन्त्र में "अस्त्राय फट्" यह पद जोड़कर इस मन्त्र से एक सौ आठ बार अभिमन्त्रित करके :

ॐ ये चात्र विघ्नकर्तारो भुवि दिव्यन्तरिक्षगाः । विघ्नभूताश्च ये चान्ये मम मन्त्रस्य सिद्धिषु ॥ १ ॥ मयैतत्कीलितं क्षेत्रं परित्यज्य विदूरतः अपसर्पन्तु ते सर्वे निर्विघ्नं सिद्धिरस्तु मे ॥ २ ॥

इति मन्त्रद्वयेन दशदिक्षु दश कीलान् निखनेत् । ततस्तेषु मूलेन ! 'अस्त्राय फट्' इति मन्त्रेण प्रत्येकं कीलान् सम्पूज्य तत्रैव पूर्वादिक्रमेण इन्द्रादिलोकपालानावाह्य पञ्चोपचारैः सम्पूज्य ततः जपस्थानमध्ये गणेशं कूर्ममनन्तवसुधाक्षेत्रपालां सम्पूज्य दिक्पालेभ्यः क्षेत्रपालगणपतिभ्यश्च माषभक्तबलिं दत्त्वा तद्बाह्ये भूतबलिं दद्यात् । तत्र मन्त्रः ।

इन दोनों मन्त्रों से दश दिशाओं में दश कील गाड़े । इसके बाद उनमें मूलमन्त्र में "अस्त्राय फट्" जोड़ कर इस मन्त्र से प्रत्येक कील की पूजा करके वहीं पर पूर्वादिक्रम से इन्द्र आदि लोकपालों का आवाहन करके पञ्चोपचारों से पूजा करके जपस्थान के बीच में गणेश, कूर्म तथा अनन्त, वसुधा, क्षेत्रपालों की पूजा करके दिक्पालों तथा क्षेत्रपाल-गणपतियों के लिए उड़द तथा भात की बलि देकर उसके बाहर भूतबलि देवे । उनमें मन्त्र यह है :

ये रौद्रा रौद्रकर्माणो रौद्रस्थाननिवासिनः । मातरोप्युग्ररूपाश्च गणधिपतयश्च ये । भूचराः खेचराश्चैव तथा चैवान्तरिक्षगाः । ते सर्वे प्रीतमनसः प्रतिगृह्णन्त्विमे बलिम् ॥ २ ॥

इति मन्त्रद्वयेन दशदिक्षु वाह्ये माषभक्तबलिं दद्यात् । ततो वामकरांगुलिभिरर्घ्यजलेनोत्सृज्य पुष्पाञ्जलिमादाय ।

इन दोनों मन्त्रों से दश दिशाओं में बाहर उड़द तथा भात की बलि देवे । तदनन्तर बाएँ हाथ की अंगुलियों से अर्घ्यजल से जल और पुष्पांजलि लेकर :

ॐ भूतानि यानीह वसन्ति भूतले बलिं गृहीत्वा विधिवत्प्रयुक्तम् । सन्तोषमासाद्य व्रजन्तु सर्वे क्षमन्तु चान्यत्र नमोस्तु तेभ्यः ॥ १ ॥

इति पुष्पाञ्जलिं दत्त्वा प्रणमेत् । इति क्षेत्रकीलनं कृत्वा हस्तौ पादौ प्रक्षाल्याचमेत् ।

इससे पुष्पांजलि देकर प्रणाम करे । इस प्रकार क्षेत्रकीलन करके हाथ-पैर धोकर आचमन करे।

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोपि वा । यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं स ब्रह्माभ्यन्तरः शुचिः ।

इस मन्त्र से मण्डप के भीतर सम्प्रोक्षण करके आसनभूमि पर कूर्म का शोधन करे ।

यत्र जपकर्ता एक एव तदा कूर्ममुखे उपविश्य जपं तत्रैव दीपस्थानं च कुर्यात् । यत्र बहवो जापकास्तत्र कूर्ममुखोपरि दीपमेव स्थापयेत् ।

यहाँ यदि जप करने वाला एक ही हो तो कूर्म के मुख पर दीपक की स्थापना करके वहीं स्वयं भी बैठकर जप करे । जहाँ बहुत से जप करने वाले हैं, वहाँ कूर्म के मुख पर केवल दीप की ही स्थापना करे ।

एवं कूर्मशोधनं विधाय तत्रासनाधोजलादिना त्रिकोणं कृत्वा तत्र ॐ कूर्माय नमः ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं आधारशक्त्यै नमः ॥ २ ॥ ॐ पृथिव्यै नमः ॥ ३ ॥ इति गन्धाक्षतपुष्पैः सम्पूज्य तदुपरि कुशासनम् ॥ १ ॥ तदुपरि मृगाजिनम् ॥ २ ॥ तदुपरि कम्बलाद्यासनमास्तीर्य स्थापितानां त्रयाणांमासनानामुपरि क्रमेण । ॐ अनन्तासनया नमः ॥ १ ॥ ॐ बिमलासनाय नमः ॥ २ ॥

ॐ पद्मासनाय नमः ॥ ३ ॥ इति मन्त्रत्रयेण त्रीन्दर्भान्तिप्रत्येकं निदध्यात् । एवमासनं संस्थाप्य तत्र प्राङ्मुख उदङ्मुखो वा उपविश्य । ॐ पृथ्वीति मन्त्रस्य मेरुपृष्ठ ऋषिः । कूर्मो देवता । सुतलं छन्दः । आसने विनियोगः इति जलं क्षिप्त्वा ।

इस प्रकार कूर्म का शोधन करके वहाँ पर आसनशोधक जल आदि से त्रिकोण बनाकर उसमें "ॐ कूर्माय नमः ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं आधारशक्त्ये नमः ॥ २॥ ॐ पृथिव्यै नमः ॥ ३ ॥ इससे गन्ध, अक्षत, तथा पुष्पों से पूजा करके उसपर कुशासन, उसके ऊपर मृगचर्म, उसके ऊपर कम्बल आदि का आसन बिछाकर स्थापित तीनों आसनों के ऊपर क्रम से ॐ अनन्तासनाय नमः ॥ १ ॥ ॐ विमलासनाय नमः ॥ २ ॥ ॐ पद्मासनाय नमः ॥ ३ ॥

इन तीनों मन्त्रों से तीन दर्भ प्रत्येक में रखे । इस प्रकार आसन स्थापित करके वहाँ पूर्वाभिमुख या उत्तराभिमुख बैठकर "ॐ पृथिवीति मन्त्रस्य मेरुपृष्ठ ऋषिः । कूर्मो देवता । सुतलं छन्दः । आसने विनियोगः" इससे जल छिड़क कर :

ॐ पृथ्वि त्वया घृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता । त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम् । इति तत्त्वत्रयेणाचमय ।

इससे आसन का सम्प्रोक्षण करके शिखा बाँध कर "ऐं आत्मतत्वं शोधयामि नमः" ॥ १ ॥ ह्रीं विद्या तत्वं शोधयामि स्वाहा ॥ २ ॥ क्लीं शिवतत्वं शोधयामि स्वाहा ॥ ३ ॥ इन तीन तत्वों से आचमन करके ये मन्त्र पढ़े :

अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः प्रेतगुह्यकाः । ये चात्र निवसन्त्यन्या देवता भुवि संस्थिता ॥ १ ॥ अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भुवि संस्थिताः । ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया ॥ २ ॥ तदुपरान्त ।

मूलेन फट् । इति ताल त्रणेण तीक्ष्णदृष्ट्यावलोकनेन विघ्नानुत्सार्य दिग्बन्धनं कृत्वा मूलेनाचम्य प्राणानायम्य देशकालौ संकीर्त्य अमुकगोत्रश्चामुकदेवशर्म्माहं श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीप्रीत्यर्थममुकमन्त्रासिद्ध्यर्थ यथोक्तं नवचण्डीशतचण्डीसहस्त्रचण्ड्ययुतचण्डीलक्षचण्डीकोटिचण्डीविधानं वा श्रीदुर्गाप्रीत्यर्थमहं करिष्ये । अथवा सकलपरिवारस्यायुरारोग्यैश्वर्यसम्पद्विवृद्ध्यर्थ पुत्रपौत्रादिसमृद्ध्यर्थं सर्वेप्सितसिद्ध्यर्थ धनधान्यसमृद्ध्यर्थ सकलमनोरथप्राप्त्यर्थमाधिदैविकाधिभौतिकाध्यात्मिकत्रिविधतापोपशामनार्थं जन्मराशेः सकाशाद्दुष्टस्थानस्थिता ग्रहाः ये केचित् क्रूरग्रहास्तत्सर्वारिष्टोपशान्त्यर्थ सर्वकामनासम्पूर्णतासिद्ध्यर्थचस्वयमृत्विग्द्वारावामुकचण्डीविधानमहं करिष्ये । इति संकल्प्य ब्राह्मणान् वृणुयात् । तद्यथा ।

मूलमन्त्र से साथ "फट्" लगा कर उक्त मन्त्रों से तीन ताली बजा कर तीक्ष्ण दृष्टि से देखने से विघ्नों को हटाकर दिग्बन्धन करके मूलमन्त्र से आचमन तथा प्राणायाम करके :

"देशकालौ संकीर्त्य अमुकगोत्रश्चामुक देवशर्माहं श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वती प्रीत्यर्थममुकमन्त्रसिध्यर्थ यथोक्तं नवचण्डी शतचण्डी सहस्रचण्ड्ययुत चण्डी लक्षचण्डी कोटिचण्डी विधानं वा श्रीदुर्गा प्रीत्यर्थमहं करिष्ये ।"

अथवा "सकल परिवारस्यायुरारोग्यैश्वर्य सम्पद्विवृध्यर्थं पुत्रपौत्रादिसमृध्यर्थं सर्वेप्सित सिध्यर्थं धनधान्य समृध्यर्थं सकलमनोरथ प्राप्त्यथमाधिदैविकाधिभौतिकाध्यात्मिकत्रिविध तापोपशमनार्थ जन्मराशेः सकाशाद्दुष्ट स्थानस्थिताः ग्रहाः ये केचित् क्रूरग्रहास्तत्सर्वारिष्टोपशांत्यर्थं सर्वकामना सम्पूर्णता सिध्यर्थश्च स्वयमृत्विग्द्वारा वामुक चण्डीविधानमहं करिष्ये ।"

इससे संकल्प करके ब्राह्मणों[1] का इस प्रकार वरण करे ।

पावनाः सर्ववर्णानां ब्रह्मण ब्रह्मरूपिणः । अनुगृह्णन्तु मामद्य महाचण्ड्याख्यकर्मणि ।। १ ।। चण्डीकर्मरता नित्यं वेदशास्त्रार्थकोविदाः । श्रोत्रियाः सत्यवादाश्च वेदध्यानरताः पराः ।। २ ।। यद्वाक्यामृतसंसिक्ता ऋद्धिं यान्ति नरद्रुमाः । अङ्गीकुर्वन्तु मत्कर्म कल्पद्रुमसमाश्रिताः ।। ३ ।। यथोक्त नियमैर्युक्ता मन्त्रार्थस्थिरबुद्धयः । मत्कृपालोकनात्सर्वा वृद्धयो ऋद्धिमाप्नुयुः ।। ४ ।। महाचण्डी जपे पूज्याः सन्तु मे नियामान्विताः । अक्रोधनाहः शौचपराः सततं ब्रह्मवादिनः ।। ५ ।। चण्डीध्यानरता नित्यं द्रसन्नमनसः सदा । मालीकभाषिणः सन्तु मा सन्तु परवादकः ।। ६ ।। ममापि नियमा ह्येते भवन्तु भवतामपि ।। ७ ।।

इससे ब्राह्मणों की भी स्तुति करके पैर धोकर तिलक देकर :

देशकालौ संकीर्त्य अमुकचण्ड्याख्ये कर्मणितदंगभूतंसकलाकर्म कर्तुममुकगोत्रमुकसप्रवरान्वितममुर्कशमणिममुकशाखाध्यायिनंनवार्णसमन्वित सप्तशतीमालासहितैः एभिः पुष्पचन्दनवासोलंकरणादिभिराचार्यत्वेन त्वामहं वृणे । इससे आचार्य के दाहिने हाथ में यज्ञसूत्र बाँधकर : **देशकालौ संकीर्त्य अमुक गोत्रममुकप्रवरान्वित-ममुकशाखाध्यायिनममुकशर्माणमस्मिन्मकर्मणि दाता त्वामहं वृणे ।** इससे नवार्णोपासक ब्राह्मणों का वरण करे । इसके बाद :

देशकालौ संकीर्त्य प्रारिप्सित कर्मणोंगभूतमादौ निर्विघ्नतासिद्ध्यर्थं गणपतिपूजनं करिष्ये ।

इससे संकल्प करे गणपति पूजन करे । इसके बाद

ततः देशकालौ संकीर्त्य प्रारिप्सितकर्मणोंगभूतं मातृकाप्रतिष्ठा पूजनं करिष्ये ।

यह संकल्प करके इस प्रकार मातृकापूजन करे :

ॐ भूर्भुवः स्वः गौरि इहागच्छ इह तिष्ठ गन्धाद्यु पचारान्समर्पयामि नमः इति सर्वत्र १ । ॐ भू० पद्मे इ० २ । ॐ भू० शचि इ० ३ । ॐ भू० मेधे इ० ४ । ॐ भू० सावित्रि इ० ५ । ॐ भू० विजये इ० ६ । ॐ भू० जये इ० ७ । ॐ भू० देवसेने इ० ८ । ॐ भू० स्वधे इ० ९ । ॐ भू० स्वाहे इ० १० । ॐ भू० मात्रे लोक मात्रे इ० ११ । ॐ भू० धृते इ० १२ । ॐ भू० पुष्टे ई १३ । ॐ भू० तुष्टे इ० १४ । ॐ भू० आत्मकुलदेवते इ० १५ । ॐ भू० गणेश इ० १६ ।

इस प्रकार गौरी आदि षोडश मातृकाओं का पूजन करे । इसके बाद

ॐ भू० ब्राह्मि इ० १ । ॐ भू० माहेश्वरि इ० २ । ॐ भू० कौमारि इ० ३ । ॐ भू० वैष्णवि इ० ४ । ॐ भू० वाराहि इ० ५ । ॐ भू० इन्द्राणि इ० ६ । ॐ भू० चामुण्डे इ० ७ । ॐ भू० चण्डिके इ० ८ ।

इस प्रकार ब्राह्मी आदि आठ स्थलमातृकाओं का पूजन करे । इसके बाद

ततः ॐ भू० कीर्ते इ० १ । ॐ भू० लक्ष्मि इ० २ । ॐ भू० धृते इ० ३ । ॐ भू० मेधे इ० ४ । ॐ भू० पुष्टे इ० ५ । ॐ भू० श्रद्धे इ० ६ । ॐ भू० क्रिये इ० ७ । ॐ भू० मते इ० ८ । ॐ भू० बुद्धे इ० ९ । ॐ भू० लज्जे इ० १० । ॐ भू० श्रीः इ० ११ । ॐ भू० शान्ते इ० १२ । ॐ भू० कान्ते इ० १३ । ॐ भू० तुष्टे इ० १४ । ततः पुनः ।

---

१. ब्राह्मणस्वरूपम्-सदाचाराः कुलीनाश्च ह्रीमंतः सत्यवादिनः ।। चडिकापाठसंपूर्णा दयायंतो जिंतेन्द्रियाः । ईदृग्लक्षसंपूर्णा दंभमोहविवर्जिताः ।। ब्रह्मचारिंणौं समाहूय सोपोध्यायौ विशेषतः ।। विद्यागमगसमायुक्तान्मंत्रविद्याविशारदान् ।।

इस प्रकार कीर्ति आदि चौदह मातृकाओं का पूजन करे इसके बाद पुनः

ॐ भू० कीर्त्ते इ० १ । ॐ भू० लक्ष्मि इ० २ । ॐ भू० धृते इ० ३ । ॐ भू० मेधे इ० ४ । ॐ भू० बुद्धे इ० ५ । ॐ भू० प्रज्ञे इ० ६ । ॐ भू० सरस्वति इ० ७ ।

इससे पूजा करके प्रधान मातृकाओं की इस प्रकार पूजा करे ।

ॐ भू० ऐं महाकालि विच्चे इ० १ । ॐ भू० ह्रीं महालक्ष्मि विच्चे इ० २ । ॐ भू० क्लीं महासरस्वति विच्चे इ० ३ ।

इस प्रकार पूजा करके प्रणाम करे ।

हस्तैः पद्मं रथाङ्गं गुणमथ हरिणं पुस्तकं वर्णमालां टंकं शूलं कपालं दरममृतलसद्धेमकुम्भं वहन्तीम् । मुक्ताविद्युत्पयोजस्फटिकनवजपाबन्धुरैः पञ्चवक्त्रैस्त्र्यक्षैर्वक्षोज नम्रां सकलशशिनिभां मातृकां तां नमामि ॥ १ ॥

इससे प्रणाम करके ''अस्य श्रीमातृकापूजनविधेर्न्यूनातिरिक्तं ब्राह्मणानां प्रसादात्सर्व सम्पूर्णमस्तु ।'' यह कहे ।

इस प्रकार मातृकापूजन करके प्राणायाम के योग से भूतशुद्धि, प्राणप्रतिष्ठा अन्तर्मातृका, बहिर्मातृका, सृष्टि, स्थिति, संहार मातृका न्यास करके देवीकला मातृका न्यास करे ।

विनियोग :

अस्य देवीकलामातृकान्यासस्य प्रजापतिर्ऋषिर्गायत्रीछंदः श्रीमातृकाशारददेवता हलो बीजानि स्वराः शक्तयः अमुकमन्त्रांगत्वेन मातृकान्यासे विनियोगः ।

षडङ्गन्यास : ॐ प्रजापतिर्ऋषये नमः शिरसि १ । गायत्रीछन्दसे नमो मुखे २ । शारदादेवतायै नमो हृदि ३ । हल्बीजेभ्यो नमो गुह्ये ४ । स्वरशक्त्ये नमः पादयोः ५ । विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ६ ।

कराङ्गन्यास : ॐ अं ॐ आं हृदयाय नमः ॥ १ ॥ ॐ इं ॐ ईं शिरसे स्वाहा २ । ॐ उं ॐ ऊं शिखायै वषट् ३ । ॐ एं ॐ ऐं कवचाय हुम् ४ । ॐ ओं ॐ औं नेत्रत्रयाय वौषट् ५ । ॐ अं ॐ अः अस्त्राय फट् ६ ।

इस प्रकार कराङ्ग न्यास करके ध्यान करे ।

अथ ध्यानम् :

शङ्खचक्राब्जपरशुकपालानक्षमालिकाः । पुस्तकातनुकुम्भौ च त्रिशूलं दधती करैः ॥ १ ॥ सितपीतसितश्वेतरक्त वर्णैस्त्रिलोचनैः । पञ्चास्यसंयुतां चन्द्रसकान्ति शारदां भजे ॥ २ ॥

इससे ध्यान करके इस प्रकार मातृका न्यास करे :

मातृकान्यास : ॐ अं निवृत्त्यै नमः ललाटे १ । ॐ आं प्रतिष्ठायै नमः मुखवृत्ते २ । ॐ इं विद्यायै नमः दक्षनेत्रे ३ । ॐ ईं शान्त्यै नमः वामनेत्रे ४ । ॐ उं इन्धकायै नमः दक्षकर्णे ५ । ॐ ऊं दीपिकायै नमः वामकर्णे ६ । ॐ ऋं रेचिकायै नमः दक्षनासापुटे ७ । ॐ ॠं मोचिकायै नमः वामनासापुटे ८ । ॐ लृं परायै नमः दक्षकपोले ९ । ॐ लॄं सूक्ष्मायै नमः वामकपोले १० । ॐ एं सूक्ष्मामृतायै नमः ऊर्ध्वोष्ठे ११ । ॐ ऐं ज्ञानमृतायै नमः अधरोष्ठे १२ । ॐ ओं आप्यायिन्यै नमः ऊर्ध्वदन्तपंक्तौ १३ । ॐ औं व्यापिन्यै नमः अधोदन्तपंक्तौ १४ । ॐ अं व्योमरूपायै नमः जिह्वायाम् । ॐ अः अनन्तायै नमः कण्ठे १६ । ॐ कं सृष्ट्यै नमः दक्षबाहुमूले १७ । ॐ खं ऋद्ध्यै नमः दक्षकूपरि १८ । ॐ गं स्मृत्यै नमः दक्षमणिबन्धे १९ । ॐ घं मेधायै नमः दक्षहस्तांगुलिमूले २० । ॐ ङं कान्त्यै नमः दक्षहस्तांगुल्यग्रे २१ । ॐ चं लक्ष्म्यै नमः वामबाहुमूले २२ । ॐ छं द्यु त्यै नमः वामकूपरि २३ । ॐ जं स्थिरायै नमः वाममणिबन्धे २४ । ॐ झं स्थित्यै नमः वामहस्तांगुलिमूले २५ । ॐ ञं सिद्ध्यै नमः वामहस्तांगुल्यग्रे २६ । ॐ टं जरायै नमः दक्षपादमूले २७ । ॐ ठं पालिन्ये नमः दक्षजानुनि २८ । ॐ डं क्षांत्ये नमः दक्षगुल्फे २९ । ॐ ढं ईश्वर्यै नमः दक्षपादांगुलिमूले ३० । ॐ णं रत्यै नमः दक्षपादांगुल्यग्रे ३१ । ॐ तं कामिकायै नमः वामपादमूले ३२ । ॐ थं वरदायै नमः वामजानुनि ३३ । ॐ दं आह्लादिन्यै नमः वामगुल्फे ३४ । ॐ धं प्रीत्यै नमः वामपादांगुलिमूले ३५ । ॐ नं दीर्घायै नमः वामपादांगुल्यग्रे ३६ । ॐ पं तीक्ष्णायै नमः

दक्षपार्श्वे ३७ । ॐ फं रौद्र्यै नमः वामपार्श्वे ३८ । ॐ बं भयायै नमः पृष्ठे ३९ । ॐ भं निद्रायै नमः नाभौ ४० । ॐ मं तन्द्रिकायै नमः जठरे ४१ । ॐ यं क्षुधायै नमः हृदि ४२ । ॐ रं क्रोधिन्यै नमः दक्षांसे ४३ । ॐ लं क्रियायै नमः ककुदि ४४ । ॐ वं उत्कार्य्यै नमः वामांसे ४५ । ॐ शं मृत्युकायै नमः हृदयादिदक्षहस्तान्तम् ४६ । ॐ षं पीतायै नमः हृदयादिवामहस्तान्तम् ४७ । ॐ सं श्वेतायै नमः हृदयादि दक्षपादान्तम् ४८ । ॐ हं अरूणायै नमः हृदयादिवामपादान्तम् ४९ । ॐ क्षं असितायै नमः मूर्द्धादिपादान्तम् ५० । ॐ त्रं अनन्तायै नमः पादादिमूर्द्धान्तम् ५१ ।

इस प्रकार देवीकलामातृका का न्यास करके प्रयोगोक्त न्यास आदि करे ।

इस प्रकार न्यास करके देवी का ध्यान करके "ॐ मं मंडूकादि परतत्वान्त पीठदेवताभ्यो नमः" इससे सर्वाङ्ग में व्यापक करके इस प्रकार पीठपूजा करे :

पीठादि पर रचित सर्वतोभद्रमण्डल में मण्डल के मध्य भाग में ।

पीठपूजा : ॐ ॐकारपीठाय नमः १ । ॐ पं पूर्णपीठाय नमः २ । ॐ कं कामपीठाय नमः ३ । प्राच्यां दिशि । ॐ उं उड्यानपीठाय नमः ४ । आग्नेय्याम् । ॐ मां मातृपीठाय नमः ५ । दक्षिणे । ॐ जं जालन्धरपीठाय नमः ६ । नैर्ऋत्ये । ॐ कं कोल्लापुरोपपीठाय नमः ७ । पश्चिमे ॐ पूं पूर्णगिरिपीठाय नमः ८ ॥ वायव्याम् । ॐ सौं सौहारोपपीठाय नमः ९ । उत्तरे । ॐ कं कोल्लागिरिपीठाय नमः १० । ऐशान्याम् । ॐ कं कामरूपपीठाय नमः ११ ।

इस प्रकार पीठ पूजा करके :

दक्षिणे । ॐ गुरुवे नमः १ । ॐ परमगुरुवे नमः २ । ॐ परमेष्ठिगुरुवे नमः ३ । ॐ गुरुपंक्तये नमः ४ । ॐ मातापितृभ्यां नमः ५ । ॐ उपमन्युनारदसनकव्यासादिभ्यो नमः६ ।

वामे । ॐ गं गणपतये नमः १ । ॐ दुं दुर्गायै नमः २ । ॐ सं सरस्वत्यै नमः ३ । ॐ क्षं क्षेत्रपालाय नमः ४ ।

इससे नमस्कार करके पीठदेवताओं की इस प्रकार स्थापना करे ।

पीठमध्ये । ॐ मं मण्डूकाय नमः १ । ॐ आं आधारशक्त्यै नमः २ । ॐ मूं मूलप्रकृत्ये नमः ३ । ॐ कं कालाग्निरुद्राय नमः ४ । तदुपरि । ॐ अं आदिकूर्माय नमः ५ । ॐ अं अनन्ताय नमः ६ । ॐ आं आदिवराहाय नमः ७ । ॐ पृं पृथिवी नमः ८ । तदुपरि । ॐ अं अमृतार्णवाय नमः ९ । ॐ रं रत्नदीपाय नमः १० । ॐ हं हेमगिरये नमः ११ । ॐ नं नन्दनोद्यानाय नमः १२ । ॐ कं कल्पवृक्षाय नमः १३ । ॐ मं मणिभूतलाय नमः १४ । ॐ दं दिव्यमण्डपाय नमः १५ । ॐ सं स्वर्णवेदिकायै नमः १६ । ॐ रं रत्नसिंहासनाय नमः १७ । ॐ धं धर्माय नमः १८ । ॐ ज्ञां ज्ञानाय नमः १९ । ॐ वैं वैरोग्याय नमः २० । ॐ ऐं ऐश्वर्याय नमः २१ । इति सम्पूज्य पूर्वे ॐ अं अधर्माय नमः २२ । दक्षिणे ॐ अं अज्ञानाय नमः २३ । पश्चिमे ॐ अं अवैराग्याय नमः २४ । उत्तरे ॐ अं अनैश्वर्याय नमः २५ । पुनर्मध्ये । ॐ सं सत्त्वाय नमः २६ । ॐ प्रै प्रबोधात्मने नमः २७ । ॐ रं रजसे नमः २८ । ॐ प्रं प्रकृत्यात्मने नमः २९ । ॐ तं तमसे नमः ३० । ॐ मं मोहात्मने नमः ३१ । ॐ सों सोममण्डलाय नमः ३२ । ॐ सूं सूर्यमण्डलाय नमः ३३ । ॐ वं वह्निमण्डलाय नमः ३४ । ॐ मं मायातत्त्वाय नमः ३५ । ॐ विं विद्यातत्त्वाय नमः ३६ । ॐ शं शिवतत्त्वाय नमः ३७ । ॐ ब्रं ब्रह्मणे नमः ३८ । ॐ मं महेश्वराय नमः ३९ । ॐ आं आत्मने नमः ४० । ॐ अं अन्तरात्मने नमः ४१ । ॐ पं परमात्मने नमः ४२ । ॐ जं जीवात्मने नमः ४३ । ॐ ज्ञं ज्ञानात्मने नमः ४४ । ॐ कं कन्दाय नमः ४५ । ॐ नं नीलाय नमः ४६ । ॐ पं पद्माय नमः ४७ । ॐ मं महापद्माय नमः ४८ । ॐ रं रत्नेभ्यो नमः ४९ । ॐ कं केसरेभ्यो नमः ५० । ॐ कं कर्णिकायै नमः ५१ ।

इससे पीठ-देवताओं की पूजा करके नव पीठ शक्तियों की इस प्रकार पूजा करे ।

पूर्वादि आठ दिशाओं में : ॐ नन्दायै नमः १ । ॐ भगवत्यै नमः २ । ॐ रक्तदन्तिकायै नमः ३ । ॐ शाकम्भर्य्यै नमः ४ । ॐ दुर्गायै नमः ५ । ॐ भीमायै नमः ६ । ॐ कालिकायै नमः ७ । ॐ भ्रामर्य्यै नमः ८ ।

मध्ये । ॐ शिवदूत्यै नमः ९ ।

इससे पीठ-शक्तियों की पूजा करके प्रयोगोक्त पीठशक्ति की पूजा करे ।

इस प्रकार पीठपूजा करके पात्र संग्रह करे ।

अथ पात्रासादन : तत्रादौ कलशस्थापनप्रयोगः । देव्या अग्रे त्रिकोण मण्डलं कृत्वा जलेन प्रोक्ष्य त्रिकोणान्तर्मायां (ह्रीं) विलिख्य ॐ ह्रीं आधारशक्तये नमः इति सम्पूज्य शालिपुञ्जोपरि स्वर्णादिरचित्तं कुम्भं नवतन्तुना वेष्टितं चन्दनादिचर्चितं सुधूपितं सहिरण्यं वज्रमुक्ताफलपद्मरागनीलमरकतैः पञ्चरत्नैः समायुक्तं१ संस्थाप्य मूलेन नमः इति जलेनापूर्य तत्र कुंकुमागुरुकर्पूरचन्दनपंकं सुकुसुमानि च निक्षिप्य तस्य मुखे आम्रदलानि निधाय नारिकेलफलाढ्यं सतण्डुलं निधाय ॐ भूर्भुवः स्वः वरुण इहागच्छ इह तिष्ठ इति वरुणमावाह्य तन्मध्ये स्वेष्टदेवतां ध्यात्वा गन्धाक्षतपुष्पैः सम्पूज्य प्रणमेत् । इति कलशस्थापनम् ।

इसमें पहले कलश स्थापन का प्रयोग करना चाहिये । देवी के आगे त्रिकोण मंडल बनाकर जल से प्रोक्षण करके त्रिकोण के भीतर माया (ह्रीं) लिखकर "ॐ ह्रीं आधार शक्तये नमः" इससे पूजा करके शालि पुञ्ज पर स्वर्ण आदि से रचित कुम्भ को नये सूत्र से वेष्टित करके चन्दनादि से चर्चित और सुधूपित, स्वर्ण, हीरा, मोती, पद्मराग, नीलमणि, मरकत मणि से युक्त कुम्भ की स्थापना करके मूल मन्त्र में "नमः" जोड़कर उससे जल भरकर उसमें अगर, कपूर, चन्दन का मिश्रण तथा उत्तम फूल डालकर उसके मुख पर आम्र के पल्लव पर चावल सहित नारियल रखकर "ॐ भूर्भुवः स्व वरुण इहागच्छ इह तिष्ठ" इससे वरुण का आवाहन करके उसके मध्य में अपने इष्ट देवता का ध्यान करके गन्ध, अक्षत तथा पुष्पों से प्रणाम करे ।

इति कलशस्थापन

अथ शंखस्थापन : देवीवामतः त्रिकोणमण्डलं कृत्वा जलेन प्रोक्ष्य त्रिकोणान्तर्मायां (ह्रीं) विलिख्य ॐ आधार ह्रीं शक्त्यै नमः इति सम्पूज्य मूलेन फट् इति त्रिपदमाधारं प्रक्षाल्य त्रिकोणमध्ये संस्थाप्य तत्र देशे ॐ मं वह्निमण्डलाय दशकलात्मने शङ्खपात्रासनाय नमः इति आधारं सम्पूज्य आधारे पूर्वादिषु दशाग्निकलाः पूजयेत् ।

देवी के वाम भाग में त्रिकोण मंडल करके जल से प्रोक्षण करके त्रिकोण केभीतर माया (ह्रीं) आधार शक्त्यै नमः" इससे पूजा करके मूल मंत्र में "फट्" जोड़कर उसमें (तिपाई) प्रक्षालित करके त्रिकोण के बीच में रख कर उस स्थान पर : "ॐ मं वह्निमण्डलाय दशकलात्मने शंख पात्रासनाय नमः" इससे आधार की पूजा करके आधार में पूर्व आदि दिशाओं में अग्नि को दश कलाओं की इस प्रकार पूजा करे ।

ॐ यं धूम्रार्च्चिषे नमः १ । ॐ रं ऊष्मायै नमः २ । ॐ लं ज्वलिन्यै नमः ३ । ॐ वं ज्वालिन्यै नमः ४ । ॐ शं विस्फुलिंगिन्यै नमः ५ । ॐ षं सुश्रियै नमः ६ । ॐ सं स्वरूपायै नमः ७ । ॐ हं कपिलायै नमः ८ । ॐ लं हव्यवाहायै नमः ९ । ॐ क्षं कव्यवाहायै नमः १० ।

इति पूजयेत् । ततः ॐ क्लीं महाजलचराय हुं फट् स्वाहा पाञ्चजन्यास नमः इति मन्त्रेण प्रक्षालितं शङ्खमाधारोपरि संस्थाप्य तत्र देशे : ॐ अं सूर्यमण्डलाय द्वादशकलात्मने श्रीदुर्गाशङ्खपात्राय नमः इति शङ्खं सम्पूज्य पात्रे स्वाग्रादिप्रादक्षिण्येन द्वादशसूर्यकलाः पूजयेत् ।

---

१ अथ कामनापरत्वेन कलशमध्ये निक्षेपपदार्थाः "धनकामो न्यसेत्स्वर्णं धान्यकामस्तु मौक्तिकम् । श्रीकामः कमलं न्यस्य कामार्थी दमनं न्यसेत् । मोक्षकामो न्यसेद्रत्नं जयकामोऽपराजिताम् । उच्चाटनार्थं हिंगूलं वश्यार्थं शिखिमूलिकाम् । मारणाय मरीचं तु केतकीं मोहनाय च । आकर्षणार्थं धत्तूरं प्रक्षिपेत्कलशोपरि" ।

इससे पूजा करे। इसके बाद "ॐ क्लीं महाजलचराय हुं फट् स्वाहा पाञ्चजन्यास नमः" इस मन्त्र से धोया हुआ शंख उस आधार पर रखकर उस देश में "ॐ मं सूर्यमण्डलाय द्वादशकलात्मने श्रीदुर्गा शंख पात्राय नमः" इससे शंख की पूजा करके पात्र में अपने आगे दाहिने से बाहर सूर्य कलाओं की पूजा इस प्रकार करे :

ॐ कं भं तपिन्यै नमः १। ॐ खं बं तापिन्यै नमः २। ॐ गं फं धूम्रायै नमः ३। ॐघं पं मरीच्यै नमः ४। ॐ ङं नं ज्वालिन्यै नमः ५। ॐ चं धं रुच्यै नमः ६। ॐ छं दं सुषुम्णायै नमः ७। ॐ जं खं भोगदायै नमः ८। ॐ झं तं विश्वायै नमः ९। ॐ ञं णं बोधिन्यै नमः १०। ॐ टं ढं धारिण्यै नमः ११। ॐ ठं डं क्षमायै नमः १२।

इससे पूजा करने के बाद :

ॐ क्षं ळं हं सं षं शं वं लं रं यं मं भं बं फं पं नं धं दं थं तं णं ढं डं ठं टं ञं झं जं छं चं ङं घं गं खं कं अः औं ओं ऐं एं ॡं ऌं ॠं ऋं ऊं उं इं ईं आं अं इत्येकाधिकपञ्चाशत् ५१।

विलोम मातृकाओं का उच्चारण करके मूल मन्त्र में नमः जोड़कर इस मन्त्र से शंख में जल भर कर उस स्थान पर "सोममण्डलाय षोडशकलात्मने श्री दुर्गा शंखपात्रामृताय नमः" इससे गन्ध आदि से पूजा करके जल में सोलह चन्द्र कलाओं की इस प्रकार पूजा करे।

ॐ अं अमृतायै नमः १। ॐ आं मानदायै नमः २। ॐ इं पूषिण्यै नमः ३। ॐ ईं तुष्ट्यै नमः ४। ॐ उं पुष्ट्यै नमः ५। ॐ ऊं वृत्त्यै नमः ६। ॐ ॠं धृत्यै नमः ७। ॐ ॠं शशिन्यै नमः ८। ॐ ॡं चन्द्रिकायै नमः ९। ॐ ॡ कांत्यै नमः १०। ॐ एं ज्योत्सनायै नमः ११। ॐ ऐं श्रियै नमः १२। ॐ ओं प्रीत्यै नमः १३। ॐ औं अङ्गदायै नमः १४। ॐ अं पूर्णायै नमः १५। ॐ अः पूर्णामृतायै नमः १६।

इससे पूजा करके इस प्रकार अभिमन्त्रित करे।

"ॐ शङ्खादौ चन्द्रदैवत्यं कुक्षौ वरुणदेवता। पृष्ठे प्रजापतिश्चैवमग्रे गङ्गा सरस्वती ॥१॥ त्रैलोक्ये यानि तीर्थानि वासुदेवस्य चाज्ञया। शङ्खे तिष्ठन्ति विप्रेन्द्र तस्माच्छङ्खं प्रपूजयेत्" ॥२॥

इससे अभिमन्त्रिन करके इस प्रकार प्रार्थना करे।

"ॐ त्वं पुरा सागराज्जातो विष्णुना विधृतः करे। निर्मितः सर्वदेवैश्चपाञ्चजन्य नमोस्तु ते॥१॥"

इससे प्रार्थना करके :

ॐ पाञ्चजन्यायविद्महे पावमानाय धीमहि। तन्नः शङ्खः प्रचोदयात्।

इस शंख-गायत्री का आठ बार जप कर शंख मुद्रा दिखलावे।

इति शंख स्थापन।

ततो देव्यग्रे चार्घ्यं देवीदक्षिणतः प्रोक्षणीपात्रं च एव मेवविधिना संस्थाप्य त्रिरर्घ्यस्थापननान्तरं अर्घाद्वमतः श्रीपात्रं १ गुरुपात्रं २ देवीपात्रं ३ शक्तिपात्रं ४ योगिनीपात्रं ५ भोगपात्रं ६ वीरपात्राम्· ७ आत्मपात्रं ८ बलिपात्रं ९ एतानि नव पात्राणि संस्थाप्य दक्षिणे पाद्यार्धाचमनीयमधुपर्कानिति चत्वारि पात्राणि संस्थापयेत्। अशक्तश्चेद्‌गुरुवीरात्मबलिभोगसंज्ञकानिति पञ्चपात्राणि पाद्याद्युपचारार्थमेकं वा पात्रं स्थापयेत्।

इसके बाद देवी के आगे अर्घ्य (गन्ध, अक्षत, फूल, यव, पांच कुश,बेल, सरसों तथा दूब ये आठ द्रव्य अर्घ्य जल में डालना चाहिये। पाद्य पात्र के जल में दूब, विष्णुक्रांता, सांवा तथा पद्म डालना चाहिये। आचमनी-पात्र में जायफल, कंकोल, लवंग डाले। मधुपर्क में दूध, दही, घी तथा खांड़ डाले।) देवी के दक्षिण तरफ प्रोक्षणीपात्र, इसी विधि से रखकर तीन अर्घ स्थापन के बाद अर्घा से बाएँ श्रीपात्र

१, गुरुपात्र २, देवीपात्र ३, शक्तिपात्र ४, योगिनी पात्र ५, योगपात्र ६, वीरपात्र ७, आत्मपात्र ८, बलिपात्र ९, इन नव पात्रों को स्थापित करके दक्षिण ओर पद्य, अर्घ, आचमनीय तथा मधुपर्क ये चार पात्र रक्खें । असमर्थ हो तो गुरु, वीर, आत्मा तथा बलिभोग संज्ञक पांच पात्र, या पाद्य आदि उपचार के लिए एक पात्र रक्खें ।

अथ घण्टा स्थापन :

देवीदक्षिणतः "जगद्ध्वनिमन्त्रमातः स्वाहा" इति मन्त्रेण घण्टां च सम्पूज्य गरुडमुद्रां प्रदर्शयेत् । ततः गन्धाक्षतपुष्पादींश्च पूजोपकरणार्थं स्वदक्षिणपार्श्वे निधाय । "ॐ दुर्गार्चनकाले तु यानि यानीह साम्प्रतम् । वस्तूनि सौरभाढ्यानि पवित्राणि भवन्तु वै ।। १ ।।" मूलेन नमः इति जलेन प्रोक्ष्य जलार्थं वृहत्पात्रं व्यजनं छत्रादर्शचामराणि च स्ववामे संस्थाप्य अखण्डदीपस्थापनं कुर्यात् । देवी दक्षिण भागे घृतदीपं वामे तैलदीपं स्थापयेत् । तद्यथा :

देवी के दाहिने "जगद्ध्वनि मन्त्रमातः स्वाहा" इस मन्त्र से घण्टा की पूजा करके गरुड मुद्रा दिखाये । इसके बाद गन्ध, अक्षत, पुष्प आदि पूजोपकरणार्थ अपने दाहिने रखकर "ॐ दुर्गार्चन काले तु यानियानीहसाम्प्रतम् । वस्तूनि सौरभाढ्यानि पावित्राणि भवन्तु वै ।। १ ।।" मूलमन्त्र में "नमः" जोड़कर इससे जल से प्रोक्षण करके जल के लिए बड़ा बर्तन, पंखा, छत्र, दर्पण, चामर अपने बाएँ स्थापित करके अखण्डदीप स्थापित करे । देवी के दाहिने घी और बाएँ तेल का दीपक इस प्रकार रक्खें ।

दक्षिणे दीपपात्रं गोघृतेन तैलेन वाममापूर्य मन्त्रवर्णतन्तुभिः वर्ति निक्षिप्य प्रणवेन प्रज्वाल्य सुदर्शनमन्त्रेण घृतदीपं पूजयेत् ।

"दाहिने घृत से और बाएँ तेल से पूर्ण दीपपात्र रखकर मन्त्र में जितने अक्षर हों उतने तन्तु की बत्ती उनमें डालकर प्रणव से उसे जलाकर सुदर्शन मन्त्र से घी के दीपक की पूजा करे । उसमें मन्त्र यह है : "ॐ रां रीं रूं रैं रौं रः ॐ सहस्रारं हुं फट् स्वाहा ।। १ ।।" तेल के दीपक की पूजा पाशुपतास्त्र मन्त्र से करे । उसमें मन्त्र यह है : "ॐ क्लीं पशु हुं फट् स्वाहा" इस मन्त्र से गन्ध पुष्पों के द्वारा पूजा करके दोनों हाथों से दीपशिखा का स्पर्श करके मन्त्र पढ़े । उसमें मन्त्र यह है : "ॐ घोराय घोरतमाय महारौद्राय वीरभद्राय ज्वालामालिनी सर्वदुष्टोपसंहन्त्रे हुं फट् स्वाहा ।। १ ।।" इसे पढ़कर बाद में उसके तेज से अपने को समर्पित करके वाणी और शरीर का शोधन करे।

ॐ हुं फट् स्वाहा । इति मुखे ॐ रक्षरक्ष हुं फट् स्वाहेति हृदि हस्तं दत्त्वात्मरक्षां विधाय । 'ॐ' इति मन्त्रेण चन्दनपुष्पाणि कराभ्यां मर्दयित्वा पुष्पाक्षतानादाय "ते सर्वे विलयं यान्तु ये मां हिंसन्ति हिंसकाः । मृत्युरोगभयक्लेशाः पतन्तु रिपुमस्तके ।। १ ।।" इति मन्त्रेण ऐशान्यां दिशि दूरतः पुष्पं क्षिप्त्वा हस्तौ प्रक्षाल्याचमेत् ।

"ॐ हुं फट् स्वाहा" इससे मुख पर और "ॐ रक्ष रक्ष हुं फट् स्वाहा इससे हृदय पर हाथ देकर आत्मारक्षा करके "ॐ" इस मन्त्र से चन्दन और फूल हाथों से मलकर पुष्प और अक्षत लेकर : "ते सर्वे विलयं यान्तु ये मां हिंसन्ति हिंसकाः । मृत्युरोगभयक्लेशाः पतन्तु रिपुमस्तके ।। १ ।।" इस मन्त्र से ऐशानी दिशा में दूर तक पुष्प को फेककर हाथों को धो ले ।

अथ पूजाप्रयोग :

स्वर्णादिनिर्मितं यन्त्रं मूर्ति[1] च ताम्रपात्रे निधाय घृतेनाभ्यज्य तदुपरि दुग्धधारां जलधारां च दत्त्वा स्वच्छवस्त्रेण सम्प्रोक्ष्य ॐ वज्रनखदंष्ट्रायुधाय महासिंहासनाय नमः । इति मन्त्रेण पुष्पाद्यासनं

---

१. प्रतिमालक्षणं यथा : आमाषात्पलपर्यन्ता चण्डिका प्रतिमा बुधैः । कर्तव्या च तदर्धा तु यथाशक्त्या नराधिप ।।

दत्त्वा मूर्ति कलशोपरि संस्थाप्य यन्त्रं मण्डलोपरि च संस्थाप्य प्राणप्रतिष्ठां कुर्यात् । तद्यथा । देशकालौ संकीर्त्य मम श्रीदुर्गानूतनयन्त्रे मूर्तौ च प्राणप्रतिष्ठां करिष्ये इति सङ्कल्प्य प्रतिष्ठां कुर्यात् ।

स्वर्णादि से निर्मित मूर्ति और यन्त्र को ताम्र पात्र में रखकर घी से अभ्यङ्ग करके उसके ऊपर दुग्धधारा तथा जलधारा देकर स्वच्छ वस्त्र से सम्प्रोक्षण करके "ॐ वज्रनखदंष्ट्रायुधाय महसिंहासनाय नमः" इस मन्त्र से पुष्पाद्यासन देकर मूर्ति को कलश पर स्थापित करके यन्त्र मण्डल पर रखकर प्राणप्रतिष्ठा करे। तद्यथा : "देशकालौ संकीर्त्य मम श्री दुर्गा नूतनयन्त्रे मूर्तौ च प्राणप्रतिष्ठां करिष्ये ।" इससे संकल्प करके प्राण-प्रतिष्ठा करे ।

विनियोग : ॐ अस्य श्रीप्राणप्रतिष्ठामन्त्रस्य ब्रह्मविष्णुमहेश्वरा ऋषयः ऋग्यजुःसामानि छन्दांसि क्रियामयवपुःप्राणाख्या देवता आं बीजं ह्रीं शक्तिः क्रौं कीलकमस्य नूतनयन्त्रे मूर्तौ च प्राणप्रतिष्ठापने विनियोगः ।

इससे जल छोड़कर हाथ से ढककर :

ॐ आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हं सः सोहमस्य दुर्गासपरिवार यन्त्रस्य प्राणा इह प्राणाः १ । पुनः । ॐ आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हं सः सोहं अस्य श्रीदुर्गासपरिवारयन्त्रस्य जीव इह स्थितः २ । पुनः । ॐ आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हं सः सोहं अस्य श्रीदुर्गा सपरिवारयन्त्रस्य सर्वेन्द्रियाणि इह स्थितानि ३ । पुनः । ॐ आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं सं षं सं हं सः सोहं अस्य श्रीदुर्गासपरिवारयन्त्रस्य वाङ्मनस्त्वक्चक्षुःश्रोत्रजिह्वाघ्राणपाणिपादपायूपस्थानि इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा ।

एवमेव विधिना मूर्तिं च प्रतिष्ठाप्य 'यः प्राणतो निमिषतो महित्वे बिधेम०' इति मन्त्रं त्रिवारं पठेत् । मनोजूर्तिर्जुषताम् । सुप्रतिष्ठा प्रतिष्ठा इत्युक्त्वा संस्कार सिद्धये पञ्चदश प्रणवावृत्तीः कृत्वा अनेन श्रीदुर्गासपरिवारयन्त्रस्य मूर्तौ च गर्भाधानादि पञ्चदशसंस्कारान्सम्पादयामि। इति वदेत् ।

इस विधि से मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा करके "यः प्राणतो निमिषतो महित्वे विधेम० ।" इस मन्त्र को तीन बार पढ़े। "मनोजूतिर्जुषताम् । सुप्रतिष्ठा प्रतिष्ठां ।" यह कहकर संस्कारसिद्धि के लिए पन्द्रह प्रणवों की आवृत्ति करके "अनेन श्रीदुर्गापरिवार यन्त्रस्य मूर्तौं च गर्भाधानादि पञ्चदशसंस्कारान्सम्पादयामि ।" यह कहे ।

ततो यन्त्रराजाय विद्महे। महायन्त्राय धीमहि। तन्नो यन्त्रं प्रचोदयात्। इत्योष्ठोत्तरशतमभिपन्त्र्य देवीं ध्यायेत् ।

इसके बाद "यन्त्रराजाय विद्महे महायन्त्राय धीमहि । तन्नोयन्त्रं प्रचोदायत् ॥ इनसे एक सौ आठ बार अभिमन्त्रित करके देवी का ध्यान करे ।

अथ ध्यानम् :

"ध्यायेन्नित्या महादेवीं मूलप्रकृतिमीश्वरीम्। ब्रह्मविष्णुशिवादीनां पूज्यां वन्द्या सनातनीम् ॥ १ ॥ नारायणीं विष्णुमायां वैष्णवीं विष्णुभक्तिदाम् । सर्वस्वरूपां सर्वेशां सर्वाधारां परात्पराम् ॥ २ ॥ तप्तकाञ्चनवर्णाभां सूर्यकोटिसमप्रभाम्। ईषद्धास्यप्रसन्नास्यां भक्तानुग्रहाकातराम्॥ ३॥ दुर्गांशतभुजां देवीं भक्तदुर्गर्तिशिनीम् । त्रिलोचनप्रियां साध्वीं त्रिगुणां च त्रिलोचनाम् ॥ ४ ॥ बिभ्रतीं कबरीभारान्मालतीमाल्यमण्डिताम्। वर्तलुं वामवक्त्रं च शम्भोर्मानसमोहनम्॥ ५॥ नासादक्षिणभागेन बिभ्रतीं गजमौक्तिकम्। सिन्दूरबिन्दुना शश्वद्भालमध्यस्थलोज्ज्वलाम्॥ ६॥ वह्निशुद्धांशुकाधानां गन्धचन्दनचर्चिताम् । बिभ्रतीं स्तनयुग्मं च कस्तूरीचित्रशोभिताम् ॥ ७॥ विधातुश्च विधात्रीं च

सर्वधात्रीं च शाङ्करीम् । सृष्टौ स्रष्टुः शिल्परूपां दयां पातुश्च पालने ॥ ८॥ संहारकाले संहर्तुः परां संहाररूपिणीम् । निशुम्भशुम्भमथिनीं महिषासुरमर्दिनीम् ॥ ९ ॥"

इससे ध्यान करके अपने शिर पर पुष्पांजलि देकर आवाहन करे । उसमें मन्त्र यह है ।

"एह्येहि भगवत्यम्ब शिवलोकात्सनातने । गृहाण मम पूजां च शारदीयां सुरेश्वरि ॥ १ ॥ इहागच्छ जगत्पूज्ये तिष्ठतिष्ठ महेश्वरि । हे मातरस्यामर्चायां सन्निरुद्धाभवाम्बिके ॥ २ ॥ इहागच्छन्तु त्वं प्राणाश्चाधःप्राणैः सहाच्युते । इहागच्छन्तु त्वरितं तत्रैव सर्वशक्तयः ॥ ३ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं च दुर्गायै वह्निजायान्तमेव च । समुच्चार्योरसिः प्राणाः सन्तिष्ठन्तां सदाशिवे ॥ ४ ॥ सर्वेन्द्रियाधिदेवास्ते इहागच्छन्तु चण्डिके । इहागच्छन्तु ते शक्त्या इहागच्छन्तु चेश्वरः ॥ ५ ॥ दुर्गे देवि इहागच्छ सान्निध्यमहि कल्पय । पूजाभागान्गृहाण त्वं योगिनीकोटिभिः सह ॥ ६ ॥

यह कहकर मूल मन्त्र पढ़कर ॐ भूर्भुवः स्वः श्री दुर्गे इहागच्छ इह तिष्ठ इससे आवाहन करके सिंहासन देवे । इसमें मन्त्र यह है :

"अमूल्यरत्ननिर्माणं नानाचित्रविराजितम् । वरं सिंहासनं श्रेष्ठं गृह्यतां शङ्करप्रिये ॥ १ ॥"

इससे सिंहासन देकर स्वागत करे ।

स्वागतं भगवत्येम्बं शिवलोकाच्छिवप्रिया । प्रसादं कुरु मे भद्रे भद्रकालि नमोस्तु ते ॥ १ ॥ धन्योहं कृतकृत्योहं सफलं जीवनं मम । आगतासि यतो मातर्महेश्वरि ममालयम् ॥ २ ॥ अद्य मे सफलं जन्म सार्थकं जीवनं मम । पूजयामि यतो दुर्गां पुण्यक्षेत्रे च भारते ॥ ३ ॥ स्वागतं देवदेवेशि मद्भाग्यात्त्वमिहागता । प्राकृतं त्वमदृष्ट्वा मां बालवत्परिपालय ॥ ४ ॥

इससे स्वागत करके पाद्य आदि से पूजन करे।

अथ पाद्यादि पूजन :

अमूल्यरत्नपात्रस्थं निर्मलं जाह्नवीजलम् । पादप्रक्षालनार्थाय दुर्गे पाद्यं च गृह्यताम् ॥ १ ॥ मूलं पठित्वा ॐ भुर्भूवः स्वः श्रीदुर्गायै नमः पाद्यं समर्पयामि इति सामान्यार्घोदकेन शङ्खोदकेन वा पाद्यं दद्यात् । इति पाद्यम् ॥ १ ॥

अमूल्यरत्नपात्रस्थं निर्मलं जाह्नवीजलं पादप्रक्षालनार्थाय दुर्गे पाद्यं च गृह्यताम् ॥ १ ॥ यह कहकर मूल मन्त्र पढ़कर ॐ भूर्भुवः स्वः श्री दुर्गायै नमः पाद्यं समर्पयामि इससे सामान्यार्घोदक या शंखोदक से पाद्य देवे । इति पाद्यम् ॥ १ ॥

आचमन :

ॐ वेदनामपि वेद्यायै देवानां देवतात्मने । आचमनं कल्पयामीशि शुद्धानां शुद्धिहेतवे ॥ १ ॥ मूलं पठित्वा । ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीदुर्गायै नमः आचमनं समर्पयामि । इति कनिष्ठाहीनोन्नतसंयुक्तचतुरंगुलीरूपाचमनमुद्रया चन्दनपुष्पजातीकर्पूरकङ्कोललवङ्गतमालकादिचूर्णसंयुक्तजलं मुखे दद्यात् । इत्याचमनम् ॥ २ ॥

ॐ वेदनामपि वेद्यायै देवानां देवतात्मने । आचमनं कल्पयामीशि शुद्धानां शुद्धिहेतवे ॥ १॥ यह कहकर मूल मन्त्र पढ़कर "ॐ भूर्भुवः स्वः श्री दुर्गायै नमः आचमनं समर्पयामि ।" इससे कनिष्ठा रहित शेष उठी हुई चारों उँगलियों से आचमन मुद्रा से चन्दनयुक्त, जावित्री, कपूर, कंकोल, लवङ्ग, तमाल आदि के चूर्ण से युक्त जल मुख में देवे । इत्याचमनम् ।

मधुपर्क :

ॐ सर्वकालुष्यहीनायै परिपूर्णसुखात्मने । मधुपर्कमिमं देवि कल्पयामि प्रसीद मे ॥ १ ॥ मूलं पठित्वा । ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीदुर्गायै नमः मधुपर्क समर्पयामि । इति

संयुक्ताधोमुखानामिकास्पृष्टांगुष्ठात्मिकया मधुघृतशर्करादधिदुग्धसङ्घातात्मकमधुपर्कं मुखे दद्यात् । इति मधुपर्कः ॥ ३ ॥

ॐ सर्व कालुष्यहीनायै परिपूर्ण सुखात्मने । मधुपर्कमिमं देवि कल्पयामि प्रसीद मे ॥ १ ॥ यह कहकर मूल मन्त्र पढ़कर "ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीदुर्गायै नमः मधुपर्क समर्पयामि" इससे संयुक्त अधोमुख अनामिका से स्पृष्ट अंगुष्ठमयी मुद्रा से मधु, घी, शर्करा, दधि, दूध के मिश्रण रूप मधुपर्क को मुख में देवे । इति मधुपर्कदान ॥

द्वितीय आचमन :

ॐ उच्छिष्टोप्यशुचिर्वापि यस्याः स्मरणमात्रतः । शुद्धिमाप्नोति तस्यै ते पुनराचमनीयकम् ॥ १ ॥ मूलं पठित्वा । ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीदुर्गायै नमः आचमनं समर्पयामि । इत्याचमनं द्वितीयम् ॥ ४ ॥

"ॐ उच्छिष्टोप्यशुचिर्वापि यस्याः स्मरणमात्रतः । शुद्धिमाप्नोति तस्यै ते पुनराचमनीयकम् ॥ १ ॥ यह कहकर मूल मन्त्र पढ़कर "ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीदुर्गायै नमः आचमनं समर्पयामि ।" इससे दूसरा आचमन देवे ।

अर्घ्य :

ॐ तापत्रयहरं दिव्यं परमानन्दलक्षणम् । तापत्रयविनिर्मुक्तस्तवार्घ्यं कल्पयाम्यहम् ॥ १ ॥ मूलं पठित्वा । ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीदुर्गायै नमः इदमर्घ्यं समर्पयामि । इत्यनेन कुशाग्राक्षततिलव्रीहियवाज्यसिद्धार्थपुष्पमिश्रि तजलात्मकार्घ्यं शिरसि सर्वांगुलीसंयोगेन दद्यात् । इत्यर्घ्यः ॥ ५ ॥

"ॐ तापत्रय हरं दिव्य परमानन्दलक्षणम् । तापत्रयविनिर्मुक्तस्तवार्घ्यं कल्पयाम्यहम् ।" यह कहकर मूल मन्त्र पढ़कर "ॐ भूर्भुवः स्वः श्री दुर्गायै नमः इदमर्घ्यं समर्पयामि" इससे कुशाग्र, अक्षत, तिल, व्रीहि, जव, पीली सरसों तथा फूल से मिश्रित जलात्मक अर्घ्य शिर पर सभी अंगुलियों के संयोग से दे । इति अर्घ्य ॥ ५ ॥

सुगन्ध तैल :

ॐ स्नेहं गृहाण स्नेहेन लोकमातर्महाशये । सर्वलोकेषु शुद्धात्मन् ददामि स्नेहमुत्तमम् ॥ १ ॥ मूलं पठित्वा । ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीदुर्गायै नमः सुगन्धतैलं समर्पयामि । इत्युक्त्वा हरिद्रादिद्रव्यं सुगन्धतैलं च उद्वर्तयेत् । इति सुगन्धतैलम् ॥ ६ ॥

ॐ स्नेह गृहाण स्नेहेन लोकमातर्महाशये सर्वलोकेषु शुद्धात्मन् ददामि स्नेहमुत्तमम् ॥ १ ॥ यह कहकर मूल मन्त्र पढ़कर "ॐ भूर्भुवः स्वः श्री दुर्गायै नमः सुगन्ध तैलं समर्पयामि" यह कह कर हल्दी आदि द्रव्य तथा सुगन्धित तेल का उद्वर्तन करे । इति सुगन्ध तैल ॥ ६ ॥

जलस्नान :

ॐ परमानन्दबोधाब्धिनिमग्ननिजमूर्तये । साङ्गोपाङ्गमिदं स्नानं कल्पयाम्यहमीश्वरि ॥ १ ॥ मूलं पठित्वा । ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीदुर्गादेव्यै नमः जलस्नानं समर्पयामि । कनिष्ठाहीनदक्षहस्तमुष्ट्यात्मिकया मुद्रया स्नानीयं दद्यात् । इति जलस्नानम् ॥ ७ ॥ इति जलस्नानं दत्त्वा पञ्चामृतादिकैः स्नापयित्वा देवीसूक्तेन यथाशक्त्यभिषेकं कुर्यात् ।

ॐ परमानन्द बोधाब्धि निमग्ननिजमूर्तये । सांगोपांगमिदं स्नानं कल्पयाम्यहमीश्वरि ॥ १ ॥ यह कहकर मूल मन्त्र पढ़कर "ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीदुर्गा देव्यै नमः जलस्नानं समर्पयामि" दाहिने हाथ की कनिष्ठा अंगुली से रहित मुट्ठी की मुद्रा से स्नानीय देवे । इति जलस्नान । इससे जलस्नान देकर पञ्चामृत आदि से स्नान करा कर देवी सूक्त से यथाशक्ति अभिषेक करे ।

वस्त्र :

ॐ माया चित्रपटच्छन्ननिजगुह्योरुतेजसे । निवारणाय विज्ञानवासस्ते कल्पयाम्यहम् ॥ १ ॥ मूलं पठित्वा । ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीदुर्गादिव्यै नमः उत्तानदक्षिणहस्तांगुष्ठरपृष्ठतन्मध्यमात्मिकया रक्तवस्त्रं दद्यात् । इति वस्त्रम् ॥ ८ ॥

इसके बाद "ॐ माया चित्रपटच्छन्न निज गुह्योरु तेजसे । निवारणाय विज्ञानवासस्ते कल्पयाम्यहम् ॥ १ ॥" यह कहकर मूल मन्त्र पढ़कर "ॐ भूभुर्वः स्वः श्री दुर्गा देव्यै नमः ।" इससे दाहिने हाथ के उत्तान अंगूठे से स्पृष्ट मध्यमा अंगुली से लाल वस्त्र देवे । इति वस्त्रदान ।

उत्तरीयदान :

ॐ यामाश्रित्य महादेवो जगत्संहारकस्सदा । तस्यै ते परमेशान्यै कल्पयाम्युत्तरीयकम् ॥ १ ॥ मूलं पठित्वा । ॐ भूर्भवः स्वः श्रीदुर्गादिव्यै नमः इदमुत्तरीयं समर्पयामि इत्युत्तरीयम् ॥ ९ ॥

ॐ यामाश्रित्य महादेवो जगत्संहारकारकस्सदा । तस्यै ते परमेशान्यै कल्पयामुत्तरीयकम् ॥ १ ॥ यह कहकर मूल मन्त्र पढ़कर "ॐ भूभुर्वः स्वः श्रीदुर्गा देव्यै नमः इतमुत्तरीयं समर्पयामि" इससे उत्तरीय देवे । इति उत्तरीयदान ।

आभूषणदान :

ॐ स्वभावसुन्दराङ्गायै नानाशक्त्याश्रिते शिवे । भूषणानि विचित्राणि कल्पयाम्यरार्चिते ॥ १ ॥ मूलं पठित्वा । ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीदुर्गा देव्यै नमः भूषणं समर्पयामि । इति वाक्येन दक्षहस्तांगुष्ठस्पृष्टानामिकात्मिकया मुद्रया भूषणानि दद्यात् ॥ १० ॥

ॐ स्वभावसुन्दराङ्गायै नानाशक्त्याश्रिते शिवे । भूषणानि विचित्राणि कल्पयाम्यमरार्चिते ॥ १ ॥ यह कहकर मूल मन्त्र पढ़कर "ॐ भूभुर्वः स्वः श्रीदुगादिव्यै नमः भूषणं समर्पयामि" इस वाक्य से दाहिने हाथ के अंगूठे से स्पृष्ट अनामिकात्मिकया मुद्रा से आभूषण देवे ॥ १० ॥ इति आभूषणदान ।

गन्धदान :

ॐ चन्दनागुरुकस्तूर्यः कुंकुमं रोचनं तथा । कर्पूरादिसुगन्धाढ्यं सर्वाङ्गेषु विलेपयेत् ॥ १ ॥ मूलं पठित्वा । ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीदुगादिव्यै नमः चन्दनं समर्पयामि । इति वाक्येन मन्त्रेणोक्तचन्दनं कनिष्ठांगुष्ठसंयोगेन देव्यंगे निवेदयेत् । इति गन्धम् ॥ ११ ॥

ॐ चन्दनानुगुरुकस्तूर्यः कुंकुम रोचनं तथा । कर्पूरादि सुगन्धाढ्यं सर्वङ्गेषु विलेपयेत् ॥ १ ॥ यह कहकर मूल मन्त्र पढ़कर" ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीदुर्गा देव्यैः नमः चन्दनं समर्पयामि ।" इस वाक्य से मन्त्र से उक्त चन्दन कनिष्ठांगुलि और अंगुष्ठ के योग से देवी के अङ्ग पर निवेदित करे । इति गन्धदान ॥ ११ ॥

अक्षतदान :

ॐ अक्षतांस्तण्डुलांश्चैव कुंकुमाक्तान्मनोहरान् । गृहाण त्वं महादुर्गे सर्वसिद्धिप्रदा भव ॥ १ ॥ मूलं पठित्वा । ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीदुगादिव्यै नमः अक्षतान् समर्पयामि इति वाक्येन रक्ताक्षतान् सर्वांगुलीभिर्दद्यात् । इत्यक्षताः ॥ १२ ॥

ॐ अक्षतांस्तण्डुलांश्चैव कुंकुमाक्तान्मनोहरान् । गृहाण त्वं महादुर्गे सर्वसिद्धिप्रदा भव ॥ १ ॥ यह कहकर मूल मन्त्र पढ़कर "ॐ भूभुर्वः स्वः श्रीदुगादिव्यै नमः सक्षतान्समर्पयामि" इस वाक्य से लाल अक्षतों को सभी अंगुलियों से देवे ॥ १२ ॥ इति अक्षतदान ।

पुष्प दान :

तुरीयवनसम्भूतं नानागुणमनोहरम् । अमन्दसौरभं पुष्पं गृह्यतामिदमुतमम् ॥ १ ॥ मूलं

पठित्वा । ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीदुर्गादेव्यै नमः पुष्पं समर्पयामि । इति वाक्येन तर्जन्यंगुष्ठयोगेन पुष्पं दद्यात् । इति पुष्पम् ॥ १३ ॥

तुरीयवनसम्भूतं नानागुण मनोहरम् । अमन्द सौरभं पुष्पं गृह्यतामिदमुत्तमम् ॥ १ ॥ यह कहकर मूल मन्त्र पढ़कर "ॐ भूर्भुवः स्वः श्री दुर्गा देव्यै नमः पुष्पं समर्पयामि ।" इस वाक्य से तर्जनी तथा अंगुष्ठ के योग से पुष्प देवे ॥ १३ ॥ इति पुष्प दान ।

द्रोणपुष्पदान :

ब्रह्मविष्णुशिवादीनां द्रोणपुष्पं सदा प्रियम् । तत्ते दुर्गे प्रयच्छामि सर्वकामार्थसिद्धिये ॥ १ ॥ मूलं पठित्वा ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीदुर्गादेव्यै नमः द्रोणपुष्पं समर्पयामि । इति पठंस्तर्जन्यंगुष्ठयोगेन दद्यात् । इति द्रोणपुष्पम् ॥ १४ ॥

ब्रह्मविष्णुशिवादीनां द्रोणपुष्पं सदा प्रियम् । तत्ते दुर्गे प्रयच्छामि सर्वकामार्थ सिद्धये । यह कहकर मूल मन्त्र पढ़कर "ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीदुर्गा देव्यै नमः द्रोण पुष्पं समर्पयामि ।" इसे पढ़ते हुए तर्जनी और अंगुष्ठ के योग से द्रोणपुष्प देवे ॥ १४ ॥ इति द्रोणपुष्पदान ।

विल्वपत्रदान :

अमृतोद्भववृक्षोत्थं शङ्करस्य सदा प्रियम् । बिल्वपत्रं प्रयच्छामि पवित्रं ते सुरेश्वरि । मूलं पठित्वा । ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीदुर्गादेव्यै नमः बिल्वपत्रं समर्पयामि । इति बिल्वपत्रम् ॥ १५ ॥

अमृतोद्भववृक्षोत्थं शंकरस्य सदा प्रियम् । विल्वपत्रं प्रयच्छामि पवित्रं ते सुरेश्वरि । यह कहकर मूल मन्त्र पढ़कर "ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीदुर्गा देव्यै नमः विल्वपत्रं समर्पयामि" इससे विल्वपत्र देवे ॥ १५ ॥ इति विल्वपत्रदान ।

इस प्रकार पुष्पदान पर्यन्त पूजा करके इस अवसर पर इस प्रकार अङ्गपूजन करे ।

ॐ चंचलायै नमः इति पादौ पूजयामि १ । ॐ आषाढायै नमः जानुद्वयं पूजयामि २ । ॐ कमलवासिन्यै नमः कटिं पूजयामि ३ । ॐ जनन्यै नमो नाभिं पूजयामि ४ । ॐ मन्मथायै नमः स्तनौ पूजयामि ५ । ॐ एकनाभ्यै नमो हृदयं पूजयामि ६ । ॐ ललितायै नमः पाण्यो : पूजयामि ७ । ॐ उन्मत्त कण्ठायै नमः कण्ठंपूजयाभि ८ । ॐ भूभृत्यै नमो मुखं पूजयामि ९ । ॐ गौर्यै नमो नेत्रे पूजयामि १० । ॐ धात्र्यै नमो नासापुटौ पूजयामि ११ । ॐ विधात्र्यै नमः कर्णौ पूजयामि १२ । ॐ सर्वसौवर्णायै नमो ललाटं पूजयामि १३ 1 ॐ सर्व निष्कलंकायै नमो मस्तकं पूजयामि १४ । ॐ सर्वसिद्धिप्रदायै नमः सर्वाङ्गं पूजयामि १५।

इस प्रकार गन्धपुष्पों से पूजा करके देवी की आज्ञा लेकर प्रयोगोक्त आवरण पूजा करके धूपादि से पूजन करे ।

अथ धूपादिपूजनम् :

मूलेन फडिति धूपपात्रं सम्प्रोक्ष्य पुरतो निधाय मूलेन नमः इति गन्धपुष्पाभ्यां सम्पूज्य । ॐ (रं) इति वह्निबीजेन उपरि अग्निं संस्थाप्य तदुपरि मूलेन गुग्गुलुमिश्रितदशाङ्गं दत्त्वा घण्टां वादयन् दक्षतर्जन्यंगुष्ठयोगेन धूपमुद्रया देवतागुणान्कीर्तयन्नाभिदेशतो धूपयेत् । तत्र मन्त्रः । ॐ दशांगं गुग्गुलुं धूपं चन्दनागुरुसंयुतम् । सर्वेषामुत्तमं धूपं श्रीदुर्गायैनिवेदयेत् । मूलं पठित्वा ॐ भूर्भुवः स्वः साङ्गायै सपरिवारायै सवाहनायै सायुधायै श्रीदुर्गादेव्यै नमः धूपं समर्पयामि । इति पठित्वा देव्या वामभागे धूपपात्रं निधाय शङ्खजलमुत्सृजेत् । इति धूपः ॥ १६ ॥

अथ धूपादि पूजन :

मूल मन्त्र के अन्त में "फट्" जोड़कर इससे धूप पात्र का प्रोक्षण करके सामने रखकर मूल मन्त्र में "नमः" जोड़कर इससे गन्धपुष्पों से पूजा करके ॐ (रं) इस अग्निबीज से ऊपर अग्नि की स्थापना करके उसके ऊपर मूल मन्त्र से गुग्गुल मिश्रित दशांग देकर घण्टा बजाते हुए दाहिने हाथ की तर्जनी तथा अंगुठे के योग से धूप मुद्रा द्वारा देवता के गुणों का कीर्तन करते हुए चारों ओर धूप देवे। इसमें मन्त्र यह है : ॐ दशांगं गुग्गुलुं धूपं चन्दनगुरु संयुतम्। सर्वेषामुत्तमं धूपं श्रीदुर्गायै निवेदयेत्। यह कहकर मूल मन्त्र पढ़कर "ॐ भूभुर्वः स्वः सांगायै सपरिवारायै सवाहनायै सायुधायै श्री दुर्गा देव्यै नमः धूपं समर्पयामि।" यह पढ़कर देवी के बायें भाग में धूपपात्र रखकर शंख का जल छोड़ देवे ॥१६॥ इति धूपदान।

अथ दीपदान :

दीपपात्रं गोघृतेनापूर्य मन्त्राक्षरतन्तुभिर्वर्तिं निक्षिप्य प्रणवेन (ॐ) प्रज्वाल्य घण्टां वादयन् मध्यमांगुष्ठलग्नदीपमुद्रया नेत्रादिपादपर्यन्तं दीपं दर्शयेत्। तत्र मन्त्रः। ॐ घृताद्यैर्वर्तितश्चैव महातेजोमयो ज्वलन्। महान्तमन्धकारं च निवारयति भूतले। मूलं पठित्वा। ॐ भूर्भुवः स्वः सांगायै सपरिवारायै सवाहनायै सायुधायै श्रीदुर्गा देव्यै नमो दीपं समर्पयामि। इति देवी दक्षिणतः दीपपात्रं निधाय शङ्खजलमुत्सृजेत्। इति दीपः ॥१७॥

दीपपात्र को गाय के घी से पूर्ण करके मन्त्र में जितने अक्षर हैं, उतने धागे की बत्ती डालकर प्रणव (ॐ) से जलाकर घण्टा बजाते हुए मध्यमा अंगुली से स्पृष्ट अंगुष्ठमयी दीप मुद्रा से नेत्र से पैर पर्यन्त दीप दिखलावे। उसमें मन्त्र यह है : ॐ घृताद्यैर्वर्तितश्चैव महातेजोमयो ज्वलन्। महान्तमन्धकारं च निवारयति भूतले। यह कहकर मूल मन्त्र पढ़कर "ॐ भूभुर्वः स्वः सांगायै सपरिवारायै सवाहनायै सायुधायै श्री दुर्गा देव्यै नमो दीपं समर्पयामि" इससे देवी के दाहिनी ओर दीपपात्र रखकर शंख का जल छोड़ देवे ॥१७॥ इति दीपदान।

नैवेद्यदान :

देव्यग्रे देवीदक्षिणतो वा जलेन चतुरस्रं मण्डलं कृत्वा स्वर्णादिनिर्मितं भोजनपात्रं निधाय तन्मध्ये षड्रसोपेतं विविधप्रकारं पायसं वा निधाय मूलेन ॐ ह्रीं नमः इत्यर्घ्योदकेन संप्रोक्ष्य मूलेन संवीक्ष्य अधोमुखदक्षिणहस्तोपरितादृशं वामं निधाय नैवेद्यमाछाद्य ॐ (यं) इति वायुबीजेन षोडशधा संजप्य वायुना तद्गतदोषान् संशोध्य ततो दक्षिणकरतले तत्पृष्ठलग्नवामकरतलं कृत्वा नैवेद्यं प्रदर्श्यं ॐ (रं) इति वह्निबीजं षोडष वारं संजप्य तदुत्पन्नाग्निना तद्दोषं दग्ध्वा वामकरतले अमृतबीजं विचिन्त्य तत्पृष्ठलग्नं दक्षिणकरतलं कृत्वा नैवेद्यं प्रदर्श्य ॐ (वं) इति सुधाबीजं षोडशवारं संजप्य तदुत्थामृतधारया प्लावितं विभाव्य मूलेन प्रोक्ष्य धेनुमुद्रां प्रदर्श्यं मूलेनाष्टधाभिमन्त्र्य गन्धपुष्पाभ्यां सम्पूज्य देव्यास्योद्गतं तेजः स्मृत्वा वामांगुष्ठेन नैवेद्यपात्रं स्पृष्ट्वा दणिकरेण जलं गृहीत्वा सत्पात्रसिद्धं सुहविर्वि विधमनेकभक्षणं नैवेद्यं मनसाभीष्टं श्रीदुर्गायै निवेदयेत् ॥१॥

देवी के आगे या दाहिनी ओर जल से चौकोर मण्डल बनाकर स्वर्ण आदि से निर्मित भोजनपात्र रखकर उसके बीच षड्रसों से युक्त नाना प्रकार के भोजन या खीर रखकर मूल मन्त्र के साथ ॐ ह्रीं नमः इसके द्वारा अर्घ्योदक से प्रोक्षण करके मूल मन्त्र से अच्छी तरह देखकर अधोमुख दाहिनी हाथ पर वैसे ही बाँया हाथ रखकर नैवेद्य को ढँककर ॐ (यं) इस वायु बीज से सोलह बार जप करके वायु से तद्गत दोषों का संशोषण करके दाहिने करतल पर उसके पृष्ठ भाग से लगे बाएँ करतल को

करके नैवेद्य प्रदर्शितकर ॐ (रं) इस अग्निबीज से सोलह बार जप कर उससे उत्पन्न अग्नि से उसके दोषों को जलाकर बाएँ करतल में अमृत बीज का चिन्तन करके उसके पृष्ठ भाग में दाहिने करतल को करके नैवेद्य प्रदर्शित कर ॐ (वं) इस सुधाबीज को सोलह बार जप कर उससे उठी अमृतधारा से उसे प्लावित करके मूल मन्त्र से प्रोक्षण करके धेनुमुद्रा दिखलाकर मूल से आठ बार अभिमन्त्रित करके गन्ध और पुष्प से पूजा करके देवी के मुख से निकले तेज का स्मरण करके बाएँ अंगूठे से नैवेद्यपात्र को छूकर दाहिने हाथ से जल लेकर सत्पात्र द्वारा बनाया हुआ उत्तम हवि, अनेक प्रकार का भोज्य अपने मन के अनुकूल नैवेद्य श्री दुर्गा देवी को निवेदित करे ।

मूलं पठित्वा ॐ भूर्भुवः स्वः सांगायै सपरिवारायै सवाहनायै सायुधायै श्रीदुर्गायै नमः इदं नैवेद्यं गृहाण स्वाहा । इति नैवेद्यं समर्प्य वामहस्तेन अनामिकामूलयोरंगुष्ठयोगेन ग्रासमुद्रां प्रदर्श्य देवीं भुक्तवतीं विभाव्य जलं दद्यात् इति नैवेद्यम् ॥ १८ ॥

मूलमन्त्र का पाठ करके "ॐ भूर्भुव···· स्वाहा" इससे नैवेद्य समर्पित करके बाएँ हाथ के अनामिका मूल और अंगुष्ठ के योग से ग्रासमुद्रा प्रदर्शित करके 'देवी भुक्तवती हो गयी है' ऐसी भावना करके जल देवे ।

जलदान :

नमस्ते देवदेवेशि सर्वतृप्तिकरं वरम् । परमानन्दसम्पूर्णे गृहाण जलमुत्तमम् । मूलं पठित्वा ॐ भूर्भुवः स्वः सांगायै सपरिवारायै सवाहनायै सायुधायै श्रीदुर्गादेव्यै नमः जलं समर्पयामि । इति मन्त्रेण स्वर्णादिपात्रस्थं कर्पूरादिसुवासितं जलं निवेद्य देव्यै तज्जलं प्राशितमिति भावयन् अन्तःपटं दद्यात् । इति जलम् ॥ १९ ॥

नमस्ते देव देवेशि सर्वतृप्तिकरं वरम् । परमानन्दसम्पूर्णे गृहाण जलमुत्तमम् । यह कहकर मूल मन्त्र पढ़कर "ॐ भूर्भुवः स्वः सांगायै सपरिवारायै सवाहनायै सायुधायै श्री दुर्गा देव्यै नमः जलं समर्पयामि । इस मन्त्र से स्वर्णादिपात्रस्थ कपूर आदि से सुवासित जल देवी को निवेदित करके "उस जल को देवी ने पी लिया है" ऐसी भावना करते हुए अन्दर का पर्दा गिरा देवे ॥ १९ ॥ इति जलदान ।

आचमन :

ततः देव्याः सपरिवाराया देवतायाः तृप्तिं विभाव्य हस्तप्रक्षालनार्थं चन्देनेन करोद्वर्तनं कृत्वा उष्णोदकेन आचमनं दद्यात् । तत्र मन्त्र :

उच्छिष्टोप्यशुचिर्वापि यस्याः स्मरणमात्रतः । शुद्धिमाप्नोति तस्यै ते पुनराचमनीयकम् ॥ १ ॥ मूलं पठित्वां ॐ भूर्भुवः स्वः साङ्गायै सपरिवारायै सवाहनायै सायुधायै श्रीदुर्गादेव्यै नमः आचमनं समर्पयामि । इत्याचमनम् ॥ २० ॥

इसके बाद सपरिवार देवी की तृप्ति की भावना करके हस्त प्रक्षालन के लिए चन्दन से हाथ का अभ्यङ्ग करके उष्ण जल से आचमन देवे । उसमें मन्त्र यह है :

उच्छिष्टोप्यशुचिर्वापि यस्याः स्मरणमात्रतः । शुद्धिमाप्नोति तस्यै ते पुनराचमनीयकम् ॥ १ ॥ यह कहकर मूल मन्त्र पढ़कर "ॐ भूर्भुवः स्वः सांगायै सपरिवारायै सवाहनायै सायुधायै श्रीदुर्गादेव्यै नमः आचमनं समर्पयामि ॥ २० ॥ इससे आचमन दान करे । इति आचमन दान ।

इत्याचमनं दत्त्वा गण्डूषार्थं जलं दद्यात् ।

इस प्रकार आचमन देकर कुल्ला करने के लिए जल देवे ।

ताम्बूलदान :

कर्पूरैर्नागवल्लीभिः क्रमुकादिभिरन्वितम् । शिववक्षोनिवासायै ताम्बूलं च समर्पये ॥ १ ॥

मूलं पठित्वा ॐ भूर्भुवः स्वः साङ्गायै श्रीदुगदिव्यै नमः ताम्बूलं समर्पयामि । इति ताम्बूलं ॥ २१ ॥

कपूरैर्नागवल्लीभिः क्रमुकादिभिरन्वितम् । शिववक्षोनिवासायै ताम्बूलं च समर्पये ॥ १ ॥ यह कहकर मूल मन्त्र पढ़कर "ॐ भूर्भुवः स्वः सांगायै सपरिवारायै सवाहनायै सायुधायै नमः ताम्बूलं समर्पयामि ॥ २१ ॥ इति ताम्बूलदानम् ।

फलदान :

फलैश्च पुरनारंगै कदलीमधुरैस्तथा । नारिकेलसमायुक्तं फलं च प्रतिगृह्यताम् ॥ १ ॥ मूलं पठित्वा । ॐ भूर्भुवः स्वः साङ्गायै श्रीदुगदिव्यै नमः फलं समर्पयामि । इति फलम् ॥ २२ ॥

फलैश्च पुरनारंगैः कदलीमधुरैस्तथा । नारिकेल समायुक्तं फलं च प्रतिगृह्यताम् ॥ १ ॥ यह कहकर मूल मन्त्र पढ़कर "ॐ भूर्भुवः स्वः सांगायै सपरिवारायै सवाहनायै सायुधायै श्रीदुगदिव्यै नमः फलं समर्पयामि ॥ २२ ॥ इति फलदान ॥

दक्षिणादान :

हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः । अनन्तपुण्यफलदमतः शान्तिं प्रयच्छ मे ॥ १ ॥ मूलं पठित्वा । ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीदुगदिव्यै नमः दक्षिणां समर्पयामि । इति हिरण्यादिदक्षिणां दद्यात् ॥ २३ ॥

हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः । अनन्त पुण्य फलदमतः शान्तिं प्रयच्छ मे ॥ १ ॥ यह कहकर मूल मन्त्र पढ़कर "ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीदुगदिव्यै नमः दक्षिणां समर्पयामि ।" इससे स्वर्ण की दक्षिणा देवे ॥ २३ ॥ इति दक्षिणादान ।

नीराजन :

शालि गोधूमपिष्टेन त्रिकोणाकारं प्रयोगोक्तं वा अमुकसंख्यापरिमितदीपं निर्माय स्वर्णादिस्थाली मध्ये संस्थाप्य घृतेनापूर्य कर्पूरादिवर्ति निक्षिप्य मायाबीजेन (ह्रीं) प्रज्वाल्य मूलेनार्तिक्यं सम्पूज्य मूलं पठित्वा देव्युपरि नेत्रादिपादपर्यन्तं नववारांस्त्रिवारान्वा भ्रामयेत् । घण्टां च वादयेत् । तत्र मन्त्रः ।

अन्तस्तेजो बहस्तेजो ह्येकीकृत्य निरन्तरे । त्रिधा देव्या परिभ्राम्य कुलदीपं निवेदयेत् ॥ १ ॥ चन्द्रादित्यौ च धरणी विद्युदग्निस्तथैव च । त्वमेव सर्वज्योतिस्त्वदार्तिक्यं मे गृहाण वै ॥ २ ॥ मूलं पठित्वा । ॐ भू० श्रीदुगदिव्यै नमः आर्तिक्यं समर्पयामि इत्युच्चरन् देव्या दक्षिणतः निधाय शङ्खजलमुत्सृजेत् । इति नीराजनम् ॥ २४ ॥

शालि (चावल), गोधूम (गेहूं) के आटे से त्रिकोणाकार अथवा प्रयोगोक्त अमुक संख्या परिमित दीपक बनाकर सोने आदि की थाली के बीच रखकर घी से भरकर कपूर आदि की बत्ती उसमें डालकर मायाबीज (ह्रीं) से जलाकर मूल मन्त्र से आरती-पूजा करके मूल मन्त्र का पाठ करके देवी के ऊपर नेत्र से पैर पर्यन्त नव बार या तीन बार घुमावे तथा घण्टा बजावे । उसमें मन्त्र यह है ।

अन्तस्तेजो बहिस्तेजो ह्येकीकृत्य निरंतरे। त्रिधा देव्याः परिभ्राम्य कुलदीपं निवेदयेत् ॥१॥ चन्द्रादित्यौ च धरणी विद्युदग्निस्तथैव च ॥ त्वमेव सर्वज्योतिस्त्वदार्तिक्यं मे गृहाण वै ॥२॥

मूल मन्त्र पढ़कर "ॐ भूर्भुवः स्वः श्री दुर्गा देव्यै नमः आर्तिक्यं समर्पयामि ॥ यह कहते हुए उसे देवी के दाहिने रखकर शङ्ख का जल डाले ॥ २४ ॥ इति नीराजन ।

कर्पूरार्तिक्यम् :

ॐ "कदलीगर्भसम्भूतकपूरैश्च प्रदीपितम् । आरार्तिक्यमहं कुर्वे पश्य मे वरदा भव ॥ १ ॥" मूलं पठित्वा । ॐ भू० श्रीदुगदिव्यै नमः कर्पूरार्तिक्यं प्रदर्शयामि । इति कपूरार्तिक्यम् ॥ २५ ॥

"कदली गर्भ सम्भूत कर्पूरैश्च प्रदीपितम् । आरार्तिक्यमहं कुर्वे पश्य मे वरदा भव" ॥ १ ॥ कह कहकर मूल मन्त्र पढ़कर "ॐ भूर्भुवः स्वः श्री दुर्गा देव्यै नमः कर्पूरार्तिक्यं प्रदर्शयामि ॥ २५ ॥ इति कपूर की आरती ॥

प्रदक्षिणा :

ॐ "यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि वै ॥ तानि सर्वाणि नश्यन्तु प्रदक्षिणपदेपदे" ॥ १ ॥ इति पठित्वा एक (१) प्रदिक्षणां कुर्यात् ॥ २६ ॥

"ॐ यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि वै । तानि सर्वाणि नश्यन्तु प्रदक्षिणा पदे पदे ॥ १ ॥" पढ़कर एक प्रदक्षिणा करे ॥ २६ ॥ इति प्रदक्षिणा ।

साष्टाङ्ग प्रणाम :

"प्रपन्नं पाहि मामीशे भीतं मृत्युमहार्णवात्" इति वदन् साष्टांगं प्रणमेत् ॥ २७ ॥

"प्रसन्नं पाहि मामीशे भीतं मृत्युमहार्णवात्" यह कहता हुआ साष्टांग प्रणाम करे ।

पुष्पाञ्जलि :

"नानासुगन्धयुक्तं च यथाकालोद्भवन्तया । मया पुष्पाञ्जलिं दत्तं गृहाण परमेश्वरि" ॥ १ ॥ मूलं पठित्वा ॐ भू० श्रीदुर्गादेव्यै नमः पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि । इति पुष्पाञ्जलिः ॥ २८ ॥

"नानासुगन्धयुक्तं च यथाकालोद्भवन्तया । मया पुष्पांजलिं दत्तं गृहाण परमेश्वरि" यह कहकर और इसके बाद पुष्पांजलि लेकर मूल मन्त्र का पाठ करके "ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीदुर्गादेव्यै नमः पुष्पांजलिं समर्पयामि ॥ २८ ॥ इति पुष्पांजलिदान ।

इति पुष्पाञ्जलिं दत्त्वा ततः स्तुतिपाठेन देवीं स्तुत्वा बद्धाञ्जलिपूर्वकं प्रार्थयेत् । तद्यथा ।

इससे पुष्पांजलि देकर स्तुति पाठ से देवी की स्तुति करके दोनों हाथ जोड़कर इस प्रकार प्रार्थना करे ।

"ज्ञानतोऽज्ञानतो वाथ यन्मया क्रियते शिवे ॥ मम कृत्यमिदं सर्वमिति देवि क्षमस्व मे ॥ १ ॥ अपराधसहस्राणि क्रियन्तेऽहर्निशं मया । दासोयमिति मां मत्वा क्षमस्व परमेश्वरि ॥ २ ॥ अपराधो भवत्येव सेवकस्य पदे पदे । कोऽपरः सहतां लोके केवलं स्वामिनं विना ॥ ३ ॥ भूमौ स्खलितपादानां भूमिरेवावलम्बनम् । त्वयि जातापराधानां त्वमेवशरणं शिवे" ॥ ४ ॥ इति सम्प्रार्थ्य देवीवामकरे पूजार्पणजलं दत्त्वा सर्वदेवोपयोगिपद्धतिमार्गेण कुमारीपूजनं कृत्वा दिग्देवीभ्यो बलिं दद्यात् । तद्यथा । बलिं द्रव्येण पिंडवत्कृत्वा गन्धादिभिः संपूज्य तस्योपरि दीपं दानविधिक्रमेण संस्थाप्य :

इससे प्रार्थना करके देवी के बाएँ हाथ में पूजा अर्पण करने का जल देकर सर्वदेवोपयोगि-पद्धति मार्ग से कुमारी पूजन करके दिग्देवियों को इस प्रकार बलि देवे : बलि द्रव्य को पिण्ड रूप में बनाकर गन्ध आदि से पूजा करके उसपर विधिक्रम से दीपदान रखकर :

ॐ भूर्भुवः स्वः जगारूढे कादम्बरि एह्येह्यागच्छागच्छ गन्धाद्युपचारसहितसदीपमाषभक्तबलिर्नमः एवं सर्वत्र ॥ १ ॥ ॐ भू० अजारूढे उल्के ए० २ । ॐ भू० महिषारूढे करालि ए० ३ । प्रेतारूढे रक्ताक्षि ए० ४ । उरगारूढे श्वेतवक्त्रे ए० ५ । मृगारूढे हरिते ए० ६ । सिंहारूढे यक्षिणि ए० ७ । वृषारूढे कङ्कालि ए० ८ । हंसारूढे सुरज्येष्ठे ए० ९ । अहिवाहिनि सर्वराज्ञि ए० १० ।

इससे दिग्देवियों को बलि देकर नवग्रहों को इस प्रकार बलि देवे :

मध्ये वृत्तमण्डले सप्ताश्वरथारूढ सूर्य ए० १। आग्नेये चतुरस्रपीठे मृगारूढ सोम ए० २ । दक्षिणे त्रिकोणपीठे मेषारूढ अङ्गारक ए० ३ । ईशाने बाणाकृतिपीठे सिंहारूढ सौम्य ए० ४ । उत्तरे पट्टिशाकारपीठे

हयारूढ आङ्गिरस ए० ५ । प्राच्यां पञ्चकोणपीठे श्वेताश्वरूढ भार्गव ए० ६ । पश्चिमे धनुराकारपीठे गृध्रारूढ मन्द ए० ७ । नैर्ऋत्ये सूर्पाकारपीठे सिंहारूढ राहो ए० ८ । वायुकोणे ध्वजाकारपीठे केतो ए० ९ ।

इससे ग्रहों को बलि देकर पञ्चकोल कपालों के लिए इस प्रकार बलि देवे :

नैर्ऋत्ये शूर्पाकृति पीठे उन्दुरारूढ गणेश ए० १ । पश्चिमे धनुराकृतिशनिपीठे सिंहारूढे दुर्गे ए० २ । मध्ये वृत्तपीठे मृगकृष्णसमारूढ वायो ए० ३। नैर्ऋत्ये शूर्पाकारराहुपीठे आकाश ए० ४। वायव्ये ध्वजाकारपीठे अश्विनीकुमारौ ए० ५।

इससे बलि देकर पूर्वादि क्रम से इन्द्रादि दश दिक्पालों को इस प्रकार बलि दे ।

कौशिक गजारूढ इन्द्र ए० १ । मेषारूढ अग्ने० २ । महिषारूढ यम० ३ । कौशिकारूढ नैर्ऋते० ४ । मकरारूढ वरुण० ५ । मृगारूढ वायो० ६ । दशाश्वसमारूढ कुबेर० ७ । वृषारूढईश्वर० ८ । हंसारूढब्रह्मन्० ९ । गरुडारूढ अनन्त० ।

इससे बलिदान देकर हाथ-पैर धोकर आचमन करके माला का संस्कार करे ।

अथ माला संस्कार :

अथ मालयाः संस्काराः : कुशोदकसहितैः पञ्चगव्यैर्मालां प्रक्षाल्य अश्वत्थपत्रे नवे रचिते कमले वा स्थापयित्वा : ॐ ह्रीं अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं लृं लॄं एं ऐं ओं औं अं अः कं खं गं घं ङं चं छं जं झं ञं टं ठं डं ढं णं तं थं दं धं नं पं फं बं भं मं यं रं लं वं शं षं हं ळं क्षं ।

इत्येतानि मातृकाक्षराणि मूलमन्त्रं च मालायां विन्यस्य पुनः पञ्चगव्येन प्रोक्ष्य ॐ सद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय वै नमो नमः । भवे भवेनातिभवे भवस्व मां भवोद्भवाय नमः ॥ १ ॥ इति मन्त्रेण शीतजलेन प्रक्षालयेत् ।

कुशोदय सहित पञ्चगव्यों से माला को धोकर पीपल के पत्ते पर या नवरचित कमल पर रखकर, मातृकाक्षरों को तथा मूल मन्त्र को माला में विन्यस्य करके पुनः पञ्चगव्य के प्रोक्षण करके "ॐ सद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय वै नमो नमः । भवे भवेनातिभवे भवस्व मां भवोद्भवाय नमः ॥ १ ॥" इस मन्त्र से शीतल जल से धोवे ।

पुनः ॐ वामदेवाय नमो ज्येष्ठाय नमः श्रेष्ठाय नमो रुद्राय नमः कालाय नमः कलविकरणाय नमो बलविकरणाय नमः । इति मन्त्रेण चन्द्रनागुरुकर्पूरादिसुगन्धद्रव्यैर्धर्षयेत् ॥ २ ॥ ॐ अघोरेभ्योथ घोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः । सर्वेभ्यः सर्वशर्वेभ्यो नमस्ते अस्तु रुद्ररूपेभ्य इति मन्त्रेण तां धूपयेत् ॥ ३॥ ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाया धीमहि । तन्नो रुद्रः प्रचोदयात् । इति मन्त्रेण मालायां चन्दनं लेपयेत् ॥ ४ ॥ ॐ ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानां ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोधिपतिर्ब्रह्मा शिवो मे अस्तु सदाशिवोम् । इति मन्त्रेण मेरुसहितं प्रत्येकमणिं सकृत्सकृद् वाभिमन्त्रयेत् । इत्याभिमन्त्रस्य अस्या मालायाः इति शब्दं संयोज्य प्राणप्रतिष्ठामन्त्रेणमालयाः प्रान्प्रतिष्ठां कृत्वा ध्यायेत् ।

पुनः "ॐ वामदेवाय नमो ज्येष्ठाय नमः श्रेष्ठाय नमो रुद्राय नमः कालाय नम : कलविकरणाय नमो बलविकरणाय नमः" इस मन्त्र से चन्दन, अगर, कपूर आदि सुगन्ध द्रव्यों को घिसे ॥ २ ॥ ॐ अघोरेभ्योथ घोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः । सर्वेभ्यः सर्वशर्वेभ्यो नमस्ते अस्तु रुद्ररूपेभ्यः ॥ ३ ॥ इस मन्त्र से धूप दे । "ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि । तन्नो रुद्रः प्रचोदयात् ॥" इस मन्त्र से माला में चन्दन का लेप करे ॥ ५ ॥ ॐ ईशानः सर्वविधानामीश्वरः सर्वभूतानां ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोधिपतिर्ब्रह्मा शिवो मे अस्तु सदाशिवोम् । इस मन्त्र से मेरु सहित प्रत्येक मणि को एक-एक बार अभिमन्त्रित करे । इस प्रकार अभिमन्त्रित करके 'अस्या मालायाः' इस शब्द को जोड़कर प्राणप्रतिष्ठा मन्त्र से माला की प्राणप्रतिष्ठा करके ध्यान करे ।

"ॐ मालेमाले महामाये सर्वशक्तिस्वरूपिणी। चतुर्वर्गस्त्वयि न्यस्तस्तस्मान्ये सिद्धिदा भव" ॥ १ ॥ इति मालां सम्प्रार्थयेत् ।

"ॐ माले माले महामाये सर्वशक्तिस्वरूपिणी । चतुर्वर्गस्त्वयि न्यस्तस्मान्ये सिद्धिदा भव ॥ १॥ इससे माला की प्रार्थना करे ।

इति मालां प्रतिष्ठाप्य एकाग्रमनाः सम्भाषणादि परिहरन्दिशोऽनव लोकयन्देवी मनसा ध्यायन्सम्पूर्णवर्णस्वरोच्चारतत्पदमात्राविभक्तिविवेकज्ञानवान्निराहारो यताहारो नक्तभोजी अधःशायी कवचार्गलाकीलकं सकृज्जपित्वा ततः सप्तशतीमालास्तोत्रं त्रयोदशाध्यायात्मकम् ॐकारमादौ संयोज्य पठेत् । शतामादौ शतं चान्ते नवार्ण जपेत् । एवं नवचण्डीविधानेनित्यचण्डीविधानेऽप्येवं नवदुर्गाविधानेऽप्येवं कालरात्रिविधानेऽप्येवं शतचण्ड्यादिविधाने ऊह्यम् । प्रत्येकं कवचार्गलाकीलकादि कृत्वा मध्ये चरितत्रमालां कृत्वा रहस्यसहितां जपित्वा शतवृत्तिजपं कृत्वा तद्दशगुणितं सहस्रचण्ड्या विधानेऽप्येवम् ।

इस प्रकार माला की प्रतिष्ठा करके एकाग्र मन होकर सम्भाषण आदि छोड़ते हुये, इधर-उधर न देखते हुये, मन से देवी का ध्यान करते हुये, सम्पूर्ण वर्ण स्वर उच्चारण, तथा उसके पद, मात्रा, विभक्ति के विवेकज्ञान से युक्त होकर निराहार यताहार रात्रि में भोजन करने वाला, भूमिशायी, कवच, अर्गला तथा कीलक का एक बार जप करके तेरह अध्यायात्मक सप्तशतीमालास्तोत्र के आदि में ॐकार जोड़कर पढ़े । आदि में सौ तथा अन्त में सौ नवार्ण का जप करे । इसी प्रकार नवचण्डी विधान, नित्यचण्डीविधान, नवदुर्गाविधान, कालरात्रिविधान तथा शतचण्डी विधान में भी जानना चाहिये । प्रत्येक में कवच, अर्गला तथा कीलक का पाठ करके बीच में चरित्रमाला का पाठ कर रहस्य संहिता का जप करे । सौ बार जप करके उसका दशगुना सहस्रचण्डी विधान में भी इसी प्रकार करना चाहिये ।

केवलमन्त्रानुष्ठाने ।

"ॐ अविघ्नं कुरु माले त्वं सर्वकार्येषु सर्वदा ।" इति मन्त्रेण दक्षिण हस्ते मालामादाय हृदये धारयन् स्वेष्टदेवीं ध्यात्वा मध्यमांगुलिमध्यपर्वणि संस्थाप्य ज्येष्ठाग्रेण भ्रामयित्वा एकाग्रचित्तो मन्त्रार्थ स्मरन्यथाशक्ति प्रातःकालमारभ्य मध्यंदिनं यावत् मूलमन्त्रं जपेत् । नित्यमेक सामान्यजपः कार्यो न तु न्यूनाधिकः ।

केवल मन्त्र के अनुष्ठान में :

"ॐ अविघ्नं कुरु माले त्वं सर्वकार्येषु सर्वदा ।" इस मन्त्र से दाहिने हाथ में माला लेकर हृदय में धारण करते हुये अपनी इष्ट देवी का ध्यान करके मध्यमा अंगुली के मध्यपर्व पर स्थापित करके अंगूठे से सामने घुमाते हुये एकाग्रचित्त हो मन्त्र के अर्थ का स्मरण करते हुये यथाशक्ति प्रातःकाल से आरम्भ करके दोपहर तक मूलमन्त्र का जप करे । नित्य समान जप करना चाहिये कभी कम कभी अधिक नहीं जप के अन्त में :

"ॐ त्वं माले सर्व देवानां प्रीतिदा शुभदा भव । शुभं कुरुष्व मे भद्रे यशो वीर्य्यं च सर्वदा ॥ तेन सत्येन सिद्धिं मे देहि मातर्नमोस्तु ते ॥ १ ॥" ॐ ह्रीं सिद्ध्यै नमः इति मालां शिरसि निधाय गोमुख्यां रहस्यास्थापयेत् । नाशुचिः स्पृशेत् । नान्यस्मै दद्यात् । अशुचिस्थाने न निदध्यात् । स्वयोनिवत् गुप्तं कुर्यात् ।

"ॐ त्वं माले सर्वदेवानां प्रीतिदा शुभदा भव । शुभं कुरुष्व मे भद्रे यशो वीर्यं च सर्वदा । तेन सत्येन सिद्धिं मे देहि मातर्नमोस्तु ते ॥ १ ॥ यह कहकर "ॐ ह्रीं सिद्ध्यै नमः" इससे माला को शिर पर रखकर गोमुखी में रखकर एकान्त में रख देवे । अपवित्र दशा में उसका स्पर्श न करे, दूसरे को न दे, अपवित्र

स्थान में न रखे और अपनी योनि के समान गुप्त रखे ।

ततः कवचस्तोत्रसहस्रनामादिकं पठित्वा पुनः मूलमन्त्रेण न्यासादिकं विधाय देवीं पञ्चोपचारैः सम्पूज्य पुष्पाञ्जलिं च दत्त्वा जपस्य देव्या अर्पणं कुर्यात् । अर्घ्योदकेन चुलुकमादाय । "ॐ गुह्यातिगुह्यगोप्त्री त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम् । सिद्धिर्भवतु मे देवि त्वत्प्रसादात्त्वयि स्थितम् ॥ १ ॥"

इसके बाद कवच, स्तोत्र, सहस्रनाम आदि पढ़कर मूल मन्त्र से न्यास आदि करके देवी की पञ्चोपचारो से पूजा करके पुष्पांजलि देकर देवी को जप अर्पित करे । अर्घोदक से एक चुल्लू पानी लेकर "ॐ गुह्यातिगुह्य गोप्त्री त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम् । सिद्धिर्भवतु में देवि त्वत्प्रसादात्त्वयिस्थितम् ॥ १ ॥

यह कहकर ॐ इतः पूर्व प्राणबुद्धिदेहधर्माधिकारतो जाग्रत्स्वप्नसुषुप्तितुर्यावस्थासु मनसा वाचा कर्मणा हस्ताभ्यां पद्भ्यामुदरेण शिश्ना यत्स्मृतं यदुक्तं तत्सर्वं ब्रह्मार्पणं भवतु स्वाहा । मदीयं च सकलं श्रीदुर्गादेव्यै समर्पयामि नमः । ॐ तत्सदिति ब्रह्मार्पणं भवतु । इति देवीवामकरेजलसमर्पणं कृत्वा कृताञ्जलिपूर्वकं क्षमापनं पठेत् ।

"ॐ इतः पूर्वं प्राणबुद्धिदेहधर्माधिकारतो जाग्रत्स्वप्न सुषुप्ति तुर्यावस्थासु मनसा वाचा कर्मणा हस्ताभ्यां पद्भ्यामुदरेण शिश्ना यत्स्मृतं यदुक्तं यत्कृतं तत्सर्वं ब्रह्मार्पणं भवतु स्वाहा । मदीयं च सकलं श्री दुर्गा देव्यै समर्पयामि नमः । ॐ तत्सदिति ब्रह्मार्पणं भवतु ।" इससे देवी के बाएँ हाथ में जल समर्पित करके कृतांजलिपूर्वक क्षमापन स्तोत्र का पाठ करे ।

अथ क्षमापनम् :

"आवाहनं न जानमि न जानामि विसर्जनम् ।
पूजाभागं न जानामि त्वं गतिः परमेश्वरि ॥ १ ॥
मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वरि ।
यत्पूजितं मया देवि परिपूर्ण तदस्तु मे ॥ २ ॥
यदक्षरपदभ्रष्टं मात्राहीनं च यद्भवेत् ।
तत्सर्वं क्षम्यतां देवि प्रसीद परमेश्वरि ॥ ३ ॥
कर्मणा मनसा वाचा त्वत्तो नान्या गतिर्मम ।
त्वमन्तस्सर्वभूतानां वीक्षसे परमेश्वरि ॥ ४ ॥
अन्यथा शरणं नास्ति त्वमेव शरणं मम ।
तस्मात्कारुण्यभावेन क्षमस्व परमेश्वरि ॥ ५ ॥
प्रातर्योनिसहस्रेषु सहस्रेषु व्रजाम्यहम् ।
तेषुतेष्वचला भक्तिरच्युतेस्तु सदा त्वयि ॥ ६ ॥
गतं पापं गतं दुःखं दारिद्र्यमेव च ।
आगता सुखसम्पत्तिः पुण्यानि तव दर्शनात् ॥ ७ ॥
देवी दात्री च भर्त्री च देवी रूपमिदं जगत् ।
देवी जयति सर्वत्र या देवी साहमेव हि ॥ ८ ॥
क्षमस्व देवदेवेशि मत्कृतं भुवनेश्वरि ।
तव पादाम्बुजे नित्यं निश्चला भक्तिरस्तु मे" ॥ ९ ॥

इति कृताञ्जलिः प्रार्थयित्वा ततः शंखजलमुद्धृत्य देव्या उपरिभ्रामयित्वा "साधु वासाधु वा कर्म यद्यदाचरितं मया । तत्सर्वं कृपया देवि गृहाणाराधितं मम" इत्युच्चरन् देव्यै स्ववामकरेण किञ्चिज्जलं दत्त्वा प्रांग्वदर्घ्यं देवीशिरसि दत्त्वा शंखं यथास्थाने निवेश्य ततः गतसारनैवेद्यं किञ्चिदुद्धृत्य ऐशान्यां दिशि ॐ ह्रीं उच्छिष्टचाण्डाल्यै नमः इति उच्छिष्ट चाण्डालीं संपूज्य । ॐ "उच्छिष्टचाण्डालिनि देवि निर्माल्यैश्चन्दनादिभि : । लेह्यचोष्यान्नपानादिनिर्माल्यस्त्रग्विलेपनै : ॥१॥ निर्माल्यभोजनं तुभ्यं ददामि श्रीशिवाज्ञया" इति मन्त्रेण निर्माल्यैस्तदुच्छिष्टभोजनं दत्त्वा तच्छेषनैवेद्यं शिरसि धृत्वा देवीभक्तेषु विभज्य स्वयं भुक्त्वा देवीं विसर्जयेत् ।

इससे हाथ जोड़कर प्रार्थना करके शङ्ख का जल देवी के ऊपर घुमाकर "साधु वासाधु वा कर्म यद्यदाचरितं मया । तत्सर्वं कृपया देविगृह्यणाराधितं मम" यह उच्चारण करते हये देवी के लिए अपने बाएँ हाथ से कुछ जल देकर पूर्ववत् अर्घ्य देवी के सिर पर देकर शङ्ख को यथास्थान रखकर नैवेद्य को साररहित जानकर उसमें से कुछ निकाल कर ऐशानी दिशा में "ॐ ह्रीं उच्छिष्टचाण्डाल्यै नमः" इससे उच्छिष्ट चाण्डाली की पूजा करके "ॐ उच्छिष्टचाण्डालिनि देवि निर्माल्यैश्चन्दनादिभिः ॥ लेह्यचोष्यान्नपानादि निर्माल्यस्त्रग्विलेपनैः ॥ १ ॥ निर्माल्य भोजनं तुभ्यं ददाभि श्री शिवाज्ञया ।" इस मन्त्र से निर्माल्यो से उसको उच्छिष्ट भोजन देकर उसमें से बचे नैवेद्य को सिर पर रखकर देवीभक्तों में विभाजित करके स्वयं खाकर देवी को विसर्जित करे । उसमें मन्त्र यह है :

ॐ गच्छगच्छ परं स्थानं स्वस्थानं परमेश्वरि । पूजाराधनकाले च पुनरागमनाय च ।" इति पठित्वा संहारमुद्रया देवीं विसृज्य स्वहृदये स्थापयेत् ।

"ॐ गच्छगच्छ परं स्थानं स्वस्थानं परमेश्वरि पूजाराधनकाले च पुनरागमनाय च ।" इसे पढ़कर संहार मुद्रा से देवी का विर्सजन करके उन्हें अपने हृदय में स्थापित करे । इसमें मन्त्र यह है :

ॐ तिष्ठतिष्ठ परस्थाने स्वस्थाने परमेश्वरि । यत्र ब्रह्मादयो देवाः सर्वे तिष्ठन्ति मे हृदि ॥ १ ॥ इति हृदयकमले हस्तं दत्त्वा देवीं संस्थाप्य मानसोपचारैः संपूज्य स्वात्मानं देवरूपं भावयन्यथासुखं विहरेत् ।

"ॐ तिष्ठ तिष्ठ परस्थाने स्वस्थाने परमेश्वरि । यत्र ब्रह्मादयो देवाः सर्वे तिष्ठन्ति मे हृदि" ॥ १ ॥ इससे हृदय कमल पर हाथ देकर देवी को स्थापित करके मानसोपचारों से पूजा करके अपने आप को देवरूप में भावना करते हुये यथासुख बिहार करे ।

एवमेव विधिना जपं समाप्य जपान्ते तद्दशांशतो नित्यहोमं वा कुर्यात् ।

इसी प्रकार जप समाप्त करके जप के अन्त में जप से दशांश नित्य होम करे ।

अथ दुर्गामखोत्सवप्रारम्भः ।

यज्ञभूमिं संशोध्य षोडशस्तम्भसहितं मण्डपं सवितानं चतुर्द्वारं तोरणवेष्ठितं कृत्वा दिव्यवस्त्रपट्टदुकूलादिभिर्देवतागारं श्रीगिरिं कृत्वा कदलीस्तम्भविराजितम् सुमनोहरं पुष्पमालोपशोभितं मण्डपं विधाय तन्मध्ये होमानुसारतः कुण्डं चतुरस्रं प्रयोगोक्तं वा मेखलात्रययुतं योनिसहितं कुर्यात् ।

अथ दुर्गामखोत्सव

यज्ञभूमि का संशोधन करके सोलह स्तम्भयुक्त वितान सहित मण्डप बनाकर उसमें चार दरवाजे तथा तोरण लगा कर नित्य वस्त्र-पट्ट-दुकूल आदि से देवतागृह को श्रीगिरि करके केले के स्तम्भ से विराजित सुमनोहर पुष्पमाला से सुशोभित मंडप बनाकर उसके बीच होम के अनुसार चौकोर या प्रयोगोक्त तीन मेखलाओं से युक्त योनि सहित कुण्ड अथवा स्थण्डिल (वेदी) बनावे ।

स्तम्भतोरणादिप्रतिष्ठापूजनं सर्वदेवोपयोगिपद्धतिमार्गेण कृत्वा तेनैवाग्निं संस्थाप्य प्रधानहोमं समाप्य चरुतिलाज्येन पुनर्होमं कुर्यात् ।

स्तम्भ, तोरण आदि की प्राणप्रतिष्ठा और पूजन सर्वदेवपयोगी पद्धति मार्ग से करके उसी से अग्नि की स्थापना करके प्रधान होम समाप्त करके चरु, तिल तथा घी से पुनः होम करे । उसमें क्रम यह है :

ॐ गणपतये नमः स्वाहा इदं गणपतये नमः इति सर्वत्र १ । ॐ दुर्गायै० २ । ॐ सरस्वत्यै० ३ । ॐ क्षेत्रपालाय ४ । ॐ कादम्बर्यै० ५ । ॐ उल्कायै० ६ । ॐ कराल्यै० ७ । ॐ रक्तायै० ८ । ॐ श्वेतकौबेर्यै० ९ । ॐ यक्षिण्यै० १० । ॐ काल्यै० ११ । ॐ सुरश्रेष्ठायै० १२ । ॐ जं जयायै० १३ । १ विं विजयायै० १४ । ॐ जं जयन्त्यै० १५ । ॐ अं अपराजितायै० १६ । ॐ निं नित्यायै० १७ । ॐ विं विलसिन्यै० १८ । ॐ दों दोग्ध्यै० १९ । ॐ अं अघोरायै० २० । ॐ मं मङ्गलायै २१ । ॐ धात्रे० २२ । ॐ विधात्रे० २३ । ॐ शङ्खनिधये० २४ । ॐ पद्मनिधये० २५ । ॐ द्वारश्रियै० २६ । ॐ वास्तुपुरुषाय० २७ । ॐ ऐरावताय० २८ । ॐ पुण्डरीकाय० २९ । ॐ वामनाय० ३० । ॐ कुमुदाय० ३१ । ॐ अञ्जनाय० ३२ । ॐ पुष्पदन्ताय० ३३ । ॐ सार्वभौमाय० ३४ । ॐ सुप्रतीकाय० ३५ । ॐ दमनकाय० ३६ । ॐ पुण्डरीकाय० ३७ । ॐ गुग्गुलाय० ३८ । ॐ कुरण्टकाय० ३९ । ॐ ऋग्वेदाय० ४० । ॐ यजुर्वेदाय० ४१ । ॐ सामवेदाय० ४२ । ॐ अथर्ववेदाय० ४३ । इस प्रकार होम करके ग्रहमख करे । ॐ आदित्याय० ४४ । ॐ सोमाय० ४५ । ॐ भौमाय० ४६ । ॐ बुधाय० ४७ । ॐ वृहस्पते० ४८ । ॐ शुक्राय० ४९ । ॐ शनैश्चराय० ५० । ॐ राहवे० ५१ । ॐ केतवे० ५२ । ततः ॐ रुद्राय० ५३ । ॐ गौर्यै० ५४ । ॐ स्कन्दाय ५५ । ॐ विष्णवे० ५६ । ॐ ब्रह्मणे० ५७ । ॐ इन्द्राय० ५८ । ॐ यमाय० ५९ । ॐ कालाय० ६० । ॐ चित्रगुप्ताय० ६१ । ॐ अग्नये० ६२ । ॐ अद्भ्यः स्वाहा इदमद्भ्यो न मम ६३ । ॐ महाभार० ६४ । ॐ इन्द्राय० ६५ । ॐ इन्द्राण्यै० ६६ । ॐ वरुणायै० ६७ । ॐ सर्पाय० ६८ । ॐ ब्रह्मणे० ६९ । ॐ अनन्ताय० ७० । ॐ वासुकये० ७१ । ॐ तक्षकाय० ७२ । ॐ कर्कोटकाय० ७३ । ॐ पद्माय० ७४ । ॐ महापद्माय० ७५ । ॐ शङ्खपालाय० ७६ । ॐ कम्बलाय० ७७ । ॐ कुलिकाय० ७८ । ॐ गणपतये० ७९ । ॐ दुर्गायै० ८० । ॐ वायवे० ८१ । ॐ आकाशाय० ८२ । ॐ अश्विदेवाभ्यां ८३ ।

इससे होम करके पीठदेवता-होम करे ।

ॐ ओंकारपीठादि कामरूपपीठान्तेभ्यो नमः स्वाहा इति पीठेभ्यो नमः ८४ ।

इससे पीठों के लिए नमस्कार करके :

ॐ मं मण्डूकादिपरतत्त्वान्तपीठदेवताभ्यो नमः स्वाहा० ८५ ।

इससे होम करके मण्डूकादि पृथक्-पृथक् नामों से होम करने के बाद इस प्रकार आवरण-देवता-होम करे :

ॐ गं गणपतये० ८६ । ॐ क्षं क्षेत्रपालाय० ८७ । ॐ पं पदुकाभ्यो० ८८ । ॐ बं बटुकत्रयाय० ८९ । ॐ अं अग्निमुखवेतालाय० ९० । ॐ प्रं प्रेतवाहनवेतालाय० ९१ । ॐ जं ज्वालामुखवेतालाय० ९२ । ॐ धूं धूम्राक्षवेतालाय० ९३ । ॐ जं जयायै० ९४ । ॐ विं विजयायै० ९५ । ॐ जं जयंत्यै० ९६ । ॐ अं अपराजितायै० ९७ । ॐ निं नित्यायै० नमः स्वाहा० ९७ । ॐ विं विलासिन्यै० ९९ । ॐ दं दोग्ध्र्यै० १०० । ॐ अं अघोरायै० १०१ । ॐ मं मङ्गलायै० १०२ । ॐ हं हंसवाहिन्यै ब्राह्मयै विच्चे नमः स्वाहा इदं ब्राह्मयै नमः १०३ । ॐ ह्सौं वृषभवाहिन्यै माहेश्वर्यै विच्चे नमः स्वाहा० १०४ । ॐ क्लीं मयूरवाहिन्यै कौमार्यै विच्चे नमः स्वाहा० १०५ । ॐ श्रीं गरुडवाहिन्यै वेशाख्यै विच्चे नमः स्वाहा १०६ । ॐ दं दंष्ट्रोद्धृतवसुन्धरायै वाराह्यै नमः स्वाहा १०७ । ॐ क्ष्रौं स्तम्भोद्भवायै नारसिंह्यै विच्चे नमः स्वाहा १०८ । ॐ लौं गजवाहिन्यै ऐन्द्र्यै विच्चे नमः स्वाहा १०९ ।

ॐ खें गणनाथपरिवारायै सदा रुद्रेण संयुक्तायै चण्डमुण्डमण्डितायै सिंहारूढायै चामुण्डायै विच्चे नमः स्वाहा ११० । ॐ ह्रीं हेमगर्भायै नन्दायै विच्चे नमः स्वाहा १११ । ॐ ह्रीं सुरक्तायै रक्तदन्तिकायै विच्चे नमः स्वाहा ११२ । ॐ ह्रीं नीलायै शाकम्भर्यै विच्चे नमः स्वाहा ११३ । ॐ ह्रीं सर्वरूपार्तिहारिण्यै दुर्गायै विच्चे नमः स्वाहा ११४ । ॐ ह्रीं दंष्ट्राञ्चितमुखायै नीलपात्रशिरोधरायै भीमायै विच्चे नमः स्वाहा ११५ । ॐ ह्रीं तेजोमण्डलदुर्धर्षायै वरदायै भ्रामर्यै विच्चे नमः स्वाहा ११६ । ॐ यं यक्षिण्यै० ११७ । ॐ कं कालिकायै ११८ । ॐ सं सुरश्रेष्ठायै० ११९ । ॐ दं दशाननायै० १२० । ॐ रं रत्यै० १२१ । ॐ प्रं प्रीत्यै० १२२ । ॐ वं विश्वेश्वर्यै० १२३ । ॐ अं अष्टादशभुजायै मनोभवायै १२४ । ॐ अणिम्ने० १२५ । ॐ महिम्ने० १२६ । ॐ लघिम्ने० १२७ । ॐ गरिम्णे० १२८ । ॐ प्राप्त्यै० १२९ । ॐ प्राकाम्यै० १३० । ॐ ईशितायै० १३१ । ॐ वशितायै० १३२ । ॐ असिताङ्गभैरवाय० १३३ । ॐ रुरुभै० १३४ । ॐ चण्डभै० १३५ । ॐ क्रोधभै० १३६ । ॐ उन्मत्तभै० १३७ । ॐ कपालभै० १३८ । ॐ भीषणभै० १३९ । ॐ संहारभै० १४० ।

इससे होम करके लोकपालों के लिए इस प्रकार होम करे :

ॐ लं वज्रहस्ताय सुराधिपतये इन्द्राय० १४१ । ॐ रं शक्तिहस्ताय तेजोधिपतये अग्नये० १४२ । ॐ मं दण्डहस्ताय प्रेताधिपतये यमाय० १४३ । ॐ क्षं खड्गहस्ताय रक्षोधिपतये निर्ऋताय० १४४ । ॐ वं पाशहस्ताय जलाधिपतये वरुणाय० १४५ । ॐ यं अंकुशहस्ताय प्राणधिपतये वायवे १४६ । ॐ सं गदाहस्ताय नक्षत्राधिपतये० १४७ । ॐ हं त्रिशूलहस्ताय विद्याधिपतये ईशानाय० १४८ । इति होमं कृत्वा ततः ॐ गुं गुरुभ्योनमः १४९ । ॐ पं परमगुरुभ्यो० १५० । ॐ पं परमेष्ठिगुरुभ्यो० १५१ । ॐ गं गणेशाय० १५२ । ॐ हं हरये० १५३ । ॐ हं हराय० १५४ ।

इन देवताओं के लिए एक-एक चरु, तिल और घी की आहुतियाँ देनी चाहिये । इसके बाद पूर्वोक्त सभी न्यास करके, अग्नि में पीठपूजा करके अग्नि में देवी का आवाहन करके, पञ्चोपचारों से पूजा करके अग्नि के मध्यमार्ग में :

ॐ ह्रीं महालक्ष्म्यै विच्चे नमः स्वाहा इदं महालक्ष्म्यै न मम इति सर्वत्र । तद्दक्षिणभागे । ॐ ऐं महाकाल्यै विच्चे नमः स्वाहा । देव्या वामभागे । ॐ क्लीं महासरस्वत्यै विच्चे नमः स्वाहा ३ ।

इनसे तीन आहुतियाँ देकर वहीं पुनः देवी के दाहिने भाग में :

ॐ क्ष्रौं सिंहाय नमः स्वाहा १ । ॐ हूं महिषाय नमः स्वाहा २ । ॐ ह्सौं ह्सैं गौरीरुद्राभ्याम्० ३ । देव्याः पृष्ठभागे लक्ष्मीसान्निध्ये । ॐ लक्ष्मी हृषीकेशाभ्यां० ४ । देव्या पृष्ठभागे । ॐ ऐं विरञ्चये० ५ ।

इनसे होम करके पुनः

ॐ हूं कं कालाय नमः १ । ॐ रुं रुद्राय नमः २ । ॐ सं सिंहाय नमः ३ । ॐ मं मृत्यवे नमः ४ । ॐ वं विजयाय नमः स्वाहा ५ । ॐ गं गणेशाय० ६ । ॐ मं महिषाय० ७ । ॐ भं भैरवाय० ८ ।

इससे होम करके विष्णुमाया आदि का होम करे :

ॐ विष्णुमायायै० १ । ॐ चेतनायै० २ । ॐ बुद्ध्यै० ३ । ॐ निद्रायै० ४ । ॐ क्षुधायै० ५ । ॐ छायायै० ६ । ॐ शक्त्यै० ७ । ॐ तृष्णायै० ८ । ॐ क्षांत्यै० ९ । ॐ जात्यै० १० । ॐ लज्जायै० ११ । ॐ शांत्यै० १२ । ॐ श्रद्धायै० १३ । ॐ कांत्यै० १४ । ॐ लक्ष्म्यै० १५ । ॐ धृत्यै० १६ । ॐ स्मृत्यै० १७ । ॐ दयायै० १८ । ॐ तुष्ट्यै० १९ । ॐ पुष्ट्यै० २० । ॐ मात्रे० २१ । ॐ भ्रांत्यै० २२ ।

इससे होम करके इसप्रकार रंगहोम करे :

ॐ ह्रां हृ० १ । ॐ ह्रीं शि० २ । ॐ ह्रूं शि० ३ । ॐ ह्रैं क० ४ । ॐ ह्रौं ने० ५ । ॐ ह्रः अ० ६ । इति हुत्वा । ॐ नालाय० १ । ॐ मूलाय० २ । ॐ पद्माय० ३ । ॐ महापद्माय० ४ । ॐ आधारशक्तये० ५ । ॐ कूर्माय० ६ । ॐ शेषाय० ७ । ॐ पृथिव्यै० ८ ।

इस प्रकार होम करके ।

ततो मूलेन शतमेकादशाधिकामाज्याहुतिं हुत्वा पायसतिलपलाशपुष्पसर्षपपूगीफललाजदूर्वांकुरयवबिल्वफलरक्तचन्दनगुग्गुलद्रव्याणि मितमिश्रपायसमेव वा प्रयोगोक्तद्रव्येण वा अर्गलाकीलकरहस्यैः प्रतिश्लोकं हुत्वा कृतस्य जपस्य दशांशेन प्रतिश्लोकं सप्तशतीमन्त्रेणोक्तद्रव्याणि तिलपायसं वा जहुयात् । कवचाहुतिनिषेधः । अध्यायसमाप्तौ महाहुतिं मन्त्रेण हुत्वा उवाचस्थले च पत्रपुष्पफलैर्होमः ।

इसके बाद मूलमन्त्र से एक सौ ग्यारह घी की आहुति देकर खीर, तिल, पलाश का फूल, सरसों, सुपारी, लावा, दूब, बेल का फल, लाल चन्दन, गुग्गुल इन द्रव्यों को अथवा प्रयोगोक्त प्रकार से मिश्रित खीर को ही अर्गला, कीलक और रहस्यों के प्रतिश्लोक से आहुति देकर जप के दशांश से प्रतिश्लोक सप्तशती मन्त्र से उक्त द्रव्यों की अथवा तिल और खीर की आहुति देवे । कवच की आहुति का निषेध है ।[1] प्रति अध्याय के अन्त में महा-आहुति मन्त्र[2] से होम करके उवाच-स्थल पर पत्र, पुष्प और फल से होम करना चाहिये ।

यद्वा "नमोदेव्यै०" इत्यनेन नवार्णेन वा जपदशांशहोमः । एवं होमं कृत्वा पुष्पाञ्जलिं च दत्त्वा जयजयशब्दान्कारयेत् । ततः पुनः प्रधानहोमं कृत्वा ततोग्निपूजनं ग्रहपूजनं पीठे वरुणदेवतापूजनं च कृत्वा इन्द्रादिदशदिक्पालेभ्यो बलिं निवेध मेखलोपरि अद्भि परिषिच्यात्मनि पावकं योजयित्वा छागाद्यपशुमाषभक्तकूष्माण्डानां नारिकेलस्य वा बलिं दत्वा पूर्णाहुतिं दद्यात् ।

अथवा "ॐ नमोदेव्यैः" इससे नवार्ण से या जप का दशांश होम करना चाहिये । इस प्रकार होम करके पुष्पांजलि देकर जय जय ध्वनि करे । इसके बाद पुनः प्रधान होम करके अग्निपूजन, ग्रहपूजन तथा पीठ पर वरुण देवता पूजन करके इन्द्र आदि दश दिक्पालों के लिए बलि निवेदन करके मेखला के ऊपर जल से सींच कर अपने में पावक को जोड़कर बकरे आदि पशु, उड़द, भात, कूष्माण्ड तथा नारियल की बलि निवेदन देकर इस प्रकार पूर्णाहुति देवे ।

प्रक्षालितपाणिपादः आचम्य "देशकालौ संकीर्त्य कृतस्य अमुकचण्डीहोमस्य सम्पूर्णतासिद्ध्यर्थं पूर्णाहुतिहोममहं करिष्ये ।" इति संकल्प्य होमावशिष्टेनाज्येन स्रुचं पूरयित्वा तदग्रे पुष्पफलवस्त्रयुतं नारिकेलादिचन्दनमालादियुतं निधाय तां स्रुवेणाच्छाद्य उत्थाय तयोर्मलं नाभौ कृत्वा मूलमन्त्रं वौषडन्तं पठित्वा । ॐ इतः पूर्व प्राणबुद्धिदेहधर्माधिकारतो जाग्रत्स्वप्नसुषुप्त्यवस्थासु मनसा वाचा हस्ताभ्यां पद्भ्यामुदरेण शिश्ना यत्स्मृतं यदुक्तं यत्कृतं तत्सर्वं देव्यर्पणं भवतु ब्रह्मार्पणं भवतु स्वाहा । इति पूर्णाहुतिं दद्यात् ।

हाथ-पैर धोकर आचमन करके "देवकालौ संकीर्त्य कृतस्य अमुक चण्डी महोत्सवस्य सम्पूर्णतासिद्ध्यर्थं पूर्णाहुतिहोममहं करिष्ये ।" इससे संकल्प करके होम से बचे घी से सुवा भरकर उसके आगे पुष्प फल-वस्त्र-युक्त नारियल, केला, चन्दन, माला आदि रखकर उसे सुवा से ढककर उठकर दोनों के मूल को नाभि पर करके मूल मन्त्र में अन्त में वौषट् लगाकर पढ़कर "ॐइतः पूर्व प्राणबुद्धि

---

१ चण्डीस्तव में प्रतिश्लोक एक आहुति देने का विधान है । कवच के मन्त्रों से होम करने का निषेध है । मूर्खतावश जो कवच से होम करता है उसकी मृत्यु हो जाती है और वह नरक प्राप्त करता है । इसमें यह कथा प्रमाण है कि दुर्गापरायण महा दैत्य अन्धकासुर ने कवच के मन्त्रों से ही दुर्गाहोम में आहुतियाँ डाली थी और इस कारण शिवजी ने उसे मार डाला था ।

२ प्रति अध्याय के अन्त में महा आहुति देने का मन्त्र यह है : "ॐ नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः । नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्मताम् ॥" सांगायै सपरिवारायै सवाहनायै सायुधायै वाग्भवबीजाधिष्ठात्र्यै महाकाल्यै महाहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा । इस मन्त्र से कैथ का फल, दो पान सहित कुंकुम, अक्षत तथा पुष्पों से अभ्यर्चित घी सहित होम करना चाहिये ।

देहधर्माधिकारतो जाग्रत्स्वप्नसुषुत्यवस्थासु मनसा वाचा हस्ताभ्यां पद्भ्यां उदरेण शिश्ना यत्स्मृतं यदुकतं यत्कृतं तत्सर्व देण्यर्पणं भवतु ब्रह्मार्पणं भवतु स्वाहा ।'' इससे पूर्णाहुति देवे ।

इस प्रकार पूर्णाहुति देकर अग्नि से प्रार्थना करे ।

''भोभो वह्नेमहाशक्ते सर्वकर्मप्रसाधक । कर्मान्तरेपि सम्प्राप्ते सान्निध्यं कुरु सादरम् ।

इत्याग्निं सम्प्रार्थ्यं विसृजेत् । इति होमं कृत्वा दक्षिणां च दत्त्वा वह्नौ पवित्रे निक्षिप्य प्रणीताम्बु भुवि क्षिप्त्वा सकुशान्तपरिधीनग्नौ क्षिपेत् । इति होमं समाप्य होमदशांशतो दुग्धमिश्रितजलेन मूलमन्त्रान्ते अमुकचण्डीं तर्पयामि इति तर्पणं कृत्वा तर्पणदशांशेन मूलमन्त्रान्ते सिञ्चामि इत्यभिषेकं

इसी प्रकार द्वितीय अध्याय के अन्त में :

ॐ नमो देव्यै० सांगायै सपरिवारायै सवाहनायै सायुधायै लक्ष्मीबीजाधिष्ठात्र्यै महालक्ष्म्यै महाहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा । इससे नारियल के फल को घी सहित होम करें ।

इसी प्रकार तृतीय अध्याय के अन्त में : ॐ नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः । नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्मताम् । अष्टाविंशति वर्णात्मिकायै महालक्ष्म्यै महाहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा। इससे घी, मधु, और पुष्प का होम करे।

इसी प्रकार चौथे अध्याय के अन्त में ॐ नमो दे० त्रिवर्णात्मिकायै शक्तिलक्ष्म्यै महाहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा । इससे घी के साथ सुपारी का होम करे ।

पाँचवे अध्याय के अन्त में ॐ नमो दे० विष्णुमायादि त्रयोविंशति देवताये महाहुतिं समर्पयामि स्वाहा । इससे घी के साथ बीजपूर फल का होम करना चाहिए ।

षष्ठाध्याय के अन्त में ॐ नमो दे० शताक्ष्यै धूम्राक्ष्यै महाहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा । इससे घी के साथ नारियल का होम करना चाहिए ।

सप्तमाध्याय के अन्त में ॐ नमो ते० कर्पूरबीजाधिष्ठात्र्यै काली चामुण्डादेव्यै महाहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा । इससे घी सहित कूष्माण्डफल के टुकड़ों का होम करना चाहिए ।

अष्टमाध्याय के अन्त में ॐ नमो दे० अष्टमातृका सहितायै रक्ताक्ष्यै देव्यै महाहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा । इससे घी के साथ गन्ने की गडेरी का होम करना चाहिए ।

नवमाध्याय के अन्त में ॐ नमो दे० वाग्भवबीजाधिष्ठात्र्ये महाकाल्यै महाहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा । इससे पुनः कूष्माण्ड खण्ड तथा गन्ने की गडेरी का घी के साथ होम करना चाहिये ।

दसवें अध्याय के अन्त में ॐ नमो दे० सिंहवाहनायै त्रिशूलपाश धारिण्यै महाहुतिंन समर्पयामि नमः स्वाहा । इससे घी के साथ मातुलिङ्ग फल का होम करना चाहिए ।

ग्यारहवें अध्याय के अन्त में : ॐ नमो दे० सर्वनारायण्यै महाहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा । इससे घी सहित अनार का फल होम करे ।

बारहवें अध्याय के अन्त में ॐ नमो दे० बालायै त्रिपुरसुन्दर्यै महाहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा । इससे घी सहित बेल का होम करना चाहिए ।

तेरहवें अध्याय के अन्त में : ॐ नमो दे० श्री त्रिपुरसुन्ध्यै श्रीविद्यायै महाहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा । इससे घी सहित केले के फल का होम करना चाहिए । इस प्रकार प्रत्येक अध्याय के अन्त में महाआहुति देना चाहिए ।

कुर्यात् । ततो नाना विधैरन्नैर्द्विजसत्तमान्भोजयित्वा तेभ्यो दक्षिणां दत्वा न्यूनसंपूर्णतां वाचयेत् । इति पंचांगकृतेन मंत्रः सिद्धो भवति । एवं सिद्धे मन्त्रे मन्त्री प्रयोगान्साधयेत् ।

इससे अग्नि से प्रार्थना करके उसका विसर्जन करे । इस प्रकार होम करके दक्षिणा[1] देकर पवित्री अग्नि में फेंककर प्रणीतापात्र का जल भूमि पर गिराकर कुश सहित परिधि को अग्नि में डाल देवे । इस प्रकार होम समाप्त करके होम से दशांश दुग्ध मिश्रित जल[2] से मूलमन्त्र के अन्त में "अमुक चण्डीं तर्पयामि" इससे तर्पण करके तर्पण के दशांश से मूलमन्त्र के अन्त में "सिञ्चमि[3]" जोड़कर उससे अभिषेक करे । इसके बाद अनेक प्रकार के खाद्यान्नों से उत्तम ब्राह्मणों[4] को भोजन कराकर उन्हें दक्षिणा देकर "न्यून सम्पूर्णता" का वाचन करावे । इस प्रकार पञ्चाङ्गपूर्वक कर्म करने से मन्त्र सिद्ध होता है । इस प्रकार मन्त्र के सिद्ध हो जाने पर साधक प्रयोगों को सिद्ध करे ।

---

१ सुवर्णमयुतं दद्याल्लक्षैर्दश सुवर्णकम् । दक्षिणास्तु प्रदातव्या यथा होमे तथा जपे । मतान्तरे : आचार्याय शतं तदर्धं तदर्धमष्टौ च गोमिथुनानि सुवर्णचतुष्टयं च दद्यात् । ब्राह्मणाय निष्कद्वयं गोद्वयं च ऋत्विग्भ्यः प्रत्येकं निष्कत्रयं गोमिथुनं च दद्यात् । इदं सहस्रचण्ड्यां तदर्धं शतचण्ड्यां तदर्धं नवचण्ड्यां अशक्तौ सर्वेभ्यः सुवर्णं आचार्याय द्विगुणं दद्यात् ।

अर्थात् दक्षिणा में दश हजार या दश लाख सुवर्ण देवे । जैसे होम में दक्षिणा दी जाती है वैसे ही जप में भी दी जाती । दूसरे मत के अनुसार आचार्य को आधा पांच हजार या पांच लाख अथवा ढाई हजार या ढाई लाख अथवा आठ जोड़ी गाय तथा चार सुवर्ण देवे । ब्राह्मण को दो निष्क और दो गाय, ऋत्वजों में से प्रत्येक को तीन-तीन निष्क और दो गाय देवे । यह सहस्रचण्डी के लिए नियम है । शतचण्डी में उसका आधा, नवचण्डी में उसका आधा और असमर्थ होने पर सबको एक-एक सुवर्ण तथा आचार्य को दूना देवे ।

२ विशुद्धेश्वरतन्त्र में कहा गया है : तर्पणं चन्दनं तोयैस्तीर्थतोयैरथो पुनः गुरुपदिष्टमार्गेण मधुना वाथ तर्पयेत् । तन्त्रान्तरेपि – तीर्थतोयेन दुग्धेन सर्पिषा मधुनापि च । गन्धोदकेन वा कुर्यात् सर्वत्र साधकोत्तमः । मूलान्ते नमोच्चार्य तर्पयामि ततः परम् । स्वाहान्तं तर्पयेन्मन्त्री यथा संख्या विधानतः । तर्पणं च प्रकुर्वीत द्वितीयान्तमथोच्चरन् ।

अर्थात् चन्दन के जल से, तीर्थ के जल से, मधु से या गुरु द्वारा उपदिष्ट मार्ग से तर्पण करना चाहिये । दूसरे तन्त्र मेंकहा गया है : तीर्थ जल से, दुग्ध से, घी से, मधु से या गन्धोदक से साधक सर्वत्र तर्पण करे । मूलमन्त्र के अन्त में नाम का उच्चारण करके उसके आगे अभिषेक विधिः "तर्पयामि" के बाद "स्वाहा रख कर 'तर्पण' का द्वितीयान्त उच्चारण करते हुये साधक तर्पण करे ।

३ मूलविद्यां समुचार्य तदन्ते देवताभिधाम् । तदन्ते चाभिर्षिचामि नमोन्तो चाभिषेचनम् ॥ इत्युच्चार्यमूर्ध्निदेश चिन्तयित्वा स्वमन्त्रकम् । अधिकांस्वीय संख्या विधाय तदनन्तरम् । "तत्र संञ्चिन्तयेद्देवीं सांगावरण देवताम् ॥ क्षिपेत्तोयं यथा संख्यं गणान् सिंचेत्सकृत्सकृत्ः

अर्थात् मूल विद्या का उच्चारण करके उसके अन्त में देवता का नाम बोलना चाहिये । उसकेअन्त में 'अभिषिंचामि नमः' बोले । उसके अन्त में "अभिषेचनम्" बोल करके सिरप्रदेश में अपने मन्त्र का चिन्तन करके अपनी अधिक संख्या करके तदनन्तर अङ्ग और आचरण सहित देवी का चिन्तन करे । संख्या के अनुसार जल छिड़क कर गणों का एक-एक बार सिंचन करे ।

४ ब्राह्मणभोजन विधि : अभिषेक समाप्यैवमभिषेकाद्दशांशतः । ब्राह्मणान्देवताबुध्या भोजयेत्साधकोत्तमः। तन्त्रान्तरेपि–सहस्राचण्ड्यां सहस्र लक्षचण्ड्यां लक्षंकोटिचण्ड्यां कोटिं तथैव शतचण्ड्यां शतं नवचण्ड्यां नव ब्राह्मणान् भोजयेदेवं सुवासिनी कुमारी भोजनं च कारयेन् । तन्त्रान्तरेपि–विभवे सति यो मोहान्न कुर्याद्विधिविस्तरम् । न तत्फलमवाप्नोति देवद्रोही स उच्यते ।

ब्राह्मणभोजन विधि : देवता बुद्धि से साधक ब्राह्मणों को भोजन करावे । दूसरे तन्त्र में कहा गया

अथ कुमारी पूजा प्रयोग :

पूजादिनात्पूर्वदिने गंधपुष्पाक्षतादिभिर्मूलेन भगवत्कुमारी पूजार्थं त्वं मया निमंत्रितासि मां कृतार्थयेति निमन्त्रितां प्रातराहूय प्रदक्षिणीकृत्योद्वर्तनाद्यैः स्नापयित्वा गंधतैलेन शरीरं संस्कार्याकेशं परिष्कृत्य ललाटे सिंदूरं नयनयोः कज्जलं सर्वाङ्गचंदनं दत्त्वा वस्त्रालंकारैराभूष्य पूजागृहमानीय पादौ प्रक्षाल्य अष्टदलपाठोपरि समावेश्य ताम्बूलेन मुखंसंशोध्य देशकालौ स्मृत्वामुकसिद्धयर्थं श्री दुर्गादेवीप्रीत्यर्थं कुमारीणां पूजनं करिष्ये इति संकल्प्य न्यासं कुर्यात् ।

पूजा के दिन पूर्व दिन गन्ध, पुष्प तथा अक्षत आदि के द्वारा मूलमन्त्र सहित "भगवत्कुमारी पूजार्थं त्वं मया निमन्त्रितासि मां कृतार्थयेति ।" इससे निमन्त्रित कन्या को प्रातः बुलाकर उसकी प्रदक्षिणा करके उबटन आदि से स्नान कराकर गन्ध तथा तेल से शरीर का संस्कार करके नख से शिखा तक परिष्कार करके ललाट में सिन्दूर, आँखों में काजल, सारे शरीर में चन्दन लगा कर वस्त्र तथा अलङ्कारों से भूषित करके पूजा घर में लाकर पैर धोकर अष्टदल पीठ पर बैठाकर ताम्बूल से मुख शुद्ध कराकर "देशकालौ स्मृत्वामुक सिध्यर्थं श्रीदुर्गादेवी प्रीत्यर्थ कुमारीणां पूजनं करिष्ये" इससे संकल्प करके न्यास करे ।

षडङ्गन्यास : ॐ क्लां कुमारिके हृदयाय नमः १ । ॐ क्लीं कुमारिके शिरसे स्वाहा २ । ॐ क्लं कुमारिके शिखायै वषट् ३ । ॐ क्लैं कुमारिके कवचाय हुंम् ४ । ॐ क्लौं कुमारिके नेत्रत्रयाय वौषट् ५ । ॐ क्लः कुमारिके अस्त्राय फट् ६ ।

इससे षडङ्ग विन्यास करके इसी विधि से करांगन्यास करे इस प्रकार न्यास करके ध्यान करे ।

ध्यान : "ॐबालरूपां च त्रैलोक्यसुन्दरीं वरवर्णिनीम् । नानालङ्कार-
नम्राङ्गी भद्रविद्याप्रकाशिनीम् ॥ १ ॥ चारुहास्यां महानन्दहृदयां शुभदां शुभाम् । शंखकुन्देनन्दुधवलां द्विभुजां वरदाभयाम् ॥ २॥"

इस प्रकार ध्यान करके अपने शिर पर फूल डाल कर आवाहन करे :

मन्त्राक्षरमयीं लक्ष्मींमातृणां रूपधारिणीम् । नवदुर्गात्मिकां साक्षात्कन्यामावाहयाम्यहम् ॥ १ ॥

है: सहस्रचण्डी में एक हजार ब्राह्मणों को लक्षचण्डी में एक लाख ब्रह्मणों को तथा कोटिचण्डी में एक करोड़ ब्रह्मणों को शतचण्डी में सौ ब्रह्मणों को, नवचण्डी में नव ब्राह्मणों को साधक भोजन करावे । इसी प्रकार उत्तम वस्त्र धारण की हुई कुमारियों को भी भोजन कराना चाहिये । धन रहने पर भी यदि कोई विस्तारपूर्वक विधि नहीं करता तो उसे उसका फल नहीं मिलता वह देवद्रोही कहलाता है ।

इससे आवाहन करके :

ॐ ह्रीं कुलकुमारिकायै[1] नमः इदं पाद्यं एवमिदमर्घ्यमिदमाचमनीयमिदमनुलेपनमेतेऽक्षताः एतानि पुष्पाणि एषः धूपः एषः दीपः इदं नैवेद्यमिदं ताम्बूलमिति''

इससे पूजा करके उपर्युक्त षडङ्गन्यास मन्त्र से षडङ्गपूजा करे। इसके बाद ''ॐ ह्रीं हंसः कुलकुमारिके पुष्पांञ्जलिं समर्पयामि'' इससे तीन पुष्पाञ्जलिं देकर नव नामों से इस प्रकार पूजा करे :

ॐ ह्रीं कौमार्यै नमः १। ॐ ह्रीं त्रिपुरायै नमः २। ॐ ह्रीं कल्याण्यै नमः ३। ॐ ह्रीं रोहिण्यै नमः ४। ॐ ह्रीं कामिन्यै नमः ५। ॐ ह्रीं चण्डिकायै नमः ६। ॐ ह्रीं शांकर्यै नमः ७। ॐ ह्रीं दुर्गायै नमः ८। ॐ ह्रीं सुभद्रायै नमः ९।

इन नामों से पूजा करके मूल मन्त्र से तीन पुष्पाञ्जलि देकर प्रदक्षिणा करके प्रणाम करे उसमें मन्त्र यह है :

ॐ जगत्पूज्ये जगद्वन्द्य सर्वशक्तिस्वरूपिणि ॥ पूजां गृहाण कौमारि जगन्मातर्नमोस्तु ते ॥१॥ त्रिपुरां त्रिगुणां धात्रीं ज्ञानमार्गस्वरूपिणीम् । त्रैलोक्यवन्दितां देवीं त्रिमूर्ति पूजयाम्यहम् ॥२॥ कालात्मिकां कालभीतां कारुण्यहृदयां शिवाम् । कारुण्य जननीं नित्यां कल्याणीं पूजयाम्यहम् ॥३॥ अणिमादिगुणोपेतामकारादिस्वरात्मिकाम् ॥ शक्तिभेदात्मिकां लक्ष्मीं रोहिणीं पूजयाम्यहम् ॥४॥ कलाधारां कलारूपां कालचण्डस्वरूपिणीम् । कामदां करुणाधारां कामिनीं पूजयाम्यहम् ॥५॥ चण्डधारां चण्डमायां चण्डमुण्डविनाशिनीम् । प्रणमामि च दवेशीं चण्डिकां पूजाम्यहम् ॥६॥

सुखानंदकरीं शान्तां सर्वदेवनमस्कृताम् । सर्वभूतात्मिकां देवीं शाङ्करीं पूज्याम्यहम् ॥७॥ दुर्गमे दुस्तरे चैव दुःखत्रयविनाशिनीम् । पूजयामि सदा भक्त्या दुर्गां दुर्गे नमाम्यहम् ॥८॥ सुन्दरीं स्वर्णवर्णाभां सुखसौभाग्य दायिनीम् । सुभद्रजननीं देवीं सुभद्रां प्रणमाम्यहम् ॥९॥''

इससे प्रणाम करके उसके अङ्ग में दुर्गा का आवाहन करके षोडश नामों से इस प्रकार पूजा करे।

ॐ ह्रीं उमायै नमः १। ॐ ह्रीं शूलधारिण्यै नमः २। ॐ ह्रीं खेचर्यै नमः ३। ॐ ह्रीं चत्वरवासिन्यै नमः ४। ॐ ह्रीं सुगन्धनासिकायै नमः ५। ॐ ह्रीं सर्वधारिण्यै नमः ६। ॐ ह्रीं चण्यिकायै नमः ७। ॐ ह्रीं सौभाद्रिकायै नमः ८। ॐ ह्रीं अशोकवासिन्यै नमः ९। ॐ ह्रीं वज्रधारिण्यै नमः १०। ॐ ह्रीं ललितायै नमः ११। ॐ ह्रीं सिंहवासिन्यै नमः १२। ॐ ह्रीं भगवत्यै नमः १३। ॐ ह्रीं विंध्यवासिन्यै नमः १४। ॐ ह्रीं महाबलायै नमः १५। ॐ ह्रीं भूतलवासिन्यै नमः १६।

इससे पूजा करके साष्टाङ्ग प्रणाम करे।

इति कुमारीपूजन

अथ छागादिबलिदान प्रयोगः ।

अर्धरात्रे पञ्चाब्दं सर्वलक्षणोपेतं छागादिपशुमानीय । ''ॐ वाराही यमुना गंगा करतोया सरस्वती । कावेरी चन्द्रभागा च सिन्धु भैरवसागराः ॥१॥ अजस्ताने महेशानि सन्निध्यमिह कल्पय । पशुपाशविनाशाय हेमकूटस्थिताय च ॥२॥ पराय परमेष्ठिने हुंकाराय च मूर्तये ॥''

---

१ वाग्भवेन वपुःक्षोभ मायाबीजे गुणाष्टकम् । श्रियोबीजे श्रियो लाभो मायाबीजे रिपुक्षयः ॥ भैरवेण तु बीजेन खे चरेद्व सुरादिभि ।

अर्थात् वाग्भवबीज से शरीर में क्षोभ, माया बीज से आठ गुणा फल, श्रीबीज से श्री का लाभ, मायाबीज से शत्रु का नाश तथा भैरवबीज से साधक आकाश में देवता आदि के साथ विचरण करता है।

इति पठित्वामूलेन स्नानपयत्वि सिन्दूरमाल्यादिनालंकृत्य देव्यग्रे निधाय गन्धमिश्रितार्घ्योदकेन मूलेन त्रिः संप्रोक्ष्यं कृताञ्जलिः प्रार्थयेत् ।

आधी रात को सब लक्षणों से युक्त पाँच वर्ष के बकरे आदि पशु को लाकर "ॐ वाराही यमुना गङ्गा करतोया सरस्वती। कावेरी चन्द्रभागा च सिन्धु भैरव सागराः ।। १ ।। अजस्नाने महेशानि सान्निध्यमिह कल्पय । पशुपाश विनाशाय हेमकूटस्थिताय च ।। २ ।। पराय परमेष्ठिने हुंकाराय च मूर्तये ।। ३ ।।" यह पढ़कर मूलमन्त्र से स्नान कराकर सिन्दूर और माला से उसे अलंकृत करके देवी के सामने रखकर गन्धमिश्रित अर्घोदक से मूलमन्त्र से तीन बार संप्रोक्षण करके हाथ जोड़कर प्रार्थना करे ।

"छाग त्वं बलिरूपेण महाभाग्यादुपस्थितः। प्रणमामि सदा भक्त्या रूपिणं बलिरूपिणम् ।। १ ।। चण्डिकाप्रीतिकामस्य दातुरापद्विनाशिने । चण्डिकाबलिरूपाय बले तुभ्यं नमोनमः ।। २ ।। यज्ञार्थे पशवः सृष्टाः स्वयमेव स्वयंभुवा । अतस्त्वां घातयिष्यामि तस्माद्यज्ञे वधोऽवधः ।। ३ ।।

इससे प्रार्थना करके इस प्रकार पार्श्वपूजन करे :

पार्श्वे : ॐ जयन्त्यै नमः १ । ॐ मंगलायै नमः २ । ॐ काल्यै नमः ३ । ॐ भद्रकाल्यै नमः ४ । ॐ मानस्तोकायै नमः ५ । ॐ विजयायै नमः ६ । ॐ अपराजितायै नमः ७ । मध्ये : ॐ अनन्तायै नमः ८ ।

इससे पूजा करके प्रत्यङ्ग की इस प्रकार पूजा करे :

ॐ रुधिरवदनायै नमः इति शिरसि १ । ॐ चण्डिकायै नमः इति कपोले २ । ॐ चन्द्रर्काभ्यां नमः इति चक्षुषोः ३ । ॐ वृहस्पतये नमः इति कर्णयोः ४ । ॐ सरस्वत्यै नमः इति नासायाम् ५ । ॐ उग्रदन्तिकायैनमः इति जिह्वयाम् ६ । ॐ महदन्तिकायै नमः इति ग्रीवायाम् ७ । ॐ पृथिव्यै नमः इति उदरे ८ । ॐ धर्माय नमः इति जंघाचतुष्टये ९ ।

इससे पूजा करके जल लेकर :

ह्रीं श्रीं वरुणमंडलाधिष्ठितविग्रहायै पशुरूप चण्डिकायै इमं पशुं प्रोक्षामि स्वाहा ।

इससे पशु का प्रोक्षण करके तिल, कुश तथा जल लेकर :

देशकालौ संकीर्त्य अमुकगोत्रः श्री अमुक शर्माहंछागसमसंख्याकपंचवर्षावच्छिन्नश्रीमद्दुर्गादेव्याः प्रीतिकामोऽहमेताञ्छागान्वह्निदैवतान्भगवति श्रीदुर्गे देवि तुभ्यं घातयिष्ये ।

इससे सङ्कल्प करके इस प्रकार खङ्ग पूजा करे : खङ्ग को सामने रखकर

"ॐ कृष्णं पिनाकपाणिं च कालरात्रिस्वरूपिणम्। उग्रं रक्तास्यनयनं रक्तमाल्यानुलेपनम् ।। १ ।। रक्ताम्बरधरं चैव पाशहस्तं कुटुम्बिनम् । पीयमानं च रुधिर भुञ्जानं त्रव्यसंहतिम् ।। रसना त्वं चण्डिकायाः सुरलोकप्रसाधिकाः ।"

इससे खड्ग का ध्यान करके :

ॐ ह्रीं ह्रीं खङ्ग आं कालिकालि वज्रेश्वरीलोहदण्डाय नमः इति गन्धादिभिस्त्रिः संपूज्य खङ्गोपरि सिन्दूरादिना ह्रींकारं विलिख्य । "ॐ खङ्गाय नमः" इति सम्पूज्य बलिकर्णे पशुगायत्रीं श्रावयेत् । तत्र मन्त्रः । ॐ ह्रीं "बलिरूपाय विद्महे । देवीप्रियाय धीमहि । तन्नः पशुः प्रचोदयात्" । इति बलिकर्णे श्रावयित्वा खङ्गं हस्तेनादाय प्रार्थयेत् ।

"ॐ ह्रीं ह्रीं खङ्ग आं कालिकालि वज्रेश्वरीलोहदण्डाय नमः"

इससे गन्ध आदि से तीन बार पूजा करके सिन्दूर आदि से ह्रींकार लिख कर "ॐ खङ्गाय नमः" इससे पूजा करके बलि के बकरे के कान में पशु गायत्री सुनावे । उसमें मन्त्र यह है "ॐ ह्रीं बलिरूपाय विद्महे । देवी प्रियाय धीमहि तन्नः पशुः प्रचोदयात् ।।" इसे बलि के कान में सुनाकर तलवार हाथ में लेकर इस प्रकार प्रार्थना करे :

"ॐ असिर्विशसनः खड्गस्तीक्ष्णधारो दुरासदः । श्री गर्भौ विजयश्चैव धर्मपाल नमोस्तु ते ॥ १ ॥ इत्यष्टौ तव नामानि स्वयमुक्तानि वेधसा। नक्षत्रं कृत्तिका ते तु गुरुर्देवो महेश्वर : ॥२॥ रोहिण्यश्च शरीरं ते धाता देवो जनार्द्दनः। पिता पितामहो देवस्त्वं मां पालय सर्वदा ॥ ३ ॥ नीलजीमूतसंकाशस्तीक्ष्णदंष्ट्रः कृशोदरः । भावशुद्धो महाश्च अतितेजास्तथैव च ॥ ४ ॥ इयं येन धृता क्षोणी हतश्च महिषासुरः । तीक्ष्णधाराय शुद्धाय तस्मै खड्गाय ते नमः ॥ ५ ॥ चण्डिकारसनासि त्वमेकघातेन घातय ॥ ६ ॥"

इससे खड्ग की प्रार्थना करके :

"हे वज्रासुरनाशाय देवकार्यार्थतत्पर ॥ पशुं छिन्धि स्वयं शीघं खड्गनाथ नमोस्तु ते ॥ १ ॥ यज्ञार्थे पशवः सृष्टा यज्ञार्थे पशुघातनम् अतस्त्वां घातयिष्यामि तस्माद्यज्ञे वधोऽवधः ॥ २ ॥

यह पढ़कर :

पशुपाशाय विद्महे । विप्रकर्णाय धीमहि । तन्नश्छागः प्रचोदयात् मूलं पाठित्वा श्रीदुर्गे देवी इमं छागबलिं पुण्यमहं प्रददे इति बलिस्कन्धे खड्गं दत्त्वा सकलं रुधिरं मुण्डं च देव्यग्रे कृत्वा समभागेन संपूर्ण परमं कविर्दापयेन्मांससमीपजं दीपम् । क्रौं क्रौं नमोस्तुनमनेन प्रतिमुण्डं दद्यात्ततस्तर्पयेदेभिः ।

मूलमन्त्र का पाठ करके "श्री दुर्गे देवी इमं छागबलिं तुभ्यमहं प्रददे" इससे बलि के कन्धे पर खड्ग देकर सम्पूर्ण रुधिर और मुण्ड देवी के आगे करके "समभागेन सम्पूर्ण परमं कविर्दपेन्मांससमीपजं दीपम् । क्रौं क्रौं नमो नमः इससे प्रत्येक मुण्ड देवे और मन्त्रों से तर्पण करे :

ॐ चामुण्डां तर्पयामि नमः इति पूर्वे ॥ १ ॥ ॐ योगिनीं तर्पयामि नमः इति दक्षिणे ॥ २ ॥ ॐ डाकिनीं तर्पयामि नमः इति पश्चिमे ॥ ३ ॥ ॐ भैरवीं तर्पयामि नमः इति उत्तरे ॥ ४ ॥ ॐ विदारिकां तर्पयामि नमः इति आग्न्येयाम् ॥ ५ ॥ पापराक्षसीं तर्पयामि नमः इति नैर्ऋत्ये ॥ ६ ॥ ॐ पूतनां तर्पयामि नमः इति वायव्ये ॥ ७ ॥ ॐ कालिकां तर्पयामि नमः इत्यैशान्याम् ॥ ८ ॥

इस प्रकार मांस से तर्पण करके ।

ॐ अद्य पञ्चवर्षावच्छिन्न श्रीदुर्गा देव्याः प्रीतिकाम इदं छागरुधिरं समुण्डं विष्णुदैवतं भगवती श्रीदुर्गे देवी दुभ्यमहं प्रददे ।

इससे देवी को समर्पित करके शेष से :

"ॐ बलिं गृह्णंत्विमं देवा आदित्या वसवस्तथा । मरुतो येश्विनौ रुद्राः सुपर्णाः पन्नगा ग्रहाः ॥ १ ॥ असुरा यातुधानाश्च पिशाचोरगराक्षसाः डाकिन्यो यक्षवेताला योगिन्यः पूतनाः शिवाः ॥ २ ॥ जृम्भिकाः सिद्धगंधर्वा मल्ला विद्याधरा नगाः दिक्पालाः लोकपालाश्च ये च विघ्नविनाश काः ॥ ३ ॥ जगतां शांतिकर्तारो ब्रह्माद्याश्च महर्षयः । मा विघ्नो मा च मे पापं मा संतु परिपंथिनः ॥ ४ ॥ सौम्या भवन्तु तृप्ताश्च भूतप्रेताः सुखावहाः ॥ ५ ॥"

इससे निवेदन कर स्नान करके तिलक लगाकर "खड्गिनी शूलिनी" इस एक-एक मन्त्र से स्तुति करके नमस्कार करके पुष्पाञ्जलि देकर :

"रूपं देहि यशो देहि भगं भगवति देहि मे । पुत्रान्देहि धनं देहि सर्वकामांश्च देहि मे ।"

इससे प्रार्थना करे ।

इति पशुबलिः

इति श्रीदुर्गापद्धतिः समाप्ता ।

श्रीगणेशायनमः

अथ दुर्गासप्तशती

संकल्प :

अद्येत्यादिपूर्वो० श्रीमहाकाली महालक्ष्मी महासरस्वती देवताप्रीत्यर्थं: चण्डीसप्तशतीपाठाख्यं कर्म करिष्ये । तदङ्गत्वेनादौ कवचार्गलाकीलकपठनमाद्यन्तयोरष्ठोत्तरशतसंख्यनवार्णजपपूर्वकं क्रमेण रात्रिसूक्तदेवीसूक्त पठनमन्ते रहस्यत्रयपठनं च करिष्ये । इति संकल्प्य ।

इस प्रकार संकल्प करके :

"नमोदेव्यैमहादेव्यैशिवायैसततं नमः । नमः प्रकृत्यैभद्रायैनियताः प्रणताःस्मताम् ।।" इस मन्त्र से पञ्जचोपचार द्वारा पुस्तकपूजा करे ।

श्रीरस्तु । श्रीगणेशायनमः । ॐ नमश्चचिण्डकायै ।

अथ देव्याः कवचम्

विनियोगः ॐ अस्य श्रीचण्डीकवचस्य ब्रह्मा ऋषिः, अनुष्टुप्छन्दः, चामुण्डा देवता, अङ्गस्यासोक्तमात्तरो बीजम्, दिग्बन्धदेवतास्तत्त्वम्, श्रीजगदम्बाप्रीत्यर्थे सप्तशतीपाठाङ्गत्वेन जपे विनियोगः ।

ॐ नमश्चण्डिकायैः

मार्कण्डेय उवाच : ॐ यद्गुह्यं परमं लोके सर्वरक्षाकरं नृणाम् ।
यन्न कस्यचिदाख्यातं तन्मे ब्रूहि पितामह ॥ १ ॥

ब्रह्मोवाच :

अस्ति गुह्यतमं विप्र सर्वभूतोपकारकम् । देव्यास्तु कवचं पुण्यं तच्छृणुष्व महामुने ॥ २ ॥
प्रथमं शैलपुत्री च द्वितीयं ब्रह्मचारिणी । तृतीयं चन्द्रघण्टेति कूष्माण्डेति चतुर्थकम् ॥ ३ ॥ पञ्चमं
स्कन्दमातेति षष्ठं कात्यायनीति च । सप्तमं कालरात्रिति महागौरीति चाष्टमम् ॥ ४ ॥ नवमं
सिद्धिदात्री च नवदुर्गाः प्रकीर्तिताः । उक्तान्येतानि नामानि ब्रह्मणैव महात्मना ॥ ५ ॥ अग्निना
दह्यमानस्तु शत्रुमध्ये गतो रणे । विषमे दुर्गमे चैव भयार्ताः शरणं गताः ॥ ६ ॥ न तेषां जायते
किंचिदशुभं रणसङ्कटे । नापदं तस्य पश्यामि शोकदुःखभयं न हि ॥ ७ ॥ यैस्तु भक्त्या स्मृता

श्री चण्डिका देवी को नमस्कार है । महर्षि मार्कण्डेय जी ने कहा : हे ब्रह्मन् ! जो संसार में अत्यन्त गोपनीय तथा मनुष्यों की सब प्रकार से रक्षा करने वाला हो और जो आपने अब तक किसी दूसरे के सामने प्रकट नहीं किया हो, ऐसा कोई साधन मुझे बताइये ॥ १ ॥

ब्रह्मा जी ने कहा – हे महामुने, अत्यन्त गुप्त और सब प्राणियों का उपकारक देवी का जो पवित्र कवच है, वह मैं आपसे बतलाता हूँ, उसे श्रवण कीजिये ॥ २ ॥

प्रथम शैलपुत्री, दूसरी ब्रह्मचारिणी, तीसरी चंद्रघंटा, चौथी कूष्मांडा, पाँचवी स्कंन्दमाता, छठीं कात्यायनी, सातवीं कालरात्री, आठवीं महागौरी और नवीं सिद्धिदात्री ये नवदुर्गा हैं । इन नामों का माहात्म्य ब्रह्मा ने प्रतिपादन किया है ॥ ३-५ ॥

आग में जलता हुआ, युद्धमें शत्रुओं से घिरा हुआ अथवा अत्यन्त दुःख में पड़कर भयभीत होकर जो मनुष्य भगवती दुर्गा की शरण में आता है, उसका कुछ भी अशुभ नहीं होता । युद्ध के समय संकट में भी उसके ऊपर कोई आपत्ति नहीं दिखाई पड़ती । शोक, दुःख तथा भय भी उसे प्राप्त नहीं करते ॥ ६-७ ॥

नूनं तेषां वृद्धिः प्रजायते। ये त्वां स्मरन्ति देवेशि रक्षसे तात्र संशयः ॥ ८॥ प्रेतसंस्था तु चामुण्डा वाराही महिषासना। ऐन्द्री गजसमारूढा वैष्णवी गरुडासना ॥ ९ ॥ माहेश्वरी वृषारूढा कौमारी शिखिवाहना। लक्ष्मीः पद्मासना देवी पद्महस्ता हरिप्रियाः ॥ १० ॥ श्वेतरूपधरां देवी ईश्वरी वृषवाहना। ब्राह्मी हंससमारूढा सर्वाभरणभूषिता ॥ ११ ॥ इत्येता मातरः सर्वा सर्वयोगसमन्विताः। नानाभरणशोभाढ्या नानारत्नोपशोभिताः ॥ १२ ॥ दृश्यन्ते रथमारूढा देव्यः क्रोधसमाकुलाः। शंखं चक्रं गदां शक्तिं हलं च मुसलायुधम् ॥ १३ ॥ खेटकं तोमरं चैव परशुं पाशमेव च। कुन्तायुधं त्रिशूलं च शार्ङ्गमायुधमुत्तमम् ॥ १४ ॥ दैत्यानां देहनाशाय भक्तानामभयाय च। धारयन्त्यायुधानीत्थं देवाना च हिताय वै ॥ १५॥ नमस्तेऽस्तु महारौद्रे महाघोरपराक्रमे। महाबले महोत्साहे महाभयविनाशिनि ॥ १६ ॥ त्राहि मां देवि दुष्प्रेक्ष्ये शत्रूणां भयवर्द्धिनि। प्राच्यां रक्षतु मामैन्द्री आग्नेयामग्निदेवता ॥ १७ ॥ दक्षिणेऽवतु वाराही नैर्ऋत्यांखड्गधारिणी। प्रतीच्यां वारूणी रक्षेद् वायव्यां मृगवाहिनी ॥ १८ ॥ उदीच्यां पातुं कौमारी ऐशान्यां शूलधारिणी। ऊर्ध्वं ब्रह्माणी मे रक्षेदधस्ताद् वैष्णवी तथा ॥ १९ ॥ एवं दश दिशो रक्षेच्चामुण्डा शववाहना। जया मे चाग्रतः पातु विजया पातु पृष्ठतः ॥ २० ॥ अजिता वामपार्श्वे तु दक्षिणे चापराजिता। शिखामुद्योतिनी रक्षेदुमा मूर्ध्नि व्यवस्थिता ॥ २१ ॥ माला धरी ललाटे च भ्रुवौ रक्षेद् यशस्विनी। त्रिनेत्रा च भ्रुवोर्मध्ये यमघण्टा च नासिके ॥ २२ ॥ शङ्खिनी चक्षुषोर्मध्ये श्रोत्रयोर्द्धारवासिनी।

जो मनुष्य भक्तिपूर्वक देवी का स्मरण करता है, निश्चय ही उसकी अभिवृद्धि होती है। हे देवेश्वरि; जो तुम्हारा चिन्तन करता है, उसकी रक्षा तुम निश्चय ही
करती हो, इसमें लेश मात्र सन्देह नहीं है। चामुण्डा प्रेत पर बैठी हैं। वाराही भैंसे पर आसीन है। ऐन्द्री हाथी तथा वैष्णवी देवी गरुड पर हैं। माहेश्वरी बैल पर आरूढ़ हैं कौमारी मयूर पर तथा विष्णु भगवान की प्रिया श्रीलक्ष्मी जी, जो हाथ में कमल लिए हुई हैं, कमल के आसन पर आरूढ़ हैं ॥ ८ १० ॥

श्वेतरूप धारण करके ईश्वरी देवी बैल पर और समस्त आभूषणों से सुशोभित ब्राह्मी हंस पर विराजमान हैं। इस प्रकार से समस्त देवियाँ सभी योगशक्तियों से युक्त होकर विविध भाँति के आभूषणों तथा रत्नों से शोभायमान हो रही हैं।

ये समस्त देवियाँ क्रोधयुक्त होकर रथ पर बैठी हुई दिखाई देती हैं। शङ्ख, चक्र, गदा, शक्ति, हल, मुसल, खेटक, तोमर, परशु, पाश, माला तथा त्रिशूल और उत्तम आयुध, शार्ङ्गधनुष आदि अपने हाथों में धारण करती हैं। ये देवियाँ दैत्यों का शरीर नाश करने, भक्तों को अभयदान देने तथा देवताओं के हित के लिए ही इन शस्त्रों को धारण करती हैं ॥ १३-१५ ॥

महान् रौद्ररूप को धारण करने वाली, अत्यन्त घोर पराक्रम वाली, महान् बल और उत्साह वाली, महान् भय को नाश करने वाली हे देवि ! तुम्हें नमस्कार है। कठिनता से दर्शन देनेवाली, शत्रुओं के भय को बढ़ाने वाली हे देवि ! मेरी रक्षा करो। पूर्व दिशा में ऐन्द्री (इन्द्रशक्ति), अग्निकोण में अग्निशक्ति, दक्षिण दिशा में वाराही और नैर्ऋत्य कोण में खड्ग-धारिणी, पश्चिम दिशा में वारुणी तथा वायुकोण में मृगवाहिनी मेरी रक्षा करे ॥ १७-१८ ॥

उत्तर दिशा में कौमारी, ईशानकोण में शूलधारण करने वाली मेरी रक्षा करें। ब्रह्माणी ऊपर से तथा वैष्णवी नीचे से एवं शव (मुर्दे) पर बैठी हुई चामुण्डा देवी दश दिशाओं से, जया आगे से तथा विजया देवी पीछे से अजिता बायीं ओर से, अपराजिता दाहिनी ओर से और उमा देवी सिर पर उपस्थित होकर मेरी रक्षा करें ॥ १९-२१ ॥

मालाधारिणी माथे की ओर यमघण्टा मेरी भौहों की रक्षा करें। त्रिनेता भौहों के मध्यभाग की और यमघण्टा नासिका की रक्षा करें ॥ २२ ॥

कपोली कालिका रक्षेत् कर्णमूले तु शाङ्करी ॥ २३ ॥ नासिकायां सुगन्धा च उत्तरोष्ठे च चर्चिका। अधरे चामृतकला जिह्वायां च सरस्वती ॥ २४ ॥ दन्तान् रक्षतु कौमारी कण्ठदेशे तु चण्डिका। घण्टिकां चित्रघण्टा च महामाया च तालुके ॥ २५ ॥ कामाक्षी चिबुकं रक्षेद् वाचं मे सर्वमङ्गला। ग्रीवायां भद्रकाली च पृष्ठवंशे घनुर्धरी ॥ २६ ॥ नीलग्रीवा बहिःकण्ठे नलिकां नलकूबरी। स्कन्धयोः खड्गिनी रक्षेद् बाहू मे वज्रधारिणी ॥ २७ ॥ हस्तयोर्दण्डिनी रक्षेदम्बिका चांगुलीषु च। नखाञ्छूलेश्वरी रक्षेत्कुक्षौ रक्षेत्कुलेश्वरी ॥ २८ ॥ स्तनो रक्षेन्महादेवी मनःशोकविनाशिनी। हृदये ललिता देवी उदरे शूलधारिणी ॥ २९ ॥ नाभौ च कामिनी रक्षेद् गुह्यं गुह्येश्वरी तथा। पूतना कामिका मेढ्रं गुदे महिषवाहिनी ॥ ३० ॥ कट्यां भगवती रक्षेज्जानुनी विन्ध्यवासिनी। जंघे महाबला रक्षेत्सर्वकामप्रदायिनी ॥ ३१ ॥ गुल्फयोर्नारसिंही च पादपृष्ठे तु तैजसी। पादांगुलीषुश्री रक्षेत्पादाधस्तलवासिनी ॥ ३२ ॥ नखान् दंष्ट्राकराली च केशांश्चैवोर्ध्वकेशिनी। रोमकुपेषु कौबेरी त्वचं वागीश्वरी तथा ॥ ३३ ॥ रक्तमज्जावसामांसान्यस्थिमेदांसि पार्वति। अन्त्राणि कालरात्रिश्च पितं च मुकुटेश्वरी ॥ ३४ ॥ पद्मावती पद्मकोशे कफे चूड़ामणिस्तथा। ज्वालामुखी नखज्वालांभेद्या सर्वसन्धिषु ॥ ३५ ॥ शुक्रं ब्रह्माणी मे रक्षेच्छायां छत्रेश्वरी तथा। अहंकारं मनो बुद्धिं रक्षेन्मे धर्मधारिणी ॥ ३६ ॥ प्राणापानौ तथा व्यानमुदानं च समानकम्। वज्रहस्ता च मे रक्षेत्प्राणं कल्याणशोभना ॥ ३७ ॥ रसे रूपे च गन्धे च शब्दे स्पर्शे च योगिनी। सत्त्वं रजस्तमश्चैव

आँखों के मध्य में शङ्खिनी और कानों में द्वारवासिनी रक्षा करें। कालिका कपोलों की और शाङ्करी कानों के जड़ की रक्षा करें। नासिका की सुगन्धा और ऊपर के ओठ की चर्चिका देवी रक्षा करें। अमृतकला नीचे के ओठ तथा सरस्वती जिह्वा की रक्षा करें ॥ २३-२४ ॥

कौमारी दाँतों की और चण्डिका कण्ठ प्रदेश की रक्षा करें। चित्रघण्टा गले की घण्टी और तालु की महामाया रक्षा करें ॥ २५ ॥

कामाक्षी ठोढ़ी की और सर्वमंगला वाणी की रक्षा करें। भद्रकाली गर्दन की और धनुर्धरी पीठ की रक्षा करें। नीलग्रीवा कण्ठ के बाहरी भाग में और नलकूबरी कण्ठ की नली में रक्षा करें। दोनों कानों की खड्गिनी, और बज्रधारिणी मेरी दोनों भुजाओं की रक्षा करें ॥ २६-२७ ॥

दण्डिनी दोनों हाथों की रक्षा करें; अम्बिका अंगुलियों की रक्षा करें। सभी नखों को शूलेश्वरी रक्षा करें। कुक्षि (पेट) में रहकर कुलेश्वरी रक्षा करें ॥ २८ ॥

महादेवी दोनों स्तनों की और शोकविनासिनी मन की रक्षा करें। ललिता देवी हृदय और शूलधारिणी उदर में रक्षा करें। नाभि में कामिनी, गुह्यस्थान की गुह्येश्वरी, लिङ्ग की पूतना और कामिका तथा गुदा की महिषवाहिनी रक्षा करें ॥ २९-३० ॥

कमर में भगवती और घुटनों की विन्ध्यवाहिनी रक्षा करें। सभी कामनाओं को देनेवाली महाबला दोनों जंघों की रक्षा करे। नारसिंही दोनों घुट्टियों की तथा तैजसी दोनों चरणों के निचले भाग की रक्षा करें। श्री देवी पैरों की अंगुलियों और तलवासिनी पैरों के तलुओं में रहकर रक्षा करें ॥ ३१-३२ ॥

दंष्ट्राकराली देवी नखों की और ऊर्ध्वकेशिनी देवी केशों की रक्षा करें। कौवेरी रोमछिद्रों में रक्षा करें और वागीश्वरी त्वचा की रक्षा करें। रक्त, मज्जा, वसा, मांस, हड्डी और मेद की पार्वती रक्षा करें। आँतों की कालरात्रि और पित्त की मुकुटेश्वरी रक्षा करें ॥ ३३-३४ ॥

कमल कोषों में देवी पद्मावती और कफ में चूड़ामणि रक्षा करें। ज्वालामुखी नखतेजों की रक्षा करें। समस्त सन्धियों में रहकर अभेद्या देवी रक्षा करें। ब्रह्माणी मेरे वीर्य की रक्षा करें। छत्रेश्वरी, छाया और धर्म धारिणी देवी अहङ्कार, मन और बुद्धि की रक्षा करें ॥ ३५-३६ ॥ मेरे प्राण, अपान, व्यान, उदान और समान की वज्रहस्ता देवी रक्षा करें। कल्याणशोभना देवी मेरे प्राणों की रक्षा करें। रस, रूप, गन्धा, शब्द और स्पर्श में स्थिर होकर योगिनी देवी रक्षा करें। सत्त्व, रज और तमोगुण की नारायणी देवी रक्षा करें ॥ आयु की वाराही रक्षा करें। वैष्णवी धर्म की रक्षा करें तथा चक्रिणी देवी यश, कीर्ति, लक्ष्मी, धन तथा विद्या की रक्षा करें ॥ ३७-३९ ॥

रक्षेन्नारायणी सदा ॥ ३८॥ आयू रक्षतु वाराही धर्मं रक्षतु वैष्णवी। यशः कीर्तिं च लक्ष्मीं च धनं विद्यां च चक्रिणी ॥ ३९॥ गोत्रमिन्द्राणि मे रक्षेत्पशून्मे रक्ष चण्डिके । पुत्रान् रक्षेन्महालक्ष्मीभार्यां रक्षतु भैरवी ॥ ४०॥ पन्थानं सुपथा रक्षेन्मार्गं क्षेमकरी तथा। राजद्वारे महालक्ष्मीर्विजया सर्वतः स्थिता ॥ ४१ ॥ रक्षाहीनं तु यत्स्थानं वर्जितं कवचेन तु। तत्सर्वं रक्ष मे देवि जयन्ती पापनाशिनी ॥ ४२ ॥ पदमेकं न गच्छेतु यदीच्छेच्छुभमात्मनः । कवचेनावृत्तो नित्यं यत्र यत्रैव गच्छति ॥ ४३ ॥ तत्र तत्रार्थलाभश्च विजयः सार्वकामिकः । यं यं चिन्तयते काम तं तं प्राप्नोति निश्चितम् । परमैश्वर्यमतुलं प्राप्स्यते भूतले पुमान् ॥ ४ ॥ निर्भयो जायते मर्त्यः संग्रामेष्वपराजितः । त्रैलोक्ये तुं भवेत्पूज्यः कवचेनावृतः पुमान् ॥ ४५ ॥ इदं तु देव्याः कवचं देवानामपि दुर्लभम् । यः पठेत्प्रयतो नित्यं त्रिसन्ध्यं श्रद्धयान्वितः ॥ ४६ ॥ दैवी कला भवेत्तस्य त्रैलोक्येष्वपराजितः । जीवेदं वर्षशतं साग्रमपमृत्युविवर्जितः ॥ ४७॥ नश्यन्ति व्याधयः सर्वे लूताविस्फोटकादयः । स्थावरं जङ्गमं चैव कृत्रिमं चापि यद्विषम् ॥ ४८॥ अभिचाराणि सर्वाणि मन्त्रयन्त्राणि भूतले । भूचराः खेचराश्चैव जलजाश्चोपदेशिकाः ॥ ४९॥ सहजा कुलजा माला

हे इन्द्राणि ! आप मेरे गोत्र की रक्षा करें । चण्डिके ! आप मेरे पशुओं की रक्षा करें । पुत्रों की महालक्ष्मी और पत्नी की भैरवी रक्षा करें । सुपथा मेरे पथ और क्षेमङ्करी मार्ग की रक्षा करें । महालक्ष्मी राजा के दरबार में स्थिर होकर रक्षा करें और सब दिशाओं में स्थिर रहने वाली विजया देवी मेरी रक्षा करें ॥४०-४१॥

कवच में जिस स्थान का उल्लेख नहीं है, अतएव रक्षा से रहित उस स्थान की पापों से रक्षा करनेवाली विजयशालिनी देवी रक्षा करें । यदि मनुष्य अपना कल्याण चाहे तो कवच के पाठ बिना एक पग भी न जाय । कवच का पाठक जहाँ कहीं भी रहता है, वहाँ उसे धन का लाभ होता है और सभी प्रकार की अभिलाषाओं की पूर्ति एवं विजय की प्राप्ति होती है । कवचपाठी मनुष्य जिस कार्य की इच्छा करता है, उसकी पूर्ति उसे अवश्य ही होती है वह पुरुष इस पृथ्वी पर अतुल एवं महान् ऐश्वर्य पाता है ॥४२-४४॥

कवच से सुरक्षित मनुष्य निर्भय हो जाता है तथा युद्ध में उसकी पराजय नहीं होती तीनों लोकों में वह पूजनीय होता है ॥४५॥

देवी का यह कवच देवताओं के लिए भी दुर्लभ है। जो मनुष्य श्रद्धापूर्वक पवित्र हृदय से प्रतिदिन तीनों सन्ध्याओं (प्रातः, मध्याह्न और सायं) में इसका पाठ करता है, उसे दैवीकला अर्थात् देवताओं की सम्पत्ति प्राप्त होती है, वह तीनों लोकों में विजय प्राप्त करता है और अकाल मृत्यु से रहित होकर एक सौ से भी अधिक वर्षों तक जीवित रहता है ॥४५ ४७॥

तथा लूता (दाद आदि चर्म रोग), चेचक आदि उसकी सभी बीमारियाँ नष्ट हो जाती हैं। भांग, धतूरे तथा कनेर आदि स्थावर विष, सांप और बिच्छू आदि के काटने से चढ़ा हुआ जङ्गम विष अफीम एवं तेल, मधु एवं घी के संयोग से बनने वाला कृत्रिम विष - ये सभी विष दूर हो जाते हैं – उनका कोई प्रभाव नहीं पड़ता ॥४८॥

इस पृथ्वी पर मारण, मोहन आदि जो सभी अभिचारिक प्रयोग हैं तथा जितने मन्त्र, यन्त्र हैं वे सब इस कवच को हृदय में धारण करने वाले मनुष्य को देखकर नष्ट हो जाते हैं। इतना ही नहीं, पृथ्वी पर विचरनेवाले ग्राम देवता, आकाशगामी सूर्यादिदेव, विशेष जल के योग से उत्पन्न वरुणगण, उपदेशमात्र से सिद्ध होने वाले शूद्रदेवता, सहज अर्थात् वात-पित्त तथा कफ के वैषम्य से उत्पन्न ज्वरादि, कुलज अर्थात् कुलदेवता, कण्ठमाला, डाकिनी (चुड़ैल), शाकिनी (डाइन), अन्तरिक्षचर और आकाश

डाकिनी शाकिनी तथा । अन्तरिक्षचरा घोरा डाकिन्यश्च महाबलाः ॥ ५० ॥ ग्रहभूतपिशाचाश्च यक्षगन्धर्वराक्षसाः । ब्रह्मराक्षसवेतालाः कूष्माण्डा भैरवादयः ॥ ५१ ॥ नश्यन्ति दर्शनात्तस्य कवचे हृदि संस्थिते । मानोन्नतिर्भवेद् राज्ञस्तेजोवृद्धिकरं परम् ॥ ५२ ॥ यशसा वर्द्धते सोऽपि कीर्तिमण्डितभूतले । जपेत्सप्तशतीं चण्डीं कृत्वा तु कवचं पुरा ॥ ५३ ॥ यावद्भूमण्डलं धत्ते सशैलवनकाननम् । तावत्तिष्ठति मेदिन्यां सन्ततिः पुत्रपौत्रिकी ॥ ५४ ॥ देहान्ते परमं स्थानं यत्सुरैरपि दुर्लभम् । प्राप्नोति पुरुषो नित्यं महामायाप्रसादतः ॥ ५५ ॥ लभते परमं रूपं शिवेन सह मोदते ॥ ॐ ॥ ५६ ॥

इति श्रीवाराहपुराणेहरिहरब्रह्मविरचितं देव्याः कवचं समाप्तम्।

में विचरनेवाले देवविशेष, घोर और अतिबलवती डाइन स्त्रियां, भूत, पिशाच, यक्ष, गन्धर्व, राक्षस, ब्रह्मराक्षस (वेताल), कूष्माण्ड (देवविशेष) तथा भैरव आदि अनिष्टकारक देवता भी हृदय में कवच धारण करनेवाले मनुष्य को देखते ही निर्बल हो जाते हैं । इस कवच को धारण करने वाले मनुष्यों को राजाओं के द्वारा सम्मान प्राप्त होता है । यह कवच मनुष्य के तेज का वृद्धिकारक एवं उत्तम है ॥ ४९ ५२ ॥

इस कवच का पाठ करने से मनुष्य कीर्ति से सुशोभित होता है तथा
पृथ्वी पर सुयश के साथ वृद्धि को प्राप्त करता है । जो मनुष्य इस सप्तशती का पाठ करने के समय पहले कवच का पाठ करके तदुपरान्त सप्तशती का पाठ करता है उसकी, जब तक वन, पर्वत और काननों से युक्त यह पृथ्वी स्थिर रहती है तब तक पुत्र, पौत्रादि की वंशपरम्परा बनी रहती है ॥ ५३-५४ ॥

फिर मरने के बाद वह पुरुष भगवती महामाया की कृपा से उस नित्य परम पद को पाता है जो देवताओं के लिए भी दुर्लभ है । वह दिव्य स्वरूप को पाता है और शिवजी के परमानन्द को प्राप्त करता है ॥ ५५-५६ ॥

अथार्गलास्तोत्रम्

विनियोग : ॐ अस्य श्री अर्गलास्तोत्रमन्त्रस्य विष्णुर्ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीमहालक्ष्मीर्देवता, श्री जगदम्बाप्रीतये सप्तशती पाठाङ्गत्वेन जपे विनियोगः ।

ॐ नमश्चण्डिकायै ।

मार्कण्डेय उवाच :

ॐ जयन्ती मङ्गला काली भद्रकाली कपालिनी । दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोऽस्तुते ॥ १ ॥ जय त्वं देवी चामुण्डे जय भूतार्तिहारिणि । जय सर्वगते देवि कालरात्रि

(अर्गला शब्द का अर्थ है हुड़का । जिस प्रकार गृहद्वार की अर्गला बन्द करने से सहसा कोई घर में प्रवेश नहीं कर सकता, उसी प्रकार देवीमाहात्म्य पाठ के पूर्व अर्गला स्तोत्र का पाठ कर लेने से, बाह्यविषय चित्तक्षेत्र में प्रवेश नहीं कर सकते । बहिर्मुख या एकान्त विक्षिप्त चित्त व्यक्ति के लिए चण्डीतत्व में प्रवेश दुरूह है, इसी से परम कारुणिक पूर्वाचार्यों ने चण्डीपाठ के पूर्व, चित्त की वृत्तितों को कथञ्चित् मातृमुखी करने के लिए अर्गलापाठ का विधान किया है ।)

चण्डिका देवी को नमस्कार है ।

जयन्ती, मङ्गला, काली, भद्रकाली, कपालिनी, दुर्गा, क्षमा, शिवा, धात्री, स्वाहा और स्वधास्वरूपिणी देवियों को नमस्कार है ॥ १ ॥

नमोऽस्तु ते ॥ २ ॥ मधुकैटभविद्राविविधातृवरदे नमः । रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ ३ ॥ महिषासुरनिर्णाशि भक्तानां सुखदे नमः । रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ ४ ॥ रक्तबीजवधे देवि चण्डमुण्डविनाशिनि । रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ ५ ॥ शुम्भस्यैव निशुम्भस्य धूम्राक्षस्य च मर्दिनि । रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ ६ ॥ वन्दिताङ्घ्रियुगे देवि सर्वसौभाग्यदायिनि । रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ ७ ॥ अचिन्त्यरूपचरिते सर्वशत्रुविनाशिनि । रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ ८ ॥ नतेभ्यः सर्वदा भक्त्या चण्डिके दुरितापहे । रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ ९ ॥ स्तुवद्भ्यो भक्तिपूर्वं त्वां चण्डिके व्याधिनाशिनि । रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ १० ॥ चण्डिके सततं ये त्वामर्च्चयन्तीह भक्तितः । रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ ११ ॥ देहि सौभाग्यमारोग्यं देहि मे परमं सुखम् । रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ १२ ॥ विधेहि द्विषतां नाशं विधेहि बलमुच्चकैः । रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ १३ ॥ विधेहि देवि कल्याणं विधेहि परमां श्रियम् । रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ १४ ॥ सुरासुरशिरोरत्ननिघृष्टचरणेऽम्बिके ।

हे चामुण्डे देवि ! तुम्हारी जय हो । प्राणिमात्र का कष्ट हरनेवाली देवि, तुम्हारी जय हो, सभी में व्याप्त रहनेवाली देवि, तुम्हारी जय हो, हे कालरात्रि, तुम्हें नमस्कार है ॥ २ ॥

मधु और कैटभ नामक दैत्यों को मारने वाली तथा ब्रह्माजी को वर देने वाली हे देवि ! तुम्हें नमस्कार है । तुम मुझे रूप दो (परमात्मा के साथ एकता), जय (परमात्मस्वरूप का साक्षात्कार) दो, यश (परमात्मतत्वज्ञान से सम्पादित मोक्ष) दो तथा काम, क्रोध, लोभ, मोह आदि शत्रुओं का नाश करो । महिषासुर का नाश करने वाली तथा भक्तों को सुख देने वाली हे देवि, तुम मुझे रूप दो, जय दो, यश दो और शत्रुओं का संहार करो ॥ ३-४ ॥

रक्तबीज नामक दैत्य का बध करनेवाली तथा चण्ड-मुण्ड का विनाश करने वाली हे देवि, तुम मुझे रूप दो, जय दो, यश दो और शत्रुओं का संहार करो ॥ ५ ॥

शुम्भ, निशुम्भ तथा धूम्राक्ष दैत्यों का मर्दन करनेवाली हे देवि, तुम मुझे रूप दो, जय दो और शत्रुओं का संहार करो ॥ ६ ॥

वन्दित दोनों चरणोंवाली तथा समस्त भाग्यों को देनेवाली हे देवि, तुम मुझे रूप दो, जय दो, यश दो और शत्रुओं का संहार करो ॥ ७ ॥

अचिन्त्य रूप और चरित्रोंवाली तथा समस्त शत्रुओं का विनाश करने वाली हे देवि, तुम मुझे रूप दो, जय दो, यश दो और शत्रुओं का संहार करो ॥ ८ ॥

दुःख को दूर करनेवाली हे चण्डिके, भक्तिपूर्वक सदैव नतमस्तक रहनेवालों को तुम रूप दो, जय दो, यश दो और उनके शत्रुओं का संहार करो ॥ ९ ॥

रोगों का नाश करनेवाली हे चण्डिके, तुम भक्तिपूर्वक स्तुति करनेवाले भक्तों को रूप दो, जय दो, यश दो और शत्रुओं का नाश करो ॥ १० ॥

हे चण्डिके, जो तुम्हारी भक्तिसहित निरन्तर पूजा करते हैं, उन्हें रूप दो, जय दो, यश दो और उनके शत्रुओं का नाश करो ॥ ११ ॥

हे देवि, मुझे सौभाग्य और आरोग्य दो, परम सुख दो, रूप दो, जय दो, यश दो और मेरे शत्रुओं का नाश करो ॥ १२ ॥

मुझसे द्वेष रखनेवाले का नाश करो और बल की अभिवृद्धि करो तथा रूप दो, जय दो, यश दो और मेरे शत्रुओं का नाश करो ॥ १३ ॥

हे देवि ! मेरा कल्याण करो और मुझे उत्तम सम्पत्ति दो तथा रूप दो, जय दो, यश दो और शत्रुओं का नाश करो ॥ १४ ॥

रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ १५ ॥ विधावन्तं यशस्वन्तं लक्ष्मीवन्तं जनं कुरु। रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ १६ ॥ प्रचण्डदैत्यदर्पघ्ने चण्डिके प्रणताय मे । रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ १७ ॥ चतुर्भुजे चतुर्वक्त्रसंस्तुते परमेश्वरि । रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ १८ ॥ कृष्णेन संस्तुते देवि शश्वद्भक्त्या सदाम्बिके । रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ १९ ॥ हिमाचलसुतानाथसंस्तुते परमेश्वरि । रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ २० ॥ इन्द्राणीपतिसद्भावपूजितेपरमेश्वरि । रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ २१ ॥ देवि प्रचण्डदोर्दण्डदैत्यदर्पविनाशिनि । रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ २२ ॥ देवि भक्तजनोद्दामदत्तानन्दोदयेऽम्बिके । रूपं देहि जयं देहि यशो द्विषो जहि ॥ २३ ॥ पत्नीं मनोरमां देहि मनोवृत्तानुसारिणीम् । तारिणीं दुर्गसंसारसागरस्य कुलोद्भवाम् ॥ २४ ॥ इदं स्तोत्रंपठित्वा तु महास्तोत्रं पठेन्नरः । स तु सप्तशतीसंख्यावरमाप्नोति सम्पदाम् ॥ २५ ॥

इति देव्या अर्गलास्तोत्रं सम्पूर्णम्

हे अम्बके, देवता और राक्षस अपने मुकुट-रत्नों को आपके चरणों पर घिसते रहते हैं । हे देवि, तुम रूप दो, जय दो, यश दो और शत्रुओं का विनाश करो ॥ १५ ॥

हे देवि, अपने भक्तजनों को विद्वान्, यशस्वी तथा लक्ष्मीवान् बनाओ । मुझे रूप दो, जय दो, यश दो तथा मेरे शत्रुओं का विनाश करो ॥ १६ ॥

बड़े-बड़े दैत्यों के दर्प को चूर्ण करनेवाली हे चण्डिके, मुझ शरणागत को रूप दो, जय दो, यश दो तथा शत्रुओं का विनाश करो ॥ १७ ॥

चतुर्मुख ब्रह्माजी के द्वारा प्रशंसित चार भुजाओं को धारण करनेवाली हे परमेश्वरि, मुझे रूप दो, जय दो, यश दो तथा शत्रुओं का विनाश करो ॥ १८ ॥

हे देवि भगवान् विष्णु निरन्तर तुम्हारी स्तुति करते हैं । मुझे रूप दो, जय दो, यश दो तथा मेरे शत्रुओं का विनाश करो ॥ १९ ॥

हिमालयकन्या पार्वती के स्वामी शिव जी के द्वारा प्रशंसित होनेवाली हे परमेश्वरि, मुझे रूप दो, जय दो, यश दो तथा शत्रुओं का नाश करो ॥ २० ॥

इन्द्राणीपति इन्द्र के द्वारा उत्तम भावों से पूजित हे परमेश्वरि, मुझे रूप दो, जय दो, यश दो तथा शत्रुओं का विनाश करो ॥ २१ ॥

प्रचण्ड भुजदण्डों वाले दैत्यों का दर्प चूर्ण करने वाली हे देवि, रूप दो, जय दो, यश दो तथा शत्रुओं का विनाश करो ॥ २२ ॥

हे अम्बिके देवि, तुम भक्तजनों को सदा असीम आनन्द देनेवाली हो । मुझे रूप दो, जय दो, यश दो तथा मेरे शत्रुओं का विनाश करो ॥ २३ ॥

हे देवि, मन की वृत्तियों के अनुसार चलने वाली तथा कठिन संसार सागर से तारनेवाली श्रेष्ठ कुलोत्पन्न सुन्दर स्वरूपवाली पत्नी मुझे दो ॥ २४ ॥

जो मनुष्य इस स्तोत्र का पाठ करके महास्तोत्र (सप्तशती) का पाठ करता है, वह सप्तशतीपाठ के समान श्रेष्ठ फल को प्राप्त करता है तथा उसे प्रचुर सम्पत्ति भी मिलती है ॥ २५ ॥

अर्गलास्तोत्र समाप्त

अथ कीलकस्तोत्रम्

विनियोग : ॐ अस्य श्री कीलकमन्त्रस्य शिव ऋषिः अनुष्टुप् छन्दः, श्रीमहासरस्वती देवता, श्री जगदम्बाप्रीत्यर्थं सप्तशतीपाठाङ्गत्वेन जपे विनियोगः ।

ॐ नमश्चण्डिकायै ।

मार्कण्डेय उवाच :

ॐ विशुद्धज्ञानदेहाय त्रिवेदीदिव्यचक्षुषे । श्रेयःप्राप्तिनिमित्ताय नमः सोमार्द्धधारिणे ॥ १ ॥
सर्वमेतद् विजानीयान्मन्त्राणामपि कीलकम् । सोऽपि क्षेममवाप्नोति सततं जाप्यतत्परः ॥ २ ॥
सिद्ध्यन्त्युच्चाटनादीनि वस्तूनि सकलान्यपि । एतेन स्तुवतां देवी स्तोत्रमात्रेण सिद्ध्यति ॥ ३ ॥
न मन्त्रं नौषधं तत्र न किञ्चिदपि विद्यते । विना जाप्येन सिद्ध्येत् सर्वमुच्चाटनादिकम् ॥ ४ ॥
समग्राण्यपि सिद्ध्यन्ति लोकशङ्कामिमां हरः । कृत्वाः निमन्त्रयामास सर्वमेवमिदं शुभम् ॥ ५ ॥

(कीलक शब्द का अर्थ इस स्थान पर अभीष्ट सिद्धि का प्रतिबन्धक है जिसको साधारण बोली में शाप कहते हैं । गायत्री आदि अनेक प्रसिद्ध मन्त्रों में किसी न किसी ऋषि या देवता का शाप है और साथ ही साथ उस शाप के उद्धार का भी विधान है । यह कीलक स्तुति भी शापोद्धार विशेष है । सप्तशतीमन्त्रात्मक देवीमाहात्म्य के ऊपर भी महादेवकृत कीलक है । उस कीलक को दूर न करके देवीमाहात्म्य का पाठ करने से वह अभीष्ट फल देने में असमर्थ है । इस शाप का कीलक या यथार्थ रहस्य अधिकार निर्णय है । किस प्रकार क्षेत्र पर आरोहन करके, किस प्रकार मानसिक उन्नति प्राप्त कर, किस प्रकार साधक बल पाकर, चण्डीतत्व में प्रवेश करने से अभीष्ट सिद्धि होती है, उसी का प्रतिपादन कीलक स्तोत्र में है ।)

चण्डिका देवी को नमस्कार है ।

मार्कण्डेय जी ने कहा – जिनके निर्मल ज्ञानरूपी शरीर एवं तीनों वेदरूपी दिव्य तीन नेत्र हैं ऐसे कल्याण के साधनभूत तथा अपने कपाल पर अर्धचन्द्र रूपी मुकुट धारण करनेवाले भगवान शङ्कर को नमस्कार है ॥ १ ॥

मन्त्रों का जो अभिकीलक (मन्त्रों की सिद्धि में विघ्न पहुँचाने वाला शापरूपी कीलक का निवारण करनेवाला) है उसे इस सप्तशती स्तुति को अच्छी तरह से जान करके उपासना करनी चाहिये । जो मनुष्य सप्तशती के अतिरिक्त अन्य मन्त्र का जप करने में तत्पर रहते हैं वे भी कल्याण को प्राप्त करते हैं ॥ २ ॥

उनके भी उच्चाटन आदि सभी कार्य सिद्ध हो जाते हैं । तथापि जो दूसरे मन्त्रों का जप न करके केवल देवी की ही स्तुति करते हैं, उन्हें स्तुतिमात्र से ही देवी सिद्ध हो जाती हैं । उन्हें अपने कार्य में न तो यन्त्र की आवश्यकता पड़ती है, न औषध की ही । बिना जप किये ही उनके सभी उच्चाटन आदि भी सिद्ध हो जाते हैं ॥ ३-४ ॥

लोगों के मन में यह जिज्ञासा थी कि जब सप्तशती की उपासना तथा दूसरे मन्त्रों की उपासना के समान रूप से ही कार्य की सिद्धि होती है, तो इनमें कौन सा साधन उत्तम है ? इस शंका को सामने रखकर भगवान शङ्करजी ने समझाया कि यह सप्तशती नामक सम्पूर्ण स्तोत्र ही सर्वश्रेष्ठ एवं कल्याणप्रद है ॥ ५ ॥

स्तोत्रं वै चण्डिकायास्तु तच्च गुप्तं चकार सः । समाप्तिर्न च पुण्यस्य तां तथावन्नियन्त्रणाम् ॥ ६ ॥ सोऽपि क्षेममवाप्नोति सर्वमेव न संशयः । कृष्णायां वा चतुर्दश्यामष्टम्यां ददाति प्रतिगृह्णाति नान्यन्थैषा प्रसीदति । इत्थंरूपेण कीलेन महादेवेन कीलितम् ॥ ८ ॥ यो निष्कीलां विधायैनां नित्यं जपति सस्फुटम् । स सिद्धः स गणः सोऽपि गन्धर्वो जायते नरः ॥ ९ ॥ न चैवाप्यटतस्तस्य भयं क्वापीह जायते। नापमृत्युवशं याति मृतो मोक्षमवाप्नुयात् ॥ १० ॥ ज्ञात्वा प्रारभ्य कुर्वीत न कुर्वाणो विनश्यति। ततो ज्ञात्वैव सम्पन्नमिदं प्रारभ्यते बुधैः ॥ ११ ॥ सौभाग्यादि च यत्किञ्चिद् दृश्यते ललनाजने । तत्सर्वं तत्प्रसादेन तेन जाप्यमिदं शुभम् ॥ १२ ॥ शनैस्तु जप्यमानेऽस्मिन् स्तोत्रे सम्पत्तिरुच्चकैः । भवत्येव समग्रापि ततः प्रारंभ्यमेव तत् ॥ १३ ॥ ऐश्वर्य यत्प्रसादेन सौभाग्यारोग्य सम्पदः । शत्रुहानिः परो मोक्ष स्तूयते सा न किं जनैः ॥ ॐ १४ ॥

इति देव्याः कीलकस्तोत्रं सम्पूर्णम्

तदनन्तर शिवजी ने चण्डिका देवी के स्तोत्र को गुप्त कर दिया । इस स्तोत्र का पाठ करने से अक्षय पुण्य मिलता है । इसलिये भगवान शङ्कर ने अन्य मन्त्रों की अपेक्षा इसकी श्रेष्ठता निर्णीत की। इसे यथार्थ समझना चाहिये ॥ ६ ॥

दूसरे मन्त्रों का जप करनेवाला उपासक भी यदि इस स्तोत्र का पाठ करे तो निस्सन्देह उसका कल्याण होता है । इसमें तनिक भी सन्देह नहीं । जो मनुष्य कृष्णपक्ष की अष्टमी या चतुर्दशी में एकाग्रचित्त होकर भगवती की सेवा में अपना सर्वस्व अर्पण कर देता है और उसे प्रसादवृद्धि से ग्रहण करता है, उसी के ऊपर भगवती प्रसन्न होती है । इसके अतिरिक्त दूसरा कोई उपाय नहीं । इसी प्रकार महादेवजी ने प्रतिबन्धकरूप कील के द्वारा इस स्तोत्र को कीलित कर रखा है। तात्पर्य यह है कि स्तोत्रपाठ में आए हुए प्रतिबन्ध इस कीलक पाठ से नष्ट हो जाते हैं। यहाँ कीलक शब्द कीलकरूप प्रतिबन्ध के नाशकरूप अर्थ में प्रयुक्त है ॥७-८॥

जो मनुष्य इस प्रकार निष्कीलन विधि करके चण्डिका-स्तोत्र का स्पष्ट उच्चारण करते हुए पाठ करता है, वही सिद्ध होता है, वही देवी का गण होता है और वही गन्धर्व भी होता है ॥ ९ ॥

वह संसार भर में चाहे जहाँ कहीं भी घूमे, उसे कही भी भय नहीं होता । उसे अपमृत्यु नहीं होती, वह बहुत दिनों तक जीवित रहकर अन्त में मोक्ष पाता है ॥

अतः सभी विधि को जानकर ही सप्तशती का पाठ करना चाहिए । बिना विधि समझे पाठ करने पर मनुष्य का विनाश हो जाता है। विद्वान लोग इसीलिए सम्पूर्ण विधि को जानकर ही सप्तशती का पाठ प्रारम्भ करते हैं ॥ ११ ॥

स्त्रियों में सौभाग्य आदि जो कुछ भी दिखाई पड़ता है, वह सब देवी की ही प्रसन्नता का फल है । अतः कल्याणमय इस स्तोत्र का जप शुभ है ॥ १२ ॥

इस स्तोत्र का मन्द स्वर से पाठ करने पर कम फल मिलता है और ऊँचे स्वर से पाठ करने पर पूर्ण फल मिलते हैं । इसलिए ऊँचे स्वर से ही पाठ करना चाहिए ॥ १३ ॥

जिसकी कृपा से ऐश्वर्य, सौभाग्य, आरोग्य, सम्पत्ति, शत्रुओं का विनाश तथा मोक्ष मिलता है, उस देवी की स्तुति मनुष्य क्यों नहीं करता, अर्थात् सभी को अवश्य करना चाहिए ॥ १४॥

कीलकस्तोत्र समाप्त

अथ तन्त्रोक्तं रात्रिसूक्तम्

ॐ विश्वेश्वरीं जगद्धात्रीं स्थितिसंहारकारिणीम्।
निद्रां भगवतीं विष्णोरतुलां तेजसः प्रभुः ॥२॥

ब्रह्मोवाच :

त्वं स्वाहा त्वं स्वधा त्वं हि वषट् कारस्वरात्मिका । सुधा त्वमक्षरे नित्ये त्रिधा मात्रात्मिका स्थिता ॥ २ ॥ अर्धमात्रास्थिता नित्या यानुच्चार्या विशेषतः । त्वमेव सन्ध्या सावित्री त्वं देविजननी परा ॥ ३ ॥ त्वयैतद्धार्यते विश्वं त्वयैतत्सृज्यते जगत् । त्वयैतत्पाल्यते देवि देवित्वमत्स्यन्ते च सर्वदा ॥ ४ ॥ विसृष्टो सृष्टिरूपा त्वं स्थितिरूपा च पालने । तथा संहृतिरूपान्ते जगतोऽस्य जगन्मये ॥ ५ ॥ महाविद्या महामाया महामेधा महास्मृति । महामोहा च भगवती महादेवी महासुरी ॥ ६ ॥ प्रकृतिस्त्वं च सर्वस्व गुणत्रयविभाविनो कालरात्रिर्महारात्रिर्मोहरात्रिश्च दारूणा ॥७॥ त्वं श्रीस्त्वमीश्वरी त्वं ह्रींस्त्वं बुद्धिर्बोधलक्षणा । लज्जा पुष्टिस्तथा तुष्टिस्त्वं शान्तिः क्षान्तिरेव च ॥ ८ ॥ खड्गिनी शूलिनी घोरा गदिनी चक्रिणी तथा । शङ्खिनी चापिनी बाणभुषुण्डी परिघायुधा ॥ ९ ॥ सौम्या सौम्यतराशेषसोम्येभ्यस्त्वतिसुन्दरी । परापराणां परमा त्वमेव परमेश्वरी ॥ १० ॥ यच्च किञ्चित् क्वचिद्वस्तु सदसद्वाखिलात्मिके । तस्य सर्वस्व या शक्तिः सा त्वं किं स्तूयसे तदा ॥ ११ ॥ यया त्वमा जगत्स्रष्टा जगत्पाल्यति यो जगत् । सोऽपि निद्रावशं नीतः कस्त्वां

विश्व की अधीश्वरी, जगत् को धारण करनेवाली, संसार का पालन और संहार करनेवाली तथा तेजस्वरूप भगवान् विष्णु की अनुपम शक्ति योगनिद्रा देवी की ब्रह्माजीं स्तुति करने लगे ॥ १ ॥

ब्रह्माजी ने कहा :

देवि ! तुम्हीं स्वाहा, तुम्हीं स्वधा और तुम्हीं वषट्कार (इन्द्र को यज्ञ का अंश पहुँचानेवाला मन्त्र) हो । अमृत भी तुम्हीं हो । अक्षरों में तीन प्रकार की मात्रा ह्रस्व, दीर्घ, प्लुतरूप तुम्हीं हो । बिना स्वर की सहायता से जिसका स्पष्ट उच्चारण नहीं किया जा सकता है वह अर्धमात्रा व्यञ्जनरूपा, तुम्हीं हो । तुम्हीं सन्ध्यारूपा हो, तुम्हीं गायत्रीरूपा हो । हे देवि ! तुम्हीं सबकी जननी हो ॥ २-३ ॥

तुम्हीं सारे विश्व को धारण करती हो, सृष्टि करती हो, पालन करती हो और प्रलयकाल में पुनः उसका नाश भी करती हो । इस कारण हे जगन्माये ! इस जगत् की उत्पत्ति के समय तुम सृष्टिरूपा हो, पालनकाल में स्थितिरूपा हो तथा कल्पान्त के समय संहाररूपा धारण करनेवाली हो ॥ ४-५ ॥

तुम्हीं महाविद्या, महामाया, महामेधा, महास्मृति और महामोहरूपा हो । महादेवी और महासुरीरूपा भी तुम्हीं हो । तुम्हीं सत्व, रज, तम तीनों गुणों को उत्पन्न करनेवाली सबकी प्रकृति हो । भयङ्कर कलारात्रि, महारात्रि और मोहरात्रि भी तुम्हीं हो । तुम्हीं श्री, ईश्वरी, तुम्हीं ह्रीं एवं बोधस्वरूपा बुद्धि हो । लज्जा, पुष्टि, तुष्टि, शान्ति एवं क्षमारूपिणी भी तुम्हीं हो । तुम्हीं खड्ग, शूल, गदा, चक्र, शङ्ख, धनुष-बाण, भुशुण्डी एवं परिघधारिणी हो ॥ ६-९ ॥

तुम्हीं सौम्या और सौम्यतरा हो । इतना ही नहीं, जितने भी सौम्य एवं सुन्दर पदार्थ हैं, उन सबकी अपेक्षा अत्यधिक सुन्दरी हो । पर और अपर, सबसे परे रहने वाली परमेश्वरी तुम्हीं हो ॥ १० ॥

अखिलात्मिके देवि ! इस अनन्त कोटि ब्रह्माण्ड में जहाँ कहीं भी जो कुछ सत्, असत् पदार्थ हैं, उन सब की शक्तिस्वरूपा तुम्हीं हो । अतएव तुम्हारी स्तुति क्या हो सकती है ? जो इस जगत की सृष्टि, इसका पालन और संहार करते हैं उन्हें भी जब तुमने निद्रा के अधीन कर लिया है, तब तुम्हारी स्तुति करने में कौन समर्थ हो सकता है ? मुझको तथा भगवान् शङ्कर और भगवान् विष्णु को भी तुमने

स्तोतुमिहेश्वरः ॥ १२ ॥ विष्णुः शरीरग्रहणमहमीशानएव च । कारितास्ते यतोऽतस्त्वां कः स्तोतुं शक्तिमान् भवेत् ॥ १३ ॥ सा त्वमित्थं प्रभावैः स्वैरुदारैर्देवि संस्तुता । मोहयैतौ दुराधर्षावसुरौ मधुकैटभौ ॥ १४ ॥ प्रबोधं च जगस्वामी नीयतामच्युतो लघु । बोधश्च क्रियतामस्य हन्तुमेतौ महासुरो ॥ १५ ॥

इति तन्त्रोक्तं रात्रिसूक्तं सम्पूर्णम् ।

ही शरीर धारण करवाया है अतः तुम्हारी स्तुति करने की किस में शक्ति हो सकती है । हे देवि ! तुम्हारे उदार-प्रभाव से ही मैंने तुम्हारी स्तुति की है । ये जो अतीव दुर्धर्ष मधु और कैटभ नामक दो असुर है, उन्हें मोह में डाल दो ,और विश्व के स्वामी भगवान् अच्युत को जगाओ और इन दोनों महासुरों को मारने के लिए उनके भीतर शक्ति विस्फुरित कर दो ॥ ११-१५ ॥

तन्त्रोक्तरात्रिसूक्तसमाप्त ॥

अथ श्रीदेव्यथर्वशीर्षम्

ॐ सर्वेवै देवा देवीमुपतस्थुः कासि त्वं महादेवीति ॥ १ ॥ साब्रवीत्अहं ब्रह्मस्वरूपिणी । मत्तः प्रकृतिपुरुषात्मकं जगत् । शून्यं चाशून्यं च ॥ २ ॥ अहमनन्दानानन्दौ । अहं विज्ञानाविज्ञाने । अहं ब्रह्माब्रह्मणी वेदितव्ये । अहं पञ्चभूतान्यपञ्चभूतानि । अहमखिललं जगत् ॥ ३ ॥ वेदोऽहमवेदोऽहम् । विद्याहमविद्याहम् । अजाहमनजाहम् । अधश्चोर्ध्वं च तिर्यक्चाहम् ॥ ४ ॥ अहं रुद्रेभिर्वसुभिश्चरामि । अहमादित्यैरुत विश्वदेवैः । **अहं मित्रावरुणावुभौ बिभर्मि । अहमिन्द्राग्नी अहमश्विनावुभौ ॥ ५ ॥ अहं सोमं त्वष्टारं भगं दधामि । अहं विष्णुमुरुक्रमं ब्रह्माणमुत प्रजापतिं दधामि ॥ ६ ॥ अहं दधामि**

(देव्यथर्वशीर्ष अथर्ववेद से लिया गया है । इसमें ब्रह्मशक्तिस्वरूपा देवी की महिमा बतायी गई है । इसके पाठ से देवी की कृपा शीघ्र ही प्राप्त हो जाती है । सप्तशती पाठ के साथ-साथ या पृथक् केवल इसी का पाठ किया जाय तो मानव की सभी कामनायें सिद्ध होती हैं । इसी उद्देश्य से इसका समावेश इस पुस्तक में कर दिया गया है ।)

सभी देवता देवी के पास गये और उनसे पूछा : हे महादेवि, तुम कौन हो ? ॥ १ ॥

देवी ने कहा : मैं साक्षात् ब्रह्मस्वरूपा हूँ। मुझसे सत् और असदूरूप संसार उत्पन्न हुआ है । मैं आनन्द और अनान्दरूपा हूँ। मैं विज्ञान और अविज्ञानरूपा हूँ । जानने योग्य ब्रह्म और अब्रह्म भी मैं ही हूँ । पञ्चभूतरूप और अपञ्चभूतरूप भी मैं ही हूँ । सम्पूर्ण संसाररूप मैं ही हूँ ॥ २-३ ॥

वेद और अवेद मैं हूँ । विद्या और अविद्या भी मैं ही हूँ । प्रकृति और अप्रकृति भी मैं ही हूँ। नीचे ऊपर अगल-बगल भी मैं ही हूँ ॥ ४ ॥

मैं एकादशरुद्र एवं सब वस्तुओं के रूप में विचरण करती हूँ। मैं ही द्वादश आदित्य तथा समस्त विश्वेदेवों के रूपों में घूमा करती हूँ। मैं मित्र और वरुण दोनों का, इन्दु तथा अग्नि का और दोनों अश्विनीकुमारों का भरण-पोषण करती हूँ ॥ ५ ॥

मैं सोम, त्वष्टा, पूषा और भग को धारण करती हूँ । मैं ही उरुक्रम (तीनों लोकों को आक्रान्त करने के लिए अपने पैरों को फैलाने वाले) विष्णु, ब्रह्मा और प्रजापति को धारण करती हूँ ॥ ६ ॥

द्रविणं हविष्मते सुप्राव्ये यजमनाय सुन्वते । अहं राष्ट्री सङ्गमनी वसूनां चिकितुषी प्रथमा यज्ञियानाम् । अहं सुवे पितरमस्य मूर्धन्मम योनिरप्स्वन्तः समुद्रे । य एव वेद । स दैवीं सम्पदमाप्नोति ॥ ७ ॥ ते देवा अब्रुवन - नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः । नमः प्रकृत्यै । भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम् ॥ ८ ॥ तामाग्निवर्णा तपसा ज्वलन्तीं वैरोचनीं कर्मफलेषु जुष्टाम् । दुर्गां देवीं शरणं प्रपद्यामहेऽसुरान्नाशयित्र्यै ते नमः ॥ ९ ॥ देवीं वाचमजनयन्त देवास्तां विश्वरूपाः पशवो वदन्ति । सा नो मन्द्रेषमूर्ज दुहाना धेनुर्वागस्मानुप सुष्टुतैतु ॥ १० ॥ कालरात्रीं ब्रह्मास्तुतां वैष्णवीं स्कन्दमातरम् । सरस्वतीमदितिं दक्षदुहितरं नमामः पावनं शिवाम् ॥ ११ ॥ महालक्ष्म्यै च विद्महे सर्वशक्त्यै च धीमहि । तन्नो देवी प्रचोदयात् ॥ १२ ॥ अदितिर्ह्यजनिष्ट दक्ष या दुहिता तव । तां देवा अन्वजायन्त भद्रा अमृतबन्धवः ॥ १३ ॥ कामो योनिः कमला वज्रपाणिर्गुहा हसा मातरिश्वाभ्रमिन्द्रः । पुनर्गुहाः सकला मायया च पुरूच्यैषा विश्वमातादिविद्योम् ॥ १४ ॥ एषाऽऽत्मशक्तिः । एषा विश्वमोहिनी । पाशांकुशधनुर्बाणधरा ।

सोमयज्ञ के द्वारा जो देवताओं को तृप्त करता है, उस यज्ञ का फल रूप धनादि मैं ही प्रदान किया करती हूँ। मैं निखिल ब्रह्माण्ड की ईश्वरी हूँ। मैं उपासकगण को धनादि इष्टफलदात्री हूँ। ब्रह्मरूप और उपास्य देवों में मैं ही प्रधान हूँ। मैं आत्मस्वरूप पर आकाशनिर्माण करती हूँ। मेरा स्थान आत्मस्वरूप को धारण करनेवाली बुद्धि वृत्ति में स्थित है । जो इस प्रकार जानता है, वह दैवी सम्पत्ति को प्राप्त करता है ॥ ७ ॥

इसके बाद उन देवताओं ने कहा : देवी को नमस्कार है, महादेवी और शिवा को सदा नमस्कार है । प्रकृतिरूपिणी और भद्रा को नियमपूर्वक हम नमस्कार करते हैं ॥ ८ ॥

अग्नि के समान रूपवाली, तपस्या के द्वारा प्रज्जवलित कान्तिवाली, कर्मफल पाने के लिए सेवा की जानेवाली दुर्गादेवी, हम तुम्हारी शरण में हैं । राक्षसों का विनाश करनेवाली देवी, तुम्हें नमस्कार है ॥ ९ ॥

देवताओं ने जिस प्रकाशमान वाणी को उत्पन्न किया, उसको अनेक प्रकार के प्राणी बोलते हैं, वह कामधेनु के समान आनन्द को प्रदान करने वाली तथा अन्न और बल देनेवाली वागरूपिणी भगवती उत्तम स्तुति से सन्तुष्ट होकर हमारे पास आये ॥ १० ॥

काल को भी विनष्ट करनेवाली ब्रह्मा के द्वारा स्तुत्य विष्णुशक्ति, पार्वती, सरस्वती, देवमाता अदिति तथा दक्षकन्या (सती), पवित्र करनेवाली और कल्याण करनेवाली देवी को हम नमस्कार करते हैं ॥ ११ ॥

हम महालक्ष्मी को जानते हैं और उन सर्वशक्तिसम्पन्न देवी का ही ध्यान करते हैं । वह देवी हमें सत्कार्य में प्रवृत्त करें ॥ १२ ॥

हे दक्ष ! आपकी जो कन्या अदिति है वह उत्पन्न हुई और उनसे अतिसौम्य और अमर देवता उत्पन्न हुए ॥ १३ ॥

काम (क), योनि (ए), कमला (ई), वज्रपाणि इन्द्र (ल), गुहा (ह्रीं) । ह, सः वर्ण, मातरिश्वावायु (क), अभ्र (ह), इन्द्र (ल), पुनः गुहा (ह्रीं) । स, क, ल : वर्ण और माया (ह्रां), यह सर्वात्मिका जगन्माता की मूल विद्या है और यह ब्रह्मरूपिणी है ॥ १४ ॥

(शिवशक्त्यभेदरूपा, ब्रह्म-विष्णु-शिवात्मिका, सरस्वती, लक्ष्मी-गौरीरूपा, अशुद्ध-मिश्र-शुद्धोपासनात्मिका, समरसीभूत-शिवशक्त्यात्मक ब्रह्मस्वरूप का निर्विकल्प ज्ञान देने वाली, सर्वतत्त्वात्मिका महात्रिपुरसुन्दरी, यही इस मन्त्र का भावार्थ है)

एषा श्री महाविद्या । य एवं वेद स शोकं तरति ॥ १५ ॥ नमस्ते अस्तु भगवति मातरस्मान् पाहि सर्वतः ॥ १६ ॥ सैषाष्टौ वसवः सैषैकादश रुद्राः । सैषा द्वादशादित्याः । सैषा विश्वेदेवाः सोमपा असोमपाश्च । सैषा यातुधाना असुरा रक्षांसि पिशाचा यक्षाः सिद्धाः । सैषाः सत्त्वरजस्तमांसि । सैषा ब्रह्मविष्णुरुद्ररूपिणी । सैषा प्रजापतीन्द्रमनवः । सैषा ग्रहनक्षत्रज्योतींषि । कलाकाष्ठादिकालरूपिणी । तामहं प्रणौमि नित्यम् । पापापहारिणीं देवीं भुक्तिमुक्तिप्रदायिनीम् । अनन्तां विजयां शुद्धां शरण्यां शिवदां शिवाम् ॥ १७ ॥ वियदीकारसंयुक्तं वीतिहोत्रसमन्वितम् । अर्धेन्दुलसितं देव्या बीजं सर्वार्थसाधकम् ॥ १८ ॥ एवमेकाक्षरं ब्रह्म यतयः शुद्धचेतसः । ध्यायन्ति परमानन्दमया ज्ञानाम्बुराशयः ॥ १९ ॥ वाङ्माया ब्रह्मसूस्तस्मात् षष्ठं वक्त्रसमन्वितम् । सूर्योऽवामश्रोत्रविन्दुसंयुक्तष्टात्तृतीयकः । नारायणेन संमिश्रो वायुश्चाधरयुक् ततः । विच्चे नवार्णकोऽर्णः स्यान्महदानन्ददायक ॥ २० ॥ हृत्पुण्डरीकमध्यस्थां प्रातः सूर्यसमप्रभाम् । पाशांकुशधरां सौम्यां वरदाभयहस्तकाम् । त्रिनेत्रां रक्तवसनां भक्तकामदुघां भजे ॥ २१ ॥ नमामि त्वां महादेवीं महाभयविनाशिनीम् । महादुर्गप्रशमनीं महाकारुण्यरूपिणीम् ॥ २२ ॥ यस्याः स्वरूपं ब्रह्मादयो न जानन्ति तस्मादुच्यते अज्ञेया । यस्या अन्तो न लभ्यते तस्मादुच्यते अनन्ता । यस्या

ये आत्मशक्ति हैं । ये विश्वमोहिनी है । पाश, अंकुश, धनुष और बाण को धारण करने वाली हैं । ये श्रीमहाविद्या हैं । जो इस तरह जानता है, वह शोक को पार कर लेता है ॥ १५ ॥

भगवती, तुम्हें नमस्कार है । माता सब तरह से हमारी रक्षा करो ॥ १६ ॥

वही ये आठ वसु हैं; वही ये ग्यारह रुद्र हैं; वही ये द्वादश आदित्य हैं, वही ये सोमरस का पान करने वाले और नहीं करने वाले विश्वेदेव हैं, वही ये यातुधान नामक राक्षस, असुर, राक्षस, पिशाच, यक्ष और सिद्ध हैं; वही ये सत्व, रज, तम हैं , वही ये ब्रह्मा-विष्णु-रूप को धारण करने वाली हैं, वही ये प्रजापति, इन्द्र और मनु हैं; वही ये ग्रह, नक्षत्र और तारे हैं; वही ये कला-काष्ठादि काल-रूपिणी हैं, पाप का विनाश करने वाली, भोग और मुक्ति को प्रदान करने वाली, अन्तरहित, विजयस्वरूपिणी, शुद्ध और शरण में लेने योग्य, कल्याण को देने वाली और मङ्गलमयी उन देवी को हम सदा प्रणाम करते हैं ॥ १७ ॥

वियत् : आकाश (ह) और (ई) कार से युक्त, वीतिहोत्र : अग्नि (र) से युक्त, अर्धचन्द्र (ँ) से सुशोभित देवी का बीजमन्त्र सभी मनोरथों को पूरा करने वाला है । इस प्रकार एकाक्षर ब्रह्म (ह्रीं) का वे ही यतिलोग ध्यान करते हैं जिनका चित्त शुद्ध है, जो अत्यन्त आनन्दपूर्ण हैं तथा ज्ञान के सागर हैं ॥ १८-१९ ॥

वाणी (ऐं) माया (ह्रीं) ब्रह्मसूकाम (क्लीं), इसके आगे छठा व्यञ्जन 'च', वही वक्त्र अर्थात् आकार से युक्त (चा), सूर्य (म), 'आवास श्रोमा', दक्षिणवर्ण (उ) तथा बिन्दु अर्थात् अनुस्वार से युक्त (मुं) टकार से तीसरा ड, वही नारायण अर्थात् 'आ' से युक्त (डा), वायु (य), वही अधर अर्थात् 'ऐ' युक्त (यै) और (विच्चे) यह नवार्णमन्त्र उपासकों को बहुत अधिक आनन्द देनेवाला है ॥ २० ॥

हृदयरूपी कमल के बीच में निवास करने वाली, प्रातःकालीन सूर्य के समान कान्तिवाली, पाश और अंकुश धारण करने वाली, सुन्दरतम् रूपवाली हाथों में वरद अभयमुद्रा को धारण करने वाली, तीन नेत्र वाली, रक्त वस्त्र से युक्त तथा कामधेनु की तरह सभी मनोरथों को पूरा करनेवाली देवी को मैं भजता हूँ । महाभय का विनाश करने वाली, महाविपत्ति को शान्त करने वाली और बहुत दया की साक्षात् मूर्ति महादेवी को मैं नमस्कार करता हूँ ॥ २१-२२ ॥

जिसके स्वरूप को ब्रह्मा आदि भी नहीं जानते हैं इसलिए उसे अज्ञेया कहते हैं । जिसका अन्त

लक्ष्यं नोपलक्ष्यते तस्मादुच्यते अलक्ष्या। यस्या जननं नोपलभ्यते तस्मादुच्यते अजा। एकैव सर्वत्र वर्तते तस्मादुच्यते एका । एकैव विश्वरूपिणी तस्मादुच्यते नैका । अत एवोच्यते अज्ञेयानन्तालक्ष्याजैका नैकेति ॥२३॥ मन्त्राणां मातृका दैवी शब्दानां ज्ञानरुपिणी। ज्ञानानां चिन्मयातीता शून्यानां शून्यसारिणी। यस्याः परतरं नास्ति सैषा दुर्गा प्रकीर्तिता ॥२४॥ तां दुर्गां दुर्गमां देवीं दुराचारविघातिनीम् । नमामि भवभीतोऽहंसंसारार्णवतारिणीम् ॥२५॥ इदमथर्वशीर्ष योऽधीते स पञ्चाथर्वशीर्षजपफलमाप्नोति इदमथर्वशीर्षमज्ञात्वा योऽर्चां स्थापयति-शतलक्षं प्रजप्त्वापि सोऽर्चासिद्धिं न विन्दति। शतमष्टोत्तरं चास्य पुरश्चर्याविधिः स्मृतः। दशवारं पठेद्यस्तु सद्यः पापैः प्रमुच्यते। महादुर्गाणि तरति महादेव्याः प्रसादतः ॥२६॥ सायमधीयानो दिवसंकृतं पापं नाशयति। प्रातरधीयानो रात्रिकृतं पापं नाशयति। सायं प्रातः प्रयुञ्जानो अपापो भवति । निशीथे तुरीयसन्ध्यायां जप्त्वा । वाक्सिद्धिर्भवति । नूतनायां प्रतिमायां जप्त्वा देवतासान्निध्यं भवति। प्राणप्रतिष्ठायां जप्त्वा प्राणानां प्रतिष्ठा भवति । भौमाश्विन्यां महादेवीसन्निधौ जप्त्वा महामृत्युं तरति । स महामृत्युं तरति य एवं वेद । इत्युपनिषत् ॥

इति श्रीदेव्यथर्वशीर्ष सम्पूर्णम् ।

नहीं मिलता, इसलिए उसे अनन्ता कहते हैं। जिसका लक्ष्य नहीं मालूम होता इसलिए उसे अलक्ष्या कहते हैं। जिसकी उत्पत्ति के विषय में कुछ भी नहीं मालूम होता इसलिए उसे अजा कहते हैं। जो अकेली ही सभी जगह है इसलिए उसे एका कहते हैं। जो अकेली ही विश्वरूप में स्थित है इसलिए उसे नैका कहते हैं। इसलिए वे इन सभी कारणों से अज्ञेया अनन्ता, अलक्ष्या, अजा, एका और नैका कहलाती हैं ॥२३॥

मन्त्रों में मातृका देवी, शब्दों में ज्ञानरूपिणी, ज्ञानों में चिन्मयातीता, शून्यों में शून्यसाक्षिणी और जिनसे बढ़कर कुछ भी श्रेष्ठ नहीं है अर्थात् जो सबसे श्रेष्ठ हैं; वे दुर्गा नाम से विख्यात हैं ॥२४॥

उन दुर्विज्ञेय, दुराचार का नाश करनेवाली तथा संसाररूपी समुद्र से पार करने वाली दुर्गा देवी को डरा हुआ मैं नमस्कार करता हूँ ॥२५॥

इस अथर्वशीर्ष को जो पढ़ता है, उसे पाँचों अथर्वशीर्ष के जप का फल मिलता है। इस अथर्वशीर्ष को न जानकर जो मूर्ति की स्थापना करता है, वह सैकड़ों लाख जप करने पर भी अर्चासिद्धि नहीं कर पाता। इसकी १०८ बार पुरश्चरण की विधि है। जो व्यक्ति दश बार इसका पाठ करता है, वह तत्काल ही सभी पापों से विमुक्त हो जाता है और महादेवी की कृपा से कठिन से कठिन विपत्तियों को पार कर लेता है ॥२६॥

इस अथर्वशीर्ष का सायंकाल में पाठ करने वाला दिन में किये हुए पापों को नष्ट कर देता है। प्रातःकाल में पाठ करने से रात्रि में किये पापों का विनाश करता है। दोनों समय पाठ करने वाला पाप से रहित हो जाता है। रात में जो चौथी सन्ध्या की जाती है, उस समय जप करने पर वाणी की सिद्धि हो जाती है। नयी प्रतिमा पर जप करने से देवताओं का सान्निध्य होता है। प्राणप्रतिष्ठा के समय जप करने पर प्राणों की प्रतिष्ठा होती है। अमृतसिद्धि योग के समय महादेवी के समीप जप करने से महामृत्यु से बच जाता है। जो इस प्रकार जानता है वह महामृत्यु से पार हो जाता है।

देव्यथर्वशीर्ष समाप्त ।

नवार्णमन्त्रजपविधि

विनियोग : ॐ अस्य श्रीनवार्ण मन्त्रस्य ब्रह्मविष्णुरुद्राऋषयः गायत्र्युष्णिगनुष्टभश्छन्दांसि। श्रीमहाकालीमहलक्ष्मीमहासरस्वत्यो देवताः । ऐं बीजम् । ह्रीं शक्तिः । क्लीं कीलकम् । श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वती प्रीत्यर्थ जपे विनियोगः

ऋष्यादिन्यास : ॐ ब्रह्मविष्णुरुद्रऋषिभ्यो नमः शिरसि। गायत्र्युष्णिगनुष्टुब्छन्दोभ्यो नमः मुखे। महाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वती देवताभ्यो नमः हृदि। ऐं बीजाय नमः गुह्ये। ह्रीं शक्तये नमः पादयोः। क्लीं कीलकाय नमः नाभौ।

'ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे' इस मूल मन्त्र से हाथों की शुद्धि करे।

करन्यास : ॐ ऐं अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः। ॐ क्लीं मध्यमाभ्यां नमः। ॐ चामुण्डायै अनामिकाभ्यां नमः। ॐ विच्चे कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादिन्यास : ॐ ऐं हृदयाय नमः। ॐ शिरसे स्वाहा। ॐ क्लीं शिखायै वषट्। ॐ चामुण्डायै कवचाय हुम्। ॐ विच्चे नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे अस्त्राय फट्।

अक्षरन्यास : ॐ ऐं नमः शिखायाम्। ॐ ह्रीं नमः दक्षिणनेत्रे। ॐ क्लीं नमः वामनेत्रे। ॐ चां नमः दक्षिणकर्णे। ॐ मुं नमः वामकर्णे। ॐ डां नमः दक्षिणानासायाम्। ॐ यैं नमः वामनासायाम्। ॐ च्चें नमः गुह्ये।

इस प्रकार अक्षरन्यासः करने के पश्चात् 'ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे' इस मूल मन्त्र से आठ बार व्यापक करें, अर्थात् शिर से पाँवों तक के सभी अंगों का दोनों हाथों से स्पर्श करें।

दिङ्न्यास : ॐ ऐं प्राच्यै नमः। ॐ ऐं आग्नेयै नमः। ॐ ह्रीं नैर्ऋत्यै नमः। ॐ क्लीं प्रतीच्यै नमः। ॐ क्लीं वायव्यै नमः। ॐ चामुण्डायै उदीच्यै नमः। ॐ विच्चे ईशानाय नमः। ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे ऊर्ध्वायै नमः। ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे भूम्यै नमः।

अथध्यानम् :

खड्गंचक्रगदेषु चापपरिघाञ्शूलंभुशुण्डीं शिरः शंखं सन्दधतीं करैस्त्रिनयनां सर्वाङ्गभूषावृताम्।
नीलाश्मद्युतिमास्यपाददशकांसेबे महाकालिकां यामस्तौत्स्वपितेहरौ कमलजो हन्तुं मधुकैटभम्॥ १॥
अक्षस्रक्परशुं गदेषु कुलिषे पद्मं धनुष्कुण्डिकां दण्डं शक्तिमसिञ्च चर्म जलजं सुराभाजनम्। शूलं पाशसुदर्शने च दधतीं हस्तैः प्रसन्नाननां सेवे सैरिभमर्दिनीमिह महालक्ष्मीं सरोजस्थिताम्॥ २॥
घण्टाशूलहलानि शङ्खमुसले चक्रं धनुः सायकं हस्ताब्जैर्दधतीं घनान्तविलसच्छीतांशुतुल्यप्रभाम्।
गौरीदेहसमुद्भवांत्रिजगतामाधारभूतां महापूर्वामत्र सरस्वती मनुभजे शुम्भादिदैत्यार्दिनीम्॥ ३॥

क्षीरशायी विष्णु के सो जाने पर मधुकैटभ के वध के लिये कमलजात ब्रह्माजी ने जिनकी स्तुति की थी उन महाकाली देवी की मैं सेवा करता हूँ। उन्होंने अपने दसों हाथों से खड्ग, चक्र, गदा, बाण, धनुष, परिध, शूल, भशुण्डि, मस्तक और शङ्ख धारण किया है। उनके तीन नेत्र हैं और समस्त अङ्गों में दिव्य आभूषण सुशोभित हैं। उनके शरीर की कान्ति नीलमणि के समान है। उन्हें दस मुख और दस पैर हैं।

मैं कमलासन पर विराजमान, प्रसन्न मुखवाली महिषमर्दिनी महालक्ष्मी की यहाँ सेवा करता हूँ जिन्होंने अपने हाथों में रुद्राक्ष माला, फरसा, गदा, बाण, वज्र, कमल, धनुष, कुण्डिका, दण्ड, शक्ति, खड्ग, ढाल, शङ्ख, घण्टा, मधुपात्र, शूल, पाश तथा चक्र धारण कर रक्खा है।

मैं उन महासरस्वती भगवती का भजन करता हूँ जो अपने करकमलों में घण्टा, शूल, हल, शङ्ख, मूसल, चक्र, धनुष और बाण धारण करती हैं, जिनकी कान्ति शरद् ऋतु की शोभा में सुशोभित चन्द्रमा के समान सुन्दर हैं, जो गौरी के शरीर से उत्पन्न हुई हैं, जो तीनों लोकों की आधारस्वरूपा तथा शुम्भ-निशुम्भ का विनाश करने वाली हैं।

ध्यान समाप्त होने के बाद 'ऐं ह्री अक्षकालिकायै नमः' इस मन्त्र से माला की पूजा करनी चाहिये।

ॐ मां माले महामाये सर्वशक्तिस्वरूपिणी। चतुर्वर्गस्त्वयि न्यस्तस्तस्मान्मे सिद्धिदा भव ॥
ॐ अविघ्नं कुरु माले त्वं गृह्णामि दक्षिणे करे। जपकाले च सिद्ध्यर्थं प्रसीद मम सिद्धये ॥

ॐ अक्षमालाधिपतये सुसिद्धिं देहि देहि सर्वमन्त्रार्थसाधिनि साधय साधय सर्वसिद्धिं परिकल्पय परिकल्पय मे स्वाहा।

इस स्तुति से माला की प्रार्थना करे।

इसके बाद 'ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे' इस मूल मन्त्र का १०८ बार जप करे।

गुह्यातिगुह्यगोप्त्री त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम्। सिद्धिर्भवतु मे देवि त्वत्प्रसादान्महेश्वरि ॥

इस श्लोक को पढ़ते हुए देवी के वाह हाथ में जप का निवेदन करे।

इति नवार्णविधि

अथ दुर्गाशापोद्धारः

ॐ दुर्गादेव्यै नमः

ॐ चण्डिकाशापविमोचनमन्त्रस्य वसिष्ठनारदसामवेदाधिपतिब्राह्मण ऋषयः सर्वैश्वर्यकारिणी श्रीदुर्गा देवता अनुष्टप्छन्दश्चरितत्रयन्बीजं ह्रीं शक्तिरूपिणी चण्डीशापविमोचने विनियोगः।

ॐ रीं रेतः स्वरूपायै मधुकैटभमर्द्दिन्यै ब्रह्मशापविमुक्ता भव। ॐ श्रीं बुद्धिरूपिण्यै महिषासुरसैन्यनाशिन्यै ब्रह्मशापविमुक्ता भव। ॐ रं रक्तरूपिण्यै महिषासुरमर्दिन्यै ब्रह्मशापविमुक्ता भव। ॐ क्षुं क्षुधारूपिण्यै देववन्दिन्यै ब्रह्मशापविमुक्ता भव। ॐ छां छायारूपिण्यै दूतसंवादिन्यै ब्रह्मशापविमुक्ता भव। ॐ श्रीं शक्तिरूपिण्यै धूम्रलोचनघातिन्यै ब्रह्मशापविमुक्ता भव। ॐ तृं तृष्णारूपिण्यै चण्डमुण्डवधकारिण्यै ब्रह्मशापविमुक्ता भव। ॐ क्षां क्षान्तिरूपिण्यै रक्तबीजबधकारिण्यै ब्रह्मशापविमुक्ता भव। ॐ जां जातिरूपिण्यै निशुम्भबधकारिण्यै ब्रह्मशापविमुक्ता भव। ॐ लं लज्जारूपिण्यै शुम्भबधकारिण्यै ब्रह्मशापविमुक्ता भव। ॐ शां शान्तिरूपिण्यै देवस्तुत्यै ब्रह्मशापविपुक्ता भव। ॐ श्रं श्रद्धारूपिण्यै फलदात्र्यै ब्रह्मशापविमुक्ता भव। ॐ कां कान्तिरूपिण्यै राजवरदात्र्यै ब्रह्मशापविमुक्ता भव। ॐ मां मातृरूपिण्यै अर्गलासहितायै ब्रह्मशापविमुक्ता भव। ॐ ह्रीं श्रीं दुं दुर्गायै सर्वैश्वर्यकारिण्यै ब्रह्मशापविमुक्ता भव। ॐ ऐं ह्रीं क्लीं ॐ नमः शिवायै अभेदकवचरूपिण्यै ब्रह्मशापविमुक्ता भव। ॐ क्रीं काल्यै कालि ह्रीं फट् स्वाहायै ऋग्वेदरूपिण्यै ब्रह्मशापविमुक्ता भव। ॐ ऐं ह्रीं क्लीं महाकालीमहलक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपिण्यै त्रिगुणात्मिकायै दुर्गादेव्यैनमः

इत्येवं हि महामन्त्रान् पठित्वा परमेश्वरि। चण्डीपाठं दिवारात्रौ कुर्यादेव न संशयः ॥
एवंमन्त्रन्न जानाति चण्डीपाठ करोति यः। आत्मनश्चैव दातृणां क्षयं कुर्यान्न संशयः ॥

इति रुद्रयामले चण्डिकाशापविमोचनं सम्पूर्णम्

दुर्गासप्तशती

सप्तशतीन्यास :

विनियोगः अथ प्रथममध्यमोत्तमचरित्राणां ब्रह्मविष्णुरुद्रा ऋषयः श्रीमहाकाली-महलक्ष्मीमहासरस्वत्यो देवताः गायत्र्युष्णिगनुष्टुभश्छन्दांसि नन्दाशाकंभरीभीमाः शक्तयः। रक्तदन्तिका दुर्गाभ्रामर्यो बीजानि । अग्निर्वायुः सूर्यस्तत्त्वानि । ऋग्यजुः सामवेदाध्यानानि। सकलकामनासिद्धये श्रीमहाकालीमहलक्ष्मीमहासरस्वती देवताप्रीत्यर्थं जपे विनियोगः ।

करन्यास : खड्गिनी शूलिनी घोरा गदिनी चक्रिणी तथा । शङ्खिनीचापिनी बाणा भुशुण्डी परिघायुधा। अंगुष्ठाभ्यां नमः । शूलेन पाहि नो देवि खड्गेन चाम्बिके । घण्टास्वनेन नः पाहिचापज्यानिस्वनेन च । तर्जनीभ्यां नमः । प्राच्यांरक्ष प्रतीच्यां चण्डिके रक्ष दक्षिणे । भ्रामणेनात्मशूलस्य उत्तरस्यां तथेश्वरि । मध्यमाभ्यां नमः । सौम्यानियानिरूपाणि त्रैलोक्ये विचरन्ति ते । यानि चात्यर्थ घोराणि तै रक्षास्मांस्तथाभुवम् । अनामिकाभ्यां नमः । खड्गशूलगदादीनि यानि चास्त्राणि तेम्बिके । करपल्लवसङ्गीनि तैरस्मान्रक्ष सर्वतः । कनिष्ठिकाभ्यां नमः । सर्वस्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्तिसमन्विते । भयेभ्यस्त्राहि नो देवि दुर्गे देवि नमोस्तु ते । करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ।

हृदयादिन्यास : ॐ खड्गिनी शूलिनी घोरा० हृदयाय नमः । ॐ शूलेन पाहि नो देवि० शिरसे स्वाहा। ॐ प्राच्यां रक्ष प्रतीच्यां च० शिखायै वषट् । ॐ सौम्यानि यानि रूपाणि० कवचाय हुम् । ॐ खड्गशूलगदादीनि० नेत्रत्रयाय वौषट् । ॐ सर्वस्वरूपे सर्वेशे० अस्त्राय फट् ।

ध्यान : विद्युद्दामसमप्रभां मृगपतिस्कन्धस्थितां भीषणां कन्याभिः करवालखेटविलस-द्धस्ताभिरासेविताम् । हस्तैश्चक्रगदासिखेटविशिखाश्चापं गुणं तर्जनी बिभ्राणामनलात्मिकां शशिधरां दुर्गां त्रिनेत्रां भजे । खड्गचक्रगदेषुचापपरिघाञ्छूलं भुशुण्डीं शिरः शङ्खं सन्धतीं करैस्त्रिनयनां सर्वाङ्ग भूषावृताम् । नीलाश्मद्युतिमास्यपाददशकां सेवे महाकालिकां यामस्तौत्स्वपितेहरौ कमलाजोहन्तुं मधुंकैटभम् ।

ॐ नमश्चण्डिकायै

'ॐ ऐं' मार्कण्डेय उवाच :

सावर्णिः सूर्यतनयो यो मनु कथ्यतेऽष्टमः । निशामय तदुत्पत्तिं विस्तरात् गदतो मम ॥ २ ॥ महामायानुभावेन यथा मन्वन्तराधिपः । स बभूवः महाभागः सावर्णिस्तनयो रवेः ॥ ३ ॥ स्वारोचिषेऽन्तरे पूर्व चैत्रवंशसमुद्भवः । सुरथो नाम राजाऽभूत् समस्ते क्षितिमण्डले ॥ ४ ॥ तस्य पालयतः सम्यक् प्रजा पुत्रानिवौरसान् । बभूवुः शत्रवो भूपाः कोलाविध्वंसिनस्तथा ॥ ५ ॥

मार्कण्डेय जी बोलेः ॥ १ ॥

सूर्य के पुत्र सावर्णि जो अष्टम मनु कहे जाते हैं, उनकी उत्पत्ति विस्तारपूर्वक मैं कहता हूँ, सुनो ॥ २ ॥

विष्णु की आदि शक्ति महामाया के अनुग्रह से सूर्य के पुत्र महान् भक्त सावर्णि जैसे मन्वन्तर के राजा हुए (उसे भी कहता हूँ, सुनो) ॥ ३ ॥

पहले स्वारोचिष द्वितीय मन्वन्तर में चैत्र वंश में उत्पन्न सम्पूर्ण पृथ्वी पर राज्य करने वाला सुरथ नाम का राजा हुआ ॥ ४ ॥

उस समय औरस पुत्रों की तरह सम्पूर्ण प्रजाओं का पालन करनेवाला राजा सुरथ के कोलाविध्वंसी नामक क्षत्रिय वंश में उत्पन्न राजा लोग शत्रु हो गये ॥ ५ ॥

तस्य तैरभवद् युद्धमतिप्रबलदण्डिनः । न्यूनैरपि स तैं द्धे कोलाविध्वंसिभिर्जितः ॥ ६ ॥ ततः स्वपुरमायातो निजदेशाधिपोऽभवत् । आक्रान्तः स महाभागस्तैस्तदा प्रबलारिभिः ॥ ७ ॥ आमात्यैर्बलिभिर्दुष्टैर्दुर्बलस्य दुरात्मभिः । कोशो बलं चापहृतं तत्रापि स्वपुरे ततः ॥ ८ ॥ ततो मृगयाव्याजेन हृतस्वाम्यः स भूपतिः । एकाकी हयमारुह्य जगाम गहनं वनम् ॥ ९ ॥ स तत्राश्रममद्रक्षीद् द्विजवर्यस्य मेधसः । प्रशान्तश्वापदाकीर्णं मुनिशिष्योपशोभितम् ॥ १० ॥ तस्थौ कंचित्स कालं च मुनिना तेन सत्कृतः । इतश्चेतश्च विचरंस्तस्मिन् मुनिवराश्रमे ॥ ११ ॥ सोऽचिन्तयत्तदा तत्र ममत्वाकृष्टचेतनः । मत्पूर्वैः पालितं पूर्वं मया हीनं पुरं हि तत् ॥ १२ ॥ मद्भृत्यैस्तैरशद्वृत्तेर्धर्मतः पाल्यते न वा । न जाने स प्रधानो मे शूरहस्ती सदामदः ॥ १३ ॥ मम वैरिवशं यातः कान् भोगानुपलप्स्यते । ये ममानुगता नित्यं प्रसादधनभोजनैः ॥ १४ ॥ अनुवृत्तिं ध्रुवं तेऽद्य कुर्वन्त्यन्यमहीभृताम् । असम्यग्व्ययशीलैस्तैः कुर्वद्भि सततं व्ययम् ॥ १५ ॥ संचितः सोऽतिदुःखेन क्षयं कोषो गमिष्यति । एतच्चान्यच्च सततं चिन्तयामास पार्थिव ॥ १६ ॥ तत्र विप्राश्रमाभ्याशे वैश्यमेकं ददर्श सः । स पृष्ठस्तेन कस्त्वं भो हेतुश्चागमनेऽत्र कः ॥ १७ ॥ सशोक इव कस्मात्त्वं दुर्मना इव लक्ष्यसे । इत्याकर्ण्य वचतस्य भूपतेः प्रणयोदितम् ॥ १८ ॥ प्रत्युवाच स तं वैश्यः प्रश्रयावनतो नृपम् ॥ १९ ॥

उन कोलाविध्वंसियों के साथ अतिशक्तिशाली तथा गज-घोड़े आदि वाहन से युक्त राजा सुरथ का युद्ध हुआ । यद्यपि कोलाविध्वंसी क्षत्रियों की संख्या न्यून थी, तो भी राजा सुरथ उनसे पराजित हो गया ॥ ६ ॥

पराजित होने के बाद मूल राजधानी में आकर वह केवल अपने देशमात्र का राजा होकर रहने लगा, परन्तु वहाँ भी प्रबल शत्रुओं के द्वारा आक्रान्त हुआ ॥ ७ ॥

अपने नगर में भी दुरात्मा मंत्रियों ने उसको नितान्त निर्बल समझ शत्रुओं के साथ मिलकर वहाँ उसकी राजधानी का कोष और सैन्य आदि छीन लिया ॥ ८ ॥

तब राजा सुरथ अपने आधिपत्य से वञ्चित होकर शिकार खेलने के बहाने घोड़े पर सवार होकर अकेले ही एक सघन वन को चला गया ॥ ९ ॥

वहाँ पर उसने द्विजों में श्रेष्ठ मेधा ऋषि के आश्रम को देखा जो मुनि के शिष्यों से अलंकृत एवं हिंसावृत्ति से मुक्त हिंसक पशुओं से व्याप्त था ॥ १० ॥

वहाँ राजा सुरथ ने मेधा ऋषि से पूजित होकर एवं इधर-उधर भ्रमण करते हुए उन्हीं मुनिवर के श्रेष्ठ आश्रम में कुछ कालतक निवास किया ॥ ११ ॥

वहाँ ममता से आकृष्ट मन होकर राजा अपने नगर और प्रजा के विषय में सोचने लगा कि जिस नगर का मेरे पूर्वजों ने पालन किया था वह अब मुझसे रहित हो गया ॥ १२ ॥

नहीं मालूम मेरे दुराचारी सेवकगण धर्मपूर्वक उसकी रक्षा करते हैं या नहीं । मेरा मतवाला शूर हाथी शत्रुओं के वश में पड़कर न जाने किन-किन भोगों को भोगता होगा । जो नौकर मेरी प्रसन्नता के कारण धन और भोजन पाने से सदा मेरे अनुगामी थे, वे निश्चय ही अब दूसरे राजाओं की सेवा करते होंगे । वह कोश जो बहुत ही कष्ट से संचित किया गया था उसे अब मेरे भृत्यगणों ने व्यर्थ खर्च करके खाली कर दिया होगा । इस प्रकार अनेक अन्य बातों की राजा सुरथ चिन्ता करने लगा ॥ १३-१६ ॥

एक दिन राजा को आश्रम के पास एक वैश्य दिखाई पड़ा । राजा ने उससे पूछा : 'तुम कौन हो और यहाँ आने का क्या कारण है ? ॥ १७ ॥

तुम चिन्तित और उदास क्यों दिखाई पड़ते हो । राजा का यह विनम्र वचन सुनकर वैश्य ने नम्रतापूर्वक उत्तर दिया ॥ १८-१९ ॥

वैश्य उवाच ॥२०॥ समाधिर्नाम वैश्योऽहमुत्पन्नो धनिनां कुले ॥२१॥ पुत्रदारैर्निरस्तश्च धनलोभादसाधुभिः विहीनश्च धनैदरैः पुत्रैरादाय मे धनम् ॥२२॥ वनमभ्यागतो दुःखी निरस्तश्चाप्तबन्धुभिः। सोऽहं न वेद्मि पुत्राणां कुशलाकुशलात्मिकाम् ॥२३॥ प्रवृत्तिं स्वजनानां च दाराणां चात्र संस्थितः। किं नु तेषां गृहे क्षेममक्षेमं किं नु साम्प्रतम् ॥२४॥ कथं ते किं नु सद्वृत्ता दुर्वृत्ताः किं नु मे सुताः ॥२५॥

राजोवाच ॥२६॥

यैर्निरस्तो भवांल्लुब्धैः पुत्रदारादिभिर्धनैः ॥२७॥ तेषु किं भवतः स्नेहमनुबध्नाति मानसम् ॥२८॥

वैश्य उवाच ॥२९॥

एवमेतद्यथा प्राह भवानस्मद्गतं वचः ॥३०॥ किं करोमि न बध्नाति मम निष्ठुरतां मनः। यैः सन्त्यज्य पितृस्नेहं धनलुब्धैर्निराकृतः ॥३१॥ पतिस्वजनहार्दं च हार्दितेष्वेव मे मनः। किमेतन्नाभिजानामि जानन्नपि महामते ॥३२॥ यत्प्रेमप्रवणं चित्तं विगुणेष्वपि बन्धुषु। तेषां कृते मे निःश्वासो दौर्मनस्यं च जायते ॥३३॥ करोमि किं यन्न मनतेष्वप्रीतिषु निष्ठुरम् ॥३४॥

मार्कण्डेय उवाच ॥३५॥

ततस्तौ सहितौ विप्र तं मुनिं समुपस्थितौ ॥३६॥ समाधिर्नाम वैश्योऽसौ स च

वैश्य ने कहा : ॥२०॥

मैं समाधि नाम का वैश्य हूँ। मेरा जन्म धनिकों के कुल में हुआ है ॥२१॥

धन के लोभ से दुष्ट मेरे स्त्री-पुत्रों ने मेरा सर्वस्व छीन मुझे घर से निकाल दिया है। मैं इस समय धन तथा स्त्री-पुत्र से विहीन हूँ ॥२२॥

मैं स्वजनों से रहित तथा दुःखी होकर इस वन में चला आया। अब मुझे उन स्त्री पुत्र एवं बान्धवों के कुशल या अकुशल का कुछ भी पता नहीं ॥२३॥

यहाँ रहने के कारण मैं अपनी स्त्री, पुत्र और स्वजनों की परिस्थिति को भी नहीं जानता कि वे इस समय अपने घर में सुखी हैं या दुःखी और मेरे पुत्रों का
आचरण अच्छा है या नहीं ॥२४-२५॥

राजा ने कहा : ॥२६॥

जिन लोभी स्त्री-पुत्रों ने धन के लोभ से आपको घर से निकाल दिया है उन्हीं लोगों के प्रति आपका मन स्नेह से क्यों आकृष्ट हो रहा है ॥२७-२८॥

वैश्य ने कहा : ॥२९॥

आपने मेरे विषय में जो बातें कही हैं, वे वास्तव में सत्य हैं। किन्तु मैं क्या करूँ, मेरे चित्त में किसी भी प्रकार की निष्ठुरता नहीं आती। जिन्होंने धन के लोभ से पिता के प्रति स्नेह, एवं अपने पति के प्रति प्रेम का त्यागकर मुझे घर से निकाल दिया है उन्हीं के स्नेह में मेरा मन लगा है। हे महामते, इसे जानकर भी मेरा मन उन्हीं निर्गुण बन्धुओं में क्यों स्नेह करता है, यह मैं नहीं जानता। उनके लिये मुझे शोक और चिन्ता भी होती है। क्या करूँ, उनमें प्रेम का अभाव होने पर भी मेरा मन कठोर नहीं होता ॥३०-३४॥

मार्कण्डेय जी बोले : ॥३५॥

ब्रह्मन्, उसके बाद दोनों मिलकर उन (मेधा) मुनि के पास गये ॥३६॥

पार्थिवसत्तमः । कृत्वा तु तौ यथान्यायं यथार्हं तेन संविदम् ॥ ३७ ॥ उपविष्टौ कथाः काश्चिच्चक्रतुर्वैश्यपार्थिवौ ॥ ३८ ॥

राजोवाच ॥ ३९ ॥

भगवंस्त्वामहं प्रष्टुमिच्छाम्येकं वदस्व तत् ॥ ४० ॥ दुःखाय यन्मे मनसः स्वचित्तायततां विना। ममत्वं मम राज्यस्य राज्याङ्गेष्वखिलेष्वपि ॥ ४१ ॥ जानतोऽपि यथाज्ञस्य किमेतन्मुनिसत्तम । अयं च निकृतं पुत्रैर्दारैर्भृत्यैस्तथोज्झित ॥ ४२ ॥ स्वजनेन च संत्यक्तस्तेषु हार्दी तथाप्यति। एवमेषं तथाहं च द्वावप्यत्यन्तदुःखितौ ॥ ४३ ॥ दृष्टदोषेऽपि विषये ममत्वाकृष्टमानसौ । तत्केनैतन्महाभाग यन्मोहो ज्ञानिनोरपि ॥ ४४ ॥ ममास्य च भवत्येषा विवेकान्धस्य मूढता ॥ ४५ ॥

ऋषिरुवाच ॥ ४६ ॥

ज्ञानमस्ति समस्तस्य जन्तोर्विषयगोचरे ॥ ४७ ॥ विषयाश्च महाभाग यान्ति चैवं पृथक् पृथक् । दिवान्धाः प्राणिनः केचिद्रात्रावन्धास्तथापरे ॥ ४८ ॥ केचिद्दिवा तथा रात्रौ प्राणिनस्तुल्यदृष्टयः । ज्ञानिनो मनुजाः सत्यं किन्तु ते न हि केवलम् ॥ ४९ ॥ यतो हि ज्ञानिनः सर्वे पशुपक्षिमृगादयः । ज्ञानं च तन्मनुष्याणां यत्तेषां मृगपक्षिणाम् ॥ ५० ॥ मनुष्याणां च यत्तेषां

वहां जाकर समाधि नामक वैश्य और महाराज सुरथ मेधा नामक मुनि से न्यायपूर्वक यथोचित सम्भाषण करके बैठ गये तथा राजा और वैश्य ने कुछ वार्तालाप प्रारम्भ किया : ॥ ३७-३८ ॥

राजा ने कहा : ॥ ३९ ॥

भगवन्, मैं आपसे कुछ पूछना चाहता हूँ, उसे कृपया बताइये ॥ ४० ॥

मेरा मन मेरे वश में नहीं, इस बात का मुझे बड़ा ही दुःख है। गये हुए राज्य तथा अन्य सभी स्त्री, पुत्र, बान्धवों की मुझे अभी तक ममता बनी हुई है ॥ ४१ ॥

हे मुनिसत्तम, यह जानते हुए भी ऐसा क्यों ? मेरा स्नेह उनके प्रति अज्ञानियों की तरह क्यों लग रहा है। यह जो मेरे पास वैश्य है, उसे भी इसके बेटे, स्त्री, नौकर-चाकर तथा स्वजनों ने घर से निकाल दिया है, लेकिन इतने पर भी इसके चित्त में उनका स्नेह बना है । हम दोनों इस विषय में बहुत दुःखी हैं ॥ ४२-४३ ॥

हे महाभाग, उन लोगों की दुष्टता जानते हुए उनकी ममता हमलोगों के चित्त से नहीं जाती । इसका क्या कारण है कि हमलोग इन बातों को समझते हुए भी मूर्खों की तरह मोह में फँसे हैं। मोह तो अज्ञानियों को होना चाहिए, हमलोग ज्ञानवान् होकर भी क्यों मूर्खता करते हैं ॥ ४४-४५ ॥

ऋषि ने कहा : ॥ ४६ ॥

विषयों (रूप-रस आदि) के समझने का ज्ञान सभी को है ॥ ४७ ॥

हे महाभाग, इसी प्रकार सभी का विषय भी अलग-अलग है । कोई प्राणी दिन में नहीं देखते, कोई रात्रि में नहीं देखते और किसी-किसी को तो दिन तथा रात्रि में समान ही सूझता है । सभी पुरुष ज्ञानयुक्त हैं, यह बात सत्य है । इसमें कोई भी सन्देह नहीं, किन्तु केवल मनुष्य ही ज्ञानी नहीं हैं, पशु, पक्षी, मृगादि में भी ज्ञान होता है । विषयों का ज्ञान जैसा मनुष्यों को है वैसा ही पशु-पक्षियों को भी है अतः साधारण ज्ञान में पशु-पक्षी भी मनुष्यों की भाँति ही हैं। ज्ञान होने पर भी इन पक्षियों को तो देखो, ये सब स्वयं क्षुधा से पीड़ित होने पर भी मोहवशात् अपने बच्चों की चोंच में कितने प्रेम से अन्न के दाने डाल रहे हैं। हे राजन् तुम नहीं देखते हो कि ये मनुष्य ज्ञानी होते हुए लालचवश अपने किये हुए उपकार का बदला पाने के लिए पुत्रों की अभिलाषा करते हैं । (जब हमारी वृद्धावस्था आवेगी

तुल्यमन्यत्तथोभंयोः । ज्ञानेऽपि सति पश्यैतान् पतङ्गाञ्छावचञ्चुषु ॥ ५१ ॥ कणमोक्षदृतान्मोहात्पीड्यमानानपि क्षुधा । मानुषा मनुजव्याघ्र साभिलाषाः सुतान् प्रति ॥ ५२ ॥ लोभात् प्रत्युपकाराय नन्वेते किं न पश्यसि । तथापि ममतावर्ते मोहगर्ते निपातिताः ॥ ५३ ॥ महामायाप्रभावेण संसारस्थितिकारिणा । तन्नात्र विस्मयः कार्यो योगनिद्रा जगत्पते ॥ ५४ ॥ महामाया हरेश्चैषा तथा संमोह्यते जगत्। ज्ञानिनामपि चेतांसि देवी भगवती हि सा ॥ ५५ ॥ बलादाकृष्य मोहाय महामाया प्रयच्छति । तया विसृज्यते विश्वं जगदेतच्चराचरम् ॥ ५६ ॥ सैषा प्रसन्ना वरदा नृणां भवति मुक्तये । सा विद्या परमा मुक्तेर्हेतुभूता सनातनी ॥ ५७ ॥ संसारबन्धहेतुश्च सैव सर्वेश्वरेश्वरी ॥ ५८ ॥

राजोवाच ॥ ५९ ॥

भगवन् का हि सा देवी महामायेति यां भवान् ॥ ६० ॥ ब्रवीति कथमुत्पन्ना सा कर्मास्यश्च किं द्विज । यत्प्रभावा च सा देवी यत्स्वरूपा यदुद्भवा ॥ ६१ ॥ तत्सर्वं श्रोतुमिच्छामि त्वत्तो ब्रह्मविदां वर ॥ ६२ ॥

ऋषिरुवाच ॥ ६३ ॥

नित्यैव सा जगन्मूर्तिस्तया सर्वमिदं ततम् ॥ ६४ ॥ तथापि तत्समुत्पत्तिर्बहुधा श्रूयतां मम । देवानां कार्यसिद्ध्यर्थमाविर्भवति सा यदा ॥ ६५ ॥ उत्पन्नेति तदालोके सा नित्याप्यभिधीयते । योगनिद्रां यदा विष्णुर्जगत्येकार्णवीकृते ॥ ६६ ॥ आस्तीर्य शेषमभजत्कल्पान्ते भगवान् प्रभुः ।

तब हमारा पालन-पोषण पुत्र करेगा)। यद्यपि उन सब में समझ की कमी नहीं हैं तथापि वे संसार की स्थिति-कारण महामाया के प्रभाव से ममतारूपी भँवर तथा मोहरूपी गड्ढे में डाल दिये गये हैं ॥४८-५३॥

इसलिए इसमें आश्चर्य नहीं करना चाहिए। भगवान् विष्णु की योगनिद्रारूप महामाया ही हैं, जिनके द्वारा यह विश्व मोहित हो रहा है, वे भगवती महामाया देवी ज्ञानियों के चित्त को भी बलपूर्वक खींचकर मोह में डाल देती हैं। वे ही सारे चराचर विश्व की सृष्टि करती हैं और वे ही प्रसन्न होने पर मनुष्यों को मुक्ति के लिए वरदान देती हैं। वे ही परा विद्या, मुक्ति का आदि कारण तथा सनातनी देवी हैं। वे ही सांसारिक बन्धनों का कारण तथा सभी ईश्वरी की भी अधीश्वरी हैं ॥ ४८-४९ ॥

राजा ने कहा : ॥ ५९ ॥

भगवन्, आप जिसको महामाया कहते हैं वह देवी कौन हैं ? ब्रह्मन्, उनका आविर्भाव कैसे हुआ ? उनका कार्य क्या-क्या है ? ब्रह्मज्ञानियों में श्रेष्ठ, उन देवी का प्रभाव, स्वरूप, उत्पत्ति आदि सब वृतान्त मैं आपसे सुनना चाहता हूँ ॥ ६०-६२ ॥ ऋषि ने कहा : ॥ ६३ ॥

वे नित्यरूपा हैं, सम्पूर्ण संसार उन्हीं का रूप है। वे ही संसार के सभी चराचर में व्याप्त हैं, तथापि उनका आविर्भाव विविध भाँति से होता है। वह मुझसे सुनो। वह भगवती जब देवताओं के कार्य की सिद्धि करने के लिए आविर्भूत होती हैं, तब अजन्मा होती हुई भी लोक में 'उत्पन्ना' अर्थात् उत्पन्न होने वाली कहलाती हैं ॥ ६४-६५ ॥

कल्प के अन्त में जब सम्पूर्ण विश्व एक ही महासागर में निमग्न हो रहा था तथा भगवान् विष्णु योगनिद्रा में मग्न हो शेषनाग की शय्या पर शयन कर रहे थे, उसी समय मधु और कैटभ नामक दो भयानक असुर विष्णु के कान के मलसे उत्पन्न होकर ब्रह्मा जी को मारने के लिए उद्यत हुए। भगवान्

तदा द्वावसुरौ घोरौ विख्यातौ मधुकैटभौ ॥ ६७॥ विष्णुकर्णमलोद्भूतौ हन्तुं ब्रह्माणमुद्यतौ । स नाभिकमले विष्णोः स्थितो ब्रह्मा प्रजापतिः ॥ ६८ ॥ दृष्ट्वा तावसुरौ चोग्रौ प्रसुप्तं च जनार्दनम् । तुष्टाव योगनिद्रां तामेकाग्र हृदयः स्थितः ॥ ६९ ॥ विबोधनार्थाय हरेर्हरिनेत्राकृतालयाम् । विश्वेश्वरीं जगाद्धात्रीं स्थितिसंहारकारिणीम् ॥ ७० ॥ निद्रां भगवतीं विष्णोरतुलां तेजसः प्रभुः ॥ ७१ ॥

ब्रह्मोवाच ॥ ७२ ॥

त्वं स्वाहा त्वं स्वधा हि वषट्कारस्वरात्मिका ॥ ७३ ॥ सुधा त्वमक्षरे नित्ये त्रिधा मात्रात्मिका स्थिता । अर्धमात्रास्थिता नित्या यानुच्चार्या विशेषतः ॥ ७४ ॥ त्वमेव सन्ध्या सावित्री त्वं देवी जननी परा । त्वयैद्धार्यते विश्वं त्वयैतत्सृज्यते जगत् ॥ ७५ ॥ त्वयैत्तपालयते देवित्वमत्स्यन्ते च सर्वदा । विसृष्टौ सृष्टिरूपा त्वं स्थितिरूपा च पालने ॥ ७६ ॥ तथा संहृति रूपान्ते जगतोऽस्य जगन्मये । महाविद्या महामाया महामेधा महास्मृतिः ॥ ७७ ॥ महामोहा च भवती महादेवी महासुरी। प्रकृतिस्त्वं च सर्वस्य गुणत्रयविभाविनी ॥ ७८ ॥ कालरात्रिर्महारात्रिर्मोहरात्रिश्च दारुणा। त्वं श्रीस्त्वमीश्वरी त्वं ह्रीस्त्वं बुद्धिर्बोधलक्षणा ॥ ७९ ॥ लज्जा पुष्टिस्तथा तुष्ठिस्त्वं शान्तिः क्षान्तिरेव च । खड्गिनी शूलिनी घोरा गदिनी चक्रिणी तथा ॥ ८० ॥ शङ्खिनी चापिनी बाणभुषुण्डीपरिघायुधा । सौम्या सौम्यतराशेषसौम्येभ्यस्त्वतिसुन्दरी ॥ ८१ ॥ परापराणां परमा

विष्णु के नाभिकमल में स्थित ब्रह्माजी उन दोनों भयङ्कर असुरों को अपनी ओर आते देखकर तथा विष्णु को सोए हुए जानकर एकाग्र चित्त हो उनको जगाने के लिये उनके नेत्रों में निवास करने वाली इस विश्व की अधीश्वर, जगत् को धारण करनेवाली, संसार का पालन और संहार करने वाली तथा तेजस्वरूप भगवान् विष्णु की अनुपम शक्ति, योगनिद्रा देवी की स्तुति करने लगे ॥

ब्रह्माजी ने कहा : ॥ ७२ ॥

देवि, तुम्हीं स्वाहा, तुम्हीं स्वधा और तुम्हीं वषट्कार (इन्द्र को यज्ञ का हिस्सा पहुँचाने वाला मन्त्र) हो । अमृत भी तुम्हीं हो । अक्षरों में तीन प्रकार की मात्रा ह्रस्व, दीर्घ, प्लुतरूपा तुम्हीं हो । बिना स्वर की सहायता से जिसका स्पष्ट उच्चारण नहीं किया जा सकता है वह अर्धमात्रा व्यञ्जनरूपा तुम्हीं हो। तुम्हीं सन्ध्यारूपा हो, तुम्हीं गायत्रीरूपा हो, हे देवि तुम्हीं सबकी जननी हो ॥ ७३-७४१/२ ॥

तुम्हीं सारे विश्व को धारण करती हो, सृष्टि करती हो, पालन करती हो, पुनः प्रलयकाल में उसका नाश भी करती हो । इस कारण हे जगन्माये, इस जगत् की उत्पत्ति के समय तुम सृष्टिरूपा हो, पालन-काल में स्थितिरूपा हो तथा कल्पान्तके समय संहाररूप धारण करने वाली हो ॥ ७५-७६१/२ ॥

तुम्हीं महाविद्या, महामाया, महामेधा, महास्तुति और महामोहरूपा हो । महादेवी और महासुररूपा भी तुम्हीं हो । तुम्हीं सत्व, रज, तम तीनों गुणों को उत्पन्न करने वाली सबकी प्रकृति हो ॥ ७७-७८ ॥

भयङ्कर कालरात्रि, महारात्रि और मोहरात्रि भी तुम्हीं हो । तुम्हीं श्री, ईश्वरी, तुम्हीं ह्रीं एवं बोधस्वरूपा बुद्धि हो । लज्जा, पुष्टि, तुष्टि, शान्ति एवं क्षमास्वपिणी भी तुम्हीं हो । तुम्हीं खड्ग, शूल, गदा, चक्र, शङ्ख, धनुष-बाण, भुशुण्डी एवं परिघधारिणी हो ॥ ७९-८०१/२ ॥

तुम्हीं सौम्या और सौम्यतरा हो, इतना ही नहीं, जितने भी सौम्य एवं सुन्दर पदार्थ हैं; उन सबकी अपेक्षा अत्यधिक सुन्दरी हो । पर और अपर सबसे परे रहने वाली परमेश्वरी तुम्हीं हो ॥ ८१ १/२ ॥

त्वमेव परमेश्वरी । यच्च किंचित्क्वचिद्वस्तु सदसद्वाखिलात्मिके ॥ ८२ ॥ तस्य सर्वस्य या शक्तिः सा त्वं किं स्तूयते सदा। यया त्वया जगत्स्रष्टा जगत्पात्यत्ति यो जगत् ॥ ८३ ॥ सोऽपि निद्रावशं नीतः कस्त्वां स्तोतुमिहेश्वरः । विष्णुः शरीरग्रहणमहमीशान एव च ॥ ८४ ॥ कारितास्ते यतोऽतस्त्वां कः स्तोतुं शक्तिमान भवेत् । सा त्वमित्थं प्रभावैः स्वैरुदारैर्देवि संस्तुता ॥ ८५ ॥ मोहयैतो दुराधर्षवसुरौ मधुकैटभौ । प्रबोधं च जगत्स्वामी नीयतामच्युतो लघु ॥ ८६ ॥ बोधश्च क्रियतामस्य हन्तुमेतौ महासुरौ ॥ ८७ ॥

ऋषिरुवाच ॥ ८८ ॥

एवं स्तुता तदा देवी तामसी तत्र वेधसा ॥ ८९ ॥ विष्णोः प्रबोधनार्थाय निहन्तुं मधुकैटभौ। नेत्रास्यनासिकाबाहुहृदयेभ्यस्तथोरसः ॥ ९० ॥ निर्गम्य दर्शने तस्थौ ब्रह्मणोऽव्यक्तजन्मनः । उत्तस्थौ च जगन्नाथस्तया मुक्तो जनार्दनः ॥ ९१ ॥ एकार्णवेऽहिशयना ततः ददृशे च तौ । मधु-कैटभौ दुरात्मानावतिवीर्यपराक्रमौ ॥ ९२ ॥ क्रोधरक्तेक्षणावृत्तं ब्रह्माणं जनितोधमौ । समुत्थाय ततस्ताभ्यां युयुधे भगवान् हरिः ॥ ९३ ॥ पञ्चवर्षसहस्राणि बहुप्रहरणो विभुः । तावप्यतिबलोन्मत्तौ महामायाविमोहितौ ॥ ९४ ॥ उक्तवन्तौ वरोऽस्मत्तो व्रियतामिति केशवम् ॥ ९५ ॥

श्रीभगवानुवाच ॥ ९६ ॥

भवेतामद्य मे तुष्टौ मम बध्यावुभावपि ॥ ९७ ॥ किमन्येन वरेणात्र एतावद्धि वृतं मम ॥ ९८ ॥

अखिलात्मिके देवि, इस अनन्त कोटि ब्रह्माण्ड में जहाँ कहीं भी जो कुछ सत्, असत् पदार्थ हैं, उन सबकी शक्तिस्वरूपा तुम्हीं हो । ऐसी हालत में तुम्हारी स्तुति क्या हो सकती है । जो इस जगत् की सृष्टि, पालन और संहार करते हैं, उन्हें भी जब तुमने निद्रा के अधीन कर लिया है तब तुम्हारी स्तुति करने में कौन समर्थ हो सकता है ? मुझको तथा भगवान् शङ्कर और भगवान् विष्णु को भी तुमने ही शरीर धारण करवाया है अतः तुम्हारी स्तुति करने की किसमें शक्ति हो सकती है ? हे देवि, तुम्हारे उदार प्रभाव से ही मैंने तुम्हारी स्तुति की है । ये जो अतीव दुर्धर्ष मधु और कैटभ नामक दो असुर हैं, उन्हें मोह में डाल दो और विश्व के स्वामी भगवान् अच्युत को जगाओ और इन दोनों महासुरों को मारने के लिए उनके भीतर शक्ति विस्फुरित कर दो ॥ ८२-८७ ॥

ऋषि बोले : ॥ ८८ ॥

इस प्रकार ब्रह्माजी के स्तुति करने पर तमोगुणमयी देवी मधु और कैटभ के वध के उद्देश्य से भगवान् विष्णु को जगाने के लिए विष्णु के नेत्र, मुखमण्डल, नासिका, बाहु, हृदय एवं वक्षःस्थल से निकलकर अव्यक्तजन्मा ब्रह्माजी के सामने खड़ी हो गयीं ॥ ८९-९०१/२ ॥

योगनिद्रारूपी भगवती से मुक्त होकर जगत् के स्वामी भगवान् विष्णु उस एकार्णव जल में शेषनाग की शय्या से जाग उठे और उन दोनों असुरों को देखा । वे दुष्ट मधु और कैटभ अत्यन्त बलवान् तथा पराक्रमी थे । वे दोनों क्रोध से अपनी लाल-लाल आँखें किये हुए ब्रह्माजी को खाने के लिए उद्यत हो रहे थे ॥ ९१-९२१/२ ॥

तब भगवान् विष्णु ने उठकर उन दोनों के साथ पाँच हजार वर्ष तक केवल बाहु युद्ध किया । अतिबलशाली दोनों महासुरों को महामाया ने मोहित कर रक्खा था, इसलिए उन्होंने विष्णु भगवान् से कहा कि हम तुम्हारी वीरता से सन्तुष्ट हैं, तुम हमसे वर माँग लो ॥ ९३-९५ ॥

भगवान् विष्णु ने कहा : ॥ ९६ ॥

यदि तुम दोनों मुझ पर प्रसन्न हो तो मेरे हाथ से ही तुम्हारी मृत्यु हो । अन्य वरदान की मुझे कोई भी आवश्यकता नहीं है, केवल यही वर मैं चाहता हूँ ॥ ९७-९८ ॥

ऋषिरुवाच ॥ ९९ ॥

वञ्चिताभ्यामिति तदा सर्वमापोमयं जगत् ॥ १०० ॥ विलोक्य ताभ्यां गदितो भगवान् कमलेक्षणः । आवां जहि न यत्रोर्वी सलिलेन परिप्लुता ॥ १०१ ॥

ऋषिरुवाच ॥ १०२ ॥

तथेत्युक्त्वा भगवता शङ्ख चक्रगदाभृता । कृत्वा चक्रेण वै छिन्ने जघने शिरसी तयोः ॥ १०३ ॥ एवमेषा समुत्पन्ना ब्रह्मणा संस्तुता स्वयम् । प्रभावमस्या देव्यास्तु भूयः शृणु वदामि ते ॥ ऐं ॐ ॥ १०४ ॥

इति मार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये मधुकैटभवधो नाम
प्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥ उवाच १४, अर्द्धश्लोकाः २४,
श्लोकाः ६६, एवमादितः ॥ १०४ ॥

ऋषिरुवाच ॥ १ ॥

देवासुरमभूद्युद्धं पूर्णमब्दशतं पुरा । महिषेऽसुराणामधिपे देवानां च पुरन्दरे ॥ २ ॥ तत्रासुरैर्महावीर्यैर्देवसैन्यं पराजितम् । जित्वा च सकलान् देवानिन्द्रोऽभून्महिषासुरः ॥ ३ ॥

ऋषि ने कहा : ॥ ९९ ॥

जब वे दोनों इस प्रकार भगवान् के धोखे में आ गये तब सम्पूर्ण विश्व को जलमय देखकर बोले : जहाँ पृथ्वी पानी में डूबी न हो वहाँ हमको मारो ॥ १००-१०१ ॥

ऋषि बोले : ॥ १०२ ॥

तब तथास्तु कहकर शङ्ख, चक्र, गदा धारण किये हुए भगवान् विष्णु ने उन दोनों की गर्दन अपनी जाँघ पर रखकर चक्र से काट डाला ॥ १०३ ॥

इस प्रकार ब्रह्माजी की स्तुति करने पर महामाया स्वयं प्रकट हुई थीं । अब पुनः उन देवी महामाया के प्रभाव को मैं तुमसे कहता हूँ, सुनो ॥ १०४ ॥

इस प्रकार श्री मार्कण्डेयपुराण में सावर्णिक मन्वन्तर की कथा के अन्तर्गत देवी माहात्म्य में 'मधु-कैटभवध' नामक पहला अध्याय समाप्त हुआ ॥ १ ॥

द्वितीय अध्याय – (देवताओं के तेजों द्वारा महामाया देवी का प्रादुर्भाव और महिषासुर की सेनाओं का नाश ।)

ऋषि ने कहा : पहले लगातार सौ वर्ष तक देव और दानवों में युद्ध हुआ । जिसमें महिषासुर[1] असुरों के एवं इन्द्र देवताओं के नायक थे ॥ १-२ ॥

उस युद्ध में महावीर्यशाली असुरों के द्वारा देवताओं की सेनायें परास्त हो गई और सम्पूर्ण देवताआ

---

१. महिषासुर की उत्पत्ति : आज से कई हजार वर्ष पूर्व महिषासुर के पिता रम्भासुर ने पुत्र प्राप्ति की अभिलाषा से उत्तराखण्ड के सघन जंगल में घोर तपस्या की । अतिदयालु भगवान शङ्कर बहुत दिनों से भगवान विष्णु को भगवती महामाया के सिंहरूप में वहनकार्य करते देख उन्हें वहनकार्य से मुक्त करने की इच्छा से उसी जंगल में दूसरा वाहन खोजने गये, जहाँ रम्भासुर भगवान् शङ्कर के ध्यान में तल्लीन था । उसकी घोर तपस्या से अति प्रसन्न भगवान शङ्कर उसे देख वर देने को उद्यत हुए और बोले : भक्त तुम पर मैं प्रसन्न हूँ, तुम अपना अभिलषित वर माँग लो । शङ्कर जी के बार-बार कहने पर ध्यानसागर में अत्यन्त डूबा हुआ वह अपने नेत्र पट को नहीं खोल सका । अन्त में भगवान शङ्कर

ततः पराजिता देवाः पद्मयोनिं प्रजापतिम् । पुरस्कृत्य गतास्तत्र यत्रेशगरुडध्वजौ ॥ ४ ॥ यथावृत्तं तयोस्तद्वन्महिषासुरचेष्टितम् । त्रिदशाः कथयामा-सुर्देवाभिभवविस्तरम् ॥ ५ ॥ सूर्येन्द्राग्न्यनिलेन्दूनां यमस्य वरुणस्य च । अन्येषां चाधिकारान्सस्वयमेवाधितिष्ठति ॥ ६ ॥ स्वर्गान्निराकृताः सर्वे तेन देवगणा भुवि । विचरन्ति यथा मर्त्यां महिषेण दुरात्मना ॥ ७ ॥ एतद्वः कथितं सर्वममरारिविचेष्टितम् । शरणं च प्रपन्नाः स्मो वधस्तस्य विचिन्त्यताम् ॥ ८ ॥ इत्थं निशम्य देवानां वचांसि मधुसूदनः । चकार कोपं शम्भुश्च भ्रुकुटीकुटिलाननौ ॥ ९ ॥ ततोऽतिकोपपूर्णस्य चक्रिणो वदनात्ततः । निश्चक्राम महत्तेजो ब्रह्मणः शङ्करस्य च ॥ १० ॥ अन्येषां चैव देवानां शक्रादीनां शरीरतः निर्गतं सुमहत्तेजस्तच्चैक्यं समगच्छत ॥ ११ ॥ अतीव तेजसः कूटं ज्वलन्तमिव पर्वतम् । ददृशुस्ते सुरास्तत्र ज्वालाव्याप्तदिगन्तरम् ॥ १२ ॥ अतुलं तत्र तत्तेजः सर्वदेवशरीरजम् । एकस्थं

को जीतकर महिषासुर स्वयं इन्द्र बन गया । तब पराजित हुए देवगण ब्रह्माजी को आगे करके उस स्थान पर ले गये जहाँ भगवान् शङ्कर और विष्णु विराजमान थे । देवताओं ने सविस्तार अपनी पराजय तथा महिषासुर के प्रताप का यथाविधि सम्पूर्ण वृत्तान्त उन दोनों देवेशों से कह सुनाया । महिषासुर सूर्य, इन्द्र, अग्नि, वायु, चन्द्र, यम, वरुण एवं अन्यान्य सब देवताओं के अधिकारों को छीन कर स्वयं ही अधिपति बन गया है ॥ ३-६ ॥

उस दुरात्मा महिषासुर ने सभी देवताओं को स्वर्ग से निकाल दिया है इसलिए वे पृथ्वी पर मनुष्यों की भाँति विचरण करते हैं । हे प्रभु देवताओं के शत्रु महिषासुर का सब समाचार हमने कह सुनाया । अब हम लोग आपके शरणागत हैं । आप उसके बध का उपाय सोचें ॥ ७-८ ॥

इस प्रकार देवताओं की समस्त बातों को सुनकर भगवान विष्णु और शङ्कर अतिक्रुद्ध हुये, जिससे उनकी भौहें कुटिल तथा मुख लाल हो गये । तब अत्यन्त क्रोधपूर्ण विष्णु, ब्रह्मा और शङ्कर भगवान के मुख मण्डल से एक महान तेज निकला । इसी प्रकार अन्य सभी इन्द्रादि देवताओं के शरीर से भी अन्यान्य तेज निकलकर सब एकत्रित हुये । उन तेजों का देदीप्यमान समुदाय, जो कि पर्वत के समान अत्यन्त ऊँचा था तथा जिसकी ज्वाला से व्याप्त दिशाओं के मध्यवर्ती देश थे, उस तेजोराशि को देवताओं ने देखा ॥ ९-१२ ॥

अपने सच्चे रूपों से उसके सामने प्रकट हुये तथा उसे आश्वासन दिया, जिससे रम्भासुर के नेत्रपटखुले और उसने अपना अभिलषित वर माँगा । रम्भासुर का वर कालिका-पुराण में प्रसिद्ध है :

"अपुत्रोऽहं महादेव, यदि ते मय्यनुग्रहः ।
मम जन्मत्रये पुत्रो भवान् भवतु शङ्कर ॥
अवध्यः सर्वभूतानां जेता त्रिदिवौकसाम् ।
चिरायुश्चयशस्वी च लक्ष्मीवान् सत्यशङ्करः ॥"

अर्थात् हे महादेव, मुझ पर यदि तुम प्रसन्न हो तो तुम्हीं तीन जन्म तक मेरे पुत्र होओ, जो कि प्राणीमात्र से न मारा जाने वाला, देवताओं को जीतने वाला, यशस्वी, दीर्घायु, श्रीमान् एवं दृढ़प्रतिज्ञ हो । शङ्कर जी द्वारा 'एवमस्तु' कहने पर रम्भासुर ने अपने आसुरी स्वभाव के कारण कामोन्मत्त होकर रास्ते में ही एक महिषी पशु के साथ संयोग किया जिसके परिणाम-स्वरूप भगवान शङ्कर को महिषासुर के रूप में आविर्भूत होना पड़ा ।

तदभून्नारी व्याप्तलोकत्रयं त्विषा ॥ १३ ॥ यदभूच्छाम्भवं तेजस्तेनाजायत : तन्मुखम् । याम्येन चाभवन् केशा बाहवो विष्णुतेजसा ॥ १४ ॥ सौम्येन स्तनयोर्युग्मं मध्यं चैन्द्रेण चाभवत् । वारुणेन च जङ्घोरू नितम्बस्तेजसा भुवः ॥ १५ ॥ ब्रह्मणस्तेजसा पादौ तदंगुल्योऽर्क तेजसा । वसूनां च करांगुल्यः कौबेरेण च नासिका ॥ १६ ॥ तस्यास्तु दन्ताः सम्भूताः प्रजापत्येन तेजसा । नयनत्रितयं जज्ञे तथा पावकतेजसा ॥ १७ ॥ भ्रुवौ च संध्ययोस्तेजः श्रवणावनिलस्य च । अन्येषां चैव देवानां सम्भवस्तेजसां शिवा ॥ १८ ॥ ततः समस्तदेवानां तेजोराशिमुद्भवाम् । तां विलोक्य मुदं प्रापुरमरा महिषार्दिताः ॥ १९ ॥ शूलं शूलाद्विनिष्कृष्य ददौ तस्यै पिनाकधृक् । चक्रं च दत्तवान् कृष्णः समुत्पाट्य स्वचक्रतः ॥ २० ॥ शङ्खं च वरुणः शक्तिं ददौ तस्यै हुताशनः । मारुतो दत्तवांश्चापं बाणपूर्णे तथेषुधी ॥ २१ ॥ वज्रमिन्द्रः समुत्पाट्य कुलिशादमराधिपः । ददौ तस्यै समस्राक्षो घण्टामैरावताद् गजात् ॥ २२ ॥ कालदण्डाद्यमो दण्डं पाशं चाम्बुपतिर्ददौ । प्रजापतिश्चाक्षमालां ददौ ब्रह्मा कमण्डलुम् ॥ २३ ॥ समस्तरोमकूपेषु निजरश्मीन दिवाकरः । कालश्च दत्तवान् खड्गं तस्याश्चर्म च निर्मलम् ॥ २४ ॥ क्षीरोदश्चामलं हारमजरे च तथाम्बरे । चूडामणिं तथा दिव्यं कुण्डले कटकानि च ॥ २५ ॥ अर्धचन्द्रं तथा शुभ्रंकेयूरान् सर्वबाहुषु । नूपुरौ विमलौ तद्वद् ग्रैवेयकमनुत्तमम् ॥ २६ ॥ अंगुलीयकरत्नानि समस्तास्वंगुलीषु च । विश्वकर्मा ददौ तस्यै परशुं चातिनिर्मलम् ॥ २७ ॥ अस्त्राण्यनेकरूपाणि तथाभेद्यं च दंशनम् । अम्लानपङ्कजां मालां शिरस्युरसि चापराम् ॥ २८ ॥ अददज्जलधिस्तस्यै पङ्कजं चातिशोभनम् । हिमवान् वाहनं

तब समस्त देवताओं के शरीर से निकला हुआ वह एकत्रित अतुल तेज अपने प्रकाश से तीनों लोकों को प्रकाशित करता हुआ एक स्त्री के रूप में परिणत हो गया । भगवान शङ्कर के तेज से महामाया का मुख, यमराज के तेज से उनके सिर के बाल एवं विष्णु के तेज से उनकी भुजाएँ आविर्भूत हुई। दोनों स्तन चन्द्रमा के तेज से, शरीर के मध्यभाग इन्द्र के तेज से, जङ्घा तथा ऊरुदेश वरुण के तेज से और नितम्ब (स्त्री-कटि के पश्चात् भाग) पृथ्वी के तेज से प्रकट हुये । ब्रह्मा के तेज से दोनों चरण, सूर्य के तेज से चरणों की अंगुलियाँ, वसुओं के तेज से हाथों की अंगुलियाँ और कुबेर के तेज से नासिका प्रकट हुई ॥ १३-१६ ॥

प्रजापति के तेज से देवी के दाँत और अग्नि के तेज से तीनों नेत्र प्रकट हुये । सन्ध्या के तेज से भौहें, वायु के तेज से दोनों कान तथा अन्यान्य देवताओं के तेजों से शिवा देवी की उत्पत्ति हुई । तब समस्त देवताओं के तेज से उत्पन्न उस स्त्रीरूप को देखकर महिषासुर द्वारा पीड़ित देवगण अत्यन्त आनन्दित हुए । तत्पश्चात् पिनाकपाणि महादेव ने अपने शूलास्त्र से एक शूल और भगवान् विष्णु ने अपने चक्र से एक चक्र उत्पन्न कर उन भगवती को दिया । वरुण ने शङ्ख, अग्नि ने शक्ति और वायु ने धनुष तथा बाण से भरे हुये दो तरकस दिये । सहस्रलोचन देवराज इन्द्र ने अपने वज्र से उत्पन्नकर एक वज्र तथा ऐरावत हाथी से घण्टा लेकर भगवती को प्रदान किया ॥ १७-२२ ॥

वरुण ने पाश, प्रजापति ने अक्षमाला और ब्रह्माजी ने कमण्डलु प्रदान किया । सूर्य ने देवी के समस्त रोमकूपों में अपनी किरणें भर दीं । यमराज ने अपनी चमकती हुई ढाल तथा तलवार प्रदान की । क्षीरसागर ने निर्मल हार, सदा नूतन रहने वाले दो दिव्य वस्त्र, अतिमनोहर मुकुट, दो कुण्डल तथा अष्टादश भुजाओं के लिये अट्ठारह कंकण, मस्तक के लिए उज्जवल अर्धचन्द्र, सब बाहुओं के लिए बाजूबन्द, चरणों के लिये विमल पायल, गले के लिये सुन्दर हँसली तथा सब अंगुलियों में पहनने के लिए रत्नों से बनी अँगूठियाँ दीं । विश्वकर्मा ने उन्हें अत्यन्त निर्मल फरसा एवं विविध अस्त्र, अभेद्य कवच और मस्तक तथा वक्षःस्थल पर धारण करने योग्य सदा नवीन रहनेवाली कमलों की मालायें दीं ॥ २३-२८ ॥

सिंहं रत्नानि दिविधानि च ॥ २९ ॥ ददावशून्यं सुरया पानपात्रं धनाधिपः । शेषश्च सर्वनागेशो महामणिविभूषितम् ॥ ३० ॥ नागहारं ददौ तस्यै धत्ते यः पृथिवीमिमाम् । अन्यैरपि सुरैर्देवी भूषणैरायुधैस्तथा ॥ ३१ ॥ सम्मानिता ननादोच्चैः साट्टहासं मुहुर्मुहुः । तस्या नादेन घोरेण कृत्स्नमापूरितं नभः ॥ ३२ ॥ अमायतातिमहता प्रतिशब्दो महानभूत् । चुक्षुभुः सकला लोकाः समुद्राश्च चकम्पिरे ॥ ३३ ॥ चचाल वसुधा चेलुः सकलाश्च महीधराः । जयेति देवाश्च मुदा तामूचुः सिंहवाहिनीम् ॥ ३४ ॥ तुष्टुवुर्मुनयश्चैनां भक्तिनम्रात्ममूर्तयः । दृष्ट्वा समस्तं संक्षुब्धं त्रैलोक्यममरारयः ॥ ३५ ॥ सन्नद्धाखिलसैन्यास्ते समुत्तस्थुरुदायुधाः । आः किमेतदिति क्रोधादाभाष्य महिषासुरः ॥ ३६ ॥ अभ्यधावत् तं शब्दमशेषैरसुरैर्वृतः । स ददर्श ततो देवीं व्याप्तलोकत्रयां त्विषा ॥ ३७ ॥ पादाक्रान्त्या नतभुवं किरीटोल्लिखिताम्बराम् । क्षोभिताशेषपातालां धनुर्ज्यानिःस्वनेन ताम् ॥ ३८ ॥ दिशो भुजसहस्रेण समन्ताद् व्याप्त संस्थिताम् । ततः प्रववृते युद्धं तया देव्या सुरद्विषाम् ॥ ३९ ॥ शस्त्रैर्बहुधा मुक्तैरादीपितदिगन्तरम् । महिषासुरसेनानीश्चिक्षुराख्यो महासुरः ॥ ४० ॥ युयुधे चामरैश्चन्यैश्चतुरङ्ग बलान्वितः । रथानामयुतैः षड्भिरुदग्राख्यो महासुरः ॥ ४१ ॥ अयुध्यतायुतानां च सहस्रेण महाहनुः । पञ्चाशद्भिश्च नियुतैरसिलोमा महासुरः ॥ ४२ ॥ अयुतानां शतैः षड्भिर्वाष्कलो युयुधे रणे । गजवाजिसहस्रौघैरनेकैः

समुद्र ने उन्हें सुन्दर कमल का फूल तथा हिमालय ने सवारी के लिए सिंह और अनेक प्रकार के रत्न प्रदान किये ॥ २९ ॥

कुबेर ने मदिरा से भरा हुआ पीने लिये एक लघुपात्र दिया । सब सर्पों के राजा वासुकि ने, जो कि इस पृथ्वी को धारण किये हुए हैं, महामणि तथा हीरकादि से जड़ित नागहार की माला उन देवी को अर्पित किया । एवं अन्य देवताओं ने भी अनेक अस्त्र-शस्त्र तथा विविध भूषणों के द्वारा उन देवी को सम्मानित किया, जिससे अनेक बार देवी उच्चस्वर से ठहठहा कर हँसी । उनकी भङ्कर हँसी की ध्वनि से आकाश गूँज उठा ॥ ३०-३२ ॥

असम्भव एवं अति विशाल ऐसी प्रतिध्वनि हुई, जिससे सभी लोक क्षुभित हो गये और सारा समुद्र कम्पित हो उठा । पृथ्वी प्रकम्पित होने लगी और सभी पर्वत हिलने लगे । तब सभी देवगण उन सिंहवाहिनी देवी की जय-जयकार करने लगे तथा मुनियों ने भी भक्तिभाव से विनम्र होकर उनकी प्रार्थना की । समस्त तीनों लोकों को संत्रस्त देखकर असुरगण अपने समस्त सैन्यों को अस्त्र-शस्त्र से सुसज्जित करके युद्ध करने के लिए प्रस्तुत हुए । उस समय महिषासुर ने बड़े क्रोध में आकर कहा : 'आह, यह क्या हुआ' । फिर वह सम्पूर्ण असुरों से घिरकर उस सिंहनाद की ओर लक्ष्य करके दौड़ पड़ा और वहाँ उसने अपनी कान्ति से तीनों लोकों को व्याप्त करती हुई उन देवी को देखा ॥ ३३-३७ ॥

जो अपने चरणों के भार से पृथ्वी को दबा रही थीं, माथे के मुकुट से आकाश-मण्डल को चिह्नित करती हुई धनुष की टङ्कार से समग्र पाताल लोकों को क्षुभित कर रही थीं तथा अपनी सैकड़ों भुजाओं से समग्र दिशाओं को व्याप्त कर स्थित थीं । इसके बाद उन देवी के साथ युद्ध प्रारम्भ हुआ । अनेक प्रकार के अस्त्र-शस्त्रों के प्रहार से सारी दिशाओं के मध्यवर्ती देश चमक उठे । उस युद्ध में चिक्षुर नामक महासुर महिषासुर का सेनापति था ॥ ३८-४० ॥

चामर नाम का असुर हाथी, घोड़े, रथ तथा पैदल सैनिकों को साथ लेकर और उदग्र नामक महासुर साठ हजार रथ के सहित सैनिकों को साथ लेकर युद्ध करने लगा ॥ ४१ ॥

महाहनु नामक राक्षस एक करोड़ रथ तथा सैनिकों को साथ लेकर और असिलोमा असुर पाँच करोड़ सैनिकों को लेकर युद्ध करने लगा ॥ ४२ ॥

परिवारितः ॥ ४३ ॥ वृतो रथनां कोट्या च युद्धे तस्मिन्नयुद्ध्यत । बिडालाख्योऽयुतानां च पञ्चाशद्भिरथायुतैः ॥ ४४ ॥ युयुधे संयुगे तत्र रथानां परिवारितः । अन्ये च तत्रायुतशो रथनागहयैर्वृताः ॥ ४५ ॥ युयुधः संयुगे देव्या सह तत्र महासुराः । कोटिकोटिसहस्रैस्तु रथानां दन्तिनां तथा ॥ ४६ ॥ हयानां च वृतो युद्धे तत्राभून्महिषासुरः। तोमरैर्भिन्दिपालैश्च शक्तिभिर्मुसलैस्तथा ॥ ४७ ॥ युयुधुः संयुगे देव्या खड्गैः परशुपट्टिशैः । केचिच्च चिक्षिपः शक्तीः केचित्पाशांस्तथापरे ॥ ४८ ॥ देवीं खड्गप्रहारैस्तु ते तां हन्तुं प्रचक्रमुः । सापि देवी ततस्तानि शस्त्राण्यस्त्राणि चण्डिका ॥ ४९ ॥ लीलयैव प्रचिच्छेद निजशस्त्रास्त्रवर्षिणी । अनायस्तानना देवी स्तूयमाना सुरर्षिभिः ॥ ५० ॥ मुमोचासुरदेहेषु शस्त्रण्यस्त्राणि चेश्वरी । सोऽपि क्रुद्धो धुतसटो देव्या वाहनकेशरी ॥ ५१ ॥ चचारासुर सैन्येषु वनेष्विव हुताशनः । निःश्वासान् मुमुचे यांश्च युद्धमानारणेऽम्बिका ॥ ५२ ॥ त एव सद्यः सम्भूता गणाः शतसहस्रशः । युयुधुस्ते परशुभिर्भिन्दिपालासिपट्टिशैः ॥ ५३ ॥ नाशयन्तोऽसुरगणान् देवीशक्त्युपबृंहिताः । अवादयन्तपटहान् गणाः शङ्खास्तथापरे ॥ ५४ ॥ मृदङ्गांश्च तथैवान्ये तस्मिन् युद्धमहोत्सवे । ततो देवी त्रिशूलेन गदया शक्तिवृष्टिभिः ॥ ५५ ॥ खड्गादिभिश्च शतशो निजघान महासुरान् । पातयामास चैवान्यान् घण्टास्वनविमोहितान् ॥ ५६ ॥ असुरान् भुवि पाशेन बद्ध्वा चान्यान कर्षयत् । केचिद् द्विधा कृतास्तीक्ष्णैः खड्गपातैस्तथापरे ॥ ५७ ॥ विपोथिता निपातेन गदया भुवि शेरते । वेमुश्च केचिद्रुधिरं

बाष्कल नामक दैत्य साठ लाख असुरों को लेकर युद्ध-भूमि में युद्ध करने लगा । परिवारित नामक राक्षस अनेक हाथी, सवार तथा घुड़सवार सैनिकों को लेकर और विडल नामक दैत्य पचास करोड़ सैनिकों से सुसज्जित होकर युद्ध करने लगा । अन्यान्य बहुत से महासुरगण युद्धक्षेत्र में रथ, हाथी और घोड़ों की सेना साथ लेकर देवी के साथ युद्ध करने लगे । स्वयं महिषासुर भी उस रणक्षेत्र में करोड़ों रथ हाथी और घोड़ों की सेना से परिवृत था । उस समय कोई दैत्य तोमर (गडासे की तरह एक पुराना अस्त्र), कोई भिन्दिपाल (वह जाली जिसमें ढेला रखकर चिड़ियों या शत्रुओं पर फेका जाता है), कोई मुषल, (मुद्गर), कोई खड्ग, कोई परशु (फरसा), और कोई पट्टिश (लघु खड्ग विशेष) आदि अस्त्र-शस्त्रों का प्रहार करते हुए युद्ध करने लगा । कुछ दैत्यों ने उनपर शक्ति को प्रहार किया तो कोई पाश फेकने लगा ॥४३-४८॥

बहुत से राक्षसों ने तो खड्गप्रहार करके भगवती को मारने का प्रयास किया । देवी ने भी क्रोध में आकर खेल-खेल में ही अपने अस्त्र-शस्त्रों की वर्षा द्वारा दैत्यों के समस्त अस्त्र-शस्त्रों काट डाला। इस प्रकार समस्त जगत की नियन्त्री अविकृतमुखवाली देवी, जिनकी स्तुति देव, ऋषि लोग करते थे, असुरों की देहों पर अस्त्र-शस्त्रों की वर्षा करने लगी। साथ ही देवी का वाहन सिंह भी क्रोध में आकर गर्दन के बालों को हिलाता हुआ असुरों की सेना में इस प्रकार घूमने लगा मानो वनों में दावानल फैल रहा हो । युद्धस्थल में युद्ध करती हुई भगवती ने जितने निश्वास छोड़े वे सभी तत्काल सैकड़ों, हजारों गणों के रूप में प्रकट हो गये और परशु, भिन्दिपाल, तलवार और पट्टिश आदि अस्त्र लेकर असुरों का सामना करने लगे ॥ ४९-५३ ॥

वे गण देवी सामर्थ्य के द्वारा उत्कर्ष को प्राप्त करते हुए समस्त असुरगणों का नाश करते हुए नगाड़े तथा शङ्ख बजाने लगे । उस युद्धमहोत्सव में अन्य गण मृदङ्ग बजाने लगे और देवी ने त्रिशूल एवं गदा, शक्ति, ऋष्टि, खड्ग आदि के द्वारा सैकड़ों महादैत्यों का संहार कर डाला । कितनों को घण्टे की दारुण ध्वनि से मूर्च्छित करते हुए भूमि पर मार गिराया । कितने ही दैत्य उनकी तीखी तलवार

मुसलने भृशं हताः ॥ ५८ ॥ केचिन्निपतिता भूमौ भिन्नाः शूलेन वक्षसि । निरन्तराः शरौघेण कृताः केचिद्रणाजिरे ॥ ५९ ॥ श्येनानुकारिणः प्राणान् मुमुचुस्त्रिदशार्दनाः । केषांचिद् बाहवश्छिन्नाश्छिन्नग्रीवास्तथापरे ॥ ६० ॥ शिरांसि पेतुरन्येषामन्ये मध्ये विदारिताः । विच्छिन्नजङ्घास्त्वपरे पेतुरुर्व्यां महासुराः ॥ ६१ ॥ एकबाह्वक्षिचरणाःकेचिद्देव्या द्विधा कृताः । छिन्नेऽपि चान्ये शिरसि पतिताः पुनरुत्थिताः ॥ ६२ ॥ कबन्धा युयुधुर्देव्या गृहीतपरमायुधाः । ननृतुश्चापरे तत्र युद्धे तूर्यलयाश्रिताः ॥ ६३ ॥ कबन्धाश्छिन्नशिरसः खड्गशक्त्यृष्टि पाणयः । तिष्ठ तिष्ठेति भाषन्तो देवीमन्ये महासुराः ॥ ६४ ॥ पातितै रथनागाश्वरसुरैश्च वसुन्धरा । अगम्या साऽभवत्तत्र यत्राभूत्स महारणः ॥ ६५ ॥ शोणितौघा महानद्यः सद्यस्तत्र प्रसुस्रुवः । मध्ये चासुरसैन्यस्य वारणा सुरवाजिनाम् ॥ ६६ ॥ क्षणेन तन्महासैन्यमसुराणा तथाम्बिका । निन्येक्षयं यथा वह्नि स्तृणदारुमहाचयम् ॥ ६७ ॥ स च सिंहो महानादमुत्सृजन्धुतकेशरः । शरीरेभ्योऽमरारीणामसुनिव विचिन्वति ॥ ६८ ॥ देव्या गणैश्च तैस्तत्र कृतं युद्धं महासुरैः यथैषां तुष्टुवुर्देवाः पुष्पवृष्टिमुचो दिवि ॥ ॐ ॥ ६९ ॥

इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिकि मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये महिषासुर-
सैन्यवधो नाम द्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥ उवाच १,
श्लोकाः ६८, एवम् ६९, एवमादितः १७३ ॥

के घात से दो-दो टुकड़े हो गये । कतिपय दैत्य शूल से वक्षस्थल फट-फट जाने के कारण पृथिवी पर गिर पड़े । कुछ दैत्य प्राङ्गण में बाण समूहों की वृष्टि से हतोत्साह होकर ज्यों के त्यों खड़े रह गये ॥ ५४-५९ ॥

श्येन पक्षी की तरह दूसरे पक्षियों को झपटनेवाले तथा देवताओं को पीड़ा देनेवाले कितने ही दैत्यगणों ने अपने प्राणों का परित्याग किया । कितनों की बाहें छिन्न-भिन्न हो गयीं तथा कितने की गर्दने कट गयीं । कितने के सिर कट-कटकर गिरने लगे । कितने के शरीर के मध्य भाग विदीर्ण हो गये । कितने ही महासुर जाँघें कटजाने से धाराशायी हो गये । कितनों को देवी ने एक बाँह, एक पैर तथा एक नेत्रवाला बनाकर दो टुकड़ों में चीर डाला। कितने ही दैत्य मस्तक कटजाने पर भी गिरकर, फिर उठ-उठकर केवल सिररहति कलेवर के रूप में अच्छे-अच्छे हथियार हाथ में लेकर देवी के साथ युद्ध करने लगे। कितने मस्तक-रहित धड़ युद्ध के वाद्यों की लय पर नाचते थे । बिना सिर के कितने ही धड़ हाथों में खड्ग, शक्ति तथा ऋष्टि (सूक्ष्म खड्ग) लिए एवं देवी को 'ठहरो ?' ठहरो ?' यह आवाज करते हुए युद्ध के लिए ललकारते थे । जहाँ वह दारुण संग्राम हुआ था वहाँ की पृथ्वी, देवी के द्वारा गिराये गये रथ, हाथी, घोड़े और असुरों से इस तरह भर गई थी कि वहाँ जाना असम्भव सा हो गया था । दैत्य की सेनाओं के बीच हाथी, घोड़े और असुरों की देहों से जो रक्तस्राव हुआ था वह मध्य में बड़ी-बड़ी नदियों के रूप में बहने लगा ॥ ६०-६६ ॥

जिस प्रकार तृण और लकड़ी की विशाल राशि को अग्नि थोड़े ही समय में भस्मसात् कर देता है, ठीक वैसे ही अम्बिका ने असुरों की विशाल सेना को क्षण भर में नष्ट कर दिया । उधर सिंह ने भी अपनी गर्दन के बालों को हिलाते हुए ऐसी गर्जना की जिससे दैत्यों के शरीरों से मानों उनके प्राण चले जाते हों । वहाँ देवी के गणों ने भी उन महादैत्यों के साथ ऐसा युद्ध किया जिससे आकाश में स्थित देवगण अतिसंतुष्ट होकर पुष्पों की वर्षा करने लगे ॥ ६७-६९ ॥

श्रीमार्कण्डेयपुराण में सावर्णिक मन्वन्तर की कथा के अन्तर्गत देवी-माहात्म्य में 'महिषासुर की सेना का बध' नामक दूसरा-अध्याय समाप्त हुआ ॥ ६९-२ ॥

ऋषिरुवाच ॥ १ ॥

निहन्यमानं तत्सैन्यमवलोक्य महासुरः। सेनानीश्चिक्षुरः कोपाद्ययौ योद्धुमथाम्बिकाम् ॥ २ ॥ स देवीं शरवर्षेण ववर्ष समरेऽसुरः। यथा मेरुगिरेः शृङ्गं तोयवर्षेय तोयदः ॥ ३ ॥ तस्यच्छित्त्वा ततो देवी लीलयैव शरोत्करान्। जघान तुरगान् बाणैर्यन्तारं चैव वाजिनाम् ॥ ४ ॥ चिच्छेद च धनुः सद्यो ध्वजं चातिसमुच्छ्रितम्। विव्याध चैव गात्रेषु छिन्नधन्वानमाशुगैः ॥ ५ ॥ सच्छिन्नधन्वा विरथो हताश्वो हतसारथिः। अभ्यधावत तां देवीं खड्गचर्मधरोऽसुरः ॥ ६ ॥ सिंह माहात्य खड्गेन तीक्ष्णधारेण मूर्धनि। आजघान भुजे सव्ये देवीमप्यतिवेगवान् ॥ ७ ॥ तस्याः खड्गो भुजं प्राप्य पफाल नृपनन्दन। ततो जग्राह शूलं स कोपादरुणलोचनः ॥ ८ ॥ चिक्षेप च ततस्तत्त भद्रकाल्यां महासुरः। जाज्वल्यमानं तेजोभी रविबिम्बमिवाम्बरात् ॥ ९ ॥ दृष्ट्वा तदापतच्छूलं देवी शूलममुञ्चत। तच्छूलं शतधा तेन नी तं स च महासुरः ॥ १० ॥ हते तस्मिन्महावीर्ये महिषस्य चमूपतौ। आजगाम गजारूढश्चामरस्त्रिदशार्दनः ॥ ११ ॥ सोऽपि शक्तिं मुमोचाथ देव्यास्तामम्बिका द्रुतम्। हुंकाराभिहतां भूमौ पातयामासनिष्प्रभाम् ॥ १२ ॥ भग्नां शक्तिं निपतितां दृष्ट्वा क्रोधसमन्वितः। चिक्षेप चामरः शूलं बाणैस्तदपि साच्छिनत् ॥ १३ ॥ ततः सिंहः समुत्पत्य गजकुम्भान्तरे स्थितः। बाहुयुद्धेन युयुधे तेनोच्चैस्त्रिदशारिणा ॥ १४ ॥ युद्ध्यमानौ ततस्तौ तु

तृतीय अध्याय : (ससैन्य महिषासुर का बध)

ऋषि ने कहा : महासुर सेनापति चिक्षुर उस सैन्य-समूहों का संहार होते देखकर क्रोध से अम्बिका के साथ युद्ध करने लगा। वह असुर देवी के ऊपर इस प्रकार बाणों की वर्षा करने लगा, जैसे मेघ सुमेरु पर्वत की चोटी पर जल वर्षाता हो। यह देख देवी ने अपने बाणों से शत्रु के समुदाय को अनायास ही काटकर उसके घोड़े एवं सारथी को मार डाला तथा तत्काल ही उस महासुर के धनुष और अत्यन्त ऊँची ध्वजा को भी काट डाला। तब धनुष कट जाने पर देवी ने उसके अङ्ग-प्रत्यङ्गों को अपने बाणों से बींध दिया ॥ १-५ ॥

धनुष कट जाने पर तथा घोड़े एवं सारथी के नष्ट हो जाने पर रथ से रहित ढाल तथा तलवार धारण कर वह असुर देवी की ओर दौड़ पड़ा और तीक्ष्ण धारवाली तलवार से सिंह के मस्तक पर प्रहार करके बड़े वेग से देवी की बायीं
भुजा पर प्रहार किया। हे राजन ! जब वह तलवार देवी की भुजा पर पहुँचते ही टूट गयी तब असुर ने क्रोध से लाल आँखें करके हाथ में त्रिशूल ग्रहण किया। उसके बाद महासुर ने भद्रकाली के ऊपर उस त्रिशूल को फेंका। वह त्रिशूल आकाश पर्यन्त सूर्यमण्डल की तरह अपने तेजों से प्रज्वलित हो उठा। देवी ने भी उस त्रिशूल को अपनी ओर आते देख अपना त्रिशूल फेंका और उस महासुर के त्रिशूल के सैकड़ों टुकड़े कर दिये तथा उस महासुर को भी मार दिया ॥ ६-१० ॥

जब पराक्रमी सेनापति चिक्षुर मारा गया तब देवताओं को पीड़ा देने वाला चामर नामक राक्षस हाथी पर सवार होकर आया ॥ ११ ॥

चामर दैत्य ने देवी के रथ पर शीघ्र ही शक्ति नामक हथियार फेंका, किन्तु देवी ने उसे हुंकारमात्र से ही आहत एवं निष्प्रभ करके जमीन पर गिरा दिया ॥ १२ ॥

शक्ति को टूटकर गिरते देख चामर ने क्रोधित हो अपना त्रिशूल फेंका। देवी ने उसे भी अपने बाणों से काट डाला ॥ १३ ॥

तदनन्तर देवी का वाहन सिंह उछलकर चामर के हाथी के मस्तक पर चढ़ बैठा और उस असुर से मल्लयुद्ध करने लगा ॥ १४ ॥

तस्मान्नागान्महीं गतौ । युयुधातेऽतिसंरब्धौ प्रहारैरतिदारुणैः ॥ १५ ॥ ततो वेगात् खमुत्पत्य च मृगारिणा । करप्रहारेण शिरश्चामरस्य पृथक्कृतम् ॥ १६ ॥ उदग्रश्चरणे देव्या शिलावृक्षादिभिर्हतः । दन्तमुष्टितलैश्चैव करालश्च निपातितः ॥ १७ ॥ देवी क्रुद्धा गदापातैश्चूर्णयामास चोद्धतम् । बाष्कलं भिन्दिपालेन बाणैस्ताम्रं तथान्धकम् ॥ १८ ॥ उग्रास्यमुग्रवीर्यं च तथैव च महाहनुम् । त्रिनेत्रा च त्रिशूलेन जघान परमेश्वरी ॥ १९ ॥ बिडालस्यासिना कायात् पातयामास वै शिरः । दुर्धरं दुर्मुखं चोभौ शरैर्निन्ये यमक्षयम् ॥ २० ॥ एवं संक्षीयमाणे तु स्वसैन्ये महिषासुरः । माहिषेण स्वरूपेण त्रासयामास तान् गणान् ॥ २१ ॥ कांश्चितुण्डप्रहारेण खुरक्षेपैस्तथापरान् । लांगूलताडितांश्चान्यान्शृङ्गाभ्यां च विदारितान् ॥ २२ ॥ वेगेन कांश्चिदपरान्नादेन भ्रमणेन च । निःश्वासपवनेनान्यान् पातयामास भूतले ॥ २३ ॥ निपात्य प्रमथानीकमभ्यधावत सोऽसुरः । सिहं हन्तुं महादेव्याः कोपं चक्रे ततोऽम्बिका ॥ २४ ॥ सोऽपि कोपान्महावीर्यः खुरक्षुण्णमहीतलः । शृङ्गाभ्यां पर्वतानुच्चांश्चिक्षेप च ननाद च ॥ २५ ॥ वेगभ्रमणविक्षुण्णा मही तस्य व्यशीर्यत । लांगुलेनाहतश्चाब्धिः प्लावयामास सर्वतः ॥ २६ ॥ धुतशृङ्गविभिन्नाश्च खण्डं खण्डं ययुर्घनाः । श्वासानिलास्ताः शतशो निपेतुर्नभसोऽचलाः ॥ २७ ॥ इति क्रोधसमाध्मातमापतन्तं महासुरम् ।

उसके बाद चामर और सिंह दोनों लड़ते-लड़ते हाथी से पृथ्वी पर उतरकर क्रोधित हो भयङ्कर प्रहार के द्वारा अतिघोर युद्ध करने लगे ॥ १५ ॥

उसके बाद सिंह बड़े वेग से आकाश की ओर उछला और नीचे उतरकर अपने पञ्जों की मार से चामर का मस्तक धड़ से अलग कर दिया ॥ १६ ॥

उधर उदग्र नामक असुर को देवी ने रणक्षेत्र में पत्थर, वृक्ष आदि से मार डाला । कराल नामक राक्षस सिंह के दाँतों, मुक्कों और पत्थरों के प्रहार से धाराशायी हो गया ॥ १७ ॥

देवी ने क्रुद्ध होकर गदा के प्रहार से उद्धत नामक दैत्य को चूर्ण-चूर्ण कर दिया। भिन्दिपाल (ढेलवाँस या गोफल) वाष्कल तथा अन्धक को और बाणों से ताम्र नामक दैत्य को मार दिया ॥ १८ ॥

तीन नेत्रवाली परमेश्वरी ने त्रिशूल से उग्रास्य, उग्रवीर्य एवं महाहनु नामक असुरों को भी उसी भाँति मार डाला ॥ १९ ॥

तलवार से विडालासुर के मस्तक को शरीर से अलग गिया दिया तथा दुर्द्धर और दुर्मुख नामक दोनों असुरों को बाणों द्वारा यमराज के घर पहुँचाया । इस प्रकार अपनी सेनाओं का विनाश होते देख महिषासुर ने तब भैंस का रूप धारणकर देवी के गणों को भय देना प्रारम्भ कर दिया ॥ २०-२१ ॥

कुछ गणों को थूथुन के प्रहार से, कुछ को खुरों से, कुछ को पूंछ की झटकार से और कुछ को सींगों की टक्कर से मारने लगा ॥ २२ ॥

किसी को तेजी से दौड़कर किसी को गर्जना करके, कुछ को भ्रमण तथा श्वास के तीक्ष्ण वायु से धाराशायी कर दिया ॥ २३ ॥

वह महिषासुर दुष्टों को सताने वाले देवी के गणों की सेनाओं को गिराकर जब देवी के वाहन सिंह को मारने के लिए दौड़ा, तब देवी अति क्रुद्ध हो उठी ॥ २४ ॥

उधर बलवान महिषासुर भी क्रोध करके खुरों से धरती को खोदता हुआ, अपने सींगों से ऊँचे-ऊँचे पर्वतों को फेकता हुआ गरजने लगा ॥ २५ ॥

उसके वेग के साथ चक्कर देने से पृथ्वी क्षुब्ध होकर फट गयी और पूंछ से टकराकर समुद्र चारों ओर पृथ्वी को डुबोने लगा ॥ २६ ॥

कम्पित सींगों द्वारा विदीर्ण होकर मेघ के समुदाय टुकड़े-टुकड़े हो गये । उसके श्वास की प्रचण्ड वायु से सैकड़ों पर्वत आकाश से गिरने लगे ॥ २७ ॥

दृष्ट्वा सा चण्डिका कोपं तद्वधाय तदाकरोत् ॥२८॥ सा क्षिप्त्वा तस्य वै पाशं तं बबन्ध महासुरम् । तत्याज माहिषं रूपं सोऽपि बद्धो महामृधे ॥ २९ ॥ ततः सिंहोऽभवत् सद्यो यावत्तस्याम्बिका शिरः । छिनत्ति तावत् पुरुषः खड्गपाणिरदृश्यतः ॥ ३० ॥ तत एवाशु पुरुषं देवीं चिच्छेद सायकैः । तं खड्गचर्मणा सार्द्धं ततः सोऽभून्महागजः ॥ ३१ ॥ करेण च महासिंहं तं चकर्ष जगर्ज च । कर्षतस्तु करं देवीं खड्गेन निरकृन्तत ॥ ३२ ॥ ततो महासुरो भूयो माहिषं वपुरास्थितः । तथैव क्षोभयामास त्रैलोक्यं सचराचरम् ॥ ३३ ॥ ततः क्रुद्धा जगन्माता चण्डिका पानमुत्तमम् । पापी पुनः पुनश्चैव जहासारुणलोचना ॥ ३४ ॥ ननर्द चासुरः सोऽपि बलवीर्यमदोद्धतः । विषाणाभ्यां च चिक्षेप चण्डिकां प्रतिभूधरान् ॥ ३५ ॥ सा च तान् प्रहितांस्तेन चूर्णयन्ती शरोत्करैः । उवाच तं मदोद्धुतमुखरागाकुलाक्षरम् ॥ ३६ ॥

देव्युवाच ॥ ३७ ॥

गर्ज गर्ज क्षणं मूढ मधु यावत्पिबाम्हम् । मया त्वयि हतेऽत्रैव गर्जिष्यन्त्याशु देवताः ॥ ३८ ॥

ऋषिरुवाच ॥ ३९ ॥

एवमुक्त्वा समुत्पत्य साऽऽरूढा तं महासुरम् । पादेनाक्रम्यं कण्ठे च शूलेनैनमताडयत् ॥ ४० ॥ ततः सोऽपि पदाऽऽक्रान्तस्तया निमुखात्ततः । अर्धनिष्क्रान्त एवासीद् देव्या वीर्येण संवृतः ॥ ४१ ॥ अर्धनिष्क्रान्त एवासौ युद्धमानो महासुरः । तया महासिना देव्या शिरश्छित्त्वा

इस प्रकार क्रोध से गरजते हुये महिषासुर को अपनी ओर आते देख चण्डिका को बहुत क्रोध हुआ और उन्होंने (वारुण नामक) पाश को फेंककर उस महिषासुर को बाँध लिया । पाश में बँध जाने पर उसने भैंसें का रूप छोड़कर सिंह का रूप धारण कर लिया । देवी जब उसका सिर काटने लगी तब वह हाथ में खड्ग लेकर पुष्प रूप में दिखाई पड़ने लगा ॥ २८-३० ॥

तदनन्तर देवी ने बाणों के द्वारा ढाल, तलवार आदि से जब उस पुरुषाकार दैत्य को वेध डाला तब वह महान् गजराज के रूप में प्रकट हो गया और भगवती के महासिंह को अपने विशाल सूँड़ से खींचता हुआ गरजने लगा । तब देवी ने अपनी तलवार से उसके सूँड़ को काट डाला ॥ ३१-३२ ॥

तब उस महिषासुर ने फिर भैंसें का शरीर धारणकर किया और तीनों लोकों के चराचरो को पहले की भाँति क्षुब्ध करने लगा ॥ ३३ ॥

तब जगन्माता चण्डिका देवी क्रोधित होकर बार-बार अत्युत्तम सुरापान करने लगी और लाल-लाल आँखें करके हँसने लगी ॥ ३४ ॥

उधर बल पराक्रम एवं अभिमान से उन्मत्त हुआ वह महिषासुर भी गरजने लगा और अपने सींग से चण्डिका के ऊपर पहाड़ों को फेंकने लगा । तब चण्डिका उन पहाड़ों को चूर्ण करती हुई अस्पष्ट शब्द से उसको कहने लगी। उस समय उनका मुखमण्डल सुरा पीने के कारण अत्यन्त लाल हो गया था ॥ ३५-३६ ॥

देवी ने कहा : रे मूढ़, जब तक मैं सुरा न पी लूं तब तक खूब गरज ले । यहीं पर मेरे हाथ से तेरी मृत्यु हो जाने पर शीघ्र ही देवता लोक गर्जना करेंगे ।

ऋषि ने कहा : इतना कहकर देवी उस महिषासुर के ऊपर चढ़ गई और अपने पैर से उसे दबाकर शूल से उसके कण्ठ में आघात करने लगी तब उनके पैर से दबकर महिषासुर ज्यों ही अपने मुख से दूसरा शरीर निकालने लगा, त्यों ही उसका आधा शरीर बाहर निकलते ही देवी ने अपने पराक्रम से उसे रोक दिया ॥ ३९-४०-४१ ॥

निपातितः ॥ ४२ ॥ ततो हाहाकृतं सर्वं दैत्यसैन्यं ननाश तत्। प्रहर्षं च परं जग्मुः सकला देवतागणाः ॥ ४३ ॥ तुष्टुवुस्तां सुरा देवीं सह दिव्यैर्महर्षिभिः : जगुर्गन्धर्वपतयो ननृतुश्चाप्सरोगणाः ॥ ४४ ॥

इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे
देवीमाहात्म्ये महिषासुरबधो
नाम तृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥ उवाच ३,
श्लोकाः ४१, एवम् ४४, एवमादितः ॥ २२७ ॥

'ॐ' ऋषिरुवाच ॥ १ ॥

शुक्रादयः सुरगणा निहतेऽतिवीर्ये तस्मिन्दुरात्मनि सुरारिबले च देव्या। तां तुष्टुवुः प्रणतिनम्रशिरोधरांसा वाग्भिः प्रहर्षपुलकोद्गमचारुदेहाः ॥ २ ॥ देव्या यया ततमिदं जगदात्मशक्त्या निश्शेषदेवगणशक्तिसमूहमूर्त्या। तामम्बिकामखिलदेवमहर्षिपूज्यां भक्त्या नताः स्म विदधातु शुभानि सा नः ॥ ३ ॥ यस्याः प्रभावमतुलं भगवाननन्तो ब्रह्मा हरश्च न हि वक्तुमलं बलं च। सा चण्डिकाखिलजगत्परिपालनाय नाशाय चाशुभभयस्य मतिं करोतु ॥ ४ ॥ या श्रीः स्वयं सुकृतिनां भवनेष्वलक्ष्मीः पापात्मनां कृतधियां हृदयेषु बुद्धिः। श्रद्धा सतां कुलजनप्रभवस्य लज्जा तां त्वां नताः स्म परिपालय देवि विश्वम् ॥ ५ ॥ किं वर्णयाम् तव रूपमचिन्त्यमेतत् किं

आधा शरीर निकलने पर भी महिषासुर देवी से युद्ध करने लगा। अन्त में देवी ने अपनी तलवार से उसके सिर को काट डाला ॥ ४२ ॥

तब हाहाकार करती हुई दैत्यों की सेनाएँ भाग गई और उधर देवतागण अत्यन्त प्रसन्न हो उठे ॥ ४३ ॥

तथा दिव्य महर्षियों के साथ सभी देवगण भगवती की प्रार्थना करने लगे। गन्धर्वराज गाने लगे तथा अप्सरायें नाचने लगीं ॥ ४३-४४ ॥

श्रीमार्कण्डेयपुराण में सावर्णिक मन्वन्तर की कथा के
अन्तर्गत देवी महात्म्य में 'महिषासुर वध' नामक
तीसरा अध्याय समाप्त हुआ ॥ ३ ॥

चतुर्थ अध्याय : मेधा ऋषि ने कहा : ॥ १ ॥

(हे सुरथ) जब महापराक्रमी दुष्टात्मा महिषासुर और उसकी सेनाओं को देवी ने मार डाला, तब इन्द्र आदि देवता सिर और शरीर को झुकाकर, हर्ष से पुलकित होकर, सुकोमल वाक्यों से भगवती की प्रार्थना करने लगे ॥ २ ॥

देवता बोले : जो देवी अपनी शक्ति से सम्पूर्ण विश्व को व्याप्त कर रही हैं, जो सब देवताओं की शक्ति से आविर्भूत हुई हैं, जिनकी पूजा समस्त देवगण तथा महर्षिगण करते हैं, उन देवी को हम लोग भक्तिपूर्वक प्रणाम करते हैं, वे हमलोगों का कल्याण करें ॥ ३ ॥

जिनके अतुलनीय प्रभाव एवं बल का वर्णन ब्रह्मा, विष्णु एवं महेश भी करने में असमर्थ हैं, वे चण्डिका का भरण-पोषण एवं सभी अशुभ भय का विनाश करने की इच्छा करें ॥ ४ ॥

जो देवी पुण्यात्माओं के घरों में लक्ष्मी रूप से, पापियों के घरों में अलक्ष्मी (दरिद्रता) रूप से, निर्मलबुद्धिवाले व्यक्तियों के हृदय में बुद्धि रूप से, सज्जनों के हृदय में श्रद्धारूप से और सत्कुलोद्भव व्यक्तियों में लज्जारूप से निवास करती हैं, उन देवी को हम नमस्कार करते हैं। हे देवि! आप विश्व का पालन करें ॥ ५ ॥

चातिवीर्यमसुरक्षयकारि भूरि। किं चाहवेषु चरितानि तवाद्भुतानि सर्वेषु देव्यसुरदेवगणादिकेषु ॥ ६ ॥ हेतुः समस्तजगतां त्रिगुणापि दोषैर्न ज्ञायसे हरिहरादिभिरप्यपारा। सर्वाश्रयाखिलमिदं जगदशभूतमव्याकृता हि परमा प्रकृतिस्त्वमाद्या ॥ ७ ॥ यस्याः समस्तसुरता समुदीरणेन तृप्तिं प्रयाति सकलेषु मखेषु देवि। स्वाहासि वै पितृगणस्य च तृप्तिहेतुरुच्चार्यसे त्वमत एव जनैः स्वधा च ॥ ८ ॥ या मुक्तिहेतुरविचिन्त्यमहाव्रता त्वमभ्यस्यसे सुनियतेन्द्रियतत्त्वसारैः। मोक्षार्थिभिर्मुनिभिरस्त-समस्तदोषैर्विद्यासि सा भगवती परमा हि देवि ॥ ९ ॥ शब्दात्मिका सुविमलर्ग्यजुषां निधानमुद्गीथरम्यपदपाठवतां च साम्नाम् देवी त्रयी भगवती भवभावनाय वार्त्ता च सर्वजगतां परमार्तिहन्त्री ॥ १० ॥ मेधासि देवि विदिताखिलशास्त्रसारा दुर्गासि दुर्गभवसागरनौरसङ्गा। श्रीः कैटभारिहृदयैककृताधिवासा गौरी त्वमेव शशिमौलिकृतप्रतिष्ठा ॥ ११ ॥ ईषत्सहासममलं परिपूर्णचन्द्रबिम्बानुकारि कनकोत्तमकान्तिकान्तम्। अत्यद्भुतं प्रहृतमात्तरुषा तथापि वक्त्रं विलोक्य सहसा महिषासुरेण ॥ १२ ॥ दृष्ट्वा तु देवि कुपितं भ्रुकुटीकरालकृधच्छशाङ्क सदृशच्छवि यन्न सद्यः। प्राणान् मुमोच महिषस्तदतीव चित्रं वैर्जीव्यते हि कुपितान्तकदर्शनेन ॥ १३ ॥ देवी

हे देवि ! तुम्हारे इस अचिन्त्य रूप का, असुरों का विनाश करनेवाली शक्ति का तथा समस्त देवताओं और दैत्यों के समक्ष युद्ध में प्रकट किये गये अद्‌भुत चरित्रों का हमलोग किस प्रकार वर्णन करें, अर्थात् आपके गुणों का वर्णन करने की शक्ति हम लोगों में नहीं है ॥ ६ ॥

तुम समस्त जगत का कारण हो । सत्वगुण, रजोगुण, तमोगुण से युक्त हो, तथापि तुममें दोषों का लेश भी नहीं दिखाई पड़ता । ब्रह्मा, विष्णु और महेश भी तुम्हारा पार नहीं पा सकते । तुम ही सबकी आधारभूता हो । सारा जगत तुम्हारा ही अंशभूत है । तुम ही अव्याकृत तथा परम प्रकृति आदि शक्ति हो ॥ ७ ॥

हे देवि ! यज्ञ में जिसका उच्चारण करने से देवताओं की तृप्ति होती है, एवं पितृगण जिससे तृप्त होते हैं वह "स्वाहा" और "स्वधा" रूप तुम ही हो । इसीलिए लोग तुमको स्वाहा और स्वधा के रूप में उच्चारण करते हैं । हे देवि ! तुम ही मोक्ष प्राप्ति का कारण तथा अचिन्त्य ब्रह्मज्ञान रूप हो । समस्त दोषों से रहित, तत्व के सार को जानने वाले जितेन्द्रिय तथा मोक्ष की अभिलाषा रखने वाले मुनिगण जिसका अभ्यास करते हैं, वह भगवती पराविद्या रूपा तुम ही हो ॥ ८-९ ॥

हे देवि ! तुम शब्द रूपिणी हो, अतः तुम उद्‌गीथ एवं रमणीय पद पाठ विशिष्ट ऋग्वेद, यजुर्वेद तथा सामवेद का आश्रय हो । तुम ही वेदमाता और ऐश्वर्य से युक्त हो । प्राणीमात्र की आजीविका तथा संसार के दुःखों को दूर करनेवाली तुम ही हो ॥ १० ॥

हे देवि ! सब शास्त्रों का मर्म जाननेवाली मेधा तुम ही हो । तुम दुर्गम भवसागर की नौका रूपी दुर्गा हो । तुम्हारी कहीं भी आसक्ति नहीं है । कैटभ का विनाश करने वाले भगवान विष्णु के हृदय में वास करनेवाली लक्ष्मी और भगवान् चन्द्रशेखर द्वारा सम्मानित गौरी तुम ही हो ॥ ११ ॥

अत्युत्तम सुवर्ण की मनोहर कान्ति से सुशोभित, इषद् हास्य से युक्त, पूर्णचन्द्रमा के बिम्ब का अनुकरण करनेवाले तुम्हारे मुखमण्डल को देखकर ही क्रोधित महिषासुर ने तुम्हारे ऊपर प्रहार किया था, यह बड़े ही आश्चर्य की बात है । हे देवि ! वही मुख जब क्रोध से युक्त होने पर उदयकालीन चन्द्रमा की भाँति लाल एवं तनी हुई भौंहों के कारण विकराल हो उठा तब उसे देखकर महिषासुर ने तुरन्त ही अपने प्राणों का क्यों नहीं परित्याग कर दिया, यह उससे भी अधिक आश्चर्य की बात है, क्योंकि कुपित आप के मुख को देखकर कौन जीवित रह सकता है ? ॥ १२-१३ ॥

प्रसीद परमा भवती भवाय सद्यो विनाशयसि कोपवती कुलानि। विज्ञातमेतदधुनैव यदस्तमेतन्नीतं बलं सुविपुलं महिषासुरस्य ॥ १४ ॥ ते सम्मता जनपदेषु धनानि तेषां तेषां यशांसि न च सीदति धर्मवर्गः। धन्यास्त एव निभृतात्मजभृत्यदारा येषां सदाभ्युदयदा भवती प्रसन्ना ॥ १५ ॥ धर्म्याणि देवि सकलानि सदैव कर्माण्यत्यादृतः प्रतिदिनं सुकृती करोति । स्वर्गं प्रयाति च ततो भवतीप्रसादाल्लेकत्रयेऽपि फलदा ननु देवि तेन ॥ १६ ॥ दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तोः स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि । दारिद्र्यदुःखभयहारिणि का त्वदन्या सर्वोपकारकरणाय सदाऽऽर्द्रचिता ॥ १७ ॥ एभिर्हतैर्जगदुपैति सुखं तथैते कुर्वन्तु नाम नरकाय चिराय पापम् । संग्राममृत्युमधिगम्य दिवं प्रयान्तु मत्वेति नूनमहितान् विनिहंसि देवि ॥ १८ ॥ दृष्ट्वै किं न भवती प्रकरोति भस्म सर्वासुरानरिषु यत्प्रहिणोपि शस्त्रम् । लोकान् प्रयान्तु रिपवोऽपि हि शस्त्रपूता इत्थं मतिर्भवति तेष्वति तेऽतिसाध्वी ॥ १९ ॥ खड्गप्रभानिकरविस्फुरणैस्तथोग्रैः शूलाग्रकान्तिनिवहेदृशोऽसुराणाम् । यन्नागता विलयमंशुमदिन्दुखण्डयोग्याननं तव विलोकयतां तदेतत् ॥ २० ॥ दुर्वृत्तवृत्तशमनं तव देवि शीलं रूपं तथैतदविचिन्त्यमतुल्यमन्यैः । वीर्यं च हन्तृ हृतदेवपराक्रमाणां वैरिष्वपि प्रकटितैव दया त्वयेत्थम् ॥ २१ ॥ केनोपमा भवतु तेऽस्य पराक्रमस्य रूपं च

हे देवि ! आप प्रसन्न हों । परमात्मा-स्वरूपा आप के प्रसन्न होने से ही विश्व का कल्याण होगा और कुपित होने पर अनेकों कुलों का विनाश हो जायगा । यह बात अभी ही मालूम हो चुकी है कि आपने क्रुद्ध होकर महिषासुर की बहुत बड़ी सेना का विनाश कर दिया है ॥ १४ ॥

हे देवि ! सदा अभ्युदय प्रदान करने वाली आप जिन पर प्रसन्न रहती हैं, वे धन्य हैं । उन्हीं का सभी देशों में सम्मान होता है, उन्हीं को धन और यश मिलता है, उन्हीं का धर्म सुरक्षित रहता है और वे ही अपनी हृष्ट-पुष्ट स्त्री, पुत्र और भृत्यों के साथ धन्य माने जाते हैं ॥ १५ ॥

हे देवि ! जिन पुण्यात्माओं पर आप प्रसन्न रहती हैं, वे आपकी दया से सदा बड़ी श्रद्धा से नित्य-नैमित्तक धर्मादिक कार्य करते हैं तथा आप की दया से अन्त में उनको स्वर्ग मिलता है । इसलिये तीनों लोकों में फल देने वाली आप ही हैं ॥ १६ ॥

हे माँ दुर्गे ! आप स्मरण करने पर सब प्राणियों के भय को दूर कर देती हैं । स्वस्थ पुरुषों द्वारा स्मरण करने पर उन्हें उत्तम बुद्धि देती हैं । हे दुःख, दरिद्रता और भय को हरनेवाली देवि ! आपके अतिरिक्त दूसरा कौन है जिसका चित्त सभी का उपकार करने लिये दयार्द्र रहता हो ॥ १७ ॥

हे देवि ! इन असुरों का विनाश करने से संसार में सुख हो और ये असुर नरक में रहने के निमित्त भले ही पाप करते हों, किन्तु युद्ध में मरकर इनको स्वर्ग मिले यह विचार कर ही आप इन असुरों को मारती हैं ॥ १८ ॥

हे देवि ! सभी दैत्यों को आप दृष्टि-पात-मात्र से ही भस्म क्यों नहीं कर देतीं ? किन्तु इसमें भी एक रहस्य है । ये सभी शत्रु हमारे शस्त्र के प्रहार से निष्पाप होकर स्वर्ग को जाँय इस प्रकार उनके प्रति भी आपका विचार उत्तम रहता है ॥ १९ ॥

आपकी तलवार का उग्र प्रभा-पुञ्ज और त्रिशूल के नोक की अत्यन्त चमक से चौंधियाकर उन राक्षसों की आँखें फूट गई, इसका यही कारण था कि वे मनोहर किरणों से युक्त चन्द्रमा के समान आनन्द देने वाले आपके मुख का दर्शन करते थे ॥ २० ॥

हे देवि ! आपका स्वभाव दुष्टों के दुराचार को नाश करने वाला है । आपका रूप अचिन्त्य तथा अनुपम है । आपका बल और पराक्रम तो उन दैत्यों को भी नाश करने वाला है जिन्होंने कभी देवताओं के पराक्रम को भी नष्ट कर दिया था । इस प्रकार आपने अपने शत्रुओं पर भी दया की है ॥ २१ ॥

शत्रुभयकार्यतिहारि कुत्र । चित्ते कृपा समरनिष्ठुरता च दृष्टा त्वय्येव देवि वरदे भुवनत्रयेऽपि ॥ २२ ॥ त्रैलोक्यमेतदखिलं रिपुनाशनेन त्रातं त्वया समरमूर्धनि तेऽपि हत्वा। नीता दिवं रिपुगणा भयमप्यपास्तमस्माकमुन्मदसुरारिभवं नमस्ते ॥ २३ ॥ शूलेन पाहि नो देवि पाहि खड्गेन चाम्बिके । घण्टास्वनेन नः पाहि चापज्यानिःस्वनेन च ॥ २४ ॥ प्राच्यां रक्ष प्रतीच्यां च चण्डिके रक्ष दक्षिणे । भ्रामणेनात्मशूलस्य उत्तरस्यां तथेश्वरि ॥ २५ ॥ सौम्यानि यानि रूपाणि त्रैलोक्ये विचरन्ति ते । यानि चात्यर्थघोराणि तै रक्षास्मांस्तथा भुवम् ॥ २६ ॥ खड्गशूलगदादीनि यानि चास्त्राणि तेऽम्बिके । करवल्लवसङ्गीनि तैरस्मान् रक्ष सर्वतः ॥ २७ ॥

ऋषिरुवाच ॥ २८ ॥

एवं स्तुता सुरैर्दिव्यैः कुसुमैर्नन्दनोद्भवैः । अर्चिता जगतां धात्रीं तथा गन्धानुलेपनैः ॥ २९ ॥ भक्त्या समस्तैस्त्रिदशैर्दिव्यैर्धूपैस्तु धूपिता । प्राह प्रसादसुमुखी समस्तान् प्रणतान् सुरान् ॥ ३० ॥

देव्युवाच ॥ ३१ ॥

व्रियतां त्रिदशाः सर्वे यदस्मत्तोऽभिवाञ्छितम् ॥ ३२ ॥

देवा ऊचुः ॥ ३३ ॥

भगवत्या कृतं सर्व न किञ्चिदवशिष्यते ॥ ३४ ॥ यदयं निहतः शत्रुरस्माकं महिषासुरः ।

हे देवि! आपके पराक्रम की उपमा किससे दी जा सकती है ? शत्रुओं को भय देनेवाला तथा दूसरों का मन हरने वाला आपके समान किसका रूप है ? हे वरदे ! चित्त में दया और युद्ध में निष्ठुरता यह दो बातें एक साथ आपमें ही देखी जाती है, आपके सिवा तीनों लोकों में कोई दूसरा ऐसा नहीं है । हे देवि ! आपने युद्ध में शत्रुओं का विनाश करके तीनों लोकों का परित्राण किया है । वे शत्रुगण भी आपके द्वारा युद्ध में मरकर स्वर्गवासी हुए हैं । हम लोगों का भी उद्धत असुर कुलजनित भय दूर हुआ है । अतः आपको नमस्कार है ॥ २२-२३ ॥

हे देवि ! शूल से हमारी रक्षा करो । हे अम्बिके ! तुम तलवार से, घण्टे की आवाज से तथा धनुष की टङ्कार से हमलोगों की रक्षा करो ॥ २४ ॥

हे चण्डिके ! पूर्व, पश्चिम और दक्षिण दिशा में आप हमारी रक्षा करें । ईश्वरि अपने त्रिशूल को घुमाकर उत्तर दिशा में हमारी रक्षा करें ॥ २५ ॥

आपके जो सब सौम्य एवं भयानक रूप तीनों लोकों में विराजमान हैं, उनके द्वारा आप हमारी तथा संसार की रक्षा करें ॥ २६ ॥

हे अम्बिके ! खड्ग, शूल, गदा आदि जो शस्त्र आप के कर-पल्लवों में शोभा पा रहे हैं, उनके द्वारा हमारी सब ओर से रक्षा करें ॥ २७ ॥

ऋषि बोले – ॥ २८ ॥

हे सुरथ, देवताओं ने जब नन्दन वन के दिव्य फूलों और चन्दन आदि सुगन्धित वस्तुओं से पूजन तथा दिव्य धूपों से धूपित करके बड़ी भक्ति से देवी की स्तुति की, तब जगद्धात्री भगवती प्रसन्न होकर बोली ॥ २९-३० ॥

देवी ने कहा – ॥ ३१ ॥

हे देवगण ! मैं तुमलोगों की स्तुति एवं पूजन से प्रसन्न हूं, अतएव तुम लोग अपने अभिलषित वर की प्रार्थना करो, वह मैं प्रेमपूर्वक देती हूं ॥ ३२ ॥

देवताओं ने कहा – ॥ ३३ ॥

हे देवि ! आपने हम लोगों की सब अभिलाषायें पूरी कर दीं, अब कुछ भी अविशिष्ट नहीं है ॥ ३४ ॥

यदि चापि वरो देयस्त्वयास्माकं महेश्वरि ॥ ३५ ॥ संस्मृता संस्मृता त्वं तो हिंसेथाः परमापदः । यश्च मर्त्यः स्तवैरेभिस्त्वां स्तोष्यत्यमलानने ॥ ३६ ॥ तस्य वित्तर्द्धिविभवैर्धनदारादिसम्पदाम् । वृद्धयेऽस्मप्रसन्ना त्वं भवेथाः सर्वदाम्बिके ॥ ३७ ॥

ऋषिरुवाच ॥ ३८ ॥

इति प्रसादिता देवैर्जगतोऽर्थे तथाऽऽत्मनः । तथेत्युक्त्वा भद्रकाली बभूवान्तर्हिता नृप ॥ ३९ ॥ इत्येतत्कथितं भूप सम्भूता सा यथा पुरा । देवी देवशरीरेभ्यो जगत्त्रयहितैषिणी ॥ ४० ॥ पुनश्च गौरीदेहात्सा समुद्भूता यथाभवत् । वधाय दुष्टदैत्यानां तथा शुम्भनिशुम्भयोः ॥ ४१ ॥ रक्षणाय च लोकानां देवानामुपकारिणी । तच्छृणुष्व मयाऽऽख्यातं यथावत्कथयामि ते ॥ ह्रीं ॐ ॥ ४२ ॥

इति श्रीमार्कण्डेपुराणे सावर्णिकि मन्वन्तरे देवीमहात्म्ये शक्रादिस्तुतिर्नाम
चतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥ उवाच ५, अर्धश्लोक २, श्लोकाः ३५,
एवम् ४२ एवमादितः २५९ ॥

"ॐ क्लीं" ऋषिरुवाच ॥ १ ॥

पुरा शुम्भनिशुम्भाभ्यामसुराभ्यां शचीपतेः । त्रैलोक्यं यज्ञभागाश्च हृता मदबलाश्रयात् ॥ २ ॥ तावेव सूर्यतां तद्वदधिकारं तथैन्दवम् । कौबेरमथ याम्यं च चक्राते वरुणस्य च ॥ ३ ॥ तावेव पवनर्द्धिं च चक्रतुर्वह्निकर्म च । ततो देवा विनिर्वता भ्रष्टराज्याःपराजिताः ॥ ४ ॥

क्योंकि हमलोगों के शत्रु महिषासुर को आपने मार डाला । किन्तु हे महेश्वरी यदि आप वर देना चाहती हैं तो, जब-जब हम लोग आपका स्मरण करें तब-तब आप हमारी विपत्तियाँ दूर कर दें और हे प्रसन्नमुखि अम्बिके ! जो कोई आपके इन स्तोत्रों से आपकी स्तुति करें, उसे वित्त, ऋद्धि और वैभव देने के साथ ही साथ उनकी धन और स्त्री आदि सम्पत्ति को भी बढ़ावें । हे देवि ! सदा हम पर प्रसन्न रहें ॥ ३५-३७ ॥

ऋषि ने कहा – ॥ ३८ ॥

इस प्रकार अपने और सम्पूर्ण जगत् के लिए देवताओं के प्रार्थना करने पर भद्रकाली प्रसन्न होकर "एवमस्तु" कहकर अन्तर्धान हो गई ॥ ३९ ॥

हे राजन् तीनों लोकों का हित करनेवाली भगवती जिस प्रकार देवताओं के शरीर से उत्पन्न हुई, वह वृत्तान्त हमने आपको सुनाया ॥ ४० ॥

उसके बाद फिर जिस प्रकार देवताओं का उपकार करने वाली देवी शुम्भ निशुम्भ आदि दुष्ट दैत्यों को मारने तथा सब लोगों की रक्षा करने के लिए गौरी के शरीर से उत्पन्न हुई, वह वृत्तान्त हमसे सुनो ॥ ४१-४२ ॥

श्री मार्कण्डेयपुराण में सावर्णिक मन्वन्तर की कथा के अन्तर्गत
देवी-माहात्म्य में शक्रादि स्तुति नामक
चतुर्थ अध्याय समाप्त हुआ ॥ ४ ॥

पञ्चम अध्याय : ऋषि ने कहा ॥ १ ॥

पहले शुम्भ और निशुम्भ नामक दो महासुरों ने गर्व एवं बल के कारण इन्द्र के तीनों लोकों के राज्य एवं यज्ञभाग को छीन लिया ॥ २ ॥

वे दोनों सूर्य, चन्द्र, कुबेर एवं वरुण के अधिकारों को छीनकर उपयोग करने लगे ॥ ३ ॥

वायु और अग्नि के कार्यभार को भी उन्होंने हरण कर लिया । इसके बाद देवताओं को अपमानित, राज्यभ्रष्ट, पराजित एवं अधिकारहीन करके उन्हें स्वर्ग से निकाल दिया ॥ ४ ॥

हृताधिकारास्त्रिदशास्ताभ्यां सर्वे निराकृताः । महासुराभ्यां तां देवीं संस्मरन्त्यपराजिताम् ॥५॥ तयास्माकं वरो दत्तो यथाऽऽपत्सु स्मृताखिलाः । भवतां नाशयिष्यामि तत्क्षणात्परमापदः ॥ ६ ॥ इति कृत्वा मतिं देवा हिमवन्तं नगेश्वरम् । जग्मुस्तत्र ततो देवीं विष्णुमायां प्रतुष्टुवुः ॥७॥

देवा ऊचुः ॥८॥

नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः । नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम् ॥ ९ ॥ रौद्रायै नमो नित्यायै गौर्यै धात्र्यै नमो नमः । ज्योत्स्नायै चेन्दुरूपिण्यै सुखायै सततं नमः ॥ १० ॥ कल्याण्यै प्रणतां वृद्ध्यै सिद्ध्यै कूर्म्यै नमो नमः । नैर्ऋत्यै भूभृतां लक्ष्म्यै शर्वाण्यै ते नमो नमः ॥ ११ ॥ दुर्गायै दुर्गपारायै सारायै सर्वकारिण्यै । ख्यात्यै तथैव कृष्णायै धूम्रायै सततं नम ॥ १२ ॥ अतिसौम्यातिरौद्रायै नतास्तस्यै नमो नमः । नमो जगत्प्रतिष्ठायै देव्यै कृत्यै नमो नमः ॥ १३ ॥ या देवी सर्वभूतेषु विष्णुमायेति शब्दिता । नमस्तस्यै ॥ १४ ॥ नमस्तस्यै ॥ १५ ॥ नमस्तस्यै नमो नमः ॥ १६ ॥ या देवी सर्वभूतेषु चेतनेत्यभिधीयते । नमस्तस्यै ॥ १७ ॥ नमस्तस्यै ॥ १८ ॥ नमस्तस्यै नमो नमः ॥ १९ ॥ या देवी सर्वभूतेषु बुद्धिरूपेण संस्थिता । नमस्तस्यै ॥ २० ॥ नमस्तस्यै ॥ २१ ॥ नमस्तस्यै नमो नमः ॥ २२ ॥ या देवी सर्वभूतेषु निद्रारूपेण संस्थिता । नमस्तस्यै ॥ २३ ॥ नमस्तस्यै ॥ २४ ॥ नमस्तस्यै नमो नमः ॥ २५ ॥

तब असुरों से पराजित एवं अधिकारहीन, देवताओ ने अपराजिता देवी का स्मरण किया एवं सोचने लगे कि 'देवी ने पहले हमलोगों को वरदान दिया है कि 'मैं आपत्ति के समय स्मरण करने पर तुम्हारे सभी संकटों को तत्काल दूर कर दूंगी' ॥ ५-६ ॥

यह सोचकर देवता पर्वतेश्वर हिमालय जाकर देवी विष्णुमाया की स्तुति करने लगे ॥ ७ ॥

देवताओं ने कहा : ॥ ८ ॥

देवी और महादेवी को हमारा नमस्कार है । शिवा को सदा नमस्कार है । प्रकृति एवं भद्रा देवी को नमस्कार है । नियमपूर्वक हमलोग जगन्माता को नमस्कार करते हैं ॥ ९ ॥

रौद्रा (रुद्रास्वरूपा), नित्या, गौरी, धात्री, ज्योत्सना, इन्द्ररूपिणी और परमानन्दमयी देवी को निरन्तर नमस्कार है ॥ १० ॥

कल्याण करनेवाली, वृद्धि और सिद्धि देनेवाली भगवती को नमस्कार है । नैर्ऋति (राक्षसों की लक्ष्मी) देवी को नमस्कार है । राजाओं के यहाँ राजलक्ष्मी के रूप में निवास करनेवाली तथा शर्वाणी देवी को बार-बार नमस्कार है ॥ ११ ॥

दुर्गा, दुर्गपारा (संसार सागर से पार करनेवाली), सारा (सबकी सारभूता) सर्वकारिणी ख्याति (विख्यातरूपिणी), कृष्णा और धूमा देवी को सदा नमस्कार है ॥ १२ ॥

जो अति सौम्य तथा रौद्ररूपा हैं उन भगवती को नमस्कार है । जगत्प्रतिष्ठा और कृतिस्वरूपा भगवती को बार-बार नमस्कार है ॥ १३ ॥

जो देवी सब प्राणियों में विष्णुमाया के नाम से कही जाती हैं उनको बारम्बार नमस्कार है ॥१४-१६॥

जो देवी सब प्राणियों में चेतना कही जाती हैं उनको बारम्बार नमस्कार है ॥ १७-१९ ॥

जो देवी सब प्राणियों में बुद्धिरूप में स्थित हैं; उनको नमस्कार, उनको नमस्कार, बारम्बार नमस्कार है ॥ २०-२२ ॥

जो देवी सभी प्राणियों में निद्रा रूप में स्थित हैं; उनको नमस्कार, उनको नमस्कार, उनको बारम्बार नमस्कार है ॥ २३-२५ ॥

या देवी सर्वभूतेषु क्षुधारूपेण संस्थिता । नमस्तस्यै ॥ २६ ॥ नमस्तस्यै ॥ २७ ॥ नमस्तस्यै नमो नमः ॥ २८ ॥ या देवी सर्वभूतेषुच्छायारूपेण संस्थिता । नमस्तस्यै ॥ २९ ॥ नमस्तस्यै ॥ ३० ॥ नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ३१ ॥ या देवी सर्वभूतेषु शक्तिरूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै ॥ ३२ ॥ नमस्तस्यै ॥ ३३ ॥ नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ३४ ॥ या देवी सर्वभूतेषु तृष्णारूपेण संस्थिता । नमस्तस्यै ॥ ३५ ॥ नमस्तस्यै ॥ ३६ ॥ नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ३७ ॥ या देवी सर्वभूतेषु क्षान्तिरूपेण संस्थिता । नमस्तस्यै ॥ ३८ ॥ नमस्तस्यै ॥ ३९ ॥ नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ४० ॥ या देवी सर्वभूतेषु जातिरूपेण संस्थिता । नमस्तस्यै ॥ ४१ ॥ नमस्तस्यै ॥ ४२ ॥ नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ४३ ॥ या देवी सर्वभूतेषु लज्जारूपेण संस्थिता नमस्तस्यै ॥ ४४ ॥ नमस्तस्यै ॥ ४५ ॥ नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ४६ ॥ या देवी सर्वभूतेषु शान्तिरूपेण संस्थिता । नमस्तस्यै ॥ ४७ ॥ नमस्तस्यै ॥ ४८ ॥ नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ४९ ॥ या देवी सर्वभूतेषु श्रद्धारूपेण संस्थिता । नमस्तस्यै ॥ ५० ॥ नमस्तस्यै ॥ ५१ ॥ नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ५२ ॥ या देवी सर्वभूतेषु कान्तिरूपेण संस्थिता । नमस्तस्यै ॥ ५३ ॥ नमस्तस्यै ॥ ५४ ॥ नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ५५ ॥ या देवी सर्वभूतेषु लक्ष्मीरूपेण संस्थिता । नमस्तस्यै ॥ ५६ ॥ नमस्तस्यै ॥ ५७ ॥ नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ५८ ॥ या

जो देवी सभी प्राणियों में क्षुधा रूप में स्थित हैं, उनको नमस्कार, उनको नमस्कार, उनको बारम्बार नमस्कार है ॥ २६-२८ ॥

जो देवी सब प्राणियों में छाया रूप से स्थित हैं, उनको नमस्कार, उनको नमस्कार, उनको बारम्बार नमस्कार है ॥ २९-३१ ॥

जो देवी सब प्राणियों में शान्ति (क्षमा) रूप में स्थित हैं; उनको नमस्कार, उनको नमस्कार, उनको बारम्बार नमस्कार है ॥ ३२-३४ ॥

जो देवी सब प्राणियों में तृष्णा रूप में स्थित हैं, उनको नमस्कार, उनको नमस्कार, उनको बारम्बार नमस्कार है ॥ ३५-३७ ॥

जो देवी सब प्राणियों में शान्तिरूप से स्थित हैं, उनको नमस्कार, उनको नमस्कार, उनको बारम्बार नमस्कार है ॥ ३८-४० ॥

जो देवी सब प्राणियों में जाति रूप से स्थित हैं; उनको नमस्कार, उनको नमस्कार, उनको बारम्बार नमस्कार है ॥ ४१-४३ ॥

जो देवी सब प्राणियों में लज्जा रूप से स्थित हैं; उनको नमस्कार, उनको नमस्कार, उनको बारम्बार नमस्कार है ॥ ४४-४६ ॥

जो देवी सब प्राणियों में शान्ति रूप से स्थित हैं; उनको नमस्कार, उनको नमस्कार, उनको बारम्बार नमस्कार है ॥ ४७-४९ ॥

जो देवी सब प्राणियों में श्रद्धारूप से स्थित हैं; उनको नमस्कार, उनको नमस्कार, उनको बारम्बार नमस्कार है ॥ ५०-५२ ॥

जो देवी सब प्राणियों में कान्ति रूप से स्थित हैं; उनको नमस्कार, उनको नमस्कार, उनको बारम्बार नमस्कार है ॥ ५३-५५ ॥

जो देवी सब प्राणियों में लक्ष्मी रूप से स्थित हैं; उनको नमस्कार, उनको नमस्कार, उनको बारम्बार नमस्कार है ॥ ५६-५८ ॥

देवी सर्वभूतेषु वृत्तिरूपेण संस्थिता । नमस्तस्यै ॥ ५९ ॥ नमस्तस्यै ॥ ६० ॥ नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ६१ ॥ या देवी सर्वभूतेषु स्मृतिरूपेण संस्थिता । नमस्तस्यै ॥ ६२ ॥ नमस्तस्यै ॥ ६३ ॥ नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ६४ ॥ या देवी सर्वभूतेषु दयारूपेण संस्थिता । नमस्तस्यै ॥ ६५ ॥ नमस्तस्यै ॥ ६६ ॥ नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ६७ ॥ या देवी सर्वभूतेषु तृष्टिरूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै ॥ ६८ ॥ नमस्तस्यै ॥ ६९ ॥ नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ७० ॥ या देवी सर्वभूतेषु मातृरूपेण संस्थिता । नमस्तस्यै ॥ ७१ ॥ नमस्तस्यै ॥ ७२ ॥ नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ७३ ॥ या देवी सर्वभूतेषु भ्रान्तिरूपेण संस्थिता । नमस्तस्यै ॥ ७४ ॥ नमस्तस्यै ॥ ७५ ॥ नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ७६ ॥ इन्द्रियाणामधिष्ठात्री भूतानां चाखिलेषु या । भूतेषु सततं तस्यै व्याप्तिदेव्यै नमो नमः ॥ ७७ ॥ चितिरूपेण या कृत्स्नमेतद् व्याप्त स्थिता जगत् । नमस्तस्यै ॥ ७८ ॥ नमस्तस्यै ॥ ७९ ॥ नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ८० ॥ स्तुता सुरैः पूर्वमभीष्टसंश्रयात्तथा सुरेन्द्रेण दिनेषु सेविता । करोतु सा नः शुभहेतुरीश्वरी शुभानि भद्राण्यभिहन्तु चापदः ॥ ८१ ॥ या साम्प्रतं चोद्धतदैत्यतापितैरस्माभिरीशा च सुरैर्नमस्यते । या च स्मृता तत्क्षणमेव हन्ति नः सर्वापदो भक्तिविनम्रमूर्तिभिः ॥ ८२ ॥

ऋषिरुवाच ॥ ८३ ॥

एवं स्तवादियुक्तानां देवानां तत्र पार्वती । स्नातुमभ्याययौ तोये जाह्नव्या नृपनन्दन ॥ ८४ ॥

जो देवी सब प्राणियों में कृतिरूप से स्थित हैं, उनको नमस्कार, उनको नमस्कार, उनको बारम्बार नमस्कार है ॥ ५९-६१ ॥

जो देवी सब प्राणियों में स्मृति रूप से स्थित हैं, उनको नमस्कार, उनको नमस्कार, उनको बारम्बार नमस्कार है ॥ ६२-६४ ॥

जो देवी सब प्राणियों में दया रूप से स्थित हैं, उनको नमस्कार, उनको नमस्कार, उनको बारम्बार नमस्कार है ॥ ६५-६७ ॥

जो देवी सब प्राणियों में तुष्टिरूप से स्थित हैं, उनको नमस्कार, उनको नमस्कार, उनको बारम्बार नमस्कार है ॥ ६८-७० ॥

जो देवी सब प्राणियों में माता रूप से स्थित हैं, उनको नमस्कार, उनको नमस्कार, उनको बारम्बार नमस्कार है ॥ ७१-७३ ॥

जो देवी सब प्राणियों में भ्रान्ति रूप से स्थित हैं, उनको नमस्कार, उनको नमस्कार, उनको बारम्बार नमस्कार है ॥ ७४-७६ ॥

जो देवी सब इन्द्रियों की और संसार भर के प्राणियों की अधिष्ठात्री हैं तथा सब प्राणियों में निरन्तर व्याप्त हैं, उनको बारम्बार नमस्कार है ॥ ७७ ॥

जो देवी सम्पूर्ण संसार में चैतन्य रूप से व्याप्त होकर स्थित हैं, उनको नमस्कार, उनको नमस्कार, उनको बारम्बार नमस्कार है ॥ ७८-८० ॥

पूर्व समय में अपने अभीष्ट फल को पाने के लिए सभी देवताओं ने जिनकी स्तुति की थी, देवेन्द्र ने बहुत दिनों तक जिनकी सेवा की थी, वह सभी मंगलों की कारणभूता ईश्वरी हमारा कल्याण और मंगल करें तथा सभी आपत्तियों को नष्ट करें ॥ ८१ ॥

प्रबल दैत्यों से कष्ट पाकर हमलोग जिसको प्रणाम करते हैं, जो भक्तिभाव से विनम्र पुरुषों द्वारा स्मरण करने पर तत्काल ही सभी आपत्तियों को नाशकर देती हैं, वे कल्याणकारिणी भगवती हमारी आपत्तियों को दूर करें ॥ ८२ ॥

ऋषि ने कहा : हे राजन् ! इस प्रकार जब देवतागण स्तुति कर रहे थे, उसी समय वहाँ पार्वती गङ्गाजल में स्नान करने के लिए आयीं ॥ ८३-८४ ॥

साऽब्रवीत्तान् सुरान् सुभ्रूर्भवद्भिः स्तूयतेऽत्र का। शरीरकोशतश्चास्याः समुद्भूताब्रवीच्छिवा ॥ ८५॥
स्तोत्रं ममैतत् क्रियते शुम्भदैत्यनिराकृतैः। देवैः समेतैः समरे निशुम्भेन पराजितैः ॥ ८६॥
शरीरकोशाद्यत्तस्याः पार्वत्या निःसृताम्बिका। कौशिकीति समस्तेषु ततो लोकेषु गीयते ॥ ८७॥
तस्यां विनिर्गतायां तु कृष्णाभूत्सापि पार्वती। कालिकेति समाख्याता हिमाचलकृताश्रया ॥ ८८॥
ततोऽम्बिकां परं रूपं बिभ्रणा सुमनोहरम्। ददर्श चण्डो मुण्डश्च भृत्यौ शुम्भनिशुम्भयोः ॥ ८९॥
ताभ्यां शुम्भाय चाख्याता अतीव सुमनोहरा। काप्यास्ते स्त्री महाराज भासयन्ती हिमाचलम्
॥९०॥ नैव तादृक क्वचिद्रूपं दृष्टं केनचिदुत्तमम्। ज्ञायतां काप्यसौ देवी गृह्यातां चासुरेश्वर
॥९१॥ स्त्रीरत्नमतिचार्वङ्गी द्योतयन्ती दिशस्त्विषा। सा तु तिष्ठति दैत्येन्द्र तां भवान् द्रुष्टुमर्हति
॥९२॥ यानि रत्नानि मणयो गजाश्वादीनि वै प्रभो। त्रैलोक्ये तु समस्तानि साम्प्रतं भान्ति ते
गृहे ॥९३॥ एरावतः समानीतो गजरत्नं पुरन्दरात्। पारिजाततरुश्चायं तथैवोच्चैःश्रवा हयः
॥९४॥ विमानं हंससंयुक्तमेततिष्ठति तेऽङ्गणे। रत्नभूतमिहानीतं यदासीद्रेधसोऽद्भुतम् ॥ ९५॥
निधिरेप महापद्मः समानीतो धनेश्वरात्। किञ्जल्किनीं ददौ चाब्धिर्मालामम्लानपङ्कजाम् ॥ ९६॥
छत्रं ते वारुणं गेहे काञ्चनस्त्रावि तिष्ठति। तथायं स्यन्दनवरो यः पुराऽऽसीत्प्रजापतेः ॥ ९७॥

उन सुन्दर भौंहों वाली देवी ने देवताओं से पूछा कि आपलोग किसकी प्रार्थना कर रहे हैं। इतना कहते ही पार्वती जी के शरीरकोश से शिवा प्रकट होकर कहने लगी ॥८५॥

इन समस्त देवताओं को शुम्भ ने स्वर्ग से निकाल दिया है और निशुम्भ ने परास्त कर दिया है, इस कारण ये सब मेरी प्रार्थना कर रहे हैं ॥८६॥

पार्वती देवी के शरीरकोश से अम्बिका देवी की उत्पत्ति हुई, इसलिए वे समस्त लोकों में कौशिकी नाम से प्रसिद्ध हुईं ॥८७॥

पार्वती के शरीर से जब कौशिकी निकल आयीं, तब पार्वती काले रंग की हो गई और कालिका नाम से प्रसिद्ध होकर हिमालय पर रहने लगीं ॥८८॥

तदनन्तर परम सुन्दरी अम्बिका देवी को शुम्भ और निशुम्भ के दूत चण्ड और मुण्ड ने देखा ॥ ८९॥

और दोनों ने शुम्भ से जाकर कहा कि हे महाराज! अति सुन्दरी कोई स्त्री हिमालय को प्रकाशित कर रही हैं ॥९०॥

हे असुरेश्वर! उस स्त्री के समान परम सुन्दरी कहीं पर किसी ने नहीं देखा। आप पता लगाइये कि वह देवी कौन है और उसे ग्रहण कीजिये ॥९१॥

हे दैत्येन्द्र! वह स्त्रियों में रत्नरूपा है। उसका प्रत्येक अङ्ग बहुत सुन्दर है। वह अपनी कान्ति से सारी दिशायें प्रकाशित कर रही है। अभी वह हिमालय पर ही मौजूद है, आप देखना चाहें तो देख सकते हैं ॥९२॥

हे प्रभो! तीनों लोकों में जितने रत्न, मणि, हाथी और घोड़े हैं, वे सब आपके पास मौजूद हैं ॥ ९३॥

आपने हाथियों में श्रेष्ठ ऐरावत हाथी, घोड़ों में श्रेष्ठ उच्चैःश्रवा घोड़ा और पारिजात वृक्ष इन्द्र से छीन लिया है ॥९४॥

हंस से युक्त विमान आपने आंगन में रक्खा है। यह रत्न से जड़ित विमान पहले जो ब्रह्माजी के पास था, वह अब आपके यहाँ लाया गया है ॥९५॥

यह पद्म नामक निधि आपने कुबेर से छीन ली है। समुद्र ने भी आप को किञ्जल्किनी नाम की माला प्रदान की है, जिसके कमल कभी मुरझाते नहीं हैं ॥९६॥

सुवर्ण की वर्षा करने वाला वरुण का छत्र और प्रजापति का यह उत्तम रथ भी आपके यहाँ मौजूद है ॥९७॥

मृत्योरुत्क्रान्तिदा नाम शक्तिरीश त्वया हृता । पाशः सलिलराजस्य भ्रातुस्तव परिग्रहे ॥ ९८ ॥ निशुम्भस्याब्धिजाताश्च समस्ता रत्नजातयः । वह्निरपि ददौ तुभ्यमग्निशौचे च वाससी ॥ ९९ ॥ एवं दैत्येन्द्र रत्नानि समस्तान्याहृतानि ते । स्त्रीरत्नमेषा कल्याणी त्वया कस्मान्न गृह्यते ॥ १०० ॥

ऋषिरुवाच ॥ १०१ ॥

निशम्येति वचः शुम्भः स तदा चण्डमुण्डयोः । प्रेषयामास सुग्रीवं दूतं देव्या महासुरम् ॥ १०२ ॥ इति चेति च वक्तव्या सा गत्वा वचनान्मम । यथा चाभ्येति सम्प्रीत्या तथा कार्यं त्वया लघु ॥ १०३ ॥ स तत्र गत्वा यत्रास्ते शैलोद्देशेऽतिशोभने । सा देवी तां तत प्राह श्लक्ष्णं मधुरया गिरा ॥ १०४ ॥

दूतउवाच ॥ १०५ ॥

देवि दैत्येश्वरःशुम्भस्त्रैलोक्ये परमेश्वरः । दूतोऽहं प्रेषितस्तेन त्वत्सकाशमिहागतः ॥ १०६ ॥ अव्याहताज्ञः सर्वासु यः सदा देवयोनिषु । निर्जिताखिलदैत्यारिः स यदाह शृणुष्व तत् ॥ १०७ ॥ मम त्रैलोक्यमखिलं मम देवा वशानुगाः । यज्ञभागानहं सर्वानुपाश्नामि पृथक् पृथक् ॥ १०८ ॥ त्रैलोक्ये वररत्नामि मम वश्यान्यशेषतः । तथैव गजरत्नं च हृत्वा देवेन्द्रवाहनम् ॥ १०९ ॥ क्षीरोदमथनोद् भूतमश्वरत्नं ममामरैः । उच्चैः श्रवससंज्ञं तत्प्रणिपत्य समर्पितम् ॥ ११० ॥ यानि चन्यानि देवेषु गन्धर्वेषूरगेषु च । रत्नभूतानि भूतानि तानि मय्येव शोभने ॥ १११ ॥ स्त्रीरत्नभूतां

आपने यमराज से उत्क्रन्तिदा (मृत्यु देने वाली) शक्ति छीन ली है । आपके भाई निशुम्भ ने भी वरुण का पाश और समुद्र के सभी रत्नों को छीन लिया है । अग्नि ने स्वतः शुद्ध किये हुए दो वस्त्र पहनने के लिए दिये हैं । हे असुराज ! आपने इस प्रकार सभी रत्नों को एकत्रित कर लिया है, फिर यह जो स्त्रियों में रत्नरूपा कल्याण करने वाली देवी है, उसे आप क्यों नहीं ग्रहण कर लेते ॥ ९८-१०० ॥

ऋषि ने कहा : शुम्भ ने इस प्रकार चण्ड-मुण्ड की बातों को सुनकर महासुर सुग्रीव को दूत बना कर देवी के पास भेजा ॥ १०१-१०२ ॥

और उससे कहा कि तुम मेरी आज्ञा से इन बातों को देवी से कहना और ऐसा उपाय करना जिससे वह स्वयं ही प्रसन्न होकर यहाँ आ जाय ॥ १०३ ॥

तब सुग्रीव ने अति रमणीय पर्वत पर, जहाँ भगवती विराजमान हो रहीं थीं, जाकर उनको देखा और नम्रतापूर्वक अति मधुरवाणी में उनसे कहा । दूत ने कहा : हे देवि ! दैत्यों के राजा शुम्भ जो, इस समय तीनों लोकों के स्वामी हैं, उनका भेजा हुआ मैं दूत बनकर आपसे पास आया हूं ॥ १०४-१०६ ॥

उनकी आज्ञा का उल्लंघन कोई देवता भी नहीं करते । उन्होंने समस्त देवताओं को परास्त कर दिया है । आपके लिए उन्होंने जो सन्देश कहा है, उसे सुनिये ॥ १०७ ॥

समस्त त्रैलोक्य मेरे अधिकार में हैं । सभी देवता मेरे आज्ञानुसार चलते हैं । मैं ही उन लोगों के पृथक्-पृथक् यज्ञ भागों को भोगता हूँ ॥ १०८ ॥

तीनों लोकों के उत्तम रत्न हमारे पास हैं । इन्द्र का वाहन ऐरावत, जो हाथियों में रत्न के समान है, उसे भी मैंने छीन लिया है ॥ १०९ ॥

समुद्र मन्थन करने से जो अश्वरत्न उच्चैःश्रवा प्रकट हुआ था, देवताओं ने उसे विनयपूर्वक मुझको समर्पण कर दिया है ॥ ११० ॥

हे शोभने ! इसके अतिरिक्त अन्य जो कुछ भी रत्न देवता, गन्धर्व और नागों के पास था, वह सभी इस समय मेरे पास है ॥ १११ ॥

त्वां देवि लोके मन्यामहे वयम् । सा त्वमस्मानुपागच्छ यतो रत्नभुजो वयम् ॥ ११२ ॥ मां वा ममानुजं वापि निशुम्भमुरुविक्रमम् । भज त्वं चञ्चलापाङ्गि रत्नभूतासि वै यतः ॥ ११३ ॥ परमैश्वर्यमतुलं प्राप्स्यसे मत्परिग्रहात् । एतद् बुद्ध्या समालोच्य मत्परिग्रहतां व्रज ॥ ११४ ॥

ऋषिरुवाच ॥ ११५ ॥

इत्युक्ता सा तदा देवी गम्भीरान्तः स्मिता जगौ । दुर्गा भगवती भद्रा ययेदं धार्यते जगत् ॥ ११६ ॥

देव्युवाच ॥ ११७ ॥

सत्यमुक्तं त्वया नात्र मिथ्या किंचित्त्वयोदितम्। त्रैलोक्याधिपतिः शुम्भो निशुम्भश्चापि तादृशः ॥ ११८ ॥ किं त्वत्र यत्प्रतिज्ञातं मिथ्या तत्क्रियते कथम् । श्रुयतामल्पबुद्धित्वात् । यो मे प्रतिबलो लोके स मे भर्ता भविष्यति ॥ १२० ॥ तदागच्छतु शुम्भोऽत्र निशुम्भो वा महासुरः । मां जित्वा किं चिरेणात्र पाणिं गृह्णातु मे लघु ॥ १२१ ॥

दूत उवाच ॥ १२२ ॥

अवलिप्तासि मैवं त्वं देवि ब्रूहि ममाग्रतः । त्रैलोक्ये कः पुमांस्तिष्ठेदग्रे शुम्भनिशुम्भयोः ॥१२३॥ अन्येषामपि दैत्यानां सर्वे देव वै युधि । तिष्ठन्ति सम्मुखे देवि किं पुनः स्त्री त्वमेकिका ॥ १२४ ॥

हे देवि ! हम तुमको संसार की स्त्रियों में रत्न समझते हैं, अतः तुम हमारे पास आजाओ, क्योंकि रत्नों के भोगने वाले केवल हम ही हैं ॥ ११२ ॥

हे चञ्चल नेत्र वाली ! तुम मेरी या मेरे परम पराक्रमी भाई निशुम्भ की सेवा में आ जाओ, क्योंकि तुम रत्नरूपा हो ॥ ११३ ॥

मेरे आश्रय में आने से तुम अतुल ऐश्वर्य को प्राप्त करोगी । अतः इन बातों को विचार कर तुम हमारी स्त्री बन जाओ ॥ ११४ ॥

ऋषि बोले : इस प्रकार दूत के कहने पर मंगलमयी भगवती दुर्गा देवी, जो सम्पूर्ण संसार को धारण करती हैं, मन ही मन गम्भीर भाव से मुस्कराती हुई बोली ॥ ११५-११६ ॥

देवी ने कहा : हे दूत ! तुमने यहाँ जो कुछ भी कहा है, सब सत्य है, इसमें कुछ भी मिथ्या नहीं। शुम्भ तीनों लोकों का राजा है और निशुम्भ भी उसी के समान है ॥ ११७-११८ ॥

किन्तु मैंने जो प्रतिज्ञा की है, उसे कैसे झूठा करूँ । मैंने पहले जो मूर्खतावश प्रतिज्ञा कर ली है उसे सुनो ॥ ११९ ॥

जो मुझे संग्राम में जीत लेगा, जो मेरे घमण्ड को तोड़ देगा तथा जो मेरे समान बलवान् होगा, वही मेरा पति होगा ॥ १२० ॥

इसलिये महासुर शुम्भ या निशुम्भ यहाँ आवें और मुझे युद्ध में जीतकर मेरे साथ पाणिग्रहण कर लें, इसमें विलम्ब करने की क्या आवश्यकता है ॥ १२१ ॥

दूत बोला : हे देवि ! तुम्हें बड़ा ही घमण्ड है, मेरे सामने इस प्रकार की बातें मत कहो । तीनों लोकों में कौन पुरुष है, जो शुम्भ और निशुम्भ के आगे ठहर सकता हो ॥ १२२-१२३ ॥

शुम्भ और निशुम्भ की तो बात ही क्या, अन्य असुरों के सामने सारे देवतागण भी युद्ध में नहीं ठहर सकते, फिर तुम अकेली स्त्री किस तरह उनके सामने ठहर सकोगी ॥ १२४ ॥

इन्द्राद्याः सकला देवास्तस्थुर्येषां त संयुगे । शुंम्भादीनां कथं तेषां स्त्री प्रयास्यसि सम्मुखम् ॥ १२५ ॥ सा त्वं गच्छ मयैवोक्ता पार्श्वं शुम्भनिशुम्भयोः । केशाकर्षणनिर्धूतगौरवा मा गमिष्यसि ॥ १२६ ॥

देव्युवाच ॥ १२७ ॥

एवमेतद् बली शुम्भो निशुम्भश्चातिवीर्यवान् । किं करोमि प्रतिज्ञा मे यदनालोचिता पुरा ॥ १२८ ॥ स त्वं गच्छ मयोक्तं ते यदेतत्सर्वमादृतः । तदाचक्ष्वासुरेन्द्राय स च युक्तं करोतु यत् ॥ ॐ ॥ १२९ ॥

इति श्री मार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवी माहात्म्ये
देव्या दूतसंवादौ नाम पञ्चमोऽध्यायः ॥ ५ ॥
उवाच ९, त्रिपान्मन्त्राः ६६, श्लोकाः ५४,
एवम् १२९, एवमादितः ॥ ३८८ ॥

ऋषिरुवाच ॥ १ ॥

इत्याकर्ण्य वचो देव्याः स दूतोऽमर्षपूरितः । समाचष्ट समागम्य दैत्यराजाय विस्तरात् ॥ २ ॥ तस्य दूतस्य तद्वाक्यमाकर्ण्यासुरराट् ततः । सक्रोधः प्राह दैत्यानामधिपं धूम्रलोचनं ॥ ३ ॥ हे धूम्रलोचनाशु त्वं स्वसैन्यपरिवारितः । तामानय बलाद् दुष्टां केशाकर्षणविह्वलाम् ॥ ४ ॥ तत्परित्राणदः कश्चिद्यदि वोत्तिष्टतेऽपरः । स हन्तव्योऽमरो वापि यक्षो गन्धर्व एव वा ॥ ५ ॥

ऋषिरुवाच ॥ ६ ॥

तेनाज्ञप्तस्ततः शीघ्रं स दैत्यो धूम्रलोचनः । वृतः षष्ट्या सहस्राणामसुराणां द्रुतं ययौ ॥ ७ ॥

इन्द्रादि सभी देवता जिन शुम्भ और निशुम्भ के सामने नहीं ठहर सके तो तुम स्त्री होकर उनके सामने किस तरह ठहर सकोगी ॥ १२५ ॥

अतः तुम मेरे कथनानुसार शुम्भ और निशुम्भ के पास मेरे साथ चलो अन्यथा केश पकड़कर घसीटते हुए उनके पास तुम्हें ले जाना पड़ेगा, जिससे
तुम्हारा अपमान होगा ॥ १२६ ॥

देवी ने कहा : तुमने जो कुछ कहा वह सब सत्य है, शुम्भ ऐसा ही पराक्रमी है और निशुम्भ भी अधिक बलवान् है, परन्तु क्या करूँ, मैं पहले ही बिना विचारे प्रतिज्ञा कर चुकी हूं ॥ १२७-१२८ ॥

अब तुम जाओ और मैंने जो कुछ भी कहा है, वह सब आदरपूर्वक शुम्भ को कहना, तब वह जो उचित समझे सो करे ॥ १२९ ॥

श्रीमार्कण्डेयपुराण में सावर्णिक मन्वन्तर की कथा के
अन्तर्गत देवी-महात्म्य में देवी-दूतसंवाद नामक
पञ्चम अध्याय समाप्त हुआ ॥ ५ ॥

षष्ठ अध्याय :

ऋषि बोले : दूत ने देवी की इन बातों को सुनकर क्रोधित हो दैत्यराज के पास जाकर विस्तारपूर्वक सब कुछ कह सुनाया। तब दूत से समस्त बातें सुनकर दैत्यराज ने क्रोधित हो असुरों के नायक धूम्रलोचन से कहा : हे धूम्रलोचन ! तुम अपनी सेनाओं के साथ शीघ्र ही जाकर उस दुष्टा स्त्री का केश पकड़कर घसीटते हुए ले आओ । यदि उसकी रक्षा करने के लिये कोई दूसरा खड़ा हो जाय तो उसे निश्चय ही मार डालना, चाहे वह देव, गन्धर्व या यक्ष ही क्यों न हो । ऋषि ने कहा : तब दैत्य धूम्रलोचन शुम्भ की आज्ञा पाकर तुरन्त साठ हजार असुरों की सेनाओं को साथ में

स दृष्ट्वा तां ततो देवीं तुहिनाचलसंस्थिताम् । जगादोच्चैः प्रयाहीति मूलं शुम्भनिशुम्भयोः ॥ ८ ॥ न चेत्प्रीत्याद्य भवती मद्भर्तारमुपैष्यति । ततो बलान्नयाम्येष केशाकर्षणविह्वलाम् ॥ ९ ॥

देव्युवाच ॥ १० ॥

दैत्येश्वरेण प्रहितो बलवान् बलसंवृतः । बलान्नयसि मामेवं ततः किं ते करोम्यहम् ॥ ११ ॥

ऋषिरुवाच ॥ १२ ॥

इत्युक्तः सोऽभ्यधावत्तामसुरो धूम्रलोचनः । हुंकारेणैव तं भस्म सा चकाराम्बिका ततः ॥ १३ ॥ अथ क्रुद्धं महासैन्यमसुराणां तथाम्बिका। ववर्ष सायकैस्तीक्ष्णैस्तथा शक्तिपरश्वधैः ॥ १४ ॥ ततो धुतसटः कोपात् कृत्वा नादं सुभैरवम् । पपातासुरसेनायां सिंहो देव्या स्ववाहनः ॥ १५ ॥ कांश्चित् करप्रहारेण दैत्यानास्येन चापरान् । आक्रम्य चाधरेणान्यान् स जघान महासुरान् ॥ १६ ॥ केषांचित्पाटयामास नखैः कोष्ठानि केसरी । तथा तलप्रहारेण शिरांसि कृतवान् पृथक् ॥ १७ ॥ विच्छिन्नबाहुशिरसः कृतास्तेन तथापरे । पपौ च रुधिरं कोष्ठादन्येषां धुतकेसरः ॥ १८ ॥ क्षणेन तद्बलं सर्वक्षयं नीतं महात्मना । तेन केसरिणा देव्या वाहनेनातिकोपिना ॥ १९ ॥ श्रुत्वा तमसुरं देव्या निहतं धूम्रलोचनम् । बलं च क्षयितं कृत्स्नं देवीकेसरिणा ततः ॥ २० ॥ चुकोप दैत्याधिपतिः शुम्भः प्रस्फुरिताधरः । आज्ञापयामास च तौ चण्डमुण्डौ महासुरौ ॥ २१ ॥ हे चण्ड हे मुण्ड बलैर्बहुभिः परिवारितौ । तत्र गच्छत गत्वा च सा समानीयतां लघु ॥ २२ ॥ केशेष्वाकृष्य बद्ध्वा वा यदि वः संशयो युधि । तदाशेषायुधैः

लेकर चल दिया । वहाँ जाकर धूम्रलोचन ने हिमालय पर बैठी हुई देवी को देखा और गरजते हुए कहा कि तुम शुम्भ-निशुम्भ के पास चलो । यदि प्रसन्नतापूर्वक आज मेरे राजा के पास नहीं चलोगी तो मैं तेरे केश पकड़ कर घसीटता हुआ जबरदस्ती ले जाऊँगा ॥ १-९ ॥

देवी ने कहा : दैत्येश्वर शुम्भ ने सेनाओं के साथ तुम्हें भेजा है । तुम स्वयं भी बड़े बलवान् हो। ऐसी हालत में यदि तुम मुझको ले जाओगे तो मैं क्या कर सकती हूँ । ऋषि ने कहा : देवी के ऐसा कहने पर असुर धूम्रलोचन देवी के आगे दौड़ा । अम्बिका ने उसी समय हुंकार मात्र से ही उस असुर को भस्म कर दिया । इसके बाद क्रोधित हो असुरों की विशाल सेना और अम्बिका एक दूसरे पर तीखे सायकों, शक्तियों तथा फरसों की वर्षा करने लगीं इतने में देवी का वाहन सिंह अपनी गर्दन के बालों को हिलाता हुआ क्रोध से भयङ्कर नाद करके असुर सेनाओं के बीच कूद पड़ा। सिंह ने कितने ही असुरों को पंजों के प्रहार से और दूसरे को मुख से तथा कितने ही महादैत्यों को होंठ या दाढ़ों से घायल करके मार दिया । सिंह ने कितने असुरों के पेट को अपने नखों से फाड़ दिया तथा कितनो का पंजों के प्रहार से धड़ से सिर अलग कर दिया ॥ १० -१७ ॥

उसने कितने असुरों की भुजायें और सिर काट डाला । अपने सिर के बालों को हिलाते हुए, उसने अन्य कितने दैत्यों का उदर फाड़कर रक्तपान किया । अति क्रोधित देवी के वाहन पराक्रमी सिंह ने क्षणभर में ही सब असुर सेनाओं का विनाश कर दिया । जब महासुर शुम्भ ने सुना कि देवी ने धूम्रलोचन को मार दिया है और उसके वाहन सिंह ने उसकी सारी सेनाओं को नष्ट कर दिया तब वह क्रोधित हो उठा । उसके होठ फरकने लगे तथा चण्ड और मुण्ड नामक दैत्यों को आज्ञा दी : हे चण्ड मुण्ड! तुम दोनों एक विशाल सेना के साथ वहाँ जाओ और शीघ्र ही वहाँ से उस स्त्री को केश पकड़कर या बाँधकर ले आओ । यदि इस प्रकार लाने में किसी प्रकार सन्देह हो तो युद्ध में सभी प्रकार

सर्वैरसुरैर्विनिहन्यताम् ॥ २३ ॥ तस्यां हतायां दुष्टायां सिंहे च विनिपातिते । शीघ्रमागम्यतां बद्ध्वा गृहीत्वा तामथाम्बिकाम् ॐ ॥ २४ ॥

इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवी माहात्म्ये शुम्भनिशुम्भसेनानी-
धूम्रलोचनवधो नाम षष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥
उवाच ४, श्लोकाः २०, एवम् २४,
एवमादितः ॥ ४१२ ॥

ॐ ऋषिरुवाच ॥ १ ॥

आज्ञप्तास्ते ततो दैत्याश्चण्डमुण्डपुरोगमाः । चतुरङ्गबलोपेता ययुरभ्युद्यतायुधाः ॥ २ ॥ ददृशुस्ते ततो देवीमीषद्धासां व्यवस्थिताम् । सिंहस्योपरि शैलेन्द्रशृङ्गे महति काञ्चने ॥ ३ ॥ ते दृष्ट्वा तां समादातुमुद्यमं चक्रुरुद्यताः । आकृष्टचापासिधरास्तथान्ये तत्समीपगाः ॥ ४ ॥ ततः कोपं चकारोच्चैरम्बिका तानरीन्प्रति । कोपेन चास्या वदनं मषीवर्णमभूत्तदा ॥ ५ ॥ भ्रुकुटीकुटिला तस्या ललाटफलकाद्द्रुतम् । काली करालवदना विनिष्क्रान्तासिपाशिनी ॥ ६ ॥ विचित्रखट्वाङ्गधरा नरमालाविभूषणा । द्वीपिचर्मपरीधाना शुष्कमांसातिभैरवा ॥ ७ ॥ अतिविस्तारवदना जिह्वाललनभीषणा । निमग्नारक्तनयना नादापूरितदिङ्मुखा ॥ ८ ॥ सा वेगेनाभिपतिता घातयन्ती महासुरान् । सैन्ये तत्र सुरारीणामभक्षयत तद्बलम् ॥ ९ ॥ पार्ष्णिग्राहांकुशग्राहियोधघण्टासमन्वितान् । समादायैकहस्तेन मुखे चिक्षेप वारणान् ॥ १० ॥ तथैव योधं तुरगै रथं सारथिना सह । निक्षिप्य वक्त्रे दशनैश्चर्वयन्त्यतिभैरवम् ॥ ११ ॥

के हथियारों का प्रयोग करके उसे मार डालना । उस दुष्टा की हत्या होने तथा सिंह के मारे जाने पर उसे जल्दी से बाँधकर मेरे पास ले आना ॥ १८-२४ ॥

श्रीमार्कण्डेयपुराण में सावर्णिक मन्वन्तर की कथा के अन्तर्गत
देवीमाहात्म्य में शुम्भ-निशुम्भ के सेनानी धूम्रलोचन बध
नामक छठा अध्याय समाप्त ॥ ६ ॥

सप्तम अध्याय :

ऋषि ने कहा : इसके बाद शुम्भ की आज्ञा पाकर चतुरङ्गिणी सेना के साथ अस्त्र-शस्त्र से सुसज्जित होकर चण्ड और मुण्ड चल दिये और हिमालय के स्वर्ण शिखर पर आकर उन्होंने सिंह पर स्थित देवी को हँसते हुए देखा । उनको देखकर दैत्यों ने उन्हें पकड़ने का प्रयास किया । किसी राक्षस ने धनुष को सँभाला तो किसी ने तलवार ग्रहण किया तथा अन्य राक्षस उनके समक्ष आकर खड़े हो गये । तब अम्बिका को उन शत्रुओं पर बड़ा ही क्रोध हुआ जिससे उनका मुख काला हो गया । ललाट में भौंहें टेढ़ी हो गईं और उसी समय भयानक मुखवाली काली तलवार और पाश धारण किये हुये प्रकट हुई । वे विचित्र खट्वाङ्ग (मुर्दे का पञ्जर अथवा खाट की पट्टी) लिए नर-मुण्डों की माला से विभूषित थीं । शरीर का मांस सूख गया था जिससे अति भयानक दिखाई पड़ती थीं । आँखें लाल तथा भीतर धँसी हुई थीं । उनके भयानक शब्द से दिशायें गूँज रही थीं । बड़े-बड़े असुरों को मारती हुई काली वहाँ पर बड़े ही वेग से शत्रुओं की सेनाओं पर झपटीं और असुरों तथा उनकी सेनाओं का भक्षण करने लगीं । वे पार्श्वरक्षकों, अंकुश आदि लिए महावतों तथा घण्टा सहित कितने हाथियों को पकड़-पकड़ कर मुख में डालने लगीं । उसी तरह घोड़े तथा सारथियों से युक्त रथ और योद्धाओं को मुख

एकं जग्राह केशेषु ग्रीवायामथ चापरम् । पादेनाक्रम्य चैवान्यमुरसान्यमपोथयत् ॥१२॥ तैर्मुक्तानि च शस्त्राणि महास्त्राणि तथासुरैः । मुखेन जग्राह रुषा दशनैर्मथितान्यपि ॥१३॥ बलिनां तद्‌बलं सर्वमसुराणां दुरात्मनाम् । ममर्दाभक्षयच्चान्यानन्यांश्चाताडयत् तदा ॥१४॥ असिना निहताः केचित्केचित्खट् वाङ्गताडिताः । जग्मुर्विनाशमसुरा तन्ताग्राभिहतास्तथा ॥१५॥ क्षणेन तद्‌बलं सर्वमसुराणां निपातितम् । दृष्ट्वा चण्डोऽभिदुद्राव तां कालीमतिभीषणाम् ॥१६॥ शरवर्षैर्महाभीमैर्भीमाक्षीं तां महासुरः । छादयामास चक्रैश्च मुण्डः क्षिप्तैः सहस्रशः ॥१७॥ तानि चक्राण्यनेकानि विशमानानि तन्मुखम् । बभुर्यथार्कबिम्बानि सुबहूनि घनोदरम् ॥१८॥ ततो जहासातिरुषा भीमं भैरवनादिनी। काली करालवक्त्रान्तर्दुर्दर्शदशनोज्जवला ॥१९॥ उत्थाय च महासिंहं देवी चण्डमधावत । गृहीत्वा चास्य केशेषु शिरस्तेनासिनाच्छिनत् ॥२०॥ अथ मुण्डोऽभ्यधावतां दृष्ट्वा चण्डं निपातितम् । तमप्यपातयद् भूमौ सा खड्गाभिहतं रुषा ॥२१॥ हतशेषं ततः सैन्यं दृष्ट्वा चण्डं निपातितम् । मुण्डं च सुमहावीर्यं दिशो भेजे भयातुरम् ॥२२॥ शिरश्चण्डस्य काली च गृहीत्वा

में डालकर बड़े ही भयानक रूप से चबाने लगी । किसी का केश पकड़ कर, किसी का गला दबा कर, किसी को पाँवों से गिरा कर और किसी को छाती से धक्का देकर मार डाला ॥१-१२॥

वे उन असुरों द्वारा छोड़े गये शस्त्रों तथा बड़े-बड़े अस्त्रों को अपने मुख से पकड़ लेती थीं और क्रोध में आकर उसे दाँतों से चबा डालती थीं ॥१३॥

दुरात्मा असुरों तथा उनकी सेनाओं का काली ने मर्दन कर डाला, कितनों को खा लिया और कितनों को मार डाला ॥१४॥

कितने तलवारों से मार दिये गये, कोई खट्वाङ्ग से पीटे गये तथा कितने असुर दाँतों के अग्रभाग से आहत हो-हो कर मर गये ॥१५॥

देवी ने क्षणमात्र में ही बड़े-बड़े असुरों तथा उनकी सारी सेनाओं को मार गिराया । इसे देखकर चण्ड अत्यन्त भयानक उन काली की ओर दौड़ा ॥१६॥

महादैत्य मुण्ड ने भी अत्यन्त भयङ्कर बाणों की वर्षा से तथा हजारों फेके गये चक्रों से भयानक आँखों वाली काली को ढक दिया ॥१७॥

काली के मुख में प्रवेश करते हुए वे अनेकों चक्र इस तरह दिखाई देने लगे जैसे की बादलों में सूर्य के अनेकों प्रतिबिम्ब घुस रहे हों ॥१८॥

तब विकराल मुख के भीतर कठिनता से दिखाई देने वाली दाँतों की कान्ति से युक्त, अत्यन्त भयानक गरजने वाली काली ने अत्यन्त क्रोध से अट्टहास किया ॥१९॥

देवी बहुत बड़ी तलवार को उठाकर 'हूं' उच्चारण करती हुई चण्ड की ओर दौड़ी और उसके केश को पकड़कर कर सिर काट डाला ॥२०॥

तब चण्ड को मरा हुआ देखकर मुण्ड भी देवी की ओर दौड़कर आया । देवी ने बड़े ही क्रोध से उसे भी खड्ग से काट कर पृथ्वी पर गिरा दिया ॥२१॥

महापराक्रमी चण्ड और मुण्ड को मरा हुआ देखकर शेष बची हुई सेना भय से व्याकुल हो चारों दिशाओं में भाग गईं ॥२२॥

मुण्डमेव च । प्राह प्रचण्डाट्टहासमिश्रमभ्येत्यचण्डिकाम् ॥ २३ ॥ मया तवात्रोपहृतौ चण्डमुण्डौ महापशू । युद्धयज्ञे स्वयं शुम्भं निशुम्भं च हनिष्यसि ॥ २४ ॥

ऋषिरुवाच ॥ २५ ॥

तावानीतौ ततो दृष्ट्वा चण्डमुण्डौ महासुरौ । उवाच कालीं कल्याणी ललितं चण्डिकाः वचः ॥ २६ ॥ यस्माच्चण्डं च मुण्डं च गृहीत्वा त्वमुपागता । चामुण्डेति ततो लोके ख्याता देवि भविष्यसि ॐ ॥ २७ ॥

इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवी माहात्म्ये
चण्डमुण्डवधो नाम सप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥
उवाच २, श्लोकाः २५, एवम् २७
एवमादितः ॥ ४३९ ॥

ॐ ऋषिरुवाच ॥ १ ॥

चण्डे च निहते दैत्ये मुण्डे च विनिपातिते । बहुलेषु च सैन्येषु क्षयितेष्वसुरेश्वरः ॥ २ ॥ ततःकोपपराधीनचेताः शुम्भ प्रतापवान् । उद्योगं सर्वसैन्यानां दैत्यानामादिदेश ह ॥ ३ ॥ अद्य सर्वबलैर्दैत्याः षडशीतिरुदायुधाः । कम्बूनां चतुरशीतिर्निर्यान्तु स्वबलैर्वताः ॥ ४ ॥ कोटिवीर्याणि पञ्चशदसुराणां कुलानि वै । शतं कुलानि धूम्राणां निर्गच्छन्तु ममाज्ञया ॥ ५ ॥ कालका दौर्हृदा मौर्याः कालकेयास्तथासुराः । युद्धायः सज्जा निर्यान्तु आज्ञया त्वरिता मम ॥ ६ ॥

तब चण्ड और मुण्ड के सिर को लेकर काली चण्डिका देवी के पास गईं और अट्टहास करके बोलीं ॥ २३ ॥

मैं महापशु चण्ड और मुण्ड को मार कर आपको भेंट देने के लिए आयी हूं । अब आप ही युद्ध में शुम्भ और निशुम्भ को मारियेगा ॥ २४ ॥

ऋषि ने कहा : काली द्वारा लाये हुए मृतक चण्ड और मुण्ड को देखकर कल्याणी देवी मधुर वचन बोलीं ॥ २५-२६ ॥

हे देवि ! तुम चण्ड और मुण्ड को मार कर मेरे सामने आयी हो, अतः तुम इस संसार में चामुण्डा के नाम से प्रसिद्ध होगी ॥ २७ ॥

श्रीमार्कण्डेयपुराण में सावर्णिक मन्वन्तर की कथा के अन्तर्गत देवीमाहात्म्य में चण्ड-मुण्ड-वध नामक सातवाँ अध्याय समाप्त ।

अष्टम अध्याय :

ऋषि ने कहा : चण्ड और मुण्ड नामक महादैत्य के मारे जाने पर तथा बहुत-सी सेनाओं का विनाश होने पर असुरराज महापराक्रमी शुम्भ को बड़ा ही क्रोध हुआ और उसने दैत्यों की सभी सेनाओं को प्रस्तुत होने के लिए आदेश दिया ॥ १-३ ॥

आज उदायुध नाम के छियासी दैत्य सेनापति और कम्बू नाम के चौरासी सेनानायक अपनी सेनाओं को लेकर युद्ध में चले ॥ ४ ॥

पचास कोटि वीर्यकुल के और धूम्रवंश के सौ असुर मेरी आज्ञा से लड़ने के लिए चले ॥ ५ ॥

काल, दुहृद और मौर्यवंश के असुर तथा कालका के पुत्र शीघ्र ही मेरी आज्ञा से युद्ध के लिए प्रस्तुत होवें ॥ ६ ॥

इत्याज्ञाप्यासुरपतिः शुम्भो भैरवशासनः । निर्जगाम महासैन्यसहस्रैर्बहुभिर्वृतः ॥७॥ आयान्तं चण्डिकाः दृष्ट्वा तत्सैन्यमतिभीषणम् । ज्यास्वनैः पूरयामास धरणीगगनान्तरम् ॥ ८ ॥ ततः सिंहो महानादमतीव कृतवान् नृप । घण्टास्वनेन तत्रादमम्बिका चोपबृंहयत् ॥ ९ ॥ धनुर्ज्यासिंहघण्टानां नादापूरितदिङ्मुखा। निनादैर्भीषणैः काली जिग्ये विस्तारितानना ॥ १० ॥ तं निनादमुपश्रुत्य दैत्यसैन्यैश्चतुर्दिशम् । देवी सिंहस्तथा काली सरोषैः परिवारिताः ॥ ११ ॥ एतस्मिन्नन्तरे भूप विनाशाय सुरद्विषाम् । भवायामरसिंहनांमतिवीर्यबलान्विताः ॥ १२ ॥ ब्रह्मेशगुहविष्णूनां तथेन्द्रस्य च शक्तयः । शरीरेभ्यो विनिष्क्रम्य तद्रूपैश्चाण्डिकां ययुः ॥ १३ ॥ यस्य देवस्य यद्रूपं यथाभूषणवाहनम् । तद्वदेव हि तच्छक्तिरसुरान् योद्धुमाययौ ॥ १४ ॥ हंसयुक्तविमानाग्रे साक्षसूत्रकमण्डलुः । आयाता ब्रह्मणः शक्तिर्ब्रह्माणी साभिधीयते ॥ १५ ॥ माहेश्वरी वृषारूढा त्रिशूलवरधारिणी । महाहिवलया प्राप्ता चन्द्ररेखा विभूषणा ॥ १६ ॥ कौमारी शक्तिहस्ता च मयूरवरवाहना । योद्धुमभ्याययौ दैत्यानम्बिका गुहरूपिणी ॥ १७ ॥ तथैव वैष्णवी शक्तिर्गरुडोपरि संस्थिता । शङ्खचक्रगदाशार्ङ्गखड्गहस्ताभ्युपाययौ ॥ १८ ॥ यज्ञवाराहमतुलं रूपं

कठोर शासन करने वाला असुरराज शुम्भ इस प्रकार आज्ञा देकर हजारों महादैत्यों से परिवेष्ठित होकर निकल पड़ा ॥७॥

अतिभयानक उसकी सेनाओं को आती हुई देखकर चण्डिका ने अपने धनुष की टङ्कार से आकाश और पृथ्वी को गुञ्जित कर दिया ॥८॥

हे राजन्! तब सिंह ने भी अत्यन्त भयानक गर्जना की । अम्बिका ने घण्टा के शब्द से उसके शब्द को और भी बढ़ा दिया ॥ ९ ॥

धनुष की टङ्कार, सिंह की गर्जना और घण्टे की आवाज से सभी गुञ्जित हो उठा । काली ने भी मुँह फैलाकर नाद किया । उनका वह भयङ्कर शब्द सभी शब्दों से बढ़कर हुआ ॥ १० ॥

दैत्य की सेनाओं ने उस शब्द को सुनकर क्रोधित हो चारों दिशाओं से सिंह तथा काली देवी को घेर लिया ॥ ११ ॥

हे राजन्! इसी बीच दैत्यों का संहार करने तथा देवताओं के कल्याण के लिए ब्रह्मा, शङ्कर, कार्तिकेय, विष्णु तथा इन्द्र की शक्तियाँ उनके शरीर से निकलकर उन्हीं के रूप में चण्डिका देवी के पास आईं ॥ १२-१३ ॥

ये शक्तियाँ जो जैसे देवता थे उन्हीं के सामन रूप, आभूषण और वाहन से युक्त होकर असुरों से लड़ने के लिए आईं ॥ १४ ॥

हंसयुक्त विमान पर आरूढ़, अक्षसूत्र और कमण्डलु से युक्त हो ब्रह्मा की शक्ति आई । वह ब्रह्माणी के नाम से पुकारी गई ॥ १५ ॥

महेश्वर की शक्ति माहेश्वरी बैल पर बैठकर आयी । वह त्रिशूल हाथ में लिए महानाग का कङ्कण पहने, मस्तक में चन्द्ररेखा से सुशोभित थी ॥ १६ ॥

स्वामी कार्तिकेय की शक्ति कौमारी अम्बिका देवी श्रेष्ठ मोर पर बैठ कर शक्ति (एक शस्त्र विशेष) को अपने हाथ में लिए असुरों से युद्ध करने के लिए आई ॥ १७ ॥

इसी प्रकार विष्णु की शक्ति गरुड़ पर बैठी हुई शङ्ख, चक्र, गदा शार्ङ्गधनुष और खड्ग हाथों में लिए हुए वहाँ आयी ॥ १८ ॥

या बिभ्रतो हरेः । शक्तिः साप्याययी तत्र वाराहीं बिभ्रती तनुम् ॥ १९ ॥ नारसिंही नृसिंहस्य बिभ्रती सदृशं वपुः । प्राप्ता तत्र सटाक्षेपक्षिप्तनक्षत्रसंहतिः ॥ २० ॥ वज्रहस्ता तथैवैन्द्री गजराजोपरि स्थिता । प्राप्ता सहस्रनयना यथा शक्रस्तथैव सा ॥ २१ ॥ ततः परिवृतस्ताभिरोशानो देवशक्तिभिः । हन्यन्तामसुराः शीघ्रं मम प्रीत्याऽऽह चण्डिकाम् ॥ २२ ॥ ततो देवीशरीरात्तु विनिष्क्रान्तातिभीषणा। चण्डिकाशक्तिरत्युग्रा शिवाशतनिनादिनी ॥ २३ ॥ सा चाह धूम्रजटिलमीशानमपराजिता । दूत त्व गच्छ भगवन् पार्श्वं शुम्भनिशुम्भयोः ॥ २४ ॥ ब्रू हि शुम्भं निशुम्भं च दानवावतिगर्वितौ । ये चान्ये दानवास्तत्र युद्धाय समुपस्थिताः ॥ २५ ॥ त्रैलोक्यमिन्द्रो लभतां देवाः सन्तु हविर्भुजः । यूयं प्रयात् पातालं यदि जीवितुमिच्छथ ॥ २६ ॥ बलावलेपादथ चेद्भवन्तो युद्धकांक्षिणः । तदागच्छत तृप्यन्तु मच्छिवाः पिशितेन वः ॥ २७ ॥ यतो नियुक्तो दौत्येन तया देव्या शिवः स्वयम् । शिवदूतीति लोकेऽस्मिंस्ततः सा ख्यातिमागता ॥ २८ ॥ तेऽपि श्रुत्वा वचो देव्याः सर्वाख्यातं महासुराः । अमर्षापूरिता जग्मुर्यत्र कात्यायनी स्थिता ॥ २९ ॥ ततः प्रथममेवाग्रे शरशक्त्यृष्टिवृष्टिभिः । ववर्षुरुद्धतामर्षास्तां देवीममरारयः ॥ ३० ॥ सा च तान् प्रहितान् बाणाञ्छूलशक्तिपरश्वधान् । चिच्छेद् लीलयाध्मातधनुर्मुक्तैर्महेषुभिः ॥ ३१ ॥

अनुपम वाराह रूप धारण करनेवाली विष्णु की शक्ति वाराही रूप को धारण करके वहाँ आयी ॥ १९ ॥

नृसिंह भगवान् की नारसिंही शक्ति, जिनके गर्दन के केश हिलने से आकाश के सभी तारे हिलने लगते थे, उन्हीं के समान शरीर को धारण करके वहाँ आई ॥ २० ॥

इसी तरह इन्द्र की शक्ति ऐरावत हाथी पर बैठकर हाथ में वज्र लिए सहस्र नेत्रों से युक्त इन्द्र के समान रूप को धारण करके आयी ॥ २१ ॥

तब समस्त देवशक्तियों से घिरे हुए शिवजी ने चण्डिका देवी से कहा कि तुम मेरी प्रसन्नता के लिए शीघ्र ही असुरों का विनाश करो ॥ २२ ॥

तब देवी के शरीर से अति भयानक एव उग्ररूप धारण करके सैकड़ों गीदड़ की तरह आवाज करने वाली चण्डिका शक्तियों का आविर्भाव हुआ । तब किसी से पराजित नहीं होनेवाली उन देवी ने धूम्रवर्ण जटाओं से सुशोभित महादेवजी से कहा : "भगवन्, आप दूतरूप से शुम्भ-निशुम्भ के पास जाइये । और अति घमण्डी शुम्भ-निशुम्भ तथा अन्यान्य भी दानवों से कहिये कि "यदि तुम लोग जीवित रहना चाहते हो तो पाताल लोक को चले जाओ । अब इन्द्र को तीनों लोकों का राज्य मिल जाय और देवता भी अपने-अपने यज्ञ भाग ग्रहण करें ॥ २३-२६ ॥

यदि तुम अपने बल के घमण्ड से युद्ध ही करना चाहते हो तो जाओ । हमारी शिवायें (योगिनियाँ) तुम्हारे मांस से तृप्त हों" ॥ २७ ॥

देवी ने शिवजी को दूत कार्य में नियुक्त किया था । इसलिये वह संसार में "शिवदूती" के नाम से प्रसिद्ध हुई ॥ २८ ॥

शङ्करजी के द्वारा देवी की बातों को सुनकर असुर लोग क्रोधित हो जहाँ कात्यायनी थीं वहाँ आ गये ॥ २९ ॥

तब वे असुरगण क्रोध से व्याकुल हो पहले देवी पर बाण, शक्ति और ऋष्टि (तलवार) की वर्षा करने लगे ॥ ३० ॥

देवी ने भी असुरों द्वारा चलाये गये बाण, शूल, शक्ति और फरसों को अपने बाणों की टङ्कार से अनायास ही काट डाला ॥ ३१ ॥

तस्याग्रतस्तथा काली शूलपातविदारितान्। खट्वाङ्गपोथितांश्चारीन् कुर्वती व्यचरत्तदा ॥ ३२ ॥ कमण्डलुजलाक्षेपहतवीर्यान् हतौजस । ब्रह्माणी चाकरोच्छत्रून् येन येन स्म धावति ॥ ३३ ॥ माहेश्वरी त्रिशूलेन तथा चक्रेण वैष्णवी । दैत्याञ्जघान कौमारी तथा शक्त्यातिकोपना ॥ ३४ ॥ ऐन्द्रीकुलिशपातेन शतशो दैत्यदानवाः पेतुर्विदारिताः पृथ्व्यां रुधिरौघप्रवर्षिणः ॥ ३५ ॥ तुण्डप्रहारविध्वस्ता दंष्ट्राग्रक्षतवक्षसः वाराहमूर्त्या न्यपतंश्चक्रेण च विदारिताः ॥ ३६ ॥ नखैर्विदारितांश्चान्यान् भक्षयन्ती महासुरान् । नारसिंही चचाराजौ नादापूर्णदिगम्बरा ॥ ३७ ॥ चण्डाट्टहासैरसुराः शिवदूत्यभिदूषिताः । पेतुः पृथिव्यां पतितांस्तांश्चखादाथ सा तदा ॥ ३८ ॥ इति मातृगणं क्रुद्धं मर्दयन्तं महासुरान् । दृष्ट्वाभ्युपायैर्विविधैर्नेशुर्देवारिसैनिकाः ॥ ३९ ॥ पलायनपरान् दृष्ट्वा दैत्यान् मातृगणार्दितान् । योद्धुमभ्याययौ क्रुद्धो रक्तबीजो महासुरः ॥ ४० ॥ रक्तबिन्दुर्यदा भूमौ पतत्यस्य शरीरतः । समुत्पतति मेदिन्यां तत्प्रमाणस्तदाऽसुरः ॥ ४१ ॥ युयुधे स गदापाणिरिन्द्रशक्त्या महासुरः । ततश्चैन्द्री स्ववज्रेण रक्तबीजमताडयत् ॥ ४२ ॥ कुलिशेनाहतस्याशु बहु सुस्राव शोणितम् ॥ समुत्तस्थुस्ततो योधास्तद्रूपास्तत्पराक्रमाः ॥ ४३ ॥ यावन्तः पतितास्तस्य शरीराद्रक्तबिन्दवः । तावन्तः पुरुषाः

तब कालीजी उनके सामने शत्रुओं को अपने शूल से विदीर्ण करती हुई तथा खड्वाङ्ग (शिव का एक अस्त्र) से कुचलती हुई युद्धभूमि में विचरण करने लगीं ॥ ३२ ॥

ब्रह्माणी जिधर-जिधर दौड़ती हुई जाती थीं वहाँ असुरों पर अपने कमण्डलु से जल लेकर छिड़क देती थीं, जिससे वे बलहीन तथा निस्तेज हो जाते थे ॥ ३३ ॥

माहेश्वरी ने त्रिशूल से, वैष्णवी ने चक्र से और कौमारी ने क्रोध में आकर शक्ति से असुरों का संहार करना प्रारम्भ कर दिया ॥ ३४ ॥

इन्द्राणी के वज्र के प्रहार से विदीर्ण होकर सैकड़ों दैत्य और दानव रक्त की धारा बहाते हुए पृथ्वी पर गिर पड़े ॥ ३५ ॥

वाराही देवी ने कितने ही दानवों को अपने थूथुन के प्रहार से नष्ट कर दिया । कितनों के वक्षस्थल को अपने दाँतों के अग्रभाग से फाड़ दिया और कितनों को चक्र से काट-काटकर पृथ्वी पर सुला दिया ॥ ३६ ॥

नारसिंही देवी भी बहुत से असुरों को नखों से फाड़कर खा गयी तथा गरजती हुई युद्धभूमि में विचरण करने लगी ॥ ३७ ॥

शिवदूती भयानक अट्टहास करने लगी, जिसके भय से व्याकुल हो असुरगण पृथ्वी पर गिरने लगे और देवी उन्हें खाने लगी ॥ ३८ ॥

इस प्रकार देवियाँ क्रोधित हो अनेक उपायों द्वारा बड़े-बड़े असुरों का विनाश करने लगीं, जिसे देखकर दैत्यगण भागने लगे ॥ ३९ ॥

तब देवियो द्वारा असुर सेनाओं को पीड़ित हो भागते हुए देखकर रक्तबीज नामक महासुर क्रोधित हो युद्ध करने के लिए आया ॥ ४० ॥

उसकी देह से जब रक्त की बूँद पृथ्वी गिरती तब उसी के समान दूसरा असुर पैदा हो जाता था ॥ ४१ ॥

रक्तबीज हाथ में गदा लेकर इन्द्राणी से युद्ध करने लगा । देवी ने भी उस पर वज्र का प्रहार किया ॥ ४२ ॥

तब वज्र का प्रहार होते ही उसके शरीर से बहुत-सा रक्त गिरा और उसी के समान पराक्रमी अनेक असुर पैदा हो गये ॥ ४३ ॥

जातास्तद्वीर्यबलविक्रमाः ॥ ४४ ॥ ते चापि युयुधुस्तत्र पुरुषा रक्तसम्भवाः । समं मातृभिरत्युग्रशस्त्रपातातिभीषणम् ॥ ४५ ॥ पुनश्च वज्रपातेन क्षतमस्य शिरो यदा । ववाह रक्तं पुरुषास्ततो जाता सहस्रशः ॥ ४६ ॥ वैष्णवी समरे चैनं चक्रेणाभिजघान ह । गदया ताडयामास ऐन्द्री तमसुरेश्वरम् ॥ ४७ ॥ वैष्णवीचक्रभिन्नस्य रुधिरस्रावसम्भवैः । सहस्रशो जगद्व्याप्तं तत्प्रमाणैर्महासुरैः ॥ ४८ ॥ शक्त्या जघान कौमारी वाराही च तथासिना । माहेश्वरी त्रिशूलेन रक्तबीजं महासुरम् ॥ ४९ ॥ स चापि गदया दैत्यः सर्वा एवाहनत् पृथक् । मातृः कोपसमाविष्टो रक्तबीजो महासुरः ॥ ५० ॥ तस्याहतस्य बहुधा शक्तिशूलादिभिर्भुवि । पपात यो वै रक्तौघस्तेनासञ्छतशोऽसुराः ॥ ५१ ॥ तैश्चासुरासृक्सम्भूतैरसुरैः सकलं जगत् । व्याप्तमासीत्ततो देवा भयमाजग्मुरुत्तमम् ॥ ५२ ॥ तान् विषण्णान् सुरान् दृष्ट्वा चण्डिका प्राह सत्वरा । उवाच कालीं चामुण्डे विस्तीर्णं वदनं कुरु ॥ ५३ ॥ मच्छस्त्रपातसम्भूतान् रक्तबिन्दून्महासुरान् । रक्तबिन्दोः प्रतीच्छ त्वं वक्त्रेणानेन वेगिना ॥ ५४ ॥ भक्षयन्ती चररणे तदुत्पन्नान्महासुरान् । एवमेष क्षयं दैत्यः क्षीणरक्तो गमिष्यति ॥ ५५ ॥ भक्ष्यमाणास्त्वया चोग्रान चोत्पात्स्यन्ति चापरे । इत्युक्त्वा तां ततो देवी शूलेनाभिजघान तम् ॥ ५६ ॥ मुखेन काली जगृहे रक्तबीजस्य शोणितम् । ततोः सावाजघानाथ गदया तत्र चण्डिकाम् ॥ ५७ ॥ न चास्या वेदनां

उसके शरीर से रक्त की जितनी ही बूँदे गिरीं, उतने ही उसी के समान बलवान् और पराक्रमी पुरुष उत्पन्न हो गये ॥ ४४ ॥

रक्त से उत्पन्न वे असुरगण भयङ्कर शस्त्र का प्रहार करते हुए देवियों से घोर युद्ध करने लगे ॥ ४५ ॥

फिर भी इन्द्राणी देवी ने वज्र के प्रहार से रक्तबीज का सिर फोड़ दिया और उससे रक्त बहने लगा । तब हजारों असुर पैदा हो गये ॥ ४६ ॥

रण में वैष्णवी देवी ने उस असुर पर चक्र का प्रहार किया और इन्द्राणी ने गदा मारी ॥ ४७ ॥

वैष्णवी के चक्र से कट जाने पर रक्तबीज के शरीर से जो रक्त निकला, उससे उसी के समान हजारों असुर उत्पन्न हुए जिनसे सारा विश्व व्याप्त हो गया । तब कौमारी ने शक्ति से, वाराही ने खड्ग से और माहेश्वरी ने त्रिशूल से उस महासुर रक्तबीज को मारा ॥ ४८-४९ ॥

रक्तबीज ने भी क्रोध में आकर सभी देवियों पर गदा से पृथक्-पृथक् प्रहार किया ॥ ५० ॥

उसके बाद शक्ति, त्रिशूल आदि के प्रहार से उस असुर के शरीर से जो• रक्त की धारायें पृथ्वी पर गिरीं, उससे सैकड़ों असुर पैदा हो गये ॥ ५१ ॥

इस प्रकार रक्तबीज के रक्त से उत्पन्न असुरों द्वारा सारा विश्व व्याप्त हो गया जिसे देखकर देवगण बहुत ही भयभीत हो गये ॥ ५२ ॥

देवताओं को उदास देखकर चण्डिका ने शीघ्र ही काली से कहा – 'हे चामुण्डे ! तुम अपना मुँह फैलाओ और मेरे अस्त्र के प्रहार से उसके शरीर से जो रक्त गिरे उसे पी लो । उससे यदि असुर पैदा हों तो उन्हें भी खा डालो ॥ ५३-५४ ॥

इस प्रकार रक्त भक्षण करती हुई तुम रण-क्षेत्र में भ्रमण करो, जिससे शीघ्र ही वह दैत्य क्षीणरक्त हो विनष्ट हो जायगा ॥ ५५ ॥

तुम्हारे द्वारा रक्त भक्षण करने पर अन्य असुर पैदा नहीं हो सकेंगे । काली ने तुरन्त ही रक्तबीज के रुधिर को अपने मुँह में ले लिया तब असुर ने चण्डिका देवी पर गदा का प्रहार किया ॥ ५७ ॥

चक्रेगदापातोऽल्पिकामपि । तस्याहतस्य देहात्तु बहु सुस्राव शोणितम् ॥ ५८ ॥ यतस्तत तद्वक्त्रेण चामुण्डा सम्प्रतीच्छति । मुखे समुद्गता येऽस्या रक्तपातान्महासुराः ॥ ५९ ॥ तांश्चखादाथ चामुण्डा पपौ तस्य च शोणितम् । देवी शूलेन वज्रेण बाणैरसिभिर्ऋष्टिभिः ॥ ६० ॥ जघान रक्तबीजं तं चामुण्डापीतशोणितम् । स पपात महीपृष्ठे शस्त्रसङ्घसमाहतः ॥ ६१ ॥ नीरक्तश्च महीपाल रक्तबीजो महासुर । ततस्ते हर्षमतुलमवापुस्त्रिदशा नृप ॥ ६२ ॥ तेषां मातृगणो जातो ननर्तासृङ्मदोद्धतः ॐ ॥ ६३ ॥

इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये
रक्तबीजवधो नामाष्टमोऽध्यायः ॥८॥
उवाच १, अर्द्धश्लोकः १, श्लोकाः ६१,
एवम् ६३, एवमादितः ॥५०२॥

'ॐ राजोवाच ॥ १ ॥

विचित्रमिदमाख्यातं भगवन् भवता मम । देव्याश्चरितमाहात्म्यं रक्तबीजवधाश्रितम् ॥ २ ॥ भूयश्चेच्छाम्यहं श्रोतुं रक्तबीजे निपातिते । चकार शुम्भो यत्कर्म निशुम्भश्चातिकोपनः ॥ ३ ॥

ऋषिरुवाच ॥ ४ ॥

चकार कोपमतुलं रक्तबीजे निपातिते । शुम्भासुरो निशुम्भश्चहतेष्वन्येषु चाहवे ॥ ५ ॥ हन्यमानं महासैन्यं विलोक्यामर्षमुद्वहन् । अभ्यधावन्निशुम्भोऽथ मुख्ययासुरसेनया ॥ ६ ॥ तस्याग्रतस्तथा पृष्ठे पार्श्वयोश्च महासुराः । संदष्टौष्ठपुटाः क्रुद्धा हन्तुं देवीमुपाययुः ॥ ७ ॥

उसकी गदा के प्रहार से देवी को कुछ भी पीड़ा नहीं हुई, किन्तु देवी का शूल लगने से उसके शरीर से बहुत सा रक्त निकला ॥५८॥

ज्योंहि उसके शरीर से रक्त निकला त्योंही चण्डिका ने उसे अपने मुख में ले लिया । उस रक्त से जो उनके मुख में असुर पैदा हुआ, उसको भी खा लिया तथा रक्त भी पी लिया । तब देवी ने शूल, वज्र, बाण, तलवार और ऋष्टि से रक्तबीज को जिसका रक्त काली ने पी लिया था, मार दिया । हे राजन् ! इस प्रकार शस्त्र के प्रहार से घायल तथा रक्तहीन होकर वह महासुर रक्तबीज पृथ्वी पर गिर पड़ा । हे नृप ! इससे देवगण अत्यधिक आनन्दित हुए ॥ ५९-६२ ॥ और रुधिर पान करने के मद से उद्धत हो देवियाँ नाचने लगीं ॥ ६३ ॥

श्रीमार्कण्डेयपुराण में सावर्णिक मन्वन्तर की कथा के अन्तर्गत
देवीमाहात्म्य में रक्तबीजवध नामक
अष्टम अध्याय समाप्त हुआ ॥८॥

नवम अध्याय :

राजा सुरथ ने कहा – हे भगवान् ! आपने रक्तबीज के वध-सम्बन्धी देवी के चरित्र का यह विचित्र माहात्म्य कहा ॥ १-२ ॥

रक्तबीज के मरने पर अत्यन्त क्रोधित शुम्भ और निशुम्भ ने जो काम किया उसे भी मैं सुनना चाहता हूं ॥ ३ ॥

ऋषि ने कहा – राजन् ! जब रक्तबीज तथा अन्य बहुत से असुर युद्ध में मारे गये तब शुम्भ और निशुम्भ अत्यन्त क्रोधित हो उठे ॥ ४-५ ॥

इसके बाद अपनी सेनाओं को मरी हुई देखकर क्रोधित हो निशुम्भ असुरों की प्रधान सेनाओं को साथ लेकर दौड़ा ॥ ६ ॥

उसके आगे पीछे और दाँयें बाँयें बड़े-बड़े असुर क्रोध से ओठ चबाते हुए देवी को मारने के लिए आये ॥ ७ ॥

आजगाम महावीर्यः शुम्भोऽपि स्वबलैर्वृतः । निहन्तुं चण्डिकां कोपात्कृत्वा युद्धं तु मातृभिः ॥ ८ ॥ ततो युद्धमतीवासीद् देव्या शुम्भनिशुम्भयोः । शरवर्षमतीवोग्रं मेघयोरिव वर्षतोः ॥ ९ ॥ चिच्छेदास्ताञ्छरांस्ताभ्यां चण्डिका स्वशरोत्करैः । ताडयामास चाङ्गेषु शस्त्रौघैरसुरेश्वरौ ॥ १० ॥ निशुम्भ निशितं खड्गं चर्म चादाय सुप्रभम् । अनाडयन्मूर्ध्नि सिंहं देव्या वाहनमुत्तमम् ॥ ११ ॥ ताडिते वाहने देवी क्षुरप्रेरणासिमुत्तमम् । निशुम्भस्याशु चिच्छेद चर्म चाप्यष्टचन्द्रकम् ॥ १२ ॥ छिन्ने चर्मणि खड्गे च शक्तिं चिक्षेप सोऽसुर । तामप्यस्य द्विधा चक्रे चक्रेणाभिमुखागताम् ॥ १३ ॥ कोपाध्मातो निशुम्भोऽथ शूलं जग्राह दानवः । आयातं मुष्टिपातेन देवी तच्चाप्यचूर्णयत् ॥ १४ ॥ आविध्याथ गदां सोऽपि चिक्षेप चण्डिकां प्रति। सापि देव्या त्रिशूलेन भिन्ना भस्मत्वमागता ॥ १५ ॥ ततः परशुहस्तं तमायान्तं दैत्यपुङ्गवम् । आहत्य देवी बाणौघैरपातयत् भूतले ॥ १६ ॥ तस्मिन्निपतिते भूमौ निशुम्भे भीमविक्रमे । भ्रातर्यतीव संक्रुद्धः प्रययौ हन्तुमम्बिकाम् ॥ १७ ॥ स रथस्थस्तथात्युच्चैर्गृहीतपरमायुधैः । भुजैरष्टाभिरतुलैर्व्याप्याशेषं बभौ नम ॥ १८ ॥ तमायान्तं समालोक्य देवी शङ्खमवादयत् । ज्याशब्दं चापि धनुषश्चकारातीव दुःसहम् ॥ १९ ॥ पूरयामास ककुभो निजघण्टास्वनेन च । समस्तदैत्यसैन्यानां तेजोवध-विधायिना ॥ २० ॥

पराक्रमी शुम्भ भी अपनी सेनाओं के साथ मातृगणों से युद्ध करके कुपित हो चण्डिका को मारने के लिए आया ॥ ८ ॥

तब शुम्भ और निशुम्भ के साथ देवी का घोर संग्राम हुआ । जैसे बादल पानी बरसाता है उसी भाँति दोनों तरफ से बाणों की वर्षा होने लगी ॥ ९ ॥

चण्डिका ने अपने बाणों से शुम्भ और निशुम्भ के द्वारा छोड़े गये बाणों को काट डाला और उन दोनों असुरों के अंगों में बाणों द्वारा चोट पहुँचाया ॥ १० ॥

निशुम्भ ने तीखी तलवार और चमकती हुई ढाल से देवी के प्रधान वाहन सिंह के मस्तक पर प्रहार किया ॥ ११ ॥

देवी ने अपने वाहन सिंह के सिर पर प्रहार होते देख क्षुरप्र नामक अस्त्र से निशुम्भ की तलवार तथा अष्टचन्द्रक ढाल को काट डाला ॥ १२ ॥

ढाल और तलवार के कट जाने पर निशुम्भ ने शक्ति चलाई, किन्तु सामने आने पर देवी ने उसे भी काट डाला ॥ १३ ॥

तब क्रोध में आकर दानव निशुम्भ ने शूल ग्रहण किया । देवी ने आते हुए शूल को मुक्के से चूर-चूर कर दिया ॥ १४ ॥

फिर उसने देवी पर गदा का प्रहार किया । देवी ने गदा को भी त्रिशूल से काटकर भस्म कर दिया ॥ १५ ॥

इसके बाद हाथों में फरसा लिए हुए दैत्यों में श्रेष्ठ निशुम्भ को देवी ने बाण-समूहों से घायल कर पृथ्वी पर गिया दिया ॥ १६ ॥

महापराक्रमी निशुम्भ को पृथ्वी पर गिरा हुआ देखकर उसका भाई शुम्भ अत्यन्त क्रोधित हो देवी को मारने के लिए गया ॥ १७ ॥

रथ पर सवार होकर अपनी बड़ी-बड़ी आठ भुजाओं में उत्तम हथियारों को लेकर उसने सम्पूर्ण आकाशमण्डल को व्याप्त कर दिया ॥ १८ ॥

उसे आते देख देवी ने शङ्ख बजाया और धनुष की प्रत्यञ्चा का भी दुःसह शब्द किया ॥ १९ ॥

सभी दैत्य-सेनाओं का तेज नष्ट करने वाला घण्टे का शब्द किया, जिससे सम्पूर्ण दिशायें गूज उठी ॥ २० ॥

ततः सिंहो महानादैस्त्याजितेभमहामदैः । पूरयामास गगनं गां तथैव दिशो दश ॥ २१ ॥ ततः काली समुत्पत्य गगनं क्ष्मामताडयत् । कराभ्यां तन्निनादेन प्रक्स्वानास्ते तिरोहिता ॥ २२ ॥ अट्टाट्टहासमशिवं शिवदूती चकार ह । तै शब्दैरसुरास्त्रेषुः शुम्भ कोपं परं ययौ ॥ २३ ॥ दुरात्मंस्तिष्ठ तिष्ठेति व्याजहाराम्बिका यदा । तदा जयेत्यभिहितं देवैराकाशसंस्थितै ॥ २४ ॥ शुम्भेनागत्य या शक्तिर्मुक्ता ज्वालातिभीषणा । आयान्ती वह्निकूटाभा सा निरस्ता महोल्कया ॥ २५ ॥ सिंहनादेन शुम्भस्य व्याप्तं लोकत्रयान्तरम् । निर्घातनिस्वनो घोरो जितवानवनीपते ॥ २६ ॥ शुम्भमुक्ताञ्छरान्देवी शुम्भस्तत्प्रहिताञ्छरान् । चिच्छेद स्वशरैरुग्रैः शतशोऽथ सहस्रश ॥ २७ ॥ ततः सा चण्डिका क्रुद्धा शूलेनाभिजघान तम् । स तदाभितो भूमौ मूर्छितो निपपात ह ॥ २८ ॥ ततो निशुम्भः सम्प्राप्य चेतनामात्तकार्मुकः । आजघान शरैर्देवीं कालीं केसरिणं तथा ॥ २९ ॥ पुनश्च कृत्वा बाहूनामयुतं दनुजेश्वरः । चक्रायुधेन दितिजश्छादयामास चण्डिकाम् ॥ ३० ॥ ततो भगवती क्रुद्धा दुर्गा दुर्गार्तिनाशिनी । चिच्छेद तानि चक्राणि स्वशरैः सायकांश्च तान् ॥ ३१ ॥ ततो निशुम्भयो वेगेन गदामादाय चण्डिकाम् । अभ्यधावत् वै हन्तुं दैत्यसेनासमावृतः ॥ ३२ ॥ तस्यापतत एवाशु गदां चिच्छेद चण्डिका । खड्गेन शितधारेण स

उसके बाद सिंह ने भी बड़े-बड़े हाथियों के मद को चूर करने वाली अपनी दहाड़ से आकाश, पृथ्वी और दशों दिशाओं को भर दिया ॥ २१ ॥

तब काली ने आकाश में उछलकर दोनों हाथ पृथ्वी पर पटक दिया, जिससे (भयानक शब्द होने के कारण) पहले के सभी शब्द विलीन हो गये। फिर शिवदूती ने बहुत जोर से अट्टहास किया जिसके सुनते ही असुरों की सेनायें डर गई तथा शुम्भ को बड़ा ही क्रोध हुआ ॥ २२ -२३ ॥

तब अम्बिका ने शुम्भ से कहा – 'रे दुष्ट ! खड़ा रह' यह सुनकर आकाश में स्थित देवता जयजयकार करने लगे ॥ २४ ॥

शुम्भ ने वहाँ आकर अत्यन्त चमकती हुई जिस भयानक शक्ति को छोड़ा, उस अग्नि के पर्वत के समान शक्ति को आती देख देवी ने महोल्का के द्वारा उसे नष्ट कर दिया ॥ २५ ॥

शुम्भ सिंह के समान गरजा। उसके गरजने का शब्द तीनों लोकों मैं फैल गया। हे राजन् ! उसी समय सेना में "मारो-मारो" का शब्द हुआ। उस शब्द में शुम्भ के गरजने का शब्द विलीन हो गया ॥ २६ ॥

उसके बाद शुम्भ के द्वारा चलाये हुए सैकड़ों बाणों को देवी ने तथा देवी के द्वारा छोड़े गये बाणों को शुम्भ ने अपने बाणों से काट डाला ॥ २७ ॥

तब क्रोधित हो चण्डिका ने शुम्भ को त्रिशूल से मारा, जिससे वह घायल हो मूर्छित होकर पृथ्वी पर गिर पड़ा ॥ २८ ॥

उसी समय निशुम्भ को होश आया और उसे धनुष लेकर बाणों से काली देवी और सिंह को मारा ॥ २९ ॥

फिर असुरराज निशुम्भ ने दस हजार भुजायें बनाकर चक्रों के प्रहार से देवी को ढक लिया ॥ ३० ॥

तब संकट का नाश करने वाली भगवती दुर्गा ने क्रोधित हो उन सब चक्रों और बाणों को अपने बाणों से काट डाला ॥ ३१ ॥

उसके बाद दैत्य-सेनाओं के साथ निशुम्भ बड़े वेग से गदा लेकर देवी को मारने के लिए आगे दौड़ा ॥ ३२ ॥

च शूलं समाददे ॥ ३३ ॥ शूलहस्तं समायान्तं निशुम्भममरार्दनम् । हृदि विव्याध शूलेन वेगाविद्धेन चण्डिका ॥ ३४ ॥ भिन्नस्य तस्यशूलेन हृदयान्निःसृतोऽपरः । महाबलो महावीर्यस्तिष्ठेति पुरुषो वदन् ॥ ३५ ॥ तस्य निष्क्रामतो देवी प्रहस्य स्वनवत्ततः । शिरश्चिच्छेद खड्गेन ततोऽसावपतद्भुवि ॥ ३६ ॥ ततः सिंहश्चखादोग्रं दंष्ट्राक्षुण्णशिरोधरान् । असुरांस्तांस्तथा काली शिवदूती तथापरान् ॥ ३७ ॥ कौमारीशक्तिनिर्भिन्ना केचिन्नेशुर्महासुराः । ब्रह्माणीमन्त्रपूतेन तोयेनान्ये निराकृताः ॥ ३८ ॥ माहेश्वरीत्रिशूलेन भिन्नाः पेतुस्तथापरे । वाराहीतुण्डघातेन केचिच्चूर्णीकृता भुवि ॥ ३९ ॥ खण्डं खण्डं च चक्रेण वैष्णव्या दानवाः कृता : । वज्रेण चैन्द्रीहस्ताग्रविमुक्तेन तथापरे ॥ ४० ॥ केचिद्विनेशुरसुराः केचिन्नष्टा महाहवात् । भक्षिताश्चापरे कालीशिवदूतीमृगाधिपैः ॥ ॐ ॥ ४१ ॥

इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये निशुम्भवधो नाम नवमोऽध्यायः ॥ ९ ॥ उवाच २, श्लोकाः ३९, एवम् ४१, एवमादितः ॥ ५४३ ॥

'ॐ' ऋषिरुवाच ॥ १ ॥

निशुम्भं निहतं दृष्ट्वा भ्रातरं प्राणसम्मितम् । हन्यमानंबलं चैव शुम्भः क्रुद्धोऽब्रवीद्वचः ॥ २ ॥

अपनी ओर आती हुई गदा को देखकर चण्डिका ने अपनी तेज धारवाली तलवार से उसे काट डाला, तब उसने शूल उठाया ॥ ३३ ॥

शूल लेकर आते हुए निशुम्भ को देखकर चण्डिका ने तत्काल ही अपने शूल से उसके हृदय में मारा ॥ ३४ ॥

शूल लगने से उसकी छाती फट गई और उसमें से एक दूसरा बलवान और पराक्रमी पुरुष देवी से 'खड़ी रह' यह कहता हुआ निकल पड़ा ॥ ३५ ॥

तब देवी ने हँस कर तलवार से उसकी गर्दन काट दिया और वह भूमि पर गिर पड़ा ॥ ३६ ॥

तदन्तर सिंह अपने तेज दाँतों से असुरों के सिर तथा धड़ खाने लगा । दूसरी ओर काली और शिवदूती भी अन्य असुरों को खाने लगीं ॥ ३७ ॥

कितने ही असुरों को कौमारी ने अपनी शक्ति से नष्ट कर दिया तथा अन्य कितने महासुर ब्रह्माणी के मंत्र के पवित्र जल से निस्तेज हो नष्ट हो गये ॥ ३८ ॥

माहेश्वरी ने कितनों को त्रिशूल से काट कर गिरा दिया तथा अन्य कितने ही वाराही के थूथुन के प्रहार से चूर-चूर होकर पृथ्वी पर गिर पड़े ॥ ३९ ॥

वैष्णवी ने चक्र से कितने ही दानवों को खण्ड-खण्ड कर डाला । ऐन्द्री ने बहुतों को अपने हाथों छोड़े गये वज्र से मार दिया ॥ ४० ॥

कितने ही संग्राम में मारे गये, कितने डरकर भाग गये, कितनों को काली, शिवदूती और सिंह ने खा डाला ॥ ४१ ॥

श्रीमार्कण्डेयपुराण में सावर्णिक मन्वन्तर की कथा के अन्तर्गत देवीमाहात्म्य में निशुम्ह्शुम्भवध नामक नवम अध्याय समाप्त हुआ ॥ ९ ॥

दशमोऽध्याय :

ऋषि बोले – ॥ १ ॥

प्राणों के समान प्रिय अपने भाई निशुम्भ तथा समस्त सेनाओं को मरा हुआ देखकर शुम्भ क्रोधित हो बोला ॥ २ ॥

बलाबलेपाद् दुष्टे त्वं मा दुर्गे गर्वमावह । अन्यासां बलमाश्रित्य युद्ध्यसे यातिमानिनी ॥ ३ ॥
देव्युवाच ॥ ४ ॥

एकैवाहं जगत्यत्र द्वितीया का ममापरा । पश्यैता दुष्ट मय्येव विशन्त्यो मद्विभूतयः ॥ ५ ॥
तत समस्तास्ता देव्यो ब्रह्माणीप्रमुखा लयम् । तस्या देव्यास्तनौ जग्मुरेकैवासीत्तदाम्बिका ॥ ६ ॥

देव्युवाच ॥ ७ ॥

अहं विभूत्या बहुभिरिह रूपैर्यदास्थिता । तत्संहृतं मयैकैव तिष्ठाम्याजौ स्थिरो भव ॥ ८ ॥

ऋषिरुवाच ॥ ९ ॥

ततः प्रववृते युद्धं देव्याः शुम्भस्य चोभयोः । पश्यतां सर्वदेवानामसुराणां च दारुणम् ॥ १० ॥
शरवर्षैं शितैः शस्त्रैस्तथास्त्रैश्चैव दारुणैः । तयोर्युद्धमभूद्भूय सर्वलोकभयङ्करम् ॥ ११ ॥
दिव्यान्यस्त्राणि शतशो मुमुचे यान्यथाम्बिका । बभञ्ज तानि दैत्येन्द्रस्तत्प्रतीघातकर्तृभिः ॥ १२ ॥
मुक्तानि तेन चास्त्राणि दिव्यानि परमेश्वरी । बभञ्ज लीलयैवोग्रहुङ्कारोच्चारणादिभिः ॥ १३ ॥ ततः
शरशतैर्देवीमाच्छादयत् सोऽसुरः । सापि तत्कुपिता देवी धनुश्चिच्छेद चेषुभिः ॥ १४ ॥ छित्रे धनुषि

दुष्ट दुर्गे ! तुम अपने बल का घमण्ड मत करो । तुम दूसरे के बल पर ही युद्ध करती हो तथा अपने को अभिमानिनी बनती हो ॥ ३ ॥

देवी ने कहा – ॥ ४ ॥

रे दुष्ट ! मैं इस संसार में अकेली ही हूं, मेरे सिवा दूसरा कौन है ? देख, ये सब शक्तियाँ मेरी ही हैं, जो मुझमें ही लीन होती हैं ॥ ५ ॥

उसके बाद ब्रह्माणी आदि सभी शक्तियाँ देवी के शरीर में लीन हो गई और केवल एक अम्बिका का रूप ही शेष बच गया ॥ ६ ॥

देवी ने कहा – ॥ ७ ॥

मैं अपनी विभूतियों द्वारा अनेक रूपों से युद्धस्थल में उपस्थित थी । अब मैं सभी रूपों को एकत्रित कर अकेली ही खड़ी हूं । तुम युद्ध के लिए सावधान हो जाओ ॥ ८ ॥

ऋषि ने कहा – ॥ ९ ॥

उसके बाद देवताओं और दैत्यों के देखते ही देखते देवी और शुम्भ दोनों में युद्ध होने लगा ॥ १० ॥

तीक्ष्ण बाणों की वर्षा तथा दारुण अस्त्र-शस्त्रों के प्रहार से सब लोगों को भय देने वाला महायुद्ध छिड़ गया ॥ ११ ॥

अम्बिका ने जो सैकड़ों दिव्यास्त्र छोड़े, उन्हें दैत्यराज शुम्भ ने अपने निवारक अस्त्रों से काट डाला ॥ १२ ॥

इसी तरह शुम्भ ने जिन अस्त्रों को छोड़ा, उनको देवी ने भी भयङ्कर हुंकार के उच्चारण से ही अनायास काट डाला ॥ १३ ॥

तब उस असुर ने सैकड़ों बाणों से देवी को ढँक लिया । देवी ने भी क्रोधित होकर अपने बाणों से उसके धनुष को काट डाला ॥ १४ ॥

दैत्येन्द्रस्तथा शक्तिः मथाददे । चिच्छेद देवी चक्रेण तामप्यस्य करे स्थिताम् ॥ १५ ॥ ततः खड्गमुपादाय शतचन्द्र च भानुमत् । अभ्यधावत्तदा देवीं दैत्यानामधिपेश्वरः ॥ १६ ॥ तस्यापतत एवाशु खड्गं चिच्छेद चण्डिका । धनुर्मुक्तैः शितैर्बाणैश्चर्म चार्ककरामलम् ॥ १७ ॥ हताश्वः स तदा दैत्यश्छिन्नधन्वा विसारथिः । जग्राह मुद्गरं घोरमम्बिकानिधनोद्यतः ॥ १८ ॥ चिच्छेदापततस्तस्य मुद्गरं निशितैः शरैः । तथापि सोऽभ्यधावतां मुष्टिमुद्यम्य वेगवान् ॥ १९ ॥ स मुष्टिं पातयामास हृदये दैत्यपुङ्गवः । देव्यास्तं चापि सा देवी तलेनोरस्यताडयत् ॥ २० ॥ तलप्रहाराभिहतो निपपात महीतले । स दैत्यराजः सहसा पुनरेव तथोत्थितः ॥ २१ ॥ उत्पत्य च गृह्योच्चैर्देवी गगनमस्थितः । तत्रापि सा निराधारा युयुधे तेन **चण्डिका ॥ २२ ॥ नियुद्धं खे तदा दैत्यश्चण्डिका च परस्परम् । चक्रतुः प्रथमं सिद्धमुनिविस्मयकारकम् ॥ २३ ॥ ततो नियुद्धं सुचिरं कृत्वा तेनाम्बिका सह । उत्पात्य भ्रामयामास चिक्षेप धरणीतले ॥ २४ ॥ स क्षिप्तो धरणीं प्राप्य मुष्टिमुद्यस्य वेगितः । अभ्यधावतः दुष्टात्मा चण्डिका निधनेच्छया ॥ २५ ॥ तमायान्तं ततो देवी सर्वदैत्यजनेश्वरम् । जगत्यां पातयामास भित्त्वा शूलेन वक्षसि ॥ २६ ॥ स गतासुः पपातोर्व्यां देवीशूलाग्रविक्षतः ।**

धनुष कटकर गिर जाने पर दैत्यराज शुम्भ ने एक शक्ति उठायी । देवी ने उसे भी अपने चक्र से काट डाला ॥ १५ ॥

तब दैत्येन्द्र शुम्भ सैकड़ों चन्द्रमा और सूर्य के समान चमकती हुई ढाल और तलवार को लेकर देवी की ओर दौड़ा ॥ १६ ॥

चण्डिका ने अपने तीक्ष्ण बाणों द्वारा सूर्य की किरणों की तरह चमकने वाली उसकी ढाल और तलवार को भी काट डाला ॥ १७ ॥

तत्पश्चात् घोड़े, धनुष और सारथि नष्ट हो जाने पर उस दैत्य ने देवी को मारने के लिए मुद्गर ग्रहण किया ॥ १८ ॥

देवी ने अपनी ओर आते हुए उसके मुद्गर को भी अपने तीक्ष्ण बाणों से काटकर गिरा दिया । तब वह दैत्यराज मुक्के को संभालकर बड़े वेग से देवी को मारने के लिए दौड़ा ॥ १९ ॥

और देवी के वक्ष पर मुष्टि का प्रहार किया । देवी ने भी उसकी छाती में एक थप्पड़ मारा ॥ २० ॥

थप्पड़ लगते ही वह दैत्य पृथ्वी पर गिर गया किन्तु शीघ्र ही पूर्ववत् उठकर खड़ा हो गया ॥ २१ ॥

फिर उसने उछल कर देवी को पकड़ा तथा आकाश में स्थित हो गया ।
वहाँ निराधार होकर भी चण्डिका शुम्भ के साथ युद्ध करने लगीं ॥ २२ ॥

तब आकाश में चण्डिका और दैत्य दोनों परस्पर लड़ने लगे । वह युद्ध इस प्रकार हुआ कि पहले समस्त सिद्ध और मुनि आश्चर्ययुक्त हो गये ॥ २३ ॥

उसके बाद अम्बिका ने उसके साथ बड़ी देर तक युद्ध किया, फिर उसे उठाकर घुमाया तथा पृथ्वी पर पटक दिया ॥ २४ ॥

पृथ्वी पर गिरकर भी वह दुष्ट चण्डिका को मारने की इच्छा से बड़ी तेजी से घूसा तानकर देवी की ओर दौड़ा ॥ २५ ॥

देवी ने दैत्यराज शुम्भ को अपनी ओर आते देखकर शूल से उसकी छाती को विदीर्ण कर उसे पृथ्वी पर गिरा दिया ॥ २६ ॥

चालयन् सकलां पृथिवीं साब्धिद्वीपां सपर्वताम् ॥ २७ ॥ ततः प्रसन्नमखिलं हते तस्मिन् दुरात्मनि। जगत्स्वास्थ्यमतीवाप निर्मलं चाभवन्नभः ॥ २८ ॥ उत्पातमेघाः सोल्का ये प्रागासंस्ते शमं ययुः। सरितो मार्गवाहिन्यस्तथासंस्तत्र पातिते ॥ २९ ॥ ततो देवगणाः सर्वे हर्षनिर्भमानसाः। बभूवुर्निहते तस्मिन् गन्धर्वा ललितं जगुः ॥ ३० ॥ अवादयंस्तथैवान्ये ननृतुश्चाप्सरोगणाः। ववुः पुण्यास्तथा वाताः सुप्रभोऽभूद्दिवाकरः ॥ ३१ ॥ जज्वलुश्चाग्नयः शान्ताः शान्ता दिग्जनितस्वनाः ॥ ॐ ॥ ३२ ॥

इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये
शुम्भवधो नाम दशमोऽध्यायः ॥ १० ॥ उवाच ४, अर्द्धश्लोकाः १,
श्लोकाः २७, एवम् ३२, एवमादितः ॥ ५७५ ॥

'ॐ' ऋषिरुवाच ॥ १ ॥

देव्या हते तत्र महासुरेन्द्र सेन्द्राः सुरा वह्निपुरोगमास्ताम्। कात्यायनीं तुष्टवुरिष्टलाभाद् विकाशिवक्त्राब्जविकाशिताशाः ॥ २ ॥ देवि प्रपन्नार्तिहरे प्रसीद प्रसीद मातर्जगतोऽखिलस्य। प्रसीद विश्वेश्वरि पाहि विश्वं त्वमीश्वरी देवि चराचरस्य ॥ ३ ॥ आधारभूता जगतस्त्वमेका महीस्वरूपेण यतः स्थितासि। अपां स्वरूपस्थितया त्वयैतदाप्यायते कृत्स्नमलङ्घ्यवीर्ये ॥ ४ ॥

देवी के शूल से घायल होकर दैत्य पृथ्वी पर गिर कर मर गया। जिस समय वह पृथ्वी पर गिरा था उस समय सम्पूर्ण पृथ्वी, समुद्र पर्वत तथा द्वीप कम्पायमान हो गये थे ॥ २७ ॥

उस दुरात्मा के मरते ही सारा विश्व सुखी और आकाश स्वच्छ हो गया ॥ २८ ॥

मेघ से जो पहले अनिष्टसूचक उल्कापात होते थे वे सभी शान्त हो गये। नदियाँ भी अपने-अपने मार्ग से बहने लगीं ॥ २९ ॥

उसके मरते ही सभी देवगण आनन्द से गद्-गद् हो गये और गन्धर्व सुन्दर गीतों को गाने लगे ॥ ३० ॥

बहुत से गन्धर्व बाजे बजाने लगे। अप्सरायें नाचने लगीं। स्वच्छ हवायें बहने लगी। सूर्य की किरणें प्रभायुक्त हो गईं ॥ ३१ ॥

यज्ञ की अग्नि प्रज्वलित हो उठी। दिशाओं में जो हाहाकार शब्द सुनायी पड़ता था वह सब शान्त हो गया ॥ ३२ ॥

श्री मार्कण्डेयपुराण में सावर्णिक मन्वन्तर की कथा के अन्तर्गत
देवी माहात्म्य में शुम्भवध नामक दशम अध्याय
समाप्त हुआ ॥ १० ॥

एकादशोऽध्याय :

ऋषि ने कहा – ॥ १ ॥

वहाँ देवी द्वारा असुरराज शुम्भ के मारे जाने पर इन्द्र सहित सभी देवता अग्नि को आगे करके अभीष्ट की प्राप्ति होने से प्रसन्न होकर कात्यायनी देवी की स्तुति करने लगे ॥ २ ॥

शरणागतों के दुःख को दूर करने वाली हे देवि! प्रसन्न होओ। सम्पूर्ण संसार की माता। प्रसन्न होओ। हे विश्वेश्वरि! प्रसन्न होओ तथा संसार की रक्षा करो। हे देवि! चराचर की तुम्हीं ईश्वरी हो ॥ ३ ॥

सम्पूर्ण संसार का एकमात्र आधार तुम्हीं हो क्योंकि तुम पृथ्वी रूप में स्थित हो। हे देवि! तुम्हारा पराक्रम अलङ्घनीय है। तुम जल रूप से स्थित होकर सम्पूर्ण संसार को सन्तुष्ट करती हो ॥ ४ ॥

त्वं वैष्णवी शक्तिनन्तवीर्या विश्वस्य बीजं परमासि माया । सम्मोहितं देवि समस्तमेतत् त्वं वै प्रसन्ना भुवि मुक्तिहेतुः ॥ ५ ॥ विद्याः समस्तास्तव देवि भेदाः स्त्रियः समस्ताः सकला जगत्सु । त्वयैकया पूरितमम्बयैतत् का ते स्तुतिः स्तव्यपरा परोक्तिः ॥ ६ ॥ सर्वभूतायदा देवी स्वर्गमुक्तिप्रदायिनी। त्वं स्तुता स्तुतये का वा भव तु परमोक्तयः ॥ ७ ॥ सर्वस्य बुद्धिरूपेण जनस्य हृदि संस्थिते । स्वर्गापवर्गदे देवि नारायणि नमोऽस्तु ते ॥ ८ ॥ कालाकाष्ठदिरूपेण परिणामप्रदायिनी । विश्वस्योपरतौ शक्ते नारायणि नमोऽस्तु ते ॥ ९ ॥ सर्वमङ्गलमाङ्गल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके । शरण्येत्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तु ते ॥ १० ॥ सृष्टिस्थितिविनाशानां शक्तिभूते सनातनि । गुणाश्रये गुणमये नारायणि नमोऽस्तु ते ॥ ११ ॥ शरणागतदीनार्तपरित्राणपरायणे। सर्वस्यार्तिहरे देवि नारायणि नमोऽस्तु ते ॥ १२ ॥ हंसयुक्तविमानस्थे ब्रह्माणीरूपधारिणी । कौशाम्भःक्षरिके देवि नारायणि नमोऽस्तु ते ॥ १३ ॥ त्रिशूल चन्द्राहिधरे महावृषभवाहिनि । माहेश्वरीस्वरूपेण नारायणि नमोऽस्तु ते ॥ १४ ॥ मयूरकुक्कुटवृते

तुम अनन्त बल से युक्त वैष्णवी शक्ति हो । संसार का आदि कारण तथा महामाया तुम्हीं हो । इस सम्पूर्ण विश्व को तुमने ही मोहित कर रक्खा है । हे देवि ! तुम्हीं प्रसन्नता संसार में मोक्ष का कारण है ॥ ५ ॥

हे देवि ! सभी विद्यायें आपही के भेद हैं । संसार में सभी स्त्रियाँ आप ही की मूर्ति हैं । अकेली आपने ही इस सारे संसार को व्याप्त कर रक्खा है । आपकी स्तुति क्या हो सकती है, आप तो स्तुति करने योग्य पदार्थों से भी परे हैं ॥ ६ ॥

जब तुम सर्वस्वरूपा एवं स्वर्ग और मोक्ष को देनेवाली हो, तब तुम्हारी स्तुति हो गयी, तुम्हारी स्तुति के लिए इससे अच्छी उक्ति क्या हो सकती है ॥ ७ ॥

तुम समस्त प्राणियों के हृदय में बुद्धि रूप से स्थित हो । स्वर्ग और मोक्ष को देने वाली हो । हे नारायणि देवि ! तुम्हें नमस्कार है ॥ ८ ॥

तुम कला-काष्ठा आदि के रूप से परिणाम अर्थात् अवस्था परिवर्तन करने वाली हो । संसार का संहार करने में समर्थ हे देवि ! तुम्हें नमस्कार है ॥ ९ ॥

तुम सभी मंगलों को देने वाली मंगलमयी हो; सभी कार्य को सिद्ध करनेवाली हो; शरण देने वाली, त्रिनयनी, गौरी तुम्हीं हो । हे नारायणि ! तुम्हें नमस्कार है ॥ १० ॥

तुम सृष्टि, पालन और संहार-शक्तिस्वरूपिणी, सनातनी, सभी प्रकार के गुणों को आश्रय देने वाली तथा सभी गुणों से युक्त हो । हे नारायणि ! तुम्हे नमस्कार है ॥ ११ ॥

शरण में आये हुए सभी दीन दुखियों के दुःख को दूर करने में तत्पर रहने वाली तथा सभी प्रकार की पीड़ाओं का नाश करने वाली हे नारायणि देवि ! तुम्हें नमस्कार है ॥ १२ ॥

ब्रह्माणी का रूप धारण करके हंस-युक्त विमान पर स्थित तथा कुश से अभिमंत्रित जल को छिड़कने वाली हे नारायणि देवि ! तुम्हें नमस्कार है ॥ १३ ॥

माहेश्वरी रूप त्रिशूल, चन्द्र और सर्प को धारण करने वाली तथा महावृषभ को वाहन बनाने वाली हे नारायणि देवि ! तुम्हें नमस्कार है । मयूरों और मुर्गों से परिवेष्टित महाशक्ति को धारण करने वाली,

महाशक्तिधरेऽनघे । कौमारीस्वरूपसंस्थाने नारायणि नमोऽस्तु ते ॥१५॥ शङ्खचक्रगदाशार्ङ्गगृहीतपरमायुधे। प्रसीद वैष्णवीरूपे नारायणि नमोऽस्तु ते ॥ १६ ॥ गृहीतोग्रमहाचक्रे दंष्ट्रोद्धतवसुन्धरे । वराहरूपिणी शिवे नारायणि नमोऽस्तु ते ॥१७॥ नृसिंहरूपेणोग्रेण हन्तुं दैत्यान्कृतोद्यमे । त्रैलोक्यत्राणसहिते नारायणि नमोऽस्तु ते ॥१८॥ किरीटिनि महावज्रे सहस्रनयनोज्ज्वले । वृत्रप्राणहरे चैन्द्रि नारायणि नमोऽस्तु ते ॥१९॥ शिवदूतीस्वरूपेण हतदैत्यमहाबले । घोररूपे महारावे नारायणि नमोऽस्तु ते ॥ २० ॥ दंष्ट्राकरालवदने शिरोमाला विभूषणे । चामुण्डे मुण्डमथने नारायणि नमोऽस्तु ते ॥ २१ ॥ लक्ष्मि लज्जे महाविद्ये श्रद्धे पुष्टिस्वधे ध्रवे । महारात्रि महाविद्ये नारायणि नमोऽस्तु ते ॥ २२ ॥ मेधे सरस्वति वरे भूति बाभ्रवि तामसि । नियते त्वं प्रसीदेशे नारायणि नमोऽस्तु ते ॥२३॥ सर्वस्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्ति समन्विते। भयेभ्यस्त्राहि तो देवि दुर्गे देवि नमोऽस्तु ते ॥२४॥ एतत्ते वदनं सौम्यं लोचनत्रयभूषितम् । पातु न सर्वभीतिभ्यः कात्यायनि नमोऽस्तु ते ॥२५॥ ज्वालाकरालमत्युग्रमशेषासुरसूदनम् । त्रिशूलं पातु नो भीतेर्भद्रकालि नमोऽस्तु ते ॥ २६ ॥ हिनस्ति

पापों से रहित एवं कौमारी रूप को धारण करने वाली हे नारायणि ! तुम्हें नमस्कार है । शङ्ख, चक्र, गदा और शार्ङ्ग धनुष तथा उत्तम-उत्तम आयुधों को धारण करने वाली हे वैष्णवीस्वरूपे ! नारायणि ! तुम प्रसन्न होओ । तुम्हें नमस्कार है । भयानक महाचक्र को धारण करने वाली तथा अपने दाँतों पर पृथ्वी को उठानेवाली कल्याण-कारिणी वाराहरूपिणी हे नारायणि ! तुम्हें नमस्कार है । भयानक नृसिंह स्वरूप को धारण कर असुरों को मारने के लिये प्रयास करने वाली तथा तीनों लोकों की रक्षा करने में तत्पर हे नारायणि ! तुम्हें नमस्कार है ॥ १४-१८ ॥

मस्तक पर किरीट तथा हाथों में महाचक्र धारण करने वाली, सहस्रनेत्रों से प्रकाशमान् तथा वृत्रासुर के प्राणों को हरने वाली इन्द्रशक्तिस्वरूपे, हे नारायणि देवि ! तुम्हें नमस्कार है ॥ १९ ॥

शिवदूती का स्वरूप धारण करके महाबलशाली असुर-समूह का संहार करनेवाली, भयङ्कर रूप को धारण करने वाली विकट गर्जना करने वाली हे नारायणि देवि ! तुम्हें नमस्कार है ॥ २० ॥

बड़े-बड़े दाँतों के कारण विकराल मुखवाली, मुण्ड की मालाओं से सुशोभित, मुण्ड असुर का मर्दन करने वाली चामुण्डारूपा हे नारायणि ! तुम्हें नमस्कार है ॥ २१ ॥

तुम लक्ष्मी, लज्जा, महाविद्या, श्रद्धा, पुष्टि स्वधा, ध्रुवा, महारात्रि तथा महाविद्यारूपा हो । हे नारायणि ! तुम्हें नमस्कार है ॥ २२ ॥

तुम मेधा, सरस्वती, सर्वोत्कृष्टा, ऐश्वर्यरूपिणी, वाभ्रवि (पार्वती), तामसी (महाकाली), नियता (नियमशीला) और ईश्वरी हो । हे नारायणि ! तुम्हें नमस्कार है ॥ २३ ॥

तुम सर्वस्वरूपा, सर्वेश्वरी, सर्वशक्तिगति हो। हे दुर्गे हे देवि! तुम सब प्रकार के भयों से हम लोगों की रक्षा करो । हे देवि ! तुम्हें नमस्कार है ॥ २४ ॥

हे कात्यायनि ! आपका यह तीन नेत्रों से सुशोभित मुख सभी भयों से हमारी रक्षा करे, आपको नमस्कार है ॥ २५ ॥

हे भद्रकाली ! समस्त असुरों का विनाश करनेवाला और ज्वालाओं के समान भयानक आपका त्रिशूल सभी भयों से हमारी रक्षा करे । आपको नमस्कार है ॥ २६ ॥

दैत्यतेजांसि स्वनेनापूर्य या जगत् । घण्टा पातु नो देवि पापेभ्यो नमः सुतानिव ॥२७॥ असुरासृग्वासापङ्कचर्चितस्ते करोज्ज्वलः । शुभाय खड्गो भवतु चण्डिके त्वां नता वयम् ॥२८॥ रोगानशेषानपहंसि तुष्टा रुष्टा तु कामान् सकलानभीष्टान् । त्वामाश्रितानां न विपन्नराणां त्वामाश्रिता ह्याश्रयतां प्रयान्ति ॥२९॥ एतत्कृतं यत्कदनं त्वयाद्य धर्मद्विषां देवि महासुराणाम् । रूपैरनेकैर्बहाधाऽऽत्ममूर्तिं कृत्वाम्बिके तत्प्रकरोति कान्या ॥३०॥ विद्यासु शास्त्रेषु विवेकदीपेष्वाद्येषु वाक्येषु च का त्वदन्या । ममत्वगर्तेऽतिमहान्धकारे विभ्रामयत्येतदतीव विश्वम् ॥३१॥ रक्षांसि यत्रोग्रविषाश्च नागा यत्रारयो दस्युबलानि यत्र । दावानलो यत्र तथाब्धिमध्ये तत्र स्थिता त्वं परिपासि विश्वम् ॥३२॥ विश्वेश्वरि त्वं परिपासि विश्वं विश्वात्मिका धारयसीति विश्वम् । विश्वेशवन्द्या भवती भवन्ति विंश्वाश्रया ये त्वयि भक्तिनम्राः ॥३३॥ देवि प्रसीद परिपालय नोऽरिभीतेर्नित्यं यथासुरवधादधुनैव सद्यः । पापानि सर्वजगतां प्रशमं नयाशु उत्पातपाकजनितांश्च महोपसर्गान् ॥३४॥ प्रणतानां प्रसीद त्वं देवि विश्वार्तिहारिणी । त्रैलोक्यावासिनामीड्ये लोकानां वरदा भव ॥३५॥

जिस घण्टा ने अपनी ध्वनि के द्वारा सम्पूर्ण विश्व को व्याप्तकर असुरों के तेज का विनाश कर दिया है, वह पापों से हमलोगों की रक्षा उसी प्रकार करे, जिस प्रकार माता अपने पुत्रों की बुरे कर्मों से रक्षा करती है ॥२७॥

हे चण्डिके ! तुम्हारे हाथों में चमकता हुआ खड्ग, जो असुरों के रक्त और मज्जा से सुशोभित है, हमारा मंगल करे । हमलोग अतिनम्रभाव से तुम्हें नमस्कार करते हैं ॥२८॥

हे देवि तुम प्रसन्न होकर सब प्रकार के रोगों का विनाश करती हो, एवं अप्रसन्न होने पर सब अभीष्टों का नाश भी कर देती हो । जो मनुष्य तुम्हारे आश्रित होते हैं, उनके पास कभी भी आपत्ति नहीं आती एवं वे स्वयं दूसरों का आश्रय बन जाते हैं ॥२९॥

हे अम्बिका देवि ! तुमने विविध स्वरूपों को धारण कर इन धर्मद्रोही असुरों का संहार किया है, यह कार्य तुम्हारे अतिरिक्त दूसरा कौन कर सकता है । समस्त विद्याओं में, ज्ञान को प्रकाशित करनेवाले शास्त्रों में एवं आदिवाक्यों (वेदों) में तुम्हारे अतिरिक्त और किसका वर्णन है ? तुम्हारे अतिरिक्त ऐसी कौनी-सी शक्ति है जो इस संसार को अन्धकारमय ममता के गड्ढे में निरन्तर घुमा सकती है ? ॥३०-३१॥

जहाँ राक्षस, भयानक विषैले सर्प, शत्रुगण लुटेरों के दल एवं दावानल हैं, वहाँ तथा समुद्र के मध्य में भी तुम विश्व की रक्षा करती हो ॥३२॥

हे विश्वेश्वरि ! तुम विश्व की रक्षा करती हो । तुम्हीं विश्वात्मिका रूप से विश्वको धारण करती हो । तुम्हारी प्रार्थना भगवान् विश्वेश्वर भी करते हैं ।

हे देवि ! तुम प्रसन्न होओ । तुमने इस समय जिस प्रकार असुरों का विनाश करके तत्काल ही हमारी रक्षा की है उसी तरह असुरों से सदा हमारी रक्षा करती रहो और विश्व के पापों तथा उत्पात के कारण होने वाले महामारी आदि बड़े-बड़े उपद्रवों का शीघ्र ही शमन करो ॥३४॥

हे संसार की पीड़ा का हरण करनेवाली देवि ! तुम प्रणत भक्तों के ऊपर प्रसन्न होओ और त्रैलोक्यवासियों की वन्दनीया देवि ! तुम लोगों को अभीष्ट वर देने वाली होओ ॥३५॥

देव्युवाच ॥ ३६ ॥

वरदाहं सुरगणा वरं यन्मनसेच्छथ । तं वृणुध्वं प्रयच्छामि जगतामुपकारकम् ॥ ३७ ॥

देवा ऊचुः ॥ ३८ ॥

सर्वाबाधाप्रशमनं त्रैलोक्यस्याखिलेश्वरि । एवमेव त्वया कार्यमस्मद्वैरिविनाशनम् ॥ ३९ ॥

देव्युवाच ॥ ४० ॥

वैवस्वतेऽन्तरे प्राप्ते अष्ठाविंशतिमे युगे । शुम्भो निशुम्भश्चैवान्यावुत्पत्स्येते महासुरौ ॥ ४१ ॥
नन्दगोपगृहे जाता यशोदागर्भसम्भवा । ततस्तौ नाशयिष्यामि विन्ध्याचलनिवासिनी ॥ ४२ ॥
पुनरप्यतिरौद्रेण रूपेण पृथिवीतले । अवतीर्य हनिष्यामि वैप्रचित्तांश्च दानवान् ॥ ४३ ॥
भक्षयन्त्याश्च तानुग्रान् वैप्रचित्तान्महासुरान् । रक्ता दन्ता भविष्यन्ति दडिमीकुसुमोपमाः ॥ ४४ ॥
ततो मां देवताः स्वर्गेमर्त्यलोके च मानवाः । स्तुवन्तो व्याहरिष्यन्ति सततं रक्तदन्तिकाम् ॥ ४५ ॥
भूयश्च शतवार्षिक्यामनावृष्ट्यामनम्भसि । मुनिभिः संस्मृता भूमौ सम्भविष्याम्ययोनिजा ॥ ४६ ॥
ततः शतेन नेत्राणां निरीक्षिष्यामि यन्मुनीन् । कीर्तयिष्यन्ति मनुजाः शताक्षीमिति मां ततः ॥ ४७ ॥

देवी ने कहा – ॥ ३६ ॥

हे देवतागण ! मैं वर देने के लिए तैयार हूं। तुम लोग संसार की भलाई करने वाले जिस वर की अपने मन में अभिलाषा करते हो, उसे माँग लो मैं अवश्य दूँगी ॥ ३७ ॥

देवताओं ने कहा ॥ ३८ ॥

हे अखिलेश्वरि ! तुम इसी तरह तीनों लोकों की समस्त बाधाओं को शान्त करो और हमारे शत्रुओं का विनाश करो ॥ ३९ ॥

देवी बोली ॥ ४० ॥

वैवस्वत मन्वन्तर के अट्ठाइसवें युग में शुम्भ और निशुम्भ नामक दो अन्य महासुर उत्पन्न होंगे ॥ ४१ ॥

तब मैं नन्द नामक ग्वाले के घर में उनकी स्त्री यशोदा के गर्भ से उत्पन्न होकर विन्ध्याचल में निवास करूँगी और उन दोनों (शुम्भ-निशुम्भ नामक) असुरों का विनाश करूँगी ॥ ४२ ॥

उसके बाद फिर अत्यन्त भयानक रूप में पृथ्वी पर अवतार लेकर वैप्रचित्त असुरों को मारूँगी ॥ ४३ ॥

उन भयानक वैप्रचित्त महासुरों का भक्षण करते-करते मेरे दाँत अनार के फूल के समान लाल दिखाई पड़ेंगे ॥ ४४ ॥

तब स्वर्ग में देवता और मृत्युलोक में मनुष्यगण मेरी निरन्तर स्तुति करेंगे । और मुझे रक्तदन्तिका कहेंगे ॥ ४५ ॥

फिर जब सौ वर्ष तक वर्षा नहीं होगी और मुनिलोग जल के लिए मेरी स्तुति करेंगे, तब मेरा आयोनिज अवतार होगा ॥ ४६ ॥

तदनन्तर मैं सौ नेत्रों से मुनियों को देखूँगी, तब लोग मुझे शताक्षी कहेंगे ॥ ४७ ॥

ततोऽहमखिलं लोकमात्मदेहसमुद्भवैः। भरिष्यामि सुराः शाकैरावृष्टेः प्राणधारकैः ॥ ४८ ॥
शाकम्भरीति विख्यातिं तदा यास्याम्यहं भुवि। तत्रैव च वधिष्यामि दुर्गमाख्यं महासुरम् ॥ ४९ ॥
दुर्गा देवीति विख्यातं तन्मे नाम भविष्यति। पुनश्चाहं यदा भीमं रूपं कृत्वा हिमाचले ॥ ५० ॥
रक्षांसि भक्षयिष्यामि मुनीनां त्राणकारणात्। तदा मां मुनयः सर्वे स्तोष्यन्त्यानम्रमूर्तयः ॥ ५१ ॥
भीमा देवीति विख्यातं तन्मे नाम भविष्यति। यदारुणाख्यस्त्रैलोक्ये महाबाधां करिष्यति ॥ ५२ ॥
तदाहं भ्रामरं रूपं कृत्वाऽसंख्येयषट्पदम्। त्रैलोक्यस्य हितार्थाय भविष्यामि महासुरम् ॥ ५३ ॥
भ्रामरीति च मां लोकस्तदा स्तोष्यन्ति सर्वतः। इत्थं यदा यदा बाधा दानवोत्था भविष्यति ॥ ५४ ॥
तदा तदावतीर्याहं करिष्याम्यरिसंक्षचम् ॥ ॐ ॥ ५५ ॥

इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये
देवैः स्तुतिर्नामैकादशोऽध्यायः ॥ ११ ॥
उवाच : ४, अर्धश्लोकः १, श्लोकाः ५०,
एवम् ५५, एवमादितः ॥ ६३० ॥

हे देवताओं ! तब मैं अपने शरीर से लोगों के प्राणों की रक्षा करने वाले शाक को उत्पन्न करके जब तक वर्षा नहीं होगी तब तक उसी से सम्पूर्ण विश्व का भरण-पोषण करूँगी ॥ ४८ ॥

तब मैं शाकम्भरी नाम से संसार में विख्यात होऊँगी। उसी समय दुर्ग नामक महा असुर को मारूँगी ॥ ४९ ॥

जिससे मेरा नाम "दुर्गादेवी" के रूप में विख्यात होगा। फिर मैं भयानक रूप को धारण करके मुनियों की रक्षा के लिए हिमालय पर्वत पर असुरों का भक्षण करूँगी, तब मुनिगण नम्रतापूर्वक मेरी प्रार्थना करेंगे ॥ ५०-५१ ॥

तब मेरा नाम भीमा देवी के रूप में प्रसिद्ध होगा। जब अरुण नामक दैत्य तीनों लोकों में भयंकर उपद्रव मचायेगा ॥ ५२ ॥

तब मैं छः पैर वाले असंख्य भौरों का रूप बनाकर तीनों लोकों की भलाई के लिए उस असुर का वध करूँगी ॥ ५३ ॥

तब चारों ओर मनुष्य मुझे भ्रामरी नाम स्तुति करके प्रसन्न करेंगे। इस प्रकार जब-जब इस संसार में दानवों के द्वारा उपद्रव होगा। तब-तब मैं अवतार लेकर उन शत्रुओं का विनाश करूँगी ॥ ५४-५५ ॥

श्री मार्कण्डेयपुराण में सावर्णिक मन्वन्तर की कथा के अन्तर्गत
देवीमाहात्म्य में देवीस्तुति नामक ग्यारहवाँ
अध्याय समाप्त हुआ ॥ ११ ॥

'ॐ' देव्युवाच ॥ १ ॥

एभिः स्तवैश्च मां नित्यं स्तोष्यते यः समाहितः । तस्याहं सकलां बाधां नाशयिष्याम्यसंशयम् ॥ २ ॥ मधुकैटभनाशं च महिषासुरघातनम् । कीर्तयिष्यन्ति ये तद्वद् वधं शुम्भनिशुम्भयोः ॥ ३ ॥ अष्टम्यां च चतुर्दश्यां नवम्यां चैकचेतसः । श्रोष्यन्ति चैव ये भक्त्या मम माहात्म्यमुत्तमम् ॥ ४ ॥ न तेषा दुष्कृतं किञ्चिद् दुष्कृतोत्था न चापदः । भविष्यति न दारिद्र्यं न चैवेष्टवियोजनम् ॥ ५ ॥ शत्रुभ्यो न भयं तस्य दस्युतो वा न राजतः । न शस्त्रानलतोयौघात्कदाचित्सम्भविष्यति ॥ ६ ॥ तस्मान्ममैतन्माहात्म्यं पठितव्यं समाहितैः । श्रोतव्यं च सदा भक्त्या परं स्वस्त्ययनं हि तत् ॥ ७ ॥ उपसर्गानशेषांस्तु महामारीसमुद्भवान् । तथा त्रिविधमुत्पातं माहात्म्य शमयेन्मम ॥ ८ ॥ यत्रैत्पठ्यते सम्यङ्नित्यमायतने मम । सदा न तद्विमोक्ष्यामि सान्निध्यं तत्र मे स्थितम् ॥ ९ ॥ बलिप्रदाने पूजायामग्निकार्येमहोत्सवे । सर्वं ममैतच्चरितमुच्चार्य श्राव्यमेव च ॥ १० ॥ जानताऽजानता वापि बलिपूजां तथा कृताम् । प्रतीक्षिष्याम्यहं प्रीत्या वह्निहोमं तथा कृतम् ॥ ११ ॥ शरत्काले महापूजा क्रियते या च वार्षिकी । तस्यां ममैतन्माहात्म्यं श्रुत्वा भक्तिसमन्वितः ॥ १२ ॥ सर्वबाधाविनिर्मुक्तो धनधान्यसुतान्वितः । मनुष्यो मत्प्रसादेन भविष्यति न संशयः ॥ १३ ॥ श्रुत्वा ममैतन्माहात्म्यं तथा चोत्पत्तयः शुभाः । पराक्रमं च युद्धेषु जायते निर्भयः

द्वादशो अध्याय :

देवी बोलीं – ॥ १ ॥

जो मनुष्य एकाग्र मन से नित्य प्रति इस स्तोत्र (दुर्गा सप्तशती) से मेरी प्रार्थना करेगा, उसकी सभी बाधाओं को अवश्य ही मैं दूर करूँगी ॥ २ ॥

जो कोई मधुकैटभ का नाश, महिषासुर का वध और शुम्भ-निशम्भ के संहार की कथा कहेंगे ॥ ३ ॥

जो कोई अष्टमी, नवमी तथा चतुर्दशी को एकाग्रमन से मेरे इस माहात्म्य को भक्तिपूर्वक सुनेंगे ॥ ४ ॥

उन पर कभी भी न कोई पाप आयेगा और न उनसे उत्पन्न विपत्तियाँ ही आयेंगी । उनके यहाँ दरिद्रता नहीं रहेगी और न स्वजनों का वियोग ही होगा ।

ऐसे मनुष्यों को शत्रु, चोर, राजा, शस्त्र, अग्नि और जल आदि का भी भय नहीं होगा ॥ ६ ॥

इसलिए एकाग्र मन से मेरे इस माहात्म्य का पाठ तथा श्रवण करना चाहिए । यह उत्तम माहात्म्य सदा कल्याणप्रद है ॥ ७ ॥

मेरा यह माहात्म्य महामारी से उत्पन्न समस्त उपद्रवों तथा आध्यात्मिक, आधिदैविक और अधिभौतिक इन तीनों प्रकार के सन्तापों का शमन करता है । जिस घर में इस माहात्म्य का प्रतिदिन पाठ होता है, उस घर को मैं कभी भी नहीं छोड़ती हूं, उसी के समीप स्थित रहती हूं ॥ ८-९ ॥

बलिदान, पूजा, यज्ञ और अन्य महोत्सव आदि में मेरे सम्पूर्ण चरित्र का पाठ सुनना चाहिये ॥ १० ॥

जानकर या अज्ञानता से जो बलि, पूजा और होमादि करता है, उसे मैं प्रेमपूर्वक ग्रहण करती हूं ॥ ११ ॥

प्रति वर्ष शरद्काल में महापूजा की जाती है, उस समय मेरा यह माहात्म्य भक्तिपूर्वक सुनने से मनुष्य समस्त बाधाओं से मुक्त होकर मेरी दया से निश्चय धन-धान्य तथा पुत्र-पौत्रों से परिपूर्ण हो जाता है ॥ १२-१३ ॥

पुमान् ॥ १४ ॥ रिपवः संक्षयं यान्ति कल्याणं चोपपद्यते । नन्दते च कुलं पुंसा माहात्म्यं मम शृण्वताम् ॥ १५ ॥ शान्तिकर्मणि सर्वत्र तथा दुःस्वप्नदर्शने । ग्रहपीडासु चोग्रासु माहात्म्यं शृणयान्मम ॥ १६ ॥ उपसर्गाः शमं यान्ति ग्रहपीडाश्च दारुणाः । दुःस्वप्नं च नृभिर्दृष्टं सुस्वप्नमुपजायते ॥ १७ ॥ बालग्रहाभिभूतानां बालानां शान्तिकारकम् । संघातभेदे च नृणां मैत्रीकरणनुत्तमम् ॥ १८ ॥ दुर्वृत्तानामशेषाणां बलहानिकारं परम् । रक्षोभूतपिशाचानां पठनादेव नाशनम् ॥ १९ ॥ शर्व ममैतन्माहात्म्यं मम सन्निधिकारकम् । पशुपुष्पार्घ्यधूपैश्च गन्धदीपैस्तथोत्तमैः ॥ २० ॥ विप्राणां भोजनैर्होमैः प्रोक्षणीयैरहर्निशम् । अन्यैश्च विविधैर्भोगैः प्रदानैर्वत्सरेण या ॥ २१ ॥ प्रीतिर्मे क्रियते सास्मिन् सकृत्सुचरिते श्रुते । श्रुतं हरति पापानि तथाऽऽरोग्यं प्रयच्छति ॥ २२ ॥ रक्षां करोति भूतेभ्यो जन्मनां कीर्तनं मम । युद्धेषु चरितं यन्मे दुष्टदैत्यनिबर्हणम् ॥ २३ ॥ तस्मिञ्छ्रुते वैरिकृतं भयं पुंसां न जायते । युष्माभिः स्तुतयो याश्च याश्च ब्रह्मर्षिभिः कृताः ॥ २४ ॥ ब्रह्मणा च कृतास्तास्तु प्रयच्छन्ति शुभां मतिम् । अरण्ये प्रान्तरे वापि दावाग्निपरिवारितः ॥ २५ ॥ दस्युभिर्वा वृतः शून्ये गृहीतो वापि शत्रुभिः । सिंहव्याघ्रानुयातो

जो मनुष्य मेरे इस माहात्म्य, शुम्भ आदि की उत्पत्ति और पराक्रम का श्रवण करते हैं, वे युद्ध में निर्भय हो जाते हैं ॥ १४ ॥

मेरे इस माहात्म्य को सुननेवाले व्यक्तियों का शत्रु-नाश हो जाता है, कल्याण की वृद्धि होती है और कुल में सब प्रसन्न रहते हैं ॥ १५ ॥

सब प्रकार के शान्ति कर्मों में, बुरे स्वप्न देखने पर तथा भयानक ग्रह-पीड़ा आदि में जो मनुष्य मेरे इस माहात्म्य को सुनता है, उसका सभी कष्ट शान्त हो जाता है, भयङ्कर ग्रह-पीड़ाएँ नष्ट हो जाती हैं और बुरे स्वप्न भी अच्छे स्वप्न में परिणत हो जाते हैं ॥ १६ ॥

मेरा यह माहात्म्य बालग्रहों से पीड़ित बालकों के लिये शान्तिकारक है और परस्पर के विरोध को मिटाकर मैत्री कराने वाला है ॥ १८ ॥

सभी दुराचारी मनुष्यों के बल का नाश करने में यह माहात्म्य श्रेष्ठ है। इसका पाठ करने मात्र से राक्षस, भूत और पिशाचों का नाश हो जाता है ॥ १९ ॥

मेरा यह माहात्म्य मनुष्यों को मेरे समीप लानेवाले है। पशु, पुष्प, अर्घ्य, धूप, दीप, गन्ध, ब्राह्मण-भोजन, हवन और रातदिन अभिषेक तथा नाना प्रकार के भोग चढ़ाकर निरन्तर एक साल तक जो मेरी पूजा करता है, उससे मुझे जितनी प्रसन्नता होती है, उतनी प्रसन्नता मेरे इस उत्तम चरित्र का एकबार श्रवण मात्र से हो जाती है। इस माहात्म्य के सुनने से सब पाप नष्ट हो जाते है और मनुष्य निरोग हो जाता है ॥२०-२२॥

मेरी उत्पत्ति-विषयक कथा पढ़ने से समस्त भूतों से रक्षा होती और युद्ध-विषयक मेरा चरित्र दुष्ट दैत्यों का नाश करने वाला है ॥२३॥

इसे श्रवण करने से मनुष्यों को शत्रु का भय नहीं रहता है। देवताओं! जो स्तुति तुम लोगों ने, ब्रह्मर्षियों ने और ब्रह्मा ने की है, उसके पढ़ने से सद्बुद्धि मिलती है। जो मनुष्य वन में दावाग्नि से घिर गया हो, जिसे निर्जन स्थान में चोरों ने घेर लिया हो, जिसे शत्रुओं ने पकड़ लिया हो, वन में सिंह,

वा वने वा वनहस्तिभिः ॥२६॥ राज्ञा क्रुद्धेन चाज्ञप्तो वध्यो बन्धगतोऽपि वा । आघूर्णितो वा वातेन स्थितः पोते महार्णवे ॥२७॥ पतत्सु चापि शस्त्रेषु संग्रामे भृशदारुणे । सर्वबाधासु घोरासु वेदनाभ्यर्दितोऽपि वा ॥२८॥ स्मरन्ममैतच्चरितं नरो मुच्येत सङ्कटात् । मम प्रभावात्सिंहाद्या दस्यवो वैरिणस्तदा ॥२९॥ दूरादेव पलायन्ते स्मरतश्चरितं मम ॥३०॥

ऋषिरुवाच ॥३१॥

इत्युक्त्वा सा भगवती चण्डिका चण्डविक्रमा ॥३२॥ पश्यतोमेव देवानां तत्रैवान्तरधीयत। तेऽपि देवी निरातङ्का स्वाधिकारान् यथा पुरा ॥३॥ यज्ञभागभुजः सर्वे चक्रुर्विनिहतारयः । दैत्यांश्च देव्या निहते शुम्भे देवरिपौ युधि ॥३४॥ जगद्विध्वंसिनि तस्मिन् महोग्रेऽतुलविक्रमे । निशुम्भे च महावीर्ये शेषा पातालमाययुः ॥३५॥ एवम् भगवती देवी सा नित्यापि पुनः पुनः। सम्भूय कुरुते भूप जगतः परिपालनम् ॥३६॥ तयैतन्मोह्यते विश्वं सैव विश्वं प्रसूयते । सा याचिता च विज्ञानं तुष्टा ऋद्धिं प्रयच्छति ॥३७॥ व्याप्तं तयै तत्सकलं ब्रह्माण्डं मनुजेश्वर । महाकाल्या महाकाले महामारीस्वरूपया ॥३८॥ सैव काले महामारी सैव सृष्टिर्भवत्यजा । स्थितिं करोति भूतानां सैव काले सनातनी ॥३९॥ भवकाले नृणां सैव लक्ष्मीर्वृद्धिप्रदा गृहे । सैवाभावे

बाघ या जंगली हाथियों ने घेर लिया हो, राजा ने कुपित होकर जिसे प्राणदण्ड की आज्ञा दे दी हो, जो बन्धन में पड़ा हो जिसकी नाव समुद्र में तूफान की चपेट में पड़ गयी हो, युद्ध में जिस पर भयङ्कर बाणों की वर्षा होती हो तथा भयानक बाधाओं से दुखी हो, वह मनुष्य मेरे इस माहात्म्य का स्मरण करने से सब दु:खों से विमुक्त हो जाता है। इस चरित्र का स्मरण करने से मेरे प्रभाव के कारण सिंह आदि हिंसक जन्तु, डाकू और शत्रु सभी दूर से ही भाग जाते हैं ॥२४-३०॥

ऋषि बोले ॥३१॥

इस प्रकार कहकर प्रचण्ड पराक्रम वाली भगवती चण्डिका देवताओं के देखते-देखते ही वहीं अन्तर्धान हो गयीं। तब देवतागण शत्रु रहित होकर निर्भयतापूर्वक पहले की भाँति अपने-अपने अधिकार के भागी हो गये तथा यज्ञ-भाग भी प्राप्त करने लगे । देवी के द्वारा देवताओं के शत्रु जगद्विध्वंसी, महापराक्रमी शुम्भ और निशुम्भ के मारे जाने पर अवशिष्ट असुरगण भी पाताल लोक में चले गये । हे राजन् ! इस प्रकार भगवती नित्य होती हुई भी अनेक बार जन्म लेकर संसार की रक्षा करती हैं ॥३६॥

उन्हीं के द्वारा विश्व मोहित होता है। वे ही संसार को जन्म देतीं तथा प्रार्थना करने पर सन्तुष्ट हो विज्ञान और ऋद्धि (वैभव) प्रदान करती हैं ॥३७॥

हे राजन् ! वह इस सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में व्याप्त हैं। वह महाप्रलय के समय में महाकाली और महामारी का रूप धारण करती हैं ॥३८॥

वे ही समय-समय पर महामारी तथा अजन्मा होती हुई भी सृष्टि के रूप में प्रकट होती हैं। समय-समय पर वही सनातनी देवी सभी प्राणियों की रक्षा करती हैं ॥३९॥

तथालक्ष्मीर्विनाशायोपजायते ॥ ४० ॥ स्तुता सम्पूजिता पुष्पैर्धूपगन्धादिभिस्तथा । ददाति वित्तं पुत्रांश्च मतिं धर्मे गतिं शुभाम् ॥ ॐ ॥ ४१ ॥

इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये फलस्तुतिर्नाम द्वादशोऽध्यायः ॥ १२ ॥ उवाच २, अर्धश्लोकौ २, श्लोकाः ३७, एवम् ४१, एवमादितः ॥ ६७१ ॥

"ॐ" ऋषिरुवाच ॥ १ ॥

एतत्ते कथितं भूप देवीमाहात्म्यमुत्तमम् । एवं प्रभावा सा देवी ययेदं धार्यते जगत् ॥ २ ॥ विद्या तथैव क्रियते भगवद्विष्णुमायया । तया त्वमेष वैश्यश्च तथैवान्ये विवेकिनः ॥ ३ ॥ मोह्यन्ते मोहिताश्चैव मोहमेष्यन्ति चापरे । तामुपैहि महाराज शरणं परमेश्वरीम् ॥ ४ ॥ आराधिता सैव नृणां भोगस्वर्गापवर्गदा ॥ ५ ॥

मार्कण्डेय उवाच ॥ ६ ॥

इति तस्य वचः श्रुत्वा सुरथः स नराधिपः ॥ ७ ॥ प्रणिपत्य महाभागं तमृषिं संशितव्रतम् । निर्विण्णोऽतिममत्वेन राज्यापहरणेन च ॥ ८ ॥ जगाम सद्यस्तपसे स च वैश्यो महामुने । सन्दर्शनार्थमम्बाया नदीपुलिनसंस्थितः ॥ ९ ॥ स च वैश्यस्तपस्तेपे देवीसूक्तं परं जपन् । तौ तस्मिन्

उन्नति के समय वही मनुष्यों के घर में लक्ष्मी-रूप होकर स्थित होती हैं और अवनति के समय वही लक्ष्मी विनष्ट हो जाती है ॥ ४० ॥

पुष्प, धूप, गन्ध आदि से पूजा करने तथा स्तुति करने पर वही देवी धन, पुत्र, सद्बुद्धि तथा उत्तम मार्ग प्रदर्शित करती हैं ॥ ४१ ॥

श्री मार्कण्डेयपुराण में सावर्णिक मन्वन्तर की कथा के अन्तर्गत देवीमाहात्म्य में फलस्तुति नामक बारहवां अध्याय समाप्त हुआ ॥ १२ ॥

ऋषि ने कहा – राजन् ! इस प्रकार मैंने देवी का यह श्रेष्ठ माहात्म्य तुमसे कहा । वे देवी ऐसी प्रभावशालिनी हैं और उन्होंने इस विश्व को धारण कर रक्खा है ॥ २ ॥

वही देवी ज्ञान उत्पन्न करती हैं, वही भगवान् विष्णु की माया हैं, उन्हीं के प्रभाव से तुमको और इस वैश्य को मोह हुआ है । उनके प्रभाव से अन्य बड़े-बड़े ज्ञानी पुरुष मोहित हो चुके हैं, मोहित हैं और मोहित होंगे । अतः हे महाराज ! तुम उसी देवी की शरण में जाओ । जो मनुष्य उनकी आराधना करते हैं, उनको वे भोग, स्वर्ग और मोक्ष प्रदान करती हैं ॥ ३-५ ॥

मार्कण्डेय ऋषि बोले – ॥ ६ ॥

मेधा ऋषि का यह वचन सुनकर, राज्य-छिन जाने से और ममता से दुःखित महाराज सुरथ अति प्रभाव-सम्पन्न, व्रतधारी उन ऋषि को प्रणाम करके तपस्या करने चले गये ।

हे महामुने ! वह वैश्य भी भगवती के दर्शन की अभिलाषा से तपस्या करने के लिए नदी के किनारे गया ॥ ७-९ ॥

पुलिने देव्याः कृत्वा मूर्ति महीमयीम् ।। १० ।। अर्हणी चक्रस्तुस्याः पुष्पधूपाग्नितर्पणैः । निराहारौ यताहारौ तन्मनस्कौ समाहितौ ।। ११ ।। ददस्तुतौ बलिं चैव निजगात्रासृगुक्षितम् । एवं समाराधयतोस्त्रिभिर्वर्षैर्यतात्मनोः ।। १२ ।। परितुष्टा जगद्धात्री प्रत्यक्षं प्राह चण्डिका ।। १३ ।।

देव्युवाच ।। १४ ।।

यत्प्रार्थ्यते त्वया भूप त्वया च कुलनन्दन । मत्तस्तत्प्राप्यतां सर्वं परितुष्टा ददामि तत् ।। १५ ।।

मार्कण्डेय उवाच ।।१६ ।।

ततो वव्रे नृपो राज्यमविभ्रंश्यन्यजन्मनि अत्रैव च निजं राज्यं हतशत्रुबलं बलात् ।। १७ ।। सोऽपि वैश्यस्ततो ज्ञानं वव्रे निर्विण्णमानसः । ममेत्यहमिति प्राज्ञः सङ्गविच्युतिकारकम् ।। १८ ।।

देव्युवाच ।। १९ ।।

स्वल्पैरहोभिर्नृपते स्वं राज्यं प्राप्स्यते भवान् ।। २० ।। हत्वा रिपूनस्खलितं तव तत्र भविष्यति ।। २१ ।। मृतश्चभूयः सम्प्राप्य जन्म देवाद्विवस्वतः ।। २२ ।। सावर्णिको नाम मनुर्भवान भुवि भविष्यतिः ।। २३ ।। वैश्यवर्य त्वया यश्व वरोऽस्मत्तोऽभिवांछितः ।। २४ ।। तं प्रयच्छामि संसिद्धयै तव ज्ञानं भविष्यति ।। २५ ।।

वैश्य ने देवी सूक्त का जप करके कठोर तपस्या प्रारम्भ की । राजा और वैश्य दोनों नदी के तट पर देवी की मिट्टी की प्रतिमा बनाकर पुष्प, धूप, होम और तर्पण करके नित्य पूजा करने लगे । उन्होंने पहले धीरे-धीरे भोजन कम कर दिया । फिर बिलकुल निराहार रहकर एकाग्रचित्त होकर भगवती के ध्यान में लीन हो गये । उन दोनों ने अपने शरीर से रक्त निकालकर बलि दी इस प्रकार तीन वर्ष तक संयम से आराधना करने पर संसार को धारण करनेवाली चण्डिका प्रसन्न हो प्रकट होकर कहने लगीं ।। १०-१३ ।।

देवी ने कहा – ।। १४ ।।

हे राजन् ! तथा अपने कुल को प्रसन्न करनेवाले वैश्य ! मैं तुम पर संतुष्ट हूं । तुमलोग जिस वस्तु की इच्छा रखते हो, वह मुझसे माँग लो । मैं अवश्य दूँगी ।

मार्कण्डेय ऋषि बोले – ।। १६ ।।

तब राजा ने कहा कि मुझे दूसरे जन्म में कभी कष्ट न होनेवाला चिरस्थायी राज्य मिले और इस जन्म में मैं अपने बल से सभी शत्रुओं को मारकर अपना राज्य प्राप्त करूँ ।। १७ ।।

उसके बाद बुद्धिमान् वैश्य ने संसार से विरक्त एवं खिन्न होकर 'यह संसार है, मैं इसका स्वामी हूं' इस प्रकार के मोह का विनाश करने वाला तत्वज्ञान माँगा । देवी ने कहा – ।। १९ ।।

हे राजन् ! तुम थोड़े ही दिनों में अपने शत्रुओं को बलपूर्वक मारकर अपना राज्य प्राप्त करोगे। यह राज्य तुम्हारे लिए सर्वदा स्थायी रहेगा और जब शरीर त्यागोगे तब सूर्य से जन्म पाकर सावर्णि नामक मनु नाम से विख्यात होओगे ।। २०-२३ ।।

हे वैश्यों में श्रेष्ठ ! तुमने मुझसे जो वह माँगा है, मैं तुम्हारे लिए वही वर देती हूं । तुझे मोक्ष देने वाला ज्ञान प्राप्त होगा ।। २४-२५ ।।

मार्कण्डेय उवाच ॥ २६ ॥

इतिदत्त्वा तयोर्देवी यथाभिलषितं वरम् ॥ २७ ॥ बभूवान्तर्हिता सद्यो भक्त्या ताभ्यामभिष्टुता । एवं देव्या वरं लब्ध्वा सुरथः क्षत्रियर्षभ ॥ २८ ॥ सूर्याज्जन्म समासाद्य सावर्णिर्भविता मनुः । एवं देव्या वरं लब्ध्वा सुरथः क्षत्रियर्षभः । सूर्याज्जन्म समासाद्य सावर्णिर्भविता मनुः ॥ क्लीं ॐ ॥ २९ ॥

इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये सुरथवैश्ययोर्वरप्रदानं
नामो त्रयोदशोऽध्यायः ॥ १३ ॥ उवाच ६, अर्धश्लोकाः ११, श्लोकाः १२,
एवं २९, एवमादितः ॥ ७०० ॥ समस्ता उवाचमन्त्राः ५७,
अर्धश्लोकाः ४२, श्लोकाः ५३५, अवदानानि ॥ ६६ ॥

मार्कण्डेय ऋषि बोले – ॥ २६ ॥

इस प्रकार देवी ने राजा और वैश्य को अभीष्ट वर दिया । उन दोनों ने भक्तिपूर्वक देवी की स्तुति की । उसके बाद देवी अन्तर्धान हो गयीं । इस प्रकार क्षत्रियों में श्रेष्ठ राजा सुरथ सूर्य से जन्म लेकर सावर्णि नामक मनु होंगे ॥ २७-२९॥

श्री मार्कण्डेयपुराण में सावर्णिक मन्वन्तर की कथा के अन्तर्गत
देवी माहात्म्य में राजा और वैश्य के लिए वरदान
नामक तेरहवाँ अध्याय समाप्त हुआ ॥ १३ ॥

अथोत्तरन्यासा :

खड्गिनीशूलिनीघोरा० हृदयाय नमः । शूलेनपाहिनो देवि० शिरसे स्वाहा । प्राच्यां रक्ष प्रतीच्यां च० शिखयै वषट् । सौम्यानि यानि रूपाणि० कवचाय हुम् । खड्गशूलगदादीनि० नेत्रत्रयाय वौषट् । सर्वस्वरूपे सर्वेशे० अस्त्राय फट् ।

अथः ध्यानम् :

विद्युद्दामसमप्रभां मृगपतिस्कन्ध स्थितां भीषणां कन्याभिः करवाल खेटविलसद्धस्ताभिरासेविताम् । हस्तैश्चक्रगदासिखेटविशिखांश्चापं गुणं तर्जनीं बिभ्राणामनलात्मिकां शशिधरां दुर्गां त्रिनेत्रा भजे ॥

अथ तन्त्रोक्तं देवीसूक्तम्

(तन्त्रोक्त देवीसूक्त की हिन्दी टीका पृष्ठ २२६-२२९ पर देखें)

नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः ; नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणतास्स्मताम् ॥ १ ॥ रौद्रायै नमो नित्यायै गौर्यै धात्र्यै नमो नमः । ज्योत्स्नायै चेन्दुरूपिण्यै सुखायै सततं नमः ॥ २ ॥ कल्याण्यै प्रणतां वृद्ध्यै सिद्ध्यै कूर्म्यै नमो नमः । नैर्ऋत्यै भूभृतां लक्ष्म्यै शर्वाण्यै ते नमो नमः ॥ ३ ॥ दुर्गायै दुर्गपारायै सारायै सर्वकारिण्यै । ख्यात्यै तथैव कृष्णायै धूम्रायै सततं नमः ॥ ४ ॥ अतिसौम्यातिरौद्रायै नतास्तस्यै नमो नमः । नमो जगत्प्रतिष्ठायै देव्यै कृत्यै नमो नमः ॥ ५ ॥ या देवी सर्वभूतेषु विष्णुमायेति शब्दिता ।नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ६ ॥ या देवी सर्वभूतेषु चेतनेत्यभिधीयते नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ७ ॥ या देवी सर्वभूतेषु बुद्धिरूपेण संस्थिता । नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ८ ॥ या देवी सर्वभूतेषु

निद्रारूपेण संस्थिता । नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥९॥ या देवी सर्वभूतेषु क्षुधारूपेण संस्थिता । नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥१०॥ या देवी सर्वभूतेषु छायारूपेण संस्थिता । नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥११॥ या देवी सर्वभूतेषु शक्तिरूपेण संस्थिता । नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥१२॥ या देवी सर्वभूतेषु तृष्णारूपेण संस्थिता । नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥१३॥ या देवी सर्वभूतेषु क्षान्तिरूपेण संस्थिता । नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥१४॥ या देवी सर्वभूतेषु जातिरुपेण संस्थिता । नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥१५॥ या देवी सर्वभूतेषु लज्जारूपेण संस्थिता । नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥१६॥ या देवी सर्वभूतेषु शान्तिरूपेण संस्थिता । नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥१७॥ या देवी सर्वभूतेषु श्रद्धारूपेण संस्थिता । नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥१८॥ या देवी सर्वभूतेषु कान्तिरूपेण संस्थिता । नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥१९॥ या देवी सर्वभूतेषु लक्ष्मीरूपेण संस्थिता । नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥२०॥ या देवी सर्वभूतेषु वृत्तिरूपेण संस्थिता । नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥२१॥ या देवी सर्वभूतेषु स्मृतिरूपेण संस्थिता । नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥२२॥ या देवी सर्वभूतेषु दयारूपेण संस्थिता । नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥२३॥ या देवी सर्वभूतेषु तुष्टिरूपेण संस्थिता । नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥२४॥ या देवी सर्वभूतेषु मातृरूपेण संस्थिता । नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥२५॥ या देवी सर्वभूतेषु भ्रान्तिरूपेण संस्थिता । नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥२६॥ इन्द्रियाणामधिष्ठात्री भूतानां चाखिलेषु या । भूतेषु सततं तस्यै व्याप्त्यैदेव्यै नमो नमः ॥२७॥ चितिरूपेण या कृत्स्नमेतद्व्याप्त स्थिता जगत् । नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥२८॥ स्तुता सुरैः पूर्वमभीष्टसंश्रयात्तथा सुरेन्द्रेण दिनेषु सेविता । करोतु सा नः शुभहेतुरीश्वरी शुभानि भद्राण्यभिहन्तु चापदः ॥२९॥ या साम्प्रतं चोद्धतदत्यतापितैरस्माभिरीशा च सुरैर्नमस्यते । या च स्मृता तत्क्षणमेव हन्ति नः सर्वापदो भक्तिविनम्रमूर्तिभिः ॥३०॥

इति तन्त्रोक्तं देवीसूक्तं समाप्तम्

इस देवीसूक्त का पाठ करके १०८ बार नवार्ण जप करे कि उत्तरन्यास करने के बाद "गुह्यातिगुह्य गोप्त्री त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम् । सिद्धिर्भवतु मे देवि त्वत्प्रसादान्महेश्वरि ॥" इस मन्त्र से देवी के बाँये हाथ में जप समर्पित करे ।

श्री सप्तशतीरहस्यत्रय

विनियोग : अस्य श्रीसप्तशतीरहस्यत्रयस्य नारायण ऋषिः । अनुष्टुप्छन्दः । महाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वत्यो देवताः । यथोक्त फलावाप्त्यर्थं जपे विनियोगः ।

अथ प्राधनिकं रहस्यम्

विनियोग : ॐ अस्य श्रीदेव्याः प्राधानिकरहस्यस्य ब्रह्मा ऋषि, गायत्री छन्दः, श्रीमहाकाली देवता,

ऐं नन्दजा शक्तिः, ह्स्रौं रक्त-दन्दिका बीजं, रं अग्निः, तत्त्वं, अभीष्टफलसिद्धये सप्तशती पाठान्ते पाठे विनियोगः ।

ऋष्यादि-न्यास : ब्रह्मा ऋषये नमः शिरसि, गायत्री छन्द से नमः मुखे, श्रीमहाकाली देवतायै नमः हृदि, ऐं नन्दजा शक्तये नमः नाभौ, ह्स्रौं रक्तदन्तिकाबीजाय नमः लिंगे, रं अग्नि तत्त्वाय नमः हृदि, अभीष्टफलसिद्धये सप्तशतीपाठान्ते पाठे विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ।

राजोवाच :

भगवन्नवतारा मे चण्डिकायास्त्वयोदिताः । एतेषां प्रकृतिं ब्रह्मन् प्रधानं वक्तुमर्हसि ॥ १ ॥ आराध्यं यन्मया देव्याः स्वरूपं येन च द्विज । विधिना ब्रूहि सकलं यथावत्प्रणतस्य मे ॥ २ ॥

ऋषिरुवाच :

इदं रहस्यं परममनाख्येयं प्रचक्षते । भक्तोऽसीति न मे किञ्चत्तवावाच्यं नराधिप ॥ ३ ॥ सर्वस्याद्या महलक्ष्मीस्त्रिगुणा परमेश्वरी । लक्ष्यालक्ष्यस्वरूपा सा व्याप्त कृत्स्नं व्यवस्थिता ॥ ४ ॥ मातुलिङ्गं गदां खेटं पानपात्रं च विभ्रती। नागं च लिङ्गं च योनिं च विभ्रती नृप मूर्द्धनि ॥ ५ ॥ तप्तकाञ्चनवर्णाभा तप्तकाञ्चनभूषणा । शून्यं तदखिलं स्वेन पूरयामास तेजसा ॥ ६ ॥ शून्यं तदखिलं लोकं विलोक्य परमेश्वरी । बभार परमं रूपं तमसा केवलेन हि ॥ ७ ॥ सा भिन्नाञ्जनसंकाशा दंष्ट्राञ्चितवरानना । विशाललोचना नारी वभूव तनुमध्यमा ॥ ८ ॥ खड्गपात्रशिरःखेटैरलंकृत चतुर्भुजा । कबन्धहारं शिरसा विभ्राणा हि शिरःस्रजम् ॥ ९ ॥ सा प्रोवाच महलक्ष्मीं तामसी प्रमदोत्तमा । नाम कर्म च मे मातर्देहि तुभ्यं नमो नमः ॥ १० ॥ तां प्रोवाच

राजा ने कहा – हे भगवन्, आपने चण्डिका देवी के अवतारों का वर्णन किया है; किन्तु हे ब्रह्मान् अब उन अवतारों का मूलभूत मुख्य स्वरूप बतलाइये । हे द्विज ! देवी के जिस स्वरूप की आराधना जिस विधि से मुझे करनी चाहिये वह स्वरूप और आराधना करने की विधि मुझे विनीत से विधिपूर्वक कहिये ॥ १-२ ॥

ऋषि ने कहा – यह रहस्य परम गुप्त है, अर्थात् किसी के कहने योग्य नहीं है, परन्तु हे राजन् ! तुम भक्त हो, इसलिए ऐसा कोई विषय नहीं है जो तुमसे न कहूँ । सबकी आदिरूपा, सत्व-रज-तम तीनों गुणवाली परमेश्वरी महलक्ष्मी हैं । वह लक्ष्य अलक्ष्य स्वरूपा है तथा सम्पूर्ण जगत् में व्याप्त है ॥ ३-४ ॥

हे राजन् वह हाथों में मातुलिङ्ग, गदा, खेट और पानपात्र तथा सिर पर नाग, लिंग तथा योनि धारण करती है । वह तपाये हुए सुवर्ण के समान कान्तिवाली, तपाये हुए सोने के सुन्दर आभूषण को धारण किये हुए देवी अपने तेज से सम्पूर्ण आकाश को परिपूर्ण करती है ॥ ५-६ ॥

उस परमेश्वरी ने सम्पूर्ण संसार को शून्य देखकर केवल तमोगुण से एक दूसरा श्रेष्ठ रूप धारण किया ॥ ७ ॥

वह काजल के ढेर के समान कान्तिवाली, दाढ़ों से शोभायमान सुन्दर मुखवाली, विशाल नेत्रों से शोभित तथा पतली कमर वाली स्त्री हुई ॥ ८ ॥

ढाल, तलवार, प्याले और कटे हुए मस्तक से सुशोभित चार भुजावाली और वक्षस्थल पर कबन्ध धड़ तथा मस्तक पर मुण्डों की माला धारण किये हुए उस तामसी स्त्री ने महालक्ष्मी से कहा – हे माता, तुम मेरा नाम रखो और मुझे काम बताओ, मैं तुमको नमस्कार करती हूं ॥ ९-१० ॥

महलक्ष्मींस्तामसीं प्रमदोत्तमाम् । ददामि तव नामानि यानि कर्माणि तानि ते ॥ ११ ॥ महामाया महाकाली महामारी क्षुधा तृषा । निद्रा कृष्णा चैकवीरा कालरात्रिर्दुरत्यया ॥ १२ ॥ इमानि तव नामानि प्रतिपाद्यानि कर्ममिः । एभिः कर्माणि ते ज्ञात्वा योऽधीते सोऽश्नुते सुखम् ॥ १३ ॥ तामित्युक्त्वा महलक्ष्मीः स्वरूपमपरं नृप । सत्त्वाख्येनातिशुद्धेन गुणेनेन्दुप्रभं दधौ ॥ १४ ॥ अक्षमालांकुशधरा वीणापुस्तकधारिणी । सा बभूव वरा नारी नामान्यस्ये च सा ददौ ॥ १५ ॥ महाविद्या महावाणी भारती वाक् सरस्वती । आर्या ब्राह्मी कामधेनुर्वेदगर्भा च धीश्वरी ॥ १६ ॥ अथोवाच महलक्ष्मीर्महाकालीं सरस्वतीम् । युवां जनयतां देव्यौ मिथुने स्वानुरूपतः ॥१७॥ इत्युक्त्वा ते महालक्ष्मीः ससर्ज मिथुनं स्वयम् । हिरण्यगर्भौ रुचिरौ स्त्रीपुंसौ कमलासनौ ॥ १८ ॥ ब्रह्मन् विधे विरिञ्चेति धातरित्याह तं नरम् । श्रीः पद्मे कमले लक्ष्मीत्याह माता च तां स्त्रियम् ॥ १९ ॥ महाकाली भारती च मिथुने सृजतः सहः । एतयोरपि रूपाणि नामानि च वदामि ते ॥ २० ॥ नीलकण्ठं रक्तबाहुं श्वेताङ्गं चन्द्रशेखरम् । जनयामास पुरुषं महाकाली सितां स्त्रियम् ॥ २१ ॥ स रुद्रः शङ्करः स्थाणुः कपर्दी च त्रिलोचनः । त्रयी विद्या कामधेनुः सा स्त्री भाषाक्षरा स्वरा ॥ २२ ॥ सरस्वती स्त्रियं गौरीं कृष्णं च पुरुषं नृप । जनयामास नामानि तयोरपि वदामि ते ॥ २३ ॥ विष्णुः कृष्णोहृषिकेशो वासुदेवो जनार्दनः । उमा गौरी सती चण्डी सुन्दरीं सुभगा

महालक्ष्मी ने उस तामसी स्त्री से कहा : मैं तुम्हें नाम और कर्म बताती हूं । महामाया, महाकाली, महामारी क्षुधा, तृषा, निद्रा, तृष्णा, एकवीरा, कालरात्रि और दुरत्यया ये तुम्हारे नाम कर्मों के अनुसार हैं । इन नामों से तुम्हारे कर्मों को जानकर जो मनुष्य उनको पढ़ता है वह सुख पाता है ॥ ११-१३ ॥

हे राजन्, महालक्ष्मी ने उससे यह कहकर अतिशुद्ध, शतोमुखी चन्द्रमा के समान कान्ति वाला दूसरा स्वरूप धारण किया ॥ १४ ॥

वह उत्तम स्त्री, अक्षमाला, अंकुश, वीणा और पुस्तक धारण किये हुये थी । महलक्ष्मी ने उसके भी ये नाम रख दिये : महाविद्या, महावाणी, भारती, वाक्, सरस्वती, आर्या, ब्राह्मी कामधेनु, बीजगर्भा और धीश्वरी ॥ १५-१६ ॥

उसके बाद महालक्ष्मी ने महकाली और महासरस्वती से कहा : तुम दोनों देवियाँ अपने स्वरूप के अनुसार स्त्री-पुरुष का जोड़ा उत्पन्न करो ॥ १७ ॥

महालक्ष्मी ने उन दोनों से यह कहकर हिरण्यगर्भ (निर्मल ज्ञान से सम्पन्न) सुन्दर कमल पर बैठा हुआ स्त्री-पुरुष का एक जोड़ा स्वयं उत्पन्न किया । इसके बाद माता महालक्ष्मी ने पुरुष को ब्रह्मन् विधे, विरञ्चि, तथा धातः, इस प्रकार सम्बोधित किया और स्त्री श्री को भी श्री, पद्मा, कमला, लक्ष्मी इत्यादि नामों से पुकारा ॥ १८-१९ ॥

महाकाली और महासरस्वती ने भी स्त्री-पुरुष के जोड़े उत्पन्न किये । हे राजन्, उनके भी स्वरूप और नाम को कहता हूं ॥ २० ॥

महाकाली ने नीलकण्ठ, रक्तबाहु, श्वेताङ्ग तथा चन्द्रशेखर पुरुष और एक गौरी स्त्री को उत्पन्न किया । पुरुष के रुद्र, शंकर स्थाणु, कपर्दी और त्रिलोचन तथा स्त्री के त्रयी विद्या, कामधेनु, भाषा, अक्षरों और स्वरा नाम रखे ॥ २२ ॥

हे राजन्, सरस्वती ने गौरी स्त्री और कृष्ण पुरुष को उत्पन्न किया ।
उन दोनों के नामों को भी कहता हूं ॥ २३ ॥

पुरुष का विष्णु, कृष्ण, ऋषिकेश, वासुदेव और जनार्दन तथा स्त्री का उमा, गौरी, सती, चण्डी, सुन्दरी, सुभगा और शिवा नाम रक्खा ॥ २४ ॥

शिवा ॥ २४ ॥ एवं युवतयः सद्यः पुरुषत्वं प्रपेदिरे । चक्षुष्मन्तो नु पश्यन्ति नेतरेऽतद्विदो जनाः ॥ २५ ॥ ब्रह्मणे प्रददौ पत्नीं महालक्ष्मीर्नृपत्रयीम् । रुद्राय गौरीं वरदां वासुदेवाय च श्रियम् ॥ २६ ॥ स्वरया सह सम्भूय विरिञ्चोऽण्डमजी जनत् । बिभेद भगवान् रुद्रस्तद् गौर्या सह वीर्यवान् ॥ २७ ॥ अण्डमध्ये प्रधानादि कार्यजातमभून्नृप । महाभूतात्मकं सर्वं जगत्स्थावरजङ्गमम् ॥ २८ ॥ पुपोष पालयामास तल्लक्ष्म्या सह केशवः । संजहार जगत्सर्व सह गौर्या महेश्वरः ॥ २९ ॥ महालक्ष्मीर्महाराज सर्वसत्त्वमयीश्वरी । निराकारा च साकारा सैव नानाभिधानभृत् ॥ ३० ॥ नामान्तरैर्निरूप्यैषा नाम्ना नान्येन केनचित् ॥ ॐ ॥ ३१ ॥

इति प्राधानिकं रहस्य समाप्तम्

इस प्रकार ये तीनों स्त्रियाँ शीघ्र ही पुरुषत्व को प्राप्त हो गई । उनको दिव्य दृष्टि वाले पुरुष ही देखते हैं न कि दूसरे लोग । हे राजन् ! महालक्ष्मी ने त्रयी विद्यारूपी सरस्वती को पत्नी के रूप में ब्रह्मा को समर्पित किया, तथा वर देने वाली गौरी को शङ्कर,एवं लक्ष्मी देवी को भगवान् वासुदेव के लिए समर्पण किया ॥ २५-२६ ॥

ब्रह्मा ने सरस्वती के साथ मिलकर ब्रह्माण्ड को उत्पन्न किया और वीर्यवान् भगवान् रुद्र ने गौरी के साथ मिलकर उसे भेदन किया ॥ २७ ॥

हे राजन् ! उस ब्रह्माण्ड से महत्तत्त्व आदि तेईस तत्त्व एवं स्थावर जंगमरूप महाभूतात्मक सम्पूर्ण जगत् उत्पन्न हुआ ॥ २८ ॥

भगवान् विष्णु ने लक्ष्मी के साथ उस जगत् का पालन किया और 'महादेव ने गौरी के साथ उसका संहार किया । हे महाराज ! महालक्ष्मी सर्वसत्वमयी ईश्वरी है । वह निराकार होते हुए भी साकार है । अतः उनके अनेक नाम हैं वह अपने नामों के अतिरिक्त अन्य किसी प्रत्यक्षादि प्रमाण से नहीं जानी जा सकती है ॥ २९-३० ॥

प्रधानिक रहस्य समाप्त

अथ वैकृतिकं रहस्यम्

विनियोग : ॐ अस्य श्रीदेव्याः वैकृतिकरहस्यस्य विष्णु ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीमहालक्ष्मीः देवता, ह्सौं दुर्गा बीजं, ह्रीं शाकम्भरी शक्तिः, हं वायुः तत्त्वं, अभीष्टफलसिद्धये सप्तशतीपाठान्ते पाठे विनियोगः ।

ऋष्यादि-न्यास : विष्णु ऋषये नमः शिरसि, अनुष्टुपृछन्दसे नमः मुखे, श्रीमहालक्ष्मी देवतायै नमः हृदि, ह्सौं दुर्गा वीजाय नमः लिंगे, ह्री शाकम्भरीशक्तये नमः नाभौ, ह वायु तत्त्वाय नमः हृदि, अभीष्टफलसिद्धये सप्तशतीपाठान्ते पाठे विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ।

ऋषिरुवाच :

ॐ त्रिगुणा तामसी देवी सात्त्विकी या त्रिधोदिता । सा शर्वा चण्डिका दुर्गा भद्रा भगवतीर्यते ॥ १ ॥ योगनिद्रा हरेरुक्ता महाकाली तमोगुणा । मधुकैटभनाशार्थं यां तुष्टावाम्बुजासनः ॥ २ ॥ दशवक्त्र दशभुजा दशपादाञ्जनप्रभा । विशालया राजमाना ऋषि

ऋषि ने कहा : हे राजन् ! मैंने जिस तामसी, सात्त्विकी और राजसी (त्रिगुणा) देवी का वर्णन किया है वह शर्वा, चण्डिका, दुर्गा भद्रा और भगवती भी कहलाती हैं । तमोगुण वाली महाकाली विष्णु भगवान् की योगनिद्रा है, जिसकी स्तुति मधुकैटभ के नाश के लिये ब्रह्मा जी ने की थी ॥ १-२ ॥

त्रिंशल्लोचनमालया ॥ ३ ॥ स्फुरद्दशनदंष्ट्रा सा भीमरूपापि भूमिप। रूपसौभाग्यकान्तीनां सा प्रतिष्ठा महाश्रियः ॥ ४ ॥ खड्गबाणगदाशूलशङ्खचक्रभुशुण्डिभृत्। परिघं कार्मुकं शीर्ष निश्च्योतद्रुधिरं दधौ ॥ ५ ॥ एषा सा वैष्णवी माया महाकाली दुरत्यया। आराधिता वशीकुर्यात् पूजाकर्तुश्चलचरम् ॥ ६ ॥ सर्वदेवशरीरेभ्यो याऽऽविर्भूतामितप्रभा । त्रिगुणा सा महालक्ष्मीः साक्षान्महिषमर्दिनी ॥ ७ ॥ श्वेतानना नीलभुजा सुश्वेतस्तनमण्डला । रक्तमध्या रक्तपादा नीलजङ्घोरुरुन्मदा ॥ ८ ॥ सुचित्रजघना चित्रमाल्याम्बरविभूषणा । चित्रानुलेपना कान्तिरूपसौभाग्यशालिनी ॥ ९ ॥ अष्टादभुजा पूज्या सा समस्त्रभुजा सती। आयुधन्यत्र वक्ष्यन्ते दक्षिणाधःकरक्रमात् ॥ १० ॥ अक्षमाला च कमलं बाणोऽसिः कुलिशं गदा। चक्रं त्रिशूलं परशुः शङ्खो घण्टा च पाशकः ॥ ११ ॥ शक्तिर्दण्डश्चर्म चापं पानपात्रं कमण्डलुः। अलंकृतभुजामेभिरायुधैः कमलासनाम् ॥ १२ ॥ सर्वदेवमयीमीशां महालक्ष्मीमिमां नृप । पूजयेत् सर्वलोकानां स देवानां प्रभुर्भवेत् ॥ १३ ॥ गौरीदेहात् समुद्भता या सत्वैकगुणाश्रया । साक्षात् सरस्वती प्रोक्ता शुम्भासुरनिबर्हिणी ॥ १४ ॥ दधौ चाष्टभुजा बाणान्मुसलं शूलचक्रभृत् । शङ्खं घण्टां लाङ्गलं च कार्मुकं वसुधाधिप ॥ १५ ॥ एषा सम्पूजिता भक्त्या सर्वज्ञत्वं प्रयच्छति । निशुम्भमथिनी

वह काजल के समान कान्तिवाली है । उनके दश मुंह, दश भुजायें, दश पैर और तीस विशाल नेत्र हैं । हे राजन्! उनके दाँत और दाढ़ें चमकती है । यद्यपि उनका रूप भयङ्कर है तथापि वे भक्तों को रूप, सौभाग्य कान्ति एवं महती सम्पदा को देनेवाली हैं ॥ ३-४ ॥

वह अपने हाथों में खड्ग, बाण, गदा, शूल, चक्र, भुशुण्डी, परिघ, धनुष और रुधिर टपकता हुआ सिर धारण करती हैं ॥ ५ ॥

वह दुरत्यया महाकाली विष्णु की माया हैं, जिनकी आराधना करने से चराचर जगत वश में हो जाता है ॥ ६ ॥

जो सम्पूर्ण देवताओं के शरीर से उत्पन्न हुई हैं वह अतुल कान्तिवाली महिष मर्दिनी तथा तीन गुण वाली साक्षात् महालक्ष्मी हैं ॥ ७ ॥

उनका मुख श्वेत, भुजायें नीली, स्नतमण्डल श्वेत, कटि और चरण लाल एवं जाँघें नीली हैं। वह उत्कट मदवाली है ॥ ८ ॥

उनका जघन विचित्र है और वह चित्र-विचित्र माला, वस्त्र और आभूषण को धारण करती हैं। वह विचित्र लेपन करती है । वह रूपलावण्यवती और सौभाग्यवती है ॥ ९ ॥

यद्यपि उनकी भुजायें असंख्य हैं, तथापि उनको अट्ठारह भुजा वाली मानकर पूजा करनी चाहिये। अब दाहिने ओर के निचले हाथों से लेकर बायीं ओर के निचले हाथों तक में क्रमशः जो अस्त्र हैं उनका वर्णन किया जाता है। उनके हाथों में अक्षमाला, कमल, बाण, तलवार, वज्र, गदा, चक्र, त्रिशूल, फरसा, शङ्ख, घण्टा, पाश, शक्ति, दण्ड, ढाल, धनुष, पानपात्र और कमण्डलु शोभित हैं । वह कमल पर बैठी हैं ॥ १०-१२ ॥

हे राजन् ! जो मनुष्य इस सर्वदेवमयी ईश्वरी महालक्ष्मी की पूजा करता है, वह सब मनुष्यों और देवताओं का स्वामी होता है ॥ १३ ॥

हे नृप ! जो गौरी के देह से उत्पन्न हुई है और केवल सत्वगुण प्रधान है, वह शुम्भासुर को मारनेवाली साक्षात् सरस्वती है ॥ १४ ॥

सरस्वती के आठ भुजायें हैं वह बाण, मुसल, शूल, चक्र, शङ्ख, घण्टा, हल तथा धनुष को धारण करती है ॥ १५ ॥

देवी शुम्भासुरनिबर्हिणी ॥ १६ ॥ इत्युक्तानि स्वरूपाणि मूर्तीनां तव पार्थिव । उपासनं जगन्मातुः पृथगासां निशामय ॥ १७ ॥ महालक्ष्मीर्यदा पूज्या महाकाली सरस्वती। दक्षिणोत्तरयोः पूज्ये पृष्ठतो मिथुमत्रयम् ॥ १८ ॥ विरञ्चिः स्वरया मध्ये रुद्रो गौर्या च दक्षिणे । वामे लक्ष्म्या हृषिकेशः पुरतो देवतात्रयम् ॥ १९ ॥ अष्टादशभुजा मध्ये वामे चास्या दशानना । दक्षिणेऽष्टभुजा लक्ष्मीर्महतीति समर्चयेत् ॥ २० ॥ अष्टादशभुजा चैषा यदा पूज्या नराधिप । दशानना चाष्टभुजा दक्षिणोत्तरयोस्तदा ॥ २१ ॥ कालमृत्यु च सम्पूज्यौ सर्वारिष्टप्रशान्तयेत् । यदा चाष्टभुजा पूज्या शुम्भासुरनिबर्हिणी ॥ २२ ॥ नवास्याः शक्तयः पूज्यास्तदा रुद्रविनायकौ । नमो देव्या इति स्तोत्रैर्महालक्ष्मी समर्चयेत् ॥ २३ ॥ अवतारत्रयार्चायां स्तोत्रमन्त्रास्तशश्रयाः अष्टादशभुजा चैषा पूज्या महिषमर्दिनी ॥ २४ ॥ महालक्ष्मीर्महाकाली सैव प्रोक्ता सरस्वती । ईश्वरी पुण्यपापानां सर्वलोकमहेश्वरी ॥ २५ ॥ महिषान्तकरी येन पूजिता स जगत्प्रभुः । पूजयेज्जगतां धात्री चण्डिका भक्तवत्सलाम् ॥ २६ ॥ अर्घ्यादिभिरलंकारैर्गन्धपुष्पैस्तथोत्तमैः । धूपैर्दीपैश्चनैवेद्यैर्नानाभक्ष्यसमन्वितैः ॥ २७ ॥ रुधिराक्तेन बलिना मांसेन सुरया नृप । बलिमांसादिपूजेयं विप्रवर्ज्या मयेरिता ॥ २८ ॥

जो निशुम्भ का मर्दन और शुम्भासुर का संहार करने वाली सरस्वती हैं, वह भक्तिपूर्वक पूजित होने पर सर्वज्ञता प्रदान करती हैं ॥ १६ ॥

हे राजन् ! मैंने मूर्तियों के इन स्वरूपों को तुमसे कहा । अब जगन्माताओं की अलग-अलग उपासना सुनो । जब महालक्ष्मी का पूजन करें तब दाहिनी और बायीं ओर क्रम से महाकाली और महासरस्वती का पूजन करना चाहिए तथा पृष्ठ भाग में तीनों युगल देवताओं की पूजा करनी चाहिए ॥ १७-१८ ॥

मध्य में सरस्वती के साथ ब्रह्मा का, दक्षिण में गौरी के साथ रुद्र का और उत्तर में लक्ष्मी के साथ हृषीकेश का पूजन करे और इनके सामने आगे कही हुई तीन देवियों की पूजा करें ॥ १९ ॥

मध्य में अर्थात् महालक्ष्मी के सामने अष्टदशभुजा लक्ष्मी का, उनके वाम भाग अर्थात् महाकाली के सामने दशमुखी महाकाली का और दक्षिण भाग में सरस्वती का पूजन करते हुए इस प्रकार महालक्ष्मी का पूजन करना चाहिये । हे राजन् ! यदि केवल अष्यदश भुजा का अथवा दशामुखी का अथवा अष्टभुजा का पूजन करना हो तो सम्पूर्ण अरिष्टशान्ति के लिए दक्षिण और उत्तर की ओर काल और मृत्युका पूजन करें । जब अष्टभुजावाली शुम्भासुरमर्दिनी का पूजन करना हो तो उसकी नव शक्तियों का तथा रुद्र और गणेश का भी पूजन करें । 'नमो देव्यै' इस स्तोत्र से महलक्ष्मी की स्तुति करे । देवी के तीनों अवतारों के पूजन के समय उनके चरित्रों में जो स्तोत्र और मन्त्र आये हैं उन्हीं का उपयोग करना चाहिये । यह अष्टादश भुजावाली देवी पूजनीय है । यही महिषासुरमर्दिनी, महालक्ष्मी, महाकाली और महासरस्वती हैं । यही पुण्य-पापों की ईश्वरी और सम्पूर्ण लोकों की महेश्वरी हैं । जो पुरुष महिषासुरमर्दिनी का पूजन करता है वह संसार का स्वामी होता है । तीनों लोकों को धारण करनेवाली तथा भक्तों पर दया करनेवाली चण्डिका का आभूषण, गन्ध, पुष्प, अक्षत, धूप, दीप, नैवेद्य तथा अनेक प्रकार के भक्ष्य पदार्थों से पूजन करना चाहिये ॥ २०-२७ ॥

हे राजन्, रुधिर मिले हुए मांस को बलि से तथा मदिरा से भी पूजा करनी चाहिये । किन्तु मांस-बलि आदि से देवी पूजन ब्राह्मण को छोड़कर बताया गया है । हे राजन् ब्राह्मण के लिए कहीं भी माँस और मद्य से पूजा का विधान नहीं है । प्रणाम, आचमनीय, चन्दन सुगन्ध, कर्पूर और ताम्बुल से भक्तिपूर्वक पूजन करना चाहिए ॥ २८ ॥

तेषां किल सुरामांसैर्नेक्ता पूजा नृप क्वचित् । प्रणामाचमनीयेन चन्दनेन सुगन्धिना ॥ २९ ॥ सकर्पूरैश्च ताम्बूलैर्भक्तिभावसमन्वितैः । वामभागेऽग्रतो देव्याश्छिन्नशीर्षं महासुरम् ॥ ३० ॥ पूजयेन्महिषं येन प्राप्तं सायुज्यमीशया । दक्षिणे पुरतः सिंहं समग्रं धर्ममीश्वरम् ॥ ३१ ॥ वाहनं पूजयेद्देव्या धृतं येन चराचरम् ॥ कुर्याच्च स्तवनं धीमांस्तस्या एकाग्रमानसः ॥ ३२ ॥ ततः कृताञ्जलिर्भूत्वा स्तुवीत चरितैरिमैः । एकेन वा मध्यमेन नैकेनेतरयोरिह ॥ ३३ ॥ चरितार्थं तु न जपेज्जपश्छिद्रमवाप्नुयात् । प्रदक्षिणानमस्कारान् कृत्वा मूर्ध्नि कृताञ्जलिः ॥ ३४ ॥ क्षमापयेज्जगद्धात्रीं मुहुर्मुहुरतन्द्रितः । प्रतिश्लोकं च जुहुयात्पायसं तिलसर्पिषा ॥ ३५ ॥ जुहुयात्स्तोत्रमन्त्रैर्वा चण्डिकायै शुभं हविः । भूयो नायपदैर्देवीं पूजयेत्सुसमाहितः ॥ ३६ ॥ प्रयतः प्राञ्जलिः प्रह्वः प्रणम्यारोप्य चात्मनि । सुचिरं भावयेदीशां चण्डिकां तन्मयो भवेत् ॥ ३७ ॥ एवं यः पूजयेद्भक्त्या प्रत्यहं परमेश्वरीम् । भुक्त्वा भोगान् यथाकामंदेवीसायुज्यमाप्नुयात् ॥ ३८ ॥ यो न पूजयेत् नित्यं चण्डिकां भक्तवत्सलाम् । भस्मीकृत्यास्य पुण्यानि निर्दहेत्परमेश्वरी ॥ ३९ ॥ तस्मात्पूजय भूपाल सर्वलोकमहेश्वरीम् । यथोक्तेन विधानेन चण्डिकां सुखमाप्स्यसि ॥ ४० ॥

॥ इति वैकृतिकं रहस्यं समाप्तम् ॥

देवी के आगे वाम भाग में कटे हुए सिर वाली ईश्वरी द्वारा मोक्ष को प्राप्त हुए महासुर महिष का पूजन करे । दक्षिण की ओर अग्रभाग में समग्र धर्मरूप ईश्वर एवं चराचर को धारण करनेवाली देवी के वाहन सिंह की पूजा करे और बुद्धिमान पुरुष एकाग्रचित्त होकर हाथ जोड़कर इन चरित्रों की स्तुति करे । यदि समय न मिले तो केवल मध्यम चरित्र से ही स्तुति करे, किन्तु केवल प्रथम या उत्तम चरित्र का पाठ न करे । आधे चरित्र का भी पाठ न करना चाहिए ।

ऐसा करने से निःसन्देह विघ्न होता है । स्तोत्र और मन्त्रों से जगदम्बा की स्तुति करे और प्रदक्षिणा तथा नमस्कार करके हाथ जोड़कर सावधान होकर जगद्धात्री से बारम्बार क्षमा माँगे । सप्तशती-स्तोत्र के प्रत्येक मंत्र अथवा महालक्ष्मी-स्तोत्र 'देव्या यया ततमित्यादि' से तिल, घी और खीर की आहुति दे । फिर सावधान होकर नाम और पदों से देवी का पूजन करे ॥ २९-३६ ॥

उसके बाद एकाग्रचित्त होकर हाथ जोड़कर आत्मा में प्राणों को रोककर नम्रता से बहुत देर तक चण्डिका देवी का ध्यान करें और उन्हीं में तन्मय हो जाय । इस प्रकार जो मनुष्य भक्तिपूर्वक परमेश्वरी का प्रतिदिन पूजन करता है वह अभीष्ट सुख का भोग करंकेअन्त में देवी के लोक में जाता है ॥ ३७-३८ ॥

जो पुरुष भक्तों पर दया करने वाली चण्डिका का प्रतिदिन पूजन नहीं करता, परमेश्वरी उसके पुण्यों को विफल करके उसे जन्म भर दुःख और शोक में भस्म करती हैं । इसलिए हे राजन्! तुम सम्पूर्ण लोकों की महेश्वरी चण्डिका का शास्त्रोक्त विधि से पूजन करो । उससे तुम्हें सुख मिलेगा ॥ ३९-४० ॥

अथ मूर्तिरहस्यम्

विनियोग : ॐ अस्य श्रीदेव्याः मूर्तिरहस्यस्य रुद्र ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्री महासरस्वती देवता, क्लीं भीमाशक्तिः, भ्रामरी बीजं यं सूर्यः तत्त्वं, अभीष्टफलसिद्धये सप्तशतीपाठान्ते पाठे विनियोगः ।

ऋष्यादि-न्यास : रुद्र-ऋषये नमः शिरसि, अनुष्टुप् छन्द से नमः मुखे, श्रीमहासरस्वती देवतायै: नमः हृदि, क्लीं भीमा शक्तये नमः नाभौ, भ्रामरी-बीजाय नमः लिङ्गे, यं सूर्य तत्त्वाय नमः हृदि, अभीष्टफलसिद्धये सप्तशती पाठान्ते पाठे विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ।

ऋषिरुवाच :

ॐ नन्दा भगवती नाम या भविष्यति नन्दजा। स्तुता सा पूजिता भक्त्या वशीकुर्याज्जगत्त्रयम् ॥ १ ॥ कनकोत्तमकान्तिः सा सुकान्ति कनकाम्बरा। देवी कनकवर्णाभा कनकोत्तभूषणा ॥ २ ॥ कमलांकुशपाशाब्जैरलंकृतचतुर्भुजा। इन्दिरा कमला लक्ष्मीः सा श्री रुमाम्बुजासना ॥ ३ ॥ या रक्तदन्तिका नाम देवी प्रोक्ता मयानघ। तस्याः स्वरूपं वक्ष्यामि शृणु सर्वभयापहम् ॥ ४ ॥ रक्ताम्बरा रक्तवर्णा रक्तसर्वाङ्गभूषणा। रक्तायुधा रक्तनेत्रा रक्तकेशातिभीषणा ॥ ५ ॥ रक्ततीक्ष्णनखा रक्तदशना रक्तदन्तिका। पतिं नारीवानुरक्ता देवीभक्तं भजेज्जनम् ॥ ६ ॥ वसुधेव विशाला सा सुमेरुयुगलस्तनी। दीर्घौ लम्बावतिस्थूलौ तावतीव मनोहरौ ॥ ७ ॥ कर्कशावतिकान्तौ तौ सर्वानन्दपयोनिधी। भक्तान् सम्पाययेद्देवि सर्वकामदुघौ स्तनौ ॥ ८ ॥ खड्गं पात्रं च मुसलं लाङ्गलं च विभर्ति सा। आख्याता रक्तचामुण्डा देवी योगेश्वरीति च ॥ ९ ॥ अनया व्याप्तमखिलं जगत्स्थावरजङ्गमम्। इमां यः पूजयेद्भक्त्या स व्याप्नोति चराचरम् ॥ १० ॥ भुक्त्वा भोगान् यथाकामं देवीसायुज्यमाप्नुयात्। अधीते य इमं नित्यं रक्तदन्त्या वपुःस्तवम्। तं सा परिचरेद्देवी पतिं प्रियमिवाङ्गना ॥ ११ ॥ शाकम्भरी नीलवर्णा नीलोत्पलविलोचना। गम्भीरनाभिस्त्रिवलीविभूषिततनूदरी ॥ १२ ॥ सुकर्कशसमोत्तुङ्गवृत्तपीनघनस्तनी। मुष्टिं शिलीमुखापूर्णं

ऋषि ने कहा : हे राजन्! भगवती नन्दा नामवाली जो नन्द से उत्पन्न होगी, उसकी भक्तिपूर्वक स्तुति और पूजा करने से मनुष्य तीनों लोकों को वश में कर लेता है। वह देवी सुवर्ण के उत्तम आभूषणों से शोभित है, उसके अङ्गों की कान्ति कनक के समान उत्तम है, उसके वस्त्र सुवर्ण के समान सुनहरे हैं और वह देवी सुवर्ण के समान दीप्तिमती है ॥ १-२ ॥

कमल, अंकुश, पाश और शंख से उसकी चारों भुजायें शोभित हैं और उसके इन्दिरा, कमला, लक्ष्मी, श्री और रुक्माम्बुजासना (सुवर्णमय कमल के आसन पर विराजमान) ये नाम हैं ॥ ३ ॥

हे निष्पाप! मैंने रक्तदन्तिका नाम से जिस देवी का वर्णन किया है, उनके सम्पूर्ण भयनाशक स्वरूप को कहता हूं, सुनो ॥ ४ ॥

रक्तवस्त्र, रक्तवर्ण, सब अंग रक्तमयी आभूषणों से शोभित, रक्त आयुध, रक्त नेत्र, रक्त केशवाली, अति भयंकर रक्त एवं तीक्ष्ण-नखवाली, रक्तासन पर स्थित तथा रक्तदन्तवाली देवी भक्तों के वश में उसी प्रकार रहती हैं जैसे साध्वी स्त्री पति के वश में रहती है। वह देवी पृथ्वी के समान विशाल है और उनके दोनों स्तन सुमेरु पर्वत के समान हैं। वे दोनों स्तन बड़े लम्बे, बड़े मोटे अत्यन्त मनोहर, कठोर शोभायमान और आनन्द के समुद्र हैं। देवी सब कामनाओं को देनेवाली दोनों स्तनों को अपने भक्तजनों को पिलाती हैं ॥ ५-८ ॥

देवी की चारों भुजायें खड्ग, पात्र, हल और मूसल से शोभित हैं। वे देवी रक्तचामुण्डा और योगेश्वरी के नाम से विख्यात हैं और वे स्थावर-जंगमरूप सम्पूर्ण जगत् में व्याप्त हैं। जो पुरुष भक्तिपूर्वक उनकी पूजा करता है, वह भी चराचर में व्याप्त हो जाता है ॥ ९-१० ॥

जो पुरुष रक्तदन्तिका के इस स्तोत्र को पढ़ता है, देवी उसकी ऐसी सेवा करती हैं जैसे स्त्री अपने प्रिय पति की ॥ ११ ॥

शाकम्भरी देवी का वर्ण नीला है, नीलकमल के समान उनके नेत्र हैं, गंभीर नाभि है और त्रिवली से भूषित उनका सूक्ष्म उदर ॥ १२ ॥

कमलं कमलालया ॥ १३ ॥ पुष्पपल्लव मूलादिफलाढ्यं शाकसञ्चयम् । काम्यानन्तरसैर्युक्तं क्षुत्तृण्मृत्युभयापहम् ॥ १४ ॥ कार्मुकं च स्फुरत्कान्ति बिभ्रती परमेश्वरी । शाकम्भरी शताक्षी सा सैव दुर्गा प्रकीर्तिता ॥ १५ ॥ विशोका दुष्टमनी शमनी दुरितापदाम् । उमा गौरी सती चण्डी कालिका साऽपि पार्वति ॥ १६ ॥ शाकम्भरी स्तुवन् ध्यायञ्जपन् सम्पूजयन्नमन् । अक्षय्यमश्नुते शीघ्रमन्नपानामृतं फलम् ॥ १७ ॥ भीमापि नीलवर्णा सा दंष्ट्रादशनभासुरा । विशाललोचना नारी वृत्तपीनपयोधरा ॥ १८ ॥ चन्द्रहासं च डमरुं शिरः पात्रं च बिभ्रती । एकवीरा कालरात्रिः सैवोक्ता कामदा स्तुता ॥ १९ ॥ तेजोमण्डलदुर्धर्षा भ्रामरी चित्रकान्तिभृत् । चित्रानुलेपना देवी चित्राभरणभूषिता ॥ २० ॥ चित्रभ्रमरपाणिः सा महामारीति गीयते । इत्येता मूर्तयो देव्या याः ख्याता वसुधाधिप ॥ २१ ॥ जगन्मातुश्चण्डिकायाः कीर्तिताः कामधेनवः । इदं रहस्यं परमं न वाच्यं कस्यचित्त्वया ॥ २२ ॥ व्याख्यानं दिव्यमूर्तीनामभीष्टफलदायकम् । तस्मात् सर्वप्रयत्नेन देवीं जप निरन्तरम् ॥ २३ ॥ सप्तजन्मार्जितैर्घोरैर्ब्रह्महत्यासमैरपि । पाठमात्रेण मन्त्राणां मुच्यते सर्वकिल्विषैः ॥ २४ ॥ देव्या ध्यानं मया ख्यातं गुह्याद् गुह्यतरं महत् । तस्मात् सर्वप्रयत्नेन सर्वकामफलप्रदम् ॥ २५ ॥ एतस्यास्त्वं प्रसदेन सर्वमान्यो भविष्यसि । सर्वरूपमयी देवी सर्वं देवीमयं जगत् । अतोऽहं विश्वरूपां तां नमामि परमेश्वरीम् ॥ २६ ॥ इतिरहस्यं सम्पूर्णम्

कड़े, ऊँचे, गोल, मोटे समान और मांसल स्तन हैं । उनके हाथों में कमल हैं, उन पर भौरे गूँज रहे हैं और कमल पर ही वे विराजमान हैं ॥ १३ ॥

पुष्प, पल्लव, मूल और फल से युक्त, अनेक सुन्दर रसोंवाले, क्षुधा, तृष्णा मृत्यु और वृद्धावस्था को दूर करने वाले शाकसमूह तथा चमकते हुए धनुष को धारण करती हैं । वह परमेश्वरी, शाकम्भरी, शताक्षी हैं और दुर्गा कही गई हैं । वे ही विशोका, दुष्टदमनी. उमा, गौरी, सती, चण्डी, कालिका और विपत्तियों का विनाश करनेवाली पार्वती हैं ॥ १४-१६ ॥

जो मनुष्य शाकम्भरी का ध्यान, जप, पूजन, स्तुति और नमस्कार से करता है, वह शीघ्र ही अन्न, पान और अमृतरूप फल पाता है ॥ १७ ॥

भीमा देवी भी नीलवर्ण हैं, उनकी दाढ़ें और दाँत बहुत सुन्दर है, उनके नेत्र विशाल हैं, कुच गोल और स्थूल है ॥ १८ ॥

वे चन्द्रहास, डमरू कपाल और ढाल-तलवार धारण करती हैं । वे ही एकवीरा कालरात्रि, कामदा नाम से कही जाती हैं ॥ १९ ॥

भ्रामरी देवी की कान्ति विचित्र (अनेक रंग की) है । वे अपने तेजोमण्डल के कारण दुर्धर्ष दिखायी देती हैं । उनका अंगराग भी अनेक रंग का है तथा वे चित्र विचित्र आभूषणों से सुशोभित हैं ॥ २० ॥

चित्र, भ्रमरपाणि और महामारी इन नामों से उनका गान किया जाता है । हे नृप ! देवी की ये मूर्तियाँ शास्त्र में वर्णित हैं ॥ २१ ॥

ये मूर्तियाँ जगन्माता चण्डिका की कामधेनु कहलाती हैं अर्थात् कामधेनु के समान मनोवांछित फल को देती हैं । हे राजन् ! यह चरित्र परम गुप्त है । इसको किसी से कहना नहीं चाहिये ॥ २२ ॥

दिव्य मूर्तियों का आख्यान मनोवांछित फल को देने वाला है अतः पूर्ण प्रयत्न करके तुम निरन्तर देवी की आराधना में लगे रहो ॥ २३ ॥

सप्तशती के मंत्रों के पढ़ने मात्र से प्राणी ब्रह्महत्या के समान घोर सात जन्म के पापों से मुक्त हो जाते हैं । हे राजन् ! मैंने अत्यन्त गुप्त से गुप्त देवी का ध्यान तुमसे कहा । विधिपूर्वक यह ध्यान करने से इच्छानुसार फल मिलता है । उनकी अनुकम्पा से तुम सर्वमान्य हो जाओगे । देवी सर्वरूपमयी हैं तथा सम्पूर्ण संसार देवीमय है । अतः मैं उन विश्वरूपा परमेश्वरी को नमस्कार करता हूं ॥ २६ ॥

क्षमा-याचना

अपराधसहस्राणि क्रियन्तेऽहर्निशं मया । दासोऽयमिति मां मत्वा क्षमस्व परमेश्वरि ॥ १ ॥
आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम् । पूजां चैव न जानामि क्षम्यतां परमेश्वरि ॥ २ ॥
मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वरि । यत्पूजितं मया देवि परिपूर्ण तदस्तु मे ॥ ३ ॥
अपराधशतं कृत्वा जगदम्बेति चोच्चरेत् । यां गतिं समवाप्नोति न तां ब्रह्मादयः सुराः ॥ ४ ॥
सापराधोऽस्मि शरणं प्राप्तस्त्वां जगदम्बिके । इदानीमनुकम्प्योऽहं यथेच्छसि तथा कुरु ॥ ५ ॥
अज्ञानाद्विस्मृतेर्भ्रान्त्या यन्न्यूनमधिकं कृतम् । तत्सर्व क्षम्यतां देवि प्रसीद परमेश्वरि ॥ ६ ॥
कामेश्वरि जगन्मातः सच्चिदानन्दविग्रहे । गृहाणार्चामिमां प्रीत्या प्रसीद परमेश्वरि ॥ ७ ॥
गुह्यातिगुह्यगोप्त्री त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम् । सिद्धिर्भवतु मे देवि त्वत्प्रसादान्महेश्वरि ॥ ८ ॥

॥ इति दुर्गार्पणमस्तु ॥

हे परमेश्वरि ! मेरे द्वारा रात-दिन सहस्रों अपराध हुआ करते हैं । 'मेरा यह दास है' यह समझकर तुम कृपाकर मेरे उन अपराधों को क्षमा करो ॥ १ ॥

न तो मैं आवाहन करना जानता हूं, न विसर्जन ही करना जानता हूं और न पूजा करना ही जानता हूं । हे परमेश्वरि ! क्षमा करो ॥ २ ॥

हे सुरेश्वरि ! मैंने जो मंत्रहीन क्रियाहीन और भक्तिहीन पूजन किया है वह सब आप की दया से पूर्ण हो ॥ ३ ॥

सैकड़ों अपराध करके भी भक्त आपकी शरण में आकर 'जगदम्बा' यह कहकर जिस गति को प्राप्त करता है, उसे ब्रह्मादि देवगण भी पाने में असमर्थ होते हैं । जगदम्बिके ! मैं अपराधी हूं किन्तु तुम्हारी शरण में आया हूं । इस समय मैं दया का पात्र हूं । तुम जैसा चाहो, करो । अज्ञानवश या बुद्धिभ्रम होने के कारण भूल से जो कुछ भी मैंने कह या अधिक कर दिया हो, हे देवि, परमेश्वरि ! वह सब क्षमा करो और प्रसन्न होओ ॥ ४-६ ॥

हे जगन्माता कामेश्वरि ! सच्चिदानन्दस्वरूपिणी परमेश्वरि । तुम प्रेमपूर्वक मेरा यह पूजा स्वीकार करो और मुझपर प्रसन्न होओ ॥ ७ ॥

तुम गुप्त से भी गुप्त चीजों की रक्षा करनेवाली हो । मेरे किये हुए इस जप को ग्रहण करो । देवि, महेश्वरि ! तुम्हारी कृपा से मुझे सिद्धि प्राप्त हो ॥ ८ ॥

दुर्गाष्टाक्षरोकवचम्

(देवीरहस्यतन्त्र के ४८ वें पटल से उल्लिखित)

श्री भैरव उवाच ॥

अधुना देवि वक्ष्येहं कवचं मन्त्रगर्भकम् ॥ दुर्गायाः सारसर्वस्वं कवचेश्वरसंज्ञकम् ॥ १ ॥ परमार्थप्रदं नित्यं महापातकनाशनम् ॥ योगिप्रियं योगिगम्यं देवानामपि दुर्लभम् ॥ २ ॥ बिना दानेन मन्त्रस्य सिद्धिर्देवि कलौ भवेत् ॥ धारणादस्य देवेशि शिवस्त्रैलोक्यनायकः ॥ ३ ॥ भैरवी भैरवेशानी विष्णुर्नारायणो बली । ब्रह्मा पार्वति लोकेशो विघ्नध्वंसी गजाननः ॥ ४ ॥ सेनानीश्च महासेनो जिष्णुर्लेखर्षभः प्रिये ॥ सूर्यस्तमोपहो लोके चन्द्रोमृतविधिस्तथा ॥ ५ ॥ बहुनोक्तेन किं देवि दुर्गाकवचधारणात् ॥ मर्त्योप्यमरतां याति साधको मन्त्रसाधकः ॥ ६ ॥ कवचस्यास्य देवेशि

ऋषिः प्रोक्तो महेश्वरः ॥ छन्दोनुष्टुप् प्रिये दुर्गा देवताष्टाक्षरा स्मृता ॥ चक्रिबीजं च बीजं स्यान्मायाशक्तिरितीरिता ॥ ७ ॥

अथ पाठः ॥

ॐ मे पातु शिरो दुर्गा ह्रीं मे पातु ललाटकम् ॥ दुं नेत्रेष्टाक्षरा पातु चक्री पातु श्रुती मम ॥ ८ ॥ मं ठं गण्डौ च मे पातु देवेशी रक्तकुण्डला ॥ वायुर्नासां सदा पातु रक्तबीजनिषूदिनी ॥ ९ ॥ लवणं पातु मे चौष्ठो चामुण्डा चण्डघातिनी ॥ भेकीबीजं सदा पातु दन्तान्मे रक्तदन्तिका ॥ १० ॥ ॐ ह्रीं श्रीं पातु मे कण्ठं नीलकण्ठांकवासिनी ॥ ॐ ऐं क्लीं पातु मे स्कन्धौ स्कन्दमाता महेश्वरी ॥ ११ ॥ ॐ सौः क्लीं मे पातु बाहू देवेशी बगलामुखी ॥ ऐं श्रीं ह्रीं पातु मे हस्तौ शिवाशतनिनादिनी ॥ १२ ॥ सौः ऐं ह्रीं पातु मे वक्षो देवता विन्ध्यवासिनी ॥ ॐ ह्रीं क्लीं पातु कुक्षिं मम मातंगिनी परा ॥ १३ ॥ ॐ ह्रीं ऐं पातु मे पार्श्वे हिमाचलनिवासिनी ॥ ॐ स्त्रीं हूँ ऐं पातु पृष्ठं मम दुर्गतिनाशिनी ॥ १४ ॥ ॐ क्रीं हुं पातु मे नाभिं देवी नारायणी सदा ॥ ॐ ऐं क्लीं सौः सदा पातु कटिं कात्यायनी मम ॥ १५ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं पातु शिश्नं मे देवी श्री बगलामुखी ॥ ऐं सौः क्लीं सौः पातु गुह्यं गुह्यकेश्वरपूजिता ॥ १६ ॥ ॐ ह्रीं ऐं श्रीं ह सौः पायादुरू मम मनोन्मनी ॥ ॐ जूं सः सौ जानु पातु जगदीश्वरपूजिता ॥ १७ ॥ ॐ ऐं क्लीं पातु मे जंघे मेरुपर्वतवासिनी ॥ ॐ ह्रीं श्रीं गीं सदा पातु गुल्फौ मम गणेश्वरी ॥ १८ ॥ ॐ ह्रीं दुं पातु मे पादौ पार्वती षोडशाक्षरी । पूर्वे मां पातु ब्रह्माणी वह्नौ पातु च वैष्णवी ॥ १९ ॥ दक्षिणे चण्डिका पातु नैर्ऋत्ये नारसिंहिका । पश्चिमे पातु वाराही वायव्ये मापराजिता ॥ २० ॥ उत्तरे पातु कौमारी चैशान्यां शाम्भवी तथा । ऊर्ध्वं दुर्गा सदा पातु पात्वधस्ताच्छिवा सदा ॥ २१ ॥ प्रभाते त्रिपुरा पातु निशीथे छिन्नमस्तका । निशान्ते भैरवी पातु सर्वदा भद्रकालिका ॥ २२ ॥ अग्नेरम्बा च माँ पातु जलान्मां जगदम्बिका । वायोर्मा पातु वग्देवी वनाद्वनजलोचना ॥ २३ ॥ सिंहात्सिंहासना पातु सर्पात्सर्पान्तकासना । रोगान्मां राजमातंगी भूताद्भूतेशवल्लभा ॥ २४ ॥ यक्षेभ्यो यक्षिणी पातु रक्षोभ्यो राक्षसान्तका । भूतप्रेतपिशाचेभ्यः सुमुखी पातु मां सदा ॥ २५ ॥ सर्वत्र सर्वदा पातु ॐ ह्रीं दुर्गा नवाक्षरा ।

इत्येवं कवचं गुह्यं दुर्गासर्वस्वमुत्तमम् ॥ २६ ॥ मन्त्रगर्भ महेशानि कवचेश्वरसंज्ञकम् । वित्तदं पुण्यदं वर्मसिद्धिप्रदं कलौ ॥ २७ ॥ वर्मसिद्धिप्रदं गोप्यं परापररहस्यकम् । श्रेयस्करं मनुमयं रोगनाशकरं परम् ॥२८॥ महापातककोटिघ्नं मानदं च यशस्करम् । अश्वमेधसहस्रस्य फलदं परमार्थदम् ॥२९॥ अत्यंतगोप्यन देवेशि कवचं मन्त्रसिद्धिदम् । पठनात्सिद्धिदं लोके धारणान्मुक्तिदं शिवे ॥ ३० ॥ रवौ भूर्जे लिखेद्धीमान्कृत्वा कर्माह्निकं प्रिये । श्रीचक्रांगेष्टगन्धेन साधको मन्त्रसिद्धये ॥ ३१ ॥ लिखित्वा धारयेद्बाहौ गुटिकां पुण्यवर्धिनीम् । किंकिं न साधयेल्लोके गुटिका वर्मणोऽचिरात् ॥ ३२ ॥ गुटिकां धारयन्मूर्ध्नि राजानां वशमानयेत् । धनार्थी धारयेत्कण्ठे पुत्रार्थी कुक्षिमण्डले ॥ ३३ ॥ तामेवं धारयेन्मूर्ध्नि लिखित्वा भूर्जपत्रके । श्वेतसूत्रेण संवेष्ट्य लाक्षया परिवेष्टयेत् ॥ ३४ ॥ सुवर्णेनाथ संवेष्ट्य धारयेद्रक्तरज्जुना । गुटिका कामदा देवि देवानामपि दुर्लभा ॥ ३५ ॥ कवचस्यास्य गुटिकां धृत्वा मुक्तिप्रदायिनीम् । कवचस्यास्य देवेशि भणितुं नैव शक्यते ॥ ३६ ॥ महिमा व महादेवि जिह्वाकोटिशतैरपि । अदातव्यमिदं वर्म

मन्त्रगर्भ रहस्यकम् ॥ ३७ ॥ अवक्तव्य महापुण्यं सर्वसारस्वतप्रदम् । अदीक्षिताय नो दद्यात्कुचैलाय दुरात्मने ॥ ३८ ॥ अन्यशिष्याय दुष्टाय निन्दकाय कुलार्थिनाम् । दीक्षिताय कुलीनाय गुरु भक्तिरताय च ॥ ३९ ॥ शान्ताय कुलशान्ताय शाक्ताय कुलवासिने । इदं वर्म शिवे दद्यात्कुलभागी भवेन्नरः ॥ ४० ॥ इदं रहस्यं परमं दुर्गाकवचमुत्तमम् । गुह्यं गोप्यतमं गोप्यं गोपनीयं स्वयोनिवत" ॥ ४१ ॥

इति श्रीदेवीरहस्यतन्त्रोक्तं श्रीदुर्गाकवचं समाप्तम् ।

ब्रह्माण्डमोहनाख्यं दुर्गाकवचम्

(ब्रह्मवैवर्तपुराणे)

नारद उवाच :

भगवन्सर्वधर्मज्ञ सर्वज्ञानविशारद । ब्रह्माण्डमोहनं नाम प्रकृतेः कवचं वद ॥ १ ॥

नारायण उवाच :

शृणु वक्ष्यामि हे वत्स कवचं च सुदुर्लभम् । श्रीकृष्णेनैव कथितं कृपया ब्रह्मणे पुरा ॥ २ ॥ ब्रह्मणा कथितं पूर्वं धर्माय जाह्नवीतटे । धर्मेण दत्तं मह्यं च कृपया पुष्करे पुरा ॥ ३ ॥ त्रिपुरारिश्च यद्धृत्वा जघान त्रिपुरं पुरा । मुमोच ब्रह्मा यद्धृत्वा मधुकैटभयोर्भयात् ॥ ४ ॥ संजहार रक्तबीजं यद्धृत्वा भद्रकालिका । यद्धृत्वा हि महेन्द्रश्च संप्रापकम लालयाम् ॥५॥ यद्धृत्वा च महायोद्धा बाणः शत्रुभयंकरः । यद्धृत्वा शिवतुल्यश्च दुर्वासा ज्ञानिनां वरः ॥ ६ ॥ ॐ दुर्गेति चतुर्थ्यन्तः स्वाहान्तो मे शिरोऽवतु । मन्त्र षडक्षरोयं च भक्तानां कल्पपादप ॥ ७ ॥ विचारो नास्ति वेदे च ग्रहणेस्य मनुर्मुने । मन्त्रग्रहणमात्रेण विष्णुतुल्यो भवेन्नरः ॥ ८ ॥ मम वक्त्रं सदा पातु ॐ दुर्गायै नमोन्तकः । ॐ दुर्गे इति कण्ठं तु मन्त्रः पात सदा मम ॥ ९ ॥ ॐ ह्रीं श्रीमिति मन्त्रोयं स्कन्धं पातु निरन्तरम् । ह्रीं श्रीं क्लीमिति पृष्ठं च पातु मे सर्वतः सदा ॥१०॥ ह्रीं मे वक्षस्थले पातु हं सं श्रीमिति सन्ततम् । ऐं श्रीं ह्रीं पातु सर्वाङ्गं स्वप्ने जागरणे सदा ॥ ११ ॥ प्राच्यां मां पातु प्रकृतिः पातु वह्नौ च चण्डिका । दक्षिणे भद्रकाली च नैर्ऋत्यां च महेश्वरी ॥१२॥ वारुण्यां पातु वाराही वायव्यां सर्वमंगला । उत्तरे वैष्णवी पातु तथैशान्यां शिवप्रिया ॥ १३ ॥ जले स्थले चान्तरिक्षे पातु मां जगदम्बिका । इति ते कथितं वत्स कवचं च सुदुर्लभम् ॥ १४ ॥ यस्मै कस्मै न दातव्यं प्रवक्तव्यं न कस्यचित् । गुरुमभ्यर्च्य विधिवद्वस्त्रालंकारचन्दनैः ॥ १५ ॥ कवचं धारयेद्यस्तु सोपि विष्णुर्न संशयः । स्नाने च सर्वतीर्थानां पृथिव्याश्च प्रदक्षिणे ॥ १६ ॥ यत्फलं लभते लोकस्तदेतद्धारणे मुने । पंचलक्षजपेनैव सिद्धमेतद्भवेद्ध्रुवम् ॥ १७ ॥ लोके च सिद्धकवचो नावसीदति संकटे । न तस्य मृत्युर्भवति जले वह्नौ विषे ज्वरे ॥ १८ ॥ जीवमुक्तो भवेत्सोपि सर्वसिद्धिश्वरीश्वरि । यदि स्यात्सिद्धिकवचो विष्णुतुल्यो भवेद्ध्रुवम्" ॥ १९ ॥

इति श्री ब्रह्मवैवर्ते प्रकृतिखण्डान्तर्गतदुर्गाकवचं समाप्तम् ।

दुर्गाकवचम्

(कुब्जिकातन्त्रे)

ईश्वर उवाच ।

शृणु देवि प्रवक्ष्यामि कवचं सर्वसिद्धिदम् । पठित्वा पाठयित्वा च नरो मुच्येत संकटात् ॥ १ ॥ अज्ञात्वा कवचं देवि दुर्गामन्त्रं च यो जपेत् । स नाप्नोति फलं तस्य परत्र नरकं व्रजेत् ॥ २ ॥

उमा देवी शिरः पातु ललाटं शूलधारिणीं। चक्षुषी खेचरी पातु कर्णौं चत्वरवासिनी ॥ ३ ॥ सुगन्धा नासिके पातु वदनं सर्वधारणीं । जिह्वां च चण्डिका देवी ग्रीवां सौभद्रिका तथा ॥ ४ ॥ अशोकवासिनी चेतो द्वौ वज्रधारिणी । हृदयं ललितां देवी उदरं सिंहवाहिनी ॥ ५ ॥ कटिं भगवती देवी द्वावूरू विन्ध्यवासिनी । महाबला च जंघे द्वे पादौ भूतलवासिनी ॥ ६ ॥ एवं स्थितासि देवि त्वं त्रैलोक्यरक्षणात्मिके । रक्ष मां सर्वगात्रेषु दुर्गे देवि तमोस्तु ते ॥ ७ ॥

इति कुब्जिकातन्त्रोक्तं दुर्गाकवचम् समाप्तम् ॥

दुर्गाष्टक्षरीसहस्रनाम्

(उक्तं च देवीरहस्यतंत्रे चैकोनपल्चाशत्तमे पटले)

भैरव उवाच ।

अधुना शृणु वक्ष्यामि दुर्गासर्वस्वमीश्वरि । रहस्यं सर्वदेवानां दुर्लभं यमिनामपि ॥ १ ॥ श्रीदुर्गातत्त्वमुद्दिष्टं सारं त्रैलोक्यकारणम् । मन्त्रनामसहस्रं च दुर्गायाः पुण्यदं परम् ॥ २ ॥ यत्पठित्वा शिवे धृत्वा देवीनामसहस्रकम् । अश्वमेधायुतं पुण्यं लोके सौभाग्यवर्धनम् ॥ ३ ॥ श्रेयस्करं विश्ववन्द्यं सर्वदेवनमस्कृतम् । गुह्यं गोप्यतमं देवि पठनात्सिद्धिदायकम् ॥ ४ ॥

विनियोग :

ॐ अस्य श्रीदुर्गानामसहस्रस्य श्रीमहेश्वर ऋषिरनुष्टुप्छन्दः श्रीदुर्गादेवता दुं बीजं ह्रीं शक्तिः ॐ कीलकं धर्मार्थकाममोक्षार्थे सहस्रनामपाठे विनियोगः ।

षडङ्गन्यास :

ॐ महेश्वरऋषये नमः शिरसि १ । अनुष्टुप्छन्दसे नमो मुखे २ । श्रीदुर्गादेवतायै नमो हृदि ३ । हुं बीजाय नमो नाभौ ४ । ह्रीं शक्तये नमो मुखे ५ । ॐ कीलकाय नमः पादयोः ६ । विनियोगाय नमः सर्वांगे ७ । ॐ ह्रीं दुर्गा जगन्माता भद्रिका भद्रकालिका । प्रचण्डा चण्डिका चण्डी चण्डमुण्डनिषूदिनी ॥ ५ ॥ अनसूया त्रुटिस्तारा कृत्तिका कुब्जकालया । प्रलयस्थितिसम्भूतिविभूतिर्भयनाशिनी ॥ ६ ॥ महामाया महाविद्या मूलविद्या चिदीश्वरी । मदालसा मदोत्तुंगा मदिरा मदनप्रिया ॥ ७ ॥ अलिव्यालप्रसूः पुण्या पवित्रा परमेश्वरी । आदि देवी कलाकान्ता त्रिपुरा जगदीश्वरी ॥ ८ ॥ मनोन्मनी महालक्ष्मीः सिद्धलक्ष्मीः सरस्वती । सरित्कादम्बरी गोधा गुह्यकाली गणेश्वरी ॥ ९ ॥ गणाम्बिका जया तापी तपना तापहारिणी । तपोमयी दुरालम्भा दुष्टग्रहनिवारिणी ॥ १० ॥ दुःखघ्नी सुखदा माध्वी परमामृतसूः सुरा । सुधा सुधांशुनिलया प्रलयानलसन्निभा ॥ ११ ॥ समस्तसम्पदम्भोजविलया कलिमालया । विद्येश्वरी विश्वमयी विराट्छन्दोगतिर्मतिः ॥ १२ ॥ धृतिश्च दाम्भिकी दोला लोपामुद्रा पटीयसी । गरिष्ठारिष्टहा दुष्टा कृशा काशी कुलाकुला ॥ १३ ॥ अकुलस्था पदन्यासा न्यासरूपा विरूपिणी । विरूपाक्षी कोटराक्षी कुलकान्तापराजिता ॥ १४ ॥ अजिता कुलिकालम्पा लम्पटा त्रिपुरेश्वरी । त्रितयी वेदविन्यासा संन्यासा सुमतिर्भया ॥ १५ ॥ अभया स्वर्मुखी देवी महौषधिरलम्बुषा । चपला चण्डिका चण्डमुण्डनिषूदिनी ॥ १६ ॥ चपलाक्षी मदाविष्टा मदिरारुणलोचना । पुरी त्रिपुरसूराद्या रमा रामा मनोरमा ॥ १७ ॥ सन्ध्या सन्ध्याभ्रशीला च शाला श्यामपयोधरा । शशांकमुकुटा श्यामा सुरा सुन्दरलोचना ॥ १८ ॥ विषमाक्षी विशालाक्षी वशा वागीश्वरी शिला । मनःशिला च कस्तूरी मृगनाभिर्मृगेक्षणा ॥ १९ ॥ मृगारिवाहना साध्वी मानदा मत्तभाषिणी । नारसिंही वामदेवी वामा

वामश्रुतिप्रिया ॥ २० ॥ पुण्यापुण्यगतिः पुण्या पुत्रीं पुण्यजनप्रिया । चामुण्डा चोग्रमुण्डा च महाचण्डतमा उमा ॥ २१ ॥ तमस्विनी प्रभा ज्योत्स्ना महाज्योतिःस्वरूपिणी । स्वरूपा सद्गतिः साध्वी सदसद्रूपराजिता ॥ २२ ॥ सृष्टिस्थितिः क्षेमकरी क्षमा क्षामोन्नतस्तनी । क्षोणीक्षयकरी क्षीणा शवस्था शिववल्लभा ॥ २३ ॥ दन्तुरा दाडिमप्रीतिर्दया दाम्भिकसूदिनी राक्षसी डाकिनी योग्या योगिनी योगवल्लभा ॥ २४ ॥ कबन्धा कन्दरा कृत्या कृत्तिका कण्टककान्तका । कलंकरहिता काली कम्पा काश्मीरवल्लभा ॥ २५ ॥ काशी कीर्तिपदा काञ्ची काश्मीरी कोकिलस्वना । प्रभावती महारौद्री रुद्रपत्नी रुजापहा ॥ २६ ॥ रति स्तुतिस्तुरी तुर्या तोतला तलवासिनी । तपःप्रिया सरिच्छेष्ठा पंगुपुत्री यमस्वसा ॥ २७ ॥ यामी यमान्तका याम्या यमुना स्वर्नदी तडित् । नारायणी विश्वमाता भवानी पापनाशिनी ॥ २८ ॥ विगता विगतप्रश्ना कृशा कृष्टासिधारिणी । वारी वराम्बरधरा वरदा वीरसूदिनी ॥ २९ ॥ वीरसूर्वामनाकारा दीर्घसूत्रा दयावती । दरी धनप्रिया धात्री धात्रीवल्ली महोदरी ॥ ३० ॥ गणेश्वरी गणा कांची कांचीकिंकिणिघंटिका । माया मायावती मत्ता प्रमत्ता प्रवरेश्वरी ॥ ३१ ॥ पौरन्दरी शची सीता शीतातपस्वभावजा । स्वाभाविकगुणा गण्या गाम्भीर्यगुणभूषणा ॥ ३२ ॥ सूतिः सूर्यकला सुप्ता सप्तप्ततिरूपिणी । तेजस्विनी सदानन्दा सभासन्तोषवर्धिनी ॥ ३३ ॥ तर्पणा कर्षणा होत्री संकल्पा शुभमन्त्रिका । दर्भा द्रोणिकला शान्ता समिधा सुरवेदिका ॥ ३४ ॥ धूम्राहुतिश्चरमतिश्चामीकररुचिश्चिता । दिव्यानलेश्वरी नीला कालानलसरस्वती ॥ ३५ ॥ अपर्णा सुफला यज्ञा सभया निर्भयाभया । भीमस्वना भर्गशिखा भास्वती भाकरा विभा ॥ ३६ ॥ विभावरी नदी नन्धा नद्यावर्तप्रवर्तिनी । पृथ्वीधरा विषधरा विश्वगर्भा प्रवर्तिका ॥ ३७ ॥ विश्वमाया विश्वबाला विश्वम्भरविलासिनी । उरगेशा पद्मनाभापद्मनाभप्रसूप्रजा ॥ ३८ ॥ तोरणा तुलसी दीक्षा दक्षा दाक्षायणी द्युतिः । सम्पुटा शयना शय्या शासना शमनान्तका ॥ ३९ ॥ श्यामाकवर्णा शार्दूली शष्पनीतांशुवल्लभा । स्तुत्या प्रणीता नियति कम्पना कम्पहारिणी ॥ ४० ॥ चम्पका भूधरा चीना दीना दीनजनप्रिया । वसुन्धरा वासवेशी वसुनाथा वटेश्वरी ॥ ४१ ॥ समुद्रासंगमा पूर्णा तरला तरुवासिनी । पार्वती पामरी मान्या माननीया मधुप्रिया ॥ ४२ ॥ माधवी मधुपानस्था मन्दिरा मन्दुरा मृगी । मुमूर्षाभिरुषा रेवा रेवती रमणी रमा ॥ ४३ ॥ ऋद्धिहस्ता सिद्धिहस्ता चान्नपूर्णा महेश्वरी । अणुरूपा जगज्ज्योतिः समस्तासुरघातिनी ॥ ४४ ॥ गारुडी गगनालम्बा लम्बमानकचप्रिया । पीताम्बरा पीतपुष्पा पूतना पीतवल्लभा ॥ ४५ ॥ बलाका जगदन्ता च जरा जयवरप्रदा । प्रीतिः कठोरवदना करालवदना रमा ॥ ४६ ॥ जिह्वाहस्ता च बगला प्रणया विनयप्रदा । कीरी करालदेहा च शेमुषी मक्षिका मषी ॥ ४७ ॥ उत्तीर्णा तर्णिका तीक्ष्णा श्लक्ष्णा कामेश्वरी शिवा । शिवपत्नी सरोजाक्षी पद्महस्ता सरस्वती ॥ ४८ ॥ तथ्या पथ्याकरी रथ्या रथस्था विततस्वरा । महती रागिणी मार्गी शुचिहासा हरीश्वरी ॥ ४९ ॥ हरिद्रालांशुलसिता लक्ष्मीनायकसुन्दरी । अम्बालिकाम्बा देवेशी ह्यनघाग्निशिखा श्रुतिः ॥ ५० ॥ अलसाल्पगतिश्चान्त्यानन्तानन्तगुणाश्रया । आद्या चादित्यसंकाशा ह्यादित्यकुलसुन्दरी ॥ ५१ ॥ आत्मरूपाधिशमिनी चादिमायादिदेवता । इन्द्रप्रसूरिनद्योतिरिनाग्निशशिलोचना ॥ ५२ ॥ उमा उर्वी उरुभुजा उत्तुङ्गा चोक्षवाहना । उत्तङ्गा चोत्तमाध्येया उल्लासा चोरुगर्विणी ॥ ५३ ॥ ऊष्मा ऊर्णा च गुर्वङ्गी ऊर्ध्वाक्षी ऊर्ध्वमस्तका । ऋद्धिश्चर्या ऋवर्णेशी ऋणहर्त्री च वार्तकी ॥ ५४ ॥ ऋद्धिजा चारुवस्त्रा च ऋणिवासा महालसा । लृकारा लृक्षुरा लीना लृकारावरधारिणी ॥ ५५ ॥ एणांकमुकुटा चेहा चारुचन्द्रकला कला । ऐंकारगतिरैश्वर्यदायिनी चेश्वरी गतिः ॥ ५६ ॥ ॐकारबीजरूपा च औत्रिकी बीजधारिणी ।

अम्बिकालम्पिकाम्बा च अस्वरोद्गाररूपिणी ॥५७॥ काली च भद्रकाली च कालिका कालवल्लभा। कदम्बनिलया कन्या काञ्चीमण्डनमण्डिता ॥ ५८ ॥ कलङ्करहिता कूर्पा काञ्चनाभा करीरगा। कनकाचलवासा च कारुण्याकुलमानसा ॥ ५९ ॥ कुलस्था कौलिनी कुल्या कुरुकुल्ला कपालिनी। कपालकुलनिर्विण्णा क्रेंकरा कञ्जलोचना ॥ ६० ॥ खञ्जनाक्षी खड्गधरा खेटकायुधभूषणा। खर्पराढ्या च खलहा खेटिनी खेचरी खगा ॥ ६१ ॥ खगायुधा खगगतिः खकाराशरभूषणा। गणाध्यक्षा गजगतिर्गणेशजननी गदा ॥ ६२ ॥ गोधा गदाधरप्राज्या गगनेशी महीमला। घुर्घुरा घटभूर्घूका घुसृणाभा घनेश्वरी ॥ ६३ ॥ धुनसारप्रिया साम्या घवर्णरुतभूषणा। चान्द्री चन्द्रस्तुता चार्वी चन्द्रिका चण्डनिःस्वना ॥ ६४ ॥ चञ्चरीकस्वना देवी चञ्चच्चामीकराङ्गदा। छत्रिकाच्छुरिका छच्छा छत्रचामरभूषणा ॥ ६५ ॥ ज्रीकारी जलजिह्वा च जृम्भिका जलयोगिनी। जटाजूटधरा जातिर्जातीपुष्पसमानना ॥ ६६ ॥ जलेश्वरी जगद्ध्येया जानकी जननी जटा। झंझाझरीझरत्कारी झरत्कांची त्वकिंकिणी ॥ ६७ ॥ झिण्टिका झम्पकृज्झम्पा झम्पत्रासनिवारिणी। ञणुरूपा ञक्वहस्ता ञकाराक्षरसम्मता ॥ ६८ ॥ टङ्कायुधा महातध्या टङ्कारा करुणा सती। ठक्कुरा ठत्करा ठानी डिण्डीरवसना डला ॥ ६९ ॥ ढण्डानिलमयी ढण्डा ढणत्कारकरा ढसा। णान्तानणीणीलायुधा णवर्णाक्षरभूषणा ॥ ७० ॥ तरुणी तुन्दिला तोदा तामसी तामसप्रिया। ताम्रानना ताम्रकरा ताम्राम्बरधरा तुला ॥ ७१ ॥ तापत्रयहरी तापी तैलसक्ता तिलोत्तमा ॥ स्थाणुपत्नी स्थली स्थूला स्थिति स्थैर्यधरास्थूला ॥ ७२ ॥ दन्तिनी दन्तुरा दावी देवकी देवनायिका। दामिनी दमिनी दण्ड्या दण्डहस्ता दुरानतिः ॥ ७३ ॥ दुर्वारा दुर्गतिर्द्राक्षी द्राक्षा द्रविडवासिनी ॥ दूरस्था दुन्दुभिध्वाना दरदा दरनाशिनी ॥ ७४ ॥ दुःखघ्नी च द्रुगा द्रष्टी दया दाम्भिकनाशिनी। धर्म्या धर्मप्रसूर्धन्या धनदा धातृवल्लभा ॥ ७५ ॥ धनुर्धरा धनुर्वल्ली धनुष्कवरदायिनी। धूमाली धूम्र वदना धूमश्रीर्धूम्रलोचना ॥ ७६ ॥ नलिनी नर्तकी नांतानंगा नलिनलोचना। निर्मला निगमाचारा निम्नगा नगजा नमिः ॥ ७७ ॥ नीलग्रीवा निरीहा च नीपोपवनवासिनी। निरञ्जनजनिर्जन्या निद्रालुर्नीरवासिनी ॥ ७८ ॥ नटिनी नाट्यनिरता नवनीतप्रियानिला। नारायणी निराकारा निर्लेपा नित्यवल्लभा ॥ ७९ ॥ पद्मावती पद्मकरा पुत्रदा पुत्रवत्सला। परोत्तरा पुरी पाठा पीनश्रोणिः पुलोमजा ॥ ८० ॥ पुष्पिणी पुस्तककरा पटुः पाटीरवाहना। पापघ्नी पद्मिनी पाली पली परमसुन्दरी ॥ ८१ ॥ पिशाची च पिचाचघ्नी पानपात्रधरा पुटा। पूर्णिमा पञ्चमी पौत्री पुरूरववरप्रदा ॥ ८२ ॥ पञ्चयज्ञा पञ्चशरी पञ्चाशन्मनुवल्लभा। पाञ्चाली पञ्चपुत्रा च पूर्णा पूर्णमनोरथा ॥ ८३ ॥ फलिनी फलदात्री च फलहस्ता फणिप्रिया। फिरङ्गहा स्फीतमतिः स्फीतिस्फीतिमती स्फुरा ॥ ८४ ॥ बलमाया बलस्तन्या बिल्वसेना बलाबला। बगलेश्वरपूज्या च बलिनी बलबर्धिनी ॥ ८५ ॥ बुद्धमाता बौद्धमतिर्बद्धा बन्धनमोचिनी। भगिनी भगमाला च भगलिङ्गामृतस्रवा ॥ ८६ ॥ भीमेश्वरि च भेरुण्डा भगेशी भगमर्षिणी। भगलिङ्गस्थिता भग्या भाग्यदा भगमालिनी ॥ ८७ ॥ मत्ता मनोहरा मेना मैनाकजननी मुरी। मुरली मानवी मोक्त्री मनस्विजनमोदिता ॥ ८८ ॥ मत्तमातङ्गगा माद्री मरालगतिमञ्जुला। यज्ञेश्वरीश्वरी यज्ञा यजुर्वेदप्रियाश्रिता ॥ ८९ ॥ यशोवती यतिस्था च यतिस्था यतिवल्लभा[1]। यवनी यौवनस्था च यवा यक्षजनाश्रया ॥ ९० ॥ यज्ञसूत्रप्रदा ज्येष्टा यज्ञभूर्यूपमालिनी। रञ्जिता राजपत्नी च राजसूयफलप्रदा ॥ ९१ ॥ रजोवती रजश्चित्रा राज्यदा राज्यवर्धिनी। राज्ञी रात्रिश्चरेशानी रोगघ्नी त्रिपुरेश्वरी ॥ ९२ ॥ ललिता ललितालापा लोपा ललनलालसा। लाटीरद्रुममासा च लाटीरद्रुमवर्तिनी ॥ ९३ ॥ लङ्का ललज्जटाजूटा लङ्घिता सुरसुन्दरी। लोकेशवरदा लीना लयकर्त्री महालया ॥ ९४ ॥ वेदिर्विनग्ना वाणी च वेणा वेणुर्वनेश्वरी। वन्द्यमाना ववर्णाढ्या वाराही

---

१ यतीनामायतिरुत्तरकालस्स वल्लभो यस्याः सा।

वीरमातृका ॥ ९५ ॥ शङ्खिनी शङ्खवलया शङ्खायुधधरा शमा । शशिमण्डलमध्यस्था शीतलाम्बुनिवासिनी ॥ ९६ ॥ श्मशानस्था महाघोरा श्मशाननिलयेश्वरी । सिन्धुः सूत्रधरा सूत्रा समस्तकुलचारिणी ॥ ९७ ॥ सप्तमी सात्त्विकी सत्त्वा सत्रस्यासुरसूदिनी । सुरेश्वरी सम्पदाद्या समस्ताचलचारिणी ॥ ९८ ॥ समदा सम्मसिः सम्मा सवना सवनेश्वरी । हंसी हरिप्रिया हास्या हरिनेत्रा हराम्बिका ॥ ९९ ॥ हेषा कटीश्वरी हीराहलिनी हलदायिनी । हेहहारवा हालाहालाहलहताशया ॥ १०० ॥ क्षेमा क्षेमप्रदा क्षामा क्षौमाम्बराक्षया । क्षिति क्षीरप्रिया लक्ष्या क्षितिभृत्क्षणदा क्षुधा ॥ १०१ ॥ क्षत्रिणी ब्राह्मणी क्षेत्रा क्षपा क्षंबीजमण्डिता । लक्षंबीजस्वरूपा च क्षकाराक्षरमातृका ॥ १०२ ॥ दुर्गाघनाशिनी दूर्वा दूगमा दुर्गनाशिनी । दुर्गा दुर्गातिनाशिनी ॐ ह्रीं दूं बीज मण्डिता ॥ १०३ ॥ इति नाम सहस्रं तु मन्त्रगर्भं महाफलम् । दुर्गायां दुर्गीतहरं सर्वदेवनमस्कृतम् ॥ १०४ ॥ सर्वमन्त्रमयं दिव्यं देवदानवपूजितम् । श्रेयस्करं महापुण्यं महापातक नाशनम् ॥ १०५ ॥ यः पठेत्पाठयेद्वापि श्रृणोति श्रावयेत्तथा । स महापातकैर्मुक्तो देवदानवसेवितः ॥ १०६ ॥ इह लोके सुखं भुक्त्वा परत्र त्रिदिवं ब्रजेत् । दुर्गानामसहस्रं तु मूलमन्त्रैकसाधनम् ॥ १०७ ॥ अर्द्धरात्रे पठेद्वीरो मधुरं भवसेवितम् ॥ त्रिवारं वर्मपूर्वं तु भवेद्वागीशसन्निभः ॥ १०८ ॥ यः पठेद्देवि मध्याह्ने स्त्रीयुतो मुक्तकुंतलः । तस्य बैरिकुलं त्रस्येद्दर्शनादेव नश्यति ॥ १०९ ॥ दहनादिव देवेशि पतंगकुलमद्रिजे । यः पठेद्वेतसीमूले सायं पूजितभैरवः ॥ ११० ॥ तस्यास्यकुहराद्वाणी निःसरेद्गद्यपद्यभाक् । यः पठेत्सततं देवि शयने स्त्रीरताकुलः ॥ १११ ॥ स भवेद्वैरिविध्वंसी धनेन धनदोपमः । वाग्भिर्वागीशसदृशः कवित्वेन सितोपमः ॥ ११२ ॥ तेजसा सूर्यसंकाशो यशसा सोमसन्निभः । बलेन वायुतुल्यो हि लक्ष्म्या गीर्वाणनायकः ॥ ११३ ॥ देवि किं बहुनोक्तेन स भवेद्भैरवोपमः । स्तम्भनाकर्षणोच्चाटवशीकरणकक्षमः ॥ १२४ ॥ रवो भूर्जेलिखेद्देवि निशीथे चाष्टगन्धकै । सस्तन्यरेतोराजस्कैः साधको मन्त्रसाधकः ॥ ११५ ॥ लिखित्वा वेष्टयेन्नामसहस्रमणिमीश्वरि । श्वेतवस्त्रेण संवेष्ट्य लाक्षया परिवेष्टयेत् ॥ ११६ ॥ सुवर्णरजताद्यैश्च वेष्टयेत्पीतसूत्रकैः । संपूज्य गुटकां देवि शुभाहे साधकोत्तम ॥ ११७ ॥ धारयेन्मूर्ध्नि वा बाहौ गुटिकां कामदायिनिम् । रणे रिपून्विजित्याशु कल्याणी गृहमविशेत् ॥ ११८ ॥ वंध्या वाम भुजे धृत्वा कृत्वा साधकपूजनम् । लभते तनयान्देवि साक्षाद्वैश्रवणोपमान् ॥ ११९ ॥ गुटिकैषा महादिव्या गोप्या कामफलप्रदा । साधकैः सततं पूज्या साक्षाद्दुर्गास्वपिणी ॥ १२० ॥ योर्चयेत्साधको दुर्गां गुटिकां धारयेत्प्रिये । पठेद्वमै शिवे मन्त्रं नामसाहस्रिकं परम् ॥ १२१ ॥ अंगस्तोत्रं फलं तस्य देवि वक्ष्येधुना श्रृणु । वने राजकुल वापि दुर्भिक्षे शत्रुसंकटे ॥ १२२ ॥ ग्रहयक्षपिशाचादिभूतप्रेतभये तथा । वीरो विगतभीर्देवि सर्वत्र विजयी भवेत् ॥ १२३ ॥ स्तंभयेद्वायुसूर्यौ च चेंद्रादीन्साधकोत्तम । मोहयेत्रिजगत्सद्यः कांताश्चाकर्षयेद्ध्रुवम् ॥ १२४ ॥ मारयेदखिलाञ्छत्रून्रिपूनुच्चाटयेत्तथा । वशयेद्देवताः सद्यः किंपुनर्मानवाञ्छिवे ॥ १२५ ॥ शमयेदखिलान्रोगान्महोत्पातानुपद्रवान् ॥ किं किं न लभते वीरो दुर्गापञ्चाङ्गपूजनात् ॥ १२६ ॥ इदं रहस्यं दुर्गाया अष्टाक्षर्या महेश्वरि । सर्वस्वं सारतत्त्वं च मूलविद्यामयं परम् ॥ १२७ ॥ महाचीनक्रमस्थानां साधकानां यशस्करम् । पठेत्संपूजये द्देव्या मन्त्रनामसहस्रकम् ॥ १२८ ॥ इदं सारो तत्त्वानां तत्त्वमुत्तमम् ॥ दुर्गानामसहस्रं तु तव भक्त्या प्रकाशितम् ॥ १२९ ॥ अभक्ताय न दातव्यं गोप्तव्यं पशुसंकटे ॥ अभक्तेभ्योपि पुत्रेभ्यो दत्त्वा नरकमाप्नुयात् ॥ १३० ॥ दीक्षिताय

कुलीनायः गुरुभक्तिरताय च। शांताय भक्तियुक्ताय देयं नाम सहस्रकम् ॥ १३१ ॥ विना दानं न गृह्णीयात्र दद्याद्दक्षिणां विना। दत्त्वा गृहीत्वाप्युभयोः सिद्धिहानिर्भवेद्ध्रुवम् ॥ १३२ ॥ इदं नामसहस्रं तु गुप्तं गोप्यतमं शिवे। तव भक्त्या मयाख्यातं गोपनीयं स्वयोनिवत् ॥ १३३ ॥ इति श्रीदेवीरहस्यतंत्रोक्तं दुर्गासहस्रनामस्तोत्रं समाप्तम्।

दुर्गाष्टाक्षरीस्तोत्र

(उक्तं च देवी रहस्यतन्त्रे पञ्चाशत्तमे पटले)

भैरव उवाच :

अधुना देवि वक्ष्यामि दुर्गास्तोत्रं मनोहरम्। मूलमन्त्रमयं दिव्यं सर्वसारस्वतप्रदम् ॥ १ ॥ दुर्गार्तिशमनं पुण्यं साधकानां जयप्रदम्। दुर्गाया अंगभूतं तु स्तोत्रराजं परात्परम् ॥ २ ॥ ॐ अस्य श्रीदुर्गास्तोत्रराजस्य महेश्वर ऋषिः। अनुष्टुप्छन्दः। श्रीदुर्गाष्टाक्षरात्मिका देवता। दुं बीजं। पराशक्ति[1]। नमः कीलकम्। धर्मार्थकाममोक्षार्थे दुर्गास्तोत्रपाठे विनियोगः ॥ ॐमहेश्वरऋषये नमः शिरसि १। अनुष्टुप्छन्दसे नमः मुखे २। श्रीदुर्गाष्टाक्षरात्मिकादेवतायै नमो हृदि ३। दुं बीजाय नमो नाभौ ४। ह्रीं शक्तये नमो गुह्ये ५। नमः कीलकाय नमः पादयोः ६। विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ७। इति विन्यस्य ध्यानं कुर्यात् ॥ दूर्वानिभा त्रिनयनां विलसत्किरीटां शङ्खाब्जखड्गशर खेटकशूलचापान्। सन्तर्जनीं च दधतीं महिषासनस्थां दुर्गा नवारकुलपीठगतां भजेहम् ॥ ३ ॥ तारं हारं मन्त्रमालां सुबीजं ध्याये दन्तर्यो बलं बालकान्तः। तस्य स्मारंस्मारमंघ्रिद्वयीं द्राग्रम्भा याति स्वर्गतः कामवश्या ॥४॥ मायां[2] जपेद्यस्तवमन्त्रमध्ये दुर्गे सदा दुर्गति खेदखिन्नः। भवेत्स भूमौ नृपमौलिमालामाणिक्यनिर्घृष्टपदारविन्दः ॥ ५ ॥ चाक्रिकं यदि जपेत्तवाम्बिके चक्रमध्यगत ईश्वरेश्वरि। साधको भवति चक्रवर्तिनां नायको नयाविलासकोविदः ॥ ६ ॥ चक्रिबीजमपरं स्मरेच्छिवे योरिवर्गविहिताहितव्ययः। आजिमण्डलगतो जयेद्रिपून्वाजिवारणरथाश्रितो नरः ॥ ७ ॥ दूर्वाबीजं यो जपेत्प्रेतभूमौ सायं मायाभस्मनालिप्तकायः। गीर्वाणानां नायको देव मन्त्री भुक्त्वा राज्यं प्राज्यमाद्यं करोति ॥ ८ ॥ वायव्यबीजं यदि साधको जपेत्प्रियाकुचद्वन्द्वविमर्दनक्षमः। समस्तकान्ताजननेत्रवागुर्विलासहंसो भविता स पार्वति ॥ ९ ॥ विश्वं विश्वेश्वरि यदि जपेत्कामवेलाकलार्तो रात्रौ मात्राक्षरविलसितन्यास ईशानि मातः। तस्य स्मेराननसरसिजभ्राजमानांगलक्ष्मीर्वश्याऽवश्यं सुरपुरवधूमौलिमालोर्वशी स्यात् ॥ १० ॥ भूगेहाश्रितसत्त्रिवृत्तविलसन्नागारवृत्तां चितव्यग्रारोल्लसिताग्निकोणविलसच्छ्रीबिन्दुपीठस्थिताम्। ध्यायेच्चेतसि शर्वपत्नि भवतीं माध्वीरसांघूर्णितां यो मन्त्री स भविष्यति स्मरसमः स्त्रीणां धरण्यां दिवि ॥ ११ ॥ दुर्गास्तवं मनुमयं मनुराजमौलिमाणिक्यमुत्तमशिवाङ्ग रहस्यभूतम्। प्रातः पठेद्यदि जपावसरेऽर्चनायां भूमौ भवेत्स नृपतिर्दिवि देवनाथः ॥ १२ ॥ इति स्तोत्रं महापुण्यं पञ्चाङ्गैकशिरोमणिम्। यः पठेदर्धरात्रे तु तस्य वश्यं जगत्त्रयम् ॥ १३ ॥

इति देवीवीरहस्यतन्त्रोक्तं श्रीदुर्गाष्टाक्षरीस्तोत्रं समाप्तम्।

---

१ पराह्रीं।
२ श्रीं।

दुर्गास्तवः

(उक्तं च हरिवंशे)

वैशम्पायन उवाच ।

"आर्यास्तवं प्रवक्ष्यामि यथोक्तमृषिभि पुरा । नारायणीं नमस्यामि देवीं त्रिभुवनेश्वरीम् ॥ १ ॥ त्वं ही सिद्धिर्धृतिर्मेधा श्रीर्विद्या सन्नतिर्मति । सन्ध्या रात्रिः प्रभा निद्रा कालरात्रिस्तथैव च ॥ २ ॥ आर्या कात्यायनी देवी कौशिकी ब्रह्मचारिणी । जननी सिद्धसेनानीरुग्रचारिमहातपाः ॥ ३ ॥ जया च विजया चैव पुष्टिश्च त्वं क्षमा दया । ज्येष्ठा यमस्य भगिनी नीलकौशेयवासिनी ॥ ४ ॥ बहुरूपा विरूपा च अनेकविधचारिणी । विरूपाक्षी विशालाक्षी भक्तानां परिरक्षिणी ॥ ५ ॥ पर्वताग्रेषु घोरेषु नदीषु च गृहेषु च । वासस्तव महादेवि वनेषृपवनेषु च ॥ ६ ॥ शबरैर्बर्धरैश्चै व पुलिन्दैरभिपूजिता । मयूरमक्षध्वजिनी लोकान्क्रमसि सर्वशः ॥ ७ ॥ कुक्कुटैश्छागलैर्मेषैः सिंहैर्व्याघ्रैः समाकुला । घण्टानिनादबहुला विश्रुता विन्ध्यवासिनी ॥ ८ ॥ शूलिनी पट्टिशयुता सूर्यचन्द्रपताकिनी । नवमी कृष्णपक्षस्य शुक्लस्यैकादशी तथा ॥ ९ ॥ भगिनी बलदेवस्य रजनी कलहप्रिया । आवसः सर्वभूतानां निष्ठा च परमागतिः ॥ १० ॥ नन्दगोपसुता चैव देवानां विजयावाहा । चीरवासा सुवासाश्च रात्रिः सन्ध्या त्वमेव च ॥ ११ ॥ प्रकीर्णकेशी मृत्युश्च तथा मांसौदनप्रिया । लक्ष्मीरलक्ष्मीरूपेण दानवानां वधाय च ॥ १२ ॥ सावित्री चैव वेदानां माता मन्त्रगणस्य च । अन्तर्वेदी च यज्ञानामृत्विजश्चैव दक्षिणा ॥ १३ ॥ सिद्धिः सांयात्रिकाणां तु वेला त्वं सागरस्य च ! यक्षाणां प्रथमा यक्षी नागानां सुरसेति च ॥ १४ ॥ कन्यानां ब्रह्मचर्या त्वं सौभाग्यं प्रमदासु च । ब्रह्मचारिण्यथो दीक्षा शोभा च परमा तथा ॥ १५ ॥ ज्योतिषां त्वं प्रभा देवी नक्षत्राणां च रोहिणी । राजद्वारेषु तीर्थेषु नदीनां संगमेसु च ॥ १६ ॥ पूर्णा च पूर्णिमा चन्द्रे कृत्तिवासा इति स्मृता । सरस्वती च वाल्मीकेः स्मृतिर्द्वैपायनस्य च ॥ १७ ॥ कर्षकाणां च सीतेति भूतानां धरणिस्तथा । ऋषिणां धर्मबुद्धिस्तु देवानां मानसी तथा ॥ १८ ॥ सुरा देवीति भूतेषु स्तूयसे त्वं स्वकर्मभिः । इन्द्रस्य चारुदृष्टिस्त्वं सहस्रनयनेति च ॥ १९ ॥ तापसानां च देवि त्वमणिश्चाग्निहोत्रिणाम् । क्षुधा च सर्वभूतानां तृप्तिस्त्वं दैवतेषु च ॥ २० ॥ स्वाहा तृप्तिर्धृतिर्मेधा वसूनां त्वं वसूमती[1] । आशा च मानुषाणां तु तुष्टिश्च कृतकर्मणाम् ॥ २१ ॥ दिशश्च विदिशश्चैव तथा ह्यग्निशिखा प्रभा । शकुनी पूतना च त्वं रेवती वसुदारुणा ॥ २२ ॥ निद्रा च सर्वभूतानां मोहिनी क्षत्रिया तथा । विद्यानां ब्रह्मविद्या च त्वमोंकारो वषट् तथा ॥ २३ ॥ नारीणां पार्वती च त्वं पौराणीमृषयो विदुः । अरुन्धत्येकभर्त्रीणां प्रजापतिवचो यथा ॥ २४ ॥ पर्यायनामभि र्दिव्यैरिन्द्राणी चेति विश्रुता । त्वया व्याप्तमिदं सर्वं जगत्स्थावरजंगमम् ॥ २५ ॥ संग्रामेषु च सर्वेषु अग्निप्रज्वलितेषु च । नदीतीरेषु चोरेषु कान्तारेषु भयेषु च । प्रवासे राजबन्धे च शत्रूणां च प्रमर्दने ॥ २६ ॥ प्रयाणाद्येषु सर्वेषु त्वं हि रक्षा न संशयः । त्वयि मेव हृदयं देवि त्वयि चित्तं मनस्त्वयि ॥ २७ ॥ रक्ष मां सर्वपापेभ्यः प्रसादं कर्तुमर्हसि । इमं तव स्तवं दिव्यमिति व्यासप्रकल्पितम् ॥ २८ ॥ यः पठेत्प्रातरुत्थाय शुचिः

---

१ दीर्घ आर्ष

प्रयतमानसः । त्रिभिर्मासैः कांक्षितं च फलं वै संप्रयच्छसि ॥ २९ ॥ षड्भिर्मासैर्वरिष्ठं तु वरमेकं प्रयच्छसि । अर्चिता नवभिर्मासैर्दिव्यं चक्षुः प्रयच्छसि ॥ ३० ॥ संवत्सरेण सिद्धिं तु यथाकामं प्रयच्छसि । सत्यं ब्रह्म च दैवं च द्वैपायनवचो यथा ॥ ३१ ॥ नृणां बन्धं वधं घोरं पुत्रनाशं धनक्षयम् । व्याधिं मृत्युभयं चैव पूजिता शमयिष्यसि ॥ ३२ ॥ भविष्यसि महाभागे वरदा कामरूपिणी । मोहयित्वा च तं कंसमेका त्वं भोक्ष्यसे जगत् ॥ ३३ ॥ अहमप्यात्मनो वृत्तिं विधास्ये गोषु गोपवत् । स्ववृद्ध्यर्थमहं चैव करिष्ये कंसगोपनम् ॥ ३४ ॥ एवं तु स समादिश्य गतोन्तर्धानमीश्वरः । सा चापि तं नमस्कृत्य तथास्त्विति विनिश्चिता ॥ ३५ ॥

इति श्रीहरिवंशोक्तः श्रीआर्य्यास्तवः समाप्तः ।

दुर्गास्तोत्रम्

उक्तं च ब्रह्मवैवर्तपुराणे प्रकृतिखंडे अन्तिमेऽध्याये । "परा स्तुता सा गोलके कृष्णेन परमात्मना । सम्पूज्य मधुमांसेन प्रीतेन रासमण्डले ॥ १ ॥ मधुकैटभयोर्युद्धे द्वितीये विष्णुना पुरा । तत्रैव काले सा दुर्गा ब्रह्मणः प्राणसंकटे ॥ २ ॥ चतुर्थे संस्तुता देवी भक्त्या च त्रिपुरारिणा । पुरा त्रिपुरयुद्धे च महाघोरतरे रणे ॥ ३ ॥ पञ्चमे संस्तुता देवी वृत्रासुरवधे तथा । शक्रेण सर्वैर्देवैश्च घोरे च प्राणसंकटे ॥ ४ ॥ तदा मुनीन्द्रैर्मुनिभिर्मानवैः सुरथादिभिः । संस्तुता पूजिता सा च कल्पेकल्पे परात्परा ॥ ५ ॥ स्तोत्रं च श्रूयतां ब्रह्मन्सर्वविघ्नविनाशनम् । सुखदं मोक्षदं सारं भवाब्धेः पारकारकम् ॥ ६ ॥

श्रीकृष्ण उवाच :

त्वमेव सर्वजननी मूलप्रकृतिरीश्वरी । त्वमेवाद्या सृष्टिविधौ स्वेच्छया त्रिगुणात्मिका ॥ ७ ॥ कार्यार्थे सगुणा त्वं च वस्तुतो निर्गुणा स्वयम् । परब्रह्मस्वरूपा त्वं सत्या नित्यस्वरूपिणी ॥ ८ ॥ निजस्वरूपा परमाभक्तानुग्रहविग्रहा ॥ सर्वस्वरूपा शर्वाणी सर्वाधारा परात्परा ॥ ९ ॥ सर्वज्ञा सर्वतोभद्रा सर्वमंगलमंगला । सर्वज्ञानप्रदा देवी सर्वज्ञा सर्वभाविनी ॥ १० ॥ त्वं स्वाहा देवदाने च पितृदाने स्वधा स्वयम् । दक्षिणा सर्वदाने च सर्वकर्मणि संततम् ॥ ११ ॥ निद्रा त्वं च दया त्वं च तृष्णा त्वं चात्मनश्च मे । तत्क्षांति शांतिरीशा च कांतिस्तुष्टिश्च शाश्वती ॥ १२ ॥ श्रद्धा पुष्टिश्च तंद्रा च लज्जा शोभा प्रभा सदा । सतां संपत्स्वरूपा श्रीर्विपत्तिरसतामिह ॥ १३ ॥ प्रीतिरूपा पुण्यवतां पापिनां कलहांकुरा । शश्वत्कर्ममयी शक्तिः सर्वदा सर्वजीविनाम् ॥ १४ ॥ देवेभ्यः संपदां दात्री धातुर्धात्री कृपामयी । कुलायः सर्वदेवानां सर्वासुरविनाशिनी ॥ १५ ॥ योगनिद्रा योगरूपा योगदात्री च योगिनाम् । माहेश्वरी च ब्रह्माणी विष्णुमाया च वैष्णवी ॥ १६ ॥ भद्रदा भद्रकाली च सर्वलोकभयंकरी । ग्रामे ग्रामे ग्रामदेवी गृहदेवी गृहे-गृहे ॥ १७ ॥ महायुद्धे महामारी दुष्टसंहाररूपिणी ॥ रक्षास्वरूपा शिष्टानां मातेव हितकारिणी ॥ १८ ॥ ब्राह्मण्यरूपा विप्राणां तपस्या च तपस्विनाम् । विद्या विद्यावतां त्वं च बुद्धिर्बुद्धिमतां सती ॥ १९ ॥ मेधा स्मृतिस्वरूपा च प्रतिभा प्रतिभावताम् । राज्ञां प्रतापरूपा च विशां वा विट्स्वरूपिणी ॥ २० ॥ इत्यात्मना कृतं

स्तोत्रं दुर्गायाः स्वर्गकारणम् पूजाकाले पठेद्यो हि सिद्धं तद्वांछितं भवेत् ॥ २१ ॥ वंध्या वा काकवंध्या वा मृतवत्सा च दुर्भगा । श्रुत्वा स्तोत्रं वर्षमेकं सुपुत्रं लभते ध्रुवम् ॥ २२ ॥ कारागारे महाघोरे यो बद्धो दृढबंधने । श्रुत्वा स्तोत्रं मासमेकं बन्धनान्मुच्यते ध्रुवम् ॥ २३ ॥ यक्षग्रस्तो गलत्कुष्ठी महाशूली महाज्वरी । श्रुत्वा स्तोत्रं वर्षमेकं सद्यो रोगात्प्रमुच्यते ॥ २४ ॥ राजद्वारे श्मशाने च महारण्ये रणस्थले । हिंस्रजन्तुसमीपे तु श्रुत्वा स्तोत्रं प्रमुच्यते ॥ २५ ॥ महादरिद्रो मूर्खश्च वर्ष स्तोत्रं पठेत्तु यः । विद्यावान्धनवांश्चैव स च भवेन्नात्र संशयः ॥ २६ ॥

ब्रह्मवैवर्तान्तिर्गतप्रकृतिखडोक्तं दुर्गास्तोत्रं समाप्तम् ।

परशुरामकृतदुर्गास्तोत्रम्

परशुराम उवाच ।

श्रीकृष्णस्य च गोलोकपरिपूर्णतमस्य च । आविर्भूता विग्रहतः परा सृष्ट्युन्मुखस्य च ॥ १ ॥ सूर्यकोटिप्रभायुक्ता रत्नालंकारभूषिता । वह्निशुद्धांशुकाधाना सस्मिता सुमनोहरा ॥ २ ॥ नवयौवनसम्पन्ना सिंदूर विन्दुशोभिता ॥ ललिता कबरीभारमालतीमाल्यमण्डिता ॥ ३ ॥ अहोऽनिर्वचनीया त्वं चार्वी मूर्तिं च विभ्रती । मोक्षप्रदा मुमुक्षूणां जगत्कर्ता विधिः स्वयं ॥ ४ ॥ मुमोह क्षणमात्रेण दृष्ट्वा त्वां सर्वमोहिनीम् । रासे संभूयः सहसा सस्मिता राधिता पुरा ॥ ५ ॥ सद्भिः ख्याता तेन राधा मूलप्रकृतिरीश्वरी । कृष्णस्त्वां सहसाज्ञाय वीर्याधानं चकार ह ॥ ६ ॥ ततोण्डमंभसो जज्ञे यतो भूतो महाविराट् । यस्यैव लोमकूपेषु ब्रह्माण्डायखिलानि च ॥ ७ ॥ तच्छृङ्गारश्रमेणैव त्वन्निश्वासो बभूव ह । ततस्त्वं पञ्चधाभूय पञ्च मूर्तीश्च बिभ्रती ॥ ८ ॥ प्राणाधिष्ठात्री या मूर्तिः कृष्णस्य परमात्मनः । कृष्णप्राणाधिकां राधां तां वदन्ति पुराविदः ॥ ९ ॥ वेदाधिष्ठात्री या मूर्तिर्वेदशास्त्रप्रसूरपि । तां सावित्रीं शुद्धरूपां प्रवदन्ति मनीषिणः ॥ १० ॥ ऐश्वर्याधिष्ठात्री मूर्तिर्या शान्तिः शान्तिस्वरूपिणी । लक्ष्मीं बदन्ति सन्तस्तां शुद्धसत्त्वस्वरूपिणीम् ॥ ११ ॥ रागाधिष्ठात्री या देवी शुक्लमूर्तिः सतां प्रसूः । सरस्वतीं तां शास्त्रज्ञाः प्रवदन्ति बुधा भुवि ॥ १२ ॥ बुद्धिर्विद्या सर्वशक्तिर्ज्या मुक्तिरधिदेवता । सर्वमङ्गलरूपा त्वं सर्वमङ्गलकारिणी ॥ १३ ॥ सर्वमङ्गलबीजस्य शिवस्य मन्दिरेधुना शिवे शिवस्वरूपा त्वं लक्ष्मीर्नारायणान्तिके ॥ १४ ॥ सरस्वती च सावित्री वेदसूर्ब्रह्मणः प्रिया । राधा रासेश्वरस्यैव परिपूर्णतमस्य च ॥ १५ ॥ परमानन्दरूपासि छाया चन्द्रस्य रोहिणी । शची शक्रस्य कामस्य कामिनी रतिरीश्वरी ॥ १६ ॥ वरुणानी जलेशस्य वायोः स्त्री प्राणवल्लभा । वह्नेः प्रिया या स्वाहा च कुबेरस्य च सुन्दरी ॥ १७ ॥ यमस्य च सुशीला वै नैर्ऋतस्य च कोटवी । ईशानस्य शशिकला शतरूपा मनोः प्रिया ॥ १८ ॥ देवहूतिः कर्दमस्य वसिष्ठस्याप्यरुन्धती । अदितिर्देवमाता या मुद्रागस्त्यमुनेः प्रिया ॥ १९ ॥ अहल्या गौतमस्यापि सर्वाधारा वसुन्धरा । गङ्गा च तुलसी चापि पृथिव्यां याः सरिद्वराः ॥ २० ॥ एताः सर्वाश्च या अन्याः सर्वास्त्वत्कलयाम्बिके । गृहलक्ष्मीर्गृहे नृणां राजलक्ष्मीश्च राजसु ॥ २१ ॥ तपस्विनां तपस्या त्वं गायत्री ब्राह्मणस्य च । सतां सत्यस्वरूपा त्वं ह्यसतां कलहांकुरा ॥ २२ ॥ ज्योतिरूपा निर्गुणस्य शक्तिस्त्वं सगुणस्य च । सूर्ये प्रभावस्वरूपा त्वं दाहिका च हुताशने ॥ २३ ॥ जले सत्यस्वरूपा च शोभारूपा निशाकरे । त्वं भूमौ गन्धरूपा

च गगने शब्दरूपिणी ॥ २४ ॥ स्मृतिर्मेधा च बुद्धिर्वाग्यज्ञानशक्तिर्विपश्चिताम् । कृष्णेन विद्या या दत्ता सर्वज्ञानप्रसूः शुभा ॥ २५ ॥ शूलिने कृपया सा त्वं यतो मृत्युञ्जयः शिवः । सृष्टिपालनसंहारशक्तयस्त्रिविधाश्च याः ॥ २६ ॥ ब्रह्मविष्णुमहेशानां सा त्वमेव नमोऽस्तु ते ॥ २७ ॥ मधुकैटभभीत्या च त्रस्तो धाता प्रकम्पितः । स्तुत्वा मुमोच यां देवीं तां मूर्ध्ना प्रणमाम्यहम् ॥ २८ ॥ मधुकैटभयोर्युद्धे प्राप्तोसौ विष्णुरीश्वरीम् । वभूव शक्तिमान्स्तुत्वा यां दुर्गां तां नमाम्यहम् ॥ २९ ॥ त्रिपुरस्य महायुद्धे सरथे पतिते शिवे । यां तुष्टुवुः सुराः सर्व तां दुर्गां प्रणयाम्यहम् ॥ ३० ॥ विष्णुना[1] वृषरूपेण स्वयं शम्भुः समुत्थितः । जघान त्रिपुरं स्तुत्वा यां दुर्गां तां नमान्यहम् ॥ ३१ ॥ कालचक्रं च जगति शश्वद्भ्रमति वेगतः । मृत्युश्चरति जन्त्वोघे तां दुर्गां प्रणमाम्यहम् ॥ ३२ ॥ स्रष्टा सृजति सृष्टं च पाता पाति यदाज्ञया । संहर्ता हरते काले तां दुर्गां प्रणमाम्यहम् ॥ ३३ ॥ ज्योतिःस्वरूपो भगवाञ्छ्रीकृष्णो निर्गुणः स्वयम् । यया विना न शश्चक्त सृष्टिं कर्तुं नमामि ताम् ॥ ३४ ॥ रक्षरक्ष जगन्मातस्त्वपराधान्क्षमस्व मे । शिशूनामपराधेन जातु माता न कुप्यति ॥ ३५ ॥ इत्युक्त्वा पर्शुरामश्च प्रणम्यं तां रुरोद च । तुष्टा दुर्गा सम्भ्रमेण चाभयं सा वरं ददौ ॥ ३६ ॥ अमरो भव रे पुत्र वत्स सुस्थिरतां व्रज । मम प्रसादात्सर्वत्र जयोस्तु तव सन्ततम् ॥ ३७ ॥ सर्वान्तरात्मा भगवांस्तुष्टोस्तु सततं हरिः । भक्तिर्भवतु ते कृष्णे शिवदे च शिवे गुरौ ॥ ३८ ॥ इष्टदेवे गुरौ यस्य भक्तिर्भवति शाश्वती । तं हन्तुं न हि शक्ता वै रुष्टाश्च सर्वदेवताः ॥ ३९ ॥ श्रीकृष्णस्य च भक्तस्त्वं शिष्यस्त्वं शङ्करस्य च । गुरुपत्न्याश्च भक्तो हि कस्त्वां हन्तुं महेश्वरः ॥ ४० ॥ अहो न कृष्णभक्तानामशुभं विद्यते क्वचित् । अन्यदेवेषु भक्ता वा न भक्ता वा निरंकुशाः ॥ ४१ ॥ चन्द्रमा बलवांस्तुष्टो येषा भाग्यवतां भृगो । तेषां तारागणा रुष्टाः किं कुर्वन्ति च दुर्बलाः ॥ ४२ ॥ यस्य तुष्टः सभायां चेन्नरदेवो महान्सखा । तस्य किं वा करिष्यन्ति रुष्टा भृत्याश्च दुर्बलाः ॥ ४३ ॥ इत्युक्त्वा पार्वती तुष्टा दत्त्वा रामाय चाशिषम् । जगमान्तुः पुरस्तूर्णं जयशब्दो बभूव ह ॥ ४४ ॥ कण्वशाखोक्तस्तोत्रं च पूजाकाले हि यः पठेत् । यात्राकाले च प्रातर्वा वांछितार्थं लभेत सः ॥ ४५ ॥ पुत्रार्थी लभते पुत्रं कन्यार्थी लभते सुताम् । विद्यार्थी लभते विद्यां प्रजार्थी लभते प्रजाम् ॥ ४६ ॥ भ्रष्टराज्यो व्रजेद्राज्यं धनं भ्रष्टधनो व्रजेत् । यस्य तुष्टो गुरुर्देवो राजानो बान्धवास्तथा ॥ ४७ ॥ तस्य तुष्टाश्च वरदाः स्तोत्रराजप्रसादतः । दस्युग्रस्तो हिंसग्रस्तः शत्रुग्रस्तो भयानकः ॥ ४८ ॥ व्याधिग्रस्तो भवेन्मुक्तः स्तोत्र स्मरणमात्रत । राजद्वारे श्मशाने च कारागारे च बन्धने ॥ ४९ ॥ जलराशौ निमग्नश्च मुक्तो भवति मानवः । स्वामिभेदे पुत्रभेदे मित्रभेदेतिदारुणे ॥ ५० ॥ स्तोत्रस्मरणमात्रेण वांछितार्थं लभेत सः । कृत्वा हविष्यं वर्ष च स्तोत्रराजं शृणोति यः ॥ ५१ ॥ भक्त्या दुर्गां च सम्पूज्य महाबन्ध्या प्रसूयते । लभते सा दिव्यपुत्रं ज्ञानिनं चिरजीविनम् ॥ ५२ ॥ असौभाग्याच्च सौभाग्यं षण्मासश्रवणाद्व्रजेत । नवमांस काकवन्ध्या मृतवत्सा च भक्तितः ॥ ५३ ॥ स्तोत्रराजं या शृणोति सा पुत्रं लभते ध्रुवम् । कन्यामाता पुत्रहीना पञ्चमासं शृणोति या ॥ ५४ ॥ घटे सम्पूज्य दुर्गां च सा पुत्रं लभते ध्रुवम् ॥ ५५ ॥

इति श्रीपरशुरामप्रोक्तं दुर्गास्तोत्रं समाप्तम् ।

---

१ सहार्थे तृतीया

दुर्गाष्टोत्तर शतनामात्मकस्तोत्रम्

(उक्तं च विश्वसारतन्त्रे)

ईश्वर उवाच :

शतनाम प्रवक्ष्यामि शृणुष्व कमलानने । यस्य प्रसादमात्रेण दुर्गा प्रीता सदा भवेत् ॥ १ ॥ ॐ सती साध्वी भवा भवानी भवमोचिनी । आर्या दुर्गा जया आद्या त्रिनेत्रा शूलधारिणी ॥ २ ॥ पिनाकधरिणी चित्रा चन्द्रघण्टा महातपा । मनोबुद्धिरहंकारश्चितरूपा चिता चितिः ॥ ३ ॥ सर्वमन्त्रमयी सत्या सत्यानन्दस्वरूपिणी । अनन्ता भाविनी भाव्या भवा भव्या सदगतिः ॥ ४ ॥ शम्भुपत्नी देवमाता चिन्तारत्ना प्रिया सदा । सर्वविद्या दक्षकन्या दक्षयज्ञविनाशिनी ॥ ५ ॥ अर्पणा चैकपर्णा च पाटला पाटलावती । पट्टाम्बरपरीधाना कलमञ्जीररञ्जिनी ॥ ६ ॥ अमेयाविक्रमा क्रूरा सुन्दरी कुलसुन्दरी ॥ वनदुर्गा च मातङ्गी मतङ्गमुनिपूजिता ॥ ७ ॥ ब्राह्मी माहेश्वरी चैन्द्री कौमारी वैष्णवी तथा । चामुण्डा चैव वाराही लक्ष्मीश्च पुरुषाकृतिः ॥ ८ ॥ विमलोत्कर्षिणी ज्ञाना क्रिया सत्या च वाक्प्रदा । बहुला बहुलप्रेमा सर्ववाहनवाहना ॥ ९ ॥ निशुम्भशुम्भहनिनी महिषासुरमर्दिनी । मधुकैटभमहन्त्री च चण्डमुण्डविनाशिनी ॥ १० ॥ सर्वाऽसुरविनाशा च सर्वदानवघातिनी । सर्वशास्त्रमयी विद्या सर्वास्त्रधारिणी तथा ॥ ११ ॥ अनेकशस्त्रहस्ता च अनेकास्त्रविधारिणी । कुमारी चैव कन्या च कौमारी युवती यतिः ॥ १२ ॥ अप्रौढा चैव प्रौढा च वृद्धमाता बलप्रदा । य इदं च पठेत्स्तोत्रं दुर्गानामशताष्टकम् ॥ १३ ॥ नासाध्यं विद्यते देवि त्रिषु लोकेषु पार्वती । धनं धान्यं सुताज्जयां हयं हस्तिनमेव च ॥ १४ ॥ चतुर्वर्ग तथा चान्ते विन्देन्मुक्तिं च शाश्वतीम् । कुमारीः पूजयित्वा च ध्यात्वा देवी सुरेश्वरीम् ॥ १५ ॥ पूजयेत्परया भक्त्या पठेन्नामशताष्टकम् । तस्य सिद्धिर्भवेद्देवि सर्वैः सुरवैरपि ॥ १६ ॥ राजानो दासतां यान्ति राज्यश्रियमवाप्नुयात् । गोरोचनालक्तककुंकुमेन सिन्दूरकर्पूरमधुत्रयेण । विलिख्यं यन्त्रं विधिना विधिज्ञो भवेत्सदाधारणतः पुरारिः ॥ १७ ॥ भौमामायां निशाभागे चन्द्रेशतभिषां गते । विलिख्यं प्रपठन्स्तोत्रं स भवेत्संपदो पदम्" ॥ १८ ॥

इति श्री विश्वसारतन्त्रे दुर्गाऽष्टोत्तर नामात्कमस्तोत्रं समाप्तम् ॥

अथ मार्कण्डेयपुराणोक्तचण्डिकास्तोत्रप्रारम्भः ॥

या देवी खड्गहस्ता सकलजनपदव्यापिनी विश्वदुर्गा श्यामाङ्गी शुक्लपाशा द्विजगणगणिता ब्रह्मदेहार्धवासा । ज्ञानानां साधयित्री यतिगिरिगमनज्ञानदिव्यप्रबोधा सा देवी दिव्यमूर्तिः प्रदहतु दुरितं चण्डमुण्डा प्रचण्डा ॥ १ ॥ ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं चर्ममुण्डे शवगमनहते भीषणे भीमवक्त्रे क्रां क्रीं क्रूं क्रोधमूर्तिर्विकृतकुचमुखे रौद्रदंष्ट्रांकराले । कं कं कङ्कालधारि भ्रमसि जगदिदं भक्षयन्ती ग्रसन्ती हुंकारं चोच्चरन्ती प्रदहतु० ॥ २ ॥ ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं रुद्ररूपे त्रिभुवननमिते पार्शहस्ते त्रिनेत्रे रां रीं रूं रंगरंगे किलिकिलितरवे शूलहस्ते प्रचण्डे । लां लीं लूं लम्बजिह्वे हसति कहकहाशुद्धघोराट्टहासे कङ्काली कालरात्रिः प्रदहतु० ॥ ३ ॥ ॐ घ्रां घ्रीं घ्रूं घोररूपे घघघघघटितैर्घुर्घुरारावघोरे निर्मांसी शुष्कजंघे पिबतु नरवसाधूम्रधूम्रायमाने । ॐ द्रां द्रीं द्रूं द्रावयन्ती सकलभुवि तथा यक्षगन्धर्वनागान्क्षां क्षीं क्षूं क्षोभयन्ती प्रदहतु० ॥ ४ ॥ भ्रां भ्रीं भ्रूं चण्डगर्वे हरिहरनमिते रुद्रमूर्तिश्च कीर्तिश्चान्द्रादित्यौ

च कर्णौं जडमुकुडशिरोवेष्टिता केतुमाला । स्त्रकसर्वौ चोरगेन्द्री शशिकरणनिभातारकाहारकण्ठा सा देवी दिव्यमूर्तिः प्रदहतु० ॥५॥ ॐ खं खं खं खड्गहस्ते वरकनकनिभे सूर्यकान्ते स्वतेजोविद्युज्ज्वालावलीनां नवनिशितमहाकृत्तिका दक्षिणे च । वामे हस्ते कपालं वरविमलसुरापूरितं धारयन्ती सा देवी दिव्यमूर्तिः प्र० ॥६॥ ॐ हुं हुं फट् कालरात्रि रु रु सुरमथनी धूम्रमारी कुमारी ह्रां ह्रीं ह्रूं हत्तिशोरौक्षपितुकिलकिलाशब्द अट्टाट्टहासे । हाहाभूतप्रसूते किलकिलितमुखा कलियन्ती ग्रसन्ती हुंकार चोच्चरन्ती प्र० ॥७॥ ॐ भृङ्गी काली कपालीपरिजनसहिते चण्डिचामुण्डनित्या रौंरौं रींकारनित्ये शशिकरधवले कालकूटे दुरन्ते । हुंहुंहुंकारकारी सुरगणनमिते कालाकारी विकारी वश्ये त्रैलोक्यकारी० ॥८॥ ॐ वन्दे दण्डप्रचाण्डा डमरुरुणिमणिष्टोपटङ्कारघण्टैर्नृत्यन्ती याट्टपातैरुटरुटपटविभवैर्निर्मला मन्त्रमाला । सुक्षी कुक्षी वहन्ती खरखरितसखाचार्चिनी प्रेतमालामुच्चैस्तैश्चाट्टसैर्घुरुघुरितरवा चर्म मुण्डा प्रचण्डा ॥९॥ ॐ त्वं ब्राह्मी त्वं च रौद्री शवशिखिगमना त्वं च देवी कुमारी त्वं चक्री चक्रहस्ता घुरघुरितरवा त्वं वराह स्वरूपा । रौद्रे त्वं चर्ममुण्डा सकलभुवि परे संस्थिते स्वर्गमार्गे पाताले शैलभृङ्गे हरिहरनमिते देवि चण्डे नमस्ते ॥१०॥ ॐ रक्ष त्वं मुण्डधारि गिरिवरविवरे निर्झरे पर्वते वा संग्रामे शत्रुमध्ये विशविश भविके संकटे कुत्सिते वा । व्याघ्रे चौरे च सर्पेष्युदधिभुवि तथा वह्निमध्ये च दुर्गे रक्षेत्सा । दिव्यमूर्तिः प्रदहतुदुरितं चण्डमुण्डा प्रचण्डा ॥११॥ इत्येवं बीजमन्त्रैः स्तवनमतिशिवं पातकव्याधिनाशं प्रत्यक्षं दिव्यरूपं ग्रहगणमथनं मर्दनं शाकिनीनाम् ॥ इत्येवं वेगवेगं सकलभयहरं मन्त्रशक्तिश्च नित्यं मन्त्राणां स्तोत्रकं यः पठति स लभते प्रार्थितां मन्त्रसिद्धिम् ॥१२॥

इति श्रीमार्कण्डेयविरचितं चण्डिकास्तोत्रं समाप्तम् ।

अथ मार्कण्डेयप्रोक्तलघुदुर्गासप्तशतीस्तोत्र प्रारम्भः ।

ॐ वीं वीं वीं वेणुहस्ते स्तुतिविधवटुके हां तथा तानमाता स्वानन्दे नन्दरूपे अविहतनिरुते भक्तिदे मुक्तिदे त्वम् । हंसः सोहं विशाले वलयगतिहसे सिद्धिदे वाममार्गे ह्रीं ह्रीं ह्रीं सिद्धलोकेकषकष विपुले वीरभद्रे नमस्ते ॥१॥ ॐ ह्रींकारं चोच्चरन्ती मम हरतु भयं चर्ममुण्डे प्रचण्डे खां खां खां खड्गपाणे ध्रकध्रकध्रकिते उग्ररूपे स्वरूपे । हुंहुंहुंकारनादे गगनभुवि तथा व्यापिनी व्योमरूपे हंहंहंकारनादे सुरगणनमिते राक्षसानां निहन्त्रि ॥२॥ ऐं लोके कीर्तयन्ती मम हरतु भयं चण्डरूपे नमस्ते घ्रां घ्रां घ्रां घोररूपे घघघघवटिते घर्घरि घोररावे । निर्मासे काकजंघे घसितनखनखाधूम्रनेत्रे त्रिनेत्रे हस्ताब्जे शूलमुण्डे कुलकुलकुकुले श्रीमहेशी नमस्ते ॥३॥ क्रीं क्रीं क्रीं ऐं कुमारी कुहकुहमखिले कोकिले मानुरागे मुद्रासंज्ञत्रिरेखां कुरुकुरु सततं श्रीमहामारि गुह्ये । तेजोंगे सिद्धिनाथे मनुपवनचले नैव आज्ञानिधाने ऐंकारे रात्रिमध्ये शयितपशुजने तन्त्रकान्ते नमस्ते ॥४॥ ॐ व्रां व्रीं व्रुं व्रूं कवित्ये दहनपुरगते रुक्मरूपेण चक्रे त्रिः शक्त्या युक्तवर्णादिककरनमिते दादिवंपूर्ववर्णे । ह्रींस्थाने कामराजे ज्वलज्वल ज्वलिते कोशितैस्तास्तुपत्रे स्वच्छन्दं कष्टनाशे सुरवरवपुषे गुह्यं मुण्डे नमस्ते ॥५॥ ॐ घ्रां घ्रीं घ्रूं घोरतुण्डे घघघघघघेघर्घरान्यांघ्रिघोषे ह्रीं क्रीं द्रं द्रौं च चक्रे र र र र रमिते सर्वबोधप्रधाने । द्रीं तीर्थे द्रीं

तज्येष्ठे जुगजुगजजुगे म्लेच्छदे कालमुण्डे सर्वांगे रक्तघोरामथनकरवरे वज्रदण्डे नमस्ते ॥ ६ ॥ ॐ क्रां क्रीं क्रूं वामभित्ते गगनगडगडे गुह्ययोन्याहि मुण्डे वज्रांजे वज्रहस्ते सुरपतिवरदे मत्तमातङ्गरूढे । सूतेजे शुद्धदेहे ललललललिते छेदिते पाशजाले कुण्डल्याकाररूपे वृषवृषभहरे ऐन्द्रि मातर्नमस्ते ॥ ७ ॥ ॐ हुंहुंहुंकारनादे कषकषवसिनी मांसि वैतालहस्ते सुंसिद्धर्षैः सुसिद्धिर्ढढढढढढः सर्वभक्षी प्रचण्डी । जूं सः सौं शान्तिकर्मे मृतमृतनिगडे निःसमे सीसमुद्रे देवि त्वं साधकानां भवभयहरणे भद्रकाली नमस्ते ॥ ८ ॥ ॐ देवि त्वं तुयहस्ते करघृतपरिधे त्वं वराहस्वरूपे त्वं ऐन्द्री त्वं कुबेरी त्वमसि च जननी त्वं पुराणी महेन्द्री । ऐं ह्रीं ह्रींकारभूते अतलतलतले भूतले स्वर्गमार्गे पाताले शैलभृङ्गे हरिहरभुवने सिद्धिचण्डी नमस्ते ॥ ९ ॥ हंसि त्वं शौंडदुःखं शमितभवभये सर्वविघ्नान्तकार्ये गांगींगूंगैंषङ्गे गगनगटितटे सिद्धिदे सिद्धिसाध्ये क्रूंक्रूंमुद्रागजांशो गसपवनगते त्र्यक्षरे वै कराले ॐ ह्रींहूंगांगणेशी गजमुखजननी त्वं गणेशी नमस्ते ॥ १० ॥

इति मार्कण्डेयकृतलघुसप्तशतीदुर्गास्तोत्रं समाप्तम् ।

रुद्रचण्डीपाठ :

(उक्तं च रुद्रयामले)

श्रीशङ्कर उवाच :

चण्डिकाहृदयं न्यस्य शरणं यः करोत्यपि । अनन्तफलमाप्नोति देवीचण्डीप्रसादतः । घोरचण्डी महाचण्डी चण्डमुण्डविखण्डिनी ॥ १ ॥ चतुर्वक्त्रा महावीर्य्या महादेवीविभूषिता । रक्तदन्ता वरारोहा महिषासुरमर्दिनी । तारिणी जननी दुर्गा चण्डिका चण्डविक्रमा ॥ २ ॥ गुह्यकाली जगद्धात्री चण्डी च यामलोद्भवा । श्मशानवासिनी देवी घोरचण्डी भयानका ॥ ३ ॥ शिवा घोरा रुद्रचण्डी महेशी गणभूषिता । जाह्नवीं परमा कृष्णा महात्रिपुरसुन्दरी ॥ ४ ॥ श्रीविद्या परमाविद्या चण्डिका वैरिमर्दिनी । दुर्गा दुर्गशिवा घोरा चण्डहस्ता प्रचण्डिका ॥ ५ ॥ माहेशी बगला देवी भैरवी चण्डविक्रमा । प्रमथैर्भूषिता कृष्ण चामुण्डा मुण्डमर्दिनी ॥ ६ ॥ रणखण्डा चन्द्रघण्टा रणे रामवरप्रदा । मारणी भद्रकाली च शिवा घोरा भयानका ॥ ७ ॥ विष्णुप्रिया महामाया नन्दगोपगृहोद्भवा । मङ्गला जननी चण्डी महाक्रुद्धा भयङ्करी ॥ ८ ॥ विमला भैरवी निद्रा जातिरूपा मनोहरा । तृष्णा निद्रा क्षुधा माया शक्तिर्मायामनोहरा ॥ ९ ॥ तस्यै देव्यै नमो या वै सर्वरूपेण संस्थिता । नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥ १० ॥ इमां चण्डीं जगद्धात्रीं ब्राह्मणस्तु सदा पठेत् । नान्यस्तु सम्पठेद्देवि पठने ब्रह्महा भवेत् ॥११ ॥ यः शृणोति धरायां च मुच्यते सर्वपातकैः । ब्रह्महत्या च गोहत्या स्त्रीवधोद्भवपातकम् ॥ १२ ॥ श्वश्रूगमनपापं च कन्यागमनंपातकम् । तत्सर्वं पादकं दुर्गे मातुर्गमनपातकम् ॥ १३ ॥ सुतस्त्रीगमनं चैव यद्यत्पापं प्रजायते । परदाराकृतं पापं तत्क्षणादेव नश्यति ॥ १४ ॥ जन्म जन्मान्तरात्पापाद्गुरुहत्यादिपातकम् । मुच्यते मुच्यते देवि गुरुपत्नीसुसंगमात् ॥ १५ ॥ मनसा वचसा पापं यत्पापं ब्रह्महिंसने । मिथ्याजन्यं च यत्पापं तत्पापं नश्यति क्षणात् ॥ १६ ॥ श्रवणं पठनं चैव यः करोति धरातले । स धन्यश्च कृतार्थश्च राजा राजाधिपो भवेत् ॥ १७ ॥ रविवारे यदा चण्डीं पठेदागमसंमताम् । नवावृत्तिफलं तस्य जायते

नात्र संशयः ॥ १८ ॥ सोमवारे यदा चण्डीं पठेद्यस्तु समाहितः । सहस्रवृत्तिपाठस्य फलं जानीहि सुव्रत ॥ १९ ॥ कुजवारे जगद्धात्रीं पठेदागमसंमताम् । शतावृत्तिफलं तस्य बुधे लक्षफलं ध्रुवम् ॥ २० ॥ गुरौ यदि महामाये लक्षयुग्मफलं ध्रुवम् । शुक्रे देवि जगद्धात्रि चण्डीपाठेन शाङ्करी ॥ २१ ॥ ज्ञेयं तुल्यफलं दुर्गे यदि चण्डीसमाहितः । शनिवारे जगद्धात्री कोट्यावृत्तिफलं ध्रुवम् ॥ २२ ॥ अत एव महेशानि यो वै चण्डी समभ्यसेत् । स सद्यश्च कृतार्थः स्याद्राजराजधिपो भवेत् ॥ २३ ॥ आरोग्यं विजयं सौख्यं वस्त्ररत्नप्रवालकम् । पठनाच्छ्रवणाच्चैव जायते नात्र संशयः ॥ २४ ॥ धनधान्यं प्रवालं च वस्त्रं रत्नविभूषणम् । चण्डीश्रिवणमात्रेण कुर्यात्सर्वं महेश्वरी ॥ २५ ॥ यः करिष्यत्यवि ज्ञाय रुद्रयामलचण्डिकाम् । पापैरेतैः समायुक्तो रौरवं नरकं व्रजेत् ॥ २६ ॥ अश्रद्धया च कुर्वन्ति ते च पातनिको नराः । रौववं नरकं कुण्डं कृमिकुण्डं मलस्य वै ॥ २७ ॥ शुक्रस्य कुण्डं स्त्रीकुण्डं याति ते ह्यचिरेण वै ॥ ततः पितृगणैः सार्ध विष्टायां जायते कृमिः ॥ २८ ॥ शृणु देवि महामाये चण्डीपाठं करोति यः । गङ्गायां चैव यत्पुण्यं काश्यां विश्वेश्वराग्रतः ॥ २९ ॥ प्रयागे मुण्डने चैव हरिद्वारे हरेर्गृहे । तस्य पुण्यं भवेद्देवि सत्यं दुर्गे रहे शिवे ॥ ३० ॥ त्रिगयायां त्रिकाश्यां वै यच्च पुण्यं समुत्थितम् । तच्च पुण्यं तच्च पुण्यं न संशयः ॥ ३१ ॥

अन्यच्च :

महाचण्डी शिवा घोरा भया भीमा भयानका । काञ्चनी कमला विद्या महारो गविमर्दिनी ॥ ३२ ॥ गुह्यचण्डी घोरचण्डी चण्डी त्रैलोक्यदुर्लभा । देवानां दुर्लभा चण्डी रुद्रयामलसम्मता ॥ ३३ ॥ अप्रकाश्या महादेवी प्रिया रावणमर्दिनी । मत्स्यप्रिया मांसरता मत्स्यमांसबलिप्रिया ॥ ३४ ॥ मदमत्ता महानित्या भूतप्रमथङ्गता । महाभाग महारामा धान्यदा धनरत्नदा ॥ ३५ ॥ वस्त्रदा मणिराज्यादिसदाविषयवर्धिनी । मुक्तिदा सर्वदा चण्डी महापत्तिविनाशिनी ॥ ३६ ॥ इमां हि चण्डीं पठते मनुष्यः शृणोति भक्त्या परमां शिवस्य ॥ चण्डीं धरण्यामतिपुण्ययुक्तां स वै न गच्छेत्परमन्दिरं किम् ॥ ३७ ॥ जप्यं मनोरथं दुर्गे तनोति धरणीतले । रुद्रचण्डीप्रसादेन किं न सिध्यति भूतले ॥ ३८ ॥

अन्यच्च :

रुद्रध्येया रुद्ररूपा रुद्राणी रुद्रवल्लभा । रुद्र शक्ती रुद्ररूपा रुद्राननसमन्विता ॥ १ ॥ शिवचण्डी महाचण्डी शिवप्रेतगणान्विता । भैरवी परमा विद्या महाविद्या च षोडशी ॥ २ ॥ सुन्दरी परमा पूज्या महात्रिपुरसुन्दरी । गुह्यकाली भद्रकाली महाकालविमर्दिनी ॥ ३ ॥ कृष्णा तुष्णास्वरूपा सा जगन्मोहनकारिणी । अतिमात्रा महालज्जा सर्वमङ्गलदायिनी ॥ ४ ॥ घोरतन्द्री भीमरूपा भीमा देवी मनोहरा । मङ्गला बगला सिद्धिदायिनी सर्वदा शिवा ॥ ५ ॥ स्मृतिरूपा कीर्तिरूपा योगीन्द्रैरपि सेविता । भयानका महादेवी भयदुःखविनाशिनी ॥ ६ ॥ चण्डिका शक्तिहस्ता च कौमारी सर्व कामदा । वाराही च वाराहास्या इन्द्राणी शक्रपूजिता ॥ ७ ॥ माहेश्वरी महेशस्य महेशगणभूषिता ।

चामुण्डा नारसिंही च नृसिंहरिपुमर्द्दिनी ॥ ८ ॥ सर्वशत्रुप्रशमनी सर्वारोग्यप्रदायिनी । इति सत्यं महादेवि सत्यं सत्यं वदाम्यहम् ॥ ९ ॥ नैव शोको नैव रोगो नैव दुःखं भयं तथा । आरोग्यं मङ्गलं नित्यं करोति शुभमङ्गलम् ॥ १० ॥ महेशानि वरारोहे ब्रवीमि सदिदं वचः । अभक्ताय न दातव्यं मम प्राणाधिकं शुभम् ॥ ११ ॥ तव भक्त्या प्रशान्ताय शिवविष्णुप्रियाय च । दद्यात्कदाचिद्देवेशि सत्यं सत्यं महेश्वरि ॥ १२ ॥ अनन्तफलमाप्नोति शिवचण्डीप्रसादतः । अश्वमेधं वाजपेयं राजसूयशतानि च ॥ १३ ॥ तुष्टाश्च पितरो देवस्तथा च सर्वदेवताः । दुर्गेयं मृन्मयी ज्ञानं रुद्रयामलपुस्तकम् ॥ १४ ॥ मन्त्रमक्षरसंज्ञानां करोत्यपि नराधमः । अत एव महेशानि किं वक्ष्ये तव सन्निधौ ॥ १५ ॥ लम्बोदराधिकश्चण्डीपठनाच्छ्रवणात्तु यः । तत्वमस्यादिवाक्येन मुक्तिमाप्नोति दुर्लभाम्'' ॥ १६ ॥

इति श्रीरुद्रयामले देवीश्वरसंवादे रुद्रचण्डी समाप्ता ।

इदं पञ्चाङ्गमखिलं श्रीदुर्गाया रहस्यकम् । सर्वसिद्धिप्रदं गुह्यं सर्वाशापरिपूरकम् ॥ १ ॥ गुह्यं मन्त्ररहस्यं तु तव भक्त्या प्रकाशितम् ॥ अभक्ताय न दातव्यमित्याज्ञा पारमेश्वरी'' ॥ २ ॥

इति श्रीमन्त्रमहार्णवे मध्यखण्डे श्रीदुर्गातन्त्रे द्वितीयस्तरंगः ॥ २ ॥

तृतीय तरंग

दशमहाविद्यापद्धति

(दशमहाविद्या यथा चामुण्डातन्त्रे)

चामुण्डा तन्त्र में दशमहाविद्या के सम्बन्ध में इस प्रकार लिखा है :

" काली तारा महाविद्या षोडशी भुवनेश्वरी। भैरवी छिन्नमस्ता च विद्या धूमावती तथा।।१।। बगला सिद्धविद्या च मातङ्गी कमलात्मिका। एता दशमहाविद्याः सिद्धविद्याः प्रकीर्तिताः" ।।२।।

तत्रादौ पुरश्चरणात् पूर्वकृत्यम्।

वहाँ पुरश्चरण से पहले पूर्वकृत्य इस प्रकार करना चाहिए :

चन्द्रतारादिवलान्विते सुदिने सुमुहूर्ते तीर्थपुण्यक्षेत्रनिर्जनस्थानादौ अनुष्ठानयोग्य–भूमिपरिग्रहणं कृत्वा तत्र मार्जनदहनखननसंप्लावनादिभिः स्मृत्युक्तैः शोधनोपायैः शुद्धिं सम्पाद्य जपस्थानस्य चतुर्दिक्षु क्रोशं क्रोशद्वयं वा क्षेत्रमाहारादिविहारार्थं परिकल्प्य जपस्थानभूमौ कूर्मशोधनं कुर्यात्। ततः पुरश्चरणात् प्राक् तृतीयदिवसे क्षौरादिकं विधाय ततः प्रायश्चित्तांगतोविष्णुपूजाविष्णुतर्पणविष्णुश्राद्धं होमं चान्द्रायणादिव्रतं च कुर्यात्। व्रताशक्तौ गोदानं द्रव्यदानं च कुर्यात्। यदि सर्वकर्मणामशक्तौ ततः प्रायाश्चितांगभूतपञ्चगव्यप्राशनं कुर्यात्।

चन्द्रमा और नक्षत्रों के बल से मुक्त उत्तम दिन, उत्तम मुहूर्त में तीर्थ, पुण्यक्षेत्र या निर्जन स्थान में अनुष्ठान के योग्य भूमि ग्रहणकर वहाँ स्मृत्ति में कथित मार्जन, दहन, खनन तथा संप्लावन आदि शोधन के उपायों से शुद्धि करके जपस्थान के चारो ओर एक कोश या दो कोश का क्षेत्र आहार तथा विहार के लिये परिकल्पित करके जपस्थानभूमि पर कूर्म का शोधन करें। इसके बाद पुरश्चरण से पहले तीसरे दिन क्षौर आदि करके प्रायश्चित के अन्तर्गत विष्णुपुजा, विष्णुतर्पण, विष्णुश्राद्ध, होम तथा चान्द्रायण व्रत करें। व्रत में अशक्त होने पर गोदान और द्रव्यदान करें। यदि सभी कर्मों में अशक्तता हो तो प्रायश्चित्तांगभूत पञ्चगव्य का प्राशन करें।

इसमें मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ यत्त्वगस्थिगतं पापं देहे तिष्ठति मामके।प्राशनात् पञ्चगव्यस्य दहत्यग्निरिवेन्धनम्।।१।।

मूलं पठित्वा प्रणवेन पञ्चगव्यं पिवेत्। तद्दिने उपवासं कृत्वा अशक्तश्चेत् पयः पानं हविष्यान्नेन एकभक्तव्रतम्। ततः पुरश्चरणात् पूर्वदिने स्वदेहशुद्ध्यर्थं पुरश्चरणाधिकारप्राप्त्यर्थं चायुतगायत्रीजपं कुर्यात्। तद्यथा

मूलमन्त्र पढ़कर पञ्चगव्य का पान करें। उस दिन उपवास करके अशक्त हो तो दुग्ध पान या हविष्यान्न भोजन से एककालभोगी व्रत का पालन करें। इसके बाद पुश्चरण से पूर्व दिन अपनी देह की शुद्धि के लिए तथा पुश्चरण के अधिकार की प्राप्ति के लिए दश हजार गायत्री का इस प्रकार जप करें।

देशकालौ संकीर्त्य "ज्ञाताज्ञातपापक्षयार्थं करिष्यमाण अमुकदेवी पुरश्चरणाधिकारर्थ–ममुकमन्त्रस्य सिद्ध्यर्थं च गायत्र्ययुतं जपमहं करिष्ये।"

इससे संकल्प करके दश हजार गायत्री का जप करें।

तर्पणम् : ततो गायत्र्याचार्यऋषिं विश्वामित्रं तर्पयामि १ गायत्रीछन्दस्तर्पयामि २ सवितारं देवं तर्पयामि ३ इति तर्पणं कुर्यात्। ततोऽस्यां रात्रौ देवतोपास्ति शुभाशुभस्वप्नं च विचारयेत्।

तर्पण : इसके बाद "गायत्र्याचार्य ऋषिं विश्वामित्रं तर्पयामि १ गायत्री छन्दस्तर्पयामि २ सवितारं देवं तर्पयामि ३ इससे तर्पण करें। इसके बाद देवता की उपासना तथा शुभाशुभ स्वप्न का इस प्रकार विचार करें।

स्नानादिकं कृत्वा हरिपादाम्बुजं स्मृत्वा कुशासनादिशय्यायां यथासुखं स्थित्वा वृषभध्वजं प्रार्थयेत्।

स्नान आदि करके विष्णु भगवान् के चरणों का स्मरण करके कुशासन आदि की शय्या पर सुखपूर्वक बैठकर वृषमध्वज की प्रार्थना करें। उसमें मन्त्र यह है।

"ॐ भगवन्देवदेवेश शूलभृद्वृषवाहन। इष्टानिष्टं समाचक्ष्व मम सुप्तस्य शाश्वत्।।१।। नमोजाय त्रिनत्राय पिंगलाय महात्मने। वामाय विश्वरूपाय स्वप्नाधिपतये नमः।।२।। स्वप्ने कथय मे तथ्यं सर्वकार्येष्वशेषतः। क्रियासिद्धिं विधास्यामि त्वत्प्रसादान्महेश्वर"।।३।। इति मन्त्रेण अष्टोत्तरशतवारं शिवं प्रार्थ्य निद्रा कुर्यात्। ततो निशि स्वप्नं दृष्टं प्रातर्गुरवे विनिवेदयेत्। अथ वा स्वयं स्वप्नं विचारयेत्। इति पूर्वदिनकृत्यम्।

"ॐ भगवन्देवदेवेश शूलभृद्वृषवाहन.................त्वत्प्रसादान्महेश्वर"।।३।।

इस मन्त्र से एक सौ आठ बार शिव की प्रार्थना करके सो जाय। इसके अनन्तर रात में जो स्वप्न देखे उसे गुरु से निवेदित करें अथवा स्वयं ही स्वप्न[1] का विचार करें। इति पूर्वदिन कृत्य।

अथ प्रातःकृत्यम्।

पुरश्चरणदिवसे श्रीमत्साधकेन्द्रः प्रातःकालात्पूर्वं दण्डद्वयात्मके ब्राह्मे मुहूर्ते चोत्थाय निद्रास्थानाद्बहिर्निर्गत्य हस्तौ पादौ प्रक्षाल्याचम्य रात्रिवस्त्रं परित्यज्यान्यवस्त्रं परिधाय शुद्धासन उपविश्य स्वशिरसि सहस्रदलपंकजे कोटीन्दुप्रकाशपीठे श्रीगुरुं ध्यायेत्।

पुरश्चरण के दिन साधक प्रातःकाल से दो दण्ड पूर्व ब्राह्ममुहूर्त्त में उठकर शयनस्थान से बाहर जाकर हाथ पैर धोकर आचमन करके रात का वस्त्र छोडकर अन्य वस्त्र धारण करके शुद्ध आसन पर बैठकर अपने शिर के सहस्रदल कमल में करोडों चन्द्रमा के प्रकाशपीठ में श्रीगुरु का इस प्रकार ध्यान करें।

---

१. लिङ्ग चन्द्रार्कयोर्बिम्बं भारतीं जाह्नवीं गुरुम्। रक्ताकाब्धितरणं युद्धे जयोनलसमर्चनम्। शिखिहंसरथागाढ्ये रथे स्थानं च मोहनम्। आरोहणं सारसस्य धरालाभश्च निम्नगा। प्रासादः स्यन्दनः पद्मं छत्रं कन्या द्रुमः फली। नागो दीपो हयः पुष्पं बृषमोश्वश्च पर्वतः। सुराध्ये ग्रहास्तारा नारी सूर्योदयोप्सराः। हर्म्य शैलविमानानामारोहो गगने गमः। मद्यमांसादनं विष्टालेपो रुधिर सेचनम्। दध्योदनादनं राज्याभिषैको गोवृषध्वजाः। सिहं सिंहासनं शङ्खो वादित्रं रोचनादिभिः। चन्दनं तर्पणं चैषां स्वप्नेहि दर्शनं शुभम्। तैलाभ्यक्तः कृष्णवर्णो नग्नोनार्गतवायसौ। शुष्कः कण्टकिवृक्षश्च चाण्डानी दीर्घकन्धरः। प्रासादस्तलहीनश्च नेते स्वप्ने शुभावहा। इति विचारयेत्।

ध्यान : ॐ आनन्दमानन्दकरं प्रसन्नं ज्ञानस्वरूपं निजबोधरूपम्। योगीन्द्रमीड्यं भवरोगवैद्यं श्रीमद्गुरुं नित्यमहं भजामि।।१।। इति ध्यात्वा मानसोपचारैः सम्पूज्य "प्रातःप्रभृति सायान्तं सायादिप्रातरततः। यत्करोमि जगन्नाथ तदस्तु तव पूजनम्।।१।। इत्यनेन मन्त्रेण सर्वं गुरवे निवेद्य तदाज्ञां गृहीत्वा मूलमन्त्रदेवतायाः प्रातःस्मरणं कुर्यात्। तथा च : "प्रातः स्मरामि शरदिन्दुकरोज्ज्वलाभां सद्रत्नवन्मकरकुण्डलहारभूषाम्। दिव्यायुधोर्जितसुनीलसहस्रहस्तां रक्तोत्पलाभचरणां भवतीं परेशाम्।।१।। प्रातर्नमामि महिषासुरचण्डमुण्डशुम्भासुरप्रमुखदैत्यविनाशदक्षाम्। ब्रह्मेन्द्ररुद्रमुनिमोहनशीललीलां चण्डीं समस्तसुरमूर्ति मनेकरूपाम्।।२।। प्रातर्भजामि भजतामभिलाषदात्रीं धात्रीं समस्तजगतां दुरितापहन्त्रीम्। संसारबन्धनविमोचनहेतुभूतां मायां परां समधिगम्य परस्य विष्णोः।।३।। श्लोकत्रयमिदं देव्याश्चण्डिकायाः पठेन्नरः। सर्वान्कामानवाप्नोति विष्णुलोके महीयते।।४।।" इति प्रातः स्मरणं कृत्वा गुरुमन्त्रदेवतात्मनामैक्यं विभाव्य अजपाजपं गुरं समर्पयेत्।

ॐ आनन्दभानन्दकरं.........भजामि' से ध्यान करके मानसोपचारों से पूजा करके: "प्रातः प्रभृति सायन्तं सायादिप्रातरतः। यत्करोमि जगन्नाथ तदस्तु तव पूजनम्।।१।। " इस मन्त्र से सब कुछ गुरुको निवेदित करके उनसे आज्ञा लेकर मूलमन्त्र के देवता का इस प्रकार प्रातःस्मरण करें : "प्रातः स्मरामि शरदिन्दु करोज्वलाभां सद्रत्नवन्मकरकुण्डलहारभूषाम्। दिव्यायुधोर्जित सुनील सहस्रहस्तां रक्तोत्पलाभ चरणां भवतीं परेशाम्।।१।। प्रातर्नमामि महिषासुर चण्ड मुण्ड शुम्भासुर प्रमुख दैत्य विनाश दक्षाम्। ब्रह्मेन्द्र रुद्र मुनिमोहनशीललोलां चण्डीं समस्त सूरमूर्तिमनेक रूपाम्।।२।। प्रातर्भजामि भजतामभिलाषदात्रीं धात्रीं समस्त जगतां दुरितापहन्त्रीम्। संसार बन्धन विमोचन हेतुभूतां मायां परां समधिगम्म परस्य विष्णोः।।३।।" चडिका देवी के इन तीनों श्लोकों को जो मनुष्य पढ़े वह सब अभीष्टों को प्राप्त करता है और विष्णुलोक में प्रतिष्ठित होता है। इससे प्रातः स्मरण करके गुरु, मन्त्र, देवता और स्वयं की एकता को भावना करके अजपाजप गुरु को इस प्रकार समर्पित करें :

ॐ आधारे लिङ्गनाभौ हृदयसरसिजे तालुमूले ललाटे द्वे पत्रे षोडशारे द्विदशदशदले द्वादशार्द्धे चतुष्के। वासान्त वालमध्ये डफकटसहिते आदियुक्ते स्वराणां हंक्षं तत्त्वार्थयुक्तं सकलदलगतं वर्णरूपं नमामि।।१।। षट्शतं तु गणेशस्य षट्सहस्रं प्रजापते। षट्सहस्रं गदापाणेः षट्सहस्रं पिनाकिनः।।२।। आत्मनस्तत्सहस्रं च सहस्रं परमात्मनः। सहस्रं श्रीगुरुभ्यश्च एतानि विनियोजयेत्।।३।। हंसो गणेशो विधिरेव हंसो हंसो हरिर्हंसमयश्च शम्भुः। हंसोपि जीवो परमात्महंसो हंसो गुरुर्हंसमयश्च शम्भुः।।४।।

इति पठित्वा अहोरात्रोच्चारित षट्शताकिमेकविंशतिसहस्रमुच्छवासनिश्वासात्मक-मजपागायत्रीमन्त्रजपं श्रीगणेशब्रह्मविष्णुरुद्रजीवात्मप रमात्मश्रीगुरुभ्यो यथासंख्यं समर्पयामि। इत्युक्त्वा अष्टोत्तरशतावृतिं हंसगायत्रीं जपेत्।

"ॐ आधारे लिङ्गनाभौ हृदयसरसिजे तालुमूले ललाटे.......... शम्भुः।४।।" इसे पढ़कर 'रात दिन चलने वाले इक्कीस हजार छ सौ श्वास के अनुसार उतनी ही गायत्री का जप श्री गणेश, ब्रह्मा, विष्णु, रुद्र, जीव, आत्मा, परमात्मा, श्रीगुरु के लिए यथासंख्या समर्पित करता हूँ' यह कहकर एक सौ आठ हंस गायत्री का जप करें। उसमें मन्त्र यह है :

हरिः ॐ हंसो हंसस्य विद्महे हंसो हंसस्य धीमहि। हंसो हंसः प्रचोदयात्। इसका जप करके :

त्रैलोक्यचैतन्यमयी त्रिशक्ते श्रीविश्वमातर्भवदाज्ञयैव। प्रातः समुत्थाय तव प्रियार्थं संसारयात्रामनुवर्तयामि।।१।।" इति संप्रार्थ्य भूमिं प्रार्थयेत्।

इससे प्रार्थना करके भूमि की प्रार्थना करें। उसमें मन्त्र यह है :

"ॐ समुद्रमेखले देवि पर्वतस्तनमण्डले। विष्णुपत्नि नमस्तुभ्यं पादस्पर्शं क्षमस्वमें"।।१।।

"ॐ समुद्रमेखलेदेवि पर्वतस्तनमण्डले। विष्णुपत्नि नमसतुभ्यं पादस्पर्शं क्षमस्व मे"।। इससे भूमि की प्रार्थना करके श्वास के अनुसार भूमि पर पैर रखकर बाहर जायें।

इति प्रातःकृत्यं

अथ शौचक्रियाः :

ग्रामाद्बहिः नैर्ऋत्यकोणे जनवर्जिते उत्तराभिमुखः अनुपानत्कः वस्त्रेण शिरः प्रावृत्य मलमोचनं कृत्वा मृत्तिकया जलेन यथासंख्यं शौचं कृत्वा हस्तौ पादौ प्रक्षाल्य गण्डषं कृत्वा दन्तधावनं कुर्यात्। तद्यथाः आम्रचम्पकापामार्गाद्यन्यतमं द्वादशांगुलं दन्तकाष्ठं गृहीत्वा प्रार्थयेत्।

ग्राम के बाहर नैर्ऋत्य कोण में एकान्त स्थान में उत्तराभिमुख बिना जूता पहने वस्त्र से सिर बाँधे मलविमोचन करके मिट्टी और जल से यथासंख्या शुद्धि करके हाथ पाँव धोकर कुल्ला करके दन्तधावन करे। आम, चम्पा, अपामार्ग में से किसी की बारह अंगुल दातुन लेकर प्रार्थना करें :

"ॐ आयुर्बलं यशो वर्चः प्रजापशुधनानि च। श्रियं प्रज्ञां च मेधां त्वन्नो देहि वनस्पते।।१।।" इससे प्रार्थना करके :

"ॐ ह्रीं तडित् स्वाहा" इति मन्त्रेण काष्ठं छित्वा "ॐ क्लीं कामदेवाय सर्वजनप्रियाय नमः" इत्यनेन दन्तान् संशोध्य 'ऐ' इति बीजेन जिह्वामुल्लिख्य दन्तकाष्ठं क्षालयित्वा नैर्ऋत्यां शुद्धदेशे निक्षिपेत्। ततः मूलेन मुखं प्रक्षाल्याचम्य सर्वदेवोपयोगिपद्धतिमार्गेण तीर्थस्नानं कुर्यात्। तीर्थस्नानाशक्तौ गृहस्नानं कुर्यात्।

इति शौचक्रियाः।

"ॐ ह्रीं तडित्स्वाहा" इस मन्त्र से टहनी को काटकर "ॐ क्लीं कामदेवाय सर्वजन प्रियाय नमः" इससे दांतों को साफ करके "ऐं" इस बीज से जिह्वा को छीलकर दातुन को धोकर नैर्ऋत्य दिशा में शुद्ध देश में फेंक देवें। इसके बाद मूलमन्त्र से मुख धोकर आचमन कर सर्वदेवोपयोगी पद्धति से तीर्थस्नान करें। तीर्थस्नान में असमर्थ होने पर घर में स्नान करें।

इति शौचकिया

अथ गृहस्नानप्रयोगः।

तत्कालिकोद्धृतोदकेन उष्णोदकेन वा स्नानं कृत्वा न तु पर्युषितशीतोदकेन। ताम्रादिवृहत्पात्रे जलं गृहीत्वा तीर्थान्यावाहयेत्।

तत्काल कूयें से निकाले जल या उष्ण जल से (बासी शीतल जल से नहीं) स्नान करके ताम्र आदि के बड़े पात्र में जल लेकर तीर्थों का आवाहन करें। उसमें मन्त्र यह है :

"ॐ ब्रह्माण्डोदरतीर्थानि करैः स्पृष्टानि ते रवे। तेन सत्येन मे देव तीर्थं देहि दिवाकर।।१।। ॐ गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति। नर्मदे सिन्धुकावेरि जलेस्मिन्सन्निधिं कुरु।।२।। आवाहयामि त्वां देवि स्नानार्थमिह सुंदरि।। एहि गङ्गे `नमस्तुभ्यं सर्वतीर्थसमन्विते।।३।। पुष्कराद्यानि तीर्थानि गङ्गाद्याः सरितस्तथा। आगच्छन्तु पवित्राणि स्नानकाले सदा मम।।४।।"

इति तीर्थान्यावाह्य "ॐ ऋतं च सत्यं०" इति मन्त्रेणाभिमन्त्र्य वरूणमन्त्रेण स्नात्वा वक्ष्यमाणैश्चतुर्भिर्मन्त्रैः कुशत्रयेण शिरशि जलं प्रक्षिपेत्।

'ॐ ब्रह्मणोदर' आदि से तीर्थों का आवाहन करके " ॐ ऋतं च सत्यं०" इस मन्त्र से अभिमन्त्रित करके वरुण मन्त्र से स्नान करके आगे कहे जाने वाले चार मन्त्रों से तीन कुशों द्वारा जल छिड़कें।

मन्त्र ये हैं :

"ॐ सिसृक्षोर्निखिलं विश्वं मुहुः शुक्रं प्रजापतेः। मातरः सर्वभूतानामापो देव्यः पुनन्तु माम्।।१।। अलक्ष्मीर्मलरूपा या सर्वभूतेषु संस्थिता। क्षालयन्ति निजस्पर्शादापो देव्यः पुनन्तु माम्।।२।। यन्मे केशेषु दौर्भाग्यं सीमन्ते यच्च मूर्धनि। ललाटे कर्णयोरक्ष्णोरापस्तत् घ्नन्तु वो नमः।।३।। आयुरारोग्यमैश्वर्यमरिपक्षक्षयः सुखम्। संतोषः क्षांतिरास्तिक्यं विद्या भवतु वो नमः।।४।।"

इति शिरः प्रोक्ष्य हस्ते जलमादाय नासिकायां संयोज्य "ॐ ऋतं च सत्यं०" इत्यघमर्षणमन्त्रं पठित्वा जलं वामभागे निक्षिपेत्। एवं स्नात्वा शुष्कं शुभ्रं कार्पासोत्पन्नवस्त्रं परिधाय सूर्यायार्घ्यं दद्यात्।

'ॐ सिसृक्षो' आदि से शिरका प्रोक्षण करके हाथ में जल लेकर नासिका से लगाकर " ॐ ऋतं च सत्यं०" इस अघमर्षण मन्त्र से बाएँ ओर फेंके। इस प्रकार स्नान करके सूखा सफेद कपास का वस्त्र पहनकर सूर्य को इस प्रकार अर्घ्य देवें।

"ॐ एहि सूर्य सहस्रांशो तेजोराशे जगत्पते। अनुकम्पय मां देव गृहाणार्घ्य नमोस्तु ते"।।१।। इससे सूर्य को अर्घ देकर स्नान के वस्त्र को गार कर तथा आचमन कर तिलक लगावें।

अथ भस्मत्रिपुण्ड्रप्रकार।

बाँएँ हाथ में दक्षिण हाथ से अग्निहोत्र का भस्म तथा कुल चन्दनादि लेकर पानी से मिलाकर :

"ॐ अग्निरितिभस्म ॐ वायुरितिभस्म ॐ जलमितिभस्म ॐ स्थलमिति भस्म ॐ व्योमेतिभस्म सर्वठ० हवा इदं भस्म मन एतानि चक्षूषि भस्मानीति" से भस्म को अभिमन्त्रित करें।

"ॐ त्र्यम्बकं०" पठित्वा "ॐ तत्पुरुषाय नमः" इति मन्त्रेण भाले त्रिपुण्ड्रं कृत्वा तस्योपरि देव्यस्त्रं (ह्रीं) इति लिखेत्।।१।। ततः "ॐ त्र्यम्बकं" पठित्वा "ॐ अघोराय नमः" इति मन्त्रेण दक्षिणांसे त्रिपुण्ड्रं कुर्यात्।।२।। ततः "त्र्यम्बकं" पठित्वा "ॐ सद्योजाताय नमः" इति मन्त्रेण वामांसे त्रिपुण्ड्रं कुर्यात।।३।। ततः "त्र्यम्बकं" पठित्वा "ॐ वामदेवाय नमः" जठरे त्रिपुण्ड्रं कुर्यात्।।४।। ततः "त्र्यम्बकं" पठित्वा "ॐ ईशानाय नमः" इति मन्त्रेण वक्षसि च त्रिपुण्ड्रं कृत्वा तस्योपरि कालीबीजं (क्रीं) इति लिखेत्।।५।। इति पञ्चसु त्रिपुण्ड्रं कृत्वा रुद्राक्ष मालां धारयन् वैदिकीं सन्ध्यां विधाय सर्वदेवोपयोगिपद्धतिमार्गेण तान्त्रकीं सन्ध्यां कुर्यात्। इति भस्मत्रिपुण्ड्रप्रकारः।

उक्त मन्त्र से भस्म को अभिमन्त्रित करके "ॐ त्र्यम्बके०" मन्त्र को पढ़कर "ॐ तत्पुरुषाय नमः" इस मन्त्र से ललाट पर त्रिपुंड्र लगाकर उस पर देवी का अस्त्र (ह्रीं) लिखें।।१।। इसके बाद "ॐ त्र्यंबकं०" इसे पढ़कर "ॐ अघोरायनमः" इस मन्त्र से दक्षिण कन्धे पर त्रिपुंड्र

लगायें।।२।। इसके बाद "त्र्यंबकं०" पढ़कर "ॐ सद्योजाताय नमः" इस मन्त्र से बाएँ कन्धे पर त्रिपुण्ड्र लगायें।।३।। इसके बाद "त्र्यंबकं०" पढ़कर "ॐ वामदेवाय नमः" इससे पेट पर त्रिपुण्ड्र लगायें।।४।। इसके बाद "त्र्यंबकं०" पढ़कर "ॐ ईशानायनम" इस मन्त्र से वक्ष पर त्रिपुण्ड्र लगाकर उसके ऊपर कालीबीज (क्रीं) यह लिखें।।५।। इस प्रकार पाँच स्थानों पर त्रिपुण्ड्र लगाकर रुद्राक्ष की माला धारण करते हुए वैदिक संध्या करके सर्वदेवोपयोगी पद्धति से तांत्रिक संध्या करें।

इति भस्मत्रिपुण्ड्र प्रकार

अथ द्वारपूजा प्रकारः

प्रथमं पञ्चवर्णरजश्चित्रं शुद्धं स्थानं गत्वा पूजावेद्या बहिः स्थित्वा गुरुं प्रणम्य इष्टदेवतां प्रणम्य दिक्पालांश्च प्रणम्य"अस्त्राय फट्" इति द्वारं सम्प्रोक्ष्य द्वारोपरि ॐ गं गणेशाय नमः १ वामशाखायाम् ॐ वं बटुकाय नमः २ दक्षिण शाखायाम् ॐ क्षंक्षेत्रपालाय नमः ३ अधः ॐ यं योगिनीभ्यो नमः ४ इति पूजयेत्। पुनः ॐ गं गङ्गायै नमः। ॐ यं यमुनायै नमः। इति शाखापार्श्वयोः। ॐ लं लक्ष्म्यै नमः। ॐ सं सरस्वत्यै नमः। इति ऊर्ध्वे अधश्च पूजयेत्। ॐ ब्रह्माण्यद्यष्टमातृभ्यो नमः। इति देहल्यां गन्धपुष्पादिना पूजयेत्। इति द्वारापूजां कृत्वा ततो दक्षिणांङ्गं संकोचयन् दक्षचरणमग्रे निधाय वामशाखामस्पृशन् मण्डलाभ्यन्तरे गत्वा क्षेत्रकीलनं कुर्यात।

प्रथम पांच रंग की धूलि से चित्रित शुद्ध स्थान पर जाकर पूजा वेदी से बाहर ठहर कर गुरु को प्रणाम करके इष्टदेवता को तथा दिक्पालों को प्रणाम करके 'अस्त्राय फट्' से द्वारा को प्रोक्षण करके द्वार के ऊपर ॐ गं गणेशाय नमः १ वाम शाखा में ॐ वं वटुकाय नमः २ दक्षिणशाखा में ॐ क्षं क्षेत्रपालाय नमः ३ नीचे ॐ यं योगिनीभ्यो नमः ४ इससे पूजा करें। पुनः ॐ गं गङ्गायै नमः। ॐ यं यमुनायै नमः इति शाखापार्श्वयोः। ॐ लं लक्ष्म्यै नमः। ॐ सं सरस्वत्यै नमः इससे ऊपर तथा नीचे पूजा करे। ॐ ब्रह्माण्याद्यष्टमातृभ्यो नमः इससे चौखट पर गन्ध पुष्प आदि से पूजा करे। इस प्रकार द्वारपूजा करके दक्षिणाङ्ग को संकुचित करते हुए दाहिने पैर का आगे रख कर वाम शाखा का स्पर्श न करते हुये मण्डल के बीच में जाकर क्षेत्रकीलन करें।

अथ क्षेत्रकीलनम् :

"ॐ गृहीतस्यास्य मन्त्रस्य पुरश्चरणसिद्धये। मयेयं गृह्यते भूमिर्मन्त्रोयं सिद्धिमाप्नुयादित।।१।।" इति मन्त्रेण भूमिं संग्राह्य अश्वत्थोदुंबरप्लक्षाणामन्यतमवितस्तिमात्रान् दशकीलान्। "ॐ नमः सुदर्शनायास्त्राय फट्" इति मंत्रेणाष्टोत्तरशतमभिमन्त्र्य।

"ॐ गृहीतस्यास्य मन्त्रस्य पुरश्चरणसिद्धये। मयेयं गृह्यते भूमिर्मन्त्रोयं सिद्धिमाप्तुयात् इति।।१।।" इस मन्त्र से भूमि का चयन करके पीपल, गूलर, पलाश में से किसी एक की वितस्ति मात्र लम्बी दश कीलों को "ॐ नमः सुदर्शनाय फट्", इस मन्त्र से एक सौ आठ बार अभिमन्त्रित करके :

" ॐ ये चात्र विघ्नकर्तारो भुवि दिव्यन्तरिक्षगाः। विघ्नभूताश्च ये चान्ये मम मन्त्रस्य सिद्धिषु।।१।। मयैतत्कीलितं क्षेत्रं परितज्य विदूरतः।अपसर्पन्तु ते सर्वे निर्विघ्नं सिद्धिरस्तु मे।।२।।

इन दो मन्त्रों से दश दिशाओं में दश कीलें गाड़ें।

ततस्तेषु "ॐ सुदर्शनायास्त्राय फट्" इति मन्त्रेण प्रत्येककीलान् संपूज्य तत्रैव पूर्वादिक्रमेण इन्द्रादिलोकपालानावाह्य पञ्चोपचारैः सम्पूज्य ततः जपस्थान मध्ये गणेशं कूर्मानन्तवसुधाक्षेत्रपालांश्च सम्पूज्य दिक्पालेभ्यः क्षेत्रपालगणपतिभ्यश्च माषभक्तबलिं दत्वा तद्बाह्ये भूतबलिं दद्यात्। तद्यथा।

इसके बाद उनमें "ॐ सुदर्शनायास्त्राय फट्" इस मन्त्र से प्रत्येक कील का पूजन करके वहीं वर पूर्वादिक्रम से इन्द्रादि लोकपालों का आवाहन करके पञ्चोपचारों से पूजा करके जपस्थान के बीच गणेश, कूर्म, अनन्त, वसुधा तथा क्षेत्रपालों की पूजा करके दिक्पालों और क्षेत्रपालो तथा गणपति के लिए उड़द तथा भात की बलि देकर उसके बाहर इस प्रकार भूतबलि देवें :

"ॐ ये रौद्रा रौद्रकर्माणो रौद्रस्थाननिवासिनः। मातरोप्युग्ररूपाश्च गणाधिपतयश्च ये।।१।। भूचराः खेचराश्चैव तथा चैवान्तरिक्षगाः। ते सर्वे प्रीतमनसः प्रतिगृह्णंत्विमं बलिम्।।२।।"

इन दो मन्त्रों से दश दिशाओं में बाहर उड़द तथा भात की बलि देकर बायें हाथ की अँगुलियों से अर्घजल निकाल पुष्पाञ्जलि लेकर :

"ॐ भूतानि यानीह वसन्ति भूतले बलिं गृहीत्वा विधिवत्प्रयुक्तम्। संतोषमासाद्य व्रजन्तु सर्वे क्षमन्तु चान्यत्र नमोस्तु तेभ्यः।।१।।"

"ॐ भूतानि यानीह वसन्ति भूतले बलिं गृहीत्वा विधिवत्प्रयुक्तम्। सन्तोषमासाद्य व्रजन्तु सर्व क्षमन्तु चान्यत्र नमोस्तु तेभ्यः।।१।। इससे पुष्पाञ्जलि देकर प्रणाम करें। इस प्रकार कीलन करके हाथ–पैर धोकर आचमन करें।

इति क्षेत्रकीलन

अथ पुरश्चरणविधानम्।

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थौं गतोपि वा। यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः।।१।।

ॐ रक्ष रक्ष हूं फट् स्वाहा इति मन्त्रेण मण्डपान्तरं प्रोक्ष्य तत्र तावत् आसनभूमौ कूर्मशोधनं कार्यम्। यत्र जपकर्त्ता एक एव तदा कूर्ममुखे उपविश्य जपं तत्रैव दीस्थापनं च कुर्यात्। यत्र वहवो जापकास्तत्र कूर्ममुखोपरि दीपमेव स्थापयेत्। "ह्रीं" एवं कूर्मशोधनं कृत्वा। "ॐ रक्षरक्ष हूं फट् स्वाहा" इति मन्त्रेणासनाधो जलेनाभिषिच्य "ॐ पवित्रवज्रभूमे हूं फट् स्वाहा" इत्यभिमन्त्र्य "आधारशक्तिकमलासनाय नमः" इति समभ्यर्च्य तत्रासनाधः "आसुरेखे वज्ररेखे हूं फट् स्वाहा" इति मन्त्रेण जलादिना त्रिकोणं कृत्वा तत्र मध्ये (ह्सौं) इति प्रेतबीजं विलिख्य ॐ ह्रीं आधारशक्तिकमलासनाय नमः १। ॐ पृथिव्यै नमः २। ॐ कूर्माय नमः ३। इति गन्धाक्षतपुष्पैः संपूज्य तदुपरि कुशासनं तदुपरि मृगाजिनं तदुपरि कम्वलाद्यासनमास्तीर्य तदभावे तु पंचविंशतिकुशनिर्मितविष्टरं शवरूपं वा प्रकल्पयेत्। स्थापितानां त्रयाणामासनानामुपरि क्रमेण ॐ अनन्तासनाय नमः १। ॐ विमलासनाय नमः २। ॐ पद्मासनाय नम ३। इति मन्त्रत्रयेण त्रीन् दर्भान् प्रत्येकं निदध्यात्। एवमासनं संस्थाप्य "ह्सौं महाप्रेतपद्मासनाय नमः" इत्यभ्यर्च्य तत्रासने प्राङ्मुखो उदङ्मुखो वा आत्ममन्त्रे उपविश्य वामोरूपरि दक्षिणपादं कृत्वा बद्धवीरासनः वामपादोपरि दक्षिणोरुं घृत्वा विपरीतं वा संस्थाप्य आसनशोधनं कुर्यात्।

"ॐ रक्ष रक्ष हूं फट् स्वाहा" इस मन्त्र से मण्डप के भीतर प्रोक्षण करके आसनभूमि पर कूर्मशोधन करे। यदि जपकर्ता एक ही हो तो कूर्ममुख पर बैठ कर वहीं दीप की स्थापना करें। जहाँ बहुत से जपकर्ता हों वहाँ कूर्म के मुख पर केवल दीपक की ही स्थापना करनी चाहिये। "ह्रीं" इस प्रकार कूर्म का शोधन करके "ॐ रक्ष रक्ष हूं फट् स्वाहा" इस मन्त्र से आसन के नीचे जल से सींच कर "ॐ पवित्र वज्रभूमे हूं फट् स्वाहा" इससे अभिमन्त्रित करके " आधारशक्ति कमलासनाय नमः" इससे पूजा करके वहाँ आसन के नीचे "आसुरेखे वज्ररेखे हूं फट् स्वाहा" इस मन्त्र से जल आदि के द्वारा त्रिकोण बनाकर मध्य में (ह्सौं) इस प्रेतबीज को लिखकर ॐ ह्रीं आधारशक्तिकमलासनाय नमः।।१।। ॐ पृथिव्यै नमः २। ॐ कूर्माय नमः ३। इससे गन्ध–अक्षत–फूलों से पूजा करके उसपर कुशासन, उसके ऊपर मृगचर्म, उसके ऊपर कम्बल आदि का आसन बिछाकर उसके अभाव में पच्चीस कुशाओं से निर्मित बिस्तर या शवरूप आसन बनायें। स्थापित तीनों आसनों के ऊपर क्रमसे ॐ अनन्तासनाय नमः १। ॐ विमलासनाय नमः २। ॐ पद्मासनाय नमः ३। इन तीन मन्त्रों से तीन कुशों को प्रत्येक आसन पर रखें। इस प्रकार आसन बिछाकर "ह्सौं महाप्रेतपद्मासनाय नमः" इससे पूजा करके उस आसन पर पूर्वाभिमुख या उत्तराभिमुख आत्मन्त्र में उपविष्ट होकर बाईं जाँघ पर दाहिने पैर को रखकर वीरासन बाँधकर बाँयें पैर पर दाहिनी जाँघ को रखकर या इसके विपरीत रखकर आसन शोधन करें।

विनियोग : ॐ पृथ्वीति मन्त्रस्य मेरुपृष्ठऋषिः। सुतलञ्छन्दः। कूर्मो देवता। आसनपरिग्रहे विनियोगः।

" ॐ पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता। त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम्"।।१।। इति मन्त्रेणासनं प्रोक्ष्य मूलं पठित्वा। "ॐ मणिधारिणि वज्रिणिशिखरिणिसर्वलोकवशंकरि हूं फट् स्वाहा" इति शिखां बद्ध्वा गुरुं प्रणम्य इष्टदेवतां प्रणम्य दिक्पालांश्च प्रणम्य आचान्तः कुशहस्तो मौनी पापशमनार्थं श्लोकद्वयं पठेत् तद्यथा। "ॐ देवि त्वत्प्रकृतं चित्तं पापाक्रान्तमभून्मम। तन्निस्सरतु चित्तान्मे पापं हुं फट् च ते नमः।।१।। सूर्यस्सोमो यमः काली महाभूतानि पंच च। एते शुभाशुभस्येह कर्मणो न साक्षिणः।।२।।" इति पठित्वा मौनी मूलेनाचम्य "ॐ वज्रोदकेन हूं फट् स्वाहा" इति जलं गृहीत्वा 'हूं स्वाहा' इति करे चादाय "ॐ ह्रीं विशुद्धसर्वपापानि शमयाशेषविकल्पमपनय हूं फट् स्वाहा" इत्यनेन पादौ प्रक्षालयेत्। ततः 'ॐ ह्रीं स्वाहा' इति पुनराचम्य 'ऐं कालिकायै नमः १। ऐं कपालिन्यै नमः २। ऐं कुल्लायै नमः ३। इति त्रिराचम्य ततो मूलेन हस्तौ प्रक्षाल्य ॐ कालिकायै नमः १। ॐ कपालिन्यै नमः। इति दशहस्तङ्गुलीभिरोष्ठौ द्विरुन्मृज्य ॐ कुल्लायै नमः। इति पुनः करं प्रक्षाल्य मूलेन प्राणायामत्रयं कुर्यात्। तद्यथा। दक्षिणहस्तांगुष्ठेन दक्षनासापुटं निरुध्यं वामनासापुटेन मूलं षोडशवारं जपन् शनैः शनैः प्राणाख्यवायुमाकृष्य शिरसिं सहस्रारे धारयेदिति पूरकः १। ततो दक्षहस्तानामिका–तर्जन्यंगुष्ठेर्नासापुटद्वयं निरुध्यं मूलं चतुःषष्टिवारं जपन् कुम्भयेत् इति कुम्भकः २। पुनर्दक्षनासापुटमंगुष्ठनिरोधनं त्यक्त्वा मूलं द्वात्रिंशद्वारं जपञ्छनैः शनैस्तद्वायुं रेचयेत् इति रेचकः ३। इति प्राणायामत्रयं कुर्यात्।

"ॐ पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता। त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनन्।।१।।" इस मन्त्र से आसन का प्रोक्षण करके मूल मन्त्र पढ़कर "ॐ मणिधारणि वज्रिणि

शिखरिणि सर्वलोकवशंकरि हूँ फट् स्वाहा'' इससे शिखा बांधकर गुरु को, इष्ट देवता को तथा दिक्पालों को प्रणाम कर आचमन करके कुश हाथ में लेकर मौन हो पाप के शमन के लिए इस प्रकार दो श्लोक पढ़ें ''ॐ देवि त्वत्प्रकृतं चित्तं पापाक्रान्तमभून्मम। तन्निस्सरतु चित्तान्मे पापं हुं फट् च ते नमः। सूर्यः सोमो यमः कालो महाभूतानि पञ्चच। एते शुभशुभस्येह कर्मणो नव साक्षिणः।।२।।'' इसको पढ़कर मौन धारण किए हुए मूलमन्त्र से आचमन करके ''ॐ वज्रोदकेन हूँ फट् स्वाहा'' इससे जल लेकर ''हूँ स्वाहा'' इससे हाथ में लेकर ''ॐ ह्रीं विशुद्धसर्वपापानि शमयाशेष विकल्पमपनय हूँ फट् स्वाहा'' इससे पादप्रक्षालन करें। इसके बाद ''ॐ ह्रीं स्वाहा'' इससे पुनः आचमन करके ''ऐं कलिकायै नमः।।१।। ऐं कपालिन्यै नमः।।२।। ऐं कुल्लायै नमः।।३।।'' इससे तीन बार बाचमन करके हाथों को धोकर ॐ कालिकायै नमः।।१।। ॐ कपालिन्यै नमः इससे हाथ की दशो अंगुलियों से दोनो ओठों को दो बार मल कर ॐ कुल्लायै नमः इससे पुनः हाथ धोकर मूलमन्त्र से तीन प्राणामाम करे। तद्यथा : दाहिने हाथ के अंगूठे से दाहिनी नासिका के छिद्र को बन्द करके वामनासापुट से मूलमन्त्र को सोलह बार जपते हुए धीरे धीरे प्राण नामक वायु को खींचकर शिरके सहस्रार चक्र में धारण करके पूरक करें १। इसके बाद दाहिने हाथ की अनामिका, तर्जनी और अंगूठे से दोनो नासिका छिद्रों को रोककर मूलमन्त्र को चौंसठ बार जपते हुए रोके यह कुम्भक है २। पुनः दक्षिण नासापुट से अंगूठे के अवरोध को हटाकर मूलमन्त्र को बत्तीस बार जपते हुए धीर धीरे वायु को निकाले यह रेचक है ३। इस प्रकार तीन प्राणायाम करें।

ततः 'ॐ हूं फट् स्वाहा' इति मन्त्रेण ''ॐ ह्रीं स्वाहा'' इति मन्त्रेण वा चित्तशोधनं कृत्वा ''रक्षरक्ष हूं फट् स्वाहा'' इत्यात्मानमभिरक्ष्य ''ॐ शताभिषेके शताभिषेके पदे हूं फट् स्वाहा'' ''ॐ पुष्पकेतुराजार्हत् पुष्पे पुष्पे महापुष्पे सुपुष्पे पुष्पसम्भवे। पुष्पचयावकीर्णे हूं फट् स्वाहा'' इति पुष्पाण्यभिमन्त्र्य अन्यानि पूजावस्तूति सर्वाणि सामान्यर्घ्योदकेनाभिषिच्य धेनतुमुद्रामत्स्यमुद्रे दर्शयित्वा पुष्पाणि शुद्धानि विभावयेत्।

इसके बाद ''ॐ हूँ फट् स्वाहा'' इस मन्त्र से या ''ॐ ह्रीं स्वाहा'' से चित्तशोधन करके '' रक्ष रक्ष हूं फट् स्वाहा'' से अपनी रक्षा करके ''ॐ शताभिषैके शताभिषैके पदे हूं फट् स्वाहा'' ''ॐ पुष्पकेतु राजार्हत पुष्पे–पुष्पे महापुष्पे सुपुष्पे पुष्पसम्भवे। पुष्प चयावकीर्णे हूं फट् स्वाहा'' इससे पुष्पों को अभिमंत्रित करके अन्य सब पूजावस्तुओं को सामान्य अर्घ्योदक से अभिषिंचित करके धेनुमुद्रा तथा मत्स्य मुद्रा दिखलाकर 'पुष्प शुद्ध हो गये हैं' ऐसी भावना करें।

ततः वमिति जलधारां प्रक्षिप्य वह्निबीजेन वह्निप्रकारं विचिन्त्य 'हूं फट्' इति मन्त्रेण चतुर्दिक्षु क्रोधदृष्ट्या निरीक्ष्य सर्वान् विघ्नानुत्सारयेत्। तद्यथा। ''सर्मविघ्नानुत्सारय हूं फट् स्वाहा'' इति मन्त्रेण ऊर्ध्वमवलोक्य दिव्यांश्चतुर्दिक्षु जलक्षेपेणान्तरिक्षगान् वामपार्ष्णिघातत्रयेण भौमान् विघ्नानुत्सार्य लाजचन्दनसिद्धार्थतिल दधिदूर्वाक्षता–नामन्यतममादाय ''ॐ अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भूमिसंस्थिताः। ये चात्र विघ्नकर्तारस्ते नशयन्तु शिवाज्ञया।'' इति पठंश्चतुर्दिक्षु क्षिपेत्।

इसके बाद 'वं' इससे जलधारा फेंक कर बह्निबीज से बहिप्रकार का चिन्तन करके ''हूँ फट्'' इस मन्त्र से चारों दिशाओं में क्रोध दृष्टि से सब विघ्नों को इस प्रकार हटायें :

''सर्वविघ्नानुत्सारय हूँ फट् स्वाहा'' इस मन्त्र से ऊपर देखकर 'दिव्य', चारों दिशाओं में जलक्षेप से 'अन्तरिक्ष', बाएँ पार्श्व के तीन घात से 'भौम' विघ्नों को हटाकर लावा, चन्दन, पीली

सरसों, तिल, दही, दूब, अक्षत, इनमें से किसी एक को लेकर "ॐ अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भूमिसंस्थिताः। ये चात्र विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया।" इसे पढ़ते हुए चारो ओर फेंक देवें।

इसके बाद बाँई ओर ॐ गुरुभ्यो नमः १। ॐ परम गुरुभ्यो नमः २। ॐ परात्पर गुरुभ्यो नमः ३। ॐ परमेष्ठि गुरुभ्यो नमः ४। दक्षिणे ॐ गणेशाय नमः ५। सामने ॐ अमुक देव्यै नमः ६। इससे प्रणाम करके इस प्रकार शुद्धि करें :

'हूं' इति बीजेन चन्दनाक्तानि कुसुमान्यंगुल्यग्रेणादाय 'हौं' इति मन्त्रेण कराभ्यां मर्दयित्वा। 'क्लीं' इति बीजेन दक्षहस्तेन सम्मृज्य 'ॐ' तत्सत्' इति मन्त्रेण वामहस्तेनाघ्राय 'हौं' इति मन्त्रेण ऐशान्यां दिशि पुष्पं परित्यजेत्। "ॐ ते सर्वे विलयं यान्तु ये मां हिंसति हिंसकाः। मृत्युरोगभयक्रोधाः पतन्तु रिपुमस्तके।" इति मन्त्रेण वा परित्यजेत्। इति त्यागश्च पुनः नाराचमुद्रां प्रदर्शयेत्। इति करशुद्धिं कुर्यात्। ततः भूतशुद्धिप्राणप्रतिष्ठांतर्मातृका-बर्हिमातृकासृष्टिस्थितिसंहारमातृकान्यासं च सर्वदेवोपयोगिपद्धतिमार्गेण कृत्वा देवीकलामातृकान्यासं कुर्यात्।

"हूँ" इस बीज से चंदन से लिप्त फूलों को अंगुलियों के अग्र भाग में लेकर "हौं" इस मन्त्र से हाथों से मलकर "क्लीं" इस बीज से दाहिने हाथ से मलकर "ॐ तत्सत्" इस मन्त्र से बाएँ हाँथ से सूंधकर "हौं" इस मन्त्र से ऐशानी दिशा में फूलों को डाल देवें। अथवा "ॐ ते सर्वे विलयं यान्तु ये मां हिंसति हिंसकाः। मृत्युरोग भयक्रोधाः पतन्तु रिपुमस्तके।।" इस मन्त्र से डाल देवें। यह त्याग करके नाराच मुद्रा दिखलावें। इसके बाद हाथ शुद्ध करें। तदनन्तर भूतशुद्धि, प्राणप्रतिष्ठा, अन्तर्मातृका, बहिर्मातृका, सृष्टि, स्थिति संहार तथा मातृकान्यास सर्वदेवोपयोगी पद्धति मार्ग से करके देवीकलामातृका न्यास करें।

विनियोग : अस्य देवीकलामातृकान्यासस्य प्रजापतिर्ऋषिः। गायत्री छन्दः। श्रीमातृकाशारदा देवता। हलोबीजानि। स्वराः शक्तयः। अमुक मन्त्राङ्गत्वेन मातृकान्यासे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास : ॐ प्रजापतिऋषये नमः शिरसि १। गायत्री छन्दसे नमः मुखे २। शारदा देवतायै नमः हृदि ३। हल्भ्यो बीजेभ्यो नमः गुह्ये ४। स्वरेभ्यः शक्तिभ्यो नमः पादयो ५। विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ६।

हृदयादिषडङ्गन्यासः : ॐ अं ॐ आं हृदयाय नमः १। ॐ इं ॐ ईं शिरसे स्वाहा २। ॐ उँ ॐ ऊँ शिखायै वषट् ३। ॐ एँ ॐ ऐं कवचाय हुँ ४। ॐ ओं ॐ औं नेत्रत्रयाय वौषट् ५। ॐ अं ॐ अः अस्त्राय फट् ६।

इति देवीकलामातृका न्यास में हृदयादिषडङ्गन्यास

अथ ध्यानम्।

ॐ शङ्ख चक्राब्जपरशुकपालेनाक्षमालिकाः। पुस्तकासवकुम्भौ च त्रिशूलं दधती करैः।।१।। सितपीतसितश्वेतरक्तवर्णैस्त्रिलोचनैः। पंचास्यैः संयुतां चन्द्रसकांतिं शारदां भजे।।२।।

इससे ध्यान करके मातृकान्यास करें।

मातृकान्यास : ॐ अं निवृत्त्यै नमः ललाटे १। ॐ आं प्रतिष्ठायै नमः मुखवृत्ते २। ॐ इं विद्यायै नमः दक्षनेत्रे ३। ॐ ईं शान्त्यै नमः वामनेत्रे ४। ॐ उं इन्धिकायै नमः दक्षकर्णे ५। ॐ ऊं दीपिकायै नमः बामकर्णे ६। ॐ ऋं रेचिकायै नमः दक्षनासापुटे ७। ॐ ॠं मोचिकायै नमः वामनासापुटे

८। ॐ लृं परायैः नमः दक्षकपोले ६। ॐ लॄं सूक्ष्मायै नमः वामकपोले १०। ॐ एं सूक्ष्मामृतायै नमः ऊर्ध्वौष्ठे ११। ॐ ऐं ज्ञानामृतायै नमः अधरोष्टेः १२। ॐ ओं आत्यायन्यै नमः ऊर्ध्वदंतपंक्तौ १३। ॐ औं व्यापिन्यै नमः अधोदंतपंक्तौ १४। ॐ अं व्योमरूपायै नमः जिह्वायाम् १५। ॐ अः अनन्तायै नमः कण्ठे १६। ॐ कं सृष्टयै नमः दक्षबाहुमूले १७। ॐ खं ऋद्ध्यै नमः दक्षकूर्परे १८। ॐ गं स्मृत्यै नमः दक्षमणिबन्धे १६। ॐ घं मेधायै नमः दक्षहस्तांगुलिमूले २०। ॐ ङं कान्त्यै नमः दक्षहस्तांगुल्यग्रे २१। चं लक्ष्म्यै नमः वामबाहुमूले २२। ॐ छं द्युत्यै नमः वामकूर्परे २३। ॐ जं स्थिरायै नमः वाममणिबन्धे २४। ॐ झं स्थित्यै नमः वामहस्तांगुलिमूले २५। ॐ ञं सिद्धयै नमः वामहस्तांगुल्यग्रे २६। ॐ टं जरायै नमः दक्षपादमूले २७। ॐ ठं पालिन्यै नमः दक्षजानुनि २८। ॐ डं क्षांत्यै नमः दक्षगुल्फे २६। ॐ ढं ईश्वयर्यै नमः दक्षपादांगुलिमूले ३०। ॐ णं रत्यैं नमः दक्षपादांगुल्यग्रे ३१। ॐ तं कामिकायै नमः वामपादमूले ३२। ॐ थं वरदायै नमः वामजानुनि ३३। ॐ दं आह्लादिन्यै नमः वामगुल्फे ३४। ॐ धं प्रीत्यै नमः वामपादांगुलिमूले ३५। ॐ नं दीर्घायै नमः वामपादांगुल्यग्रे ३६। ॐ पं तीक्ष्णायै नमः दक्षपार्श्वे ३७। ॐ फं रौद्र्यैनमः वामपार्श्वे ३८। ॐ बं भयायै नमः पृष्ठे ३६। ॐ भं निद्रायै नमः नाभौ ४०। ॐ मं तन्द्रिकायै नमः जठरे ४१। ॐ यं क्षुधायै नमः हृदये ४२। ॐ रं क्रोधिन्यै नमः दक्षांसे ४३। ॐ लं क्रियायै नमः ककुदि ४४। ॐ वं उत्कार्य्यै नमः वामांसे ४५। ॐ शं मृत्युकायै नमः हृदयादिदक्षहस्तान्तम् ४६। ॐ षं पीतायै नमः हृदयादिवामहस्तान्तम् ४७। ॐ सं श्वेतायैः नमः हृदयादिदक्षपादान्तम् ४८। ॐ हं अरुणायै नमः हृदयादिवामपादान्तम् ४६। ॐ ळं आसितायै नमः मूर्द्धादिपादान्तम् ५०। ॐ क्षं अनन्तायै नमः पादादिमूर्द्धान्तम् ५१।

इससे देवीकलामातृका न्यास करके प्रयोगक्त ऋष्यदि न्यास, षडङ्गन्यास आदि, मूल देवता का ध्यान और पीठपूजा करें।

अथ पीठपूजनम्।

पीठादौ रचिते सर्वतोभद्रमण्डले तन्मध्ये मण्डूकादिपरतत्त्वान्तपीठदेवताः संस्थापयेत्। तद्यथा।

पीठादि पर रचित सर्वतोभद्वमण्डल के मध्य में मन्डूकादि परतत्वान्तपीठदेवताओं को इस प्रकार स्थापित करें :

पुष्पाक्षतानादाय स्ववामभागे श्रीगुरुभ्यो नमः १। दक्षिणे गणपतये नमः २। मध्ये स्वेष्टदेवतायै नमः ३। इति नत्वा पीठमध्ये ॐ मं मण्डूकाय नमः १। ॐ कं कालाग्निरुद्राय नमः २। ॐ अं आधारशक्तये नमः ३। ॐ कुं कूर्माय नमः ४। ॐ अं अनन्ताय नमः ५। ॐ पं पृथिव्यै नमः ६। ॐ क्षीं क्षीरसागराय नमः ७। ॐ रं रत्नदीपाय नमः ८। ॐ रं रत्नमण्डपाय नमः ६। ॐ कं कल्पवृक्षाय नमः १०। ॐ रं रत्नवेदिकायै नमः ११। ॐ रं रत्नसिंहासनाय नमः १२। इति पूजयेत्। आग्नेयां ॐ धं धर्माय नमः १३। नैर्ऋत्यां ॐ ज्ञां ज्ञानाय नमः १४। वायव्यां ॐ वां वैराग्याय नमः १५। ईशान्यां ॐ ऐं ऐश्वर्य्याय नमः १६। पूर्वे ॐ अं अधर्माय नमः १७। दक्षिणे ॐ अं अज्ञानाय नमः. १८। पश्चिमे ॐ अं अवैराग्याय नमः १६। उत्तरे ॐ अं अनैश्वार्याय नमः २०। इति पूजयेत्। पुनः पीठमध्ये ॐ अं आनन्दकन्दाय नमः २१। ॐ सं सम्विन्नालाय नमः २२। ॐ सं सर्वतत्त्व कमलासनाय नमः २३। ॐ प्रं प्रकृतिमयपत्रेभ्यो नमः २४। ॐ विं विकारमयकेसरेभ्यो नमः २५। ॐ पं पञ्चाशद्वर्णाढ्यकर्णिकाभ्यो नमः २६। ॐ अं अर्कमण्डलाय द्वादशकलात्मने नमः २७। ॐ सों सोममण्डलाय षोडशकलात्मने नमः २८। ॐ वं वह्निमण्डलाय दशकलात्मने नमः २६। ॐ सं सत्त्वाय नमः ३०। ॐ रं रजसे नमः ३१। ॐ तं तमसे नमः ३२। ॐ आं आत्मने नमः ३३। ॐ पं परमात्मने

नमः ३४। ॐ अं अन्तरात्मने नमः ३५। ॐ ह्रीं ज्ञानात्मने नमः ३६। ॐ मं मायातत्त्वाय नमः ३७। ॐ कं कलातत्त्वाय नमः ३८। ॐ विं विद्यातत्त्वाय नमः ३६। ॐ पं परतत्त्वा य नमः ४०।

इति पीठदेवताः सम्पूज्य प्रयोगात्तनवपीठशक्तिः पूजयेत्। इति पीठपूजां कृत्वा पात्रासादनं कुर्यात्।

इससे पीठ देवताओं की पूजा करके प्रयोगात्त नव पीठशक्तियों की पूजा करें। इस प्रकार पीठपूजा करके पात्रासादन करें।

अथ पात्रासादनम्।

(तत्रादौ त्रिरर्घ्यस्थापनम्) आत्मयं त्रयोर्मध्ये त्रिकोणचतुरस्रमण्डलं कृत्वा जलेन प्रोक्ष्य त्रिकोणान्तरमायां (ह्रीं) विलिख्य ॐ ह्रीं आधारशक्तये नमः इति मन्त्रेण सम्पूज्य चतुरस्रे पूर्वादिचतुर्षु दिक्षुं ॐ पूर्णगिरिपीठाय नमः १। ॐ उड्डीयानगिरिपीठाय नमः २। ॐ कामरूपपीठाय नमः३। ॐ जलन्धरपीठाय नमः ४। इति पूज्येत्।

(आदि में तीन अर्घ्यस्थापन) अपने और मन्त्र के बीच त्रिकोंण या चतुष्कोण मण्डल बनाकर जल से उसका प्रोक्षण करके त्रिकोण में माया (ह्रीं) लिखकर 'ॐ ह्रीं आधार शक्तये नमः इस मन्त्र से पूजा करके चतुरस्र में पूर्वादि चारों दिशाओं में ॐ पूर्णगिरिपीठाया नमः १। ॐ उड्डीयानिगिरिपीठाय नमः २। ॐ कामरूप पीठाय नमः ३। ॐ जलन्धर पीठाय नमः ४। इससे पूजा करें।

ततो मूलेन फट् इति त्रिपादमाधारं प्रक्षाल्य त्रिकोणमध्ये संस्थाप्य ॐ वां वीं वं हस क्षमलवरयूँ धर्मदवह्निमण्डलाय दशकलात्मने अमुकदेव्यर्घ्यपात्राधाराय नमः। इति मन्त्रेण आधारं सम्पूज्य आधारे पूर्वादिषु दशाग्निकलाः पूजयेत्।

तदनन्तर मूलमन्त्र में 'फट्' जोड़कर उससे त्रिपाद आधार को धोकर त्रिकोण के बीच रखकर "ॐ वाँ वीं बूँ हस क्षमल वरयूँ धर्मदवह्निमण्डलाय दशकलात्मने अमुकदेव्यर्घ्यपात्राधाराय नमः" इस मन्त्र से आधार की पूजा करके आधार में पूर्वादि दिशाओं में दशाग्निकलाओं की इस प्रकार पूजा करें।

यं धूम्रार्चिषे नमः १। रं ऊष्मायै नमः २। लं ज्वलिन्यै नमः ३। वं ज्वालिन्यै नमः ४। शं विस्फुलिङ्गिन्यै नमः ५। षं सुश्रियै नमः ६। सं सुरूपायै नमः ७। हं कपिलायै नमः ८ लं हव्यवाहायै नमः ६। क्षं कव्यवाहायै नमः १०।

ततो सौवर्णं राजतं ताम्रं नारिकेलं वा पात्रं मूलेन फट् इति प्रक्षालितं चार्घ्यं आधारोपरि संस्थाप्य ह्रीं ह्रीं ह्रूं हसक्षमलवरयूं वसुप्रदतपिन्यादि द्वादशकलात्मने अर्कमण्डलाय अमुकदेव्यर्घ्यपात्राय नमः। इति सम्पूज्य पात्रे स्वाग्रादिप्रादक्षिण्येन द्वादशार्ककलाः पूजयेत्।

इस प्रकार पूजा करके सोने, चाँदी या तांबे या नारियल के पात्र को मूलमन्त्र में 'फट्' जोड़कर उससे अर्घ्य को धोकर आधार पर रखकर "ह्रीं ह्रीं ह्रूं हस क्षमलवरयूँ वसुप्रदतापिन्यादि द्वादश कलात्मने अर्कमण्डलाय अमुकदेव्यर्घ्य पात्राय नमः।" इससे पूजा करके पात्र में स्वाग्रादि प्रदक्षिणा से इस प्रकार द्वादश सूर्यकलाओं की पूजा करें।

कं भं तपिन्यै नमः १। खं बं तापिन्यै नमः २। गं फं धूम्रायै नमः ३। घं पं मरीच्यै नमः ४। ङं नं ज्वालिन्यै नमः ५। चं धं रुच्यै नमः ६। छं दं सुषुम्णायै नमः ७। जं थं भोगदायै नमः ८। झं तं विश्वायै नमः ६। ञं णं बोधिन्यै नमः १०। टं ढं धारिण्यै नमः ११। ठं डं क्षमायै नमः १२।

इति पूजयेत्। ततः ॐ क्षं ळं हं सं षं शं वं लं रं यं मं भं बं फं पं नं धं दं थं तं णं ढं डं ठं टं ञं झं जं छं चं ङं घं गं खं कं अः अं औं ओं ऐं एं ॡं ऌं ॠं ऋं ऊं उं ईं इं आं अं इत्येकाधिकपञ्चाशत् ५१।

विलोममातृकामुच्चार्य मूलेन नमः इति क्षीरं जलं वा मधु संविदादि वा आपूर्य ॐ सां सीं सूं सहक्षमलवरयूं कामप्रदामृतादिषोडशकलात्मने सोममण्डलाय अमुकदेव्यर्घामृताय नमः इति सम्पूज्य जले षोडशचन्द्रकालाः पूजयेत्।

विलोम मातृका उच्चारण करके मूल मन्त्र के साथ 'नमः' जोड़कर इस मन्त्र से दूध, जल, मधु या संविदादि की आपूर्ति करके ॐ सां सीं सूँ सहक्षमल वरयूं काप्रदामृतादि षोडश कलात्मने सोमण्डलाय अमुक देव्यर्घामृताय नमः" इससे पूजा करके जल में षोडश चन्द्रकलाओं की इस प्रकार पूजा करें :

अं अमृतायै नमः १। आं मानदायै नमः २। इं पूषायै नमः ३। ईं तुष्टयै नमः ४। उं पुष्ट्यै नमः ५। ऊं वृत्त्यै नमः ६। ऋं धृत्यै नमः ७। ॠं शशिन्यै नमः ८। ऌ चन्द्रिकायै नमः ९। ॡं कान्त्यै नमः १०। एं ज्योत्स्नायै नमः ११। ऐं श्रियै नमः १२। ओं प्रोत्यै नमः १३। औं अंगदायै नमः १४। अं पूर्णायै नमः १५। अः पूर्णामृतायै नमः १६।

इति पूजयेत् इत्यर्घ्यं संस्थाप्य एलालवंगकर्पूरादिसुगन्धादि निःक्षिप्य तन्मध्ये ॐ गङ्गे च चमुने चैव गोदावरि सरस्वति। नर्मदे सिन्धु कावेरिं जलेस्मिन्सन्निंध कुरु।।१।। ॐ ब्रह्मांडोदरतीर्थानि करैः स्पृष्टानि ते रवे। तेन सत्येन मे देव तीर्थं देहि दिवाकर।।२।। इति श्लोकद्वयेन तीर्थान्यावाह्यांकुशमुद्रां प्रदर्श्य तन्मध्ये स्वेष्टदेवीं ध्यायेत्। इति विशेषार्घ्यस्थापनम्।।१।।

इस प्रकार पूजा करके अर्घ्य स्थापित करके उसमें इलाइची, लवंग, कपूर आदि सुगन्धित द्रव्य छोड़कर "ॐ गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति। नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेस्मिन्सन्निधिं कुरु।।१।। ॐ ब्रह्मण्डोदरतीर्थानि करैः स्पृष्टानि ते रवे। तेन सत्येन में देव तीर्थं देहि दिवाकर।।२।। इन दो श्लोकों से तीर्थों का आवाहन करके अंकुश मुद्रा प्रदर्शित करके उसके बीच में अपनी इष्टदेवी का ध्यान करें।

इति विशेषार्घ्य स्थापन।

अथ शङ्खस्थापनम्।।

देवीवामतः पूर्ववत् शङ्खनामोच्चारणपूर्वकं शङ्खं संस्थाप्याभिमन्त्रयेत्।

देवी के वाम भाग में पूर्ववत् शंख के नामोच्चारणपूर्वक शंख को स्थापित करके उसे इस प्रकार अभिमन्त्रित करें।

ॐ शङ्खादौ चन्द्रदैवत्यं कुक्षौ वरुणदेवता। पृष्ठे प्रजापतिश्चैवमग्रे गङ्गा सरस्वती।।१।। त्रैलोक्ये यानि तीर्थानि वासुदेवस्य चाज्ञया। शङ्खे तिष्ठन्ति विप्रेन्द्र तस्माच्छंखं प्रपूजयेत्।।२।।

इससे अभिमन्त्रित करके इस प्रकार प्रार्थना करें।

ॐ त्वं पुरा सागरोत्पन्नो विष्णुना विधृतः करे। निर्मितः सर्वदेवैश्च पांचजन्य नमोस्तु ते।।१।। इति सम्प्रार्थ्य ॐ पांचजन्याय विद्महे। पावमानाय धीमहि। तन्नः शङ्खः प्रचोदयात्।

इस शंख गायत्री को आठ बार जप कर शखमुद्रा प्रदर्शित करें।

इति शंखस्थापन।।२।।

अथ प्रोक्षणीपात्रस्थापन :

ततो देवीदक्षिणतः एवमेव विधिना प्रोक्षणीपात्रं संस्थापयेत्।
इसके बाद देवी के दाहिनी ओर इसी विधि से प्रोक्षणीपात्र स्थापित करें।

इति त्रिरर्घ्य स्थापन

ततो विशेषार्घाद्वामतः श्रीपात्रम् १। गुरुपात्रम् २। देवपात्रम् ३। शक्तिपात्रम्। योगिनीपात्रम ५। भोगपात्रम् ६। वीरपात्रम् ७। आत्मपात्रम् ८। बलिपात्रम् ६। एतानि नव पात्राणि पूर्ववत् स्थापयित्वा दक्षिणे पाद्यार्घ्याचमनीय मधुपर्कार्थं चत्वारि पात्राणि स्थापयेत्। अशक्तश्चेद्गुरुवीरात्मबलिभोगेति पञ्चपात्राणि पाद्याद्युपचारार्थमेकं वा बृहत्पात्रं संस्थापयेत्। तदप्यशक्तश्चेत्तदा एकमेव शङ्खं संस्थाप्य कलशस्थापनं कुर्यात्।

इसके बाद विशेषार्घ्य के बाएं श्रीपात्र १। गुरुपात्र २। देवपात्र ३। शक्तिपात्र ४। योगिनीपात्र ५। भोगपात्र ६। वीरपात्र ७। आत्मपात्र ८। बलिपात्र ६। ये नव पात्र पूर्ववत् स्थापित करके दाहिनी ओर पाद्य, अर्घ्य, आचमनीय तथा मधुपर्क के लिए चार पात्र स्थापित करें। असमर्थ हो तो वीरपात्र, आत्मपात्र, बलिपात्र, भोगपात्र ये पांच पात्र या पाद्य आदि उपचार के लिए एक बड़ा पात्र स्थापित करें। इसमें भी असमर्थ हो तो एक मात्र शंख ही स्थापित करके कलश स्थापन करें।

अथ कलशस्थापनप्रयोगः।

तत्रदौ सुधाकुम्भस्थापनम् : देव दक्षिणतः स्वर्णादिकलशं पूर्ववत् संस्थाप्य तन्मध्ये सुधां निक्षिप्य गन्धादिभिः सम्पूज्य शापमोचनं कुर्यात्।

प्रारम्भ में सुधाकुम्भस्थापन : देव के दाहिनी ओर स्वर्ण आदि का कलश पूर्ववत् स्थापित करके उसके मध्य में सुधा डालकर गन्ध आदि से पूजा करके इस प्रकार शापमोचन करें।

सुधाकुम्भपूर्वे ग्लूं गगनरत्नेभ्यो नमः १। दक्षिणे स्लूं स्वर्गरत्नेभ्यो नमः २। पश्चिमे प्लूँ पातालरत्नेभ्यो नमः ३। उत्तरे म्लूँ मनुष्यरत्नेभ्यो नमः ४। मध्ये नूं नागरत्नेभ्यो नमः ५।

इति सम्पूज्य ॐ सुधादेव्यैविद्महे। कामेश्वर्यै च धीमहि। तन्नो रक्ताक्षि प्रचोदयात्। इति सुधागायत्र्याऽद्भिर्दशाभिमन्त्र्य मूलमन्त्रं च दशधा जपित्वा ततो सुधायाः शापमोचनं कुर्यात्।

इससे पूजा करके ॐ सुधादेव्यै वियहे। कामेश्वर्यै च धीमहि। तन्नो रक्ताक्षि प्रचोदयात्।। इस सुधा गायत्री से दश बार अभिमन्त्रित करके मूल मन्त्र का दश बार जप करके सुधा का इस प्रकार शापमोचन करें :

हाथ से ढककर "एवमेव परब्रह्मस्थलसूक्ष्ममयं ध्रुवम्। कचोद्भवां ब्रह्महत्यां तेन ते नाशयाम्यहम्।।१।। सूर्यमण्डलसम्भूते वरुणालयसम्भवे। आस्यबीजमये देवि शुक्रशापाद्विमुच्यताम्।।२।। वेदानां प्रणवो बीजं ब्रह्मानन्दमयं यदि। तेन सत्येन ते देवि ब्रह्महत्यां व्यपोहति।।३।।"

इन तीन मन्त्रों से सुधा को ढककर पात्र के ऊपर पुनः मन्त्र पढ़ें।

ॐ सां सीं सूं सैं सौं सः शुक्रशापविमोचिकायै सुधादेव्यै नमः।।१।।

इसे दश बार जपें।

ॐ वां वीं वूं वैं वौं वः ब्रह्मशाप विमोचिकायै सुधादेव्यै नमः।।२।।

इसे दश बार जपें।

ॐ ह्रीं श्री क्रां क्रीं क्रूं क्रैं क्रौं क्रः सुधाकृष्णशापं विमोचय विमोचय अमृतं स्रावय स्रावय स्वहा।।३।।

इसे दश बार जपें।

ॐ रां रीं रूं रैं रौं रः रुद्रशापविमाचिकायै सुरादेव्यै नमः इति।।४।।

इसे दश बार जपें।

इति शुक्रब्रह्मकृष्णरुद्रशाप विमुक्तां विभाव्य दशदोषनिवारणं कुर्यात्। तद्यथाः

इस प्रकार शुक्र, ब्रह्म, कृष्ण और रुद्र के शाप से विमुक्त जानकर दश दोषों का इस प्रकार निवारण करें :

ॐ ह्रीं क्रीं परमस्वामिनि मरमाकाशशून्यवाहिनी चन्द्रसूर्याग्निभक्षिणि पात्रं विशविश स्वाहा इति पात्रोपरि दशधा जपेत्। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं महेश्वराय विद्महे सुधादेव्यै धीमहि। तन्नोर्द्धनारीश्वरः प्रचोदयात्।

इससे पात्र के ऊपर दश बार जपकर दश दोषों के निवारणार्थ दश बार मन्त्र पढ़ें। तद्यथा अक्षतान् आदाय ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पथिकदेवताभ्यो हुं फट् स्वाहा। इति पात्रोपर्यक्षतान् निक्षिपेत्।

अक्षत लेकर ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पथिक देवताभ्यो हुं फट् स्वाहा। इससे पात्र के ऊपर अक्षत फेंके।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं यं रं लं आं आस्फालिनीग्रामचाण्डालिनी हुं फट् स्वाहा।।२।। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं ह्रीं सङ्गमस्पर्शचाण्डालिनी हुं फट् स्वाहा।।३।। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं फें घं ङं लं क्षं दृष्टिचाण्डालिनी हुं फट् स्वाहा।।४।। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ग्लौं ग्लां क्रोधचाण्डालिनी हुं फट् स्वाहा।।५।। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अं सृष्टिचाण्डालिनी हुं फट् स्वाहा।।६।। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं आं क्रों घटचाण्डालिनी हुं फट् स्वाहा।।७।। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं चं छं तपनीयवधचाण्डालिनी हुं फट् स्वाहा।।८।। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्षं आं क्रौं क्लीं निर्दयचाण्डालिनी हुं फट् स्वाहा।।९।। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं स्तूं स्रों खेदयखेदय सर्वजनदृष्टिस्पर्शदोषाय हुं फट् स्वाहा।।१०।।

इति मन्त्रेण कुम्भोपर्यक्षतान् निक्षिप्य गन्धादिभिः संम्पूज्य द्रव्यशुद्धिमिति भावयन् दोषरहितद्रव्यमध्ये अमृतेशीं विचिंतयेत्।

इस मन्त्र से कुम्भ पर अक्षतों को छिड़क कर गन्ध आदि से पूजा करके 'द्रव्य की शुद्धि हो गयी' ऐसी भावना करते हुए दोषरहित द्रव्य के मध्य अमृतेशी का इस प्रकार चिन्तन करें।

मूलं पठित्वा अमृते अमृतोद्भवे अमृतेश्वरि अमृतवर्षिणि अमृतं स्रावय सां जूं जूं अमृतेश्वर्य्यै स्वाहा। इत्यमृतेशीं विचिंत्य सुधादेवीं ध्यायेत्।

मूलमन्त्र को पढ़कर " अमृते अमृतोद्भवे अमृतेश्वरि अमृतवर्षिणि अमृतं स्रावय सां जूं जूं अमृतेश्वर्यै स्वाहा।" इससे अमृतेशी का चिन्तन करके सुधादेवी का इस प्रकार ध्यान करें।

ॐ अखण्डैकवरानन्दकरे परसुधात्मनि। स्वच्छन्दस्फुरणामन्त्रनिधे ह्यमृतरूपिणि।।१।।

इससे ध्यान करके उसके बीच आनन्दभैरव और आनन्दभैरवी का ध्यान करें।

अथानन्दभैरवध्यानं यथा : सूर्यकोटिप्रतीकाशं चन्द्रकोटिसुशीतलम्। अष्टादशभुजन्देवं पञ्चवक्त्रं त्रिलोचन्।।२।। अमृतार्णवमध्यस्थं ब्रह्मपद्मोपरि स्थितम। वृषारूढं नीलकण्ठं सर्वाभरणभूषितम्।।३।। कपालखट्वाङ्गधरं घण्टाडमरुवादिनम्। पाशांकुश–
धरं देवं गदामुशलधारिणम्।।४।। खड्गखेटकपट्टीशमुद्गरं शूलकुन्तले। विधृतं खेटकं मुण्डं वरदाभयपाणिकम्। लोहितं देवदेवेशं भावयेत्साधकोत्तमः।।५।।

इससे ध्यान करके "ॐ ऐं ह्रीं श्रीं वं हसक्षमलवरयूं आनन्दभैरवाय वौषट्" इस मन्त्र से आनन्दभैरव की तीन बार पूजा करके आनन्दभैरवी का ध्यान करें।

अथानन्दभैरवीध्यानं यथा :

भावयेच्च सुरां देवीं चन्द्रकोटियुतप्रभाम्। हेमकुन्देन्दुधवलां पञ्चवक्त्रां त्रिलोचनाम्।।१।। अष्टादशभुजैर्युक्तां सर्वानन्दकरोद्यताम्। प्रहसन्तीं विशालाक्षीं देवदेवस्य सम्मुखीम्।

इससे ध्यान करके "ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हसक्षमलवरयीं आनन्दभैरव्यै वौषट्" इससे पूजा करके हव्य के मध्य अमृतत्व का चिन्तन करें। उसमें मन्त्र यह है :

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं अमृते अमृतोद्भवे अमृतवर्षिणी अमृतस्वरूपिणि अमृतं स्रावयस्रावय शुक्रादिशापात् सुरां मोचयमोचय मोचिकायै नमः। इति घटोपरि अष्टधा जपित्वा मूलमन्त्रं च अष्टधा जपेत्। ततो पावमानः परानन्दः पामानः परोरसः। पावमानपरं ज्ञानं तेन ते पावयाम्यहम्।।१।। इति घटमभिमन्त्र्य धेनुमुद्रयामृतीकृत्य मत्स्यमुद्रयाच्छाद्य कवचेनावगुण्ठ्य चक्रेण संरक्ष्य अस्त्रेण छोटिकाभिर्दशदिग्बन्धनं कृत्वा कलशे ध्यायेत्।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं अमृते अमृतोद्भवे अमृतवर्षिणी अमृतस्वरूपिणि अमृतं स्रावय स्रावय शुक्रादि शापात् सुरां मोचय मोचय मोचिकायै नमः।" इससे घड़े के ऊपर आठ बार जप करके मूलमन्त्र का आठ बार जप करें। इसके बाद "पावमानः परानन्दः पावमानः परोरसः। पावमानपरं ज्ञानं तेन ते पावयाम्यहम्।।१।।" इससे घड़े को अभिमन्त्रित करके धेनुमुद्रा से अमृतीकरण करके मत्स्यमुद्रा से उसे ढककर कवच से अवगुण्ठन करके चक्र से संरक्षित करके अस्त्र से चुटकियां बजाकर दश दिशाओं का बन्धन करके कलश में इस प्रकार ध्यान करें।

देवदानवसम्वादे मथ्यमाने महोदधौ। उत्पन्नोसि महाकुम्भं विष्णुना विधृतः करे।।१।। त्वत्तोये सर्वदेवाः स्युः सर्वे वेदाः समाश्रिताः। त्वयि तिष्ठन्ति भूतानि त्वयि प्राणाः प्रतिष्ठिताः।।२।। शिवस्त्वं च भवाक्षि त्वं विष्णुस्त्वं च प्रजापतिः।। आदित्याद्या ग्रहाः सर्वे विश्वेदेवाः सपैतृकाः।।३।। त्वयि तिष्ठन्ति कलशे यतः कामफलप्रदाः। त्वत्प्रसादादिमं यज्ञं कर्तुमीहे जलोद्भव।।४।। त्वदालोकनमात्रेण भुक्तिमुक्तिफलं महत्। सान्निध्यं कुरु भो कुम्भ प्रसन्नो भव सर्वदा।।५।।

इससे ध्यान करके घटसूक्त का पाठ करें :

समुद्रे मथ्यमाने तु क्षीरोदसागरोत्तमे। तत्रोत्पन्नां सुरां ध्यायेत्कन्यकारूप–धारिणीम्।।१।। अष्टादशभुजां देवीं रक्तान्तायतलोचनाम्। आपीनवर्णां स्वर्णाभां बहुरूपां परां सुराम्।।२।। सा सर्वे तु सराः सर्वा देवीनामभयंकरी। या सुरा सा रमा देवी यो गन्धः स जनार्दनः।।३।। या वर्णः स भवेद्ब्रह्मा यो मदः स महेश्वरः। स्वादे तु संस्थितः सोमः शब्दसंस्थो हुताशनः।।४।। इच्छायां मन्मथो देवः पाताले तु च भैरवः। घटो ब्रह्मा रसो विष्णुः बिन्दवो रुद्र एव च।।५।। हुंकार ईश्वरः प्रोक्तो व्योमादेस्तु सदाशिवः। घटमूले स्थितो ब्रह्मा घटमध्ये तु माधवः।।६।। घटकण्ठे नीलकण्ठो घटाग्रे सर्वदेवताः। लध्वी हि वारुणी देवी महामांसचरुप्रिये।।७।। सर्वविद्या तु या देवी सुरादेवी नमोस्तु ते। अनेन घटसूक्तेन द्रव्यशुद्धिः प्रजायते।।८।।

इस प्रकार घटसूक्त का पाठ करके द्रव्यशुद्धि की भावना करते हुए कलश में इस प्रकार प्राणप्रतिष्ठा करें।

करेणाच्छाद्य ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं सः सोहं अमुदेव्या आधार–सहितकलशेस्मिन् अग्निसूर्यसोमकलानां प्राणा इह प्राणाः १। ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं

शं षं सं हं सः सोहं अमुकदेव्या अस्मिन्कलशे जीव इह स्थितः २। ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं हं सः सोहं अमुकदेव्या अस्मिन्कलशे सर्वेन्द्रियाणि वाङ्मनस्त्वक्चक्षु-र्जिह्वाश्रोत्रघ्राणपाणिपादपायूपस्थानि इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा ३।

इससे कलश में प्राणप्रतिष्ठा करके गन्ध आदि से पूजा करके कलश को इस प्रकार बलि देवें।

कुम्भसमीपे रक्तचन्दनसिन्दूरकुंकुमान्येकत्र मेलयित्वा तेन त्रिकोणवृत्तचतुरस्त्रं मण्डलं कृत्वा तत्र सर्वपथिकदेवेभ्यो नमः। इति गन्धादिभिः सम्पूज्य तदुपरि द्रव्यशुद्धिमीनमुद्रान्वितं बलिं निधाय तत्त्वमुद्रया बलिमृत्सृज्य तं बलिं वामपाणिना कलशोपरि त्रिधा भ्राम्य मूलमूच्चरन् पूजाबाह्ये निक्षिपेत्। इति सुधाकलशस्थापनम्।

कुम्भ के निकट लालचन्दन, सिन्दूर और कुंकुम को एक में मिलाकर उससे त्रिकोण, वृत्त, चौकोर मण्डल बनाकर वहाँ "सर्वपथिक देवेभ्यो नमः" इससे गन्ध आदि से पूजा करके उसके ऊपर द्रव्य, शुद्धि, मीन मुद्रा से युक्त बलि रखकर तत्त्वमुद्रा से बलि का उत्सर्जन करके उस बलि को बाएं हाथ से कलश के ऊपर तीन बर घुमाकर मूल मन्त्र का उच्चारण करते हुए पूजा के बाहर डाल देवें।

अथ स्वीकारः।

ॐ सिद्धाड्यां शिवगेहिनीं करलसत्पाशांकुशां भैरवीं भक्ताभीष्टवरप्रदां सुकुशलां संसारबन्धच्छिदम्। पीयूषाम्बुधिमन्थनोद्भवरसां संविद्विलासां परां वीराराधितपादुकां सुविजयां ध्यायेज्जगन्मोहिनीम्। इससे ध्यान करके ॐ संविदे ब्रह्मसम्भूते ब्रह्मपुत्रि सदानघे। भैरवानन्दतृप्त्यर्थं पवित्रा भव सर्वदा। यह मन्त्र पढ़ें, फिर :

ॐ ब्राह्मण्यै नमः स्वाहा १। ॐ सिद्धमूलक्रिये देवि हीनबोधप्रबाधिनी। राजप्रजावशंकरि शत्रुकण्ठनिषूदिनि। ऐं क्षत्रियायै नमः स्वाहा २। ॐ ज्ञानेन्धनदीप्ताग्निज्वालाग्नि ज्ञानरूपिणी। आनन्दस्यागमं प्रीतिं सम्यग् ज्ञानं प्रयच्छ मे। ह्रीं वैश्यायै नमः स्वाह ३। ॐ नमस्यामि नमस्यामि योगमार्गप्रदर्शिनि। त्रैलोक्यविजये मातः समाधिफलदा भव। क्लीं शूद्रायै नमः स्वाहा।

इन मन्त्रों से संप्रोक्षण करके :

ॐ अमृते अमृतोद्भवे अमृतवर्षिणि अमृतमाकर्षयआकर्षय सिद्धिं देहि सर्वं मे वशमानय स्वाहा।

इस मन्त्र से अभिमन्त्रित करके "ॐ ह्रीं ह्रीं लूं अः अं डं एं महाघोरेशाय नमः।" इससे संग्रह करके मूलमन्त्र का सात बार जप करके उसके बीच अपनी इष्टदेवी का आवाहन करके धेनुमुद्रा तथा योनिमुद्रा दिखलाकर स्वधा देवी की इस प्रकार प्रार्थना करें।

संविद्देवि गरीयसी गुणमयी वैगुण्यविध्वंसिनी मायामोहमदान्धकारशमनी तापत्रयोन्मूलिनी। वाग्देवी वदनाम्बुजैकरसिका सम्बोधिनी दीपिका ब्रह्मज्ञानविवेकसिद्धविजया विज्ञानमूर्त्यै नमः।।१।। संविदासवयोर्मध्ये संविदेव गरीयसी। भयनाशाय निर्गन्धा विख्याता मोदकारिणी।।२।।

इससे स्तुति करके मानसोपचारों से पूजा करके "ऐं गुरुपादुकाभ्यो नमः" इस मन्त्र से ब्रह्मरन्ध्र में श्रीगुरु का तीन बार तर्पण करके मूलमन्त्र से हृदयकमल में अपने इष्टदेवी का इस प्रकार पाँच बार तर्पण करें।

ॐ आत्मतत्त्वेन आत्मतत्त्वं शोधयामि स्वाहा।।१।। ऐं विद्यातत्त्वेन विद्यातत्त्वं शोधयामि स्वाहा।।२।। ऐं शिवतत्त्वेन शिवतत्त्वं शोधयामि स्वाहा।।३।। मूलमुच्चार्य सर्वतत्त्वेन सर्वतत्त्वं शोधयामि स्वाहा।।४।। एं वदवद वाग्वादिनी मम जिह्वाग्रे स्थिरा भव सर्वसत्ववशङ्करि स्वाहा।

इससे मुख से जठराग्नि में हवन करें और मूलमन्त्र से सब पान करें।

इति सुधाकुम्भस्थापनम्।

अथ साम्बकलशस्थापनम्।

देवीदक्षिणतः त्रिकोणमण्डलं कृत्वा जलेन प्रोक्ष्य त्रिकोणान्तर्मायां (ह्रीं) विलिख्य ॐ ह्रीं आधारशक्त्यै नमः इति मन्त्रेण सम्पूज्य मूलेन फट् इति मन्त्रेण त्रिपदाधारं प्रक्षाल्य त्रिकोणमध्ये संस्थाप्य मूलेन नमः इति पूजयेत्। ततः सुदर्शनायास्त्राय फट् इति मन्त्रेण ताम्रदिकलशं प्रक्षाल्य आधारोपरि हस्तद्वयेन संस्थाप्य रक्तवस्त्रमाल्यादिना भूषयित्वा मूलेन नमः इति मन्त्रेण सम्पूर्य ॐ भूर्भुवः स्वः वरुण इहागच्छेह तिष्ठ इति वरुणमावाह्य तन्मध्ये स्वेष्टदेवीं ध्यात्वा गन्धाक्षत पुष्पैः सम्पूजयेत्।।

देवी के दाहिनी ओर त्रिकोण मण्डल करके जल से प्रोक्षण करके त्रिकोण के भीतर माया (ह्रीं) लिखकर 'ॐ ह्रीं आधारशक्त्यै नमः' इस मन्त्र से पूजा करके मूल मन्त्र में 'फट्' यह जोड़कर उस मन्त्र से त्रिपदाधार को धोकर त्रिकोण के मध्य स्थापित करके मूलमन्त्र के साथ 'नमः' लगाकर पूजा करें। इसके बाद सुदर्शन अस्त्र के साथ "फट्" लगाकर उस मन्त्र से ताम्र आदि के कलश को स्वच्छ करके आधार के ऊपर दोनों हाथों से ताम्र आदि के कलश को वस्त्र तथा माला आदि से भूषित करके मूल मन्त्र के साथ नमः जोड़कर इस मन्त्र से पूर्ण करके " ॐ भूर्भुवः स्वः वरुण इहागच्छेह तिष्ठ" इससे वरुण का आवाहन करके उसके बीच अपनी इष्टदेवी का ध्यान करके गन्ध, अक्षत और पुष्प से पूजा करें।

इति साम्बकलशस्थापनम्।

अथ घण्टास्थापनम्।

देवीदक्षिणतः पूर्ववत् घण्टां संस्थाप्य नादं कृत्वा पूजयेत्। तद्यथाः ॐ भूर्भुवः स्वः गरुडाय नमः आवाहयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमस्करोमि इत्यावाह्य जगद्ध्वनिमन्त्रमातः स्वाहा इति मन्त्रेण घण्टास्थितगरुडघण्टां सम्पूज्य गरुडमुद्रां च प्रदर्शयेत्।

देवी की दाहिनी ओर पूर्ववत् घण्टा स्थापित करके उसे बजाकर पूजा करें। तद्यथा : "ॐ भूर्भुवः स्वः गरुडाय नमः आवाहयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि नमस्करोमि" इससे आवाहन करके "जगद्ध्वनिमन्त्रमातः स्वाहा" इस मन्त्र से घण्टास्थित गरुडघण्टा की पूजा करके गरुडमुद्रा दिखलावें।

इति घण्टास्थापनम्।

इति घण्टां संस्थाप्य गन्धाक्षतपुष्पादीनि च पूजोपकरणानि स्वदक्षिणपार्श्वे संस्थाप्य मूलेन नमः इति जलेन प्रोक्ष्य ॐ शताभिषेके शताभिषेके पदे हुं फट् स्वाहा। ॐ पुष्पकेतुराजार्हत् पुष्पे पुष्पे महापुष्पे सुपुष्पे पुष्पसम्भवे पुष्पचयावकीर्णे हुं फट् स्वाहा इति पुष्पाण्यभिमन्त्र्य अन्यानि पूजावस्तूति सर्वाणि सामान्यार्घ्योदकेनाभिषिंच्य धेनुमुद्रामत्स्यमुद्रे दर्शयित्वा पुष्पाणि शुद्धानि विभाव्य जलार्थे बृहतपात्रं व्यअनं छत्रादर्शचामराणि च स्ववामे संस्थाप्य अखण्डदीपस्थानं कुर्यात्।

इस प्रकार घण्टा की स्थापना करके गन्ध, अक्षत, पुष्प आदि पूजा के उपकरण अपने दाहिनी ओर रखकर मूलमन्त्र में "नमः" जोड़कर उस मन्त्र से जल द्वारा प्रोक्षण करके "ॐ शताभिषेके

शताभिषैके पदे हुं फट् स्वाहा। ॐ पुष्पकेतु राजार्हत् पुष्पे पुष्पे महापुष्पे सुपुष्पे पुष्पसम्भवे पुष्पचयावकीर्णे हुं फट् स्वाहा" इससे पुष्पों को अभिमन्त्रित करके अन्य सब पूजा की वस्तुओं को सामान्य अर्घोदक से अभिषिक्त करके धेनुमुद्रा तथा मत्स्यमुद्रा दिखलाकर 'पुष्प शुद्ध हो गये हैं' ऐसी भावना करके जल के लिए बड़ा बर्तन, पंखा, छाता, दर्पण तथा चामर अपने बाईं ओर रखकर अखण्डदीप का स्थापन करें।

अथाखण्डदीपस्थापनम्। देवदक्षिणतः घृतदीपं वामे तैलदीपं च स्थापयेत्। तद्यथा : दीपपात्रे गोघृतेन तैलेन वा सम्पूर्य मन्त्रवर्णतन्तुभिः वर्ति निक्षिप्य प्रणवेन प्रज्वाल्य सुदर्शनमन्त्रेण घृतदीपं पाशुपतास्त्रमन्त्रेण तैलदीपं च पूजयेत्। सुदर्शनमन्त्रो यथाः ॐ रां रीं रूं रैं रौ रः ॐ सहस्रार हुं फट् स्वाहा। पाशुपतास्त्रमन्त्रो यथाः ॐ श्लीं पशु हुं फट् स्वाहा इति मन्त्रेण गन्धपुष्पाभ्यां सम्पूज्य हस्तद्वयेन दीपशिखां स्पृष्ट्वा मन्त्रं पठेत्। तत्र मन्त्रः ॐ घोराय घोरतराय महारौद्राय वीरभद्राय ज्वालामालिने सर्वदुष्टोपसंहर्त्रे हुं फट् स्वाहा। इति पठित्वा पश्चात्तत्तेजसात्मानं समर्प्य चित्तशोधनं कुर्यात्। तद्यथाः ॐ हुं फट् स्वाहा इति मुखे। ॐ रक्षरक्ष हुं फट् स्वाहेति हृदि हस्तं दत्वात्मरक्षां विधाय ॐ इति मन्त्रेण चन्दनपुष्पाणि कराभ्यां मर्दयित्वा पुष्पाक्षता आदाय। ते सर्वे विलयं यान्तु ये मां हिंसति हिंसकाः। मृत्युरोगभयक्लेशाः पतन्तु रिपुमस्तके।।१।। इति मन्त्रेण ईशान्यां दिशि दूरतः पुष्पं क्षिप्त्वा हस्तौ प्रक्षाल्याचम्य कूर्म मुखे स्वनामाक्षरस्थितिकोष्ठे वा दीपं संस्थापयेत्। इत्यखण्डदीपस्थापनम्।

देवता की दहिनी ओर घी का दीपक तथा बाईं ओर तेल का दीपक स्थापित करें। तद्यथा : दीपपात्र में गोघृत या तेल भरकर मन्त्र में जितने वर्ण हों उतने तार की बत्ती उसमें डालकर प्रणव (ॐ) से उसे जलाकर सुदर्शन मन्त्र से घृत दीप को तथा पाशुपतास्त्र मन्त्र से तैलदीप की पूजा करें। सुदर्शन्न मन्त्र यह है : ॐ रां रीं रूं रैं रौं रः ॐ सहस्रार हुं फट् स्वाहा।" पाशुपतास्त्र मन्त्र यह है : 'ॐ श्लीं पशु हुं फट् स्वाहा" इस मन्त्र से गन्ध और फूलों द्वारा पूजा कर दोनों हाथों से दीपशिखा को छूकर मन्त्र पढ़ें। वहां मन्त्र यह है:

" ॐ घोराण्य घोरतराय महा रौद्राय वीरभद्राय ज्वालामालिने सर्वदुष्टोपसं हर्त्रे हुं फट् स्वाहा।" इसे पढ़कर उसके तेज से अपने आप को समर्पित करके चित्त का इस प्रकार शोधन करें : "ॐ हुं फट् स्वाहा" इससे मुख में, "ॐ रक्ष रक्ष हुं फट् स्वाहा" इससे हृदय में हाथ देकर आत्मरक्षा करके "ॐ" इस मन्त्र से चन्दन पुष्प हाथों से मसल कर पुष्प और अक्षत लेकरः

"ते सर्वे विलयं यान्तु ये मां हिंसति हिंसकाः।
मृत्यु रोग भय क्लेशाः पतन्तु रिपुमस्तके।।१।।

इस मन्त्र से ईशानी दिशा में दूर से फूल फेंककर हाथों को धोकर कूर्म के मुख में या अपने नाम वाले कोष्ठ में दीपक को रखें।

इति अखण्ड दीपस्थापन।

इसके बाद स्वर्ण आदि से निर्मित मन्त्र या मूर्ति को पटलमार्ग से पीठ के मध्य स्थापित करके प्राणप्रतिष्ठा करें।

अथ प्राणप्रतिष्ठाप्रयोगः।

देशकालौ संकीर्त्य ममामुकदेव्या नूतनयन्त्रे मूर्तौ वा प्राणप्रतिष्ठां करिष्ये। इति संकल्प्य प्रतिष्ठां कुर्यात्।

"देश कालौ संकीर्यत्य ममामुकदेव्या नूतन यन्त्रे मूर्तौ वा प्राण प्रतिष्ठां करिष्ये।" इससे संकल्प करके इस प्रकार प्राण प्रतिष्ठा करें :

विनियोग : ॐ अस्य श्रीप्राणप्रतिष्ठामन्त्रस्य ब्रह्मविष्णुमहेश्वरा ऋषयः ऋग्यजुःसामानि छन्दांसि क्रियामयवपुःप्राणाख्या देवताः आं बीजं ह्रीं शक्तिः क्रौं कीलकं अस्य नूतनयन्त्रस्य मूर्तेर्वा प्राणप्रतिष्ठापने विनियोगः।

इससे जल छोड़कर हाथ से ढककर

ॐ आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हं सः सोहं अस्य अमुकदेवीसपरिवारयन्त्रस्य प्राणा इह प्राणः।।१।। पुनः ॐ आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हं सः सोहं अस्य अमुदेवीसपरिवारयन्त्रस्य जीव इह स्थितः।।२।। पुनः ॐ आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हं सः सोहं अस्य अमुकदेवीसपरिवारयन्त्रस्य सर्वेन्द्रियाणि त्विह स्थितानि।।३।। पुनः ॐ आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हं सः सोहं अमुकदेवीसपरिवारयन्त्रस्य वाङ्मनस्त्वक्चक्षुश्रोत्रजिह्वाघ्राणपाणिपादपायूपस्थानि इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा।।४।। इससे प्राणप्रतिष्ठा करके 'यः प्राणतो निमिषतो महित्वे विधेम' इस मन्त्र को तीन बार पढ़ें।

ममोजूतिर्जूषता० सुप्रतिष्ठा प्रतिष्ठा इत्युक्त्वा संस्कारसिद्धये पञ्चदशप्रणवावृत्तीः कृत्वा "अनेन अमुकदेव्या सपरिवारयन्त्रस्य गर्भाधानादिपञ्चदशसंस्कारान्संपादयामि। इति वदन् ॐ यन्त्रराजाय विद्महे। महायन्त्राय धीमहि। तन्नो यन्त्रः प्रचोदयात्। इति दशधाभिमन्त्र्य मूलदेवतां ध्यात्वा मानसोपचारैः सम्पूजयेत्।

फिर "नमो जूतिर्जूषता० सुप्रतिष्ठा प्रतिष्ठा"

यह कहकर संस्कारसिद्धि के लिए पन्द्रह बार प्रणव (ॐ) की आवृत्ति करके "अनेन अमुक देव्या सपरिवार यन्त्रस्य गर्भाधानादि पंचदश संस्कारान्संपादयामि।" यह कहते हुए "ॐ मन्त्रराजाय विद्महे, महायन्त्राय धीमहि, तन्नो यन्त्रः प्रचोदयात्।" इससे दश बार अभिमन्त्रित करके मूल देवता का ध्यान करके मानसोपचारों से पूजा करें।

अथ मानसोपचारपूजा।

मूलाधारे ध्वजाधो गुदोर्ध्वे चतुष्कोणपत्रे वं शं षं समिति सहिते प्रसुप्तभुजगाकारां स्वयं भूलिङ्गवेष्टिनीं ध्यायेत्।

मूलाधार चक्र में ध्वजा के नीचे गुदा के ऊपर चतुष्कोणपत्र में "वं शं षं समिति सहिते प्रसुप्त भुजगाकारां स्वयं भूलिंग वेष्टिनी कुण्डलिनी नाड़ी का ध्यान करें।

अथ ध्यानम्।

ध्यायेत्कुण्डलिनीं सूक्ष्मां मूलाधारनिवासिनीम्। प्रसुप्तभुजगाकारां विद्युत्पटल सन्निभाम्।।१।। तामिष्टदेवतारूपां सार्द्धत्रिवलयान्विताम्। कोटिसौदामिनीभासां स्वयं भूलिङ्गवेष्टिनीम्।।२।।

इससे ध्यान करके मानसोपचारों से इस प्रकार पूजन करें :

उद्यच्चन्दनकुंकुमारुणपयोधाराभिराप्लावितां नानावर्णमणिप्रवालघटितां दत्तां गृहाणाम्बिके। आमृष्टां सुरसुन्दरीभिरभितो हस्ताम्बुजैर्भक्तितो मातः सुन्दरि भक्तिकल्पलतिके श्रीपादुकामादरात्।।१।। देवेन्द्रादिभिरर्चितं सुरगणैरादाय सिंहासनं चञ्चत्काञ्चन–

संचयातिरचितं चारुप्रभाभासुरम्। एतच्चम्पककेतकीपरिमलं तैलं मया निर्मितं गन्धो-द्वर्तनमादरेण तरुणीदत्तं गृहाणाम्बिके।।२।। पश्चादेवि गृहाण शम्भुगृहिणि ध्वंसे शिवाप्रेयसि गन्धद्रव्यसमूहनिर्भरभरं धात्रीफलं निर्मलम्। त्वत्केशान्परिशोध्य कंकतिकया मन्दाकिनीस्रोतसि स्नात्वा प्रोक्षणगन्धिकं भवतु ते श्रीसुन्दरि त्वन्मुदे।।३।। सुराधिपतिकामिनीकरसरोजनालीधृतां साचन्दनसुकुंकुमागुरुभरेण विभ्राजिताम्। महापरिमलोज्वलां सरसशुद्धकस्तूरिकां गृहाण वरदायिनि त्रिपुरसुन्दरि श्रीप्रदे।।४।। गन्धर्वामर किन्नरप्रियतमासन्तानहस्ताम्बुजे विस्तारै-र्ध्रियमाणमुत्तरतरं काश्मीरजापिंजरम्। मातर्भास्कारभानुमण्डललसत्कान्तिप्रतानोज्वलं चैलं निर्ममातनोतु वसनं श्रीसुन्दरि त्वन्मुदे।।५।। स्वर्णाकल्पितकुण्डले श्रुतियुगे हस्ताम्बुजे मुद्रिका मध्ये सा रसना नितम्बफलके मञ्जीरमंघ्रिद्वये। हारो वक्षसि कंकणौ क्वणरणत्कारौ करद्वन्द्वके विन्यस्तं मुकुटं शिरस्यनुदिनं दत्तोन्मुदं श्रूयताम्।।६।। ग्रीवायां घृतकान्ति कान्तपटलं ग्रैवेयकं सुन्दरं सिन्दूरं विलसल्लाटफलके सौन्दर्यमुद्राधरम्। राजत्कज्जलमुज्वलोत्पलपलश्रीमोचने लोचने तद्दिव्यौषधिनिर्मितं रचयतु श्रीशाम्भवि श्रीपदे।।७।। अगन्दतरमन्दरोन्मथित-दुग्धसिन्धूद्भवं निशाकरकरोपमं त्रिपुरसुन्दरि श्रीप्रदे। गृहाण मुखमीक्षितुं मुकुरबिम्बमाविद्रुमैर्विनिर्मितमघच्छिदे वलिकराम्बुज-स्थायिनम्।।८।। कस्तूरीद्रवचन्दनागुरुसुधाधाराभिराप्लावितं चञ्चच्चम्पकपाटलादिसुरभिद्रव्यैः सुगन्धीकृतम्। देवस्त्रीगणमस्तकस्थितमहारत्नादि कुम्भोद्धृतंचाम्भः शाम्भवि सम्भ्रमेण विमलं दत्तं गृहाणाम्बिके।।९।। कह्लारोत्पलनागकेसरसरोजाख्यावलीमालतीमल्ली-कैरवकेतकादि कुसुमैरक्ताश्वमारादिभिः। मुष्पैर्माल्यभरेण वै सुरभिर्भिर्नानासरः स्रोतसां ताम्राम्भेजनिवासिनीं भगवती श्रीसुन्दरीं पूजये।।१०।। मांसीगुग्गुलचन्दनागुरुरजः कर्पूरशैलेयजैर्माध्वीकैः सरकुंकुमैः सुरभितैः सर्पिभिरामिश्रितैः सौरभ्यस्थितिमन्दिरे मणिमये पादे भवत्प्रीतये धूपोयं सुरमानिनी विरचितः श्रीसुन्दरि त्वन्मुदे।।११।। घृत द्रवपरिस्फुटद्रुचिररत्नयष्ट्यान्वितो महातिमिरनाशनः सुरनितम्बिनीनिर्मितः। सुवर्णचषकस्थितः सघनसारवर्त्या युतस्तवत्रिपुरसुन्दरि स्फुरतु देवि दीपो मुदे।।१२।। जातीसौरभनिर्भरं रुचिकरं शाल्योदनं निर्मलं युक्तं हिंगुमरीचजीरसुरभिद्रव्यान्वितैर्व्यञ्जनैः। पक्वान्नै रस पायसेन मधुना दध्याज्यसम्मिश्रितं नैवेद्यं सुरकामिनीविरचितं श्रीसुन्दरि त्वन्मुदे।।१३।। लवङ्गकलिकोज्वलं बहुलनागवल्लीदलं सजातिफलकोमलं सघनसारपूगीफलम्। सुधा-मधुरिमाकुलं रुचिररत्नपात्रस्थितं गृहाण मुखपंकजे स्फुरितमम्ब ताम्बूलकम्।।१४।। शरत्प्रभवचन्द्रमः स्फुरितचन्द्रिकासुन्दरं दलत्सुरंतरङ्गिणीललितमौक्तिकाडम्बरम्। गृहाण नवकाञ्चन- प्रभ्वदण्डखण्डोज्वलं महात्रिपुरसुन्दरि प्रकटमात पत्रं महत्।।१५।। मातस्ते सुचिरं तनोतु सुभगे स्त्रीभिः समान्दोलितं शुभ्रं चामरमिन्दुकुन्दसदृशं प्रस्वेददुःखापहम्। सद्योऽगस्त्यैव शिष्ठनारदशुकव्यासादिवाल्मीकिभिः स्वे चित्ते क्रियमाण एव क्रियतां शर्वाणि वेदध्वनिः।।१६।। सवर्गाङ्गनावेणुमृदङ्गशङ्खभेरीनिनादै रुपगीयमाना। कोलाहलै-राकुलिता तवास्तु विद्याधरीनृत्यकला सुखाय।।१७।। देवी भक्तिरसभावितवृत्ते प्रीयतां यदि कुतोपि न लभ्यते। तत्त्रैलोक्यमपि सफलमेकं जन्मकोटिभिरपीह न लभ्यम्।।१८।।

एतै षोडशभिः पाद्यैरुपचारोपकल्पितैः। यः परां देवतां स्तौति स तेषां फलमाप्नुयात्। इति मानसोपचारपूजनम्।

इन सोलह उपचार कल्पित पाद्यों से जो परम देवता की स्तुति करता है वह उनका फल पाता है।

इति मानसोपचार पूजन।

इति मानसोपचारैः संपूज्य पाद्यादिपूजनं कुर्यात्।

इस प्रकार मनसोपचारों से पूजा करके पाद्यादि पूजने करें।

अथ पाद्यादिपूजनम्।

अक्षत लेकर

आत्मसंस्थामजां शुद्धां त्वामहं परमेश्वरीम्। आरण्यमिव हव्यांशं मूर्तावावाहयाम्यहम्।।१।। देवेशि भक्तिसुलभे परिवारसमन्विते। यावत्त्वां पूजयिष्यामि तावद्देवि इहावस।।२।। यह कहें, फिर

मूलं पठित्वा भगवति अमुकदेवि इहागच्छ इत्यक्षतान्निक्षिप्य प्रसारितसंहतांगुलीमूल–पर्वणोरंगुष्ठयोगो आवाहनीमुद्रां तां प्रदर्शयेत्। इत्यावाहनम्।।१।।

मूलमन्त्र पढ़कर "भगवति अमुकदेवि इहागच्छ" इससे अक्षतों को फेंककर प्रसारित संहत अँगुलियों के मूल पर्वों और अंगूठे के योग रूप आवाहनी मुद्रा होती है, उसे प्रदर्शित करें।

इत्यावाहन।

अथस्थापनम्

तवेयं महिमा मूर्तिस्तस्यां त्वां सर्वगां प्रभो। भक्तिस्नेह समाकृष्टां दीपवत्स्थापयाम्यहम्। मूलं पठित्वा अमुकदेवि इह तिष्ठ इत्यक्षतान्निक्षिप्य पूर्वोक्तां अधोमुखमुद्रां प्रदर्शयेत्। इति स्थापनम्।।२।।

तवेयं महिमा मूर्तिस्तस्यां त्वां सर्वगां प्रभो। भक्तिस्नेह समाकृष्टां दीपवत्स्थापयाम्यहम्।। मूलमन्त्र का पाठ करके "अमुक देवि इह तिष्ठ" इससे अक्षतों को फेंककर पूर्वोक्त अधोमुख मुद्रा प्रदर्शित करें।

इति स्थापन।

अथासनम्

ॐ सर्वान्तर्यामिनी देवि सर्वबीजमये शुभे। स्वात्मस्थायै परं शुद्धमासनं कल्पाम्यहम्। मूलं पठित्वा अमुकदेव्यै नमः आसनं समर्पयामि इति पुष्पाद्यासनं दत्त्वा पद्ममुद्रां प्रदर्शयेत्। इत्यासनम्।।३।।

ॐ सर्वान्तर्यामिनी देवि सर्वबीजमये शुभे। स्वात्मस्थायै परं शुद्धमासनं कल्पयाम्यहम्। मूलमन्त्र का पाठ कर "अमुक देव्यै नमः आसनं समर्पयामि" इससे पुष्पाद्यासनं देकर पद्ममुद्रा प्रदर्शित करें।

इत्यासन प्रदान।

अथ सन्निधापनम्

अस्मिन् वरासने देवि सुखासीनेऽक्षरात्मिके। प्रतिष्ठिता भवेस्सा त्वं प्रसीद परमेश्वरि। मूलं पठित्वा अमुकदेव्यै नमः इह प्रतिष्ठता भव इति पूर्वोक्तया मुद्रया प्रतिष्ठापयेत्। मूल पढ़कर "अमुक देव्यै नमः इह प्रतिष्ठता भव" इस पूर्वोक्त मुद्रा से प्रतिष्ठापित करें।

५५२

अनन्या तब देवेशि मूर्तिशक्तिरियं प्रभो। सान्निध्यं कुरु तस्यां त्वं भक्तानुग्रहतत्परे।

मूलं पठित्वा अमुकदेवि इह सन्निधेहि इत्यक्षतान्निक्षिप्य उच्छितांगुष्ठमुष्ट्योः संयोगात् सन्निधापनीमुद्रां प्रदर्शयेत्। इति सन्निधापनम्।।४।।

मूल मन्त्र पढ़कर "अमुक दवि इह सन्निधेहि" इससे अक्षत छोड़कर उठी हुई अंगूठे और मुट्ठियों के योग से सन्निधापनी मुद्रा प्रदर्शित करें।

इति सन्निधापन।

अथ सन्निरोधनम्

आज्ञया तव देवेशि कृपाम्भोधे गुणाम्बुधे। आत्मानन्दैकतृप्तां त्वां संरुणद्धि महेश्वरि।

मूलं पठित्वा अमुकदेवि इह सन्निरुध्य इत्यक्षतान्निक्षिप्य प्रवेष्टितांगुष्ठमुष्ट्यात्मिकया सन्निरोधनीमुद्रां प्रदर्शयेत्। इति सन्निरोधनम्।।५।।

मूल मन्त्र पढ़कर "अमुक देवि इह सन्निरुध्य" इससे अक्षत डालकर प्रवेष्टित अंगूठे और मुट्ठी के द्वारा सन्निरोधिनी मुद्रा प्रदर्शित करें।

इति सन्निरोधन।

अथ सम्मुखीकरणम्

अज्ञानाद्दुर्मनस्त्वाद्वा वैकल्यात्साधकस्य च। मम ऊनं भवेत्कृत्यं तदप्यभिमुखा भव।

मूलं पठित्वा अमुकदेवि इह सम्मुखा भव इत्यक्षतान्निक्षिप्य उत्तानमुष्टियुगलात्मिकया सम्मुखीकरणमुद्रां प्रदर्शयेत्। इति सम्मुखीकरणम्।।६।।

मूल मन्त्र पढ़कर "अमुकदेवि इह सम्मुखा भव" इससे अक्षतों को डालकर उत्तान दोनों मुट्ठियों वाली सम्मुखीकरण मुद्रा प्रदर्शित करें।

इति सम्मुखीकरण।

अथ अवगुण्ठनम्

अभक्तवाङ्मनश्चक्षुः श्रोत्रदूरातिगद्युते। स्वतेजः पंजरेणाशु वेष्टिता भव सर्वतः।

मूलं पठित्वा हूं अमुकदेवि अवगुण्ठिता भव इत्यक्षतान्निक्षिप्य सव्यहस्तमुष्टिदीर्घाधो–मुखतर्जन्यात्मिकया अवगुण्ठनीमुद्रां प्रदर्शयेत्। इत्यवगुण्ठनम्।।७।।

मूल मन्त्र पढ़कर "अमुकदेवि अवगुंठिता भव" इससे अक्षतों को डालकर बाएं हाथ से लम्बी मुट्ठी को तर्जनी अङ्गुली के साथ नीचे करके अवगुंठनी मुद्रा प्रदर्शित करें।

इत्यवगुण्ठन।

अथ स्वागतम्

ततोऽलिं बध्वा ॐ दशपीयूषवर्षिण्यापूरयेद्यज्ञविष्टरम्। मूर्तौ वा यज्ञसम्पूर्तौ स्थिरा भव महेश्वरि।

इसके बाद अंजली बाँधकर "ॐ दशपीयूषवर्षिण्यापूरयेदमज्ञविष्टरम्। मूर्तौं वा यज्ञसम्पूर्तौं स्थिरा भव महेश्वरि।।

इससे अञ्जली की मुद्रा से प्रार्थना करें।

ॐ यस्या दर्शनमिच्छन्ति देव्यास्स्वाभीष्टसिद्धये। तस्यै ते परमेशान्यै आगतं च मे।

मूलं पठित्वा साङ्गे सायुधे सवाहने सावरणे श्रीअमुकदेवि तव स्वागतम्। इत्यक्षतान्निक्षिप्य प्रसारितांगुल्यधोमुखकरद्वयेन स्वागतमुद्रां प्रदर्शयेत्। इति स्वागतम्।।८।।

मूल मन्त्र पढ़कर "सांगे सायुधे सवाहने सावरणे श्री अमुकदेवि तवस्वागतम" इससे फैली हुई अंगुलियों वाले अधोमुख दोनों हाथों से स्वागत मुद्रा प्रदर्शित करें।

इति स्वागत।

अथ सुस्वागतम्

ॐ कृतार्थोऽनुगृहीतोऽस्मि सफलं जीवितं च मे। आगता देवदेवेशि सुस्वागतमिदं पुनः।

मूल का पाठ करके :

साङ्गे सायुधे सवाहने सावरणे श्रीअमुकदेवि तव स्वागतम् इत्यक्षतान्निक्षिप्य ऊर्ध्वमुखी पूर्वोक्तमुद्रां प्रदर्शयेत्।

इससे अक्षत डालकर ऊर्ध्वमुखी पूर्वोक्त मुद्रा प्रदर्शित करें।

इति सुस्वागतम्।।१०।।

इति सुस्वागतं कृत्वा करं बध्वा प्रार्थयेत्।

इस प्रकार सुस्वागत करके हाथ जोड़कर इस प्रकार प्रार्थना करें :

स्वागतं देवदेवेशि मद्भाग्यात्त्वमिहागता। प्राकृतं त्वमदृष्ट्वा मां बालवत्परिपालय।

मूलं पठित्वा अमुकदेव्यै नमः प्रार्थनां समर्पयामि नमस्करोमि।।११।।

मूलमन्त्र पढ़कर "अमुकदेव्यै नमः प्रार्थनां समर्पयामि नमस्करोमि।"

इति सप्रार्थ्य ततो मूलमन्त्रेणार्घ्योदकेन त्रिः सम्प्रोक्ष्य योनिं महायोनिं च बध्वा खड्गमुण्डाऽभ्यवरमुद्रां प्रदर्श्य पञ्चपुष्पाञ्जलींश्च दद्यात् तत्र एकं पादे १। द्वितीयं जानुनि २। तृतीयं नाभौ ३। चतुर्थं हृदये ४। मस्तके पञ्चममिति पुष्पाञ्जलिं दत्त्वा पाद्यादिपूजनं कुर्यात्।

इस प्रकार प्रार्थना करके मूलमन्त्र से अर्घ्योदक से तीन बार प्रोक्षण करके योनि और महायोनि को बाँधकर खड्ग मुद्रा और अभय मुद्रा प्रदर्शित करके पाँच पुष्पाञ्जलि देवें। उसमें प्रथम पैर पर १। द्वितीय जङ्घे पर २। तृतीय नाभि पर ३। चतुर्थ हृदय पर ४। पञ्चम मस्तक पर ५। पुष्पाञ्जलि देकर पाद्य आदि से पूजन करें।

अथ पाद्यादिपूजनम्।

ॐ यद्भक्तिलेशसम्पर्कात्परमानन्दसम्भवः। तस्मै ते चरणाब्जाय पाद्यं शुद्धाय कल्पये।

मूलं पठित्वा अमुकदेव्यै नमः पाद्यं समर्पयामि इतिपूर्वोक्तपुष्प–गन्धोशीररोचन–श्यामाकविष्णुक्रान्ताब्जदूर्वायुतं जलमनामांगुष्ठयोर्योगेन सामान्यार्घोदकेन शंखोदकेन वा पादयोर्दद्यात्। इति पाद्यम्।।१।।

मूलमन्त्र पढ़कर "अमुक देव्यै नमः पाद्यं समर्पयामि" इससे पूर्वोक्त पुष्प, गन्ध, उशीर, गोरोचन, श्यामाक, विष्णुक्रान्ता, कमल तथा दूब से युक्त जल अनामिका और अंगूठे के योग से सामान्य अर्घोदक से अथवा शङ्खोदक से पैरों पर देवें।

इति पाद्यदान।

अथ आचमनम्

ॐ वेदानामपि वेदायै देवानां देवतात्मने। आचमनं कल्पयामीशि शुद्धानां शुद्धिहेतवे।

मूलं पठित्वा अमुकदेव्यै नमः आचमनं समर्पयामि इत्याचमनीयं कनिष्ठाहीनोन्नतसंयुक्त चतुरंगुलीरूपाचमनमुद्रया चन्दनपुष्पजातीकर्पूरकङ्कोलवङ्गतमालकादिचूर्णसंयुक्तार्घजलं मुखे दद्यात्। इत्याचमनम्।।२।।

मूलमन्त्र पढ़कर "अमुकदेव्यै नमः आचमनं समर्पयामि" इससे आचमन को कनिष्ठा के अतिरिक्त संयुक्त चार अंगुलियों से बनी आचमन मुद्रा से चन्दन, पुष्प, जावित्री, कपूर, कंकोल, लवंग, तमाल आदि के चूर्ण से युक्त जल को मुख में देवें।

इत्याचमनदान।

अथ मधुपर्कदानम् :

ॐ सर्वकालुष्यहीनायै परिपूर्णसुखात्मने। मधुपर्कमिदं देवि कल्पयामि प्रसीद मे।

मूलं पठित्वा अमुकदेव्यै नमः मधुपर्कं समर्पयामि। संयुक्ता धोमुख्यनामिका–स्पृष्टां–गुष्ठात्मिकया मधुघृतशर्करादधिदुग्धसङ्घातात्मकं मधुपर्कं मुखे दद्यात्। इति मधुपर्कम्। ।३। ।

मूल मन्त्र पढ़ कर "अमुक देव्यै नमः मधुपर्कं समर्पयामि" इससे संयुक्त अधोमुख अनामिका से मिले अंगूठे वाली मुद्रा से मधु, घी, शकर, दही, दूध के मिश्रण रूप मधुपर्क को मुख में देवें।

इति मधुपर्कदान।

अथ पुनराचमनम्।

ॐ उच्छिष्टोप्यशुचिर्वापि यस्याः स्मरणमात्रतः। शुद्धिमाप्नोति तस्यै ते पुनराचमनीयकम्।

मूलं पठित्वा अमुकदेव्यै नमः शुद्धाचमनं समर्पयामि। इति पूनराचमनम्। ।४। ।

मूलमन्त्र का पाठ करके "अमुक देव्यै नमः शुद्धाचमनं समर्पयामि" इससे पुनराचमन देवें।

इति पुनराचमनदान।

अथ अर्घ्यदानम् :

ॐ तापत्रयहरं दिव्यं परमानन्दलक्षणम्। तापत्रयविनिर्मुक्तं तवार्घ्यं कल्पयाम्यहम्। मूलं पठित्वा अमुकदेव्यैं नमः अर्घ्यं समर्पयामि। एषोऽर्घः अमुकदेव्यै स्वाहा। इत्यनेन पठितेन कुशाग्राक्षततिलव्रीहियवाज्यसिद्धार्थपुष्पमिश्रितार्घजलात्मकं देवीशिरसि सर्वांगुलीसंयोगेनार्घ्यं दद्यात्। इत्यर्घ्यम्। ।५। ।

मूलमन्त्र पढ़ कर "अमुकदेव्यै नमः अर्घ्य समर्पयामि। एषोऽर्घः अमुक देव्यै स्वाहा" इससे कुश का अग्रभाग, अक्षत, तिल, धान, जव, घी, पीली सरसों, तथा फूलों से मिश्रित जल देवी के सिर पर सभी अंगुलियों के संयोग से छिड़कें।

इत्यर्घ्यदान।

अथ सुगन्ध तैलादि उद्वर्तनम् :

ॐ स्नेहं गृहाण स्नेहेन लोकमातर्महाशये। सर्वलोकेषु शुद्धात्मन्ददामि स्नेहमुत्तमम्।

मूलं पठित्वा अमुकदेव्यै नमः इदं हरिद्रादिद्रव्यं तैलं च समर्पयामि इति पठित्वा नम इत्युक्त्वा उद्वर्तयेत्। इति सुगन्धतैलाद्युद्वर्तनम्। ।६। ।

मूलमन्त्र पढ़ कर "अमुकदेव्यै नमः इदं हरिद्रादि तैलं च समर्पयामि" यह पढ़ कर 'नमः' बोल कर उद्वर्तन करें।

इति सुगन्ध–तैल आदि का उद्वर्तन।

अथ स्नानदानः :।

ॐ परमानन्दबोधाब्धिनिमग्ननिजमूर्तये। साङ्गोपाङ्गमिदं स्नानं कल्याम्यहमीश्वरि।

मूलं पठित्वा अमुकदेव्यै नमः स्नानं समर्पयामि इति पठित्वा कनिष्ठाहीन–दक्षहस्तमुष्ट्यात्मिकया। मुद्रया स्नानीयं दद्यात्। इति स्नानम्। ।७। ।

मूलमन्त्र पढ़ कर "अमुकदेव्यै नमः स्नानं समर्पयामि" यह पढ़ कर कनिष्ठिका से रहित दाहिने हाथ की मुष्टि मुद्रा से स्नानीय द्रव्य देवें।

इति स्नानदान।

अथ वस्त्रदानम् :

ॐ मया चित्रपटच्छन्ननिजगुह्योरुतेजसे। निवारणाय विज्ञानवासस्ते कल्पाम्यहम्।

मूल पठित्वा अमुकदेव्यै नमः वस्त्रं समर्पयामि इत्युक्त्वा उत्तानदक्षिणहस्तांगुष्ठ-स्पृष्टतन्मध्यमात्मिकया मुद्रया रक्तवस्त्रं प्रयोगोक्तवस्त्रं वा दद्यात्। इति वस्त्रम्।।८।।

मूल मन्त्र का पाठ कर "अमुकदेव्यै नमः वस्त्रं समर्पयामि।" उत्तान दाहिने हाथ के अंगूठे से स्पृष्ट अंगुली वाली मुद्रा से लाल वस्त्र या प्रयोग में कहा गया वस्त्र देवें।

इति वस्त्रदान।

अथ यज्ञोपवीतम्

ॐ यामाश्रित्य महादेवो जगत्संहारकस्सदा। तस्यै ते परमेशान्यै कल्पयाम्युत्तरीयकम्।

मूलं पठित्वा अमुकदेव्यै नमः यज्ञोपवीतं समर्पयामि इत्युक्त्वा पूर्वोक्तमुद्रयोर्यज्ञोपवीतं दद्यात्। इति यज्ञोपवीतम्।।६।।

मूलमन्त्र पढ़ कर "अमुकदेव्यै नमः यज्ञोपवीतं समर्पयामि" यह कह कर पूर्वोक्त मुद्राओं से यज्ञोपवीत देवें।

इति यज्ञोपवीतदान।

अथ आभूषणदान :

ततो मूलेनाष्टोत्तरसहस्रशतदशान्यतमवारगन्धोदकैर्देवीमभिषिञ्चयेत्।

इसके बाद मूलमन्त्र से एक हजार आठ या एक सौ अथवा दश बार में से किसी एक संख्या के अनुसार सुगन्धित जल से देवी का अभिषेक करें। इसके बाद

ॐ स्वभावसुन्दराङ्गायै नानाशक्त्याश्रिते शिवे। भूषणानि विचित्राणि कल्पयाम्यमरार्चिते।

मूलं पठित्वा अमुकदेव्यै नमः भूषणानि समर्पयामि इति वाक्येन दक्षहस्तांगुष्ठस्पृष्टानामिकात्मिकया मुद्रया भूषणानि दद्यात्। इत्याभूषणम्।।१०।।

मूलमन्त्र पढ़ कर "अमुकदेव्यै नमः भूषणानि समर्पयामि।" इस वाक्य से दाहिने हाथ के अंगूठे से स्पृष्ट अनामिका अंगुली वाली मुद्रा से भूषण देवें।

इति आभूषणदान।

अथ गन्धदान :

ॐ परमानन्दसौभाग्यपरिपूर्णदिगन्तरे। गृहाण परमं गन्धं कृपया परमेश्वरि।

मूलं पठित्वा अमुकदेव्यै नमः गन्धं समर्पयामि इति वाक्येन कर्पूरमिश्रितश्रीखण्डचन्दनं बहुचन्दनं च कनिष्ठांगुष्ठसंयोगेन देव्यङ्गे निवेदयेत्। इति गन्धम्।।११।।

मूलमन्त्र का पाठ करके "अमुकदेव्यै नमः गन्धं समर्पयामि" इस वाक्य से कपूर मिश्रित श्रीखण्ड, चन्दन, बहुचन्दन का कनिष्ठ और अंगूठे के योग से देवी के अङ्ग में निवेदित करें।

इति गन्धदान।

अथ अक्षतदान :

ॐ अक्षतान् धवलान्देवि स्वर्णरौप्यमयीकृतान्। गृहाण जगदीशाने प्रसीद परमेश्वरि।

मूलं पठित्वा अमुकदेव्यै नमः अक्षतान्समर्पयामि इति वाक्येन सर्वांगुलीभि–र्दद्यात्। इत्यक्षताः।।१२।।

मूलमन्त्र का पाठ करके "अमुकदेव्यै नमः अक्षतान् समर्पयामि" इस वाक्य से सभी अंगुलियों से अक्षत प्रदान करें।

इति अक्षतदान।

अथ पुष्पदान :

ॐ तुरीयवनसम्भूतं नानागुण मनोहरम्। आनन्दसौरभं पुष्पं गृह्यतामिदमुत्तमम्। मूलं पठित्वा अमुकदेव्यै नमः पुष्पं समर्पयामि वौषट इति वाक्येन तर्जन्यंगुष्ठयोगेन दद्यात्। इति पुष्पं।।१३।।

मूलमन्त्र का पाठ करके "अमुकदेव्यै नमः पुष्पं समर्पयामि वौषट्।" इस वाक्य से तर्जनी तथा अंगुष्ठ के योग से पुष्प देवें। पुष्पदान में यह ध्यान रखना चाहिए :

यथोत्पन्नमपर्युषितमच्छिद्रन्नवं शुभं पुष्पं दद्यात। अञ्जलिदानेत्वधोमुखता न दोषाय। श्वेतरक्तजपापुष्पकरवीरतगर जाती सेवन्ती यूथिका धत्तूराशोक बकुलश्वेत कृष्णापराजिता बकपुष्प बिल्वपत्र चम्पक नागकेसरमल्लिका झिणिका काञ्ची बर्बरार्क रक्त पद्मपुष्पामलक कोनदबन्धूक केतक्याद्यन्यतमपुष्पाणि निवेदयेत्। अर्क मन्दारौ अतिप्रशस्तौ। तुलसीं मालतीं वर्जयेत्। दूर्वया नार्चयेत्।

अर्थात् ऋतु के अनुसार उत्पन्न नये छिद्र रहित शुभ फूल पूजा के लिए लेना चाहिये। बासी फूल नहीं चढ़ाना चाहिये। अञ्जलिदान में हाथ का नीचे होना दोषकारक नहीं है। सफेद तथा लाल अढ़उल का फूल, कनेर का फूल, तगर का फूल, चमेली का फूल, गुलाब का फूल, जूही, धत्तूरा, अशोक, मौलसरी, सफेद अपराजिता, काली अपराजिता, बकपुष्प, बिल्वपत्र, चम्पा, नागकेसर, मल्लिका, झिणिका, काञ्ची, बर्बर, मदार, लाल कमल, आंवले का फूल, कोकनद, बन्धूक तथा केतकी में से कोई पुष्प निवेदित करना चाहिये। अर्क तथा मंदार दोनों के पुष्प अत्यन्त उत्तम माने गये हैं। तुलसी और मालती वर्जित है। दूब से पूजा नहीं करनी चाहिये।

इति पुष्पदान।

एवं पुष्पातं पूजयित्वा देवाज्ञया प्रयोगात्तावरणपूजां कृत्वा धूपादिपूजनं कुर्यात्।

इस प्रकार पुष्पान्त पूजन करके देव की आज्ञा से प्रयोगोक्त आवरण पूजा करके धूपादि पूजन करें।

अथ धूपादिपूजनम्।

फडितिधूपपात्रं सम्प्रोक्ष्य नम इति गन्धपुष्पाभ्यां सम्पूज्य पुरतो निधाय (रं) इति वह्निबीजेन उपरि अग्नि संस्थाप्य तदुपरि मूलेन दशाङ्गं दत्वा वामहस्तेन घण्टां वादयन् दक्षतर्जन्यंगुष्ठयोगेन धूपमुद्रया देवतागुणान्कीर्तयन्नाभिदेशतो धूपयेत्।

अथ धूपादिपूजन : 'फट्' इससे धूप पात्र का प्रोक्षण करके "नमः" से गन्धपुष्प का पूजन करके सामने रखकर वह्निबीज (रं) से ऊपर अग्नि स्थापित करके उसके ऊपर मूलमन्त्र से दशाङ्ग देकर बाएँ हाथ से घण्टावादन करते हुये दाहिनी तर्जनी और अंगूठे के योग से धूप मुद्रा द्वारा देवता के गुणों का कीर्तन करते हुये नाभि देश में धूप देवें। इसमें यह मन्त्र है :

ॐ वनस्पतिरसोपेतो गन्धाढ्यः सुमनोहरः। आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्।

मूलं पठित्वा "साङ्गायै सपरिवारायै अमुकदेव्यै नमः धूपं समर्पयामि इति धूपं दत्त्वा देव्या वामभागे धूपपात्रं संस्थाप्य शङ्खाम्बु निक्षिपेत्। इति धूपः।।१४।।

मूलमन्त्र का पाठ करके "साङ्गायै सपरिवारायै अमुकदेव्यै नमः धूपं समर्पयामि।" इससे धूप देकर देवी के वामभाग में धूपपात्र को रखकर शङ्खोदक छिड़कें।

इति धूपदान।

अथ दीपदान :

ततो दीपपात्रं गोघृतेनापूर्य मन्त्राक्षरसंख्यया तन्तुभिर्वर्ति निक्षिप्य प्रणवेन (ॐ) प्रज्वाल्य घण्टां वादयन् नेत्रादिपादपर्यन्तं दीपं प्रदर्शयन् मन्त्रं पठेत्।

इसके बाद दीप पात्र को गोघृत से भर कर मन्त्र में जितने अक्षर हैं उतनी संख्या के तारों से बनी बत्ती डालकर प्रणव (ॐ) से जलाकर घण्टा बजाते हुये नेत्र से पैर पर्यन्त दीप दिखलाते हुये यह मन्त्र पढ़ें :

ॐ सुप्रकाशो महादीपः सर्वतस्तिमिरापहः। सबाह्याभ्यन्तरज्योतिर्दीपोयं प्रतिगृह्यताम्।

मूलं पठित्वा साङ्गायै सपरिवारायै अमुकदेव्यै नमः दीपं समर्पयामि इति वाक्येन दीपं दत्त्वा देवीदक्षिणे दीपं संस्थाप्य ततः शङ्खजलमुत्सृज्य मध्यमांगुष्ठलग्नां दीपमुद्रां प्रदर्शयेत्। इति दीपः।।१५।।

मूलमन्त्र पढ़कर "साङ्गायै सपरिवारायै अमुकदेव्यै नमः दीपं समर्पयामि" इस वाक्य से दीप देकर देवी के दाहिने ओर दीप को रख कर शङ्ख का जल डालकर मध्यमा और अंगूठे के योग से बनी दीप मुद्रा को प्रदर्शित करें।

इति दीपदान।

ततो देव्या अग्रे देवीदक्षिणतो वा जलेन चतुरस्रं मण्डलं कृत्वा स्वर्णादिनिर्मितं भोजनपात्रं संस्थाप्य तन्मध्ये साज्यशर्करपायसादिकं षड्रसोपेतं विविधप्रकारं वा निधाय फट् इति मन्त्रेण चक्रमुद्रयाऽभिरक्ष्य ॐ ह्रीं नमः इति मन्त्रेण अर्घ्यजलेन सम्प्रोक्ष्य मूलेन संवीक्ष्य अधोमुखदक्षिणहस्तोपरि तादृशं वामं निधाय नैवेद्येनाच्छाद्य (यं) इति वायु बीजेन षोडशधा संजप्य वायुना तद्गतदोषान् संशोष्य ततो दक्षिणकरतले तत्पृष्ठलग्नं वामकरतलं कृत्वा नैवेद्यं प्रदर्श्य (रं) इति वह्निबीजेन षोडशवारं संजप्य तदुत्पन्नाग्निा तद्दोषं ततो वामकरतले अमृतबीजं विचिन्त्य तत्पृष्ठलग्नं दक्षिणकरतलं कृत्वा नैवेद्यं प्रदर्श्य (वं) इति सुधाबीजं षोडशवारं संजप्य तदुत्थामृतधारयाप्लावितं विभाव्य मूलेन प्रोक्ष्य धेनुमुद्रां प्रदर्श्य मूलेनाष्टधाभिमन्त्र्य गन्धपुष्पाभ्यां सम्पूज्य देव्यास्योद्गतं तेजः स्मृत्वा वामांगुष्ठेन नैवेद्यपात्रं स्पृष्ट्वा दक्षिणकरेण जलं गृहीत्वा।

इसके बाद देवी के आगे या दहिने ओर जल से चतुरस्र मण्डल बना कर स्वर्णादि निर्मित भोजनपात्र को रखकर उसके बीच घी और शकर से युक्त खीर आदि षड्रस से युक्त नाना प्रकार के भोजन पदार्थ रखकर "फट्" इस मन्त्र से चक्र मुद्रा से रक्षा करके "ॐ ह्रीं नमः" इस मन्त्र से अर्घ्य जल से प्रोक्षण करके मूलमन्त्र से देखकर अधोमुख दाहिने हाथ पर वैसे ही बायाँ हाथ रख कर नैवेद्य ये ढ़क कर (यं) इस वायुबीज से सोलह बार जप करके वायु के तद्गत दोषों का संशोधन करके दाहिने हाथ के करतल के पीठ से लगा वाम करतल का पीठ करके नैवेद्य प्रदर्शित करके (रं) इस अग्नि बीज से सोलह बार जप करके उससे उत्पन्न अग्नि से उसके दोष को जला कर बाएँ हाथ में अमृतबीज का चिन्तन करके उस पृष्ठ से लगे

दाहिने करतल से नैवेद्य प्रदर्शित करके (वं) इस सुधाबीज को सोलह बार जप कर उससे उठे अमृतधारा से उसे प्लावित होने की भावना करके मूलमन्त्र से प्रोक्षण करके धेनुमुद्रा प्रदर्शित करके मूलमन्त्र से आठ बार अभिमन्त्रित करके गन्ध–पुष्प से पूजन करके देवी के मुख से निकले तेज का स्मरण करके वामांगुष्ठ से नैवेद्य पात्र का स्पर्श कर दाहिने हाथ से जल लेकर :

ॐ सत्पात्रसिद्धं सहविर्विविधानेकभक्षणम्। निवेदयामि देवेशि कृपया त्वं गृहाण तत्।

यह मन्त्र पढ़ें

मूलं पठित्वा "साङ्गायै सपरिवारायै सायुधायै सवाहनायै अमुकदेव्यै नमः नैवेद्यं समर्पयामि" इति भूतले देबीदक्षिणे जलं क्षिप्त्वा वामहस्तेन अनामामूलयोरंगुष्ठयोगेन ग्रासमुद्रां प्रदर्श्य देवीं भुक्तवर्ती विभाव्य जलं दद्यात्। इति नैवेद्यम्।।१६।।

मूलमन्त्र का पाठ कर "सांगायै सपरिवारायै सायुधायै संवाहनायै अमुकदेव्यै नमः नैवेद्यं समर्पयामि" इससे पृथिवी पर देवी की दाहिनी ओर जल छिड़ककर बाएँ हाथ से अनामिका मूल और अंगूठे के योग से ग्रास मुद्रा दिखलाकर देवी के भुक्तवती होने की भावना करके जल देवें।

इति नैवेद्यदान।

अथ जलदानम् :

ॐ समस्तदेवदेवेशि सर्वावाप्तिकरं परम्। अखण्डानन्दसम्पूर्णं गृहाण जलमुत्तमम्।

मूलं पठित्वा साङ्गायै सपरिवारायै सायुधायै सवाहनायै अमुकदेव्यै नमः जलं समर्पयामि इति मन्त्रेण स्वर्णादिपात्रस्थं कर्पूरादिसुवासितं जलं निवेद्य देव्या तज्जलं प्राशितमिति भावयन् अन्तःपटं दद्यात्। इति जलम्।।१७।।

मूलमन्त्र का पाठ करके "साङ्गायै सपरिवारायै सायुधायै सवाहनायै अमुकदेव्यै नमः जलं समर्पयामि।" इस मन्त्र से स्वर्ण आदि के पात्र में रखा कपूर आदि से वासित जल निवेदित करके 'देवी ने उस जल को पी लिया है' ऐसी भावना करते हुए अन्तःपट गिरा देवें।

इति जलदान।

तत आचमनमन्त्रेणाचमनं मूलेन गण्डूषार्थं जलं च दत्त्वा प्राणापानसमानोदानव्यानाख्याः पञ्च मुद्राः प्रदर्शयेत्।

इसके बाद आचमन मन्त्र से आचमन तथा मूल मन्त्र से कुल्ला करने के लिए जल देकर प्राण (कनिष्ठा तथा अनामिका से प्राण मुद्रा), अपान (मध्यमा तथा तर्जनी से अपान मुद्रा), समान (अनामिका और मध्यमा से समान मुद्रा), उदान (अनामिका और तर्जनी से उदान मुद्रा) और व्यान (सभी अंगुलियों से) ये पाँच मुद्राएँ प्रकाशित करें।

अथ ताम्बूलदान :

"ॐ एलालवंगकर्पूरनागवल्लीदलैर्युतम्। पूगभागेरितं देवि ताम्बूलं गृह्यतान्नमः। मूलं पठित्वा अमुकदेव्यै नमः ताम्बूलं समर्पयामि" इति ताम्बूलम्।।१८।।

"ॐ एलालवंग कर्पूरनागवल्लीदलैर्युतम्। पूगभागेरितं देवि ताम्बूलं गृह्यतान्नमः"। मूल मन्त्र पढ़कर "अमुक देव्यै नमः ताम्बूलं समर्पयामि।" इस वाक्य से इलाइची, लवंग, कपूर, जायफल आदि से युक्त पान सुपारी मिश्रित पान तत्त्वमुद्रा द्वारा देवें।

इति ताम्बूलदानं।

अथ फलदान :

इदं फलं मया देवि स्थापितं पुरतस्तव। तेन मे सफलावाप्तिर्भवे–ज्जन्मनि जन्मानि।

मूलं पठित्वा अमुकदेव्यै नमः फलं समर्पयामि। इति फलम्।।१६।।

मूलमन्त्र पढ़कर "अमुक देव्यै नमः फलं समर्पयामि" इससे फल समर्पित करें।

इति फलदान।

इति धूपादि सम्पूज्य पुष्पाञलिं च दद्यात्। तत्र मन्त्रः।

इस प्रकार धूपादि से पूजा करके पुष्पाञलि देवें। उसमें यह मन्त्र है।

ॐ नानासुगन्धपुष्पाणि यथाकालोद्भवानि च। पुष्पाञलिं मया दत्तं गृहाण परमेश्वरि।

मूलं पठित्वा अमुकदेव्यै नमः पुष्पाञलिं समर्पयामि। इति पुष्पाञलिं दत्त्वा ततः स्तुतिपाठेन देवीं स्तुत्वा बद्धाञलिपूर्वकं प्रार्थयेत्। तद्यथा :

मूलमन्त्र का पाठ करके "अमुक देव्यै नमः पुष्पाञलि समर्पयामि" इससे पुष्पाञलि देकर स्तुति पाठ से देवी की स्तुति करके हाथ जोड़कर इस प्रकार प्रार्थना करें।

ॐ ज्ञानतोऽज्ञानतो वाथयन्मया क्रियते शिवे। मम कृत्यमिदं सर्वमिति देवि क्षमस्व मे।।१।।अपराधसहस्राणि क्रियन्तेहर्निशं मया। दासोहमिति मां मत्वा क्षमस्व परमेश्वरि।।२।। अपराधो भवत्येव सेवकस्य पदे पदे। कोपरः सहतां लोके केवलं स्वामीनीं विना।।३।। भूमौ स्सखलितपादानां भूमिरेवावलम्बनम्। त्वयि जाता–
पराधानां त्वमेव शरणं शिवे।।४।।

इति बद्धाञलिपूर्वकं सम्प्रार्थ्य ततः।

इस प्रकार हाथ जोड़कर प्रार्थना करके।

यदुक्तं यदि भावेन पत्रं पुष्पं फलं जलम्। निवेदितं च नैवेद्यं गृहाणं त्वनुकं पया।।१।।

इति पठित्वा देवीवामकरे पूजार्पणजलं दत्त्वा मालायाः संस्कारान्कुर्यात्।

यह पढ़कर देवी के बाएँ हाथ में पूजार्पण का जल देकर माला के संस्कारों को करें।

अथ मालायाः संस्काराः।

तत्रदौ कुशोदकसहितैः पंचगव्यैर्मालां प्रक्षाल्य अश्वत्थपत्रैर्नवै रचिते कमले स्थापयित्वा ॐ ह्रीं अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं लृं लॄं एं ऐं ओं औं अं अः कं खं गं घं ङं चं छं जं झं ञं टं ठं डं ढं णं तं थं दं धं नं पं फं बं भं मं यं रं लं वं शं षं सं हं लं क्षं इत्येतानि मातृकाक्षराणि मूलमन्त्रं च मालायं विन्यस्य पुनः पञ्चगव्येन प्रोक्ष्य ॐ सद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय वै नमो नमः। भवेभवेनातिभवे भवस्व मां भवोद्भवाय नमः।।१।। इति मन्त्रेण शीतजलेन प्रक्षाल्य पुनः ॐ वामदेवाय नमो ज्येष्ठाय नमः श्रेष्ठाय नमो रुद्राय नमः कालाय नमः कलविकरणाय नमो बलविकरणाय नमः।।१।। इति मन्त्रेण चन्दनागुरुकर्पूरादि–सुगन्ध द्रव्यैर्घर्षयित्वा पुनः ॐ अघोरेभ्योथ घोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः। सर्वेभ्यः सर्वशर्वेभ्यो नमस्ते अस्तु रुद्ररूपेभ्यः।।१।। इति मन्त्रेण तां धूपयित्वा पुनः ॐ तत्पुरुषाय विद्महे। महादेवाय धीमहि। तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्।।१।। इति मन्त्रेण मालायाश्चन्दनं लेपयित्वा पुनः ॐ ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानां ब्रह्माधिपति र्ब्रह्मणोधिपतिर्ब्रह्मा शिवो मे अस्तु सदाशिवोम्।।१।। इति मन्त्रेण मेरुसहितं प्रत्येकमणिं सकृदसकृद्वाऽभिमन्त्रयित्वा अस्या मालायाः इति सद्यः संयोज्य प्राणप्रतिष्ठामन्त्रेण प्राणप्रतिष्ठां कृत्वा पुनः ॐ माले माले महामाले सर्वशक्तिस्वरूपिणि। चतुर्वर्गस्त्वयि न्यस्तस्तस्मान्मे सिद्धिदा भव।।१।। इति मालां संप्रार्थ्य पुनः ॐ अविघ्नं कुरु माले त्वं सर्व कार्येषु सर्वदा। ॐ ह्रीं मालायै नमः इत्यनेन मालां दक्षिणकरे निधाय हृदये धारयन् स्वेष्टदेवीं ध्यात्वा मध्यमांगुलिमध्यपर्वणि संस्थाप्य ज्येष्ठाग्रेण भ्रामयित्वा स्वशरीरे कामकलां विभाव्य शिरसि गुरु ध्यात्वा हृदि देवीं भावयन्

जिह्वायां मन्त्र दीपनं विभाव्य तत्प्रभापटले जिह्वामपि दीरूपं विभाव्य एकाग्रचित्तो मन्त्रार्थं स्मरन् यथाशक्त्या प्रातःकालमारभ्य मध्यंदिनं यावत् मूलमन्त्रं जपेत्।

प्रारम्भ में कुशोदक सहित पञ्चगव्यों से माला का प्रक्षालन करके पीपल के नये पत्तों से बनाये गये कमल पर उसे स्थापित करके "ॐ ह्रीं अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं लृं लं एं ऐं ओं औं अं अः कं खं गं घं ङं चं छं जं झं ञं टं ठं डं ढं णं तं थं दं धं नं पं फं बं भं मं यं रं लं वं शं षं सं हं लं क्षं" इन सब मातृका के अक्षरो का तथा मूल मन्त्र का माला में विन्यास करके पञ्चगव्य से प्रोक्षण कर "ॐ सद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय वैनमो नमः। भवेनातिभवे भवस्य मां भवोद्भवाय नमः।।१।।

इस मन्त्र से शीतल जल से प्रक्षालन करके पुनः "वामदेवाय नमो ज्येष्ठाय नमः श्रेष्ठाय नमो रुद्राय नमः कालाय नमः कलविकरणाय नमो बलविकणाय नमः।" इस मन्त्र से चन्दन, अगर, कपूर आदि सुगन्ध द्रव्यों को घिसकर पुनः "ॐ अघोरेभ्योथ घोरेभ्यो घोरतरेभ्यः। सर्वेभ्यः सर्वशर्वेभ्यो नमस्ते अस्तु रुद्र रूपेभ्यः।।१।। इस मन्त्र से धूप देकर पुनः

"ॐ तत्पुरुषाय विद्महे। महादेवाय धीमहि। तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्।।१।।"

इस मन्त्र से माला पर चन्दन लगाकर पुनः "ॐ ईशानः सर्वविधानामीश्वरः सर्वभूतानां ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणाधिपतिर्ब्रह्मा शिवो मे अस्तु सदाशिवोम्।।१।।"

इस मन्त्र से मेरुसहित प्रत्येकमणि को एक–एक बार अथवा कईबार अभिमंत्रित करके "अस्या मालायाः" इसे तत्काल जोड़कर प्राणप्रतिष्ठा मन्त्र से प्राणप्रतिष्ठा करके पुनः "ॐ माले माले महामाले सर्वशक्तिस्वरूपिणी। चतुर्वगस्त्वयि न्यस्तस्तस्मान्मे सिद्धिदा भव।।१।।" इससे माला की प्रार्थना करके पुनः "ॐ अविघ्नं कुरुमाले त्वं सर्वकार्येषु सर्वदा। ॐ ह्रीं मालायै नमः" इससे माला को दाहिने हाथ में रखकर हृदय में धारण करते हुए अपने इष्टदेवी का ध्यान करके मध्यमा अंगुली के मध्य पर्प पर रखकर अंगूठे के अग्रभाग से घुमाकर अपने शरीर में कामकला की भावना कर, शिर में गुरु का ध्यान कर हृदय में देवी की भावना करते हुए जिह्वा पर मन्त्र से दीपन की भावना करके एकाग्र चित्त होकर मन्त्रार्थ का स्मरण करते हुए यथाशक्ति प्रातःकाल से लेकर दोपहर तक मूलमन्त्र का जाप करें।

नित्यसेवने सामान्यजपं कुर्यान्नतु न्यूनाधिकम्। ततो जपान्ते ॐ त्वं माले सर्वभूतानां सर्वलोकप्रिया मता। शिवं कुरुष्व मे भद्रे यशो वीर्यं च सर्वदा। इति मालां शिरसि निधाय ह्रीं सिद्ध्यै नमः इति सम्पूज्य पुनः प्राणायामन्यासादिकं च विधाय ततो देवीं पुष्पाक्षतादिभिः सम्पूज्य पुष्पचन्दनाक्षतयुतशंखोदकेन ॐ गुह्यातिगुह्यगोप्त्री त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम्। सिद्धिर्भवतु मे देवि त्वत्प्रसादान्महेश्वरि।।१।। ॐ इतः पूर्वं प्राणबुद्धिदेहधर्माधिकारतो जाग्रत्स्वप्नसुषुप्तितुर्यावस्थासु मनसा वाचा कर्मणा हस्ताभ्यां पद्भ्यामुदरेण शिश्ना यत्स्मृतं यदुक्तं यत्कृतं तत्सर्वममुकदेव्यै समर्पयामि ब्रह्मार्पणं भवतु। इति देव्या वामकरे जलसमर्पणं कृत्वा ततो मालां शिरस उत्तार्य ॐ त्वं माले सर्वदेवानां सर्वसिद्धिप्रदा मता। तेन सत्येन मे सिद्धिं देहि मातर्नमोस्तु ते। इति मालां सम्पूज्य गौमुखीरहस्ये स्थापयेत्। नाशुचिः स्पर्शयेत्। नान्यस्मै दद्यात्। अशुचिस्थाने न निधापयेत्। स्वयोनिवत् गुप्तां कुर्यात्। ततो देव्यै पुष्पांजल्यष्टकं दत्त्वा स्तोत्रसहस्रनामकवचादिकं पठित्वा नित्यबलिं कुर्यात्।

• नित्य सेवन में सामान्य जप करना चाहिए। कम या अधिक नहीं।

जप के पश्चात् "त्वंमाले सर्वभूतानां सर्वलोकप्रिया मता। शिवं कुरुष्य मे भद्रे यशो वीर्यं च सर्वदा।।" इससे माला को शिर पर रखकर "ह्रीं सिद्धयै नमः" इससे पूजा करके पुनः प्राणायाम,

न्यास आदि करके पुष्प अक्षत आदि से देवी की पूजा करके पुष्प, चन्दन तथा अक्षत से युक्त शंखजल से " ॐ गुह्यातिगुह्यगोप्त्री त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपं सिद्धिर्भवतु मे देवि त्वत्प्रसादान्महेश्वरि।।१।।

"ॐ इतः पूर्वं प्राणबुद्धिदेह धर्माधिकारतो जाग्रत्स्वप्नसुषुप्तितुर्यावस्थासु मनसा वाचा कर्मणा हस्ताभ्यां पद्भ्यामुदरेण शिश्ना यत्स्कृतं यदुक्तं यत्कृतं तत्सर्वममुक देव्यै समर्पयामि ब्रह्मार्पणं भवतु।" इससे देवी के बाएँ हाथ में जल समर्पण करके माला शिर से उतारकर "ॐ त्वं माले सर्व देवानां सर्वसिद्धिप्रदा मता। तेन सत्येन मे सिद्धिं देहि मातर्नमोस्तु ते।" इससे माला की पूजा करके उसे गोमुखी के अन्दर रख देवे। अपवित्र अवस्था में उसका स्पर्श ने करें, दूसरे को न देवें, अपवित्र स्थान में न रक्खें और अपनी योनि के समान गुप्त रक्खें। इसके बाद देवी को आठ पुष्पाञ्जलि देकर स्तोत्र, सहस्रनाम तथा कवच आदि पढ़कर नित्य बलि करें।

इतिमाला संस्कार।

अथ नित्यबलिदानप्रयोगः।

बामे चतुरस्रमण्डलं कृत्वा किंचित्पात्रे संस्थाप्य तसिमन्मांसमाषात्रशाकाज्यपायसा–पूपकाद्यन्यतमबलिं निधाय फट् इति सम्प्रोक्ष्य नमः इत्यभ्यर्च्य यं इति वायुबीजेन द्वादशवारं जप्तेन तद्गतदोषान् संशोध्य वामहस्ततले दक्षहस्तपृष्ठन्निवेश्य रं इति वह्निबीजेन षोडशवारं जप्तेन धेनुमुद्रयाऽमृतीकृत्य हूं इत्यवगुण्ठ्य योनिधेनुमुद्रे दर्शयित्वा तत्त्वमुद्राञ्च प्रदर्श्य ॐ क्रीं श्रीं अमुकदेव्यै स्वाहा एष बलिर्नमः इत्युत्सृज्य नैर्ऋत्यां दिशि धारयेत्। एष नित्यबलिदानमन्त्रः। ततो रात्रौ काम्यबलिर्देयः। तत्र मन्त्रस्तु ॐ पद्मेपद्मे महापद्मे पद्मावति महायक्षाधिपते मयोपनीतमिमं बलिं गृह्णगृह्ण गृह्णापयगृह्णापय मम सर्वशान्ति कुरुकुरु परविद्यां चाकृष्याकृष्य छिंधि ह्रीं हूँ स्वाह इति मन्त्रेण चतुष्पथादिस्थाने पूर्वोक्तशोधनं विधाय तत्त्वमुद्रां प्रदर्श्य मांसाद्यन्यतमबलिं दद्यात्। ततो अधिकभक्त्युत्तर शक्तिकालादिलाभे चतुर्थ्यन्तैः प्रत्येकैस्सहस्रनामस्तोत्रान्तर्गतनामभिः पुष्पादिना सम्पूजयेत्। इति नित्यबलिदानप्रयोगः।

बाईं ओर चतुरस्र मण्डल बनाकर किसी पात्र में रखकर उसमें मांस, उड़द, भात, शाक, घी, खीर, पूआ आदि में से किसी एक की बलि देकर "फट्" इससे प्रोक्षण करके "नमः" इससे पूजा करके (यं) इस वायुबीज से बारह बार जप कर उसके दोषों का संशोधन करके बाएँ हाथ के तल में दाहिने हाथ के पृष्ठ को रखकर (रं) इस अग्निबीज से सोलहबर जप से धेनुमुद्रा के द्वारा अमृतीकरण करके (हूं) इससे अवगुण्ठन करके योनिमुद्रा, धेनुमुद्रा तथा तत्त्वमुद्रा प्रदर्शित करके "ॐ क्रीं श्रीं अमुदेव्यै स्वाहा एष बलिर्नमः" इससे छोड़कर नैर्ऋती दिशा में रख देवें। यह नित्य बलिदान का मन्त्र है । इसके बाद रात्रि में काम्यबलि देना चाहिए। उसमें मन्त्र यह है :

"ॐ पद्मे पद्मे महापद्मे पद्मावति महायक्षाधिपते मयोपनीतमिमं बलिं गृह्ण गृह्ण गृह्णापय गृह्णापय मम सर्वशांतिं कुरु–कुरु परविद्यां चाकृष्य कृष्य छिन्धि ह्रीं हूँ स्वाहा" इस मन्त्र से चौराहे आदि स्थान पर पूर्वोक्त शोधन करके तत्त्वमुद्रा दिखलाकर मांस आदि में से किसी की बलि देवें। इसके बाद अधिक भक्ति, अधिक शक्ति तथा अधिक समय मिलने पर चतुर्थी विभक्तियुक्त सहस्रनाम तथा स्तोत्रान्तर्गत प्रत्येक नाम से पुष्पादि के द्वारपूजा करें।

इति नित्यबलिदान प्रयोग।

अथ छागादिबलिदानप्रयोगः।

अर्द्धरात्रे छागाद्यां[1] पंचाब्दं सर्वलक्षणसंयुतमानीय ॐ वाराही यमुना गङ्गा करतोया सरस्वती। कावेरी चन्द्रभागा च सिन्धुभैरवसागराः।।१।। अजस्नाने महेशानि सान्निध्यमिह कल्पय। पशुपाशविनाशाय हेमकूट स्थिताय च।।२।। पराय परमेष्ठिने हूंकाराय च मूर्तये। इति पठित्वा मूलमन्त्रेण स्नापयित्वा सिन्दूरमाल्यादिभिरलंकृत्य देवस्याग्रे निधाय ततो गन्धमिश्रिताघ्योंदकेन मूलेन त्रिः सम्प्रोक्ष्य कृताञलिः प्रार्थयेत्।

आधीरात को पांच वर्ष के सभी लक्षणों से युक्त बकरे को लाकर "ॐ बाराही यमुना गंगा करतोया सरस्वती। कावेरी चन्द्रभागा च सिंधु भैरव सागराः।।१।। अजस्नाने महेशानि सान्निध्यमिह कल्पय ! पशुपाशविनाशाय हेमकूट स्थिताय च।।२।। पराय परमेष्ठिने हूँकाराय च मूर्तये।।" यह पढ़कर मूलमन्त्र से स्नान करा कर सिन्दूर–माला आदि से अलंकृत करके देव के आगे रखकर गंधमिश्रित अर्घ्योदक से मूलमन्त्र के द्वारा तीन बार प्रोक्षण करके कृताञलि होकर प्रार्थना करें।

ॐ छाग त्वं बलिरूपेण महाभाग्यादुपस्थितः। प्रणमामि सदा भक्त्या रूपिणं बलिरूपिणम्।।१।। चण्डिकाप्रीतिकामस्य दातुरापद्विनाशिने। चण्डिकाबलिरूपाय बले तुभ्यं नमोनमः।।२।। यज्ञार्थे पशवः सृष्टाः स्वयमेव स्वयम्भुवा। अतस्त्वां घातयिष्यामि तस्माद्यज्ञे वधोऽवधः।।३।।

इति सम्प्रार्थ्य पार्श्वपूजां कुर्यात्।

इससे प्रार्थना करके इस प्रकार पार्श्वपूजा करें :

पार्श्वे ॐ जयन्त्यै नमः १। ॐ मङ्गलायै नमः २। ॐ काल्यै नमः ३। ॐ भद्राकाल्यै नमः ४। ॐ मानस्तोकायै नमः ५। ॐ विजयायै नमः ६। ॐ अपराजितायै नमः ७। मध्ये ॐ अनन्तायै नमः ८।

इति सम्पूज्य ततः प्रत्यङ्गं पूजयेत्।

इससे पूजा करके प्रत्यङ्ग की इस प्रकार पूजा करें :

ॐ रुधिरवदनायै नमः इति शिरसि १। ॐ चण्डिकायै नमः इति कपोले २। ॐ चन्द्रार्काभ्यां नमः इति चक्षुषोः ३। ॐ वृहस्पतये नमः इति कर्णयोः ४। ॐ सरस्वत्यै नमः इति नासायाम् ५। ॐ उग्रदन्तिकायै नमः इति जिह्वायाम् ६। ॐ महादन्तिकायै नमः इति ग्रीवायाम् ७। ॐ पृथिव्यै नमः इति उदरे ८। ॐ धर्माय नमः। –

इति जङ्घाचतुष्टये सम्पूज्य ततो जलं गृहीत्वा :

इससे जङ्घाचतुष्टय की पूजा करने के बाद जल लेकर :

ॐ ह्रीं श्रीं वरुणमण्डलाधिष्ठितविग्रहायै पशुरूपचण्डिकायै इमं पशु प्रोक्ष्यामि स्वाहा।

इति पशुं सम्प्रोक्ष्य ततस्तिलकुशजलान्यादाय।

इससे पशु को प्रोक्षण करके तिल, कुश तथा जल लेकर :

देशकालौ संकीर्त्य अमुकगोत्रः श्रीअमुकशर्म्माहं छागसमसंख्यकदशवर्षावच्छिन्न–श्रीमदमुकदेव्याः प्रीतिकामोऽहमेताञ्छागान् वह्निदैवतान् भगवत्यै अमुकदेव्यै तुभ्यं घातयिष्ये इति संकल्प्य खड्गपूजां कुर्यात्।

ऐसा संकल्प करके इस प्रकार खड्ग पूजा करें :

खड्ग को सामने रखकर 'ॐ कृष्णं पिनाकपाणिं च कालरात्रिस्वरूपिणम्। उग्रं रक्तास्यनयन

१ तदर्धयामिनीशिषे विजयार्थं नृपोत्तमः। पंचाब्दलक्षणोपेतं गंधधूपस्रगर्चितम्।।

रक्तमाल्यानुलेपनम्।।१।। रक्ताम्बरधरं चैव पाशहस्तं कुटुम्बिनम्। पिबमानं च रुचिरं भुंजानं क्रव्यसंहतिम्।।२।।

इति खड्ग ध्यात्वा ॐ कालिकालि वज्रेश्वरि लोहदण्डाय नमः। इति मन्त्रेण गन्धादिभिस्त्रिः सम्पूज्य तस्योपरि सिन्दूरादिना ह्रींकारं विलिख्य खड्गाय नमः इति सम्पूज्य ततो बलिकर्णे बलिगायत्रीं श्रावयेत्। तत्र मन्त्रः

इससे खड्ग का ध्यान करके "ॐ कालि कालि वज्रेश्वरि लोहदण्डाय नमः।"

इस मन्त्र से गन्ध आदि से तीन बार पूजा करके उसके ऊपर सिन्दूर आदि से "ह्रीं" यह लिख कर "खड्गाय नमः" इससे पूजा करके बलि के कान में बलि गायत्री सुनावें। उसमें मन्त्र यह है :

ह्री बलिरूपाय विद्महे। देवीप्रियाय धीमहि। तन्नः पशुः प्रचोदयात्।

इति वलिकर्णे बलिगायत्रीं श्रावयित्वा खड्गं हस्तेनादाय प्रार्थयेत्।

बलि के कान में बलिगायत्री सुनाकर खड्ग हाथ में लेकर प्रार्थना करें :

ॐ असिंर्विशसनः खड्गस्तीक्ष्णधारो दुरासदः। श्री गर्भो विजयश्चैव धर्मपाल नमोस्तु ते।।१।। इत्यष्टौ तव नामानि स्वयमुक्तानि वेधसा। नक्षत्रं कृत्तिका ते तु गुरुर्देवो महेश्वरः।।२।। रोहिणी च शरीरं ते धाता देवो जनार्दनः। पिता पितामहो देवस्त्वं मां पालय सर्वदा।।३।। नीलजीमूतसंकाशस्तीक्ष्णदंष्ट्रः कृशोदरः। भावशुद्धोऽमर्षणश्च अतितेजास्तथैव च।।४।। इयं येन धृत्वा क्षोणी हतश्च महिषासुरः। तीक्ष्णधाराय शुद्धाय तस्मै खड्गाय ते नमः। चण्डिकारसनाबुध्या एकघाते तु घातयेत्।।५।।

इससे खड्ग की प्रार्थना करके :

रे वज्रासुरनाशाय देवकार्यांर्थतत्परः। पेशुछेद्य स्वयं शीघ्रं खड्गनाथ नमोस्तु ते।।१।। यज्ञार्थे पशवः सृष्टा यज्ञार्थे पशुघातनम्। अतस्त्वां घातयिष्यामि तस्माद्यज्ञे वधोऽवधः।।२।। इति पठित्वा पशुपाशाय विद्महे। विप्रकर्णाय धीमहि। तन्नश्छागः प्रचोदयात्।

मूलं पठित्वा अमुकदेव्यै नमः इमं छागबलिं तुभ्यमहं प्रददे। इति बलिस्कन्धे खड्गं दत्त्वा सकलं रुधिरं मुण्डं च देव्यग्रे कृत्वा समभागेन सम्पूर्णं परमं कविर्दीपयेत्। मांससमीपजं दीपं क्रौं क्रौं नमोनमः अनेन मुण्डे मुण्डे दीपं दद्यात्ततस्तर्पयेदेभिः।

मूलमन्त्र पढ़कर "अमुकदेव्यै नमः इमं छागबलि तुभ्यमहं प्रददे।" इससे बलि के कन्धे पर खड्ग देकर सम्पूर्ण रक्त तथा सिर देवी के आगे करके सम भाग से सम्पूर्ण बलि के पास साधक दीपक जलावें। "मांससमीपजं दीपं क्रौं क्रौं नमो नमः" इससे प्रत्येक बलि के सिर पर दीपक जलायें और इन मन्त्रों से तर्पण करें :

ॐ चामुण्डां तर्पयामि नमः इति पूर्वे १। ॐ योगिनी तर्पयामि नमः इति दक्षिणे २। ॐ डाकिनीं तर्पयामि नमः इति पश्चिमे ३। ॐ भेरवीं तर्पयामि नमः इति उत्तरे ४। ॐ विदारिकां तर्पयामि नमः इति आग्नेयाम ५। ॐ पापराक्षसीं तर्पयामि नमः इति नैर्ऋत्ये ६। ॐ पूतनां तर्पयामि नमः इति वायव्ये ७। ॐ कालिकां तर्पयामि नमः इत्यैशान्ये ८। ॐ अद्य दशवर्षावच्छिन्नश्रीअमुकदेव्याः प्रीतिकाम इमं छागरुधिरं समुण्डं विष्णुदैवतं भगवत्यै श्रीअमुकदेव्यै तुभ्यमहं सम्प्रददे इति समर्पणं कुर्यात्।

इति छागबलिः।

अथ[1] कुमारीसुवासिनीपूजाप्रयोगः।

रुद्रयामले :

एकवर्षा भवेत्सन्ध्या द्विवर्षा च सरस्वती। त्रिवर्षा च त्रिधामूर्तिश्चतुर्वर्षा तु कालिका।।१।। सुभगा पञ्चवर्षा तु षड्वर्षा च उमा भवेत्। सप्तभिर्मालिनी प्रोक्ता अष्टवर्षा च कुब्जिका।।२।। नवभिः कालसन्दर्भा दशभिश्चापराजिता। एकादशा तु रुद्राणी द्वादशाब्दैस्तु भैरवी।।३।। त्रयोदशा महालक्ष्मीर्द्विसप्ता पीठनायिका। क्षेत्रज्ञा पञ्चदशभिः षोडशैश्चाम्बिका भवेत्।।४।।

रुद्रयामल तन्त्र में कहा गया है :

एक वर्ष की कुमारी 'सन्ध्या', दो वर्ष की 'सरस्वती', तीन वर्ष की 'त्रिधामूर्ति', चार वर्ष की 'कालिका', पांच वर्ष की 'सुभगा', छः वर्ष की 'उमा', सात वर्ष की 'मालिनी', आठ वर्ष की 'कुब्जिका', नव वर्ष की 'काल सन्दर्भा', दश वर्ष की 'अपराजिता', ग्यारह वर्ष की 'रुद्राणी', बारह वर्ष की 'भैरवी', तेरह वर्ष की 'महालक्ष्मी', चौदह वर्ष की 'पीठ नायिका', पन्द्रह वर्ष की 'क्षेत्रज्ञा', सोलह वर्ष की 'अम्बिका' कहलाती हैं।

एवं क्रमेण सम्पूज्य यावत्पुष्पं न विद्यते। प्रतिपदादिपूर्णान्तं वृद्धिभेदेन पूजयेत्।।५।। महापर्वसु सर्वेषु विशेषाच्च पवित्रके। महानवम्यां देवेशि कुमारीश्च प्रपूजयेत्।।६।। अष्टोत्तरशतं वापि एकां वापि प्रपूजयेत्। पूजिताः प्रतिपूज्यन्ते निर्दहन्त्यवमानिताः।।७।। कुमारी योगिनी साक्षात्कुमारी परदेवता। असुरा अष्ट नागाश्च ये ये दुष्टग्रहा अपि।।८।। भूतवेतालगन्धर्वडाकिनीयक्षराक्षसाः। याश्चान्या देवताः सर्वा भूर्भुवः स्वश्च भैरवाः।।९।। पृथिव्यादीनि सर्वाणि ब्रह्माण्डं सचराचरम्। ब्रह्मा विष्णुश्च रुद्रश्च ईश्वरश्च सदाशिवः।।१०।। सन्तुष्टः सर्वतुष्टश्च यस्तु कन्यां प्रपूजयेत्।

इस प्रकार क्रम से पूजा करके जब तक वे रजस्वला न हों तब तक प्रतिपदा से पूर्णिमा पर्यन्त एक एक बढ़ाते हुए पूजा करें। सभी महापर्वों पर, विशेष रूप से पवित्र पर्वों पर महानवमी को हे देवेशि, कुमारियों की पूजा करनी चाहिए। एक सौ आठ या एक कुमारी की पूजा करे। ये पूजित कुमारियॉ पूजा करने वालों की पूजा करती हैं। जब वे अपमानित होती हैं तो अपमान करने वालों को जला देती हैं। कुमारी साक्षात् योगिनी हैं। कुमारी साक्षात् परदेवता हैं। असुर, आठ नाग तथा जो जो दुष्ट ग्रह हैं, भूत, वेताल, गन्धर्व, डाकिनी, यक्ष और राक्षस तथा जितने अन्य देवता हैं वे सब, भूः, भुवः, स्वः, भैरव, पृथिदी आदि सब, सचराचर ब्रह्माण्ड, ब्रह्मा, विष्णु, रुद्र, ईश्वर तथा सदाशिव ये सब उस व्यक्ति से संतुष्ट हो जाते हैं जो कन्या का पूजन करता है।

अथ पूजनम्।

पूजादिना पूर्वदिने गन्धपुष्पाक्षतादिभिर्मूलेन भगवति कुमारि पूजार्थं त्वं मया निमन्त्रिताऽसि मां कृतार्थयेति निमन्त्रिता प्रातराहूय प्रदक्षिणीकृत्योद्वर्त्तनाद्यैः स्नापयित्वा गन्धतैलेन शरीरं संस्कुर्यात्। केशं परिष्कृत्य ललाटे सिन्दूरं नयनयोः कज्जलं सर्वाङ्गे

---

१ ब्राह्मणी सर्वकार्येषु जयार्थ नृपवंशजाम्। लाभाथ वैश्यवंशोत्थां सुतार्थे शूद्रवंशजाम्। ददारुणेदारुणे चांत्यजातां तु पूजयेद्विधिना वरः। इत्युक्ता ग्राह्याः। वर्जयेत्सर्वकार्येषु दासीगर्भसमुदभवाम्।

चन्दनं वस्त्रालङ्कारैराभूष्य पादौ प्रक्षाल्य अष्टदलपीठोपरि समावेश्य ताम्बूलेन मुखं संशोध्य देशकालौ स्मृत्वामुकफलसिद्ध्यर्थं अमुककर्मणि अमुकदेव्याः प्रीत्यर्थं कुमारीणां पूजनं करिष्ये इति संकल्प्य न्यासं कुर्यात्।

पूजा के दिन से पूर्व गन्ध, पुष्प, अक्षत आदि के द्वारा मूलमन्त्र से "भगवति कुमारि पूजार्थं त्वं मया निमन्त्रिताऽसि मां कृतार्थयेति।" इससे निमन्त्रित कर प्रातः कन्या को बुलाकर प्रदक्षिणा करके उद्वर्तन आदि से स्नान कराकर सुगन्धित तेल से शरीर का संस्कार करें। केश का परिष्कार करके ललाट पर सिन्दूर, आँखों में काजल, सारे शरीर को चन्दन, वस्त्रों और अलंकारों से भूषित करके पैर धोकर अष्टदल पीठ पर बैठाकर पान से मुख की शुद्धि कराकर "देशकालौ स्मृत्वा, अमुक फल सिध्यर्थ अमुक कर्मणि अमुक देव्याः प्रीत्यर्थं कुमारीणां पूजनं करिष्ये।" इससे संकल्प करके न्यास करें।

षडङ्गन्यासः।

ॐ क्लां कुलकुमारिके हृदयाय नमः १। ॐ क्लीं कुलकुमारिके शिरसे स्वाहा २। ॐ क्लूं कुलकुमारिके शिखायै वषट् ३। ॐ क्लैं कुलकुमारिके कवचाय हुम् ४। ॐ क्लौं कुलकुमारिके नेत्रत्रयाय वौषट् ५। ॐ क्लः कुलकुमारिके अस्त्राय फट् ६।

इति हृदयादि षडङ्गन्यास। इसी प्रकार कराङ्गन्यास करें।

एवं न्यासं कृत्वा ध्यायेत्।

इस प्रकार न्यास करके ध्यान करें।

ध्यानः :

ॐ शङ्खकुन्देन्दुधवलां द्विभुजां वरदाभयाम्। चन्द्रमयमहाम्भोजभावहावविराजिताम्।।१।।

एवं ध्यात्वा मानसोपचारैः सम्पूज्य पुनर्ध्यात्वा गन्धादिपूजनं कुर्यात्।

ह्रीं कुलकुमारिकायै नमः इदं पाद्यं एवमिदमर्घ्यमिदमाचमनीयमिदमनुलेपनमेतेऽक्षताः एतानि पुष्पाणि एष धूपः एष दीपः इदन्नैवेद्यमिदं ताम्बूलमिति पूजयित्वा षडङ्गन्यास–विधिना षडङ्गानि पूजयेत्। ततः ॐ ह्रीं हंसः कुलकुमारिकाश्रीपादुकां पूजयामि इति पुष्पाञ्जलित्रयं च दत्त्वा तत्रांगे स्वेष्टदेवीमावाह्य च पूजयेत्। ततः षोडशनामभिः षोडशवारं पूजयेत्। तद्यथा :

इस प्रकार ध्यान करके मानसोपचारों से पूजा करके पुनः ध्यान करके गन्ध आदि से इस प्रकार पूजा करें : "ह्रीं कुलकुमारिकाये नमः इदं पाद्यं एवमिदमर्घ्यमिदमाचमनीयमिदमनुलेपनमेतेऽक्षताः एतानि पुष्पाणि एष धूपः एष दीपः इदन्नैवेद्यमिदं ताम्बूलमिति" इससे पूजा करके षडङ्गन्यास विधि से षडङ्ग पूजा करें। इसके बाद षोडश नामों से षोडश बार इस प्रकार पूजा करें :

ॐ ऐं सन्ध्यायै नमः १। ॐ ऐं सरस्वत्यै नमः २। ॐ ऐं त्रिमूर्त्यै नमः ३। ॐ ऐं कालिकायै नमः ४। ॐ ऐं सुभगायै नमः ५। ॐ ऐं उमायै नमः ६। ॐ ऐं मालिन्यै नमः ७। ॐ ऐं कुब्जिकायै नमः ८। ॐ ऐं कालसंकर्षिण्यै नमः ६। ॐ ऐं अपराजितायै नमः १०। ॐ ऐं रुद्राण्यै नमः ११। ॐ ऐं भैरव्यै नमः १२। ॐ ऐं महालक्ष्म्यै नमः १३। ॐ ऐं पीठनायिकायै नमः १४। ॐ ऐं क्षेत्रज्ञायै नमः १५। ॐ ऐं चर्च्चिकायै नमः १६।

इति सम्पूज्य कौमार्या नवनामभिः पूजयेत्। तद्यथा :

इससे पूजा करके कुमारी के नवनामों से इस प्रकार पूजा करें :

ॐ ह्रीं कौमार्यै नमः १। ॐ ह्रीं त्रिपुरायै नमः २। ॐ ह्रीं कल्याण्यै नमः ३। ॐ ह्रीं रोहिण्यै नमः ४। ॐ ह्रीं कामिन्यै नमः ५। ॐ ह्रीं चाण्डिकायै नमः ६। ॐ ह्रीं शांकर्यै नमः ७। ॐ ह्रीं दुर्गायै नमः ८। ॐ ह्रीं सुभद्रायै नमः ६।

इति नामभिः सम्पूज्य मूलेन पुष्पाञ्जलित्रयं दत्त्वा प्रदक्षिणीकृत्य प्रणमेत्। तत्र मन्त्रो यथा :

इन नामों से पूजा करके मूलमन्त्र से तीन पुष्पाञ्जलि देकर प्रदक्षिणा करके प्रणाम करें। उसमें मन्त्र यह है :

ॐ जगत्पूज्ये जगद्वन्द्ये सर्बशक्तिस्वरूपिणि। पूजां गृहाण कौमारि जगन्मातर्नमोस्तु ते।।१।। त्रिपुरां त्रिगुणां धात्रीं ज्ञानमार्गस्वरूपिणीम्। त्रैलोक्यवन्दितां देवीं त्रिमूर्तिं पूजयाम्यहम्।।२।। कालात्मिकां कालभीतां कारुण्यहृदयां शिवाम्। कारुण्यजननीं नित्यां कल्याणीं पूजयाम्यहम्।।३।। अणिमादिगुणोपेतामकारादिस्वरात्मिकाम्। शक्तिभेदात्मिकां लक्ष्मीं रोहिणीं पूजयाम्यहम्।।४।। कलाधारां कलारूपां कालचण्डस्वरूपिणीम्। कामदां करुणाधारां कामिनीं पूजयाम्यहम्।।५।। चण्डधारां चण्डमायां चण्डमुण्डविनाशिनीम्। प्रणमामि च देवेशीं चण्डिकां पूजयाम्यहम्।।६।। सुखानन्दकरीं शान्तां सर्वदेवनमस्कृताम्। सर्वभूतात्मिकां देवीं शाङ्करीं पूजयाम्यहम्।।७।। दुर्गमे दुस्तरे चैव दुःखत्रयविनाशिनीम्। पूजयामि सदा भक्त्या दुर्गां नमाम्यहम्।।८।। सुन्दरीं स्वर्णवर्णाभां सुखसौभाग्य दायिनीम्। सुभद्रजननीं देवीं सुभद्रां प्रणमाम्यहम्।।६।।

इति प्रणमेत्।

इससे प्रणाम करें।

इति कुमारी सुवासिनी पूजन।

अथ आरार्तिक्यम्।

कस्मिंश्चित्स्वर्णादिभाजने गोधूमचूर्णपिष्टे कर्पूरमिश्रिता एकादश श्वेतवर्तिकाः प्रज्वाल्य धूपदानविध्युक्तप्रकारेण प्रोक्षणादिकं कृत्वा घण्टां वादयन् ॐ कर्पूरवर्तिसंयुक्तं वह्निना योजितं च यत्। आरार्तिकमिदं दिव्यं गृहाण जगदीश्वरि।।१।।

किसी सोने आदि के पात्र में गेहूँ के आटे में कपूरमिश्रित ग्यारह सफेद बत्ती जलाकर धूपदानविधि में कही गई विधि से प्रोक्षण आदि करके घण्टा बजाते हुए कहें 'ॐ कर्पूरवर्तिसंयुक्तं वह्निना योजितं च यत्। आरार्तिकमिदं गृहाण जगदीश्वरि।।१।।

मूलं पठित्वा इदमारार्तिक्यं साङ्गायै सायुधायै सबलवाहनायै सपरिवारायै सावरणायै श्रीअमुकदेव्यै नमः इति पठन् नेत्रप्रदेशे दशधाभ्राम्य पुष्पाञ्जलित्रयं दत्वा योनिमुद्रां प्रदर्शयेत्।

मूल मन्त्र पढ़कर इस आरती को 'साङ्गायै सायुधायै सबलवाहनायै सपरिवारायै सावरणायै श्री अमुक देव्यै नमः' यह पढ़ते हुए नेत्र प्रदेश पर दश बार घुमाकर तीनबार पुष्पाञ्जलि देकर योनिमुद्रा प्रदर्शित करें।

इति आरार्तिक्यम्।

अथ समर्पणम् :

ततश्छत्रचामरे दर्शयित्वा पुष्पांजलिं गृहीत्वा श्लोकचतुष्टयं पठेत्।

इसके बाद छत्र और चामर दिखलाकर पुष्पाञ्जलि देकर इन चार श्लोकों को पढ़ें :

बुद्धिश्शरासने क्लृप्ता दर्पणं मङ्गलानि च। मनोवृत्तिर्विचित्रा ते नृत्यरूपेण कल्पिता।।१।। ध्वनयो गीतरूपेण शब्द बाह्यप्रभेदत:। छत्राणि तव पद्मानि कल्पितानि मया प्रभो।।२।। सुषुम्णा ध्वजरूपेण प्राणाद्या वा शरात्मना। अहंकारो गजत्वेन वेग: क्लृप्तो रथात्मना।।३।। इन्द्रियाण्यश्वरूपाणि शब्दादीनथ वर्त्मना। मन: प्रग्रहरूपेण बुद्धिस्सारथिरूपत:। सर्वमन्यन्मया क्लृप्तं तत्रोपकरणात्मना।।४।।

इससे पुष्पाञ्जलि देकर :

पूर्वपापबुद्धिं देवधर्माधिकारतो जाग्रत्स्वप्नसुषुप्त्यवस्थासु मनसा वाचा हस्ताभ्यां पद्भ्यामुदरेण शिश्ना यत्स्मृतं यदुक्तं यत्कृतं तत्सर्वं ब्रह्मार्पणं भवतु स्वाहा मदीयं च सकलं अमुकदेव्यै ते समर्पये तत्।

इति देव्यै समर्प्य प्राणायामादिकं कृत्वा पुष्पाक्षतादिभि: सम्पूज्य क्षमापयेत्। इससे देवी को समर्पित करके प्राणायाम आदि करके पुष्प अक्षत आदि से पूजा करके क्षमा प्रार्थना करें।

क्षमापनमन्त्र :

अज्ञानाद्विस्मृतेर्भीत्या यन्न्यूनमधिकं कृतम। विपरीतं च तत्सर्वं क्षमस्व परमेश्वरि।।१।। मन्त्रहीनं क्रियाहीनं विधिहीनं सुरेश्वरि। सम्पूजिता मया देवी तस्मात्त्वं वरदा भव।।२।। आवाहनं च पूजां च त्वन्माहात्म्यं तपं तथा। विसर्जनं न जानामि कालिके त्वं क्षमस्व मे।।३।। यदक्षरपदभ्रष्टं स्वरव्यजनवर्जितम्। तत्सर्वं क्षम्यतां देवि प्रसीद परमेश्वरि।।४।। यस्या: स्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञक्रियादिषु। न्यूनं सम्पूर्णतां याति प्रसीद परमेश्वरि।।५।। कामेश्वरि जगन्मात: सच्चिदानन्दविग्रहे। गृहाणार्च्चामिमां सर्वां प्रसीद परमेश्वरि।।६।।

इससे पुष्पाञ्जलि देकर क्षमापन करें।

ततो योनिमुद्रां बद्ध्वा प्रणम्य देव्याश्चोच्छिष्टं तदुच्छिष्टभोजने विनिवेदयेत्। तद्यथा: तदनन्तर योनिमुद्रा बाँधकर प्रणाम करके देवी का उच्छिष्ट उनका उच्छिष्ट खाने वाले को इस प्रकार दे देवें :

किञ्चिदुच्छिष्टं गृहीत्वा ऐशान्यां दिशि ह्रीं चण्डेश्वर्यै नम: इति चण्डेश्वरी सम्पूज्य। ॐ चण्डेश्वरि महादेवि निर्माल्यैश्चन्दनादिभि:। लेह्यचोष्यान्नपानादिनिर्माल्यस्रग्विलेपनै:। निर्माल्यभोजनं तुभ्यं ददामि श्रीशिवाज्ञया।।१।। इति मन्त्रेण निर्माल्यं दद्यात्। ततस्तत्रैवोच्छिष्टचाण्डलिनीं सम्पूज्य तदुच्छिष्टनैवेद्या सवमुच्छिष्टचाण्डाल्यै दद्यात्। ततोधिकं देव्याश्चोच्छिष्टनैवेद्यं शिरसि धृत्वा नैवेद्यादिकं देवभक्तेषु विभज्य स्वयं भुक्त्वा विसर्जनं कुर्यात्।

कुछ उच्छिष्ट लेकर ऐशानी दिशा में 'ह्रीं चण्डेश्वर्यै नम:' इससे चण्डेश्वरी की पूजा करें, फिर : 'ॐ चण्डेश्वरि महादेवि निर्म्माल्यैश्चन्दनादिभि:। लेह्य चोष्यान्नपानादिनिर्माल्यस्रग्विलेपनै:। निर्याल्य भोजनं तुभ्यं ददामि श्री शिवाज्ञया।।१।।" इस मन्त्र से निर्माल्य देवे। तदनन्तर वहीं पर उच्छिष्ट चाण्डालिनी की पूजा करके वह उच्छिष्ट नैवेद्य तथा आसव उच्छिष्टचाण्डालिनी को देवें। उससे अधिक देवी का उच्छिष्ट नैवेद्य शिर पर रखकर उस नैवेद्य आदि को देवभक्तों में बाँटकार स्वयं खाकर विसर्जन करें।

इति क्षमापन।

अथ विसर्जनम्।

गच्छगच्छ परं स्थानं स्वस्थानं परमेश्वरि। पूजाराधनकाले च पुनरागमनाय च।

यह पढ़कर संहार मुद्रा से देवी का विसर्जन करके इस प्रकार हृदय में स्थापित करें।

तिष्ठतिष्ठ परस्थाने स्वस्थाने परमेश्वरि। यत्र ब्रह्मादयो देवाः सर्वे तिष्ठन्ति मे हृदि।।१।।

इति हृदयकमले हस्तं दत्वा देवीं संस्थाप्य मानसोपचारैः सम्पूज्य स्वात्मानं देवरूपं भावयन् यथासुखं विहरेत्। एवमेव विधिना जपं समाप्य जपान्ते तद्दशांशतो नित्यहोमं कुर्यात्।

इससे हृदय कमल पर हाथ देकर देवी की स्थापना करके मानसोपचारों से पूजा करके अपने आपको देवरूप से भावना करते हुए विहार करें। इस विधि से जप समाप्त करके जप के मन्त्र में जप का दशांश नित्य होम करें।

अथ नित्यहोमप्रकारः।

कुण्डे स्थण्डिले वा मूलेन वीक्ष्य अस्त्रेण प्रोक्षणताडने कृत्वा कुशराच्छाद्य व्याहृतित्रयमुच्चार्य्य वह्निमानीय तिस्रो रेखाः संलिख्य अस्त्रमन्त्रेण नैर्ऋत्ये क्रव्यादं सम्परित्यज्य मूलेनाभिमन्त्र्य (वं) इति धेनुमुद्रयाऽमृतीकृत्यास्त्रेण संरक्ष्य (हूं) इत्यवगुण्ठ्य परितो भ्रामयेत्। त्रिः प्रणवं पठन् शय्यागतं ऋतुस्नातां नीलेन्दीवरधारिणीं देवेन भुज्यमानां वागीश्वरीं कुण्डे ध्यात्वा तद्योनिमण्डले ईशरेतोधिया वह्नि हूं वह्निचैतन्याय नमः इति मन्त्रेण मूलं च पठन् स्थापयेत्। ततो वह्निं पुष्पाक्षतादिना सम्पूज्य तत्र इष्टदेवतामावाह्य सम्पूज्य घृतादिभिर्व्यस्तसमस्ताभिर्महाव्याहृतिभिराहुतिचतुष्टयं दत्त्वा स्वकल्पोक्तद्रव्येण यथासंख्यं होमे कुर्यात्। पुनर्व्याहृतिभिर्हुत्वा मूतौं देवीं नियोज्य संहारमुद्रया वह्नि विसृज्य देव्यै आचमनादिकं दत्त्वा यानि कानि च इत्यादिना त्रिः प्रदक्षिणं कुर्यात्। इति नित्यहोमप्रकारः

कुण्ड में या स्थण्डिल पर मूल मन्त्र से वीक्षण और अस्त्र मन्त्र से प्रोक्षण तथा ताड़न करके कुशों से ढक कर तीन व्याहृतियों का उच्चारण करके अग्नि लाकर तीन रेखाएँ खींचकर अस्त्र मन्त्र से नैर्ऋत्य कोण में क्रव्याद को छोड़कर मूलमन्त्र से अभिमन्त्रित करके (वं) इससे तथा धेनुमुद्रा से अमृतीकरण करके अस्त्र मन्त्र से संरक्षण करके (हूं) इससे अवगुठन करके चारों ओर घुमायें। तीन बार प्रणव (ॐ) को पढ़ते हुए शय्या पर लेटी ऋतुस्नाता नील कमलिनी को धारण किये हुये देव से भुज्यमान होती हुई बागीश्वरी को कुण्ड में ध्यान करके उसके योनि मंडल में शिव के वीर्य की भावना से अग्नि को "हूं वह्निचैतन्याय नमः" इस मन्त्र से मूल मन्त्र को पढ़ते हुए स्थापित करें। तदनन्तर पुष्प तथा अक्षत से अग्नि की पूजा करके वहाँ इष्ट देवता का आवाहन करके घृत आदि से व्यस्त तथा समस्त महाव्याहृतियों से चार आहुतियाँ देकर अपने कल्प के अनुसार कथित द्रव्य से संख्यानुसार होम करें। पुनः, व्याहृतियों से होम करके देवी को नियुक्त करके संहार मुद्रा से अग्नि का विसर्जन करके देवी के लिए आचमन आदि देकर 'यानि कानि च' इत्यादि से तीन बार प्रदक्षिणा करें।

इति नित्यहोम प्रकार।

अथ कुलाचारो निरूप्यते।

कालीतन्त्रे

अथाचारं प्रवक्ष्यामि यस्मादमृतमश्नुते। सर्वभूतहिते युक्तः समयाचारपालकः।।५००।।

अनित्यकर्मसंत्यागी नित्यानुष्ठानतत्परः। मन्त्राराधन मात्रेण शिवभावेन तत्परः।।१।।

परस्यां देवतायां च सर्वकर्मनिवेदकः। कुलस्त्रीवीरनिन्दां च तद्द्रव्याहरणं तथा ।।२।। स्त्रीषु रोष प्रहारं च वर्जयेन्मतिमान्सदा। स्त्रीमयं च जगत्सर्वं स्वयं तावत्तथा भवेत्।।३।। पेयं चर्व्यं तथा चोष्यं भक्ष्यं लेह्यं गृहं सुखम्। सर्वं च चुवतीरूपं भावयेन्मतिमान्सदा।।४।। कुलजां युवतीं वीक्ष्य नमस्कुर्य्यात्समाहितः। यदि भाग्यवशाद्देवि कुलदृष्टिः प्रजायते।।५।। तदैव मानसीं पूजां तत्र तासां प्रकल्पयेत्। तासां भगादिदेवीनां स्तनं वक्त्रं च दर्शनम्।।६।। बालां वा यौवनोन्मत्तां वृद्धां वा सुन्दरीं तथा। कुत्सितां वा महादुष्टां नमस्कृत्य विभावयेत्।।७।। तासां प्रहारं निन्दां च कौटिल्यमप्रियं यथा। सर्वथा च न कर्तव्यमन्यथा शक्तिरोधकृत्।।८।। स्त्रियो देव्यः स्त्रियः प्राणाः स्त्रियश्चैव विभूषणम्। स्त्रीसङ्गिना सदा भाव्यमन्यथा स्वस्त्रिया अपि।।६।।

कालीतन्त्र में कहा गया है :

मैं आचार को बताऊँगा जिससे मनुष्य को अमृतप्राप्ति होती है। समस्त प्राणियों के हित में मनुष्य को लगे रहना चाहिए। उसे सदा समयाचार का पालक होना चाहिए। उसे अनित्य कर्मों का त्याग तथा नित्य अनुष्ठान करने में तत्पर रहना चाहिए। उसे मन्त्रों के अराधन मात्र से तथा शिवभाव से परदेवता में समस्त कर्मों का निवेदन करनेवाला होना चाहिए। पेय, चर्व्य, चोष्य, भक्ष्य, लेह्य पदार्थ, गृह तथा सुख सब कुछ को युवती के रूप में बुद्धिमान् व्यक्ति को सदा भावना करनी चाहिए। कुलजा स्त्री को देखकर शान्तचित्त होकर नमस्कार करना चाहिए। हे देवि ! भाग्यवश मनुष्य में कुल दृष्टि उत्पन्न हो जाय तो भग आदि देवताओं के स्तन, मुख और दर्शन होते ही उनकी मानसी पूजा तत्काल करनी चाहिए। बाला, युवती, वृद्धा, सुन्दरी, निन्दिता या महादुष्टा स्त्री भी यदि मिल जाये तो नमस्कार से उसका सत्कार करना चाहिए। स्त्रियों की निंदा, ताड़ना और उनके प्रति कुटिल व्यवहार और अप्रिय आचरण कभी नहीं करना चाहिए। यदि कोई ऐसा करेगा तो उसका यह कार्य उसकी शक्ति के विकास में अवरोध उत्पन्न कर देगा। स्त्रियाँ ही देवियाँ हैं। स्त्रियां हीं प्राण हैं, स्त्रियाँ ही भूषण हैं। अपनी स्त्री के बिना भी सदा स्त्री का संगी होना चाहिए।

(शिवागमेपि)

शिव शक्तिः शिवः शक्तिर्ब्रह्मा जनार्दनः। शक्तिरिन्द्रो रविः शक्तिः शक्तिश्चन्द्रो ग्रहाध्रुवम्। शक्तिरूपं जगत्सर्वं यो न जानाति पातकी।।१०।। जपस्थाने महाशङ्खान्निवेश्यार्द्धं जपं चरन्। स्त्रियं गच्छन् स्पृशन् पश्यन् विशेषात्कुलजां शुभाम्।।११।। भक्ष्यं ताम्बूलमन्यांश्च भक्ष्यद्रव्यान्यथारुचीन्। भक्तेभ्यः शेषभक्ष्याणि भुक्त्वा शेषं जपं चरेत्।।१२।।

शिवागम में भी कहा गया है :

शिव ही शक्ति है, शक्ति ही शिव है; शक्ति ब्रह्मा है और शक्ति ही जनार्दन है; शक्ति ही इन्द्र है, शक्ति ही सूर्य है; शक्ति ही चन्द्रमा है; शक्ति ही ग्रह हैं; यह सारा संसार शक्तिरूप है। इस रहस्य को जो नहीं जानता वह पातकी है। जपस्थान पर शंखों को रखकर आधा जप करते हुए स्त्रीगमन, स्पर्श या दर्शन करते हुए विशेष रूप से कुलजा शुभ स्त्री को भस्म, ताम्बूल तथा अन्य खाद्य द्रव्य यथारुचित देना चाहिए। शेष द्रव्य भक्तों को देकर और स्वयं खाकर जप करना चाहिए।

वीरतन्त्रे

दिक्कालनियमो नात्र स्थित्त्यादिनियमो न च। जपे न कालनियमो नार्चादिषु बलिष्वपि।।१३।। स्वेच्छानियम उक्तश्च महामन्त्रस्य साधने। वस्त्रसनं देहगेहसंस्पार्शादिश्च धारिणः।।१४।। शुद्धिं न चाचरेत्तत्र निर्विकल्पं मनश्चरेत्।

वीर तन्त्र में कहा गया है :

यहाँ दिशा और काल का नियम नहीं है। स्थिति आदि का भी नियम नहीं है। जप में तथा पूजा आदि में भी काल का नियम नहीं है। महामन्त्र के साधन में स्वेच्छा नियम है। वस्त्र, आसन, देह, गेह, स्पर्श आदि की शुद्धि साधक को करने की आवश्यकता नहीं है। निर्विकल्प मन से आचरण करना चाहिए।

कुलार्णवतन्त्रे

कुलाचारगृहं गत्वा भक्त्या पापविशुद्धये।।१५।। याचयेदमृतं कौलं तदभावे जलं पिवेत्। कुलाचारेण यत्कृत्वा दत्तं पात्रं तु भक्तितः।।१६।। नमस्कृत्य तु गृह्णीयादन्यथा नरकं ब्रजेत्।

कुलावर्णव तन्त्र में कहा गया है :

कुलाचार गृह में जाकर पापशुद्धि के लिए कौल से अमृता माँगना चाहिए। उसके अभाव में जल पीना चाहिए। कुलाचार में भक्तिपूर्वक पात्र में रखकर जो कुछ भी मिले उसे नमस्कार करके ले लेना चाहिए। अन्यथा करने से मनुष्य नरक में जाता है।

अन्यत्रपि

न वृथा गमयेत्कालं द्यूतक्रीडादिना सुधीः।।१७।। गमयेद्देवतापूजाजपयागस्तवादिना। वीराणां जपयागस्तु सर्वकाले प्रशस्यते।।१८।। सर्वदेशे सर्वपीठे कर्तव्यो नात्र संशयः। प्रत्यक्षे वा परोक्षे वा प्रत्यहं प्रणमेद्गुरुम्।।१६।। न वदेच्छ्रीगुरोर्नाम जपादन्यत्र तु प्रिये। श्रीनाथदेवस्वामीति विवादे साधने वदेत्।।२०।।

अन्यत्र भी कहा गया है।

सुधी द्यूतक्रीडा आदि में व्यर्थ समय न खोयें। देवपूजा, जप, यज्ञ तथा स्तुति आदि के द्वारा अपना समय व्यतीत करना चाहिए। वीरों का जप–यज्ञ सदा प्रशस्त होता है। सर्वत्र, सब पीठों में जप सदा करना चाहिए इसमें संशय नहीं हैं। प्रत्यक्ष या परोक्ष में प्रतिदिन गुरु को प्रणाम करना चाहिए। हे प्रिये ! जप से अन्य गुरु का नाम न लेवें। साधना में या किसी विवाद में यदि गुरु का नाम लेना पड़े तो उन्हें 'श्रीनाथ', 'देव' तथा 'स्वामी' कह कर कार्य चलाना चाहिए।

वीरतन्त्रे

स्नानादि मानसं शौचं मानसः प्रवरो जपः। पूजनं मानसं दिव्यं मानसं तर्पणादिकम्।।२१।। सर्व एव शुभः कालो नाशुभो विद्यते क्वचित्। न विशेषो दिवा रात्रौ न सन्ध्यायां महानिशि।।२२।। सर्वदा पूजयेद्देवि सुस्नातः कृतभोजनः। महानिश्यशुचौ[1] देशे बलिं मन्त्रेण दापयेत्।।२३।। यत्तु रात्रौ महापूजा कर्तव्या वीरवन्दिते। न दिने सर्वथा कार्या शासनान्मम सुव्रते।।२४।'

वीरतन्त्र में कहा गया है :

मानस स्नान आदि तथा मानस जप श्रेष्ठ माना गया है। मानस पूजन, मानस तर्पण आदि भी उत्तम माना गया है। सभी समय शुभ है। कहीं पर कोई अशुभ नहीं है। रात और दिन में, संध्या और महारात्रि में कोई अन्तर नहीं है। हे देवि ! सदा स्नान करके भोजन करके पूजा करना चाहिए। हे वीरवंदिते ! जो कहा गया है कि "पूजा रात में करनी चाहिए" उसमें हे सुव्रते !–

---

१ अर्द्धरात्रात्परं यच्च मुहूर्तद्वयमेव च। सा महारात्रिरुद्दिष्टा तत्कृतं चाक्षयं भवेत्।

यह ध्यान रखना चाहिए कि मेरे आदेश से दिन में कभी पूजा नहीं करनी चाहिए। हर प्रकार से दिन में पूजा करने का निषेध है।

अथकुलपूजाविषयं गान्धर्वे

पृथ्वीं[1] ऋतुमतीं वीक्ष्य सहस्रं[2] यदि नित्यशः[3]। तदा वादी सुसिद्धार्थो भूत्वा क्षितितलं व्रजेत्।।२५।। पर्वते[4] हस्तमारोप्य निर्भयो यत्तमानसः। कवितां लभते सोपि अमृतत्वं च गच्छति।।२६।।

गन्धर्व तन्त्र में कहा गया है कि

ऋतुमती कुलकन्या को देखकर यदि ऋतु के सोलह दिनों तक हजार मूल मन्त्र का जप करें तो वादी सुसिद्ध होकर पृथिवी पर विचरण करता है। यदि स्तन पर हाथ रखकर साधक निर्भय हो मूल मन्त्र का एक हजार जप करता है तो वह कविता करने की शक्ति तथा अमरता प्राप्त करता है।

नील तन्त्रेः पद्म[5] दृष्ट्वा तथा बिम्बं खञ्जनं शिखरं तथा। चामरं रविबिम्बं च तिलपुष्पं शिरोरुहम्।।२७।। त्रिशूलं वीक्ष्य जप्त्वा च शतशः शुद्धभावनः। सुखं प्रसादं सुमुखं सुलोचनं सुहास्यकम्।।२८।। सुवेशं सुगतिं गन्धं सुगन्धं सुखमेव च। लभते च यथासंख्यं शृणु पार्वति सादरम्।।२६।।

नील तन्त्र में कहा गया है :

साधक यदि कुल कन्या के मुख को, अधर को, आँख को, मस्तक को, वेणी को, सिन्दूर को, नासिका को, केश को, नाभि की त्रिवलि को देखकर सौ बार शुद्ध भावना से जप करे तो हे पार्वति ! उसको सुख, प्रसाद, सुन्दर नेत्र, सुन्दर हंसमुख आकृति, सुन्दर वेश, सुन्दर गति, सुन्दर गन्ध तथा सुख सब कुछ आदरपूर्वक प्राप्त होता है।

भावचुडामणौ : [6]एकाकी निर्जने देशे श्मशाने विजने वने। शून्यागारे नदीतीरे निःशंङ्को विहरेत्सदा।।३०।। महाचीनक्रमे देवीं ध्यात्वा तत्र प्रपूजयेत्। तद्द्रुमोत्थितपुष्पेण पूजयेद्भक्तिभावतः।।३१।। स भवेत्कुलदेश्च कुलक्रमगत शुचिः। ब्रह्मोत्तरे महापद्मे देवीं

---

१. पृथ्वीकुलम्।

२. अत्रापि सहस्रमितिसम्बधः।

३. नित्यश इति षोडशदिन यावत्।

४. पर्वतं स्तनम्।

५. पद्मं मुखं च अधरं चक्षुर्मस्तकं केशं सिन्दूरं नासिकं नाभि त्रिवलोमिति बोद्धव्यम्।

६. कुलवर्त्म सर्वत्र गोपनीयम्। तथा तन्त्रे निर्जने चैद जनसन्निधौं। किंवा पक्षिपतङ्गादिदर्शने नैव कारयेत्। पातालमण्डले वापि गह्वरे सुनियन्त्रिते। निच्छिद्रमण्डपे नापि कर्तव्यं न च सन्निधौ। कुलपुष्पं कुलद्रव्यं कुलपूजा कुलं जपम्। कुलं कुलपतिं चैव कुलमालां कुलाकुलम्। कुलचक्रै कुलध्यानं सर्वथा न प्रकाशयेत्। प्रकाशात्सिद्धिहानिः स्यात्प्रकाशरात्रिधनादिकम्। प्रकाशान्मन्त्रनाशः स्यात् प्रकाशं कुलहिंसनम्। प्रकाशान्मृत्युलाभः स्यान्न प्रकाश्यं कदाचन। पूजाकाले च देवेशि यदि कोप्यत्र तिष्ठति। दर्शयेद्वैष्णवीं मुद्रां विष्णुन्यासं ततः परम्। प्रकाशाद्यदि गुप्तिः स्यात्तप्रकाशान्न दूषणम्। गोपने यदि व्यक्तिः स्यान्न गुप्तिः सा विधीयते। कदाचिदेवहानिस्तु न च व्यक्तिः कदाचन। वरं पूजा न कर्तव्या न च व्यक्तिः कदाचन।

ध्यात्वा यथाविधि।।३२।। तत्सुधारसधारेण तर्प्ययेन्मातृकानने। महाचीनद्रुमलतावेष्टितः साधकोत्तमः।।३३।। रात्रौ यदि जपेन्मन्त्रं शैवकल्पलता भवेत्। तिथि क्रमेण संख्याभिर्लताभिर्वेष्टितो यदि।।३४।। तदा मासेन सिद्धिः स्यात्स हस्रजपमानतः। अष्टम्यां चतुर्दश्यां द्विगुणं यदि दृश्यते।।३५।। तत्रैव महती सिद्धिर्देवतानां सुदुर्ल्लभा।

भाव चूड़ामणि में कहा गया है :

निर्जन देश, श्मशान, एकान्त वन, खाली घर, अथवा नदी के किनारे साधक अकेला निश्शंक होकर विहरण करे। महाचीन–क्रम में देवी का ध्यान करके वहां पर उत्पन्न वृक्ष के फूल से भक्तिभावपूर्वक देवी की पूजा करे। हे ब्रह्मोत्तरे ! महामद्मे ! महाचीन–द्रुमलातावेष्टित जो साधकोत्तम यथाविधि ध्यान करके उस सुधारस धारसे मातृका के मुख मे तर्पण करता है, वह कुलदेव तथा पवित्र कुलक्रमागत होता है। यदि रात्रि में साधक मन्त्र जपे तो शैव कल्पलता पैदा होती है। तिथि क्रम से तिथि संख्या की लताओं से यदि वह वेष्टित होता है तो हजार जप के मान से एक मास में सिद्धि होती है। अष्टमी या चतुर्दशी को यदि दुगुनी दिखलाई देती है तो महती सिद्धि होती है जो देवों के लिए भी दुर्लभ है।

कुलचूडामणौ

शृणु पुत्र रहस्ये मे समयाचारसम्भवम्।।३६।। येन हीना न सिध्यन्ति जन्मकोटिसहस्रशः। मनवः कुलशास्त्राणां कुलचर्यानुचारिणाम्।।३७।। उदारचित्तः सर्वत्र वैष्णवाचारतत्परः। परनिन्दासहिष्णुः स्यादुपकाररतस्तथा।।३८।। पर्वते विजने वापि निर्जने शून्यमण्डपे। चतुष्पथे जनैः शून्ये यदि दैवाद्गतिर्भवेत्।।३९।। क्षणं ध्यात्वा मनुं जप्त्वा नत्वा गच्छेद्यथा सुखम्। गृध्रं वीक्ष्य महाकालीं नमस्कुर्यादलक्षितः।।४०।। क्षेमंकरीं तथा वीक्ष्य जम्बुकीं यमदूतिकाम्। कुरंगं श्येनभूकाकौ कृष्णमार्जारमेव च।।४१।। कृशोदरि महाचण्डे मुक्तकेशावलिप्रिये। कुलाचारप्रसन्नास्ये नमस्ते शंकरप्रिये।।४२।।

कुल चूड़ामणि में कहा गया है :

हे पुत्र ! समयाचार से उत्पन्न मेरे उस रहस्य को सुनो जिससे हीन कुलचर्या का अनुगमन करने वाले अरबों जन्मों में भी शास्त्रों के सिद्ध नहीं होते। साधक को चाहिए कि वह सदा उदारचित्त, वैष्णव आचार में तत्पर, दूसरों द्वारा की गयी निन्दा को सहन करने वाला तथा उपकार में रत होकर पर्वत पर, एकान्त में, निर्जन स्थान में, शून्यघर में, तथा जनशून्य चौराहे पर यदि भाग्य से पहुँच हो तो क्षण भर मन्त्र का जप तथा नमस्कार करके यथासुख चला जावे। गीध को देखकर स्वयं अलक्षित हो महाकाली को नमस्कार करें। यमदूतिका, क्षेमंकरी, शृगाली को देखकर तथा हिरन, बाज, बगुला तथा काली बिल्ली को देखकर श्लोक से नमस्कार करना चाहिए। हे कृशोदरि, महाचण्डे, मुक्तकेशावलिप्रिये! कुलाचार से प्रसन्न होनेवाली, नमस्कृत शंकरप्रिये,

श्मशानं च शवं दृष्ट्वा प्रदक्षिणमनुव्रजन्। प्रणम्यानेनमन्त्रेण मन्त्री सुखमवाप्नुयात्।।४३।।

श्मशान और शव को देखकर उसकी प्रदक्षिणा करते हुए इस मन्त्र से प्रणाम करके मन्त्री सुख को प्राप्त करता है :

घोरदंष्ट्रे करालास्ये किटिशब्दप्रणादिनि। घोरे घोररवास्फाले नमस्ते चित्तिवासिनि।।४४।।

रक्तवस्त्रं तथा पुष्पं विलोक्य त्रिपुरात्मिकाम्। प्रणमेद्दण्डवद्भमौ इमं मन्त्रं पठेन्नरः।।४५।।

लाल वस्त्र तथा लाल फूल देखकर मनुष्य भूमि पर दण्डवत हो त्रिपुरा देवी को प्रणाम कर यह मन्त्र पढ़ें :

बन्धूकपुष्पसंकाशे त्रिपुरे भयनाशिनि। भाग्योदयसमुत्पन्ने नमस्ते वरवर्णिनी।।४६।।

कृष्णवस्त्रं तथा पुष्पं राजानं राजपुत्रकम्।। हस्त्यश्वरथशस्त्राणि कनकान वीरपूरुषान्।।४७।। महिषं कुलदेवं च दृष्ट्वा महिषमर्दिनीम्। प्रणम्य जय दुर्गाम्ब स च विघ्नैर्न लिप्यते।।४८।।

काले वस्त्र तथा पुष्प को, राजा तथा राजपुत्र को, हाथी, घोड़े, रथ तथा शस्त्रों को, धतूरे के झाड़ तथा वीर पुरुषों को, भैंसे तथा कुलदेव को देखकर महिषमर्दिनी काली को प्रणाम करके "जय दुर्गाम्बे" यह बोलने से मनुष्य विघ्नों में नहीं फँसता। उसे यह मन्त्र पढ़ना चाहिये :

जय देवि जगद्धात्रि त्रिपुराद्ये त्रिदैवते। भक्तेभ्यो वरदे देवि महिषघ्नि नमोस्तु ते।।४९।।

मद्यभाण्डं समालोक्य मत्स्यं मांसं वरस्त्रियम्। दृष्ट्वा च भैरवीं देवीं प्रणम्य विमृशन्मनुम्।।५०।।

मद्यभाण्ड, मछली, मांस, सुन्दर स्त्री तथा भैरवी देवी को देखकर मन्त्र का जप करते हुए भैरवी देवी को प्रणाम करके यह मन्त्र पढ़ना चाहिए :

घोरविघ्नविनाशाय कुलाचार समृद्धये। नमामि वरदे देवि मुण्डमालाविभूषिते।।५१।। रक्तधारासमाकीर्णवदने त्वां नमाम्यहम्। सर्वविघ्नहरे देवि नमस्ते हरवल्लभे।।५२।।

एतेषां दर्शनेनैव यदि नैवं प्रकुर्वते। शक्तिमन्त्रं पुरस्कृत्य तस्य सिद्धिर्न जायते।।५३।।

इन पदार्थों के दर्शन होने पर यदि इस प्रकार मनुष्य नमस्कार नहीं करता तो शक्तिमन्त्र से पुरस्कृत होने पर भी उसे सिद्धि प्राप्त नहीं हो सकती।

कुलचूडामणौ : कुलवारे[1] कुलाष्टम्यां चतुर्दश्यां विशेषतः। योगिनीपूजनं चैव प्रधानं कुलपूजनम्।।५४।। यथा विष्णुतिथौ विष्णुः पूजितो वांछितप्रदः। तथा कुलतिथौ[1] दुर्गा पूजिता वरदायिनी।।५५।।

कुल चूड़ामणि में कहा गया है :

कुलवार, कुलाष्टमी तथा विशेष रूप से चतुर्दशी को योगिनी को पूजन तथा प्रधान कुलपूजन करना चाहिये।

जैसे विष्णुतिथि को विष्णु की पूजा करने पर वे अभीष्ट फल देते हैं, वैसे ही कुल तिथि पर दुर्गाजी की पूजा करने पर वह वरदायिनी होती हैं।

अथ शिवाबलिप्रयोगः

कुलचूडामणौ :

बिल्वमूले प्रान्तरे वा श्मशाने वापि साधकः। मांसप्रधानं नैवेद्यं सन्ध्याकाले निवेदयेत्।।५६।। कालिकालीति वक्तव्ये तत्रोमा शिवरूपिणी। पशुरूपधरा याति

---

१ कुलवारादिनियमस्तु यामले रविश्चन्द्रो गुरुः सौरिश्चत्वारश्चाकुला इमे। भौमशुक्रौ कुलाख्यौ तु बुधवारः कुलाऽकुलः। द्वितीय दशमी षष्ठी कुलाकुलमुदाहृतम्। विषमाश्चाकुलाः सर्वाः शेषाश्च तिथयः कुलाः। वरुणार्द्राभिजिन्मूलं कुलाकुलमुदाहृतम्। कुलानि तु समग्राणि शेषाण्येवाकुलानि च। तिथिवारे च नक्षत्रे अकुले स्थायिनो जयः। कुलाख्ये जयिनो नित्यं साम्यं चैव कुलाकुले। एवं कुलाकुलवारादिकं ज्ञात्वा साधकः कर्म कुर्यात्।

परिवारगणैः सह । ।५७ । । भुक्त्वा रौति यर्दशान्यां मुखमुत्तोल्य सुस्वरम् । तदैव मङ्गलं तस्य नान्यथा कुलदूषणम् । ।५८ । । अवश्यमन्नदानेन नियतं नोषयेच्छिवाम् । नित्यश्राद्धं यथा संन्ध्यावन्दनं पितृतर्पणम् । ।५६ । । तथैव कुलसेव्यानां नित्यता कुलपूजने । पशुरूपां शिवां देवीं यो नार्चयति निर्जने । ।६० । । शिवारावेण तस्याशु सर्वं नश्यति निश्चितम् । जपपूजा-विधानेन यत्किञ्चित्सुकृतानि च । ।६१ । । गृहीत्वा शापमादाय शिवा रोदिति निर्जने । एकया भुज्यते तत्र त्यक्तया यदि भैरव । ।६२ । । तत्रैव सर्वशक्तीनां प्रीतिः परमदुर्लभा । पशुशक्तिः पक्षिशक्तिर्नरशक्तिर्यथाक्रमात् । ।६३ । । पूजानां द्विगुणं कर्म सगुणं साधयेद्यतः । तेन सर्वप्रयत्नेन कर्तव्यं पूजनं महत् । ।६४ । । राजादिभयमापन्ने देशान्तर भयादिकें । शुभाशुभानि कर्माणि विचिन्त्य वलिमाहरेत् । ।६५ । ।

गृह्ण देवि महाभागे शिवे कालाग्निरूपिणि । शुभाशुभफलं व्यक्तं ब्रूहि गृह्ण बलिं तव । ।६६ । । एवमुच्चार्य दातव्यो बलिः कुलजनप्रियः । यदि न भुज्यते वत्स तदा नैव शुभं भवेत् । ।६७ । । शुभं यदि भवेत्तत्र भुज्यते तदशेषतः । एवं ज्ञात्वा महादेवि शान्तिस्वस्त्ययनं चरेत् । ।६८ । । इति शिवाबलिः ।

कुल चूड़ामणि में कहा गया है :

बेल के नीचे, एकान्त स्थान या श्मशान में साधक मांस-प्रधान नैवेद्य सायंकाल शिवाबलि के लिए रक्खे । जब साधक "हे कालि, हे कालि !" कहता है तब शिवरूपिणी उमा पशु का रूप धारण करके अपने परिवार के साथ उस नैवेद्य को खाकर जब ईशानी दिशा में मुख ऊपर करके सुस्वर से शब्द करती हैं तब समझना चाहिये कि अब मङ्गल होगा; अन्यथा करने से कुल को कष्ट होगा ऐसा जानना चाहिये । निश्चित रूप से अन्नदान के द्वारा शृगाली रूपिणी शिवा को प्रसन्न करना चाहिये । जैसे नित्य, श्राद्ध, नित्य सन्ध्याबन्दन तथा नित्य पितृतर्पण करना आवश्यक है वैसे ही कुल सेव्यों की पूजा भी नित्य करनी चाहिये । जो मनुष्य निर्जन स्थान में शृगाली पशुरूपी शिवा को बलि देकर पूजन नहीं करता, उसके सर्वस्व का शिवा (शृगाली) के रुदन से नाश हो जाता है, यह निश्चित है । जप-पूजाविधान से जो कुछ सुकृत है उसे तथा शाप को लेकर शिवा निर्जन स्थान में रोती है । हे भैरव ! यदि एकमात्र अकेली शिवा के द्वारा वह बलि खायी जाती है तो वहीं पर समस्त शक्तियों की दुर्लभ प्रीति समझनी चाहिये । पशुशक्ति, पक्षिशक्ति तथा नरशक्ति ये यथाक्रम तीन शक्तियाँ होती हैं जिनसे कि पूजा का फल गुणयुक्त तथा द्विगुण सिद्ध करना चाहिये । इसलिए सभी प्रयत्नों से बड़ी पूजा करनी चाहिये । राजा आदि से भय उत्पन्न होने पर, दूसरे देश से भय होने पर शुभ और अशुभ कर्मों को विचार कर बलि करनी चाहिये ।

"गृह्ण देवि महाभागे शिवे कालाग्नि रूपिणि । शुभाशुभफलं व्यक्तं ब्रूहि गृह्ण बलिं तव ।" इस प्रकार उच्चारण करके कुलजनों के लिए प्रिय बलि देनी चाहिये । हे वत्स ! यदि बलि नहीं खायी जाती तो शुभ नहीं होता । वहाँ शुभ तब होता है जब पूरी बलि खा ली जाती है । ऐसा जानकर हे महादेवि ! शान्तिपाठ तथा स्वस्तिवाचन करना चाहिये । इति शिवाबलि ।

अथ प्रातःकृत्यम् :

साधकः प्रातरुत्थाय कुलवृक्षं प्रणम्य च । मूलादिब्रह्मरन्ध्रान्तं कुलं ध्यात्वा गुरुं स्मरेत् । ।६६ । । प्रह्लादानन्दनाथार्ख्य सनकानन्दमेव च । कुमारानन्दनाथाख्यं वसिष्ठानन्द-नाथकम् । ।७० । । क्रोधानन्दः सुखानन्दो ज्ञानानन्दस्ततः परम् । बोधानन्दमथाभ्यर्च्य ध्यायेत्कुलमुखोपरि । ।७१ । ।

साधक प्रातःकाल उठकर कुलवृक्ष को प्रणाम करके मूल से ब्रह्मरंध्र तक कुल का ध्यान करके गुरु का स्मरण करे। प्रह्लादानन्दनाथ, सनकानन्द, कुमारानन्द, वसिष्ठानन्द, क्रोधानन्द, सुखानन्द, ज्ञानानन्द तथा बोधानन्द की पूजा करके मुख के ऊपर ध्यान करें।

महारसरसोल्लास हृदयानन्दलोचनः। कुलालिंगणनिर्भिन्नघूर्णिताशेष–तामसाः।।७२।। कुलशिष्यैः परिवृताः पूर्णातः करणोद्यताः। वराभयोद्यतकराः कुलतन्त्रार्थवेदिनः।।७३।।

एवं कुलगुरुं ध्यात्वा विमृश्य कुलनायिकाम्। कुलस्थानं समानीय स्नानार्थं तीर्थमाश्रयेत्।।७४।।

इस प्रकार कुलगुरु का तथा कुलनायिका का ध्यान करके कुलस्थान पर लाकर स्नान के लिए तीर्थ का आश्रय लेवें।

अथ कुलस्नानं (कुलचूडामणौ) :

आचान्तः कुलदर्भेण सदर्भैः कुलपुण्ड्रकः। कुलपात्रं सदूर्व हि सतिलं सजलं ततः।।७५।। गृहीत्वा कुलदेव्याश्च प्रीतये स्नानमाचरेत्। कृतसंकल्प एवासौ कुलचक्रं जले न्यसेत्।।७६।। कुलस्थानात्समानीय कुलमुद्रां कुशेन च। कुलतीर्थानि तत्रैव समावाह्य शिवात्मकम्।।७७।। तत्तोयं च द्विधा कृत्वा त्रिधा च प्रोक्षणं तनोः।

कुल चूडामणि में लिखा है कि कुलदर्भ से आचमन करके दर्भो सहित कुल त्रिपुण्ड्र लगाये हुए दुर्वातिल तथा जल सहित कुल पात्र को लेकर कुल देवों की प्रीति के लिए स्नान करें। संकल्प करके साधक कुलचक्र को जल में डाल देवें। कुल स्थान से कुशा के साथ कुल मुद्रा को लाकर उसी में कुलतीर्थों का आवाहन करके शिवात्मक उस जल का दो भाग करके तीन बार शरीर का प्रोक्षण करें।

स्वतन्त्रेपि : मूलं पठन्मूर्ध्नितोयं मुद्रया कुम्भसंज्ञया।।७८।। क्षिप्त्वा वारत्रयं देवि आचमेत्साधकाग्रणीः। आत्मविद्या शिवैस्तत्त्वैस्ततोन्यच्च समाचरेत्।।६८।।

'स्वतन्त्र' में भी कहा गया है कि मूलमन्त्र का पाठ करते हुए सिर पर कुम्भ संज्ञक मुद्रा से जल डाल कर हे देवि ! साधकाग्रणी तीन बार आत्मविद्या शिव–तत्त्वों से आचमन करें और उसके बाद आगे का कार्य करें।

ज्ञानार्णवे कुलसूर्याय देवाय त्रिरर्घ्यं तु प्रदापयेत्। देवानृषीन्पितन्श्चैव तर्पयेत्कुलवारिणा।।७६।।

ज्ञानार्णव में कहा गया है कि कुलसूर्य देवता के लिए तीन बार अर्घ्य दिलाना चाहिये। देव, पितर तथा ऋषियों का कुलवारि से तर्पण करें।

अथ दूतीयागो निरूप्यते :

तत्रादौ विजयास्वींकारः। तथाच विजयाकल्पे : संविदासवयोर्मध्ये संविदेव गरीयसी। संवित्प्रयोगस्तेनेह पूजादौ साधकोत्तमः।।८०।।

वहाँ प्रारम्भ में विजया स्वीकार : विजया कल्प में कहा गया है कि सम्विदा तथा आसव के बीच संविदा ही श्रेष्ठ है। इसलिए पूजा के आदि में सम्वित्प्रयोग ही साधकोत्तम है।

कर्तव्याश्च महापूजाः करणीयाः सुनिश्चिताः। अयं प्रयोगः पूजादौ कुलीनैः सर्वत्र कर्तव्यः।

सुनिश्चित कर्तव्य और महापूजाएँ की जानी चाहिये। यह प्रयोग कुलीनों द्वारा सर्वत्र किया जाना चाहिये।

अन्यत्रापि : आनन्देन विना भ्रंशो न च तृप्यन्ति देवताः। ताश्च ब्राह्मणक्षत्रियवैश्यशूद्रै शुक्लरक्तपीतकृष्णपुष्पभेदैस्तासां शुद्धिस्तु तत्रैव।

अन्यत्र भी कहा गया है कि आनन्द के बिना पतन होता है और देवता भी सन्तुष्ट नहीं होते। देवता, ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र, क्रमशः शुक्ल, रक्त, पीत, तथा कृष्ण वर्णवाले पुष्पों से प्रसन्न होते हैं। इनकी शुद्धि भी उसी स्थान पर इस प्रकार वर्णित है :

ॐ संविदे ब्रह्मसम्भूते ब्रह्मपुत्रि सदानघे। भैरवाणां च तृप्त्यर्थं पवित्रा भव सर्वदा।।८१।। ॐ ब्रह्माण्यै नमः स्वाहा। इससे शोधन करें।

ॐ सिद्धिमूलकरे देवि मूलबोधप्रदायिनि। राजप्रजावशङ्करिं शत्रुकण्ठत्रिशूलिनी।।८२।। ऐं क्षत्रियायै नमः स्वाहा। इससे शोधन करें, फिर

ॐ ज्ञानेन्धनदीप्ताग्ने ज्ञानाग्निज्वालरूपिणी।।८३।। आनन्दस्याहुतिं प्रीतिं सम्यग्ज्ञानं प्रयच्छ मे। ह्रीं वैश्यायै नमः स्वाहा। इससे शोधन करें।

ॐ नमस्यामि नमस्यामि योगमार्गप्रवर्तिनि। त्रैलोक्यविजये मातः समाधिफलदा भव।।८४।। क्लीं शूद्रायै नमः स्वाहा। इससे शूद्र का शोधन करें। अथवा

ॐ अमृते अमृतोद्भवे अमृतवर्षिणि अमृतमाकर्षयाकर्षय सिद्धिं देहि देहि श्रीमदमुकदेवतापदं मे वशमानय स्वाहा। इस मन्त्रमनु को बोलकर सम्पूर्ण समुदाय का शोधन और उसके ऊपर मूलमन्त्र का सात बार नियोजन करें।

इनका ध्यान :

कालिन्दीजलसन्दोह कान्तिसन्तापहारिणीम्। वराभयसमायुक्तां सव्योत्तरभुजद्वये। नागारोगहरां रौद्रीं सर्वसौख्यप्रदायिनीम् : विजयां तामहं वन्दे दुर्गां दुर्गति हारिणीम्।।८६।।

आवाहनादिमुद्रां च धेनुं योनिं ततः परम्। दिग्बन्धनछोटिकाभिस्तालत्रयपुरःसरम्।।८७।। द्रव्यदृष्टया पार्ष्णिघातैः सर्वा इच्छा निरस्य च। सप्तधा तर्पयेद्ब्रह्मरन्ध्रे मूलं जपन्मनुम्।।८८।। गुरुपद्मे सहस्रारे तथा संकेतमुद्रया। त्रिवारं तर्पयेद्भक्त्या साधकः सिद्धिहेतवे।।८६।।

इसके बाद आवाहन आदि मुद्रायें दिखावें। तदुपरान्त धेनुमुद्रा तथा योनि मुद्रा दिखा कर दिग्बन्धन के लिए तीन बार तालपूर्वक चुटकी बजावें। द्रव्यदृष्टि से पैर की एड़ी के घात से समस्त इच्छाओं का निवारण करके ब्रह्मरन्ध्र में मूलमन्त्र का जप करते हुये साधक सात बार तर्पण करे (मूलमिष्ट देवतामन्त्रमुच्चार्यामुक देवतां तर्पयामि एवं गुरुं च ततः संकेत मुद्रया तत्वमुद्रया ततः स्वीकुर्यात्)। सहस्रार चक्र में गुरुचरण का ध्यान करके सिद्धि के लिए संकेतमुद्रा से तीन बार भक्तिपूर्वक तर्पण करें।

अथ स्वीकरणमन्त्रः :

ऐं वदवद वाग्वादिनि मम जिह्वाग्रे स्थिरा भव सर्वसत्त्ववशंकरि स्वाहा।

इति मन्त्रेण स्वमुखे जुहुयात्।

इस मन्त्र से अपने मुख में हवन करें।

चूड़ामणौ : विना हेतुं कर्मासाद्य क्षोभयुक्तो महेश्वरः। न पूजा मानसीं कुर्यान्न ध्यानं नापि चिन्तनम्।।६०।। तस्माद्भुक्त्वा च पीत्वा च पूजयेत्परमेश्वरीम्। इमामपि विजयामेव प्रकारणात्।

चूड़ामणि में कहा गया है :

बिना प्रयोग के किसी कर्म को हाथ में लेने पर महेश्वर क्षुब्ध हो जाते है। न मानसी पूजा करनी चाहिए, न ध्यान करना चाहिये और न चिन्तन ही करना चाहिये। इसलिए खा–पीकर परमेश्वरी की पूजा करनी चाहिये। प्रकरणवशात् यहाँ हम विजया के पूजन को ले रहे हैं।

विजयादशनामानि।

विजया के दश नाम ये हैं :

ॐ सुमिन्द्र शूलिनी देवी विजया चर्चिता परा। अमृता तुलसी तुङ्गा तेजोमयी सुरेश्वरी।।६१।।

सुमिन्द्र, शूलिनी, देवी, विजया, चर्चिता, अमृता, तुलसी, तुंगा, तेजोमयी तथा सुरेश्वरी ये दश नाम हैं।

एतानि दश नामानि विजयाहस्तगः पठेत्। दुःखदारिद्र्यनाशश्च भवेत्सत्यं वदाम्यहम्। इति नमेत्।।६२।।

जो विजया देवी के पूजन में लगा है उसे इन दश नामों को पढ़ना चाहिये। इससे दुःख तथा दरिद्रता का नाश होता है यह मैं सत्य कहता हूँ। अतः इन्हें नमस्कार करें।

अथ कुलयजनप्रकार (उत्तरतन्त्रे) :

याममात्रे गते रात्रौ कुलगेहगतः पुमान्। ताम्बूलपूरितमुखो धूपामोद सुगन्धितः।।६३।। रक्तचन्दनदिग्धांगो रक्तमाल्यानुलेपिताः। रक्तवस्त्रपरीधानो लाक्षारसगृहे गताः।।६३।। रक्तमाल्येन संवीतो रक्तपुष्पविभूषिताः। पञ्चकराङ्गसंकेतैः पूजयेत्कुलनायिकाम्।।६४।।

उत्तरतन्त्र में कहा गया है :

एक याम (३ घण्टा) रात्रि बीत जाने के बाद अपने घर में पान खा कर शरीर में सुगन्धि लगा कर सारे शरीर में लाल चन्दन का लेप कर लाल वस्त्र पहन कर लाक्षारस गृह में जाकर लाल माला पहन कर लाल पुष्पों से विभूषित होकर पञ्चकराङ्ग संकेतों में कुलनायिका का पूजन करें।

कुलनायिका यथा[1]

नैटी कपालिनी वेश्या शुष्काशी नाषिताङ्गना। रजकी रञ्जकी चैव सैरन्ध्री च सुवासिनी।।६५।। घटिका खटिका चैव तथा गोपालकन्यका। विशेषवैदग्ध्ययुताः सर्वा ह्येताः कुलाङ्गनाः।।६६।। गुरुभक्त्या देवभक्त्या घृणालज्जाविवर्जिताः। संगोपनरताः प्राप्तास्तरुण्यः सर्वसिद्धिदाः।।६७।। अक्षता चारसम्पन्नां शीलसौभाग्यशालिनीम्। सदानुष्ठाननिरतां सात्विकीं भक्तिसंयुताम्।।६८।। कालुष्यरहितं कुर्यात्समया भक्तवत्सलाम्। चातुर्यौदार्यदाक्षिण्यकरुणादिगुणान्विताम्।।६६।। रूपयौवनसम्पन्नां शीलसोभाग्यशालिनीम्। सदा परिगृहीतां वा यद्वा संकेत मागताम्।।१००।। अथवा तत्क्षणे यातां मदनानलतापिताम्। विलिप्तां रक्तगन्धेन रक्ताम्वरविभूषिताम्।।१०१।। सुगन्धिरक्तकुसुमां सर्वाभरणभूषिताम्। सुधूपधूपितां तरन्वीं दूतीकर्मसु योजयेत्।।१०२।। आनीय च यजेत्तां तु प्रसूनतूलिकोपरि। चार्वंगीं विकृताङ्गीं वा सविकल्पकमानसाम्।।१०३।। वर्षीयसीं पापरतां हूंकारार्थप्रलोलुपाम्। अभक्तामलसां दीनां वर्जयेत्साधकोत्तमः।।१०४।।

नटी, कपालिनी, वेश्या, शुष्काशो, नाई की पुत्री, रधोबिन, रंगरेजिन, सैरन्ध्री, सुविसिनी घटिका, खटिका तथा अहीर की पुत्री ये सब कुलाङ्गनाएँ बहुत चतुर होती हैं। गुरुभक्ति और देव भक्ति से युक्त, घृणा तथा लज्जा से रहित, गुप्त रखने में प्रवीण तरुणी कुलनायिकाएँ सभी

---

१ कुमारीतन्त्रेः नटी कपालिनी वेश्या रजकी नापिताङ्गना। ब्राह्मणी शूद्रकन्या च तथा गोपालकन्यका। मालाकारस्य कन्यापि नव कन्याः प्रकीर्तिताः। ब्राह्मणी तु ब्राह्मणविषया।

सिद्धियों को देने वाली हैं। जो अक्षतयोनि वाली हों, आचार से युक्त हों, शील और सौभाग्य से युक्त हों, सदा अनुष्ठान में निरत हों, सात्विक हों, भक्तियुक्त हों, कालुष्यरहित हों तथा भक्तवत्सल हो उसका साथ निश्चय करना चाहिये। जिसमें चातुर्य, उदारता, दाक्षिण्य, करुणा आदि गुण हों, जो रूप और यौवन से सम्पन्न हो, शील और सौभाग्यशालिनी हो, जो सदा परिगृहीत हो या संकेत देने पर उपस्थित होने वाली हो अथवा तत्काल कामाग्नि से संतप्त होकर उपस्थित हुई हों, जो शरीर पर लाल रंग का गन्ध लगाये हों, लाल वस्त्र से विभूषित हों, सुगन्धित लाल फूल लिए हों, समस्त आभूषणों रसे विभूषित हों, जो उत्तम धूप से धूपित हों, जो पतली हो ऐसी स्त्री को दूती कार्य में लगावें। ऐसी स्त्री को लाकर फूल से विभूषित गद्दे पर बैठाकर उसकी पूजा करें। जो उत्तम अङ्गोंवाली या विकृत अङ्गवाली किन्तु संदिग्ध मन वाली हों, अपेक्षाकृत बड़ी हो, जाप में रत हों, स्वीकृति देने में अर्थलोलुप हों, अभक्त हों, आलसी हो, तथा दीन हो तो साधक को चाहिये कि ऐसी स्त्रियों को छोड़ देवें।

अर्थाद्वा कामतो वापि सौख्यादपि च यो नरः। लिङ्गयोनिरतो मन्त्री रौरवान्न निवर्तते।।१०५।। उपविष्टा यदा देवी तदा पुत्री तु कन्यका। पूजार्हा च यदा देवी तदा पुत्री तु कन्यका। पूजार्हा च यदा देवी तदा माऽऽमनि संशयः।।१०६।। तदानीय[1] कुलं सम्यगुद्वर्तनमनन्तरम्। स्नानशुक्लदुकूलादि अनुलेपनशोभिताम्।।१०७।। अलंकृतां समानीय स्वागतं चासनं तथा। निवेश्य तूलिकामध्ये नानापुष्पसुगन्धिना।। १०८।। चन्दनागुरुकर्पूर कस्तूरीकुकुमादिभिः। समाकीर्य निवेश्याथ पूजयेत्कुलनायिकाम्।।१०९।।

जो मनुष्य धन के लोभ से, काम के लोभ से या सुख के लोभ से लिङ्ग तथा योनि में रत हो जाता है वह रौरव नरक में जाता है और वहाँ से फिर नहीं लौटता। पुत्री या कन्या जब बैठ जाती है तब वह देवी हो जाती है। जो देवी है वह पूजा के योग्य है तब आत्मा में संशय नहीं करना चाहिये। इस प्रकार कुलनायिका को लाकर उसके शरीर पर उबटन लगा कर उसे स्नान कराकर शरीर पर सुगन्धित द्रव्यों का अनुलेपन तथा रेशमी वस्त्र से सुशोभित और अलंकृत कर स्वागतपूर्वक नाना प्रकार के सुगन्धित फूलों तथा चन्दन, अगर, कपूर, कस्तूरी, केसर आदि के छिड़काव से सुगन्धित गद्दे पर बैठाकर कुलनायिका की पूजा करें।

अङ्गन्यासकरन्यासौ[2] प्रणायामं ततः परम्। विधाय मातृकान्यासं कुलांगेपि प्रविन्यसेत्।।११०।। [3]ततः पञ्चमकारमानीय शोधनं कुर्यात्।

पहले अङ्गन्यास और करन्यास करें तदनन्तर प्राणायाम करके मातृकान्यास का कुलाङ्गना में भी न्यास करें। इसके बाद पञ्चमकार को लाकर उसका शोधन करें।

अथ देवद्रव्यस्य शोधनम्।

प्रोक्षणादिकं कृत्वा। हंसः इति जप्त्वा ततः

प्रोक्षण आदि करके "हंसः" इसका जप करने के बाद :

एकमेव परं ब्रह्म स्थूलसूक्ष्ममयं ध्रुवम्। कचोद्भवां ब्रह्महत्यां तेन ते नाशयाम्यहम्।।१११।। सूर्यमण्डलसंभूते वरुणालयसम्भवे। आमाबीजमये देवि शुक्रशापाद्विमुच्यताम्।।११२।।

---

१. एवंविधं कुलमानीय उद्वर्तनादिकं विधाय प्रसूनतूलिकोपरि नियोजयेत्।

२. भूतशुद्ध्यादिकं विधाय तत्तत्कुलांगन्यासं कुर्यात्।

३. पञ्चमात्तु परं नास्ति शाक्तानां सुखमोक्षयोः। केवलैः पञ्चमेनापि सर्वसिद्धीश्वरो भवेत्।

वेदानां प्रणवो बीजं ब्रह्मानन्दमयं यदि। तेन सत्येन ते देवि ब्रह्महत्या व्यपोहतु।।११३।।
ॐ वां वीं वूं वैं वौं वः ब्रह्मशापविमोचितायै सुरायै देव्यै नमः।

इसे दश बार जपें।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं क्रां क्रीं क्रूं क्रैं क्रौं क्रः कृष्णशापं विमोचयविमोचय अमृतं स्रावय स्वाहा।

इसका भी दश बार जप करें।

ॐ शां शीं शूं शैं शौं शः शुक्रशापविमोचितायै सुरादेव्यै नमः।

इसका दश बार जप करें।

ततो मूलमन्त्रं तदुपरि अष्टधा जपेत्। देवतामयं विभावयेत्। इति द्रव्यशुद्धिः।

इसके बाद मूलमन्त्र को आठ बार जपें। अपने को देवतामय होने की भावना करें। इति द्रव्यशुद्धि।

देव्यास्तु दक्षिणे भागे चक्रपार्श्वे निवेदयेत्। एतद्द्रव्यं तु शूद्रस्य नान्येषां[1] तु कदाचन।।११४।। मद्यं मांसं[2] विना वत्स यत्किञ्चित्कुलसाधकः। शक्त्यै दत्त्वा ततः शेषं गुरुवे तन्निवेदयेत्।।११५।। तदनुज्ञां मूर्ध्नि कृत्वा शेषमात्मनि योजयेत्। पीत्वा पीत्वा पुनः पीत्वा यावत्पतति भूतले। उत्थाय च पुनः पीत्वा पुनर्जन्म न विद्यते।।११६।।

द्रव्य को देवता के दक्षिण भाग में चक्र के पास निवेदित करें। ये द्रव्य शूद्र के लिए हैं अन्य लोगों के लिए नहीं। हे वत्स ! मद्य और मांस के बिना कुल साधक जो कुछ करता है वह निष्फल होता है। मद्य और मांस शक्ति को देकर शेष गुरु को देवें। उनकी आज्ञा शिरोधार्य करके जो बचे उसे अपने लिए प्रयोग में लावें। मद्य पीकर, पीकर फिर जब भूमि पर गिर जाय तब पुनः उठकर पुनः पीयें तो पुनर्जन्म नहीं होता।

भैरवतन्त्रेः पाने भ्रान्भिर्विद्यस्य घृणा स्याद्रक्तरेतसोः। शुचौ चाशुद्धताभ्रान्तिः पापशङ्का च मैथुने।।११७।। स भ्रष्टः पूजयेद्देवीं चण्डीमन्त्रं कथं जपेत्। मदिरायां मैथुने च जातिं वृत्तिं न चाचरेत्।।११८।। मधु मांसं विना देवि कुलपूजां समाचरेत्। जन्मान्तरसहस्रस्य सुकृतं तस्य नश्यति।।११९।।

---

१ तथाचे श्रीक्रमे न दद्याद्ब्रह्मणो मद्यं महादेव्यै कथंचन। वामकामो ब्राह्मणोपि मद्यं मासं न भक्षयेत्। वैश्यस्य माक्षिकं शुद्धं क्षत्रियस्य तु साज्यकम्। ब्राह्मणस्य गवां क्षीरं ताम्रे वा विसृजेन्मधु। नारिकेलोदकं कांस्ये सर्वेषां द्रव्यशोधनम्।

ब्राह्मण महादेवी को कभी मांस न देवें, वाम मार्ग का अनुसरण करने वाला ब्राह्मण भी मद्य मांस न खायें। वैश्य को मधु शुद्ध है और क्षत्रिय को घी सहित मधु शुद्ध है। ब्राह्मण को गाय का दूध अथवा मधु ताम पात्र में डालना चाहिये। सभी लोगों को नारियल का जल कांसे के वर्तन में डालना द्रव्यशोधक है।

२ ब्राह्मणे मांसाभावे प्रतिनिधिः समयाचारतन्त्रे लवणार्द्र कपिण्याकगोधूममाषकं तथा। लशुनं च महादेवि मांसप्रतिनिधिः स्मृतः।

ब्राह्मण के लिए मांस के अभाव में प्रतिनिधि द्रव्य के बारे में समयाचार तन्त्र में कहा गया है कि नमक और अद्रक गेहूँ उड़द तथा लहसुन का पिण्ड बनाना चाहिये। यही मांस का प्रतिनिधि कहा गया है।

भैरवतन्त्र में कहा गया है कि जिसे मद्यपान में भ्रान्ति हो, रक्त और वीर्य से घृणा हो, पवित्र में अपवित्रता की भ्रान्ति हो, मैथुन में पाप की आशङ्का हो, वह भ्रष्ट मनुष्य कैसे चण्डी की पूजा करे तथा कैसे चण्डी मन्त्र का जप करे ? मदिरा और मैथुन में जाति और वृत्ति का विचार न करें। जो मनुष्य मद्य तथा मांस के बिना देवी की कुलपूजा करता है उसके हजारों जन्म के पुण्यों का नाश हो जाता है।

कुलार्णवे सुरा शक्तिः शिवो मांसं तद्भोक्ता भैरवः स्वयम्। तयोरैक्यात्समुत्पन्न आनन्दो मोक्ष उच्चयते।।१२०।। आनन्दो ब्रह्मणो रूपं तच्च देहे व्यवस्थितम्।
परशक्त्या च मिथुनं–संयोगानन्दनिर्भराः।।१२१।। युक्तास्त मैथुनं तत्स्यादितरे स्त्रीनिषेवकाः।

कुलार्णव तन्त्र में कहा गया है कि सुरा शक्ति है, मांस शिव है। इनको पीने–खाने वाला स्वयं भैरव है। इनकी एकता से उत्पन्न आनन्द मोक्ष है। आनन्द ब्रह्म का रूप है और वह देह में स्थित है। परा शक्ति के मिथुन संयोग से जो आनन्द प्राप्त करता है वही मैथुन करता है ऐसा समझना चाहिये। शेष लोग तो स्त्री सेवी हैं।

एतेषां शोधनस्य वावश्यकत्वात्। तथाच संशोधनमनाचार्यस्त्रीपुमध्येषु साधकः। आचार्यसिद्धिहानिः स्यात्क्रुद्धा भवति सुन्दरी।।१२२।।

इन द्रव्यों का शोधन आवश्यक है। संशोधन आचार्य, स्त्री तथा पुरुष के बीच साधक का कार्य करता है। यदि संशोधन न किया जाय तो भी सिद्धि की हानि होती है और सुन्दरी क्रुद्ध होती है।

अथ मांसशोधनम्।

मांसं तु त्रिविधं ज्ञेयं जलखेचरभूचरम्। त्रिविधं मांसं संप्रोक्तं देवताप्रीतिकारकम्।।१२३।।

मांस तीन प्रकार का होता है : जलचर मांस, खेचर मांस तथा भूचर मांस। ये तीन प्रकार के मांस देवताओं के लिए प्रीतिकारक हैं।

मात्स्यं तु त्रिविधं देवि उत्तमाधममध्यमम्। उत्तमं त्रिविधं देवि शालपाठीनरोहितम्।।१२४।। प्रवीणं कण्टकैर्हीनं तैलाक्तं सुकलान्वितम्। देव्याः प्रीतिकरं चैव मध्यमं तच्चतुर्विधम् ।।१२५।। क्षुद्राणि तानि सर्वाणि अधमानि विदुर्बुधाः।

मछली तीन प्रकार की होती है। उत्तम, मध्यम तथा अधम।

उत्तम भी तीन प्रकार की है : शाल, पाठीन और रोहू। उत्तम वह मछली है जो कांटों से रहित हो, तैलाक्त और सुकलान्वित हों। देवी के लिए मध्यम भी प्रीतिकर है। यह मछली चार प्रकार की होती है। छोटी–छोटी मछलियाँ सब अधम हैं ऐसा विद्वानों ने कहा है।

अस्य शोधनं स्वतन्त्रतन्त्रेः ॐ "प्रतद्विष्णुस्तवते वीर्याणि प्रवोचंयः पार्थिवानिविममेरजांसियो अस्कभायदुत्तरः अधस्थमासदत"। इति मन्त्रेण मांसं शोधयेत्। ॐ "त्र्यम्बकेति" मन्त्रेण मीनं शोधयेत्।

इसका शोधन स्वतन्त्र तन्त्र में इस प्रकार कहा गया है : ॐ प्रतद्विष्णुस्तवते वीर्याणि प्रवोचं यः पार्थिवानि विममे रजांसि यो अस्कभायदुत्तरः अधस्थमासदत।" इस मन्त्र से मांस का शोध न करें।

अथ मुद्रा तु द्विधा कुलार्णवे :

ब्रैहैयं मण्डलाकारं चन्द्रबिम्बनिभं शुभम्। चारु पक्वं मनोहारि शङ्कराद्यैश्च पूजितम्।।१२६।। पूजाकाले देवताया मुद्रैषा परिकीर्तिता।

मुद्राएँ दो प्रकार की हैं। एक ब्रैहय मण्डलाकार और दूसरी चन्द्रबिम्ब सदृश उत्तम पकी हुई मनोहर तथा शङ्कर आदि से पूजित। पूजाकाल में देवता की यह मुद्रा कही गयी है।

यामले : भ्रष्टधान्यादिकं यावच्चर्वणीयं प्रकल्पयेत्। तेषां संज्ञा कृता मुद्रा महामोदप्रदायिनी।।१२७।। तेषां शोधनम्। ॐ "तद्विष्णोःपरमम्पदंसदापश्यंति सूरयः। दिवीवचक्षुराततं तद्विप्रासोविपन्यवो जागृवांसः समिन्धतांविष्णोर्यत्परमंपदम्"। इति मुद्राः शोधयेत्।

यामल तन्त्र में कहा गया है कि भुने चावल, चना, जव आदि अन्न को चबाने योग्य बनाना चाहिये। इन अन्नों के चवर्ण को मुद्रा कहा गया है जो महान आनन्द प्रदान करने वाली है। इनका शोधनः "ॐ तद्विष्णोः परमं पदं सदा पश्यन्ति सूरयः। दिवीव चक्षुराततं तद्विप्रासोविपन्यवो जागृवांसः समिन्धतां विष्णोर्यत्परमं पदम्।" इससे मुद्रा का शोधन करें।

अथ शक्तिशोधनं

भावचूडामणौ : अदीक्षितकुलासंगात् सिद्धिहानिः प्रजायते। तत्कथाश्रवणं चेत्स्यात्तत्कल्पगमनं यदि।।१२८।। सुकुलीनः कथं देवि पूजयेत्परमेश्वरीम्। संशोधनमनाचर्येति कौलिकतन्त्रे। अभिषेको भवेच्छुद्धिर्मन्त्रस्योच्चारबिन्दुभिः। बलाद्वा यत्नतोवापि अभिषेकं समाचरेत्।।१२६।। अभिषेकमन्त्रः ऐं क्लीं सौः त्रिपुरायै नमः इमां शक्तिं पवित्री कुरु मम शक्तिं कुरु प्रियं स्वाहा। तस्याः कर्णे भेदबुद्ध्या मायाबीजं (ह्रीं) समुच्चरेत्।

भाव चूड़ामणि में कहा गया है कि अदीक्षित कुल के सम्पर्क से सिद्धि की हानि होती है। उसके सम्बन्ध में चर्चा सुनने से सिद्धि से एक कल्प टूट जाने के बराबर समझना चाहिये। हे देवि सुकुलीन व्यक्ति संशोधन किये बिना ही परमेश्वरी की पूजा कैसे कर सकता है ? इस सम्बन्ध में कौलिक तन्त्र में उपाय बतलाते हुये कहा गया है कि मन्त्र के उच्चारण बिन्दुओं द्वारा अभिषेक से ही शुद्धि हो जाती है। बल से या यत्न से अभिषेक करना चाहिये। अभिषेक मन्त्र यह है : "ऐं क्लीं सौः त्रिपुरायै नमः इमां शक्तिं पवित्री कुरु मम शक्तिं कुरु प्रियं स्वाहा" उसके कान में भेद बुद्धि से मायाबीज (ह्रीं) का उच्चारण करें।

इति शक्ति शोधन।

ततः शोधितद्रव्यं अर्घ्ये क्षिपेत्। तथाच स्वत्रन्त्रे आद्यद्रव्यमर्घ्यपात्रे निःक्षिप्य प्रयतः सुधीः। कुण्डगोलोद्भवं द्रव्यं स्वयंभूकुसुमं तथा ।।१३०।। अर्घ्य दत्त्वा महेशानि सर्वसिद्धिश्वरो भवेत्।

इसके बाद शोधित द्रव्य को अर्घ्य में डाल देवें। स्वतन्त्र तन्त्र में कहा गया है कि शान्त होकर सुधी आद्य द्रव्य को अर्घ्य पात्र में डालकर हे महेशानि सभी सिद्धियों का स्वामी हो जाता है।

सुधायाश्चार्घ्यदानेन साधको हि भवेत्प्रियः।।१३१।। महायोगी भवेद्देवीपीठप्रक्षालितैर्जलैः। तेन पञ्चमकारेण पूजा कर्तव्या ततोर्घ्यस्थापनं तदनन्तरं पर्यंकमध्ये मण्डूकादिनाम्नीः पीठदेवताः पूजयेत्। गन्धपुष्पाक्षतादीनि च दत्त्वा तत्रैव धूपयेत्। तस्योपरि[1] कुलं स्थाप्य पूजानुष्ठानमेव च पूजयेच्च ततस्तस्यां पञ्चकामान्समाहितः।।१३२।

१ तूलिकोपरि कुलं स्थापयित्वा प्रपूजयेत्।

सुधा को अर्घ्य में डाल देने से साधक प्रिय हो जाता है। पीठ के प्रक्षालित जलों से हे देवि, साधक महायोगी बन जाता है। इसलिए पञ्चमकार से पूजा करनी चाहिये। उसके बाद–अर्घ्यस्थापन करना चाहिये। तदनन्तर पर्यंक के बीच मण्डूकादि नाम्नी पीठदेवता की पूजा करें। गन्ध, पुष्प तथा अक्षत आदि देकर वहीं धूप देना चाहिये। उसके ऊपर कुल तथा पूजा अनुष्ठान की स्थापना करके उसमें शान्तचित्त होकर कामदेव के पाँच नामों की इस प्रकार पूजा करें :

ह्रीं[1] चैव कामराजं च क्लीं कन्दर्पं ऐं च मन्मथम्। छूं मकरध्वजं चैव स्त्रीं चैव हि मनोभवम्।।१३३।। ॐ कारादिनमोन्तं च कुसुमैर्गन्धसंयुतैः। पूजयित्वा चतुर्दिक्षु पूजयेत्कुलनायिकाम्।।१३४।। वटुकं भैरवं चैव दुर्गां च क्षेत्रपालकम्।

ह्रीं कामराज, क्लीं कन्दर्प, ऐं मन्मथ, छूं मकरध्वज, स्त्रीं मनोभव, इन बीजों और कामराज आदि नामों के चतुर्थ्यन्त रूपों के आदि में "ॐ" तथा अन्त में "नमः" लगाकर फूल, गन्ध आदि से पूजा करके चारों दिशाओं में कुलनायिका की तथा बटुक, भैरव, दुर्गा तथा क्षेत्रपाल की पूजा करें।

वाग्भवं कामबीजं च स्त्रीबीजं कामराजकम्।।१३५।। क्लूमात्मकं ततो दत्त्वा आधारशक्तिमुद्धरेत्। श्रीपादुकां ततो दत्त्वा पूजयामि वदेत्ततः।।१३६।। अनेन मनुना[2] तस्य ललाटे सुमनोहरम्। त्रिकोणं तत्र संलिख्य सिन्दूराद्यैर्वरानने। महाप्रेतासनं[3] मध्ये बालां च पूजयेत्ततः।।१३७।।

वाग्भव ऐं, कामबीज क्लीं, स्त्रीबीज स्त्रीं, कामराज क्लीं, फिर ब्लूं रख कर आधारशक्ति श्रीपादुकां रखें और उसके बाद पूजयामि कहें। इस प्रकार बने मन्त्र (ऐं क्लीं स्त्रीं क्लीं क्लूं आधारशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि) से, हे वरानने! उसके ललाट में सिन्दूर आदि से उत्तम त्रिकोण बनाकर महाप्रेतासन की पूजा करके बीच में बाला का पूजन करें।

कुलार्णव गणेशं च कुलाध्यक्षं दुर्गां लक्ष्मीं सरस्वतीम्। त्रिकोणेषु च संयोज्य वसतं मदनं प्रिये।।१३८।। स्तनयोः पूजयेत्पश्चान्मुखे तस्याः सुधाकरम्।

कुलार्णव तन्त्र में कहा गया है : गणेश, कुलाध्यक्ष, दुर्गा, लक्ष्मी तथा सरस्वती को त्रिकोण में संयुक्त करके, हे प्रिये! कुलनायिका के स्तनों पर रहने वाले मदन का पूजन और उसके मुख पर सुधाकर का पूजन करें।

उत्तरतन्त्रे : मौलौ गणेशं केशाग्रे कुलाध्यक्षं ललाटके।।१३६।। दुर्गां भ्रुवोस्तथा लक्ष्मीं रसनायां सरस्वतीम्।

उत्तर तन्त्र में कहा गया है कि सिर में गणेश को, केशों के अग्रभाग में कुलाध्यक्ष को, ललाट में दुर्गा को, दोनों भौहों में लक्ष्मी को, जिह्वा में सरस्वती को पूजना चाहिए।

ज्ञानार्णवे : दक्षपादादिमूर्द्धान्तं वाममूर्द्धादि सुन्दरि।।१४०।। पादान्तं पूजयेत्सर्वाः कला वै कामसोमयोः। श्रद्धा[4] प्रीतिरती चैव भूतिः कान्तिर्मनोरमा।।१४१।। मनोहरा

---

१. ॐ ह्रीं कामराजाय नमः इत्यादि।

२. ऐं क्लीं स्त्रीं क्लीं क्लूं आधारशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तस्या ललाटे सिन्दूरेण त्रिकोणं लिखेत्।

३. हसौः सदाशिव महाप्रेतपद्मासनाय नमः इति।

४. अं श्रद्धायै नमः इन्यादिना पूजयेत्।

मनोरामा मदनोत्पादिनी तथा। मोहिनी दीपिनी चैप शोषिणी च वशङ्करी।।१४२।। रञ्जनी चैव देवेशि–शोडशी प्रियदर्शना। स्वरषोडशसंयुक्ता एताः कामकला यजेत्।।१४३।। ततश्चन्द्रकलाः पूज्याः शिरसश्चरणावधि। स्वरैरेवं प्रपूजा हि सर्वकार्यार्थसिद्धये।।१४४।।

ज्ञानार्णव तन्त्र में कहा गया है :

हे सुन्दरि ! दाहिने और बाएँ पैर से लेकर मूर्धा पर्यन्त काम और लोभ की सभी कलाओं की पूजा करनी चाहिये। श्रद्धा, प्रीति, रति, भूति, कान्ति, मनोरमा, मनोहरा, मनोरामा, मदनोत्पादिनी, मोहिनी, दीपिनी, शोषिणी, वशङ्करी, रञ्जनी, शोडशी, प्रियदर्शना, हे देवेशि इन सोलह स्वरों से संयुक्त कामकलाओं की पूजा करें। इसके बाद सर्वार्थसिद्धि के लिए इसी प्रकार शिर से पैर तक चन्द्रकला की पूजा करनी चाहिये।

ललितातन्त्रे भगे तदीये विज्ञेया नाड्यस्तिस्रः प्रवाहिकाः। एका तु वाहिका चान्द्री सौरी कन्या तु वाहिका।।१४५।। आग्नेयी चापरा ज्ञेया पूजयेत्तासु साधकः। अम्बु स्रवति चान्द्री सा पुष्पं स्रवति भनवी।।१४६।। बीजं स्रवति चाग्नेयी तास्तु नामभिरर्चयेत्[1]। वाग्भवाद्यैर्नमोयुत्तैः पूजयेत्सुप्रसन्नधीः।।१४७।।

ललिता तन्त्र में कहा गया है कि कुल नायिका के भग में तीन नाडियाँ प्रवाहिका के रूप में स्थित हैं। एक वाहिका नाडी "चान्द्री" कहलाती है, दूसरी वाहिका नाड़ी का नाम "सौरी" है और तीसरी वाहिका नाड़ी आग्नेयी कहलाती है। इन सभी नाड़ियों की पूजा साधक को करनी चाहिये।

चान्द्री नाड़ी जल का स्रवण करती है। भानवी या सौरी नाड़ी पुष्प का स्रवण करती है। आग्नेयी नाड़ी बीज का स्रवण करती है। इन नाड़ियों की पूजा करनी चाहिये। वाग्भवादि बीजों को आदि में तथा 'नमः' को अन्त में लगाकर प्रसन्न साधक को पूजा करनी चाहिये।

उत्तरतन्त्रे पूजयेन्मदनागारे रक्तचन्दनचर्चिते। भगमालामनुं प्रोच्य त्रितारानन्तरं तथा।।१४८।। ऐं ह्रीं श्रीं जं ल्लुं क्लिन्ने ततः परम्। सर्वाणीति भगाणीति वशमानय मे ततः।।१४६।। स्त्रीं ह्रीं क्लीं ल्लुं भगमालिन्यै नमः ऐं ह्रीं श्रीं इति मन्त्रेण गन्धाद्यै–स्तामभ्यर्चयेत्। ततस्तत्रैव मूलं पूजयेत्।

उत्तर तन्त्र में कहा गया है : लाल चन्दन से चर्चित मदनागार में पूजा करनी चाहिये। भगमाला मन्त्र बोलकर त्रितार के बाद ऐं ह्रीं श्रीं जं ल्लुं क्लीं के बाद "सर्वाणीत भगाणीति वशमानय मे" इसके बाद 'स्त्रीं ह्रीं क्लीं ल्लुं भगमालिन्यै नमः' रखें। ऐं ह्रीं श्रीं इस मन्त्र से गन्ध आदि से उस कुल नायिका की पूजा करें। इसके बाद वहीं मूल मन्त्र की पूजा करें।

तत्रान्तरे : इहाप्यावहनं चैव जीवन्यासं महेश्वरि। अथैवं च विधानेन तां शोडशोपचारकैः।।१५०।। इष्टदेवं प्रपूज्याथ सर्वसिद्धीश्वरो भवेत्। (ततः स्वलिङ्गं पूजयेत्) तथा च। अर्पयेद्गन्धपुष्पाद्यैः स्वशिवं तदनन्तरम्।।१५१।। मूलमन्त्रं च ॐ नम शिवाय तत्परं यजेत्। तत्पुरुषवामाघोरसद्योजातेशसंज्ञकः।।१५२।। निवृत्तिं च प्रतिष्ठां च विद्यां च तदनन्तरम्। शांतिं च शान्त्यतीतां च तदंगे तदनन्तरम्।।१५३।। समग्रविद्यामुच्चार्य त्रिकोणं चैव पूजयेत्। अवधूतेश्वरीं कुब्जां कामाख्यां समयामपि।।१५४।। वज्रेश्वरीं कालिका च तथा दिक्करवासिनीम्। तथा चण्डेश्वरीं तारां पूजयेदत्र साधकः।।१५५।। तदनुज्ञा

---

१. ऐं चान्द्र्यै नमः। मतान्तरे ऐं चान्द्र्यै अम्बुस्रवायै नमः, एव ऐ सौर्यै नमः, ऐं आग्नेयै नमः इति पूजयेत्।

ततो लब्ध्वा दत्त्वा ताम्बूलमेव च। शिवं च तत्र निक्षिप्य गजशुण्डाख्यमुद्रया।।१५६।। धर्माधर्महविर्दीप्ते आत्माग्नौ मनसा स्रुचा। सुषुम्नावर्त्मना नित्यमक्षवृत्तीर्जुहोम्यहम्।।१५७।।

दूसरे तन्त्र में कहा गया है कि हे महेश्वरि ! यहाँ पर भी आवाहन, जीव न्यास और इसी विधान से सोलहों उपचारों से कुल नायिका की पूजा करें। इष्ट देव की पूजा करके समस्त सिद्धियों का स्वामी हो जावें। इसके बाद निजलिङ्ग का पूजन करें और इसके बाद अपने शिव की गन्ध पुष्प आदि से पूजा करें। इसके बाद मूलमन्त्र ॐ नमः शिवाय का पूजन करें। इससे वह पुरुष वामाघोर सद्योजातेश संज्ञक हो जाता है। निवृत्ति, प्रतिष्ठा, विद्या, शान्ति, शान्त्यतीता तथा इनके अंगों में समस्त विद्याओं का उच्चारण करके त्रिकोण की पूजा करें। इसके बाद साधक अवधूतेश्वरी, कुब्जा, कामाख्या, समया, वज्रेश्वरी, कालिका तथा दिक्करवासिनी, चण्डेश्वरी एवं तारा की पूजा करें। उनसे आज्ञा लेकर उन्हें ताम्बूल देकर गजशुण्डा मुद्रा से उसमें शिव को डाल कर "धर्माधर्म हविर्दीप्ते आत्माग्नौ मनसा स्रुचा। सुषुम्नावर्त्मना नित्यमक्षवृत्तीर्जुहोम्यहम् स्वाहा" यह कहें।

स्वाहान्तोयं महामन्त्र आरम्भे परिकीर्तितः। ततो जपेतस्त्रियं गच्छन् विद्यां त्रिभुवनेश्वरीं।।१५८।। जपेदिति अष्टोत्तरसहस्रशतं वाऽक्षुब्धो जपेत्। आकाशकहस्ताभ्याम वलम्ब्योन्मनीशुचा। धर्माधर्मकलास्नेहपूर्णमग्नौ जुहोम्यहम्।।१५६।।

यह स्वाहान्त मन्त्र प्रारम्भ में कहा गया है। इसके बाद स्त्री गमन करते हुये त्रिभुवनेश्वरी विद्या का जप करें। यहाँ जप से यह अर्थ है कि साधक एक हजार आठ या एक सौ आठ बार जप करे। इसके बाद :

"आकाशकहस्ताभ्यामवलम्ब्योन्मनी शुचा।
धर्माधर्म कलास्नेह पूर्णमग्नौ जुहोम्यहम् स्वाहा।"

स्वाहान्तोयं महामन्त्रः शुक्रत्यागे प्रकीर्तितः।

यह स्वाहान्त मन्त्र वीर्यत्याग के समय के लिये कहा गया है।

विशेषस्तु ज्ञानार्णवे : शिवशक्तिसमायोगो योग एव न संशयः। शीतकारो मन्त्ररूपं वचनं स्तवनं भवेत्।।१६०।। आलिङ्गनं तु कस्तूरी कर्पूर चन्दनं भवेत्। नखदन्तक्षतादीनि पुष्पाणि विविधानि च।।१६१।। मैथुनं तर्पणं विद्धि विजयातो विसर्जनम्।

ज्ञानार्णव में विशेष रूप से लिखा गया है :

शिव और शक्ति का समायोग ही योग है इसमें संशय नहीं है। सीत्कार मन्त्र रूप है; वचन स्तवन है; आलिङ्गन कस्तूरी, कपूर और चन्दन है। नख तथा दन्तक्षत आदि नाना प्रकार के पुष्प हैं। मैथुन से तर्पण और विजया मुद्रा से विसर्जन जानो।

ज्ञानार्णवे आलिङ्गनं चुम्बनं च स्तनयोर्मर्दनं ततः।।१६२।। दर्शनं स्पर्शनं योनेर्विकारं लिङ्गघर्षणम्। प्रवेशं स्थापनं शक्तेर्नवपुष्पाणि पूजने।।१६३।।

ज्ञानार्णव में कहा गया है कि आलिंगन, चुम्बन, स्तनों का मर्दन, दर्शन, स्पर्शन, योनि का विकार, लिंगघर्षण, प्रवेश तथा स्थापन शक्ति के पूजन में ये नव पुष्प माने गये हैं।

यामलेः संयोगाज्जायते सौख्यं परमानन्दलक्षणम्। कुलामृतं प्रयत्नेन गृह्णीयाद्दुर्लभं नरः।।१६४।। तेनामृतेन दिव्येन सर्वे तुष्टा भवन्ति हि। यत्कामं कुरुते मन्त्री तत्क्षणाद्देवि सिध्यति।।१६५।।

यामल तन्त्र में कहा गया है कि संयोग से सुख उत्पन्न होता है जो परमानन्द लक्षण वाला है। मनुष्य को चाहिये कि वह दुर्लभ कुलामृत को ग्रहण करें। उस दिव्य अमृत से सभी प्राणी सन्तुष्ट होते हैं। साधक जो कामना करता है वह तत्काल सिद्ध होती है।

ज्ञानार्णवे। कुलद्रव्यं च संशोध्य शिवशक्तिमयं प्रिये। बीजामृतं परं ब्रह्मरूपं निःक्षिप्य सुन्दरि।।१६६।। अर्घ्यपात्रेमृतं क्षिप्त्वा निर्विकल्पः सदानघः। श्रीविद्याक्रमभ्यर्च्य परब्रह्ममयो भवेत्।।१६७।। (श्रीविद्येत्युपलक्षणम्) इति ते कथितं ज्ञानं साररम्यं वरानने। सविकल्पस्तु सततं पापभाग्जायते नरः।।१६८।। विचिकित्सा परो मन्त्री जायते गुरुतल्पगः। अत एव वरारोहे निर्विकल्पः सदा भवेत्।।१६९।।

ज्ञानार्णव में कहा गया है : हे प्रिये ! हे सुन्दरि ! शिवशक्तिमय कुलद्रव्य का संशोधन करके बीजामृत रूप परब्रह्म को अर्घ्य पात्र में डालकर सदा पाप रहित और निर्विकल्प होकर श्रीविद्याक्रम की पूजा करके परब्रह्ममय हो जाना चाहिये। (श्रीविद्या उपलक्षणमात्र है)। हे वरानने! सुन्दर सार रूप ज्ञान मैंने तुम्हें बताया है। सविकल्प वाला मनुष्य सदा पाप का भागी होता है। जो साधक संशय परक होता है वह गुरु तल्पग के समान पाप का भागी होता है। हे वरारोहे ! इसलिए सदा मनुष्य को निर्विकल्प होना चाहिये।

समयाचारे : कुलामृतं समादाय अर्घ्येण निःक्षिपेद्बुधः। तदर्घ्येण समाराध्य पूजाशेषं समापयेत्।।१७०।। कुलामृतं शोधितं शोधनमन्त्रस्तु श्रीक्रमेः ॐ अमृते अमृतोद्भवे अमृतवर्षिणी शुक्रशापं प्रमोचय–प्रमोचय अमृतं स्रावयस्रावय अकृतं कुरुकुरु स्वाहा। अस्य मन्त्रस्य देवेशि शुक्रसिद्धिर्भवेत् प्रिये। शुक्ररक्षततण्डुलेः सुगन्धैः कुसुमान्वितैः।।१७१।। अर्घ्यद्रव्यैश्च देवेशि योनौ देवीं प्रपूजयेत्।

समयाचार में कहा गया है :

कुलामृत को लेकर बुद्धिमान् साधक अर्घ्य में डालें। उस अर्घ्य से आराधना करके शेष पूजा की समाप्ति करें। कुलामृत शोधन के लिये श्रीक्रम में मन्त्र इस प्रकार है : "ॐ अमृते अमृतोद्भवे अमृतवर्षिणि शुक्रशापं प्रमोचय प्रमोचय अमृतं स्रावय स्रावय अमृतं कुरु कुरु स्वाहा।" हे प्रिये, देवेशि ! इस मन्त्र से शुक्र की सिद्धि होती है। हे देवेशि ! अक्षत, सुगन्ध तथा फूलों से युक्त वीर्य तथा अर्घ्य द्रव्य के द्वारा योनि में देवी की पूजा करें।

उत्तरतन्त्रे : धूपदीपैश्च नैवेद्यैर्विविधैः कुलसाधकः। विधाय वन्दितां तां च तदुच्छिष्टं स्वयं चरेत्।।१७२।। शिवागमे अविचारं शक्त्युच्छिष्टं पिवेच्चक्रेश्वरो यदि। घोरं च नरकं याति कुलमार्गात्पतेद्ध्रुवम्।।१७३।। तस्माद्विचार्य यत्नेन शक्त्युच्छिष्टं भजेत्सुधीः। आनन्दं कारयेद्वीरस्तत्त्वं निर्भ्रान्तितः पिबेत्।।१७४।। ततो रहस्यमालया कुलयुक्तो गुरुशिरसि हृदि देवीं च ध्यात्वा शिवोहमिति भावयन् जपं कुर्यात्। अत एवं लक्षजपादौ मध्येऽन्ते च शक्तिं पूजयेत्। गते तु प्रथमे यामे तृतीयप्रहरावधि। निशायां च प्रजप्तव्यं रात्रिशेषे जपेन्न च।।१७५।।

उत्तर तन्त्र में कहा गया है कि कुलसाधक धूप, दीप तथा नाना प्रकार के नैवेद्यों से देवी का पूजन करके उसके उच्छिष्ट को स्वयं खायें। शिवागम में कहा गया है यदि बिना बिचारे शक्ति का उच्छिष्ट चक्रेश्वर पीता है तो वह घोर नरक को जाता है और कुलमार्ग से निश्चित ही पतित हो जाता है। इसलिए यत्न से विचार कर शक्ति का उच्छिष्ट सुधी को खाना चाहिये। वीर आनन्द तत्व को कराये और निर्भ्रान्त होकर उसका पान करें। इसके बाद रहस्यमाला से

कुलयुक्त होकर गुरु के शिर पर हृदय में देवी का ध्यान करके "शिवोहम्" यह भावना जपते हुये जप करें। इसके बाद इस प्रकार एक लाख जप करके के आदि तथा अन्त में शक्ति की पूजा करें। रात्रि में प्रथम याम के बीत जाने पर तीसरे पहर तक रात्रि में जप करना चाहिये। रात बीत जाने पर जप नहीं करना चाहिए।

स्वतन्त्रेः ततो नग्नां स्त्रियं नग्नो रमन् क्लेदयुतोपि वा। जपेल्लक्षं महादेवीं होमयेज्ज्वलितेन्धने।।१७६।। एतत्कल्पान्महादेवि मन्त्रः सिध्यति निश्चिम्।

स्वतन्त्र तन्त्र में लिखा है कि इसके बाद नग्न स्त्री के साथ नग्न होकर रमण करता हुआ अथवा क्लेदयुक्त होकर एक लाख देवी का जप तथा प्रज्वलित अग्नि में हवन करें। इस कल्प से हे महादेवि ! मन्त्र निश्चित रूप से सिद्ध होता है।

अष्टशक्तिपूजनं यथा :

ब्राह्मणी क्षत्रिया वैश्या शूद्रा च कूलभूषणाः। वेश्या नापितकन्या च रजकी नटनी तथा।।१७७।। विशेषवैदग्ध्ययुक्ता सर्वा एव कुलाङ्गनाः। अष्टकन्यारूपभेदं विलोक्यामर्षवेष्टितम्।।१७८।। ब्राह्मेत्यष्टसुशक्तीनां संज्ञाभिः कृतसंज्ञकाः। एवं पूर्वोक्तं पूजयेत्।

अष्टशक्ति का पूजन : ब्राह्मणी, क्षत्रिया, वैश्या या शूद्रा ये कुल भूषण हैं। वेश्या, नाईकी कन्या, धोबिन, रंगरेजिन तथा नटिनी में से विशेष प्रवीण कुलांगना होती हैं। अमर्षवेष्टित आठ कन्याओं के रूपभेद को देखकर आठ ब्राह्म शक्तियों की संज्ञाओं से इनके नाम रखे गये हैं। इस प्रकार पूर्वोक्त पूजा करनी चाहिए।

मतान्तरेः अन्या यदि न गच्छेत्तु निजकन्या निजानुजा। अग्रजा मातुलानी वा माता वा तत्सपत्निका।।१७६।। पूर्वाभावे परा योज्या मदंशा योषितो मताः। सर्वाभावे एकतरा पूजनीया प्रयत्नतः।

मतान्तर में कहा गया है कि यदि कोई उपरोक्त स्त्री नहीं जाती है तो निज कन्या, निज अर्धांगिनी, अग्रजा, भाभी, माता या उसकी सपत्नी में से किसी को पूर्वा भाव से योजित करना चाहिए क्योंकि सभी स्त्रियॉं मेरे ही अंश की हैं। सभी के अभाव में किसी एक की यत्न से पूजा करनी चाहिए।

अथ कुलस्तोत्रम् :

मातर्देवि नमस्तेस्तु ब्रह्मरूपधरेनघे। कृपया हर विघ्नं मे मन्त्रसिद्धिं प्रयच्छ मे।।१८०।। महेशि वरदे देवि परमानन्दरूपिणी। कृ० ।।१८१।। कौमारि सर्वविद्येशि कुमारक्रीडने चरे। कृ०।।१८२।। विष्णुरूपधरे देवि विनतासुतवाहिनी। कृ०।।१८३।। वाराहि वरदे देवि दंष्ट्राद्धृतवसुन्धरे। कृ०।।१८४।। शुक्ररूपधरे देवि शुक्रादिसुरपूजिते। कृ०।।१८५।। चामुण्डे मुण्डमालास्रक्चर्च्चिते विघ्ननाशिनि। कृ०।।१८६।। महालक्ष्मि महोत्साहे क्षोभसन्तापहारिणि। कृ०।।१८७।। मितिमातृमये देवि मितिमातृबहिष्कृते। एके बहुविधे देवि विश्वरूपे नमौस्तु ते।।१८८।।

एतत्स्तोत्रं पठेद्यस्तु कर्मारम्भेषु संयुतः। विंदग्धं वा समालोक्य तस्य विघ्नं न जायते।।१८६।। कुलीनस्य द्वारदेवाः कथितास्तव पुत्रक। दीक्षाकाले नित्यपूजा समयेनार्चयेद्यदि।।१६०।। तस्य पूजाफलं वत्स नीयते यक्षराक्षसैः। यदि व्रीडापरा सा तु भोजने तद्गृहाद्बहि। स्थितस्तावत्पठेत्स्तोत्रं यावत्तृप्तिः प्रजायते।।१६१।।इति कुलपुरश्चरणम्।

किसी कर्म के आरम्भ में या विक्ग्ध का देखकर इस स्तोत्र को जो पढ़े उसे कोई विघ्न नहीं होता। हे पुत्र ! तुमसे कुलीन के द्वारदेव कहे गये। दीक्षाकाल में समयानुसार नित्यपूजा यदि समय पर नहीं की जाती है तो हे वत्स ! उस पूजा का फल यक्ष और राक्षस ले जाते हैं। यदि वह भोजन में लज्जालु होती हैं तो उसके घर से बाहर खड़े होकर तब तक स्तोत्र को पढ़ें जब तक तृप्ति न हो जाय। इति कुलपुरश्चरण।

तृतीय तरंग समाप्त।

काली ध्यान

शवारूढां महाभीमां घोरदंष्ट्रां हसन्मुखीम्।
चतुर्भुजां खड्गमुण्डवराभयकरां शिवाम्।।1।।
मुण्डमालाधरां देवीं ललज्जिह्वां दिगम्बराम्।
एवं सञ्चिन्तयेत्कालीं श्मशानालयवासिनीम्।।2।।

पृ० ३४३

चतुर्थ तरंग

कालीतन्त्र

अथ कालीतन्त्रप्रारम्भः । तत्रादौ द्वाविंशत्यक्षरदक्षिणकालीमन्त्रप्रयोगः ।

प्रारम्भ में बाइस अक्षर का दक्षिण काली मन्त्र प्रयोगः

मन्त्र यह है :

ॐ क्रीं क्रीं क्रीं ह्रीं ह्रीं हूं हूं दक्षिणे कालिके क्रीं क्रीं क्रीं ह्रीं ह्रीं हूं हूं स्वाहा ।

अस्य विधानं मन्त्रमहोदधौ

इसका विधान (मन्त्र महोदधि के अनुसार)

विनियोग : अस्य श्रीदक्षिणकालीमन्त्रस्य भैरव ऋषिः । उष्णिक्छन्दः । दक्षिणकालिकादेवता । क्रीं बीजम् । हूं शक्तिः । क्रीं कीलकम् । ममाभीष्ट सिध्यर्थे जपे विनियोगः ।

ऋष्यादिन्यास : ॐ भैरवऋषये नमः शिरसि १ । उष्णिक्छन्दसे नमः मुखे २ । दक्षिणकालिकादेवतायै नमः हृदि ३ । क्रीं बीजाय नमः गुह्ये ४ । हूं शक्तये नमः पादयोः ५ । क्रीं कीलकाय नमः नाभौ ६ । विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ७ । इति ऋष्यादिन्यासः ।

करन्यास : ॐ क्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः १ । ॐ क्रीं तर्जनीभ्यां नमः २ । ॐ क्रूं मध्यमाभ्यां नमः ३ । ॐ क्रैं अनामिकाभ्यां नमः ४ । ॐ क्रौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५ । ॐ क्रः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ६ । इति करन्यासः ।

हृदयादि षडङ्गन्यास : ॐ क्रां हृदयाय नमः १ । ॐ क्रीं शिरसे स्वाहा २ । ॐ क्रूं शिखायै वषट् ३ । ॐ क्रैं कवचाय हुं ४ । ॐ क्रौं नेत्रत्रयाय वौषट् ५ । ॐ क्रः अस्त्राय फट् ६ । इति हृदयादिषडंगन्यासः ।

तन्त्रान्तर न्यास विधि

ॐ अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं लृं लॄं नमो हृदि १ । ॐ एं ऐं ओं औं अं अः कं खं गं घं दक्षभुजे २ । ॐ ङं चं छं जं झं ञं टं ठं डं ढं नमो वामभुजे ३ । ॐ णं तं थं दं धं नं पं फं बं भं नमो दक्षपादे ४ । ॐ मं यं रं लं वं शं षं सं हं क्षं नमो वामपादे ५ । इति विन्यसेत् । ॐ क्रीं नमः ब्रह्मरन्ध्रे १ । ॐ क्रीं नमः भ्रूमध्ये २ । ॐ क्रीं नमः ललाटे ३ । ॐ ह्रीं नमः नाभौ ४ । ॐ ह्रीं नमः गुह्ये ५ । ॐ हूं नमः वक्त्रे ६ । ॐ हूं नमः गुर्वङ्गे ७ । इससे न्यास करे ।

ततो मूलमन्त्रेण नवधा सप्तधा पञ्चधा वा व्यापकन्यासं कुर्यात् इति न्यासं कृत्वा ध्यायेत् ।

मूलमन्त्र से नव बार, सात बार या पाँच बार व्यापक न्यास करे । इस प्रकार न्यास करके ध्यान करे ।

अथ ध्यानम् ।

ॐ सद्यश्छिन्नशिरः कृपाणमभयं हस्तैर्वरं बिभ्रतीं घोरास्यां शिरसां स्रजा सुरुचिरामुन्मुक्तकेशावलिम् । सृक्कासृक्प्रवहां श्मशाननिलयां श्रुत्योः शवालंकृतिं श्यामाङ्गीं कृतमेखलां शवकरैर्देवीं भजे कालिकाम् ॥ १ ॥

अथ कालीतन्त्रोक्तध्यानम् :

ॐ शवारुढां महाभीमां घोरदंष्ट्रां हसन्मुखीम् । चतुर्भुजां खड्गमुण्डवराभयकरां शिवाम् ।। १ ।। मुण्डमालाधरां देवीं ललज्जिह्वां दिगम्बराम् । एवं सञ्चितयेत्कालीं श्मशानालयवासिनीम् ।। २ ।।

अन्यच्च ।

कराल वदनां घोरां मुक्तकेशी चतुर्भुजाम् । कालिकां दक्षिणां दिव्यां मुण्डमालाविभूषिताम् ।। १ ।। सद्यश्छिन्नशिरःखड्गवामोर्ध्वाधःकराम्बुजाम् । अभयं वरदं चैव दक्षिणाधोर्ध्वपाणिकाम् ।। २ ।। महामेधप्रभां श्यामां तथा चैव दिगम्बराम् । कण्ठावसक्तमुण्डालीगलद्रुधिरचर्चिताम् ।। ३ ।। कर्णावतंसतानीतशवयुग्मभयानकाम् । घोरदंष्ट्राकरालास्यां पीनोन्नतपयोधराम् ।। ४ ।। शवानां करसङ्घातैः कृतकाञ्चीं हसन्मुखीम् । सृक्कद्वयगलद्रक्तधाराविस्फुरिताननाम् ।। ५ ।। घोररूपां महारौद्रीं श्मशानालयवासिनीम् । दन्तुरां दक्षिणव्यापिमुक्तलम्बकचोच्चयाम् ।। ६ ।। शवरूपमहादेवहृदयोपरि संस्थिताम् । शिवाभिर्घोररूपाभिश्चतुर्द्दिक्षु समन्विताम् ।। ७ ।। महाकालेन[1] सार्द्धोद्‌र्ध्वमुपविष्टरतातुराम् । सुखप्रसन्नवदनां स्मेराननसरोरुहाम् ।। ८ ।।

अथ हंसतन्त्रोक्तध्यानम् ।

नमामि दक्षिणामूर्तिं कालिकां परभैरवीम् । भिन्नाञ्जनचयप्रख्यां प्रवीरशवसंस्थिताम् ।। १ ।। गलच्छोणितधाराभिः स्मेराननसरोरुहाम् । पीनोन्नतकुचद्वन्द्वां पीनवक्षोनितम्बिनीम् ।। २ ।। दक्षिणां मुक्तकेशालीं दिगम्बरविनोदिनीम् । महाकालशवाविष्टां स्मेरानन्दोपरिस्थिताम् ।। ३ ।। मुखसान्द्रस्मितामोदमोदिनीं मदविह्वलाम् । आरक्तमुखसान्द्राभिर्नेत्रालीभिर्विराजिताम् ।। ४ ।। शवद्वयकृतोत्तंसां सिन्दूरतिलकोज्ज्वलाम् । पञ्चाशन्मुण्डघटितमालाशोणितलोहिताम् ।। ५ ।। नानामणिविशोभाढ्यनानालंकारशोभिताम् । शवास्थिकृतकेयूरशंखकङ्कणमण्डिताम् ।। ६ ।। शववक्षः समारूढां लेलिहानां शवं क्वचित् । शवमांसकृतग्रासां साट्टहासं मुहुर्मुहुः ।। ७ ।। खड्गमुण्डधरां वामे सव्येऽभयवरप्रदाम् । दन्तुरां च महारौद्रीं चण्डनादाति भीषणाम् ।। ८ ।। शिवाभिर्घोररूपाभिर्वेष्टितां भयनाशनीम् । माभैर्माभैस्स्वभक्तेषु जल्पन्तीं घोरनिःस्वनैः । यूयङ्किमिच्छथ ब्रूत ददामीति प्रभाषिणीम् ।। ९ ।। इति ध्यानम् ।

श्मशानालयवासिनी देवी का इस प्रकार ध्यान करे ।

इति ध्यात्वा मानसोपचारैः सम्पूजयेत् । ततः पीठादी रचिते सर्वतोभद्रमण्डले पद्धति मार्गेण मण्डूकादिपरतत्त्वान्तपीठदेवताः संस्थाप्य । ॐ मं मण्डूकादिपरतत्त्वान्तपीठदेवताभ्यो नमः । इति पीठदेवताः सम्पूज्य नव पीठशक्तीः पूजयेत् । तथा च

इस प्रकार ध्यान करके मानसोपचार से पूजन करे । उसके बाद पीठादि पर रचित सर्वतोभद्र मण्डल में पद्धति मार्ग से मण्डूकादि परतत्त्वान्त पीठदेवताओं को स्थापित करके "ॐ मं मण्डूकादिपरतत्त्वान्त पीठदेवताभ्यो नमः" इससे पीठ देवताओं का पूजन करके नव पीठ शक्तियों की इस प्रकार पूजा करे :

पूर्वादिक्रमेण : ॐ जयायै नमः १ । ॐ विजयायै नमः २ । ॐ अजितायै नमः ३ । ॐ अपराजितायै नमः ४ । ॐ नित्यायै नमः ५ । ॐ विलासिन्यै नमः ६ । ॐ दोग्ध्र्यै नमः ७ । ॐ अघोरायै नमः ८ । मध्ये ॐ मङ्गलायै नमः ९ । इति पीठशक्तीः सम्पूजयेत् ।

---

१ मन्तातरे महाकालेन च समं विपरीतरतातुराम् । इति पाठः ।

ततः स्वर्णादिनिर्मितं यन्त्रं मूर्ति वा ताम्रपात्रे निधाय घृतेनाभ्यज्य तदुपरि दुग्धधारां जलधारां च दत्त्वा स्वच्छ वस्त्रेणावेष्ट्य ॐ ह्रीं कालिकायोगपीठात्मने नमः । इति मन्त्रेण पुष्पाद्यासनं दत्त्वा पीठमध्ये संस्थाप्य पद्धतिमार्गेण प्रतिष्ठां च कृत्वा मूलेन मूर्ति प्रकल्प्य पाद्यादिपुष्पान्तैरुपचारैः सम्पूज्य देव्याज्ञां गृहीत्वा आवरणपूजां कुर्यात् । तद्यथा

इसके बाद स्वर्णादिनिर्मित यन्त्र या मूर्ति को ताम्रपात्र में रखकर घी से उसका अभ्यङ्ग करके उसके ऊपर दुग्ध धारा तथा जल धारा देकर स्वच्छ वस्त्र से लपेटकर 'ॐ ह्रीं कालिकायोगपीठात्मने नमः' इस मन्त्र से पुष्पादि आसन देकर पीठ के मध्य में स्थापित करके पद्धति मार्ग से प्रतिष्ठा करके मूलमन्त्र से मूर्ति की कल्पना करके पाद्य से पुष्पाञ्जलि पर्यन्त उपचारों से पूजा करके देवी की आज्ञा लेकर इस प्रकार आवरण पूजा करे :

आवरण पूजा :

पुष्पाञ्जलिमादाय ॐ संविन्मये परेशानि परामृते चरुप्रिये । अनुज्ञां दक्षिणे देहि परिवारार्च्चनाय मे । इति पठित्वा पुष्पाञ्जलिं च दत्त्वा पूजितास्तर्पिताः सन्तु इति वदेत् । इत्याज्ञां गृहीत्वा आवरणपूजामारभेत् । तथा च

पुष्पाञ्जलि लेकर 'ॐ सविन्मये परेशानि परामृते चरुप्रिये । अनुज्ञां दक्षिणे देहि परिवारार्चनाय मे' यह पढ़कर पुष्पाञ्जलि देकर 'पूजितास्तर्पिताः सन्तु' यह कहे । इस प्रकार आवरण पूजा आरम्भ करे । (दक्षिण काली पूजन यन्त्र देखिये चित्र ५)

षट्कोणकेसरेषु आग्नेय्यादिचतुर्दिक्षु मध्ये दिक्षु च षडंगानि पूजयेत् ।

षट् कोण केसरों में, आग्नेयी आदि चारों दिशाओं में तथा मध्य दिशा में षडङ्गों की पूजा करे। इसमें इस प्रकार ध्यान करे ।

ध्यान

तुषारस्फटिकश्यामनीलकृष्णारुणास्तथा । वरदाभयधारिण्यः प्रधानतनवः स्त्रियः ।

इससे ध्यान करके इस प्रकार पूजा करे :

ॐ क्रां हृदयाय नमः[1] हृदयदेवता श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः । इति सर्वत्र १ । ॐ क्रीं शिरसे स्वाहा[2] शिरोदेवताः श्री० पा० २ । ॐ क्रूं शिखायै वषट्[3] शिखादेवताः श्री० पा० ३ । ॐ क्रैं कवचाय हुं[4] कवचदेवताः श्री० पा० ४ । ॐ क्रौं नेत्रत्रयाय वौषट्[5] नेत्रदेवताः श्री० पा० ५ । ॐ क्रः अस्त्राय फट्[6] अस्त्रदेवताः श्री० पा० ६ ।

इससे षडङ्गों की पूजा करने के बाद पुष्पाञ्जलि लेकर मूलमन्त्र का उच्चारण करे :

ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले । भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ।

यह पढ़कर पुष्पाञ्जलि देकर विशेषार्घ्य से जल बिन्दु डालकर 'पूजितास्तर्पिताः सन्तु' यह कहे। इति प्रथमावरण ।। १ ।।

ततः पूज्यपूजकयोरन्तरालं प्राची तदनुसारेण अन्याः दिशः प्रकल्प्य प्राची क्रमेण षट्कोणेषु काल्यादि पूजयेत् ।

इसके बाद पूज्य और पूजक के मध्य पूर्व दिशा को अन्तराल मानकर तदनुसार अन्य दिशाओं की कल्पना करके प्राची क्रम से षट्कोणों में काली आदि की पूजा करे ।

यहाँ इससे ध्यान करना चाहिए :

ॐ सर्वाः श्यामा असिकरा मुण्डमालाविभूषिताः ।। तर्जनीं वामहस्तेन धारयंत्यश्च सुस्मिताः । इति ध्यात्वा पूजयेत् ।

इससे ध्यान करके इस प्रकार पूजा करे ।

ॐ काल्यै नमः[1] कालीश्रीपा० १ । ॐ कपालिन्यै नमः[2] कपालिनी श्री० पा० २ । ॐ कुल्लायै नमः[3] कुल्लाश्रीपा० ३ । ॐ कुरुकुल्लायै नमः[4] कुरुकुल्ला श्रीपा० ४ । ॐ विरोधिन्यै नमः[5] विरोधिनी श्रीपादुकां पू० ५ । ॐ विप्रचित्तायै नमः[6] विप्रचित्ताश्रीपा० ६ ।

इससे पूजा करे । इसके बाद पुष्पाञ्जलि लेकर मूलमन्त्र का उच्चारण करके "अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले । भक्त्या समर्पये तुभ्यं द्वितीयावरणार्चनम् ॥ १ ॥" यह पढ़कर पुष्पाञ्जलि देकर विशेष अर्घ्य से जल बिन्दु डालकर "पूजितास्तर्पिताः सन्तु" यह कहे । इति द्वितीयावरण ॥ २ ॥

ततस्त्रियंत्रकोणे उग्राद्या नव पूजयेत् । तत्र क्रमः

इसके बाद यन्त्र के तीन कोणों में उग्रा आदि की पूजा करे । उसमें क्रम यह है :

प्रथमत्रिकोणसम्मुखे ॐ उग्रायै नमः[7] उग्राश्रीपा० १ । वामे ॐ उग्रप्रभायै नमः[8] उग्रप्रभाश्रीपा० २। दक्षे ॐ दीप्तायै नमः[9] दीप्ताश्रीपा० ३ । द्वितीयत्रिकोणसम्मुखे ॐ नीलायै नमः[10] नीला श्रीपा० ४ । वामे ॐ घनायै नमः[11] घनाश्रीपा० ५ । दक्षे ॐ बलाकिकायै नमः[12] बलाकाश्रीपा० ६ । तृतीयत्रिकोणसम्मुखे ॐ मात्रायै नमः[13] मात्राश्रीपा० ७ । वामे ॐ मुद्रायै नमः[14] मुद्राश्रीपा० ८ । दक्षे ॐ मित्रायै नमः[15] मित्राश्रीपा० ९ ।

इस प्रकार पूजा करे ।

इसके बाद पुष्पाञ्जलि लेकर मूलमन्त्र का उच्चारण करके "अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले । भक्त्या समर्पये तुभ्यं तृतीयावरणार्चनम् ।" यह पढ़कर पुष्पाञ्जलि देकर "पूजितास्तर्पिताः सन्तु" यह कहे । इति तृतीयावरण ॥ ३ ॥

ततोष्टदले प्राचीक्रमेणाष्ट शक्तीः पूजयेत् । तद्यथा

इसके बाद अष्टदल में प्राची क्रम से आठ शक्तियों का इस प्रकार ध्यान करे :

दण्डं कमण्डलुं पश्चादक्षसूत्रं महाभयम् । बिभ्रती कनकच्छाया ब्रह्माकृष्णाजिनोज्ज्वला ॥ १ ॥ शूलं परश्वधङ्क्षुद्रदुन्दुभीं नृकरोटिकाम् । वहंती हिमसंकाशा ध्येया माहेश्वरी शुभा ॥ २ ॥ अंकुशं दण्डखट्वांगौ पाशं च दधती करैः । बन्धूकपुष्पसंकाशा कुमारी कामदायिनी ॥ ३ ॥ चक्रं घण्टां कपालं च शंखं च दधती करैः । तमालश्यामला ध्येया वैष्णवी विभ्रमोज्ज्वला ॥ ४ ॥ मुशलं करवालं च खेटकं दधतीं हलम् । करैश्चतुर्भिर्वाराही ध्येया कालधनच्छविः ॥ ५ ॥ अंकुशं तोमरं विद्युत्कुलिशं बिभ्रती करैः । इन्द्रनीलनिभेन्द्राणी ध्येया सर्वासमृद्धिदा ॥ ६ ॥ शूलं कृपाणं नृशिरः कपालं दधती करैः । मुण्डस्रङ्मण्डिता ध्येया चामुण्डा रक्तविग्रहा ॥ ७ ॥ अक्षस्रजं बीजपूरं कपालं दधती करैः । वहन्ती हेमसङ्काशा मोहलक्ष्मीस्समीरिता ॥ ८ ॥ इति ध्यात्वा पूजयेत् । तद्यथा

इससे ध्यान करके इस प्रकार पूजा करे :

ॐ ब्राह्म्यै नमः[16] ब्राह्मीश्रीपा० १ । ॐ नारायण्यै नमः[17] नारायणीश्रीपा० २ । ॐ माहेश्वर्यै नमः[18] माहेश्वरीश्रीपा० ३ । ॐ चामुण्डायै नमः[19] चामुण्डाश्रीपा० ४ । ॐ कौमार्यै नमः[20] कौमारी श्रीपा० ५ । ॐ अपराजितायै नमः[21] अपराजिताश्रीपा० ६ । ॐ वाराह्यै नमः[22] वाराहीश्रीपा० ७ । ॐ नारसिंह्यै नमः[23] नारसिंहीश्रीपा० ८ ।

तदुपरान्त पुष्पाञ्जलि लेकर, मूलमन्त्र का उच्चारण करके 'अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले । भक्त्या समर्पये तुभ्यं चतुर्थावरणार्चनम् ।' इसे पढ़कर पुष्पाञ्जलि देकर 'पूजितास्तर्पिताः सन्तु' यह कहे । इति चतुर्थावरणम् ॥ ४ ॥

ततो भूपुराभ्यंतरेष्टसु दिक्षु प्राचीक्रमेण अष्टभैरवान् । पूजयेत् ।

भूपुर के अन्दर आठों दिशाओं में प्राची क्रम से आठ भैरवों की पूजा करे। उसमें ध्यान इस प्रकार है।

ध्यानम् ।

भीषणास्यं त्रिनयनमर्द्धचन्द्रंविभूषितम् । स्फटिकाभं कंकणादिभूषाशतसमायुतम् ॥ १ ॥ अष्टवर्षवयस्यकं च कुन्तलोल्लसितं भजे । धारयन्तं दण्डशूले भैरव्यादिसमायुतम् ॥ २ ॥

इससे ध्यान करके पूजा करे ।

शाक्तप्रमोद में इस प्रकार कहा गया है :

ॐ ऐं ह्रीं अं असितांगभैरवाय नमः[२४] असितांगभैरवश्रीपा० १ । ॐ ऐं ह्रीं इं रुरुभैरवाय नमः[२५] रुरुभैरव श्रीपा० २ । ॐ ऐं ह्रीं उँ चण्डभैरवाय नमः[२६] चण्डभैरवश्रीपा० ३ । ॐ ऐं ह्रीं ॠं क्रोधभैरवाय नमः[२७] क्रोधभैरवश्रीपा० ४ । ॐ ऐं ह्रीं लृं उन्मत्तभैरवाय नमः[२८] उन्मत्तभैरवश्रीपा० । ॐ ऐं ह्रीं एं कपालि भैरवाय नमः[२९] कपालिभैरवश्रीपा० ६ । ॐ ऐं ह्रीं आं भीषणभैरवाय नमः[३०] भीषण भैरवश्रीपा० ७। ॐ ऐं ह्रीं अं संहारभैरवाय नमः[३१] संहारभैरवश्रीपा० ८ ।

इससे पूजा करे । इसके बाद उसके समीप आठ भैरवीयों की पूजा करे ।

उसमें ध्यान इससे करे :

भावयेच्च महादेवीं चन्द्रकोटियुतप्रभाम् । हिमकुन्देन्दुधवलां पञ्चवक्त्रां त्रिलोचनाम् ॥ १ ॥ अष्टादशभुजैर्युक्तां सर्वानन्दकरोद्यताम् । प्रहसन्तीं विशालाक्षीं देवदेवस्य सन्मुखीम् ॥ २ ॥

इससे ध्यान करके इस प्रकार पूजा करे :

ॐ श्रीभैरेव्यै नमः[३२] श्रीभैरवीश्रीपा० १ । ॐ मं महाभैरव्यै नमः[३३] महाभैरवीश्रीपा० २ । ॐ सिं सिंहभैरव्यै नमः[३४] सिंह भैरवीश्रीपा० ३। ॐ धूँ धुम्रभैरव्यै नमः[३५] ॐ धूँ धूम्रभैरवीश्रीपा० ४ । ॐ भीं भीमभैरेव्यै नमः[३६] भीमभैरवीश्रीपा० ५ । ॐ उं उन्मत्तभैरेव्यै नमः[३७] उन्मत्तभैरवीश्रीपा० ६ । ॐ वं वशीकरणभैरव्यै नमः[३८] वशीकरणभैरवीश्रीपा० ७। ॐ मों मोहन भैरव्यै नमः[३९] मोहनभैरवीश्रीपा० ८।

इससे पूजा करे ।

ततो भूपुराद्बहिः इन्द्रादिदशदिक्पालान् वज्राद्यायुधानि च पद्धति मार्गेण पूजयेत् । इत्यावरणपूजां कृत्वा धूपादिनमस्कारान्तं सम्पूज्य जपं कुर्यात् । अस्य पुरश्चरणं लक्षजपः करवीरपुष्पैर्दशांशतो होमः एवं कृते मन्त्रः सिद्धो भवति । एतत्सिद्धेर्मन्त्री प्रयोगान्साधयेत् ।

इसके बाद भूपुर से बाहर इन्द्र आदि दश दिक्पालों तथा वज्र आदि आयुधों की पद्धति मार्ग से पूजा करे । इस प्रकार आवरण-पूजा करके धूपदान से लेकर नमस्कार पर्यन्त पूजा करके जप करे । इसका पुरश्चरण एक लाख जप है । कनेर के फूलों से दशांश होम होता है । ऐसा करने पर मन्त्र सिद्ध होता है । इसके सिद्ध होने पर मन्त्री प्रयोगों को सिद्ध करे ।

एवं ध्यात्वा जपेल्लक्षं जुहुयात्तद्दशांशतः । प्रसूनैः करवीरोत्थैः पूजायन्त्रमथोच्यते ॥ १ ॥ एवमाराधिता काली सिद्धा भवति मन्त्रिणाम् । ततः प्रयोगान्कुर्वीत महाभैरवभाषितान् ॥ २ ॥ आत्मनोर्थे परस्यार्थे श्रीप्रसिद्धिप्रदायकान् । सुदृशो महनवासं पश्यन् यः प्रजपेन्मनुम् ॥ ३ ॥ अयुतं सोऽचिरादेव वाक्पतेः समतामियात् । दिगम्बरो मुक्तकेशः श्मशानस्थोधियामिनि ॥ ४ ॥ जपेद्योयुतमेतस्य भवेयुः सर्वकामनाः । शावं हृदयमारुह्य निर्वासाः प्रेतभूगतः ॥ ५ ॥ अर्कपुष्पसहस्रेण युक्तेन स्वीयरेतसा । देवीं यः पूजयेद्भक्त्या जपन्नेकैकशो मनुम् ॥ ६ ॥ सोचिरेणैव कालेन धरणीप्रभुतां व्रजेत् । रजःकीर्णभगं नार्याध्यायन्योऽयुतमाजपेत् ॥ ७ ॥ स कवित्वेन रम्येण जनान्मोहयति ध्रुवम् । त्रिपञ्चारे महापीठे शवस्य हृदि संस्थिताम् ॥ ८ ॥ महाकालेन देवेन मारयुद्धं प्रकुर्वतीम् । तां ध्यायन् स्मरेवदनां विदधत्सुरतं स्वयम् ॥ ९ ॥ जपेत्सहस्रमपि यः स शङ्करसमो

भवेत् ।

'इस प्रकार ध्यान करके एक लाख जप करे तथा जप के दशांश से कनेर के फूलों द्वारा होम करे। इस प्रकार पूजिता काली साधकों के लिए सिद्ध होती हैं। इसके बाद साधक महाभैरव द्वारा उक्त प्रयोगों को करे। अपने लिए, दूसरों के लिए, लक्ष्मी प्रदान के लिए, प्रसिद्धि प्रदान के लिए जो साधक सुन्दरी के मदनावास को देखते हुए दश हजार मन्त्र का जप करता है वह शीघ्र ही वृहस्पति की समता को प्राप्त होता है। जो नग्न होकर बालों को खुला रखकर श्मशान में आधी रात को दश हजार मन्त्र का जप करता है उसकी सभी कामनायें सिद्ध होती हैं। श्मशान में मुर्दे के हृदय पर नग्न बैठकर अपने वीर्य से युक्त एक हजार मदार के पुष्पों से भक्तिपूर्वक जप करता हुआ जो एक-एक फूल से देवी की पूजा करता है, वह शीघ्र ही पृथिवीपति का अधिकार प्राप्त करता है। जो रजस्राव होते हुये नारी के भग का ध्यान करता हुआ दश हजार जप करता है, वह सुन्दर कवित्वशक्ति से संसार को निश्चित रूप से विमोहित कर लेता है। शव के हृदय पर आठ अरेवाले महापीठ पर स्थित शिवजी के साथ कामसंग्राम करती हुई तथा मुस्कराती हुई देवी का ध्यान करते हुये एवं स्वयं रमण करते हुए जो एक हजार मन्त्र का भी जप करता है वह शंकर के समान हो जाता है।

अस्थिलोमत्वचायुक्तं मांसं मार्जारमेषयोः ॥ १० ॥ उष्ट्रस्य महिषस्यापि बलिं यस्तु समर्पयेत् । भूताष्टम्योर्मध्यरात्रे वश्याः स्युस्तस्य जन्तवः ॥ ११ ॥

जो साधक कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी तथा अष्टमी को बिल्ली, भेड़ा, ऊँट तथा भैंसे के अस्थि, चर्म तथा रोमयुक्त मांस की बलि देता है, उसके समस्त प्राणी वश में हो जाते हैं।

विद्यालक्ष्मीयशः पुत्रैः सुचिरं सुखमेधते । यो हविष्याशनरतो दिवा देवीं स्मरन् जपेत् ॥ १२ ॥ नक्तं निधुवनासक्तो लक्षं स स्याद्धरापतिः । रक्ताम्भोजैर्हुतैर्मन्त्री धनैर्जयति वित्तपम् ॥ १३ ॥ बिल्वपत्रैर्भवेद्राज्यं रक्तपुष्पैर्वशीकृतिः । असृजा महिषादीनां कालिकां यस्तु तर्पयेत् ॥ १४ ॥ तस्य स्युरचिरादेव करस्थाः सर्वसिद्धयः । यो लक्षं प्रजपेन्मन्त्रं शवमारुह्य मन्त्रवित् । तस्य सिद्धो मनुः सद्यः सर्वेप्सितफलप्रदः ॥ १५ ॥ तेनाश्वमेधप्रमुखैर्यागैरिष्टं सुजन्मना। दत्तं दानं तपस्तप्तमुपास्ते यस्तु कालिकाम् ॥ १६ ॥ ब्रह्मा विष्णुः शिवो गौरी लक्ष्मींगणपति रविः । पूजिताः सकला देवा यः कालीं पूजयेत्सदा ॥ ५७ ॥ इति द्वविंशत्यक्षर दक्षिणकालीमन्त्रप्रयोगः ॥ १ ॥

जो हविष्यान्न का सेवन करता हुआ दिन में देवी के ध्यान में मग्न हो जप करता है वह विद्या, लक्ष्मी, यश और पुत्रों से युक्त होकर बहुत दिनों तक सुख प्राप्त करता है। जो रात्रि में मैथुन में आसक्त हो एक लाख जप करता है, वह राजा होता है। लाल कमलों से होम करने पर साधक कुबेर को भी जीत लेता है। बेल के पत्तों से हवन करने पर राज्य प्राप्त होता है। लाल पुष्पों से हवन करने पर वशीकरण होता है। जो मनुष्य भैंसे आदि पशुओं के रक्त से कालिका का तर्पण करता है उसके हाथ शीघ्र ही सभी सिद्धियाँ आ जाती हैं। जो मन्त्रवित् शव पर बैठकर एक लाख जप करता है उसका मन्त्र तत्काल सिद्ध हो जाता है और समस्त अभीष्टों का फल देनेवाला होता है। जो कालिका की उपासना करता है उसे ऐसा समझना चाहिए कि उस उत्तम जन्मधारी ने अश्वमेध प्रभृति यज्ञों को पूरा कियां है, दान दिया है तथा तप किया है। जो सदा काली की पूजा करता है, उसने ब्रह्मा, विष्णु, शिव, गौरी, लक्ष्मी, गणपति और सूर्य आदि सभी देवों की पूजा कर ली है।

इति द्वाविंशत्यक्षरकाली मन्त्र प्रयोग

अथ दक्षिणकालीमन्त्रभेदः मन्त्रमहोदधौ । मन्त्रो यथाः

दक्षिण काली मन्त्रभेद । मन्त्र महोदधि में मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ ह्रीं ह्रीं हूं हूं क्रीं क्रीं क्रीं दक्षिणकालिके क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं ।

यह इक्कीस अक्षरों का मन्त्र है ॥१॥

अस्य विधानं : बिल्वमूले शवारूढो वटमूले तथैव च । लक्षं मनुमिमं जप्त्वा सर्वसिद्धीश्वरो भवेत् ॥२॥ इति

इसका विधान इस प्रकार है : बेल वृक्ष के नीचे या बरगद वृक्ष के नीचे शव पर बैठकर इस मन्त्र को एक लाख जप कर साधक सर्वसिद्धियों का स्वामी हो जाता है।

दूसरा मन्त्र यह है :

क्रीं हूं ह्रीं दक्षिणे कालिके क्रीं हूं ह्रीं स्वाहा ॥३॥

यह चौदह अक्षरों का मन्त्र है ।

और भी दूसरा मन्त्र है:

ॐ हूं हूं क्रीं क्रीं क्रीं ह्रीं ह्रीं दक्षिणकालिके हूं हूं क्रीं क्रीं क्रीं ह्रीं ह्रीं स्वाहा ॥४॥

यह बाइस अक्षरों का मन्त्र है ।

अन्य मन्त्र :

ॐ क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं दक्षिणकालिके स्वाहा ॥५॥

यह पन्द्रह अक्षरों का मन्त्र है ।

अन्य मन्त्र :

ॐ क्रीं ॥६॥

यह एक अक्षर का मन्त्र है ।

ॐ क्रीं कालिके स्वाहा ॥७॥

यह मन्त्र छः अक्षरों का है ।

अन्य मन्त्र :

ॐ क्रीं हूं ह्रीं ॥८॥

यह तीन अक्षरों का मन्त्र है ।

अन्य मन्त्र :

ॐ क्रीं हूं ह्रीं हुं फट् ॥९॥

यह पाँच अक्षरों का मन्त्र है ।

ॐ क्रीं हूं ह्रीं हुं फट् स्वाहा ॥१०॥

यह सात अक्षरों का मन्त्र है ।

अस्य विधानं सर्व पूर्ववत् ज्ञेयम् । तथा च एतेषां पूर्ववत्प्रोक्त व्यजनं७ नारदादिभिः । निग्रहानुग्रहे शक्ताः कालीमन्त्राः स्मृता इमे ।

इसका सब विधान पूर्ववत् जानना चाहिए । नारद आदि ने इसका पूर्ववत् विधान कहा है । ये कालीमन्त्र निग्रह और अनुग्रह में समर्थ हैं ऐसा कहा गया है ।

इति दक्षिणकालीमन्त्रप्रयोगः ।

अथ भद्रकालीमन्त्रप्रयोगः ।

दूसरे तन्त्र में मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ ह्रौं कालि महाकालि किलिकिले फट् स्वाहा ।

यह चौदह अक्षरों का मन्त्र है ।

अस्य विधानं न्यासादिकं पूर्ववत्कृत्वा ध्यायेत् ।

इसका विधान तथा न्यासादि पूर्ववत करके ध्यान करे ।

अथ ध्यानम् ।

क्षत्क्षामा कोटराक्षी मसिमलिनमुखी मुक्तकेशी रुदन्ती नाहं तृप्ता वदन्ती जगदखिलमिदं ग्रासमेकं करोमि । हस्ताभ्यां धारयन्ती ज्वलदनलशिखासन्निभं पाशमुग्रं दन्तैर्जम्बूफलाभैः परिहस्तु भयं पातु मां भद्रकाली ॥ १ ॥

इति ध्यात्वा पूजादिकं सर्वं पूर्ववत् कृत्वा जपं कुर्यात् तथा चः जपमाला विधातव्या ह्यष्टोत्तरशतेन वा । ध्यातव्येयं महाकाली देवी सर्वभयापहा ॥ १ ॥ प्रयोगमात्रं कर्तव्यं वैरिनिग्रहकारकम् । इयं देवी महादेवशत्रुनिग्रहकारिणी । यथेष्टंचिन्तयाऽऽचिंत्यधर्मकर्मार्थसिद्धिदा ॥ २ ॥ अत्र पुरश्चरणादिकं सर्वं दक्षिणकालीवत् ज्ञेयम् ।

इससे ध्यान करके सब पूजा आदि पूर्ववत् करके जप करे । जपमाला एक सौ आठ करनी चाहिए । इस समस्त भयों का अपहरण करने वाली महाकाली का ध्यान करना चाहिए । वैरियों को वश में करने वाला प्रयोग मात्र करना चाहिए । यह देवी महादेव के शत्रुओं का निग्रह करने वाली तथा अचिन्त्य धर्म-कर्म तथा अर्थ की सिद्धि देने वाली है । यहाँ पुरश्चरण आदि सब दक्षिण काली के समान जानना चाहिए ।

इति चतुर्दशाक्षरभद्रकालीयन्त्रप्रयोगः ।

अथ श्मशानकालीमन्त्रप्रयोगः ।

तन्त्रासार में मन्त्र इस प्रकार है :

ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं कालिके ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं ।

यह ग्यारह अक्षरों का मन्त्र है ।

इसका विधान : (श्मशान कालीपूजन यन्त्र देखिये चित्र ६)

विनियोग : अस्य श्मशानकालीमन्त्रस्य भृगुर्ऋषिः । त्रिवृच्छन्दः । श्मशानकाली देवता । ऐं बीजम् । ह्रीं शक्तिः । क्लीं कीलकम् । मम् सर्वेष्टसिद्धये जपे विनियोगः ।

ऋष्यादिन्यास : ॐ भृगुऋषये नमः शिरसि १ । त्रिवृच्छन्दसे नमः मुखे २ । श्मशानकालिकादेवतायै नमः हृदि ३ । ऐं बीजाय नमः गुह्ये ४ । ह्रीं शक्तये नमः पादयोः ५ । क्लीं कीलकाय नमः नाभौ ६ । विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ७ । इति ऋष्यादिन्यासः ।

करन्यास : ऐं अंगुष्ठाभ्यां नमः १ । ह्रीं तर्जतीभ्यां नमः २ । श्रीं मध्यमाभ्यां नमः ३ । क्लीं अनामिकाभ्यां नमः ४ । कालिके कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५ । ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं कालिके ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ६ । इति करन्यासः ।

हृदयादि षडङ्गन्यास : ऐं हृदयाय नमः १ । ह्रीं शिरसे स्वाहा २ । श्रीं शिखायै वषट् ३ । क्लीं कवचाय हुं ४ । कालिके नेत्रत्रयाय वौषट् ५ । ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं कालिके ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं अस्त्राय फट् ६ । इति हृदयादिषडङ्गन्यासः ।

इस प्रकार न्यास करके ध्यान करे ।

अञ्जनाद्रिनिभां देवीं श्मशानालयवासिनीम् । रक्तनेत्रां मुक्तकेशीं शुष्कमांसातिभैरवाम् ॥ १ ॥ पिङ्गाक्षीं वामहस्तेन मद्यपूर्णा समांसकाम् । सद्यः कृतं शिरो दशहस्तेन दधतीं शिवाम् ॥ २ ॥ स्मितवक्त्रां सदा चाम मांसचवर्णतत्पराम् । नानालङ्कारभूषाङ्गीं नग्नां मत्तां सदा शवैः ॥ ३ ॥

इति ध्यात्वा पूर्वोक्तपीठपूजां कुर्यात् । ततस्ताम्रपात्रे पद्माष्टदलं वृत्तं तद्बाह्ये धरणीतलं चतुरस्रं यन्त्रं लिखित्वा ताम्रपात्रे निधाय घृतेनाभ्यज्य तदुपरि दुग्धधारां जलधारां च दत्त्वा स्वच्छवस्त्रेण प्रोक्ष्य ह्रीं कालिकायोगपीठात्मने नमः । इति मन्त्रेण पुष्पाद्यासनं दत्त्वा पीठमध्ये संस्थाप्य प्रतिष्ठां च कृत्वा मूलेन मूर्ति प्रकल्प्य पाद्यादि पुष्पान्तरुपचारैः सम्पूज्य देव्या आज्ञां गृहीत्वा आवरणपूजां कुर्यात् ।

इससे ध्यान करके पूर्वोक्त पीठपूजा करे । इसके बाद ताम्रपात्र में पद्माष्टदल वृत्त, उसके बाहर धरणीतल, चौकोर यन्त्र लिखकर ताम्रपात्र में रखकर घृत से अभ्यंग करके उसके ऊपर दुग्धधारा तथा जलधारा देकर स्वच्छ वस्त्र से उसे पोंछ कर "ह्रीं कालिकायोगपीठात्मने नमः" इस मन्त्र से पुष्प आदि का आसन देकर पीठ के मध्य में उसे रखकर उसमें प्राणप्रतिष्ठा करके मूल मन्त्र से मूर्ति की कल्पना करके पाद्य से पुष्पाञ्जलि दान पर्यन्त उपचारों से देवी की पूजा करके आज्ञा लेकर आवरण पूजा करे ।

आवरणपूजा : ततोष्टदले ॐ ब्राह्मै नमः १ । ॐ माहेश्वर्यै नमः २ । ॐ कौमार्यै नमः ३ । ॐ वैष्णव्यै नमः ४ । ॐ वाराह्यै नमः ५ । ॐ इन्द्राण्यै नमः ६ । ॐ चामुण्डायै नमः ७ । ॐ महालक्ष्म्यै नमः ८ ।

इससे प्राची क्रम से पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवे। उसके बाहर प्राची क्रम से :

ॐ असितांगभैरवाय नमः १ । ॐ रुरुभैरवाय नमः २ । ॐ चण्डभैरवाय नमः ३ । ॐ क्रोधभैरवाय नमः ४ । ॐ उन्मत्तभैरवाय नमः ५ । ॐ कपालिभैरवाय नमः ६ । ॐ भीषणभैरवाय नमः ७ । ॐ संहारभैरवाय नमः ८ ।

इति पूजयित्वा पुष्पाञ्जलिं च दद्यात् । ततो भूपुरे इन्द्रादिदशदिक्पालान् वज्राद्यायुधानि च पूजयित्वा पुष्पाञ्जलिं च दद्यात् । इत्यावरणपूजां कृत्वा धूपादिनमस्कारान्तं सम्पूज्य जपं कुर्यात् । तथा च एवं ध्यात्वा जपेन्मन्त्रं श्मशाने तु विशेषतः । गृहे वापि गृहस्थोपि मत्स्यमांसैः सुभोजनैः ॥ १ ॥ नग्नो भूत्वा महापूजां कुर्याद्रात्रौ समाहितः । वर्णलक्षं जपेन्मन्त्रं तद्दशांशेन होमयेत् ॥ २ ॥ एवं कृते मन्त्रः सिद्धो भवति । सिद्ध मन्त्रे मन्त्री पूर्वोक्तप्रयोगान् साधयेत् । इति श्मशानकालीमन्त्रप्रयोगः ॥ ६ ॥

इस प्रकार पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवे । इसके बाद भूपुर में इन्द्र आदि दश दिक्पालों की तथा वज्र आदि आयुधों की पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवे । इस प्रकार आवरणपूजा करके धूपदान से लेकर नमस्कार पर्यन्त पूजा करके जप करे । इस प्रकार ध्यान करके श्मशान में विशेष रूप से जप करे । चाहे तो घर में भी गृहस्थ मछली मांस के उत्तम भोजन के साथ रात में नग्न हो शान्त चित्त होकर मन्त्र में जितने वर्ण हैं उतने लाख जप करे तथा उसका दशांश होम करे । ऐसा करने पर मन्त्र सिद्ध होता है । मन्त्र के सिद्ध होने पर साधक पूर्वोक्त प्रयोगों को सिद्ध करे । इति श्री काली पटल समाप्त ।

अथ (श्यामा) दक्षिणकाली कवच ।

भैरव्युवाच

कालीपूजा श्रुता नाथ भावाश्च विविधाः प्रभो । इदानीं श्रोतुमिच्छामि कवचं पूर्वसूचितम् ॥ १ ॥
त्वमेव श्रेष्ठः पाता च संहर्ता च त्वमेव हि । त्वमेव शरणं नाथ पाहि मां दुःखसंकटात् ॥ २ ॥

भैरवी बोली : हे नाथ, हे प्रभो ! मैंने कली पूजा को सुना । अनेक प्रकार के भाव भी सुने । पूर्वसूचना के अनुसार अब मैं कवच सुनना चाहती हूं । आप ही श्रेष्ठ हैं, आप ही रक्षक हैं, आप ही संहारकर्ता हैं, आप दुःख के संकट से मेरी रक्षा करें ।

भैरव उवाच ।

रहस्यं शृणु वक्ष्यामि भैरवि प्राणवल्लभे । श्रीजगन्मङ्गलं नामं कवचं मन्त्रविग्रहम् ॥ ३ ॥ पठित्वा धारयित्वा च त्रैलोक्यं मोहयेत्क्षणात् । नारायणोपि यद्धृत्वा नारी भूत्वा महेश्वरम् ॥ ४ ॥ योगिनं क्षोभमनयद्यद्धृत्वा च रघूत्तमः । वरतृप्तौ जघानैव रावणादिनिशाचरान् ॥ ५ ॥ यस्य प्रसादादीशोपि त्रैलोक्यविजयी विभुः । धनाधिपः कुबेरोपि सुरेशोभूच्छचीपतिः ॥ ६ ॥

भैरव बोलेः हे प्राणवल्लभे भैरवि ! रहस्य को सुनो जो मैं कहूंगा । यह जगन्मंगल नामक कवच मन्त्र का शरीर है जिसे पढ़कर या धारण करके साधक तीनों लोकों को क्षण में मोह ले सकता है । नारायण ने भी जिस कवच को धारण करके नारी होकर योगी महेश्वर को भी क्षुब्ध कर दिया था । रघुओं में उत्तम राम ने भी जिसे धारण करके वरतृप्ती होने पर रावण आदि राक्षसों को मारा था । इसके प्रसाद से शिवजी तीनों लोकों के विजेता तथा स्वामी हुए । कुबेर इसे धारण करके धन के स्वामी हुए तथा इन्द्र भी इसको धारण करने से ही देवताओं के राजा हो गये ।

एवं हि सकला देवाः सर्वसिद्धीश्वराः प्रिये ।

हे प्रिये ! इसी प्रकार सभी देवता इसके धारण करने से समस्त सिद्धियों के स्वामी हो गये ।

विनियोग : श्रीजगन्मङ्गलस्यापि कवचस्य ऋषिः शिवः ॥ ७ ॥ छन्दोऽनुष्टुब्देवता च कालिका दक्षिणेरिता ॥ ८ ॥ जगतां मोहने दुष्टविजये भुक्तिमुक्तिषु । योषिदाकर्षणे चैव विनियोगः प्रकीर्तितः ॥ ९ ॥

शिरो मे कालिका पातु क्रींकारैकाक्षरी परा । क्रीं क्रीं क्रीं मे ललाटं च कालिका खड्गधारिणी ॥ १० ॥ हूं हूं पातु नेत्रयुग्मं ह्रीं ह्रीं पातु श्रुती मम । दक्षिणे कालिका पातु घ्राणयुग्मं महेश्वरी ॥ ११ ॥ क्रीं क्रीं क्रीं रसानं पातु हूं हूं पातु कपोलकम् । वदनं सकलं पातु ह्रीं ह्रीं स्वाहास्वरूपिणी ॥ १२ ॥ द्वाविंशत्यक्षरी स्कन्धौ महाविद्या सुखप्रदा । खड्गमुण्डधरा काली सर्वाङ्गमभितोऽवतु ॥ १३ ॥ क्रीं हूं ह्रीं त्र्यक्षरी पातु चामुण्डा हृदयं मम । ऐं हूं ॐ ऐं स्तनद्वंद्वं ह्रीं फट् स्वाहा ककुत्स्थलम् ॥ १४ ॥ अष्टाक्षरी महाविद्या भुजौ पातु सकर्तृका । क्रीं क्रीं हूं हूं ह्री ह्रीं करौ पातु षडक्षरी मम ॥ १५ ॥ क्रीं नाभिं मध्यदेशं च दक्षिणे कालिकावतु क्रीं स्वाहा पातु पृष्ठं च कालिका सा दशाक्षरी ॥ १६ ॥ क्रीं मे गुह्यं सदा पातु कालिकायै नमस्ततः । सप्ताक्षरी महाविद्या सर्वतन्त्रेषु गोपिता ॥ १७ ॥ ह्रीं ह्रीं दक्षिणे कालिका हूं हूं पातु कटिद्वयम् । काली दशाक्षरी विद्या स्वाहा ममोरुयुग्मकम् ॥ १८ ॥ ॐ ह्रीं क्रीं मे स्वाहा पातु कालिका जानुनी सदा । काली हृदयविद्येयं चतुर्वर्गफलप्रदा ॥ १९ ॥ क्रीं ह्री ह्रीं पातु सा गुल्फं दक्षिणे कालिकावतु । क्रीं हूं ह्रीं स्वाहा पदं पातु चतुर्दशाक्षरी मम ॥ २० ॥ खड्गमुण्डधरा काली वरदा भयहारिणी । विद्याभिः सकलाभिः सा सर्वाङ्गमभितोऽवतु ॥ २१ ॥ काली कपालिनी कुल्ला कुरुकुल्ला विरोधिनी । विप्रचित्ता तथोग्रोग्रप्रभा दीप्ताघनत्विषा ॥ २२ ॥ नीला घना बलाका च मात्रा मुद्रामिता च मा । एताः सर्वाः खड्गधरा मुण्डमाला विभूषणाः ॥ २३ ॥ रक्षन्तु दिग्विदिक्षु मां ब्राह्मी नारायणी तथा । माहेश्वरी च चामुण्डा कौमारी चापराजिता ॥ २४ ॥ वाराही नारसिंही च सर्वाश्चामितभूषणाः । रक्षन्तु स्वायुधैर्दिक्षु मां यथा तथा ॥ २५ ॥ इति ते कथितं दिव्यं कवचं परमाद्भुतम् । श्रीजगन्मङ्गलं नाम महाविद्यौघविग्रहम् ॥ २६ ॥ त्रैलोक्याकर्षकं ब्रह्मन् कवचं मन्मुखोदितम् । गुरुपूजां विधायाथ विधिवत् प्रपठेत्ततः ॥ २७ ॥ कवचं त्रिः सकृद्वापि यावज्जीवं च वा पुनः । एतच्छतार्द्धमावर्त्य त्रैलोक्यविजयी भवेत् ॥ २८ ॥ त्रैलोक्यं क्षोभयत्येव कवचस्य प्रसादतः ।

महाकविर्भवेन्मासात्सर्वसिद्धीश्वरो भवेत् ॥ २९ ॥ पुष्पाञ्जलिं कालिकायै मूलेनैवार्पयेत्सकृत् । शतवर्षसहस्राणां पूजायाः फलमाप्नुयात् ॥ ३० ॥ भूर्जे विलिखितं चैतत्स्वर्णस्थं धारयेद्यदि । शिखायां दक्षिणे बाहौ कण्ठे वा धारयेद्यदि ॥ ३१ ॥ त्रैलोक्यं मोहयेत्क्रोधात्त्रैलोक्यं चूर्णयेत्क्षणात् । पुत्रबान्धनवान्श्रीमात्रानाविद्यानिधिर्भवेत् ॥ ३२ ॥ ब्रह्मास्त्रादीनि शस्त्राणि तद्गात्रस्पर्शनात्तत । नाशमायान्ति या नारी वन्ध्या च मृतपुत्रिणी ॥ ३३ ॥ कण्ठे वा वामबाहौ वा कवचस्य च धारणात् । बह्वपत्या जीववत्सा भवत्येव न संशयः ॥ ३४ ॥ न देयं परशिष्येभ्यो ह्यभक्तेभ्यो विशेषतः । शिष्येभ्यो भक्तियुक्तेभ्यश्चान्यथा मृत्युमाप्नुयात् ॥ ३५ ॥ स्पर्द्धामुद्धूय कमलावाग्देवीमन्दिरे मुखे । पौत्रान्तं स्थैर्यमास्थाय निवसत्येव निश्चितम् ॥ ३६ ॥ इदं कवचमज्ञात्वा यो जपेत्कालिदक्षिणम् । शतलक्षं प्रजप्त्वापि तस्य मन्त्रो न सिद्ध्यति । सशस्त्रघातमाप्नोति सोचिरान्मृत्यु माप्नुयात् ॥ ३७ ॥

इति भैरवतन्त्रे भैरवभैरवीसंवादे श्यामादक्षिणकालिकाकवचं समाप्तम् ।

अथ (श्यामा) दक्षिण कालिका कर्पूरस्तोत्र

कपूरं मध्यमात्यस्वरपररहितं सेन्दुवामाक्षियुक्तं बीजंते मातरेतत्त्रिपुरहरवधुः त्रिःकृतं ये जपन्ति । तेषां गद्यानि पद्यानि च मुखकुहरा दुल्लसंत्येव वाचः स्वच्छन्दं ध्वान्तधाराधररुचिरुचिरे सर्वसिद्धिं गतानाम् ॥ १ ॥ ईशानः सेन्दुवामश्रवणपरिगतो बीजमन्यन्महेशि द्वन्द्वं ते मन्दचेता यदि जपति जनो वारमेकं कदाचित् । जित्वा वाचामधीशं धनदमपि चिरं मोहयन्त्यम्बुजाक्षीवृन्दं चन्द्रार्द्धचूडे स भवति सुमहाधोररावावतंसे[1] ॥ २ ॥ ईशो वैश्वानरस्थः शशिधरविलसद्वामनेत्रेण युक्तो बीजं ते द्वन्द्वमन्यद्विगलितचिकुरे कालिके ये जपन्ति । द्वेष्टारं ते च घ्नन्ति त्रिभुवनमपि ते वश्यभावं नयन्ति सृक्कद्वन्द्वास्त्रधाराद्वयधरवदने दक्षिणे कालिकेति ॥ ३ ॥ ऊर्ध्वं वामे कृपाणं करकमलतले छिन्नमुण्डं तथाधः सव्येऽभीतिं वरं च त्रिजगदघहरे दक्षिणे कालिके च । जप्त्वैतन्नाम ये वा तव मनुविभवं धारयन्त्येवमम्ब तेषामष्टौ करस्थाः प्रकटितवदने सिद्धयस्त्र्यंबकस्य ॥ ४ ॥ वर्गाद्यं वह्निसंस्थां विधुरतिवलितं तत्त्रयं कूर्चयुग्मं लज्जाद्वन्द्वं च पश्चात्स्मितमुखि त्वदधष्टद्वयं योजयित्वा । मातर्ये ये जपन्ति स्मरहरमहिले भावयन्ते स्वरूपं ते लक्ष्मीलास्यलीलाकमलदलदृशः कामरूपा भवन्ति ॥ ५ ॥ प्रत्येकं वा द्वयं वा त्रयमपि च परं बीजमत्यन्तगुह्यं त्वन्नाम्ना योजयित्वा सकलमपि सदा भावयन्तो जपन्ति । तेषां नेत्रारविन्दे विहरति कमलावक्त्रशुभ्रांशुबिम्बे वाग्देवी दिव्यमुण्डस्रगतिशयलसत्कण्ठपीनस्तनाढ्ये ॥ ६ ॥ गतासूनां बाहुप्रकटकृतकाञ्चीपरिलसन्नितम्बां दिग्वस्त्रां त्रिभुवनविधात्रीं त्रिनयनाम् । श्मशानस्थे तल्पे शवहृदि महाकालसुरतप्रयुक्तां त्वां ध्यायन् जननि जडचेता अपि कविः ॥ ७ ॥ शिवाभिर्घोराभिः शवनिवहमुण्डास्थिनिकरैः परं संकीर्णायां प्रकटितचितायां हरवधूम् । प्रविष्टां सन्तुष्टामुपरि सुरतेनातियुवतीं सदा त्वां ध्यायन्ति क्वचिदपि न तेषां परिभवः ॥ ८ ॥ वदामस्ते किं वा जननि वयमुच्चैर्ज्जडधियो न धाता नापीशो हरिरपि न ते वेत्ति परमम् । तथापि त्वद्भक्तिर्मुखरयति चास्माकमपि ते तदेतत्क्षन्तव्यं न खलु पशुरोषः समुचितः ॥ ९ ॥ समन्तादापीनस्तन-जघनधृग्यौवनवतीरतासक्तो नक्तं यदि जपति भक्तस्तव मनुम् । विवासास्त्वां ध्यायन्गलितचिकुरस्तस्य वशगाः समस्ताः सिद्धौघा भुवि चिरतरं

१ घोरशावावतंसे इति वा पाठः ।

जीवति कविः ॥१०॥ समाः स्वस्थीभूतो जपति विपरीतो यदि सदा विचिन्त्य त्वां ध्यायन्नतिशयमहाकालसुरताम् । तदा तस्य क्षोणीतलविहरमाणस्य विदुषः कराम्भाजे वश्याः स्मरहरवधूसिद्धिनिवहाः ॥११॥ प्रसूते संसार जननि भवति पालयति च समस्तं क्षित्यादि प्रलयसमये संहरति च । अतस्त्वां धातापि त्रिभुवनपतिः श्रीपतिरपि महेशोपि प्रायः सकलमपि किं स्तौमि भवतीम् ॥१२॥ अनेके सेवन्ते हरगृहिणि गीर्वाणनिवहा विमूढास्ते मातः किमपि नहि जानन्ति परमम् । समाराध्यामाद्यां हरिहरविरञ्च्यादिविबुधैः प्रपन्नोस्मि स्वैरं रतिरसमहानन्दनिरताम् ॥१३॥ धरित्री कीलालं शुचिरपि समीरोपि गगनं त्वमेका कल्याणी गिरिशरमणि कालि सकलम् । स्तुतिः का ते मातस्तव करुणया मामगतिकं प्रसन्ना त्वं भूया भवमनु न भूयान्मम जनुः ॥१४॥ श्मशानस्थः स्वस्थो गलितचिकुरो दिक्पटधरः सहस्रं त्वर्काणां निजगलितवीर्येण कुसुमम् । जपन्स्त्वप्रत्येकं मनुमपि तव ध्याननिरतो महाकालि स्वैरं स भवति धरित्रीपरिवृढः ॥१५॥ गृहे संमार्ज्जन्या परिगलितवीर्यं हि कुसुमं समूलं मध्याह्ने वितरति चितायां कुजदिने । समुच्चार्य प्रेम्णा मनुमपि सकृत्कालि सततं गजारूढो याति क्षितिपरिवृढः सत्कविवरः ॥१६॥ स्वपुष्पैराकीर्णं कुसुमधनुषो मन्दिरमहो पुरो ध्यायं ध्यायं यदि जपति भक्तस्तव मनुम् । स गन्धर्वश्रेणीपतिरिव कवित्वामृतनदीनदेनः पर्यन्ते परमपदलीनः प्रभवति ॥१७॥ त्रिपञ्चारे पीठे शवशिवहृदि स्मेरवदनां महाकालेनोच्चैर्मदनरसलावण्यनिरताम् । समासक्तो नक्तं स्वयमपि रतानन्दनिरतो जनो यस्त्वां ध्यायेदपि जननि स स्यात्स्मरहरः ॥१८॥ सलोमास्थि स्वैरं पललमपि मार्ज्जारमपि ते परं चौष्ट्रं मैषं नरमहिषयोश्छागमपि वा । बलिं ते पूजायामपि वितरतां मर्त्यवसतां सतों सिद्धिः सर्वा प्रतिपदमपूर्वा प्रभवति ॥१९॥ वशी लक्षं मन्त्रं प्रजपति हविष्याशनरतो दिवा मातर्युष्मच्चरणयुगलध्याननिपुणः । परं नक्तं नग्नो निधुवनविनोदेन च मनुं जनो लक्षं सम्यक्स्मरहरसमानः क्षितितले ॥२०॥ इदं स्तोत्रं मातस्तव मनुसमुद्धारणजनुस्वरूपाख्यं पादाम्बुजयुगलपूजाविधियुतम् । निशार्द्धे वा पूजासमय अथवा यस्तु पठति प्रलापस्तस्यापि प्रसरति कवित्वामृतरसः ॥२१॥ कुरंगाक्षीवृन्दस्तमनुसरति प्रेमतरलं वशस्तस्य क्षोणीपतिरपि कुबेरप्रतिनिधिः । रिपुः कारागारं कलयति च तत्केलिकलया चिरं जीवन्मुक्तः स भवति सुभक्तः प्रतिजनुः ॥२२॥

इति भैरवतन्त्रे (शयामा) दक्षिणकालिकाकर्पूरस्तोत्रं सम्पूर्णम् ।

अथ कालीस्तव

प्राग्देहस्थो यदाऽहं तव चरणयुगं नाश्रितो नार्चितोऽहं तेनाद्या कीर्तिं वर्गैर्जठरजदहनैर्बाद्ध्यमानो बलिष्ठः । क्षिप्त्वा जन्मान्तरान्नः पुनरिह भविता क्वाश्रयं क्वापि सेवा क्षन्तव्यो मेऽपराधः प्रकटितवदने कामरूपे कराले ॥१॥ बाल्ये बालाभिलापैर्जडितजडमतिर्बाललीलाप्रसक्तो न त्वां जानामि मातः कलिकलुषहराम्भोगमोक्षप्रदात्रीम् । नाचारो नैव पूजा न च यजनकथा न स्मृतिर्नैव सेवा क्षन्तव्यो० ॥२॥ प्राप्तोऽहं यौवनं चेद्विषधरसदृशैरिन्द्रियैर्दष्टगात्रो नष्टप्रज्ञः परस्त्रीपरधनहरणे सर्वदा साभिलाषः । त्वत्पादाम्भोजयुग्मं क्षणमपि मनसा न स्मृतं तत्कदापि क्षन्तव्यो० ॥३॥ प्रौढे भिक्षाभिलाषी सुतदुहितृकलत्रार्थमन्नादिचेष्टः क्व प्राश्ये कुत्र यामीत्यनुदिनमनिशं चिन्तया मग्नदेहः । नो ते ध्यानं न चास्था न च भजनविधिर्नामसंकीर्त्तनं वा क्षन्तव्यो० ॥४॥ वृद्धत्वे

बुद्धिहीनः कृशविवशतनुः श्वासकासातिसारैः कर्मानर्होऽक्षिहीनः प्रगलितदशनः क्षुत्पिपासाभिभूतः। पश्चात्तापेन दग्धो मरणमनुदिनं ध्येयमात्रं न चान्यत् क्षन्तव्यो मे० ॥ ५ ॥ कृत्वा स्नानं दिनादौ क्वचिदपि सलिलं नादृत्तं नैव पुष्पं ते नैवेद्यादिकं च क्वचिदपि न कृतं नापि भावो न भक्तिः। न न्यासो वै न चैवं तव गुणकथनं नापि चर्चा कृता ते क्षन्तव्यो० ॥ ६ ॥ जानामि त्वां न चाहं भवभयहरणे सर्वसिद्धिप्रदात्रीं नित्यानन्दोदयाढ्यां त्रितयगुणमयीं नित्यशुद्धोदयाढ्याम् । मिथ्याकर्माभिलाषैरनुदिनमभितः पीड़ितो दुःख संघैः क्षन्तव्यो० ॥ ७ ॥ कालाभ्रश्यामलाङ्गीं विगलितचिकुरां खड्गमुण्डाभिरामां त्रासत्राणेष्टदात्रींकुणपगणशिरोमालिनीं दीर्घनेत्राम् । संसारस्यैकसारां भवजननहरां भावितो भावनाभिः क्षान्तव्यो० ॥ ८ ॥ ब्रह्मा विष्णुस्तथेशः परिणमति सदा त्वत्पदाम्भोजयुग्मं भाग्याभावान्न चाहं भवजननि भवत्पादयुग्मं भजामि । नित्यं लोभप्रलोभैः कृतविवशमतिः कामुकस्त्वां प्रयाचे क्षन्तव्यो० ॥ ९ ॥ रागद्वेषैः प्रमत्तः कलुषयुततनुः कामनाभोगलुब्धः कार्याकार्याविचारी कुलमतिरहितः कौलसङ्घैः विहीनः । क्व ध्यानं ते क्व चर्चा क्वच मनुजपनं नैव किञ्चित्कृतं हि क्षन्तव्यो० ॥ १० ॥ रोगी दुःखी दरिद्रः परवशकृपणः पांशुलः पापचेता निद्रालस्यप्रसक्तः सुजठरभरणे व्याकुलः कल्पितात्मा । किं ते पूजाविधानं त्वयि क्व च नु मतिः क्वानुरागः क्व चास्था क्षन्तव्यो० ॥ ११ ॥ मिथ्याव्यामोहरागैः परिवृतमनसः क्लेशसङ्घान्वितस्य क्षुन्निद्रौघान्वितस्य स्मरसुविहरिणः पापकर्मप्रवृतेः । दारिद्यस्य क्व धर्मः क्व च जननरुचिः क्व स्थितिः साधुसंघैः क्षन्तव्यो० ॥ १२ ॥ मातस्तातस्य देहाज्जननिजठरगः संस्थितस्त्वद्वशेऽहं त्वं हर्त्री कारयित्री करणगुणमयी कर्महेतुस्वरूपा । त्वं बुद्धिश्चित्तसंस्थाप्यहमतिभवति सर्वमेतत्क्षमस्व क्षन्तव्यो० ॥ १३ ॥ त्वं भूमिस्त्वं जलं च त्वमसि हुतवहस्त्वं जगद्वायुरूपा त्वं चाकाशं मनश्च प्रकृतिरसि महत्पूर्विका पूर्वपूर्वा । आत्मा त्वं चासि मातः परमसि भवति त्वं परं नैव किञ्चित् क्षन्तव्यो० ॥ १४ ॥ त्वं काली त्वं च तारा त्वमसि गिरिसुता सुन्दरी भैरवी त्वं त्वं दुर्गा छिन्नमस्ता त्वमसि च भुवना त्वं हि लक्ष्मीः शिवा त्वम् । धूमा मातङ्गिनी त्वं त्वमसि च बगला मङ्गलादिस्तवाख्या क्षन्तव्यो० ॥ १५ ॥ स्तोत्रेणानेन देवीं परिणमित जनो यः सदा भक्तियुक्तो दुष्कृत्यादुर्गसंघं परितरति शतं विघ्नता नाशमेति । नाधिर्व्याधिः कदाचिद्भवति यदि पुनस्सर्वदा सापराधः सर्व तत्कामरूपे त्रिभुवनजननि क्षामयेः पुत्रबुद्ध्या ॥ १६ ॥ ज्ञाता वक्ता कवीशो भवति धनपतिर्दानशीलो दयात्मा निःपापी निःकलङ्की कुलपतिकुशलस्सत्यवाग्धार्मिकश्च । नित्यानन्दो दयाढ्यः पशुगणविमुखास्सत्पथाचारशीलः संसाराब्धिं सुखेन प्रतरति गिरिजापादयुग्मावलम्बात् ॥ १८ ॥ इति कालीस्तोत्रं समाप्तम् ।

अथ काल्यष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम् ।

श्रीभैरव उवाच ।

शतनाम प्रवक्ष्यामि कालिकाया वरानने । यस्य प्रपठनाद्वाग्मी सर्वत्र विजयी भवेत् ॥ १ ॥

काली कपालिनी कान्ता कामदा कामसुन्दरी । कालरात्रिः कालिका च कालभैरवपूजिता ॥ २ ॥

कुरुकुल्ला कामिनी च कमनीयस्वभाविनी । कुलीना कलकर्त्री च कुलवर्त्मप्रकाशिनी ॥ ३ ॥

कस्तूरिरसनीला च काम्या कामस्वरूपिणी । ककारवर्णनिलया कामधेनुः करालिका ॥ ४ ॥

कुलकान्ता करालास्या कामार्त्ता च कलावती । कृशोदरी च कामाख्या कौमारी कुलपालिनी ॥ ५ ॥

कुलजा कुलकन्या च कलहा कुलपूजिता । कामेश्वरी कामकान्ता कुञ्जरेश्वरगामिनी ॥ ६ ॥

कामदात्री कामहर्त्री कृष्णा चैव कपर्दिनी । कुमुदा कृष्णदेहा च कालिन्दी कुलपूजिता ॥७॥
काश्यपी कृष्ण माता च कुलिशाङ्गी कला तथा । क्रींरूपा कुलगम्या च कमला कृष्णपूजिता ॥८॥
कृशाङ्गी किन्नरी कर्त्री कलकण्ठी च कार्तिकी । कम्बुकण्ठी कौलिनी च कुमुदा कामजीविनी ॥९॥
कुलस्त्रीकीर्तिका कृत्या कीर्तिश्च कुलपालिका । कामदेवकला कल्पलता कामाङ्गवर्द्धिनी ॥१०॥
कुन्ता च कुमुदप्रीता कदम्बकु सुमोत्सुका । कादम्बिनी कमलिनी कृष्णानन्दप्रदायिनी ॥११॥
कुमारीपूजनरता कुमारीगणशोभिता । कुमारीरञ्जनरता कुमारीव्रतधारिणी ॥१२॥ कङ्काली
कमनीया च कामशास्त्रविशारदा । कपालखट्वांगधरा कालभैरवरूपिणी ॥१३॥
कोटरी कोटराक्षी च काशी कैलास वासिनी । कात्यायिनी कार्यकरी काव्यशास्त्रप्रमोदिनी ॥१४॥
कामाकर्षणरूपा च कामपीठनिवासिनी । कङ्गिनी काकिनी क्रीडाकुत्सिता कलहप्रिया ॥१५॥
कुण्डगोलोद्भवप्राणा कौशिकी कीर्तिवर्द्धिनी । कुम्भस्तनी कटाक्षा च काव्या कोकनदप्रिया ॥१६॥
कान्तारवासिनी कान्तिः कठिना कृष्णवल्लभा । इति ते कथितं देवि गुह्याद्गुह्यतरं परम् ॥१७॥
प्रपठेद्य इदं नित्यं कालीनामशताष्टकम् । त्रिषु लोकेषु देवेशि तस्यासाध्यं न विद्यते ॥१८॥
प्रातःकाले च मध्याह्ने सायाह्ने च सदा निशि । यः पठेत्परया भक्त्या कालीनामशताष्टकम् ॥१९॥
कालिका तस्य गेहे च संस्थानं कुरुते सदा । शून्यागारे श्मशाने वा प्रान्तरे जलमध्यतः ॥२०॥
वह्निमध्ये च संग्रामे तथा प्राणस्य संशये । शताष्टकं जपन्मन्त्री लभते क्षेममुत्तमम् ॥२१॥
कालीं संस्थाप्य विधिवत्स्तुत्वा नामशताष्टकैः । साधकस्सिद्धिमाप्नोति कलिकायाः प्रसादतः ॥२२॥

इति काल्यष्टोत्तरशतनामस्तोत्रं समाप्तम् ।

अथ कालीहृदयप्रारम्भ

श्रीमहाकाल उवाच ।

महाकौतूहलस्तोत्रं हृदयाख्यं महोत्तमम् । शृणु प्रिये महागोप्यं दक्षिणायाः सुगोपितम् ॥१॥
अवाच्यमपि वक्ष्यामि तव प्रीत्या प्रकाशितम् । अन्येभ्यः कुरु गोप्यं च सत्यं सत्यं च शैलजे ॥२॥

श्री महाकाल बोले : हे प्रिये ! उत्तम महा कौतूहलपूर्ण 'हृदय' नामक स्तोत्र मैं तुम्हें बताऊँगा। यह दक्षिणा कालीहृदय अत्यन्त गोप्य होने के कारण इसे गुप्त रक्खा गया है। जिसे नहीं कहना चाहिए उसे भी स्नेह के कारण मैं तुम्हें प्रकट करूँगा। हे शैलजे ! अन्यों से इसे गुप्त रखना। यह मैं सत्य कह रहा हूं, सत्य कह रहा हूं।

श्री देव्युवाच ।

कस्मिन् युगे समुत्पन्नं केन स्तोत्रं कृतं पुरा । तत्सर्वं कथ्यतां शम्भो महेश्वर दयानिधे ॥३॥

श्री देवी बोली : हे शम्भो, दयानिधे महेश्वर! यह स्तोत्र किस युग में उत्पन्न हुआ था। इस स्तोत्र को किसने बनाया था। यह सब आप हमें बतायें।

श्रीमहाकाल उवाच ।

पुरा प्रजापतेः शीर्षच्छेदनं कृतवानहम् । ब्रह्महत्याकृतैः पापैर्भैरवत्वं ममागतम् ॥४॥
ब्रह्महत्याविनाशाय कृतं स्तोत्रं मया प्रिये । कृत्याविनाशकं स्तोत्रं ब्रह्महत्यापहारकम् ॥५॥

श्री महाकाल बोले : बहुत पहले मैंने प्रजापति का शिर काट डाला था। ब्रह्महत्याकृत पापों से मैं भैरव हो गया। हे प्रिये ! मैंने ब्रह्महत्या को नष्ट करने के लिए इस स्तोत्र को बनाया था। यह स्तोत्र कृत्या-विनाशक तथा ब्रह्महत्या-पहारक है।

विनियोग : ॐ अस्य श्रीदक्षिणकाल्या हृदयस्तोत्रमन्त्रस्य श्रीमहाकालऋषिरुष्णिक्छन्दः श्रीदक्षिणकालिका देवता क्रीं बीजं ह्रीं शक्तिः नमः कीलकं सर्वत्र सर्वदा जपे विनियोगः ।

हृदयादिन्यास : ॐ क्रां हृदयाय नमः १ । ॐ क्रीं शिरसे स्वाहा २ । ॐ क्रूँ शिखायै वषट् ३ । ॐ क्रैं कवचाय हुं ४ । ॐ क्रौं नेत्रत्रयाय वौषट् ५ । ॐ क्रः अस्त्राय फट् ६ । इति हृदयादिन्यासः ।

अथ ध्यानम्

ॐ ध्यायेत्कालीं महामायां त्रिनेत्रां बहुरूपिणीम् । चतुर्भुजां ललज्जिह्वां पूर्णचन्द्रनिभाननाम् ॥ १ ॥ नीलोत्पलदलप्रख्यां शत्रुसंघविदारिणीम् । नरमुण्डं तथा खड्गं कमलं वरदं तथा ॥ २ ॥ विभ्राणां रक्तवदनां दंष्ट्रालीं घोररूपिणीम् । अट्टाट्टहासनिरतां सर्वदा च दिगम्बराम् ॥ ३ ॥ शवासनस्थितां देवीं मुण्डमालाविभूषिताम् ।

इति ध्यात्वा महादेवीं ततस्तु हृदयं पठेत् ॥ ४ ॥

इससे महादेवी का ध्यान करके हृदयस्तोत्र का पाठ करे ॥ ४ ॥

ॐ कालिका घोररूपाढ्या सर्वकामफलप्रदा । सर्वदेवस्तुता देवी शत्रुनाशं करोतु मे ॥ ५ ॥ ह्रींह्रींस्वरूपिणी श्रेष्ठा त्रिषु लोकेषु दुर्लभा । तव स्नेहान्मया ख्यातं न देयं यस्य कस्य चित् ॥ ६ ॥ अथ ध्यानं प्रवक्ष्यामि निशामय परात्मिके । यस्य विज्ञानमात्रेण जीवन्मुक्तो भविष्यति ॥ ७ ॥ नागयज्ञोपवीताञ्च चन्द्रार्द्धकृतशेखराम् । जटाजूटाञ्च सञ्चिन्त्य महाकालसमीपगाम् ॥ ८ ॥ एवं न्यासादयस्सर्वे ये प्रकुर्वंति मानवाः । प्राप्नुवन्ति च ते मोक्षं सत्यं वरानने ॥ ९ ॥ यन्त्रं शृणु परं देव्याः सर्वार्थसिद्धिदायकम् । गोप्यं गोप्यतरं गोप्य गोप्यं गोप्यतरं महत् ॥ १० ॥ त्रिकोणं पञ्चकं चाष्टकमलं भूपुरान्वितम् । मुण्डपंक्ति च ज्वालां च कालीयन्त्रं सुसिद्धिदम् ॥ ११ ॥ मन्त्रं तु पूर्वकथितं धारयस्व सदा प्रिये । देव्या दक्षिणकाल्यास्तु नाममालां निशामय ॥ १२ ॥

ॐ कालिका घोररूपा सर्वकामफलप्रदा सर्वदेवस्तुता देवी मेरे शत्रुओं का नाश करें । ह्री ह्रीं स्वरूपिणी श्रेष्ठा देवी तीनों लोकों में दुर्लभ है, तुम्हारे स्नेह से मैंने तुम्हें बताया है । इसे ऐरे गैरे को न देना । हे परात्मिके ! मैं उस देवी का ध्यान करूँगा, जिसके विज्ञानमात्र से तुम जीवन्मुक्त हो जाओगी । नाग का यज्ञोपवीत धारण किये, अर्धचन्द्र को शेखर के रूप में धारण किये, जटाजूट से विभूषित महाकाल के समीप रहने वाली उस देवी को सोचकर जो मनुष्य न्यास आदि करते हैं , वे मोक्ष पाते हैं । हे वारानने ! मैं सत्य कहता हूं । सर्वार्थसिद्धि देनेवाला देवी का मन्त्र सुनो । यह अत्यन्त गोपनीयतर है और गोपनीयतम है । त्रिकोण, पञ्चक तथा अष्टकमल भूपूर से युक्त मुण्डपंक्ति तथा ज्वाला से युक्त काली मन्त्र उत्तम सिद्धिदायक है । हे प्रिये ! पूर्वकल्पित मंत्र को सदा धारण करो । दक्षिणकाली की नाममाला को सुनो ।

दक्षिणकाली नाम माला :

काली दक्षिणकाली च कृष्णारूपा परात्मिका । मुण्डमाला विशालाक्षी सृष्टिसंहारकारिका ॥ १३ ॥ स्थितिरूपा महामाया योगनिद्रा भगात्मिका । भगसर्पिःपानरता भगोद्योता भगाङ्गजा ॥ १४ ॥ आद्या सदा नवा घोरा महातेजाः करालिका । प्रेतवाहा सिद्धिलक्ष्मीरनिरुद्धा सरस्वती ॥ १५ ॥ एतानि नाममाल्यानि ये पठन्ति दिनेदिने । तेषां दासस्य दासोऽहं सत्यं-सत्यं महेश्वरि ॥ १६ ॥ ॐ कालीं कालहरां देवी कङ्कालबीजरूपिणीम् । कालरूपां कलातीतां कालिकां दक्षिणां भजे ॥ १७ ॥ कुण्डगोलप्रियां देवीं स्वयंभूकुसुमे रताम् । रतिप्रियां महारौद्रीं कालिकां प्रणमाप्यहम् ॥ १८ ॥ दूतीप्रियां महादूतीं दूतीयोगेश्वरीं पराम् । दूतीयोगाद्भवरतां दूतीरूपां नमाम्यहम् ॥ १९ ॥

क्रीं मन्त्रेण जलं जप्त्वा सप्तधा सेचनेन तु । सर्वे रोगा विनश्यन्ति नात्र कार्या विचारणा ॥ २० ॥ क्रींस्वाहान्तैर्महामन्त्रैश्चन्दनं साधयेत्ततः । तिलकं क्रियते प्राज्ञैर्लोको वश्यो भवेत्सदा ॥ २१ ॥

क्रीं मन्त्र से जल को सात बार अभिमन्त्रित करके सेचन करने से सभी रोग विनष्ट हो जाते हैं। इसमें विचार नहीं करना चाहिए। 'क्रीं स्वाहा' इस मन्त्र से चन्दन घिसकर तैयार करे। इससे बुद्धिमान मनुष्य तिलक करे तो संसार उसके वश में हो जावे ।

क्रीं हूं ह्रीं मन्त्रजप्तैश्च ह्यक्षतैः सप्तभिः प्रिये । महाभयविनाशश्च जायते नात्र संशयः ॥ २२ ॥ क्रीं ह्रीं हूं स्वाहामन्त्रेण श्मशानाग्निं च मन्त्रयेत् । शत्रोर्गृहे प्रतिक्षिप्त्वा शत्रोर्मृत्युर्भविष्यति ॥ २३ ॥

हे प्रिये ! क्रीं हूं ह्रीं मन्त्र से सात बार अभिमन्त्रित अक्षतों द्वारा महाभय का विनाश होता है, इसमें कोई संशय नहीं है। 'क्रीं ह्रीं हूं स्वाहा' इस मन्त्र से श्मशान की अग्नि को अभिमन्त्रित करके शत्रु के घर में डाल देने पर शत्रु की मृत्यु हो जायगी ।

हूं ह्रीं क्रीं चैव उच्चाटे पुष्पं संशोध्य सप्तधा। रिपूणां चैव चोच्चाटं नयत्येव न संशयः ॥ २४ ॥ आकर्षणे च क्रीं क्रीं क्रीं जप्त्वाक्षतान् प्रतिक्षिपेत् । सहस्रयोजनस्था च शीघ्रमागच्छति प्रिये ॥ २५ ॥

'हूं ह्रीं क्रीं' मन्त्र से फूल को सात बार अभिमन्त्रित करके उच्चारण में प्रयोग करने से यह शत्रु का उच्चाटन करता है। हे प्रिये ! आकर्षण में क्रीं क्रीं क्रीं जपकर अक्षतों को फेंके तो हजार योजन पर रहनेवाली स्त्री भी शीघ्र आ जाती है ।

क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं च कज्जलं शोधितं तथा। किलकेन जगन्मोहः सप्तधा मन्त्रमाचरेत् ॥ २६ ॥

"क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं" इस मन्त्र से सात बार शोधित काजल या तिलक लगाने से मनुष्य संसार को मोह सकता है।

हृदयं परमेशानि सर्वपापहरं परम् । अश्वमेधादियज्ञानां कोटिकोटिगुणोत्तरं ॥ २७ ॥ कन्यादानादिदानानां कोटिकोटिगुणं फलम् । दूतीयागादियागानां कोटिकोटिफलं स्मृतम् ॥ २८ ॥ गङ्गादिसर्वतीर्थानां फलं कोटिगुणं स्मृतम् । एकधा पाठमात्रेण सत्यं सत्यं मयोदितम् ॥ २९ ॥

हे परमेशानि : यह हृदयस्तोत्र समस्त पापों का हरण करने वाला श्रेष्ठ स्तोत्र है। अश्वमेध आदि यज्ञों का कोटि कोटि गुणा अधिक, कन्यादान आदि दानों से कोटिकोटि गुना अधिक, दूती यागादि से कोटि कोटि गुना अधिक, गंगा आदि तीर्थों से कोटि कोटि गुना अधिक फल एक बार इस स्तोत्र के पाठ से कहा गया है। मेरा यह कथन सत्य है ।

कौमारीस्वेष्टरूपेण पूजां कृत्वा विधानतः । पठेत्स्तोत्रं महेशानि जीवन्मुक्तस्स उच्यते ॥ ३० ॥ रजस्वलाभगं दृष्ट्वा पठेदेकाग्रमानसः । लभते परमं स्थानं देवीलोके वरानने ॥ ३१ ॥ महादुःखे महारोगे महासङ्कटके दिने । महाभये महाघोरे पठेतस्तोत्रं महोत्तमम् । सत्यं सत्यं पुनस्सत्यं गोपायेन्मातृजारवत् ॥ ३२ ॥ इति कालीहृदयं समाप्तम् ।

अपनी इच्छानुसार कुमारी की विधानपूर्वक पूजा करके जो इस स्तोत्र को पढ़ता है, हे महेशानि! वह जीवन्मुक्त कहा जाता है। हे वरानने ! रजस्वलाभग को देखकर जो एकाग्रमन होकर इस सर्वोत्तम स्तोत्र का पाठ करता है, वह परम स्थान को पाता है। महादुःख में, महारोग में, महासंकट के दिन में, महाभय में, महाघोर भय में इस उत्तम स्तोत्र का पाठ करना चाहिए। यह सत्य है, सत्य है, यह परम गोपनीय है, इसे मातृजारवत् गुप्त रखना चाहिए ।

इति कालीहृदय समाप्त ।

अथ कालीसहस्रनामस्तोत्रम्

कैलासशिखरे रम्ये नानादेवगणावृते । नानावृक्षलताकीर्णे नानापुष्पैरलंकृते ॥ १ ॥ चतुर्मण्डलसंयुक्ते शृङ्गारमण्डपे स्थितम् । समाधौ संस्थितं शान्तं क्रीडन्तं योगिनीप्रियम् ॥ २ ॥ तत्र मौनधरं दृष्ट्वा देवी पृच्छति शङ्करम् । देव्युवाच । किं त्वया जप्यते देव किं त्वया स्मर्य्यते सदा ॥ ३ ॥ सृष्टिः कुत्र विलीनास्ति पुनः कुत्र प्रजायते । ब्रह्माण्डकारणं यत्तत् किमाद्यं कारणं महत् ॥ ४ ॥ मनोरथमयी सिद्धिस्तथा वांछामयी शिव । तृतीया कल्पनासिद्धिः कोटिसिद्धीश्वरत्वकम् ॥ ५ ॥ शक्तिपाताष्टदशकं चराचरपुरीगतिः । महेन्द्रजालमिन्द्रादिजालानां रचना तथा ॥ ६ ॥ अणिमाद्यष्टकं देव परकायप्रवेशनम् । नवीनसृष्टिकरणं समुद्रशोषणं तथा ॥ ७ ॥ अमायां चन्द्रसन्दर्शो दिवा चन्द्रप्रकाशनम् । चन्द्राष्टकं चाष्टदिक्षु तथा सूर्याष्टकं शिव ॥ ८ ॥ जले जलमयत्वं च वह्नौ वह्निमयत्वकम् । ब्रह्मविष्ण्वादिनिर्माणमिन्द्राणां करणं करे ॥ ९ ॥ पातालगुटिका यक्षवेतालपञ्चकं तथा । रसायनं तथा गुप्तिस्तथैव चाखिलाञ्जनम् ॥ १० ॥ महामधुमती सिद्धिस्तथा पद्मावती शिव । तथा भोगवती सिद्धिर्यावत्यः सन्ति सिद्धयः ॥ ११ ॥ केन मन्त्रेण तपसा कलौ पापसमाकुले । आयुष्यं पुण्यरहिते कथं भवति तद्वद ॥ १२ ॥ श्रीशिव उवाच । विना मन्त्रं विना स्तोत्रं विनैव तपसा प्रिये । विना बलिं विना न्यासं भूतशुद्धिं विना प्रिये ॥ १३ ॥ विना ध्यानं विना यन्त्रं विना पूजा विना प्रिये । विना क्लेशादि भिर्देवि देहदुःखादिभिर्विना ॥ १४ ॥ सिद्धिराशु भवेद्येन तदेष कथ्यते मया । शून्ये ब्रह्माण्डगोले तु पञ्चाशच्छून्यमध्यके ॥ १५ ॥ पञ्चशून्यस्थिता तारा सर्वान्ते कालिका स्मृता । अनन्तकोटिब्रह्माण्डराजदन्ताग्रके शिवे ॥ १६ ॥ स्थाप्य शून्यालयं कृत्वा कृष्णवर्णं विधाय च । महानिर्गुणरूपा च वाचातीता परा कला ॥ १७ ॥ क्रीडायां संस्थिता देवी शून्यरूपा प्रकल्पयेत् । सृष्टेरारम्भकार्ये तु दृष्ट्वा छाया तया यदा ॥ १८ ॥ इच्छाशक्तिस्तु सा जाता तया कालो विनिर्मितः । प्रतिबिम्बं तत्र दृष्टं जाता ज्ञानाभिधा तु सा ॥ १९ ॥ इदमेतत्किंविशिष्टं जांतं विज्ञानकं मुदा । तदा क्रियाभिधा जाता तदीक्षातो महेश्वरि ॥ २० ॥ ब्रह्माण्डगोले देवेशि राजदन्त स्थितं च यत् । सा क्रिया स्थापयामास स्वस्वस्थानक्रमेण च ॥ २१ ॥ तत्रैव स्वेच्छया देवि सामरस्यपरायणा । तदच्छिा कथ्यते देवि यथावदवधारय ॥ २२ ॥ युगादिसमये देवि शिवं परगुणोत्तमम् । तदिच्छा निर्गुणं शान्तं सच्चिदानन्दविग्रहम् ॥ २३ ॥ शाश्वतं सुन्दरं शुक्लं सर्वदेवयुतं वरम् । आदिनाथं गुणातीतं काल्यां संयुतमीश्वरम् ॥ २४ ॥ विपरीतरतं देवं सामरस्य परायणम् । पूजार्थमागतं देवगन्धर्वाप्सरसाङ्गणम् ॥ २५ ॥ यक्षिणीं किन्नरीमन्यामुर्वश्याद्यां तिलोत्तमाम् । वीक्ष्य तं मायया प्राह सुन्दरी प्राणवल्लभा ॥ २६ ॥ त्रैलोक्यसुन्दरी प्राणस्वामिनी प्राणरञ्जिनी । किमागतं भवत्याद्य मम भाग्यार्णवो महान् ॥ २७ ॥ उक्त्वा मौनधरं शम्भुं पूजयन्त्यप्सरोगणाः । अप्सरस ऊचुः । संसारात्तारितं देव त्वया विश्वजनप्रिय ॥ २८ ॥ सृष्टेरारम्भकार्यार्थमुद्युक्तोसि महाप्रभो । वेश्याकृत्यमिदं देव मंगलार्थप्रगायनम् ॥ २९ ॥ प्रयाणोत्सवकाले तु समारम्भे प्रगायनम् । गुणाद्यारम्भकालो हि वर्त्तते शिव शङ्कर ॥ ३० ॥ इन्द्राणीकोटयः सन्ति तस्याः प्रसवबिन्दुतः । ब्रह्माणी वैष्णवी चैव माहेशी कोटिकोटयः ॥ ३१ ॥ तव सामरसानन्द दर्शनार्थं समुद्भवाः । संजाताश्चाग्रतो देव चास्माकं सौख्यसागर ॥ ३२ ॥ रतिं

हित्वा कामिनीनां नान्यत्सौख्यं महेश्वर । सा रतिर्दृश्यतेऽस्माभिर्महत्सौख्यार्थकारिका ॥ ३३ ॥ एवमेतत्तु चास्माभिः कर्त्तव्यं भर्तृणा सह । एवं श्रुत्वा महादेवी ध्यानावस्थितमानसः ॥ ३४ ॥ ध्यानं हित्त्वा मायया तु प्रोवाच कालिकां प्रति । कालि कालि प्रिये रुण्डमाले भैरववादिनि ॥ ३५ ॥ शिवारूपधरे क्रूरे घोरदंष्ट्रे भयानके । त्रैलोक्यसुन्दरकरी सुन्दर्यः सन्ति मेऽग्रतः ॥ ३६ ॥ सुन्दरीवीक्षणं कर्म कुरु कालि प्रिये शिवे । ध्यानं मुञ्च महादेवि ता गच्छन्ति गृहं प्रति ॥ ३७ ॥ तव रूपं महाकालि महाकालप्रियङ्करम् । एतासां सुन्दरं रूपं त्रैलोक्यप्रियकारकम् ॥ ३८ ॥ एवं मायाप्रभाविष्टो महाकालो वदन्निति । ततः कालवचः श्रुत्वा कालं प्राह च कालिका ॥ ३९ ॥ माययाच्छाद्य चात्मानं निजस्त्रीरूपधारिणी । इतः प्रभृति स्त्रीमात्रं भविष्यति युगेयुगे ॥ ४० ॥ वल्याद्यौषधयो देव दिवा वल्लीस्वरूपताम् । रात्रौ स्त्रीरूपमासाद्य रतिकेलिं परस्परम् ॥ ४१ ॥ अज्ञानं चैव सर्वेषां भविष्यति युगेयुगे । एवं शापं च दत्त्वा तु पुनः प्रोवाच कालिका ॥ ४२ ॥ विपरीतरतिं कृत्वा चिन्तयन्ति भजन्ति ये । तेषां वरं प्रदास्यामि नित्यं तत्र वसाम्यहम् ॥ ४३ ॥ इत्युक्त्वा कालिका विद्या तत्रैवान्तरधीयत् । त्रिंशत्त्रिखर्वषड्वृन्दनवत्यर्बुदकोटयः ॥ ४४ ॥ दर्शनार्थं तपस्तेपे सा वै कुत्र गता प्रिया । मम प्राणप्रिया देवि हाहा प्राणप्रिये शिवे ॥ ४५ ॥ किं करोमि क्व गच्छामि चे त्येवं भ्रमसंकुलः । तस्याः काल्या दया जाता मम चिन्तापरः शिवः ॥ ४६ ॥ यन्त्रप्रस्तारबुद्धिस्तु काल्या दत्तातिसत्त्वरम् । यन्त्रयागं तदारभ्य पूर्वं बिन्दुत्वगोचरम् ॥ ४७ ॥ श्री चक्रयन्त्रप्रस्ताररचनाभ्यासतत्परः । इतस्ततो भ्राम्यमाणस्त्रैलोक्यं चक्रमध्यकम् ॥ ४८ ॥ चक्रपारदर्शनार्थं कोट्यर्बुदयुगं गतम् । भक्तप्राणप्रिया देवी महाश्रीचक्रनायिका ॥ ४९ ॥ तत्र बिन्दौ परं रूपं सुन्दरं सुमनोहरम् । रूपं जातं महेशानि जाग्रत त्रिपुरसुन्दरि ॥ ५० ॥ रूपं दृष्ट्वा महादेवो राजराजेश्वरोभवत् । तस्याः कटाक्षमात्रेण तस्या रूपधरः शिवः ॥ ५१ ॥ विनाशृङ्गारसंयुक्ता तदा जाता महेश्वरी । विना कल्यंशतो देवि जगत्स्थावरजङ्गमम् ॥ ५२ ॥ न शृंगारो न शक्तित्वं क्वापि नास्ति महेश्वरि । सुन्दर्या प्रार्थिता काली तुष्टा प्रोवाच कालिका ॥ ५३ ॥ सर्वासां नेत्रकेशे च ममांशोऽत्र भविष्यति । पूर्वावस्थासु देवेशि ममांशस्तिष्ठति प्रिये ॥ ५४ ॥ सावस्था तरुणाख्या तु तदन्तेनैव तिष्ठति । मद्भक्तानां महेशानि सदा तिष्ठति निश्चितम् ॥ ५५ ॥ शक्तिस्तु कुण्ठिता जाता तथा रूपं न सुन्दरम् । चिन्ताविष्ठा तु मलिना जाता तत्र तु सुन्दरी ॥ ५६ ॥ क्षणं स्थित्वा ध्यानपरा कालीचिन्तनतत्परा । तदा काली प्रसन्नाभूत्क्षणार्द्धेन न महेश्वरि ॥ ५७ ॥ वरं ब्रूहि वरं ब्रूहि वरं ब्रूहीति सादरम् । सुन्दर्युवाच । मम सिद्धिवरं देहि वरोयं प्रार्थ्यते मया ॥ ५८ ॥ तादृगुपायं कथय येन शक्तिर्भविष्यति । श्रीकाल्युवाच । मम नामसहस्रं च मया पूर्वं विनिर्मितम् ॥ ५९ ॥ मत्स्वरूपं ककाराख्यं महासाम्राज्यनामकम् । वरदानाभिधन्नाम क्षणार्द्धाद्वरदायकम् ॥ ६० ॥ तत्पठस्व महामाये तव शक्तिर्भविष्यति । ततः प्रभृति श्रीविद्या तन्नामपाठतत्परा ॥ ६१ ॥ तदेव नामसाहस्रं सुन्दरीशक्तिदायकम् । कथ्यते नामसाहस्रं सावधानमनाः शृणु ॥ ६२ ॥ सर्वसाम्राज्यमेधाख्यनामसाहस्रकस्य च । महाकालऋषिः प्रोक्त उष्णिक्छन्दः प्रकीर्तितम् ॥ ६३ ॥ देवता दक्षिणा काली माया बीजं प्रकीर्तितम् । हूं शक्तिः कालिका बीजं कीलकं परिकीर्तितम् ॥ ६४ ॥ ध्यानं च पूर्ववत्कृत्वा साधय स्वेष्टसाधनम् । कालिकावरदानादिस्वेष्टार्थे विनियोगतः । कीलकेन षडङ्गानि षड्दीर्घाब्जेन कारयेत् ॥ ६५ ॥

विनियोग : ॐ अस्य श्रीसर्वसाम्राज्यमेधानाम कालीरूपककारात्मकसहस्रनामस्तोत्रमन्त्रस्य

महाकालऋषिरनुष्टुप्छन्दः श्रीदक्षिणमहाकाली देवता ह्रीं बीजं हूं शक्तिः क्रीं कीलकं कालीवरदानाद्यखिलेष्टार्थे पाठे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास : ॐ महाकालऋषये नमः शिरसि १। अनुष्टुप्छन्दसे नमः मुखे २। श्रीदक्षिणमहाकालीदेवतायै नमः हृदये ३। ह्रीं बीजाय नमः गुह्ये ४। हूं शक्तये नमः पादयोः ५। क्रीं कीलकाय नमः नाभौ ६। विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ७। इति ऋष्यादिन्यासः।

कराङ्गन्यास : ॐ क्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः १। ॐ क्रीं तर्जनीभ्यां नमः २। ॐ क्रूं मध्यमाभ्यां नमः ३। ॐ क्रैं अनामिकाभ्यां नमः ४। ॐ क्रौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५। ॐ क्रः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ६। इति कराङ्गन्यासः।

हृदयादि षडङ्गन्यास : ॐ क्रां हृदयाय नमः १। ॐ क्रीं शिरसे स्वाहा २। ॐ क्रूं शिखायै वषट् ३। ॐ क्रैं कवचाय हुं ४। ॐ क्रौं नेत्रत्रयाय वौषट् ५। ॐ क्रः अस्त्राय फट् ६। इति हृदयादिषडङ्गन्यासः।

काली ध्यान एवं सहस्रनाम स्तोत्र

ॐ करालवदनां घोरां मुक्तकेशीं चतुर्भुजाम्। कालिकां दक्षिणां दिव्यां मुण्डमालाविभूषिताम्। सद्यश्छिन्नशिरःखड्गवामोर्ध्वाधः कराम्बुजाम्। अभयं वरदं चैव दक्षिणधोर्ध्वपाणिकाम्। महामेघप्रभां श्यामां तथा चैव दिगम्बराम्। कण्ठावसक्तमुण्डालीगलद्रुधिरचर्चिताम्। कर्णावतंसतानीतशवयुग्मभयानकाम्। घोरदंष्ट्राकरालास्यां पीनोन्नतपयोधराम्। शवानां करसंघातैः कृतकाञ्चीं हसन्मुखीम्। सृक्कादयगलद्रक्तधाराविस्फुरिताननाम्। घोररूपां महारौद्रीं श्मशानालयवासिनीम्। दन्तुरां दक्षिणव्यापिमुक्तलम्बकचोच्चयाम्। शवरूपमहादेवहृदयोपरि संस्थिताम्। शिवाभिर्घोररूपाभिश्चतुर्दिक्षु समन्विताम्। महाकालेन सार्द्धोर्द्धमुपविष्टरतातुराम्। सुखप्रसन्नवदनां स्मेराननसरोरुहाम्। एवं सञ्चिन्तयेद्देवीं श्मशानालयवासिनीम् ॥६६॥ ॐ क्रीं काली क्रूं कराली च कल्याणी कमला कला। कलावती कलाढ्या च कलापूज्या कलात्मिका ॥६७॥ कलादृष्टा कलापुष्टा कलामस्ता कलाकरा। कलाकोटि-समाभासा कलाकोटिप्रपूजिता ॥६८॥ कलाकर्मकलाधारा कलापारा कलागमा। कलाधारा कमलिनी ककारा करुणा कविः ॥६९॥ ककारवर्णसर्वांगी कलाकोटिप्रभूषिता। ककारकोटिगुणिता ककारकोटिभूषणा ॥७०॥ ककारवर्णहृदया ककारमनुमण्डिता। ककारवर्णनिलया काकशब्दपरायणा ॥७१॥ कवीरास्फालनरता कमलाकरपूजिता। कमलाकरनाथा च कमलाकररूपधृक् ॥७२॥ कमलाकरसिद्धिस्था कमलाकरपारदा। कमलाकरमध्यस्था कमलाकरतोषिता ॥७३॥ कथंकारपरालापा कथंकारपरायणा। कथंकारपदान्तस्था कथंकारपदार्थभूः ॥७४॥ कमलाक्षी कमलजा कमलाक्षप्रपूजिता। कमलाक्ष वरोद्युक्ता ककारा कर्बूराक्षरा ॥७५॥ करतारा करच्छिन्ना करश्यामा करार्णवा। करपूज्या कररता करदा करपूजिता ॥७६॥ करतोया करामर्षा कर्मनाशा करप्रिया। करप्राणा करकजा करकाकरकान्तरा ॥७७॥ करकाकचलरूपा च करकाचलशोभिनी। करकाचलपुत्री च करकाचलतोषिता ॥७८॥ करकाचलगेहस्था करकाचलरक्षिणी। करकाचलसम्मान्या करकाचलकारिणी ॥७९॥ करकाचलवर्षाढ्या करकाचलरञ्जिता। करकाचलकान्तारा करकाचलमालिनी ॥८०॥ करकाचलभोज्या च करकाचलरूपिणी। करामलकसंस्था च करामलक सिद्धिदा ॥८१॥ करामलकसंपूज्या करामलकतारिणी। करामलककाली च करामलकरोचिनी ॥८२॥

करामलकमाता च करामलकसेविनी। करामलकवद्ध्येया करामलकदायिनी ॥८३॥ कञ्जनेत्रा कञ्जगतिः कञ्जस्था कञ्जधारिणी। कञ्जमालप्रियकरी कञ्जरूपा च कञ्जजा ॥८४॥ कञ्जजातिः कञ्जगतिः कञ्जहोमपरायणा। कञ्जमण्डलमध्यस्था कञ्जाभरणभूषिता ॥८५॥ कञ्जसंमाननिरता कञ्जोत्पत्तिपरायणा। कञ्जराशिसमाकारा कञ्जारण्यनिवासिनी ॥८६॥ करञ्जवृक्षमध्यस्था करञ्जवृक्षवासिनी। करञ्जफलभूषाढ्या करञ्जारण्यवासिनी ॥८७॥ करञ्जमालाभरणा करवालपरायणा। करवालप्रहृष्टात्मा करवालप्रिया गतिः ॥८८॥ करवालप्रिया कंथा करवालविहारिणी। करवालमयी कर्म्मा करवालप्रियंकरी ॥८९॥ कबन्धमालाभरणा कबन्धराशिमध्यगा। कबन्धकूटसंस्थाना कबन्धानंतभूषणा ॥९०॥ कबन्धनादसन्तुष्टा कबन्धासनधारिणी। कबन्धगृहमध्यस्था कबन्धवनवासिनी ॥९१॥ कबन्धकाञ्चीकरणी। कबन्धराशिभूषणा। कबन्धमाला जयदा। कबन्धदेहवासिनी ॥९२॥ कबंधासनमान्या च कपालाकल्पधारिणी। कपालमालामध्यस्था कपालव्रततोषिता ॥९३॥ कपालदीपसंतुष्टा कपालदीपरूपिणी। कपालदीपवरदा कपालकज्जलस्थिता ॥९४॥ कपालमाला जयदा कपालजपतोषिणी। कपालसिद्धिसंहृष्टा कपालभोजनोद्यता ॥९५॥ कपालव्रतसंस्थाना कपालकमलालया। कवित्वामृतसारा च कवित्वामृतसागरा ॥९६॥ कवित्वसिद्धिसंहृष्टा कवित्वादानकारिणी। कविपूज्या कविगतिः कविरूपा कविप्रिया ॥९७॥ कविब्रह्मानन्दरूपा कवित्वव्रततोषिता। कविमानससंस्थाना कविवांछाप्रपूरिणी ॥९८॥ कविकण्ठस्थिता कंह्रीं कंकंकंकविपूर्तिदा। कज्जला कज्जलादानमानसा कज्जलप्रिया ॥९९॥ कपालकज्जलसमा कज्जलेशप्रपूजिता। कज्जलार्णवमध्यस्था कज्जलानन्दरूपिणी ॥१००॥ कज्जलप्रियसंतुष्टा कज्जलप्रियतोषिणी। कपालमालाभरणा कपालकरभूषणा ॥१०१॥ कपालकरभूषाढ्या कपालचक्रमण्डिता ॥ कपालकोटिनिलया कपालदुर्गकारिणी ॥१०२॥ कपालगिरिसंस्थाना कपालचक्रवासिनी। कपालपात्रसंतुष्टा कपालार्घ्यपरायणा ॥१०३॥ कपालार्घ्यप्रियप्राणा कपालार्घ्यवरप्रदा। कपालचक्ररूपा च कपालरूपमात्रगा ॥१०४॥ कदली कदलीरूपा कदलीवनवासिनी। कदलीपुष्पसंप्रीता कदलीफलमानसा ॥१०५॥ कदलीहोमसंतुष्टा कदलीदर्शनोद्यता। कदलीगर्भमध्यस्था कदलीवनसुन्दरी ॥१०६॥ कदम्बपुष्पनिलया कदम्बवनमध्यगा। कदम्बकुसुमामोदा कदम्बवनतोषिणी ॥१०७॥ कदम्बपुष्पसंपूज्या कदम्बपुष्पहोमदा। कदंबपुष्पमध्यस्था कदम्बफलभोजिनी ॥१०८॥ कदम्बकाननान्तःस्था कदंबाचलवासिनी। कक्षपा कक्षपाराध्या कक्षपासनसंस्थिता ॥१०९॥ कर्णपूरा कर्णनासा कर्णाढ्या कालभैरवी। कलप्रीता कलहदा कलहातुरा ॥११०॥ कर्णयक्षी कर्णावार्ता कथिनी कर्णसुन्दरी। कर्णपिशाचिनी कर्णमञ्जरी कपिकक्षदा ॥१११॥ कविकक्षविरूपाढ्या कविकक्षस्वरूपिणी। कस्तूरीमृगसंस्थाना कस्तूरीमृगरूपिणी ॥११२॥ कस्तूरीमृगसन्तोषा कस्तूरीमृगमध्यगा। कस्तूरीरसनीलांगी कस्तूरीगन्धतोषिता ॥११३॥ कस्तूरी पूजकप्राणा कस्तूरीपूजकप्रिया। कस्तूरीप्रेमसंतुष्टा कस्तूरीप्राणधारिणी ॥११४॥ कस्तूरीपूजकानन्दा कस्तूरीगन्धरूपिणी। कस्तूरीमालिकारूपा कस्तूरीभोजनप्रिया ॥११५॥ कस्तूरीतिलकानन्दा कस्तूरीतिलकप्रिया। कस्तूरीहोमसंतुष्टा करस्तूरीतर्पणोद्यता ॥११६॥ कस्तूरीमार्ज्जनोद्युक्ता कस्तूरीचक्रपूजिता। कस्तूरीपुष्पसंपूज्या कस्तूरीचर्वणोद्यता ॥११७॥ कस्तूरीगर्भमध्यस्था कस्तूरीवस्त्रधारिणी। कस्तूरिकामोदरता कस्तूरी

वनवासिनी ॥११८॥ कस्तूरीवनसंरक्षा कस्तूरीप्रेमधारिणी। कस्तूरीशक्तिनिलया कस्तूरीशक्तिकुण्डगा ॥११९॥ कस्तूरीकुण्डसंस्नाता कस्तूरीकुण्डमञ्जना। कस्तूरीजीवसंतुष्टा कस्तूरीजीवधारिणी ॥१२०॥ कस्तूरीपरमामोदा कस्तूरीजीवनक्षमा। कस्तूरीजातिभावस्था कस्तूरीगन्धचुम्बना ॥१२१॥ कस्तूरीगन्धसंशोभाविराजितकपालभूः। कस्तूरीमदनांतःस्था कस्तूरीमदहर्षदा ॥१२२॥ कस्तूरीकवितानाढ्या कस्तूरीगृहमध्यगा। कस्तूरीस्पर्शकप्राणा कस्तूरीविन्दकांतका ॥१२३॥ कस्तूर्यामोदरसिका कस्तूरीक्रीडनोद्यता। कस्तूरीदाननिरता कस्तूरीवरदायिनी ॥१२४॥ कस्तूरीस्थापनासक्ता कस्तूरीस्थानरञ्जिनी। कस्तूरीकुशलप्रश्ना कस्तूरीस्तुतिवन्दिता ॥१२५॥ कस्तूरीवन्दकाराध्या कस्तूरीस्थानवासिनी। कहरूपा कहाढ्या च कहानन्दा कहात्मभूः ॥१२६॥ कहपूज्या कहात्याख्या कहहेया कहात्मिका। कहमालाकण्ठभूषा कहमन्त्रजपोद्यता ॥१२७॥ कहनामस्मृतिपरा कहनामपरायणा। कहपरायणरता कहदेवी कहेश्वरी ॥१२८॥ कहहेतुकहानन्दा कहनादपरायणा। कहमाता कहांतःस्था कहमन्त्रकहेश्वरा ॥१२९॥ कहज्ञेया कहाराध्या कहध्यानपरायणा। कहतन्त्रा कहकहा कहचर्यापरायणा ॥१३०॥ कहाचारा कहगतिः कहताण्डवकारिणी। कहारण्या कहगतिः कहशक्तिपरायणा ॥१३१॥ कहराज्यनता कर्म्मसाक्षिणी कर्मसुन्दरी। कर्मविद्या कर्मगतिः कर्मतन्त्रपरायणा ॥१३२॥ कर्ममात्रा कर्मगात्रा कर्मधर्मपरायणा। कर्मरेखानाशकर्त्री कर्मरेखाविनोदिनी ॥१३३॥ कर्मरेखामोहकरी कर्मकीर्तिपरायणा। कर्मविद्या कर्मसारा कर्माधारा च कर्मभूः ॥१३४॥ कर्मकारी कर्महारी कर्मकौतुकसुन्दरी। कर्मकाली कर्मतारा कर्मच्छिन्ना च कर्मदा ॥१३५॥ कर्मचाण्डालिनी कर्मवेदमाता च कर्मभूः। कर्मकाण्डरतानन्ता कर्मकाण्डानुमानिता ॥१३६॥ कर्मकाण्डपरीणाहा कमठी कमठाकृतिः। कमठाराध्यहृदया कमठाकण्ठसुन्दरी ॥१३७॥ कमठासनसंसेव्या कमठी कर्मतत्परा। करुणाकरकान्ता च करुणाकरवन्दिता ॥१३८॥ कठोराकरमाला च कठोरकुचधारिणी। कपर्दिनी कपटिनी कठिना कङ्कभूषणा ॥१३९॥ करभोरूः कठिनदा करभा करभालया। कलभाषामयीकल्पा कल्पनाकल्पदायिनी ॥१४०॥ कमलस्था कलामाला कमलास्या क्वणत्प्रभा। ककुद्मिनी कष्टवती करणीयकथार्चिता ॥१४१॥ कचार्चिता कचतनुः कचसुन्दरधारिणी। कठोरकुचसंलग्ना कटिसूत्रविराजिता ॥ १४२॥ कर्णभक्षप्रिया कन्दा कथाकन्दगतिः कलिः। कलिघ्नीकलिदूती च कविनायकपूजिता ॥१४३॥ कणकक्षानियन्त्री च सदा कविवरार्चिता। कर्त्री च कर्तृका भूषाकरिणी कर्णशत्रुपा ॥१४४॥ करणेशी करणपा कलवाचा कलानिधिः। कलना कलनाधारा कलनाकारिका करा ॥१४५॥ कलज्ञेया कर्कराशिः कर्कराशिप्रपूजिता। कन्याराशि कन्यका च कन्यकाप्रियभाषिणी ॥१४६॥ कन्यकादानसन्तुष्टा कन्यकादानतोषिणी। कन्यकादानकरानन्दा कन्यादातृगृहेष्टदा ॥१४७॥ कर्षणा कक्षदहना कामिता कमलासना। करमालानन्दकर्त्री करमालाप्रभूषिता ॥१४८॥ करमालाशयानन्दा करमालासमागमा। करमालासिद्धिदात्री करमाला करप्रिया ॥ १४९॥ करप्रिया कररता करदानपरायणा। कलानन्दा कलिगतिः कलिपूज्या कलिप्रसूः ॥१५०॥ कलनादनिनादस्था कलनादवरप्रदा। कलनादसमाजस्था कहोला च कहोलदा ॥१५१॥ कहोलगेहमध्यस्था कहोलवरदायिनी। कहोलकविताधारा कहोलऋषिमानिता ॥१५२॥ कहोलमानसाराध्या कहोलवाक्यकारिणी। कर्तृरूपा कर्तृमयी कर्तृमाता च कर्तरी ॥१५३॥ कनीया कनकाराध्या कनीनकमयी तथा ॥ कनीयानन्दनिलया कनकानन्दतोषिता ॥१५४॥ कनीयक कराकाष्ठा कथार्णवकरीकरी। करिगम्या करिगतिः

करिध्वजपरायणा ॥१५५॥ करिनाथप्रिया कण्ठा कथानकप्रतोषिता। कमनीया कमनका कमनीयविभूषणा ॥१५६॥ कमनीयसमाजस्था कमनीयव्रतप्रिया। कमनीयगुणाराध्याकपिला कपिलेश्वरि ॥१५७॥ कपिलाराध्यहृदया कपिलाप्रियवादिनी। कहचक्रमन्त्रवर्णा कहचक्रप्रसूनका ॥१५८॥ कएईल्हीं स्वरूपा च कएईल्हीं वरप्रदा। कएईल्हीं सिद्धिरात्री कएईल्हींस्वरूपिणी ॥१५९॥ कएईल्हींमन्त्रवर्णा कएईल्हींप्रसूकला। कवर्गा च कपाटस्था कपाटोद्घटनक्षमा ॥१६०॥ कङ्काली च कपाली च कङ्कालप्रियभाषिणी। कङ्कालभैरवाध्या कङ्कालमानसंस्थिता ॥१६१॥ कङ्कालमोहनिरता कङ्कालमोहदायिनी। कलुषघ्नी कलुषहा कलुषार्तिविनाशिनी ॥१६२॥ कलिपुष्पा कलादाना कशिपुः कश्यपार्चिता। कश्यपा कश्यपाराध्या कलिपूर्णकलेवरा ॥१६३॥ कलेवरकरी काञ्ची कवर्गा च करालका। करालभैरवाराध्या करालभैरवेश्वरी ॥१६४॥ कराला कलनाधारा कपर्द्दीशवरप्रदा। कपर्द्दीशप्रेमलता कपर्द्दिमालिकायुता ॥१६५॥ कपर्द्दिजपमालाढ्या करवीरप्रसूनदा। करवीरप्रियप्राणा करवीरप्रपूजिता ॥१६६॥ कर्णिकारसमाकारा कर्णिकारप्रपूजिता। करीषाग्निस्थिता कर्षा कर्षमात्रसुवर्णदा ॥१६७॥ कलशा कलशाराध्या कषाया करिगानदा। कपिलाकलकण्ठी च कलिकल्पलता मता ॥१६८॥ कल्पमाता कल्पलता कल्पकारी च कल्पभूः। कर्पूरामोदरुचिरा कर्पूरामोदधारिणी ॥१६९॥ कर्पूरमालाभरणाकर्पूरवासपूर्तिदा। कर्पूरमालाजयदा कर्पूरार्णवमध्यगा ॥१७०॥ कर्पूरतर्पणरता कटकाम्बरधारिणी। कपटेश्वर सम्पूज्या कपटेश्वररूपिणी ॥१७१॥ कटुः कपिध्वजाराध्या कलापपुष्पधारिणी। कलापपुष्परुचिरा कलापपुष्पपूजिता ॥१७२॥ क्रकचा क्रकचाराध्या कथंब्रमाकरालता। कथङ्कारविनिर्मुक्ता काली कालक्रिया क्रतुः ॥१७३॥ कामिनी कामिनीपूज्या कामिनीपुष्पधारिणी। कामिनीपुष्पनिलया कामिनीपुष्पपूर्णिमा ॥१७४॥ कामिनीपुष्पपूजार्हा कामिनीपुष्पभूषणा। कामिनीपुष्पतिलका कामिनीकुण्डचुम्बना ॥१७५॥ कामिनीयोगसन्तुष्टा कामिनीयोगभोगदा। कामिनीकुण्डसम्मग्ना कामिनीकुण्डमध्यगा ॥१७६॥ कामिनीमानसाराध्या कामिनीमानतोषिता। कामिनी मानसञ्चारा कालिका कालकालिका ॥१७७॥ कामा च कामदेवी च कामेशी कामसम्भवा। कामभावा कामरता कामार्ता काममञ्जरी ॥१७८॥ काममञ्जीररणिता कामदेवप्रियान्तरा। कामकाली कामकला कालिका कमलार्चिता ॥१७९॥ कादिका कमला काली कालानलसमप्रभा। कल्पान्तदहना काता कातारप्रियवासिनी ॥१८०॥ कालपूज्या कालरता कालमाता च कालिनी। कालवीरा कालघोरा कालसिद्धा च कालदा ॥१८१॥ कालाञ्जनसमाकारा कालञ्जरनिवासिनी। कालऋद्धिः कालवृद्धिः कारागृहविमोचिनी ॥१८२॥ कादिविद्या कादिमाता कादिस्था कादिसुन्दरी। काशी काञ्ची च काञ्चीशा काशीशवरदायिनी ॥१८३॥ क्री बीजा चैव क्रां बीजा हृदयाय नमस्मृता। काम्या काम्यगति काम्यसिद्धिदात्री च कामभूः ॥१८४॥ कामाख्या कामरूपा च कामचापविमोचिनी कामदेवकलारामा कामदेवकलालया ॥१८५॥ कामरात्रिः कामदात्री कान्ताराचलवासिनी। कामरूपा कालगतिः कामयोगपरायणा ॥१८६॥ कामसम्मर्द्दनरता कामगेहविकासिनी। कालभैरवभार्या च कालभैरवकामिनी ॥१८७॥ कालभैरवयोगस्था कालभैरवभोगदा। कामधेनुः कामदाग्ध्री काममाता च कान्तिदा ॥१८८॥ कामुका कामुकाराध्या कामुकानन्दवर्द्धिनी। कार्तवीर्या कार्तिकेया कार्तिकेयप्रपूजिता ॥१८९॥ कार्या कारणदा कार्यकारिणी कारणान्तरा। कान्तिगम्या कान्तिमयी

कात्या कात्यायनी च का ।।१९०।। कामसारा च काश्मीरा काश्मीराचारतत्परा । कामरूपाचाररता कामरूपप्रियम्वदा ।।१९१।। कामरूपाचारसिद्धिः कामरूपमनोमयी । कार्तिकी कार्तिकाराध्या काञ्चनारप्रसूनभूः ।।१९२।। काञ्चनारप्रसूनाभा काञ्चनारप्रपूजिता। काञ्चरूपा काञ्चभूमिः कांस्यपात्रप्रभोजिनी ।।१९३।। कांस्यध्वनिमयी कामसुन्दरी कामचुम्बना। काशपुष्पप्रतीकाशा कामद्रुमसमागमा ।।१९४।। कामपुष्पा कामभूमिः कामपूज्या च कामदा। कामदेहा कामगेहा कामबीजपरायणा ।।१९५।। कामध्वजसमारूढा कामध्वजसमास्थिता। काश्यपी काश्यपाराध्या काश्यपानन्ददायिनी ।।१९६।। कालिन्दीजलसंकाशा कालिन्दीजलपूजिता। कामदेवपूजानिरता कामदेवपरमार्थदा ।।१९७।। कर्मणा कर्मणाकारा कामकर्मणकारिणी । कार्मणत्रोटनकरी काकिनी कारणाह्वया ।।१९८।। काव्यामृता च कालिङ्गा कालिङ्गमर्दनोद्यता। कालागुरुविभूषाढ्या कालागुरुविभूतिदा ।।१९९।। कालागुरुसुगन्धा च कालागुरुप्रतर्पणा। कावेरीनीरसंप्रीता कावेरीतीरवासिनी ।।२००।। कालचक्रभ्रमाकारा कालचक्रनिवासिनी । कानना काननाधारा कारुः कारुणिकामयी ।।२०१।। काम्पिल्यवासिनी काष्ठा कामपत्नी च कामभूः । कादम्बरीपानरता तथा कादम्बरीकला ।।२०२।। कामवन्द्या च कामेशी कामराजप्रपूजिता। कामराजेश्वरी विद्या कामकौतुकसुन्दरी ।।२०३।। काम्बोजजा काञ्छिनदा कांस्यकाञ्चनकारिणी । काञ्चनाद्रिसमाकारा काञ्चनाद्रिप्रदानदा ।।२०४।। कामकीर्तिः कामकेशी कारिकाकान्तराश्रया । कामभेदी च कामार्तिनाशिनी कामभूमिका ।।२०५।। कालनिर्णाशिनी काव्यवनिता कामरूपिणी। कायस्था कामसंदीप्तिः काव्यदा कालसुन्दरी ।।२०६।। कामेशी कारणवरा कामेशीपूजनोद्यता। काञ्चीनूपुरभूषाढ्या कुंकुमाभरणान्विता ।।२०७।। कालचक्रा कालगतिः कालचक्रमनोभवा। कुन्दमध्या कुन्दपुष्पा कुन्दपुष्पप्रिया कुजा ।।२०८।। कुजमाता कुजाराध्या कुठारवरधारिणी। कुञ्जरस्था कुशरता कुशेशयविलोचना ।।२०९।। कुनठी कुररी कुद्रा कुरङ्गी कुटजाश्रया। कुम्भीनसविभूषा च कुम्भीनसवधोद्यता ।।२१०।। कुम्भकर्ण मनोल्लासा कुलचूडामणिः कुला। कुलालगृहकन्या च कुलचूडामणिप्रिया ।।२११।। कुलपूज्या कुलाराध्या कुलपूजापरायणा। कुलभूषा तथा कुक्षिः कुररीगणसेविता ।।२१२।। कुलपुष्पा कुलरता कुलपुष्पपरायणा। कुलवस्त्रा कुलाराध्या कुलकुण्डसमप्रभा ।।२१३।। कुलकुण्डसमोल्लासा कुलपुष्पपरायणा। कुण्डपुष्पप्रसन्नास्या कुण्डगोलोद्भवात्मिका ।।२१४।। कुण्डगोलोद्भवाधारा कुण्डगोलमयी कुहूः । कुण्डगोलप्रियप्राणा कुण्डगोलप्रपूजिता ।।२१५।। कुण्डगोलमनोल्लासा कुण्डगोलवरप्रदा। कुण्डदेवरता क्रुद्धा कुलसिद्धिकरा परा ।।२१६।। कुलकुण्डसमाकारा कुलकुण्डसमानभूः । कुण्डसिद्धिः कुण्डऋद्धिः कुमारीपूजनोद्यता ।।२१७।। कुमारीपूजकप्राणा कुमारीपूजकालया। कुमारीकामसन्तुष्टा कुमारीपूजनोत्सुका ।।२१८।। कुमारीव्रतसन्तुष्टा कुमारीरूपधारिणी । कुमारीभोजनप्रीता कुमारी च कुमारदा ।। २१९।। कुमारमाता कुलदा कुलयोनिः कुलेश्वरी। कुललिङ्गा कुलानन्दा कुलरम्या कुतर्कधृक् ।।२२०।। कुन्ती च कुलकान्ता च कुलमार्गपरायणा । कुल्ला च कुरुकुल्ला च कुल्लुका कुलकामदा ।।२२१।। कुलिशाङ्गी कुब्जिका च कुब्जिकानन्दवर्द्धिनी। कुलीना कुञ्जरगतिः कुञ्जरेश्वरगामिनी ।।२२२।। कुलपाली कुलवती तथैव कुलदीपिका। कुलयोगेश्वरी कुण्डा कुंकुमारुणविग्रहा ।।२२३।। कुंकुमानन्दसन्तोषा कुंकुमार्णववासिनी। कुंकुमा कुसुमप्रीता कुलभूः कुलसुन्दरी ।।२२४।। कुमुद्वती कुमुदिनी कुशला कुलटालया। कुलटालयमध्यस्था

कुलटासङ्गतोषिता ॥२२५॥ कुलटाभवनोद्युक्ता कुशावर्ता कुलार्णवा। कुलार्णवाचाररता कुण्डली कुण्डलाकृतिः ॥२२६॥ कुमतिश्च कुलश्रेष्ठा कुलचक्रपरायणा। कूटस्था कूटदृष्टश्च कुन्तला कुन्तलाकृतिः॥ २२७॥ कुशलाकृतिरूपा च कूर्चबीजधरा च कूः। कुं कुं कुं कुं शब्दरता क्रुं क्रुं क्रुं क्रुं परायणा॥२२८॥ कुं कुं कुं शब्दनिलया कुक्कुरासङ्गवासिनी। कुकुरासङ्गसंयुक्ता कुकरानन्तविग्रहा॥२२९॥ कूर्चारम्भा कूर्चबीजा कूर्चजामपरायणा। कुचस्पर्शनसन्तुष्टा कुचालिङ्गमहर्षदा॥२३०॥ कुमतिघ्नी कुबेरार्चा कुचभूः कुलनायिका। कुगायना कुचधरा कुमाता कुन्ददन्तिनी॥२३१॥ कुगेया कुहराभासा कुगेया कुघ्नदारिका। कीर्तिः किरातिनी क्लिन्ना किन्नरा किन्नरीक्रिया॥२३२॥ क्रींकारा क्रींजपसक्ता क्रींहूंस्त्रींमन्त्ररूपिणी। किर्मीरितदृशापांगी किशोरी च किरीटिनी॥२३३॥ कीटभाषा कीटयानिः कीटमाता च कीटदा। किंशुका कीरभाषा च क्रियासारा क्रियावती॥२३४॥ कींकींशब्दपरा क्लींक्लींक्लूंक्लैंक्लौं-मन्त्ररूपिणी। कांकींकूंकैंस्वरूपा च कः फट्मन्त्रस्वरूपिणि॥२३५॥ केतकीभूषणानन्दा केतकीभरणान्विता। कैकदा केशिनी केशी केशिसूदनतत्परा॥२३६॥ केशरूपा केशमुक्ता कैकेयी कौशिकी तथा। कैरवा कैरवाह्लादा केशरा केतुरूपिणी॥२३७॥ केशवाराध्यहृदया केशवासक्तमानसा। क्लैब्यविनाशिनी क्लैं च क्लैंबीज-जपतोषिता॥२३८॥ कौशल्या कोशलाक्षी च कोशा च कोमला तथा। कोलापुरनिवासा च कोलासुरविनाशिनी॥२३९॥ कोटिरूपा कोटिरता क्रोधिनी क्रोधरूपिणी। केका च कोकिला कोटि कोटिमन्त्रपरायणा॥२४०॥ कोट्यानन्तमन्त्रयुक्ता कैरूपा केरलाश्रया। केरलाचारनिपुणा केरलेन्द्रगृहस्थिता॥२४१॥ केदाराश्रमसंस्था च केदारेश्वरपूजिता। क्रोधरूपा क्रोधपदा क्रोधमाता च कौशिकी॥२४२॥ कोदण्डधारिणी क्रौंचा कौशिल्या कौलमार्गगा। कौलिनी कौलिकाराध्या कौलिकागारवासिनी॥२४३॥ कौतुकी कौमुदी कौला कुमारी कौरवार्चिता। कौण्डिन्या कौशिकी क्रोधा ज्वालाभासुररूपिणी॥२४४॥ कोटिकालानलज्वाला कोटिमार्तण्डविग्रहा। कृत्तिका कृष्णवर्णा च कृष्णा कृत्या क्रियातुरा॥२४५॥ कृशाङ्गी कृतकृत्या च क्रः फट्स्वाहास्वरूपिणी। क्रौंक्रौंहूंफट्मन्त्रवर्णा क्रीं ह्रीं हूं फट् नमः स्वधा॥२४६॥ क्रींक्रींह्रींह्रीं तथा हूं हूं फट् स्वाहामन्त्ररूपिणी। इति श्रीसर्वसाम्राज्यमेधानामसहस्रकम्॥२४७॥

सुन्दरीशक्तिदानाख्यस्वरूपाभिधमेव च। कथितं दक्षिणाकाल्याः सुन्दर्यै प्रीतियोगतः॥२४८॥ वरदानप्रसङ्गेन रहस्यमपि दर्शितम्। गोपनीयं सदा भक्त्या पाठनीयं परात्परम्॥२४९॥ प्रातर्मध्याह्नकाले च मध्यार्द्धरात्रयोरपि। यज्ञकाले जपांते च पठनीयं विशेषतः॥ २५०॥ यः पठेत्साधको धीरःकालीरूपो हि वर्षतः। पठेद्वा पाठयेद्वापि श्रृणोति श्रावयेदपि॥२५१॥ वाचकं तोषयेद्वापि स भवेत्कालिकातनुः। सहेलं वा सलीलं वा यश्चैनं मांनवः पठेत्॥२५२॥ सर्वदुःखविनिर्मुक्तस्त्रैलोक्यविजयी कविः। मृतवंध्या काकवन्ध्या कन्यावन्ध्या च वन्ध्यका॥२५३॥ पुष्पवन्ध्या शूलवन्ध्या श्रृणुयात्स्तोत्रमुत्तमम्। सर्वसिद्धिप्रदातारं सत्कविं चिरजीविनम्॥२५४॥ पाण्डित्यकीर्तिसंयुक्तं लभते नात्र संशयः। यंयं काममुपस्कृत्य कालीं ध्यात्वा जपेत्स्तवम्॥२५५॥ तं तं कामं करे कृत्वा मन्त्री भवतिनान्यथा। योनिपुष्पैर्लिंगपुष्पैः कुण्डगोलोद्भवैरपि॥२५६॥ संयोगामृतपुष्पैश्च वस्त्रदेवीप्रसूनकैः। काली पुष्पैः पीठतोयैर्योनिक्षालनतोयकैः॥२५७॥ कस्तूरीकुंकुमैर्द्रवैर्वी नखकालागुरुक्रमात्। अष्टगन्धैर्धूपदीपैर्यवयावकसंयुतैः॥२५८॥ रक्तचन्दनसिन्दूरैर्मत्स्यमांसादिभूषणैः। मधुभिः पायसैः क्षीरैः शोधितैः शोणितैरपि॥२५९॥

महोपचारैरक्तैश्च नैवेद्यैः सुरसान्वितैः। पूजयित्वा महाकालीं महाकालेन लालिताम् ॥२६०॥
विद्याराज्ञीं कुल्लुकाञ्च जप्त्वा स्तोत्रं जपेच्छिवे। कालीभक्तस्त्वेकचित्तः सिन्दूरतिलकान्वितः ॥२६१॥
ताम्बूलपूरितमुखो मुक्तकेशो दिगम्बरः। शवयोनिस्थितो वीरः श्मशाने सुरतान्वितः॥२६२॥
शून्यालये बिन्दुपीटे पुष्पाकीर्णे शिवावने। शयानोत्थः प्रभुंजानः कालीदर्शनमाप्नुयात् ॥२६३॥
तत्र यद्यत्कृतं कर्म तदनन्तफलं भवेत्। ऐश्वर्ये कमला साक्षात् सिद्धौ श्रीकालिकाम्बिका ॥२६४॥
कवित्वे तारिणीतुल्यः सौन्दर्ये सुन्दरीसमः। सिन्धोर्द्धारासमः कार्ये श्रुतौ श्रुतिधरस्तथा ॥२६५॥
वज्रास्त्रमिव दुर्द्धर्षस्त्रैलोक्यविजयास्त्रभृत्। शत्रुहंता काव्यकर्ता भवेच्छिवसमः कलौ ॥२६६॥
दिग्विदिक्चन्द्रकर्त्ता च दिवारात्रिविपर्ययी। महादेवसमो योगी त्रैलोक्यस्तम्भकः क्षणात् ॥२६७॥
गाने तु तुम्बुरुः साक्षाद्दाने कर्णसमो भवेत्। गजाश्वरथपत्तीनामस्त्राणाधिपः कृती ॥२६८॥
आयुष्येषु भुशुण्डी च जरापलितनाशकः। वर्षषोडशवान्भूयात् सर्वकाले महेश्वरि ॥२६९॥
ब्रह्माण्डगोले देवेशि न तस्य दुर्लभं क्वचित्। सर्वं हस्तगतं भूयान्नात्र कार्या विचारणा ॥२७०॥
कुलपुष्पयुतं दृष्ट्वा तत्र कालीं विचिंत्य च। विद्याराज्ञीं तु सम्पूज्य पठेन्नामसहस्रकम् ॥२७१॥
मनोरथमयी सिद्धिस्तस्य हस्ते सदा भवेत्। परदारान्समालिंग्य सम्पूज्य परमेश्वरीम् ॥२७२॥
हस्ताहस्तकया योगं कृत्वा जप्त्वास्तवं पठेत्। योनिं वीक्ष्य जपेत्स्तोत्रं कुबेरादधिको भवेत् ॥२७३॥
कुण्डगोलोद्भवं गृह्य वर्णाक्तं होमयेन्निशि। पितृभूमौ महेशानि विधिरेखां प्रमार्जयेत् ॥२७४॥
तरुणीं सुन्दरीं रम्यां चंचलां कामगर्विताम्। समानीय प्रयत्नेन संशोध्य न्यासयोगतः ॥२७५॥
प्रसूनमंचं संस्थाप्य पृथिवीं वशमानयेत्। मूलचक्रं तु संभाव्य देव्याश्चरणसंयुतम् ॥२७६॥ सम्पूज्य
परमेशानीं संकल्प्य तु महेश्वरि । जप्त्वा स्तुत्वा महेशानीं प्रणवं संस्मरेच्छिवे ॥२७७॥
अष्टोतरशतैर्योनिं प्रमन्त्र्याचुम्ब्य यत्नतः। संयोगीभूय जप्तव्यं सर्वविद्याधिपो भवेत् ॥२७८॥
शून्यागारे शिवारण्ये शिवदेवालये तथा। शून्यदेशे तडागे च गंगागर्भे चतुष्पथे ॥२७९॥ श्मशाने
पर्वतप्रान्ते एकलिंङ्गे शिवामुखे। मुण्डयोनौ ऋतौ स्नात्वा गेहे वेश्यागृहे तथा ॥२८०॥
कुट्टिनीगृहमध्ये च कदलीमण्डपे तथा। पठेत्सहस्रनामाख्यं स्तोत्रं सर्वार्थसिद्धये ॥ २८१॥ अरण्ये
शून्यगर्ते च रणे शत्रुसमागमे। प्रजपेच्च ततो नामकाल्याश्चैव सहस्रकम् ॥२८२॥ बालानन्दपरो
भूत्वा पठित्वा कालिकास्तवम्। कालीं संचिंत्य प्रजपेत्पठेन्नामसहस्रकम् ॥२८३॥ सर्वसिद्धीश्वरो
भूयाद्वाञ्छासिद्धीश्वरो भवेत्। मुष्ठचूडकयोर्योनित्वचि वा कोमले शिवे ॥२८४॥ विष्टरे शववस्त्रे
वा पुष्पवस्त्रासनेपि वा। मुक्तकेशो दिगावासो मैथुनी शयने स्थितः ॥२८५॥ जप्त्वा कालीं
पठेत्स्तोत्रं खेचरीसिद्धिभाग्भवेत्। चिकुरं योगमासाद्य शुक्रोत्सारणमेव च ॥ २८६ ॥ जप्त्वा
श्रीदक्षिणां कालीं शक्तिपातशतं भवेत्। लतां स्पृशञ्जपित्वा च रमित्वा त्वर्चयन्नपि ॥२८७॥
आह्लादयन्दिगावासः परशक्तिं विशेषतः। स्तुत्वा श्रीदक्षिणां कालीं योनिं स्वकरगाञ्चरेत् ॥२८८॥
पठेन्नामसहस्रं यः सं शिवादधिको भवेत्। लनान्तरेषु जप्तव्यं स्तुत्वा कालीन्त्रिराकुलः ॥२८९॥
दशावधानो भवति मासमात्रेण साधकः। कालरात्र्यां महारात्र्यां वीररात्र्यामपि प्रिये ॥२९०॥
महारात्र्यां चतुर्दश्यामष्टम्यां संक्रमेपि वा। कुहूपूर्णेन्दुशुक्रेषु भौमामायान्निशामुखे ॥२९१॥ नवम्यां
मङ्गलदिने तथा कुलतिथौ शिवे। कुलक्षेत्रे प्रयत्नेन पठेन्नामसहस्रकम् ॥२९२॥ सौदर्शनो भवेदाशु
किन्नरीसिद्धि भाग्भवेत्। पश्चिमाभिमुखं लिङ्गं वृषशून्यं पुरातनम् ॥२९३॥ तत्र स्थित्वा जपेत्स्तोत्रं
सर्वकामाप्तये शिवे। भौमवारे निशीथे वा अमावस्यादिने शुभे ॥२९४॥ माषभक्तबलिं छागं

कृसरान्नं च पायसम्। दग्धमीनं शोणितं च दधिदुग्धगुडार्द्रकम् ॥२९५॥ बलिं दत्त्वा जपेत्तत्र त्वष्टोत्तरसहस्रकम्। देवगन्धर्वसिद्धौघैः सेवितां सुरसुन्दरीम् ॥२९६॥ लभेद्देवेशि मासेन तस्य चासनसंहतिः। हस्तत्रयं भवेदूर्ध्वं नात्र कार्या विचारणा ॥२९७॥ हेलया लीलया भक्त्या कालीं स्तौति नरस्तु यः। ब्रह्मादीन्स्तंभयेद्देवि माहेशींमोहयेत्क्षणात् ॥२९८॥ आकर्षयेन्महाविद्यान्दशपूर्वान् त्रियामतः। कुर्वीत विष्णुनिर्माणं यमादीनां तु मारणम् ॥२९९॥ ध्रुवमुच्चाटयेन्नूनं सृष्टिनूतनतान्नरः। मेषमाहिषमार्जार खरच्छागनरादिकैः ॥३००॥ खड्गिसूकरकापोतैष्टिट्टिभैश्शशकैः पलैः। शोणितैस्सास्थिमांसैश्च कारण्डैर्दुग्धपायसैः ॥३०१॥ कादम्बरीसिन्धुमद्यैस्सुरारिष्टैश्च सासवैः। योनिक्षालिततोयैश्च योनिलिङ्गामृतैरपि ॥३०२॥ स्वजातकुसुमैः पूज्य जपान्ते तर्पयेच्छिवाम्। सर्वसाम्राज्यनाम्ना तु स्तुत्वा नत्वा स्वशक्तितः ॥३०३॥ शक्त्या लभन् पठेत्स्तोत्रं कालीरूपो दिनत्रयात्। दक्षिणा कालिका तस्य गेहे तिष्ठति नान्यथा ॥३०४॥ वेश्यालतागृहे गत्वा तस्याश्चुम्बनतत्परः। तस्या योनौ मुखं दत्त्वा तद्रसं विलिहञ्जपेत् ॥३०५॥ तदन्ते नामसाहस्रं पठेद्भक्तिपरायणः। कालिकादर्शनं तस्य भवेद्देवि त्रियामतः ॥३०६॥ नृपपात्रगृहे गत्वा मकारपञ्चकान्वितः। प्रसूनमञ्चे संस्थाप्य शक्तिन्यासपरायणः ॥३०७॥ पात्राणां साधनं कृत्वा दिग्वस्त्रां तां समाचरेत्। सम्भाव्य चक्रं तन्मूले तत्र सावरणां जपेत् ॥३०८॥ शतं भाले शतं केशे शतं सिन्दूरमण्डले। शतत्रयं कुचद्वन्द्वे शतन्नाभौ महेश्वरि ॥३०९॥ शतं योनौ महेशानि संयोगे च शतत्रयम्। जपेत्तत्र महेशानि तदन्ते प्रपठेत्स्तवम् ॥३१०॥ शतावधानो भवति मासमात्रेण साधकः। मातङ्गिनी समानीय किं वा कापालिनीं शिवे ॥३११॥ दन्तमाला जपे कार्या गले धार्या नृमुण्डजा। नेत्रपद्मे योनिचक्रं शक्तिचक्रं स्ववक्त्रके ॥३१२॥ कृत्वा जपेन्महेशानि मुण्डयन्त्रं प्रपूजयेत्। मुण्डासनस्थितो वीरो मकार पञ्चकान्वितः ॥३१३॥ अन्यामालिङ्ग्य प्रजपेदन्यां संचुम्ब्य वै पठेत्। अन्यां सम्पूजयेत्तत्र त्वन्यां सम्मर्द्दयन् जपेत् ॥३१४॥ अन्यायोनौ शिवं दत्त्वा पुनः पूर्ववदाचरेत्। अवधानसहस्रेषु शशिपातशतेषु च ॥३१५॥ राजा भवति देवेशि मासपञ्चकयोगतः। यवनीशक्तिमानीय गानशक्तिपरायणाम् ॥३१६॥ कुलाचारमतेनैव तस्या योनिं विकासयेत्। तत्र जिह्वां प्रदत्त्वा तु जपेन्नामसहस्रकम् ॥३१७॥ नृकपाले तत्र दीपं ज्वाल्यायलेन वै जपेत्। महाकविवरो भूयान्नात्र कार्या विचारणा ॥३१८॥ कामार्तां शक्तिमानीय योनौ तु मूलचक्रकम्। विलिख्य परमेशानि तत्र मन्त्रं लिखेच्छिवे ॥३१९॥ तल्लिहन् प्रजपेद्देवि सर्वशास्त्रार्थतत्ववित्। अश्रुतानि च शास्त्राणि वेदादीन् पाठयेद्ध्रुवम् ॥३२०॥ विना न्यासैर्विना पाठैर्विना ध्यानादिभिः प्रिये। चतुर्वेदाधिपो भूत्वा त्रिकालज्ञस्त्रिवर्षतः॥ ३२१॥ चतुर्विधं च पाण्डित्यं तस्य हस्तगतं क्षणात्। शिवाबलिः प्रदातव्यः सर्वदा शून्यमण्डले ॥३२२॥ कालीध्यानं मन्त्रचिन्ता नीलसाधनमेव च। सहस्रनामपाठश्च कालीनामप्रकीर्तनम् ॥३२३॥ भक्तस्य कार्यमेतावदन्यदभ्युदयं विदुः। वीरसाधनकं कर्म शिवापूजा बलिस्तथा ॥३२४॥ सिन्दूरतिलको देवि वेश्यालापो निरन्तरम्। वेश्यागृहे निशाचारो रात्रौ पर्यटनं तथा ॥३२५॥ शक्तिपूजा योनिदृष्टिः खड्गहस्तो दिगम्बरः। मुक्तकेशो वीरवेषः कुलमूर्तिधरो नरः ॥३२६॥ कालीभक्तो भवोद्देवि नान्यथा क्षेममाप्नुयात् दुग्धास्वादी योनिलेही संविदासवघूर्णितः ॥३२७॥ वेश्यालतासमायोगान्मासात्कल्पलता स्वयम्। वेश्याचक्रसमायोगात्कालीचक्रसमस्स्वयम् ॥३२८॥ वेश्यादेहसमायोगात् कालीदेहसमस्स्वयम् वेश्यामध्यगतं वीरं कदा पश्यामि साधकम् ॥३२९॥ एवं वदति सा काली तस्माद्वेश्या वरा मता। वेश्या कन्या तथा पीठजातिभेदकुलक्रमात् ॥३३०॥ अकुलक्रमभेदेन ज्ञात्वा चापि कुमारिकाम्। कुमारीं पूजयेद्भक्त्या जपान्ते भवने प्रिये ॥३३१॥ पठेन्नामसहस्रं यः कालीदर्शनभाग्भवेत्।

भक्त्यापूज्य कुमारीं च वेश्याकुलसमुद्भवाम् ॥३३२॥ वस्त्रहेमादिभिस्तोष्या यत्नात्स्तोत्रं पठेच्छिवे। त्रैलोक्यविजयी भूयाद्दिवा चन्द्रप्रकाशकः ॥३३३॥ यद्यद्दत्तं कुमार्यै तु तदनन्तफलं भवेत्। कुमारीपूजनफलं मया वक्तुं न शक्यते ॥ ३३४॥ चाञ्चल्याद्दुरितं किञ्चित्क्षम्यतामयमंजलिः। एका चेत्पूजिता बाला द्वितीया पूजिता भवेत् ॥३३५॥ कुमार्यः शक्तयश्चैव सर्वमेतच्चराचरम्। शक्तिमानीय तद्गात्रे न्यासजालं प्रविन्यसेत् ॥ ३३६॥ वामभागे च संस्थाप्य जपेन्नामसहस्रकम्। सर्वसिद्धीश्वरो भूयान्नात्र कार्या विचारणा ॥३३७॥ श्मशानस्थो भवेत्स्वस्थो गलितं चिकुरं चरेत्। दिगम्बरः सहस्रं च सूर्यपुष्पं समानयेत् ॥३३८॥ स्ववीर्येण प्लुतं कृत्वा प्रत्येकं प्रजपन् हुनेत्। पूज्य ध्यात्वा महाभक्त्या क्षमापालो नरः पठेत् ॥३३९॥ नखं केशं स्ववीर्य च यद्यत्सम्मार्जनीगतम्। मुक्तकेशो दिशावासो मूलमन्त्रपुरःसरः ॥३४०॥ कुजवारे मध्यरात्रे होमं कृत्वा श्मशानके। पठेन्नामसहस्रं यः पृथ्वीशाकर्षको भवेत् ॥३४१॥ पुष्पयुक्ते भगे देवि संयोगानन्दतत्परः पुनश्चिकुरमासाद्य मूलमन्त्रं जपन् शिवे ॥३४२॥ चितावह्नौ मध्यरात्रे वीर्यमुत्सार्य यत्नतः। कालिकां पूजयेत्तत्र पठेन्नामसहस्रकम् ॥३४३॥ पृथ्वीशाकर्षणं कुर्यान्नात्र कार्या विचारणा। कदलीवनमासाद्य लक्षमन्त्रं जपेन्नरः ॥३४४॥ मधुमत्या स्वयं देव्या सेव्यमानः। स्मरोपमः। श्रीमधुमतीत्युक्त्वा[1] तथा स्थावरजङ्गमान् ॥३४५॥ आकर्षिणीं समुच्चार्य ठंठं स्वाहा समुच्चरेत्। त्रैलोक्याकर्षिणी विद्या तस्य हस्ते सदा भवेत् ॥३४६॥ नदीं पुरीं च रत्नानि हेमस्त्रीशैलभूरुहान्। आकर्षयत्यम्बुनिधिं सुमेरुं च दिगन्ततः ॥३४७॥ अलभ्यानि च वस्तूनि दूराद्भूमितलादपि। वृत्तान्तं च सुरस्थानाद्रहस्यं विदुषामपि ॥३४८॥ राज्ञां च कथयत्येषा सत्यं सत्वरमादिशेत्। द्वितीयवर्षपाठेन भवेत्पद्मावती शुभा ॥३४९॥ ॐ ह्रीं[2] पद्मावतिपदं ततस्त्रैलोक्यनाम च। वार्ता च कथय द्वन्द्वं स्वाहान्तो मन्त्र ईरितः ॥३५०॥ ब्रह्मविष्णवादिकानां च त्रैलोक्ये यादृशी भवेत्। सर्वं वदति देवेशि त्रिकालज्ञः कविश्शुभः ॥ ३५१॥ त्रिवर्षं सम्पठन्देवि लभेद्भोगवतीं कलाम्। महाकालेन दृष्टेपि चितामध्यगतोपि वा ॥३५२॥ तस्या दर्शनमात्रेण चिरंजीवी नरो भवेत्। भृतसञ्जीविनीत्युक्त्वा[3] मृतमुत्थापय द्वयम् ॥३५३॥ स्वाहान्तो मनुराख्यातो मृतसञ्जीवनात्मकः। चतुर्वर्षं पठेद्यस्तु स्वप्नसिद्धिस्ततो भवेत् ॥३५४॥ ॐ ह्रीं स्वप्नवाराहि[4] कालि स्वप्ने कथयोच्चरेत्। अमुकस्यामुकं देहि क्रीं स्वाहान्तो मनुर्मतः ॥३५५॥ स्वप्नसिद्धा चतुर्वर्षात्तस्य स्वप्ने सदा स्थिता। चतुर्वर्षस्य पाठेन चतुर्वेदाधिपो भवेत् ॥३५६॥ तद्धस्तजलसंयोगान्मूर्खः काव्यं करोति च। तस्य वाक्यपरिचयान्मूर्तिर्विन्दति काव्यताम् ॥३५७॥ मस्तके तु करं कृत्वा वद वाणीमिति ब्रुवन्। साधको वांछया कुर्यात्तत्तथैव भविष्यति ॥३५८॥ ब्रह्माण्डगोलके याश्च याः काश्चिज्जगतीतले। समस्ताः सिद्धयोः देवि करामलकवत्सदा ॥३५९॥ साधकस्मृतिमात्रेण यावन्त्यः सन्ति सिद्धयः स्वयमायान्ति पुरतो जपादीनां तु का कथा ॥३६०॥ विदेशवर्तिनो भूत्वा वर्तन्ते चेटका इव। अमायां चन्द्रसन्दर्शश्चन्द्रग्रहणमेव च ॥३६१॥ अष्टम्यां पूर्णचन्द्रत्वं चन्द्रसूर्याष्टकं तथा। अष्टदिक्षु तथाष्टौ च करोत्येव महेश्वरि ॥३६२॥ अणिमा खेचरत्वं च चराचरपुरीगतम्। पादुकाखड्गवेतालयक्षिणीणुह्यकादयः ॥३६३॥ तिलकोगुप्ततादृश्यं चराचरकथानकम्। मृतसञ्जीविनीसिद्धिर्गुटिका च रसायनम् ॥३६४॥ उड्डीनसिद्धिर्देवेशि षष्टिसिद्धीश्वरत्वकम्।

---

१ श्रीमधुमती स्थावरजङ्गमाकर्षिणी ठंठं स्वाहा। इति मधुमतीमन्त्रोद्धारः।

२. ॐ ह्रीं पद्मावती त्रैलोक्यवार्तां कथय कथय स्वाहा। इति पद्मावती मन्त्रोद्धारः।

३ ॐ मृतसञ्जीविनी मृतमुत्थापयोत्थापय स्वाहा। इति मृतसञ्जीवनीमन्त्रोद्धारः।

४ ॐ ह्रीं स्वप्नवाराहि कालि स्वप्नं कथय अमुकस्यामुकं देहि क्रीं स्वाहा इति स्वप्नसिद्धिमन्त्रोद्धारः।

तस्य हस्ते वसेद्देवि नात्र कार्या विचारणा ॥३६५॥ केतौ वा दुन्दुभी वस्त्रे विताने वेष्टनेगृहे। भित्ती च फलके देवि लेख्यं पूज्यं च यत्नतः ॥३६६॥ मध्ये चक्रं दशाङ्गोक्तं परितो नामलेखनम्। तद्धारणान्महेशानि त्रैलोक्यविजयी भवेत् ॥३६७॥ एको हि शतसाहस्त्रं निर्जित्य च रणाङ्गणे। पुनरायाति च सुखं स्वगृहं प्रति पार्वती ॥३६८॥ एको हि शतसन्दर्शी लोकानां भवति ध्रुवम्। कलशं स्थाप्य यत्नेन नामसाहस्रकं पठेत् ॥३६९॥ सेकः कार्यो महेशानि सर्वापत्तिनिवारणे। भूतप्रेतग्रहादीनां रक्षसां ब्रह्मरक्षसाम् ॥३७०॥ वेतालानां भैरवाणां स्कन्दवैनायकादिकान्। नाशयेत् क्षणमात्रेण नात्र कार्या विचारणा ॥३७१॥ भस्मभिर्मन्त्रितं कृत्वा ग्रहग्रस्तं विलेपयेत्। भस्मसंक्षेपणादेव सर्वग्रहविनाशनम् ॥३७२॥ नवनीतं चाभिमन्त्र्य स्त्रीभ्यो दद्यान्महेश्वरि। वन्ध्या पुत्रप्रदां देवि नात्र कार्या विचारणा ॥३७३॥ कण्ठे वा वामबाहौ वा योनौ वा धारणाच्छिवे। बहुपुत्रवतीनारी सुभगा जायते ध्रुवम् पुरुषो दक्षिणाङ्गे तु धारयेत्सर्वसिद्धये। बलवान् कीर्तिमान् धन्यो धार्मिकः साधकः कृती ॥३७५॥ बहुपुत्रो रथानां च गजानामधिपः सुधीः। कामिनीकर्षणोद्युक्तः क्रीं[3] च दक्षिणकालिके ॥३७६॥ क्रीं स्वाहा प्रजपेन्मन्त्रमयुतं नामपाठकः। आकर्षणं चरेद्देवि जलखेचरभूगतान् ॥३७७॥ वशीकरणकामो हि हूं हूं ह्रीं[4] ह्रीं च दक्षिणे। कालिके पूर्वबीजानि पूर्ववत्प्रजपन् पठेत् ॥३७८॥ उर्वशीमपि वसयेन्नात्र कार्या विचारणा। क्रीं च[5] दक्षिणकालिके स्वाहा युक्तं जपेन्नरः ॥३७९॥ पठेन्नामसहस्त्रं तु त्रैलोक्यं मारयेद्ध्रुवम्। सद्भक्ताय प्रदातव्या विद्या राज्ञि शुभे दिने ॥३८०॥ सद्विनीताय शान्ताय दान्तायातिगुणाय च। भक्ताय ज्येष्टपुत्राय गुरुभक्तिपराय च ॥३८१॥ वैष्णवाय प्रशुद्धाय शिवाबलिरताय च। वेश्यापूजनयुक्ताय कुमारीपूजकाय च॥ ३८२॥ दुर्गाभक्ताय रौद्राय महाकालप्रजापिते। अद्वैतभावयुक्ताय कालीभक्तिपराय च ॥३८३॥ देयं सहस्त्रनामाख्यं स्वयं काल्या प्रकाशितम्। गुरुदैवतमन्त्राणां महेशस्यापि पार्वति ॥५८४॥ अभेदेन स्मरेन्मन्त्रं स शिवः स गणाधिपः। यो मन्त्रं भावयेन्मन्त्री स शिवो नात्र संशयः ॥३८५॥ स शाक्तो वैष्णवस्सौरः स एवं पूर्णदीक्षितः। आयोग्याय न दातव्यं सिद्धिरोधः प्रजायते ॥३८६॥ वेश्यास्त्रीनिन्दकायाथ सुरासम्विप्रनिन्दके। सुरामुखो मनुं स्मृत्वा सुराचार्यो भविष्यति ॥३८७॥ वाग्देवता घोरे आसापरघारे च हूं वदेत्। घोररूपे महाघोरे मुखीभीमपदं वदेत् ॥३८८॥ भीषण्यमुष्यषष्ट्यन्तं हेतुर्वामयुगे शिवे। शिववह्नियुगास्त्रं हूं हूं कवचमनुर्भवेत् ॥३८९॥ एतस्य स्मरणादेव दुष्टानां च मुखे सुरा। अवतीर्णा भवद्देवि दुष्टानां भद्रनाशिनी ॥३९०॥ खलाय परतन्त्राय परनिन्दापराय च। भ्रष्टाय दुष्टसत्वाय परवादरताय च ॥३९१॥ शिवाभक्ताय दुष्टाय परदाररताय च। न स्तोत्रं दर्शयेद्देवि शिवहत्याकरो भवेत् ॥३९२॥ कालिकानन्दहृदयः कालिकाभक्तिमानसः। कीलीभक्तो भवेत्सो हि धन्यरूपः स एव तु ॥३९३॥ कलौ काली कलौ काली कलौ काली वरप्रदा। कालौ काली कलौ काली कलौ काली तु केवला ॥३९४॥ बिल्वपत्रसहस्त्राणि करवीराणि वै तथा। प्रतिनाम्ना पूजयेद्धि तेन काली वरप्रदा ॥३९५॥ कमलानां सहस्रं तु प्रतिनाम्ना समर्पयेत्। चक्रं सम्पूज्य देवेशि कालिकावरमाप्नुयात् ॥३९६॥ मन्त्रक्षोभयुतो नैव कलशस्थजलेन च। नाम्ना प्रसेचयेद्देवि सर्वक्षोभविनाशकृत् ॥ ३९७॥ तथा दमनकं देवि सहस्रमाहरेद्व्रती सहस्त्रनाम्ना सम्पूज्य कालीवरमवाप्नुयात् ॥३९८॥ चक्रं विलिख्य देहस्थं धारयेत्कालिकातनुः। काल्यै निवेदितं

---

३ ॐ क्रीं दक्षिणे कालिके क्रीं स्वाहा। इत्याकर्षणमन्त्रोद्धारः।

४ हूं हूं ह्रीं ह्रीं दक्षिणे कालिके हूं हूं ह्रीं ह्रीं स्वाहा। इति वशीकरण-मन्त्रोद्धारः।

५ क्रीं दक्षिणे कालिके स्वाहा। इति मारणमन्त्रोद्धारः।

यद्यत्तदंशं भक्षयेच्छिवे ॥३९९॥ देव्यदेहधरो भूत्वा कालीदेहे स्थितो भवेत्। नैवेद्यनिन्दकान् दुष्टान् दृष्टवा नृत्यन्ति भैरवा ॥४००॥ योगिन्यश्च महावीरा रक्तपानोद्यताः प्रिये। मांसास्थिचर्मणोद्युक्ता भक्षयन्ति न संशयः ॥४०१॥ तस्मान्न निन्दयेद्देवि मनसा कर्मणा गिरा। अन्यथा कुरुते यस्तु तस्य नाशो भविष्यति ॥४०२॥ क्रमदीक्षायुतानां च सिद्धिर्भवति नान्यथा। मन्त्रक्षोभश्च वा भूयात् क्षीणायुर्वा भवेद्ध्रुवम् ॥४०३॥ पुत्रहारी स्त्रियोहारी राज्यहारी भवेद्ध्रुवम्। क्रमदीक्षायुतो देवि क्रमाद्राज्यवाप्नुयात् ॥ ४०४॥ एकवारं पठेद्देवि सर्वपापविनाशनम्। द्विवारं च पठेद्यो हि वांछां विन्दति नित्यशः ॥ ४०५॥ त्रिवारं च पठेद्यस्तु वागीशसमतां व्रजेत्। चतुर्वारं पठेद्देवि चतुर्वर्णाधिपो भवेत् ॥४०६॥ पञ्चवारं पठेद्देवि पञ्चकामाधिपो भवेत्। षड्वारं च पठेद्देवि षडैश्वर्याधिपो भवेत् ॥ ४०७॥ सप्तवारं पठेत्सप्तकामानां चिन्तितं लभेत्। वसुवारं पठेद्देवि दिगीशो भवति ध्रुवम् ॥४०८॥ नववारं पठेद्देवि नवनाथसमो भवेत्। दशवारं कीर्त्तयेद्यो दशार्हः खेचरेश्वरः ॥४०९॥ विंशतिवारं कीर्तयेद्यः सर्वैश्वर्यमयो भवेत्। पञ्चविंशतिवारैस्तु सर्वचिन्ताविनाशकः ॥४१०॥ पञ्चाशद्वारमावर्त्य पञ्चभूतेश्वरो भवेत्। शतवारं कीर्त्तयेद्यः शताननसमानधीः ॥४११॥ शतपञ्चकमावर्त्य राजराजेश्वरो भवेत्। सहस्रावर्तनाद्देवि लक्ष्मीरावृणुते स्वयम् ॥४१२॥ त्रिसहस्रं समावर्त्त्य त्रिनेत्रसदृशो भवेत्। पञ्चसाहस्रमावर्त्त्य कामकोटिविमोहनः ॥४१३॥ दशसाहस्रमावर्त्य भवेद्दशमुखेश्वरः। पञ्चविंशतिसाहस्रैश्चतुर्विंशतिसिद्धिधृक् ॥ ४१४॥ लक्षावर्तनमात्रेण लक्ष्मीपतिसमो भवेत्। लक्षत्रयावर्त्तनानु महादेवं विजेष्यति ॥४१५॥ लक्षपञ्चकमावर्त्त्य कलापञ्चकसंयुतः। दशलक्षावर्त्तनात्तु दशविद्यापतिरुत्तमा ॥४१६॥ पञ्चविंशतिलक्षैस्तु दशविद्येश्वरो भवेत्। पञ्चाशल्लक्षमावृत्य महाकालसमो भवेत् ॥४१७॥ कोटिमावर्त्तयेद्यस्तु कालीं पश्यति चक्षुषा वरदानोद्युक्तकरां महाकालसमन्विताम् ॥४१८॥ प्रत्यक्षं पश्यति शिवे तस्या देहो भवेद्ध्रुवम्। श्रीविद्याकालिकातारात्रिशक्तिविजयी भवेत् ॥४१९॥ विधेर्लिपिं च सम्मार्ज्य किंकरत्वं विसृज्य च। महाराज्यमवाप्नोति नात्र कार्या विचारणा ॥४२०॥ त्रिशक्तिविषये देविक्रमदीक्षा प्रकीर्तिता। क्रमदीक्षायुतो देवि राजा भवति निश्चितम् ॥४२१॥ क्रमदीक्षाविहीनस्य फलं पूर्वमिहेरितम्। क्रमदीक्षायुतो देवि शिव एव न चापरः ॥४२२॥ क्रमदीक्षासमायुक्तः काल्युक्तसिद्धिभाग्भवेत्। क्रमदीक्षाविहीनस्य सिद्धिहानिः पदे पदे ॥४२३॥ अहो जन्मवतां मध्ये धन्यः क्रमयुतः कलौ। तत्रापि धन्यो देवेशि नामसाहस्रपाठकः ॥४२४॥ दशकालीविद्यौ देवि स्तोत्रमेतत्सदा पठेत्। सिद्धिं विन्दति देवेशि नात्र कार्या विचारणा ॥४२५॥ कलौ काली महाविद्या कलौ काली च सिद्धिदा। कलौ काली च सिद्धा च कलौ काली वरप्रदा ॥४२६॥ कलौ काली साधकस्य दर्शनार्थं समुद्यता। कलौ काली केवला स्यान्नात्र कार्या विचारणा ॥४२७॥ नान्यविद्या नान्यविद्या नान्यविद्या कलौ भवेत्। कलौ कालीं विहायाथ यः कश्चित्सिद्धिकामुकः ॥४२८॥ स तु शक्तिं विना देवि रतिसम्भोगमिच्छति। कलौ कालीं विना देवि यः कश्चित्सिद्धिमिच्छति ॥४२९॥ स नीलसाधनं त्यक्त्वा परिभ्रमति सर्वतः। कलौ काली विहायाथ यः कश्चिन्मोक्षमिच्छति ॥४३०॥ गुरुध्यानं परित्यज्य सिद्धिमिच्छति स.धकः। कलौ कालीं विहायाथ यः कश्चिद्राज्यमिच्छति ॥४३१॥ स भोजनं परित्यज्य भिक्षुवृत्तिमभीप्सति। स धन्यः स च विज्ञानी स एव सुरपूजितः ॥४३२॥ स दीक्षितः सुखी साधुः सत्यवादी जितेन्द्रियः। स वेदवक्ता स्वाध्यायी नात्र कार्या विचारणा ॥४३३॥ शिवरूपं गुरुं ध्यात्वा शिवरूपं गुरुं स्मरेत्। सदाशिवः स एव स्यानात्र कार्या विचारणा ॥४३४॥ स्वस्मिन् कालीं तु सम्भाव्य पूजयेज्जगदम्बिकाम्। त्रैलोक्यविजयी भूयान्नात्र कार्या विचारणा ॥४३५॥ गोपनीयं गोपनीयं गोपनीयं प्रयत्नतः। रहस्यातिरहस्यं च रहस्यातिरहस्यकम् ॥४३६॥ श्लोकार्द्धं

पादमात्रं वा पादार्द्धं च तदर्द्धकम्। नामार्द्धं यः पठेद्देवि न वन्ध्यदिवसन्नयेत् ॥४३७॥ पुस्तकं पूजयेद्भक्त्या त्वरितं फलसिद्धये। न च मारीभयं तत्र न चाग्निवायुसम्भवम् ॥४३८॥ न भूतादिभय तत्र सर्वत्र सुखमेधते। कुंकुमालक्तकेनैव रोचनागुरुयोगतः ॥४३९॥ भूर्जपत्रे लिखेत्पुस्तकं सर्वकामार्थसिद्धये। इति संक्षेपतः प्रोक्तं किमन्यच्छ्रोतुमिच्छसि ॥४४०॥ इति गदितमशेषं कालिकावर्णरूपं प्रपठति यदि भक्त्या सर्वसिद्धीश्वरः स्यात्। अभिनवसुखकामस्सर्वविद्याभिरामो भवति सकलसिद्धिः सर्ववीरासमृद्धिः ॥४४१॥ इति श्रीकालीतन्त्रे रुद्रयामले च कालीसहस्रनामस्तोत्रं समाप्तम्।

कालीसहस्रनामावलि

ॐ क्रीं काल्यै नमः १। ॐ क्रूं कराल्यै नमः २। कल्याण्यै० ३। कमलायै० ४। कलायै० ५। कलावत्यै० ६। कलाढ्यायै० ७। कलापूज्यायै० ८। कलात्मिकायै० ९। कलाहृष्टायै० १०। कलापुष्टायै० ११। कलामस्तायै० १२। कलाकरायै० १३। कलाकोटिसमाभासायै० १४। कलाकोटिप्रपूजितायै० १५। कलाकर्मकलाधारायै० १६। कलापरायै० १७। कलागमायै० १८। कलाधारायै० १९। कमलिन्यै० २०। ककारायै० २१। करुणायै० २२। कव्यै० २३। ककारवर्णसर्वाङ्ग्यै० २४। कलाकोटिप्रभूषितायै० २५। कलाकोटिगुणितायै० २६। ककारकोटिभूषणायै० २७। ककारवर्णहृदयायै० २८। ककारमनुमण्डितायै० २९। ककारवर्णनिलयायै० ३०। काकशब्दपरायणायै० ३१। ककारवर्णमुकुटायै० ३२। ककारवर्णभूषायै० ३३। ककारवर्णरूपायै० ३४। काकशब्दपरायणायै० ३५। कवीरास्फालरतायै० ३६। कमलाकरपूजितायै० ३७। कमलाकरनाथायै० ३८। कमलाकररूपधृतायै० ३९। कमलाकरसिद्धिस्थायै० ४०। कमलाकरपादायै० ४१। कमलाकरमध्यस्थायै० ४२। कमलाकरतोषितायै० ४३। कथंकारपरालापायै० ४४। कथंकारपरायणायै० ४५। कथंकारपदस्थायै० ४६। कथंकारपदार्थभुवे० ४७। कमलाक्ष्यै० ४८। कमलजायै० ४९। कमलाक्षप्रपूजितायै० ५०। कमलाक्षवरोद्युक्तायै० ५१। ककारायै० ५२। कर्बुराक्षरायै० ५३। करतारायै० ५४। करच्छिन्नायै० ५५। करश्यामायै० ५६। करार्णवायै० ५७। करपूज्यायै ५८। कररतायै० ५९। करदायै० ६०। करपूजितायै० ६१। करतोयायै० ६२। करामर्षायै० ६३। कर्मनाशायै० ६४। करप्रियायै० ६५। करप्राणायै० ६६। करकजायै० ६७। करकायै० ६८। करकान्तरायै० ६९। करकाचलरूपायै ७०। करकाचलशोभिन्यै० ७१। करकाचलपुत्र्यै० ७२। करकाचलतोषितायै० ७३। करकाचलगेहस्थायै० ७४। करकाचलरक्षिण्यै० ७५। करकाचलसम्मान्यायै० ७६। करकाचलकारिण्यै० ७७। करकाचलवर्षाढ्यायै० ७८। करकाचलरञ्जितायै० ७९। करकाचलकान्तारायै० ८०। करकाचलमालिन्ये० ८१ करकाचलभोज्यायै० ८२। करकाचलरूपिण्ये० ८३। करामलकसंस्थायै० ८४। करामलकसिद्धिदायै० ८५। करामलकसम्पूज्यायै० ८६। करामलकतारिण्ये० ८७। करामलककाल्यै० ८८। करामलकरोचिन्यै० ८९। कमामलकमात्रे नमः ९०। करामलकसेविन्यै० ९१। करामलकवद्ध्यायै० ९२। करामलकदायिन्यै० ९३। कञ्जनेत्रायै० ९४। कञ्जमत्यै० ९५। कञ्जस्थायै० ९६। कञ्जधारिण्यै० ९७। कञ्जमालाप्रियकर्यै० ९८। कञ्जरूपायै० ९९। कञ्जजायै० १००। कञ्जजात्यै० १०१। कञ्जगत्यै० १०२। कञ्जहोमपरायणायै० १०३। कञ्जमण्डलमध्यस्थायै० १०४। कञ्जाभरणभूषितायै० १०५। कञ्जसम्माननिरतायै० १०६। कञ्जोत्पत्तिपरायणायै० १०७। कञ्जराशिसमाकारायै० १०८। कञ्जारण्यनिवासिन्यै० १०९। करञ्जवृक्षमध्यस्थायै० ११०। करञ्जवृक्षवासिन्यै० १११। करञ्जफलभूषाढ्यायै० ११२। करञ्जारण्यवासिन्यै० ११३। करञ्जमालाभरणायै० ११४। करवालपरायणायै० ११५। करवालप्रहृष्टात्मनेनमः ११६। करवालप्रियागत्यै० ११७। करवालप्रियाकन्थायै नमः ११८। करवालविहारिण्यै० ११९। करवालमयै० १२०। कर्मायै० १२१। करवालप्रियङ्कर्यै० १२२। कबन्धमालाभरणायै० १२३। कबन्धराशिमध्यगायै०

१२४। कबन्धकूटसंस्थानायै० १२५। कबन्धानन्तभूषणायै० १२६। कबन्धनादसन्तुष्टायै० १२७। कबन्धासनधारिण्यै० १२८। कबन्धगृहमध्यस्थायै० १२९। कबन्धवनवासिन्यै० १३०। कबन्धकाञ्च्यै० १३१। करिण्यै० १३२। कबन्धराशिभूषणायै० १३३। कबन्धमालाजयदायै० १३४। कबन्धदेहवासिन्यै० १३५। कबन्धासनमान्यायै० १३६। कपालमाल्यधारिण्यै० १३७। कपालमालामध्यस्थायै० १३८। कपालव्रततोषितायै० १३९। कपालदीपसन्तुष्टयै० १४०। कपालदीपरूपिण्यै० १४१। कपालदीपवरदायै० १४२। कपालकज्जलस्थितायै० १४३। कपालमालाजयदायै० १४४। कपालजलतोषिण्यै० १४५। कपालसिद्धिसंहृष्टयै० १४६। कपालभोजनोद्यतायै० १४७। कपालव्रतसंस्थानायै० १४८। कपालकमलालयायै० १४९। कवित्वामृतसारायै० १५०। कवित्वामृतसागरायै० १५१। कवित्वसिद्धिसंहृष्टयै० १५२। कवित्वादानकारिण्यै १५३। कविपूज्यायै० १५४। कविगत्यै० १५५। कविरूपायै० १५६। कविप्रियायै० १५७। कविब्रह्मानन्दरूपायै० १५८। कवित्वव्रततोषितायै० १५९। कवित्वव्रतसंस्थानायै० १६०। कविवांछाप्रपूरिण्यै० १६१। कविकण्ठस्थितायै० १६२। कं ह्रीं कं कं कं कविपूर्तिदायै० १६३। कज्जलायै० १६४। कज्जलदानमानसायै० १६५। कज्जलप्रियायै० १६६। कपालकज्जलसमायै० १६७। कज्जलेशप्रपूजितायै० १६८। कज्जलार्णवमध्यस्थायै० १६९। कज्जलानन्दरूपिण्यै० १७०। कज्जलप्रियसन्तुष्टायै० १७१। कज्जलप्रियतोषिण्यै० १७२। कपालमालाभरणायै० १७३। कपालकरभूषणायै० १७४। कपालकरभूषाढ्यायै० १७५। कपालचक्रमण्डितायै० १७६। कपालकोटिनिलयायै० १७७। कपालदुर्गकारिण्यै० १७८। कपालगिरिसंस्थानायै० १७९। कपालचक्रवासिन्यै० १८०। कपालपात्रसन्तुष्टायै० १८१। कपालार्घ्यपरायणायै० १८२। कपालार्घ्यप्रियप्राणायै० १८३। कपालार्घ्यवरप्रदायै० १८४। कपालचक्ररूपायै० १८५। कपालरूपमात्रगायै० १८६। कदल्यै० १८७। कदलीरूपायै० १८८। कदलीवनवासिन्यै० १८९। कदलीपुष्पसंप्रीतायै० १९०। कदलीफलमानसायै० १९१। कदलीहोमसन्तुष्टायै० १९२। कदलीदर्शनोद्यतायै० १९३। कदलीगर्भमध्यस्थायै० १९४। कदलीवनसुन्दर्यै० १९५। कदम्बपुष्पनिलयायै० १९६। कदम्बवनमध्यगायै० १९७। कदम्बकुसुमामोदायै० १९८। कदम्बवनतोषिण्यै १९९। कदम्बपुष्पसम्पूज्यायै० २००। कदम्बपुष्पहोमदायै० २०१। कदम्बपुष्पमध्यस्थायै० २०२। कदम्बफलभोजिन्यै० २०३। कदम्बकाननान्तस्थायै० २०४। कदम्बाचलवासिन्यै २०५। कक्षपायै० २०६। कक्षपाराध्यायै० २०७। कक्षपासनसंस्थितायै० २०८। कर्णपूरायै० २०९। कर्णनासायै० २१०। कर्णाढ्यायै० २११। कालभैरव्यै० २१२। कलप्रीतायै० २१३। कलहदायै० २१४। कलहायै० २१५। कलहातुरायै २१६। कर्णयक्ष्यै० २१७। कथिन्यै० २१८। कर्णसुन्दर्यै० २१९। कर्णपिशाचिन्यै० २२०। कर्णमञ्जर्यै० २२१। कविकक्षदायै० २२२। कविकक्षविरूपाढ्यायै० २२३। कविकक्षस्वरूपिण्यै० २२४। कस्तूरीमृगसंस्थानायै० २२५। कस्तूरीमृगरूपिण्यै० २२६। कस्तूरीमृगसन्तोषायै० २२७। कस्तूरीमृगमध्यगायै० २२८ कस्तूरीरसनीलाङ्ग्यै० २२९। कस्तूरीगन्धतोषितायै० २३०। कस्तूरीपूजकप्राणायै० २३१। कस्तूरीपूजकप्रियायै० २३२। कस्तूरीप्रेमसन्तुष्टयै० २३३। कस्तूरीप्राणधारिण्यै २३४। कस्तूरीपूजकानन्दायै० २२५। कस्तूरीगन्धरूपिण्यै० २३६। कस्तूरीमालिकारूपायै० २३७। कस्तूरीभोजनप्रियायै० २३८। कस्तूरीतिलकानन्दायै० २३९। कस्तूरीतिलकप्रियायै० २४०। कस्तूरीहोमसन्तुष्टायै० २४१। कस्तूरीतर्पणोद्यतायै० २४२। कस्तूरीमार्जनोद्युक्तायै० २४३। कस्तूरीचक्रपूजितायै २४४। कस्तूरीपुष्पसम्पूज्यायै० २४५। कस्तूरीचर्वणोद्यतायै० २४६। कस्तूरीगर्भमध्यस्थायै० २४७। कस्तूरीवस्त्रधारिण्यै० २४८। कस्तूरिकामोदरतायै० २४९। कस्तूरीवनवासिन्यै० २५०। कस्तूरीवनसंरक्षायै० २५१ कस्तूरीप्रेमधारिण्यै० २५३। कस्तूरीशक्तिनिलयायै० २५३। कस्तूरीशक्तिकुण्डगायै० २५४। कस्तूरीकुण्डसंस्नातायै० २५५। कस्तूरीकुण्डमज्जनायै० २५६। कस्तूरीजीवसन्तुष्टयै० २५७। कस्तूरीजीवधारिण्यै २५८। कस्तूरीपरमामोदायै० २५९। कस्तूरीजीवनक्षमायै० २६०। कस्तूरीजातिभावस्थायै० २६१। कस्तूरीगन्धचुम्बनायै० २६२।

कस्तूरीगन्धसंशोभाविराजितकपालभुवे० २६३। कस्तूरीमदनान्तस्थायै० २६४। कस्तूरीमदहर्षदायै० २६५। कस्तूर्यै० २६६। कवितानाढ्यायै० २६७। कस्तूरीगृहमध्यगायै० २६८। कस्तूरीस्पर्शप्राणायै० २६९। कस्तूरीनिन्दकान्तकायै० २७०। कस्तूर्यामोदरसिकायै० २७१। कस्तूरीक्रीडनोद्यतायै० २७२। कस्तूरीदाननिरतायै० २७३। कस्तूरीवरदायिन्यै० २७४। कस्तूरीस्थापनाशक्तायै० २७५। कस्तूरीस्थानरञ्जिन्यै० २७६। कस्तूरीकुशलप्राणायै० २७७। कस्तूरीस्तुतिवन्दितायै० २७८। कस्तूरीवन्दिकाराध्यायै० २७९। कस्तूरीस्थानवासिन्यै० २८०। कहरूपायै० २८१। कहाढ्यायै० २८२। कहानन्दायै० २८३। कहात्मभुवे० २८४। कहपूज्यायै० २८५। कहेत्याख्यायै० २८६। कहहेषायै० २८७। कहात्मिकायै० २८८। कहमालायै० २८९। कण्ठभूषायै० २९०। कहमन्त्रजपोद्यतायै० २९१। कहनामस्मृतिपरायै० २९२। कहनामपरायणायै० २९३। कहपरायणरतायै० २९४। कहदेव्यै० २९५। कहेश्वर्यै० २९६। कहहेतवे० २९७। कहनन्दायै० २९८। कहनादपरायणायै० २९९। कहमात्रे० ३००। कहान्तस्थायै० ३०१। कहमन्त्रायै० ३०२। कहेश्वरायै० ३०३। कहगेयायै० ३०४। कहाराध्यायै० ३०५। कहध्यानपरायणायै० ३०६। कहतन्त्रायै० ३०७। कहकहायै० ३०८। कहचर्यापरायणायै० ३०९। कहाचारायै० ३१०। कहगत्यै० ३११। कहताण्डवकारिण्यै० ३२१। कहारण्यायै० ३१३। कहगत्यै० ३१४। कहशक्तिपरायणायै० ३१५। कहराज्यरतायै० ३१६। कर्मसाक्षिण्यै० ३१७। कर्मसुन्दर्यै ३१८। कर्मविद्यायै० ३१९। कर्मगत्यै० ३२०। कर्मतन्त्रपरायणायै० ३२१। कर्ममात्रायै० ३२२। कर्मगात्रायै० ३२३। कर्मधर्मपरायणायै० ३२४। कर्मरेखानाशकर्त्र्यै० ३२५। कर्मरेखाविनोदिन्यै० ३२६। कर्मरेखामोहकर्यै० ३२७। कर्मकीर्तिपराणायै० ३२८। कर्मविद्यायै० ३२९। कर्मसारायै० ३३०। कर्माधारायै ३३१। कर्मभुवे० ३३२। कर्मकार्यै ३३३। कर्महार्यै० ३३४। कर्मकौतुकसुन्दर्यै० ३३५। कर्मकाल्यै० ३३६। कर्मतारायै० ३३७। कर्मच्छिन्नायै० ३३८। कर्मदायै० ३३९। कर्मचाण्डालिन्यै० ३४०। कर्मवेदमात्रे० ३४१। कर्मभ्रुवे० ३४२। कर्मकाण्डरतानन्तायै० ३४०। कर्मकाण्डानुमानितायै० ३४४। कर्मकाण्डपरीणाहायै० ३४५। कमठ्यै० ३४६। कमठाकृत्यै० ३४७। कमठाराध्यहृदयायै० ३४८। कमठायै० ३४९। कण्ठसुन्दर्यै० ३५०। कमठासनसंसेव्यायै० ३५१। कमठायै० ३५२। कर्मतत्परायै० ३५३। करुणाकरकान्तायै० ३५४। करुणाकरवन्दितायै० ३५५। कठोरायै० ३५६। करमालायै० ३५७। कठोरकुचधारिण्यै० ३५८। कपर्दिन्यै० ३५९। कपटिन्यै० ३६०। कठिनायै० ३६१। कङ्कभूषणायै० ३६२। करभोर्यै० ३६३। कठिनदायै० ३६४। करभायै० ३६५। करभालयायै० ३६६। कलभाषामयै० ३६७। कल्पायै० ३६८। कल्पनायै० ३६९। कल्पदायिन्यै० ३७०। कमलस्थायै० ३७१। कलामालायै० ३७२। कमलास्यायै० ३७३। क्वणत्प्रभायै० ३७४। ककुद्मिन्यै० ३७५। कष्टवत्यै० ३७६। करणीयकथार्चितायै० ३७७। कचार्चितायै० ३७८। कचतन्वै० ३७९। कचसुन्दरधारिण्यै० ३८०। कठोरकुचसंलग्नायै० ३८१। कटिसूत्रविराजितायै० ३८२। कर्णभक्ष्यप्रियायै० ३८३। कन्दायै० ३८४। कथायै० ३८५। कन्दवत्यै० ३८६। कल्यै० ३८७। कलिघ्न्यै० ३८८। कलिदूत्यै० ३८९। कविनायकपूजितायै० ३९०। कणकक्षानियन्त्र्यै० ३९१। किञ्चित्कविवरार्चितायै० ३९२। कर्त्र्यै० ३९३। कर्तृकाभूषायै० ३९४। करिण्यै० ३९५। कर्कशत्रुपायै० ३९६। कर्णेश्यै० ३९७। कर्णपायै० ३९८। कलवाचायै० ३९९। कलानिध्यै० ४००। कलनायै० ४०१। कलनाधारायै० ४०२। कारिकायै० ४०३। करकायै० ४०४। करायै० ४०५। कलज्ञेयायै० ४०६। कर्कराश्यै० ४०७। कर्कराशिपूजितायै० ४०८। कन्याराश्यै ४०९। कन्यकायै० ४१०। कन्यकाप्रियभाषिण्यै० ४११। कन्यकादानसन्तुष्टायै० ४२१। कन्यकादानतोषिण्यै० ४१३। कन्यादानकरानन्दायै० ४१४। कन्यादानग्रहेष्टदायै० ४१५। कर्षणायै० ४१६। कक्षदहनायै० ४१७। कामितायै० ४१८। कमलासनायै० ४१९। करमालानन्दकर्त्र्यै० ४२०। करमालाप्रभूषितायै० ४२१। करमालाशयानन्दायै० ४२२। करमालासमागमायै० ४२३। करमालासिद्धिदात्र्यै० ४२४। करमालायै० ४२५। करप्रियायै० ४२६। करप्रियाकररतायै० ४२७। करदानपरायणायै० ४२८। कलानन्दायै० ४२९। कलिपूज्यायै० ४३०।

कलिप्रस्वै० ४३१। कलनादनिनादस्थायै० ४३२। कलनादवरदायै० ४३३। कलनादसमाजस्थायै० ४३४। कहोलायै० ४३५। कहोलदायै० ४३६। कहोलगेहमध्यस्थायै० ४३७। कहोलवरदायै० ४३८। कहोलकविताधरायै०४३९। कहोलऋषिमानितायै० ४४०। कहोलमानसाराध्यायै० ४४१। कहोलवाक्यकारिण्यै० ४४२। कर्तृरूपायै० ४४३। कर्तृमयायै० ४४४। कर्तृमात्रे० ४४५। कर्त्र्यै० ४४६। कनीयस्यै० ४४७। कनकाराध्यायै० ४४८। कनीनकमयै० ४४९। कनीयानन्दनिलयायै० ४५०। कनकानन्दतोषितायै० ४५१। कनीनककरायै० ४५२। काष्ठायै० ४५३। कथार्णवकर्यै० ४५४। कर्य्यै० ४५५। करिगम्यायै०। ४५६। करिगत्यै० ४५७। करिध्वजपरायणायै० ४५८। करिनाथप्रियायै० ४५९। कण्ठायै० ४६०। कथानकप्रतोषितायै० ४६१। कमनीयायै० ४६२। कमनकायै० ४६३। कमनीयविभूषणायै० ४६४। कमनीयसमाजस्थायै० ४६५। कमनीयव्रतप्रियायै० ४६६। कमनीयगुणाराध्यायै० ४६७। कपिलायै० ४६८। कपिलेश्वर्यै० ४६९। कपिलाराध्यहृदयायै० ४७०। कपिलाप्रियवादिन्यै० ४७१। कहचक्रमन्त्रवर्णायै० ४७२। कहचक्रप्रसूनकायै० ४७३। कएईलह्रींस्वरूपायै० ४७४। कएईलह्रींवरप्रदायै० ४७५। कएईलह्रींसिद्धिदात्र्यै० ४७६। कएईलह्रींस्वरूपिण्यै० ४७७। कएईलह्रींमन्त्रवर्णायै० ४७८। कएईलह्रींप्रसूकलायै० ४७९। कवर्गायै० ४८०। कपाटस्थायै० ४८१। कपाटोद्घाटनक्षमायै० ४८२। कङ्काल्यै० ४८३। कपाल्यै० ४८४। कङ्कालप्रियभाषिण्यै० ४८५। कङ्कलभैरवाराध्यायै नमः ४८६। कङ्कालमानसंस्थितायै० ४८७। कङ्कालमोहनिरतायै० ४८८। कङ्कालमोहदायिन्यै नमः ४८९। कलुषघ्न्ये नमः ४९०। कलुषहायै० ४९१। कलुषार्तिविनाशिन्यै० ४९२। कलिपुष्पायै नमः ४९३। कलादानायै नमः ४९४। कशिप्वै० ४९५। कश्यपार्चितायै० ४९६। कश्यपायै० ४९७। कश्यपाराध्यायै० ४९८। कलिपूर्णकलेवरायै० ४९९। कलेवरकर्यै० ५००। कांच्यै० ५०१। कवर्गाद्यै० ५०२। करालकायै० ५०३। करालभैरवाराध्यायै० ५०४। करालभैरवेश्वर्यै० ५०५। करालायै० ५०६। कलनाधारायै० ५०७। कपर्दीशवरप्रदायै० ५०८। कपर्दीशप्रेमलतायै० ५०९। कपर्द्दिमालिकायै० ५१०। कपर्द्दिजपमालाढ्यायै० ५११। करवीरप्रसूनदायै० ५१२। करवीरप्रियप्राणायै० ५१३। करवीरप्रपूजितायै० ५१४। कर्णिकारसमाकारायै० ५१५। कर्णिकारप्रपूजितायै नमः ५१६। करीषाग्निस्थितायै नमः ५१७। कर्षायै० ५१८। कर्षमात्रसुवर्णदायै० ५१९। कलशायै० ५२०। कलशाराध्यायै० ५२१। कषायायै० ५२२। करिगानदायै० ५२३। कपिलायै० ५२४। कलकंठ्यै० ५२५। कलिकल्पलतायै० ५२६। कल्पलतायै० ५२७। कल्पमात्रे० ५२८। कल्पकार्यै० ५२९। कल्पभुवे० ५३०। कर्पूरामोदरुचिरायै० ५३१। कर्पूरामोदधारिण्यै० ५३२। कर्पूरमालाभरणायै० ५३३। कर्पूरवासुपूर्तिदायै० ५३४। कर्पूरमालाजपदायै० ५३५। कर्पूरार्णवमध्यगायै० ५३६। कर्पूरतर्पणरतायै० ५३७। कटकाम्बरधारिण्यै० ५३८। कपटेश्वरसम्पूज्यायै० ५३९। कपटेश्वररूपिण्यै० ५४०। कद्व्रयै० ५४१। कपिध्वजाराध्यायै० ५४२। कलापपुष्परूपिण्यै० ५४३। कलापपुष्परुचिरायै० ५४४। कलापपुष्पपूजितायै० ५४५। क्रकचायै० ५४६। क्रकचाराध्यायै० ५४७। कथंब्रूमायै० ५४८। करलतायै० ५४९। कथङ्कारविनिर्मुक्तायै० ५५० काल्यै० ५५१। कालक्रियायै० ५५२। क्रतौ० ५५३। कामिन्यै० ५५४। कामिनीपूज्यायै० ५५५। कामिनीपुष्पधारिण्यै ५५६। कामिनीपुष्पनिलयायै० ५५७। कामिनीपुष्पपूर्णिमायै० ५५८। कामिनीपुष्पपूजार्हायै० ५५९। कामिनीपुष्पभूषयायै० ५६०। कामिनीपुष्पतिलकायै० ५६१। कामिनीकुण्डचुम्बनायै० ५६२। कामिनीयोगसन्तुष्टयै० ५६३। कामिनीयोगभोगदायै० ५६४। कामिनीकुण्डसम्मग्नायै० ५६५। कामिनीकुण्डमध्यगायै० ५६६। कामिनीमानसाराध्यायै० ५६७। कामिनीमानतोषितायै० ५६८। कामिनीमानसञ्चारायै० ५६९। कालिकायै० ५७०। कालकालिकायै० ५७१। कामायै० ५७२। कामदेव्यै० ५७३। कामेश्यै० ५७४। कामसम्भवायै० ५७५। कामभवायै० ५७६। कामरतायै० ५७७। कामार्त्तायै० ५७८। काममञ्जर्यै० ५७९। काममञ्जीररणितायै० ५८०। कामदेवप्रियान्तरायै० ५८१। कामकाल्यै० ५८२। कामकलायै० ५८३। कालिकायै० ५८४। कमलार्चितायै० ५८५। कादिकायै० ५८६। कमलायै० ५८७। काल्यै०

५८८। कालानलसमप्रभायै० ५८९। कल्पान्तदहनायै० ५९०। कान्तायै० ५९१। कान्तारप्रियवासिन्यै० ५९२। कालपूज्यायै० ५९३। कालरतायै० ५९४। कालमात्रे० ५९५। कालिन्यै० ५९६। कालवीरायै० ५९७। कालघोरायै० ५९८। कालसिद्धायै० ५९९। कालदायै० ६००। कालाञ्जनसमाकारायै० ६०१। कालञ्जरनिवासिन्यै० ६०२। कालऋद्ध्यै० ६०३। कालवृद्ध्यै० ६०४। कारागृहविमोचिन्यै० ६०५। कादिविद्यायै० ६०६। कादिमात्रे० ६०७। कादिस्थायै० ६०८। कादिसुन्दर्यै० ६०९। काश्यै० ६१०। कांच्यै० ६११। काञ्चीशायै० ६१२। काशीवरदायिन्यै० ६१३। क्रींबीजायै० ६१४। क्रांबीजायै० ६१५। काम्यायै० ६१६। कामगत्यै० ६१७। काम्यसिद्धिदात्र्यै० ६१८। कामभुवे० ६१९। कामाख्यायै० ६२०। कामरूपायै० ६२१। कामचापविमोचिन्यै० ६२२। कामदेवकलारामायै० ६२३। कामदेवकलालयायै० ६२४। कामरात्र्यै० ६२५। कामदात्र्यै० ६२६। कान्ताराचलवासिन्यै० ६२७। कालरूपायै० ६२८। कालगत्यै० ६२९। कामयोगपरायणायै० ६३०। कामसम्मर्द्दनरतायै० ६३१। कामगेहविनाशिन्यै० ६३२। कालभैरवभार्यायै० ६३३। कालभैरवकामिन्यै० ६३४। कालभैरवयोगस्थायै० ६३५। कालभैरवभोगदायै० ६३६। कामधेन्वै० ६३७। कामदोग्ध्यै० ६३८। काममात्रे० ६३९। कान्तिदायै० ६४०। कामुकायै० ६४१। कामुकाराध्यायै० ६४२। कामुकानन्दवर्द्धिन्यै० ६४३। कार्त्तवीर्यायै० ६४४। कर्तिकेयायै० ६४५। कार्तिकेयप्रपूजितायै० ६४६। कार्यायै० ६४७। कारणदायै० ६४८। कार्यकारिण्यै० ६४९। कारणान्तरायै० ६५०। कान्तिगम्यायै० ६५१। कान्तिमयै० ६५२। कान्त्यायै० ६५३। कात्यायन्यै० ६५४। कायै० ६५५। कामसारायै० ६५६। काश्मीरायै० ६५७। काश्मीराचारतत्परायै० ६५८। कामरूपाचाररतायै० ६५९। कामरूपप्रियम्बदायै० ६६०। कामरूपाचारनिद्धयै० ६६१। कामरूपमनोमयै० ६६२। कार्तिक्ये० ६६३। कार्तिकाराध्यायै० ६६४। काञ्चनारप्रसूनभुवे० ६६५। काञ्चनारप्रसूनाभायै० ६६६। काञ्चनारप्रपूजितायै० ६६७। काञ्चरूपायै० ६६८। काञ्चभूम्यै० ६६९। कांस्यपात्रप्रभोजिन्यै० ६७०। कांस्यध्वनिमयै० ६७१। कामसुन्दर्यै० ६७२। कामचुम्बनायै० ६७३। कामपुष्पप्रतीकाशायै० ६७४। कामद्रुमसमागमायै० ६७५। कामपुष्पायै० ६७६। कामभूम्यै० ६७७। कामपूज्यायै० ६७८। कामदायै० ६७९। कामदेहायै० ६८०। कामगेहायै० ६८१। कामबीजपरायणायै० ६८२। कामध्वजसमारूढायै० ६८३। कामध्वजसमास्थितायै० ६८४। काश्यप्यै० ६८५। काश्यपाराध्यायै० ६८६। काश्यपानन्ददायिन्यै० ६८७। कालिन्दीजलसंकाशायै० ६८८। कालिन्दीजलपूजितायै० ६८९। कादेवपूजानिरतायै० ६९०। कादेवपरमर्थदायै० ६९१। कार्मणायै० ६९२। कार्मणाकारायै० ६९३। कामकार्मणकारिण्यै० ६९४। कार्मणत्रोटनकारिण्यै० ६९५। काकिन्यै० ६९६। कारणाह्वयायै० ६९७। काव्यामृतायै० ६९८। कालिङ्गायै० ६९९। कालिङ्गमर्दनोद्यतायै० ७००। कालागुरुभूषणाढ्यायै० ७०१। कालागुरुभूतिदायै० ७०२। कालागुरुसुगन्धायै० ७०३। कालागुरुप्रतर्पणायै० ७०४। कावेरीनीरसम्प्रीतायै० ७०५। कावेरीतीरवासिन्यै० ७०६। कालचक्रभ्रमाकारायै० ७०७। कालचक्रनिवासिन्यै० ७०८। काननायै० ७०९। काननाधारायै० ७१०। काव्यै० ७११। कारुणिकामय्यै० ७१२। कांपील्यवासिन्यै० ७१३। काष्ठायै० ७१४। कामपत्न्यै० ७१५। कामभुवे० ७१६। कादम्बरीपानरतायै० ७१७। कादम्बर्यै० ७१८। कलायै० ७१९। कामवन्ध्यायै० ७२०। कामेश्यै० ७२१। कामराजप्रपूजितायै० ७२२। कामराजेश्वरीविद्यायै० ७२३। कामकौतुकसुन्दर्यै० ७२४। काम्बोजायै नमः ७२५। काञ्छिनदायै० ७२६। कांस्यायै० ७२७। काञ्चनकारिण्यै० ७२८। काञ्चनाद्रिसमाकारायै० ७२९। काञ्चनाद्रिप्रदानदायै० ७३०। कामकीर्त्यै० ७३१। कामकेश्यै० ७३२। कारिकायै० ७३३। कान्ताराश्रयायै० ७३४। कामभेद्यायै० ७३५। कामार्तिनाशिन्यै० ७३६। कामभूमिकायै० ७३७। कालनिर्णाशिन्यै० ७३८। कामवनितायै० ७३९। कामरूपिण्यै ७४०। कामसन्दीप्त्यै० ७४१। काव्यदायै० ७४२। कालसुन्दर्यै० ७४३। कामेश्यै० ७४४। कारणवरायै० ७४५। कामेशीपूजनोद्यतायै० ७४६। काञ्चीनूपुरभूषाढ्यायै० ७४७। कुंकुमाभरणान्वितायै० ७४८। कालचक्रायै० ७४९। कालगत्यै० ७५०। कालचक्रमनोभवायै० ७५१। कुन्दमध्यायै० ७५२। कुन्दपुष्पायै० ७५३। कुन्दपुष्पप्रियायै० ७५४। कुजायै० ७५५।

कुजमात्रे० ७५६ । कुजाराध्यायै० ७५७ । कुठारवरधारिण्यै० ७५८ । कुञ्जरस्थायै० ७५९ । कुशरतायै० ७६० । कुशेशयविलोचनायै० ७६१ । कुनट्यै० ७६२ । कुरर्यै० ७६३ । क्रुद्धायै० ७६४ । कुरंग्यै० ७६५ । कुटजाश्रयायै० ७६६ । कुम्भीनसविभूषायै० ७६७ । कुम्भीनसवधोद्यतायै० ७६८ । कुम्भकर्णमनोल्लासायै० ७६९ । कुलचूडामण्यै० ७७० । कुलायै० ७७१ । कुलगृहकन्यायै० ७७२ । कुलचूडामणिप्रियायै० ७७३ । कुलपूज्यायै० ७७४ । कुलाराध्यायै० ७७५ । कुलपूजापरायणायै० ७७६ । कुलभूषायै० ७७७ । कुक्ष्यै० ७७८ । कुररीगणसेवितायै० ७७९ । कुलपुष्पायै० ७८० । कुलरतायै० ७८१ । कुलपुष्पपरायणायै० ७८२ । कुलवस्त्रायै० ७८३ । कुलाराध्यायै० ७८४ । कुलकुण्डसमप्रभायै० ७८५ । कुलकुण्डसमोल्लासायै० ७८६ । कुलपुष्पपरायणायै० ७८७ । कुण्डपुष्पप्रसन्नास्यायै० ७८८ । कुण्डगोलोद्भवात्मिकायै० ७८९ । कुण्डगोलोद्भवाधारायै० ७९० । कुण्डगोलमयै० ७९१ । कुह्वै० ७९२ । कुण्डगोलप्रियप्राणायै० ७९३ । कुण्डगोलप्रपूजितायै० ७९४ । कुण्डगोलमनोल्लासायै० ७९५ । कुण्डगोलवरप्रदायै० ७९६ । कुण्डदेवरतायै० ७९७ । क्रुद्धायै० ७९८ । कुलसिद्धिकरापरायै० ७९९ । कुलकुण्डसमाकारायै० ८०० । कुलकुण्डसमानभ्रुवे० ८०१ । कुण्डसिद्ध्यै० ८०२ । कुण्डऋद्ध्यै० ८०३ । कुमारीपूजनोद्यतायै० ८०४ । कुमारीपूजकप्राणायै० ८०५ । कुमारीपूजकालयायै० ८०५ । कुमार्यै ८०७ । कामसन्तुष्टायै० ८०८ । कुमारीपूजनोत्सुकायै० ८०९ । कुमारीव्रतसन्तुष्टायै० ८१० । कुमारीरूपधारिण्यै० ८११ । कुमारीभोजनप्रीतायै० ८१२ । कुमार्यै० ८१३ । कुमारदायै० ८१४ । कुमारमात्रे० ८१५ । कुलदायै० ८१६ । कुलयोन्यै० ८१७ । कुलेश्वर्यै० ८१८ । कुललिङ्गायै० ८१९ । कुलानन्दायै० ८२० । कुलरम्यायै० ८२१ । कुतर्कधृषे० ८२२ । कुन्त्यै० ८२३ । कुलकान्तायै० ८२४ । कुलमार्गपरायणायै० ८२५ । कुल्लायै० ८२६ । कुरुकुल्लायै० ८२७ । कुल्लुकायै० ८२८ । कुलकामदायै० ८२९ । कुलिशाङ्ग्यै० ८३० । कुब्जिकायै० ८३१ । कुब्जिकानन्दवर्द्धिन्यै० ८३२ । कुलीनायै० ८३३ । कुञ्जरगत्यै० ८३४ । कुञ्जरेश्वरगामिन्यै० ८३५ । कुलपाल्यै० ८३६ । कुलवत्यै० ८३७ । कुलदीपिकायै० ८३८ । कुलयोगेश्वर्यै० ८३९ । कुण्डायै० ८४० । कुंकुमारुणविग्रहायै० ८४१ । कुंकुमानन्दसन्तोषायै० ८४२ । कुंकुंमार्णववासिन्यै० ८४३ । कुंकुमायै० ८४४ । कुसुमप्रीतायै० कुलभुवे० ८४६ । कुलसुन्दर्यै० ८४७ । कुमुद्वत्यै० ८४८ । कुमुदिन्यै० ८४९ । कुशलायै० ८५० । कुलटालयायै० ८५१ । कुलटालयमध्यस्थायै० ८५२ । कुलटासङ्गतोषितायै० ८५३ । कुलटाभुवनोद्युक्तायै० ८५४ । कुशावर्तायै० ८५५ । कुलार्णवायै० ८५६ । कुलार्णवाचाररतायै० ८५७ । कुण्डल्यै० ८५८ । कुण्डलाकृत्यै० ८५९ । कुमत्यै० ८६० । कुलश्रेष्ठायै० ८६१ । कुलचक्रपरायणायै० ८६२ । कूटस्थायै० ८६३ । कूटदृष्ट्यै० ८६४ । कुन्तलायै० ८६५ । कुन्तलाकृत्यै० ८६६ । कुशलाकृतिरूपायै० ८६७ । कूर्चबीजधरायै ८६८ । क्वै० ८६९ । कुं कुं कुं कुं शब्दरतायै० ८७० । क्रुं क्रुं क्रुं क्रुं परायणायै० ८७१ । कुं कुं कुं शब्दनिलयायै० ८७२ । कुक्कुरालयवासिन्यै० ८७३ । कुक्कुरासङ्गसंयुक्तायै० ८७४ । कुक्कुरानन्तविग्रहायै० ८७५ । कूर्चारम्भायै० ८७६ । कूर्चबीजायै० ८७७ । कूर्चजापपरायणायै० ८७८ । कुलिन्यै ८७९ । कुलसंस्थानायै० ८८० । कूर्चकण्ठपरागत्यै० ८८१ । कूर्चवीणाभालदेशायै० ८८२ । कूर्चमस्तकभूषितायै०८८३ । कुलवृक्षगतायै० ८८४ । कूर्मायै० ८८५ । कूर्माचलनिवासिन्यै० ८८६ । कुलबिन्दवे० ८८७ । कुलशिवायै० ८८८ । कुलशक्तिपरायणायै० ८८९ । कुलबिन्दुमणिप्रख्यायै० ८९० । कुंकुमद्रुमवासिन्यै० ८९१ । कुचमर्दनसन्तुष्टायै० ८९२ । कुचजापपरायणायै० ८९३ । कुचस्पर्शनसन्तुष्टायै० ८९४ । कुचालिङ्गनहर्षदायै० ८९५ । कुमतिघ्न्यै० ८९६ । कुबेरार्च्यायै० ८९७ । कुचभ्रुवे० ८९८ । कुलनायिकायै० ८९९ । कुगायनायै० ९०० । कुचधरायै० ९०१ । कुमात्रे० ९०२ । कुन्ददन्तिन्यै० ९०३ । कुगेयायै० ९०४ । कुहराभासायै० ९०५ । कुगेयाकुघ्नदारिकायै० ९०६ । कीर्त्यै० ९०७ । किरातिन्यै० ९०८ । क्लिन्नायै० ९०९ । किन्नरायै० ९१० । किन्नर्यै० ९११ । क्रियायै० ९१२ । क्रींकारायै० ९१३ । क्रींजपासक्तायै० ९१४ । क्रीं हूं स्त्रीं मन्त्ररूपिण्यै० ९१५ । किर्मीरितदृशापाङ्ग्यै० ९१६ । किशोर्यै० ९१७ । किरीटिन्यै० ९१८ । कीटभाषायै० ९१९ । कीटयोन्यै० ९२० । कीटमात्रे० ९२१ । कीटदायै० ९२२ । किंशुकायै० ९२३ ।

कीरभाषायै० ९२४। क्रियासारायै० ९२५। क्रियावत्यै० ९२६। कींकींशब्दपरायै० ९२७। क्लींक्लींक्लूंक्लैंक्लौंमन्त्ररूपिण्यै० ९२८। कांकींकूंकैंस्वरूपायै० ९२९। क्रः फट्मन्त्रस्वरूपिण्यै० ९३०। केतकीभूषणानन्दायै० ९३१। केतकीभरणान्वितायै० ९३२। केकदायै० ९३३। केशिन्यै० ९३४। केशिसूदनतत्परायै० ९३५। केशरूपायै० ९३६। केशमुक्तायै० ९३७। कैकेयै० ९३८। कौशिक्यै० ९३९। कैरवायै० ९४०। कैरवाह्लादायै० ९४१। केशरायै० ९४२। केतुरूपिण्यै० ९४३। केशवाराध्यहृदयायै० ९४४। केशवासक्तमानसायै० ९४५। क्लैब्यविनाशिन्यै० ९४६। क्लैंचक्लैंबीजजपतोषितायै० ९४७। कौशल्यायै० ९४८। कोशलाक्ष्यै० ९४९। कोशायै० ९५०। कोमलायै० ९५१। कोलापुरनिवासायै० ९५२। कोलासुरविनाशिन्यै० ९५३। कोटिरूपायै० ९५४। कोटिरतायै० ९५५। क्रोधिन्यै० ९५६। क्रोधरूपिण्यै० ९५७। केकायै० ९५८। कोकिलायै० ९५९। कोट्यै० ९६०। कोटिमन्त्रपरायणायै० ९६१। कोट्यनन्तमन्त्रयुक्तायै० ९६२। कैरूपायै० ९६३। केरलाश्रयायै० ९६४। केरलाचारनिपुणायै० ९६५। केरलेन्द्रगृहस्थितायै० ९६६। केदारश्रमसंस्थायै० ९६७। केदारेश्वरपूजितायै० ९६८। क्रोधरूपायै० ९६९। क्रोधपदायै० ९७०। क्रोधमात्रे० ९७१। कौशिक्यै० ९७२। कोदण्डधारिण्यै० ९७३। क्रौंचायै० ९७१। कौशल्यायै० ९७५। कौलमार्गगायै० ९७६। कौलिन्यै० ९७७। कौलिकाराध्यायै० ९७८। कौलिकागरिवासिन्यै० ९७९। कौतुक्यै० ९८०। कौमुद्यै० ९८१। कौलायै० ९८२। कौमार्यै० ९८३। कौरवार्चितायै० ९८४। कौण्डिन्यायै० ९८५। कौशिक्यै० ९८६। क्रोधज्वालाभासुररूपिण्यै० ९८७। कोटिकालानलज्वालायै० ९८८। कोटिमार्तण्डविग्रहायै० ९८९। कृत्तिकायै० ९९०। कृष्णवर्णायै० ९९१। कृष्णायै० ९९२। कृत्यायै० ९९३। क्रियातुरायै० ९९४। कृशाङ्ग्यै० ९९५। कृतकृत्यायै० ९९६। क्रः फट् स्वाहास्वरूपिण्यै० ९९७। क्रौं क्रौं हूं फट् मन्त्रवर्णायै० ९९८। क्रीं ह्रीं हूं फट् नमः स्वधायै० ९९९। क्रीं क्रीं ह्रीं ह्रीं तथा हूं हूं फट् स्वाहा मन्त्ररूपिण्यै नमः १०००। इति श्रीसर्वसाम्राज्यमेधा चतुर्थ्यंत नामसहस्रकं सम्पूर्णम्।

इति श्रीमन्त्रमहार्णवे द्वितीयखण्डे कालीतन्त्रे चतुर्थस्तरङ्गः।

तारा ध्यान

प्रत्यालीढपदार्पिताङ्घ्रि शवहृद्घोराट्टहासापरा
खड्गेन्दीवरकर्त्रिखर्परभुजा हुङ्कार बीजोद्भवा।
खर्वा नीलविशालपिङ्गलजटाजूटैकनागैर्युता
जाड्यं न्यस्य कपालकर्तृ जगतां हन्त्युग्रतारा स्वयम्।।

पृ० ४१८

पञ्चम तरङ्ग

तारातन्त्र

कीर्त्यन्ते सिद्धिदातारस्ताराया मनवोऽधुना। गुरूपदेशाज्ज्ञातैर्यैः कृतार्थाः स्युर्नरा भुवि ॥१॥

अब सिद्धि देने वाले तारादेवी के मन्त्रों का वर्णन किया जा रहा है जिन्हें गुरु के उपदेश से जानकर मनुष्य संसार में कृतार्थ होते हैं।

अथ तारापटलम् ।

तत्रादौ पञ्चाक्षरमन्त्रप्रयोगः मन्त्रमहोदधौ। मन्त्रो यथा

आदि में मन्त्रमहोदधि में वर्णित पञ्चाक्षर मन्त्र का प्रयोग बताया जा रहा है । मन्त्र यह है:

ॐ[1] ह्रीं त्रीं हुं फट्। इति पञ्चाक्षरो[2] मन्त्रः।

अस्य विधानम् ।

विनियोग : अस्य तारामन्त्रस्य अक्षोभ्यऋषिः। बृहतीछन्दः। तारा देवता। ह्रीं बीजं। हुं शक्तिः। ममाभीष्टसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास : ॐ अक्षोभ्य ऋषये नमः शिरसि १। बृहतीछन्दसे नमः मुखे २। तारा देवतायै नमः हृदि ३। ह्रीं बीजाय नमः लिंगे ४। हुं शक्तये नमः पादयोः ५। विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ६। इति ऋष्यादिन्यासः।

करन्यास : ॐ ह्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः १। ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः २। ॐ ह्रूं मध्यमाभ्यां नमः ३। ॐ ह्रैं अनामिकाभ्यां नमः ४। ॐ ह्रौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५। ॐ ह्रः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः। ६॥ इति करन्यासः।

हृदयादिषडङ्गन्यास : ॐ ह्रां हृदयाय नमः १। ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा २। ॐ ह्रूं शिखायै वषट् ३। ॐ ह्रैं कवचाय हुं ४। ॐ ह्रौं नेत्रत्रयाय वौषट् ५। ॐ ह्रः अस्त्राय फट् ६। इति हृदयादिषडङ्गन्यासः।

इस प्रकार न्यास करके षोढान्यास करे।

षोढान्यास : ॐ ह्रीं त्रीं हुं अं श्री कंठाय नमो ललाटे १। ह्रीं त्रीं हुं आं अनन्ताय नमो मुखे २। ह्रीं त्रीं हुं इं सूक्ष्मेशाय नमो दक्षिणनेत्रे ३। ह्रीं त्रीं हुं ईं त्रिमूर्तये नमो वामनेत्रे ४। ह्रीं त्रीं हुं उं अमरेशाय नमो दक्षकर्णे ५। ह्रीं त्रीं हुं ऊं अर्धीशाय नमो वामकर्णे ६। ह्रीं त्रीं हुं ऋं भारभूतीशाय नमो दक्षनासापुटे

---

१ तन्त्रान्तरेपि ऐं ॐ ह्रीं क्रीं हूं फट्। इति षडक्षरो मन्त्रः।

२ आदिबीजेन ॐ कारेण वियुक्ता रहिता सती आदिमैः पूर्वाचार्यैरेकजटा प्रोदिता। तेन ह्रीं त्रीं हुं फडिति चतुरक्षरो मन्त्रः वा आद्यंतबीजः ॐ फडभ्यां रहिता नीलसरस्वती सैव तेन ह्रीं त्रीं हुं। इति त्र्यक्षरो मन्त्रः।

७। ह्रीं त्रीं हुं ॠं अतिथीशाय नमो वामनासापुटे ८। ह्रीं त्रीं हुं ऌं स्थाण्वीशाय नमो दक्षगण्डे ९। ह्रीं त्रीं हुं ॡं हरेशाय नमो वामगण्डे १०। ह्रीं त्रीं हुं एं भिण्टीशाय नमो ऊर्ध्वोष्ठे ११। ह्रीं त्रीं हुं ऐं भौतिकेशाय नमो अधरोष्ठे १२। ह्रीं त्रीं हुं ओं सद्योजातेशाय नम ऊर्ध्वदन्तपंक्तौ १३ । ह्रीं त्रीं हुं औं अनुग्रहेशाय नमो अधोदन्तपंक्तौ १४। ह्रीं त्रीं हुं अं अक्रूरेशाय नमः शिरसि १५। ह्रीं त्रीं हुं महासेनेशाय नमो मुखमध्ये १६। ह्रीं त्रीं हुं कं क्रोधीशाय नमो दक्षस्कंधे १७। ह्रीं त्रीं हुं खं चण्डेशाय नमोदक्षकूर्परे १८। ह्रीं त्रीं हुं गं पञ्चान्तकेशाय नमो दक्षिण मणिबन्धे १९। ह्रीं त्रीं हुं घं शिवोत्तमेशाय नमो दक्षहस्तांगुलिमूले २०। ह्रीं त्रीं हुं ङं एकरुद्रेशाय नमो दक्षहस्तांगुल्यग्रे २१। ह्रीं त्रीं हुं चं कूर्मेशाय नमो वामस्कन्धे २२। ह्रीं त्रीं हुं छं एकाननेशाय नमो वामकूर्परे २३। ह्रीं त्रीं हुं जं चतुराननेशाय नमो वाममणिबन्धे २४। ह्रीं त्रीं हुं झं अजेशाय नमो वामहस्तांगुलिमूले २५। ह्रीं त्रीं हुं ञं सर्वेशाय नमो वामहस्तांगुल्यग्रे २६। ह्रीं त्रीं हुं टं सोमेशाय नमो दक्षपादमूले २७। ह्रीं त्रीं हुं ठं लांगलीशाय नमो दक्षजानुनि २८। ह्रीं त्रीं हुं डं दारुकेशाय नमौ दक्षगुल्फे २९। ह्रीं त्रीं हुं ढं अर्धनारीश्वरेशाय नमो दक्षपादांगुलिमूले ३०। ह्रीं त्रीं हुं णं उमाकांतेशाय नमो दक्ष पादांगुल्यग्रे ३१। ह्रीं त्रीं हुं तं आषाढीशाय नमो वामपादमूले ३२। ह्रीं त्रीं हुं थं दण्डीशाय नमो वामजानुनि ३३। ह्रीं त्रीं हुं दं अत्रीशाय नमो वामगुल्फे ३४। ह्रीं त्रीं हुं धं मीनेशाय नमो वामपादांगुलिमूले ३५। ह्रीं त्रीं हुं नं मेषेशाय नमो वामपादांगुल्यग्रे ३६। ह्रीं त्रीं हुं पं लोहितेशाय नमो दक्षकुक्षो ३७। ह्रीं त्रीं हुं फं शिखीशाय नमो वामकुक्षौ ३८। ह्रीं त्रीं हुं बं छागलण्डेशाय नमः पृष्ठे ३९। ह्रीं त्रीं हुं भं द्विरण्डेशाय नमो नाभौ ४०। ह्रीं त्रीं हुं मं महाकालेशाय नमो उदरे ४१। ह्रीं त्रीं हुं यं बालेशाय नमो हृदये ४२। ह्रीं त्रीं हुं रं भुजङ्गेशाय नमो दक्षांसे ४३। ह्रीं त्रीं हुं लं पिनाकिशाय नमः कुकुदि ४४। ह्रीं त्रीं हुं वं खड्गीशाय नमो वामांसे ४५। ह्रीं त्रीं हुं शं केशवाय नमो हृदयादिदक्षहस्तान्तम् ४६। ह्रीं त्रीं हुं षं श्वेतेशाय नमो हृदयादिवामहस्तान्तम् ४७। ह्रीं त्रीं हुं सं भृग्वीशाय नमो हृदयादिवामपादान्तम् ४८। ह्रीं त्रीं हुं हं लकुलीशाय नमो हृदयादिदक्षपादान्तम् ४९। ह्रीं त्रीं हुं लं शिवेशाय नमो हृदयादिनाभ्यन्तम् ५०। ह्रीं त्रीं हुं क्षं सम्वर्तकेशाय नमो हृदयादिशिरोन्तम् ५१। इति श्रीकण्ठादिन्यासः प्रथमः १।

ह्रीं त्रीं हुं अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं ऌं ॡं एं ऐं ओं औं अं अः रक्तवर्ण सूर्य हृदि १। ह्रीं त्रीं हुं यं रं लं वं शुक्लवर्ण सोमं भ्रुवोर्द्धये २। ह्रीं त्रीं हुं कं खं गं घं ङं रक्तवर्णं मङ्गलं लोचनत्रये ३। ह्रीं त्रीं हुं चं छं जं झं ञं श्यामवर्ण बुंध वक्षस्थले ४। ह्रीं त्रीं हुं टं ठं डं ढं णं पीतवर्ण वृहस्पतिं कण्ठकूपे ५। ह्रीं त्रीं हुं तं थं दं धं नं श्वेतवर्णं भार्गवं घण्टिकायाम् ६। ह्रीं त्रीं हुं पं फं बं भं मं नीलवर्ण शनैश्चरं नाभिदेशे ७। ह्रीं त्रीं हुं शं षं सं हं धूम्रवर्णं राहुं मुखे ८ । ह्रीं त्रीं हुं लं क्षं धूम्रवर्णं केतुं नाभौ ९ । इति ग्रहन्यासो द्वितीयः २।

ह्रीं त्रीं हुं अं इं उं ऋं ऌं एं ओं अं इन्द्राय नमः ललाटपूर्वे १। ह्रीं त्रीं हुं आं ईं ऊं ॠं ॡं ऐं औं अः अग्नये नमः ललाटाग्नेयाम् २। ह्रीं त्रीं हुं कं खं गं घं ङं यमाय नमः ललाटदक्षिणे ३ । ह्रीं त्रीं हुं चं छं जं झं ञं निर्ऋतये नमः ललाटानैर्ऋत्याम् ४। ह्रीं त्रीं हुं टं ठं डं ढं णं वरूणाय नमः ललाटपश्चिमे ५। ह्रीं त्रीं हुं तं थं दं धं नं वायवे नमः ललाटवायव्याम् ६। ह्रीं त्रीं हुं पं फं बं भं मं सोमाय नमः ललाटोत्तरस्याम् ७। ह्रीं त्रीं हुं यं रं लं वं ईशानाय नमः ललाटैशान्याम् ८। ह्रीं त्रीं हुं शं षं सं हं ब्रह्मणे नमः ललाटोर्ध्वायाम् ९। ह्रीं त्रीं हुं लं क्षं अनन्ताय नमः ललाटाधोदिशि १०। इति दिक्पालन्यासस्तृतीयः ३।

ह्रीं त्रीं हुं वं शं षं सं डाकिनी मुतब्रह्माणं चतुर्दलसमन्वितभूताधारे० १। ह्रीं त्रीं हुं बं भं मं यं रं लं राकिनीयुतश्रीविष्णुं लिङ्गस्थषट्दले स्वाधिष्ठानचक्रे न्यसेत् २। ह्रीं त्रीं हुं डं ढं णं तं थं दं धं नं पं फं राकिनीयुतरुद्रं दशदलचक्रे नाभिस्थे मणिपुरके न्यसेत् ३। ह्रीं त्रीं हुं कं खं गं घं ङं चं छं जं झं ञं टं ठं काकिनीयुतमीश्वरं अनाहते द्वादशदले चक्रे हृदि न्यसेत् ४। ह्रीं त्रीं हुं अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं ऌं ॡं

एं ऐं ओं औं अं अः शाकिनीयुतसदाशिवं विशुद्धाख्यषोडशदले कण्ठस्थे विन्यसेत् ५। हीं त्रीं हुं हं क्षं हाकिनीयुतं परशिवमाज्ञाचक्रे मनोहरे भ्रूमध्यसंस्थिते प्रविन्यसेत् ६। इति षट्चक्रन्यासश्चतुर्थः ॥४॥

हीं त्रीं हुं अं आं कं खं गं घं ङं तारायै नमो ब्रह्मरन्ध्रे १। हीं त्रीं हुं इं ईं चं छं जं झं ञं उग्रायै नमो ललाटे २। हीं त्रीं हुं उं ऊं टं ठं डं ढं णं महोग्रायै नमो भ्रूमध्ये ३। हीं त्रीं हुं ऋं ॠं तं थं दं धं नं वज्रायै नमः कण्ठदेशे ४। हीं त्रीं हुं ऌं ॡं पं फं बं भं मं महाकाल्यै नमो हृदि ५। हीं त्रीं हुं एं ऐं यं रं लं वं सरस्वत्यै नमो नाभौ ६। हीं त्रीं हुं ओं औं शं षं सं हं कामेश्वर्यै नमो लिङ्गमूले ७। हीं त्रीं हुं अं अः लं क्षं चामुण्डायै नमो मूलाधारे ८। इति तारादिन्यासः पञ्चमः ॥५॥

हीं त्रीं हुं अं इं उं ऋं ऌं एं ओं अं कामरूपपीठाय नमो आधारे १। हीं त्रीं हुं आं ईं ऊं ॠं ॡं ऐं औं अः जलन्धरपीठाय नमो हृदि २। हीं त्रीं हुं कं खं गं घं ङं पूर्णागिरिपीठाय नमो ललाटे ३। हीं त्रीं हुं चं छं जं झं ञं उड्डियानपीठाय नमः केशसन्धौ ४। हीं त्रीं हुं टं ठं डं ढं णं वाराणसीपीठाय नमो भ्रुवोः ५। हीं त्रीं हुं तं थं दं धं नं अवन्तिपीठाय नमो नेत्रयोः ६। हीं त्रीं हुं पं फं बं भं मं मायापुरीपीठाय नमः मुखे ७। हीं त्रीं हुं यं रं लं वं मथुरापीठाय नमः कण्ठे ८। हीं त्रीं हुं शं षं सं हं अयोध्यापीठाय नमो नाभौ ९। हीं त्रीं हुं लं क्षं काञ्चीपुरीपीठाय नमः कट्याम् १०। इति पीठन्यासः षष्ठः ॥६॥

इति षोढा न्यासं कृत्वा देवरूपं[1] भावयन् हृदयादिषडङ्गन्यासं कुर्यात् ।

इस प्रकार षोढान्यास करके देवरूप की भावना करते हुये षडङ्गन्यास करे।

हृदयादि षडङ्गन्यास : ॐ हीं [2] त्रां हां एकजटायै हृदयाय नमः १। हीं त्रीं हीं तारिण्यै शिरसे स्वाहा २। हूं त्रूं हूं वज्रोदकायै शिखायै वषट् ३। हैं त्रैं हैं उग्रतारायै कवचाय हुं ४। हौं त्रौं हौं महापरिसरायै नेत्रत्रयाय वौषट् ५। हः त्रः हः पिङ्गोग्रैकजटायै अस्त्राय फट् ६। इति हृदयादिषडङ्गन्यासः।

करन्यास : हां त्रां हां एकजटायै अंगुष्ठाभ्यां नमः १। हीं त्रीं हीं तारिण्यै तर्जनीभ्यां नमः २। हूं त्रूं हूं वज्रोदकायै मध्यमाभ्यां नमः ३। हैं त्रैं हैं उग्रतारायै अनामिकाभ्यां नमः ४। हौं त्रौं हौं महापरिसरायै कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५। हः त्रः हः पिङ्गोग्रैकजटायै करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ६। इति करन्यासः।

इति विन्यस्य तर्जनीमध्यमाभ्यां ॐ रंवह्निप्रकारछोटिकाभिर्दशदिग्बन्धनं विधाय () इति मन्त्रेण तालत्रयेण दिग्बन्धनं कृत्वा मूलेन तारपुटया सप्तधा व्यापकं न्यसेत्।

इस प्रकार न्यास करके तर्जनी और मध्यमा से 'ॐ रं वह्निप्रकार छोटिकाभिर्दशदिग्बन्धनं' इस मन्त्र द्वारा तीन ताल से दिग्बन्धन करके तारपुटित मूल मन्त्र (ॐ हीं त्रीं हुं फट्) से सात बार व्यापक करे।

अथ ध्यानम्।

ॐ विश्वव्यापकवारिमध्यविलसच्छ्वेताम्बुजन्मस्थितां कर्त्रीं खड्गकपालनीलनलिनैराजत्करां नीलभाम्। काञ्चीकुण्डलहारकङ्कणलसत्केयूरमञ्जीरतामाप्तैर्नागवरैर्विभूषिततनूमारक्तनेत्रत्रयाम् ॥१॥ पिङ्गोग्रैकजटां लसत्सुरसनां दंष्ट्राकरालाननां हस्तैश्चापि वरं कटौ विदधतीं श्वेतास्थिपट्टालिकाम्। अक्षोभ्येण विराजमानशिरसं स्मेराननांभोरुहां तारां शावहृदासनां दृढकुचामंबां त्रिलोक्या स्मरेत् ॥२॥

इति ध्यायेत्। ततः पीठादौ रचिते सर्वतोभद्रमण्डले मडूकादिपरतत्त्वान्तपीठदेवताः संस्थाप्य ॐ मं मण्डूकादिपरतत्त्वान्तपीठदेवताभ्यो नमः। इति पीठदेवताः सम्पूज्य नव पीठशक्तीः पूजयेत्।

इससे ध्यान करे। इसके बाद पीठादि पर रचित सर्वतोभद्रमण्डल में मण्डूकादिपरतत्वान्तपीठ देवताओं को स्थापित करके ''ॐ मं मण्डूकादिपरतत्वान्त पीठदेवताभ्यो नमः।'' इससे पीठदेवताओं की पूजा करके इस प्रकार नवशक्तियों की पूजा करे :

---

१ षोढान्यासं ततः कुर्याद्देवताभालसिद्धये। षोढान्यासस्तु तारायाः प्रोक्तस्त्विष्टप्रदायकः।
२ अथवा हां त्रां हां इति सर्वत्र योज्यम्।

पूर्वादिषट्सु दिक्षु ॐ मेधायै नमः १। ॐ प्रज्ञायै नमः २। ॐ प्रभायै नमः ३। ॐ विद्यायै नमः ४। ॐ धियै नमः ५। ॐ धृत्यै नमः ६। ॐ स्मृत्यै नमः ७। ॐ बुद्ध्यै नमः ८। ॐ मध्ये ॐ विश्वेश्वर्यै नमः ९।

इति पीठशक्तीः सम्पूजयेत्। ततः स्वर्णादिनिर्मितं यन्त्रं मूर्तिं वा ताम्रपात्रे निधाय घृतेनाभ्यज्य तदुपरि दुग्धधारां जलधारां च दत्त्वा स्वच्छवस्त्रेण सम्प्रोक्ष्य ह्रीँ सरस्वतीयोगपीठात्मने नमः। इति मन्त्रेणपुष्पाद्यासनं दत्त्वा पीठमध्ये संस्थाप्य प्रतिष्ठां च कृत्वा मूलेन मूर्तिं प्रकल्प्य पाद्यादिपुष्पान्तैरुपचारैः सम्पूज्य देव्याज्ञां गृहीत्वा आवरणपूजां कुर्यात्।

इस प्रकार पीठशक्तियों की पूजा करने के बाद स्वर्णादि से निर्मित यन्त्र या मूर्ति को ताम्रपात्र में रखकर घी से अभ्यङ्ग करके उसके ऊपर दुग्धधारा तथा जलधारा डालकर स्वच्छ वस्त्र से उसे पोंछ कर "ह्रीँ सरस्वतीयोगपीठात्मने नमः" इस मन्त्र से पुष्प आदि का आसन देकर पीठ के बीच में स्थापित कर उसमें प्राणप्रतिष्ठा करके मूलमन्त्र से मूर्ति की कल्पना करके पाद्यदान से लेकर पुष्पांजलिदानपर्यन्त उपचारों से पूजा करके देवी की आज्ञा लेकर इस प्रकार आवरण पूजा करे (तारापूजन यन्त्र देखिये चित्र ७)।

पुष्पाञ्जलिमादाय : "संविन्मये परे देवि परामृतरसप्रिये। अनुज्ञां देहि ताराख्ये परिवारार्चनाय मे ॥१॥" इति पठित्वा पुष्पाञ्जलिं च दत्त्वा 'पूजितास्तर्पिताः सन्तु' इति वदेत्। इत्याज्ञां गृहीत्वा देव्याश्चतुर्दिक्षु गणेशादीन् पूजयेत्।

पुष्पांजलि लेकर "संविन्मये परे देवि परामृत रसप्रिये। अनुज्ञां देहि ताराख्ये परिवारार्चनाय मे ॥१॥" यह पढ़कर पुष्पांजलि देकर "पूजितास्तर्पितास्सन्तु" यह कहे। इस प्रकार देवी से आज्ञा लेकर गणेश आदि की इस प्रकार पूजा करे :

'पूर्वे : पाशांकुशौ कपालं च त्रिशूलं दधतं करैः। अलङ्कारचयोपेतं गणेशं प्राक् समर्चयेत्। ॐ गं गणेशाय नमः'। गणेश इहागच्छ इहातिष्ठ' इससे आवाहन करके पञ्चोपचारों से पूजा करके **वज्रपुष्पं प्रतीच्छ फट् स्वाहा।** इससे पुष्प देवे ॥१॥ **दक्षिणे : 'कपालशूले हस्ताभ्यां दधतं सर्पभूषणम्। श्वयूथवेष्टितं रम्यं बटुकं दक्षिणेऽर्चयेत्। ॐ बं बटुकाय नमः** [२]**। बटुक इहागच्छ इहातिष्ठ'** 'इससे आवाहन करके पञ्चोपचार से पूजा करके' **बं बटुक वज्रपुष्पं प्रतीच्छ फट् स्वाहा।** इससे पुष्प देवे ॥२॥ **पश्चिमे : 'असिशूलकपालानि डमरुं दधतं करैः। कृष्णं दिगम्बरं क्रूरं क्षेत्रपं पश्चिमे यजेत्। ॐ क्षं क्षेत्रपालाय नमः'**[३]**। ॐ क्षं क्षेत्रपालं इहागच्छ इहातिष्ठ** 'इससे आवाहन करके पञ्चोपचार से पूजन करके' **ॐ क्षं क्षेत्रपाल वज्रपुष्पं प्रतीच्छ फट् स्वाहा।** इससे पुष्प देवे ॥३॥ **उत्तरे : 'कपालं डमरुं पाशं लिङ्गं संबिभ्रतीः करैः। अन्त्रावल्या रक्तवस्त्रा योगिनीरुत्तरे यजेत्। ॐ यं योगिनीभ्यो नमः'** [४]**। ॐ यं योगिन्य इहागच्छथ इहातिष्ठथ** 'इससे आवाहन करके पञ्चोपचार से पूजन करके' **ॐ यं योगिन्यो वज्रपुष्पं प्रतीच्छथ फट् स्वाहा।** 'इससे पुष्प देवे' ॥४॥

इत्यनेन सम्पूज्य ततो देव्या मस्तके अक्षोभ्यं पूजयेत्।

इन सबकी पूजा करके देवी के मस्तक पर अक्षोभ्य की इस प्रकार पूजा करे :

ॐ अक्षोभ्य इहागच्छ इहातिष्ठ इत्यावाह्य अक्षोभ्यं वज्रपुष्पं प्रतीच्छ स्वाहा।

इति मन्त्रेणाक्षोभ्यं पूजयेत्। ततः षट्कोणकेसरेषु आग्नेयादिचतुर्दिक्षु मध्ये दिक्षु च षडङ्गानि पूजयेत्।

इस मन्त्र से अक्षोभ्य की पूजा करने के बाद षट्कोण केसरों में आग्नेय आदि दिशाओं में तथा मध्य दिशाओं में षडङ्गों की इस प्रकार पूजा करे :

ॐ एकजटायै हृदयाय नमः[१] १। ॐ तारिण्यै शिरसे स्वाहा[६] २। ॐ वज्रोदकायै शिखायै वषट्[७] ३। ॐ उग्रतारायै कवचाय हुं[८] ४। ॐ महापरिसरायै नेत्रत्रयाय वौषट्[९] ५। ॐ पिंङ्गोग्रैकजटायै अस्त्राय[१०] फट् ६।

इति षडङ्गानि पूजयेत्। ततः पुष्पाञ्जलिमादाय मूलमुच्चार्यः अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले। भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥१॥ इति पठित्वा पुष्पाञ्जलिं च दत्त्वा विशेषार्घाद्बिन्दुं निक्षिप्य पूजितास्तर्पिताः सन्तु इति वदेत्। इति प्रथमावरणम् ॥१॥

इससे षडङ्गों की पूजा करे। इसके बाद पुष्पाञ्जलि लेकर मूलमन्त्र का उच्चारण करके "अभीष्ट सिद्धि में देहि शरणागत वत्सले। भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम्"। यह पढ़कर पुष्पञ्जलि देकर विशेष अर्घ्य से जलबिन्दु डालकर "पूजितास्तर्पितास्सन्तु" यह कहे। इति प्रथमावरण ॥१॥

ततोष्टदले पूज्यपूजकयोरंताराले प्राची तदनुसारेण अन्याः दिशः प्रकल्प्य प्राचीक्रमेण चतुर्दिक्षु:।

इसके बाद अष्टदल में पूज्य और पूजक के मध्य प्राची को अन्तराल मानकर तदनुसार अन्य दिशाओं की कल्पना करके प्राचीक्रम से चारों दिशाओं में:

'ॐ वैं वैरोचनाय[११] नमः! वैरोचन इहागच्छ इहातिष्ठ' इससे आवाहन करके पञ्चोपचार से पूजन करके 'ॐ वैं वैरोचन वज्रपुष्पं प्रतीच्छ स्वाहा।' इससे पुष्प देवे ॥१॥ 'ॐ अं अमिताभाय[१२] नमः। अमिताभ इहागच्छ इहातिष्ठ' इससे आवाहन करके 'ॐ अं अमिताभ वज्रपुष्पं प्रतीच्छ स्वाहा।' इससे पुष्प देवे ॥२॥ 'ॐ पं पद्मनाभाय[१३] नमः। पद्मनाम इहागच्छ इहातिष्ठ' इससे आवाहन करके 'ॐ पं पद्मनाभ वज्रपुष्पं प्रतीच्छ स्वाहा।' इससे पुष्प देवे ॥३॥ 'ॐ शं शङ्खपाण्डुर नमः[१४]। शङ्खपाण्डुर इहागच्छ इहातिष्ठ' इससे आवाहन करके 'ॐ शं शङ्खपाण्डुर वज्रपुष्पं प्रतीच्छ स्वाहा' इससे पुष्प देवे ॥४॥ इससे पूजा करके विदिग्दलों में 'ॐ लां लामकायै नमः[१५]। लामके इहागच्छ इहातिष्ठ' इससे आवाहन करके पञ्चोपचार से पूजन करके 'ॐ लां लामके वज्रपुष्पं प्रतीच्छ स्वाहा' इससे पुष्प देवे ॥५॥ 'ॐ मां मामकायै नमः[१६]। मामके इहागच्छ इहातिष्ठ' इससे आवाहन करके पञ्चोपचार से पूजन करके 'ॐ मां मामके वज्रपुष्पं प्रतीच्छ स्वाहा' इससे पुष्प देवे ॥६॥ 'ॐ पां पाण्डुरायै नमः[१७]। पाण्डुरे इहागच्छ इहातिष्ठ' इससे आवाहन करके पञ्चोपचार से पूजन करके 'ॐ पां पाण्डुरे वज्रपुष्पं प्रतीच्छ स्वाहा' इससे पुष्प देवे ॥७॥ 'ॐ तां तारकायै नमः[१८]। तारके इहागच्छ इहातिष्ठ' इससे आवाहन करके पञ्चोपचार से पूजन करके 'ॐ तां तारके वज्रपुष्पं प्रतीच्छ स्वाहा' इससे पुष्प देवे ॥८॥ इससे आठों की पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवे। इति द्वितीयावरण ॥२॥

इसके बाद भूपुर के भीतर पूर्वादि चारों दिशाओं में 'ॐ पं पद्मान्तकाय नमः[१९]। इहागच्छ इहातिष्ठ' इससे आवाहन करके 'पद्मान्तक श्रीपा०' इससे पञ्चोपचार से पूजा करके 'ॐ पं पद्मान्तक वज्रपुष्पं प्रतीच्छ स्वाहा' इससे पुष्प देवे ॥१॥ 'ॐ जं जन्मान्तकाय नमः[२०]। इहागच्छ इहातिष्ठ' इससे आवाहन करके 'जन्मान्तकश्रीपा०' इससे पञ्चोपचार पूजन करके 'ॐ जं जन्मान्तक वज्रपुष्पं प्रतीच्छ स्वाहा' इससे पुष्प देवे ॥२॥ 'ॐ विं विघ्नान्तकाय नमः[२१]। इहागच्छ इहातिष्ठ' इससे आवाहन करके 'विघ्नान्तक श्रीपा०' इससे पञ्चोपचार पूजा करके 'ॐ विं विघ्नान्तक वज्रपुष्पं प्रतीच्छ स्वाहा' इससे पुष्प देवे ॥३॥ 'ॐ नं नरकान्तकाय नमः२२! इहागच्छ इहातिष्ठ' इससे आवाहन करके 'नरकान्तक श्रीपा०' इससे पञ्चोपचार से पूजन करके 'ॐ नं नरकान्तक वज्रपुष्पं प्रतीच्छ स्वाहा' इससे पुष्प देवे ॥४॥ इस प्रकार पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवे। इति तृतीयावरण ॥३॥

ततो भूपुराद्बहिः पूर्वादिक्रमेण इन्द्रादिदशदिक्पालान् वज्राद्यायुधानि च पूजयेत्। इत्यावरणपूजां कृत्वा धूपादिनमस्कारान्तं सम्पूज्य पूजान्ते बलिं च दद्यात्। तत्र मन्त्र:

इसके बाद भूपुर से बाहर पूर्वादिक्रम से इन्द्रादि दश दिक्पालों तथा वज्रादि आयुओं की पूजा करे। इस प्रकार आवरणपूजा करके धूपदान से लेकर नमस्कार पर्यन्त पूजा करके पूजाके अन्त में बलि देवे। उसमें मंत्र यह है :

ॐ ह्रीं श्रीमदेकजटे नीलसरस्वति महोग्रतारे देवि खख सर्वभूतपिशाचराक्षसान् ग्रसग्रस मम जाड्यं छेदय छेदय श्रीं ह्रीं फट् स्वाहा।

इति द्विपञ्चाशाक्षरमन्त्रेण मधुमांसपायसमाषभक्तं वा नित्यमेव पूजान्ते बलिं दत्त्वा जपं कुर्यात्। पुनः अर्द्धरात्रे चतुष्पथे नित्यमेव बलिं दद्यात् तत्र मन्त्रः

इस बावन अक्षर वाले मन्त्र से सुरा, मांस, खीर या उड़द, भात से नित्य पूजा के बाद बलि देकर जप करे। पुनः आधी रात को चौराहे पर नित्य ही बलि देवे। उसमें मन्त्र यह है :

ॐ ह्रीं एकजटे महायक्षाधिपते मयोपनीतं बलिं गृह्णगृह्ण ह्रीं स्वाहा।

अस्य पुरश्चरणं चतुर्लक्षजपः रक्तपद्मक्षीराज्येन दशांशतो होमः तत्तद्दशांशेन तर्पणमार्जनब्राह्मणभोजनानि च कुर्यात्। एवं कृते मन्त्रः सिद्धो भवति। एतत्सिद्धेर्मन्त्री प्रयोगान् कुर्यात्।

इसका पुरश्चरण चार लाख जप है। दूध तथा घी से मिलाकर लाल कमलों द्वारा जप के दशांश से होम करना चाहिए। होम के दशांश से तर्पण तथा तर्पण के दशांश से मार्जन एवं मार्जन के दशांश से ब्राह्मणभोजन कराना चाहिए। ऐसा करने पर मन्त्र सिद्ध होता है। मन्त्र के सिद्ध होने पर साधक प्रयोगों को सिद्ध करे।

एवं ध्यायन्नदन्भक्ष्यमनेकं दधि मध्वपि। मधु मांसं च ताम्बूलं जपेल्लक्षचतुष्टयम्॥१॥ दशांशं जुहुयाद्रक्तपद्मैः क्षीराज्यलोलितैः। स्थापयित्वा महाशङ्खं जपस्थाने जपं चरेत्॥२॥ नारी पश्यन्स्पृशन्गच्छन्महानिशि बलिं ददेत्। न कार्यः सुभ्रुवां द्वेषो यत्नात्ताः पूजयेत्सदा॥३॥ जपे न कालनियमो न स्थितौ सर्वदा जपेत्। श्मशाने शून्यसदने देवागारेऽथ निर्जने॥४॥ पर्वते वनमध्ये वा शवमारुह्य मन्त्रवित्। समरे शत्रुनिहतं यद्वा षाण्मासिकं शिशुम्॥५॥ विद्यां संसाधयेच्छीघ्रं साधितैवं प्रसिध्यति। एवं सिद्धे मनौ मन्त्री प्रयोगान्विदधीत च॥६॥ अथ प्रयोगो यथा :

इस प्रकार ध्यान करते हुए अनेक प्रकार के भोजन, दूध, दही, मधु, मांस, ताम्बूल आदि का सेवन करते हुए चार लाख जप करे। दूध तथा घी से सिक्त लाल कमलों द्वारा जप के दशांश से होम करे। जपस्थान में एक महाशंख स्थापित करके जप करे। नारी को देखते, स्पर्श करते तथा गमन करते हुए रात में बलि देवे। स्त्रियों से द्वेष न करे। मन्त्र से उनकी पूजा करे। जप में काल का नियम नहीं है। स्थिति का भी नियम नहीं है। सदा जप करना चाहिए। श्मशान में, शून्य घर में, देवमन्दिर में अथवा निर्जन स्थान में, पर्वत पर या वन में शव पर बैठकर मन्त्रवित् को युद्ध में मारे गये शत्रु पर या छः मास के शिशु के शव पर विद्या की साधना करनी चाहिए। इस प्रकार शीघ्र सिद्धि प्राप्त होती है। इस प्रकार मन्त्र के सिद्ध होने पर साधक प्रयोगों को करे। प्रयोग इस प्रकार हैं :

जातमात्रस्य बालस्य दिवसत्रितयादधः जिह्वायां विलिखेन्मन्त्रं मध्वाज्याभ्यां शलाकया॥७॥ सुवर्णकृतया यद्वा मन्त्री धवलदूर्वया। गतेष्टमेऽब्दे बालोऽसौ जायते कविराट् ध्रुवम्॥८॥ तथा परैरजेयोपि भूपसंघैर्धनार्चितः।

बच्चा पैदा होने के बाद उसके जीभ पर घी और शहद से सोने की शलाका या श्वेत दूर्वा की सींक द्वारा मन्त्र लिखे तो आठ वर्ष के बाद वह बालक निश्चित रूप से कविराट् हो जायेगा तथा वह शत्रुओं से अजेय होगा और राजाओं द्वारा वह धन आदि से पूजित होगा।

अन्यं० : उपरागे दतानीय तरद्दारु सरोजले। निर्माय कीलकं तेन तैलमध्वमृतैर्लिखेत्। सरोजिनीदले मन्त्रं वेष्टयेन्मातृकाक्षरैः। निखाय तद्दलं कुण्डे चतुरस्रे समे खले।। १०।। संस्थाप्य पावकं तत्र जुहुयान्मनुनाऽमुना। सहस्रं रक्तपद्मानां धेनुदुग्धजलाप्लुतम्।।११।। होमान्ते विविधैरन्नैः फलैरपि बलिं हरेत्। तत्र मन्त्रः 'ॐ पद्मे पद्मे महापद्मे पद्मावत्यै स्वाहा।' ततो निशीथेपि बलिं पूर्वोक्तमनुना हरेत्।।१२।। एवं कृते पण्डितानामजेयः कविराड् भवेत्।

दूसरा प्रयोग : ग्रहण के दिन नदी में तैरती हुई लकड़ी को दाँतों से पकड़ कर लाये। उससे कीलक बनाकर उससे तेल, मधु तथा अमृत से कमलनी के पत्र पर मन्त्र लिखकर उसे मातृकाक्षरों से वेष्टित करके समतल भूमि में गड्ढा खोदकर उसमें उस पत्र को गाड़ कर वहाँ अग्नि की स्थापना करके इस मन्त्र से गोदुग्ध तथा जल से सिक्त एक हजार कमलों द्वारा होम के बाद नाना प्रकार के अन्नों से तथा फलों से बलि देवे। उसमें मन्त्र यह है : "ॐ पद्मे पद्मे महापद्मे पद्मावत्यै स्वाहा।" इसके बाद रात में भी पूर्वोक्त मन्त्र से बलि देवे। इस प्रकार करने से वह पण्डितों से अजेय कविराज हो जाता है।

अन्यं० : निवासो भारतीलक्ष्म्योर्जनतारञ्जनक्षमः ।।१३।। शताभिजप्तो यो मन्त्री रोचनामलिके धरेत्। स यं पश्यति तस्याग्रे दासवज्जायते क्षणात्।।१४।।

तीसरा प्रयोग : जो साधक सौ बार मन्त्र के जप से अभिमन्त्रित करके गोरोचन से अपने भाल में तिलक लगाता है, वह सरस्वती और लक्ष्मी का निवासस्थान बन जाता है तथा जनता को प्रसन्न करने में सक्षम हो जाता है। वह जिसे देख लेता है वह उसी क्षण उसके दास के समान आज्ञाकारी हो जाता है।

अन्यं० : श्मशानांगारमाहृत्य शर्वर्यां कुजवासरे। कृष्णाम्बरेण सम्वेष्टय निबद्धं रक्ततन्तुभिः ।।१५।। शताभिजप्तमूलेन निक्षिपेद्वैरिवेश्मनि। उच्चाटयति सप्ताहात्सकुटुम्बान्विरोधिनः ।।१६।।

चौथा प्रयोग : मङ्गलवार की रात को श्मशान का कोयला लाकर काले वस्त्र से लपेट कर लाल धागे से बाँधकर सौ बार मूलमन्त्र से अभिमन्त्रित करके शत्रु के घर में फेंक देवे तो एक सप्ताह में कुटुम्बियों को विरोधी बना कर वह उनका उच्चाटन कर देता है।

अन्यं० : क्षाराढ्यया निशामन्त्रं लिखित्वा पौरुषेस्थिनि। रविवारे निशीथिन्यां सहस्रमभिमन्त्रयेत्।।१७।। तत्क्षिप्तं शत्रुसदने मण्डलाद्भ्रंशकं भवेत्। क्षेत्रे क्षिप्तं सस्यहान्यै जवहृत्तुरगालये।।१८।।

पाचवाँ प्रयोग : पुरुष की हड्डी पर नमक तथा हल्दी से मन्त्र लिखकर रविवार की रात को उसे सहस्र बार मन्त्र से अभिमन्त्रित करके शत्रुओं के दल में फेंकने पर वह बारह दिनों में विनाशकारक सिद्ध होती है। उसे यदि खेत में फेंका जाय तो अन्न की हानि करती है और अश्वशाला में फेंकने से घोड़ों के दौड़ने की शक्ति का हरण करने वाली होती है।

धारणयन्त्रं यथा : षट्कोणमध्ये प्रविलिख्य मूलं साध्यान्वितं केसर गस्वराढ्ययम्। काद्यष्टवर्गान्वितपत्रमब्जं लिखेद्बहिर्भूमिपुरेण वीतम्।।१९।। यन्त्रमेतल्लिखेद्भूर्जे रसेन जतुजन्मना। पीताम्बरेण सम्वेष्टय बध्नीयात्पीतसूत्रतः ।।२०।। शिशूनां कण्ठतो बद्धं रक्षकं भूतभीतितः। वामबाहौ तु नारीणां पुत्रदं सुभगत्वकृत्।।२१।। दक्षबाहौ नृणां बद्धं निर्द्धनानां धनप्रदम्। ज्ञानदं ज्ञानमिच्छूनां राज्ञां तु विजयप्रदम्।।२२।। एतद्यन्त्रं पुरा धृत्वा गौतमाद्या महर्षयः। लेभिरे मोक्षसंसिद्धिं साम्राज्यं भूमिनायकाः ।।२३।। किं भूरिणा नृणाभेतद्वांछितां यच्छति श्रियम्। कवित्वं राजमानं च कीर्तिमायुररोगताम्।।२४।। नैव तारासमा काचिद्देवता सर्वसिद्धिदा। कलौ युगे ततो गोप्या वांछितां सिद्धिमीप्सताम्।।२५।। इति षडक्षरस्तारामन्त्रप्रयोग :।

धारण यन्त्रः षट्कोण के बीच मूलमन्त्र को लिखकर ('अमुकं रक्ष रक्ष' इससे युक्त मूलमन्त्र) केसरों

में स्वरों से भरा हुआ (अष्टदल केसरों में अं आं इत्यादि, युग्म पत्रों में 'क च ट त प य श ल' इन वर्गों को लिख कर बाहर चतुष्कोण से घेर देवे) ककारादि वर्ण से युक्त कमलदल के बाहर भूपुर से घिरा बनावे। इस यन्त्र को भोजपत्र पर लाक्षारस से लिखे फिर पीले वस्त्र से लपेट कर पीले सूत्र से बाँध देवे। इसे यदि बच्चों के गले में बाँधा जाय तो यह भूत-प्रेतों से उनकी रक्षा करता है। स्त्रियों के बाएँ हाथ में बाँधा जाय तो उन्हें पुत्रदायक तथा उनके सौभाग्य को बढ़ाने वाला होता है। यदि पुरुषों के दाहिने हाथों में बाँधा जाय तो उन्हें धनप्रद होता है। ज्ञान चाहने वालों को यह ज्ञान देने वाला तथा राजाओं को विजय प्रदान करने वाला होता है। प्राचीनकाल में इस मन्त्र को धारण करके गौतम आदि महर्षियों ने मोक्षसिद्धि को तथा राजाओं ने साम्राज्य प्राप्त किया था। अधिक कहने से क्या लाभ, यह यन्त्र मनुष्यों को वांछित लक्ष्मी प्रदान करता है। कवित्वशक्ति; राजसम्मान, कीर्ति, आयु तथा आरोग्य सब इस यन्त्र से प्राप्त होता है । तारा के समान समस्त सिद्धियों को देने वाला कलियुग में अन्य कोई देवता नहीं है। इसलिए तारा देवी सें सिद्धि प्राप्त करने वालों को इसे सदा गुप्त रखना चाहिए अर्थात् किसी से यह नहीं कहना चाहिए कि "मैं तारा की उपासना करता हूँ।" (ताराधारण यन्त्र देखिये चित्र ८)।

तारा का षडक्षर मन्त्रप्रयोग समाप्त।

अथ द्वात्रिंशत्यक्षरस्तारामन्त्रभेद :।

मन्त्रो यथा: ॐ त्रीं ह्रीं ह्रां हुं नमस्तारायै महातारायै सकलदुस्तरांस्तारय तारय तर तर स्वाहा।

अस्य विधानं सर्वं पूर्ववत् ज्ञेयम्। तथा च: द्वात्रिंशदर्णताराद्या पूजाऽस्याः पूर्ववन्मता। इति ॥२॥

इसका सब विधान पूर्ववत् जानना चाहिये। द्वात्रिंशदर्ण तारा आदि की पूजा पूर्ववत् मानी गयी है।

अथ तारामन्त्रभेदानाह।

ताराभेदा मयोच्यन्ते शीघ्रसिद्धिप्रदायिनः।

शीघ्र सिद्धि देने वाले तारा मन्त्र के भेदों को मैं बतला रहा हूं।

तारामन्त्र के आठभेद: ॐ त्रीं ह्रीं हुं फट्। यह ब्रह्मोपासित सप्ताक्षर मन्त्र है ॥१॥ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं सौ: हुं उग्रतारे हुं फट्। यह विष्णुपासित द्वादशाक्षर मन्त्र है ॥२॥ ॐ हुं ह्रीं क्लीं सौः हुं फट्। यह विष्णुपासित द्वितीय सप्ताक्षर मन्त्र है ॥३॥ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं ह्सौः हुं उग्रतारे हुं फट्। यह चतुर्मुखोपासित द्वादशाक्षर मन्त्र है ॥४॥ ॐ हुं ह्रीं क्लीं हूं सौः हुं फट्। यह चतुर्मुखोपासित सप्ताक्षर मन्त्र है ॥५॥ ॐ ह्रा हुं ह्रा हुं फट्। यह षडक्षर एकजटा मन्त्र है ॥६॥ त्रा हुं ह्रीं हुं फट्। यह पञ्चाक्षर एकजटा मन्त्र है ॥७॥ त्रीं हुं फट् क्लीं ऐं। यह नारायणोपासित पञ्चाक्षर मन्त्र है ॥८॥ तारामन्त्र के ये आठ भेद हैं।

एषां विधानम्।

विनियोग: अष्टविधानां वसिष्ठऋषि:। गायत्रीछन्दः। तारकादेवता। ममाभीष्टसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

न्यासादिकं सर्वं पूर्ववत्कृत्वा ध्यायेत्।

न्यासादि सब पूर्ववत् करके ध्यान करना चाहिए।

श्वेताम्बरां शारदाचन्द्रकान्तिं सद्भूषणां चन्द्रकलावतंसाम्। कर्त्री कपालान्वितपादपद्मां तारां त्रिनेत्रां प्रभजेऽखिलर्द्ध्यै।

इति ध्यात्वा पूजादिकं सर्वं पूर्ववत्कृत्वा जपं कुर्यात्। एवं कृते मन्त्रः सिद्धो भवति

एतस्मिन्सिद्धे मन्त्रे मन्त्री प्रयोगान् साधयेत्। तद्यथा : न्यासं तु पूर्ववत्कृत्वा ध्यायेत्तारां हृदम्बुजे। जपपूजादिकं सर्वमासां पूर्ववदाचरेत् ।।१।। प्रयोगे विशेषः मधुयुक्परमान्नेन होमाद्विद्यानिधिर्भवेत्। रक्तां वश्ये स्वर्णवर्णां स्तम्भने मारणे सिताम् ।।२।। उच्चाटने धूम्रवर्णां शातौ श्वेता स्मरेदिमाम्। भूरिणा किमिहोक्तेन विद्या एताः प्रसाधिताः। पूरयन्त्यखिलं नृणां मनोरथमिह ध्रुवम् ।।३।। इति।

इससे ध्यान करके सब पूजा आदि पूर्ववत् करके जप करना चाहिये। इस प्रकार करने से मन्त्र सिद्ध होता है। इसके सिद्ध होने पर साधक प्रयोगों को इस प्रकार सिद्ध करे। न्यास को पूर्ववत् करके तारादेवी का ध्यान अपने हृदय में करना चाहिये। जप तथा पूजा आदि सब कुछ पूर्ववत् करना चाहिए। प्रयोग में विशेष यह है : मधु से युक्त खीर से होम करने से मनुष्य विद्यानिधि हो जाता है। वशीकरण में लालवर्ण, स्तम्भन में सुनहला, मारण में सफेद, उच्चाटन में धूएँ के वर्ण तथा मारण में श्वेत वर्ण वाली तारा का ध्यान करना चाहिये। यहाँ अधिक कहने से क्या? ये आठों विद्याएँ जब सिद्ध हो जाती हैं, तब ये निश्चित रूप से मनुष्यों के सभी मनोरथों को पूर्ण करती हैं।

अथ ताराभेदैकजटामन्त्रप्रयोगः।

मन्त्रमहोदधौ मन्त्रो यथा : ॐ ह्रीं नमो भगवत्येकजटे मम वज्रपुष्पं प्रतीच्छ स्वाहा। इति द्वाविंशत्यक्षरो मन्त्रः। अस्य विधानम्।

मन्त्र महोदधि में मन्त्र इस प्रकार है : "ॐ ह्रीं नमो भगवत्येकजटे मम वज्रपुष्पं प्रतीच्छ स्वाहा।" यह बाईस अक्षरों का मन्त्र है। इसका विधान इस प्रकार है।

विनियोग : अस्य श्रीमदेकजटामन्त्रस्य पतञ्जलिर्ऋषिः गायत्रीछन्दः एकजटादेवता ममाभीष्टसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास : ॐ पतञ्जलिऋषये नमः शिरसि १। गायत्रीछन्दसे नमः मुखे।२। एकजटादेवतायै नमः हृदि ३। विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ४। इति ऋष्यादिन्यासः।

करन्यास : ॐ ह्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः १। ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः २। ॐ ह्रूं मध्यमाभ्यां नमः ३। ॐ ह्रैं अनामिकाभ्यां नमः ४। ॐ ह्रौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५। ॐ ह्रः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ६। इति करन्यासः।

हृदयादि षडङ्गन्यास : ॐ ह्रां हृदयाय नमः १। ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा २। ॐ ह्रूं शिखायै वषट् ३। ॐ ह्रैं कवचाय हुं ४। ॐ ह्रौं नेत्रत्रयाय वौषट् ५। ॐ ह्रः अस्त्राय फट् ६।

इति न्यासं कुर्यात्। ध्यानार्चने प्रयोगश्च सर्व पूर्ववत् ज्ञेयम्। तथा च : ध्यानार्चनप्रयोगांस्तु कुर्यात्पूर्वोक्तमन्त्रवत्। इति।

इससे न्यास करे। ध्यान और पूजा के प्रयोग सब पूर्ववत् जानने चाहिए। ध्यानार्चन तथा प्रयोग भी पूर्वोक्त मन्त्रवत् करे। इति।

अथ नीलसरस्वतीमन्त्रप्रयोगः।

मन्त्र इस प्रकार है : **ॐ श्रीं ह्रीं ह्सौ हुं फट् नीलसरस्वत्यै स्वाहा। इति मन्त्रः।**

विनियोग : अस्य नीलसरस्वतीमन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः। गायत्रीछन्दः। नीलसरस्वती देवता। ममाभीष्टसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास : ॐ ब्रह्मऋषये नमः शिरसि १। गायत्रीछन्दसे नमः मुखे २। नीलसरस्वतीदेवतायै नमः हृदि ३। विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ४। इति ऋष्यादिन्यासः।

करन्यास : ॐ श्रीं अंगुष्ठाभ्यां नमः १। ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः २। ह्सौः मध्यमाभ्यां नमः ३। हुं फट्

अनामिकाभ्यां नमः ४। नीलसरस्वत्यै कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५। स्वाहा करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ६। इति करन्यासः।

हृदयादिषडङ्गन्यास : ॐ श्रीं हृदयाय नमः १। ह्रीं शिरसे स्वाहा २। ह्सौः शिखायै वषट् ३। हुं फट् कवचाय हुं ४। नीलसरस्वत्यै नेत्रत्रयाय वौषट् ५। स्वाहा अस्त्राय फट् ६। इति हृदयादिषडङ्गन्यासः।

एवं न्यासं कृत्वा ध्यायेत्।

इस प्रकार न्यास करके ध्यान करे।

घण्टां शिरः शूलमसिं कराग्रैः संबिभ्रतीं चन्द्रकलावतंसाम्। प्रमथ्नतीं पादतले पशुं तां भजे मुदा नीलसरस्वतीं ताम्॥१॥

इति ध्यायेत्। जपपूजादिकं सर्वं पूर्ववत्। तथा च : जपपूजादिकं सर्वमस्याः पूर्ववदीरितम्। विशेषाज्जयदा वादे विद्येयं साधिता नृणाम्॥१॥ इति नीलसरस्वतीपञ्चदशाक्षरमन्त्रप्रयोगः।

इससे ध्यान करे। जप पूजा आदि सब पूर्ववत् करना चाहिए। इसका जप तथा पूजा आदि सब पूर्ववत् कहा गया है। विशेष रूप से यह विद्या सिद्ध होने पर मनुष्यों को जय देने वाली होती है।

इति नीलसरस्वतीपञ्चदशाक्षर मन्त्र प्रयोग।

अथ ताराभेदेन महाविद्या (विद्याराज्ञी) मन्त्र प्रयोगः।

मन्त्रमहोदधौ। विद्याराज्ञीमथो वक्ष्ये सुरेन्द्रस्यापि दुर्लभाम्। लब्ध्वा यां मानवाः स्वेष्टं साधयन्त्यर्चने रताः। महाविद्या समाख्याता सेविता भोगमोक्षदा॥१॥ मन्त्रो यथा :

मन्त्रमहोदधि में कहा गया है :

सुरेन्द्र के लिए भी दुर्लभ विद्याराज्ञी नामक विद्या को मैं कहूंगा। जिसे पाकर मनुष्य उसकी पूजा में लगे हुये अपने अभीष्ठ को सिद्ध करते हैं। यह महाविद्या सेवित होने पर भोग और मोक्ष को देनेवाली सिद्ध होती है : मन्त्र यहः

ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं सौं क्लीं ह्रीं ऐं ब्लूं स्त्रीं नीलतारे सरस्वति द्रां द्रीं क्लीं ब्लूं सः ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं सौंः सौः ह्रीं स्वाहा। इति द्वात्रिंशदक्षरो मन्त्रः। अस्य विधानम् :

यह बत्तीस अक्षरों का मन्त्र है। इसका विधान :

विनियोग : अस्य महाविद्यामन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः। अनुष्टुप्छन्दः। सरस्वती देवता। ममाभीष्टसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास : ॐ ब्रह्मऋषये नमः शिरसि १। अनुष्टुप् छन्दसे नमः मुखे २। सरस्वतीदेवतायै नमः हृदि ३। विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ४। इति ऋष्यादिन्यासः।

करन्यास : ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं सौं अंगुष्ठाभ्यां नमः १। क्लीं ह्रीं ऐं ब्लूं स्त्रीं तर्जनीभ्यां नमः २। नीलतारे सरस्वति मध्यमाभ्यां नमः ३। द्रां द्रीं क्लीं ब्लूं सः अनामिकाभ्यां नमः ४। ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं सौः कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५। सौः ह्रीं स्वाहा करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ६। इति करन्यासः।

हृदयादि षडङ्गन्यास : ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं सौं हृदयाय नमः १। क्लीं ह्रीं ऐं ब्लूं स्त्रीं शिरसे स्वाहा २। नीलतारे सरस्वति शिखायै वषट् ३। द्रां द्रीं क्लीं ब्लूं सः कवचाय हुं ४। ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं सौः नेत्रत्रयाय वौषट् ५। सौः ह्रीं स्वाहा अस्त्राय फट् ६। इति हृदयादि षडङ्गन्यासः।

एवं न्यासं कृत्वा ध्यायेत्।

इस प्रकार न्यास करके ध्यान करे।

शवासनां सर्वविभूषणाढ्यां कर्त्री कपालं चषकं त्रिशूलम्। करैर्दधाना नरमुण्डमालां त्र्यक्षां भजे नीलसरस्वतीं ताम्।

इति ध्यायेत्। पीठादौ रचिते सर्वतोभद्रमण्डले मण्डूकादिपरतत्त्वान्त पीठदेवताः संस्थाप्य। ॐ मं मण्डूकादिपरतत्त्वान्तपीठदेवताभ्यो नमः। इति पीठदेवताः सम्पूज्य नव पीठशक्तीः पूजयेत्। तथा च:

इससे ध्यान करे। पीठादि में रचित सर्वतोभद्रमण्डल में मण्डूकादि परतत्वान्त पीठदेवताओं की स्थापना करके "ॐ मण्डूकादि परतत्वान्त पीठदेवताभ्यो नमः" इससे पीठ देवताओं की पूजा करके नव पीठशक्तियों की इस प्रकार पूजा करे।

पूर्वादिक्रमेण अष्टसु दिक्ष ॐ मेधायै नमः १। ॐ प्रज्ञायै नमः २। ॐ प्रभायै नमः ३। ॐ विद्यायै नमः ४। ॐ धियै नमः ५। ॐ धृत्यै नमः ६। ॐ स्मृत्यै नमः ७। ॐ बुद्ध्यै नमः ८। मध्ये ॐ विश्वेश्वर्यै नमः ९। इति पूजयेत्।

ततः स्वर्णादिनिर्मितं यन्त्रमादौ त्रिकोणषट्कोणाष्टषोडशद्वात्रिंशच्चतुःषष्टिदलं तस्योपरि त्रिरेखात्मकभूपुरं च निर्माय तत् ताम्रपात्रे धृत्वा घृतेनाभ्यज्य तदुपरि दुग्धधारां जलधारां च दत्त्वा स्वच्छवस्त्रेण प्रोक्ष्य ह्रीं सरस्वतीयोगपीठात्मने नमः। इति मन्त्रेण पुष्पाद्यासनं दत्त्वा पीठमध्ये संस्थाप्य प्रतिष्ठां च कृत्वा पुनर्ध्यात्वा मूलेन मूर्तिं प्रकल्प्य पाद्यादिपुष्पान्तैरुपचारैः सम्पूज्य देव्याज्ञां गृहीत्वा बाह्यत आरभ्य आवरणपूजां कुर्यात्। तथा चः पुष्पाञ्जलिमादाय संविन्मये परे देवि परामृतरसप्रिये। अनुज्ञां देहि मे मातः परिवारार्चनाय मे। इति पठित्वा पुष्पाञ्जलिं च दत्त्वा पूजितास्तर्पिताः सन्तु इति वदेत्।

इसके बाद स्वर्णादिनिर्मित[1] यन्त्र में प्रारम्भ में त्रिकोण, अष्टदल, षोडशदल, बत्तीस दल, ६४ दल बनाये। उसके ऊपर तीन रेखाओं वाला भूपुर बनाकर उसे ताम्रपात्र में रखकर घी से उसका अभ्यङ्ग करके उसके ऊपर दूध की धारा तथा जल की धारा देकर स्वच्छ वस्त्र से उसे पोंछ कर "ह्रीं सरस्वती योग पीठात्मने नमः" इस मन्त्र से पुष्पाद्यासन देकर पीठ के मध्य स्थापित करके उसमें प्राणप्रतिष्ठा करके पुनः ध्यान करके मूलमन्त्र से मूर्ति की कल्पना करके पाद्य से लेकर पुष्पांजलि दान पर्यन्त उपचारों से पूजा करके देवी से आज्ञा लेकर बाहर से आरम्भ करके इस प्रकार आवरणपूजा करे। पुष्पांजलि लेकर "संविन्मये परे देवि परामृतरस प्रिये। अनुज्ञां देहि मे मातः परिवारार्चनाय में"- इसे पढ़ कर पुष्पांजलि देकर "पूजितास्तर्पिता सन्तु" यह कहे। (महाविद्या (विद्याराज्ञी) पूजनयन्त्र देखिये चित्र ९)।

इस प्रकार आज्ञा लेकर भूपुर से बाहर :

---

१ आदौ त्रिकोणं षट्कोणमष्टषोडश पत्रकम्। द्वात्रिंशत्पत्रमब्जं स्याच्चतुःषष्टि दलं ततः। त्रिरेखाढ्यं धरागेहं चतुरस्रमतः परम्। एवं यन्त्रं समालिख्य बाह्यतः पूजनं चरेत्।

अर्थ : पहले त्रिकोण, षट्कोण, अष्टदल, षोडश दल, बत्तीसदल, तथा चौसठदल वाला कमल बनाकर तीन रेखाओं का भूपुर बनावे। उसके बाहर चौकोर बनावे। इस प्रकार मन्त्र लिखकर बाहर से क्रमशः उसकी पूजा आरम्भ करे।

अग्निकोणे ॐ वं विघ्नेशाय नमः[१]। विघ्नेशश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। इति सर्वत्र १। वायुकोणे ॐ क्षं क्षेत्रपालाय नमः[२]। क्षेत्रपालश्रीपा० २। ॐ ईशानकोणे भैरवाय नमः[३]। भैरवश्रीपा० ३। नैर्ऋतिकोणे ॐ यं योगिन्यै नमः[४]। योगिनीश्रीपादुकां पू०४। वामभागे ॐ श्रीगुरुवे नमः[५]। गुरुश्रीपा० ५। इति पूजयेत्।

ततो भूपुरे प्रथमरेखायां।

इसके बाद भूपुर की प्रथम रेखा में।

पूर्वादिक्रमेण ॐअणिमायै नमः[६]। अणिमाश्रीपा० १। ॐ लघिमायै नमः[७]। लघिमाश्रीपा० २। ॐ महिमायै नमः[८]। महिमाश्रीपा० ३। ॐ असितायै नमः[९]। असिताश्रीपा० ४। ॐ वशितायै नमः[१०]। वशिताश्रीपा० ५। ॐ कामपूरिण्यै नमः[११]। कामपूरणीश्रीपा० ६। ॐ गरिमायै नमः[१२]। गरिमाश्रीपा० ७। ॐ प्राप्त्यै नमः[१३]। प्राप्तिश्रीपा० ८। इन आठ सिद्धियों की पूजा करे।

ततो भूपुरे द्वितीयरेखायां।

इसके बाद भूपुर की द्वितीय रेखा में।

पूर्वादिक्रमेण ॐ असिताङ्गभैरवाय नमः[१४]। असिताङ्गभैरवश्रीपा० १।

ॐ रुरुभैरवाय नमः[१५]। रुरुभैरवश्रीपा० २। ॐ चण्डभैरवाय नमः[१६]। चण्डभैरवश्रीपा० ३। ॐ क्रोधभैरवाय नमः[१७]। क्रोधभैरवश्रीपा० ४। ॐ उन्मत्त भैरवाय नमः[१८]। उन्मत्तभैरवश्रीपा० ५। ॐ कपालभैरवाय नमः[१९]। कपालभैरवश्रीपा० ६। ॐ भीषणभैरवाय नमः [२०]। भीषणभैरवश्रीपा० ७। ॐ संहारभैरवाय नमः[२१]। संहारभैरवश्रीपा० ८। इनसे आठ भैरवों की पूजा करे।

ततोभूपुरे तृतीयरेखायां।

इसके बाद भूपुर की तृतीय रेखा में।

पूर्वादिक्रमेण ॐ ब्राह्मयै नमः[२२]। ब्राह्मीश्रीपा० १। ॐ माहेश्वर्यै नमः[२३]। महेश्वरीश्रीपा० २। ॐ कौमार्यै नमः[२४]। कौमारीश्रीपादुकां पूजया० ३। ॐ वैष्णव्यै नमः [२५]। वैष्णवीश्रीपा० ४। ॐ वाराह्यै नमः[२६]। वाराहीश्रीपा० ५। ॐ इन्द्राण्यै नमः [२७]। इन्द्राणीश्रीपा० ६। ॐ चामुण्डायै नमः[२८]। चामुण्डाश्रीपा० ७। ॐ महालक्ष्म्यै नमः[२९]। महालक्ष्मीश्रीपा० ८।

इनसे आठ माताओं की पूजा करे।

ततः पुष्पाञ्जलिमादाय मूलमुच्चार्य। अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले। भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम्॥१॥ इति पठित्वा पुष्पाञ्जलिं च दत्त्वा विशेषार्घाद्बिन्दुं निक्षिप्य पूजितास्तर्पिताः सन्तु इति वदन् योनिमुद्रां प्रदर्शयेत्। इति प्रथमावरणम्॥१॥

इसके बाद पुष्पांजलि लेकर मूल मन्त्र का उच्चारण कर "अभीष्ट सिद्धिं में देहि शरणागतवत्सले। भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम्॥१॥" यह पढ़कर पुष्पांजलि देकर विशेष अर्घ से जल बिन्दु डालकर "पूजितास्तर्पिताःसन्तु" इसे कहता हुआ योनिमुद्रा दिखावे। इति प्रथमावरण॥१॥

ततः चतुःषष्टिदले पूज्यपूजकयोरंतरालप्राची तदनुसारेण अन्याःदिशः प्रकल्प्य प्राचीक्रमेण।

इसके बाद ६४ दलों में पूज्य-पूजक के बीच प्राची दिशा को अन्तराल मानकर तदनुसार अन्य दिशाओं की कल्पना करके प्राची क्रम से:

ॐ कुलेश्यै नमः[३०]। कुलेशीश्रीपा० १। ॐ कुलनन्दायै नमः[३१]। कुलनन्दाश्रीपा० २। ॐ वागीश्यै नमः[३२]। वागीशीश्रीपा० ३। ॐ भैरव्यै नमः [३३]। भैरवीश्रीपा० ४। ॐ उमायै नमः[३४]। उमाश्रीपा० ५। ॐ श्रियै नमः[३५]। श्री श्रीपा० ६। ॐ शान्त्यै नमः[३६]। शान्तिश्रीपा० ७। ॐ चण्डायै नमः[३७]।

चण्डाश्रीपा० ८। ॐ धूम्रायै नमः[३८]। धूम्राश्रीपा० ९। ॐ काल्यै नमः[३९]। कालीश्रीपा० १०। ॐ करालिन्यै नमः[४०]। करालिनीश्रीपा० ११। ॐ महालक्ष्म्यै नमः[४१]। महालक्ष्मीश्रीपा० १२। ॐ कङ्काल्यै नमः[४२]। कङ्कालीश्रीपा० १३। ॐ रुद्राकाल्यै नमः[४३]। रुद्राकालीश्रीपा० १४। ॐ सरस्वत्यै नमः[४४]। सरस्वतीश्रीपा० १५। ॐ वाग्वादिन्यै नमः४५। वाग्वादिनीश्रीपा० १६। ॐ नकुल्यै नमः ४६। नकुलीश्रीपा० १७। ॐ भद्राकाल्यै नमः ४७। भद्रकालीश्रीपा० १८। ॐ शशिप्रभायै नमः४८। शशिप्रभाश्रीपा० १९। ॐ प्रत्यङ्गिरायै नमः ४९। प्रत्यङ्गिराश्रीपा० २०। ॐ सिद्धलक्ष्म्यै नमः५०। सिद्धलक्ष्मीश्रीपा० २१। ॐ अमृतेश्यै नमः५१। अमृतेशीश्रीपा० २२। ॐ चण्डिकायै नमः५२। चण्डिकाश्रीपा० २३। ॐ खेचर्यै नमः५३। खेचरीश्रीपा० २४। ॐ भूचर्यै नमः५४। भूचरीश्रीपा० २५। ॐ सिद्धायै नमः५५। सिद्धाश्रीपा० २६। ॐ कामाक्ष्ये नमः[५६]। कामाक्षीश्रीपा० २७। ॐ हिंगुलायै नमः[५७]। हिंगुलाश्रीपा० २८। ॐ बलायै नमः[५८]। बलाश्रीपा० २९। ॐ जयायै नमः[५९]। जयाश्रीपा० ३०। ॐ विजयायै नमः[६०]। विजयाश्रीपा० ३१। ॐ अजितायै नमः[६१]। अजिताश्रीपा० ३२। ॐ नित्यायै नमः[६२]। नित्याश्रीपा० ३३। ॐ अपराजितायै नमः [६३]। अपराजिता श्रीपा० ३४। ॐ विलासिन्यै नमः [६४]। विलासिनीश्रीपादुकां पू० ३५। ॐ अघोरायै नमः [६५]। अघोराश्रीपा० ३६। ॐ चित्रायै नमः[६६]। चित्राश्रीपा०३७। ॐ मुग्धायै नमः[६७]। मुग्धाश्रीपा० ३८। ॐ धनेश्वर्यै नमः[६८]। धनेश्वरीश्रीपा० ३९। ॐ सोमेश्वर्यै नमः[६९]। सोमेश्वरी श्रीपा० ४०। ॐ महाचण्डायै नमः[७०]। महाचण्डाश्रीपा० ४१। ॐ विद्यायै नमः[७१]। विद्याश्रीपा० ४२। ॐ हंस्यै नमः[७२]। हंसीश्रीपा० ४३। ॐ विनायकायै नमः[७३]। विनायकाश्रीपा० ४४। ॐ वेदगर्भायै नमः[७४]। वेदगर्भाश्रीपा० ४५। ॐ भीमायै नमः[७५]। भीमाश्रीपा० ४६। ॐ उग्रायै नमः[७६]। उग्राश्रीपा०४७। ॐ वैद्यायै नमः[७७]। वैद्याश्रीपा० ४८। ॐ सद्गत्यै नमः[७८]। सद्गतिश्रीपा० ४९। ॐ उग्रेश्वर्यै नमः[७९]। उग्रेश्वरीश्रीपा० ५०। ॐ चन्द्रगर्भायै नमः[८०]। चन्द्रगर्भाश्रीपा० ५१। ॐ ज्योत्स्नायै नमः[८१] ज्योत्स्नाश्रीपा० ५२। ॐ सत्यायै नमः[८२]। सत्याश्रीपा० ५३। ॐ यशोवत्यै नमः[८३]। यशोवतीश्रीपा० ५४। ॐ कुलिकायै नमः[८४]। कुलिकाश्रीपा० ५५। ॐ कामिन्यै नमः[८५]। कामिनीश्रीपा० ५६। ॐ काम्यायै नमः[८६]। काम्याश्रीपा० ५७। ॐ ज्ञानवत्यै नमः[८७]। ज्ञानवतीश्रीपा० ५८। ॐ डाकिन्यै नमः[८८]। डाकिनीश्रीपा० ५९। ॐ राकिन्यै नमः[८९]। राकिनीश्रीपा० ६०। ॐ लाकिन्यै नमः[९०]। लाकिनीश्रीपा० ६१। ॐ काकिन्यै नमः [९१]। काकिनीश्रीपा० ६२। ॐ शाकिन्यै नमः[९२]। शाकिनीश्रीपा० ६३। ॐ हाकिन्यै नमः[९३]। हाकिनीश्रीपा०६४।

इति चतुःषष्टिशक्तयः पूजयेत्। ततः पुष्पाञ्जलिमादाय मूलमुच्चार्यः अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले। भक्त्या समर्पये तुभ्यं द्वितीयावरणार्चनम्। इति पठित्वा पुष्पाञ्जलिं च दत्त्वा विशेषार्घाद्बिन्दुं निक्षिप्य पूजितास्तर्पिताः सन्तु इति वदन् खेचरीमुद्रां प्रदर्शयेत्। इति द्वितीयावरणम्॥२॥

इससे चौंसठ शक्तियों की पूजा करने के बाद पुष्पाञ्जलि लेकर मूलमन्त्र का उच्चारण करके "अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले। भक्त्या समर्पये तुभ्यं द्वितीयावरणार्चनम्।" यह पढ़कर पुष्पाञ्जलि देकर विशेष अर्घ्य से जलबिन्दु देकर "पूजितास्तर्पितास्सन्तु" यह कहते हुए खेचरी मुद्रा प्रदर्शित करे। खेचरी मुद्रा का लक्षण इस प्रकार है:

लक्षणं यथाः सव्यं दक्षिणहस्ते तु सव्यहस्ते तु दक्षिणम्। बाहू कृत्वा महादेवि हस्तौ संपरिवर्त्य च। कनिष्ठानामिके देवि युक्ता तेन क्रमेण तु। तर्जनीभ्यां समाक्रान्ते सर्वोर्ध्वमपि मध्यमे। अंगुष्ठौ तु महादेवि सरलादपि कारयेत्। इयं सा खेचरी नाम मुद्रा सर्वोत्तमोत्तमा।

अर्थात् हे महादेवि! बाएं हाथ को दाएं हाथ में, दाएं हाथ को बाएं हाथ में, बाहुओं को उलट कर उसी क्रम से कनिष्ठ तथा अनामिका उस क्रम से युक्त करके हे देवि! सबसे ऊपर दोनों तर्जनियों से दोनों मध्यमाओं को समाक्रान्त करके हे महादेवि दोनों अंगूठों को सीधा कर देवे। यही खेचरी मुद्रा है। यह मुद्रा सर्वोत्तम मुद्रा कहलाती है। इति द्वितीयावरण।

ततो द्वात्रिंशद्दले प्राचीनक्रमेण।

इसके बाद बत्तीस दलों में प्राची क्रम से:

ॐ किरातायै नमः[९४]। किराताश्रीपा० १। ॐ योगिन्यै नमः[९५]। योनिनी श्रीपा० २। ॐ वीरायै नमः[९६]। वीराश्रीपा० ३। ॐ वैतालायै नमः [९७]। वैतालाश्रीपा० ४। ॐ यक्षिण्यै नमः [९८]। यक्षिणीश्रीपा० ५। ॐ हरायै नमः[९९]। हराश्रीपादुकां पूं ६। ॐ ऊर्ध्वकेश्यै नमः[१००]। ऊर्ध्वकिशीश्रीपा० ७। ॐ मातङ्ग्यै नमः[१०१]। मातङ्गीश्रीपा० ८। ॐ मोहिन्यै नमः[१०२] मोहिनीश्रीपा० ९। ॐ वंशवर्द्धिन्यै नमः[१०३]। वंशवर्द्धिनीश्रीपा० १०। ॐ मालिन्यै नमः[१०४]। मालिनीश्रीपा० ११। ॐ ललितायै नमः[१०५]। ललिताश्रीपा० १२। ॐ दूत्यै नमः[१०६]। दूतीश्रीपा० १३। ॐ मनोजायै नमः[१०७]। मनोजाश्रीपा० १४। ॐ पद्मिन्यै नमः[१०८]। पद्मिनीश्रीपा० १५। ॐ धरायै नमः [१०९]। धराश्रीपा० १६। ॐ वर्वर्यै नमः [११०]। वर्वरीश्रीपा०१७। ॐ क्षत्रहस्तायै नमः[१११]। क्षत्रहस्ताश्रीपा० १८। ॐ रक्तायै नमः[११२]। रक्ताश्रीपा० १९। ॐ नेत्रायै नमः[११३]। नेत्राश्रीपा० २०। ॐ विचर्चिकायै नमः[११४]। विचर्चिकाश्रीपा० २१। ॐ मातृकायै नमः[११५]। मातृकाश्रीपा० २२। ॐ दूरदर्श्यै नमः[११६]। दूरदर्शीश्रीपा०२३। ॐ क्षेत्रेश्यै नमः[११७]। क्षेत्रेश्रीपा० २४। ॐ रङ्गिन्यै नमः [११८]। रङ्गिनीश्रीपा० २५। ॐ नट्यै नमः : [११९]। नटीश्रीपा० २६। ॐ शांत्यै नमः[१२०]। शान्तिश्रीपा० २७। ॐ दीप्तायै०नमः[१२१]। दीप्ताश्रीपा० २८। ॐ वज्रहस्तायै नमः[१२२]। वज्रहस्ताश्रीपा० २९। ॐ धूम्रायै नमः[१२३]। धूम्राश्रीपा० ३०। ॐ श्वेतायै नमः[१२४]। श्वेताश्रीपा० ३१। ॐ सुमङ्गलायै नमः[१२५]। सुमङ्गलाश्रीपा० ३२।

इति द्वात्रिंशच्छक्तीः पूजयेत्। ततः पुष्पाञ्जलिमादाय मूलमुच्चार्य अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले। भक्त्या समर्पये तुभ्यं तृतीयावरणार्चनम्। इति पठित्वा पुष्पाञ्जलिं च दत्त्वा विशेषार्घाद्बिन्दुं निक्षिप्य पूजितास्तर्पिताः सन्तु इति वदन् बीजमुद्रां प्रदर्शयेत्। इति तृतीयावरणम् ॥३॥

इनसे बत्तीस शक्तियों की पूजा करे। इसके बाद पुष्पांजलि लेकर मूलमन्त्र का उच्चारण करके "अभीसिद्धिं में देहि शरणागतवत्सले। भक्त्या समर्पये तुभ्यं तृतीयावरणार्चनम्।" इसे पढ़कर पुष्पांजलि देकर विशेष अर्घ से जलबिन्दु डालकर "पूजितास्तर्पिताः सन्तु" यह कहते हुए बीजमुद्रा[१] प्रदर्शित करे। इति तृतीयावरण ॥३॥

ततः पोडशदले प्राचीक्रमेण ।

इसके बाद षोडशदल में प्राचीक्रम से :

ॐ मुग्धाये नमः :[१२६]। मुग्धाश्रीपा० १। ॐ श्रीकुरुकुल्लायै नमः [१२७]। श्रीकुरुकुल्लाश्रीपा० २। ॐ त्रिपुरायै नमः[१२८]। त्रिपुराश्रीपादुकां पू० ३। ॐ तोतलाये नमः [१२९]। तोतलाश्रीपा० ४। ॐ क्रियायै नमः : [१३०]। क्रियाश्रीपा० ५। ॐ रत्यै नमः : [१३१]। रतिश्रीपा० ६। ॐ प्रीत्यै नमः : [१३२]। प्रीतिश्रीपा० ७। ॐ बालायै नमः [१३३]। बालाश्रीपा० ८ ॐ सुमुख्यै नमः [१३४]। सुमखी श्रीपा० ९। ॐ श्यामलायै नमः : [१३५]। श्यामलाश्रीपा० १०। ॐ बतायै नमः : [१३६]। बलाश्रीपा० ११। ॐ पिशाच्यै नमः [१३७]। पिशाचीश्रीपा० १२। ॐ विदार्यै नमः [१३८]। विदारीश्रीपा० १३। ॐ शीतलायै नमः [१३९]। शीतलाश्रीपा० १४। ॐ वज्रयोगिन्यै नमः [१४०]। वज्रयोगिनीश्रीपा० १५। ॐ सर्वेश्वर्यै नमः[१४१]। ॐ सर्वेश्वरीश्रीपा० १६।

इति पोडशशक्तीः पूज्येत्। ततः पुष्पाञ्जलिमादाय मूलमुच्चार्य अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले। भक्त्या समर्पये तुभ्यं चतुर्था वरणार्चनम्। इति पठित्वा पुष्पाञ्जलिं च दत्वा पूजितास्तर्पिताः सन्तु इति वदन् सृष्टिमुद्रां प्रदर्शयेत् चतुर्थावरणम् ॥४॥

---

१ परिवर्त्य करौ स्पृष्टावर्द्ध चन्द्राकृती प्रिये। तर्जन्यंगुष्ठ युगलं युगपत्कारयेत्ततः। अधः कनिष्ठावलब्धे मध्यमे विनियोजयेत्। तथैव कुटिले योज्ये सर्वाधस्तादनामिके। बीजेमुद्रेयमुदिता सर्वसिद्धिप्रदायिनी।

अर्थात्, हे प्रिये! हाथों को उलटकर आपस में जुड़े हुए अर्द्धचन्द्र की आकृति के समान दोनों तर्जनी और अंगूठों को एक साथ करे। नीचे कनिष्ठा से लगी दोनों मध्यमा अंगुलियों को विनियोजित करे। उसी प्रकार सबके नीचे अनामिकाओं को टेढ़ी करके मुद्रा बनावे। यह सर्वोत्तम बीजमुद्रा है।

इस प्रकार पोडश शक्तियों की पूजा करे। इसके बाद पुष्पांजलि लेकर मूलमन्त्र का उच्चारण करके "अभीष्ट्सिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सले। भक्त्याया सर्मपये तुभ्यं चतुर्थावरणार्चनम्।" इसे पढ़कर पुष्पाञ्जलि देकर 'पूजितास्त र्पितास्सन्तु' यह कहते हुए सृष्टिमुद्रा [1] दिखलावे। इति चतुर्थावरण ॥४॥

ततोष्टदले सरस्वत्यष्टकं स्वस्वमंत्रै : पूजयेत। तत्र क्रमः प्राचीक्रमेण।

इसके बाद अष्टदल में सरस्वत्यष्टक की उनके अपने-अपने मंत्रों से पूजा करे। यहाँ प्राचीक्रम से : ॐ नमः पद्मासने शब्दरूपे ऐं ह्रीं क्लीं वद वद वाग्वादिनि स्वाहा। वाग्वादिनी [142] श्रीपा० १। ह स् क् ल् ह्रीं वदवद चित्रेश्वरि ऐं स्वाहा। चित्रेश्वरी [143] श्रीपा० २। ऐं कुलजे ऐं सरस्वति स्वाहा। कुलजा [144] श्रीपा० ३। ऐं ह्रीं श्रीं वदवद कीर्तीश्वरि स्वाहा। कीर्तीश्वरि [145] श्रीपा० ४। ऐं ह्रीं अन्तरिक्षसरस्वती [146] स्वाहा। अन्तरिक्ष सरस्वती श्रीपा० ५। ह स् ष्क्रें ह्सौ : ष्क्रीं ऐं ह्रीं श्रीं द्रां ह्रीं क्लीं ब्लूं सः घ्नीं घटसरस्वति घटे वदवद तरतर रुद्राज्ञया ममाभिलाषं कुरुकुरु स्वाहा। घटसरस्वती [147] श्रीपा० ६। ब्लूं वें वदवद त्रीं हुं फट् नीला [148] श्रीपा० ७। ऐं हैं ह्रीं किणिकिणि विच्चे ०। किणि [149] श्रीपा० ८।

इत्यष्टौ सरस्वतीः सम्पूजयेत्। ततः पुष्पाञ्जलिमादाय मूलमुच्चार्य : अभीष्टसिद्धि मे देहि शरणागतत्सले। भक्त्या समर्पये तुभ्यं षञ्चमावरणार्चनम्। इति पठित्वा पुष्पाञ्जलिं च दत्त्वा विशेषार्घाद्बिन्दुं निक्षिप्य पूजितास्तर्पिता : सन्तु इति वदन् क्षोभमुद्रां [2] प्रदर्शयेत्। इति पञ्चमा वरणम्॥५॥

इन आठ सरस्वती देवियों की पूजा करे। इसके बाद पुष्पांजलि लेकर मूत्रमंत्र का उच्चारण करके "अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले। भक्त्या समर्पये तुभ्यं पञ्चमावरणार्चनम्।" यह पढ़कर पुष्पांजलि देकर विशेष अर्घ से जल डालकर "पूजितास्तर्पितास्सन्तु" यह बोलते हुए क्षोभमुद्रा प्रदर्शित करे। इति पञ्चमावरण।

ततः षट्कोणकेसरेषु प्राचीक्रमेण।

इसके बाद षट्कोष केसरों में प्राचीक्रम से :

ॐ डाकिन्यै नमः [150]। डाकिनीश्रीपा० १। ॐ राकिन्यै नमः [151]। राकिनीश्रीपा० २। ॐ लाकिन्यै नमः [152]। लाकिनीश्रीपा० ३। ॐ काकिन्यै नमः [153]। काकिनीश्रीपा० ४। ॐ शाकिन्यै नमः [154]। शाकिनीश्रीपा० ५। ॐ हाकिन्यै नमः [155]। हाकिनीश्रीपा० ६।

इति षट्पूजयेत्। ततः पुष्पाञ्जलिमादाय मूलमुच्चार्य अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले। भक्त्या समर्पये तुभ्यं पष्ठमावरणार्चनम्। इति पठित्वा पुष्पाञ्जलिं च दत्त्वा पूजितास्तर्पिताः सन्तु इति वदन् द्राविणीमुद्रा[3] प्रदर्शयेत्। इति षष्ठावरणम्॥६॥

---

१ सृष्टिमुद्रामंकुशमुद्रां दर्शयत्। सा मुद्रा तरङ्गे उक्ता॥

अर्थात् सृष्टिमुद्रा तथा अंकुशमुद्रा मुद्रातरङ्ग में कही गयी हैं।

२ मध्यमां मध्यमे कृत्वा कनिष्ठांगुष्ठरोधिते। तर्जन्यौ दण्डवत्कृत्वा मध्यमोपर्यनामिके। क्षोभाभिधाना मुद्रेयं सर्वसंक्षोभकारिणी। क्षोभमुद्रालक्षणमुक्त्वोक्तम् :

अर्थात् कनिष्ठा और अंगुष्ठ से रोकी गयी मध्यमा पर मध्यमा को करके दोनों तर्जनियों को सीधी करके मध्यमा के ऊपर दोनों अनामिकाओं को रखे। यह क्षोभमुद्रा नाम वाली मुद्रा है जो सब में क्षोभ पैदा करने वाली है।

३ एतस्या एव मुद्राया मध्यमे सरले यदा। क्रियते परमेशानि तथा विद्राविणी मता।

उसी क्षोभ मुद्रा की मध्यमा अंगुलियाँ जब सीधी होती हैं तब हे परमेशानि ! विद्राविणी मुद्रा बन जाती है।

इससे छः योगिनियों की पूजा करे। इसके बाद पुष्पांजलि लेकर मूल मन्त्र का उच्चारण करके "अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले। भक्त्या समर्पये तुभ्यं षष्ठमावरणार्चनम्।" यह पढ़कर पुष्पांजलि देकर "पूजितास्तर्पितास्सन्तु" यह कहते हुए द्राविणी मुद्रा प्रदर्शित करे। इति षष्ठावरण ॥६॥

ततस्त्रिकोणे प्राचीक्रमेण।

इसके बाद त्रिकोण में प्राचीक्रम से :

ह्रीं परायै नमः [१५६]। पराश्रीपा० १। ऐं क्लीं सौः बालायै नमः [१५७]। बालश्रीपा० २। ह्सौं ह्क्लीं ह्सौः भैरव्यै नमः [१५८]। भै० श्रीपा० ३। इति पूजयेत।

ततः पुष्पाञ्जलिमादाय मूलमुच्चार्य : अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले। भक्त्या समर्पये तुभ्यं सप्तमावरणार्चनम् ॥१॥ इति पठित्वा पुष्पाञ्जलिं च दत्त्वा शेषार्घाद्बिन्दुं निक्षिप्य पूजितास्तर्पिताः सन्तु इति वदन् आकर्षिणीमुद्रां प्रदर्शयेत्। इति सप्तमावरणम् ॥७॥

इसके बाद पुष्पांजलि लेकर मूलमंत्र का उच्चारण करके "अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले। भक्त्या समर्पये तुभ्यं सप्तमावरणार्चनम्।" यह पढ़कर पुष्पांजलि देकर शेष अर्घ से जलबिन्दु डालकर "पूजितास्तर्पितास्सन्तु" यह कहते हुए आकर्षिणी मुद्रा प्रदर्शित करे। इति सप्तमावरण ॥७॥

आकर्षिणी मुद्रा इस प्रकार है :

मध्यमातर्जनीभ्यां वै कनिष्ठानामिके समे। अंकुशाकाररूपाभ्यां मध्यमे परमेश्वरि। इयमाकर्षिणी मुद्रा त्रैलोक्याकर्षणेक्षमा। अर्थात् अंकुशाकाररूप मध्यमा और तर्जनी अंगुलियों के साथ कनिष्ठा और अनामिका अंगुलियाँ समान रहें। हे परमेश्वरि! यह आकर्षिणी मुद्रा कहलाती है। यह तीनों लोकों का आकर्षण करने में समर्थ है।

भूपुराद्बहिः इन्द्रादिदशदिक्पालान् वज्राद्यायुधानि च सम्पूजयेत्। इत्यावरणपूजां कृत्वा धूपादिनमस्कारान्तं सम्पूज्य जपं कुर्यात्। ततोर्द्धरात्रे चतुष्पथे गणेशक्षेत्रपालयोगिनीभैरवताराभ्यः पञ्चदेवताभ्यो मांसमाषान्नशाकाज्यपायसापूपकादिद्रव्येण नित्यमेव बलिं दद्यात्। अस्य पुरश्चरणं चतुर्लक्षजपः। पलाशपुष्पमध्वाज्यैर्दशांशतो होमः। तत्तद्दशांशेन तर्पणमार्जनब्राह्मणभोजनानि च कुर्यात्। एवं कृते मन्त्रः सिद्धो भवति। तथा चः चतुर्लक्षं जपेद्विद्यां किंशुकैर्मधुरान्वितैः। दशांशं जुहुयाद्वह्नौ श्रद्धापूर्वमतन्द्रितः ॥१॥ इत्थं सम्पूज्य तारेशीं मनोभीष्टमवाप्नुयात्। गणेशक्षेत्रपालाभ्यां योगिन्यै भैरवाय च ॥२॥ तारायै चापि वितरेद्बलिं नित्यं चतुष्पथे। मांसमाषान्नशाकाज्यपायसापूपकादिकम्। बलिद्रव्यं समाख्यातं तेनेष्टं सा प्रयच्छति ॥३॥

भूपुर के बाहर इन्द्रादि दश दिक्पालों तथा वज्र आदि आयुधों की पूजा करे। इस प्रकार आवरणपूजा करके धूपदान से लेकर नमस्कार पर्यन्त पूजा करके जप करे। इसके बाद आधीरात को चौराहे पर गणेश, क्षेत्रपाल, योगिनी, भैरव और तारा के लिए तथा पञ्चदेवताओं के लिए मांस, उड़द, अन्न, शाक, घी, खीर, पूआ आदि द्रव्य से नित्यमेव बलि देवे। इसका पुरश्चरण चार लाख जप है। मधु तथा घी से सिक्त पलाश के फूलों से जप का दशांश होम करना चाहिये। तत्तद्दशांश से तर्पण, मार्जन तथा ब्राह्मण भोजन कराना चाहिये। इस प्रकार करने पर मन्त्र सिद्ध होता है। चार लाख विद्या का जप करना चाहिये तथा घी, मधु, शक्कर से सिक्त पलाश के फूलों से ही आनन्दित होकर श्रद्धापूर्वक होम करना चाहिए। इस प्रकार तारेशी की पूजा करके अपनी मनोकामना को मनुष्य पूरा करे। गणेश, क्षेत्रपाल, योगिनी तथा भैरव और तारा के लिए नित्य चौराहे पर बलि देवे। मांस, उड़द, भात, शाक, घी, खीर, पूआ आदि बलिद्रव्य कहे गये हैं। इससे यह देवी मनोवांछित फल देती हैं।

एवं सिद्धे मनौ मन्त्री गिरा वाचस्पतिर्भवेत्। एतस्मिन्सिद्धे मन्त्रे मन्त्री प्रयोगान् साधयेत्।

इस प्रकार मन्त्र के सिद्ध हो जाने पर साधक वाणी से वाचस्पति हो जाता है। इस मन्त्र के सिद्ध हो जाने पर साधक प्रयोगों को सिद्ध करे।

तत्र सात्त्विकराजसतामससृष्टिस्थितिसंहाररूपं कार्यभेदेन ध्यात्वा कार्यं साधयेत्।

उसमें कार्यभेद से सात्विक, राजस, तामस का क्रमशः सृष्टि स्थिति और संहार रूप में कार्यभेद से (मारण में तामस, उच्चाटन और वशीकरण में राजस, तथा शान्ति और पुष्टि में सात्त्विक ध्यान कहा गया है) ध्यान करके कार्य सिद्ध करे।

तत्रादौ सात्त्विकध्यानम्:

वहां प्रारम्भ में सात्विक ध्यान इस प्रकार है:

श्वेताम्बराढ्यां हंसस्थां मुक्ताभरणभूषिताम्। चतुर्वक्त्रामष्टभुजैर्दधानां कुण्डिकाम्बुजे। वराभये पाशशक्ती अक्षस्रक्पुष्पमालिके। शब्द पाथोनिधौ ध्यायेत्सृष्टिध्यानमुदीरितम्॥१॥

अथ राजसध्यानम्:

रक्ताम्बरां रक्तसिंहासनस्थां हेमभूषिताम्। एकवक्त्रां वेदसंख्यैर्भुजैः सम्बिभ्रतीं क्रमात्। अक्षमाला पानपात्रमभयं वरमुत्तमम्। श्वेतद्वीपस्थिता ध्यायेत्स्थितिध्यानमिदं स्मृतम्॥२॥

अथ तामसध्यानम्:

कृष्णाम्बराढ्यां नौसंस्थामस्थ्याभरणभूषिताम्। नववक्त्रां भुजैरष्टादशभिर्दधतीं वरम्। अभयं परशुं दर्वी खड्गं पाशुपतं हलम्। भिन्दिं शूलं च मुशलं कर्त्री शक्तिं त्रिशीर्षकम्। संहारास्त्रं वज्रपाशौ खट्वांगं गदया सह। रक्ताम्भोधौ स्थितां ध्यायेत्संहारध्यानमीदृशम्॥३॥

कर्मसु क्रूरसौम्येषु ध्यायेन्मन्त्री यथातथा।

क्रूर और सौम्य कर्मों में साधक कर्मानुसार ध्यान करे।

अथ प्रयोगः:

दूर्वोत्थया तु लेखन्या रोचनारसमुक्तया। बालस्याच्छिन्ननालस्य जिह्वायां विलिखेन्मनुम्। सम्प्राप्ते चाष्टमे वर्षे सर्वशास्त्रज्ञतामियात्॥१॥

अथ प्रयोग: दूर्वा की लेखनी द्वारा गोरोचन के रस से नाल न कटे बालक की जिह्वा पर मन्त्र को लिखे तो आठवें वर्ष में वह बालक समस्त शास्त्रों की अभिज्ञता को प्राप्त कर लेता है।

अयुतं मन्त्रं संजप्त्वा वचां बालस्य कण्ठतः। बध्नीयात्पूर्वसम्प्रोक्तं बलिं दत्त्वा विधानतः। द्वादशे वत्सरे प्राप्ते भक्षिता सा कवित्वकृत्॥२॥

दश सहस्र मन्त्र के जप से वचा को अभिमन्त्रित करके बालक के कण्ठ में उसे बाँध दे और पूर्वप्रोक्त विधान से बलि देवे। बारहवें वर्ष उस वचा को खा लेने से वह बालक कवि हो जाता है।

ज्योतिष्मतीभवं तैलं कर्षमात्रं समन्त्रितम्। उपरागे जलस्थो योऽश्नीयाद्वाचस्पतिर्भवेत्॥३॥

ज्योतिष्मती के एक कर्ष तेल को अभिमन्त्रित करके चन्द्रग्रहण अथवा सूर्यग्रहण के दिन जल में खड़े होकर जो उसका पान कर ले वह वाचस्पति हो जाता है।

चतुष्पथे श्मशाने वा हित्वा लज्जां भयं तथा। जपेच्छवं समारुह्य विद्यातत्परमानसः। शृणोत्यसावमुं शब्दं निशीथे जपतत्परः। पारगो भव विद्यानां सर्वां सिद्धिमवाप्नुहि॥४॥ विद्वत्कुलसमुद्भूतमष्टवर्षं शिशुद्वयम्। उपवेश्य तयोर्मूर्ध्नि करौ दत्त्वा जपेन्मनुम्। वेदान्तन्यायसंयुक्त्या विवदेते उभा अपि। यः कौतुकी स आश्चर्यं विद्यायाः पश्यतु ध्रुवम्॥५॥

चौराहे पर या श्मशान में लज्जा और भय का त्याग कर शव पर बैठ कर विद्या में मन लगाकर जप में तत्पर होता हुआ रात्रि के समय बालक के कान में यह शब्द सुनाये: 'पारगो भव विद्यानां सर्वां

सिद्धिमवाप्नुहि'। विद्वान कुल में उत्पन्न हुये आठ वर्ष के दो बालकों को बैठाकर उन दोनों के सिर पर दोनों हाथ रखकर मन्त्र का जप करना चाहिये। इससे वे दोनों बालक नैयायिक तथा वेदान्ती होकर परस्पर शास्त्रार्थ करते हैं। जिसे कौतूहल हो उसे इस विद्या के आश्चर्य को निश्चित रूप से देख लेना चाहिए।

विधाय वेदिकां रम्यां विजने कदलीवने। तत्रासीनो जपेद्विद्यामर्कलक्षं विधानतः।

एकान्त में केले के वन में एक वेदी बनाकर वहाँ बैठ कर विद्या का विधानपूर्वक बारह लाख जप करे।

दासीचालित दोलायामारूढां सुस्मिताननाम्। पुन्नागचम्पकाशोकरम्भाविपिनसंस्थिताम्।
एवं ध्यायन्भगवतीं बलिं दद्याज्जपान्ततः। एवं कुर्वन्नरः सर्वमभीष्टं लभतेऽचिरात् ॥६॥

इससे भगवती का ध्यान करते हुए जप के अन्त में बलि देवे। इस प्रकार कर्म करता हुआ मनुष्य शीघ्र ही अभीष्ट फल प्राप्त करता है।

निर्वासा विशिखः प्रेतभूमिस्थो यो जपेन्मनुम्। अयुतं कृष्णाभूताहे स वाक्सिद्धिमवाप्नुयात्।

जो नग्न तथा मुक्तकेश होकर श्मशान भूमि में कृष्ण चतुर्दशी को दश हजार जप करता है, वह वाणी की सिद्धि प्राप्त करता है।

विद्यां सौख्यं धनं पुष्टिमायुः कीर्तिं बलं स्त्रियः। रूपं कामयमानेन तारा सेव्या निरन्तरम्।
इति विद्याराज्ञीद्वात्रिंशदक्षरमन्त्रप्रयोगः।

जो विद्या, सुख, धन, पुष्टि, आयु, कीर्ति, बल, स्त्री, तथा रूप चाहता है उसे निरन्तर तारादेवी की उपासना करनी चाहिए।

ताराभेदेन वागीश्वरी (सरस्वती) महाकल्पः।

ताराभेद से वागीश्वरी (सरस्वती) महाकल्प।

नारद उवाच।

केनोपायेन देवेश विद्योत्पत्तिर्भवेन्नृणाम्। वेदविद्याप्रकाशश्च तन्मे ब्रूहि जगत्प्रभो।

नारद बोले : हे देवेश! मनुष्यों को विद्या की प्राप्ति कैसे हो सकती है? तथा वेदविद्या का प्रकाश कैसे हो सकता है? हे जगत्प्रभो? इसे आप मुझे बतावें।

ब्रह्मोवाच।

साधु साधु त्वया पृष्टं लोकानां हितकारकम्। एतदेव पुरा पृष्टं कल्पादौ विष्णवे मया ॥२॥
ब्रह्मशब्दस्वरूपेण प्रसन्नेनान्तरात्मना। प्रप्रोक्तं तेन मे ब्रह्मन्तत्ते वक्ष्यामि यत्नतः ॥३॥

ब्रह्मा बोले : हे नारद! तुमने ठीक ही पूछा है। यह लोगों के लिए हितकारक है। सृष्टि के प्रारम्भ में इसी प्रश्न को मैंने भगवान् विष्णु से पूछा था। वेदवाणी स्वरूप विष्णु भगवान् ने अन्तरात्मा से प्रसन्न होकर जो मुझे बताया था उसे मैं तुम्हें यत्न से बतलाऊँगा।

विष्णुरुवाच।

श्रृणु ब्रह्मन्परं गुह्यं कल्पं सारस्वतं महत्। यस्य विज्ञानमात्रेण जाड्यापहरणं भवेत् ॥४॥
सर्वशास्त्रप्रवक्ता च सर्वज्ञो जायतेऽचिरात्। अभ्यासाच्चभवेत्सिद्धिर्वाचश्चित्रा भवन्ति हि ॥५॥
अवापुस्त्रिदशाः स्वर्गं वागीशत्वं बृहस्पतिः। द्वैपायनोपि यं ज्ञात्वा वेदव्यासोऽभवन्मुनिः ॥६॥
मन्त्रोद्धारं प्रवक्ष्यामि साङ्गावरणपूजनैः। अनन्तं बिन्दुना युक्तं वामगण्डान्तभूषितम् ॥७॥ मन्त्रो यथाः आ लूं इति द्व्यक्षरो मन्त्रः।

विष्णु बोले : हे ब्रह्मन्! तुम अत्यन्त गुप्त तथा महान् सारस्वत कल्प को सुनो, जिसके विज्ञानमात्र

से जड़ता का अपहरण हो जाता है। इसका ज्ञाता शास्त्रों का प्रवक्ता तथा शीघ्र सर्वज्ञ हो जाता है। अभ्यास से चित्र वाणी की सिद्धि प्राप्त होती है। इसी के ज्ञान से देवताओं ने स्वर्ग को प्राप्त किया तथा वृहस्पति ने वाणी का आधिपत्य पाया। द्वैपायन भी जिसे जानकर वेदव्यास मुनि हो गये उस विद्या का मन्त्रोद्धार साङ्ग आवरणपूजन सहित मैं बतलाऊँगा। अनन्त बिन्दु से युक्त तथा वामगण्डान्त से भूषित वह दो अक्षरों का मन्त्र "आं लृं" है (तन्त्रान्तर में "ऐं लृं" इस प्रकार मिलता है)।

अस्य विधानम्। पुरश्चरणात् प्राक् तृतीयदिवसे क्षौरादिकं विधाय ततः प्रायश्चिताङ्गतया विष्णुपूजाविष्णुतर्पणविष्णुश्राद्धहोमचान्द्रायणादिव्रतं सर्वदेवोपयोगिपद्धतिमार्गेण कुर्यात्। व्रताशक्तौ गोदानं द्रव्यदानं च कुर्यात्। यदि सर्वकर्मणामशक्तिः ततः प्रायश्चित्ताङ्गतपञ्चगव्यप्राशनं कुर्यात्। ततः पुरश्चरणात् पूर्वदिने स्वदेहशुद्ध्यर्थं पुरश्चरणाधिकारप्राप्त्यर्थं चायुतगायत्रीजपं कुर्यात्।

इसका विधान : पुरश्चरण से तीन दिन पहले क्षौर आदि करके प्रायश्चित्त के अङ्ग के रूप में विष्णु पूजा, विष्णु तर्पण, विष्णु श्राद्ध, होम, चान्द्रायणादि व्रत सर्वदेवोपयोगि पद्धतिमार्ग से करे। व्रत में असमर्थ होने पर गोदान और द्रव्यदान करे। यदि सभी कर्मों में असमर्थता हो तो प्रायश्चित के रूप में पञ्चगव्य का प्राशन करे। इसके बाद पुरश्चरण से पूर्वदिन अपने शरीर की शुद्धि के लिए और पुरश्चरण का अधिकार प्राप्त करने के लिए दश हजार गायत्री का जप करे।

तथा च देशकालौ संकीर्त्य ज्ञाताज्ञातपापक्षयार्थं करिष्यमाणश्रीसरस्वतीदेवीपुरश्चरणाधिकारार्थं अमुकमन्त्रसिद्ध्यर्थं च गायत्र्ययुतजपमहं करिष्ये।

इति संकल्प्य गायत्र्ययुतं जपेत्। **ततः चन्द्रतारादिबलान्विते सुमुहूर्ते विविक्ते देशे जपस्थानं प्रकल्प्य कूर्मे शोधनं च कृत्वा कुशासने प्राङ्मुख उदङ्मुखो वा उपविश्य मूलेन शिखां बध्वा आचम्य प्राणानायम्य देशकालौ संकीर्त्य श्रीसरस्वती देवीप्रीतये अमुकमन्त्रसिद्ध्यर्थे अमुकसंख्यात्मकजपरूपपुरश्चरणमहं करिष्ये। इति संकल्प्य ततो भूतशुद्धिप्राणप्रतिष्ठा अन्तर्मातृकाबहिर्मातृकासृष्टिस्थितिसंहारमातृकान्यासं च सर्पदेवोपयोगिपद्धति मार्गेण कुर्यात्। यदि सर्वन्यासाशक्तस्ततः प्रयोगोक्तन्यासादिकं कुर्यात्।**

इससे संकल्प करके कूर्म का शोधन करके कुशासन पर पूर्वाभिमुख या उत्तराभिमुख बैठकर मूलमन्त्र से शिखा को बाँधकर आचमन और प्राणायाम करके "देशकालौ संकीर्त्य देवी प्रीतये अमुक मन्त्र सिद्ध्यर्थे अमुकसंख्यात्मक जपरूप पुरश्चरणमहं करिष्ये" इससे संकल्प करके भूतशुद्धि, प्राणप्रतिष्ठा, अन्तर्मातृका, वहिर्मातृका, सृष्टि, स्थिति तथा संहार मातृका का न्यास सर्वदेवोपयोगि पद्धतिमार्ग से करे। यदि सभी न्यासों के करने में साधक अशक्त हो तो इस प्रकार प्रयोगोक्त न्यासादिक करे।

करन्यासः आं अंगुष्ठाभ्यां नमः १। आं तर्जनीभ्यां नमः २। आं मध्यमाभ्यां नमः ३। आं अनामिकाभ्यां नमः ४। आं कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५। आं करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ६। इति करन्यासः।

हृदयादि षडङ्गन्यास : आं हृदयाय नमः १। आं शिरसे स्वाहा २। आं शिखायै वषट् ३। आं कवचाय हुं ४। आं नेत्रत्रयाय वौषट् ५। आं अस्त्राय फट् ६। इति हृदयादिषडङ्गन्यासः।

आं भ्रुवोः १। आं नाभौ २। आं गुह्ये ३। आं बस्तौ ४। (इससे न्यास करे)।

एवं न्यासविधिं कृत्वा ध्यायेत्।

इस प्रकार न्यास-विधि करके ध्यान करे।

अथ ध्यानम्।

ॐ रत्नकान्तिनिभां देवी ज्योत्स्नाजालविकाशिनीम्। मुक्ताहारयुतां शुभ्रां शशिखण्डविभूषिताम्॥१॥ बिभ्रतीं दशहस्तैश्च व्याख्यां वर्णस्य मालिकाम्। अमृतेन तथा पूर्णं

घटं च दिव्यपुस्तकम् ॥२॥ दधतीं वामहस्तेन पीनस्तनभरान्विताम्। मध्ये क्षीणां तथा स्वच्छां नानारत्नविभूषिताम् ॥३॥

एवं ध्यात्वा सर्वतोभद्रमण्डले मं मण्डूकादिपरतत्त्वान्तपीठदेवताभ्यो नमः। इति पीठदेवतां सम्पूज्य नवपीठशक्तीः पूजयेत्। तत्र क्रमः।

इस प्रकार ध्यान करके सर्वतोभद्रमण्डल में "मं मण्डूकादि परतत्वान्त पीठदेवताभ्यो नमः" इससे पीठ देवता की पूजा करके नव पीठशक्तियों की इस प्रकार पूजा करे। उसमें क्रम यह है :

पूर्वादिक्रमेण ॐ मेधायै नमः १। ॐ प्रज्ञायै नमः २। ॐ प्रभायै नमः ३। ॐ विद्यायै नमः ४। ॐ ज्ञानायै नमः ५। ॐ धृत्यै नमः ६। ॐ स्मृत्यै नमः ७। ॐ बुद्ध्यै नमः ८। मध्ये ॐ विद्येश्वर्यै नमः ९।

इति पीठशक्तीः पूजयेत्। ततः स्वर्णादिपात्रे षट्कोणाष्टदलभूपुरं यन्त्रं निर्माय अग्न्युत्तारणं कृत्वा। ॐ वर्णाब्जपद्मासनाय नमः। इति मन्त्रेणासनं दत्त्वा पीठमध्ये संस्थाप्य प्राणप्रतिष्ठां कृत्वा मूलेन मूर्तिं प्रकल्प्य पुनर्ध्यात्वा आवाहनादिपुष्पान्तैरुपचारैः सम्पूज्य देव्याज्ञां गृहीत्वा आवरपूजां कुर्यात्। तत्र क्रमः।

इससे पीठशक्तियों की पूजा करे। इसके बाद स्वर्णादि से निर्मित पात्र में षट्कोण तथा अष्टदल तथा भूपुर से युक्त यन्त्र बनाकर उसका अग्न्युत्तारण करके "ॐ वर्णाब्जपद्मासनाय नमः।" इस मन्त्र से आसन देकर पीठ के मध्य उसे स्थापित करके उसमें प्राणप्रतिष्ठा करके मूलमन्त्र से मूर्ति की कल्पना करके पुनः ध्यान कर आवाहन आदि से लेकर पुष्पाञ्जलि प्रदान पर्यन्त उपचारों से पूजा करके देवी से आज्ञा लेकर आवरण पूजा करे। (सरस्वती द्व्यक्षर मन्त्र पूजन यन्त्र देखिये चित्र १०)। उसमें क्रम यह है :

षंट्कोणकेसरेषु अग्निकोणे ॐ आं हृदयाय नमः[1] १। निर्ऋति० ॐ आं शिरसे स्वाहा[2] २। वायव्ये ॐ आं शिखायै वषट्[3] ३। ईशान्ये ॐ आं कवचाय हुं[4] ४। पूज्यपूजकयोर्मद्ध्ये ॐ आं नेत्रत्रयाय वौषट्[5] ५। देवीपश्चिमे ॐ आं अस्त्राय फट्[6] ६।

इति षडङ्गानि पूजयेत्। ततः पुष्पाञ्जलिमादाय मूलमुच्चार्य ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले। भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥१॥ इति पठित्वा पुष्पाञ्जलिं च दत्वा पूजितास्तर्पिताः सन्तुः इति वदेत्। प्रथमावरणम् ॥१॥

इससे षडङ्गों की पूजा करे। इसके बाद पुष्पाञ्जलि देकर मूलमन्त्र का उच्चारण करके "ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सले। भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥१॥" यह पढ़ कर पुष्पाञ्जलि देकर "पूजितास्तर्पितास्सन्तु" यह कहे। इति प्रथमावरण ॥१॥

ततोष्टदले पूज्यपूजकयोर्मध्ये प्राची तदनुसारेण अन्याः दिशः प्रकल्प्य प्राचीक्रमेण वामावर्तेन च।

इसके बाद अष्टदल में पूज्य-पूजक के मध्य प्राचीदिशा को मानकर तदनुसार अन्य दिशाओं की कल्पना करके प्राची क्रम से वामावर्त से :

ॐ ब्राह्म्यै नमः[7] १। ॐ माहेश्वर्यै नमः[8] २। ॐ कौमार्यै नमः[9] ३। ॐ वैष्णव्यै नमः[10] ४। ॐ वाराह्यै नमः[11] ५। ॐ इन्द्राण्यै नमः[12] ६। ॐ चामुण्डायै नमः[13] ७। ॐ महालक्ष्म्यै नमः[14] ८।

इत्यष्टौ मातृकाः पूजयित्वा पुष्पाञ्जलिं च दद्यात्। इति द्वितीयावरणम् ॥२॥

इससे आठों मातृकाओं की पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवे। इति द्वितीयावरण ॥२॥

ततो भूपुरे पूर्वादिक्रमेण।

इसके बाद भूपुर में पूर्वादि क्रम से :

ॐ लं इन्द्राय नमः[15] १ । ॐ रं अग्नये नमः[16] २ । ॐ मं यमाय नमः[17] ३ । ॐ क्षं निर्ऋतये नमः[18] ४ । ॐ वं वरुणाय नमः[19] ५ । ॐ यं वायवे नमः[20] ६ । ॐ कुं कुबेराय नमः[21] ७ । ॐ हं ईशानाय नमः[22] ८ । ईशानपूर्वयोर्मध्ये ॐ आं ब्रह्मणे नमः[23] ९ । निर्ऋतिपश्चिमयोर्मध्ये ॐ ह्रीं अनन्ताय नमः[24] १० ।

इति दश दिक्पालान् पूजयित्वा पुष्पाञ्जलिं च दद्यात् । इति तृतीयावरणम् ॥३॥

इस प्रकार दश दिक्पालों की पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवे । इति तृतीयावरण ।

ततो भूपुरे इन्द्रादिसमीपे ।

इसके बाद भूपुर में इन्द्रादि के समीप :

ॐ वं वज्राय नमः[25] १ । ॐ शं शक्तये नमः[26] २ । ॐ दं दण्डाय नमः[27] ३ । ॐ खं खड्गाय नमः[28] ४ । ॐ पां पाशाय नमः[29] ५ । ॐ अं अंकुशाय नमः[30] ६ । ॐ गं गदायै नमः[31] ७ । ॐ त्रिं त्रिशूलाय नमः[32] ८ । ॐ पं पद्माय नमः[33] ९ । ॐ चं चक्राय नमः[34] १० ।

इति वज्राद्यायुधानि पूजयित्वा पुष्पाञ्जलिं दद्यात् । इति चतुर्थावरणम् ॥४॥

इस प्रकार वज्र आदि आयुधों की पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवे । इति चतुर्थावरण ॥४॥

इत्यावरणपूजां कृत्वा धूपादिनमस्कारान्तं सम्पूज्य स्तोत्रेण स्तुत्वा जपं कुर्यात् । अस्य पुरश्चरणं द्वादशलक्षजपः । पायसान्नेन दशांशतो होमः । तत्तद्दशांशेन तर्पणमार्जनब्राह्मणभोजनानि च कुर्यात् । एवं कृते मन्त्रः सिद्धो भवति । एतस्मिन्सिद्धे मन्त्रे मन्त्री प्रयोगान् साधयेत् । तथा चः जपेद्द्वादशलक्षाणि मूकोपि वाक्पतिर्भवेत् । कवित्वं लभते वाग्मी लक्षैर्द्वादशभिर्ध्रुवम् ।

इस प्रकार आवरणपूजा करके धूपदान से लेकर नमस्कार पर्यन्त पूजा करके स्तोत्र से स्तुति करके जप करे । इसका पुरश्चरण बारह लाख जप है । खीर द्वारा जप के दशांश से होम करना चाहिये । होम के दशांश से तर्पण, तर्पण के दशांश से मार्जन तथा मार्जन के दशांश से ब्राह्मण भोजन कराना चाहिये । इस प्रकार करने से मंत्र सिद्ध होता है । इसके सिद्ध होने पर साधक प्रयोगों को सिद्ध करे । बारह लाख जप करने वाला गूंगा भी वाक्पति हो जाता है । वाग्मी मनुष्य बारह लाख जप करके निश्चित रूप से कवि बन जाता है ।

प्रातर्जप्त्वा सहस्रं तु पिबेद्ब्राह्मीं वचान्विताम् । न विस्मरति मेधावी श्रुताञ्चेदागमानपि । इति प्रथमप्रयोग : ॥१॥

प्रातः एक हजार जप करके बचा से युक्त ब्राह्मी को पीने से मेधावी साधक सुने गये आगम शास्त्रों को भी नहीं भूलता । इति प्रथम प्रयोग ।

कण्ठमात्रोदके स्थित्वा ध्यायेन्मार्तण्डमण्डले ।

कण्ठमात्र जल में खड़े होकर सूर्य मण्डल में ध्यान लगाये ।

ज्योतिः पञ्जनिभां देवीं परिवारसमन्विताम् । वराभययुतां हस्ते मुद्रापुस्तकधारिणीम् ।

इति ध्यात्वा सहस्रेण षण्मासं विजितेन्द्रियः । मीमांसां प्राप्य वाक्-सिद्धिं कवीनामग्रणीर्भवेत् । इति द्वितीयप्रयोग : ॥२॥

इस प्रकार ध्यान करके एक हजार प्रतिदिन जप करके छः मास तक जितेन्द्रिय रहे तो साधक मीमांसा की वाक्शक्ति को प्राप्तकर कवियों में अग्रणी होता है । इति द्वितीयप्रयोग ।

अथ योगं प्रवक्ष्यामि जाड्यनाशकरं परम् । रात्रिशेषे समुत्थाय शुचिर्भूत्वा समाहितः । शुद्धभावेन चात्मानं द्रव्यं च परिकल्पयेत् ।

अब मैं जड़ता का परम नाशकारी योग कहूँगा । कुछ रात शेष रहने पर अर्थात् ब्राह्म मुहूर्त में उठकर पवित्र और शांत होकर शुद्धभाव से स्वयं तथा द्रव्य की परिकल्पना करे ।

ततः परशिवे नीत्वा सौधीं च प्रापयेत्ततः । ऊर्ध्वग्रन्थिं विनिर्भिद्य जिह्वां दीपस्वरूपिणीम् । जीवस्वरूपशक्त्या तु प्रेरयन्तीं परात्मिकाम् । शब्दब्रह्मस्वरूपां च तां देवीं चिन्तये मम ।

इतिध्यात्वा सहस्रेण जपेत्सम्वत्सरं । ततः संजायते मन्त्री वाचस्पतिरिवापर : । छन्दोलङ्कारतर्कादिनानाशास्त्रार्थविद्भवेत् । कवित्वे ज्ञानशक्त्या तु पाण्डित्यमधिकं भवेत् । इति तृतीयप्रयोग : ॥३॥

प्रतिदिन एक हजार जप और इससे ध्यान करके वर्षभर जपने से साधक वाचस्पति के समान हो जाता है । वह छन्द, अलङ्कार, तर्क आदि नाना शास्त्रों के अर्थों को जानने वाला होता है । ज्ञानशक्ति से कविता करने में अधिक पाण्डित्य प्राप्त होता है । इति तृतीय प्रयोग ।

अथापरं प्रवक्ष्यामि प्रयोगं भुवि दुर्लभम् ।

अब मैं पृथ्वी पर अत्यन्त दुर्लभ एक अन्य प्रयोग कहूंगा ।

नाभिचक्रे स्थितां सौम्यां रक्ताकारां विचिन्तयेत् । क्षौमाबद्धनितम्बां च रक्ताभरणभूषिताम् । पाशांकुशधरां दिव्यां वराभययुतां पुनः । दृष्ट्या चामृतवर्षिण्या पूरयन्तीं मनोरथान् ।

एवं ध्यात्वा जपेल्लक्षं मनुं यो विहितं ततः । होमं कुर्यात्त्रिमध्यवक्त-रक्तोत्पलायुतैर्द्विज । ततः सन्तर्पयेद्देवीं दुग्धयुक्तेन सर्पिषा । पायसेन बलिं दद्याद्दधिपिष्टमधुप्लुतैः । एवं ध्यात्वा विधानं तु साक्षाद्वैश्रवणो भवेत् । सिद्धार्थैर्मधुरोपेतैर्हुत्वा जगद्वशं नयेत् । पद्महोमेन महतीं प्राप्नुयाच्छ्रियमूर्जिताम् । देवीहृदयविद्याया नास्ति किञ्चित्सुदुर्लभम् । स्नेहभावेन सम्प्रोक्तं न देयं यस्य कस्यचित् एतत्ते कथितं गुह्यं विद्योत्पत्तेश्चकारणम् । विष्णुना दत्तमस्मभ्यं मया तुभ्यं द्विजोत्तम। सिद्धमन्त्रो यदा मन्त्री बालिशस्यापि मूर्द्धनि । हस्तं दत्त्वा दिशेत्सोपि सौधीं वाचमनर्गलाम् । इति स्वायम्भुवमातृकामात्रे सारस्वतकल्पः समाप्तः ।

हे द्विज, इस प्रकार से विहित देवी का ध्यान करके जो पूर्वविहित मन्त्र का एक लाख जप करके घी, मधु तथा शकर से युक्त कमलों से होम करता है तथा दुग्धयुक्त घी से देवी का तर्पण करता है और दही, आटा तथा मधु युक्त खीर की बलि देता है वह साक्षात् कुबेर के समान हो जाता है । सफेद सरसों को मधु, घी तथा शक्कर से मिश्रित करके होम करने से मनुष्य संसार को अपने वश में कर लेता है । कमल के होम से मनुष्य बहुत बड़ी समृद्धि को पाता है । देवीहृदय विद्या के लिए कुछ भी दुर्लभ नहीं है । मैंने इसे स्नेहभाव से तुमसे कहा है । ऐरे-गैरे को इसे नहीं देना चाहिये । यह मैंने गुप्त विद्या की उत्पत्ति का कारण बतलाया है । विष्णु भगवान ने इसे हमें दिया था तथा हे द्विजोत्तम ! मैं आज तुम्हे दे रहा हूँ । जिस साधक का यह मंत्र सिद्ध हो जाता है वह यदि महामूर्ख व्यक्ति के शिर पर हाथ रखकर आदेश दे तो वह भी अमृतमयी सत्य वाणी को बोलने लगता है ।

इति स्वायम्भुवमातृकामात्रे सारस्वतकल्प समाप्त ।

अथ सरस्वतीदशाक्षरमन्त्रप्रयोगः ।

मन्त्रो यथा :

वदवद वाग्वादिनि स्वाहा । यह दशःक्षर मन्त्र है ।

विनियोग : अस्य मन्त्रस्य कण्वऋषि । विराट्छन्दः । वाग्वादिनी देवता । मम सर्वेष्टसिद्धये जपे विनियोगः ।

ऋष्यादिन्यास : ॐ कण्वऋषये नमः शिरसि १ । विराट्छन्दसे नमः मुखे २ । वागीश्वर्यै देवतायै नमः हृदि ३ । विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ४ । इति ऋष्यादिन्यासः ।

मन्त्रवर्णन्यास : ॐ वं नमः शिरसि १ । ॐ दं नमः दक्षश्रवणे २ । ॐ वं नमः वामश्रवणे ३ । ॐ दं नमः दक्षनेत्रे ४ । ॐ वां नमः वामनेत्रे ५ । वां नमः दक्षिणनासापुटे ६ । ॐ दिं नमः वासनासापुटे ७ । निं नमः वदने ८ । ॐ स्वां नमः लिङ्गे ९ । ॐ हां नमः गुदे १० । इतिमन्त्रवर्णन्यासः ।

करन्यास : ॐ आं अंगुष्ठाभ्यां नमः १ । ॐ आं तर्जनीभ्यां नमः २ । ॐ आं मध्यमाभ्यां नमः ३ । ॐ आं अनामिकाभ्यां नमः ४ । ॐ आं कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५ । ॐ आं करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ६। इति करन्यासः ।

हृदयादि षडङ्गन्यास : ॐ आं हृदयाय नमः १ । ॐ आं शिरसे स्वाहा २ । ॐ आं शिखायै वषट् ३ । ॐ आं कवचाय हुं ४ । ॐ आं नेत्रत्रयाय वौषट् ५ । ॐ आं अस्त्राय फट् ६ । इति हृदयादि षडङ्गन्यासः ।

एवं न्यासविधिं कृत्वा ध्यायेत् ।

इस प्रकार न्यास विधि करके ध्यान करे :

ॐ तरुणशकलमिन्दोर्बिभ्रती शुभ्रकान्तिः कुचभरनमिताङ्गी सन्निषण्णा सिताब्जे । निजकरकमलोद्यल्लेखनीपुस्तकश्रीः सकलविभवसिध्यै पातु वाग्देवतानः ।।१।। इससे ध्यान करे ।

ततः सर्वतोभ्रद्रमण्डले मण्डूकादिपरतत्त्वान्तपीठदेवताः संस्थाप्य ॐ मं मण्डूकादिपरतत्त्वान्तपीठदेवताभ्यो नमः इति पीठदेवता : सम्पूज्य नवपीठशक्तीः पूजयते् । तद्यथाः पूर्वाद्यष्टसु दिक्षु ।

इसके बाद सर्वतोभद्रमण्डल में मण्डूकादि परतत्वान्तपीठदेवताओं की स्थापना करके "ॐ मं मण्डूकादि परतत्त्वान्त पीठदेवताभ्यो नमः" इससे पीठदेवताओं की पूजा करके नव पीठशक्तियों की इस प्रकार पूजा करे । पूर्वादि आठ दिशाओं में :

ॐ मेधायै नमः १ । ॐ प्रज्ञायै नमः २ । ॐ प्रभायै नमः ३ । ॐ विद्यायै नमः ४ । ॐ ज्ञानायै नमः ५ । ॐ धृत्यै नमः ६ । ॐ स्मृत्यै नमः ७ । ॐ बुद्ध्यै नमः ८ । ॐ पीठमध्ये विद्येश्वर्यै नमः ९ ।

इति पीठशक्तीः सम्पूजयेत् । ततः स्वार्णादिनिर्मितं यन्त्रं अग्न्युत्तारणपूर्वकं ॐ वर्णपद्मासनाय नमः । इति मन्त्रेण पुष्पाद्यासनं दत्त्वा पीठमध्ये संस्थाप्य प्राणप्रतिष्ठां कृत्वा मूलेन मूर्तिं प्रकल्प्य पुनर्ध्यानावाहनादिपुष्पान्तैरुपचारैः सम्पूज्य देव्याज्ञां गृहीत्वा आवरणपूजां कुर्यात् । तत्र क्रमः षट्कोणकेसरेषु आग्नेयादिचतुर्दिक्षु मध्ये दिक्षु च ।

इस प्रकार पीठशक्तियों की पूजा करे । इसके बाद स्वर्णादि से निर्मित यन्त्र को अग्न्युत्तारण पूर्वक "ॐ वर्ण पद्मासनाय नमः" इस मन्त्र से पुष्पाद्यासन देकर पीठ के मध्य स्थापित करके उसमें प्राणप्रतिष्ठा करके मूलमंत्र से मूर्ति की कल्पना करके पुनः ध्यान, आवाहन से लेकर पुष्पांजलि दान पर्यन्त उपचारों से पूजा करके देवी की आज्ञा लेकर आवरण पूजा करे । (सरस्वती दशाक्षर मन्त्र पूजन यन्त्र देखिये चित्र ११) । उसमें क्रम यह है : षट्कोण केसरों में आग्नेयी आदि चारों दिशाओं तथा मध्य दिशा में :

ॐ आं हृदयाय नमः[1] १ । ॐ आं शिरसे स्वाहा[2] २ । ॐ आं शिखायै वषट्[3] ३ । ॐ आं कवचाय हुं[4] ४ । ॐ आं नेत्रत्रयाय वौषट्[5] ५ । ॐ आं अस्त्राय फट्[6] ६ ।

इति षडङ्गानि पूजयेत् । ततः पुष्पाञ्जलिमादाय मूलमुच्चार्य ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले । भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ।।१।। इति पठित्वा पुष्पाञ्जलिं च दत्वा पूजितास्तर्पिताः सन्तु इति वदेत् । इति प्रथमावरणम् ।।१।।

इससे षडङ्गों की पूजा करे । इसके बाद पुष्पांजलि लेकर मूलमंत्र का उच्चारण करके "ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले । भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ।।१।।" यह पढ़कर पुष्पांजलि देकर "पूजितास्तर्पिताः सन्तु" यह कहे । इति प्रथमावरण ।।१।।

ततोष्टदले पूज्यपूजकयोर्मध्ये प्राचीं प्रकल्प्य पूर्वादिक्रमे ।

इसके बाद अष्टदल में पूज्य तथा पूजक के मध्य पूर्वदिशा की कल्पना करके पूर्वादि क्रम से:

ॐ योगायै नमः[७] १ । ॐ सत्यायै नमः[८] २ । ॐ विमलायै नमः[९] ३ । ॐ ज्ञानायै नमः[१०] ४ । ॐ बुद्ध्यै नमः[११] ५ । ॐ स्मृत्यै नमः[१२] ६ । ॐ मेधायै नमः[१३] ७ । ॐ प्रज्ञायै नमः[१४] ।

इत्यष्टौ शक्तीः पूजयित्वा पुष्पाञ्जलिं दद्यात् । इति द्वितीयावरणम् ॥२॥

इससे आठों शक्तियों की पूजा करके पुष्पांजलि देवे । इति द्वितीयावरण ।२।

ततोष्टदलाग्रेषु ।

इसके बाद अष्टदलाग्रों में :

ॐ ब्राह्म्यै नमः[१५] १ । ॐ माहेश्वर्यै नमः[१६] २ । ॐ कौमार्यै नमः[१७] ३ । ॐ वैष्णव्यै नमः[१८] ४ । ॐ वाराह्यै नमः[१९] ५ । ॐ इन्द्राण्यै नमः[२०] ६ । ॐ चामुण्डायै नमः[२१] ७ । ॐ महालक्ष्म्यै नमः[२२] ८ ।

इत्यष्टौ मातृः पूजयित्वा पुष्पाञ्जलिं दद्यात् । इति तृतीयावरणम् ॥३॥

इन आठ माताओं की पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवे । इति तृतीयावरण ॥३॥

ततो भूपुरे पूर्वादिक्रमेण इन्द्रादिदशदिक्पालान् वज्राद्यायुधानि च सम्पूज्य पष्पाञ्जलिं दद्यात् । इत्यावरणपूजां कृत्वा धूपादिनीराजनान्तं सम्पूज्य जपं कुर्यात् । अस्य पुरश्चरणं दशलक्षजपः । तद्दशांशेन होमः । तत्तद्दशांशेने तर्पणमार्जने ब्राह्मणभोजनं च कुर्यात् । एवं कृते मन्त्रः सिद्धो भवति । एतस्मिन् सिद्धे मन्त्रे मन्त्री प्रयोगान् साधयेत् । तथा चः दक्षलक्षंजपेन्मन्त्रं दशांशं जुहुयात्ततः । पुण्डरीकैः पयोभक्तैस्तिलैर्वा मधुराप्लुतैः ॥१॥ ब्रह्मचर्यरतः शुद्धः शुद्धदन्तनखादिकः । संस्मरन्सर्ववनिताः सततं देवताधिया ॥२॥ कवित्वं लभते धीमान् मासैर्द्वादभिर्ध्रुवम् कृत्वा तु मन्त्रितं तोयं सहस्रं प्रत्यहं पिवेत् महाकविर्भवेन्मन्त्री वत्सरेण न संशय। उरोमात्रे जले स्थित्वा ध्यायेन्मार्तण्डमण्डले ॥३॥ स्थितां देवीं प्रदिदिनं त्रिसहस्रं जपेन्मनुम् । लभते मण्डलात्सिद्धिं वाचामप्रतिमां भुवि ॥४॥ पलाशबिल्वकुसुमैर्जुहुयान्मधुरोक्षितै : ॥५॥ समिद्भिर्वा तदुत्थाभिर्यशः प्राप्नोति वाक्पतेः । होमोयं सर्वसौभाग्यलक्ष्मीवश्यप्रदो भवेत् ॥६॥ राजवृक्षसमुद्भूतैः प्रसूनैर्मधुराप्लुतैः । तत्समिद्भिश्च जुहुयात्कवित्वमतुलं भवेत् । इत्थं दशाक्षरी प्रोक्ता सिद्धये वाचमिच्छताम् ॥७॥ इति शारदातिलके सरस्वतीदशाक्षरमन्त्रप्रयोगः ।

इसके बाद भूपुर में पूर्वादि क्रम से इन्द्रादि दश दिक्पालों की तथा वज्रादि आयुधों की पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवे । इस प्रकार आवरण पूजा करके धूपदान से लेकर नीराजनपर्यन्त पूजा करके जप करे। इसका पुरश्चरण दश लाख जप है । उसका दशांश होम, होम का दशांश तर्पण, उसका दशांश मार्जन तथा उसका दशांश ब्राह्मण भोजन है । ऐसा करने पर मन्त्र सिद्ध होता है । इसके सिद्ध होने पर साधक प्रयोगों को सिद्ध करे । मन्त्र का दश लाख जप करे, जप का दशांश कमल या दूध-भात अथवा तिल में घी, मधु तथा शकर मिलाकर होम करे । ब्रह्मचारी रहते हुए नख, दाँत को शुद्ध रखते हुए पवित्र होकर समस्त स्त्रियों में देवबुद्धि रखते हुए जप करे तो बारह मास में बुद्धिमान तथा कवि हो जाता है । एक हजार मन्त्र के जप से प्रतिदिन जल को अभिमन्त्रित करके पीने से साधक एक वर्ष में महाकवि हो जाता है । इसमें कोई संशय नहीं है । वक्ष पर्यन्त जल में खड़े रहकर सूर्यमण्डल में स्थित देवी का प्रतिदिन ध्यान करे तथा मंत्र का तीन हजार जप करे तो बारह दिनों में वाणी की अप्रतिम सिद्धि प्राप्त होती है । पलाश तथा बेल के फूलों को घी, मधु तथा शकर के साथ मिलाकर होम करना चाहिये । अथवा इन्हीं वृक्षों की समिधाओं से होम करे तो साधक वृहस्पति के यश को प्राप्त करता है । यह होम

सौभाग्य तथा लक्ष्मी को देने वाला तथा वशीकरण करने वाला है। राजवृक्ष के फूलों को मधु, घी तथा शकर के साथ मिलाकर या उसकी समिधाओं से होम करे तो अत्यधिक कवित्व शक्ति प्राप्त होती है। इस प्रकार वाणी की सिद्धि प्राप्त करने वालों के लिए यह दशाक्षरी सिद्धि कही गयी है।

इति शारदातिलकोक्त सरस्वतीदशाक्षरमन्त्र प्रयोग।

अथ एकादशाक्षरसरस्वतीमन्त्रप्रयोगः ।

शारदा तिलक में मन्त्र इस प्रकार कहा गया है :

ॐ ह्रीं ऐं ह्रीं ॐ सरस्वत्यै नमः । यह ग्यारह अक्षरों का मन्त्र है।

मन्त्राक्षरन्यास : ॐ ॐ नमः ब्रह्मरन्ध्रे १ । ॐ ह्रीं नमः भ्रूमध्ये २ । ॐ ऐं नमः दक्षनेत्रे ३ । ॐ ह्रीं नमः वामनेत्रे ४ । ॐ ॐ नमः दक्षिणनासापुटे ५ । ॐ सं नमः वामनासापुटे ६ । ॐ रं नमः दक्षिणकर्णे ७ । ॐ स्वं नमः वामकर्णे ८ । ॐ त्यैं नमः मुखे ९ । ॐ नं नमः लिङ्गे १० । ॐ मं नमः गुदे ११ । इति मन्त्राक्षरन्यासः ।

करन्यास : ॐ ऐं अंगुष्ठाभ्यां नमः १ । ॐ ऐं तर्जनीभ्यां नमः २ । ॐ ऐं मध्यमाभ्यां नमः ३ । ॐ ऐं अनामिकाभ्यां नमः ४ । ॐ ऐं कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५ । ॐ ऐं करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ६ । इति करन्यास :

हृदयादि षडङ्गन्यास : ॐ ऐं हृदयाय नमः १ । ॐ ऐं शिरसे स्वाहा २ । ॐ ऐं शिखायै वषट् ३ । ॐ ऐं कवचाय हुं ४ । ॐ ऐं नेत्रत्रयाय वौषट् ५ । ॐ ऐं अस्त्राय फट् ६ । इति हृदयादिषडङ्गन्यासः ।

एवं न्यासविधिं कृत्वा ध्यायेत् ।

इस प्रकार न्यास विधि करके ध्यान करे।

ॐ वाणीं पूर्णनिशाकरोज्वलमुखीं कर्पूरकुन्दप्रभां चन्द्रार्धाङ्कितमस्तकां निजकरैः सम्बिभ्रतीमादरात्। वीणामक्षगुणां सुधाढ्यकलशं विद्यां च तुङ्गस्तनीं दिव्यैराभरणैर्विभूषिततनुं हंसाधिरूढां भजे ॥१॥

इति ध्यात्वा सर्वतोभद्रमण्डले पीठपूजां विधाय पूर्वोक्तपीठशक्तीः सम्पूज्य स्वर्णादिनिर्मितं यन्त्रं अग्न्युत्तारणपूर्वकं आसनमन्त्रेणासनं दत्त्वा पीठमध्ये संस्थाप्य प्राणप्रतिष्ठां कृत्वा मूलेन मूर्तिं प्रकल्प्य पुनर्ध्यानावाहनादिपुष्पान्तैरुपचारैः सम्पूज्य देव्याज्ञां गृहीत्वा आवरणपूजां कुर्यात्। तत्र क्रम : ।

इससे ध्यान करके सर्वतोभद्रमण्डल में पीठपूजा तथा पूर्वोक्त पीठशक्तियों की पूजा करके स्वर्णादि से निर्मित यंत्र को अग्न्युत्तारण पूर्वक आसनमन्त्र से आसन देकर पीठ के मध्य में उसे स्थापित करके उसमें प्राणप्रतिष्ठा करके मूलमन्त्र से मूर्ति की कल्पना करके पुनः ध्यान, आवाहन आदि से पुष्पाञ्जलि दान पर्यन्त उपचारों से पूजा करके देवी की आज्ञा लेकर आवरण पूजा करे। उसमें क्रम यह है :

देव्या दक्षिणे ॐ संस्कृतायै नमः १ । ॐ वाङ्मय्यै नमः २ । वामो ॐ प्राकृतायै नमः १ । ॐ वाग्मिन्यै नमः २ ।

इति सम्पूज्य ततः षट्कोणकेसरेष्वग्न्यादिक्रमेण।

इससे पूजा करके षट्कोण केसरों में आग्नेयादि क्रम से:

अग्निकोणे ॐ ऐं हृदयाय नमः १ । नैर्ऋते ॐ ऐं शिरसे स्वाहा २ । वायव्ये ॐ ऐं शिखायै वषट् ३। ईशान्ये ॐ ऐं कवचाय हुं ४ । पूज्यपूजकयोर्मध्ये ॐ ऐं नेत्रत्रयाय वौषट् ५ । देवीपश्चिमे ॐ ऐं अस्त्राय फट् ६ ।

इति षडङ्गानि पूजयेत् । ततः पुष्पाञ्जलिमादाय मूलमुच्चार्य **ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि**

शरणागतवत्सले। भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥१॥ इति पठित्वा पुष्पाञ्जलिं च दत्त्वा पूजितास्तर्पिताः सन्तु इति वदेत् । इति प्रथमावरणम् ॥१॥

इस प्रकार षडङ्गों की पूजा करे । इसके बाद पुष्पाञ्जलि लेकर मूलमन्त्र का उच्चारण करके "अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले । भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥१॥" इसे पढ़कर पुष्पाञ्जलि देकर "पूजितास्तर्पितास्सन्तु" यह कहे । इति प्रथमावरण ॥१॥

ततोष्टदले पूज्यपूजकयोरन्तरालं प्राची तदनुसारेण अन्याः दिशः प्रकल्प्य प्राचीक्रमेण ।

इसके बाद अष्टदल में पूज्य और पूजक के अन्तराल को प्राची मान कर अन्य दिशाओं की कल्पना करके प्राची क्रम से :

ॐ प्रज्ञायै नमः १ । ॐ मेधायै नमः २ ! ॐ श्रुत्यै नमः ३ । ॐ शक्त्यै नमः ४ । ॐ स्मृत्यै नमः ५ । ॐ वागीश्वर्यै नमः ६ । ॐ मत्यै नमः ७ । ॐ स्वस्त्यै नमः ८ ।

इत्यष्टौ पूजयित्वा पुष्पाञ्जलि च दद्यात् । इति द्वितीयावरणम् ॥२॥

इन आठ की पूजा करके पुष्पांजलि देवे । इति द्वितीयावरण ॥२॥

ततोष्टदलाग्रेषु ।

इसके बाद अष्टदलाग्रों में :

ॐ ब्राह्म्यै नमः १ । ॐ माहेश्वर्यै नमः २ । ॐ कौमार्यै नमः ३ । ॐ वैष्णव्यै नमः ४ । ॐ वाराह्यै नमः ५ । ॐ इन्द्राण्यै नमः ६ । ॐ चामुण्डायै नमः ७ । ॐ महालक्ष्म्यै नमः ८ ।

इत्यष्टौ मातरः पूजयित्वा पुष्पाञ्जलिं दद्यात् । इति तृतीयावरणम् ॥३॥

इससे आठ माताओं की पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवे । इति तृतीयावरण ।३।

ततो भूपुरे पूर्वादि क्रमेण इन्द्रादीन्वज्रादींश्च पूर्वोक्तविधिना पूजयेत् । इत्यावरणपूजां कृत्वा धूपादिनीराजनान्तं सम्पूज्य जपं कुर्यात् । अस्य पुरश्चरणं द्वादशलक्ष जपः जपशतांशेन सिताम्बुजैर्नागचम्पकपुष्पैर्वा जुहुयात् । तत्तद्दशांशेन तर्पणमार्जनब्राह्मणभोजनं च कुर्यात् । एवं कृते मन्त्रः सिद्धो भवति । एतस्मिन् सिद्धे मन्त्रे मन्त्री प्रयोगान् साधयेत् । तथा चः जपेद्द्वादशलक्षाणि तत्सहस्रं सिताम्बुजैः। नागचम्पकपुष्पैर्वा जुहुयात्साधकोत्तमः ॥१॥ इति सम्पूजयेद्देवीं साक्षाद्वाग्वल्लभो भवेत् । दशाक्षरीसमुक्तानि कर्माण्यत्रापि साधकः ॥२॥ इत्येकादशाक्षरः सरस्वतीमन्त्रप्रयोगः ।

इसके बाद भूपुर में पूर्वादि क्रम से इन्द्र आदि तथा वज्र आदि की पूर्वोक्त विधि से पूजा करे । इस प्रकार आवरण पूजा करके धूपदान से लेकर नीराजन पर्यन्त पूजा करके जप करे । इसका पुरश्चरण बारह लाख जप है । जप के शतांश से सफेद कमलों या नाग और चम्पा के फूलों से हवन करे । होम के दशांश से तर्पण तथा तर्पण के दशांश से मार्जन और मार्जन के दशांश से ब्राह्मण भोजन करे । ऐसा करने पर मन्त्र सिद्ध होता है । इसके सिद्ध होने पर साधक प्रयोगों को सिद्ध करे । बारह लाख जप करे तथा बारह हजार सफेद कमलों से या नाग तथा चम्पक के फूलों से साधक को होम करना चाहिये ॥१॥ इस प्रकार देवी की पूजा तथा दशाक्षरी पूजा में कथित कर्मो को भी जो करता है, वह वाग्वल्लभ हो जाता है ।

इति एकादशाक्षर सरस्वती मन्त्र प्रयोग ।

अथैकादशाक्षर (द्वितीय) सरस्वतीमन्त्रप्रयोगः । शारदायाम् ।

मन्त्रो यथा :

शारदा तिलक में यह द्वितीय एकादशाक्षर मन्त्र इस प्रकार कहा गया है :

ऐं वाचस्पतेऽमृते प्लवः प्लवः ।

करन्यास : ॐ ऐं अंगुष्ठाभ्यां नमः १ । ॐ वाचस्पते तर्जनीभ्यां नमः २ । ॐ अमृते मध्यमाभ्यां नमः ३ । ॐ प्लव अनामिकाभ्यां नमः ४ । ॐ प्लव कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५ । इति करन्यासः ।

नेत्रहीन पञ्चाङ्गन्यास : ॐ ऐं हृदयाय नमः १ । ॐ वाचस्पते शिरसे स्वाहा २ । ॐ अमृते शिखायै वषट् ३ । ॐ प्लव कवचाय हुं ४ । ॐ प्लव अस्त्राय फट् ५ । इति नेत्रहीनपञ्चाङ्गन्यासः । (इस पञ्चाङ्ग मन्त्रन्यास में नेत्र मन्त्र त्याज्य है) ।

एवं न्यासविधिं कृत्वा ध्यायेत् ।

इस प्रकार न्यास विधियाँ करके ध्यान करे ।

ॐ आसीना कमले करैर्जपवटीं पद्मद्वयं पुस्तकं विभ्राणा तरुणेन्दुबद्धमुकुटा मुक्तेन्दु कुन्द प्रभा। भालोन्मीलितलोचना कुचभराक्रान्ता भवद्भूतये भूयाद्वागधिदेवता मुनिगणैरासेव्यमानाऽनिशम् ।।१।।

इति ध्यायेत् । अस्य पूजादिकं सर्वं पूर्ववत् । अस्य पुरश्चरणमेकादशलक्षजपः । तथा चः

इससे ध्यान करे । इसकी पूजा आदि सब कुछ को पूर्ववत् जानना चाहिए । इसका पुरश्चरण ग्यारह लाख जप है ।

रुद्रलक्षं जपेन्मन्त्रं दशांशं जुहुयाद्घृतैः । पलाशकुसुमैर्हुत्वा परां सिद्धिमवाप्नुयात् ।।१।।

मन्त्र का ग्यारह लाख जप करना चाहिए । पलाश के फूल तथा घी से जप का दशांश होम करना चाहिये । जो साधक ऐसा करता है वह परम सिद्धि को प्राप्त होता है ।

कदम्बकुसुमैस्तद्वत्फलैः श्रीवृक्षसम्भवैः । अचिराच्छ्रियमाप्नोति वाचां कुन्दसमुद्भवैः ।।२।। नन्द्यावर्तप्रसूनैर्वा हुत्वा वाग्वल्लभो भवेत् ।

कदम्ब के फूलों तथा बेल के फलों द्वारा होम करने से साधक वाणी की समृद्धि प्राप्त करता है। कुन्द तथा नन्द्यावर्त के फूलों से होम करके साधक वाग्वल्लभ हो जाता है ।

ब्राह्मीरसे वचाकल्के कपिलाज्यं पिबेज्जपन् ।।३।। पिबेद्दिनादौ तन्नित्यं सर्वशास्त्रार्थविद्भवेत ।

ब्राह्मी तथा वचा को पीस कर कल्क बनाये । उसमें कपिला गाय का घी मिलाकर जप करते हुए प्रातःकाल जो पीता है वह समस्त शास्त्रों के अर्थ को जानने वाला हो जाता है ।

अनया विद्यया जप्तब्राह्मीपत्रप्रभक्षणात् ।।४।। न विस्मरति मेधावी श्रुत्वा वेदागमान्पुनः । बहुना किमियं विद्या जपतां कामदो मणिः ।।५।।

इत्येकादशाक्षरद्वितीयसरस्वतीमन्त्रप्रयोग : ।

इस विद्या के द्वारा अभिमन्त्रित ब्राह्मी पत्र को खाने से मेधावी मनुष्य वेद और आगमों को सुनकर बार-बार नहीं भूलता । अधिक कहने से क्या लाभ । जप करने वालों के लिए यह अभीष्ट फलदायक मणि के समान है ।

इति एकादशाक्षर द्वितीय सरस्वतीमन्त्र प्रयोग ।

अथ सरस्वतीमन्त्रः। प्राकृतग्रन्थे। ॐ ह्रींश्रींऐं वाग्वादिनि भगवती अर्हन्मुखनिवासिनी सरस्वति ममास्ये प्रकाशं कुरुकुरु स्वाहा ऐं नमः।

अस्य प्रयोगः।

दीपमालिकारात्रौ स्नानं कृत्वा श्वेतवस्त्रं परिधान उदङ्मुख उपविश्य सरस्वत्याः श्वेतमूर्तिं तण्डुलोपरि संस्थाप्य पञ्चोपचारैः सम्पूज्य श्वेतस्फटिकमालां आदाय द्वादशसहस्रजपं कुर्यात् तेन देवी प्रसन्ना भवति जाड्यं नाशयति। विद्यां ददाति इति।

दीवाली की रात को स्नान करके सफेद वस्त्र पहन कर उत्तर दिशा की ओर मुख करके सरस्वती

की श्वेत मूर्ति को चावल के ऊपर स्थापित करके पञ्चोपचारों से पूजा करके सफेद स्फटिक की माला लेकर बारह हजार जप करे। इससे देवी प्रसन्न होती हैं, जड़ता का नाश करती है तथा विद्या देती है।

इति सरस्वती मन्त्र।

अथ एकाक्षरसरस्वतीमन्त्रविधानम्।

मन्त्रो यथा। (ऐं) इतिस्वरूपम्।

मन्त्र इस प्रकार है : (ऐं) यह मन्त्र का स्वरूप है। यह एक अक्षर का मन्त्र है।

अस्य विधानम् :

सूर्यग्रहे मधुना कुशमूलेन जिह्वायां (ऐं) इति बीजं विलिख्य तदवलिह्य ग्रहणान्मोक्षपर्यन्तं जपं कुर्यात्। पुनः प्रतिदिनमब्दपर्यन्तं तदेकादशशतजपात् देवी प्रसन्ना भवति। जाड्यं नाशयति विद्यां अवश्यमेव ददाति। इति।

इसका विधान : सूर्य ग्रहण के दिन कुश की जड़ से जीभ पर (ऐं) इस बीज यन्त्र को लिखकर उसे चाट जाय तथा ग्रहण के मोक्ष पर्यन्त जप करे। पुनः प्रतिदिन ग्यारह सौ जप साल भर करना चाहिये। इससे देवी प्रसन्न होती है, जड़ता का नाश करती है और विद्या अवश्य देती है। इति एकाक्षर सरस्वती मन्त्र।

अथ विद्याप्रसङ्गात् कृष्णादेवी (तारणी) महाकल्पः।

तारणीतन्त्रे :

तारणी तन्त्र में शिवपार्वती सम्वाद रूप में इस प्रकार इसका वर्णन मिलता है :

ईश्वर उवाच। श्रूयतां शैलतनये जाड्यनाशकरी परा। चतुर्वर्गफला विद्या मन्त्रसिद्धिप्रदायिका ॥१॥ नवाक्षरो मनुर्देवि तारिण्याः समुदीरितः। इयमेव महाविद्या स्वर्गे मर्त्ये च दुर्लभा ॥२॥

ईश्वर बोले : हे पार्वति! जड़ता की परम नाशकारिणी विद्या को सुनो। यह विद्या धर्म, अर्थ, काम तथा मोक्ष को देने वाली तथा मन्त्र की सिद्धि प्रदान करने वाली है। हे देवि! तारणी देवी का यह मन्त्र नव अक्षरों का कहा गया है। यह महाविद्या स्वर्ग और मृत्युलोक दोनों में दुर्लभ है।

मन्त्र : **क्रीं क्लीं कृष्णादेवि ह्रीं क्रीं ऐं।** यह नवाक्षर मन्त्र है।

अस्य विधानं : प्रथमं जलमानीय पादप्रक्षालनं कृत्वा द्विराचम्य मूलेन शिखां बद्ध्वा कुशासने प्राङ्मुख उदङ्मुख वा उपविश्य अस्त्रमन्त्रेण पुष्पं विशोध्य गुरुं स्मृत्वा भूतशुद्धिप्राणप्रतिष्ठान्तर्मातृकाबहिर्मातृकासृष्टिस्थिति संहारमातृकान्यासांश्चसर्वदेवोपयोगिपद्धतिमार्गेण कृत्वा मूलेन प्राणायामत्रयं कुर्यात् ततः।

इसका विधान : पहले जल लाकर पैर को धोकर दो बार आचमन करके मूल मन्त्र से शिखा को बाँधकर कुशासन पर पूर्वाभिमुख या उत्तराभिमुख बैठकर अस्त्र मन्त्र से फूल का शोधन करके गुरु का स्मरण कर भूतशुद्धि, प्राणप्रतिष्ठा, अन्तर्मातृका, बहिर्मातृका, सृष्टि, स्थिति, संहारमातृका न्यासों को सर्वदेवोपयोगी पद्धति मार्ग से करके मूल मन्त्र से तीन प्राणायाम करे। इसके बाद :

विनियोग : ॐ अस्य श्रीतारणीमन्त्रस्य शक्तिऋषिः। बृहतीछन्दः। तारणीदेवता। ह्रीं बीजम्। ऐं शक्तिः। मम श्रीतारणीप्रसादतो विद्या प्राप्त्यर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास : ॐ शक्तिऋषये नमः शिरसि १। बृहतीच्छन्दसे नमः मुखे २। तारणीदेवतायै नमः हृदि ३। ह्रीं बीजाय नमः लिङ्गे ४। ऐं शक्तये नमः सर्वाङ्गे ५। इति ऋष्यादिन्यासः।

करन्यास : ह्रीं अंगुष्ठाभ्यां नमः १। ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः २। ह्रीं मध्यमाभ्यां नमः ३। ह्रीं अनामिकाभ्यां नमः ४। ह्रीं कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५। ह्रीं करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ६। इति करन्यासः।

हृदयादि षडङ्गन्यास : ॐ ह्रीं हृदयाय नमः १। ह्रीं शिरसे स्वाहा २। ह्रीं शिखायै वषट् ३। ह्रीं कवचाय हुं ४। ह्रीं नेत्रत्रयाय वौषट् ५। ह्रीं अस्त्राय फट् ६। इति हृदयादिषडङ्गन्यासः।

दिङ्न्यास : ॐ कल्पवृक्षाय नमः पूर्वे १। ॐ मणिपीठाय नमः उत्तरे २। ॐ शवाय नमः पश्चिमे ३। ॐ कृपालाय नमः दक्षिणे ४। इति दिङ्न्यासः।

ततो हृदि कमले हस्तं दत्वा।

इसके बाद हृदय कमल पर हाथ रखकर :

ॐ दुर्गायै नमः १। ॐ जयायै नमः २। ॐ मेधायै नमः ३। ॐ विजयायै नमः ४। ॐ सुप्रभायै नमः ५। ॐ काल्यै नमः ६। ॐ गौर्यै नमः ७। ॐ शिवायै नमः ८। इन आठों का हृदय के अष्ट दल कमल के प्रत्येक दल पर न्यास करे। इसके बाद :

योनिन्यास : ॐ योनिबीजायै नमः केशान्ते दक्षिणे भागे १। ॐ योनिविश्वायै नमः केशान्ते वामभागे २। ॐ योनिरूपायै नमः नासिकामूले ३। ॐ योनिकामायै नमः दक्षिणनेत्रे ४। ॐ योनिहारायै नमः वामनेत्रे ५। ॐ योनिरूपायै नमः ओष्ठयोः ६। ॐ योनिच्छायायै नमः दक्षिणमुखकोणे ७। ॐ योनिकामायै नमः वाममुखकोणे ८। ॐ योनिरूपायै नमः चिबुके ९। ॐ योनिचिन्तायै नमः दक्षबाहुमूले १०। ॐ योनिनित्यायै नमः वामबाहुमूले ११। ॐ योनिरूपायै नमः हृदये १२। ॐ योनिसिद्धायै नमः दक्षिणस्तने १३। ॐ योनिबुद्धायै नमः वामस्तने १४। इति योनिन्यासः।

एवं न्यासविधिं कृत्वा स्वदेहे पीठं प्रकल्प्य स्वस्थचित्तेन देवीं ध्यायेत्।

इस प्रकार न्यासविधि करके अपने देह में पीठ की कल्पना करके स्वस्थ चित्त से देवी का ध्यान करे।

अथ ध्यानं :

ॐ कृष्णां लम्बोदरीं भीमां नागकुण्डलशोभिताम्। रक्तमुखीं ललज्जिह्वांरक्ताम्बरधरां कटी ॥१॥ पीनोन्नतस्तनयुगां महानागेन वेष्टिताम्। शवस्योपरि देवेशीं तस्योपरि कपालके ॥२॥ नासाग्रध्याननिरतां महाघोरां वरप्रदाम्। चतुर्भुजां दीर्घकेशीं दक्षिणेनोर्द्धबाहुना ॥३॥ बिभ्रतीं नलनीमेकां वामोर्द्धे पानपात्रकम्। वराभयधरां देवीं मध्यस्थां दक्षवामयोः ॥४॥ पिबन्तीं रौधिरां धारां पानपात्रं सदा शिवे। सर्वसिद्धिप्रदां देवीं नित्यां गिरिनिवासिनीम् ॥५॥ लोचनत्रयसंयुक्तां नागयज्ञो पवीतिनीम्। दीर्घास्यां दीर्घजंघां तु दीर्घाङ्गीं दीर्घजिह्विकाम् ॥६॥ चन्द्रसूर्याग्निभेदेन लोचनत्रयसंयुताम्। शत्रुनाशकरीं देवीं महाभीमां वरप्रदाम् ॥७॥ व्याघ्रचर्मशिरोबद्धां जगत्त्रयविभाविनीम्। साधकानां सुखंकर्त्री सर्वलोकभयङ्करीम् ॥८॥ एवंभूतां महादेवीं तारणीं प्रणमाम्यहम् ॥९॥

इति ध्यायेत्। ततः पीठादौ रचिते सर्वतोभद्रमण्डले मण्डूकादिपरतत्वान्तपीठदेवताः संस्थाप्य ॐ मं मण्डूकादिपरतत्वान्तपीठदेवताभ्यो नमः इति सम्पूज्य नव पीठशक्तीः पूजयेत्। तद्यथा : पूर्वादिक्रमेण।

इससे ध्यान करे। इसके बाद पीठादि में रचित सर्वतोभद्रमण्डल में मण्डूकादिपरतत्त्वान्त पीठदेवताओं की स्थापना करके "ॐ मं मण्डूकादि परतत्त्वान्त पीठदेवताभ्यो नमः" इससे पूजा करके नव पीठशक्तियों की इस प्रकार पूजा करे।

ॐ मेधायै नमः १। ॐ प्रज्ञायै नमः २। ॐ प्रभायै नमः ३। ॐ विद्यायै नमः ४। ॐ धियै नमः ५। धृत्यै नमः ६। ॐ स्मृत्यै नमः ७। ॐ बुद्ध्यै नमः ८। मध्ये ॐ विश्वेश्वर्यै नमः ९।

इति पीठशक्तीः पूजयेत्। ततः ताम्रपत्रं गृहीत्वा घृतेनाभ्यज्य तदुपरि दुग्धधारां जलधारां च दत्त्वा स्वच्छवस्त्रेण सम्प्रोक्ष्य तदुपरि रक्तचन्दनेन चतुर्दलं विलिख्य तद्बाह्ये षट्कोणाष्टदलं तद्बाह्ये षोडशारं तद्बाह्ये भूपुरं यन्त्रं निर्माय ह्रीं तारणीयोगपीठात्मने नमः इति मन्त्रेण पुष्पाद्यासनं दत्त्वा पीठमध्ये संस्थाप्य प्रतिष्ठां च कृत्वा पुनर्ध्यात्वा मूलेन मूर्तिं प्रकल्प्य आवाहनादिपुष्पान्तैरुपचारैः सम्पूज्य देव्याज्ञया आवरणपूजां कुर्यात्। तथा च पुष्पाञ्जलिमादाय ॐ संविन्मये परे देवि परामृतरसप्रिये। अनुज्ञां तारणि देहि परिवारार्चनाय मे ॥१॥ इति पठित्वा पुष्पाञ्जलिं दद्यात्। आज्ञां गृहीत्वा आवरणपूजां समारभेत्।

इससे पीठ शक्तियों की पूजा करे। इसके बाद ताम्रपत्र को लेकर घी से मार्जन करके उसपर दुग्धारा तथा जलधारा डाल कर स्वच्छ वस्त्र से उसे पोंछ कर उस पर लाल चन्दन से चतुर्दल लिखकर उसके बाहर षट्कोणदल, उसके बाहर षोडशार, उसके बाहर भूपुर यन्त्र बनाकर "ह्रीं तारणी योगपीठात्मने नमः" इस मन्त्र से पुष्पाद्यासन देकर पीठ के मध्य उसे स्थापित करके उसमें प्राणप्रतिष्ठा करके पुनः ध्यान कर मूलमन्त्र से मूर्ति की कल्पना करके आवाहनादि से लेकर पुष्पाञ्जलि प्रदान पर्यन्त उपचारों से पूजा करके देवी की आज्ञा लेकर आवरण पूजा करे। पुष्पाञ्जलि लेकर : "ॐ संविन्मये परे देवि परामृतरसप्रिये। अनुज्ञां तारणि देहि परिवारार्चनाय मे ॥१॥" यह पढ़कर पुष्पाञ्जलि देवे और आज्ञा लेकर आवरण पूजा आरम्भ करे। (कृष्णादेवी (तारणी) पूजनयन्त्र देखिये चित्र १२)।

ततः पूज्यपूजकयोरन्तराले प्राची। तदनुसारेण अन्याः दिशः प्रकल्प्य प्राचीक्रमेण चतुर्दलेषु।

इसके बाद पूज्य और पूजक के अन्तराल को पूर्व मान कर तदनुसार अन्य दिशाओं की कल्पना करके प्राचीक्रम से चतुर्दलों में :

ऐं नमः[१]। ऐं श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः इति सर्वत्र १। क्रीं नमः[२]। क्रीं श्रीपा० २। ह्रीं नमः[३]। ह्रीं श्रीपा० ३। क्रीं क्लीं कृष्णादेव्यै नमः[४]। क्रीं क्लीं कृष्णादेविश्रीपा० ४।

इति पूजयेत्। ततः पुष्पाञ्जलिमादाय मूलमुच्चार्य ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले। भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥१॥ इति पठित्वा पुष्पाञ्जलिं च दत्त्वा पूजितास्तर्पिताः सन्तु इति वदेत्। इति प्रथमावरणम् ॥१॥

इससे पूजा करे। इसके बाद पुष्पाञ्जलि लेकर मूलमन्त्र का उच्चारण करके 'ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले। भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥१॥' इसे पढ़कर पुष्पाञ्जलि देकर "पूजितास्तर्पितास्सन्तु" यह कहे। इति प्रथमावरण ॥१॥

ततः षट्कोणकेसरेषु आग्नेय्यादिचतुर्दिक्षु मध्ये दिक्षु च।

इसके बाद षट्कोण केसरों में आग्नेयी आदि चारों दिशाओं में तथा मध्य दिशा में :

ह्रीं हृदयाय नमः[५]। हृदयश्रीपा० १। ह्रीं शिरसे स्वाहा[६]। शिरःश्रीपा० २। ह्रीं शिखायै वषट्[७]। शिखाश्रीपा० ३। ह्रीं कवचाय हुं[८]। कवचश्रीपा० ४। ह्रीं नेंत्रत्रयाय वौषट्[९]। नेत्रश्रीपा० ५। ह्रीं अस्त्राय फट्[१०]। अस्त्रश्रीपा० ६।

इति षडङ्गानि पूजयित्वा पुष्पाञ्जलिं दद्यात्। इति द्वितीयावरणम् ।२।

इस प्रकार षडङ्गों की पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवे। इति द्वितीयावरण।

इसके बाद चतुर्दलाग्रों में प्राच्यादि चतुर्दिक्षु :

ॐ क्षेत्रपालाय नमः[११]। क्षेत्रपालश्रीपा० १। ॐ भैरवाय नमः[१२]। भैरवश्रीपा० २। ॐ गणपतये नमः[१३]। गणपतिश्रीपा० ३। ॐ सहाम्बिकायै नमः[१४]। सहाम्बिकाश्रीपा०४।

इति पूजयित्वा पुष्पाञ्जलिं दद्यात्। इति तृतीयावरणम् ॥३॥

इससे पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवे। इति तृतीयावरण ॥३॥

ततोष्टदलेषु प्राच्यादिक्रमेण वामावर्तेन च।

इसके बाद अष्ट दलों में प्राच्यादि क्रम से वामावर्त :

ॐ अणिमायै नमः[१५]। अणिमाश्रीपा० १। ॐ अनङ्गायै नमः[१६]। अनङ्गाश्रीपा० २। ॐ मदनायै नमः[१७]। मदनाश्रीपा० ३। ॐ लघिमायै नमः[१८]। लघिमाश्रीपा० ४। ॐ मदनातुरायै नमः[१९]। मदनातुराश्रीपा० ५। ॐ अनङ्गकुसुमायै नमः[२०]। अनङ्गकुसुमाश्रीपा० ६। ॐ अष्टकर्णिकायै नमः[२१]। अष्टकर्णिकाश्रीपा० ७। ॐ कपालिकायै नमः[२२]। कपालिकाश्रीपा० ८।

इत्यष्टौ योगिन्यः सम्पूज्य पुष्पाञ्जलिं दद्यात्। इति चतुर्थावरणम् ॥४॥

इससे आठ योगिनियों की पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवे। इति चतुर्थावरण ।४।

ततः षोडशाब्जे प्राच्यादिवामावर्तेन।

इसके बाद षोडशदलकमल में प्राच्यादि वामावर्त क्रम से :

ॐ सुतदायै नमः[२३]। सुतदाश्रीपा० १। ॐ मोक्षदायै नमः[२४]। मोक्षदाश्रीपा० २। ॐ भक्तिदायै नमः[२५]। भक्तिदाश्रीपा० ३। ॐ भोगदायै नमः[२६]। भोगदाश्रीपा० ४। ॐ मुक्तिदायै नमः[२७]। मुक्तिदाश्रीपा० ५। ॐ सिद्धिदायै नमः[२८]। सिद्धिदाश्रीपा० ६। ॐ कामदायै नमः[२९]। कामदाश्रीपा० ७। ॐ धनदायै नमः[३०]। धनदाश्रीपा० ८। ॐ क्षेमदायै नमः[३१]। क्षेमदाश्रीपा० ९। ॐ शिवदायै नमः[३२]। शिवदाश्रीपा० १०। ॐ परदायै नमः[३३]। परदाश्रीपा० ११। ॐ आत्मदायै नमः[३४]। आत्मदाश्रीपा० १२। ॐ योगदायै नमः[३५]। योगदाश्रीपा० १३। ॐ भाग्यदायै नमः[३६]। भाग्यदाश्रीपा० १४। ॐ मुक्तिदायै नमः[३७]। मुक्तिदाश्रीपा० १५। ॐ सर्वसिद्धिदायै नमः[३८]। सर्वसिद्धिदाश्रीपा० १६।

इति परिचारिकाः पूजयित्वा पुष्पाञ्जलिं दद्यात्। इति पञ्चमावरणम् ॥५॥

इससे परिचारिकाओं की पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवे। इति पञ्चमावरण ॥५॥

ततो भूपुराभ्यन्तरे पूर्वादिचतुर्दिक्षु।

इसके बाद भूपुर के अन्दर पूर्वादि चारों दिशाओं में :

ॐ अणिमाद्यष्टसिद्धिभ्यो नमः[३९] १। ॐ अग्निदशकलायै नमः[४०] २। ॐ षोडशचन्द्रकलायै नमः[४१] ३। ॐ द्वादशसूर्यकलायै नमः[४२] ४।

इति सम्पूज्य पुष्पाञ्जलिं दद्यात्। इति षष्ठावरणम् ॥६॥

इससे पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवे। इति षष्ठावरण ॥६॥

ततो भूपुराद्बहिः इन्द्रादिदशदिग्पालान्[४३-५२] वज्राद्यायुधानि[५३-६२] च सम्पूज्य पुष्पाञ्जलिं दद्यात्। इत्यावरणपूजां कृत्वा देव्युपरि पुष्पाञ्जलिं च दत्वा धूपादिनमस्कारान्तं सम्पूज्य जपं कुर्यात्। अस्य पुरश्चरणं एकलक्षजपः। तत्तद्दशांशेन होमतर्पणमार्जनब्राह्मणभोजनं कुर्यात्। एवं कृते मन्त्रः सिद्धो भवति। एतस्मिन्सिद्धे मन्त्रे मन्त्री प्रयोगान् साधयेत्। तथा चः पुष्पैर्बहुविधैश्चैव रक्तचन्दनचर्चितैः। रक्तपुष्पैर्महादेवि नानागन्धसमन्वितैः ॥१॥ बिल्वपत्रैस्तथा गन्धैर्जपापुष्पैर्विशेषतः। श्वेतरक्तपरागैश्च करवीरैर्मरूबकैः ॥२॥ बिल्वपुष्पैः कुन्दपुष्पैर्लवङ्गैश्च सुशोभनैः। अपराजितपुष्पैश्च चम्पकैः केसरस्तथा ॥३॥ एभिः पुष्पैर्महादेवि पूजयेन्नित्यतारिणीम्। मालतीबकपुष्पैश्च सदूर्वैश्चार्चयेत्तया ॥४॥ कदम्बैः श्वेतकुसुमैर्बहुलैः काञ्चनैस्तथा। एवं सम्पूजयित्वा तु एभिर्द्रव्यैर्महेश्वरीम् ॥५॥ लक्षमेकं जपेन्मन्त्रं हविष्याशी दिवा शुचिः।

इसके बाद भूपुर के बाहर इन्द्रादि दश दिक्पालों तथा वज्र आदि आयुधों की पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवे। इस प्रकार आवरण पूजा करके देवी के ऊपर पुष्पाञ्जलि चढ़ाकर धूपदान से लेकर नमस्कारपर्यन्त

पूजा करके, जप करे। इसका पुरश्चरण एक लाख जप है। तत्तद्दशांश से होम, तर्पण, मार्जन तथा ब्राह्मण भोजन कराना चाहिए। ऐसा करने पर मन्त्रसिद्ध होता है। इस मन्त्र के सिद्ध होने पर साधक प्रयोगों को सिद्ध करे। हे महादेवि! लालचन्दन से चर्चित बहुत से नाना प्रकार के फूलों से बेल के पत्रों से तथा विशेषरूप से गन्ध और जपा (अढ़उल) के फूलों से, सफेद तथा लाल पराग वाले कनेर के फूलों से, बेल के फूलों से, कुन्द के फूलों से, सुन्दर लवंग के फूलों से, अपराजिता के फूलों से, चम्पा के फूलों से, केसरों से हे महादेवि! इन फूलों से तारिणी देवी की पूजा करनी चाहिए। मालती तथा बकपुष्पों से और दूर्वादलों से पूजा करे। कदम्ब के फूलों से, सफेद फूलों से सुनहरे फूलों से, इन सब फूलों तथा द्रव्यों से माहेश्वरी देवी की पूजा करके हविष्य का भोजन करने वाला साधक पवित्र होकर दिन में एक लाख मन्त्र का जप करे।

ततः सिद्धे मनौ काम्यान्प्रयोगान्साधयेन्निजान् ।।६।। अष्टसिद्धिप्रदा देवी चतुर्वर्गफलप्रदा। अनया सदृशी विद्या अनेन सदृशो मनुः ।।७।। अनया सदृशी सिद्धिर्न भूता न भविष्यति। यो विद्यां लभते देवि किमु तस्य न जायते ।।८।। अचिराल्लभते वाणीं गद्यपद्यप्रमोदिनीम्। ज्ञानमात्रेण विद्यायाः क्षिप्रं स च कविर्भवेत् ।।९।। विना छन्दो विना शिक्षां विनाभ्यासैन पार्वति। विना ज्ञानं विना यत्नं विनालापं कवेरपि ।।१०।। जिह्वायां जायते तस्य कवित्वं रसनिर्मितम् ।।११।। इति तारणीमहाकल्पः।

इसके बाद मन्त्र के सिद्ध होने पर साधक अपनी अभीष्ट कामनाओं को सिद्ध करे। यह देवी आठों सिद्धियों तथा धर्म, अर्थ, काम, मोक्षरूपी चतुर्वग के फलों को देने वाली है। इसके समान न कोई विद्या है न इसके समान कोई मन्त्र है। इसके समान कोई अन्य सिद्धि न हुई है न होगी। हे देवि, जो इस विद्या को प्राप्त करता है उसे क्या नहीं मिलता? गद्य-पद्य-प्रमोदिनी वाणी उसे प्राप्त हो जाती है। विद्या के ज्ञानमात्र से शीघ्र ही वह कवि हो जाता है। बिना छन्दज्ञान के बिना शिक्षाज्ञान के, बिना अभ्यास के हे पार्वति! बिना ज्ञान और यत्न के तथा बिना कवि से वार्तालाप के उसके जिह्वा पर रसवती कविता प्रादुर्भूत हो जाती है।

इति तारणीमहाकल्प।

अथ कात्यायनीमहाकल्पः। तन्त्रसारे।

तन्त्रसार में शिवपार्वती संवाद में कात्यायनी महाकल्प का इस प्रकार वर्णन है:

भगवानुवाच।

इति गुह्यतमं मन्त्रं पृष्टवानसि पार्वति। भक्तिभावेन ते देवि कथयामि शुचिस्मिते ।।१।। प्रसन्नतां यदा यादि देवि कात्यायनी तथा। कवितामतुलैश्वर्यं ददाति पदमुत्तमम् ।।२।। स्त्रीणामाकर्षणं चैव मारणोच्चाटनेरिपोः। नृपाणां वश्यता चैव जायते च तथा प्रिये ।।३।। चिंतामणिरितिख्यातो मया चापि विचिंत्यते। क्षत्रियेषु यथा रामो देवेषु च पुरन्दरः ।।४।। पतङ्गेषु यथा तार्क्ष्यः क्रूरकार्ये यथा शनिः। शकुन्तेषु यथा श्येनो मन्त्रज्ञो बलवांस्तथा। इति ते परमं गुह्यं संक्षेपात्कथितं मया ।।५।।

भगवान् बोले: हे पार्वति! तुमने भक्तिभाव से इस गुप्त मन्त्र को पूछा है। हे शुचिस्मिते! मैं उसे तुम्हें बता रहा हूं। जब कात्यायनी देवी प्रसन्न होती हैं तब अतुल ऐश्वर्य तथा कविता करने की शक्ति एवं उत्तम पद देती हैं। स्त्रियों को आकृष्ट करने की शक्ति तथा शत्रुओं के मारण और उच्चाटन की शक्ति देती है। हे प्रिये! इस देवी की प्रसन्नता से राजा का वशीकरण भी हो जाता है। इसे चिन्तामणि कहा गया है। मैं भी इस कात्यायनी देवी का चिन्तन करता हूं। क्षत्रियों में जैसे राम, देवों में जैसे इन्द्र,

पतङ्गों में जैसे तार्क्ष्य, क्रूर कार्यों में जैसे शनि, पक्षियों में जैसे श्येन तथा बलवानों में जैसे मन्त्रज्ञ होते हैं उसी प्रकार यह देवी भी है। यह अत्यन्त रहस्यमय बात संक्षेप में मैंने तुम्हें बताया है।

मन्त्रो यथा :

ॐ ह्रीं कात्यायनि स्वाहा। यह आठ अक्षरों का मन्त्र है।

अस्य विधानम्।

विनियोग : अस्य कात्यायनीमन्त्रस्य कपिलो मुनिर्गायत्रीच्छन्दः चण्डिका कात्यायनी देवता ह्रीं श्रीं बीजं स्वाहा शक्तिः मम सर्वेष्टसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास : ॐ कपिलमुनये नमः शिरसि १। गायत्रीच्छन्दसे नमः मुखे २। चण्डिकाकात्यायनी देवतायै नमः हृदि ३। ह्रीं श्रीं बीजाय नमः गुह्ये ४। स्वाहाशक्तये नमः पादयोः ५। विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ६। इति ऋष्यादिन्यासः।

करन्यास : ॐ ह्रीं श्रीं अंगुष्ठाभ्यां नमः १। ॐ ह्रीं श्रीं तर्जनीभ्यां नमः २। ॐ ह्रीं श्रीं मध्यमाभ्यां नमः ३। ॐ ह्रीं श्रीं अनामिकाभ्यां नमः ४। ॐ ह्रीं श्रीं कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५। ॐ ह्रीं श्रीं करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ६। इति करन्यासः।

एवमेव हृदयादिषडङ्गन्यासं कुर्यात्। एवं न्यासं कृत्वा ध्यायेत्।

इसी प्रकार हृदयादि षडङ्गन्यास करे। इस प्रकार न्यास करके ध्यान करे।

ॐ सव्यपादसरोजेनालंकृतोरुमृगाधिपाम्। वामपादाग्रदलितमहिषासुरनिर्भराम् ॥६॥ सुप्रसन्नां सुवदनां चारुनेत्रत्रयान्विताम्। हारनूपुरकेयूरजटामुकुटमण्डिताम् ॥७॥ विचित्रपट्टवसनामर्द्धचन्द्रविभूषिताम्। खड्गखेटकवज्राणि शूलं च विशिखं तथा॥८॥ धारयन्तीं धनुः पाशंशङ्खघण्टे सरोरुहम्। बाहुभिर्ललितैर्देवि कोटिचन्द्रसमप्रभाम् ॥९॥ समाहृतैर्दिविषदैर्वीरैराकाशसंस्थितैः। स्तूयमानां मोदमानैर्लोकपालादिभिः सदा ॥१०॥

इति ध्यायेत्। ततः पीठादौ रचिते सर्वतोभद्रमण्डले मण्डूकादि परतत्त्वान्तपीठदेवताः संस्थाप्य। ॐ मं मण्डूकादिपरतत्त्वान्तपीठदेवताभ्यो नमः इति पीठदेवताः सम्पूज्य नव पीठशक्तीः पूजयेत्। तद्यथा :

इससे ध्यान करे। इसके बाद पीठादि में रचित सर्वतोभद्रमण्डल में मण्डूकादि परतत्वान्त पीठदेवताओं की स्थापना करके "ॐ मं मण्डूकादि परतत्वान्त पीठदेवताभ्यो नमः" इससे पीठदेवताओं की पूजा करके इस प्रकार नव पीठशक्तियों की पूजा करे।

पूर्वादिक्रमेण। ॐ प्रभायै नमः १। ॐ मायायै नमः २। ॐ जयायै नमः ३। ॐ सूक्ष्मायै नमः ४। ॐ विशुद्धायै नमः ५। ॐ नन्दिन्यै नमः ६। ॐ सुप्रभायै नमः ७। ॐ विजयायै नमः ८। मध्ये। ॐ सर्वसिद्धिदायै नमः ९।

इति नव पीठशक्तीः सम्पूज्य ततस्ताम्रादिपात्रे रक्तचन्दनेन मन्त्रं विलिख्य। ॐ आधारशक्तिकात्यायन्यै नमः। इति मन्त्रेण पुष्पाद्यासनं दत्वा पीठमध्ये संस्थाप्य प्रतिष्ठां च कृत्वा पुनर्ध्यात्वा मूलेन मूर्तिं प्रकल्प्यावाहनादिपुष्पान्तैरुपचारैः सम्पूज्य देव्याज्ञां गृहीत्वा आवरणपूजां कुर्यात्। तत्र क्रमः : षट्कोणकेसरेषु।

इन नव पीठशक्तियों की पूजा करके ताम्र आदि के बने पात्र में लाल चन्दन से यन्त्र को लिख कर 'ॐ आधारशक्ति कात्यायन्यै नमः" इस मन्त्र से पुष्पाद्यासन देकर पीठ के मध्य उसकी प्रतिष्ठा करके पुनः ध्यान कर मूलमन्त्र से मूर्ति की कल्पना करके आवाहनादि से लेकर पुष्पाञ्जलि प्रदान पर्यन्त उपचारों से पूजा करके देवी से आज्ञा लेकर आवरण पूजा करे। उसमें क्रम यह है। षट्कोण केसरों में :

अग्निकोणे ह्रीं श्रीं हृदयाय नमः १। निर्ऋति० ह्रीं श्रीं शिरसे स्वाहा २। वायु० ह्रीं श्रीं शिखायै वषट् ३। ईशान० ह्रीं श्रीं कवचाय हुं ४। देवीपूजकयोर्मध्ये ह्रीं श्रीं नेत्रत्रयाय वौषट् ५। देवीपश्चिमे ह्रीं श्रीं अस्त्राय फट् ६।

इति षडङ्गानि पूजयेत्।

इस प्रकार षडङ्गों का पूजन करे।

ततः भूपुराभ्यन्तरे पूज्यपूजकयोर्मध्ये प्राचीं प्रकल्प्य प्राच्यादिचतुर्दिक्षु वामावर्तेन च।

इसके बाद भूपुर के भीतर पूज्य और पूजक के मध्य प्राची की कल्पना करके प्राच्यादि चतुर्दिक्षु वामावर्तेन :

ॐ डाकिन्यै नमः १। ॐ योगिन्यै नमः २। ॐ खेचर्यै नमः ३। ॐ शाकिन्यै नमः ४।

इति पूजयेत्। इससे पूजा करे।

ततो भूपुराद्बहिः इन्द्रादिदशदिग्पालान् वज्राद्यायुधानि च पूजयेत्। इत्यावरणपूजां कृत्वा धूपादिनीराजनान्तं सम्पूज्य जंप कुर्यात्। अस्य पुरश्चरणं लक्षजपः। तत्तद्दशांशेन होमतर्पणमार्जनब्राह्मणभोजनानि कुर्यात्। एवं कृते मन्त्रः सिद्धो भवति। एतस्मिन्सिद्धे मन्त्रे मन्त्री प्रयोगान् साधयेत्।

इसके बाद भूपुर के बाहर इंद्र आदि दश दिक्पालों तथा वज्र आदि आयुधों की पूजा करे। इससे आवरण पूजा करके धूपदान से लेकर नीराजन पर्यन्त पूजा करके जप करे। इसका पुरश्चरण एक लाख जप है। जप का दशांश होम, होम का दशांश तर्पण, तर्पण का दशांश ब्राह्मण भोजन करे। ऐसा करने पर मन्त्र सिद्ध होता है। मन्त्र के सिद्ध होने पर साधक प्रयोगों को सिद्ध करे :

लक्षमेकं जपेन्मन्त्रं दशांशं जुहुयात्ततः। मन्त्रोयं चिन्तितो देवि सभायां पुरतो यदि ॥११॥
कोटिसूर्यप्रतीकाशो दृश्यते वादिभिस्तथा। पलायन्ते महादेवि साध्वसेन क्षणात्ततः ॥१२॥

एक लाख मन्त्र का जाप करना चाहिये। जप का दशांश होम करना चाहिए। हे देवि ! यदि सभा में इस मन्त्र का चिन्तन किया जाय तो वादीजन जपकर्त्ता को करोड़ों सूर्य के समान देखते हैं और हे महादेवि ! वे भय से क्षण में ही भाग जाते हैं।

कार्तिकस्य सिते पक्षे नवम्यामारभेज्जपम्। सहस्रं प्रत्यहं कृत्वा संप्राप्य नवमीं सिताम् ॥१३॥ विजयं खड्गमादाय पूजयित्वा यथाविधि। अर्द्धरात्रे बलिं दत्वा प्रातर्यात्रां समाचरेत् ॥१४॥ रणभूमिं समासाद्य सहस्रं प्रजपेन्मनुम्। तं दृष्टवा पुरुषं देवि हृत्क्षोभो जायते रिपोः ॥१५॥ सदूतं यममायान्तं मन्यमाना नराधिपाः। पलायन्ते महादेवि नात्र कार्या विचारणा ॥१६॥ शुक्लाम्बरधरो मौनी ब्रह्मचारी व्रते स्थितः। शुक्लवर्णा महादेवीं ध्यात्वा शुक्लविभूषणाम् ॥१७॥ सहस्रं मासमेकं तु जपेन्नित्यं यथाविधि। मालतीबकुलैः कुन्दैर्मन्त्री मधुरसंप्लुतैः ॥१८॥ सहस्रत्रितयं हुत्वा वागीशो जायतेचिरात्। हेलया कवितां देवि विशदां कुरुते द्रुतम् ॥१९॥ जपं या कुरुते नित्यं शतशो वत्सरावधि। वन्ध्यापि लभते पुत्रं कार्तिकेयमिवापरम् ॥२०॥ दुर्भगा च भवेत्पत्युः सुभगाऽतिमनोरमा।

कार्तिक के शुक्ल पक्ष की नवमी को जप का आरम्भ करे। प्रतिदिन एक हजार जप करके आगामी शुक्ल पक्ष की नवमी को विजय नामक तलवार की यथाविधि पूजा करके आधी रात को बलि देकर प्रातः यात्रा प्रारम्भ करे। रणभूमि में आकर एक हजार मन्त्र का जप करे। हे देवि ! उस पुरुष को देखकर शत्रु के हृदय में भारी हलचल पैदा हो जाती है। सभी शत्रु, राजा उस पुरुष को दूत सहित आते हुये यमराज के समान देखते हुए भाग जाते हैं। हे महादेवि इसमें कोई विचार नहीं करना चाहिये। मौन तथा ब्रह्मचारी रह कर सफेद वस्त्र धारण कर व्रत में स्थित होकर शुक्ल वर्ण शुक्ल विभूषित महादेवि

का ध्यान करके एक मास पर्यन्त प्रतिदिन यथाविधि एक हजार मन्त्र का जप करे। घी, मधु तथा शकर से युक्त मालती, मौलसरी तथा कुन्द के फूलों से तीन हजार की आहुति देकर शीघ्र ही वागीश बन जाता है। हे देवि वह साधक अत्यन्त सहजता से विशद कविता करने लग जाता है। जो स्त्री प्रतिदिन सौ मन्त्र का जप एक वर्ष तक करती है वह बन्ध्या होने पर भी कर्तिकेय के समान अन्य पुत्र को प्राप्त करती है। जो दुर्भगा होती है वह अत्यन्त मनोरम पति की सुभगा हो जाती है।

रूपं विचिन्त्य पूर्वोक्तं लक्षं जप्त्वायुतं ततः। नीलोत्पलैः सरोजैर्वा हुत्वा वैश्रवणायते ॥२१॥

जो मनुष्य पूर्वोक्त रूप को स्मरण करके एक लाख मन्त्र का जप करता है तथा बाद में दश हजार नीलकमलों से होम करता है, वह कुबेर के समान हो जाता है।

अन्यच्च।

व्याघ्रचर्मपरीधानां मुण्डमालाविभूषिताम्। रक्तवर्तुलभीमाक्षीं जिह्वया लीलयासुरान् ॥२२॥ चर्वयन्तीं महाकालीं कालरात्रिमिवापराम्। क्षोभयन्तीं जगत्सर्वं ससुरासुरपर्वतम् ॥२३॥

एवं ध्यात्वा जपेद्देवि श्मशाने वा चतुष्पथे। सप्ताहं त्रिशतं कृत्वा व्रतस्थः स्थिरमानसः ॥२४॥ जपेद्यो नियतं देवि स रिपून्नाशयेद्ध्रुवम्। अनेनैव विधानेन बलिं दद्याच्चतुष्पथे ॥२५॥ दग्धं मत्स्यं च सक्त्वन्नं पिण्डं कृत्वा समाहित :। आममासं हरिद्राक्तं यं विचिन्त्य प्रदापयेत् ।२६॥ सप्ताहाल्लभते शत्रुर्यमसद्म न संशयः। हरिर्वा शङ्करो वापि न शक्तो रक्षितुं क्वचित् ॥२७॥ बलिमन्त्रो यथा ह्रीं ह्रीं चौं चौं कालिके खादाय २ वशीकुरु २ शत्रुं मारय २ स्वाहा। इति। अंगारदकिने चैव निन्दितासु तिथिष्वपि। पूजितं खड्गमादाय निशीथे बलिमाहरेत् ॥२८॥ प्रहारशोणितं चास्य दद्याद्देव्यै यथाविधि। अच्छेद्याभेदकायः स्याद्रिपूणां नात्र संशयः ॥२९॥ इति कात्यायनी महाकल्प : तारापटलंसमाप्तम्।।

हे देवि! इस प्रकार ध्यान करके जो श्मशान में या चौराहे पर मन को एकाग्रकर व्रत के साथ एक सप्ताह तक प्रतिदिन तीन सौ मन्त्र का जप करता है वह हे देवि! निश्चित रूप से नियत शत्रु का नाश कर देता है। भुनी हुई मछली, सतुआ तथा भात का पिण्ड बनाकर हल्दी से मिश्रित कच्चा मांस जो देवि का ध्यान करके बलि देता है, उसका शत्रु एक सप्ताह में मृत्यु का ग्रास हो जाता है। इसमें कोई संशय नहीं है। विष्णु या शङ्कर कहीं भी उसकी रक्षा नहीं कर सकते। बलि मन्त्र यह है : "ह्रीं ह्रीं चौं चौं कालिके खादय २ वशी कुरु २ शत्रु मारय २ स्वाहा।" मङ्गल के दिन तथा निन्दित तिथियों को भी पूजित खड्ग को लेकर रात्रि में बलि देवे। पशु की बलि देने पर उसका रक्त देवी को यथाविधि चढ़ाने से वह शत्रुओं के लिए अभेद्य शरीर वाला हो जाता है। इसमें कोई संशय नहीं है।

इति कात्यायनी महाकल्प

अथ ताराकवचप्रारम्भः।

ईश्वर उवाच।

कोटितन्त्रेषु गोप्या हि विद्यातिभयमोचिनी। दिव्यं हि कवचं तस्याः शृणुष्व सर्वकामदम् ॥१॥

विनियोगः अस्य ताराकवचस्याऽक्षोभ्यऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दो भगवती तारादेवता सर्वमन्त्रसिद्धिसमृद्धये जपे विनियोगः।

प्रणवो मे शिरः पातु ब्रह्मरूपा महेश्वरी। ह्रींकार पातु ललाटे बीजरूपा महेश्वरी ॥२॥ स्त्रींकारः सदा वदने लज्जारूपा महेश्वरी हूंकारः पातु हृदये भवानीरूपशक्तिधृक् ॥३॥ फट्कारः पातु सर्वसिद्धिफलप्रदा। खर्वा मा पातु देवेशी गण्डयुग्मे भयापहा ॥४॥ निम्नोदरी सदा स्कन्धयुग्मे

पातु महेश्वरी। व्याघ्रचर्मावृता कट्यां पातु देवी शिवप्रिया ॥५॥ पीनोन्नतस्तनी पातु पार्श्वयुग्मे महेश्वरी। रक्तवर्तुलनेत्रा च कटिदंशे सदावतु ॥६॥ ललज्जिह्वा सदा पातु नाभौ मां भुवनेश्वरी। करालास्या सदा पातु लिङ्गेदेवी हरप्रिया ॥७॥ पिङ्गोग्रैकजटा पातु जङ्घायां विघ्ननाशिनी। प्रेतखर्परधरा देवी जानुचक्रे महेश्वरी ॥८॥ नीलवर्णा सदा पातु जानुनी सर्वदा मम। नागकुण्डलधर्त्री च पातु पादयुगे ततः ॥९॥ नागहारधरा देवी सर्वाङ्गं पातु सर्वदा। नागकङ्कधरा देवी पातु प्रान्तरदेशतः ॥१०॥ चतुर्भुजा सदा पातु गमने शत्रुनाशिनी। खड्गहस्ता महादेवी श्रवणे पातु सर्वदा ॥११॥ नीलाम्बरधरा देवी पातु मां विघ्ननाशिनी। कर्त्रिहस्ता सदा पातु विवादे शत्रुमध्यतः ॥१२॥ ब्रह्मरूपधरा देवी संग्रामे पातु सर्वदा।

नागकङ्कणधर्त्री च भोजने पातु सर्वदा ॥१३॥ शवकर्णा महादेवी शयने पातु सर्वदा। वीरासनधरा देवी निद्रायां पातु सर्वदा ॥१४॥ धनुर्बाणधरा देवी पातु मां विघ्नसंकुले। नागाञ्चितकटी पातु देवी मां सर्वकर्मसु ॥१५॥ छिन्नमुण्डधरा देवी कानने पातु सर्वदा। चितामध्यस्थिता देवी मारणे पातु सर्वदा ॥१६॥ द्वीपिचर्मधरा देवी पुत्रदारधनादिषु। अलङ्कारान्विता देवी पातु मां हरवल्लभा ॥१७॥ रक्षरक्ष नदीकुञ्जे हूंहूंफट् सुसमन्विते। बीजरूपा महादेवी पर्वते पातु सर्वदा ॥१८॥ मणिधरा वज्रिणी देवी महाप्रतिसरे तथा। रक्षरक्ष हूं हूं ॐ ह्रीं स्वाहा महेश्वरी ॥१९॥ पुष्पकेतुरजार्हेति कानने पातु सर्वदा। ॐ ह्रीं वज्रपुष्पं हुं फट् प्रान्तरे सर्वकामदा ॥२०॥ ॐ पुष्पे पुष्पे महापुष्पे पातु पुत्रान्महेश्वरी। हूंस्वाहा शक्तिसंयुक्ता दारान् रक्षतु सर्वदा ॥२१॥ ॐ आं हूं स्वाहा महेशानी पातु द्यूते हरप्रिया। ॐ ह्रीं सर्वविघ्नोत्सारिणी देवी विघ्नान्मां सदावतु ॥२२॥ ॐ पवित्रवज्रभूमे हूंफटस्वाहासमन्विता। पूरिका पातु मां देवी सर्वविघ्नविनाशिनी ॥२३॥ ॐ आः सुरेखे वज्ररेखे हूंफट स्वाहासमन्विता। पाताले पातु सा देवी लाकिनी नामसंज्ञिका ॥२४॥ ह्रींकारी पातु मां पूर्वे शक्तिरूपा महेश्वरी। स्त्रींकारी पातु देवेशी वधूरूपा महेश्वरी ॥२५॥ हूंस्वरूपा महादेवी पातु मां क्रोधरूपिणी। फट्स्वरूपा महामाया उत्तरे पातु सर्वदा ॥२६॥ पश्चिमे पातु मां देवी फट्स्वरूपा हरप्रिया। मध्ये मां पातु देवेशी हूंस्वरूपा नगात्मजा ॥२७॥ नीलवर्णा सदा पातु सर्वतो वाग्भवा सदा। भवानी पातु भवने सर्वैश्वर्यप्रदायिनी ॥२८॥ विद्यादानरता देवी वक्त्रे नीलसरस्वती। शास्त्रे वादे च संग्रामे जले च विषमे गिरौ ॥२९॥ भीमरूपा सदा पातु श्मशाने भयनाशिनी। भूतप्रेतालये घोरे दुर्गमा श्रीघनावतु ॥३०॥ पातु नित्यं महेशानी सर्वत्र शिवदूतिका। कवचस्य च माहात्म्यं नाहं वर्षशतैरपि ॥३१॥ शक्नोमि कथितुं देवि भवेत्तस्य फलं च यत्। पुत्रदारेषु बन्धनां सर्वदेशे च सर्वदा ॥३२॥ न विद्यते भयं तस्य नृपपूज्यो भवेच्च सः। शुचिर्भूत्वाऽशुचिर्वापि कवचं सर्वकामदम् ॥३३॥ प्रपठन् वा स्मरन्मर्त्यो दुःखशोकविवर्जितः। सर्वशास्त्रे महेशानि कविराट् भवति ध्रुवम् ॥३४॥ सर्ववागीश्वरो मर्त्योलोकवश्यो धनेश्वरः। रणे द्यूते विवादे च जयस्तत्र भवेद्ध्रुवम् ॥३५॥ पुत्रपौत्रान्वितो मर्त्यो विलासी सर्वयोषिताम्। शत्रवो दासतां यान्ति सर्वेषां वल्लभः सदा ॥३६॥ गर्वी खर्वी भवत्येव वादी स्खलति दर्शनात्। मृत्युश्चवश्यतां याति दासास्तस्यावनीभुजः ॥३७॥ प्रसङ्गात्कथितं सर्वं कवचं सर्वकामदम्। प्रपठन्वा स्मरन्मर्त्यः शापानुग्रहणे क्षमः ॥३८॥ आनन्दवृन्दसिन्धूनामधिपः कविराड्भवेत्। सर्ववागीश्वरो मर्त्यो

लोकवश्यः सदा सुखी ॥३९॥ गुरोः प्रसादमासाद्य विद्यां प्राप्य सुगोपिताम्। तत्रापि कवचं देवि दुर्लभं भुवनत्रये॥४०॥ गुरुर्देवो हरः साक्षात्तत्पत्नी तु हरप्रिया। अभेदेन भजेद्यस्तु तस्य सिद्धिरदूरतः ॥४१॥ मन्त्राचारा महेशानि कथिताः पूर्ववत्प्रिये। नाभौ ज्योतिस्तथा रक्तं हृदयोपरि चिन्तयेत्॥४२॥ ऐश्वर्यं सुकवित्वं च महावागीश्वरो नृपः। नित्यं तस्य महेशानि महिलासङ्गमं चरेत्॥४३॥ पञ्चाचाररतो मर्त्यः सिद्धो भवति नान्यथा। शक्तियुक्तो भवेन्मर्त्यः सिद्धो भवति नान्यथा॥४४॥ ब्रह्मा विष्णुश्च रुद्रश्च ये देवासुरमानुषाः। तं दृष्ट्वा साधकं देवि लज्जायुक्ता भवन्ति ते॥४५॥ स्वर्गे मर्त्ये च पाताले ये देवाः सिद्धिदायकाः। प्रशंसन्ति सदा देवि तं दृष्ट्वा साधकोत्तमम्॥४६॥ विघ्नात्मकाश्च ये देवाः स्वर्गे मर्त्ये रसातले। प्रशंसन्ति सदा सर्वे तं दृष्ट्वा साधकोत्तमम्॥४७॥ इति ते कथितं देवि मया सम्यक्प्रकीर्तितम्। भुक्तिमुक्तिकरं साक्षात्कल्पवृक्षस्वरूपकम्॥४८॥ आसाद्याद्यगुरुं प्रसाद्य य इदं कल्पद्रुमालम्बनं मोहेनापि मदेन चापि रहितो जाड्येन वा युज्यते। सिद्धोसौ भुवि सर्वदुःखविपदां पारं प्रयात्यन्तके मित्रं तस्य नृपश्च देवि विपदो। नश्यन्ति तस्याशु च॥४९॥ तद्गात्रं प्राप्य शस्त्राणि ब्रह्मास्त्रादीनि वै भुवि। तस्य गेहे स्थिरा लक्ष्मीर्वाणी वक्त्रे वसेद्ध्रुवम्॥५०॥ इदं कवचमज्ञात्वा तारां यो भजते नरः। अल्पायुर्निर्धनो मूर्खो भवत्येव न संशयः॥५१॥ लिखित्वा धारयेद्यस्तु कण्ठे वा मस्तके भुजे। तस्य सर्वार्थसिद्धिः स्याद्यद्यन्मनसि वर्तते॥५२॥ गोरोचनाकुंकुमेन रक्तचन्दनकेन वा। यावकैर्वा महेशानि लिखेन्मन्त्रं समाहितः॥५३॥ अष्टम्यां मङ्गलदिने चतुर्दश्यामथापि वा। सन्ध्यायां देवदेवेशि लिखेद्यन्त्रं समाहितः॥५४॥ मघायां श्रवणायां वा रेवत्यां वा विशेषतः। सिंहराशौ गते चन्द्रे कर्कटस्थे दिवाकरे॥५५॥ मीनराशौ गुरौ याते वृश्चिकस्थे शनैश्चरे। लिखित्वा धारयेद्यस्तु उत्तराभिमुखो भवेत्॥५६॥ श्मशाने प्रान्तरे वापि शून्यागारे विशेषतः। निशायां वा लिखेन्मन्त्रं तस्य सिद्धिरचञ्चला॥५७॥ भुर्जे पत्रे लिखेन्मन्त्रं गुरुणा च महेश्वरि। ध्यानधारणयोगेन धारयेद्यस्तु भक्तितः॥५८॥ अचिरात्तस्य सिद्धिः स्यान्नात्र कार्या विचारणा॥५९॥ इति श्रीरुद्रयामले तन्त्रे उग्रताराकवचं समाप्तम्।

तारास्तोत्र

मातर्नीलसरस्वति प्रणमतां सौभाग्यसम्पत्प्रदे प्रत्यालीढपदस्थिते शवहृदि स्मेराननांभोरुहे।
फुल्लेन्दीवर लोचने त्रिनयने कर्त्रीकपालोत्पले खड्गञ्चादधती त्वमेव शरणं त्वामीश्वरीमाश्रये॥१॥
वाचामीश्वरि भक्तिकल्पलतिके सर्वार्थसिद्धीश्वरि गद्यप्राकृतपद्यजातरचनासर्वार्थसिद्धिप्रदे।
नीलेन्दीवरलोचनत्रययुते कारुण्यवारान्निधे सौभाग्यामृतवर्द्धनेन कृपया सिञ्च त्वमस्मादृशम्॥२॥
खर्वे गर्वसमूहपूरिततनो सर्पादिवेषोज्ज्वले व्याघ्रत्वक्परिवीतसुन्दरकटिव्याधूतघण्टाङ्किते।
सद्यःकृत्तगलद्रजः परिमिलन्मुण्डद्वयीमूर्द्धजग्रन्थिश्रेणिनृमुण्डदामललिते भीमे भयन्नाशय॥३॥
मायानङ्गविकाररूपललनाविन्द्वर्धचन्द्राम्बिके हुंफट् कारमयि त्वमेव शरणं मन्त्रात्मिके मादृशः।
मूर्तिस्ते जननि त्रिधामघटिता स्थूलातिसूक्ष्मा परा वेदाना न हि गोचरा कथमपि प्राज्ञैर्नुतामाश्रये॥४॥
त्वत्पादाम्बुजसेवया सुकृतिनो गच्छन्ति सायुज्यतां तस्याः श्रीपरमेश्वरत्रिनयनब्रह्मादिसाम्यात्मनः।
संसाराम्बुधिमज्जने पटुतनुर्देवेन्द्रमुख्यान्सुरान् मातस्ते पदसेवने हि विमुखान् किं मन्दधीस्सेवते॥५॥
मातस्त्वत्पद पंकजद्वयरजोमुद्रांककोटीरिणस्ते देवा जयसङ्गरे विजयिनो निःशङ्कमङ्केगताः। देवोऽहं

भुवने न मे सम इति। स्पर्द्धां वहन्तः परे तत्तुल्यान्नियतं यथा शशिरवी नाशं व्रजन्ति स्वयम् ॥६॥ त्वन्नामस्मरणात्पलायनपरान्द्रष्टुं च शक्ता न ते भूतप्रेतपिशाचराक्षसगणा यक्षाश्च नागाधिपाः। दैत्या दानवपुङ्गवाश्च खेचरा व्याघ्रादिका जन्तवो डाकिन्यः कुपितान्तकश्च मनुजान् मातः क्षणं भूतले ॥७॥ लक्ष्मीःसिद्धिगणश्च पादुकमुखाः सिद्धास्तथा वैरिणां स्तम्भश्चापि वराङ्गने गजघटास्तम्भस्तथा मोहनम्। मातत्वत्पदसेवया खलु नृणां सिध्यन्ति तेते गुणाः क्लान्तः कान्त मनोभवोत्र भवति क्षुद्रोऽपि वाचस्पतिः ॥८॥ ताराष्टकमिदं पुण्यं भक्तिमान् यः पठेन्नरः। प्रातर्मध्याह्नकाले च सायाह्ने नियतः शुचिः ॥९॥ लभते कवितां विद्यां सर्वशास्त्रार्थविद्भवेत्। लक्ष्मीमनश्वरां प्राप्य भुक्त्वा भोगान्यथेप्सितान्। कीर्तिं कान्तिं च नेरुज्यं प्राप्यान्ते मोक्षमाप्नुयात् ॥१०॥ इति नीलतन्त्रे तारास्तोत्रं समाप्तम्।

श्रीताराशतनामस्तोत्र

श्रीशिव उवाच।

तारणी तरलातन्वी तारातरुणवल्लरी। तीररूपा तरी श्यामा तनुक्षीणपयोधरा ॥१॥ तुरीया तरला तीव्रगमना नीलवाहिनी। उग्रतारा जया चण्डी श्रीमदेकजटाशिरा ॥२॥ तरुणी शाम्भवी छिन्नभाला च भद्रतारिणी। उग्रा उग्रप्रभा नीला कृष्णा नीलसरस्वती ॥३॥ द्वितीया शोभना नित्या नवीना नित्यनूतना। चण्डिका विजयाराध्या देवी गगनवाहिनी ॥४॥ अट्टहास्या करालास्या चरास्या दितिपूजिता। सगुणा सगुणाराध्या हरीन्द्रदेवपूजिता ॥५॥ रक्तप्रिया च रक्ताक्षी रुधिरास्यविभूषिता। बलिप्रिया बलिरता दुर्गा बलवती बला ॥६॥ बलप्रिया बलरता बलरामप्रपूजिता। अर्द्धकेशेश्वरी केशा केशवासविभूषिता ॥७॥ पद्ममाला च पद्माक्षी कामाख्या गिरिनन्दिनी। दक्षिणा चैव दक्षा च दक्षजा दक्षिणे रता ॥८॥ वज्रपुष्पप्रिया रक्तप्रिया कुसुमभूषिता। माहेश्वरी महादेवप्रिया पञ्चविभूषिता ॥९॥ इडा च पिङ्गला चैव सुषुम्ना प्राणरूपिणी। गान्धारी पञ्चमी पञ्चाननादिपरिपूजिता ॥१०॥ तथ्यविद्या तथ्यरूपा तथ्यमार्गानुसारिणी। तत्त्वप्रिया तत्त्वरूपा तत्त्वज्ञानात्मिकानघा ॥११॥ ताण्डवाचारसन्तुष्टा ताण्डवप्रियकारिणी। लालदानरता क्रूरतापिनी तरणिप्रभा ॥१२॥ त्रयीयुक्ता त्रयीमुक्ता तर्पिता तृप्तिकारिणी। कारुण्यभावसन्तुष्टा शक्तिर्भक्तानुरागिणी ॥१३॥ शिवासक्ता शिवरतिः शिवभक्तिपरायणा। ताम्रद्युतिस्ताम्ररागा ताम्रपात्रप्रभोजिनी ॥१४॥ बलभद्रप्रेमरता बलिभुग्बलिकल्पिनी। रामरूपा रामशक्ती रामरूपानुरागिणी ॥१५॥ इत्येतत्कथितं देवि रहस्यं परमाद्भुतम्। श्रुत्वा मोक्षमवाप्नोति तारादेव्याः प्रसादतः ॥१६॥

य इदं पठति स्तोत्रं तारास्तुतिरहस्यकम्। सर्वसिद्धियुतो भूत्वा विहरेत् क्षिति मण्डले ॥१७॥ तस्यैव मन्त्रसिद्धिः स्यान्मम सिद्धिरनुत्तमा। भवत्येव महामाये सत्यं सत्यं न संशयः ॥१८॥ मन्दे मङ्गलवारे च यः पठेन्निशि संयतः। तस्यैव मन्त्रसिद्धिस्स्याद्गाणपत्यं लभेत सः ॥१९॥ श्रद्धयाऽश्रद्धया वापि पठेत्ताराहस्यकम्। सोऽचिरेणैव कालेन जीवन्मुक्तः शिवो भवेत् ॥२०॥ सहस्रावर्तनाद्देवि पुरश्चर्याफलं लभेत्। एवं सततयुक्ता ये ध्यायं तस्त्वामुपासते। ते कृतार्था महेशानि मृत्युसंसारवर्त्मनः ॥२१॥

जो इस ताराहस्य स्तोत्र को पढ़ता है, वह समस्त सिद्धियों से युक्त होकर सारे भूमण्डल पर विचरण करता है। उसी की मन्त्रसिद्धि होती है और मेरी भी सर्वोत्तम मन्त्रसिद्धि होती है। हे महामाये!

मैं सत्य कहता हूं, सत्य कहता हूं। इसमें कोई संशय नहीं है। शनिवार तथा मङ्गलवार की रात्रि में जो संयत होकर इसका पाठ करे, उसी की मन्त्रसिद्धि तथा गणपति की भक्तिसिद्धि हो सकती है। जो मनुष्य श्रद्धा या अश्रद्धा से ताराहस्य का पाठ करता है वह स्वल्पकाल में ही जीवन्मुक्त और शिव हो जाता है। हे देवि! एक हजार बार पाठ करने पर मनुष्य पुरश्चरण का फल प्राप्त करता है। इस प्रकार जो निरन्तर युक्त होकर तुम्हारी उपासना करते हैं वे, हे महेशानि! सब इस संसार मार्ग में कृतार्थ हो जाते हैं।

इति स्वर्णमालातन्त्रे तारणीशतनामस्तोत्रम् समाप्तम्।

श्रीतारातकारादि सहस्रनामस्तोत्र

वसिष्ट उवाच।

नाम्नां सहस्रं ताराया मुखाम्भोजाद्विनिर्गतम्। मन्त्रसिद्धिकरं प्रोक्तं तन्मेवद पितामह ।।१।।

वसिष्ठ बोले: हे पितामह! तारासहस्रनाम, जो कि मन्त्र सिद्धिकारक कहा गया है और आपके मुख कमल से निकला है, उसे आप मुझे बतायें।

ब्रह्मोवाच।

श्रृणु वत्स प्रवक्ष्यामि रसस्यं सर्वसिद्धिदम्। यस्योपदेशमात्रेण तव सिद्धिर्भविष्यति ।।२।। महाप्रलयकालादौ नष्टे स्थावरजङ्गमे। महातारं समाकर्ण्य कृपया संहृतं तनौ ।।३।। नाम्ना तेन महातारा ख्याता सा ब्रह्मरूपिणी। महाशूलत्रयं कृत्वा तत्र चैकाकिनी स्थिता ।।४।। पुनः सृष्टेश्चिकीर्षाभूद्दिव्यसाम्राज्यसंज्ञकम्। नाम्नां सहस्रमस्यास्तु तकाराद्यं मया स्मृतम् ।।५।। तत्प्रभावेण ब्रह्माण्डं निर्मितं सुदृढं महत्। आविर्भूता वयं तन्त्रयन्त्रैस्तस्याः पुरा द्विज ।।६।। स्वस्यकार्यार्थिनस्तत्र भ्रान्ता भूम्यां यथा वयम्। तयोपदिष्टाः कृपया भवामस्सृष्टिकारकाः ।।७।। तस्याः प्रसादाद्विप्रेन्द्र त्रयो ब्रह्माण्डनायकाः। अन्ये सुरगणास्सर्वे तस्याः पादप्रसेवकाः ।।८।। गठनाद्धारणात्सृष्टेः कर्ताऽहं पालको हरिः। तत्त्वाक्षरोपदेशेन संहर्ता शङ्करस्स्वयम् ।।९।। ऋषिच्छन्दादिकं ध्यानं मूलवत्परिकीर्तितम्। नियोगमात्रसिद्धौ च पुरुषार्थचतुष्टयम् ।।१०।।

ब्रह्माजी बोले: हे वत्स! समस्त सिद्धियों को देने वाले उस रहस्य को बतलाऊँगा जिसके उपदेश मात्र से तुम्हरी सिद्धि होगी। महाप्रलयकाल में स्थावरों तथा जङ्गमों के नष्ट हो जाने पर तनु में संहृत महा तार (अत्यन्त उच्च स्वर ओंकार ध्वनि) को कृपापूर्वक सुनकर वह उस नाम से ब्रह्म रूपिणी महातारा देवी विख्यात हुईं। तीन महाशूलों को लेकर वह अकेले स्थित हुईं। पुनः दिव्य साम्राज्यसंज्ञक सृष्टि के उत्पन्न करने की इच्छा हुई। उनके प्रभाव से सुदृढ़ ब्रह्माण्ड का निर्माण हुआ। हे द्विज! उस समय उनके तन्त्र यन्त्र से हम सब आविर्भूत हुये। अपने कार्य की सिद्धि के लिए हमलोग पृथिवी पर भ्रान्त होकर इधर-उधर घूमने लगे। उन देवी के उपदेश देने पर हमलोग सृष्टिकारक बने। हे विप्रेन्द्र! उन देवी के प्रसाद से हम तीनों ब्रह्माण्ड के नायक बने। अन्य सब देवगण उनके चरण सेवक बने। सृष्टि के पठन तथा धारण से मैं कर्त्ता तथा हरि पालक हुए। तत्त्वाक्षर के उपदेश से शङ्कर जी स्वयं संहारकर्ता हो गये। ऋषि, छन्द आदि तथा ध्यान मूल के समान बताया गया है। नियोगमात्र सिद्धि में पुरुषार्थ चतुष्टय कहा गया है।

विनियोग: ॐ अस्य श्रीतारातकारादिसहस्रनामस्तोत्रस्य वसिष्ठऋषिः अनुष्टुप्छन्दः तारादेवता सर्वेष्टसिद्धये पाठे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास: ॐ वसिष्ठऋषये नमः शिरसि १। अनुष्टुप्छन्दसे नमः मुखे २। तारादेवतायै नमो हृदि ३। विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ४। इति ऋष्यादिन्यासः

हृदयादिषडङ्गन्यासः ॐ ह्रां हृदयाय नमः १। ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा २। ॐ ह्रूं शिखायै वषट् ३। ॐ ह्रैं कवचाय हुं ४। ॐ ह्रौं नेत्रत्रयाय वौषट् ५। ॐ ह्रः अस्त्राय फट् ६। इति हृदयादिषडङ्गन्यासः।

करन्यास : ॐ ह्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः १। ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः २। ॐ ह्रूं मध्यमाभ्यां नमः ३। ॐ ह्रैं अनामिकाभ्यां नमः ४। ॐ ह्रौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५। ॐ ह्रः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ६। इति करन्यासः।

अथ ध्यानम् :

प्रत्यालीढपदार्पितांघ्रिशवहृद्घोराट्टहासा परा खड्गेन्दीवरकर्त्रिखर्परभुजा हुंकारबीजोद्भवा। खर्वा नीलविशालपिङ्गलजटाजूटैकनागैर्युता जाड्यं न्यस्य कपालकर्तृजगतां हन्त्युग्रतारा स्वयम्।

इति ध्यात्वा स्तोत्रं पठेत्।

इससे ध्यान करके स्तोत्र का पाठ करे :

तारा तारादिपञ्चार्णा तारान्यावेदवीर्यजा। तारा तारहितावर्णा ताराद्याताररूपिणी॥११॥ ताराात्रिसमुत्पन्ना तारारात्रिवरोद्यता। तारारात्रिजपासक्ता तारारात्रिस्वरूपिणी॥२॥ ताराराज्ञीस्वसन्तुष्टा ताराराज्ञीवरप्रदा ताराराज्ञीस्वरूपा च ताराराज्ञीप्रसिद्धिदा॥१३॥ ताराहृत्पङ्कजागारा ताराहृत्पङ्कजापरा। ताराहृत्पङ्कजाधारा ताराहृत्पङ्कजातथा॥१४॥ तारेश्वरी च ताराभा तारागणस्वरूपिणी। तारागणसमाकीर्णा तारागणनिषेविता॥१५॥ तारा तारान्विता ताररत्नान्वितविभूषणा। तारागणरणासन्ना ताराकृत्यप्रपूजिता॥१६॥ तारागणकृताहारा तारागणकृताश्रया। तारागणकृतागारा तारागणनतत्परा॥१७॥ तारागुणगणाकीर्णा तारागुणगणप्रदा। तारागुणगणासक्ता तारागुणगणालया॥१८॥ तारेश्वरी तारापूज्या ताराजप्या तु तारणा। तारमुख्या तु ताराख्या तारदक्षा तु तारिणी॥१९॥ तारगम्या तु तारस्था तारामृत तरङ्गिणी। तारभव्या तु तारार्णा तारहव्या तु तारिणी॥२०॥ तारका तारकांतस्था तारकाराशिभूषणा। तारकाहारशोभाढ्या तारकावेष्टिताङ्गणा॥२१॥ तारकाहंसकाकीर्णा तारकाकृतभूषणा। तारकाङ्गदशोभाङ्गी तारकाश्रितकङ्कणा॥२२॥ तारकाञ्चितकाञ्ची च तारकान्वितभक्षणा। तारकाचित्रवसना तारकासनमण्डला॥२३॥ तारकाकीर्णमुकुटा तारकाश्रितकुण्डला। तारकान्वितताटङ्कयुग्मगण्डस्थलोज्ज्वला॥२४॥ तारकाश्रितपादाब्जा तारकावरदायिका। तारकादत्तहृदया तारकाश्रितसायका॥२५॥ तारकान्यासकुशला तारकान्यासविग्रहा। तारकान्याससन्तुष्टा तारकान्याससिद्धिदा॥२६॥ तारकान्यासनिलया तारकान्यासपूजिता। तारकान्याससंहृष्टा तारकान्याससिद्धिदा॥२७॥ तारकान्याससंमग्ना तारकान्यासवासिनी। तारकान्याससम्पूर्णा मन्त्रसिद्धिविधायिनी॥२८॥ तारकोपासकप्राणा तारकोपासकप्रिया। तारकोपासकासाध्या तारकोपासकेष्टदा॥२९॥ ताराकोपासकासक्ता तारकोपासकार्थिनी। तारकोपासकाराध्या तारकोपासकाश्रया॥३०॥ तारकासुरसन्तुष्टा तारकासुरपूजिता। तारकासुरनिर्माणकर्त्री तारकवन्दिता॥३१॥ तारकासुरसम्मान्या तारकासुरमानदा। तारक-ासुरसंसिद्धा तारकासुरदेवता॥३२॥ तारकासुरदेहस्था तारकासुरस्वर्गदा। तारकासुरसंसृष्टा तारकासुरगर्वदा॥३३॥ तारकासुरसंहन्त्री तारकासुरमर्दिनी। तारकासुरसंग्रामनर्त्तकी तारकापरा॥३४॥ तारकासुरसंग्रामतारिणी तारकारिभृत्। तारकासुरसंग्रामकबन्धवृन्दवन्दिता॥३५॥ तारकारिप्रसूस्तारकारिमाता तुकारिका। तारकारिमनोहारिवस्त्रभूषानुशासिका॥३६॥

तारकारिविधात्री च तारकारिनिषेविता। तारकारिवचस्तुष्टा तारकारिसुशिक्षिता ॥३७॥ तारकारिसुसन्तुष्टा तारकारिविभूषिता। तारकारिकृतोत्सङ्गा तारकारिप्रहर्षदा ॥३८॥ तमः सम्पूर्णसर्वाङ्गी तमोलिप्तकलेवरा। तमोव्याप्तस्थलासङ्गा तमःपटलसन्निभा ॥३९॥ तमोहन्त्री तमःकर्त्री तमःसञ्चारकारिणी। तमोगात्री तमोदात्री तमःपात्री तमोपहा ॥४०॥ तमोराशेः पूर्णशशिस्तमोराशि विनाशिनी। तमोराशिकृतध्वंसी तमोराशिभयङ्करी ॥४१॥ तमोगुणप्रसन्नास्या तमोगुणसुसिद्धिदा। तमोगुणोक्तमार्गस्था तमोगुणविराजिता ॥४२॥ तमोगुणस्तुतिपरा तमोगुणविवर्द्धिनी। तमोगुणाश्रितपरा तमोगुणविनाशिनी ॥४३॥ तमोगुणक्षयकरी तमोगुणकलेवरा। तमोगुणध्वंसतुष्टा तमःपारे प्रतिष्ठिता ॥४४॥ तमोभवभवप्रीता तमोभवभवप्रिया। तमोभवभवश्रद्धा तमोभवभवाश्रया ॥४५॥ तमोभवभवप्राणा तमोभवभवार्चिता। तमोभवभवप्रीत्यालीढकुम्भस्थलस्थिता ॥४६॥ तपस्विवृन्दसन्तुष्टा तपस्विवृन्दपुष्टिदा। तपस्विवृन्दसंस्तुत्या तपस्विवृन्दवन्दिता ॥४७॥ तपस्विवृन्दसम्पन्ना तपस्विवृन्दहर्षदा। तपस्विवृन्दसम्पूज्या तपस्विवृन्दभूषिता ॥४८॥ तपस्विचित्ततल्पस्था तपस्विचित्तमध्यगा। तपस्विचित्तचित्तार्हा तपस्विचित्तहारिणी ॥४९॥ तपस्विकल्पवल्याभा तपस्विकल्पपादपा। तपस्विकामधेनुश्च तपस्विकामपूर्तिदा ॥५०॥ तपस्वित्राणनिरता तपस्विगृहसंस्थिता। तपस्विगृहराज्यश्रीस्तपस्विराज्यदायिका ॥५१॥ तपस्विमानसाराध्या तपस्विमानदायिका। तपस्वितापसंहर्त्री तपस्वितापशान्तिकृत् ॥५२॥ तपस्विसिद्धिविद्या च तपस्विमन्त्रसिद्धिकृत्। तपस्विमन्त्रतन्त्रेशी तपस्विमन्त्ररूपिणी ॥५३॥ तपस्विमन्त्रनिपुणा तपस्विकर्मकारिणी। तपस्विकर्मसम्भवा तपस्विकर्मसाक्षिणी ॥५४॥ तपस्सेव्या तपोभव्या तपोभाव्या तपस्विनी। तपोवश्या तपोगम्या तपोगेहनिवासिनी ॥५५॥ तपोधन्या तपोमान्या तपःकन्या तपोवृता। तपस्तथ्या तपोगोप्या तपोजप्या तपोनृता ॥५६॥ तपस्साध्या तपोराध्या तपोवन्द्या तपोमयी। तपस्सन्ध्या तपोवन्ध्या तपस्सान्निध्यकारिणी ॥५७॥ तपोधेया तपोज्ञेया तपस्तप्ता तपोबला। तपोलेया तपोदेया तपस्तत्त्वफलप्रदा ॥५८॥ तपोविघ्नवरघ्नी च तपोविघ्नविनाशिनी। तपोविघ्नचयध्वंशी तपोविघ्नभयङ्करी ॥५९॥ तपोभूमिवरप्राणा तपोभूमिपतिस्तुता। तपोभूमिपतिध्येया तपोभूमिपतीष्टदा ॥६०॥ तपोवनकुरङ्गस्था तपोवनविनाशिनी। तपोवनगतिप्रीता तपोवनविहारिणी ॥६१॥ तपोवनफलासक्ता तपोवनफलप्रदा। तपोवनसुसाध्या च तपोवनसुसिद्धिदा ॥६२॥ तपोवनसुसेव्या च तपोवननिवासिनी। तपोधनसुसंसेव्या तपोधनसुसाधिता ॥६३॥ तपोधनसुसंलीना तपोधनमनोमयी। तपोधननमस्कारा तपोधनविमुक्तिदा ॥६४॥ तपोधनधनासाध्या तपोधनधनात्मिका। तपोधनधनाराध्या तपोधनफलप्रदा ॥६५॥ तपोधनधनाढ्या च तपोधनधनेश्वरी। तपोधनधनप्रीता तपोधनधनालया ॥६६॥ तपोधनजनाकीर्णा तपोधनजनाश्रया। तपोधनजनाराध्या तपोधनजनप्रसूः ॥६७॥ तपोधनजनप्राणा तपोधनजनेष्टदा। तपोधनजनासाध्या तपोधनजनेश्वरी ॥६८॥ तरुणासृक्प्रपानार्ता तरुणासृक्प्रतर्पिता। तरुणासृक्समुद्रस्था तरुणासृक्प्रहर्षदा ॥६९॥ तरुणासृक्सुसन्तुष्टा तरुणासृग्विलेपिता। तरुणासृङ्नदीप्राणा तरुणासृग्विभूषणा ॥७०॥ तरुणैणबलिप्रीता तरुणैणबलिप्रिया। तरुणैणबलिप्राणा तरुणैणबलीष्टदा ॥७१॥ तरुणाजबलिप्रीता तरुणाजबलिप्रिया। तरुणाजबलिघ्राणा

तरुणाजबलिप्रभुक् ॥७२॥ तरुणादित्यसङ्काशा तरुणादित्यविग्रहा। तरुणादित्यरुचिरा तरुणादित्यनिर्मला ॥७३॥ तरुणादित्यनिलया तरुणादित्यमण्डला। तरुणादित्यललिता तरुणादित्यकुण्डला ॥७४॥ तरुणार्कसमज्योत्स्ना तरुणार्कसमप्रभा। तरुणार्कप्रतीकाशा तरुणार्कप्रवर्द्धिता ॥७५॥ तरुणा तरुणनेत्रा च तरुणारुणलोचना। तरुणातरुणगात्रा च तरुणातरुणभूषणा ॥७६॥ तरुणीदत्तसंकेता तरुणीदत्तभूषणा। तरुणीगणसन्तुष्टा तरुणी तरुणीमणिः ॥७७॥ तरुणीमणिसंसेव्या तरुणीमणिवन्दिता। तरुणीमणिसन्तुष्टा तरुणीमणिपूजिता ॥७८॥ तरुणीवृन्दसंवन्द्या तरुणीवृन्दवन्दिता। तरुणीवृन्दसंस्तुत्या तरुणीवृन्दमानदा ॥७९॥ तरुणीवृन्दमध्यस्था तरुणीवृन्दवेष्टिता। तरुणीवृन्दसम्प्रीता तरुणीवृन्दभूषिता ॥८०॥ तरुणीजयसंसिद्धा तरुणीजयमोक्षदा। तरुणीपूजकासक्ता तरुणीपूजकार्थिनी ॥८१॥ तरुणीपूजकश्रीदा तरुणीपूजकार्तिहा। तरुणीपूजकप्राणा तरुणीनिन्दकार्त्तिदा ॥८२॥ तरुणीकोटिनिलया तरुणीकोटिविग्रहा। तरुणीकोटिमध्यस्था तरुणीकोटिवेष्टिता ॥८३॥ तरुणीकोटिदुस्साध्या तरुणीकोटिविग्रहा। तरुणीकोटिरुचिरा तरुणी तरुणीश्वरी ॥८४॥ तरुणीमणिहाराढ्या। तरुणीमणिकुण्डला। तरुणीमणिसन्तुष्टा तरुणीमणिमण्डिता ॥८५॥ तरुणीसरणिप्रीता तरुणीसरणीरता। तरुणीसरणिस्थाना तरुणीसरणीरता ॥८६॥ तरणीमण्डलश्रीदा तरणीमण्डलेश्वरी। तरणीमण्डलश्रद्धा तरणीमण्डलस्थिता ॥८७॥ तरणीमण्डलार्घ्याढ्या तरणीमण्डलार्चिता। तरणीमण्डलध्येया तरणीभवसागरा ॥८८॥ तरणीकरणासक्ता तरणीतक्षकार्चिता। तरणीतक्षकश्रीदा तरणीतक्षकार्थिनी ॥८९॥ तरणीतरणशीला च तरीतरणतारिणी। तरीतरणसम्वेद्या तरीतरणकारिणी ॥९०॥ तरुरूपा तरुरूपस्था तरुस्तरुलतामयी। तरुरूपा तरुस्था च तरुमध्यनिवासिनी ॥९१॥ तप्तकाञ्चनगेहस्था तप्ताकाञ्चनभूमिका। तप्तकाञ्चनप्राकारा तप्तकाञ्चनपादुका ॥९२॥ तप्तकाञ्चनदीप्ताङ्गी तप्तकाञ्चनसन्निभा। तप्तकाञ्चनगौराङ्गी तप्तकाञ्चनमञ्चगा ॥९३॥ तप्तकाञ्चनवस्त्राढ्या तप्तकाञ्चनरूपिणी। तप्तकाञ्चनमध्यस्था तप्तकाञ्चनकारिणी ॥९४॥ तप्तकाञ्चनमासार्च्या तप्तकाञ्चनपात्रभुक्। तप्तकाञ्चनशैलस्था तप्तकाञ्चनकुण्डला ॥९५॥ तप्तकाञ्चनक्षेत्राढ्या तप्तकाञ्चनदण्डधृक्। तप्तकाञ्चनभूषाढ्या तप्तकाञ्चनदानदा ॥९६॥ तप्तकाञ्चनदेशेशी तप्तकाञ्चनचापधृक्। तप्तकाञ्चनतूणाढ्या तप्तकाञ्चनबाणभृत् ॥९७॥ तलातलविधात्री च तलातलविधायिनी। तलातलस्वरूपेशी तलातलविहारिणी ॥९८॥ तलातलजनासाध्या तलातलजनेश्वरी। तलातलजनाराध्या तलातलजनार्थदा ॥९९॥ तलातलजयाभाक्षी तलातलजचञ्चला। तलातलजरलाढ्या तलातलजदेवता ॥१००॥ तटिनीस्थानरसिका तटिनी तटवासिनी। तटिनी तटिनीतरिगामिनी तटिनीप्रिया ॥१०१॥ तटिनीप्लवनप्रीता तटिनीप्लवनोद्यता। तटिनीप्लवनश्लाघ्या तटिनीप्लवनार्थदा ॥१०२॥ तटलास्या तटस्थाना तटेशी तटवासिनी। तटपूज्या तटाराध्या तटरोममुखार्थिनी ॥१०३॥ तटजा तटरूपा च तटस्था तटचञ्चला। तटसन्निधिगेहस्था सहिता तटशायिनी ॥१०४॥ तरङ्गिणी तरङ्गाभा तरङ्गायतलोचना। तरङ्गसमदुर्द्धर्षी तरङ्गसमचञ्चला ॥१०५॥ तरङ्गसमदीर्घाङ्गी तरङ्गसमवर्द्धिता। तरङ्गसम-सम्वृद्धिस्तरङ्गसमनिर्मला ॥१०६॥ तडागमध्यनिलया

तडागमध्यसम्भवा। तडागरचनश्लाघ्या तडागरचनोद्यता ॥१०७॥ तडागकुमुदामोदी तडागेशी तडागिनी। तडागनीरसंस्नाता तडागनीरनिर्मला ॥१०८॥ तडागकमलागारा तडागकमलालया। तडागकमलान्तस्था तडागकमलोद्यता ॥१०९॥ तडागकमलाङ्गी च तडागकमलानना। तडागकमलप्राणा तडागकमलेक्षणा ॥११०॥ तडागरक्तपद्मस्था तडागश्वेतपद्मगा। तडागनीलपद्माभा तडागनीलपद्मभृत् ॥१११॥ तनुस्तनुगता तन्वी तन्वङ्गी तनुधारिणी। तनुरूपा तनुगता तनुधृक्तनुरूपिणी ॥११२॥ तनुस्था तनुमध्याङ्गी तनुकृत्तनुमङ्गला। तनुसेव्या तु तनुजा तनुजा तनुसम्भवा ॥११३॥ तनुभृत्तनुसम्भूता तनुदा तनुकारिणी। तनुभृत्तनुसंहन्त्री तनुसञ्चारकारिणी ॥११४॥ तथ्यवाक तथ्यवचना तथ्यकृत्तथ्यवादिनी। तथ्यभृत्तथ्यचरिता तथ्यधर्मानुवर्तिनी ॥११५॥ तथ्यभुक्तथ्यगमना तथ्यभक्तिवरप्रदा। तथ्यनीचेश्वरी तथ्यचित्ताचरासुसिद्धिदा ॥११६॥ तर्क्यातर्क्यस्वभावा च तर्कदा या तु तर्ककृत्। तर्काध्यापनमध्यस्था तर्काध्यापनकारिणी ॥११७॥ तर्काध्यापनसन्तुष्टा तर्काध्यापनरूपिणी। तर्काध्यापनसंशीला तर्कार्थप्रतिपादिता ॥११८॥ तर्काध्यापनसंतृप्ता तर्कार्थप्रतिपादिका। तर्कवादाश्रितपदा तर्कवादविवर्द्धिनी ॥११९॥ तर्कवादैकनिपुणा तर्कवादप्रचारिणी। तमालदलश्यामाङ्गी तमालदलमालिनी ॥१२०॥ तमालवनसंकेता तमालपुष्पपूजिता। तगरीतगराराद्ध्या तगरार्चितपादुका ॥१२१॥ तगरस्रक्सुसन्तुष्टा तगरस्रग्विराजिता। तगराहुतिसन्तुष्टा तगराहुतिकीर्तिदा ॥१२२॥ तगराहुतिसंसिद्धा तगराहुतिमानदा। तडित्तडिल्लताकारा तडिच्चञ्चललोचना ॥१२३॥ तडिल्लता तडित्तन्वी तडिद्दीप्ता तडित्प्रभा। तद्रूपा तत्स्वरूपेशी तन्मयी तत्त्वरूपिणी ॥१२४॥ तत्स्थानदाननिरता तत्कर्मफलदायिनी। तत्त्वकृत्तत्वदा तत्त्वा तत्त्ववित्तत्त्वतर्पिता ॥१२५॥ तत्त्वार्च्या तत्त्वपूज्या च तत्त्वार्घ्या तत्त्वरूपिणी। तत्त्वज्ञानप्रदानेशी तत्त्वज्ञानसुमोक्षदा ॥१२६॥ त्वरितात्वरितप्रीता त्वरितार्त्तिविनाशिनी। त्वरितासवसन्तुष्टा त्वरितासवतर्पिता ॥१२७॥ त्वग्वस्त्रा त्वग्परीधाना तरला तरलेक्षणा। तरक्षुचर्मवसना तरक्षुत्वग्विभूषणाा ॥१२८॥ तरक्षुस्तरक्षुप्राणा तरक्षुपृष्ठगामिनी। तरक्षुपृष्ठसंस्थाना तरक्षुपृष्ठवासिनी ॥१२९॥ तर्पितोदैस्तर्पणाशा तर्पणासक्तमानसा। तर्पणानन्दहृदया तर्पणाधिपतिस्तुतिः ॥१३०॥ त्रयीमयी त्रयीसेव्या त्रयीपूज्या त्रयीकथा। त्रयीभव्या त्रयीभाव्या त्रयीहव्या त्रयीयुता ॥१३१॥ त्र्यक्षरी त्र्यक्षरेशानी त्र्यक्षरीशीघ्रसिद्धिदा। त्र्यक्षरेशी त्र्यक्षरीस्था त्र्यक्षरीपुरुषास्पदा ॥१३२॥ तपना तपनेष्टा च तपस्तपनकन्यका। तपनांशुसमासह्या तपनकोटिकान्तिकृत् ॥१३३॥ तपनीया तल्पगता तल्पातल्पविधायिनी। तल्पकृत्तल्पगा तल्पदात्री तल्पतलाश्रया ॥१३४॥ तपनीयतलारात्री तपनीयांशुप्रार्थिनी। तपनीयप्रदा तप्ता तपनीयाद्रिसंस्थिता ॥१३५॥ तल्पेशी तल्पदा तल्पसंस्थिता तल्पवल्लभा। तल्पप्रिया तल्परता तल्पनिर्माणकारिणी ॥१३६॥ तरसापूजनासक्ता तरसावरदायिनी। तरसासिद्धिसन्धात्री तरसामोक्षदायिनी ॥१३७॥ तापसी तापसाराध्या तापसार्तिविनाशिनी। तापसार्ता तापसश्रीस्तापसप्रियवादिनी ॥१३८॥ तापसानन्दहृदया तापसानन्ददायिनी। तपसाश्रितपादाब्जा तापसासक्तमानसा ॥१३९॥ तामसी तामसीपूज्या तामसीप्रणयोत्सुका। तामसी तामसीसीता तामसीशीघ्रसिद्धिदा ॥१४०॥ तालेशी तालभुक्तालदात्री तालोपमस्तनी तालवृक्षस्थिता तालवृक्षजा

तालरूपिणी ।।१४१।। तार्क्ष्या तार्क्ष्यसमारूढा तार्क्ष्येशी तार्क्ष्यपूजिता। तार्क्ष्येश्वरी तार्क्ष्यमाता तार्क्ष्येशीवरदायिनी ।।१४२ ।। तापी तु तपनी तापसंहन्त्री तापनाशिनी। तापदात्री तापकर्त्री तापविध्वंसकारिणी ।।१४३ ।। त्रासकर्त्री त्रासदात्री त्रासहर्त्री च त्रासहा। त्रासिता त्रासरहिता त्रासनिर्मूलकारिणी ।।१४४।। त्राणकृत् त्राणसंशीला तानेशी तानदायिनी। तानगानरता तानकारिणी तानगायिनी ।।१४५ ।। तारुण्यामृतसम्पूर्णा तारुण्यामृतवारिधिः। तारुण्यामृतसन्तुष्टा तारुण्यामृततर्पिता ।।७४६ ।। तारुण्यामृतपूर्णाङ्गी तारुण्यामृतविग्रहा। तारुण्यगुणसम्पन्ना तारुण्योक्तिविशारदा ।।१४७।। ताम्बूली ताम्बूलेशानी ताम्बूलचर्वणोद्यता। ताम्बूलपूरितास्या च ताम्बूलारुणिताधरा ।।१४८।। ताटङ्करत्नविख्यातिस्ताटङ्करत्नभूषिणी। ताटङ्करत्नमध्यस्था ताटङ्कद्वयभूषिता ।।१४९।। तिथीशा तिथि सम्पूज्या तिथिस्था तिथिरूपिणी। त्रितिथिवासिनीसेव्या तिथीशवरदायिनी ।।१५०।। तिलोत्तमादिकाराध्या तिलोत्तमादिकप्रभा। तिलोत्तमा तिलप्रेक्ष्या तिलाराध्या तिलार्चिता ।।१५१ ।। तिलभक् तिलसन्दात्री तिलतुष्टा तिलालया। तिलदा तिलसङ्काशा तिलतैलविधायिनी ।।१५२ ।। तिलतैलोपलिप्तांगी तिलतैलसुगन्धिनी। तिलज्यहोमसन्तुष्टा तिलज्यहोमसिद्धिदा ।।१५३।। तिलपुष्पाञ्जलिप्रीता तिलपुष्पाञ्जलिप्रिया। तिलपुष्पाञ्जलिश्रेष्ठा तिलपुष्पाघनाशिनी ।।१५४।। तिलकाश्रितसिन्दूरा तिलकाङ्कितचन्दना। तिलकाहृतकस्तूरी तिलकामोदमोहिनी ।।१५५।। त्रिगुणा त्रिगुणाकारा त्रिगुणान्वितविग्रहा। त्रिगुणाकारविख्याता त्रिमूर्तिस्त्रिगुणात्मिका ।।१५६।। त्रिशिरा त्रिपुरेशानी त्रिपुरा त्रिपुरेश्वरी। त्रिपुरेशी त्रिलोकस्था त्रिपुरी त्रिपुराम्बिका ।।१५७।। त्रिपुरारिसमाराध्या त्रिपुरारिवरप्रदा। त्रिपुरारिशिरोभूषा त्रिपुरारिवरप्रदा ।।१५८।। त्रिपुरारीष्टसन्दात्री त्रिपुरारीष्टदेवता। त्रिपुरारिकृतार्द्धाङ्गी त्रिपुरारिविलासिनी ।।१५९।। त्रिपुरासुरसंहर्त्री त्रिपुरासुरमर्दिनी। त्रिपुरासुरसंसेव्या त्रिपुरासुरवर्यपा ।।१६०।। त्रिकुटा त्रिकुटाराध्या त्रिकूटार्चितविग्रहा। त्रिकूटाचलमध्यस्था त्रिकूटाचलवासिनी ।।१६१।। त्रिकूटाचलसञ्जाता त्रिकूटाचलनिर्गता। त्रिकूटा त्रिजटेशानी त्रिजटावरदायिनी ।।१६२ ।। त्रिनेत्रेशी त्रिनेत्रा च त्रिनेत्रवरवर्णिनी। त्रिवली त्रिवलीयुक्ता त्रिशूलवरधारिणी ।।१६३ ।। त्रिशूलेशी त्रिशुलीशी त्रिशूलभृत्त्रिशूलिनी। त्रिमनुस्त्रिमनूपास्या त्रिमनूपासकेश्वरी ।।१६४ ।। त्रिमनुजपसन्तुष्टा त्रिमनुस्तूर्णसिद्धिदा। त्रिमनुपूजनप्रीता त्रिमनुध्यानमोक्षदा ।।१६५।। त्रिविधा त्रिविधाभक्तिस्त्रिमता त्रिमतेश्वरी। त्रिभावस्था त्रिभावेशी त्रिभावपरिपूरिता ।।१६६।। त्रितत्त्वात्मा त्रितत्त्वेशी त्रितत्त्वज्ञा त्रितत्त्वधृक्। त्रितत्त्वाचमनप्रीता त्रितत्त्वाचमनेष्टदा ।।१६७ ।। त्रिकोणस्था त्रिकोणेशी त्रिकोणचक्रवासिनी। त्रिकोणचक्रमध्यस्था त्रिकोणबिन्दुरूपिणी ।।१६८ ।। त्रिकोणयन्त्रसंस्थाना त्रिकोणयन्त्ररूपिणी। त्रिकोणयन्त्रसम्पूज्या त्रिकोणयन्त्रसिद्धिदा ।।१६९ ।। त्रिवर्णाढ्या त्रिवर्णेशी त्रिवर्णोपास्यरूपिणी। त्रिवर्णस्था त्रिवर्णाढ्या त्रिवर्णावरदायिनी ।।१७०।। त्रिवर्णाद्या त्रिवर्णार्च्या त्रिवर्गफलदायिनी। त्रिवर्गाढ्या त्रिवर्गेशी त्रिवर्गाद्यफलप्रदा ।।१७१।। त्रिसन्ध्यार्च्या त्रिसन्ध्येशी त्रिसन्ध्याराधनेष्टदा। त्रिसन्ध्यार्चनसन्तुष्टा त्रिसन्ध्याजपमोक्षदा ।।१७२ ।। त्रिपदाराधितप्रदा त्रिपदा त्रिपदेश्वरी। त्रिपदाप्रतिपाद्येशी त्रिपदाप्रतिपादिका ।।१७३।। त्रिशक्तिश्च त्रिशक्तीशी त्रिशक्तेष्टफलप्रदा। त्रिशक्तेष्टा त्रिशक्तीष्टा त्रिशक्तिपरिवेष्टिता ।।१७४।। त्रिवेणी च त्रिवेणीस्त्री त्रिवेणीमाधवार्चिता। त्रिवेणीजलसन्तुष्टा

त्रिवेणीस्नानपुण्यदा ।।१७५।। त्रिवेणीजलसंस्नाता त्रिवेणीजलरूपिणी। त्रिवेणीजलपूताङ्गी त्रिवेणीजलपूजिता ॥१७६ ॥ त्रिनाडीस्था त्रिनाडीशी त्रिनाडीमध्यगामिनी। त्रिनाडीसन्ध्यसञ्छेद्या त्रिनाडी च त्रिकोटिनी ।।१७७।। त्रिपञ्चाशत्त्रिरेखा च त्रिशक्तिपथगामिनी। त्रिपथस्था त्रिलोकेशी त्रिकोटिकुलमोक्षदा ।।१७८ ।। त्रिरामेशी त्रिरामार्च्या त्रिरामवरदायिनी। त्रिदशाश्रितपादाब्जा त्रिदशालयचञ्चला ।।१७९ ।। त्रिदशा त्रिदशप्रार्थ्या त्रिदशाशुवरप्रदा। त्रिदशैश्वर्यसम्पन्ना त्रिदशेश्वरसेविता ।।१८०।। त्रियामार्च्या त्रियामेशी त्रियामानन्तसिद्धिदा । त्रियामेशाधिकज्योत्स्ना त्रियामेशाधिकानना ।।१८१ ।। त्रियामानाथवत्सौम्या त्रियामानाथभूषणा। त्रियामानाथलावण्या रत्नकोटियुतानना ।।१८२ ।। त्रिकालस्था त्रिकालज्ञा त्रिकालज्ञत्वकारिणी । त्रिकालेशी त्रिकालार्च्या त्रिकालज्ञत्वदायिनी ।।१८३।। तीरभुक्तीरगा तीरसरिता तीरवासिनी। तीरभुग्देशसंजाता तीरभुग्देशसंस्थिता ।।१८४।। तिग्मा तिग्मांशुसंकाशा तिग्मांशुक्रोडसंस्थिता। तिग्मांशुकोटिदीप्ताङ्गी तिग्मांशुकोटिविग्रहा ।।१८५।। तीक्ष्णा तीक्ष्णतरा तीक्ष्णमहिषासुरमर्दिनी। तीक्ष्णकर्त्रीलसत्पाणिस्तीक्ष्णासिवरधारिणी ।।१८६।। तीव्रा तीव्रगतिस्तीव्रासुरसङ्घविनाशिनी। तीव्राष्टनागाभरणा तीव्रमुण्डविभूषणा ।।१८७ ।। तीर्थात्मिका तीर्थमयी तीर्थेशी तीर्थपूजिता। तीर्थराजेश्वरी तीर्थफलदा तीर्थदानदा ।।१८८।। तुमुली तुमुलप्राज्ञी तुमुलासुरघातिनी। तुमुलक्षतजप्रीता तुमुलांगणनर्तकी ।।१८९।। तुरगी तुरगारूढा तुरङ्गपृष्ठगामिनी। तुरङ्गगमनाह्लादा तुरंगवेगगामिनी ।।१९०।। तुरीया तुलना तुल्या तुल्यवृत्तिस्तु तुल्यकृत्। तुलनेशी तुलाराज्ञी तुलाराज्ञीत्वसूक्ष्मवित् ।।१९१ ।। तुम्बिका तुम्बिकापात्रभोजना तुम्बिकार्थिनी। तुलसी तुलसीवर्या तुलजा तुलजेश्वरी ।।१९२।। तुषाग्निव्रतसन्तुष्टा तुषाग्निस्तुषराशिकृत्। तुषारकरशीतांगी तुषारकरपूर्तिकृत् ।।१९३।। तुषाराद्रिस्तुषाराद्रिसुता तुहिनदीधितिः। तुहिनाचलकन्या च तुहिनाचलवासिनी ।।१९४ ।। तुर्यवर्गेश्वरी तुर्यवर्गदा तुर्यवेददा। तुर्यवर्यात्मिका तुर्यतुर्येश्वरस्वरूपिणी ।।१९५ ।। तुष्टिदा तुष्टिकृत्तुष्टिस्तूणीरद्वयपृष्ठधृक्। तुम्बुराज्ञानसन्तुष्ट तुष्टसंसिद्धिदायिनी ।।१९६ ।। तूर्णाराज्यप्रदा तूर्णगद्गदा तूर्णपद्यदा। तूर्णपाण्डित्यसन्दात्री तूर्णपूर्णबलप्रदा ।।१९७।। तृतीया च तृतीयेशी तृतीयातिथिपूजिता। तृतीया चन्द्रचूडेशी तृतीयाचन्द्रभूषणा ।।१९८। तृप्तिस्तृप्तिकरी तृप्ता तृष्णा तृष्णाविवर्द्धिनी। तृष्णापूर्णकरी तृष्णानाशिनी तृषिता तृषा ।।१९९।। त्रेतासंसाधिता त्रेता त्रेतायुगफलप्रदा। त्रैलोक्यपूज्या त्रैलोक्यदात्री त्रैलोक्यसिद्धिदा ।।२००।। त्रैलोक्येश्वरतादात्री त्रैलोक्यपरमेश्वरी। त्रैलोक्यमोहनेशानी त्रैलोक्यराज्यदायिनी ।।२०१।। तैत्रिशाखेश्वरी तैत्रिशाखा तैत्रविवेकदा। तोरणान्वितगेहस्था तोरणासक्तमानसा ।।२०२।। तोलकास्वर्णसंदात्री तोलकास्वर्णकङ्कणा। तोमरायुधरूपा च तोमरायुधधारिणी ।।२०३।। तौर्यत्रिकेश्वरी तौर्यत्रिकी तौर्यत्रिकोत्सुकी। तन्त्रकृत्तन्त्रवत्सूक्ष्मा तन्त्रमन्त्रस्वरूपिणी ।।२०४।। तन्त्रकृत्तन्त्रसम्पूज्या तन्त्रेशी तन्त्रसम्मता । तन्त्रज्ञा तन्त्रवित्तन्त्रसाध्या तन्त्रस्वरूपिणी ।।२०५।। तन्त्रस्था तन्त्रजा तन्त्री तन्त्रभृत्तन्त्रमन्त्रदा। तन्त्राद्या तन्त्रगा तन्त्रा तन्त्रार्च्या तन्त्रसिद्धिदा ।।२०६ ।।

इति ते कथितं दिव्यं क्रतुकोटिफलप्रदम् । नाम्नां सहस्रं तारायास्तकाराद्यं सुगोपितम् ॥२०७ ।। दानं यज्ञास्तपस्तीर्थं व्रतं चानशनादिकम्। एकैकनामसम्पुण्यं सन्ध्यासुगदितं मया ।।२०८।। गुरौ

देवे तथा मन्त्रे यस्य स्यान्निश्चला मतिः। तस्यैव स्तोत्रपाठेऽस्मिन्सम्भवेदधिकारिता ॥२०९॥ महाचीनक्रमाभिन्नषोढान्यस्तकलेवरः। क्रमदीक्षान्वितो मन्त्री पठेदेतन्नचान्यथा ॥२१०॥ गन्धपुष्पादिभिर्द्रव्यैर्मकारैः पञ्चभिर्द्विजः। सम्पूज्य तारां विधिवत्पठेदेतदनन्यधीः ॥२११॥ अष्टम्यां च चतुर्दश्यां संक्रान्तौ रविवासरे। शनिभौमदिने रात्रौ ग्रहणे चन्द्रसूर्ययोः ॥२१२॥ ताराराात्री कालरात्री मोहरात्री विशेषतः। पठनान्मन्त्रसिद्धि : स्यात्सर्वज्ञत्वं प्रजायते ॥२१३॥ श्मशाने प्रान्तरे रम्ये शून्यागारे विशेषतः। देवागारे गिरौ वापि स्तवपारायणं चरेत् ॥२१४॥ ब्रह्महत्या सुरापानं स्तेयं स्त्रीगमनादिकम्। गुरुतल्पे तथा चान्यत्पातकन्नश्यति ध्रुवम् ॥२१५॥ लतामध्यगतो मन्त्री श्रद्धया चार्चयेद्यदि। आकर्षयेत्तदा रम्भां मेनामपि तथोर्वशीम् ॥२१६॥ संग्रामसमये वीरस्तारा साम्राज्यकीर्त्तनात्। चतुरंगचयं जित्वा सर्वसाम्राज्यभाग्भवेत् ॥२१७॥ निशार्द्धे पूजनान्ते च प्रतिनाम्ना प्रपूजयेत्। एकैकं करवीराद्यैर्मन्दारैर्नीलवारिजैः ॥२१८॥ गद्यपद्यमयी वाणी भूभोज्या च प्रवर्तते। पाण्डित्यं सर्वशास्त्रेषु वादी त्रस्यति दर्शनात् ॥२१९॥ वह्निजापान्तकैरेतैस्ताराद्यैः प्रतिनामभिः। राजन्यं सर्वराजेषु परकायप्रवेशनम् ॥२२०॥ अन्तर्धानं खेचरत्वं बहुकायप्रकाशनम्। गुटिका पादुका पद्मावती मधुमती तथा ॥२२१॥ रसं रसायना : सर्वाः सिद्धयः समुपस्थिताः। कर्पूरागरुकस्तूरीचन्दनैः संयुतैर्जलैः ॥२२२॥ मूलसम्पुटितेनैव प्रतिनाम्ना प्रपूजयेत्। यक्षराक्षसगन्धर्वविद्याधर महोरगाः ॥२२३॥ भूतप्रेतपिशाचाद्या डाकिनीशाकिनीगणाः। दुष्टभैरववेतालाः कुष्माण्डाः किन्नरीगणाः ॥२२४॥ भयभीताः पलायन्ते तेजसा साधकस्य च।

हे देवि ! यह मैंने करोड़ों यज्ञों का फल देने वाला दिव्य तारा का तकारादि गुप्त सहस्रनाम तुम्हें बताया है। दान, यज्ञ, तप तथा तीर्थ, व्रत तथा अनशन आदि एक-एक नाम का पुण्य मैंने सन्ध्याओं में कहा है। गुरु में, देव में तथा मन्त्र में जिसकी निश्चल मति होती है उसी का इस स्तोत्र पाठ में अधिकार है। महाचीन के क्रम के अनुसार छहः अंगों का न्यास करके क्रम से दीक्षा लिया हुआ साधक इस स्तोत्र का पाठ करे। इसके विपरीत न करे। ब्राह्मण गन्ध-पुष्प आदि द्रव्यों तथा पञ्चमकारों के साथ तारा की पूजा करके एकाग्रचित्त होकर विधिवत् तारा सहस्रनाम का पाठ करे। अष्टमी, चतुर्दशी, संक्रान्ति तथा रविवार के दिन, शनिवार तथा सोमवार के दिन रात्रि में तथा चन्द्र-सूर्य ग्रहण में, विशेष रूप से ताराात्रि में, कालरात्रि में तथा मोहरात्रि में इसके पाठ से मन्त्र की सिद्धि होती है तथा सर्वज्ञता प्राप्त होती है। श्मशान में, एकान्त में, रम्य शून्य घर में, विशेष रूप से देवालय में या पर्वत पर स्तोत्र का पारायण करे। ब्रह्महत्या, सुरापान, चोरी, स्त्रीगमन, गुरुतल्प, गमन तथा अन्य पातक भी निश्चित रूप से नष्ट हो जाते हैं। यदि साधक लताकुञ्ज में श्रद्धा से इसका पाठ करे तो वह रम्भा, मेनका और उर्वशी को भी आकृष्ट कर सकता है। संग्राम के समय तारासाम्राज्य के कीर्तन से वीर चतुरङ्गिणी शत्रुसेना को जीत लेता है और समस्त साम्राज्य का स्वामी हो जाता है। आधी रात को पूजा के बाद कनेर आदि, मदार तथा नील कमल के फूलों से एक-एक नाम की पूजा जो करता है उसकी भूमि का भोग करनेवाली गद्य-पद्यमयी वाणी प्रवृत्त हो जाती है; समस्त शास्त्रों में उसका पाण्डित्य हो जाता है और वादी दर्शन मात्र से भयभीत हो जाता है। प्रत्येक नाम के अन्त में वह्नि बीज (रं) लगाकर पूजा करने से सभी राजाओं के शरीर में प्रवेश करने की शक्ति प्राप्त हो जाती है। अन्तर्धान होना, आकाश गमन, अन्य शरीरों में अपने को प्रदर्शित करना, गुटिका, पादुका, पद्मावती, मधुमती, रस तथा रसायन ये सभी सिद्धियाँ उपस्थित होती हैं। कपूर, अगर, कस्तूरी तथा चन्दन को जल में पीसकर मूलमन्त्र से सम्पुटित प्रति नाम से पूजा करे तो यक्ष, राक्षस, गन्धर्व, विद्याधर, महोरग, भूत, प्रेत, पिशाच आदि, डाकिनी-शाकिनी के दल, दुष्ट भैरव, वैताल, कुष्माण्ड तथा किन्नरियाँ सभी साधक के तेज से भयभीत होकर भाग खड़े होते हैं।

मन्त्रज्ञाने समुत्पन्ने प्रतिनाम्ना विचारयेत् ॥२२५॥ मन्त्रसम्पुटितेनैव तस्य शान्तिर्भवेद्ध्रुवम्। ललिता वशमायान्ति दास्यतां यान्ति पार्थिवाः ॥२२६॥ अग्नयः शीततां यान्ति जापकस्य च भाषणात्। एकावर्तनमात्रेण राजभीतिनिवारणम् ॥२२७॥ वेलावर्तनमात्रेण पशुवृद्धिः प्रजायते। दशावृत्या धनप्राप्तिर्विंशत्या राज्यमाप्नुयात् ॥२२८॥ शतावृत्या गृहे तस्य चञ्चला निश्चला भवेत्। गङ्गाप्रवाहवद्वाणी प्रलापादपि जायते ॥२२९॥ पुत्र पौत्रान्वितो मन्त्री चिरञ्जीवी तु देववत्। शतद्वयावर्त्तनेन देववत्पूज्यते जनैः ॥२३०॥ शतपञ्चकमावर्त्य स भवेद्भैरवोपमः। सहस्रावर्तनेनैव मन्त्रस्तस्य स्वसिद्धिदः ॥२३१॥ तस्मिन्प्रवर्त्तते सर्वसिद्धिः सर्वार्थसाधिनी। पादुकाञ्चनवेतालापातालगमनादिकम् ॥२३२॥ विविधा यक्षिणीसिद्धिर्वाक्सिद्धिस्तस्य जायते। जशोषणं सागराणाञ्च धरायां भ्रमणं तथा ॥२३३॥ नवीनसृष्टिनिर्माणं सर्वं कर्तुं क्षमो भवेत्। अयुतावर्तनेनैव तारां पश्यति चक्षुषा ॥२३४॥ लक्षावर्तनमात्रेण तारापतिसमो भवेत्। न किञ्चिद्दुर्लभं तस्य जीवन्मुक्तो हि भूतले ॥२३५॥ कल्पान्ते न तु तत्पश्चात्तारासायुज्यमाप्नुयात्। यदि तारासमा विद्या नास्ति तारुण्यरूपिणी ॥२३६॥ न चैतत्सदृशं स्तोत्रं भवेद्ब्रह्माण्डमण्डले। वक्त्रकोटिसहस्रैस्तु जिह्वाकोटिशतैरपि ॥२३७॥ न शक्यते फलं वक्तुं मया कल्पशतैरपि। चुम्बके निन्दके दुष्टे पिशुने जीवहिंसके ॥२३८॥ सङ्गोप्यं स्तोत्रमे तत्तद्दर्शनेनैव कुत्र चित्। राज्यं देयं धनं देयं शिरो देयमथापि वा ॥२३९॥ न देयं स्तोत्रवर्यं तु मन्त्रादपि महोद्यतम्। अनुलोमविलोमाभ्यां मूलसम्पुटितं त्विदम् ॥२४०॥ लिखित्वा भूर्जपत्रादौ गन्धाष्टकपुरस्सरैः। धारयेद्दक्षिणे बाहौ कण्ठे वामभुजे तथा ॥२४१॥ तस्य सर्वार्थसिद्धिः स्याद्वह्निना नैव दह्यते। तद्गात्रं शस्त्रंसघैश्च भिद्यते न कदाचन ॥२४२॥ स भूमिवलये पुत्र विचरेद्भैरवोपमः। वन्ध्यापि लभते पुत्रं निर्धनो धनमाप्नुयात् ॥२४३॥ निर्विघ्नो लभते विद्यां तर्कव्याकरणादिकाम् ॥२४४॥ इति निगदितमस्यास्तादिनाम्नां सहस्रं वरदमनुनिधानं दिव्यसाम्राज्यसंज्ञम्। विधिहरिगिरिशादौ शक्तिदानैकदक्षं समविधि पठनीयं कालितारासमज्ञैः ॥२४५॥

इति श्रीब्रह्मयामले तारायास्तकारादिसहस्रनामस्तोत्रं सम्पूर्णम्।

मन्त्र का ज्ञान उत्पन्न होने पर प्रति नाम से विचार करे। मन्त्र सम्पुटित होने से ही निश्चित रूप से उसकी शांति होती है। ललित स्त्रियाँ वश में आ जाती हैं। राजे दास हो जाते हैं। साधक के जप से अग्नियाँ शान्त हो जाती हैं। एक बार पाठ से राजा का भय समाप्त हो जाता है। दो बार पाठ करने से पशुओं की वृद्धि होती है। दश बार पाठ करने से धनप्राप्ति होती है। बीस बार पाठ करने से राज्य प्राप्त होता है। सौ बार पाठ करने से उसके घर में लक्ष्मी निश्चल होकर निवास करती हैं। प्रलाप में भी उसकी वाणी गङ्गा प्रवाह के समान प्रकट होती है। साधक पुत्र-पौत्र से युक्त होकर देवता के समान चिरञ्जीवी होता है। दो सौ बार पाठ करने से देवताओं के समान वह लोगों द्वारा पूजा जाता है। पांच सौ बार पाठ करने से वह भैरव के समान हो जाता है। एक हजार बार पाठ करने से मन्त्र स्वयं सिद्धि देने वाला हो जाता है। उसके अन्दर समस्त अर्थो को सिद्ध करने वाली समस्त सिद्धियाँ प्रकट हो जाती हैं। पादुका, स्वर्ण, बेताल, पातालगमन आदि अनेक प्रकार की यक्षिणियों की सिद्धि तथा उसकी वाक्सिद्धि हो जाती है। समुद्रों का सुखाना, पृथिवी पर भ्रमण तथा नवीन सृष्टि निर्माण सब कुछ करने से समर्थ हो जाता है। दश हजार पाठ से तारा को साधक स्वयं अपनी आँखों से देखता है। एक लाख बार पाठ करने से साधक तारापति के समान हो जाता है। उसके लिए पृथिवी पर कुछ भी दुर्लभ नहीं होता। वह जीवन्मुक्त हो जाता है। महाप्रलय में वह तारा का सायुज्य प्राप्त करता है। तारा के समान तारुण्यरूपिणी दूसरी विद्या नहीं है और न इसके समान ब्रह्माण्ड मण्डल में कोई स्तोत्र

है। हजारों मुखों तथा हजारों जिह्वाओं से मैं सैकड़ों कल्पों में भी इनके फल को कहने में असमर्थ हूं। चुम्बक, निन्दक, दुष्ट, पिशुन तथा जीवहिंसकों की दृष्टि से सर्वत्र इस स्त्रोत की सदा रक्षा करनी चाहिए। राज्य दे देवे, धन दे देवे, अथवा शिर दे देवे परन्तु इस उत्तम स्तोत्र को कभी न देवे। यह मन्त्र से भी श्रेष्ठ है। अनुलोम, विलोम तथा मूल सम्पुटित इस स्त्रोत को भोजपत्र पर लिख कर गन्धाष्टक के साथ दाहिने बाह में या कण्ठ में अथवा वाम भुजा में धारण करने से साधक के सभी मनोरथ सिद्ध हो जाते हैं और वह आग से नहीं जलता। उसका शरीर शास्त्रों के समूहों से भी छिन्न-भिन्न नहीं होता। वह भूमण्डल पर भैरव के समान विचरण करता है। बन्ध्या भी पुत्र प्राप्त करती है। निर्धन भी धन प्राप्त करता है। यह तारा का तकारादिसहस्रनामस्तोत्र मैंने बताया जो वर देने वाली निधि तथा दिव्य साम्राज्य संज्ञक स्तोत्र है। विष्णु, ब्रह्मा, शिव आदि को भी शक्ति देने में यह स्तोत्र दक्ष है। काली तारा के रस को जो जानने वाले हैं उन्हें विधिपूर्वक इस स्त्रोत का पाठ करना चाहिए।

इति श्रीब्रह्मयामलोक्त तारातकारादि सहस्रनाम स्तोत्र समाप्त।

श्रीताराहृदय

श्रीशिव उवाच।

श‍ृणु पार्वति भद्रं ते लोकानां हितकारकम्। कथ्यते सर्वदा गोप्यं ताराहृदयमुत्तमम् ॥१॥

श्री शिव बोले : हे पार्वती ! तुम्हारा कल्याण हो। संसार का कल्याण करने वाला गोपनीय उत्तम ताराहृदय स्तोत्र मैं बता रहा हूं।

श्रीपार्वत्युवाच।

स्तोत्रं कथं समुत्पन्नं कृतं केन पुरा प्रभो। कथ्यतां सर्वसद्वृत्तं कृपां कृत्वा ममोपरि ॥२॥

श्री पार्वती बोलीं : हे प्रभो ! यह स्त्रोत कैसे उत्पन्न हुआ ? किसने इसे बताया ? यदि मेरे पर आप की कृपा हो तो यह सब समाचार आप मुझे बतायें।

श्रीशिव उवाच।

रणे देवासुरे पूर्वं कृतमिन्द्रेण सुप्रिये। दुष्टशत्रुविनाशार्थं बलवृद्धियशस्करम् ॥३॥

श्री शिव बोले : हे सुप्रिये ! बहुत पहले देवासुर संग्राम में इन्द्र ने दुष्ट शत्रुओं के विनाश के लिए, बलवर्धक और यशस्कर इस स्तोत्र को बनाया था।

विनियोग : ॐ अस्य श्रीमदुग्रताराहृदयस्तोत्रमन्त्रस्य श्रीभैरवऋषिरनुष्टुप्छन्द : श्रीमदुग्रतारादेवता स्त्रीं बीजं हूं शक्तिः नमः कीलकं सकल शत्रुविनाशार्थे पाठे विनियोगः।

हृदयादि षडङ्गन्यास : ॐ स्त्रीं हृदयाय नमः १। ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा २। ॐ हं शिखायै वषट् ३। ॐ त्रीं कवचाय हुं ४। ॐ ऐं नेत्रत्रयाय वौषट् ५। ॐ हंसः अस्त्राय फट् ६।

अथ ध्यानं :

ॐ ध्यायेत्कोटिदिवाकरद्युतिनिभां बालेन्दुयुक्छेखरां रक्ताङ्गीं रसनां सुरक्तवसनां पूर्णेन्दुबिम्बाननाम्। पाशं कर्तृमहांकुशादि दधतीं दोर्भिश्चतुर्भिर्युतां नानाभूषणभूषितां भगवतीं तारां जगत्तारिणीम् ॥४॥

एवं ध्यात्वा शुभां तारां ततस्तु हृदयं पठेत्। तारिणी तत्त्वनिष्ठानां सर्वतत्त्वप्रकाशिका ॥५॥ रामाभिन्ना परा शक्तिश्शत्रुनाशं करोतु मे। सर्वदा शत्रुसंरम्भे तारा मे कुरुतां जयम् ॥६॥ स्त्रीं त्रीं स्वरूपिणी देवी त्रिषु लोकेषु विश्रुता। तव स्नेहान्मयाख्यातं न पैशुन्यं प्रकाश्यताम् ॥७॥ श‍ृणुदेवि तव स्नेहात्तारानामानि तत्त्वतः। वर्णयिष्यामि गुप्तानि दुर्लभानि जगत्त्रये ॥८॥

इससे ध्यान करके शुभ तारा हृदय स्तोत्र का पाठ करे। तत्त्वज्ञों को मोक्ष प्रदान करने वाली, समस्त तत्त्वों को प्रकाशित करने वाली, राम से अभिन्न परा शक्ति मेरे शत्रुओं का नाश करे। शत्रुओं की भीड़ में तारा मुझे विजय प्रदान करें। स्त्रीं त्रीं स्वरूपिणी देवी तीनों लोकों में विश्रुत है। तुम्हारे स्नेह से मैंने बताया है। मैंने कोई कुटिलता प्रकट नहीं की है। हे देवि ! तुम्हारे स्नेह से मैं तीनों लोक में जो तारा के गुप्त और दुर्लभ नामों को बताऊँगा उन्हें तुम सुनो।

तारिणी तरला तारा त्रिरूपा तरणिप्रभा। सत्त्वरूपा महासाध्वी सर्वसज्जनपालिका ॥९॥ रमणीया रजोरूपा जगत्सृष्टिकरी परा। तमोरूपा महामाया घोररावां भयानका ॥१०॥ कालरूपा कालिकाख्या जगद्विध्वंसकारिका। तत्त्वज्ञानपरानन्दा तत्त्वज्ञानप्रदानघा ॥११॥ रक्तांगी रक्तवस्त्रा च रक्तमालाप्रशोभिता। सिद्धिलक्ष्मीश्च ब्रह्माणी महाकाली महालया ॥१२॥

नामान्येतानि ये मर्त्यास्सर्वदैकाग्रमानसाः। प्रपठन्ति प्रिये तेषां किंकरत्वं करोम्यहम् ॥१३॥

जो मनुष्य एकाग्रमन होकर इन नामों का पाठ करते हैं उनका मैं दास हो जाता हूँ।

तारांतारांपरां देवीं तारकेश्वरपूजिताम्। तारिणीं भवपाथोधेरुग्रतारां भजाम्यहम् ॥१४॥ स्त्रीं ह्रीं हूं त्रीं फण्मन्त्रेण जलं जप्त्वाऽभिषेचयेत्। सर्वे रोगाः प्रणश्यन्ति सत्यं सत्यं वदाम्यहम् ॥१५॥ त्रीं स्वाहान्तैर्महामन्त्रैश्चन्दनं साधयेत्ततः। तिलकं कुरुते प्राज्ञो लोको वश्यो भवेत्प्रिये ॥१६॥

"तारां तारापरां देवीं तारकेश्वरपूजिताम्। तारिणीं भवपाथोधेरुग्रतारां भजाम्यहम्।" स्त्रीं ह्रीं हूं त्रीं फट्" इस मन्त्र से जल को अभिमन्त्रित करके अभिषेक करने से सभी रोग नष्ट हो जाते हैं। यह मैं सत्य कहता हूं सत्य कहता हूं। हे प्रिये! "स्त्रीं स्वाहा" इस मन्त्र से चन्दन को अभिमन्त्रित करके जो प्राज्ञ तिलक करे उसके वश में सारा संसार हो जाता है।

स्त्रीं ह्रीं त्रीं स्वाहा मन्त्रेण श्मशानं भस्म मन्त्रयेत्। शत्रोर्गृहे प्रतिक्षिप्त्वा शत्रोर्मृत्युर्भविष्यति ॥१७॥ ह्रीं हूं स्त्रीं फडंतमन्त्रैः पुष्पं संशोध्य सप्तधा। उच्चाटनं नयत्याशु रिपूणां नैव संशयः ॥१८॥ स्त्रीं त्रीं ह्रीं मन्त्रवर्येण अक्षताश्चाभिमन्त्रिताः। तत्प्रतिक्षेपमात्रेण शीघ्रमायाति मानिनी ॥१९॥ (हंसः ॐ ह्रीं स्त्रीं हूं हंसः) इति मन्त्रेण जप्तेन शोधितं कज्जलं प्रिये। तस्यैव तिलकं कृत्वा जगन्मोहं समाचरेत् ॥२०॥ ताराया हृदयं देवि सर्वपापप्रणाशनम्। वाजपेयादियज्ञानां कोटिकोटिगुणोत्तरम् ॥२१॥ गंगादिसर्वतीर्थानां फलं कोटिगुणात्स्मृतम्। महादुःखे महारोगे सङ्कटे प्राणसंशये ॥२२॥ महाभये महाघोरे पठेत्स्तोत्रं महोत्तमम्। सत्यं-सत्यं मयोक्तं ते पार्वति प्राणवल्लभे ॥२३॥ गोपनीयं प्रयत्नेन न प्रकाश्यमिदं क्वचित् ॥२४॥

इति श्रीभैरवीतन्त्रे शिवपार्वतीसम्वादे श्रीमदुग्रताराहृदयं सम्पूर्णम्।

"स्त्रीं ह्रीं त्रीं स्वाहा" इस मन्त्र से श्मशान के भस्म को अभिमन्त्रित करके उसे शत्रु के घर में फेंक देने से उस शत्रु की मृत्यु हो जाती है। 'ह्रीं हूं स्त्रीं फट्" इस मन्त्र से फूल को सात बार अभिमन्त्रित करके प्रयोग करने से शत्रुओं में उच्चाटन कर देता है, इसमें कोई संशय नहीं है। "स्त्रीं त्रीं ह्रीं" इस श्रेष्ठ मन्त्र से अक्षतों को अभिमन्त्रित करके उसके प्रक्षेप मात्र से मानिनी आ जाती है। हे प्रिये ! "हंसः ॐ ह्रीं स्त्रीं हूं हंसः" इस मन्त्र से अभिमन्त्रित तथा शोधित काजल का जो तिलक लगाता है वह सारे

संसार का मोहन कर डालता है। हे देवि। ताराहृदय स्तोत्र समस्त पापों का नाश करने वाला है। वाजपेय आदि यज्ञों से करोड़ों गुना श्रेष्ठ है। गङ्गा आदि सभी तीर्थों से भी करोड़ों गुना अधिक इसका फल होता है। महादु:ख तथा महासंकट में, प्राणों का संशय होने पर और घोर महाभय में इस उत्तम स्तोत्र का पाठ करना चाहिये। हे प्राणवल्लभे पार्वति ! मैं यह सत्य करता हूं, सत्य कहता हूं। इसे प्रयत्नपूर्वक गुप्त रखना तथा कहीं प्रकाशित मत करना।

इति श्री भैरवीतन्त्रोक्त शिवपार्वती सम्वादस्थ ताराहृदय स्तोत्र समाप्त।

अथ सरस्वतीस्तोत्रप्रारम्भः।

ॐ अस्य श्रीवाग्वादिनीशारदामन्त्रस्य मार्कण्डेयाश्वलायनऋषिः। स्रग्धराऽनुष्टुप्छन्दः श्रीसरस्वती देवता। श्रीसरस्वतीप्रसादसिध्यर्थे जपे विनियोगः।

अथ ध्यानं :

शुक्लां ब्रह्मविचारसारपरमामाद्यां जगद्व्यापिनीं वीणापुस्तकधारिणीमभयदां जाड्यान्धकारावहाम्। हस्ते स्फाटिकमालिका विदधतीं पद्मासने संस्थितां वन्दे तां परमेश्वरीं भगवतीं बुद्धिप्रदां शारदाम्।

अथ सरस्वतीस्तोत्रम्

ब्रह्मोवाच :

ह्रीं ह्रीं हृद्यैकविद्ये शशिरुचिकमलाकल्पविस्पष्टशोभे भव्ये भव्यानुकूले कुमतिवनदहे विश्ववंद्यांघ्रिपद्मे। पद्मे पद्मोपविष्टे प्रणतजनमनोमोदसम्पादयित्रि प्रोत्लुष्टाज्ञानकूटे हरिनिज दयिते देवि संसारसारे ॥२॥ ऐं ऐं ऐं इष्टमन्त्रे कवलभवमुखां भोजरूपे खरूपे रूपारूपप्रकाशे सकल गुणमये निर्गुणे निर्विकारे। न स्थूले नैव सूक्ष्मेप्यविदितविषये नापि विज्ञानतत्त्वे विश्वे विश्वान्तराले सुरवरनमिते निष्कले नित्यशुद्दे ॥३॥ ह्रीं ह्रीं ह्रीं जापतुष्टे हिमरुचिमुकुटे वल्लकीव्यग्रहस्ते मातर्मातर्नमस्ते दहदह जड़तां देहि बुद्धिं प्रशस्ताम्। विद्ये वेदान्तगीते श्रुतिपरिपठिते मोक्षदे मुक्तिमार्गे मार्गातीतप्रभावे भव मम वरदा शारदे शुभ्रहारे ॥४॥ ध्रीं ध्रीं ध्रीं धारणाख्ये धृतिमति नुतिभिर्नामभि : कीर्तनीये नित्येनित्ये निमित्ते मुनिगणनमिते नूतने वै पुराणे। पुण्ये पुण्यप्रभावे हरिहरनमिते वर्णशुद्धे सुवर्णे मन्त्रे मात्रार्थतत्त्वे मतिमति मतिदे माधवप्रीतिनादे ॥५॥ ह्रीं क्षीं धीं ह्रीं स्वरूपे दहदह दुरितं पुस्तकव्यग्रहस्ते सन्तुष्टा कारचित्ते स्मितमुखि सुभगे जम्भनिस्तम्भविद्ये। मोहे मुग्धप्रबोधे मम कुरु सुमतिं ध्वान्तविध्वंसनित्ये गीर्वाग्गौर्भारती त्वं कविवृषरसना सिद्धिदा सिद्धिसाध्या ॥६॥ सौं सौं सौं शक्तिबीजे कमलभवमुखाम्भोजभूतस्वरूपे रूपारूपप्रकाशे सकलगुणमये निर्गुणे निर्विकारे। न स्थूले नैव सक्ष्मेप्यविदितविभवे जाप्यविज्ञानतत्वे विश्वे विश्वान्तराले सुरगणनमिते निष्कले नित्यशुद्धे ॥७॥ स्तौमि त्वां त्वां च वन्दे भज मम रसनां मा कदाचित्त्यजेथाः मा से बुद्धिर्विरुद्धा भवतु न च मनो देवि मे जातु पापम्। मा मे दुःखं कदाचिद्विपदि च समयेप्यस्तु मे नाकुलत्वं शास्त्रे वादे कवित्त्वे प्रसरतु मम धीर्नास्तु कुण्ठा कदाचित् ॥८॥

इत्येतः श्लोकमुख्यैः प्रतिदिनमुषसि स्तौति यो भक्तिनम्रो देवीं वाचस्पतेरप्यतिमतिविभवो वाक्पटुर्नष्टपंक :। स स्यादिष्टार्थलाभः सुतमिवसततं याति तं सा च देवी सौभाग्यं तस्य लोके प्रसरति कविता विघ्नमस्तं प्रयाति ॥९॥ ब्रह्मचारी व्रती मौनी त्रयोदश्यां निरामिषः। सारस्वतो नरः पाठात्स स्यादिष्टार्थलाभवान् ॥१०॥ पक्षद्वयेपि यो भक्त्या त्रयोदश्येकविंशतिम्। अविच्छेदं पठेद्धीमान्ध्यात्वा देवीं सरस्वतीम् ॥११॥ शुक्लाम्बरधरां देवीं शुक्लाभरणभूषिताम्। वांछितं फलमाप्नोति स लोके नात्र संशयः ॥१२॥ इति ब्रह्मा स्वयं प्राह सरस्वत्याः स्तवं शुभम्। प्रयत्नेन पठेन्नित्यं सोमृतत्वं प्रयच्छति ॥१३॥ इति ब्रह्मपुराणे ब्रह्मणा कृतं सरस्वत्याः स्तोत्रं सम्पूर्णम्।

इति श्रीमन्त्रमहार्णवे द्वितीयखण्डे तारातन्त्रे पञ्चमस्तरङ्गः ॥५॥

इन मुख्य श्लोकों से प्रतिदिन प्रातः काल भक्ति से नम्र होकर जो देवी की स्तुति करता है वह वाचस्पति से भी बढ़ जाता और महान् वाक्पटु हो जाता है। उसके सभी पाप नष्ट हो जाते हैं। उसके अभीष्ट सिद्ध हो जाते हैं। देवी सदा उसके प्रति पुत्रवत् व्यवहार करती है। उसका सौभाग्य संसार में फैलता है, उसकी कविता यशस्विनी होती है तथा उसके विघ्न शांत हो जाते हैं। त्रयोदशी के दिन व्रतपूर्वक मौन हो और निरामिष रह कर मनुष्य यदि सरस्वती स्तोत्र का पाठ करे तो वह अभीष्ट अर्थो को प्राप्त करता है। द्रोनों पक्षों में त्रयोदशी के दिन यदि बुद्धिमान मनुष्य निरन्तर इक्कीस बार इस सरस्वती स्तोत्र का पाठ करे तो वह इस संसार में वांछित फल प्राप्त करता है। इसमें कोई संशय नहीं है। इस शुभ सरस्वती स्तोत्र को ब्रह्मा ने स्वयं कहा था। जो प्रयत्न से नित्य इसका पाठ करेगा वह अमरता को प्राप्त हो जायगा।

इति ब्रह्मपुराणोक्त ब्रह्मकृत सरस्वती स्तोत्र समाप्त।

श्री मन्त्र महार्णव के द्वितीय खण्ड में पाँचवाँ तरङ्ग समाप्त।

षष्ठ तरङ्ग

षोडशी (त्रिपुरसुन्दरी) श्रीविद्यातन्त्र

त्रिनेत्रं कमलाकान्तं नृसिंहं चन्द्रशेखरम्। नत्वा संक्षेपतो वक्ष्ये श्रीविद्यां मन्त्रनायिकाम् ॥१॥ इयं तु सुन्दरी विद्या देवानामपि दुर्लभा। गोपनीया प्रयत्नेन सर्वसम्पत्करी मता ॥२॥ अपरीक्षितशिष्याय तां न दद्यात्कदाचन। यदुच्चारणमात्रेण पापसङ्घः प्रलीयते। आत्मा देयः शिरो देयं न देया षोडशाक्षरी ॥३॥

त्रिनेत्र कमलाकान्त नृसिंह चन्द्रशेखर को नमस्कार करके संक्षेप से मैं मन्त्रों की नायिका श्रीविद्या का वर्णन करूँगा। यह सुन्दरी विद्या देवताओं के लिए भी दुर्लभ है। प्रयत्नपूर्वक इसे गुप्त रखना चाहिए। यह समस्त सम्पत्तियों को प्राप्त कराने वाली मानी गयी है। अपरीक्षित शिष्य को इसे कभी नहीं देना चाहिए। इसके उच्चारण मात्र से पापों का समूह नष्ट हो जाता है। शिर दे दो, आत्मा दे दो परन्तु षोडशाक्षरी विद्या को किसी को भी न दो।

मन्त्र महोदधि में मन्त्र इस प्रकार है:

श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं सौः ॐ ह्रीं श्रीं कएइलह्रीं हसकहलह्रीं सकलह्रीं सौः ऐं क्लीं ह्रीं श्रीं।
यह सोलह अक्षरों का मन्त्र है।

दूसरे तन्त्र में मन्त्र इस प्रकार है: ह्रींकएईलह्रीं हसकहलह्रीं, सकलह्रीं। यह भी सोलह अक्षरों का मन्त्र है। केवल कुछ मात्रिका विन्यास का अन्तर है। दूसरा अन्तर यह है कि इसका आनन्दभैरव ऋषि है और गायत्री छन्द है।

अस्य विधानं:

विनियोग: अस्य त्रिपुरसुन्दरीमन्त्रस्य दक्षिणामूर्तिर्ऋषिः पंक्तिच्छन्दः श्रीमत्त्रिपुरसुन्दरी देवता ऐं बीजं सौः शक्तिः क्लीं कीलकं ममाभीष्टसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास: दक्षिणामूर्तिऋषये नमः शिरसि १। पंक्तिश्छन्दसे नमः मुखे २। श्रीमत्त्रिपुरसुन्दरीदेवतायै नमः हृदि ३। ऐं बीजाय नमः गुह्ये ४। सौः शक्तये नमः पादयो[1] ५। क्लीं कीलकाय नमः नाभौ[2] ६। विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे[3] ७। इति ऋष्यादिन्यासः।

करशुद्धिन्यास: ह्रीं श्रीं अं मध्यमाभ्यां नमः १। ह्रीं श्रीं आं अनामिकाभ्यां नमः २। ह्रीं श्रीं सौः कनिष्ठिकाभ्यां नमः ३। ह्रीं श्रीं अं अंगुष्ठाभ्यां नमः ४। ह्रीं श्रीं आं तर्जनीभ्यां नमः ५। ह्रीं श्रीं सौः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ६। इति करशुद्धिन्यासः।

आसनन्यास: ह्रीं श्रीं ह्रीं क्लीं सौः देव्यासनाय नमः पादयोः १। ह्रीं श्रीं हैं हसक्लीं हसौः चक्रासनाय नमः जङ्घयोः २। ह्रीं श्रीं हसैं हसक्लीं हसौः सर्वमन्त्रासनाय नमः जानुनोः ३। ह्रीं श्रीं ह्रीं क्लीं ब्लैं साध्यसिद्धासनाय नमो लिङ्गे ४। इत्यासनन्यासः।

---

१ स्वाधिष्ठाने।   २ मूलाधारे।   ३ पादयोः।

षोडशी ध्यान

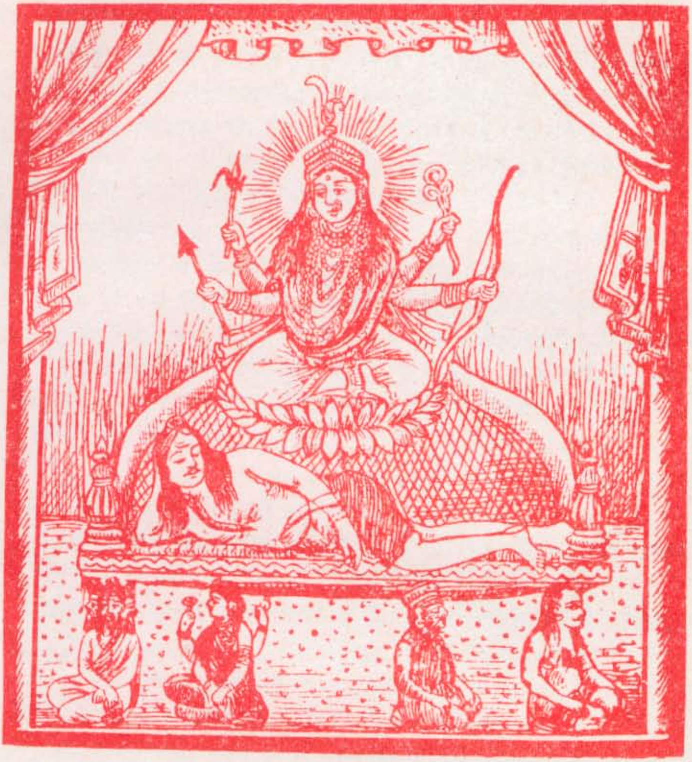

बालार्कायुततेजसं त्रिनयनां रक्ताम्बरोल्लासिनीं
नानालंकृतिराजमानवपुषं बालोडुराट्शेखराम्।
हस्तैरिक्षुधनुः सृणिं सुमशरं पाशं मुदा बिभ्रतीं
श्री चक्रस्थितसुन्दरीं त्रिजगतामाधारभूतां स्मरेत्।।

पृ० ४३४

हृदयादिषडङ्गन्यासः श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं सौः हृदयाय नमः १। ॐ ह्रीं श्रीं शिरसे स्वाहा २। कएइलह्रीं शिखायै वषट् ३। हसकहलह्रीं कवचाय हुं ४। सकलह्रीं नेत्रत्रयाय वौषट् ५। सौः ऐं क्लीं ह्रां श्रीं अस्त्राय फट् ६। इति हृदयादिषडङ्गन्यासः।

जगद्वशीकरणसम्मोहनन्यासौ विस्तरभयान्नोच्यते।

जगद्वशीकरण तथा सम्मोहन न्यास विस्तारभय से नहीं कह रहे हैं।

वर्णन्यासः ॐ श्रीं नमः पादयोः १। ॐ ह्रीं नमः जङ्घयोः २। ॐ क्लीं नमः जानुनोः ३। ॐ ऐं नमः कट्योः ४। ॐ सौः नमः लिङ्गे ५। ॐ ॐ नमः पृष्ठे ६। ॐ ह्रीं नमः नाभौ ७। ॐ श्रीं नमः पार्श्वयोः ८। ॐ कएइलह्रीं नमः स्तनयोः ९। ॐ हसकहलह्रीं नमः अंसयोः १०। ॐ सकलह्रीं नमः कर्णयोः ११। ॐ सौः नमः ब्रह्मरन्ध्रे १२। ॐ ऐं नमः वक्त्रे १३। ॐ क्लीं नमः नेत्रयोः १४। ॐ ह्रीं नमः कर्णयोः १५। ॐ श्रीं नमः कर्णशष्कुल्योः १६। इति वर्णन्यासः।

वाग्देवतान्यासः अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं ऌं ॡं एं ऐं ओं औं अं अः ब्लूं वशिनीवाग्देवतायै नमः शिरसि १। कं खं गं घं ङं क्लीं ह्रीं कामेश्वरीवाग्देवतायै नमो ललाटे २। चं छं जं झं ञं क्लीं मोहिनीवाग्देवतायै नमो भ्रूमध्ये ३। टं ठं डं ढं णं प्लूं विमलावाग्देवतायै नमः कण्ठे ४। तं थं दं धं नं ज्म्रीं अरुणावाग्देवतायै नमो हृदि ५। पं फं बं भं मं हस्ल्व्यं जयिनीवाग्देवतायै नमो नाभौ ६। यं रं लं वं झ्र्यूं सर्वेश्वरीवाग्देवतायै नमो मूलाधारे ७। शं षं सं हं लं क्षं क्ष्म्रीं कौलिनीवाग्देवतायै नमः ऊर्वादिपादान्तम् ८। वाग्देवतायै नमः पादयोः ९। इतिवाग्देवतान्यासः।

सृष्टिन्यासः ॐ श्रीं नमः ब्रह्मरन्ध्रे १। ॐ ह्रीं नमः ललाटे २। ॐ क्लीं नमः नेत्रयोः ३। ॐ ऐं नमः कर्णयोः ४। ॐ सौः नमः अंसयोः ५। ॐ ॐ नमः गण्डयोः ६। ॐ ह्रीं नमः दन्तयोः ७। ॐ श्रीं नमः ओष्ठयोः ८। ॐ कएइलह्रीं नमः जिह्वायाम् ९। ॐ हसकहलह्रीं नमः मुखे १०। ॐ सकलह्रीं नमः पृष्ठे ११। ॐ सौः नमः सर्वाङ्गे १२। ॐ ऐं नमः हृदि १३। ॐ क्लीं नमः स्तनयोः १४। ॐ ह्रीं नमः कक्षौ १५। ॐ श्रीं नमः लिङ्गे १६। इति सृष्टिन्यासः।

स्थितिन्यासः ॐ श्रीं नमः अंगुष्ठयोः १। ॐ ह्रीं नमः तर्जन्योः २। ॐ क्लीं नमः मध्यमयोः ३। ॐ ऐं नमः अनामिकयोः ४। ॐ सौः नमः कनिष्ठयोः ५। ॐ ॐ नमः ब्रह्मरन्ध्रे ६। ॐ ह्रीं नमः मुखे ७। ॐ श्रीं नमः हृदि ८। ॐ कएइलह्रीं नमः नाभ्यादिपादान्तम् ९। हसकहलह्रीं नमः कण्ठादिनाभ्यन्तम् १०। ॐ सकलह्रीं नमः ब्रह्मरन्ध्रात्कण्ठांतम् ११। ॐ सौं नमः पदांगुष्ठयोः १२। ॐ ऐं नमः पदतर्जन्योः १३। ॐ क्लीं नमः पदमध्यमयोः १४। ॐ ह्रीं नमः पदानामिकयोः १५। ॐ श्रीं नमः पदकनिष्ठयोः १६। इति स्थितिन्यासं।

इति स्थितिन्यासं कृत्वा पञ्चावृत्तिन्यासं कुर्यात्। तद्यथा :

इससे स्थितिन्यास करके इस प्रकार पञ्चावृत्ति न्यास करे, अर्थात् पाँच बार मन्त्र की आवृत्ति करे जिससे साधक उसके रूप को प्राप्त हो जाय।

पञ्चावृत्तिन्यासः ॐ श्रीं नमः मूर्ध्नि १। ॐ ह्रीं नमः वक्त्रे २। ॐ क्लीं नमः दक्षनेत्रे ३। ॐ ऐं नमः वामनेत्रे ४। ॐ सौः नमः दक्षकर्णे ५। ॐ ॐ नमः वामकर्णे ६। ॐ ह्रीं नमः दक्षिणांसे ७। ॐ श्रीं नमः वामांसे ८। ॐ कएइलह्रीं नमः दक्षिणगण्डे ९। ॐ हसकहलह्रीं नमः वामगण्डे १०। ॐ सकलह्रीं नमः ऊर्ध्वोष्ठे ११। ॐ सौः नमः अधरोष्ठे १२। ॐ ऐं नमः वक्त्रमध्ये १३। ॐ क्लीं नमः ऊर्ध्वदन्तपंक्तौ १४। ॐ ह्रीं नमः अधोदन्तपंक्तौ १५। ॐ श्रीं नमः वदने १६। इत्येकोन्यासः १।

ॐ श्रीं नमः शिखायाम् १। ॐ ह्रीं नमः शिरसि २। ॐ क्लीं नमः ललाटे ३। ॐ ऐं नमः भ्रुवोः ४। ॐ सौः नमः नासिकयोः ५। ॐ ॐ नमः वक्त्रे ६। ॐ ह्रीं नमः दक्षिणहस्त्रमूले ७। ॐ श्रीं नमः दक्षिणकूर्परे ८। ॐ कएइलह्रीं नमः दक्षिणमणिबन्धे ९। ॐ हसकहलह्रीं नमः दक्षहस्तांगुलिमूले १०।

ॐ सकलह्रीं नमः दक्षहस्तांगुल्यग्रे ११। ॐ सौः नमः वामहस्तमूले १२। ॐ ऐं नमः वामकूपरे १३। ॐ क्लीं नमः वाममणिबन्धे १४। ॐ ह्रीं नमः वामहस्तांगुलिमूले १५। ॐ श्रीं नमः वामहस्तांगुल्यग्रे १६। इति द्वितीयोन्यासः २।

ॐ श्रीं नमः शिरसि १। ॐ ह्रीं नमः ललाटे २। ॐ क्लीं नमः दक्षनेत्रे ३। ॐ ऐं नमः वामनेत्रे ४। ॐ सौः नमः मुखे ५। ॐ ॐ नमः जिह्वायाम् ६। ॐ ह्रीं नमः दक्षिणपादमूले ७। ॐ श्रीं नमः दक्षिणजानुनि ८। ॐ कएइलह्रीं नमः दक्षिणगुल्फे ९। ॐ हसकहलह्रीं नमः दक्षपादांगुलिमूले १०। ॐ सकलह्रीं नमः दक्षपादांगुल्यग्रे ११। ॐ सौः नमः वामपादमूले १२। ॐ ऐं नमः वामजानुनि १३। ॐ क्लीं नमः वामगुल्फे १४। ॐ ह्रीं नमः वामपादांगुलिमूले १५। ॐ श्रीं नमः वामपादांगुल्यग्रे १६। इति तृतीयोन्यासः ३।

ॐ श्रीं नमः शिरसि १। ॐ ह्रीं नमः मुखे २। ॐ क्लीं नमः दक्षनेत्रे ३। ॐ ऐं नमः वामनेत्रे ४। ॐ सौः नमः दक्षिणकर्णे ५। ॐ ॐ नमः वामकर्णे ६। ॐ ह्रीं नमः दक्षनासापुटे ७। ॐ श्रीं नमः वामनासापुटे। ॐ कएइलह्रीं नमः दक्षकपोले ९। ॐ हसकहलह्रीं नमः वामकपोले १०। ॐ सकलह्रीं नमः ऊर्ध्वोष्ठे ११। ॐ सौः नमः अधरोष्ठे १२। ॐ ऐं नमः ऊर्ध्वदन्तपंक्तौ १३। ॐ क्लीं नमः अधोदन्तपंक्तौ १४। ॐ ह्रीं नमः मूर्ध्नि १५। ॐ श्रीं नमः मुखे १६। इति चतुर्थोन्यासः ४।

ॐ श्रीं नमः ललाटे १। ॐ ह्रीं नमः गले २। ॐ क्लीं नमः हृदि ३। ॐ ऐं नमः नाभौ ४। ॐ सौः नमः मूलाधारे ५। ॐ ॐ नमः ब्रह्मरन्ध्रे ६। ॐ ह्रीं नमः मुखे ७। ॐ श्रीं नमः गुदे ८। ॐ कएइलह्रीं नमः आधारे ९। ॐ हसकहलह्रीं नमः हृदि १०। ॐ सकलह्रीं नमः ब्रह्मरन्ध्रे ११। ॐ सौः नमः दक्षिणहस्ते १२। ॐ ऐं नमः वामहस्ते १३। ॐ क्लीं नमः दक्षपादे १४। ॐ ह्रीं नमः वामपादे १५। ॐ श्रीं नमः हृदि १६। इति पञ्चमो न्यासः ५।

इति न्यासपञ्चकं कृत्वा व्यापकं कुर्यात्। तद्यथा:

इससे न्यासपञ्चक करके इस प्रकार व्यापक करे।

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं सौः ॐ ह्रीं श्रीं कएइलह्रीं हसकहलह्रीं सकलह्रीं सौं ऐं क्लीं ह्रीं श्रीं ॐ इति सर्वाङ्गे १। ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं सौः ॐ ह्रीं श्रीं कएइलह्रीं हसकहलह्रीं सकलह्रीं सौः ऐं क्लीं ह्रीं श्रीं ॐ इति हृदये २।

इति विन्यस्य षोढान्यासादीन् कुर्यात्। षोढान्यासादयो विस्तरभयान्नोक्तास्ते तारापटले अवलोक्य कार्याः।

इस प्रकार विन्यास करके षोढा न्यास आदि करे। विस्तारभय से यहाँ षोढा न्यास नहीं कहे जा रहे हैं। तारा पटल में इन्हें देखना चाहिये।

षोढान्यासादयो न्यासः कार्याः सौभाग्यवांछया। नोच्यन्ते विस्तरभयान्नैव चावश्यकाश्च ते ॥१॥

सौभाग्य चाहने वालों को षोढान्यास आदि करने चाहिये। विस्तारभय से षोढान्यास यहाँ नहीं कहा जा रहा है और यह उतना आवश्यक भी नहीं है।

अथ तन्त्रान्तरे न्यासे विशेषः।

दूसरे तन्त्रों में न्यास में कुछ इस प्रकार भेद मिलता है :

कुल्लुकान्यासः ऐं क्लीं ह्रीं श्रीं भगवति महात्रिपुरसुन्दरी स्वाहा। इति कुलुकां शिरसि १। ॐ सेतुं हृदि २। ह्रीं महासेतुं कण्ठे ३। ह्रीं महासेतुं सहस्रारे ४। ॐ श्रीं अं एं क्लीं सौं अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं लृं लॄं एं ऐं ओं औं अं अः कं खं गं घं ङं चं छं जं झं ञं टं ठं डं ढं णं तं थं दं धं नं पं फं बं भं मं यं रं लं वं शं षं सं हं क्षं इति निर्वाणनाभौ ५। क्लीं कामबीजं लिङ्गे ६। जिह्वा में मूलविद्या का चिन्तन कर यथाशक्ति जप करे। इति कुल्कुकान्यासः।

रहस्यन्यास : अस्य श्रीरहस्यन्यासमन्त्रस्य ब्रह्मविष्णुमहेश्वरा ऋषयः ऋग्यजुस्सामानिच्छन्दांसि चैतन्यशक्तिमहात्रिपुरसुन्दरी देवता कृताकृतन्यासपूर्णतासिद्धये विनियोगः।

ब्रह्मविष्णुमहेश्वरऋषिभ्यो नमः शिरसि १। ऋग्यजुस्सामभ्यश्छन्दोभ्यो नमः मुखे २। चैतन्यशक्तिमहात्रिपुरसुन्दर्यै देवतायै नमः हृदये ३। विनियोगाय नमः पादयोः ४।

ऐं क्लीं सौं सौं क्लीं ऐं श्रीं ह्रीं हंसः सोहं सदाशिवासनायै महात्रिपुरसुन्दर्यै नमः मूलाधारे १। ऐं क्लीं सौं सौं क्लीं ऐं श्रीं ह्रीं हंसः सोहं रतिप्रियायै महात्रिपुरसुन्दर्यै नमः स्वाधिष्ठाने २। ऐं क्लीं सौं सौं क्लीं ऐं श्रीं ह्रीं हंसः सोहं ज्ञानरूपायै महात्रिपुरसुन्दर्यै नमः मणिपूरे ३। ऐं क्लीं सौं सौं क्लीं ऐं श्रीं ह्रीं हंसः सोहं ध्यानरूपायै महात्रिपुरसुन्दर्यै नमः अनाहते ४। ऐं क्लीं सौं सौं क्लीं ऐं श्रीं ह्रीं हंसः सोहं विशुद्धस्वरूपायै महात्रिपुरसुन्दर्यै नमः विशुद्धौ ५। ऐं क्लीं सौं सौं क्लीं ऐं श्रीं ह्रीं हंसः सोहं स्वतन्त्रस्वरूपायै महात्रिपुरसुन्दर्यै नमः आज्ञायाम् ६। ऐं क्लीं सौ सौं क्लीं ऐं श्रीं ह्रीं हंसः सोहं आनन्दरूपायै महात्रिपुरसुन्दर्यै नमः सहस्रारे ७। इति रहस्यन्यासः।

कामन्यास : ह्रीं कामाय नमः १। क्लीं मन्मथाय नमः २। ऐं कन्दर्पाय नमः ३। क्लूं मकरध्वजाय नमः ४। स्त्रीं मीनकेतवे नमः ५।

ततः ऐं हृदयाय नमः १। क्लीं शिरसे स्वाहा २। सौं शिखायै वषट् ३। ऐं कवचाय हुं ४। क्लीं नेत्रत्रयाय वौषट् ५। सौं अस्त्राय फट् ६। इति कामन्यासः।

रत्यादिन्यास : ऐं रत्यै नमः लिङ्गे १। क्लीं प्रीत्यै नमः हृदि २। सौं मनोभवायै नमः भ्रूमध्ये ३। सौं अमृतास्यायै नमः भ्रूमध्ये ४। क्लीं योगिन्यै नमः हृदि ५। ऐं विश्वयोन्यै नमः लिङ्गे ६। इति रत्यादिन्यास :।

कामन्यास : स्हौं ईशानाय मनोभवाय नमः शिरसि १। स्हौं तत्पुरुषाय मकरध्वजाय नमः मुखे२। स्हूं अघोरकुमाराय कन्दर्पाय नमः हृदि ३। स्हीं वामदेवाय मन्मथाय नमः गुह्ये ४। स्हूं सद्योजाताय कामदेवाय नमः पादयोः ५। इति कामन्यास।

मनोभवन्यास : स्हौं ईशानाय मनोभवाय नमः ऊर्ध्ववक्त्रे मस्तके १। स्हौं तत्पुरुषाय मकरध्वजाय नमः पूर्ववक्त्रे भाले २। स्हुं अघोरकुमाराय कन्दर्पाय नमः दक्षिणवक्त्रे दक्षकर्णे ३। स्हीं वामदेवाय मन्मथाय नमः उत्तरवक्त्रे वामकर्णे ४। स्हूं सद्योजाताय वामदेवाय नमः पश्चिमवक्त्रे चूडाधः ५। इति मनोभवन्यासः।

बाणन्यास : ह्रां क्षोभणबाणाय नमः हृदि १। ह्रीं द्रावणबाणाय नमः शिरसि २। क्लीं आकर्षणबाणाय नमः शिखायाम् ३। क्लं मोहनबाणाय नमः कवचम् ४। सः उन्मादनबाणाय नमः अस्त्रम् ५। इति बाणन्यासः।

करन्यास : ऐं ह्रीं क्लीं अंगुष्ठाभ्यां नमः १। क्लीं श्रीं सौः ऐं तर्जनीभ्यां नमः २। सौं औं ह्रीं श्रीं मध्यमाभ्यां नमः ३। ऐं कएलह्रीं हसकलह्रीं अनामिकाभ्यां नमः ४। क्लीं सकलह्रीं कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५। सौः सौः ऐं क्लीं ह्रीं श्रीं करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ६।

स्वतन्त्रन्यास : ऐं ह्रीं श्रीं ऐं कएलह्रीं सर्वज्ञायै महात्रिपुरसुन्दर्यै हृदयाय नमः १। ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं सहकहलह्रीं नित्यतृप्तायै महात्रिपुरसुन्दर्यै शिरसे स्वाहा २। ऐं ह्रीं श्रीं सौः सकलह्रीं अनादिबोधायै महात्रिपुरसुन्दर्यै शिखायै वषट् ३। ऐं ह्रीं श्रीं ऐं कएलह्रीं स्वतन्त्रायै महात्रिपुरसुन्दर्यै कवचाय हुं ४। ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं हसकहलह्रीं नित्यमलुप्तशक्तये महात्रिपुरसुन्दर्यै नेत्रत्रयाय वौषट् ५। ऐं ह्रीं श्रीं सौः सकलह्रीं अनन्तायै महात्रिपुरसुन्दर्यै अस्त्राय फट् ६। इति स्वतन्त्रन्यासः।

इति तन्त्रान्तरोक्तन्यासं कृत्वा संक्षोभद्रावणाकर्षवश्योन्मादमहांकुशखेचरीबीजयोन्याख्येति नव मुद्राः प्रदर्शयेत्।

इस प्रकार तन्त्रोक्त न्यास करके संक्षोभण, द्रावण, आकर्षण, वशीकरण, उन्मादन, महांकुश, खेचरी, बीज और योनि नामक मुद्राओं को प्रदर्शित करे।

अथ ध्यानं :

बालार्कायुततेजसं त्रिनयनां रक्ताम्बरोल्लासिनीं नानालंकृतिराजमानवपुषं बालोडुराट्शेखराम् । हस्तैरिक्षुधनुः सृणिं सुमशरं पाशं मुद्रा बिभ्रतीं श्रीचक्रस्थितसुन्दरीं त्रिजगतामाधारभूतां स्मरेत् ॥१॥

इति ध्यात्वा मानसोपचारैः सम्पूजयेत्। ततः पीठादौ रचिते सर्वतोभद्रमण्डले मण्डूकादिपरतत्त्वांन्तपीठदेवताः संस्थाप्य ॐ मं मण्डूकादिपरतत्त्वान्तपीठदेवताभ्यो नमः इति सम्पूज्य पीठमध्ये।

इससे ध्यान करके मानसोपचारों से पूजा करे। इसके बाद पीठादि में रचित सर्वतोभद्र मण्डल में मण्डूकादि परपरतत्त्वान्त पीठदेवताओं की स्थापना करके 'ॐ मं मण्डूकादि परतत्त्वान्त पीठदेवताभ्यो नमः' इससे पूजा करके पीठ के मध्यः

ॐ ब्रं ब्रह्मप्रेताय नमः १। ॐ विं विष्णुप्रेताय नमः २। ॐ रुं रुद्रप्रेताय नमः ३। ॐ ईं ईश्वरप्रेताय नमः ४। ॐ सं सदाशिवायप्रेताय नमः ५। ॐ सुं सुधावर्णवासनाय नमः ६। ॐ प्रें प्रेताम्बुजासनाय नमः ७। ॐ दिं दिव्यासनाय नमः ८। ॐ चं चक्रासनाय नमः ९। ॐ सं सर्वमन्त्रासनाय नमः १०। ॐ सं साध्यसिद्धासनाय नमः ११। इससे पूजा करे।

इति पीठदेवताः सम्पूज्य नव पीठशक्तीः पूजयेत् तद्यथा :

इससे पीठ देवताओं की पूजा करके इस प्रकार नव पीठशक्तियों की पूजा करे।

पूर्वाद्यष्टसु दिक्षु : ॐ इच्छायै नमः १। ॐ ज्ञानायै नमः २। ॐ क्रियायै नमः ३। ॐ कामिन्यै नमः ४। ॐ कामदायिन्यै नमः ५। ॐ रत्यै नमः ६। ॐ रतिप्रियायै नमः ७। ॐ नन्दायै नमः ८। मध्ये ॐ मनोन्मन्यै नमः ९।

इससे नवपीठशक्तियों की पूजा करे।

ततः स्वर्णादियन्त्रं ताम्रपात्रे निधाय घृतेनाभ्यज्य तदुपरि दुग्धधारां जलधारां च दत्त्वा स्वच्छवस्त्रेण सम्प्रोक्ष्य तदुपरि देव्यष्टगन्धेन बिन्दुगर्भं त्रिकोणाष्टदलं द्वादशदलं चतुर्दशदलाष्टदलषोडशत्रिकोणरूपदलं च तस्योपरित्रिरेखात्मकभूपुरं च लिखित्वा ऐं परायै अपरायै परापरायै ह्सौः सदाशिवमहाप्रेतपद्मासनाय नमः। इति मन्त्रेण पुष्पाद्यासनं दत्त्वा पीठमध्ये संस्थाप्य प्रतिष्ठां च कृत्वा पुनर्ध्यात्वा मूलेन मूर्तिं प्रकल्प्य आवाहनादिपुष्पान्तैरुपचारैः सम्पूज्य देव्याज्ञां गृहीत्वा आवरणपूजां कुर्यात्। तद्यथा : पुष्पाञ्जलिमादाय मूलमुच्चार्य ॐ संविन्मये परे देवि परामृतरसप्रिये। अनुज्ञां देहि त्रिपुरे परिवारार्चनाय मे। इति पठित्वा पुष्पाञ्जलिं च दद्यात्। इत्याज्ञां गृहीत्वावरणपूजां कुर्यात्। तद्यथा : पूज्यपूजकयोरन्तरालं प्राची तदनुसारेण अन्याः दिशः प्रकल्प्य आग्न्यादिकोणेषु वामावर्तेन च।

इसके बाद स्वर्णादि से बने ताम्रपत्र में उसे रख कर घी से अभ्यंग करके उसके ऊपर दुग्धधारा तथा जलधारा देकर स्वच्छ पात्र से उसको पोंछ कर उसपर देवी के अष्टगन्ध से बिन्दु गर्भमय त्रिकोण, अष्टदल, द्वादशदल, चतुर्दशदल, अष्टदल षोडश त्रिकोण् रूप दल बनाकर उसके ऊपर तीन रेखायुक्त भूपुर लिखकर "ऐं परायै अपरायै परापरायै ह्सौः सदाशिव महाप्रेतपद्मासनाय नमः" इस मन्त्र से पुष्पाद्यासन देकर पीठ के मध्य उसे स्थापित करके उसमें प्राण प्रतिष्ठा करके पुनः ध्यान करके मूलमन्त्र से मूर्ति की कल्पना करके आवाहन से लेकर पुष्पाञ्जलि दान पर्यन्त उपचारों से पूजा करके देवी से

आज्ञा लेकर इस प्रकार आवरण पूजा करे। पुष्पाञ्जलि लेकर मूलमन्त्र का उच्चारण करके "ॐ संविन्मये परे देवि परामृतरसप्रिये। अनुज्ञां देहि त्रिपुरे परिवारार्चनाय मे।" यह पढ़ कर पुष्पाञ्जलि देवे। इस प्रकार आज्ञा लेकर आवरण पूजा करे। पूज्य और पूजक के अन्तराल को प्राची मानकर तदनुसार अन्य दिशाओं की कल्पना करके अग्न्यादि कोणों में वामावर्त से (श्रीचक्र षोडशी पूजनयन्त्र देखिये चित्र १३)।

ऐं बीजाय नमः[१]। ऐं बीजश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। इति सर्वत्र वदेत्॥१॥ क्लीं बीजाय नमः[२]। क्लीं बीजश्रीपा० २। सौः बीजाय नमः[३] सौः बीजश्रीपा० ३। इति पूजयेत्।

ततः पुष्पाञ्जलिमादाय मूलमुच्चार्य अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले। भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम्॥१॥ ह्रीं श्रीं प्रकटगुप्तगुप्ततरसम्प्रदायकुलनिर्गमरहस्यपरापररहस्यसंज्ञक श्रीचक्रगतयोगिनींपादुकाभ्यो नमः। इति पुष्पाञ्जलिं दद्यात्। इति प्रथमावरणम्॥१॥

इसके बाद पुष्पाञ्जलि लेकर।

मूलमन्त्र का उच्चारण करके "अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले। भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम्॥१॥ ह्रीं श्रीं प्रकट गुप्त गुप्ततर सम्प्रदाय कुल निर्गमरहस्यपरापररहस्यसंज्ञक श्रीचक्रगत योगिनी पादुकाभ्यो नमः।" इससे पुष्पाञ्जलि देवे। इति प्रथमावरण॥१॥

ततस्त्रिकोणबाह्ये वामपार्श्वे दक्षहस्तेन पुष्पचन्दनाक्षतानि तर्पयामीति वामहस्तेन जलं चार्पयेत्। जले आर्द्रकं प्रास्यमिति केचित्।

इसके बाद त्रिकोण के बाहर बाएँ तरफ दाहिने हाथ से "पुष्पचन्दन अक्षतानि तर्पयामि।" यह कहकर बाएँ हाथ से जल देवे। कुछ लोग कहते हैं कि जल में अद्रक डालना चाहिये।

ॐ ॐ ऐं क्लीं सौः ॐ कामेश्वर्यै नमः[४]। नमः कामेश्वरि इच्छाकामफलप्रदे सर्वसत्ववशंकरि सर्वजगत्क्षोभणकरि हुं हुं हुं द्रां द्रीं क्लीं ब्लूं सः सौं क्लीं ऐं कामेश्वरि नित्याश्रीपा० १। ॐ आं ऐं भगमालिन्यै नमः[५]। भगभुगे भगिनि भगोदरि भगमाले भगावहे भगगुह्ये भगयोने भगनिपातिनि सर्वभगवशङ्करि भगरूपे नित्यक्लिन्ने भगस्वरूपे सर्वाणि भगानि मे ह्यानय वरदे रेते सुरेते भगक्लिन्ने क्लिन्नद्रवे क्लेदय द्रावय अमोघे भगविच्चे क्षुभक्षोभये सर्वसत्त्वान् भगेश्वरि ऐं ब्लूं जं ब्लूं भें ल्वूं मों ल्वूं हें क्लिन्ने सर्वाणि भगानि मे वशमानय स्त्रीं हर ल्वें ह्रीं भगमालिनी नित्याश्रीपा० २। इं ह्रीं नित्यक्लिन्नायै नमः[६]। नित्यक्लिन्ने मदद्रवे स्वाहा। नित्यक्लिन्ना नित्याश्रीपा० ३। ईं ॐ क्रौं भ्रौं क्रौं च्रौं छ्रौं ज्रौं झ्रौं भेरुण्डायै नमः[७]। स्वाहा। भेरुण्डानित्याश्रीपा० ४। ओं ॐ ह्रीं वह्निवासिन्यै नमः[८]। वह्निवासिनि नित्याश्रीपा० ५। इति पञ्च पूजयेत्।

ततः दक्षिणपार्श्वे ॐ ह्रीं प्रेंसः नित्यक्लिन्ने मदद्रवे महाविद्येश्वरि नमः[९] स्वाहा। महाविद्येश्वरीनित्याश्रीपा० १। ॠ ॐ ह्रीं शिवदूत्यै नमः[१०]। शिवदूतीनित्याश्रीपा० २। ॠ ॐ ह्रीं हुं खेचछेक्षः स्त्रीं हें क्षें ह्रीं फट् त्वरितायै नमः[११]। त्वरितानित्याश्रीपा० ३। ऌं ऐं क्लीं सौः कुलसुन्दर्यै नमः[१२]। कुलसुन्दरीनित्याश्रीपा० ४। ॡं ऐं क्लीं सौः स्प्रौं ह्क्लीं ह्स्रौः सौः क्लीं ऐं द्रां द्रीं क्लीं ब्लूं नित्यायै नमः[१३]। नित्याश्रीपा० ५। इति पञ्च पूजयेत्।

देव्यग्रे एं ॐ ह्रीं फ्रें सूं ह्रीं क्रौं नित्यमदद्रवे हूं क्रों नीलपताकायै नमः[१४]। नीलपताकिनीनित्याश्रीपा० १। ॐ ऐं स्फ्रें विजयायै नमः[१५]। विजयानित्याश्रीपा० २। ॐ स्वौं सर्वमङ्गलायै नमः[१६]। सर्वमङ्गलानित्याश्रीपा० ३। औं ॐ नमो भगवति ज्वालामालिनि देवि सर्वभूतसंहारकारिके जातवेदसि ज्वलन्ती प्रज्वलन्ती ज्वलज्वल प्रज्वल हुं रं रं हुं फट्। ज्वालामालिन्यै नमः[१७]। ज्वालामालिनीनित्याश्रीपा० ४। अं क्वौं विचित्रानित्यायै नमः[१८]। विचित्रानित्याश्रीपा० ५।

इति पञ्च पूजयित्वा पुष्पाञ्जलिं दद्यात्। इति द्वितीयावरणम्॥२॥

इससे पाँच की पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवे। इति द्वितीयावरण॥२॥

ततो भूपुराद्बहिः।

इसके बाद भूपुर के बाहर:

पूर्वद्वारे गं गणपतये नमः[१८] १। पश्चिमद्वारे बं बटुकाय नमः[१९] २। उत्तरद्वारे ह्रीं दुर्गायै नमः[२०] ३। दक्षिणद्वारे क्षं क्षेत्रपालाय नमः[२१] ४।

इसके द्वारपालों की पूजा करे।

ततो बाह्यचतुरस्रस्य प्रथमरेखायां पश्चिमादि द्वारचतुष्टये।

इसके बाद बाहर चतुरस्र की प्रथम रेखा के पश्चिम आदि चारों द्वारों पर:

अणिमासिद्धि[२२] श्रीपा० १। लघिमासिद्धि[२३] श्रीपा० २। महिमासिद्धि[२४] श्रीपा० ३। ईशसिद्धि[२५] श्रीपा० ४। कोशचतुष्टये वशित्वसिद्धि[२६] श्रीपा० ५। प्राकाम्यसिद्धि[२७]श्रीपा० ६। भक्तिसिद्धि[२८] श्रीपा० ७। इच्छासिद्धि[२९] श्रीपा० ८। वरुणनिर्ऋतिमध्ये प्राप्तिसिद्धि[३०] श्रीपा० ९। पूर्वेशानयोर्मध्ये सर्वकामसिद्धि[३१] श्रीपा० १०। इससे पूजा करे।

मध्यरेखायां पश्चिमादिद्वारचतुष्टये।

मध्य रेखा के पश्चिमादि चारों द्वारों पर:

ह्रीं श्रीं आं ब्राह्मयै नमः[३२]। ब्राह्मीश्रीपा० १। ईं माहेश्वर्यै नमः[३३]। माहेश्वरीश्रीपा० २। ऊं कौमार्यै नमः[३४]। कौमारीश्रीपा० ३। ॠं वैष्णव्यै नमः[३५]। वैष्णवीश्रीपा० ४। कोणचतुष्टये ह्रीं श्रीं ऌं वाराह्यै नमः[३६]। वाराहीश्रीपा० ५। ह्रीं श्रीं ऐं इन्द्राण्यै नमः[३७]। इन्द्राणीश्रीपा० ६। ह्रीं श्रीं औं चामुण्डायै नमः[३८]। चामुण्डाश्रीपा० ७। ह्रीं श्रीं अः महालक्ष्म्यै नमः[३९] महालक्ष्मीश्रीपा० ८। इससे पूजा करे।

तृतीयरेखायां पश्चिमादिद्वारचतुष्टये।

तृतीय रेखा के पश्चिमादि चारों द्वारों पर:

ॐ त्रिखण्डाक्षमुद्रा[४०] श्रीपा० १। ह्रीं सर्वसंक्षोभिणीमुद्रा[४१] श्रीपा० २। ह्रीं सर्वविद्राविणीमुद्रा[४२] श्रीपा० ३। क्लीं सर्वाकर्षिणीमुद्रा[४३] श्रीपा० ४। कोणचतुष्टये ब्लुं सर्ववशङ्करीमुद्रा[४४] श्रीपा० ५। ॐ सर्वोन्मादकरीमुद्रा[४५] श्रीपा० ६। क्रौं महांकुशमुद्रा[४६] श्रीपा० ७। ह्रुं खेचरीमुद्रा[४७] श्रीपा० ८। ततस्त्रिवलये बीजमुद्रा[४८] श्रीपा० ९। योनिमुद्रा[४९] श्रीपा० १०। चार्वादर्शनाय नमः[५०] ११।

इति पूजयित्वा पुष्पाञ्जलिं दद्यात्। ततो हस्तेनार्घ्यजलं गृहीत्वा।

इससे पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवे। इसके बाद हाथ में अर्घ्यजल लेकर:

अत्र त्रैलोक्यमोहनचतुरस्रचक्रे श्रीमहात्रिपुरसुन्दरीसमधिष्ठिते एता ईशित्वाद्याः प्रकटयोगिन्यः समुद्राः ससिद्धयः सायुधाः सवाहनाः सपरिवाराः सर्वोपचारैः सम्पूजिताः सन्तुः ॥३॥

इससे तर्पन करे। इति तृतीयावरण ॥३॥

ततः षोडशदलेषु पश्चिमदलादारभ्य वामावर्त्तेन च।

इसके बाद षोडश दलों में पश्चिम दल से आरम्भ करके वामावर्त से:

ह्रीं श्रीं अं कर्माकर्षिणीनत्यि कला[५१] श्रीपा० १। आं बुद्ध्याकर्षिणीनित्या कला [५२] श्रीपा० २। इं अहंकाराकर्षिणीनित्याकला[५३] श्रीपा० ३। ईं शब्दाकर्षिणीनित्याकला[५४] श्रीपा० ४। उं रूपाकर्षिणीनित्याकला[५५] श्रीपा० ५। ऊं स्पर्शाकर्षिणीनित्याकला[५६] श्रीपा० ६। ऋं रसाकर्षिणीनित्याकला[५७] श्रीपा० ७। ॠं गन्धाकर्षिणीनित्याकला[५८] श्रीपा० ८। ऌं चिन्ताकर्षिणीनित्याकला[५९] श्रीपा० ९। ॡं धैर्याकर्षिणीनित्याकला[६०] श्रीपा० १०। एं स्मृत्याकर्षिणीनित्याकला[६१] श्रीपा० ११। ऐं नामाकर्षिणीनित्याकला[६२] श्रीपा० १२। ओं बीजाकर्षिणीनित्याकला[६३] श्रीपा० १३। औं अमृताकर्षिणीनित्याकला[६४] श्रीपा० १४। अं शरीराकर्षिणीनित्याकला[६५] श्रीपा० १५। अः आत्माकर्षिणीनित्याकला[६६] श्रीपा० १६।

इति षोडश योगनीः पूजयित्वा पुष्पाञ्जलिं दद्यात्। ततो हस्तेनार्घ्य जलं गृहीत्वा।

इससे सोहल योगिनियों की पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवे। इसके बाद हाथ में अर्घ्यजल लेकर :

अत्र सर्वाशापरिपूरके षोडशदलचक्रे श्रीमहात्रिपुरसुन्दरीसमधिष्ठिते एताः कामाकर्षिण्याद्या गुप्तयोगिन्यः समुद्राः ससिद्धयः सायुधाः सवाहना: सपरिवाराः सर्वोपचारैः पूजिताः सन्तु। यह कहे। इति चतुर्थावरण॥४॥

ततोष्टदलचक्रेपूर्वादिक्रमेण।

इसके बाद अष्टदल चक्र में पूर्वादि क्रम से :

ह्रीं श्रीं कं खं गं घं ङं अनङ्गकुसुमादेवी[६७] श्रीपा० १। ह्रीं श्रीं चं छं जं झं ञं अनङ्गमेखलादेवी[६८] श्रीपा० २। ह्रीं श्रीं टं ठं डं ढं णं अनङ्गमदनादेवी[६९] श्रीपा० ३। ह्रीं श्रीं तं थं दं धं नं अनङ्गमदनातुरादेवी[७०] श्रीपा० ४। ह्रीं श्रीं पं फं बं भं मं अनङ्गरेखादेवी[७१] श्रीपा० ५। ह्रीं श्रीं यं रं लं वं अनङ्गयोगिनीदेवी[७२] श्रीपा० ६। ह्रीं श्रीं शं षं सं हं अनङ्गकुशादेवी[७३] श्रीपा० ७। ह्रीं श्रीं लं क्षं अनङ्गमालिनीदेवी[७४] श्रीपा० ८। इन आठों की पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवे। इसके बाद हाथ में अर्घ्यजल लेकर :

अत्र संक्षोभकरेऽष्टदलचक्रे श्रीमहात्रिपुरसुन्दरीसमधिष्ठिते एता अनङ्गकुसुमाद्याः गुप्ततरा योगिन्यः समुद्राः ससिद्धयः सायुधाः सवाहनाः सपरिवाराः सर्वोपचारैः पूजिताः सन्तु। यह कहे। इति पञ्चमावरण॥५॥

ततश्चतुर्दशारचक्रे पश्चिमादिवामावर्तेन।

इसके बाद चतुर्दशार चक्र में पश्चिमादि वामावर्त से :

ह्रीं श्रीं सर्वसंक्षोभिणीशक्ति[७५] श्रीपा० १। ह्रीं श्रीं सर्वद्राविणीशक्ति[७६] श्रीपा० २। ह्रीं श्रीं सर्वाकर्षिणीशक्ति[७७] श्रीपा० ३। ह्रीं श्रीं सर्वाह्लादिनीशक्ति[७८] श्रीपा० ४। ह्रीं श्रीं सर्वसम्मोहिनीशक्ति७९ श्रीपा० ५। ह्रीं श्रीं सर्वस्तम्भिनीशक्ति[८०] श्रीपा० ६। ह्रीं श्रीं सर्वजृम्भिणीशक्ति[८१] श्रीपा० ७। ह्रीं श्रीं सर्ववशङ्करीशक्ति[८२] श्रीपा० ८। ह्रीं श्रीं सर्वरञ्जिनीशक्ति[८३] श्रीपा० ९। ह्रीं श्रीं सर्वोन्मादिनीशक्ति[८४] श्रीपा० १०। ह्रीं श्रीं सर्वार्थसाधिनीशक्ति८५ श्रीपा० ११। ह्रीं श्रीं सर्वाशापरिपूरिणीशक्ति८६ श्रीपा० १२। ह्रीं श्रीं सर्वमन्त्रमयीशक्ति[८७] श्रीपा० १३। ह्रीं श्रीं सर्वद्वन्द्वक्षयकरीशक्ति[८८] श्रीपा० १४।

इससे पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवे। इसके बाद हाथ में अर्घ्य जल लेकर :

अत्र सौभाग्यदायके चतुर्दशचक्रे श्रीमहात्रिपुरसुन्दरीसमधिष्ठिते एताः संक्षोभिण्याद्याः शक्तयः सम्प्रदाययोगिन्यः समुद्राः ससिद्धयः सायुधाः सवाहनाः सपरिवाराः सर्वोपचारैः सम्पूजिताः सन्तुः। यह कहे। इति षष्ठावरण॥६॥

ततो दशारचक्रे पश्चिमादिवामावर्तेन च।

इसके बाद दशार चक्र में पश्चिमा वामावर्त से :

ह्रीं श्रीं सर्व सिद्धिप्रदादेवी[८९] श्रीपा० १। ह्रीं श्रीं सर्वसम्पत्प्रदादेवी[९०] श्रीपा० २ । ह्रीं श्रीं सर्वप्रियङ्करीदेवी[९१] श्रीपा० ३। ह्रीं श्रीं सर्वमङ्गलकारिणीदेवी[९२] श्रीपा० ४। ह्रीं श्रीं सर्वकामप्रदादेवी[९३] श्रीपा० ५। ह्रीं श्रीं सर्वदुःखविमोचिनीदेवी[९४] श्रीपा०। ह्रीं श्रीं सर्वाङ्गसुन्दरीदेवी[९५]। श्रीपा० ७। ह्रीं श्रीं सर्वमृत्युविनाशिनीदेवी[९६] श्रीपा० ८। ह्रीं श्रीं सर्वविघ्ननिवारिणीदेवी[९७] श्रीपा० ९। ह्रीं श्रीं सर्वसौभाग्यदायिनीदेवी[९८] श्रीपा० १०।

इससे पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवे। इसके बाद हाथ में अर्घ्यजल लेकर :

अत्र सर्वाशापरिपूरके दशारचक्रे महात्रिपुरसुन्दरीसमधिष्टिते एताः सर्वसिद्धिप्रदाद्या देव्यः कुलकौलिनीयोगिन्यः समुद्राः ससिद्धयः सायुधाः सवाहनाः सपरिवाराः सर्वोपचारैः सम्पूजिताः सन्तु। यह कहे। इति सप्तमावरण॥७॥

ततःपुनः दशारचक्रे पश्चिमादिवामावर्तेन च।

इसके बाद पुनः दशार चक्र में पश्चिमादि वामावर्त से।

ह्रीं श्रीं सर्वज्ञादेवी[99] श्रीपा० १। ह्रीं श्रीं सर्वशक्तिमयीदेवी[100] श्रीपा० २। ह्रीं श्रीं सर्वैश्वर्यप्रदादेवी[101] श्रीपा० ३। ह्रीं श्रीं सर्वज्ञानमयीदेवी[102] श्रीपा० ४। ह्रीं श्रीं सर्वव्याधिविनाशिनीदेवी[103] श्रीपा० ५। ह्रीं श्रीं सर्वाधारस्वरूपादेवी[104] श्रीपा० ६। ह्रीं श्रीं सर्वपापहरादेवी[105] श्रीपा० ७। ह्रीं श्रीं सर्वानन्दमयीदेवी[106] श्रीपा० ८। ह्रीं श्रीं सर्वरक्षास्वरूपिणीदेवी[107] श्रीपा० ९। ह्रीं श्रीं सर्वेप्सितफलप्रदादेवी[108] श्रीपा० १०।

इससे पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवे। इसके बाद हाथ में अर्घ्यजल लेकर:

अत्र सर्वरक्षाकरे अन्तर्दशाचक्रे त्रिपुरमालिनीश्रीत्रिपुरसुन्दरीदेवीसमधिष्ठिते एताः सर्वज्ञाद्या निर्भययोगिन्यः समुद्राः ससिद्धयः सायुधाः सवाहनाः सपरिवाराः सर्वोपचारैः सम्पूजिताः सन्तु। यह कहे। इति अष्टमावरण॥८॥

ततोऽष्टारचक्रे पश्चिमादिवामावर्तेन च।

इसके बाद अष्टार चक्र में पश्चिमादि वामावर्त से:

ह्रीं श्रीं अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं ऌं ॡं एं ऐं ओं औं अं अः वशिनीवाग्देवता[109] श्रीपा० १। ह्रीं श्रीं कं खं गं घं ङं कामेश्वरीवाग्देवता[110] श्रीपा० २। ह्रीं श्रीं चं छं जं झं ञं मोदिनीवाग्देवता[111] श्रीपा० ३। ह्रीं श्रीं टं ठं डं ढं णं विमलावाग्देवता[112]। श्रीपा० ४। ह्रीं श्रीं तं थं दं धं नं अव्ययावाग्देवता[113] श्रीपा० ५। ह्रीं श्रीं पं फं बं भं मं जयिनीवाग्देवता[114] श्रीपा० ६। ह्रीं श्रीं यं रं लं वं सर्वेश्वरीवाग्देवता[115] श्रीपा० ७। ह्रीं श्रीं शं षं सं हं ळं क्षं कौलिनी वाग्देवता[116] श्रीपा० ८।

इससे पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवे। इसके बाद हाथ में अर्घ्यजल लेकर:

अत्र सर्वरोगहरे अष्टारचक्रे श्रीमहात्रिपुरसुन्दरीसमधिष्ठिते एता वशिन्याद्या रहस्ययोगिन्यः समुद्राः ससिद्धयः सायुधाः सवाहनाः सपरिवाराः सर्वोपचारैः सम्पूजिताः सन्तु॥९॥ यह कहे। इति नवमावरण॥९॥

तत अभ्यन्तरचक्रमध्ये दक्षिणे:

इसके बाद अभ्यन्तर चक्र के मध्य में दक्षिण की ओर:

ॐ उत्तमबाणाय नमः[117] १। वामे मोहधनुषे नमः[118] २। तदधः कर्व्वशाय नमः[119] ३। ततः पुनः त्रिकोणंमे कामेश्वर्यै नमः[120] १। चक्रिण्यै नमः[121] २। भगशालिन्यै नमः[122] ३। इससे पूजन करके तीन बार पुष्पाञ्जलि देवे।

इत्यावरणपूजां कृत्वा धूपादिनमस्कारान्तं सम्पूज्य जपं कुर्यात्। अस्य पुरश्चरणं लक्षजपः। करवीरपुष्पैः त्रिमधुरोपेतैर्दशांशतो होमः। एवं कृते मन्त्रः सिद्धो भवति। एतस्मिन्सिद्धे मन्त्रे मन्त्री प्रयोगान् साधयेत्।

इससे आवरण पूजा करके धूपदान से लेकर नमस्कार पर्यन्त पूजा और जप करे। इसका पुरश्चरण एक लाख जप है। घी, मधु तथा शकर के साथ कनेर के फूलों से दशांश होम करना चाहिये। ऐसा करने पर मन्त्र सिद्ध होता है। इस मन्त्र के सिद्ध होने पर साधक प्रयोगों को सिद्ध करे।

लक्षमेकं जपेन्मन्त्रं दशांश हयमारजैः। पुष्पैस्त्रिमधुरोपेतैर्जुहुयात्पूजितेनले॥१॥

एक लाख जप करना चाहिये तथा जप का दशांश त्रिमधुर से युक्त कनेर के फूलों से प्रदीप्त अग्नि में होम करना चाहिये।

अथ प्रयोगा वक्ष्यन्ते साधकाभीष्टसिद्धिदाः।

अब साधक के लिये अभीष्टसिद्धिदायक प्रयोग कहे जायेंगे:

नवलक्षजपेनास्य रुद्ररूपो नरो भवेत्॥२॥ मल्लिकामालती पुष्पैर्होमाद्वागीशतामियात्। करवीरैर्जपापुष्पैर्होमान्मोहयते जगत्॥३॥ चन्द्र[1]कुंकुमकस्तूरीहोमात् कामाधिको भवेत्। चम्पकैः

१ कर्पूरं।

पाटलैर्विश्वं वशमानयतेचिरात् ॥४॥ लाजाहोमो राज्यदायी मधुनोपद्रवक्षयः। निशिच्छागपलैर्होमो रिपुसैन्यविनाशकृत् ॥५॥ दध्याज्यदुग्धमधुभिः क्रमाद्धोमादवाप्नुयात्। आरोग्यं सम्पदं ग्रामं धनं शर्करया सुखम् ॥६॥ कमलैर्धनसम्पत्तिर्दाडिमैराजवश्यता। क्षत्रिया मातुलिङ्गैस्तु वैश्या नारङ्गजैः फलैः ॥७॥ शूद्राः कूष्माण्डसम्भूतैर्वश्याः स्युरचिराद्धुतैः। पनसानां लक्षहोमात् वश्याः स्युश्चक्रवर्तिनः ॥८॥ द्राक्षाफलैरिष्टसिद्धीरम्भाभिर्मन्त्रिणो वशाः। नारिकेलैस्तु सम्पत्तिस्तिलैः सर्वेष्टसिद्धयः ॥९॥ गुग्गुलै दुःखनाशः स्यात् सर्वेष्टं शर्करागुडैः। पायसैर्धनधान्याप्तिर्वन्धूकैः प्राणिनो वशाः ॥१०॥ पक्वैश्चूतफलैर्होमात् लक्षमात्राद्धरा वशा। लवणैराजिकायुक्तैर्होमाद्दुष्टविनाशनम् ॥११॥ कर्पूरहोमाल्लभते वाक्पतित्वं नरोऽचिरात्। करञ्जफलहोमेन भूतप्रेतादयो वशाः ॥१२॥ बिल्वैः स्यादतुला लक्ष्मीरिक्षुदण्डैः सुखाप्तयः। घृतहोमादीप्सिताप्तिः शान्तिः स्यात्तिलतण्डुलैः ॥१३॥ किंबहुक्तेन देवेशि सर्वेष्टसाधनं नृणाम्। मध्ये कूटत्रिके भेदा वर्णान्तरनियोजनात् ॥१४॥ बहवोऽन्येन गदिता ग्रन्थगौरवभीतितः। अपरीक्षिताय शिष्याय न देयेयं कदाचन। पुत्राय वा सुशिष्याय देयाभीष्टप्रदायिनी ॥१५॥ इति षोडशाक्षरीषोडशीमन्त्रप्रयोगः।

इसके नव लाख जप से मनुष्य रुद्र रूप हो जाता है। मल्लिका और मालती के फूलों से होम करने पर मनुष्य वाणी का स्वामी हो जाता है। कनेर तथा अढ़उल के फूलों से होम करने पर मनुष्य संसार को मोहित कर लेता है। कपूर, कुंकुम और कस्तूरी के होम से मनुष्य में काम की वृद्धि होती है। चम्पक तथा पाटल के फूलों से होम करके मनुष्य शीघ्र जगत् को वश में कर लेता है। लावा का होम करना राज्य दिलाने वाला होता है। मधु से होम करना उपद्रव की शान्ति करता है। रात्रि में अजामांस से होम करने से शत्रु का नाश होता है। दही, घी, दूध तथा मधु से होम करने पर क्रमशः आरोग्य, सम्पत्ति, ग्राम तथा धन प्राप्त होता है और शकर से होम करने से सुख मिलता है। कमलों से होम करने पर धन और सम्पत्ति प्राप्त होती है। अनारों से होम करने पर राजा वश में होता है। मातुलिङ्ग से होम करने पर क्षत्रिय वश में होते है। नारङ्गी से होम करने पर वैश्य वश में होते हैं। कोहड़े से होम करने पर शूद्र शीघ्र वश में हो जाते हैं। कटहल से एक लाख होम करने पर चक्रवर्ती राजे वश में हो जाते हैं। अंगूर से होम करने पर अभीष्टसिद्धि होती है। केले से होम करने पर मन्त्री वश में होते हैं। नारियल से होम करने पर सम्पत्ति प्राप्त होती है। तिलों से होम करने पर समस्त इष्ट सिद्धियाँ प्राप्त होती हैं। गुग्गुल से हो होम करने पर दुःखों का नाश होता है। शकर और गुड़ से होम करने पर सभी इष्ट सिद्ध होते हैं। खीर से होम करने पर धन और धान्य की प्राप्ति होती है। बन्धूक फूलों से होम करने से प्राणी वश में होते हैं। पके आम के फलों से एक लाख होम करने पर पृथिवी वश में हो जाती है। राई के साथ नमक से होम करने से दुष्टों का विनाश होता है। कपूर से होम करने पर मनुष्य शीघ्र ही वाणी का स्वामी हो जाता है। करञ्ज के फल से होम करने पर भूत प्रेत आदि वश में हो जाते हैं। बेल से होम करने पर अतुल लक्ष्मी प्राप्त होती है। गन्ने से होम करने पर सुखों की प्राप्ति होती है। घी से होम करने पर ईप्सित प्राप्त होता है। अक्षतों से होम करने पर शान्ति प्राप्त होती है। हे देवेशि! अधिक कहने से क्या लाभ! यह मनुष्यों के सभी अभीष्टों का साधक है। मध्य कूटत्रिक भेद से वर्णान्तर नियोजन से मन्त्र के अन्य बहुत से भेद कहे गये हैं। ग्रन्थ के बढ़ जाने के भय से यहाँ नहीं कहे जा रहे हैं। अपरीक्षित शिष्य को इसे कभी भी नहीं देना चाहिये। पुत्र या उत्तम शिष्य को यह अभीष्टदायिनी देने योग्य है। इति षोडशाक्षरी षोडशी मन्त्र प्रयोग।

अथ षोडशीभेदेन बालात्रिपुरामन्त्रप्रयोगः।

अथ बालां प्रवक्ष्यामि मन्त्री संसेव्ययां द्रुतम्। बृहस्पतिः कुबेरश्च जायते विद्यया धनैः ॥१॥

अब मैं बालाविद्या को कहूंगा, जिसका सेवन करके साधक विद्या में वृहस्पति के समान तथा धन में कुबेर के समान हो जाता है।

मन्त्रो यथा मन्त्रमहोदधी : ऐं क्लीं सौः।

मन्त्रमहोदधि में मन्त्र इस प्रकार है : ऐं क्लीं सौः।

देवीद्वारा यह विद्या अभिशप्त और कीलित कर दी गयी है, इसलिए यह सिद्धि नहीं दे सकती। अतः शापोद्धार तथा उत्कीलन करके ही इसका जप करना चाहिये।

इति त्र्यक्षरोमन्त्रः। अथास्य शापोद्धारः। ऐं ऐं सौः क्लीं क्लीं ऐं सौः सौः क्लीं एवं नवार्णः शतं जप्तः शापनिवर्तकः।

"ऐं क्लीं सौः" यह तीन अक्षरों का मन्त्र है। इसका शापोद्धार इस प्रकार है : "ऐं ऐं सौः क्लीं क्लीं ऐं सौः सौः क्लीं" इस प्रकार नवार्ण को सौ बार जपने से शाप का निवारण होता है।

नवार्णमन्त्र की विधि इस प्रकार है :

आद्यमाद्यं च तार्तीयं कामः कामोथ वाग्भवम्। अन्त्यमन्त्यमनंगं च नवार्णः कीर्तितो मनुः। जप्तोयं शतधा शापं बालाया विनिवर्तयेत्।

अर्थात् आद्य (ऐं) आद्य (ऐं) तार्तीय (सौः) काम (क्लीं) काम (क्लीं) वाग्भव (ऐं) अन्त्य (सौः) अन्त्य(सौः) तथा अनङ्ग (क्लीं) यह ९ अक्षरों का मन्त्र कहा गया है। इस मन्त्र का १०० बार जप करने से बाला का शाप दूर हो जाता है।

इस नवार्णमन्त्र का सौ बार जप करने से बाला षोडशी का शापोद्धार होता है।

अथोत्कीलनम्।

ॐ क्लीं नमः। अयमप्युत्कीलनकरः शतं जपात्।

अथ उत्कीलनः "ॐ क्लीं नमः" सौ बार जपने से यह मन्त्र का उत्कीलन कारक होता है।

अथ त्रयाणां बीजानां दीपनीमाह।

अब तीनों बीजमन्त्रों की दीपनी कहते हैं :

तत्रादौ वाग्बीजस्य दीपनीविद्यामाह। वद वद वाग्वादिनि ऐं इति शतं जपेत्! इयमाद्यस्य बीजस्य दीपनी[1]।

१. वाग्बीजदीपनी : 'वद वद वाग्वादिनि ऐं' इस मन्त्र को सौ बार जपे। यह "ऐं" की दीपनी है।

अथ काम बीजस्य दीपनीमाह। क्लिन्ने क्लेदिनि महाक्षोभं कुरु। इत्येकादशवर्णा मध्यबीजस्य दीपनार्थे शतं जपेत्।

२. कामबीज दीपनी : "क्लिन्ने क्लेदिनि महाक्षोभं कुरु" इस ग्यारह अक्षरों के मन्त्र को "क्लीं" के दीपन के लिए सौ बार जपे।

अथ बालाबीजस्य दीपनीमाह। ॐ मोक्षं कुरु। अन्त्यस्य बीजस्य दीपनार्थे शतं जपेत्।

३. बालाबीजदीपनी "ॐ मोक्षं कुरु" इस मन्त्र को सौ बार जपे। यह "सौः" की दीपनी है।

इति शापोद्धारोत्कीलनादिविधानं कृत्वा पुरश्चरणं कुर्यात्।

इस प्रकार शापोद्धार तथा उत्कीलन आदि करके पुरश्चरण करे।

---

१ दीपनी प्रकाशकर्त्री।

विनियोग : अस्य बालामन्त्रस्य दक्षिणामूर्तिर्ऋषिः पंक्तिश्छन्द : त्रिपुराबालादेवता सौः बीजं क्लीं शक्तिः ममाभीष्टसिध्यर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास : ॐ दक्षिणामूर्तिऋषये नमः शिरसि १। पंक्तिश्छन्दसे नमः मुखे २। त्रिपुराबालादेवतायै नमः हृदि ३। सौः बीजाय नमः गुह्ये ४। क्लीं शक्तये नमः पादयोः ५। विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ६। इति ऋष्यादिन्यासः।

करन्यास : ॐ ऐं नमः नाभ्यादिपादान्तम् १। ॐ क्लीं नमः हृदयादि नाभ्यान्तम् । ॐ सौ : नमः मर्द्धादिहृदयान्तम् ३। इति विन्यसेत्।

ॐ ऐं नमः वामकरे १। ॐ क्लीं नमः दक्षकरे २। ॐ सौः नमः करयोः ३। इति विन्यसेत्।

ॐ ऐं नमः मूर्ध्नि १। ॐ क्लीं नमः गुह्ये २। ॐ सौः नमः वक्षसि ३। इति विन्यसेत्।

ऐं रत्यै नमो गुह्ये १। सौः प्रीत्यै नमो हृदि २। क्लीं कामभवायै नमः भ्रूमध्ये ३। इति विन्यसेत्।

ऐं अमृतेश्यै नमो गुह्ये १। सौः योगेश्यै नमो हृदि २। क्लीं विश्वयोन्यै नमो भ्रूमध्ये ३। इति विन्यसेत्।

ह्रीं मनोभवाय नमः शिरसि १। क्लीं मकरध्वजाय नमः मुखे २। ऐं कन्दर्पाय नमः हृदि ३। ब्लूं मन्मथाय नमः गुह्ये ४। स्त्रीं कामदेवाय नमः चरणयोः ५। इति विन्यसेत्।

ततो द्रां द्राविण्यै नमः शिरसि १। द्रीं क्षोभिण्यै नमः पादयोः २। क्लीं वशीकरिण्यै नमो मुखे ३। ब्लूं कर्षिण्यै नमः गुह्ये ४। स्त्रीं सम्मोहिन्यै नमः हृदि ५। इति विन्यसेत्।

ततो आं सौः क्लीं ऐं अंगुष्ठाभ्यां नमः १। ईं सौः क्लीं ऐं तर्जनीभ्यां नमः २। ऊं सौः क्लीं ऐं मध्यमाभ्यां नमः ३। ऐं सौः क्लीं ऐं अनामिकाभ्यां नमः ४। औं सौः क्लीं ऐं कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५। अः सौः क्लीं ऐं करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ६। इति करन्यासः।

हृदयादिषडङ्गन्यास : आं सौः क्लीं ऐं हृदयाय नमः १। ईं सौः क्लीं ऐं शिरसे स्वाहा २। ॐ सौः क्लीं ऐं शिखायै वषट् ३। ऐं सौः क्लीं ऐं कवचाय हुं ४। औं सौः क्लीं ऐं नेत्रत्रयाय वौषट् ५। अः सौः क्लीं ऐं अस्त्राय फट् ६। इति हृदयादिषडङ्गन्यासः।

एवं न्यासं कृत्वा ध्यायेत्।

इस प्रकार न्यास करके ध्यान करे।

अथ ध्यानं :

रक्ताम्बरां चन्द्रकलावतन्सां समुद्यदादित्यनिभां त्रिनेत्राम्। विद्याक्षमालाभयदानहस्तां ध्यायामि बालामरुणाम्बुजस्थाम् ॥१॥

एवं ध्यात्वा मानसोपचारैः सम्पूजयेत्। ततः पीठादौ रचिते सर्वतोभद्रमण्डले मण्डूकादिपरतत्त्वान्तपीठदेवताः संस्थाप्य ॐ मं मण्डूकादिपरतत्त्वान्तपीठदेवताभ्यो नमः। इति पीठदेवताः सम्पूज्य नव पीठशक्तीः पूजयेत्।

इससे ध्यान करके मानसोपचारों से पूजा करे। इसके बाद पीठादि पर रचित सर्वतोभद्र मण्डल में मण्डूकादि परतत्त्वान्त पीठदेवताओं की स्थापना करके "ॐ मं मण्डूकादि परतत्त्वान्त पीठदेवताभ्यो नमः" इससे पीठदेवताओं की पूजा करके इस प्रकार नव पीठशक्तियों की पूजा करे।

पूर्वाद्यष्टसु दिक्षु ॐ इच्छायै नमः १। ॐ ज्ञानायै नमः २। ॐ क्रियायै नमः ३। ॐ कामिन्यै नमः ४। ॐ कामदायिन्यै नमः ५। ॐ रत्यै नमः ६। ॐ रतिप्रियायै नमः ७। ॐ नन्दायै नमः ८। मध्ये ॐ मनोन्मन्यै नमः ९।

इति पीठशक्तीः पूजयेत्। ततः स्वर्णादिनिर्मितं यन्त्रपत्रं ताम्रपात्रे निधाय घृतेनाभ्यज्य तदुपरि दुग्धधारां जलधारां च दत्त्वा स्वच्छवस्त्रेण सम्प्रोक्ष्य तस्योपरि देव्या अष्टगन्धेन नवयोन्यात्मकं यन्त्रं

बहिरष्टदलं च तस्योपरि भूपुरं लिखित्वा ह्सौः सदाशिवमहाप्रेतपद्मासनाय नमः। इति मन्त्रेण पुष्पाद्यासनं दत्त्वा पीठमध्ये संस्थाप्य मध्ययोनौ मूलेन मूर्तिं प्रकल्प्य आवाहनादिपुष्पान्तैरुपचारैः सम्पूज्य देव्याज्ञां गृहीत्वा आवरणपूजां कुर्यात्। तत्र क्रमः। पुष्पाञ्जलिमादाय : संविन्मये परे देवि परामृतरसप्रिये। अनुज्ञां देहि बालायाः परिवारार्चनाय मे ॥१॥ इति पठित्वा पुष्पाञ्जलिं दद्यात्। इत्याज्ञां गृहीत्वा देवीवामकोणे।

इससे पीठशक्तियों की पूजा करे। इसके बाद स्वर्णादि से निर्मित यन्त्रपत्र को ताम्रपात्र में रखकर घी से अभ्यङ्ग करके उसपर दुग्धधारा तथा जलधारा डालकर स्वच्छ वस्त्र से उसे पोंछकर उसपर देवी के अष्टगंध से नवयोन्यात्मक यन्त्र के बाहर अष्टदल तथा उसके ऊपर भूपुर लिख कर "ह्सौः सदाशिवमहाप्रेतपद्मासनाय नमः" इस मन्त्र से पुष्पाद्यासन देकर पीठ के मध्य में उसे स्थापित करके मध्ययोनि में मूलमन्त्र से मूर्ति की कल्पना करके आवाहन से लेकर पुष्पांजलि दानपर्यन्त उपचारों से पूजा करके देवी से आज्ञा लेकर आवरणपूजा करे। उसमें क्रम इस प्रकार है : पुष्पांजलि लेकर "संविन्मये परे देवि परामृत रसप्रिये। अनुज्ञां देहि बालायाः परिवारार्चनाय मे ॥१॥" यह पढ़ कर पुष्पांजलि देवे। इस प्रकार आज्ञा लेकर देवी के बाएँ कोने :

ॐ रत्यै नमः[१]। रतिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। इति सर्वत्र १। देवी दक्षिणकोणे ॐ प्रीत्यै नमः[१]। प्रीतिश्रीपा० २। देव्यग्रे ॐ मनोभवायै नमः मनोभवाश्रीपा० ३। इति पूजयेत्।

ततः पुष्पाञ्जलिमादाय मूलमुच्चार्य : अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले। भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥१॥ इति पठित्वा पुष्पाञ्जलिं च दत्त्वा पूजितास्तर्पिताः सन्तु इति वदेत्। इति प्रथमावरणम् १।

इसके बाद पुष्पांजलि लेकर "अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले। भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥१॥" यह पढ़ कर पुष्पांजलि देकर "पूजितास्तर्पितास्सन्तु" यह कहे। इति प्रथमावरण ॥१॥ (बालात्रिपुरा पूजनयन्त्र देखिये चित्र १४)

मध्ययोनि के बहिर्भाग में आग्नेयादि चारों दिशाओं के क्रम से :

आं सौः क्लीं ऐं हृदयाय नमः १। ईं सौः क्लीं ऐं शिरसे स्वाहा २। ऊं सौः क्लीं ऐं शिखायै बषट् ३। ऐं सौः क्लीं ऐं कवचाय हुं ४। मध्ये औं सौः क्लीं ऐं नेत्रत्रयाय वौषट् ५। दिक्षु च अः सौः क्लीं ऐं अस्त्राय फट् ६।

इति षडङ्गानि पूजयित्वा पुष्पाञ्जलिं दद्यात्। इति द्वितीयावरणम् २॥

इससे षडंगों की पूजा करके पुष्पांजलि देवे। इति द्वितीयावरण ॥२॥

इसके बाद मध्ययोनि के बहिर्भाग में पूर्वादि चारों दिशाओं में : ह्रीं मनोभवाय नमः मनोभवश्रीपा० १। क्लीं मकरध्वजाय नमः मकरध्वजश्रीपा० २। ऐं कन्दर्पाय नमः कन्दर्पश्रीपा ३। ब्लूं मन्मथाय नमः मन्मथश्रीपा० ४। मध्ये स्त्रीं कामदेवाय नमः कामदेवश्रीपा० ५।

इति पूजयित्वा पुष्पाञ्जलिं दद्यात्। इति तृतीयावरणम् ॥३॥

इससे पूजा करके पुष्पांजलि देवे। इति तृतीयावरण ॥३॥

इसके बाद मध्ययोनि के बाहर मनोभव आदि के समीप :

द्रां द्राविण्यै नमः द्राविणीश्रीपा० १। द्रीं क्षोभिण्यै नमः क्षोभिणीश्रीपा० २। क्लीं वशीकरिण्यै नमः वशीकरिणीश्रीपा० ३। ब्लूंआकर्षिण्यै नमः आकर्षिणीश्रीपा० ४। स्त्रीं सम्मोहिन्यै नमः सम्मोहिनीश्रीपा० ५।

इति सम्पूज्य पुष्पाञ्जलिं दद्यात्। इति चतुर्थावरणम् ॥४॥

इससे पूजा करके पुष्पांजलि देवे। इति चतुर्थावरण ॥४॥

ततोष्टयोनेः पूज्यपूजकयोरन्तरालं प्राची तदनुसारेण अन्याः दिशः प्रकल्प्य।

इसके बाद अष्टयोनि में पूज्य तथा पूजक के अन्तराल को प्राची दिशा मान कर तदनुसार अन्य दिशाओं की कल्पना करके:

प्राचीक्रमेण ॐ सुभगायै नमः[5]। सुभगाश्रीपा० १। ॐ भगायै नमः[6]। भगाश्रीपा० २। ॐ भगसर्पिण्यै नम[7]। भगसर्पिणीश्रीपा० ३। ॐ भगमाल्यै नमः[8] भगमालीश्रीपा० ४। ॐ अनङ्गनङ्गायै नमः[9] अनङ्गनङ्गाश्रीपा० ५। ॐ कुसुमापरायै नमः[10]। कुसुमापराश्रीपा० ६। ॐ अनङ्गमेखलायै नमः[11]। अनङ्गमेखलाश्रीपा० ७। ॐ अनङ्गदमनायै नमः[12]। अनङ्गदमनाश्रीपा० ८।

इत्यष्टौ शक्तीः पूजयित्वा पुष्पाञ्जलिं दद्यात्। इति पञ्चमावरणम्॥५॥

इससे आठ शक्तियों की पूजा करके पुष्पांजलि देवे। इति पंचमावरण॥५॥

ततोष्टदलमूले।

इसके बाद अष्टदल मूल में:

प्राचीक्रमेण ॐ आं ब्राह्म्यै नमः[13]। ब्राह्मीश्रीपा० १। ॐ ईं माहेश्वर्यै नमः[14]। माहेश्वरीश्रीपा० २। ॐ कौमार्यै नमः[15]। कौमारीश्रीपा० ३। ॐ ॠं वैष्णव्यै नमः[16]। वैष्णवीश्रीपा० ४। ॐ ॡं वाराह्यै नमः[17]। वाराही श्रीपा० ५। ॐ ऐं इन्द्राण्यै नमः[18]। इन्द्राणीश्रीपा० ६। ॐ औं चामुण्डायै नमः[19]। चामुण्डाश्रीपा० ७। ॐ अः महालक्ष्म्यै नमः[20]। महालक्ष्मीश्रीपा० ८।

इत्यष्टौ मातरः सम्पूज्य पुष्पाञ्जलिं दद्यात्। इति षष्ठावरणम्॥६॥

इससे आठ मातृकाओं की पूजा करके पुष्पांजलि देवे। इति षष्ठावरण॥६॥

ततोष्टदलमध्ये।

इसके बाद अष्टदल के मध्य:

ॐ अं असिताङ्गभैरवाय नमः[21]। असिताङ्गभैरवश्रीपा० १। ॐ इं रुरुभैरवाय नमः[22]। रुरुभैरवश्रीपा० २। ॐ उं चण्डभैरवाय नमः[23]। चण्डभैरवश्रीपा० ३। ॐ ऋं क्रोधभैरवाय नमः[24]। क्रोधभैरवश्रीपा० ४। ॐ लृं उन्मत्तभैरवाय नमः[25]। उन्मत्तभैरवश्रीपा० ५। ॐ एं कपालभैरवाय नमः[26]। कपालभैरवश्रीपा० ६। ॐ ओं भीषणभैरवाय नमः[27]। भीषणबैरवश्रीपा० ७। ॐ अं संहारभैरवाय नमः[28]। संहारभैरवश्रीपा० ८।

इत्यष्टौ भैरवान् पूजयित्वा पुष्पाञ्जलिं दद्यात्। इति सप्तमावरणम्॥७॥

इससे आठ भैरवों की पूजाकर पुष्पांजलि देवे। इति सप्तमावरण॥७॥

ततोष्टदलाग्रेषु।

इसके बाद अष्टदलाग्रों में:

प्राचीक्रमेण ॐ कामरूपपीठाय नमः[29]। कामरूपपीठश्रीपा० १। ॐ मलयपीठाय नमः[30]। मलयपीठश्रीपा० २। ॐ कोल्लगिरिपीठाय नमः[31]। कोल्लगिरिपीठश्रीपा० ३। ॐ चौहारापीठाय नमः[32]। चौहारापीठश्रीपा ४। ॐ कुलान्तकपीठाय नम[33]। कुलान्तकपीठश्रीपा० ५। ॐ जालन्धरपीठाय नमः[34]। जालन्धरपीठश्रीपा० ६। ॐ उड्यानपीठाय नमः[35]। उड्यानपीठश्रीपा० ७। ॐ कोट्टपीठाय नमः[36]। कोट्टपीठश्रीपा० ८।

इत्यष्टौ पीठानि पूजयित्वा पुष्पाञ्जलिं दद्यात्। इत्यष्टमावरणम्॥८॥

इससे आठ पीठों की पूजा करके पुष्पांजलि देवे। इत्यष्टमावरण॥८॥

ततो भूपुराभ्यन्तरे पूर्वादिक्रमेण दशदिक्षु।

इसके बाद भूपुर के भीतर पूर्वादि क्रम से दशदिशाओं में:

ॐ हेतुकाय नमः[37]। हेतुकश्रीपा० १। ॐ त्रिपुरान्तकाय नमः[38]। त्रिपुरान्तकश्रीपा० २। ॐ वेतालाय नमः[39]। वेतालश्रीपा० ३। ॐ अग्निजिह्वाय नमः[40]। अग्निजिह्वश्रीपा० ४। ॐ कालान्तकाय नमः[41]। कालान्तकश्रीपा० ५। ॐ कपालाय नमः[42]। कपालश्रीपा० ६। ॐ एकपादाय नम[43]।

एकपादश्रीपा० ७। ॐ भीमरूपाय नमः[४४]। भीमरूपश्रीपा० ८। ॐ मलयाय नमः[४५]। मलयश्रीपा० ९। ॐ हाटकेश्वराय नमः[४६]। हाटकेश्वरश्रीपा० १०।

इति पूजयित्वा पुष्पाञ्जलिं दद्यात्। इति नवमावरणम्॥९॥

इससे पूजा करके पुष्पांजलि देवे। इति नवमावरण॥९॥

ततो दशमावरणे भूपुराद्बहिः इन्द्रादीन् दशदिग्पालान् [४७-५४] पूजयित्वा पुष्पाञ्जलिं दद्यात्॥१०॥

इसके बाद दशमावरण में भूपुर से बाहर इन्द्र आदि दशदिक्पालों की पूजा करके पुष्पांजलि देवे॥१०॥

एकादशे आवरणे इन्द्रादिसमीपे वज्राद्यायुधानि [५५-६२] पूजयित्वा पुष्पाञ्जलिं दद्यात्॥११॥

एकादश आवरण में इन्द्रादि के समीप वज्र आदि आयुधों की पूजा करके पुष्पांजलि देवे। इति एकादशावरण॥११॥

उसके बाहर :

पूर्वे ॐ बं बटुकाय[६३] नमः। बटुकश्रीपा० १। दक्षिणे ॐ यां योगिनीभ्यो नमः[६४]। योगिनीश्रीपा० २। पश्चिमे ॐ क्षं क्षेत्रपालाय[६५] नमः। क्षेत्रपालश्रीपा० ३। उत्तरे ॐ गं गणपतये नमः[६६]। गणपतिश्रीपा० ४। आग्नेयां ॐ वसुभ्यो नमः[६७]। वसुश्रीपा० ५। नैर्ऋत्यां ॐ सूर्येभ्यो नमः[६८]। सूर्यश्रीपा० ६। वायव्यां ॐ शिवेभ्यो नमः[६९]। शिवश्रीपा० ७। ईशान्यां ॐ भूतेभ्यो[७०] नमः भूतश्रीपा० ८।

इति पूजयित्वा पुष्पाञ्जलिं दद्यात्। इति द्वादशावरणम्॥१२॥

इससे पूजा करके पुष्पांजलि देवे। इति द्वादशावरण॥१२॥

इत्यावरणपूजां कृत्वा धूपादिनमस्कारान्तं सम्पूज्यं जपं कुर्यात्। अस्य पुरश्चरणं त्रिलक्षजपः। किंशुकपुष्पैः करवीरपुष्पैर्वामधुरान्वितैर्दशांशतो होमः। तद्दशांशेन तर्पणमार्जनब्राह्मणभोजनानि कुर्यात्। एवं कृते मन्त्रः सिद्धो भवति। एतस्मिन्सिद्धे मन्त्रे मन्त्री प्रयोगान् साधयेत्।

इस प्रकार आवरणपूजा करके धूपदान से लेकर नमस्कार पर्यन्त पूजा करके जप करे। इसका पुरश्चरण तीन लाख जप है। घी, मधु, तथा शकर से युक्त पलाश के फूलों से या कनेर के फूलों से जप का दशांश होम करना चाहिए। ऐसा करने पर मन्त्र सिद्ध होता है। मन्त्र के सिद्ध हो जाने पर प्रयोगों को सिद्ध करे।

लक्षत्रयं जपेन्मन्त्रं दशांशं किंशुकोद्भवैः। पुष्पैर्हयारिजैर्वापि जुहुयान्मधुरान्वितैः॥१॥ एवमेवं भजेद्बालामीशः स्याद्धनविद्ययोः। रक्तांभोजैर्हुते नार्यो वश्याः स्युः सर्षपैर्नृपाः॥२॥ नन्द्यावर्तेराजवृक्षैः[१] कुन्दैः पाटलचम्पकैः। पुष्पैर्बिल्वफलैर्वापि होमाल्लक्ष्मीः स्थिरा भवेत्॥३॥ अपमृत्युं जयेन्मन्त्री गुडूच्या दुग्धयुक्तया। पयोक्तदूर्वाहोमात्तु नीरोगायुः समश्नुते॥४॥ ज्ञानं कवित्वं लभते चन्द्रा[२]गुरु पुरैर्हुतैः[३]। द्विजेन्द्रा वश्यतांयान्ति कुसुमैरपराजितैः[४]॥५॥ कह्लारैः क्षत्रियाः कर्णिकारजैः क्षितिपाङ्गनाः। कोरण्टकुसुमैर्वैश्याः पादजाः पाटलैर्हुतैः॥६॥ पलाशपुष्पैर्वाक्सिद्धिरन्नात्तिरन्नहोमतः। सारघ[५]क्षीरदध्यक्तान् लाजान् हुत्वा रुजो जयेत्॥७॥

---

१ नन्द्यावर्तस्तगरः।

२ चन्द्रः कर्पूरः।

३ पुरं गुग्गुलु।

४ अपराजितां योन्याकारपुष्पवल्ली तदीयान्यपराजितानि तैः।

५ सारघं मधु।

तीन लाख मन्त्र का जप करना चाहिए और उसका दशांश पलाश के फूलों या कनेर के फूलों से होम करना चाहिए। इस प्रकार बालाषोडशी की उपासना करने से साधक विद्या और धन का स्वामी होता है। लाल कमल से होम करने पर स्त्रियों का वशीकरण होता है। सरसों से होम करने पर राजे वश में होते हैं। नन्द्यावर्त, राजवृक्ष, कुन्द, पाढल तथा चम्पा के फूलों से या बेल के फलों से होम करने से लक्ष्मी स्थिर होती है। साधक दुग्धयुक्त गुडूची से अपमृत्यु को जीत लेता है। दूध से युक्त दूब के होम से साधक नीरोग आयु प्राप्त करता है। कपूर, अगर तथा गुग्गुल से होम करने से मनुष्य ज्ञान तथा कविता करने की शक्ति पाता है। अपराजिता के फूलों से होम करने से ब्राह्मण वश में हो जाते हैं। कल्हार के फूलों के होम करने से क्षत्रिय वश में होते हैं। कनेर के फूलों से होम करने से राजकन्याएँ वश में हो जाती हैं। कोरंट के फूलों से वैश्य तथा पाढल के फूलों से होम करने से शूद्र वश में हो जाते हैं। पलाश के फूलों से होम करने से वाणी की सिद्धि होती है। अन्न से होम करने से अन्न की प्राप्ति होती है। मधु तथा दही से युक्त लावा के होम से मनुष्य रोगों को जीत लेता है।

अथ वशीकरणतिलकः।

रक्तचन्दनकर्पूरकर्चूरागुरुरोचनाः। चन्दनं केसरं मांसी क्रमांद्भागैर्नि योजयेत् ॥८॥ भूमिचन्द्रैकनन्दाब्धिदिक्सप्तनिगमोन्मितैः। श्मशाने कृष्णभूतस्य निशि नीहारपाथसा ॥९॥ कुमार्या पेषयेत्तानि मन्त्रेणाप्यभिमन्त्रयेत्। विदधेत्तिलकं तेन दर्शनाद्वशयेज्जनान् ॥१०॥

वशीकरण तिलक: एक भाग लाल चन्दन, एक भाग कपूर, एक भाग कचूर, नव भाग अगर, चार भाग गोरोचन, दश भाग सफेद चन्दन, सातभाग केसर, चारभाग जटामांसी, इन द्रव्यों को घीकुवार तथा ओला या ओस के जल से कृष्ण चतुर्दशी की रात को श्मशान में पीस कर मूल मन्त्र से अभिमन्त्रित कर उसका तिलक लगावे तो साधक दर्शनमात्र से लोगों को वश में कर लेगा।

गजसिंहादिभूतानि राक्षसाञ्छाकिनीरपि। प्रयोगेष्वेषु कथ्यन्ते क्रमाद्ध्यानानि सिद्धये ॥११॥

हाथी, सिंह, भूत, राक्षस, शाकिनी आदि को भी वश में करने के लिए प्रयोगों में ध्यान की पद्धति कही जा रही है:

अथ कार्यपरत्वेन ध्यानभेदानाह।

अब मैं कार्यपरक ध्यान-भेदों को कहता हूं:

सबसे पहले लक्ष्मी प्राप्ति के लिए ध्यान:

मातुलिङ्गपयोजन्महस्तां कनकसन्निभाम्। पद्मासनगतां बालां लक्ष्मीप्राप्तौ विचिन्तयेत् ॥१२॥

ज्ञानप्राप्ति के लिए ध्यान इस प्रकार है:

वरपीयूषकलशपुस्तकाभीतिधारिणीम्। सुधां स्रवन्तीं ज्ञानाप्तौ ब्रह्मरन्ध्रे विचिन्तयेत् ॥१३॥

रोगनाश के लिए ध्यान इस प्रकार है:

शुक्लाम्बरां शशाङ्काभां रोगनाशे स्मरेच्छिवाम्। अकारादिक्षकारान्तवर्णावयवरूपिणीम् ॥१४॥

वशीकरण के लिए ध्यान इस प्रकार है:

सृणिपाशधरां देवीं रत्नालङ्कारभूषिताम्। प्रसन्नामरुणां ध्यायेद्वशी करणसिद्धये ॥१५॥

अथ प्रत्येकमन्त्रस्य जपध्यानविधिं ब्रुवे।

अब प्रत्येक मन्त्र के जप तथा ध्यान की विधि कहते हैं।

इसमें सबसे पहले वाग्बीज ध्यान इस प्रकार है:

विद्याक्षमालासुकपालमुद्राराजत्करां कुन्दसमानकान्तिम्। मुक्ताफलालंकृतिशोभिताङ्गीं बालां स्मरेद्वाङ्मयसिद्धिहेतोः ॥१६॥

अस्य विधानं: ध्यात्वैवं वाग्भवं लक्षत्रयं शुक्लाम्बरावृतः। शुक्लचन्दनलिप्ताङ्गो

मौक्तिकाभरणान्वितः ॥१७॥ जपित्वा तद्दशांशेन पालाशकुसुमैर्नवैः। जुहुयान्मधुराक्तैर्यः स भवेद्युवतिप्रियः ॥१८॥

इसका विधान : इस प्रकार सफेद वस्त्र पहन कर सफेद चन्दन शरीर में लगाकर मोती की माला धारण कर वाग्भव बीज (ऐं) का तीन लाख जप कर उसका दशांश मधुयुक्त पलाश के फूलों से होम करे तो साधक युवतियों का प्रिय हो जाता है।

कामबीज का ध्यान :

भजेत्कल्पवृक्षाध उद्दीप्तरत्नासने सन्निषण्णां मदाघूर्णिताक्षीम्। करैर्बीजपूरं कृपालेषुचापं सपाशांकुशं रक्तवर्णं दधानाम् ॥१९॥

अस्य विधानं : ध्यात्वा देवीं जपेल्लक्षत्रयं यो मध्यबीजकम्। रक्तवस्त्रावृतो रक्तभूषणो रक्तलेपनः ॥२०॥ दशांशं मालतीपुष्पैश्चन्द्रचन्दनलोलितैः। जुहुयात्तस्य वश्याः स्युस्त्रिलोकीजनताः क्षणात् ॥२१॥

इसका विधान : लाल वस्त्र पहनकर लाल आभूषण धारणकर तथा लाल लेपन लगाकर यदि साधक देवी का ध्यान करके मध्य बीज (क्लीं) का तीन लाख जप तथा जप का दशांश चन्दन से लिप्त मालती के फूलों से होम करे तो क्षण में तीनों लोकों की जनता उसके वश में हो जाती है।

तृतीय बीज का ध्यान :

व्याख्यानमुद्रामृतकुम्भविद्यामक्षस्रजं सन्दधतीं कराग्रैः। चिद्रूपिणीं शारदचन्द्रकान्तिं बालां स्मरेन्मौक्तिकभूषिताङ्गीम् ॥२२॥

अस्य विधानं ध्यात्वैवं चरमं बीजं जपेल्लक्षत्रयं सुधीः। सितवस्त्रानुलेपाढ्यमात्मानं देवतां स्मरेत् ॥२३॥ मालतीकुसुमैर्हुत्वा चन्दनाक्तैर्दशांशतः। लक्ष्मीविद्यासुकीर्तीनामाधारो जायतेऽचिरात् ॥२४॥ इदं रहस्यं नाख्येयं कृतघ्ने कितवे शठे। परीक्षिताय दातव्यमन्यथा दातृदोषदम् ॥२५॥

इसका विधान : इससे अन्तिम बीज (सौः) का ध्यान कर सुधी श्वेत वस्त्र तथा श्वेत अनुलेपन धारण करके तीन लाख जप करे और देवता का स्मरण करे। जप का दशांश चन्दन से सिक्त मालती के फूलों से होम करे तो साधक शीघ्र ही लक्ष्मी, विद्या तथा सुयश का आधार बन जाता है। इस रहस्य को किसी धूर्त और कृतघ्न तथा शठ को नहीं बताना चाहिये। परीक्षित व्यक्ति को ही देना चाहिये, अन्यथा दाता को दोष लगता है।

अथ जपभेदान् कामभेदेनाह : वागन्त्यकामान्[1] प्रजपेदरीणां क्षोभहेतवे। कामवागन्त्यबीजानि[2] त्रैलोक्यस्य वशीकृतौ ॥२६॥ कामान्त्यबाणीबीजानि[3] मुक्तये नियतो जपेत्। पूजाविधौ तु बालायास्त्रिविधानर्चयेद्गुरून् ॥२७॥

कामभेद से जपभेद : वाग्बीज (ऐं), अन्य बीज सौः), कामबीज (क्लीं) इन बीजों को शत्रु को क्षुब्ध करने के लिए जपना चाहिये। कामबीज(क्लीं), वाग्बीज (ऐं) तथा अन्त्यबीज (सौः) का जप मुक्ति के लिए शान्तचित होकर करना चाहिये। बाला की पूजा की विधि में तीन प्रकार से गुरुओं की पूजा करनी चाहिये।

---

१ ऐं सौं क्लीं इति जपेच्चेदरिनाशः स्यात्।

२ क्लीं ऐं सौरिति वशीकरणे।

३ क्लीं सौः ऐमिति मुक्त्यै।

अथ बालागायत्रीमन्त्रः 'क्लीं त्रिपुरादेवि विद्महे कामेश्वरी धीमहि तन्नः क्लिन्ने प्रचोदयात्'' ।

गायत्री त्रिपुरा सर्वसिद्धिदा सुरसेविता।

त्रिपुरा गायत्री मन्त्र सभी को सिद्धि देने वाला तथा देवो से भी सेवित है ।

अथ बालामन्त्रभेदानाह। अथ वक्ष्यामि बालाया भेदानागमगोपितान्। मन्त्रो यथा :

बालामन्त्र के भेद : अब मैं बालादेवी के उन भेदों को बताऊँगा जो आगमों में गोपित हैं। मन्त्र यह है :

ह्रीं क्लीं ह्सौः। यह तीन अक्षरों का मन्त्र है।

ह्रीं क्लीं ह्सौः सौः क्लीं ह्रीं। यह छह अक्षरों का मन्त्र है।

श्रीं क्लीं ह्रीं ऐं क्लीं सौं ह्रीं क्लीं श्रीं। यह नव अक्षरों का मन्त्र है।

ऐं क्लीं सौः बालात्रिपुरे स्वाहा। यह दश अक्षरों का मन्त्र है।

ऐं क्लीं सौं बालात्रिपुरे सिद्धिं देहि नमः। यह चौदह अक्षरों का मन्त्र है।

ह्रीं श्रीं क्लीं त्रिपुरे भारति कवित्वं देहि स्वाहा। यह सोलह अक्षरों का मन्त्र है।

स्क्लीं क्ष्म्यौं ऐं त्रिपुरे सर्ववांछितं देहि नमः स्वाहा। यह सत्रह अक्षरों का मन्त्र है।

ह्रीं ह्रीं ह्रीं प्रौढत्रिपुरे आरोग्यमैश्वर्यं च देहि स्वाहा। यह अट्ठारह अक्षरों का मन्त्र है।

ह्रीं श्रीं क्लीं त्रिपुरमर्दने सर्वं शुभं साधय स्वाहा। यह दूसरा अट्ठारह अक्षरों का मन्त्र है।

ह्रीं श्रीं क्लीं बालात्रिपुरे मदायत्तां विद्यां कुरु नमः स्वाहा। यह बीस अक्षरों का मन्त्र है।

ह्रीं श्रीं क्लीं परापरे त्रिपुरे सर्वमीप्सितं साधय स्वाहा। यह बीस अक्षरों का दूसरा मन्त्र है।

क्लीं क्लीं श्रीं श्रीं ह्रीं त्रिपुराललिते मदीप्सितां योषितं देहि वांछितं कुरु स्वाहा।
यह अट्ठाइस अक्षरों का मन्त्र है।

क्लीं क्लीं क्लीं श्रीं श्रीं श्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं त्रिपुरसुन्दरि सर्वं जगत् मम वश कुरुकुरु मह्यं बलं देहि स्वाहा। यह पचीस अक्षरों का मन्त्र है।

ये चौदह बाला मन्त्र के भेद हैं।

इसका विधान :

विनियोग : एतेषां चतुर्दशबालामन्त्राणां दक्षिणामूर्तिऋषिः गायत्रीच्छन्दः त्रिपुराबाला देवता ममाभीष्टसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

अथ ध्यानं।

पाशांकुशौ पुस्तकमक्षसूत्रं करैर्दधाना सकलामराच्या। रक्ता त्रिनेत्रा शशिशेखरेयं ध्येयाऽखिलर्द्ध्यै त्रिपुरात्र बाला।

इति ध्यात्वा लक्षं जपेत्। करवीरपुष्पैः दशांशतो होमः। अन्यत् सर्वं पूर्ववत्।

इससे ध्यान करके एक लाख जप करे। कनेर के फूलों से जप का दशांश होम करे। अन्य सब पूर्ववत् जानना चाहिये।

जपेल्लक्षं दशांशेन होमः पुष्पैर्हयारिजैः। पूजा पूर्वोदिते पीठे गैरत्याद्यैश्च सायकैः ॥१॥
मातृभिर्दिगधीशास्त्रैः प्रयोगाः पूर्ववन्मताः।

एक लाख जप करे। कनेर के फूलों से जप का दशांश होम करे। पूर्वोदित पीठ पर गैरत्यादि सायकों से मातृकाओं, दिशाओं के अधिपतियों तथा उनके अस्त्रों की पूर्ववत् पूजा करनी चाहिये।

अथ धारणयन्त्रं।

यन्त्रं त्रैपुरमाख्यातं जप्तं सम्पातसाधितम्। बहुना विधृतं दद्याद्धनं कीर्तिं सुखं सुतान्॥२॥

अथ धारणयन्त्र : सम्पात से सिद्ध त्रैपुर यन्त्र को बहुत लोगों को धारण करना चाहिये। यह कीर्ति, सुख तथा पुत्रों को देता है। (बालाधारण यन्त्र देखिये चित्र १५)

इति बालात्रिपु रामन्त्रप्रयोगः। इति षोडशीपटलं समाप्तम्।

त्रिपुरसुन्दरी (षोडशी) कवच

देव्युवाच।

भगवन्देवदेवेश लोकानुग्रहकारक। त्वत्प्रसादान्महादेव श्रुता मन्त्रास्त्वनेकधा॥१॥ साधनं विविधं देव कीलकोद्धरणं तथा। शापादिदूषणोद्धारः श्रुतस्त्वत्तो मयाप्रभो॥२॥ राजराजेश्वरीदेव्याः कवचं सूचितं मया। श्रोतुमिच्छामि त्वत्तस्तत्कथयस्व दयानिधे॥३॥

देवी बोली : हे देवदेवेश, लोकानुग्रहकारक भगवन् महादेव! आपकी कृपा से मैंने अनेक प्रकार के मन्त्र सुने; अनेक प्रकार के साधन भी सुने; कीलक का उद्धार भी सुना; शापादि दूषणों का उद्धार भी सुना। हे प्रभो! जो मैंने राजराजेश्वरी देवी का कवच सूचित किया था उसे मैं सुनना चाहती हूं। हे दयानिधे! कृपया आप उसे कहें।

ईश्वर उवाच।

लक्षवारसहस्राणि वारितासि पुनःपुनः। स्त्रीस्वभावात्पुनर्देवि पृच्छसि त्वं मम प्रिये॥४॥ अत्यन्तकवचं गुह्यं सर्वकामफलप्रदम्। प्रीतये तव देवेशि कथयामि शृणुष्व तत्॥५॥

ईश्वर बोले : हे प्रिये! हजारों लाखों बार मैंने तुम्हें पुनः पुनः मना किया फिर भी तुम स्त्रीस्वभाव से उसे पूछ रही हो। यह कवच अत्यन्त रहस्यमय तथा सभी अभीष्टों का फल देने वाला है। हे देवेशि! तुम्हारी प्रीति के लिए मैं कह रहा हूं, उसे तुम सुनो।

विनियोग : अस्य षोडशीकवचस्य महादेवऋषिः प्रस्तारपंक्तिश्छन्दो राजराजेश्वरी महात्रिपुरसुन्दरी देवता धर्मार्थकाममोक्षसाधने पाठे विनियोगः।

पूर्वे मां भैरवी पातु बाला मां पातु दक्षिणे। मालिनी पश्चिमे पातु त्रासिनी तूत्तरेऽवतु॥६॥ ऊर्ध्वं पातु महादेवी महात्रिपुरसुन्दरी। अधस्तात्पातु देवेशी पातालतलवासिनी॥७॥ आधारे वाग्भवः पातु कामराजस्तथा हृदि। डामरः पातु मां नित्यं मस्तके सर्वकामदः॥८॥ ब्रह्मरन्ध्रे सर्वगात्रे छिद्रस्थाने च सर्वदा। महाविद्या भगवती पातु मां परमेश्वरी॥९॥ ऐं ह्रीं ललाटे मां पातु क्लीं क्लुं सश्चनेत्रयोः। मे नासायां कर्णयोश्च द्रीं द्रैं द्रां द्रीं चिबुके तथा॥१०॥ सौः पातु गले हृदये सहह्रीं नाभिदेशके। कलह्रीं क्लीं स्त्रीं गुह्यदेशे सह्रीं पादयोस्तथा॥११॥ सह्रीं मां सर्वतः पातु सकली पातु सन्धिषु। जले स्थले तथा काशे दिक्षु राजगृहे तथा॥१२॥ हूं क्षेमा त्वरिता पातु सह्रीं सक्लीं मनोभवा। हंसः पायान्महादेवि परं निष्कलदेवता॥१३॥ विजया मङ्गला दूती कल्याणी भगमालिनी। ज्वाला च मालिनी नित्या सर्वदा पातु मां शिवा॥१४॥

इत्येवं कवचं देवि देवानामपि दुर्लभम्। तव प्रीत्या मयाख्यातं गोपनीयं प्रयत्नतः॥१५॥ इदं रहस्यं परमं गुह्याद्गुह्यतरं प्रिये। धन्यं यशस्यमायुष्यभोगमोक्षप्रदं शिवे॥१६॥ दुःस्वप्ननाशनं पुण्यं नरनारीवशङ्करम्। आकर्षणकरं देवि स्तम्भोच्चाटनकं शिवे॥१७॥ इदं कवचमज्ञात्वा राजराजेश्वरीं पराम्। योर्चयेद्योगिनीवृन्दैः स भक्ष्यो नात्र संशयः॥१८॥ न तस्य मन्त्रसिद्धिः

स्यात्कदाचिदपि शाङ्करि। इह लोके च दारिद्र्यं रोगदुःखाशुभानि च ॥१९॥ परत्र नरकं गत्वा पशुयोनिमवाप्नुयात्। तस्मादेतत्सदाभ्यासादधिकारी भवेत्किल ॥२०॥

दे देवि! तुम्हारी प्रसन्नता के लिए इस कवच को मैंने तुम्हें बताया है। इसे प्रयत्न से तुम्हें गुप्त रखना चाहिये। हे प्रिये! यह परम रहस्य तथा गुह्य है। हे शिवे! यह धन, यश, आयु, भोग तथा मोक्ष को देने वाला है। हे देवि! यह दुःस्वप्न का नाशक, पुण्य, नर-नारी को वश में करने वाला आकर्षणकारक, स्तम्भनकारक तथा उच्चाटनकारक है। इस कवच को बिना जाने परा राजराजेश्वरी की जो पूजा करता है उसे योगिनियाँ खा जाती हैं। इसमें कोई संशय नहीं है। हे शांकरि! ऐसे व्यक्ति को सिद्धि प्राप्त नहीं हो सकती। इस संसार में उसे दरिद्रता, रोग, दुःख, तथा अशुभ प्राप्त होते हैं और परलोक में वह नरक में जाकर पशुयोनि प्राप्त करता है। इसलिए इसका सदा अभ्यास करने वाला ही निश्चितरूप से अधिकारी हो सकता है।

मद्वक्त्रनिर्गतमिदं कवचं सुपुण्यं पूजाविधिश्च पुरतो विधिना पठेद्यः। सौभाग्यभागललितानि शुभानि भुक्त्वा देव्याः पदं भजति तत्पुरन्तकाले ॥२१॥ इति कुलानन्दसंहितायां षोडशीकवचं समाप्तम्।

मेरे मुख से निकले हुये पुण्यप्रद कवच तथा पूजाविधि को जो देवी के सामने विधि से पढ़ता है, वह सौभाग्य का भागी हो सुन्दर शुभ फलों का उपभोग करके अन्त में देवी के परमपद को प्राप्त होता है।

त्रिपुट (त्रिशक्तिरूपा) लक्ष्मीकवच

श्रीदेव्युवाच।

भगवन् सर्वधर्मज्ञसर्वशास्त्रार्थपारग। त्रिशक्तिरूपालक्ष्म्याश्च कवचं यत्प्रकाशितम् ॥१॥ सर्वार्थसाधनं नाम कथयस्व कृपांबुधे।

श्रीदेवी बोलीं: सब धर्मों तथा सब शास्त्रों को जाननेवाले हे भगवन्! आपने जिस त्रिशक्तिरूप लक्ष्मीकवच को बताया था, उस सर्वार्थसाधन नामक कवच को हे कृपासागर! आप मुझे बतायें।

ईश्वर उवाच। श्रृणु देवि प्रवक्ष्यामि कवचं परमाद्भुतम् ॥५॥ सर्वार्थसाधनं नाम त्रैलोक्ये चातिदुर्लभम्। सर्वसिद्धिमयं देवि सर्वेश्वर्यप्रदायकम् ॥३॥ पठनाद्धारणान्मर्त्यस्त्रैलोक्यैश्वर्यभाग्भवेत्।

ईश्वर बोले: हे देवि! सुनो, मैं परम अद्भुत कवच को कहूंगा। यह सर्वार्थसाधन नामक कवच तीनों लोकों में अत्यन्त दुर्लभ है। यह समस्त सिद्धिमय तथा समस्त ऐश्वर्य को देने वाला है। इसके पठन तथा धारण से मनुष्य तीनों लोकों के ऐश्वर्य का भागी होता है।

विनियोग: सर्वार्थसाधनस्यास्य कवचस्य ऋषिः शिवः ॥४॥ छंदो विराट् त्रिःशक्तिरूपा जगद्धात्री च देवता। धर्मार्थकाममोक्षेषु विनियोगः प्रकीर्तितः ॥५॥

श्रीबीजं मे शिरः पातु लक्ष्मीरूपा ललाटकम्। ह्रीं पातु दक्षिणं नेत्रं वामनेत्रं सुरेश्वरी ॥६॥ क्लीं पातु दक्षकर्णं मे वामं कामेश्वरी तथा। लक्ष्मीर्घ्राणं सदा पातु वदनं पातु केशवः ॥७॥ गौरी तु रसनां पातु कंठं पातु महेश्वरी। स्कंधदेशं रतिः पातु भुजौ तु मकरध्वजः ॥८॥ शंखनिधिः करौ पातु वक्षः पद्मनिधिः सदा। ब्राह्मी मध्यं सदा पातु नाभिं पातु महेश्वरी ॥९॥ कुमारी पृष्ठदेशं मे गुह्यं रक्षतु वैष्णवी। वाराही सक्थिनी पातु ऐं ह्रीं पातु पदद्वयम् ॥१०॥ भार्यां रक्षतु चामुंडा लक्ष्मी रक्षतु पुत्रकान्। इन्द्रः पूर्वे सदा पातु आग्नेयामग्निदेवता ॥११॥ याम्ये यमः सदा पातु नैर्ऋत्ये निर्ऋतिश्च माम्। पश्चिमे वरुणः पातु वायव्यां वायुदेवता ॥१२॥ सौम्ये सोमः सदा पातु

ऐशान्यामीश्वरोऽवतु। उर्ध्वं प्रजापतिः पातु अधश्चानन्तदेवता ॥१३॥ राजद्वारे श्मशाने च अरण्ये प्रान्तरे तथा। जले स्थले चान्तरिक्षे शत्रूणां विग्रहे तथा ॥१४॥ एताभिः सहिता देवी त्रिबीजात्मा महेश्वरी। त्रिशक्तिश्च महालक्ष्मीः सर्वत्र मां सदाऽवतु ॥१५॥ इति ते कथितं देवि सारात्सारतरं परम् सर्वार्थसाधनं नाम कवचं परमाद्भुतम् ॥१६॥ अस्यापि पठनात्सद्यः कुबेरोपि धनेश्वरः इन्द्राद्याः सकला देवा धारणात्पठनाद्यतः ॥१७॥ सर्वसिद्धीश्वराः संतः सर्वैश्वर्यमवाप्नुयुः। पुष्पाञ्जल्यष्टकं दत्त्वा मूलेनैव पठेत्सकृत् ॥१८॥ संवत्सरकृतायास्तु पूजायाः फलमाप्नुयात्। प्रीतिमन्योन्यतः कृत्वा कमला निश्चला गृहे ॥१९॥ वाणी च निवसेद्वक्त्रे सत्यं न संशयः। यो धारयति पुण्यात्मा सर्वार्थसाधनाभिधम् ॥२०॥ कवचं परमं पुण्यं सोपि पुण्यवतां वरः। सर्वैश्वर्ययुतो भूत्वा त्रैलोक्यविजयी भवेत् ॥२१॥ पुरुषो दक्षिणे बाहौ नारी वामभुजे तथा। बहुपुत्रवती भूत्वा वंध्यापि लभते सुतम् ॥२२॥ ब्रह्मास्त्रादीनि शस्त्राणि नैव कृन्तन्ति तं जनम्। एतत्कवचमज्ञात्वा यो जपेत्परमेश्वरीम्। दारिद्रयं परमं प्राप्य सोऽचिरान्मृत्युमाप्नुयात् ॥२३॥

इति रुद्रयामले त्रिशक्त्याः सर्वार्थसाधननामकं कवचं समाप्तम्।

श्रीविद्याकवच

देव्युवाच।

देवदेव महादेव भक्तनां प्रीतिवर्धनम्। सूचितं यन्महादेव्याः कवचं कथयस्व मे ॥१॥

देवी बोलीं: हे देवदेव! हे महादेव! भक्तों की प्रीति को बढ़ाने वाले जिस कवच की चर्चा आपने की थी उसे आप मुझे बतायें।

महादेव उवाच। शृणु देवि प्रवक्ष्यामि कवचं देवदुर्लभम्। न प्रकाश्यं परं गुह्यं साधकाभीष्टसिद्धिदम् ॥२॥

महादेव बोले: हे देवि! देवदुर्लभ कवच मैं तुम्हें बताऊँगा। यह अत्यन्त गोपनीय एवं साधक के अभीष्ट को सिद्ध करने वाला है। इसे किसी को न बताना।

विनियोग : **कवचस्य ऋषिर्देवि दक्षिणामूर्तिरव्ययः।** छन्दः पंक्तिः समुद्दिष्टं देवी त्रिपुरसुन्दरी ॥३॥ धर्मार्थकाममोक्षाणं विनियोगस्तु साधने।

वाग्भवः कामराजश्च शक्तिर्बीजं सुरेश्वरी ॥४॥ (ऐं) वाग्भवः पातु शीर्षे मां (क्लीं) कामराजस्तथा हृदि। (सौः) शक्तिबीजं सदा पातु नाभौ गुह्ये च पादयोः ॥५॥ ऐं श्रीं सौः वदने पातु बाला मां सर्वसिद्धये। हसैं हसकलरीं हसौः पातु भैरवी कण्ठदेशतः ॥६॥ सुन्दरी नाभिदेशे च शीर्ष कामकलासदा। भ्रूनासयोरंतराले महात्रिपुरसुन्दरी ॥७॥ ललाटे सुभगा पातु भगा मां कण्ठदेशतः। भगोदया च हृदये उदरे भगसर्पिणी ॥८॥ भगमाला नाभिदेशे लिंगे पातु मनोभवा। गुह्ये पातु महादेवी राजराजेश्वरी शिवा॥ चैतन्यरूपिणी पातु पादयोर्जगदम्बिका। नारायणी सर्वगात्रे सर्वकार्ये शुभंकरी ॥१०॥ ब्रह्माणी पातु मां पूर्वे दक्षिणे वैष्णवी तथा। पश्चिमे पातु बाराही उत्तरे तु महेश्वरी ॥११॥ आग्नेयां पातु कौमारी महालक्ष्मीस्तु नैर्ऋते। वायव्यां पातु चामुंडा इन्द्राणी पातु ईशके ॥१२॥ जले पातु महामाया पृथिव्यां सर्वमंगला। अकाशे पातु वरदा सर्वत्र भुवनेश्वरी ॥१३॥ इदं तु कवचं देव्या देवानामपि दुर्लभम्। पठेत्प्रातः समुत्थाय शुचिः प्रयतमानसः ॥१४॥ नाधयो व्याधयस्तस्य न भयं च क्वचिद्भवेत्। न च मारी भयं तस्य पातकानां

भयं तथा ॥१५॥ न दारिद्र्यवशं गच्छेत्तिष्ठेन्मृत्युवशे न च। गच्छेच्छिवपुरं देवि सत्यं सत्यं वदाम्यहम् ॥१६॥ इदं कवचमज्ञात्वा श्रीविद्यां यो जपेत्सदा। स नाप्नोति फलं तस्य प्राप्नुयाच्छस्त्रघातनम् ॥१७॥

यह देवी का कवच देवताओं के लिए दुर्लभ है। जो प्रातः एकाग्रचित होकर इसका पाठ करता है उसे शारीरिक रोग, मानसिक रोग तथा कहीं पर भय नहीं होता। महामारी का भय तथा पापों का भी भय नहीं होता। वह कभी दरिद्रता के वश में या मृत्यु के वश में भी नहीं जाता। हे देवि! वह शिव की पुरी में चला जाता है। यह मैं सत्य कहता हूं, सत्य कहता हूं। इस कवच को न जानकर श्रीविद्या का जो सदा जप करता है वह उसका फल नहीं पाता अपितु वह शस्त्रों से मारा जाता है।

इति सिद्धयामले श्रीविद्याकवचं समाप्तम्।

षोडशीस्तोत्र

कल्याणवृष्टिभिरिवामृतपूरिताभिर्लक्ष्मीस्वयंवरमङ्गलदीपिकाभिः। सेवाभिरम्ब तव पादसरोज मूले नाकारि किं मनसि भक्तिमतां जनानाम् ॥१॥ एतावदेव जननि स्पृहणीयमास्ते त्वद्वन्दनेषु सलिलस्थसरोजनेत्रे। सन्निध्यमुद्यदरुणाम्बुजसोदरस्य त्वद्विग्रहस्य सुधया परयाऽऽप्लुतस्य ॥२॥ ईषत्प्रभावकलुषाः कति नाम संति ब्रह्मादयः प्रतिदिनं प्रलयाभिभूताः। एकस्स एव जननि स्थिरसिद्धिरास्ते यः पादयोस्तव सकृत्प्रणतिं करोति ॥३॥ लब्ध्वा सकृत त्रिपुरसुन्दरि तावकीनं कारुण्यकन्द लतिकातिभरं कटाक्षम्। कन्दर्प्पभावसुभगास्त्वयि भक्तिभाजः सम्मोहयन्ति तरुणीं भुवनत्रयेऽपि ॥४॥ ह्रींकारमेव तव नाम गृणन्ति ये वा मातस्त्रिकोणनिलये त्रिपुरे त्रिनेत्रे। त्वत्संस्मृतौ यमभटाभिभवं विहाय दीव्यन्ति नन्दनवने सह लोकपालैः ॥५॥ हन्तुः पुरामधिगलं परिपूर्णमानः क्रूरः कथन्न भविता गरलस्य वेगः। नाश्वासनाय यदि मातरिदं तवार्द्धदेहस्य शश्वदमृताप्लुतशीतलस्य ॥६॥ सर्वज्ञतां सदसि वाक्पटुतां प्रसूते देवि त्वदंघ्रिसरसीरुहयोः प्रणामः। किञ्च स्फुरन्मुकुटमुज्ज्वल मातपत्रं द्वे चामरे च महतीं वसुधां दधाति ॥७॥ कल्पद्रुमैरभिमतप्रति पादनेषु कारुण्यवारिधिभिरम्ब भवत्कटाक्षैः। आलोकय त्रिपुरसुन्दरि मामनाथं त्वयेव भक्तिभरितं त्वयि बद्धदृष्टिम् ॥८॥ हन्तेतरेष्वपि निधाय मनांसि चान्ये भक्तिं वहंति किल सापरदैवतेषु। त्वामेव देवि मनसाहमनुस्मरामि त्वामेव नौमि शरणं जननि त्वमेव ॥९॥ लक्षेषु सत्स्वपि तवाक्षिविलोकनानामालोकय त्रिपुरसुन्दरि मां कथंचित्। नूनं मया च सदृशं करुणैकपात्रं जातो जनिष्यति जनो न च जायते वा ॥१०॥ ह्रींह्रींमिति प्रतिदिनं जपतां तवाख्यां किन्नाम दुर्लभमिह त्रिपुराभिधाने। मालाकिरीटमदवारणमाननीयांस्तान्सेवते मधुमती स्वयमेव लक्ष्मीः ॥११॥ सम्पत्कराणि सकलेन्द्रियनन्दनानि साम्राज्यदानकुशलानि सरोरुहाणि। त्वद्वंदनानि दुरितोद्धरणोद्यतानि मामेव मातरनिशं कलयन्तु नान्यम् ॥१२॥ कल्पोपसंहरणकल्पितताण्डवस्य देवस्य खण्डपरशोः परभैरवस्य। पाशांकुशैक्षवशरासनपुष्पबाणाः सा साक्षिणी। विजयते तव मूर्तिरिका ॥१३॥ लग्नं सदा भवतु मातरिदं त्वदीयं तेजः परं बहुलकुंकुमपङ्कशोणम्। भास्वत्किरीटममृतांकुशलावतंसं रूपं त्रिकोणमुदितं परमामृताक्तम् ॥१४॥ ह्रींकारत्रयसम्पुटेन महता मंत्रेण संदीपितं स्तोत्रं यः प्रतिवासरं तव पुरो मातर्जपेन्मन्त्रवित्। तस्य क्षोणिभुजो भवन्ति वशगा लक्ष्मीश्चिरं स्थायिनी वाणी निर्मलसूक्तिभावभरिता जागर्ति दीर्घ यशः ॥१५॥

इति ब्रह्मविरचितं षोडशीकल्याणीस्तोत्रं समाप्तम्।

षोडश्यष्टोत्तरशतनामस्तोत्र

भृगुरुवाच। चतुर्वक्त्र जगन्नाथ स्तोत्रं वद मम प्रभो। यस्यानुष्ठानमात्रेण नरोभक्तिमवाप्नुयात् ॥१॥

भृगु बोले : हे चतुर्मुख, जगन्नाथ ! हे प्रभो ! आप मुझे ऐसा स्तोत्र बतावें जिसके अनुष्ठान मात्र से मनुष्य भक्ति को प्राप्त करता है।

ब्रह्मोवाच। सहस्रनाम्नामाकृष्य नाम्नामष्टोत्तरं शतम्। गुह्याद् गुह्यतरं गुह्यं सुन्दर्याः परिकीर्तितम् ॥२॥

ब्रह्मा बोले : सुन्दरी के सहस्रनामों में से सार लेकर यह एक सौ आठ नामों का स्तोत्र बनाया गया है, जो अत्यन्त गुह्य है।

विनियोग : अस्य श्रीषोडश्यष्टोत्तरशतनामस्तोत्रस्य शंभुर्ऋषिरनुष्टुप्छंदः श्रीषोडसी देवता धर्मार्थकाममोक्षसिद्धये पाठे विनियोगः।

ॐ त्रिपुरा षोडशी माता त्र्यक्षरा त्रितया त्रयी। सुन्दरी सुमुखी सेव्या सामवेदपरायणा ॥३॥ शारदा शब्दनिलया सागरा सरिदम्बरा। शुद्धा शुद्धतनुस्साध्वी शिवध्यानपरायणा ॥४॥ स्वामिनी शंभुवनिता शाम्भवी च सरस्वती। समुद्रमथिनी शीघ्रगामिनी शीघ्रसिद्धिदा ॥५॥ साधुसेव्या साधुगम्या साधुसन्तुष्टमानसा। खट्वाङ्गधारिणी खर्वा खड्ग खर्परधारिणी ॥६॥ षड्वर्गभावरहिता षड्वर्गपरिचारिका। षडवर्गा च षडङ्गा च षोढा षोडशवार्षिकी ॥७॥ क्रतुरूपा क्रतुमती ऋभुक्षकतुमण्डिता। कवर्गादिपवर्गान्ता अन्तस्था अन्तरूपिणी ॥८॥ अकाराकाररहिता कालमृत्युजरापहा। तन्वी तत्त्वेश्वरी तारा त्रिवर्षा ज्ञानरूपिणी ॥९॥ काली कराली कामेशीच्छायासंज्ञाप्यरुन्धती। निर्विकल्पा महावेगा महोत्साहा महोदरी ॥१०॥ मेधा बलाका विमला विमलज्ञानदायिनी। गौरी वसुन्धरागोपूत्री गवांपतिनिषेविता ॥११॥ भगाङ्गा भगरूपा च भक्तिभावपरायणा। छिन्नमस्ता महाधूमा तथा धूम्रविभूषणा ॥१२॥ धर्मकर्मादिरहिता धर्मकर्मपरायणा। सीता मातङ्गिनी मेधा मधुदैत्यविनाशिनी ॥१३॥ भैरवी भुवना माताऽभयदा भवसुन्दरी। भावुका बगला कृत्या बाला त्रिपुरसुन्दरी ॥१४॥ रोहिणी रेवती रम्या रम्भा रावणवन्दिता। शतयज्ञमयी सत्त्वा शतक्रतुवरप्रदा ॥१५॥ शतचन्द्रानना देवी सहस्रादित्यसन्निभा। सोमसूर्याग्निनयना व्याघ्रचर्माम्बरावृता ॥१६॥ अर्द्धेन्दुधारिणी मत्ता मदिरा मदिरेक्षणा। इति ते कथितं गोप्यं नाम्नामष्टोत्तरं शतम् ॥१७॥

सुन्दर्याः सर्वदं सेव्यं महापातकनाशनम्। गोपनीयं गोपनीयं गोपनीयं कलौयुगे ॥१८॥ सहस्रनामपाठस्य फलं यद्वै प्रकीर्तितम्। तस्मात्कोटिगुणं पुण्यं स्तवस्यास्य प्रकीर्तनात् ॥१९॥ पठेत्सदा भक्तियुतो नरो यो निशीथकालेऽप्यरुणोदये वा। प्रदोषकाले नवमीदिनेऽथ वा लभेत् भोगान् परमाद्भुतान् प्रियान् ॥२०॥

यह सुन्दरी का स्तोत्र सब कुछ देने वाला और पापनाशक स्तोत्र है। कलियुग में यह गोपनीय है, गोपनीय है, गोपनीय है। जो सहस्रनाम स्तोत्र का फल कहा गया है, उससे करोड़ गुना फल इस स्तोत्र के पाठ से होता है। जो व्यक्ति रात्रि में या प्रातःकाल या सायंकाल अथवा नवमी के दिन भक्ति-युक्त होकर इसका पाठ करता है वह परम अद्भुत तथा प्रिय भोगों को प्राप्त होता है।

इति ब्रह्मयामले पूर्वखण्डे षोडश्यष्टोतरशतनामस्तोत्रं समाप्तम्।

षोडशीसहस्रनामस्तोत्र

कैलासशिखरे रम्ये नानारत्नोपशोभिते। कल्प पादपमध्यस्थे नानापुष्पोपशोभिते ॥१॥

मणिमण्डपमध्यस्थे मुनिगन्धर्वसेविते। कदाचित्सुखमासीनं भगवन्तं जगत्गुरुम् ॥२॥ कपालखट्वाङ्गधरं चन्द्रार्धकृतशेखरम्। हस्तत्रिशूलडमरुं महावृषभवाहनम् ॥३॥ जटाजूटधरं देवं कण्ठभूषणवासुकिम्। विभूतिभूषणं देवं नीलकण्ठं त्रिलोचनम् ॥४॥ द्वीपिचर्म्मपरीधानं शुद्धस्फटिकसन्निभम्। सहस्रादित्यसङ्काशं गिरिजार्द्धाङ्गभूषणम् ॥५॥ प्रणम्य शिरसानाथं कारणं विश्वरूपिणम्। कृताञ्जलिपुटो भूत्वा प्राहैनं शिखिवाहनः ॥६॥ कार्तिकेय उवाच। देवदेव जगन्नाथ सृष्टिस्थितिलयात्मक। त्वमेव परमात्मा च त्वं गतिस्सर्वदेहिनाम् ॥७॥ त्वं गतिस्सर्वलोकानां दीनानां च त्वमेव हि। त्वमेव जगदाधारस्त्वमेव विश्वकारणम् ॥८॥ त्वमेवपूज्यस्सर्वेषां त्वदन्यो नास्ति मे गतिः। किं गुह्यं परमं लोके किमेकं सर्वसिद्धिदम् ॥९॥ किमेकं परमं श्रेष्ठं को योगः स्वर्गमोक्षदः। विना तीर्थेन तपसा विना दानैर्विना मखैः ॥१०॥ विना लयेन ध्यानेन नरः सिद्धिमवाप्नुयात्। कस्मादुत्पद्यते सृष्टिः कस्मिंश्च प्रलयो भवेत् ॥११॥ कस्मादुत्तीर्यते देव संसारार्णवसङ्कटात्। तदहं श्रोतुमिच्छामि कथयस्व महेश्वरः ॥१२॥

कैलास के रम्य शिखर पर नाना रत्नों से शोभित कल्पवृक्ष के नीचे नाना पुष्पों से शोभित, मुनि-गन्धर्व से सेवित, मणियों से मण्डित मण्डप के मध्य सुख से बैठे हुए जगद्गुरु भगवान् कपाल और खट्वाङ्ग धारण किये चन्द्रमा के अर्धभाग को अपने शिर पर शेखर के रूप में धारण किये हुये, हाथ में त्रिशूल तथा डमरू लिए हुये, वृषभवाहन, जटाजूट धारी, कण्ठ में वासुकी नाग को लपेटे हुए, शरीर में विभूति लगाये हुए, देव, नीलकंठ, त्रिलोचन, हाथी का चमड़ा पहने हुए शुद्ध स्फटिक के समान, हजारों सूर्यों के समान, गिरिजा के अर्द्धांगभूषण, संसार के कारण विश्वरूपी शिवको शिर से प्रणाम करके हाथ जोड़े मयूर वाहन कार्तिकेय बोले : हे देवदेव जगन्नाथ, सृष्टि, स्थिति तथा प्रलय के स्वामिन्! तुम्हीं परमात्मा हो। तुम्ही सभी प्राणियों की गति हो। तुम्हीं सारे लोकों की गति हो। तुम्हीं जगत के आधार हो। तुम्हीं विश्व के कारण हो। तुम्हीं सबके पूज्य हो। तुम्हारे बिना मेरी कोई गति नहीं है। कौन सी वस्तु संसार में परम गुह्य है? और कौन सी वह वस्तु है जो सभी सिद्धियों को देने वाली है? वह कौन सी वस्तु है जो परमश्रेष्ठ है? कौनसा योग है जो स्वर्ग और मोक्ष देने वाला है? बिना तीर्थ, बिना दान तथा बिना यज्ञों के, बिना लय के और बिना ध्यान के मनुष्य किस उपाय से सिद्धि को प्राप्त कर सकता है? यह सृष्टि किससे उत्पन्न हुई है? किसमें इसका लय होता है? हे देव किस उपाय से मनुष्य संसार रूपी सागर के पार उतर सकता है ? हे महेश्वर! उसे मैं सुनना चाहता हूं आप कहें।

ईश्वर उवाच। साधु साधु त्वया पृष्टं पार्वतीप्रियनन्दन। अस्ति गुह्यतमं पुत्र कथयिष्याम्यसंशयम् ॥१३॥ सत्त्वं रजस्तमश्चैव ये चान्ये महदादयः। ये चान्ये बहवो भूताः सर्वे प्रकृतिसम्भवा : ॥१४॥ सैव देवी पराशक्तिर्महात्रिपुरसुन्दरी। सैव प्रसूयते विश्वं विश्वं सैव प्रपास्यति ॥१५॥ सैव संहरते विश्वं जगदेतच्चराचरम्। आधारः सर्वभूतानां सैव रोगार्ति हारिणी ॥१६॥ इच्छाज्ञानक्रियाशक्तिर्ब्रह्मविष्णुशिवात्मिका। त्रिधा शक्तिस्वरूपेण सृष्टिस्थितिविनाशिनी ॥१७॥ सृज्यते ब्रह्मरूपेण विष्णुरूपेण पाल्यते। ह्रियते रुद्ररूपेण जगदेतच्चराचरम् ॥१८॥ यस्या योनौ जगत्सर्वमद्यापि परिवर्तते। यस्यां प्रलीयते चान्ते यस्यां च जायते पुनः ॥१९॥ यां समाराध्य त्रैलोक्ये सम्प्राप्तं पदमुत्तमम्। तस्या नाम सहस्रं तु कथयामि शृणुष्व तत् ॥२०॥

ईश्वर बोले : हे पार्वती के प्रिय पुत्र! तुमने ठीक ही पूछा है। हे पुत्र! एक अत्यन्त रहस्य को मैं तुम्हें बताऊँगा। सत्व, रज, तम तथा जो महदादि तथा अन्य भूत हैं, वे सब प्रकृति से उत्पन्न हुए हैं। वही परा शक्ति महा त्रिपुरसुन्दरी देवी है। वही सारे चराचर संसार को उत्पन्न करती, पालती तथा

नाश करती है। वह सभी भूतों का आधार है। वही रोगों और दुखों का हरण करने वाली है। वही इच्छा, ज्ञान, क्रियाशक्ति, ब्रह्मा, विष्णु और शिव रूप वाली है। वही तीन शक्ति के रूप से सृष्टि, स्थिति और विनाशिनी है। ब्रह्मरूप से वही इस चराचर जगत की सृष्टि करती है, विष्णुरूप से वही पालन करती है तथा वही शिवरूप से विनाश करती है। जिसकी योनि में आज भी यह सारा संसार परिवर्तित हो रहा है, जिसमें महाप्रलय में यह संसार लीन हो जाता है तथा जहाँ से पुनः उत्पन्न होता है, जिसकी आराधना करके मैंने भी तीनों लोकों में उत्तम स्थान पाया है, उसका सहस्रनाम मैं कहता हूं उसे तुम सुनो :

विनियोग : ॐ अस्य श्रीमहात्रिपुरसुन्दरीसहस्रनामस्तोत्र मन्त्रस्य श्रीभगवान् दक्षिणामूर्तिर्ऋषिः जगतीच्छन्दः समस्तप्रकटगुप्तसम्प्रदायकुलकौलोत्तीर्णनिर्गर्भरहस्याचिन्त्यप्रभावती देवता ॐ बीजं माया शक्तिः कामराजेति कीलकं धर्मार्थकाममोक्षार्थ जपे विनियोगः।

अथ ध्यानं :

ॐ आधारे तरुणार्कबिम्बरुचिरं हेमप्रभं वाग्भवं बीजं मन्मथमिन्द्रगोपसदृशं हृत्पङ्कजे संस्थिताम्। विष्णु ब्रह्मपदस्थशक्तिकलितं सोमप्रभाभासुरं ये ध्यायन्ति पदत्रयं तव शिवे ते यान्ति सौख्यं पदम्॥२१॥

कल्याणी कमला काली कराली कामरूपिणी। कामाख्या कामदा काम्या कामचारिणी॥२२॥ कालरात्रिर्महारात्रिः कपाली कालरूपिणी। कौमारी करुणा मुक्तिः कलिकल्मषनाशिनी॥२३॥ कात्यायनी कराधारा कौमुदी कमलप्रिया। कीर्तिदा बुद्धिदा मेधा नीतिज्ञा नीतिवत्सला॥२४॥ माहेश्वरी महामाया महातेजा महेश्वरी। महाजिह्वा महाघोरा महादंष्ट्रा महाभुजा॥२५॥ महामोहान्धकारघ्नी महामोक्षप्रदायिनी। महादारिद्र्यनाशा च महाशत्रुविमर्द्दिनी॥२६॥ महामाया महावीर्या महापातकनाशिनी। महामखा मन्त्रमयी मणिपूरकवासिनी॥२७॥ मानसी मानदा मान्या मनश्चक्षूरणेचरा। गणमाता च गायत्री गणगन्धर्वसेविता॥२८॥ गिरिजा गिरिजा साध्वी गिरिस्था गिरिबल्लभा। चण्डेश्वरी चण्डरूपा प्रचण्डा चण्डमालिनी॥२९॥ चर्विका चर्चिकाकारा चण्डिका चारुरूपिणी। यज्ञेश्वरी यज्ञरूपा जपयज्ञपरायणा॥३०॥ यज्ञमाता यज्ञभोक्त्री यज्ञेशी यज्ञसंभवा। सिद्धयज्ञक्रियासिद्धिर्यज्ञाङ्गी यज्ञरक्षिका॥३१॥ यज्ञक्रिया यज्ञरूपा यज्ञाङ्गी यज्ञरक्षिका। यज्ञक्रिया च यज्ञा च यज्ञायज्ञ क्रियालया॥३२॥ जालन्धरी जगन्माता जातवेदा जगत्प्रिया। जितेन्द्रिया जितक्रोधा जननी जन्मदायिनी॥३३॥ गङ्गा गोदावरी चैव गोमती च शतद्रुका। घर्घरा वेदगर्भा च रेचिका समवासिनी॥३४॥ सिन्धुमन्दाकिनी क्षिप्रा यमुना च सरस्वती। भद्रा रागविपाशा च गण्डकी विन्ध्यवासिनी॥३॥ नर्मदा सिन्धुकावेरी वेत्रवत्या सुकौशिकी। महेन्द्रतनया चैव अहल्या चर्मकावती॥३६॥ अयोध्या मथुरा माया काशी काञ्ची अवन्तिका। पुरी द्वारावती तीर्था महाकिल्विषनाशिनी॥३७॥ पद्मिनी पद्ममध्यस्था पद्मकिञ्जल्कवासिनी। पद्मवक्त्रा चकोराक्षी पद्मस्था पद्मसम्भवा॥३८॥ ह्रींकारा कुण्डलाधारा हृत्पद्मस्था सुलोचना। श्रीकारीभूषणा लक्ष्मीः क्लींकारी क्लेशनाशिनी॥३९॥ हरिवक्त्रोद्भवा शांता हरिवक्त्रकृतालया। हरिवक्त्रोद्भवा शांता हरिवक्षस्स्थलस्थिता॥४०॥ वैष्णवी विष्णुरूपा च विष्णुमातृस्वरूपिणी। विष्णुमाया विशालाक्षी विशालनयनोज्ज्वला॥४१॥ विश्वेश्वरी च विश्वात्मा विश्वेशी विश्वरूपिणी। विश्वेश्वरी शिवाराध्या शिवनाथा शिवप्रिया॥४२॥ शिवमाता शिवाख्या च शिवदा शिवरूपिणी। भवेश्वरी भवाराध्या भवेशो भवनायिका॥४३॥ भवमाता भवागम्या भवकण्टकनाशिनी। भवप्रिया

भवानन्दा भवानी भवमोहिनी ॥४४॥ गायत्री चैव सावित्री ब्रह्माणी ब्रह्मरूपिणी। ब्रह्मेशी ब्रह्मदा ब्रह्मा ब्रह्माणी ब्रह्मवादिनी ॥४५॥ दुर्गस्था दुर्गरूपा च दुर्गा दुर्गार्तिनाशिनी। सुगमा दुर्गमा दान्ता दयादोग्ध्री दुरापहा ॥४६॥ दुरितघ्नी दुराध्यक्षा दुरा दुष्कृतनाशिनी। पंचास्या पञ्चमी पूर्णा पूर्ण पीठनिवासिनी ॥४७॥ सत्त्वस्था सत्त्वरूपा च सत्त्वस्था सत्त्वसम्भवा। रजस्था च रजोरूपा रजोगुणसमद्भवा ॥४८॥ तमस्था च तमोरूपा तामसी तामसप्रिया। तमोगुणसमुद्भूता सात्त्विकी राजसी कला ॥४९॥ काष्ठा मुहूर्ता निमिषा अनिमेषा ततः परम्। अर्द्धमासा च मासा च सम्वत्सरस्वरूपिणी ॥५०॥ योगस्था योगरूपा च कल्पस्था च कल्परूपिणी नानारत्नविचित्राङ्गी नानाभरणमण्डिता ॥५१॥ विश्वात्मिका विश्वमाता विश्वपापविनाशिनी। विश्वासकारिणी विश्वा विश्वशक्तिविचक्षणा ॥५२॥ यवा कुसुमसङ्काशा दाडिमीकुसुमोपमा। चतुरङ्गी चतुर्बाहुश्च तुराचारवासिनी ॥५३॥ सर्वेशी सर्वदा सर्वा सर्वदा सर्वदायिनी। माहेश्वरी च सर्वाद्या शर्वाणी सर्वमङ्गला ॥५४॥ नलिनी नन्दिनी नन्दा आनन्दानन्दवर्द्धिनी। व्यापिनी सर्वभूतेषु भवभारविनाशिनी ॥५५॥ सर्वश्रृङ्गारवेषाढ्या पाशांकुशकरोद्यता। सूर्यकोटिसहस्राभा चन्द्रकोटिनिभानना ॥५३॥ गणेशकोटिलावण्या विष्णुकोट्यरिमर्दिनी। दावाग्नीकोटिदलिनी रुद्रकोट्युग्ररूपिणी ॥५७॥ समुद्रकोटिगम्भीरा वायुकोटिमहाबला। आकाशकोटिविस्तारा यमकोटिभयङ्करी ॥५८॥ मेरुकोटि समुच्छ्राया गणकोटि समृदिद्धा। निष्कस्तोका निराधारा निर्गुणा गुणवर्जिता ॥५९॥ अशोका शोकरहिता तापत्रयविवर्जिता। वसिष्ठा विश्वजननी विश्वाख्या विश्ववर्द्धिनी ॥६०॥ चित्रा विचित्रचित्रांगी हेतुगर्भा कुलेश्वरी। इच्छाशक्तिर्ज्ञानशक्तिः क्रियाशक्तिः शुचिस्मिता ॥६१॥ शुचिः स्मृतिमयी सत्या श्रुतिरूपा श्रुतिप्रिया। महासत्त्वमयी सत्वा पंचतत्त्वोपरि स्थिता ॥६२॥ पार्वती हिमवत्पुत्री पारस्था पाररूपिणी। जयंती भद्रकाली च अहल्या कुलनायिका ॥६३॥ भूतधात्री च भूतेशी भूतस्था भूतभावना। महाकुण्डलिनी शक्तिर्महाविभववर्द्धिनी ॥६४॥ हंसाक्षी हंसरूपा च हंसस्था हंसरूपिणी। सोमसूर्याग्निमध्यस्था मणिमण्डलवासिनी ॥६५॥ द्वादशारसरोजस्था सूर्यमण्डलवासिनी। अकलंका शशांकाभा षोडशारनिवासिनी ॥६६॥ डाकिनी राकिनी चैव लाकिनी काकिनी तथा। शाकिनी हाकिनी चैव षट्चक्रेषु निवासिनी ॥६७॥ सृष्टिस्थितिविनाशाय सृष्टि स्थित्यंतकारिणी। श्रीकण्ठप्रियहृत्कण्ठा नन्दाख्या बिन्दुमालिनी ॥६८॥ चतुष्षष्टिकलाधारा देहदण्डसमाश्रिता। माया काली धृतिर्मेधा क्षुधा तुष्टिर्महाद्युतिः ॥६९॥ हिंगुला मङ्गला सीता सुषुम्ना मध्यगामिनी। परघोरा करालाक्षी विजया जयदायिनी ॥७०॥ हृत्पद्मनिलया भीमा महाभैरवनादिनी। आकाशलिंगसम्भूता भुवनोद्यानवासिनी ॥७१॥ महत्सूक्ष्मा च कंकाली भीमरूपा महाबला। मेनकागर्भसम्भूता तप्तकाञ्चनसन्निभा ॥७२॥ अन्तरस्था कूटबीजा त्रिकूटाचलवासिनी। वर्णाख्या वर्णरहिता पञ्चाशद्वर्णभेदिनी ॥७३॥ विद्याधरी लोकधात्री अप्सरा अप्सरःप्रिया। दीक्षा दाक्षायणी दक्षा दक्षयज्ञविनाशिनी ॥७४॥ यशःपूर्णा यशोदा च यशोदागर्भसम्भवा। देवकी देवमाता च राधिका कृष्णवल्लभा ॥७५॥ अरुन्धती शचीन्द्राणी गान्धारी गन्धमालिनी। ध्यानातीता ध्यानगम्या ध्यानज्ञा ध्यानधारिणी ॥७६॥ लम्बोदरी च लम्बोष्ठी जाम्बवन्ती जलोदरी। महोदरी मुक्तकेशी मुक्तकामार्थसिद्धिदा ॥७७॥ तपस्विनी तपोनिष्ठा सुपर्णा धर्मवासिनी। बाणचापधरा धीरा पाञ्चाली पञ्चमप्रिया ॥७८॥ गुह्यांगी च सुभीमा च गुह्यतत्वा निरञ्जना। अशरीरा शरीरस्था

संसारार्णवतारिणी ॥७९॥ अमृता निष्कला भद्रा सकला कृष्णपिंगला। चक्रप्रिया च चक्राह्वा पञ्चचक्रादिदारिणी ॥८०॥ पद्मरागप्रतीकाशा निर्मलाकाशसन्निभा। अधःस्था ऊर्ध्वरूपा च ऊर्ध्वपद्मनिवासिनी ॥८१॥ कार्यकारणकर्तृत्वे शश्वद्रूपेषु संस्थिता। रसज्ञा रसमध्यस्था गन्धस्था गन्धरूपिणी ॥८२॥ परब्रह्मस्वरूपा च परब्रह्मनिवासिनी। शब्दब्रह्मस्वरूपा च शब्दस्था शब्दवर्जिता ॥८३॥ सिद्धिर्बुद्धिः पराबुद्धिः सन्दीप्तिर्मध्यसंस्थिता। स्वगुह्याशाम्भवी शक्तिस्तत्त्वस्था तत्त्वरूपिणी ॥८४॥ शाश्वती भूतमाता च महाभूताधिपप्रिया। शुचिप्रेता धर्मसिद्धिर्धर्मवृद्धिः पराजिता ॥८५॥ कामसंदीपिनी कामा सदाकौतूहलप्रिया। जटाजूटधरा मुक्ता सक्ष्मा शक्ति विभूषणा ॥८६॥ द्वीपिचर्मपरीधाना चीरवल्कलधारिणी त्रिशूलडमरुधरा नरमालाविभूषणा ॥८७॥ अत्युग्ररूपिणी चोग्रा कल्पांतदहनोपमा। त्रैलोक्यसाधिनी साध्या सिद्धिसाधकवत्सला ॥८८॥ सर्वविद्यामयी सारा चासुराणां विनाशिनी। दमनी दामनी दान्ता दयादोग्घ्री दुरापहा ॥८९॥ अग्निजिह्वोपमा घोरा घोरघोरतरानना। नारायणी नारसिंही नृसिंहहृदये स्थिता ॥९०॥ योगेश्वरी योगरूपा योगमाता च योगिनी। खेचरी खचरी खेला निर्वाणपदसंश्रया ॥९१॥ नागिनी नागकन्या च सुवेशा नागनायिका। विषज्वालावतीदीप्ता कलाशतविभूषणा ॥९२ ॥ तीव्रवक्त्रा महावक्त्रा नागकोटित्वधारिणी। महासत्त्वा च धर्मज्ञा धर्मातिसुखदायिनी ॥९३॥ कृष्णमूर्द्धा महामूर्द्धा घोरमूर्द्धा वरानना। सर्वेन्द्रियमनोन्मत्ता सर्वेन्द्रिय मनोमयी ॥९४॥ सर्वसंग्रामजयदा सर्वप्रहरणोद्यता। सर्वपीडोपशमनी सर्वारिष्टनिवारिणी ॥९५ ॥ सर्वैश्वर्यसमुत्पन्ना सर्वग्रहविनाशिनी। मातङ्गी मत्तमातङ्गी मातङ्गीप्रियमण्डला ॥९६॥ अमृतोदधिमध्यस्था कटिसूत्रैरलंकृता। अमृतोदधिमध्यस्था प्रवालवसनाम्बुजा ॥९७॥ मणिमण्डलमध्यस्था ईषत्प्रहसितानना। कुमुदा ललिता लोला लाक्षालोहितलोचना ॥९८॥ दिग्वासा देवदूती च देवेदेवाधिदेवता। सिंहोपरि समारूढा हिमाचलनिवासिनी ॥९९॥ अट्टाट्टहासिनी घोरा घोरदैत्यविनाशिनी। अत्युग्ररक्तवस्त्राभा नागकेयूरमण्डिता ॥१००॥ मुक्ताहारलतोपेता तुङ्गपीनपयोधरा। रक्तोत्पलदलाकारा मदाघूर्णितलोचना ॥१०१॥ समस्त देवतामूर्तिः सुरारिक्षयकारिणी। खड्गिनी शूलहस्ता च चक्रिणी चक्रमालिनी ॥१०२॥ शङ्खिनी चापिनी बाणा वज्रिणी वज्रदण्डिनी। आनन्दोदधिमध्यस्था कटिसूत्रैरलंकृता ॥१०३॥ नानाभरणदीप्ताङ्गी नानामणिविभूषिता। जगदानन्दसम्भूता चिन्तामणिगुणान्विता ॥१०४॥ त्रैलोक्यनमिता तुर्य-चिन्मयानन्दरूपिणी। त्रैलोक्यनन्दिनी देवी दुःखदुस्स्वप्ननाशिनी ॥१०५॥ घोराग्निदाहशमनी राजदेवार्थसाधिनी। महापराधराशिघ्नी महाचौरभयापहा ॥१०६॥ रागादिदोषरहिता जरामरणवर्जिता। चन्द्रमण्डलमध्यस्था पीयूषार्णवसम्भवा ॥१०७॥ सर्वदेवैः स्तुता देवी सर्वसिद्धैर्नमस्कृता। अचिन्त्यशक्तिरूपा च मणिमन्त्रमहौषधिः ॥१०८॥ अस्तिस्वस्तिमयी बाला मलयाचलवासिनी। धात्री विधात्री संहारी रतिज्ञा रतिदायिनी ॥१०९॥ रुद्राणी रुद्ररूपा च रुद्ररौद्रार्तिनाशिनी। सर्वज्ञा चैव धर्मज्ञा रसज्ञा दीनवत्सला ॥११०॥ अनाहता त्रिनयना निर्भारा निर्वृतिः परा। परा घोरा करालाक्षी सुमतिश्रैष्ठ्यदायिनी ॥१११॥ मन्त्रालिका मन्त्रगम्या मन्त्रमाला सुमन्त्रिणी। श्रद्धानन्दा महाभद्रा निर्द्वन्द्वा निर्गुणात्मिका ॥११२॥ धरिणी धारिणी पृथ्वी धराधात्री वसुन्धरा। मेरुमन्दरमध्यस्था स्थिति शङ्करवल्लभा ॥११३॥ श्रीमती श्रीमयी श्रेष्ठा श्रीकरी भावभाविनी। श्रीदा श्रीमा श्रीनिवासा श्रीमती श्रीमताङ्गतिः ॥११४॥ उमा सारङ्गिणी कृष्णा

कुटिला कुटिलालका। त्रिलोचना त्रिलोकात्मा पुण्यपुण्या प्रकीर्तिता ॥११५॥ अमृता सत्यसङ्कल्पा सा सत्या ग्रन्थिभेदिनी। परेशी परमा साध्या परा विद्या परात्परा ॥११६॥ सुन्दराङ्गी सुवर्णाभा सुरासुरनमस्कृता। प्रजा प्रजावती धन्या धनधान्यसमृद्धिदा ॥११७॥ ईशानी भुवनेशानी भवानी भुवनेश्वरी। अनंतानंतमहिता जगत्सारा जगद्भवा ॥११८॥ अचिन्त्यात्मा चिन्त्यशक्तिश्चिन्ता चिन्त्यस्वरूपिणी। ज्ञानगम्या ज्ञानमूर्तिर्ज्ञानिनी ज्ञानशालिनी ॥११९॥ असिता घोररूपा च सुधाधारा सुधावहा। भास्करी भास्वती भीतिर्भास्वदक्षानुशायिनी ॥१२०॥ अनसूया क्षमा लज्जा दुर्लभाभरणात्मिका। विश्वघ्नी विश्ववीरा च विश्वघ्नी विश्वसंस्थिता ॥१२१॥ शीलस्था शीलरूपा च शीला शीलप्रदायिनी। बोधिनी बोधकुशलारोधिनी बोधिनी तथा ॥१२२॥ विद्योतिनी विचित्रात्मा विद्युत्पटलसन्निभा। विश्वयोनिर्महायोनिः कर्मयोनिः प्रियात्मिका ॥१२३॥ रोहिणी रोगशमनी महारोगज्वरापहा। रसदा पुष्टिदा पुष्टिर्मानदा मानवप्रिया ॥१२४॥ कृष्णाङ्गवाहिनी कृष्णा कृष्णा कृष्णसहोदरी। शाम्भवी शम्भुरूपा च शम्भुस्था शम्भुसम्भवा ॥१२५॥ विश्वोदरी योगमाता योगमुद्राघ्नयोगिनी। वागीश्वरी योगनिद्रा योगिनी कोटिसेविता ॥१२६॥ कौलिका मन्दकन्या च शृङ्गारपीठवासिनी। क्षेमङ्करी सर्वरूपा दिव्यरूपा दिगम्बरा ॥१२७॥ धूम्रवक्त्रा धूम्रनेत्रा धूम्रकेशी च धूसरा। पिनाकी रुद्रवेताली महावेतालरूपिणी ॥१२८॥ तपिनी तापिनी दीक्षा विष्णु विद्यात्मना श्रिता। मन्थरा जठरा ताम्रा अग्निजिह्वा भयापहा ॥१२९॥ पशुघ्नि पशुरूपा च पशुहा पशुवाहिनी। पिता माता च धीरा च पशुपाशविनाशिनी ॥१३०॥ चन्द्रप्रभा चन्द्ररेखा चन्द्रकान्तिविभूषणा। कुंकुमाङ्कितसर्वाङ्गी सुधासद्गुरुलोचना ॥१३१॥ शुक्लाम्बरधरा देवी वीणापुस्तकधारिणी। ऐरावतपद्मधरा श्वेतपद्मासनस्थिता ॥१३२॥ रक्ताम्बरधरा देवी रक्त पद्मविलोचना। दुस्तरा तारिणी तारा तरुणी ताररूपिणी ॥१३३॥ सुधाधारा च धर्मज्ञा धर्मसङ्घोपदेशिनी। भगेश्वरी भगाराध्या भगिनी भगनायिका ॥१३४॥ भगबिम्बा भगक्लिन्ना भगयोनिर्भगप्रदा। भगेश्वरी भगाराध्या भगिनी भगनायिका ॥१३५॥ भगेशी भगरूपा च भगगुह्या भगावहा। भगोदरी भगानन्दा भगस्था भगशालिनी ॥१३६॥ सर्वसंक्षोभिणी शक्तिस्सर्वविद्राविणी तथा। मालिनी माधवी माध्वी मधुरूपा महोत्कटा ॥१३७॥ भरुण्डचन्द्रिका ज्योत्स्ना विश्वचक्षुस्तमोपहा। सुप्रसन्ना महादूती यमदूती भयङ्करी ॥१३८॥ उन्मादिनी महारूपा दिव्यरूपा सुरार्चिता। चैतन्यरूपिणी नित्या क्लिन्ना काममदोद्धता ॥१३९॥ मदिरानन्दकैवल्या मदिराक्षी मदालसा। सिद्धेश्वरी सिद्धविद्या सिद्धाद्या सिद्धसम्भवा ॥१४०॥ सिद्धर्द्धिः सिद्धमाता च सिद्धिस्सर्वार्थसिद्धिदा। मनोमयी गुणातीता परज्योतिः स्वरूपिणी ॥१४१॥ परेशी परगा पारापरा सिद्धिः परा गतिः। विमला मोहिनी चाद्या मधुपानपरायणा ॥१४२॥ वेदवेदाङ्गजननी सर्वशास्त्रविशारदा। सर्वदेवमयी विद्या सर्वशास्त्रमयी तथा ॥१४३॥ सर्वज्ञानमयी देवी सर्वधर्ममयीश्वरी। सर्वयज्ञमयी यज्ञा सर्वमन्त्राधिकारिणी ॥१४४॥ सर्वसम्पत्प्रतिष्ठात्री सर्वविद्राविणी परा। सर्वसंक्षोभिणी देवी सर्वमङ्गलकारिणी ॥१४५॥ त्रैलोक्याकर्षिणी देवी सर्वाह्लादनकारिणी। सर्वसंमोहिनी देवी सर्वस्तम्भनकारिणी ॥१४६॥ त्रैलोक्यजृम्भिणी देवी तथा सर्ववशङ्करी। त्रैलोक्यरंजिनी देवी सर्वसम्पत्तिदायिनी ॥१४७॥ सर्वमन्त्रमयी देवी सर्वद्वन्द्वक्षयङ्करी। सर्वसिद्धिप्रदा देवी सर्वसम्पत्प्रदायिनी ॥१४८॥ सर्वप्रियकरी देवी सर्व मङ्गलकारिणी। सर्वकामप्रदा

देवी सर्वदुःखविमोचिनी ।।१४९।। सर्वमृत्युप्रशमनी सर्वविघ्नविनाशिनी। सर्वाङ्गसुन्दरी माता सर्वसौभाग्य दायिनी ।।१५०।। सर्वज्ञा सर्वशक्तिश्च सर्वैश्वर्यफलप्रदा। सर्वज्ञानमयी देवी सर्वव्याधिविनाशिनी ।।१५१।। सर्वाधारस्वरूपा च सर्वपापहरा तथा। सर्वानन्दमयी देवी सर्वेक्षायाः स्वरूपिणी ।।१५२।। सर्वलक्ष्मीमयी विद्या सर्वेप्सितफलप्रदा। सर्वारिष्टप्रशमनी परमानन्ददायिनी ।।१५३।। त्रिकोणनिलया त्रिस्था त्रिमात्रा त्रितनुस्थिता। त्रिवेणी त्रिपथा त्रिस्था त्रिमूर्तिस्त्रिपुरेश्वरी ।।१५४।। त्रिधाम्नी त्रिदशाध्यक्षा त्रिवित् त्रिपुरवासिनी। त्रयीविद्या च त्रिशिरास्त्रैलोक्या च त्रिपुष्करा ।।१५५।। त्रिकोटरस्था त्रिविधा त्रिपुरा त्रिपुरात्मिका। त्रिपुरश्रीस्त्रिजननी त्रिपुरा त्रिपुरसुन्दरी ।।१५६ ।।

इदं त्रिपुरसुन्दर्याः स्तोत्रं नाम सहस्रकम्। गुह्याद्गुह्यतरं पुत्र तव प्रीत्यै प्रकीर्तितम् ।।१५७।। गोपनीयं प्रयत्नेन पठनीयं प्रयत्नतः। नातः परतरं पुण्यं नातः परतरं तपः ।।१५८।। नातः परतरं स्तोत्रं नातः परतरा गतिः। स्तोत्रं सहस्र नामाख्यं मम वक्त्राद्विनिर्गतम् ।।१५९।। यः पठेत्प्रयतो भक्त्या शृणुयाद्वा समाहितः। मोक्षार्थी लभते मोक्षं स्वर्गार्थी स्वर्गमाप्नुयात् ।।१६०।। कामांश्च प्राप्नुयात्कामी धनार्थी च लभेद्धनम्। विद्यार्थी लभते विद्यां यशोर्थी लभते यशः ।।१६१।। कन्यार्थी लभते कन्यां सुतार्थी लभते सुतम्। गुर्विणी जनयेत्पुत्रं कन्या विन्दति सत्पतिम् ।।१६२।। मूर्खोपि लभते शास्त्रं हीनोऽपि लभते गतिम्। संक्रांत्यां वार्क्यामावास्यामष्टम्योश्च विशेषतः ।।१६३।। पौर्णमास्यां चतुर्दश्यां नवम्यां भौमवासरे। पठेद्वा पाठयेद्वापि शृणुयाद्वा समाहितः ।।१६४।। स मुक्तस्सर्वपापेभ्यः कामेश्वरसमो भवेत्। लक्ष्मीवान्धनवांश्चैव वल्लभस्सर्वयोषिताम् ।।१६५।। तस्य वश्यं भवेदाशु त्रैलोक्यं सचराचरम्। रुद्रं दृष्ट्वा यथा देवा विष्णुं दृष्ट्वा च दानवाः ।।१६६।। यथाहिर्गरुडं दृष्ट्वा सिंहं दृष्ट्वा यथा गजाः। कीटवत्प्रपलायन्ते तस्य वक्त्रावलोकनात् ।।१६७।। अग्निचौरभयं तस्य कदाचिन्नैव संभवेत्। पाप्मानो विदिधाः शांतिं मेरुपर्वतसन्निभाः ।।१६८।। यस्मातच्छृणुयाद्विस्तृणं वह्निहुतं यथा एकदा पठनादेव सर्वपापक्षयो भवेत् ।।१६९।। दशधा पठनादेव वाचां सिद्धः प्रजायते। शतधा पठनाद्वापि खेचरो जायते नरः ।।१७०।। सहस्रदशसंख्यं वा यः पठेद्भक्तिमानसः। मातास्य जगतां धात्री प्रत्यक्षा भवति ध्रुवम् ।।१७१।। लक्षं पूर्णं यथा पुत्र स्तोत्रराजं पठेत्सुधीः। भवपाशविनिर्मुक्तो मम तुल्यो न संशयः ।।१७२।। सर्वतीर्थेषु यत्पुण्यं सकृज्जप्त्वा लभेन्नरः। सर्ववेदेषु यत्प्रोक्तं तत्फलं परिकीर्तितम् ।।१७३।। भूत्वा च बलवान् पुत्र धनवान् सर्वसम्पदः। देहान्ते परमं स्थानं यत्सुरैरपि दुर्लभम् ।।१७४।। स यास्यति न संदेहः स्तवराजस्य कीर्तनात् ।।१७५।।

इति श्रीवामकेश्वरतंत्रे हरकुमारसंवादे महात्रिपुरसुन्दर्याः
षोडश्याः सहस्रनामस्तोत्रं समाप्तम्।

हे पुत्र यह त्रिपुरसुन्दरी का सहस्र नाम स्तोत्र, जो अत्यन्त गोपनीय है, मैंने तुम्हारे लिए बताया है। इसे प्रयत्न से पढ़ना तथा गुप्त रखना। इससे बढ़कर कोई पुण्य तप नहीं है। इससे उत्तम कोई स्तोत्र नहीं है। इससे उत्तम कोई गति नहीं है। यह सहस्रनाम स्तोत्र मेरे मुख से प्रकट हुआ है। इसे यदि एकाग्रचित होकर पढ़े, समाहित होकर भक्ति से सुने तो मोक्षार्थी मोक्ष पाता है, स्वर्गार्थी स्वर्ग पाता है,

कामी काम पाता है तथा धनार्थी धन पाता है। विद्यार्थी विद्या पाता है। यश चाहने वाला यश पाता है। कन्यार्थी कन्या पाता है। पुत्रार्थी पुत्र पाता है। गर्भिणी पुत्र को जन्म देती है, कन्या पति को पाती है। मूर्ख भी शास्त्र ज्ञान प्राप्त करता है। हीन भी गति प्राप्त करता है। संक्रान्ति, अमावस्या तथा अष्टमी को, विशेषरूप से पूर्णमासी, नवमी तथा सोमवार को जो इसे शान्त होकर पढ़े, पढ़ावे या सुने तो वह सब पापों से मुक्त होकर कामदेव के समान हो जाता है तथा वह लक्ष्मीवान, धनवान् और सभी स्त्रियों का बल्लभ हो जाता है। शीघ्र ही उसके वश में तीनों लोक हो जाता है। जैसे रूद्र को देखकर सभी देव, विष्णु को देखकर सभी दानव एवं गरुड़ को देख कर सभी सर्प, सिंह को देख कर सभी हाथी कीड़े मकोड़े के समान भाग जाते हैं, वैसे ही उस साधक के मुख को देखकर सभी भाग जाते हैं। उस साधक को कभी आग का भय संभव ही नहीं है। मेरु पर्वत के समान भी नाना प्रकार के पाप शान्त हो जाते हैं। वह जिन विघ्नों को सुनता है वे अग्नि में तृण के समान भस्म हो जाते हैं। एक बार के पाठ से सम्पूर्ण पापों का नाश हो जाता है। दश बार पाठ करने से वाणी की सिद्धि होती है। सौ बार पाठ करने से मनुष्य आकाश में उड़ने लगता है। दश हजार पाठ जो करता है, उसे जगत् की माता त्रिपुरसुन्दरी निश्चित रूप से प्रत्यक्ष दर्शन देती हैं। हे पुत्र! जो सुधी इस स्तोत्रराज को एक लाख बार पढ़ता है वह भवपाश से मुक्त होकर मेरे समान हो जाता है। इसमें कोई संशय नहीं है। सभी तीर्थों में जो पुण्य है उसे मनुष्य इसके एक बार पाठ से प्राप्त कर लेता है। सम्पूर्ण वेदों में जो फल कहा गया है वह सब फल इसके एक बार पाठ से संभव है। साधक समस्त सम्पत्तियों के स्वामी के घर बलवान् तथा धनवान् पुत्र के रूप में उत्पन्न होता है और अन्त में शरीरान्त होने पर देवताओं के लिए भी दुर्लभ जो परम पद है, उसको इस सहस्रनाम स्तोत्रराज के कीर्तन से वह निःसन्देह प्राप्त करता है।

शोडशीहृदय

कैलासे करुणाक्रांता परोपकृतिमानसा। पप्रच्छ करुणासिन्धु सुप्रसन्नं महेश्वरम् ॥१॥

कैलाश के शिखर पर प्रसन्न बैठे हुए करुणासिन्धु शिव जी से परोपकार की भावना से करुणार्द्र पार्वती जी ने पूछा।

श्रीपार्वत्युवाच।

आगामिनि कलौ ब्रह्मन् धर्मकर्मविवर्जिताः। भविष्यन्ति जनास्तेषां कथं श्रेयो भविष्यति ॥२॥

पार्वती जी बोलीं: हे ब्रह्मन्! आने वाले कलयुग में लोग जब धर्म-कर्म से रहित हो जायेंगे तो उन लोगों का कल्याण कैसे होगा?

श्रीशिव उवाच।

शृणु देवि प्रवक्ष्यामि तव स्नेहान्महेश्वरि। दुर्लभं त्रिषु लोकेषु सुन्दरीहृदयस्तवम् ॥३॥ ये नरा दुःखसंतप्ता दारिद्र्यहतमानसाः। अस्यैव पाठमात्रेण तेषां श्रेयो भविष्यति ॥४॥

श्रीशिव जी बोले: हे महेश्वरि देवि! सुनो मैं तुम्हारे स्नेह से तीनों लोकों में दुर्लभ सुन्दरी हृदय स्तोत्र को कहूंगा। जो मनुष्य दुःखसंतप्त तथा दरिद्रता से हतमानस हैं, उनका इसी स्तोत्र के पाठ मात्र से कल्याण होगा।

विनियोग: ॐ अस्य श्रीमहाषोडशीहृदयस्तोत्रमन्त्रस्य आनन्दभैरवऋषिर्देवी गायत्रीच्छंदः श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी देवता ऐं बीजं सौः शक्तिः क्लीं कीलकं धर्मार्थकाममोक्षार्थे पाठे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास: ॐ आनन्दभैरवऋषये नमः शिरसि ॥१॥ देवीगायत्रीच्छन्दसे नमः मुखे ॥२॥ श्रीमहात्रिपुरसुन्दरीदेवतायै नमः हृदये ३। ऐं बीजाय नमः नाभौ ४। सौः शक्तये नमः स्वाधिष्ठाने ५। क्लीं

कीलकाय नमः मूलाधारे ६। विनियोगाय नमः पादयोः ॥७॥

करन्यासः ऐं ह्रीं क्लीं अंगुष्ठाभ्यां नमः। क्लीं श्रीं सौः ऐं तर्जनीभ्यां नमः २। सौः ॐ ह्रीं श्रीं मध्यमाभ्यां नमः ३। ऐं कएलह्रीं हसकलह्रीं अनामिकाभ्यां नमः ४। क्लीं सकल कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५। सौः सौः ऐं क्लीं ह्रीं श्रीं करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ६। इतिकरन्यासः।

हृदयादिषडङ्गन्यासः ऐं ह्रीं क्लीं हृदयाय नमः १। क्लीं श्रीं सौः ऐं शिरसे स्वाहा २। सौः ॐ ह्रीं श्रीं शिखायै वषट् ३। ऐं कएल ह्रीं हसकल ह्रीं कवचाय हुं ४। क्लीं सकल नेत्रत्रयाय वौषट् ५। सौः सौः ऐं क्लीं ह्रीं श्रीं अस्त्राय फट् ॥६॥ इति हृदयादिषडंगन्यासः।

अथ ध्यानं :

बालव्यक्तविभाकरामितनिभां भव्यप्रदां भारतीभीषत्फुल्लमुखाम्बुजस्मितकरैराशाभवान्धापहाम्। पाशं साभयमंकुशं च वरदं संबिभ्रतीं भूतिदां भ्राजंतीं चतुरंबुजाकृतकरैर्भक्त्या भजे षोडशीम् ॥५॥ सुन्दरी सकलकल्मषापहा कोटिकंजप्रियकाम्यकांतिका। कोटिकल्पकृतपुण्यकर्मणा पूजनीयपदपुण्यपुष्करा ॥६॥ शर्वरीशसमसुन्दरानना श्रींशशक्तिसुकृताश्रयाश्रिता। सज्जनानुशरणीयसत्पदा संकटे सुरगणैः सुवन्दिता ॥७॥ या सुरासुररणे जवान्विता आजघान जगदम्बिकाऽजिता। तां भजामि जगतां जनिं जयां युद्धयुक्तदितिजान्सुदुर्जयान् ॥८॥ योगियां हृदयसंगतां शिवां योगयुक्तमनसां यतात्मनाम्। जाग्रतीं जगति यत्नो द्विजा यां जपंति हृदि ता भजाम्यहम् ॥९॥ कल्पकास्तु कलयन्ति कालिकां यत्कला कलिजनोपकारिका। कौलिकालिकलितांघ्रिकञ्जकां तां भजामि कलिकल्मषापहाम् ॥१०॥ बालार्कानन्तशोचिर्निर्जितनुकिरणैर्दीपयन्तीं दिगन्तान् दीप्तैर्देदीप्तमानां दनुजदलवनानल्पदावानलाभाम्। दान्तोदन्तोग्रचित्तां दलितदितिसुतां दर्शनीयान्दुरंतान्देवीं दीनार्द्रचित्तां हृदि मुदितमनाः षोडशीं संस्मरामि ॥११॥ धीरान्धन्यान्धरित्रीधवविधृतशिरो धूतधूल्यब्जपादां घृष्टान्धाराधराधो विनिधृतचपलाचारुचन्दत्प्रभाभाम्। धर्म्यान्धूतोपहारान्धरणिसुरधवोद्धारिणीं ध्येयरूपां धीमद्धन्यातिधन्यान्धनदधनवृतां सुन्दरीं चिन्तयामि ॥१२॥ जयतु जयतु जल्पा योगिनी योगयुक्ता जयतु जयतु सौम्या सुन्दरी सुन्दरास्या। जयतु जयतु पद्मा पद्मिनी केशवस्य जयतु जयतु काली कालिनी कालकांता ॥१३॥ जयतु जयतु खर्वा षोडशी वेदहस्ता जयतु जयतु धात्री धर्मिणी धातृशांतिः। जयतु जयतु वाणी ब्रह्मणो ब्रह्मवन्द्या जयतुजयतु दुर्गा दारिणी देवशत्रोः ॥१४॥ देवि त्वं सृष्टिकाले कमलभवभृता राजसी रक्तरूपा रक्षाकाले त्वमम्बा हरिहृदयधृता सात्विकी श्वेतरूपा। भूरिक्रोधा भवान्ते भवभवनगता तामसी कृष्णरूपा एताश्चान्यास्त्वमेव क्षितमनुजमला सुन्दरी केवलाद्या ॥१५॥ सुमलशमनमेतद्देवि गोप्यं गुणज्ञे ग्रहणमननयोग्यं षोडशीयंखलघ्नम्। सुरतरुसमशीलं संप्रदं पाठकानां प्रभवति हृदयाख्यं स्तोत्रमत्यन्तमान्यम् ॥१६॥ इदं त्रिपुरसुन्दर्याः षोडश्याः परमाद्भुतम्। यः शृणोति नरः स्तोत्रं स सदा सुखमश्नुते ॥१७॥ न शूद्राय प्रदातव्यं शठाय समलात्मने। देयं दान्ताय भक्ताय ब्राह्मणाय विशेषतः ॥१८॥ इति श्रीत्रिपुरसुन्दरीतन्त्रे शोडशीहृदयस्तोत्रं समाप्तम्।

इति श्रीमंत्रमहार्णवे द्वितीयखण्डे श्रीत्रिपुरसुन्दरी

षोडश्यास्तन्त्रे षष्ठस्तरंगः ॥६॥

भुवनेश्वरी ध्यान

उद्यदिनद्युतिमिन्दुकिरीटां तुङ्गकुचां नयनत्रययुक्ताम्
स्मेरमुखीं वरदांकुशपाशाभीति करां प्रभजे भुवनेशीम्।

पृ० ४६२

सप्तम तरङ्ग

-●-

भुवनेश्वरीतन्त्र

अथ वक्ष्ये जगद्धात्रीमधुना भुवनेश्वरीम्। ब्रह्मादयोपि यां ज्ञात्वा लेभिरे श्रियमूर्जिताम्॥१॥ व्योमबीजे महेशानि कैलाशादि प्रतिष्ठितम्। वह्निबीजात्सुवर्णादि निष्पन्नं बहुधा प्रिये॥२॥ तेनायं वर्तते लोको भूमिमण्डलसंस्थितः। तुर्यस्वरेण पाताले शेषरूपेण वर्तते॥३॥ महाभूमण्डलं तस्मात्पातालस्यापि नायिका। अतएव महेशानि भुवनाधीश्वरी प्रिये॥४॥ रुकारे व्योम तुर्येण स्वरेणानिलसंभवः। विकारे सति रेफेण साक्षाद्वह्निस्वरूपिणी॥५॥ वह्निबीजं वसु ज्ञेयं तस्माद्रेफश्च सुन्दरी। अत एव महेशानि सवायोः समता भवेत्॥६॥ बिन्दुचक्रामृता देवी प्लावयन्ती जगत्रयम्। द्रवरूपाऽभवेत्तस्मात्ल्वंती चार्द्धमात्रया। अत एव महेशानि भुवनेशीति कथ्यते॥७॥

अब मैं जगद्धात्री भुवनेश्वरी देवी का वर्णन करूँगा, जिसे ब्रह्मा आदि ने जान कर अत्यधिक शक्तिशाली समृद्धि को प्राप्त किया। हे महेशानि! व्योम बीज से कैलाश आदि प्रतिष्ठित है। हे प्रिये! वह्निबीज से प्रायः सुवर्ण आदि का निर्माण हुआ। उसी से यह भूमंडलस्थित लोक वर्तमान है। तुर्य स्वर से पाताल में शेषरूप से महामण्डल वर्तमान है। हे प्रिये महेशानि! इसलिए पाताल की भी नायिका भुवनेश्वरी देवी है। रुकार में व्योमतुर्य स्वर से वायु की उत्पत्ति है। विकार होने पर रेफ के साथ साक्षात् वह्निस्वरूपिणी देवी हो जाती है। वह्निबीज रेफ को वसु जानना चाहिए। इसलिए हे महेशानि! वह वायु की समानता होती है। विन्दु-चक्र पर अमृतस्वरूपा देवी तीनों लोकों को तृप्त करती हुई अर्धमात्रा से प्लवन करती हुई द्रवरूप हो गयी। अतएव हे महेशानि वह भुवनेशी कही जाती है।

तत्रादौ एकाक्षरीबीजमन्त्रप्रयोगः शारदातिलके। मन्त्रो यथा

यहाँ पहले एकाक्षरी मन्त्र का प्रयोग, जैसा कि शारदातिलक में है, कहा जा रहा है:

"ह्रीं" यह एकाक्षर मन्त्र है:

विनियोग: अस्य श्रीभुवनेश्वरीमन्त्रस्य शक्तिर्ऋषिर्गायत्रीच्छन्दो हकारो बीजं ईकारः शक्तीरेफः कीलकं श्रीभुवनेश्वरी देवता चतुर्वर्गसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास: शक्तिऋषये नमः शिरसि १। गायत्रीच्छंदसे नमः मुखे २। भुवनेश्वर्यै देवतायै नमः हृदि ३। हं बीजाय नमः गुह्ये ४। ईं शक्तये नमः पादयो ५। रं कीलकाय नमः नाभौ ६। विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ७। इति ऋष्यादिन्यासः।

करन्यास: ॐ ह्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः १। ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः २। ॐ ह्रूं मध्यमाभ्यां नमः ३। ॐ ह्रैं अनामिकाभ्यां नमः ४। ॐ ह्रौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५। ॐ ह्रः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ६। इति करन्यासः।

हृदयादिषडङ्गन्यास: ॐ ह्रां हृदयाय नमः १। ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा २। ॐ ह्रूं शिखायै वषट् ३। ॐ ह्रैं कवचाय हुं ४। ॐ ह्रौं नेत्रत्राय वौषट् ५। ॐ ह्रः अस्त्राय फट् ६॥ इति हृदयादिषडंगन्यासः।

इति न्यासं कृत्वा सर्वदेवोपयोगिपद्धतिमार्गेण सृष्टिस्थितिसंहारमातृकान्यासं च कुर्यात्। अशक्तश्चेत् मन्त्रवर्णन्यासं कुर्यात्।

इस प्रकार न्यास करके सर्वदेवोपयोगी पद्धतिमार्ग से सृष्टि-स्थिति-संहार-मातृका न्यास करे। साधक यदि असमर्थ हो तो इस प्रकार मन्त्रवर्णन्यास मात्र ही करे।

मन्त्रवर्णन्यास : ॐ ह्ल्लेखायै नमः शिरसि १। ॐ एं गगनायै नमः मुखे २। ॐ उं रक्तायै नमः हृदि ३। ॐ इं करालिकायै नमः गुह्ये ४। ॐ अं महोच्छुष्मायै नमः पादयोः ५। इति मन्त्रवर्णन्यास।

पञ्चवक्त्रन्यास : ॐ ह्ल्लेखायै ऊर्ध्ववक्त्राय नमः शिरसि १। ॐ एं गगनायै पूर्ववक्त्राय नमः मुखे २। ॐ उं रक्तायै दक्षिणवक्त्राय नमः हृदि ३। ॐ इं करालिकायै उत्तरवक्त्राय नमः गुह्ये ४। ॐ अं महोच्छुष्मायै पश्चिमवक्त्राय नमः पादयोः ५। इति पंचवक्त्र न्यासः।

ॐ गायत्रीसहितब्रह्मणे नमः भाले १। ॐ सावित्रीसहितविष्णवे नमः दक्षिणकपोले २। ॐ वागीश्वरीसहितमहेश्वराय नमः वामकपोले ३। ॐ श्रीसहितधनपतये नमः वामकर्णाग्रे। ॐ रतिसहितस्मराय नमः मुखे ५। ॐ पुष्टिसहितगणपतये नमः दक्षिणकर्णोपरि ६। ॐ शंखनिधये नमः दक्षिणगण्डकर्णान्तराले ७। ॐ पद्मनिधये नमः वामगण्डकर्णान्तराले ८। ॐ ह्रीं मलदेवता-भुवनेश्वर्यै नमः मुखे ९॥

इस प्रकार विन्यास करे। इसके बाद :

ॐ गायत्रीसहितब्रह्मणे नमः कण्ठमूले १। ॐ सावित्रीसहितविष्णवे नमो दक्षिणस्तने २। ॐ वागीश्वरीसहितमहेश्वराय नमः वामस्तने ३। ॐ श्रीसहित धनपतये नमः वामांसे ४। ॐ रतिसहितस्मराय नमः हृदयकमले ५। ॐ पुष्टिसहितगणपतये नमः दक्षिणांसे ६। ॐ शंखनिधये नमः दक्षिणपार्श्वे ७। ॐ पद्मनिधये नमः वामपार्श्वे८। ॐ ह्रीं मूलदेवताभुवनेश्वर्यै नमः नाभौ ९॥

इससे विन्यास करे। इसके बाद :

ॐ ब्राह्म्यै नमः भाले १। ॐ माहेश्वर्यै नमः वामांसे २। ॐ कौमार्यै नमः वामपार्श्वे ३। ॐ वैष्णव्यै नमः जठरे ४। ॐ वाराह्यै नमः दक्षिणपार्श्वे ५। ॐ इन्द्राण्यै नमः दक्षिणांसे ६. ॐ चामुण्डायै नमः गले ७। ॐ महालक्ष्म्यै नमः हृदि ८।

इससे विन्यास करे। इसके बाद हृदय पर हाथ रखकर 'ॐ ह्रीं मूलदेवता भुवनेश्वर्ये सर्वाङ्गे व्यापकं भव।' इससे विन्यास करके देवतारूप की भावना करते हुए ध्यान करे।

अथ ध्यानं।

उद्यदिनद्युतिमिन्दुकिरीटां तुरंकुचां नयनत्रययुक्ताम्। स्मेरमुखीं वरदां कुशपाशाभीतिकरां प्रभजे भुवनेशीम्॥१॥

इति ध्यात्वा सर्वतोभद्रमण्डले पीठदेवतापद्धतिमार्गेण संस्थाप्य अथवा मं मण्डूकादिपरतत्त्वान्तपीठदेवताभ्यो नमः। इति पीठदेवताः संपूज्य पूर्वादिक्रमेण पीठशक्तीः पूजयेत्।

इससे ध्यान करके सर्वतोभद्रमण्डल में पद्धति मार्ग से पीठदेवता को स्थापित करके अथवा "मं मण्डूकादि परतत्त्वान्त पीठदेवताभ्यो नमः" इससे पीठ देवताओं की पूजा करके पूर्वादि क्रम से पीठशक्तियों की इस प्रकार पूजा करे।

ॐ जयायै नमः १। ॐ विजयायै नमः २। ॐ अजितायै नमः ३। ॐ अपराजितायै नमः ४। ॐ नित्यायै नमः ५। ॐ विलासिन्यै नमः ६। ॐ दोग्ध्र्यै नमः ७। ॐ अघोरायै नमः ८। पीठमध्ये ॐ मंगलायै नमः ९।

इति नवपीठशक्तीः पूजयेत्। ततः षट्कोणाष्टदलवृतषोडशदलभूपुरात्मकं स्वर्णादिनिर्मितं यन्त्रं अग्न्युत्तारणपूर्वकं ॐ ह्रीं सर्वशक्तिकमलासनाय नमः। इति मन्त्रेण पुष्पाद्यासनं दत्त्वा पीठमध्ये संस्थाप्य प्राणप्रतिष्ठां च कृत्वा पुनर्ध्यात्वा मूलेन मूर्ति प्रकल्प्य आवाहनादिपुष्पांतैरुपचारैः संपूज्य देव्याज्ञां गृहीत्वा आवरणपूजां कुर्यात्। तत्र क्रम :

इससे नव पीठशक्तियों की पूजा करे। इसके बाद षट्कोणाष्टदलवृत तथा षोडशदलयुक्त भूपुर वाले

स्वर्णादि से निर्मित यन्त्र को अग्न्युत्तारण पूर्वक "ॐ ह्रीं सर्वशक्तिकमलासनाय नमः।" इस मन्त्र से पुष्पाद्यासन देकर पीठ के मध्य उसे स्थापित कर उसमें प्राणप्रतिष्ठा कर पुनः ध्यान कर मूलमन्त्र से मूर्ति की कल्पना करके आवाहन से लेकर पुष्पांजलि प्रदान पर्यन्त उपचारों से पूजा करके देवी की आज्ञा लेकर आवरण पूजा करे। उसमें क्रम यह है। (भुवनेश्वरी पूजनयन्त्र देखिये चित्र १६):

देव्याः समीपे मध्ये। ॐ हल्लेखायै नमः[1] हल्लेखाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। इति सर्वत्र १। पूर्वे। ॐ एं गगनायै नमः[2] गगनाश्रीपा० २। दक्षिणे। ॐ रक्तायै नमः[3] रक्ताश्रीपा० ३। उत्तरे। ॐ ईं करालिकायै नमः[4] करालिकाश्रीपा० ४। पश्चिमे। ॐ महोच्छुष्मायै नमः[5] महोच्छुष्माश्रीपा० ५।

इति पूजयेत्। ततः पुष्पाञ्जलिमादाय मूलमुच्चार्य "ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले। भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम्॥१॥" इति पठित्वा पुष्पाञ्जलिं दत्त्वा पूजितास्तर्पिताः सन्तु इति वदेत्। इति प्रथमावरणम्।

इससे पूजा करे। इसके बाद पुष्पांजलि लेकर मूलमन्त्र का उच्चारण करके "ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले। भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम्॥१॥ "इसे पढ़ कर पुष्पांजलि देकर" "पूजितास्तर्पितास्सन्तु" यह कहे। इति प्रथमावरण॥१॥

ततः षट्कोणकेसरेषु:

इसके बाद षट्कोण केसरों में:

अग्निकोणे ॐ ह्रां हृदयाय नमः[6] हृदयश्रीपा० १। निर्ऋतिकोणे। ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा[7] शिरःश्रीपा० २। वायव्ये। ॐ ह्रूं शिखायै वषट्[8] शिखाश्रीपा० ३। ईशान्ये। ॐ ह्रैं कवचाय[9] हुँ कवचश्रीपा० ४। पूज्यपूजकयोर्मध्ये। ॐ ह्रौं नेत्रत्रयाय वौषट्[10] नेत्रत्रयश्रीपा० ५। देवीपश्चिमे। ॐ ह्रः अस्त्राय फट्[11] अस्त्रश्रीपा० ६।

इति षडंगानि पूजयित्वा पुष्पाञ्जलिं दद्यात्। इति द्वितीयावरणम्।

इससे षडंगों की पूजा करके पुष्पांजलि देवे। इति द्वितीयावरण॥२॥

षट्कोणाग्रेषु।

पूर्वे। ॐ गायत्र्यै नमः[12]। गायत्रीश्रीपा० १। ॐ ब्रह्मणे नमः[13]। ब्रह्मश्रीपा० २। नैर्ऋते। ॐ सावित्र्यै नमः[14]। सावित्रीश्रीपा० ३। ॐ विष्णवे नमः[15]। विष्णुश्रीपादुकां पूजयामि तर्प० ४। वायुकोणे। ॐ सरस्वत्यै नमः[16]। सरस्वतीश्रीपा० ५। ॐ रुद्राय नमः [17]। रुद्रश्रीपा० ६। अग्निकोणे। ॐ श्रियै नमः[18]। श्रीश्रीपा० ७। ॐ धनपतये नमः[19] धनपतिश्रीपा० ८। पश्चिमे। ॐ रत्यै नमः। रतिश्रीपा० ९। ॐ स्मराय नमः[21]। स्मरश्रीपा०१०। ईशान्याम्। ॐ पुष्ट्यै[22] नमः। पुष्टिश्रीपा० ११। ॐ गणपतये नमः[23]। गणपतिश्रीपादुकां पू १२। षट्कोणदक्षिणे। ॐ शंखनिधये नमः[24]। शंखनिधिश्रीपा०१३। वामे। ॐ पद्मनिधये नमः पद्मनिधि श्रीपा०१४।

इति पूजयित्वा पुष्पाञ्जलिं दद्यात्। इति तृतीयावरणम्।

इससे पूजा करके पुष्पांजलि देवे। इति तृतीयावरण॥३॥

पूर्वाद्यष्टदले। ॐ अनङ्गकुसुमायै नमः[26]। अनङ्गकुसुमा श्रीपा० १। ॐ अनङ्गकुसुमातुरायै नमः[27]। अनङ्गकुसुमातुराश्रीपा० २। ॐ अनङ्गदमनायै नमः[28]। अनङ्गदमनाश्रीपा० ३। ॐ अनङ्गमदनातुरायै नमः[29]। अनङ्गमदनातुराश्रीपा० ४। ॐ भुवनपालायै नमः[30]। भुवनपालाश्रीपा० ५। ॐ गगनवेगायै नमः[31]। गगनवेगा श्रीपा० ६। ॐ शशिरेखायै नमः[32]। शशिरेखाश्रीपा० ७। ॐ गगनरेखायै नमः[33]। गगनरेखाश्रीपा० ८।

इत्यष्टौ शक्तीः पूजयित्वा पुष्पाञ्जलिं दद्यात्। इति चतुर्थावरणम्।

इससे आठ शक्तियों की पूजा करके पुष्पांजलि देवे। इति चतुर्थावरण॥४॥

षोडशदलेषु पूर्वादिक्रमेण। ॐ कराल्यै नमः[34]। करालीश्रीपा० १। ॐ विकराल्यै नमः[35]।

विकरालीश्रीपा० २। ॐ उमायै नमः[३६]। उमाश्रीपा० ३। ॐ सरस्वत्यै नमः[३७]। सरस्वतीश्रीपादुकां पू० ४। ॐ श्रियै नमः[३८]। श्री श्रीपादुकां पूजयादि तर्पयामि नमः ५। ॐ दुर्गायै नमः[३९]। दुर्गाश्रीपा० ६। ॐ उषायै नमः[४०]। उषाश्रीपा० ७। ॐ लक्ष्म्यै नमः[४१]। लक्ष्मीश्रीपा० ८। ॐ श्रुत्यै नमः[४२]। श्रुतिश्रीपा० ९। ॐ स्मृत्यै नमः[४३]। स्मृतिश्रीपा०१०। ॐ धृत्यै नमः[४४]। धृतिश्रीपा०११। ॐ श्रद्धायै नमः[४५]। श्रद्धाश्रीपादुकां पूज० १२। ॐ मेधायै नमः[४६]। मेधाश्रीपादुकां पू १३। ॐ मत्यै नमः। मति श्रीपादुकां पूजया० १४। ॐ कांत्यै नमः[४८]। कांतिश्रीपा० १५। ॐ आर्ध्यायै नमः[४९]। आर्ध्याश्रीपा० १६।

इति पूजयित्वा पुष्पाञ्जलिं दद्यात्। इति पञ्चमावरणम्।

इससे पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवे। इति पंचमावरण ॥५॥

ततो भूपुराभ्यन्तरे पूर्वादिक्रमेण। ॐ अनङ्गरूपायै नमः[५०]। अनङ्गरूपाश्रीपा० १। ॐ अनङ्गमदनायै नमः[५१]। अनङ्गमदनाश्रीपा० २। ॐ अनङ्गमदनातुरायै नमः[५२]। अनङ्गमदनातुराश्रीपा० ३। ॐ भुवनरेखायै नमः[५३]। भुवनरेखा श्रीपा० ४। ॐ भुवनपालिकायै नमः[५४]। भुवनपालिकाश्रीपा०५। ॐ सर्वशिशिरायै नमः[५५] सर्वशिशिराश्रीपा० ६। ॐ अनङ्गवेदनायै नमः[५६]। अनङ्गवेदनाश्रीपा० ७। ॐ अनङ्गमेखलायै नमः[५७]। अनङ्गमेखलाश्रीपा० ८।

इति पूजयित्वा पुष्पाञ्जलिं दद्यात्। इति षष्ठावरणम्।

इससे पूजा करके पुष्पांजलि देवे। इति षष्ठावरण ॥६॥

इसके बाद भूपुर में पूर्वादि क्रम से ॐ लं इन्द्राय देवाधिपतये सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय नमः[५८]। इन्द्रश्रीपा० १। ॐ रं अग्नये तेजोधिपतये सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय नमः[५९]। अग्निश्रीपा० २। ॐ मां यमाय प्रेताधिपतये सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय नमः[६०]। यम श्रीपा० ३। ॐ क्षं निर्ऋतये रक्षोधिपतये सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय नमः[६१]। निर्ऋतिश्रीपा० ४। ॐ वं वरुणाय जलाधिपतये सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय नमः[६२]। वरुण श्रीपा० ५। ॐ यं वायवे प्राणाधिपतये सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय नमः[६३]। वायु श्रीपादुकां पू ६। ॐ[1] सौं सोमाय ताराधिपतये सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय नमः[६४]। सोम श्रीपा० ७। ॐ हं ईशानाय गणाधिपतये सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय नमः[६५]। ईशानश्रीपा० ८। इन्द्रेशानयोर्मध्ये। ॐ आं ब्रह्मणे प्रजाधिपतये सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय नमः[६६]। ब्रह्मश्रीपा० ९। निर्ऋतिवरुणयोर्मध्ये ॐ ह्रीं अनन्ताय नागाधिपतये सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय नमः[६७]। अनन्तश्रीपा० १०।

इति दशदिक्पालान्पूजयेत्। तद्बहिः पूर्वादिक्रमेण।

इससे दश दिक्पालों की पूजा करे। फिर उसके बाहर पूर्वादि क्रम से : ॐ वं वज्राय नमः[६८] १। ॐ शं शक्तये नमः[६९] २। ॐ दं दण्डाय नमः[७०] ३। ॐ खं खड्गाय नमः[७१] ४। ॐ पां पाशाय नमः[७२] ५। ॐ अं अंकुशाय नमः[७३] ६। ॐ गं गदायै नमः[७४] ७। ॐ त्रिं त्रिशूलाय नमः[७५] ८। ॐ पं पद्माय नमः[७६] ९। ॐ चं चक्राय नमः[७७] १०।

इत्यस्त्राणि पूजयेत्। इति सप्तमावरणम्।

इससे अस्त्रों की पूजा करे। इति सप्तमावरण ॥७॥

इत्यावरणपूजां कृत्वा धूपादिनीराजनान्तं सम्पूज्य जपं कुर्यात्। अस्य पुरश्चरणं द्वात्रिंशल्लक्ष (३२) जपः। तद्दशांशेन हवनतर्पणमार्जनब्राह्मणभोजनानि कुर्यात्। एवं कृते मन्त्रः सिद्धो भवति एतस्मिन्सिद्धे मन्त्रे मन्त्री-प्रयोगान् साधयेत्। प्रजपेन्मन्त्रंविन्मन्त्रं द्वात्रिंशल्लक्षमानतः। त्रिस्वादूक्तैः प्रजुहुयादष्ट द्रव्यैर्दशांशतः ॥१॥

---

१ ॐ कुं कुबेराय धनाधिपतये सायुधाय० इति मतांतरे।

इस प्रकार आवरण पूजा करके धूपदान से लेकर नीराजन पर्यन्त पूजा करके जप करे। इसका पुरश्चरण बत्तीस लाख जप है। उसका दशांश हवन, उसका दशांश तर्पण, उसका दशांश मार्जन तथा उसका दशांश ब्राह्मण भोजन करे। इस प्रकार जप करने पर मन्त्र सिद्ध होता है। इस मन्त्र के सिद्ध होने पर साधक प्रयोगों को सिद्ध करे। साधक बत्तीस लाख मन्त्र का जप करे। घी, मधु और शर्करा के साथ अष्ट द्रव्यों से दशांश होम करे। अष्ठ द्रव्य ये है:

अश्वत्थोदुम्बरप्लक्षन्यग्रोधसमिधस्तिलाः सिद्धार्थ पायसाज्यानि द्रव्याण्यष्टौ बिदुर्बुधाः।

अर्थात् पीपल, गूलर, पलाश, बरगद की समिधाएँ, पीली सरसों, खीर तथा घी, इन्हें विद्वानों ने आठ द्रव्य कहा है।

पूज्यते सकलैर्देवैः किंपुनर्मनुजोत्तमैः मन्त्री त्रिमधुरोपेतैर्हुत्वाश्वत्थसमिद्वरैः ॥२॥ ब्राह्मणान्वशयेच्छीघ्रं पार्थिवान्पद्महोमतः। पलाशपुष्पैस्तत्पत्नीर्मन्त्रिणं कुमुदैरपि ॥३॥ पञ्चविंशतिसंजप्तैर्जलैर्नित्यं दिनेदिने। आत्मानमभिषिञ्चेद्यः सर्वसौभाग्यवान् भवेत् ॥४॥ पञ्चविंशतिसंजप्तं जलं प्रातः पिबेन्नरः। अवश्यं महतीं प्रज्ञां कवीनामग्रणीर्भवेत् ॥५॥ कर्पूरागरुसंयुक्तं कुंकुमं सासुसाधितम्। गृहीत्वा तिलकं कुर्याद्राजवश्यमनुत्तमम् ॥६॥ शालिपिष्टमयीं कृत्वा पुत्तलीं मधुरान्विताम्। जप्तां प्रतिष्ठितप्राणां भक्षयेद्रविवासरे ॥७॥ वशं नयति राजानं नारीं वा नरमेव वा। कण्ठमात्रोदके स्थित्वा वीक्ष्य तोयगतं रविम् ॥८॥ त्रिसहस्त्रं जपेन्मन्त्रमिष्टां कन्यां लभेन्नरः। अन्नं तु मन्त्रितं मन्त्री भुंजीतश्रीप्रसिद्धये ॥९॥ लिखितां भस्मनाऽमायां सुसाध्यां फलकादिषु। तत्काले दर्शयेद्यन्त्रं सुखं सूयेत गर्भिणी ॥१०॥

जो इस प्रकार होम करता है वह समस्त देवताओं से पूजित होता है, मनुष्यों से तो कहना ही क्या! साधक मधु, घी, शर्करा तथा पीपल की समिधाओं से होम करके शीघ्र ही ब्राह्मणों को वश में कर लेता है। कमल के होम से वह राजाओं को वश में कर लेता है। पलाश के फूलों से राजपत्नियों को वश में कर लेता है। कुमुद का होम करने से मन्त्रियों को वश में कर लेता है। पचीस बार मन्त्र से अभिमन्त्रित जल से यदि साधक प्रतिदिन अपना अभिषेक करे तो वह सर्व सौभाग्यवान् होता है। पच्चीस बार मन्त्र से अभिमन्त्रित जल का यदि मनुष्य प्रातःकाल पान करे तो वह महती बुद्धि को प्राप्त कर कवियों मे अग्रणी हो जाता है। कपूर तथा अगर से युक्त केसर से सिद्ध किये तिलक को धारण करना राजा का श्रेष्ठ वशीकरण करने वाला है। घी, मधु तथा शकर के साथ चावल के आटे से बनी पुतली को मन्त्र से अभिमन्त्रित करके उसमें प्राणप्रतिष्ठा करके यदि साधक उसे रविवार को खाये तो वह राजा तथा नर या नारी को वश में कर लेता है। कण्ठ मात्र पानी में खड़े होकर जल में सूर्य के प्रतिबिम्ब को देख कर तीन हजार मन्त्र का जप करने से मनुष्य इष्ट कन्या को प्राप्त करता है। अभिमन्त्रित अन्न को लक्ष्मी की समृद्धि के लिए साधक खाये। पटरी आदि पर मन्त्र से अमावस्या के दिन सुसाध्या देवी के मन्त्र को लिख कर यदि गर्भिणी को दिखावे तो वह तत्काल सुखपूर्वक प्रसव करती है।

इत्येकाक्षरो भुवनेश्वरी मन्त्रप्रयोगः ॥१॥

अथ त्र्यक्षरमन्त्रप्रयोगः।

मन्त्रो यथाः ऐं ह्रीं श्रीं। इति त्र्यक्षरात्मको भुवनेश्वरीमन्त्रः। अस्यविधानम्ः न्यासादिकं सर्वं पूर्ववत्। षडङ्गन्यासे तु विशेषः।

मन्त्र यह है: "ऐं ह्रीं श्रीं" यह तीन अक्षरों वाला भुवनेश्वरी मन्त्र है। इसका विधान, न्यासादि पूर्ववत ही है। षडङ्गन्यास में यह विशेष है:

करन्यास : ऐं ह्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः १। ऐं ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः २। ऐं ह्रूं मध्यमाभ्यां नमः ३। ऐं ह्रैं अनामिकाभ्यां नमः ४। ऐं ह्रौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५। ऐं ह्रः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ६। इति करन्यासः।

हृदयादि षडङ्गन्यास : ॐ ऐं ह्रां हृदयाय नमः १। ॐ ऐं ह्रीं शिरसे स्वाहा २। ॐ ऐं ह्रूं शिखायै वषट् ३। ॐ ऐं ह्रैं कवचाय हुम् ४। ॐ ऐं ह्रौं नेत्रत्रयाय वौषट् ५। ॐ ऐं ह्रः अस्त्राय फट् ६। इति हृदयादिषडङ्गन्यासः।

इस प्रकार न्यासविधि करके ध्यान करे:

अथ ध्यानम् :

सिंदूरारुणविग्रहां त्रिनयनां माणिक्य मौलिस्फुरत्तारानायकशेखरां स्मितमुखीमापीन वक्षोरुहाम्। पाणिभ्यां मणिपूर्णरत्नचषकं रक्तोत्पलं बिभ्रतीं सौम्यां रत्नघटस्थसव्यचरणां ध्यायेत्परामम्बिकाम्।

इति ध्यायेत्। अस्य पूजादिकं सर्वं पूर्ववत्। अस्य पुरश्चरणं द्वादशलक्षजपः। तत्तद्दशांशेन होमतर्पण मार्जनब्राह्मणभोजनानि कुर्यात्।

इससे ध्यान करे। इसकी पूजा आदि सब कुछ पूर्ववत् है। इसका पुरश्चरण बारह लाख जप है। उसका दशांश होम तथा उसका दशांश तर्पण तथा उसका दशांश मार्जन और उसका दशांश ब्राह्मण भोजन करे।

एवं कृते मन्त्रः सिद्धो भवति। एतस्मिन्सिद्धे मन्त्रे मन्त्री प्रयोगान् साधयेत्।

ऐसा करने से मन्त्र सिद्ध होता है। इस मन्त्र के सिद्ध होने से साधक प्रयोगों को सिद्ध करे।

रविलक्षं जपेन्मन्त्रं पायसैर्मधुराप्लुतैः। दशांशं जुहुयान्मन्त्री पीठे प्रागीरिते यजेत्॥१॥

बारह लाख मन्त्र का जप करे। जप के दशांश से घी, मधु तथा शकर से युक्त खीर से होम करे तथा पूर्वोक्त पीठ पर पूजा करे।

देवीप्रागुक्तमार्गेण गन्धाद्यैरतिशोभनैः। हुत्वा पलाशकुसुमैर्वाक्श्रियं महतीं व्रजेत्॥२॥ ब्राह्मीघृतं पिबेज्जप्तं कवित्वं वत्सराद्भवेत्। सिद्धार्थान् लवणोपेतान् हुत्वा मन्त्री वशं नयेत्॥३॥ नरं नारीं नरपतिं नात्रकार्या विचारणा। चतुरंगुलजैः पुष्पैश्चन्दनाम्भः समुक्षितैः॥४॥ हुत्वा वशीकरोत्याशु त्रैलोक्यमपि साधकः।

देवी को पूर्वोक्त मार्ग से अति मनोरम गंध आदि तथा पलाश के फूलों से होम करके साधक वाणी की महती श्री को पाता है। मन्त्र से अभिमन्त्रित ब्राह्मी घी को एक वर्ष तक पीने से साधक में कविता करने की शक्ति उत्पन्न हो जाती है। साधक नमक के साथ पीली सरसों का होम करने से नर, नारी तथा राजा के वशीकरण की क्षमता प्राप्त करता है। इसमें कोई विचार करने की आवश्यकता नहीं है। चन्दन के जल से सिक्त चार अंगुलवाले फूलों से होम करके साधक शीघ्र ही तीनों लोकों को वश में कर लेता है!

जुहुयादरुणाम्भोजैरयुतं मधुराप्लुतैः॥५॥ राज्यश्रियमवाप्नोति सलिलैः तण्डुलैस्तथा। प्रागुक्तान्यपि कर्माणि मन्त्रेणानेन साधयेत्॥६॥

यदि साधक घी, मधु तथा शकर से युक्त लाल कमलों से होम करे तो राज्यश्री को प्राप्त करता है। जल से युक्त चावल का होम करने से भी साधक पूर्वोक्त कर्मो को इस मन्त्र से सिद्ध कर सकता है।

इति त्र्यक्षरबीजात्मकभुवनेश्वरी मन्त्रप्रयोगः॥२॥

त्रैलोक्यमङ्गलभुवनेश्वरीकवचम्

देव्युवाच।

भुवनेश्वर्याश्च देवेश या या विद्याः प्रकाशिताः। श्रुताश्चाधिगताः सर्वाः श्रोतुमिच्छामि साम्प्रतम्॥१॥ त्रैलोक्यमङ्गलं नाम कवचं यत्पुरोदितम्। कथयस्व महादेव मम प्रीतिकरं परम्॥२॥

देवी बोली : हे देवेश! आपने भुवनेश्वरी देवी की जो जो विद्यायें मुझे बतलायी हैं, उन्हें मैंने सुना तथा समझा। अब मैं मन्त्रविग्रह त्रैलोक्य मङ्गल भुवनेश्वरी कवच का, जिसकी आप ने पहले चर्चा की थी, सुनना चाहती हूं। मेरे लिए अत्यन्त प्रियकारक उस कवच को कहिये।

ईश्वर उवाच।

पार्वति शृणु वक्ष्यामि सावधानावधारय। त्रैलोक्यमङ्गलं नाम कवचं मन्त्रविग्रहम्॥३॥ सिद्धविद्यामयं देवि सर्वैश्वर्य समन्वितम्। पठनाद्धारणान्मर्त्यस्त्रैलोक्यैश्वर्यभाग्भवेत्॥४॥

ईश्वर बोले : हे पार्वती! तुम सावधान होकर सुनो और उसे धारण करो। मैं मन्त्रविग्रह त्रैलोक्यमङ्गल भुवनेश्वरी कवच को कहूंगा। हे देवि! यह कवच सिद्धविद्यामय तथा समस्त ऐश्वर्यो से समन्वित है। इसके पठन तथा धारण से मनुष्य तीनों लोकों के ऐश्वर्य का स्वामी होता है।

विनियोग : ॐ अस्य श्रीभुवनेश्वरीत्रैलोक्यमङ्गलकवचस्य शिवऋषिः विराट छन्दः जगद्धात्री भुवनेश्वरी देवता धर्मार्थकाममोक्षार्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास : शिवऋषये नमः शिरसि १। विराट्छन्दसे नमः मुखे २। भुवनेश्वरीदेवतायै नमः हृदि ३। विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ४। इति ऋष्यादि न्यासः।

ह्रीं बीजं मे शिरः पातु भुवनेशी ललाटकम्। ऐं पातु दक्षनेत्रं मे ह्रीं पातु वामलोचनम्॥१॥ श्रीं पातु दक्षकर्णं मे त्रिवर्णात्मा महेश्वरी। वामकर्ण सदा पातुऐं घ्राणं पातु में सदा॥२॥ ह्रीं पातु वदनं देवि ऐं पातु रसनां मम। वाक्पुटा च त्रिवर्णात्मा कण्ठं पातु परात्मिका॥३॥ श्रीं स्कन्धौ पातु नियतं ह्रीं भुजौ पातु सर्वदा। क्लीं करौ त्रिपुटा पातु त्रिपुरैश्वर्यदायिनी॥४॥ ॐ पातु हृदयं ह्रीं मे मध्यदेशं सदावतु। क्रौं पातु नाभिदेशं मे त्र्यक्षरी भुवनेश्वरी॥५॥ सर्वबीजप्रदा पृष्ठं पातु सर्ववशङ्करी। ह्रीं पातु गुह्यदेशं मे नमोभगवती कटिम्॥६॥ माहेश्वरी सदा पातु शङ्खिनी जानुयुग्मकम्। अन्नपूर्णा सदा पातु स्वाहा पातु पदद्वयम्॥७॥ सप्तदशाक्षरी पायादन्नपूर्णाखिलं वपुः। तारं माया रमाकामः षोडशार्णा ततः परम्॥८॥ शिरःस्था सर्वदा पातु विंशत्यर्णात्मिका परा। तारंदुर्गेयुगंरक्षिणीस्वाहेतिदशाक्षरी॥९॥ जयदुर्गा घनश्यामा पातु मां सर्वतो मुदा। मायाबीजादिका चैषा दशार्णा च ततः परा॥१०॥ उत्तप्तकाञ्चनाभासा जयदुर्गाऽऽननेऽवतु। तारं ह्रीं दुं च दुर्गायै नमोऽष्टार्णात्मिका परा॥११॥ शङ्खचक्रधनुर्बाणधरा मां दक्षिणेऽवतु। महिषमर्दिनी स्वाहा वसु वर्णात्मिका परा॥१२॥ नैर्ऋत्यां सर्वदा पातु महिषासुरनाशिनी। माया पद्मावती स्वाहा सप्तार्णा परिकीर्तिता॥१३॥ पद्मावती पद्मसंस्था पश्चिमे मां सदाऽवतु। पाशांकुशपुटा माये हि परमेश्वरि स्वाहा। त्रयोदशार्णा ताराद्या अश्वारूढाऽनलेऽवतु सरस्वति पञ्चस्वरे नित्यक्लिन्ने मदद्रवे॥१५॥ स्वाहा वस्वक्षरी विद्या मामुत्तरे सदाऽवतु। तारं माया च कवचं खे रक्षेत्सततं वधू:॥१६॥ हूं क्षें ह्रीं फट् महाविद्या द्वादशार्णाखिलप्रदा। त्वरिताष्टाहिभिः पायाच्छिवकोणे सदा च माम्॥१७॥ ऐं क्लीं सौः सततं बाला मूर्द्धदेशे ततोऽवतु। बिंद्वन्ता भैरवी बाला हस्तौ च मां सदाऽवतु॥१८॥

इति ते कथितं पुण्यं त्रैलोक्यमङ्गलं परम्। सारात्सारतरं पुण्यं महाविद्यौघविग्रहम् ॥१९॥ अस्यापि पठनात्सद्यः कुबेरोपि धनेश्वरः। इन्द्राद्याः सकला देवा धारणात्पठनाद्यतः। सर्वसिद्धीश्वराः सन्तः सर्वैश्वर्यंवाप्नुयुः। पुष्पाञ्जल्यष्टकं दद्यान्मूलनैव पृथक्पृथक् ॥२०॥ संवत्सरकृतायास्तु पूजायाः फलमाप्नुयात्। प्रीतिमन्योन्यतः कृत्या कमला निश्चला गृहे।६५।२१॥ वाणी च निवसेद्वक्त्रे सत्यं सत्यं न संशयः। यो धारयति पुण्यात्मा त्रैलोक्यमङ्गलाभिधम्॥२२॥ कवचं परमं पुण्यं सोपि पुण्यवतां वरः। सर्वैश्वर्ययुतो भूत्वा त्रैलोक्यविजयी भवेत्। ॥२३॥ पुरुषो दक्षिणे बाहौ नारी वामभुजे तथा। बहुपुत्रवती भूयाद्वन्ध्यापि लभते सुतम्॥२४॥ ब्रह्मास्त्रादीनि शस्त्राणि नैव कृन्तन्तिं तं जनम्। एतत्कवचमज्ञात्वा यो भजेद्भुवनेश्वरीम्॥२५॥ दारिद्रं परमं प्राप्य सोऽचिरान्मृत्युमाप्नुयात्॥२६॥

हे देवि ! यह मैंने तुम्हारे लिए परम पूज्य त्रैलोक्यमङ्गल कवच बतलाया है। यह सारों का भी सार है, पुण्यस्वरूप है तथा महाविद्याओं की राशि का घनीभूत विग्रह है। इसके ही पठन से कुबेर शीघ्र ही धन के स्वामी बन गये। इन्द्र आदि समस्त देवताओं ने इसके पठन तथा धारण से समस्त सिद्धियों का स्वामित्व प्राप्त करते हुए सभी ऐश्वर्यो को प्राप्त किया। मूल मन्त्र से पृथक् पथक् आठ पुष्पांजलियाँ देनी चाहिए। ऐसा करने से मनुष्य एक वर्ष तक की गयी पूजा का फल प्राप्त करता है। एक दूसरे के प्रति प्रीति को प्राप्त कर लक्ष्मी घर में निश्चल हो जाती हैं तथा वाणी भी मुख में निवास करती है। यह सत्य है, सत्य है। इसमें संशय नहीं है। जो पुण्यात्मा इस त्रैलोक्यमंगल नामक परम पुण्य कवच को धारण करता है, वह पुण्यवानों में श्रेष्ठ और समस्त सम्पत्तियों से युक्त होकर तीनों लोकों का विजयी होता है। पुरुष इसे दाहिने हाथ में और स्त्री बायें में बाँधे। इससे वन्ध्या स्त्री का बहुपुत्रवती होती है तथा पुरुष भी पुत्रलाभ करता है। उस व्यक्ति को ब्रह्मास्त्र आदि अस्त्र तथा शस्त्र कभी नहीं काट सकते। इस कवच को न जानकर जो भुवनेश्वरी का भजन करता है वह दरिद्रता को प्राप्त होकर शीघ्र मृत्यु को प्राप्त करता है।

इति श्रीरुद्रयामले तन्त्रे देवीश्वरसम्वादे त्रैलोक्यमङ्गलं नाम
भुवनेश्वरीकवचं समाप्तम्।

भुवनेश्वरीस्तोत्रं

अथानन्दमयीं साक्षाच्छब्दब्रह्मस्वरूपिणीम्। ईडे सकलसम्पत्त्यै जगत् कारणमम्बिकाम्॥१॥ आद्यामशेषजननीमरविन्दयोनेर्विष्णोः शिवस्य च वपुः प्रतिपादयित्रीम्। सृष्टिस्थितिक्षयकरीं जगतां त्रयाणां स्तुत्वा गिरं विमलयाम्यहमम्बिके त्वाम्॥२॥ पृथ्व्या जलेन शिखिना मरुतां वरेण होत्रेन्दुना दिनकरेण च मूर्तिभाजः। देवस्य मन्मथरिपोरपि शक्तिमत्ताहेतुस्त्वमेव खलु पर्वतराजपुत्रि॥३॥ त्रिस्रोतसः सकलदेवसमर्तिचतायाः वैशिष्ट्यकारणमवैमि तदेव मातः। त्वत्पादपङ्कजपरागपवित्रितासु शम्भोर्जटासु सततं परिवर्तनं यत्॥४॥ आनन्दयेत्कुमुदिनीमधिपः कलानां नान्यामिनः कमलिनीमथ नेतरां वां। एकस्य मोदनविधौ परमेक ईष्टे त्वं तु प्रपञ्चमभिनन्दयसि स्वदृष्ट्या॥५॥ आद्याप्यशेषजगतां नव यौवनासि शैलाधिराजतनयाप्यतिकोमलासि। त्रय्याः प्रसूरपि तथा न समीक्षितासि ध्येयासिगौरि मनसो न पथि स्थितासि ॥६॥ आसाद्य जन्म मनुजेषु चिराद्दुरापं तत्रापि पाटवमवाप्य निजेन्द्रियाणाम्। नाभ्यर्चयन्ति जगतां जनयित्रि ये त्वां निःश्रेणिकाग्रमधिरुह्य पुनः पतन्ति॥७॥ कर्पूरचूर्णहिमवारिविलोडितेन ये चन्दनेन कुसुमैश्च सुगन्धिगन्धैः। आराधयन्ति हि भवानि समुत्सुकास्त्वां ते खल्वशेषभुवनाधिभुवः प्रथन्ते॥८॥ आविश्यमध्यपदवीं प्रथमे सरोजे

सुप्ताहिराजसदृशी विरचय्य विश्वम्। विद्युल्लतावलयविभ्रममुद्वहन्ती पद्मानि पञ्च विदलय्य समश्नुवाना ॥९॥ तन्निर्गतामृतरसैः परिषिक्तगात्रमार्गेण तेन निलयं पुनरप्यवाप्ता। येषां हृदि स्फुरसि जातु न ते भवेयुर्मातर्महेश्वरकुटुम्बिनि गर्भभाजः ॥१०॥ आलम्बिकुण्डलभरामभिरामवक्त्रामापीवरस्तनतटीं तनुवृत्तमध्याम्। चिन्ताक्षसूत्रकलशालिखिताढ्यहस्तामावर्तयामि मनसा तव गौरि मूर्तिम् ॥११॥ आस्थाय योगमवजित्य च वैरिषट्कमाबद्ध चेन्द्रियगणं मनसि प्रसन्ने। पाशांकुशाभयवराढ्यकरां सुवक्त्रामालोकयन्ति भुवनेश्वरि योगिनस्त्वाम् ॥१२॥ उत्तप्तहाटकनिभा करिभिश्चतुर्भिरावर्तितामृतघटैरभिषिच्यमाना। हस्तद्वयेन नलिने रुचिरे वहन्ती पद्मापि साभयवरा भवसि त्वमेव ॥१३॥ अष्टाभिरुग्र विविधायुधवाहिनीभिर्दोर्वल्लरीभिरधिरुह्य मृगाधिराजम्। दूर्वालद्युतिरमर्त्यविपक्षपक्षान् न्यक्कर्वती त्वमसि देवि भवानि दुर्गा ॥१४॥ आविर्भिदाघजलशीकरशोभिवक्त्रां गुञ्जाफलेन परिकल्पितहारयष्टिम्। पीतांशुकामसितकान्तिमनङ्गतन्द्रामाद्यां पुलिन्दतरुणीमसकृत्स्मरामि ॥१५॥ हंसैर्गतिक्वणितनूपुरदूरदृष्टे मूर्तैरिवार्थवचनैरनुगम्यमानौ। पद्माविवोर्ध्व मुखरूढसुजातनालौ श्रीकण्ठपत्नि शिरसा विदधे तवांघ्री ॥१६॥ द्वाम्यां समीक्षितुमतृप्तिमतेव दृग्भ्यामुत्पाट्य भालनयनं वृषकेतनेन। सान्द्रानुरागतरलेन निरीक्ष्यमाणे जंघे शुभे अपि भवानि तवानतोस्मि ॥१७॥ ऊरू स्मरामि जितहस्तिकरावलेपी स्थौल्येन मार्दवतया परिभूतरम्भौ। श्रोणीभरस्य सहनौ परिकल्प्य दत्तौ स्तम्भाविवांगवयसा तव मध्यमेन ॥१८॥ श्रोण्यौ स्तनौ च युगपत् प्रथयिष्यतोच्चैर्बाल्यात्परेण वयसा परिहृष्टसारौ। रोमावलीविलसितेन विभाव्य मूर्तिं मध्यं तव स्फुरतु मे हृदयस्य मध्ये ॥१९॥ सख्यः स्मरस्य हरनेत्रहुताशशान्त्यै लावण्यवारिभरितं नवयौवनेन। आपाद्य दत्तमिव पल्लवमप्रविष्टं नाभिं कदापि तव देवि न विस्मरेयम् ॥२०। ईशेपि गेहपिशुनं भसितं दधाने काश्मरि कर्दममनुस्तनपङ्कजे ते। स्नातोत्थितस्य करिणः क्षणलक्ष्यफेनौ सिन्दूरितौ स्मरयतः समदस्य कुम्भौ ॥२१॥ कण्ठातिरिक्तगलदुज्ज्वलकान्तिधाराशोभौ भुजौ निजरिपोर्मकरध्वजेन। कण्ठग्रहाय रचितौ किल दीर्घपाशौ मातर्मम स्मृतिपथं न विलंघयेताम् ॥२२॥ नात्यायतं रचितकम्बुविलासचौर्यं भूषाभरेण विविधेन विराजमानम्। कण्ठं मनोहरगुणं गिरिराजकन्ये सञ्चिन्त्य तृप्तिमुपयामि कदापि नाहम् ॥२३॥ अत्यायताक्षमभिजातललाटट्टं मन्दस्मितेन दरफुल्लकपोलरेखम्। बिम्बाधरं वदनमुन्नतदीर्घनासं यस्ते स्मरत्यसकृदम्ब स एव जातः ॥२४॥ आविस्तुषारकरलेखमनल्पगन्धपुष्पोपरिभ्रमदलिव्रजनिर्विशेषम्। यश्चेतसा कलयते तव केशपाशं तस्य स्वयं गलति देवि पुराणपाशः ॥२५॥ श्रुतिसुचरितपाकं श्रीमतां स्तोत्रमेतत्पठति य इह मर्त्यो नित्यामार्द्रान्तरात्मा। स भवति पदमुच्चैः सम्पदां पादनम्रक्षितिपमुकुटलक्ष्मीलक्षणानां चिराय ॥२६॥

इति श्रीरुद्रयामले तन्त्रे भुवनेश्वरीस्तोत्रं समाप्तम्।

भुवनेश्वर्यष्टोत्तरशतनामस्तोत्र

कैलासशिखरे रम्ये नानारत्नोपशोभिते। नर नारीहितार्थाय शिवं पप्रच्छ पार्वती ॥१॥

नाना रत्नों से सुशोभित रम्य कैलास शिखर पर बैठे शिव से नर-नारी के कल्याण के लिए श्री पार्वती ने पूछा।

देव्युवाच।

भुवनेश्वरीमहाविद्यानाम्नामष्टोत्तरं शतम्। कथयस्व महादेव यद्यहं तव वल्लभा।।२।।

देवी बोली: हे महादेव! यदि मैं आप की प्रिया हूं तो आप मुझे भुवनेश्वरी महाविद्या का अष्टोत्तरशतनामबतायें।

ईश्वर उवाच।

शृणु देवि महाभागे स्तवराजमिमं शुभम्। सहस्रनाम्नामधिकं सिद्धिदं मोक्षहेतुकम्।।३।। शुचिभिः प्रातरुत्थाय पठितव्यः समाहितैः। त्रिकालं श्रद्धया युक्तैः सर्वकामफलप्रदः।।४।।

ईश्वर बोले: हे महाभागे देवि! तुम सहस्रनाम से भी अधिक सिद्धि देने वाले और मोक्ष के कारण इस स्तवराज को सुनो। प्रातः उठकर पवित्र और शान्तचित होकर इसका पाठ करना चाहिए। श्रद्धायुक्त होकर तीनों कालों में इसका पाठ करने से यह सभी कामनाओं को पूरा करनेवाला है।

विनियोग: ॐ अस्य श्रीभुवनेश्वर्यष्टोत्तरशतनामस्तोत्रस्य शक्तिर्ऋषिः गायत्रीच्छन्दो भुवनेश्वरी देवता चतुर्वर्गसाधने विनियोगः।

ॐ महामाया महाविद्या महायोगा महोत्कटा। माहेश्वरी कुमारी च ब्रह्माणी ब्रह्मरूपिणी।।५।। वागीश्वरी योगरूपा योगिनीकोटिसेविता। जया च विजया चैव कौमारी सर्वमंगला।।३।। हिंगुला च विलासी च ज्वालिनी ज्वालरूपिणी। ईश्वरी क्रूरसंहारी कुलमार्गप्रदायिनी।।७।। वैष्णवी सुभगाकारासुकुल्या कुलपूजिता। वामाङ्गा वामचारा च वामदेवप्रिया तथा।।८।। डाकिनी योगिनीरूपा भूतेशी भूतनायिका। पद्मावती पद्मनेत्रा प्रबुद्धा च सरस्वती।।९।। भूचरी खेचरी माया मातङ्गी भुवनेश्वरी। कान्ता पतिव्रतासाक्षी सुचक्षुः कुण्डवासिनी।।१०।। उमा कुमारी लोकेशी सुकेशी पद्मरागिणी। इन्द्राणी ब्रह्मचाण्डाली चण्डिका वायुवल्लभा।।११।। सर्वधातुमयी मूर्तिर्जलरूपा जलोदरी। आकाशी रणग चैव नृकपालविभूषणा।।१२।। नर्मदा मोक्षदा चैव कामधर्मार्थदायिनी। गायत्री चाथ सावित्री त्रिसन्ध्या तीर्थगामिनी।।१३।। अष्टमी नवमी चैव दशम्येकादशी तथा। पौर्णमासी कुहूरूपा तिथिमूर्ति स्वरूपिणी।।१४।। सुरारिनाशकारी च उग्ररूपा च वत्सला। अनला अर्द्धमात्रा च अरुणापीतलोचना।।१५।। लज्जा सरस्वती विद्या भवानी पापनाशिनी। नागपाशधरा मूर्तिरगाधा धृतकुण्डला।।१६।। क्षत्ररूपा क्षयकरी तेजस्विनी शुचिस्मिता। अव्यक्ताव्यक्तलोका च शम्भुरूपा मनस्विनी।।१७।। मातंगी मत्तमातंगी महादेवप्रिया सदा। दैत्यदघ्नी चैव वाराही सर्वशास्त्रमयी शुभा।।१८।।

य इदं पठते भक्त्या शृणुयाद्वा समाहितः। अपुत्रो लभते पुत्रं निर्द्धनो धनवान् भवेत्।।१९।। मूर्खोपि लभते शास्त्रं चौरोपि लभते गतिम्। वेदानां पाठको विप्रः क्षत्रियो विजयी भवेत्।।२०।। वैश्यस्तु धनवान्भूयाच्छूद्रस्तु सुखमेधते। अष्टम्यां च चतुर्दश्यां नवम्यां चैकचेतसः।।२१।। ये पठन्ति सदा भक्त्या न ते वै दुःखभागिनः। एककालं द्विकालं वा त्रिकालं वा चतुर्थकम्।।२२।। ये पठन्ति सदा भक्त्या स्वर्गलोके च पूजिताः। रुद्रं दृष्ट्वा यथा देवाः पन्नगा गरुडं यथा। शत्रवः प्रपलायन्ते तस्य वक्त्रविलोकनात्।।२३।।

जो इसे श्रद्धा तथा भक्ति से शान्तचित होकर सुनता या पढ़ता है वह पुत्रहीन भी पुत्र प्राप्त करता है। निर्धन धनवान् होता है। मूर्ख शास्त्र को पाता है। चोर भी सद्गति को पाता है। ब्राह्मण वेदों का पाठक होता है तथा क्षत्रिय विजयी होता है। वैश्य धनवान होता है तथा शूद्र सुख से वृद्धि को पाता है। जो लोग अष्टमी, चतुर्दशी तथा नवमी को एकाग्रमन होकर भक्ति से इसका पाठ करते हैं, वे निश्चितरूप

से दुःखभागी नहीं होते। एक काल, दो काल या तीनों काल या चौथे काल में जो भक्ति से सदा इसका पाठ करते हैं, वे स्वर्ग में भी पूजित होते हैं।

इति श्रीरुद्रयामले देवीश्वरसम्वादे भुवनेश्वर्यष्टोत्तर
शतनामस्तोत्रं समाप्तम्।

भुवनेश्वरीसहस्रनामस्तोत्र

विनियोग ॐ अस्य श्रीभुवनेश्वरीसहस्रनामस्तोत्रमन्त्रस्य सदाशिव ऋषिरनुष्टुप्छन्दः भुवनेश्वरी देवता लज्जा बीजं कमला शक्तिः वाग्भवं कीलकं सर्वार्थसाधने पाठे विनियोगः।

ॐ भुवनेशी भुवाराध्या भवानी भयनाशिनी। भवरूपा भवानन्दा भवसागरतारिणी॥१॥ भवोद्भवा भवरता भवभारनिवारिणी। भव्यास्या भव्यनयना भव्यरूपा भवौषधिः॥२॥ भव्यांगना भव्यकेशी भवपाशविमोचिनी। भव्यासना भव्यवस्त्रा भव्याभरणभूषिता॥३॥ भगरूपा भगानन्दा भगेशी भगमालिनी। भगविद्या भगवती भगक्लिन्ना भगावहा॥४॥ भगांकुरा भगक्रीडा भगाढ्या भगमङ्गला। भगलीला भगप्रीता भगसम्पद्भगेश्वरी॥५॥ भगालया भगोत्साहा भगस्था भगपोषिणी। भगोत्सवा भगविद्या भगमाता भगस्थिता॥६॥ भगशक्तिर्भगनिधिर्भगपूजा भगेषणा। भगस्वरूपा भगाधीशा भगार्च्या भगसुन्दरी॥७॥ भगरेखा भगस्नेहा भगस्नेहविवर्धिनी। भगिनी भगबीजस्था भगभोगविलासिनी॥८॥ भगाचारा भगाधारा भगाचारा भगाश्रया। भगपुष्पा भगश्रीदा भगपुष्पनिवासिनी॥९॥ भव्यरूपधरा भव्या भव्यपुष्पैरलंकृता। भव्यलीला भव्यमाला भव्यांगी भव्यसुन्दरी॥१०॥ भव्यशीला भव्यलीला भव्याक्षी भव्यनाशिनी। भव्याङ्गिका भव्यवाणी भव्यकांतिर्भगालिनी॥११॥ भव्यत्रपा भव्यनदी भव्यभोगविहारिणी। भव्यस्तनी भव्यमुखी भव्यगोष्ठीभयापहा॥१२॥ भक्तेश्वरी भक्तिकरी भक्तानुग्रहकारिणी। भक्तिदा भक्तिजननी भक्तानन्दविवर्द्धिनी॥१३॥ भक्तिप्रिया भक्तिरता भक्तिभावविहारिणी। भक्तिशीला भक्तिलीला भक्तेशा भक्तिपालिनी॥१४॥ भक्तिविद्या भक्तविद्या भक्तिर्भक्तिविनोदिनी। भक्तिरीतिर्भक्तिप्रीतिर्भक्तिसाधनसाधिनी॥१५॥ भक्तिसाध्या भक्तसाध्या भक्तिराली भवेश्वरी। भटविद्या भटानन्दा भटस्था भटरूपिणी॥१६॥ भटमान्या भटस्थान्या भटस्थाननिवासिनी। भटिनी भटरूपेशी भटरूपविवर्द्धिनी॥१७॥ भटवेशी भटेशी च भगभाग्भवसुन्धरा। भटप्रीत्या भटरीत्या भटानुग्रहकारिणी॥१८॥ भटराध्या भटबोध्या भटबोधविनोदिनी। भटैः सेव्या भटवरा भटार्च्या भटबोधिनी॥१९॥ भटकीर्त्या भटकला भटपा भटपालिनी। भटैश्वर्या भटाधीशा भटेक्षा भटतोषिणी॥२०॥ भटेशी भटजननी भटभाग्यविवर्द्धिनी। भटभुक्तिर्भटयुक्तिर्भटप्रीतिविवर्द्धिनी॥२१॥ भाग्येशी भाग्यजननी भाग्यस्था भाग्यरूपिणी। भावनाभावकुशला भावदा भाववर्द्धिनी॥२२॥ भावरूपा भावरसा भवान्तरविहारिणी। भवांकुरा भवकला भावस्थाननिवासिनी॥२३॥ भावातुरा भावधृता भावमध्यव्यवस्थिता। भावऋद्धिर्भावसिद्धिर्भावादिर्भवभाविनी॥२४॥ भावालया भावपरा भावसाधनतत्परा। भावेश्वरी भावगम्या भावस्था भावगर्विता॥२५॥ भाविनी भावरमणी भारती भारतेश्वरी। भागीरथी भाग्यवती भाग्योदयकरी कला॥२६॥ भाग्याश्रया भाग्यमयी भाग्या भाग्यफलप्रदा। भाग्याचारा भाग्यसारा भाग्यधारा च भाव्यदा॥२७। भाग्येश्वरी भाग्यनिधिर्भाग्या भाग्यसुमातृका। भाग्येक्षा भाग्यना भाग्यभाग्यदा भाग्यमातृका॥२८॥ भाग्येक्षा भाग्यमनसा भाग्यादिभाग्यमध्यगा।

भ्रात्रेश्वरी भ्रातृमती भ्रात्रंबा भ्रातृपालिनी ॥२९॥ भ्रातृस्था भ्रातृकुशला भ्रामरी भ्रमराम्बिका। भिल्लरूपा भिल्लवती भिल्लस्था भिल्लपालिनी ॥३०॥ भिल्लमाता भिल्लधात्री भिल्लिनी भिल्लकेश्वरी। भिल्लकीर्तिर्भिल्लकला भिल्लमन्दरवासिनी ॥३१॥ भिल्लक्रीडा भिल्ललीला भिल्लार्च्या भिल्लवल्लभा। भिल्लस्नुषा भिल्लपुत्री भिल्लिनी भिल्लपोषिणी ॥३२॥ भिल्लपौत्री भिल्लगोष्ठी भिल्लाचारनिवासिनी। भिल्लपूज्या भिल्लवाणी भिल्लाणी भिल्लभीतिहा ॥३३॥ भीतस्था भीतजननी भीतिर्भीतिविनाशिनी। भीतिदा भीतिहा भीत्या भीत्याकारविहारिणी ॥३४॥ भीतेशी भीतिशमनी भीतस्थाननिवासिनी। भीतिरीत्या भीतिकला भीतीक्षा भीतिहारिणी ॥३५॥ भीमेशी भीमजननी भीमा भीमनिवासिनी। भीमेश्वरी भीमरता भीमाङ्गी भीमपालिनी ॥३६॥ भीमनादा भीमतन्त्री भीमैश्वर्य्यविवर्द्धिनी। भीमगोष्ठी भीमधात्री भीमविद्याविनोदिनी ॥३६॥ भीमविक्रमदात्री च भीमविक्रमवासिनी। भीमानन्दकरी देवी भीमानन्दविहारिणी ॥३८॥ भीमोपदेशिनी नित्या भीमभाग्यप्रदायिनी। भीमसिद्धिर्भीमऋद्धिर्भीमभक्तिविवर्द्धिनी ॥३९॥ भीमस्था भीमवरदा भीमधर्मोपदेशिनी। भीष्मेश्वरी भीष्मभृतिर्भीष्मबोधप्रबोधिनी ॥४०॥ भीष्मश्रीर्भीष्मजननी भीष्मज्ञानोपदेशिनी। भीष्मस्था भीष्मतपसा भीष्मेशी भीष्मतारिणी ॥४१॥ भीष्मलीला भीष्मशीला भीष्मरोधोनिवासिनी। भीष्माश्रया भीष्मवरा भीष्महर्षविवर्द्धिनी ॥४२॥ भुवना भुवनेशानी भुवनानन्दकारिणी। भुविस्था भुविरूपा च भुविभारनिवारिणी। भुविस्था भुक्तिदा भुक्तिर्भुक्तेशी भुक्तिरूपिणी। भुक्तेश्वरी भुक्तिदात्री भुक्तिराकाररूपिणी ॥४४॥ भुजङ्गस्था भुजङ्गेशी भुजङ्गाकाररूपिणी। भुजङ्गी भुजगावासा भुजङ्गानन्ददायिनी ॥४५॥ भूतेशी भूतजननी भूतस्था भूतरूपिणी। भूतेश्वरी भूतलीला भूतवेषकरी सदा ॥४६॥ भूतदात्री भूतकेशी भूतधात्री महेश्वरी। भूतरीत्या भूतपत्नी भूतलोकनिवासिनी ॥४७॥ भूतसिद्धिर्भूतऋद्धिर्भूतानन्दनिवासिनी। भूतकीर्तिर्भूतलक्ष्मीर्भूतभाग्यविवर्द्धिनी ॥४८॥ भूतार्च्या भूतरमणी भूतविद्याविनोदिनी। भूतपौत्री भूतपुत्री भूतभार्य्या विधीश्वरी ॥४९॥ भूतस्था भूतरमणी भूतेशी भूतपालिनी। भूपमाता भूपनिभा भूपैश्वर्यप्रदायिनी ॥५०॥ भूपचेष्टा भूपनेष्टा भूपभावविवर्द्धिनी। भूपभगिनी भूपभूरी भूपपौत्री तथा वधूः ॥५१॥ भूपकीर्तिर्भूपनीतिर्भूपभाग्यविवर्द्धिनी। भूपक्रिया भूपक्रीडा भूपमन्दर वासिनी ॥५२॥ भूपार्च्या भूपसंराध्या भूपभोगविवर्द्धिनी। भूपाश्रया भूपकला भूपकौतुकदण्डिनी ॥५३॥ भूषणस्था भूपणेशी भूषा भूषणधारिणी। भूषणाधारधर्मेशी भूषणाकाररूपिणी ॥५४॥ भूपताचारनिलया भूपताचारभूषिता। भूपताचाररचना भूपताचारमण्डिता ॥५५॥ भूपताचारधर्मेशी भूपताचारकारिणी। भूपताचारचरिता भूपताचारवर्जिता ॥५६॥ भूपताचारवृद्धिस्था भूपताचारवृद्धिदा। भूपताचारकरणा भूपताचारकर्मदा ॥५७॥ भूपताचारकर्मेशी भूपताचारकर्मदा। भूपताचारदेहस्था भूपताचारकर्मिणी ॥५८॥ भूपताचारसिद्धिस्था भूपताचार सिद्धिदा। भूपताचारधर्माणी भूपताचारधारिणी ॥५९॥ भूपतानन्दलहरी भूपतेश्वररूपिणी। भूपतेर्नीतिनीतिस्था भूपतिस्थानवासिनी ॥६०॥ भूपतिस्थानगीर्वाणी भूपतेर्वरधारिणी। भेषजानन्दलहरी भेषजानन्दरूपिणी ॥६१॥ भेषजानन्दमहिषी भेषजानन्दधारिणी। भेषजानन्दकर्मेशी भेषजानन्ददायिनी ॥६२॥ भेषजी भेषजाकन्दा भेषजस्थानवासिनी। भेषजेश्वररूपा च भेषजेश्वरसिद्धिदा ॥६३॥ भेषजेश्वरमर्धेशी भेषजेश्वरकर्मदा। भेषजेश्वरकर्मेशी

भेषजेश्वरकर्मिणी ॥६४॥ भेषजाधीश जननी भेषजाधीशपालिनी। भेषजाधीशरचना भेषजाधीशमङ्गला ॥६५॥ भेषजारण्यमध्यस्था भेषजारण्यरक्षिणी। भैषज्यविद्या भैषज्या भैषज्येतसित-दायिनी ॥६६॥ भैषजस्था भैषजेशी भैषज्यानन्दवर्द्धिनी। भैरवा भैरवाचारा भैरवाकाररूपिणी ॥६७॥ भैरवाचारचतुरा भैरवाचारमण्डिता। भैरवा च भैरवेशी भैरवानन्ददायिनी ॥६८॥ भैरवानन्दरूपेशी भैरवानन्दरूपिणी। भैरवानन्दनिपुणा भैरवानन्दमन्दिरा भैरवाचारमण्डिता ॥६९॥ भैरवानन्दतत्त्वज्ञा भैरवानन्दतत्परा। भैरवानन्दकुशला भैरवानन्दनीतिदा ॥७०॥ भैरवानन्दप्रीतिस्था भैरवानन्दप्रीतिदा। भैरवानन्दमहिषी भैरवानन्दमालिनी ॥७१॥ भैरवानन्दमतिदा भैरवानन्दमातृका। भैरवाधारजननी भैरवाधाररक्षिणी ॥७२॥ भैरवाधाररूपेशी भैरवाधाररूपिणी। भैरवाधारनिचया भैरवाधारनिश्चया ॥७३॥ भैरवाधारतत्त्वज्ञा भैरवाधारतत्त्वदा। भैरवाश्रयतन्त्रेशी भैरवाश्रयमन्त्रिणी ॥७४॥ भैरवाश्रयरचना भैरवाश्रयरञ्जिता। भैरवाश्रयनिर्धारा भैरवाश्रयनिर्भरा ॥७५॥ भैरवाश्रयनिर्धारा भैरवाश्रयनिर्धरा। भैरवानन्दबोधेशी भैरवानन्दबोधिनी ॥७६॥ भैरवानन्दबोधस्था भैरवानन्दबोधदा। भैरव्यैश्वर्य्यबरदा भैरव्यैश्वर्य्यदायिनी ॥७७॥ भैरव्यैश्वर्य्यरचना भैरव्यैश्वर्य्यवर्द्धिनी। भैरव्यैश्वर्यसिद्धिस्था भैरव्यैश्वर्यसिद्धिदा ॥७८॥ भैरव्यैश्वर्यसिद्धेशी भैरव्यैश्वर्यरूपिणी। भैरव्यैश्वर्यसुपथा भैरव्यैश्वर्यसुप्रभा ॥७९॥ भैरव्यैश्वर्यवृद्धिस्था भैरव्यैश्वर्यवृद्धिदा। भरव्यैश्वर्यकुशला भैरव्यैश्वर्यकामदा ॥८०॥ भैरव्यैश्वर्य्यसुलभा भैरव्यैश्वर्य्यसम्प्रदा। भैरव्यैश्वर्य्यविशदा भैरव्यैश्वर्य्यविक्रया ॥८१॥ भैरव्यैश्वर्य्यविनया भैरव्यैश्वर्यवेदिता। भैरव्यैश्वर्य्यमहिमा भैरव्यैश्वर्य्यमानिनी ॥८२॥ भैरव्यैश्वर्य्यनिरता भैरव्यैश्वर्य्यनिर्मिता। भोगेश्वरी भोगमाता भोगस्था भोगरक्षिणी ॥८३॥ भोगक्रीडा भोगलीला भोगेशी भोगवर्द्धिनी। भोगाङ्गी भोगरमणी भोगाचार-रविचारिणी ॥८४॥ भोगाश्रय भोगवती भोगिनी भोगरूपिणी। भोगांकुरा भोगविधा भोगाधार निवासिनी ॥८५॥ भोगाम्बिका भोगरता भोगसिद्धिविधायिनी। भोजरथा भोजनिरता भोजनानन्ददायिनी ॥८६॥ भोजनानन्दलहरी भोजनान्तर्विहारिणी। भोजनानन्दमहिमा भोजनानन्द-भोग्यदा ॥८७॥ भोजनानन्दरचना भोजनानन्दहर्षिता। भोजनाचारचतुरा भोजनाचारमण्डिता ॥८८॥ भोजनाचारचरिता भोजनाचारचर्चिता। भोजनाचारसम्पन्ना भोजनाचारसंयुता ॥८९॥ भोजनाचारचित्तस्था भोजनाचाररीतिदा भोजनाचारविभवा भोजनाचारविस्तृता ॥९०॥ भोजनाचार-रमणी भोजनाचाररक्षिणी। भोजनाचारहरिणी भोजनाचारभक्षिणी ॥९१॥ भोजनाचारसुखदा भोजनाचारसुस्पृहा। भोजनाहारसुरता भोजनाहारसुन्दरी ॥९२॥ भोजनाहारचरिता भोजनाहारचञ्चला। भोजनास्वादविभवा भोजनास्वादवल्लभा ॥९३॥ भोजनास्वादसन्तुष्टा भोजनास्वादसम्प्रदा। भोजनास्वादसुपथा भोजनास्वादसंश्रया ॥९४॥ भोजनास्वादनिरता भोजनास्वादनिर्णिता। भौक्षरा भौक्षरेशानी भौकाराक्षररूपिणी ॥९५॥ भौक्षरस्था भौक्षरादिर्भौक्षरस्थानवासिनी। भङ्कारीभर्मिणी भर्मी भस्मेशी भस्मरूपिणी ॥९६॥ भङ्कारा भञ्जना भस्मा भस्मस्था भस्मवासिनी। भक्षरी भक्षराकारा भक्षरस्थानवासिनी ॥९७॥ भक्षराढ्या भक्षरेशी भरूपा भस्वरूपिणी। भूधरस्था भूदरेशी भूधरी भूधरेश्वरी ॥९८॥ भूधरानन्दरमणी भूधरानन्दपालिनी। भूधरानन्दजननी भूधरानन्दवासिनी ॥९९॥ भूधरानन्दरमणी भूधरानन्दरक्षिता। भूधरानन्दमहिमा

भूधरानन्दमन्दिरा ॥१००॥ भूधरानन्दसर्वेशी भूधरानन्दसर्वसूः। भूधरानन्दमहिषी भूधरानन्ददायिनी ॥१०१॥ भूधराधीशधर्मेशी भूधरानन्दधर्मिणी। भूधराधीशधर्मेशी भूधराधीशसिद्धिदा ॥१०२॥ भूधराधीशकर्मेशी भूधराधीशकामिनी। भूधराधीशनिरता भूधराधीशनिर्जिता ॥१०३ ॥ भूधराधीशनीतिस्था भूधराधीशनीतिदा। भूधराधीशभाग्येशी भूधराधीशभामिनी ॥१०४ ॥ भूधराधीशनिरता भूधराधीशनिर्जिता भूधराधीशनीतिस्था भूधराधीशभाग्येशी भूधराधीशभामिनी ॥१०४॥ भूधराधीशबुद्धिस्था भूधराधीशबुद्धिदा। भूधराधीशवरदा भूधराधीशवन्दिता ॥१०५॥ भूधराधीशऽराध्या च भूधराधीशचर्चिता। भङ्गेश्वरी भङ्गमयी भङ्गस्था भङ्गरूपिणी ॥१०६॥ भङ्गाक्षता भङ्गरता भङ्गार्च्या भङ्गरक्षिणी। भङ्गावती भङ्गलीला भङ्गभोगविलासिनी ॥१०७॥ भङ्गरङ्गप्रतीकाशा भङ्गरङ्गनिवासिनी। भङ्गाशिनी भङ्गमूली भङ्गभोगविधायिनी ॥१०८॥ भङ्गाश्रया भङ्गबीजा भङ्गबीजांकुरेश्वरी। भङ्गयन्त्रचमत्कारा भङ्गयन्त्रेश्वरी तथा ॥१०९॥ भङ्गयन्त्रविमोहस्था भङ्गयन्त्रविनोदिनी। भङ्गयन्त्रविचारस्था भङ्गयन्त्रविचारिणी ॥११०॥ भङ्गयन्त्ररसानन्दा भङ्गयन्त्ररसेश्वरी। भङ्गयन्त्ररसस्वादा भङ्गयन्त्ररसस्थिता ॥१११॥ भङ्गयन्त्ररसाधारा भङ्गयन्त्ररसाश्रया। भूधरात्मजरूपेशी भूधरात्मजरूपिणी ॥११२॥ भूधरात्मजयोगेशी भूधरात्मजपालिनी। भूधरात्मजमहिमा भूधरात्मजमालिनी ॥११३॥ भूधरात्मजभूतेशी भूधरात्मजरूपिणी। भूधरात्मजसिद्धिस्था भूधरात्मजसिद्धिदा ॥११४॥ भूधरात्मजभावेशी भूधरात्मजभाविनी। भूधरात्मजभोगस्था भूधरात्मजभोग्यदा ॥११५॥ भूधरात्मजभोगेशी भूधरात्मजभोगिनी। भव्या भव्यतरा भव्यभाविनी भववल्लभा ॥११६॥ भावातिभावा भावाख्या भातिभा भीतिभान्तिका। भासान्तिभासा भासस्था भासाभा भास्करोपमा ॥११७॥ भास्करस्था भास्करेशी भास्करैश्वर्यवर्द्धिनी। भास्करानन्दजननी भास्करानन्ददायिनी ॥११८॥ भास्करानन्दमहिमा भास्करानन्दमातृका। भास्करानन्दनैश्वर्य्या भास्करानन्दनेश्वरा ॥११९॥ भास्करानन्दसुपथा भास्करानन्दसुप्रभा। भास्करानन्दनिचया भास्करानन्दनिर्मिता ॥१२०॥ भास्करानन्दनीतिस्था भास्करानन्दनीतिदा। भास्करोदयमध्यस्था भास्करोदयमध्यगा ॥१२१॥ भास्करोदयतेजःस्था भास्करोदयतेजसा। भास्कराचारचतुरा भास्कराचारचन्द्रिका ॥१२२॥ भास्कराचारपरमा भास्कराचारचण्डिका। भास्कराचारपरमा भास्कराचारपारदा ॥१२३॥ भास्कराचारमुक्तिस्था भास्कराचारमुक्तिदा। भास्कराचारसिद्धिस्था भास्कराचारसिद्धिदा ॥१२४॥ भास्कराचरणाधारा भास्कराचरणाश्रिता। भास्कराचारमन्त्रेशी भास्कराचारमन्त्रिणी ॥१२५॥ भास्कराचारवित्तेशी भास्कराचारचित्रिणी। भास्कराधारधर्मेशी भास्कराधारधारणी ॥१२६॥ भास्कराधाररचना भास्कराधाररक्षिता। भास्कराधारकर्माणी भास्कराधारकर्मदा ॥१२७॥ भास्कराधाररूपेशी भास्कराधाररूपिणी। भास्कराधारकाम्येशी भास्कराधारकामिनी ॥१२८॥ भास्कराधारसांशेशी भास्कराधारसांशिनी। भास्कराधारधर्मेशी भास्कराधारधामिनी ॥१२९॥ भास्कराधारचक्रस्था भास्कराधारचक्रिणी। भास्करेश्वरक्षेत्रेशी भास्करेश्वरक्षेत्रिणी ॥१३०॥ भास्करेश्वरजननी भास्करेश्वरपालिनी। भास्करेश्वरसर्वेशी भास्करेश्वरशर्वरी ॥१३१॥ भास्करेश्वरसद्धीमा भास्मकरेश्वरसन्निमा। भास्करेश्वरसुपथा भास्करेश्वरसुप्रभा ॥१३२॥ भास्करेश्वरयुवती भास्करेश्वरसुन्दरी। भास्करेश्वरमूर्तेशी भास्करेश्वरमूर्तिनी ॥१३३॥ भास्करेश्वरमित्रेशी

भास्करेश्वरमन्त्रिणी। भास्करेश्वरसानन्दा भास्करेश्वरसाश्रया ॥१३४॥ भास्करेश्वरचित्रस्था
भास्करेश्वरचित्रदा। भास्करेश्वरचित्रेशी भास्करेश्वरचित्रिणी ॥१३५॥ भास्करेश्वरभाग्यस्था
भास्करेश्वरभाग्यदा। भास्करेश्वरभाग्येशी भास्करेश्वरभाविनी ॥१३६॥ भास्करेश्वरकीर्तेशी
भास्करेश्वरकीर्तिनी। भास्करेश्वरकीर्तिस्था भास्करेश्वरकीर्तिदा ॥१३७॥ भास्करेश्वरकरुणा
भास्करेश्वरकारिणी। भास्करेश्वरगीर्वाणी भास्करेश्वरगारुडी ॥१३८॥ भास्करेश्वरदेहस्था
भास्करेश्वरदेहदा। भास्करेश्वरनादस्था भास्करेश्वरनादिनी ॥१३९॥ भास्करेश्वरनादेशी
भास्करेश्वरनादिनी। भास्करेश्वरकोशस्था भास्करेश्वकोशदा ॥१४०॥ भास्करेश्वरकोशेशी
भास्करेश्वरकोशिनी। भास्करेश्वरशक्तिस्था भास्करेश्वरशक्तिदा ॥१४१॥ भास्करेश्वरतोषेशी
भास्करेश्वरतोषिणी। भास्करेश्वरक्षत्रेशी भास्करेश्वरक्षत्रिणी ॥१४२॥ भास्करेश्वरयोगस्था
भास्करेश्वरयोगदा। भास्करेश्वरयोगेशी भास्करेश्वरयोगिनी ॥१४३॥ भास्करेश्वरपद्मेशी
भास्करेश्वरपद्मिनी। भास्करेश्वरहृद्बीजा भास्करेश्वरहृद्वरा ॥१४४॥
भास्करेश्वरहृद्योनिर्भास्करेश्वरहृद्युतिः। भास्करेश्वरबुद्धिस्था भास्करेश्वरसद्विधा ॥१४५॥
भास्करेश्वरसद्वाणी भास्करेश्वरसद्वरा। भास्करेश्वरराज्यस्था भास्करेश्वरराज्यदा ॥१४६॥
भास्करेश्वरराज्येशी भास्करेश्वरपोषिणी। भास्करेश्वरज्ञानस्था भास्करेश्वरज्ञानदा ॥१४७॥
भास्करेश्वरज्ञानेशी भास्करेश्वरगामिनी। भास्करेश्वरलक्षेशी भास्करेश्वरक्षालिता ॥१४८॥
भास्करेश्वरलक्षिता भास्करेश्वररक्षिता। भास्करेश्वरखड्गस्थां भास्करेश्वरखड्गदा ॥१४९॥
भास्करेश्वरखड्गेशी भास्करेश्वरखड्गिनी। भास्करेश्वरकार्येशी भास्करेश्वरकामिनी ॥१५०॥
भास्करेश्वरकायस्था भास्करेश्वरकायदा। भास्करेश्वरचक्षुःस्था भास्करेश्वरचक्षुषा ॥१५१॥
भास्करेश्वरसन्नाभा भास्करेश्वरसार्चिता। भ्रूणहत्याप्रशमनी भ्रूणपापविनाशिनी ॥१५२॥
भ्रूणदारिद्र्यशमनी भ्रूणरोगविनाशिनी। भ्रूणशोकप्रशमनी भ्रूणदोषनिवारिणी ॥१५३॥
भ्रूणसन्तापशमनी भ्रूणविभ्रमनाशिनी। भवाब्धिस्था भवाब्धीशा भवाब्धि भयनाशिनी ॥१५४॥
भवाब्धिपारकरणी भवाब्धिसुखवर्द्धिनी। भवाब्धिकार्यकरिणी भवाब्धिकरुणानिधिः ॥१५५॥
भवाब्धिकालशमनी भवाब्धिवरदायिनी। भवाब्धिभजनस्थाना भवाब्धिभजनस्थिता ॥१५६॥
भवाब्धिभजनाकारा भवाब्धिजननक्रिया। भवाब्धिभजनाचारा भवाब्धिभजनांकुरा ॥१५७॥
भवाब्धिभजनानन्दा भवाब्धिभजनाधिपा। भवाब्धिभजनैश्वर्या भवाब्धिभजनेश्वरी ॥१५८॥
भवाब्धिभजनासिद्धिर्भवाब्धिभजनारतिः। भवाब्धिभजनानित्या भवाब्धिभजनानिशा ॥१५९॥
भवाब्धिभजनानिम्ना भवाब्धिभवभीतिहा। भवाब्धिभजनाकाम्या भवाब्धिभजनाकला ॥१६०॥
भवाब्धिभजनाकीर्तिर्भवाब्धिभजनाकृता। भवाब्धिशुभदानित्या भवाब्धिशुभदायिनी ॥१६१॥
भवाब्धिसकलानन्दा भवाब्धिसकलाकला। भवाब्धिसकलासिद्धिर्भवाब्धिसकलानिधिः ॥१६२॥
भवाब्धिसकलासारा भवाब्धिसकलार्थदा। भवाब्धिभवनामूर्तिर्भवाब्धिभवनाकृतिः ॥१६३॥
भवाब्धिभवनाभव्या भवाब्धिभवनाम्भसा। भवाब्धिमदनारूपा भवाब्धिमदनातुरा ॥१६४॥
भवाब्धिमदनेशानी भवाब्धिमदनेश्वरी। भवाब्धिभाग्यरचना भवाब्धिभाग्यदा सदा ॥१६५॥
भवाब्धिभाग्यदाकला भवाब्धिभाग्यनिर्भरा। भवाब्धिभाग्यनिरता भवाब्धिभाग्यभाविता ॥१६६॥
भवाब्धिभाग्यसंचारा भवाब्धिभाग्यसञ्चिता। भवाब्धिभाग्यसुपथा भवाब्धिभाग्यसुप्रदा ॥१६७॥
भवाब्धिभाग्यरीतिज्ञा भवाब्धिभाग्यनीतिदा। भवाब्धिभाग्यरीतीशी। भवाब्धिभाग्यरीतिनी ॥१६८॥
भवाब्धिभोगनिपुणा भवाब्धिभोगसम्प्रदा। भवाब्धिभाग्यगहना भवाब्धिभोग्यगुम्फिता ॥१६९॥
भवाब्धिभोगगान्धारी भवाब्धिभोगगुम्फिता। भवाब्धिभोगसुरसा भवाब्धिभोगसुस्पृहा ॥१७०॥

भवाब्धिभोगग्रथिनी भवाब्धिभोगयोगिनी। भवाब्धिभोगरसना भवाब्धिभोगराजिता ।।१७१।। भवाब्धिभोगविभवा भवाब्धिभोगविस्तृता। भवाब्धिभोगवरदा भवाब्धिभोगवन्दिता ।।१७२।। भवाब्धिभोगकुशला भवाब्धिभोगशोभिता। भवाब्धिभेदजननी भवाब्धिभेदपालिनी ।।१७३।। भवाब्धिभेदरचना भवाब्धिभेदरक्षिता। भवाब्धिभेदनियता भवाब्धिभेदनिस्पृहा ।।१७४ ।। भवाब्धिभेदरचना भवाब्धिभेदरोपिता। भवाब्धिभेदराशिघ्नी भवाब्धिभेदराशिनी ।।१७५।। भवाब्धिभेदकर्मेशी भवाब्धिभेदकर्मिणी। भद्रेशी भद्रजननी भद्रा भद्रनिवासिनी ।।१७६।। भद्रेश्वरी भद्रवती भद्रस्था भद्रदायिनी। भद्ररूपा भद्रमयी भद्रदा भद्रभाषिणी ।।१७७।। भद्रकर्णा भद्रवेषा भद्राम्बा भद्रमन्दिरा। भद्रक्रिया भद्रकला भद्रिका भद्रवर्द्धिनी ।।१७८।। भद्रकीडा भद्रकला भद्रलीलाभिलाषिणी। भद्रांकुरा भद्ररता भद्राङ्गी भद्रमन्त्रिणी ।।१७९।। भद्रविद्याऽऽभद्रविद्या भूद्रवाग्भद्रवादिनी। भूपमङ्गलदा भूपा भूलता मूमिवाहिनी ।।१८०।। भूपभोगा भूपशोभा भूपाशाभूपरूपदा। भूपाकृतिर्भूपरतिर्भूपश्रीर्भूपश्रेयसी ।।१८१ ।। भूपनीतिर्भूपरीतिर्भूपभीतिर्भयङ्करी। भवदानन्दलहरी भवदानन्दसुन्दरी ।।१८२।। भवदानन्दकरणी भवदानन्दवर्द्धिनी। भवदानन्दरमणी भवदानन्ददायिनी। भवदानन्दजननी भवदानन्दरूपिणी ।।१८३।।

य इदं पठते स्तोत्रं प्रत्यहं भक्तिसंयुतः ।।१८४।। गुरुभक्तियुतो भूत्वा गुरुसेवापरायणः। जितेन्द्रियः सत्यवादी ताम्बूलपूरिताननः ।।१८५।। दिवा रात्री च सन्ध्यायां स भवेत्परमेश्वरः। स्तवमात्रस्य पाठेन राजा वश्यो भवेद्ध्रुवम् ।।१८६।।

जो भक्तियुक्त तथा गुरु में श्रद्धालु होकर, गुरुसेवापरायण, सत्यवादी, जितेन्द्रिय तथा मुख में पान रखकर प्रतिदिन इस स्तोत्र का पाठ करता है वह परमेश्वर हो जाता है। दिन रात तथा सन्ध्या में इस स्तोत्र के पाठ मात्र से राजा निश्चित रूप से वश में हो जाता है।

सर्वागमेषु विज्ञानी सर्वतन्त्रे स्वयं हरः। गुरोर्मुखात्समभ्यस्य स्थित्वा च गुरुसन्निधौ ।।१८७।। शिवस्थानेषु सन्ध्यायां शून्यागारे चतुष्पथे। यः पठेच्छृणुयाद्वापि स योगी नात्र संशयः ।।१८८।। सर्वस्वदक्षिणान्दद्यात्स्त्रीपुत्रादिकमेव च। स्वच्छन्दमानसो भूत्वा स्तवमेतं समुद्धरेत् ।।१८९।। एतत्स्तोत्ररतो देवि हररूपो न संशयः। यः पठेच्छृणुयाद्वापि एक चित्तेन सर्वदा ।।१९०।। स दीर्घायुः सुखी वाग्मी वाणी तस्य न संशयः। गुरुपादरतो भूत्वा कामिनीनां भवेत्प्रियः ।।१९१।। धनवान्गुणवान् श्रीमान् धीमानिव गुरुः प्रिये। सर्वेषां तु प्रियो भूत्वा पूजयेत्सर्वदास्तवम् ।।१९२।। मन्त्रसिद्धिः करस्थैव तस्य देवि न संशयः। कुबेरत्त्वं भवेत्तस्य तस्याधीना हि सिद्धयः ।।१९३।। मृतपुत्रा च या नारी दौर्भाग्यपरिपीडिता। वन्ध्या वा काकवन्ध्या वा मृतवत्सा च याङ्गना ।।१९४।। धनधान्यविहीना च रोगशोकाकुला च या। ताभिरेतन्महादेवि भूर्जपत्रे विलिख्य वै ।।१९५।। सव्ये भुजे धारणीयं तेन सौख्यप्रदं भवेत्। एवं पुनः पुनः प्रायाद्दुःखेन परिपीडिता ।।१९६।। सभायां व्यसने वाणीविवादे शत्रुसंकटे। चतुरङ्गे तथा युद्धे सर्वत्रापदि पीडने ।।१९७।। स्मरणादस्य कल्याणि संशया यान्ति दूरतः। न देयं परशिष्याय नाभक्ताय च दुर्जने ।।१९८।। दाम्भिकाय कुशीलाय कृपणाय सुरेश्वरि। दद्याच्छिष्याय शान्ताय विनीताय जितात्मने ।।१९९।। भक्ताय शान्तियुक्ताय रजःपुजारताय च। जन्मान्तरसहस्रैस्तु वर्णितुन्नैव शक्यते ।।२००।। स्तवमात्रस्य माहात्म्यं वक्त्रकोटिशतैरपि। विष्णवे कथितं पूर्वं ब्रह्मणापि प्रियम्वदे ।।२०१।। अधुनापि तव स्नेहात्कथितं परमेश्वरि। गोपितव्यं पशुभ्यश्च सर्वथा न प्रकाशयेत् ।।२०२।।

इति श्रीमहातन्त्रार्णवे ईश्वरपार्वतीसम्वादे भुवनेश्वरीभकारादि सहस्रनामस्तोत्रं समाप्तम्।

स्वयं शंकरजी भी इसके पाठ से ही समस्त आगमों तथा तन्त्रों में विज्ञानी हुए हैं। गुरु के सान्निध्य में बैठकर गुरु के मुख से इसका अभ्यास करके शिव के मन्दिर में, शून्य घर में या चौराहे पर जो मनुष्य इसे पढ़ता या सुनता है वह योगी होता है, इसमें संशय नहीं है। स्त्री-पुत्रादि सब कुछ दक्षिणा में दे देवे, स्वच्छन्दमन होकर इस स्तोत्र का उद्धार करे। इस स्तोत्र में जो रत है वह हररूप ही है, इसमें कोई संशय नहीं है। एकाग्रचित्त हो जो इसे सदा पढ़ता या सुनता है, वह दीर्घायु, सुखी और वाग्मी होता है, उसकी वाणी ओजस्वी हो जाती है, इसमें संशय नहीं है। वह गुरु के चरणों में श्रद्धावनत होकर स्त्रियों का प्रिय होता है। प्रिये! वह भाग्यवान्, गुणवान्, श्रीमान्, धीमान् तथा गुरु हो जाता है। जो सर्वप्रिय होकर इस स्तोत्र की सदा पूजा करता है, उसके लिए हे देवि! मन्त्र की सिद्धि हस्तामलकवत् ही है, इसमें कोई संशय नहीं है। वह कुबेर के पद को प्राप्त कर लेता है और सभी सिद्धियाँ उसके अधीन हो जाती हैं। हे महादेवि जो नारी मृतपुत्रा, दुर्भाग्य-पीड़िता, वन्ध्या, काकवन्ध्या, मृतवत्सा, धन-धान्यविहीना तथा रोग-शोक से व्याकुल है, उसे भोजपत्र पर इसे लिखकर बाएँ हाथ में बाँधना चाहिए, इससे उसे सुख प्राप्त होगा। इसी प्रकार बार-बार दुःख से पीड़ित, सभा में, किसी व्यवसाय में, किसी वाणीविवाद में, शत्रु-संकट में, चतुरंग सेना से युद्ध में, सर्वत्र आपत्ति में तथा कष्ट में, हे कल्याणि! इसके स्मरण से संशय दूर भाग जाते हैं। इसे दूसरे के शिष्य को, जो भक्त न हो उसे तथा दुर्जन व्यक्ति को नहीं देना चाहिए। हे सुरेश्वरि! दाम्भिक, कुशील तथा कृपण को नहीं देना चाहिए। इसे शान्त, विनीत, जितात्मा, भक्त, शान्तियुक्त तथा रजःपूजारत शिष्य को ही देना चाहिए। हे प्रियंवदे! पूर्वकाल में ब्रह्मा जी ने भी विष्णु के लिए शतकोटि मुखों से इस स्तोत्र के महत्व को कहा था। हे परमेश्वरी! इस समय भी तुम्हारे स्नेह से इस स्तोत्र को मैंने कहा है। दुष्टों से इसे हर प्रकार से गुप्त रखना चाहिए और इसे कहीं प्रकट नहीं करना चाहिए।

इति श्रीमहातन्त्रार्णवः ईश्वरपार्वतीसंवादोक्त भुवनेश्वरी
भकारादि सहस्रनाम समाप्त॥

भुवनेश्वरीहृदय

देव्युवाच :

भगवन् ब्रूहि तत्स्तोत्रं सर्वकामप्रसाधनम्। यस्य श्रवणमात्रेण नान्यच्छ्रोतव्यमिष्यते॥१॥
यदि मेऽनुग्रहः कार्यः प्रीतिश्चापि ममोपरि। तदिदङ्कथय ब्रह्मन् विमलं यन्महीतले॥२॥

देवी बोली :

हे भगवन्! आप मुझे वह स्तोत्र बताइये जो सभी इच्छाओं को पूर्ण कर सके तथा जिसके सुनने मात्र से अन्य कुछ सुनने के लिए शेष न रहे। यदि आपकी मुझ पर प्रीति है और मुझपर आपको कृपा करनी है तो हे ब्रह्मन्! जो संसार में पवित्र है उसे मुझे आप बतलायें।

ईश्वर उवाच :

शृणुदेवि प्रवक्ष्यामि सर्वकामप्रसाधनम्। हृदयं भुवनेश्वर्याः स्तोत्रमस्ति यशोदयम्॥३॥

ईश्वर बोले! हे देवि! मैं समस्त कामनाओं को पूर्ण करनेवाले, यशस्कर भुवनेश्वरीहृदय स्तोत्र को कहूंगा :

विनियोगः ॐ अस्य श्रीभुवनेश्वरीहृदयस्तोत्रमन्त्रस्य शक्तिर्ऋषिर्गायत्रीच्छन्दो भुवनेश्वरी देवता हकारो बीजं ईकारः शक्ती रेफः कीलकं सकल मनोवांछितसिद्ध्यर्थे पाठे विनियोगः।

हृदयादिषडङ्गन्यासः ॐ ह्रीं हृदयाय नमः १। ॐ श्रीं शिरसे स्वाहा २। ॐ ऐं शिखायै वषट् ३। ॐ ह्रीं कवचाय हुं ४। ॐ श्रीं नेत्रत्रयाय वौषट् ५। ॐ ऐं अस्त्राय फट् ६। इति हृदयादिषडङ्गन्यासः।

करन्यास : ॐ ह्रीं अंगुष्ठाभ्यां नमः १। ॐ श्रीं तर्जनीभ्यां नमः २। ॐ ऐं मध्यमाभ्यां नमः ३। ॐ ह्रीं अनामिकाभ्यां नमः ४। ॐ श्रीं कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५। ॐ ऐं करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ६। इति करन्यासः।

अथ ध्यानं :

ध्यायेद्ब्रह्मादिकानां कृतजनिजननीं योगिनीं योगयोनिं देवानां जीवनायोज्ज्वलितजयपरज्योतिरुग्राङ्गधात्रीम्। शङ्खं चक्रं च बाणं धनुरपि दधतीं दोश्चतुष्काम्बुजातैर्मायामाद्यां विशिष्टां भवभवभुवनां भूभवा भारभूमिम्॥४॥ यदाज्ञया यो जगदाद्यशेषं सृजत्यजः श्रीपतिरौरसं वा। बिभर्ति संहन्ति भवस्तदन्ते भजामहे श्रीभुवनेश्वरीं ताम्॥५॥ जगज्जनानन्दकरीं जयाख्यां यशस्विनीं यन्त्रसुयज्ञयोनिम्। जितामितामित्रकृतप्रपञ्चां भजा० ॥६॥ हरौ प्रसुप्ते भुवनत्रयान्ते अवातरन्नाभिजपद्मजन्मा। विधिस्ततोऽन्धे विदधार यत्पदं भजा० ॥७॥ न विद्यते क्वापि तु जन्म यस्या न वा स्थितिस्सान्ततिकीह यस्याः। न वा निरोधेऽखिलकर्म यस्या भजा० ॥८॥ कटाक्षमोक्षाचरणोग्रवित्ता निवेशितार्णा करुणार्द्रचित्ता। सुभक्तये एति समीप्सितं या भजा० ॥९॥ यतो जगज्जन्म बभूव योनेस्तदेव मध्ये प्रतिपाति या वा। तदत्ति यान्तेऽखिलमुग्रकाली भजा० ॥१०॥ सुषुप्तिकाले जनमध्यायन्त्या यया जनः स्वप्नमवैति किञ्चित्। प्रबुद्ध्यते जाग्रति जीव एष भजा० ॥११॥ दयास्फुरत्कोरकटाक्षलाभान्नैकत्र यस्याः प्रलभन्ति सिद्धाः। कवित्वमीशित्वमपि स्वतन्त्रा भ० ॥१२॥ लसन्मुखाम्भोरुहमुत्स्फुरन्तं हृदि प्रणिध्याय दिशि स्फुरन्तः। यस्याः कृपार्द्रं प्रविकाशयन्ति भजा० ॥१३॥ यदानुरागानुगतालिचित्राश्चिरन्तनप्रेमपरिप्लुताङ्गा। सुनिर्भयाः सन्ति प्रमुख यस्या भजा० ॥१४॥ हरिर्विरञ्चिर्हर ईशितारः पुरोऽवतिष्ठन्ति प्रपन्नभङ्गाः। यस्याः समिच्छन्ति सदानुकूल्यं भजा० ॥१५॥ मनुं यदीयं हरमग्निसंस्थं ततश्च वामश्रुतिचन्द्रसक्तम्। जपन्ति ये स्युर्हि सुवन्दितास्ते भजा० ॥१६॥ प्रसीदतु प्रेमरसार्द्रचित्ता सदा हि सा श्रीभुवनेश्वरी मे। कृपाकटाक्षेण कुबेरकल्पा भवन्ति यस्याः पदभक्तिभाजः ॥१७॥ मुदा सुपाठ्यं भुवनेश्वरीयं सदा सतां स्तोत्रमिदं सुसेव्यम्। सुखप्रदं स्यात्कलिकल्मषघ्नं सुशृण्वतां सम्पठतां प्रशस्यम्॥१८॥

एतत्तु हृदयं स्तोत्रं पठेद्यस्तु समाहितः। भवेत्तस्येष्टदा देवी प्रसन्ना भुवनेश्वरी॥१९॥ ददाति धनमायुष्यं पुण्यं पुण्यमतिं तथा। नैष्ठिकीं देव भक्तिं च गुरुभक्तिं विशेषतः ॥२०॥ पूर्णिमायां चतुर्दश्यां कुजवारे विशेषतः। पठनीयमिदं स्तोत्रं देवसद्मनि यत्नतः ॥२१॥ यत्रकुत्रापि पाठेन स्तोत्रस्यास्य फलं भवेत्। सर्वस्थानेषु देवेश्याः पूतदेहः सदा पठेत्॥२२॥

इस हृदयस्तोत्र को एकाग्रचित्त होकर जो पढ़ता है उसकी इष्टदेवी भुवनेश्वरी प्रसन्न होकर उसे धन, धान्य, आयुष्य, पुण्य तथा पुण्यमति, नैष्ठिकी देवभक्ति तथा विशेष रूप से गुरुभक्ति देती है। पूर्णिमा को, चतुर्दशी को और विशेषरूप से मंगलवार को देवमन्दिर में इस स्तोत्र को यत्नपूर्वक पढ़ना चाहिए। जहां कहीं भी इस स्तोत्र का पाठ किया जाय वहाँ अवश्य फल मिलता है। सभी स्थानों पर देवेशी के इस स्तोत्र को पवित्र होकर ही पढ़ना चाहिए।

इति नीलसरस्वतीतन्त्रे भुवनेश्वरीपटले श्रीदेवीश्वरसम्वादे
श्रीभुवनेश्वरी हृदयस्तोत्रं समाप्तम्।

इति श्रीमन्त्रमहार्णवे द्वितीयखण्डे भुवनेश्वरीतन्त्रे सप्तमस्तरङ्गः ॥७॥

त्रिपुरभैरवी ध्यान

उद्य द्भानुसहस्रकान्तिमरुणक्षौमां शिरोमालिकां
रक्तालिप्तपयोधरां जप पटीं विद्यामभीतिं वरम्।
हस्ताब्जैर्दधतीं त्रिनेत्रविलसद्वक्त्रारविन्दश्रियं
देवीं बद्धहिमांशु रत्नमुकुटां वन्दे सुमन्दस्मिताम्।।

पृ ४७६

अष्टम तरङ्ग

त्रिपुरभैरवीतन्त्र

त्रिपुरभैरवीतन्त्रे मन्त्रो यथा :

त्रिपुर भैरवीतन्त्र में मन्त्र इस प्रकार है :

हसैं हसकरीं हसैं। इति मन्त्रः।

अस्य विधानं :

विनियोग : अस्य त्रिपुरभैरवीमन्त्रस्य दक्षिणामूर्तिऋषिः पंक्तिच्छन्दः त्रिपुरभैरवी देवता ऐं बीजं ह्रीं शक्तिः क्लीं कीलकं ममाभीष्टसिद्धये जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास : ॐ दक्षिणामूर्तिऋषये नमः शिरसि १। पंक्तिच्छन्दसे नमः मुखे २। श्रीत्रिपुरभैरव्यै देवतायै नमः हृदि ३। ऐं बीजाय नमः गुह्ये ४। ह्रीं शक्तये नमः पादयोः ५। क्लीं कीलकाय नमः सर्वाङ्गे ६। इति ऋष्यादिन्यासः।

करन्यास : हसरां अंगुष्ठाभ्यां नमः १। हसरीं तर्जनीभ्यां नमः २। हसरूं मध्यमाभ्यां नमः ३। हसरैं अनामिकाभ्यां नमः ४। हसरौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५। हसरः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ६। इति करन्यासः।

हृदयादिषडङ्गन्यास : हसरां हृदयाय नमः १। हसरीं शिरसे स्वाहा २। हसरूं शिखायै वषट् ३। हसरैं कवचाय हुं ४। हसरौं नेत्रत्रयाय वौषट् ५। हसरः अस्त्राय फट् ६। इति हृदयादिषडङ्गन्यासः।

इति न्यासं कृत्वा ताराप्रयोगोक्तन्यासादिकं कुर्यात्।

इस प्रकार न्यास करके ताराप्रयोगोक्त न्यासादि भी करे।

अथ ध्यानं :

उद्यद्भानुसहस्रकान्तिमरुणक्षौमां शिरोमालिकां रक्तालिप्तपयोधरां जप पटीं विद्यामभीतिं वरम्। हस्ताब्जैर्दधतीं त्रिनेत्रविलसद्वक्त्रारविन्दश्रियं देवीं बद्धहिमांशुरत्नमुकुटां वन्दे सुमन्दस्मिताम्॥१॥

एवं ध्यात्वा मानसोपचारैः सम्पूज्य पीठपूजां कुर्यात्। तथा च : पीठादौ रचिते सर्वतोभद्रमण्डले मण्डूकादिपरतत्त्वान्तपीठदेवताः पद्धति मार्गेण संस्थाप्य ॐ मं मण्डूकादिपरतत्त्वान्तपीठदेवताभ्यो नमः इति सम्पूज्य नव पीठशक्तीः पूजयेत्।

इस प्रकार ध्यान करके मानसोपचारों से पूजा करके पीठपूजा करे। पीठादि में रचित सर्वतोभद्र मण्डल में मण्डूकादि परतत्वान्त पीठदेवताओं को पद्धतिमार्ग से स्थापित करके "ॐ मं मण्डूकादि परतत्वान्त पीठदेवताभ्यो नमः" इससे पूजा करके नव पीठशक्तियों की इस प्रकार पूजा करे।

पूर्वाद्यष्टदिक्षु : ॐ इच्छायै नमः १। ॐ ज्ञानायै नमः २। ॐ क्रियायै नमः ३। ॐ कामदायिन्यै नमः ४। ॐ रत्यै नमः ५। ॐ रतिप्रियायै नमः ६। ॐ नन्दायै नमः ७। ऐं परायै नमः ८। मध्ये ॐ अपरायै नमः ९।

इति पीठशक्तीः पूजयेत्। ततः स्वर्णादिनिर्मितं यन्त्रपत्रं ताम्रपात्रे निधाय घृतेनाभ्यज्य तदुपरि दुग्धधारां जलधारां च दत्त्वा स्वच्छवस्त्रेण प्रोक्ष्य तदुपरि देव्या अष्टगन्धेन नवयोन्यात्मकं यन्त्रं तदुपरि अष्टदलं तदुपरि भूपुरं निर्माय हसौं सदाशिवमहाप्रेतपद्मासनाय नमः। इति मन्त्रेण पुष्पाद्यासनं दत्त्वा पीठमध्ये संस्थाप्य पुनर्ध्यात्वा : ऐं ह्रीं स ह स ष ह क्रे ह्रौं। इति मन्त्रेण बिन्दुचक्रे मूर्ति संकल्प्य त्रिखण्डमुद्रया देवीं ध्यात्वा आवाहनादिपुष्पान्तैरुपचारैः सम्पूज्य देव्याज्ञां गृहीत्वा आवरणपूजां कुर्यात्। तथा च : पुष्पाञ्जलिमादाय ॐ संविन्मये परे देवि परामृतचरुप्रिये। अनुज्ञां भैरवि देहि परिवारार्चनाय मे। इति पठित्वा पुष्पाञ्जलिं दद्यात्। इत्याज्ञां गृहीत्वा आवरणपूजामारभेत्। तथा च: केसरेषु अग्न्यादिकोणेषु मध्येदिक्षु च पूर्वोक्ताङ्गमन्त्रेण खड्गं पूजयेत्। ततः पुष्पाञ्जलिमादाय मूलमुच्चार्य ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले। भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम्॥१॥ इति पठित्वा पुष्पाञ्जलिं च दत्त्वा पूजितास्तर्पिताः सन्तु इति वदेत्। इति प्रथमावरणम्॥१॥

इससे पीठशक्तियों की पूजा करे। इसके बाद स्वर्णादि से निर्मित यन्त्रपत्र को ताम्रपत्र में रखकर घी से उसका अभ्यङ्ग करके उसपर दुग्धधारा तथा जलधारा डालकर स्वच्छ वस्त्र से उसे पोंछ कर उसके ऊपर देवी के अष्टगन्ध से नव योनि वाला यन्त्र, उसपर अष्टदल और उसके ऊपर भूपुर बनाकर (देखिये चित्र १७) "हसौं सदाशिव महाप्रेतपद्मासनाय नमः" इस मन्त्र से पुष्पाद्यासन देकर पीठ के मध्य उसे स्थपित करके पुनः ध्यान करके "ऐं ह्रीं स ह स ष ह क्रे ह्रौं" इस मन्त्र से बिन्दुचक्र में मूर्ति की कल्पना करके त्रिखण्ड मुद्रा से देवी का ध्यान करके आवाहन से लेकर पुष्पाञ्जलिदान पर्यन्त उपचारों से पूजा करके देवी की आज्ञा लेकर इस प्रकार आवरण पूजा करे। पुष्पाञ्जलि लेकर 'ॐ संविन्मये परे देवि परामृतचरुप्रिये। अनुज्ञां भैरविदेहि परिवारार्चनाय मे।' इसे पढ़ कर पुष्पाञ्जलि देवे। इस प्रकार आज्ञा लेकर आवरणपूजा करे। केसरों में, अग्न्यादि कोणों में और मध्य दिशा में पूर्वोक्तांगमन्त्र से खड्ग की पूजा करे। इसके बाद पुष्पाञ्जलि लेकर मूलमन्त्र का उच्चारण करके 'ॐ अभीष्टसिद्धिं में देहि शरणागतवत्सले। भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम्।" यह पढ़कर पुष्पाञ्जलि देकर "पूजितास्तर्पितास्सन्तु" यह कहे। इति प्रथमावरण॥१॥

ततः पूज्यपूजकयोरन्तरालं प्राची तदनुसारेण अन्या दिशः प्रकल्प्य क्रमानुसारेण पूजयेत्। तथा च

इसके बाद पूज्य और पूजक के अन्तराल में प्राची दिशा मानकर तदनुसार अन्य दिशाओं की कल्पना करके इस प्रकार क्रमानुसार पूजा करे।

उत्तरे द्रां द्राविण्यै नमः द्राविणीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। इति सर्वत्र॥१॥ द्रीं क्षोभिण्यै नमः क्षोभिणीश्रीपा० २। दक्षिणे क्लीं वशीकरिण्यै नमः वशीकरिणीश्रीपा० ३। प्लुं लोपाकर्षिण्यै नमः लोपाकर्षिणीश्री० ४। आग्नेयां स्त्रीं सम्मोहिन्यै नमः सम्मोहिनीश्रीपा० ५।

इसी प्रकार उत्तरे ह्रीं कामाय नमः कामश्रीपा० १। क्लीं मन्मथाय नमः मन्मथश्रीपा० २। दक्षिणे ऐं कन्दर्पाय नमः कन्दर्पश्रीपा० ३। प्लुं मकरध्वजाय नमः मकरध्वजश्रीपा० ४। आग्नेयां स्त्रीं मीनकेतवे नमः मीनकेतुश्रीपा० ५।

इति सम्पूज्य पुष्पाञ्जलिं दद्यात्। इति द्वितीयावरणम्॥२॥

इससे पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवे। इति द्वितीयावरण॥२॥

इसके बाद अष्टयोनियों में:

प्राच्यादिक्रमेण ऐं क्लीं स्त्रीं सः सुभगायै नमः सुभगा श्रीपा० १। ऐं क्लीं स्त्रीं सः भगायै नमः भगाश्रीपा० २। ऐं क्लीं स्त्रीं सः भगसर्पिण्यै नमः भगसर्पिणीश्रीपा० ३। ऐं क्लीं स्त्रीं सः भगमालिन्यै

नमः भगमालिनीश्रीपा० ४। ऐं क्लीं स्त्रीं सः अनङ्गायै नमः अनङ्गाश्रीपा० ५। ऐं क्लीं स्त्रीं सः अनङ्गकुसुमायै नमः अनङ्गकुसुमाश्रीपा० ६। ऐं क्लीं स्त्रीं सः अनङ्गमेखलायै नमः अनङ्गमेखलाश्रीपा० ७। ऐं क्लीं स्त्रीं सः अनङ्गमदनायै नमः अनङ्गमदनाश्रीपा० ८।

इत्यष्टौ पूजयित्वा पुष्पाञ्जलिं दद्यात्। इति तृतीयावरणम्॥३॥

इससे आठों की पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवे। इति तृतीयावरण॥३॥

इसके बाद अष्टदलों में :

प्राचीक्रमेण ॐ असिताङ्गब्राह्मीभ्यां नमः असिताङ्गब्राह्मीश्रीपा० १। ॐ रुरुमाहेश्वरीभ्यां नमः रुरुमाहेश्वरीश्रीपा० २। ॐ चण्डकौमारीभ्यां नमः चण्डकौमारीश्रीपा० ३। ॐ क्रोधवैष्णवीभ्यां नमः क्रोधवैष्णवीश्रीपा० ४। ॐ उन्मत्तवाराहीभ्यां नमः उन्मत्तवाराहीश्रीपा० ५। ॐ कपालीन्द्राणीभ्यां नमः कपालीन्द्राणीश्रीपा० ६। ॐ भीषणचामुण्डाभ्यां नमः भीषणचामुण्डाश्रीपा० ७। ॐ संहारमहालक्ष्मीभ्यां नमः संहारमहालक्ष्मीश्रीपा० ८।

इत्यष्टौ सम्पूज्य पुष्पाञ्जलिं दद्यात्। इति चतुर्थावरणम्॥४॥

इससे आठों की पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवे। इति चतुर्थावरण॥४॥

ततः पञ्चमावरणे इन्द्रादिदशदिक्पालान् वज्राद्यायुधानि च सम्पूज्य पुष्पाञ्जलिं दद्यात्। इति पञ्चमावरणम्॥५॥

इसके बाद पञ्चमावरण में इन्द्रदि दश दिक्पालों और वज्रादि आयुधों की पूजा कर पुष्पाञ्जलि देवे। इति पञ्चमावरण॥५॥

इत्यावरणपूजां कृत्वा धूपादिनमस्कारान्तं सम्पूज्य नैवेद्यानन्तरं श्रीविद्योक्तबलिचतुष्टयं दत्त्वा हस्तौ पादौ प्रक्षाल्य देवीं ध्यात्वा जपं कुर्यात्। अस्य पुरश्चरणं चतुर्विंशतिलक्षजपः। द्वादशसहस्रपुष्पैर्होमः। तत्तद्दशांशेन तर्पणमार्जनब्राह्मणभोजनानि कुर्यात्।

इस प्रकार आवरण पूजा करके धूपदान से लेकर नमस्कार पर्यन्त पूजा करके नैवेद्यदान के बाद श्रीविद्या में कहे अनुसार चार बलियाँ देकर हाथ-पैर धोकर देवी का ध्यान कर जाप करे। इसका पुरश्चरण चौबीस लाख जप है। बारह हजार फूलों से होम करना चाहिए। तत्तद्दशांश से तर्पण, मार्जन तथा ब्राह्मण भोजन करना चाहिए।

एवं कृते मन्त्रः सिद्धो भवति। एतस्मिन्सिद्धे मन्त्रे मन्त्री प्रयोगान् साधयेत्। तथा च : दीक्षाम्प्राप्य जपेन्मन्त्रं तत्त्वलक्षं जितेन्द्रियः। पुष्पैर्भानुसहस्रैस्तु जुहुयादक्षमक्षजैः॥१॥

ऐसा करने पर मन्त्र सिद्ध होता है। इस मन्त्र के सिद्ध होने पर साधक प्रयोगों को सिद्ध करे। दीक्षा लेकर जितेन्द्रिय होकर पाँच लाख मन्त्र का जप करे। मतान्तर में तत्वलक्षम् की जगह दश लक्षम् भी पाठ मिलता है। तदनुसार दस लाख जप हो जाता है। बारह हजार बहेड़े के फूलों के साथ बहेड़े का होम करे। इति **भैरवीपटलं समाप्तम्।**

त्रिपुरभैरवी कवच

श्रीपार्वत्युवाच।

देवदेव महादेव सर्वशास्त्रविशारद। कृपां कुरु जगन्नाथ धर्मज्ञोसि महामते॥१॥ भैरवी या पुरा प्रोक्ता विद्या त्रिपुरपूर्विका। तस्यास्तु कवचं दिव्यं मह्यं कथय तत्त्वतः॥२॥

श्री पार्वती बोली : हे देवदेव! हे महादेव! हे सर्वशास्त्रविशार! हे जगन्नाथ! हे महामते! आप धर्मज्ञ हैं। आप मुझपर कृपा करें। जो आप ने पहले त्रिपुरभैरवी विद्या कही थी उसका दिव्य कवच आप मुझे तत्वतः बतावें।

तस्यास्तु वचनं श्रुत्वा जगाद जगदीश्वरः। अद्भुतं कवचं देव्या भैरव्या दिव्यरूपि वै ॥३॥

उनके वचन को सुन कर महादेवजी ने भैरवी देवी के दिव्य रूपी कवच को बताया।

ईश्वर उवाच।

कथयामि महाविद्याकवचं सर्वदुर्लभम्। शृणुष्व त्वं च विधिना श्रुत्वा गोप्यं तवापि तत् ॥४॥ यस्याः प्रसादात्सकलं बिभर्मि भुवनत्रयम्। यस्याः सर्वं समुत्पन्नं यस्यामद्यापि तिष्ठति ॥५॥

ईश्वर बोले: हे देवि! मैं अत्यन्त दुर्लभ महाविद्या का कवच कह रहा हूं। तुम उसे विधिपूर्वक सुनो और सुन कर उसे गुप्त रखना। इसके प्रसाद से मैं तीनों लोको का भरण-पोषण करता हूं। इससे यह सारा संसार उत्पन्न हुआ है और इसमें ही यह सारा संसार स्थित है।

मातापिता जगद्धन्या जगद्ब्रह्मस्वरूपिणी। सिद्धिदात्री च सिद्धास्या ह्यसिद्धा दुष्टजन्तुषु ॥६॥ सर्वभूतप्रियंकरी सर्वभूतस्वरूपिणी। ककारी पातु मां देवी कामिनी कामदायिनी ॥७॥ एकारी पातु मां देवी मूलाधारस्वरूपिणी। इकारीपातुमां देवी भूमिसर्वसुखप्रदा ॥८॥ लकारी पातु मां देवी इन्द्राणीवरवल्लभा। ह्रींकारी पातु मां देवी सर्वदा शम्भुसुन्दरी ॥९॥ एतैर्वर्णैर्महामाया शाम्भवी पातु मस्तकम्। ककारे पातु मां देवी शर्वाणी हरगेहिनी ॥१०॥ मकारे पातु मां देवी सर्वपापप्रणाशिनी। ककारे पातु मां देवी कामरूपधरा सदा ॥११॥ ककारे पातु मां देवी शम्बरारिप्रिया सदा। पकारे पातु मां देवी धराधरणिरूपधृक् ॥१२॥ ह्रींकारी पातु मां देवी अकारार्द्धशरीरिणी। एतैर्वर्णैर्महामाया कामराहुप्रियावतु ॥१३॥ मकारः पातु मां देवि सावित्री सर्वदायिनी। ककारः पातु सर्वत्र कलाम्बरस्वरूपिणी ॥१४॥ लकारः पातु मां देवी लक्ष्मीः सर्वसुलक्षणा। ह्रीं पातु मां तु सर्वत्र देवी त्रिभुवनेश्वरी ॥१५॥ एतैर्वर्णैर्महामाया पातु शक्तिस्वरूपिणी। वाग्भवं मस्तकं पातु वदनं कामराजिका ॥१६॥ शक्तिस्वरूपिणी पातु हृदयं यन्त्रसिद्धिदा। सुन्दरी सर्वदा पातु सुन्दरी परिरक्षतु ॥१७॥ रक्तवर्णा सदा पातु सुन्दरी सर्वदायिनी। नानालंकारसंयुक्ता सुन्दरी पातु सर्वदा ॥१८॥ सर्वाङ्गसुन्दरी पातु सर्वत्र शिवदायिनी। जगदाह्लादजननी शम्भुरूपा च मां सदा ॥१९॥ सर्वमन्त्रमयी पातु सर्वसौभाग्यदायिनी। सर्वलक्ष्मीमयी देवी परमानन्ददायिनी ॥२०॥ पातु मां सर्वदा देवी नानाशङ्खनिधिः शिवा। पातु पद्मनिधिर्देवी सर्वदा शिवदायिनी ॥२१॥ दक्षिणामूर्तिर्मां पातु ऋषिः सर्वत्र मस्तके। पंक्तिच्छन्दःस्वरूपा तु मुखे पातु सुरेश्वरी ॥२२॥ गन्धाष्टकात्मिका पातु हृदयं शाङ्करी सदा। सर्वसम्मोहिनी पातु पातु संक्षोभिणी सदा ॥२३॥ सर्वसिद्धिप्रदा पातु सर्वाकर्षणकारिणी। क्षोभिणी सर्वदा पातु वशिनी सर्वदावतु ॥२४॥ आकर्षणी सदा पातु सम्मोहिनी सदावतु। रतिर्देवी सदा पातु भगाङ्गा सर्वदावतु ॥२५॥ माहेश्वरी सदा पातु कौमारी सर्वदावतु। सर्वाह्लादनकारी मां पातु सर्ववशङ्करी ॥२६॥ क्षमङ्करी सदा पातु सर्वाङ्गसुन्दरी तथा सर्वाङ्गयुवतिः सर्व सर्वसौभाग्यदायिनी ॥२७॥ वाग्देवी सर्वदा पातु वाणिनी सर्वदावतु। वशिनी सर्वदा पातु महासिद्धिप्रदा सदा ॥२८॥ सर्वविद्राविणी पातु गणनाथः सदावतु। दुर्गा देवी सदा पातु बटुकः सर्वदावतु ॥२९॥ क्षेत्रपालः सदा पातु पातुचावीरशान्तिका। अनन्तः सर्वदा पातु वराहः सर्वदावतु ॥३०॥ पृथिवी सर्वदा पातु स्वर्णसिंहासनं तथा। रक्तामृतं च सततं पातु मां सर्वकालतः ॥३१॥ सुरार्णवः सदा पातु कल्पवृक्षः सदावतु। श्वेतच्छत्रं सदा पातु रक्तदीपः सदावतु ॥३२॥ नन्दनोद्यानं सततं पातु मां सर्वसिद्धये। दिक्पालाः सर्वदा पान्तु द्वन्द्वौघाः सकलास्तथा ॥३३॥ वाहनानि सदा पान्तु अस्त्राणि पान्तु सर्वदा। शस्त्राणि सर्वदा पान्तु योगिन्यः

पान्तु सर्वदा ।।३४।। सिद्धाः पान्तु सदा देवी सर्वसिद्धिप्रदावतु। सर्वाङ्गसुन्दरी देवी सर्वदा पातु मां तथा ।।३५।। आनन्दरूपिणी देवी चित्स्वरूपा चिदात्मिका। सर्वदा सुन्दरी पातु सुन्दरी भवसुन्दरी ।।३६।। पृथग्देवालये घोरे संकटे दुर्गमे गिरौ। अरण्ये प्रान्तरे वापि पातु मां सुन्दरी सदा ।।३७।।

इदं कवचमित्युक्तो मन्त्रोद्धारश्च पार्वति। यः पठेत्प्रयतो भूत्वा त्रिसन्ध्यं नियतः शुचिः ।।३८।। तस्य सर्वार्थसिद्धिः स्याद्यद्यन्मनसि वर्तते। गोरोचनाकुंकुमेन रक्तचन्दनेन वा ।।३९।। स्वयंभूकुसुमैः शुक्लैर्भूमिपुत्रे शनौ सुरे। श्मशाने प्रान्तरे वापि शून्यागारे शिवालये ।।४०।। स्वशक्त्या गुरुणा यन्त्रं पूजयित्वा कुमारिकाः। तन्मनुं पूजयित्वा च गुरुपंक्तिं तथैव च ।।४१।। देव्यै बलिं निवेद्याथ नरमार्जारसूकरैः। नकुलैर्महिषैर्मेषैः पूजयित्वा विधानतः ।।४२।। धृत्वा सुवर्णमध्यस्थं कण्ठे वा दक्षिणे भुजे। सुतिथौ शुभनक्षत्रे सूर्यस्योदयने तथा ।।४३।। धारयित्वा च कवचं सर्वसिद्धिं लभेन्नरः।

हे पार्वती ! जो उक्त कवच को और मन्त्रोद्धार को शान्त होकर तीनों संध्याओं में पवित्र और नियत होकर पढ़ता है, उसके सभी अर्थों की सिद्धि होती है। उसके मन में जो जो इच्छाएँ होती है वह सब पूरी होती हैं। गोरोचन तथा केसर से या लाल चन्दन से सफेद स्वयंभू-फूलों से मङ्गलवार, शनिवार तथा रविवार को श्मशान में, एकान्त में शून्य घर में अथवा शिवालय में अपनी शक्ति के अनुसार यन्त्र की पूजा करके कुमारियों तथा उस मन्त्र की और गुरुपंक्ति की पूजा करके देवी को बनबिलाव, सूअर, नेवला, भैंसा तथा भेड़ा की बलि से विधानपूर्वक पूजा करके उसे सुवर्ण के मध्य में रखकर कण्ठ में या दाहिने हाथ में धारण करके उत्तम तिथि में शुभ नक्षत्र में, सूर्योदय के समय उस कवच को धारण करके मनुष्य समस्त सिद्धियों को प्राप्त करता है।

कवचस्य च माहात्म्यं नाहं वर्षशतैरपि ।।४४।। शक्नोमि तु महेशानि वक्तुं तस्य फलं तु यत्। न दुर्भिक्षफलं तत्र न चापि पीडनं तथा ।।४५।। सर्वविघ्नप्रशमनं सर्वव्याधिविनाशनम्। सर्वरक्षाकरं जन्तोश्चतुर्वर्गफलप्रदम् ।।४६।। मन्त्रं प्राप्य विधानेन पूजयेत्सततं सुधीः। तत्रापि दुर्लभं मन्ये कवचं देवरूपिणम् ।।४७।। गुरोः प्रसादमासाद्य विद्यां प्राप्य सुगोपिताम्। तत्रापि कवचं दिव्यं दुर्लभं भुवनत्रये ।।४८।। श्लोकं वास्तवमेकं वा यः पठेत्प्रयतः शुचिः। तस्य सर्वार्थसिद्धिः स्याच्छङ्करेण प्रभाषितम् ।।४९।। गुरुर्देवो हरः साक्षात्पत्नी तस्य च पार्वती। अभेदेन यजेद्यस्तु तस्य सिद्धिरदूरतः ।।५०।।

हे महेशानि ! मैं कवच के महात्म्य को सौ वर्षों में भी कहने में समर्थ नहीं हो सकता। उसका फल यह है कि वहाँ पर दुर्भिक्ष कभी नहीं होता और न किसी प्रकार की पीड़ा होती है। सभी विघ्न शान्त रहते है। सभी रोग भाग जाते हैं। यह कवच प्राणियों का हर प्रकार से रक्षक है। धर्म, अर्थ, काम तथा मोक्ष के फलों का देनेवाला है। मन्त्र पाकर सुधी विधान से सदा पूजा करे। वहाँ पर भी देव रूपी कवच को मैं दुर्लभ मानता हूं। गुरु का प्रसाद प्राप्त कर अत्यन्त गुप्त विद्या को पाकर वहाँ भी तीनों लोकों में दुर्लभ दिव्य कवच का जो कोई वस्तुतः एक श्लोक भी पवित्र होकर पढ़ता है उसकी सर्वार्थ सिद्धि होती है। ऐसा शङ्कर ने कहा है। गुरु साक्षात् देव महादेव हैं और उनकी पत्नी पार्वती हैं। जो इनकी अभेद दृष्टि से पूजा करता है सिद्धियाँ उसके निकट आ जाती हैं।

इति श्रीरुद्रयामले भैरवभैरवीसम्वादे श्रीत्रिपुर भैरवीकवचं समाप्तम्।

त्रैलोक्यविजयनामकशस्त्रास्त्र निवारक भैरवी कवच

श्रीदेव्युवाच।

भैरव्याः सकला विद्याः श्रुताश्चाधिगता मया। सांप्रातं श्रोतुमिच्छामि कवचं यत्पुरोदितम् ॥१॥ त्रैलोक्यविजयं नाम शस्त्रास्त्रविनिवारणम्। त्वत्तः परतरो नाथ कः कृपां कर्तुमर्हति ॥२॥

श्री देवी बोली : मैंने भैरवी की समस्त विद्याएँ सुन लीं तथा उन्हें समझ भी लिया। इस समय मैं उस कवच को सुनना चाहती हूं, जिस त्रैलोक्य विजय शस्त्रास्त्र निवारक कवच की आपने पहले चर्चा की थी। हे नाथ! आपसे बढ़कर कौन कृपा करने वाला हो सकता है।

ईश्वर उवाच।

शृणु पार्वति वक्ष्यामि सुन्दरि प्राणवल्लभे। त्रैलोक्यविजयं नाम शस्त्रास्त्रविनिवारकम् ॥३॥ पठित्वा धारयित्वेदं त्रैलोक्यविजयी भवेत्। जघान सकलान्दैत्यान् यद्धृत्वा मधुसूदनः ॥४॥ ब्रह्मा सृष्टिं वितनुते यद्धृत्वाभीष्टदायकः। धनाधिपः कुबेरोपि वासवस्त्रिदशेश्वरः ॥५॥ यस्य प्रसादादीशोहं त्रैलोक्यविजयी विभुः। न देयं परशिष्येभ्योऽसाधकेभ्यः कदाचन ॥६॥ पुत्रेभ्यः किमथान्येभ्यो दद्याच्च मृत्युमाप्नुयात्।

ईश्वर बोले : हे पार्वति प्राणवल्लभे! हे सुन्दरि! मैं त्रैलोक्य विजय शस्त्रास्त्र निवारक कवच को कहूंगा। इसे पढ़कर और धारण करके मनुष्य त्रैलोक्य विजयी होता है। इसे धारण करके मधुसूदन ने समस्त दैत्यों का नाश किया। इसे धारण करके ब्रह्मा सृष्टि करते हैं, कुबेर सम्पत्ति के स्वामी होते हैं, इन्द्र देवताओं के राजा होते हैं, इसके प्रसाद से मैं ईश, विभु तथा त्रैलोक्य विजयी हुआ हूं। इसे दूसरे के शिष्यों को, असाधकों को और पुत्रों को भी नहीं देना चाहिये, फिर अन्यों की क्या बात है? अन्यथा करने से मनुष्य मृत्यु को प्राप्त करता है।

भैरव्याः कवचस्यास्य दक्षिणामूर्तिरिव च ॥७॥ विराट् छन्दो जगद्धात्री देवता बालभैरवी। धर्मार्थकाममोक्षेषु विनियोगः प्रकीर्तितः ॥८॥

अधरो बिन्दुमानाद्यः कामः शक्तिशशीयुतः। भृगुर्मनुस्वरयुतः सर्गो बीजत्रयात्मकः ॥९॥ बालैषा मे शिरः पातु बिन्दुनादयुतापि सा। भालं पातु कुमारीशा सर्गहीना कुमारिका ॥१०॥ दृशौ पातु च वाग्बीजं कर्णयुग्मं सदावतु। कामबीजं सदा पातु घ्राणयुग्मं परावतु ॥११॥ सरस्वतीप्रदा बाला जिह्वां पातु शुचिप्रभा। हस्रैं कण्ठं हसकलरीं स्कन्धौ पातु हस्रौ भुजौ ॥१२॥ पञ्चमी भैरवी पातु करौ हसैं सदावतु। हृदयं हसकलीं वक्षः पातु हसौः स्तनौ मम ॥१३॥ पातु सा भैरवी देवी चैतन्यरूपिणी मम। हस्रैं पातु सदा पार्श्वयुग्मं हसकलरीं सदा ॥१४॥ कुक्षिं पातु हसौर्मध्ये भैरवी भुवि दुर्लभा। ऐंईंओंवं मध्यदेशं बीजविद्या सदावतु ॥१५॥ हस्रैं पृष्ठं सदा पातु नाभिं हसकलह्रीं सदा। पातु हसौं करौ पातु षट्कुटा भैरवी मम ॥१६॥ सहस्रैं सक्थिनी पातु सहसकलरीं सदावतु। गुह्यदेशं हस्रौ पातु जानुनी भैरवी मम ॥१७॥ सम्पत्प्रदा सदा पातु हैं जंघे हसक्लीं पदौ। पातु हंसौः सर्वदेहं भैरवी सर्वदावतु ॥१८॥ हसैं मां भवतु प्राच्यां हरक्लीं पावकेवतु। हसौं मे दक्षिणे पातु भैरवी चक्रसंस्थिता ॥१९॥ ह्रीं क्लीं ल्वें मां सदा पातु नैर्ऋत्यां चक्रभैरवी। क्रीं क्रीं क्रीं पातु वायव्ये हूं हूं पातु सदोत्तरे ॥२०॥ ह्रीं ह्रीं पातु सदैशान्ये दक्षिणे कालिकावतु। ऊर्ध्वं प्रागुक्तबीजानि

रक्षन्तु मामधःस्थले ।।२१।। दिग्विदिक्षु स्वाहा पातु कालिका खड्गधारिणी। ॐ ह्रीं स्त्रीं हूं फट् सातारा सर्वत्र मां सदावतु ।।२२।। संग्रामे कानने दुर्गे तोये तरङ्गदुस्तरे। खड्गकर्तृधारा सोग्रा सदा मां परिरक्षतु ।।२३।।

इति ते कथितं देवि सारात्सारतरं महत्। त्रैलोक्यविजयं नाम कवचं परमाद्भुतम् ।।२४।। यः पठेत्प्रयतो भूत्वा पूजायाः फलमाप्नुयात्। स्पर्द्धामूद्धूय भवने लक्ष्मीर्वाणी वसेत्ततः ।।२५।। यः शत्रुभीतो रणकातरो वा भीतो वने वा सलिलालये वा। वादे सभायां प्रतिवादिनो वा रक्षः प्रकोपाद्ग्रहसंकुलाद्वा। प्रचण्डदण्डाक्षमनाच्च भीतो गुरोः प्रकोपादपि कृच्छ्रसाध्यात्। अभ्यर्च्य देवीं प्रपठेत्रिसन्ध्यं स स्यान्महेशप्रतिमो जयी च ।।२६।। त्रैलोक्य विजयं नाम कवचं मन्मुखोदितम्। विलिख्य भूर्जगुटिकां स्वर्णस्थां धारयेद्यदि ।।२७।। कण्ठे वा दक्षिणे बाहौ त्रैलोक्य विजयी भवेत्। तद्गात्रं प्राप्य शस्त्राणि भवन्ति कुसुमानि च ।।२८।। लक्ष्मीः सरस्वती तस्य निवसेद्भवने मुखे। एतत्कवचमज्ञात्वा यो जपेद्भैरवीं पराम् ।।२९।। बालां वा प्रजपेद्विद्वान्दरिद्रो मृत्युमाप्नुयात् ।।३०।।

हे देवि! यह मैंने तुम्हें महान सार के भी सार को बतलाया है। इसका नाम त्रैलोक्य विजय अद्भुत कवच है। जो एकाग्रचित्त होकर इसे पढ़ता है वह पूजा का फल प्राप्त करता है तथा उसके घर में लक्ष्मी स्पर्धा को छोड़ कर निवास करती है। जो शत्रु से भयभीत, रण में कातर, वन में या जलाशय में, अथवा सभा में, शास्त्रार्थ में प्रतिवादी से भयभीत हो, राक्षस के प्रकोप से ग्रस्त हो या ग्रहों के प्रभाव से त्रस्त हो, प्रचण्ड दण्ड सहने में अक्षम हो, कठिनाई से सुधरनेवाले गुरु के कोप से भयभीत हो गया हो, वह देवी की पूजा करके तीनों सन्ध्याओं में यदि इस स्तोत्र को पढ़े तो महेश के समान तथा विजयी हो जाता है। यह मेरे मुख से प्रकट त्रैलोक्य विजय कवच भोजपत्र पर लिख कर, गोली बनाकर, सोने में मढ़ाकर, कण्ठ में या दाहिने बाहु में धारण करे तो त्रैलोक्यविजयी होवे। उसके शरीर को प्राप्त कर शस्त्र फूल हो जाते हैं। उसके घर में लक्ष्मी तथा मुख में सरस्वती का निवास होता है। जो विद्वान् इस कवच को बिना जाने भैरवी का जप करता है अथवा बाला का जप करता है वह दरिद्र होकर मृत्यु को प्राप्त होता है।

इति श्रीरुद्रयामले देवीश्वरसम्वादे
त्रैलोक्यविजयं नाम भैरवीकवचं समाप्तम्।

त्रिपुरभैरवीसहस्रनामस्तोत्र

महाकालभैरव उवाच। अथ वक्ष्ये महेशानि देव्या नाम सहस्रकम्। यत्प्रसादान्महादेवि चतुर्वर्गफलं लभेत् ।।१।। सर्वरोगप्रशमनं सर्वमृत्युविनाशनम्। सर्वसिद्धिकरं स्तोत्रं नातः परतरः स्तवः ।।२।। नातः परतरा विद्या तीर्थन्नातः परं स्मृतम्। यस्यां सर्वं समुत्पन्नं यस्यामद्यापि तिष्ठति ।।३।। क्षयमेष्यति तत्सर्वं लयकाले महेश्वरि। नमामि त्रिपुरां देवीं भैरवीं भयमोचिनीम्। सर्वसिद्धिकरीं साक्षान्महापातकनाशिनीम् ।।४।।

महाकालभैरव बोले : हे महेशानि! देवी का सहस्रनाम मैं तुम्हें बताऊँगा। इसके प्रसाद से मनुष्य धर्म, अर्थ, काम तथा मोक्ष का फल प्राप्त करता है। यह समस्त रोगों को शान्त करने वाला तथा समस्त मृत्युओं का नाशक है। इससे बढ़कर समस्त सिद्धियों का साधक कोई स्तोत्र नहीं है। इससे बढ़कर कोई विद्या नहीं है। इससे बढ़कर कोई तीर्थ नहीं है। जिसमें सब कुछ उत्पन्न हुआ है और जिसमें सब

आज भी स्थित है, हे महेश्वरि! प्रलयकाल में यह सब उसी में लय हो जायगा। मैं भय दूर करनेवाली उन त्रिपुराभैरवी देवी को नमस्कार करता हूं जो कि समस्त सिद्धियों की दात्री तथा महापापों को नाश करने वाली हैं।

विनियोग: ॐ अस्य श्रीत्रिपुरभैरवीसहस्रनामस्तोत्रस्य भगवानृषिः पंक्तिश्छन्दः आद्या शक्तिः भगवतीत्रिपुरभैरवी देवता सर्वकामार्थसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

ॐ त्रिपुरा परमेशानि योगसिद्धिनिवासिनी। सर्वमन्त्रमयी देवी सर्वसिद्धिप्रवर्तिनी ॥१॥ सर्वाधारमयी देवी सर्वसम्पत्प्रदा शुभा। योगिनी योगमाता च योगसिद्धिप्रवर्तिनी ॥२॥ योगिध्येया योगमयी योगियोगनिवासिनी। हेला लीला तथा क्रीडा कालरूपप्रवर्तिनी ॥३॥ कालमाता कालरात्रिः काली कमलवासिनी। कमला कान्तिरूपा च कामराजेश्वरी क्रिया ॥४॥ कटुः कपटकेशा च कपटा कुटिलाकृतिः। कुमुदा चर्चिका कान्तिः कालरात्रिप्रिया सदा ॥५॥ घोराकारा घोरतरा धर्माधर्मप्रदा मतिः। घण्टाघर्घरदा घण्टा घण्टानादप्रिया सदा ॥६॥ सूक्ष्मा सूक्ष्मतरा स्थूला अतिस्थूला सदामतिः। अतिसत्या सत्यवती सत्यसङ्केतवासिनी ॥७॥ क्षमा भीमा तथाऽभीमा भीमनादप्रवर्तिनी। भ्रमरूपा भयहरा भयदा भयनाशिनी ॥८॥ श्मशानवासिनी देवी श्मशानालयवासिनी। शवासना शवाहारा शवदेहा शिवाऽशिवा ॥९॥ कण्ठदेशशवाहारा शवकङ्कणधारिणी। दन्तुरा सुदन्ती सत्या सत्यसंकेतवासिनी ॥१०॥ सत्यदेहा सत्यहारा सत्यवादनिवासिनी। सत्यालया सत्यसङ्गा सत्यसङ्गरकारिणी ॥११॥ असङ्गसङ्गरहिता सुसङ्गासङ्गमोहिनी। मायामतिर्महामाया महामखविलासिनी ॥१२॥ गलद्रुधिरधारा च मुखद्वयनिवासिनी। सत्यायासा सत्यसङ्गा सत्यसङ्गरकारिणी ॥१३॥ असङ्गा सङ्गनिरता सुसङ्गा सङ्गवासिनी। सदासत्या महासत्या मांसपाशा सुमांसका ॥१४॥ मांसाहारा मांसधरा मांसाशी मांसभक्षका। रक्तपाना रक्तरुचिरारक्ता रक्तवल्लभा ॥१५॥ रक्ताहारा रक्तप्रिया रक्तनिन्दकनाशिनी। रक्तपानप्रिया बाला रक्तदेशा सुरक्तिका ॥१६॥ स्वयम्भूकुसुमस्था च स्वयम्भूकुसुमोत्सुका। स्वयम्भूकुसुमाहारा स्वयम्भूनिन्दकासना ॥१७॥ स्वयम्भूपुष्पकप्रीता स्वयम्भूपुष्पसम्भवा। स्वयम्भूपुष्पहाराढ्या स्वयम्भूनिन्दकान्तका ॥१८॥ कुण्डगोलविलासी च कुण्डगोलसदामतिः। कुण्डगोलप्रियकरी कुण्डगोलसमुद्भवा ॥१९॥ शुक्रात्मिका शुक्रकरा सुशुक्रा च सुशुक्तिका। शुक्रपूजकपूज्या च शुक्रनिन्दकनिन्दका ॥२०॥ रक्तमाल्या रक्तपुष्पा रक्तपुष्पकपुष्पका। रक्तचन्दनसिक्ताङ्गी रक्तचन्दननिन्दका ॥२१॥ मत्स्या मत्स्यप्रिया मान्या मत्स्यभक्षा महोदया। मत्स्याहारा मत्स्यकामा मत्स्यनिन्दकनाशिनी ॥२२॥ केकराक्षी तथा क्रूरा क्रूरसैन्यविनाशिनी। क्रूराङ्गी कुलिशाङ्गी च चक्राङ्गी चक्रसम्भवा ॥२३॥ चक्रदेहा चक्रहारा चक्रकङ्कालवासिनी। निम्ननाभिर्भीतिहरा भयदा भयहारिका ॥२४॥ भयप्रदा भया भीता अभीमा भीमनादिनी। सुन्दरी शोभना सत्या क्षेम्या क्षेमकरी तथा ॥२५॥ सिन्दूराञ्चितसिन्दूरा सिन्दूरसदृशाकृतिः। रक्तारञ्जितनासा च सुनासा निम्ननासिका ॥२६॥ खर्वा लम्बोदरी दीर्घा दीर्घघोणा महाकुचा। कुटिला चञ्चला चण्डी चण्डनादप्रचण्डिका ॥२७॥ अतिचण्डा महाचण्डा श्रीचण्डा चण्डवेगिनी। चाण्डाली चण्डिका चण्डशब्दरूपा च चञ्चला ॥२८॥ चम्पा चम्पावती चोस्ता तीक्ष्णतीक्ष्णा प्रिया क्षतिः। जलदा जयदा योगा जगदानन्दकारिणी ॥२९॥ जगद्वन्द्या जगन्माता जगती जगतः क्षमा। जन्या जयजनेत्री च

जयिनी जयदा तथा ॥३०॥ जननी च जगद्धात्री जयाख्या जयरूपिणी। जगन्माता जगन्मान्या जयश्रीर्जयकारिणी ॥३१॥ जयिनी जयमाला च जया च विजया तथा। खड्गिनी खड्गरूपा च सुसङ्गा खड्गधारिणी ॥३२॥ खड्गरूपा खड्गकरा खड्गिनी खड्गवल्लभा। खड्गदा खड्गभावा च खड्गदेहसमुद्भवा ॥३३॥ खड्ग खड्गधरा खेला खड्गिनी खड्गमण्डिनी। शङ्खिनी चापिनी देवी वज्रिणी शूलिनी मतिः ॥३४॥ बलिनो भिन्दिपाली च पाशिनी चांकुशी शरी। धनुषी चटकी चर्मा दन्ती च कर्णनालिकी ॥३५॥ मुसली हलरूपा च तूणीरगणनाशिनी। तूणालया तूणहरा तूणसम्भवरूपिणी ॥३६॥ सुतूणी तूण खेदा च तूणाङ्गी तूणवल्लभा। नानास्त्रधारिणी देवी नानाशस्त्रसमुद्भवा ॥३७॥ लाक्षालक्षहरा लाभा सुलाभा लाभनाशिनी। लाभहारा लाभकरा लाभिनी लाभरूपिणी ॥३८॥ धरित्री धनदा धान्या धान्यरूपा धरा धनुः। धुरशब्दा धुरा मान्या धराङ्गी धननाशिनी ॥३९॥ धनहा धनलाभा च धनलभ्या महाधनुः। अशान्ता शान्तिरूपा च श्वासमार्गनिवासिनी ॥४०॥ गगणा गणसेव्या च गणाङ्गा वागवल्लभा। गणदा गणहा गम्या गमनागमसुन्दरी ॥४१॥ गम्यदा गणनाशी च गदहा गदवर्द्धिनी। स्थैर्या च स्थैर्यनाशा च स्थैर्यान्तकारणी कला ॥४२॥ दात्री कर्त्रीप्रिया प्रेमा प्रियदा प्रियवर्द्धिनी। प्रियहा प्रिय भव्या च प्रियप्रेमांघ्रिपा तनुः ॥४३॥ प्रियजा प्रियभव्या च प्रियस्था भवनस्थिता। सुस्थिरा स्थिररूपा च स्थिरदा स्थैर्यबर्हिणी ॥४४॥ चञ्चला चपला चोला चपलाङ्गनिवासिनी। गौरी काली तथाच्छिन्ना माया मायाहरप्रिया ॥४५॥ सुन्दरी त्रिपुरा भव्या त्रिपुरेश्वरवासिनी। त्रिपुरनाशिनी देवी त्रिपुरप्राणहारिणी ॥४६॥ भैरवी भैरवस्था च भैरवस्य प्रिया तनुः। भवाङ्गी भैरवाकारा भैरवप्रियवल्लभा ॥४७॥ कालदा कालरात्रिश्च कामा कात्यायनी क्रिया। क्रियदा क्रियहा क्लैव्या प्रियप्राणाक्रिया तथा ॥४८॥ क्रींकारी कमला लक्ष्मीः शक्तिः स्वाहा विभुः प्रभुः। प्रकृतिः पुरुषश्चैव पुरुषा पुरुषाकृतिः ॥४९॥ परमः पुरुषश्चैव माया नारायणी मतिः। ब्राह्मी माहेश्वरी चैव कौमारी वैष्णवी तथा ॥५०॥ वाराही चैव चामुण्डा इन्द्राणी हरवल्लभा। भार्गी माहेश्वरी कृष्णा कात्यायन्यपि पूतना ॥५१॥ राक्षरी डाकिनी चित्रा विचित्रा विभ्रमा तथा। हाकिनी राकिनी भीता गन्धर्वा गन्धवाहिनी ॥५२॥ केकरी कोटराक्षी च निर्मांसा लूकमांसिका। ललज्जिह्वा सुजिह्वा च बालदा बालदायिनी ॥५३॥ चन्द्रा चन्द्रप्रभा चान्द्री चन्द्रकान्तिसुतत्परा। अमृता मानदा पूषा तुष्टिः पुष्टिः रतिर्धृतिः ॥५४॥ शशिनी चन्द्रिका कान्तिर्ज्योत्स्ना श्रीः प्रीतिरङ्गदा। पूर्णा पूर्णमृता कल्पलतिका कल्पदानदा ॥५५॥ सुकल्पा कल्पहस्ता च कल्पवृक्षकरी हनुः। कल्पाख्या कल्पभव्या च कल्पानन्दकवन्दिता ॥५६॥ सूचीमुखी प्रेतमुखी उल्कामुखी महामुखी। उग्रमुखी च सुमुखी काकास्या विकटानना ॥५७॥ कृकलास्या च सन्ध्यास्या मुकुलीशा रमाकृतिः। नानामुखी च नानास्या नानारूपप्रधारिणी ॥५८॥ विश्वार्च्या विश्वमाता च विश्वाख्या विश्वभाविनी। सूर्या सूर्यप्रभा शोभा सूर्यमण्डलसंस्थिता ॥५९॥ सूर्यकान्तिः सूर्यकरा सूर्याख्या सूर्यभावना। तपिनी तापिनी धूम्रा मरीचिर्ज्वालिनी रुचिः ॥६०॥ सुरदा भोगदा विश्वा बोधिनी धारिणी क्षमा। युगदा योगहा योग्या योग्यहा योगवर्द्धिनी ॥६१॥ वह्निमण्डलसंस्था च वह्निमण्डलमध्यगा। वह्निमण्डलरूपा च वह्निमण्डलसंज्ञका ॥६२॥ वह्नितेजा वह्निरागा वह्निदा वह्निनाशिनी। वह्निक्रिया वह्निभुजा कला वह्निस्थिता सदा ॥६३॥ धूम्रार्चिषा उज्ज्वलिनी तथा

च विस्फुलिङ्गिनी। शूलिनी च स्वरूपा च कपिला हव्यवाहिनी ॥६४॥ नानातेजस्विनी देवी परब्रह्मकुटुम्बिनी। ज्योतिर्ब्रह्ममयी देवी परब्रह्मस्वरूपिणी ॥६५॥ परमात्मा परा पुण्या पुण्यदा पुण्यवर्द्धिनी। पुण्यदा पुण्यनाम्नी च पुण्यगन्धा प्रिया तनुः ॥६६॥ पुण्यदेहा पुण्यकरा पुण्यनिन्दकनिन्दका। पुण्यकालकरा पुण्या सुपुण्या पुण्यमालिका ॥६७॥ पुण्यखेला पुण्यकेली पुण्यनामसमा पुरा। पुण्यसेव्या पुण्यखेल्या पुराणपुण्यवल्लभा ॥६८॥ पुरुषा पुरुषप्राणा पुरुषात्मस्वरूपिणी। पुरुषाङ्गी च पुरुषी पुरुषस्य कला सदा ॥६९॥ सुपुष्पा पुष्पकप्राणा पुष्पहा पुष्पवल्लभा। पुष्पप्रिया पुष्पहारा पुष्पवन्दकवन्दका ॥७०॥ पुष्पहा पुष्पमाला च पुष्पनिन्दकनाशिनी। नक्षत्रप्राणहन्त्री च नक्षत्रालक्ष्यवन्दका ॥७१॥ लक्षमाल्या लक्षहारा लक्षा लक्षस्वरूपिणी। नक्षत्राणी सुनक्षत्रा नक्षत्राहा महोदया ॥७२॥ महामाल्या महामान्या महती मातृपूजिता। महामहाकनीया च महाकालेश्वरी महा ॥७३॥ महास्या वन्दनीया च महाशब्दनिवासिनी। महाशङ्खेश्वरी मीना मत्स्यगन्धा महोदरी ॥७४॥ लम्बोदरी च लम्बोष्ठी लम्बनिम्नतनूदरी। लम्बोष्ठी लम्बनासा च लम्बघोणा ललत्सुका ॥७५॥ अतिलम्बा महालम्बा सुलम्बा लम्बवाहिनी। लम्बार्हा लम्बशक्तिश्च लम्बस्था लम्बपूर्विका ॥७६॥ चतुर्घण्टा महाघण्टा घण्टानाद प्रिया सदा। वाद्यप्रिया वाद्यरता सुवाद्या वाद्यनाशिनी ॥७७॥ रमा रामा सुबाला च रमणीयस्वभाविनी। सुरम्या रम्यदा रम्भा रम्भोरू रामवल्लभा ॥७८॥ कामप्रिया कामकरा कामाङ्गी रमणी रतिः। रतिप्रिया रतिरती रतिसेव्या रतिप्रिया ॥७९॥ सुरभिः सुरभीशोभा दिक्शोभा शुभनाशिनी। सुशोभा च महाशोभाऽतिशोभा प्रेततापिनी ॥८०॥ लोभिनी च महालोभा सुलोभा लोभवर्द्धिनी। लोभाङ्गी लोभवन्द्या च लोभाही लोभवासका ॥१८॥ लोभप्रिया महालोभा लोभनिन्दकनिन्दका। लोभाङ्गवासिनी गन्धा विगन्धागन्धनाशिनी ॥८२॥ गन्धाङ्गीगन्धपुष्टा च सुगन्धाप्रेमगन्धिका। दुर्गन्धापूतिगन्धा च विगन्धा अतिगन्धिका ॥८३॥ पद्मान्तिका पद्मवहा पद्मप्रियप्रियङ्करी। पद्मनिन्दकनिन्दा च पद्मसन्तोषवाहना ॥८४॥ रक्तोत्पलवरा देवी रक्तोत्पलप्रिया सदा। रक्तोत्पलसुगन्धा च रक्तोत्पलनिवासिनी ॥८५॥ रक्तोत्पलमहामाला रक्तोत्पलमनोहरा। रक्तोत्पलसुनेत्रा च रक्तोत्पलस्वरूपधृक्॥८६॥ वैष्णवी विष्णुपूज्या च वैष्णवाङ्गनिवासिनी। विष्णुपूजकपूज्या च वैष्णवे संस्थिता तनुः ॥८७॥ नारायणस्य देहस्था नारायणमनोहरा। नारायणस्वरूपा च नारायणमनःस्थिता ॥८८॥ नारायणाङ्गसम्भूता नारायणप्रिया तनुः। नारी नारायणी गण्या नारायणगृहप्रिया ॥८९॥ हरपूज्या हरश्रेष्ठा हरस्य वल्लभा क्षमा। संहारी हरदेहस्था हरपूजनतत्परा ॥९०॥ हरदेहसमुद्भूता हराङ्गवासिनी कुहूः। हरपूजकपूज्या च हरवन्दकतत्परा ॥९१॥ हरदेहसमुत्पन्ना हरक्रीडासदागतिः। सुगणा सङ्गरहिता असङ्गा सङ्गनाशिनी ॥९२॥ निर्जना विजना दुर्गा दुर्गक्लेशनिवारिणी। दुर्गदेहान्तका दुर्गारूपिणी दुर्गतस्थिका ॥९३॥ प्रेतकरा प्रेतप्रिया प्रेतदेहसमुद्भवा। प्रेताङ्गवासिनी प्रेता प्रेतदेहविमर्द्दिका ॥९४॥ डाकिनी योगिनी कालरात्रिः कालप्रिया सदा। कालरात्रिहरा काली कृष्णदेहा महातनुः ॥९५॥ कृष्णाङ्गी कुटिलाङ्गी च वज्राङ्गी वज्ररूपधृक्। नानादेहधरा धन्या षट्चक्रक्रमवासिनी ॥९६॥ मूलाधारनिवासा च मूलाधारस्थिता सदा। वायुरूपा महारूपा वायुमार्गनिवासिनी ॥९७॥ वायुयुक्ता वायुकरा वायुपूरकपूरका। वायुरूपधरा देवी सुषुम्नामार्गगामिनी ॥९८॥ देहस्था देहरूपा च देहध्येया सुदेहिका। नाडीरूपा

महीरूपा नाडीस्थाननिवासिनी ॥९९॥ इङ्गला पिङ्गला चैव सुषुम्नामध्यवासिनी। सदाशिव प्रियकरी मूलप्रकृतिरूपधृक् ॥१००॥ अमृतेशी महाशाली श्रृङ्गाराङ्गनिवासिनी। उत्पत्तिस्थितिसंहारिप्रलया पदवासिनी ॥१०१॥ महाप्रलययुक्ता च सृष्टिसंहारकारिणी। स्वधा स्वाहा हव्यवाहा हव्या हव्यप्रिया सदा ॥१०२॥ हव्यस्था हव्यभक्षा च हव्यदेहसमुद्भवा। हव्यक्रीडा कामधेनुस्वरूपा रूपसम्भवा ॥१०३॥ सुरभिर्नन्दिनी पुण्या यज्ञाङ्गी यज्ञसम्भवा। यज्ञस्था यज्ञदेहा च योनिजा योनिवासिनी ॥१०४॥ अयोनिजा सती सत्या असती कुटिला तनुः। अहल्या गौतमी गम्या विदेहा देहनाशिनी ॥१०५॥ गान्धारी द्रौपदी दूती शिवप्रिया त्रयोदशी। पञ्चदशी पौर्णमासी चतुर्दशी च पञ्चमी ॥१०६॥ षष्ठी च नवमी चैव अष्टमी दशमी तथा। एकादशी द्वादशी च द्वाररूपा भयप्रदा ॥१०७॥ संक्रान्तिः सामरूपा च कुलीना कुलनाशिनी। कुलकान्ता कृशा कुम्भा कुम्भदेहविवर्द्धिनी ॥१०८॥ विनीता कुलवत्यर्था अन्तरी चानुगाप्युषा। नदीसागरदा शान्तिः शान्तिरूपा सुशान्तिका ॥१०९॥ आशा तृष्णा क्षुधा क्षोभ्या क्षोभरूपनिवासिनी। गङ्गसागरगा कान्तिः श्रुतिः स्मृतिर्धृतिर्मही ॥११०॥ दिवा रात्रिः पञ्चभूतदेहा चैव सुदेहिका। तण्डुलाच्छिन्नमस्ता च नागयज्ञोपवीतिनी ॥१११॥ वर्णिनी डाकिनी शक्तिः कुरुकुल्ला सुकुल्लका। प्रत्यङ्गिराऽपरा देवी अजिता जयदायिनी ॥११२॥ जया च विजया चैव महिषासुरघातिनी। मधुकैटभहन्त्री च चण्डमुण्डविनाशिनी ॥११३॥ निशुम्भशुम्भहननी रक्तबीजक्षयङ्करी। काशी काशीनिवासा च मधुरा पार्वती परा ॥११४॥ अपर्णा चण्डिका देवी मृडानी चाम्बिका कला। शुक्ला कृष्णा वर्ण्यवर्णा शरदिन्दुकलाकृतिः ॥११५॥ रुक्मिणी राधिका चैव भैरव्याः परिकीर्तितम्।

अष्टाधिकसहस्रं तु देवीनामानुकीर्त्तनात् ॥११६॥ महापातकयुक्तोपि मुच्यते नात्र संशयः। ब्रह्महत्या सुरापानं स्तेयं गुर्वङ्गनागमः ॥११७॥ महापातककोट्यस्तु तथा चैवोपपातकम्। स्तोत्रेण भैरवोक्तेन सर्वं नश्यति तत्क्षणात् ॥११८॥ सर्वं वा श्लोकमेकं वा पठनात्स्मरणादपि। पठेद्वा पाठयेद्वापि सद्यो मुच्येत बन्धनात् ॥११९॥ राजद्वारे रणे दुर्गे सङ्कटे गिरिदुर्गमे। प्रान्तरे पर्वते वापि नौकायां वा महेश्वरि ॥१२०॥ वह्निदुर्गभये प्राप्ते सिंहव्याघ्रभयाकुले। पठनात् स्मरणान्मर्त्यो मुच्यते सर्वसङ्कटात ॥१२१॥ अपुत्रो लभते पुत्रं दरिद्रो धनवान्भवेत्। सर्वशास्त्रपरो विप्रः सर्वयज्ञफलं लभेत् ॥१२२॥ अग्निवायुजलस्तम्भं गतिस्तम्भं विवस्वतः मारणे द्वेषणे चैव तथोच्चाटे। महेश्वरि ॥१२३॥ गोरोचनाकुंकुमेन लिखेत्स्तोत्रमनन्यधीः। गुरुणा वैष्णवैर्वापि सर्वयज्ञफलं लभेत् ॥१२४॥ वशीकरणमन्त्रैर्वा जायन्ते सर्वसिद्धयः। प्रातःकाले शुचिर्भूत्वा मध्याह्ने च निशामुखे ॥१२५॥ पठेद्वा पाठयेद्वापि सर्वयज्ञफलं लभेत्।

देवी के एक हजार आठ नामों के कीर्तन से महापातकयुक्त मनुष्य भी मुक्त हो जाता है। इसमें कोई संशय नहीं है। ब्रह्महत्या, सुरापान, चोरी और आचार्य-पुत्रीगमन जैसे दुष्कर्म महापातक की कोटियों में आते हैं। इनके अतिरिक्त उपपातक भी भैरवोक्त इस सम्पूर्ण स्तोत्र अथवा एक श्लोक के पठन या स्मरण से तत्काल नष्ट हो जाते हैं। जो इसे पढ़े या पढ़ाये वह तत्काल बन्धन से मुक्त हो जाता है। राजद्वार में, युद्ध में, दुर्ग में, गिरिदुर्गम परिस्थिति में, एकान्त में, पर्वत पर, नौका पर, हे महेश्वरि! अग्नि में घिर जाने पर, सिंह और व्याघ्र के भय में फँस जाने पर, इसके पठन या स्मरण से मनुष्य सभी सङ्कटों से मुक्त हो जाता है। पुत्ररहित पुत्र को प्राप्त करता है; दरिद्र धनवान् होता है; ब्राह्मण समस्त शास्त्रों का ज्ञाता तथा समस्त यज्ञों का फल प्राप्त करता है। अग्नि, वायु, जल तथा सूर्य की गति का स्तम्भन,

मारण, द्वेषण तथा उच्चाटन में हे महेश्वरि! गोरोचन तथा कुंकुम से एकाग्रमन होकर इस स्तोत्र को लिखे तो सब यज्ञों का फल प्राप्त होता है। गुरुमन्त्र, वैष्णव मन्त्र या वशीकरण मन्त्र से समस्त सिद्धियाँ प्राप्त होती हैं। पवित्र होकर प्रातःकाल, मध्याह्न तथा सायंकाल इस स्तोत्र को पढ़े या पढ़ावे तो सभी यज्ञों का फल प्राप्त होता है।

वादी मूको भवेद्दुष्टा राजा च सेवको यथा ॥१२६॥ आदित्यमङ्गलदिने गुरौ वापि महेश्वरि। गोरोचनाकुंकुमेन लिखेत्स्तोत्रमनन्यधीः ॥१२७॥ धृत्वा सुवर्णमध्यस्थं सर्वान् कामानवाप्नुयात्। स्त्रीभिर्वामकरे धार्यं पुम्भिर्दक्षकरे तथा॥१२८॥ आदित्यमङ्गलदिने गुरो वापि महेश्वरि। शनैश्चरे लिखेद्वापि सर्वसिद्धिं लभेद् ध्रुवम् ॥१२९॥ प्रान्तरे वा श्मशाने वा निशायामर्द्धरात्रके। शून्यागारे च देवेशि लिखेद्यत्नेन साधकः ॥१३०॥ सिंहराशौ गुरुगते कर्कटस्थे दिवाकरे। मीनराशौ गुरुगते लिखेद्यत्नेन साधकः ॥१३१॥ रजस्वलाभगं दृष्ट्वा तत्रस्थो विलिखेत्सदा। सुगन्धिकुसुमैः शुक्रैः सुगन्धिगन्धचन्दनैः॥१३२॥ मृगनाभिमृगमदैर्विलिखेद्यत्नपूर्वकम्। लिखित्वा च पठित्वा च धारयेच्चाप्यनन्यधीः ॥१३३॥ कुमारीं पूजयित्वा च नारींश्चापि प्रपूजयेत्। पूजयित्वा च कुसुमैर्गन्धचन्दनवस्त्रकैः॥१३४॥ सिन्दूररक्तकुसुमैः पूजयेद्भक्तियोगतः। अथ वा पूजयेद्देवि कुमारीर्दश नान्यधीः॥१३५॥ सर्वाभीष्टफलं तत्र लभते तत्क्षणादपि। नात्र सिद्ध्याद्यपेक्षास्ति न वा मित्रारिदूषणम् ॥१३६॥ न विचार्यं च देवेशि जपमात्रेण सिद्धिदम्। सर्वदा सर्वकालेषु षट्साहस्रप्रमाणतः ॥१३७॥ बलिं दत्त्वा विधानेन प्रत्यहं पूजयेच्छिवाम्। स्वयम्भूकुसुमैः पुष्पैर्बलिदानं दिवानिशम् ॥१३८॥ पूजयेत्पार्वतीं देवीं भैरवीं त्रिपुरात्मिकाम्। ब्राह्मणान्भोजयेन्नित्यं दश वा द्वादशं तथा॥१३९॥ अनेन विधिना देवि बालां नित्यं प्रपूजयेत्।

इससे मूक वाचाल होता है तथा दुष्ट सेवक राजा हो जाता है। रवि, मंगल तथा गुरुवार को, हे महेश्वरि! एकाग्रचित्त होकर गोरोचन और कुंकुम से स्तोत्र को लिखे तथा उसे सुवर्ण के मध्य रखकर धारण करे तो मनुष्य समस्त कामनाओं के फलों को प्राप्त करता है। स्त्रियों को इसे बाएँ हाथ में तथा पुरुषों को दाहिने हाथ में धारण करना चाहिये। हे महेश्वरि! रविवार, मङ्गलवार या गुरुवार अथवा शनिवार को साधक इसे लिखे तो वह निश्चित रूप से समस्त सिद्धियों को प्राप्त करे। एकान्त में, श्मशान में, आधीरात को, शून्य घर में हे देवेशि! साधक को यत्न से लिखना चाहिये। गुरु के सिंह राशि या मीन राशि में और सूर्य के कर्क राशि में जाने पर यत्नपूर्वक साधक को लिखना चाहिये। वहाँ बैठकर रजस्वला के भग को देखते हुये सदा लिखना चाहिये। सुगन्धित श्वेतपुष्पों, सुगन्धित गन्ध और चन्दनों से तथा कस्तूरी और मृगमद से यत्नपूर्वक लिखना चाहिये। एकाग्रचित्त हो लिख-पढ़ कर उसे धारण करना चाहिये। कुमारियों की पूजा करके नारियों की भी पूजा करे। कुसुम, गन्ध, चन्दन तथा वस्त्रों से पूजा करके सिन्दूर तथा रक्तपुष्पों से भक्तिपूर्वक पूजा करनी चाहिये। अथवा हे देवि! एकाग्रचित्त दश कुमारियों की पूजा करनी चाहिये। इससे साधक तत्क्षण वहाँ पर समस्त अभीष्टों का फल प्राप्त करता है। इसमें न सिद्धि आदि की अपेक्षा होती है और न मित्र या शत्रु के दूषण का विचार करने की आवश्यकता है। हे देवेशि! जप मात्र से यह सिद्धिदायक होता है। सदा सर्वकालों में छः हजार जप करना चाहिये और विधानपूर्वक प्रतिदिन शिवा को बलि देकर पूजा करनी चाहिये। स्वयम्भू फूलों से दिन-रात बलि देना चाहिये। पार्वती देवी, भैरवी तथा त्रिपुरा देवी की पूजा करनी चाहिये। दश या बारह ब्राह्मणों को नित्य भोजन कराना चाहिये। इस विधि से हे देवि! बाला का नित्य पूजन करना चाहिये।

मासमेकं पठेद्यस्तु त्रिसन्ध्यं विधिनाऽमुना ॥ १४० ॥ अपुत्रो लभते पुत्रं निर्द्धनो धनवान्भवेत् । सदा चानेन विधिना तथा मासत्रयेण च ॥ १४१ ॥ कृतकार्यो भवेद्देवि तथा मासचतुष्टये । दीर्घरोगाद्प्रमुच्येत् पञ्चमे कविराड् भवेत् ॥ १४२ ॥ सर्वैश्वर्यं लभेद्देवि मासषट्के तथैव च । सप्तमे खेचरत्वं च अष्टमे च वृहद्द्युतिः ॥ १४३ ॥ नवमे सर्वसिद्धिः स्याद्दशमे लोकपूजितः । एकादशे राजवश्यो द्वादशे तु पुरन्दरः ॥ १४४ ॥ वारमेकं पठेद्यस्तु प्राप्नोति पूजने फलम् । समग्रं श्लोकमेकं वा यः पठेद्यतः शुचिः ॥ १४५ ॥ स पूजाफलमाप्नोति भैरवेण च भाषितम् । आयुष्मत्प्रीतियोगे च ब्राह्मैन्द्रे च विशेषतः ॥ १४६ ॥ पञ्चम्यां च तथा षष्ठ्यां यत्र कुत्रापि तिष्ठति । शङ्का न विद्यते तत्र न च मायादिदूषणम् ॥ १४७ ॥ वारमेकं पठेन्मर्त्यो मुच्यते सर्वसङ्कटात् । किमन्यद्बहुना देवि सर्वाभीष्टफलं भवेत् ॥ १४८ ॥

इस विधि से यदि कोई तीनों सन्ध्याओं में एक मास तक इसका पाठ करे तो यदि पुत्ररहित है तो उसे पुत्र प्राप्त होगा और निर्धन है तो वह धनवान होगा । इस विधि से सदा तीन मास में या चार मास में हे देवि ! साधक सफल हो जाता है, लम्बी बीमारी से छूट जाता है; पाँच मास में कविराज हो जाता है । छः मास में, हे देवि ! वह सभी ऐश्वर्यों को प्राप्त कर लेता है । सातवें मास में वह आकाश में उड़ने लगता है तथा आठवें मास में वह अत्यन्त द्युतिमान् हो जाता है । नवें मास में वह लोकपूजित हो जाता है । ग्यारहवें मास में वह राजा को वश में कर लेता है और बारहवें मास में इन्द्र के समान हो जाता है । एक बार इसका जो पाठ करता है वह पूजा का फल पाता है । जो पवित्र होकर पूरे स्तोत्र या एक श्लोक को शान्त होकर पढ़ता है वह पूजा का फल पाता है, ऐसा भैरव ने कहा है। आयुष्मत् योग, प्रीतियोग, ब्राह्म योग तथा रौद्र योग में विशेष रूप से पञ्चमी, षष्ठी को जहाँ कहीं भी हो वहाँ न शङ्का होती है और न माया आदि का दूषण होता है । एक बार भी मनुष्य इसका पाठ करे तो समस्त सङ्कटों से मुक्त हो जाता है । अधिक कहने से क्या लाभ ? हे देवि ! इससे सभी अभीष्टों की सिद्धि हो जाती है ।

इति श्रीविश्वसारे महाकालविरचितं श्रीमत्त्रिपुरभैरवी
सहस्रनामस्तोत्रं समाप्तम् ।

भैरवीस्तवराज

ब्रह्मादयः श्रुतिशतैरपि सूक्ष्मरूपं जानन्ति नैव जगदादिमनादिमूर्तिम् । तस्माद्वयं कुचनतां नव कुंकुमाभां स्थूलां स्तुमः सकलवाङ्मयमातृभूताम् ॥१॥ सद्यः समुद्यतसहस्रदिवाकराभां विद्याक्षसूत्रवरदाभयचिह्नहस्ताम् । नेत्रोत्पलैस्त्रिभिरलंकृतवक्त्रपद्मां त्वां तारहाररुचिरां त्रिपुरे भजामः ॥२॥ सिन्दूरपूररुचिरं कुचभारनम्रं जन्मान्तरेषु कृतपुण्यफलैकगम्यम् । अन्योन्यभेदकलहाकुलमानसास्ते जानन्ति किं जडधियस्तवरूपमम्ब ॥३॥ स्थूलां वदन्ति मुनयः श्रुतयो गृणन्ति सूक्ष्मां वदन्ति वचसामधिवासमन्ये । त्वां मूलमाहुरपरे जगतां भवानि मन्यामहे वयमपारकृपाम्बुराशिम् ॥४॥ चन्द्रावतंसकलितां शरदिन्दुशुभ्रां पञ्चाशदक्षरमयीं हृदि भावयन्तीम् । त्वां पुस्तकं जपवटीममृताम्बुकुम्भं व्याख्यां च हस्तकमलैर्दधतीं त्रिनेत्राम् ॥५॥ शम्भुस्त्वमद्रितनया कलितार्द्धभागो विष्णुस्त्वम्ब कमलापरिरब्धदेहः । पद्मोद्भवस्त्वमपि वागधिवासभूमिस्तेषां क्रियाश्च जगति त्रिपुरे त्वमेव ॥६॥ आश्रित्य वाग्भवभवांश्चतुरः परादीन भावान्पदेषु विहितान्समुदीरयन्तीम् । कण्ठादिभिश्च करणैः परदेवतां त्वां सच्चिन्मयीं हृदि कदापि न विस्मरामि ॥७॥ आकुञ्च्य

वायुमवजित्य च वैरिषट्कमालोक्य निश्चलधिया निजनासिकाग्रम्। ध्यायन्ति मूर्ध्नि कलितेन्दुकलावतंसं त्वद्रूपमंब कृतिनस्तरुणार्कमित्रम्॥८॥ त्वं प्राप्य मन्मथरिपोर्वपुरर्द्धभागं सृष्टिं करोषि जगतामिति वेदवादः। सत्यं तदद्रितनये जगदेकमातर्नो चेदशेषजगतः स्थितिरेव न स्यात्॥९॥ पूजां विधाय कुसुमैः सुरपादपानां पीठे तवाम्बकनकाचलगह्वरेषु। गायन्ति सिद्धवनिताः सह किन्नरीभिरास्वादितासवरसारुणनेत्रपद्माः॥१०॥ विद्युद्विलासवपुषः श्रियमुद्वहन्तीं यान्तीं स्ववासभवनाच्छिवराजधानीम्। सौषुम्नवर्त्मकमलानि विकासयन्तीं देवीं भजे हृदि परामृतसिक्तगात्राम्॥११॥ आनन्दजन्मभवनं भवनं श्रुतीनां चैतन्यमात्रतनुमम्ब तवाश्रयामि। ब्रह्मेशविष्णुभिरुपासितपादपद्मां सौभाग्यजन्मवसतिं त्रिपुरे यथावत्॥१२॥ शब्दार्थभावि भवनं सृजतीन्दुरूपा या तद्बिभर्ति पुनरर्कतनुः स्वशक्त्या। ब्रह्मात्मिका हरति तत्सकलं युगान्ते तां शारदां मनसि जातु न विस्मरामि॥१३॥ नारायणीति नरकार्णवतारिणीति गौरीति खेदशमनीति सरस्वतीति। ज्ञानप्रदेति नयनत्रयभूषितेति त्वामद्रिराजतनये बहुधा वदन्ति॥१४॥ ये स्तुवन्ति जगन्मातः श्लोकैर्द्वादशभिः क्रमात्। त्वामनुप्राप्य वाक्सिद्धिं प्राप्नुयुस्ते नराः श्रियम्॥१५॥ इति रुद्रयामले भैरवीस्तोत्रं समाप्तम्।

भैरव्यष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम्

श्रीदेव्युवाच।

कैलासवासिन्भगवन्प्राणेश्वर कृपानिधे। भक्तवत्सल भैरव्या नाम्नामष्टोत्तरं शतम्॥१॥ न श्रुतं देवदेवेश वद मां दीनवत्सल।

श्री देवी बोली: हे कैलासवासिन्, भगवान्, प्राणेश्वर, कृपानिधे, भक्तवत्सल! भैरवी के अष्टोत्तरशतनाम को मैंने नहीं सुना है। हे देवदेवेश, दीनवत्सल! उसे आप मुझे बतलायें।

श्रीशिव उवाच।

शृणु प्रिये महागोप्यं नाम्नामष्टोत्तरं शतम्॥२॥ भैरव्याः शुभदं सेव्यं सर्वसम्पत्प्रदायकम्। यस्यानुष्ठानमात्रेण किन्न सिद्ध्यति भूतले॥३॥

शिवजी बोले: हे प्रिये! अत्यन्त गोपनीय भैरवी के इस अष्टोत्तरशतनाम को सुनो। यह शुभ और समस्त सम्पत्तियों का देनेवाला है। इसका सेवन करना चाहिए। इसके अनुष्ठान मात्र से पृथिवी पर क्या सिद्ध नहीं हो सकता?

ॐ भैरवी भैरवाराध्या भूतिदा भूतभावना। कार्या ब्राह्मी कामधेनुः सर्वसम्पत्प्रदायिनी॥४॥ त्रैलोक्यवन्दिता देवी महिषासुरमर्द्दिनी। मोहघ्नी मालतीमाला महापातकनाशिनी॥५॥ क्रोधिनी क्रोधनिलया क्रोधरक्तेक्षणा कुहूः। त्रिपुरा त्रिपुराधारा त्रिनेत्रा भीमभैरवी॥६॥ देवकी देवमाता च देवदुष्टविनाशिनी। दामोदरप्रिया दीर्घा दुर्गा दुर्गतिनाशिनी॥७॥ लम्बोदरी लम्बकर्णा प्रलम्बितपयोधरा। प्रत्यङ्गिरा प्रतिपदा प्रणतक्लेशनाशिनी॥८॥ प्रभावती गुणवती गुणमाता गुहेश्वरी। क्षीराब्धितनया क्षेम्या जगत्त्राणविधायिनी॥९॥ महामारी महामोहा महोक्रोधा महानदी। महापातकसंहर्त्री महामोहप्रदायिनी॥१०॥ विकराला महाकाला कालरूपा कलावती। कपालखट्वाङ्गधरा खड्गखर्परधारिणी॥११॥ कुमारी कुंकुमप्रीता कुंकुमारुणरञ्जिता। कौमोदकी कुमुदिनी कीर्त्या कीर्तिप्रदायिनी॥१२॥ नवीना नीरदा नित्या नन्दिकेश्वरपालिनी। घर्घरा

घर्घरारावा घोरा घोरस्वरूपिणी ॥१३॥ कलिघ्नी कलिधर्मघ्नी कलिकौतुकनाशिनी। किशोरी केशवप्रीता क्लेशसंघनिवारिणी ॥१४॥ महोत्तमा महामत्ता महाविद्या महीमयी। महायज्ञा महावाणी महामन्दरधारिणी ॥१५॥ मोक्षदा मोहदा मोहा भुक्तिमुक्तिप्रदायिनी। अट्टाट्टहासनिरता क्वणन्नूपुरधारिणी ॥१६॥ दीर्घदंष्ट्रा दीर्घमुखी दीर्घघोणा च दीर्घिका। दनुजान्तकरी दुष्टा दुःखदारिद्र्यभञ्जिनी ॥१७॥ दुराचारा च दोषघ्नी दमपत्नी दयापरा। मनोभवा मनुमयी मनुवंशप्रवर्द्धिनी ॥१८॥ श्यामाश्यामतनुः शोभा सौम्या शम्भुविलासिनी। इति ते कथितं दिव्यं नाम्नामष्टोत्तरं शतम् ॥१९॥

भैरव्या देवदेवेश्यास्तव प्रीत्यै सुरेश्वरी। अप्रकाश्यमिदं गोप्यं पठनीयं प्रयत्नतः ॥२०॥ देवीं ध्यात्वा सुरां पीत्वा मकारपञ्चकैः प्रिये। पूजयेत्सततं भक्त्या पठेत्स्तोत्रमिदं शुभम् ॥२१॥ षण्मासाभ्यन्तरे सोपि गणनाथसमो भवेत् ॥ किमत्र बहुनोक्तेन त्वदग्रे प्राणवल्लभे ॥२२॥ सर्वं जानासि सर्वज्ञे पुनर्मां परिपृच्छसि ॥ न देयं परशिष्येभ्यो निन्दकेभ्यो विशेषतः ॥२३॥

हे देवदेवेशि, हे सुरेश्वरि! भैरवी का यह स्तोत्र मैंने तुम्हारी प्रीति के लिए बताया है। इसे किसी को प्रकाशित नहीं करना चाहिये। इसे गुप्त रखना चाहिये। प्रयत्न से इसे पढ़ना चाहिये। हे प्रिये! देवी का ध्यान करके सुरा पीकर पञ्चमकारों के साथ सदा पूजा करनी चाहिये तथा भक्ति से इस शुभ स्तोत्र का पाठ करना चाहिये। जो ऐसा करता है वह छः मास के अन्दर गणनाथ के समान हो जाता है। हे प्राणवल्लभे! यहाँ तुम्हारे समक्ष अधिक कहने से क्या लाभ? हे सर्वज्ञे! तुम तो सब जानती हो तो भी मुझसे पूछती हो। दूसरे के शिष्यों को और विशेष रूप से निन्दकों को इसे नहीं देना चाहिये।

इति श्रीभैरव्यष्टोत्तरशतनामस्तोत्रं समाप्तम् ॥

इति श्रीमन्त्रमहार्णवे द्वितीय खण्डे त्रिपुरभैरवी तन्त्रेऽष्टमस्तरङ्गः ॥८॥

नवम तरङ्ग

छिन्नमस्ता तन्त्र

तत्रादौ सप्तदशाक्षरमन्त्र प्रयोगः।

सर्व प्रथम सप्तदशाक्षर मन्त्र प्रयोग बताया जा रहा है:

मन्त्रो यथा मन्त्रमहोदधौ[1]:

मन्त्रमहोदधि में मन्त्र इस प्रकार है:

ॐ श्रीं ह्रीं ह्रीं क्लीं[2] ऐं वज्रवैरोचनीये ह्रीं ह्रीं फट् स्वाहा।

यह सप्तदशाक्षर मन्त्र है।

अस्य विधानम्:

विनियोग: अस्य शिरच्छिन्नामन्त्रस्य भैरवऋषिः संम्राट् छन्दः छिन्नमस्ता देवता ह्रींकारद्वयं बीजं स्वाहाशक्तिरभीष्टसिद्धये जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास: ॐ भैरवऋषये नमः शिरसि १। सम्राट्छन्दसे नमः मुखे २। छिन्नमस्तादेवतायै नमः हृदये ३। ह्रींह्रींबीजाय नमो गुह्ये ४। स्वाहाशक्तये नमः पादयोः ५। विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ६। इति ऋष्यादिन्यासः।

करन्यास: ॐ आँ खड्गाय स्वाहा अंगुष्ठयोः १। ॐ ईं सुखड्गाय स्वाहा तर्जन्यो: २। ॐ ऊं वज्राय स्वाहा मध्यमयोः ३। ऐं पाशाय स्वाहा अनामिकयोः ४। ॐ औं अंकुशाय स्वाहा कनिष्ठयोः ५। ॐ अः सुरक्षरक्ष ह्रीं ह्रीं स्वाहा करतलकरपृष्ठयोः ॥६॥ इति करन्यासः।

हृदयादिषडङ्गन्यास: ॐ आँ खड्गाय हृदयाय नमः स्वाहा १। ॐ ईं सुखड्गाय शिरसे स्वाहा स्वाहा २। ॐ ऊँ बज्राय शिखायै वषट् स्वाहा ३। ॐ ऐं पाशाय कवचाय हुँ स्वाहा ४।ॐ औं अंकुशाय नेत्रत्रयाय वौषट् स्वाहा ५। ॐ अः सुरक्षरक्ष ह्रीं ह्रीं अस्त्राय फट् स्वाहा। इति[3] हृदयादिषड्न्यासः ६।

ॐ ह्रीं ह्रीं क्लीं ऐं वज्रवैरोचनीये ह्रीं ह्रीं फट् स्वाहा मस्तकादिपादपर्यन्तम् १। ॐ श्रीं ह्रीं ह्रीं क्लीं ऐं बज्रवैरोचनीये ह्रीं ह्रीं फट् स्वाहा पादादिमस्तकान्तम् २। इससे तीन बार न्यास करें।

अथ ध्यानम्:

ॐ भास्वन्मण्डलमध्यगां निजशिरश्छिन्नं विकीर्णालकं स्फारास्यं प्रपिबद्गलात्स्वरुधिरं वामे

---

१ तंत्रान्तरेपिः लक्ष्मीः प्रथमबीजेऽस्ति लज्जाबीजे मनोभवः। तृतीयेऽस्मिन् सदा देवी महापातकनाशिनी॥१॥ चतुर्थे तु गुणातीता मुक्तिविद्याप्रदायिका॥ नकारे वरुणः साक्षाज्जकारे तु सुराधिपः॥२॥ रेफे हुताशनो देवा वकारे वसुधाधिपः। ऐकारे त्रिपुरा देवी रेफे त्रिपुरसुन्दरी॥३॥ त्रैलोक्यविजया देवी सदैवोकारसंस्थिता। चकारे चन्द्रमा देवो नकारे हि विनायकः॥४॥ ईकारे कमला साक्षाद्यकारे च सरस्वती। मायायुग्मे सदा देवी प्रकृत्या सह संगता॥५॥ वैखरी चैव फट्कारे स्वाकारे कुसुमायुधः हकारे च रतिस्तिष्ठेदेवं मन्त्रसमुच्चयः॥६॥

२ मंत्रमहोदधौ क्लींबीजाभावः।

३ अस्या: संन्यसनात्सर्वे वज्रदेहा भवंति हि। सर्वैश्वर्ययुतास्ते हि जीवन्मुक्ता दशाब्दतः॥१॥

छिन्नमस्ता ध्यान

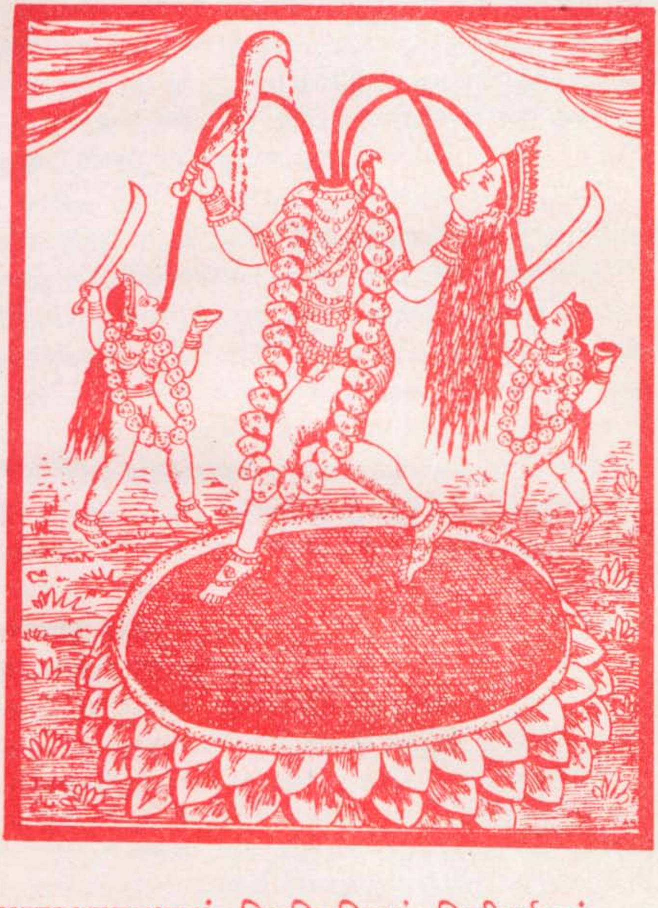

भास्वन्मण्डलमध्यगां निजशिरश्छिन्नं विकीर्णालकं
स्फारास्यं प्रपिबद्गलात्स्वरुधिरं वामे करे बिभ्रतीम्
याभासक्तरतिस्मरोपरिगतां सख्यौ निजे डाकिनीवर्णिन्यौ
परिदृश्य मोदकलितां श्रीछिन्नमस्तां भजे।।1।।

पृ० ४६४

करे बिभ्रतीम्। यामासक्तरतिस्मरोपरिगतां सख्यौ निजे डाकिनीवर्णिन्यौ परिदृश्य मोदकलितां श्रीछिन्नमस्तां भजे ॥१॥

तन्त्रान्तरेपि :

प्रत्यालीढपदां सदैव दधतीं छिन्नं शिरः कर्तृकां दिग्वस्त्रां स्वकबंधशोणितसुधाधारां पिबन्तीं मुदा। नागाबद्धशिरोमणिं त्रियनयां हृद्युत्पलालं कृतांरत्यासक्तमनोभवोपरि दृढां ध्यायेज्जवासन्निभाम् ॥१॥ दक्षे चातिसिता विमुक्तचिकुरा कर्त्री तथा खर्परं हस्ताभ्यां दधती रजोगुणभवा नाम्नापि सा वर्णिनी। देव्याश्छिन्नकबन्धतः पतदसृग्धारां पिबन्ती मुदा नागावद्धशिरोमणिर्मनुविदा ध्येया सदा सा सुरैः ॥२॥ प्रत्यालीढपदा कबन्धविगलद्रक्तं पिबन्ती मुदा सैषा या प्रलये समस्तभुवनं भोक्तुं क्षमा तामसी। शक्तिः सापि परात्परा भगवती नाम्ना परा डाकिनी ध्येया ध्यानपरैः सदा सविनयं भक्तेष्टभूतिप्रदा ॥३॥

अन्यत्रापि :

स्वनाभौ नीरजं ध्यायेदर्द्धं विकसितं सितम्। तत्पद्मकोशमध्ये तु मण्डलं चण्डरोचिषः ॥१॥ जपाकुसुमसङ्काशं रक्तबन्धूकसन्निभम्। रजःसत्त्वतमोरेखायोनिमण्डलमण्डितम् ॥२॥ मध्ये तु तां महादेवीं सूर्यकोटिसमप्रभाम्। छिन्नमस्तां करे वामे धारयन्तीं स्वमस्तकम् ॥३॥ प्रसारितमुखीं देवीं लेलिहानाग्रजिह्विकाम्। पिबन्तीं रौधिरीं-धारां निजकण्ठविनिर्गताम् ॥४॥ विकीर्णकेशपाशाञ्च नानापुष्पसमन्विताम्। दक्षिणे च करे कर्त्रीं मुण्डमालाविभूषिताम् ॥५॥ दिगम्बरां महाघोरां प्रत्यालीढपदे स्थिताम्। अस्थिमालाधरां देवीं नागयज्ञोपवीतिनीम् ॥६॥ रतिकामोपरिष्ठां च सदा ध्यायन्ति मन्त्रिणः। सदा षोडशवर्षीयां पीनोन्नतपयोधराम् ॥७॥ विपरीतरतासक्तौ ध्यायेद्रति मनोभवौ। डाकिनीवर्णिनीयुक्तां वामदक्षिणयोगतः ॥८॥ देवीगलोच्छलद्रक्तधारापानं प्रकुर्वतीम्। वर्णिनीं लोहितां सौम्यां मुक्तकेशीं दिगम्बराम् ॥९॥ कपालकर्तृकाहस्तां वामदक्षिणयोगतः। नागयज्ञोपवीताढ्यां ज्वलत्तेजोमयीमिव ॥१०॥ प्रत्यालीढपदां दिव्यां नानालङ्कारभूषिताम्। सदा द्वादशवर्षीयामस्थिमालाविभूषिताम् ॥११॥ डाकिनीं वामपार्श्वे तु कल्पसूर्यानलोपमाम्। विद्युज्जटां त्रिनयनां दन्तपंक्तिबलाकिनीम् ॥१२॥ दंष्ट्राकरालवदनां पीनोन्नतपयोधराम्। महादेवीं महाघोरां मुक्तकेशीं दिगम्बराम् ॥१३॥ लेलिहानमहाजिह्वां मुण्डमालाविभूषिताम्। कपालकर्तृकाहस्तां वामदक्षिणयोगतः ॥१४॥ देवीं गलोच्छलद्रक्तधारापानं प्रकुर्वतीम्। करस्थितकपालेन भीषणेनातिभीषणाम् ॥ आभ्यां निषेवमाणां तां ध्यायेद्देवीं विचक्षणः ॥१५॥

इति ध्यायेत्[1]। ततः पीठादौ रचिते सर्वतोभद्रमण्डले आधारशक्त्यादिपरतत्त्वान्तपीठदेवताः संस्थाप्य "ॐ आँ आधार शक्त्यादिपरतत्त्वान्तपीठदेवताभ्यो नमः" इति सम्पूज्याथ वा पद्धतिमार्गेण स्वस्वनामभिः पूजयित्वा नव पीठशक्तीः पूजयेत्।

इस प्रकार ध्यान[1] करे। इसके बाद पीठादि में रचित सर्वतोभद्रमण्डल में आधारशक्ति से लेकर परतत्वान्त पीठदेवताओं की स्थापना करके "ॐ आं आधार शक्त्यादिपरतत्त्वान्त पीठदेवताभ्यों नमः" इससे पूजा करके पद्धति मार्ग से अपने-अपने नामों से पूजा करके इस प्रकार नव पीठशक्तियों की पूजा करे।

---

१ ध्यानस्यावश्यकत्वमाहः प्रचण्डचण्डिकामेवमध्यात्वा यस्तु पूजयेत्। सद्यस्तस्य शिरश्छित्त्वा देवी पिबति शोणितम् ॥१॥

पूर्वाद्यष्टसु दिक्षु ॐ जयायै नमः १ । ॐ विजयायै नमः २ । ॐ अजितायै नमः ३ । ॐ अपराजितायै नमः ४ । ॐ नित्यायै नमः ५ । ॐ विलासिन्यै नमः ६ । ॐ दोग्ध्र्यै नमः ७ । ॐ अघोरायै नमः ८ । मध्ये ॐ मंगलायै नमः ९ । इससे पीठ शक्तियों की पूजा करें।

ततः स्वर्णादिनिर्मितं यन्त्रं मूर्तिं वा ताम्रपात्रे निधाय घृतेनाभ्यज्य तदुपरि दुग्धधारां जलधारां च दत्त्वा स्वच्छवस्त्रेण सम्प्रोक्ष्य ॐ सर्वबुद्धिप्रदे वर्णनीये सर्वसिद्धिप्रदे डाकिनीये ॐ वज्रवैरोचनीये एह्येहि नमः । इति मंत्रेण पुष्पाद्यासनं दत्त्वा पीठमध्ये संस्थाप्य प्रतिष्ठां च कृत्वा पुनर्ध्यात्वा ॐ सर्वसिद्धिवर्णनीये सर्वसिद्धिडाकिनीये वज्रवैरोचनीये इहागच्छागच्छ पुनः मन्त्रमुच्चार्य इह तिष्ठ इह संन्निधेहि इह सन्निरुध्यस्व इत्यनेनावाह्य हूंकारबीजेन मूर्तिं प्रकल्प्य पाद्यादिपुष्पांतैरुपचारैः सम्पूज्य देव्याज्ञां गृहीत्वा प्रतिलोमक्रमेण[1] आवरणपूजां कुर्यात् ।

इसके बाद स्वर्ण आदि से निर्मित यन्त्र या मूर्ति को ताम्रपात्र में रख कर घी से उसका अभ्यङ्ग करके उसके ऊपर दुग्धधारा तथा जलधारा देकर स्वच्छ वस्त्र से पोंछ कर "ॐ सर्वबुद्धिप्रदे वर्णनीये सर्वसिद्धिप्रदे डाकिनीये ॐ वज्रवैरोचनीये एह्येहि नमः" इस मन्त्र से पुष्पाद्यासन देकर पीठ के मध्य उसे स्थापित करके उसमें प्राणप्रतिष्ठा करके पुनः ध्यान करके "ॐ सर्वसिद्धिवर्णनीये वज्रवैरोचनीये इहागच्छागच्छ" मन्त्र का पुनः उच्चारण करके "इह तिष्ठ इह सन्निधेहि इह सन्निरुध्यस्व" इससे आवाहन करके हूंकार बीज से मूर्ति की कल्पना करके पाद्य आदि दान से लेकर पुष्पाञ्जलिदान पर्यन्त उपचारों से पूजा करके देवी से आज्ञा लेकर प्रतिलोम क्रम से इस प्रकार आवरण पूजा करे।

तथा च पुष्पाञ्जलिमादाय मूलमुच्चार्य ॐ संविन्मये परे देवि परामृतरसप्रिये । अनुज्ञां छिन्नके देहि परिवारार्चनाय मे ।।१।। इति पठित्वा पुष्पाञ्जलिं दद्यात् । इत्याज्ञां गृहीत्वा आवरणपूजामारभेत ।

पुष्पाञ्जलि लेकर मूलमन्त्र का उच्चारण करके ॐ संविन्मये परे देवि परामृतरसप्रिये । अनुज्ञां छिन्नके देहि परिवारार्चनाय मे ।।१।। यह पढ़ कर पुष्पाञ्जलि देवे। इससे आज्ञा लेकर इस प्रकार आवरण पूजा आरम्भ करे ।

भूपराद्बहिः पूर्वादिक्रमेण ॐ वं वज्राय नमः[1] १ । ॐ शं शक्तये नमः[2] २ । ॐ दं दण्डाय नमः[3] ३ । ॐ खं खड्गाय नमः[4] ४ । ॐ पां पाशाय नमः[5] ५ । ॐ अं अंकुशाय नमः[6] ।।६।। ॐ गं गदायै नमः[7] ७ । ॐ त्रिं त्रिशूलाय नमः[8] ८ । इन्द्रेशानयोर्मध्ये ॐ पं पद्माय नमः[9] ९ । वरुणनिर्ऋतिमध्ये ॐ चं चक्राय नमः[10] ।।१०।। (छिन्नमस्ता पूजनयन्त्र देखिये चित्र १८)

इससे अस्त्रों की पूजा करे । इसके बाद पुष्पाञ्जलि लेकर ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले । भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ।।१।। यह पढ़कर पुष्पाञ्जलि देकर विशेष अर्घ से जलविन्दु डालकर "पूजितास्तर्पितास्सन्तु" यह कहे । इति प्रथमावरण ।।१।। फिर उसके समीप :

ॐ लं इन्द्राय नमः[11] १ । ॐ रं अग्नये नमः[12] २ । ॐ मं यमाये नमः[13] ३ । ॐ क्षं निर्ऋतये नमः[14] ४ । ॐ वं वरुणाय नमः[15] ५ । ॐ यं वायवे नमः[16] ६ । ॐ कुं कुबेराय नमः[17] ७ । ॐ हं ईशानाय नमः[18] ८ । ॐ आँ ब्रह्मणे नमः[19] ९ । ॐ ह्रीं अनन्ताय नमः[20] १० ।

इससे दश दिक्पालों की पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवे। इति द्वितीयावरण ।।२।।

ततो भूपुराभ्यन्तरे चतुर्दिक्षु पूर्वादिक्रमेण ।

इसके बाद भूपुर के अन्दर चारों दिशाओं में पूर्वादिक्रम से:

ॐ करालाय नमः [21]। करालश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः । इति सर्वत्र १ । ॐ विकरालाय नमः [22]। विकरालश्रीपा० २ । ॐ अतिकरालाय नमः[23] अतिकरालश्रीपा० ३ । ॐ महाकालाय नमः[24]। महाकालश्रीपा० ४ ।

---

१ वाह्यवरणमारभ्य पूजयेत्प्रतिलोमतः ।। इति मन्त्रमहोदधौ ।।

इससे द्वारपालों की पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवे। इति तृतीयावरण।३।

ततोष्टदलेषु पूज्यपूजकयोरन्तरालं प्राची तदनुसारेण अन्याः दिशः प्रकल्प्य प्राचीक्रमेण।

इसके बाद अष्ट दलों में पूज्य और पूजक के अन्तराल को पूर्व दिशा मानकर तदनुसार अन्य दिशाओं की कल्पना करके प्राची क्रम से :

ॐ एकलिंगायै नमः[२५]। एकलिङ्गाश्रीपा० १। ॐ योगिन्यै नमः[२६]। योगिनीश्रीपा० २। ॐ डाकिन्यै नमः[२७]। डाकिनीश्रीपा० ३। ॐ भैरव्यै नमः [२८]। भैरवीश्रीपा० ४। ॐ महाभैरव्यै नमः[२९]। महाभैरवीश्रीपा० ५। ॐ इन्द्राक्ष्यै नमः[३०]। इन्द्राक्षीश्रीपा० ६। ॐ असितांग्यै नमः[३१]। असितांगीश्रीपा० ७। ॐ संहारिण्यै नमः[३२]। संहारिणीश्रीपा० ८।

इससे आठ शक्तियों की पूजा करे पुष्पाञ्जलि देवे। इति चतुर्थावरण।।४।।

ततः षटकोणकेसरेषु आग्नेयादिचतुर्दिक्षु मध्ये दिक्षु च।

इसके बाद षट्कोष केसरों में आग्नेयी आदि चारों दिशाओं तथा मध्य दिशाओं में :

ॐ आँ खड्गाय हृदयाय नमः[३३] स्वाहा हृदयश्रीपा० १। ॐ ईं सुखड्गाय शिरसे स्वाहा[३४] शिरःश्रीपा० २। ॐ ऊँ वज्राय शिखायै वषट् स्वाहा[३५] शिखाश्रीपा० ३। ॐ ऐं पाशाय कवचाय हुँ स्वाहा [३६] कवचश्रीपा० ४। ॐ औं अंकुशाय नेत्रत्रयाय वौषट् स्वाहा[३७] नेत्रत्रयश्रीपा० ५। ॐ अः वसु रक्षरक्ष ह्रीं ह्रीं अस्त्राय फट् स्वाहा [३८] अस्त्र श्रीपा० ६।

इससे हृदयादि षडङ्गों की पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवे। इति पञ्चमावरण।५।

इसके बाद त्रिकोण में:

ॐ ऐं छिन्नमस्तायै नमः [३९]। छिन्नमस्ताश्रीपा० १। देवीदक्षिणतः ॐ ऐं डाकिन्यै नमः [४०] डाकिनीश्रीपा० २। देवीवामे ॐ ऐं वर्णिन्यै नमः [४१]। वर्णिनीश्रीपा० ३।

इससे पूजा करे।

इत्यावरणपूजां कृत्वा धूपादिनमस्कारान्तं संपूज्य।

इस प्रकार आवरण पूजा करके धूपदान से लेकर नमस्कार पर्यन्त पूजा करके :

ॐ सर्वसिद्धिप्रदे वर्णिनीये सर्वसिद्धिप्रदे डाकिनीये वज्रवैरोचनीये एह्येहि इमं बलिं गृह्ण मम सिद्धिं देहि ह्रीं फट् स्वाहा।

इति मन्त्रेण मत्स्यमांसादिकैस्तु[१] बलिं दत्त्वा अर्द्धरात्रे बलिं निवेद्य जपं कुर्यात्।

इस मन्त्र से मछली मांस आदि से बलि देकर तथा आधीरात को बलि निवेदित कर जप करे।

अस्य पुरश्चरणं चतुर्लक्षजपः पलाशबिल्वपुष्पैः फलैर्वा दशांशतो होमः। तत्तद्दशांशेन तर्पणमार्जनब्राह्मणभोजनानि कुर्यात्।

इसका पुरश्चरण चार लाख जप है। पलाश के अथवा बेल के फूलों अथवा फलों से जप का दशांश होम करना चाहिये। होम के दशांश से तर्पण, तर्पण के दशांश से मार्जन और मार्जन के दशांश से ब्राह्मण भोजन करना चाहिये।

एवं कृते मन्त्रः सिद्धो भवति एतस्मिन्सिद्धे मन्त्रे मन्त्री प्रयोगान् साधयेत्।

ऐसा करने पर मन्त्र सिद्ध होता है। मन्त्र के सिद्ध होने पर साधक प्रयोगों को सिद्ध करे।

ध्यात्वैवं प्रजपेल्लक्षचतुष्कं तद्दशांशतः। पलाशैर्बिल्वजैर्वापि जुहुयात्कुसुमैः फलैः ।।१।। एवं पूजादिभिः सिद्धे मन्त्रे मन्त्री मनोरथान्। प्राप्नुयान्निखिलान्सद्योदुर्लभांस्तत्प्रसादतः ।।२।। श्रीपुष्पैर्लभते लक्ष्मीं तत्फलैः स्वसमीहितम्। वाक्सिद्धिं मालतीपुष्पैश्चम्पकैर्हवनात्सुखम्।।३।। घृताक्तं छागमांसं यो जुहुयात् प्रत्यहं शतम्। मासमेकं तु वशगास्तस्य स्युः सर्वपार्थिवाः ।।४।।

---

१ रात्रौ बलिः प्रदातव्यो मत्स्यमांससुरादिभिः। अथ वा मधुपानाद्यैर्मधुरैर्विभवक्रमैः।

करवीरस्य कुसुमैः श्वेतैर्लक्षं जुहोति यः। रोगजालं पराभूय सुखी जीवेच्छतं समाः ॥५॥ रक्तैस्तत्संख्यया हुत्वा वश येन्मंत्रिणो नृपान्। फलैर्हुत्वाप्नुयाल्लक्ष्मीमुदुंबरपलांशजैः ॥६॥ गोमायु मांसैस्तामेव कवितां पायसांधसा। बन्धूककुसुमैर्भाग्यं कर्णिकारैः समीहितम् ॥७॥ तिलतण्डुलहोमेन वशयेन्निखिलाञ्जनान्। नारीरजोभिराकृष्टिर्मृगमांसैः समीहितम् ॥८॥ स्तम्भनं माहिषैर्मांसैः पङ्कजैः सघृतैरपि। चिताग्नौ परभृत्पक्षैर्जुहुयादरिमृत्यवे[1] ॥९॥ उन्मत्तकाष्ठदीप्ताग्नौ[2] तत्फलं वायसच्छदैः। द्यूते वने नृपद्वारे समरे वैरिसंकटे ॥१०॥ विजयं लभते मन्त्री ध्यायन्देवीं जपन्मनुम्। भुक्तौ मुक्तौ सितां ध्यायेदुच्चारे नीलरोचिषम ॥११॥ रक्तां वश्ये मृतौ धूम्रां स्तम्भने कनकप्रभाम् ॥ निशि दद्याद्बलिं तस्यै सिद्धये मदिरादिना ॥१२॥ गोपनीयः प्रयोगोथ प्रोच्यते सर्वसिद्धिदः ॥ भूताहे कृष्णपक्षस्य मध्य रात्रे तमोघने ॥१३॥ स्नात्वा रक्ताम्बरधरो रक्तमाल्यानुलेपनः। आनीय पूजयेन्नारीं छिन्नमस्तास्वरूपिर्णाम् ॥१४॥ सुन्दरीं यौवनाक्रान्ता नरपञ्चकगामिनीम्। सस्मितां मुक्तकबरीं भूषादानप्रतोषिताम् ॥१५॥ विवस्त्रां पूजयित्वैनामयुतं प्रजपेन्मनुम्। बलिंदत्त्वा निशां नीत्वा सम्प्रेष्य धनतोषिताम् ॥१६॥ भोजयेद्विविधैरन्नैर्ब्राह्मणान्देवताधिया। अनेन विधिना लक्ष्मीं पुत्रान्पौत्रान्यशः सुखम् ॥१७॥ नारीमायुश्चिरं धर्ममिष्टमन्यदवाप्नुयात्। तस्यां रात्रौ व्रतं कार्यं विद्याकामेन मन्त्रिणा ॥१८॥ मनोरथेषु चान्येषु गच्छेत्तां प्रजपन्मनुम्। किं बहूक्तेन विद्याया अस्या विज्ञानमात्रतः ॥१९॥ शास्त्रज्ञानं पापनाशः सर्वसौख्यं भवेद् ध्रुवम्। उषस्युत्थाय शय्यायामुपविष्टो जपेच्छतम् ॥२०॥ षण्मासाभ्यन्तरे मन्त्री कवित्वेन जयेत् कविम्। शिवेन कीलिता विद्या तदुत्कीलनमुच्यते ॥२१॥

इस प्रकार ध्यान करके चार लाख जप करे। उसका दशांश पलाश या बेल के फूलों या फलों से होम करे। इस प्रकार पूजा आदि से मन्त्र के सिद्ध होने पर साधक मनोरथों को सिद्ध करे। साधक उसके प्रसाद से शीघ्र समस्त दुर्लभ पदार्थो को प्राप्त करता है। बेल के फूलों से मनुष्य लक्ष्मी प्राप्त करता है तथा उसके फलों से अपना अभीष्ट पाता है। मालती के फूलों से होम करने से वाणी की सिद्धि तथा चम्पा के फूलों से होम करने से सुख पाता है। जो मनुष्य प्रतिदिन घी से सिक्त बकरे के मांस की सौ आहुति से एक मास तक हवन करता है, सभी राजे उसके वश में हो जाते हैं। जो सफेद कनेर के फूलों से एक लाख होम करता है वह रोगों के जाल को पराजित करके सौ वर्ष तक सुखपूर्वक जीता है। उतनी ही संख्या में लाल कनेर के फूलों से होम करके साधक राजा तथा मन्त्रियों को वश में कर लेता है। गूलर और पलाश के फलों से होम करके साधक लक्ष्मी को प्राप्त करता है। सियार के मांस से उतनी ही संख्या में या खीर से होम करके साधक कविता करने की शक्ति प्राप्त करता है। बन्धूक के फूलों से होम करके उत्तम भाग्य पाता है। कनेर के फूलों से होम करके अभीष्ट लाभ करता है। तिल तथा चावल से होम करके साधक सभी लोगों को वश में कर लेता है। नारी के रज से होम करके साधक आकर्षणशक्ति प्राप्त करता है। हिरन के मांस से होम करके साधक अभीष्ट सिद्ध करता है। भैसे के मांस से होम करने से तथा घी से सिक्त कमलों से होम करना चाहिए धतूरे की लकड़ी से प्रद्धीप्त अग्नि में कौए के पंखों से होम करने से स्तम्भन शक्ति प्राप्त होती है। शत्रु की मृत्यु के लिए चिता की अग्नि में कोयल के पङ्खों से होम करना चाहिए। धतूरे की लकड़ी के प्रदीप्त अग्नि में कौए के पंखों से होम करने से भी शत्रु की मृत्यु होती है। जुआ, वन, राजद्वार संग्राम तथा शत्रुसंकट में देवी का ध्यान करता

---

१ परभृत्कोकिलः।

२ उन्मत्तो धतूरः तत्काष्ठज्वलितेऽग्नौ काकपक्षैर्होमात्फलमरिमृत्युरेव स्यात्।

हुआ तथा मन्त्र का जप करता हुआ मनुष्य विजय प्राप्त करता है। भुक्ति तथा मुक्ति के लिए श्वेतवर्ण देवी का ध्यान करना चाहिये। उच्चाटन में नील वर्ण की देवी का ध्यान करना चाहिए। वंशीकरण में रक्तवर्ण की देवी का ध्यान करे। मारण में धूम्रवर्ण वाली देवी का ध्यान करे। स्तम्भन में सुवर्णवर्ण की देवी का ध्यान करे। सिद्धि प्राप्त्यर्थ उस देवी के लिए रात में मदिरा आदि से बलि देवे। यह समस्त सिद्धियों को देने वाला प्रयोग कहा जाता है जिसे गुप्त रखना चाहिये। कृष्णपक्ष की चतुर्दशी के दिन मध्य रात्रि में स्नान करके लाल वस्त्र तथा लाल माला और अनुलेपन धारण कर छिन्नमस्तास्वरूपिणी सुन्दरी नरपञ्चकगामिनी युवती नारी को लाये। उस मुस्कराती हुई बाल खोले, आभूषण आदि से प्रसन्न की हुई नग्न स्त्री की पूजा करके दश हजार मन्त्र का जप करे। बलि देकर रात बिता कर उसे धन आदि से सन्तुष्ट करके भेजकर नाना प्रकार के खाद्यपदार्थो से देवबुद्धि से ब्राह्मणों को खिलाये। इस विधि से लक्ष्मी, पुत्र, पौत्र, यश, सुख, नारी, आयु धर्म तथा अन्य अभीष्ट साधक प्राप्त कर सकता है। विद्या चाहने वाले साधक को उस रात को व्रत करना चाहिये। अन्य मनोरथों में मन्त्र का जप करते हुए उस नारी का गमन करना चाहिये। अधिक कहने से क्या लाभ? इस विद्या के विज्ञानमात्र से शास्त्रज्ञान, पापनाश तथा समस्त सुख निश्चित रूप से मिलते है। प्रातः उठकर विस्तर पर बैठे-बैठे सौ बार जप करना चाहिये। छः माह से अन्दर साधक अपनी कवित्वशक्ति से कवियों को जीत लेता है। शिव के द्वारा विद्या कीलित है। इसलिए इसका उत्कीलन बतला रहे हैं:

मायां तारपुटां मन्त्री जप्यादष्टोत्तरं शतम्। मन्त्रस्यादौ तथैवान्ते भवेत्सिसिप्रदा तु सा ।।२२।। एष नूनं विधिर्गोप्यः सिद्धिकामेन मन्त्रिणा। उदिता छिन्नमस्तेयं कलौ शीघ्रमभीष्टदा।।२३।।

माया (ह्रीं) को तार से सम्पुटित कर (ॐ ह्रीं ॐ) मन्त्र के प्रारम्भ तथा अन्त में एक सौ आठ बार जप करना चाहिये। इस प्रकार यह सिद्धिप्रद होता है। सिद्धि चाहने वाले साधकों को चाहिये कि वे इस विधि को निश्चय रूप से गुप्त रक्खें। कलियुग में छिन्नमस्ता देवी शीघ्र फल देने के लिए प्रकट हुई हैं।

इति सप्तदशाक्षरी छिन्नमस्तामन्त्रप्रयोगः।

छिन्नमस्ता कवच

देव्युवाच।

कथिताश्छिन्नमस्ताया याया विद्याः सुगोपिताः। त्वया नाथेन जीवेश श्रुताश्चाधिगता मया।।१।। इदानीं श्रोतुमिच्छामि कवचं पूर्वसूचितम्। त्रैलोक्यविजयं नाम कृपया कथ्यतां प्रभो।।२।।

देवी उवाचः हे नाथ! छिन्नमस्ता की जो-जो विद्या गुप्त थी, उसे आपने मुझे बता दिया। उसे मैंने सुना तथा धारण भी कर लिया। इस समय में छिन्नमस्ता के कवच को सुनना चाहती हूं, जिसे आपने मुझे पहले सूचित किया था। हे प्रभो! उस त्रैलोक्यविजय कवच को आप कृपया हमें बतावें।

भैरव उवाच।

शृणु वक्ष्यामि देवेशि सर्वदेवनमस्कृते। त्रैलोक्यविजयं नाम कवचं सर्वमोहनम्।।३।। सर्वविद्यामयं साक्षात्सुरासुरजयप्रदम्। धारणात्पठनादीशस्त्रैलोक्यविजयी विभुः।।४।। ब्रह्मा नारायणो रुद्रो धाराणात्पठनाद्यतः। कर्त्ता पाता च संहर्ता भुव नानां सुरेश्वरि।।५।। न देयं परशिष्येभ्यो भक्तेभ्योपि विशेषतः। देयं शिष्याय भक्ताय प्राणेभ्योप्यधिकाय च ।।६।।

भैरव बोले: हे देवेशि, हे सर्वदेव नमस्कृते! सबको मोहित करने वाला त्रैलोक्यविजय नामक कवच मैं कहूंगा, उसे तुम सुनो, जो कि सर्वविद्यामय तथा साक्षात्सुरासुरों को जयप्रद हैं। इसके धारण तथा पाठ से ब्रह्मा, नारायण तथा रुद्र क्रमशः ईश, त्रैलोक्यविजयी तथा विभु हुए। हे सुरेश्वरि! यतः ब्रह्मा,

नारायण तथा रुद्र इसके धारण तथा पाठ से सभी भुवनों के कर्त्ता, पालक तथा संहर्ता हुए, अतः इसे दूसरों के शिष्यों को नहीं देना चाहिये। विशेष रूप से भक्तों को तथा प्राणों से भी अधिक प्रिय भक्त शिष्य को इसे देना चाहिये।

विनियोग : देव्याश्चच्छिन्नमस्तायाः कवचस्य च भैरवः। ऋषिर्विराट् छन्दस्तु देवताच्छिन्नमस्तका ॥७॥ त्रैलोक्यविजये मुक्तौ विनियोगः प्रकीर्तितः।

हुंकारो मे शिरः पातु छिन्नमस्ता बलप्रदा ॥८॥ ह्रां हूं ऐं त्र्यक्षरी पातु भालं वक्त्रं दिगम्बरा। श्रीं ह्रीं हूं ऐं दृशौ पातु मुण्डं कर्तृधरापि सा ॥९॥ सा विद्या प्रणवाद्यन्ता श्रुतियुग्मं सदाऽवतु वज्रवैरोचनीये हुं फट स्वाहा च ध्रुवादिका ॥१०॥ घ्राणं पातु छिन्नमस्तामुण्डकर्तृविधारिणी। श्रीमायाकूर्चवाग्बीजैर्वज्रवैरोचनीयहूं ॥११॥ हूं फट्स्वाहा महाविद्या षोडशी ब्रह्मरूपिणी। स्वपार्श्वेवर्णिनी चासृग्धारां पाययती मुदा ॥१२॥ वदनं सर्वदा पातु छिन्नमस्ता स्वशक्तिका। मुण्डकर्तृधरा रक्ता साधकाभीष्टदायिनी ॥१३॥ वर्णिनी डाकिनीयुक्ता सापि मामभितोऽवतु। रामाद्या पातु जिह्वा च लज्जाद्या पातु कण्ठकम् ॥१४॥ कूर्चाद्या हृदयं पातु वागाद्या स्तनयुग्मकम्। रमया पुटिता विद्या पार्श्वौ पातु सुरेश्वरी ॥१५॥ मायया पुटिता पातु नाभिदेशे दिगम्बरा। कूर्चेण पुटिता देवी पृष्ठदेशे सदावतु ॥१६॥ वाग्बीजपुटिता चैषा मध्यं पातु सशक्तिका। ईश्वरी कूर्चवाग्बीजैर्वज्रवैरोचनीयहूं ॥१७॥ हूंफट्स्वाहा महाविद्या कोटिसूर्यसमप्रभा। छिन्नमस्ता सदा पायादुरुयुग्मं सशक्तिका ॥१८॥ ह्रीं हूं वर्णिनी जानुं श्रीं ह्रीं च डाकिनी पदम्। सर्वविद्यास्थिता नित्या सर्वाङ्गं मे सदावतु ॥१९॥ प्राच्यां पायादेकलिङ्गा योगिनी पावकेवतु। डाकिनी दक्षिणे पातु श्रीमहाभैरवी च माम् ॥२०॥ नैऋत्यां सततं पातु भैरवी पश्चिमेवतु। इन्द्राक्षी पातु वायव्येऽसितांगी पातु चोत्तरे ॥२१॥ संहारिणी सदा पातु शिवकोणे सकर्तृका। इत्यष्ट शक्तयः पान्तु दिग्विदिक्षु सकर्तृकाः ॥२२॥ क्रीं क्रीं क्रीं पातु सा पूर्वं ह्रीं ह्रीं मां पातु पावके। हं हूं मां दक्षिणे पातु दक्षिणे कालिकावतु ॥२३॥ क्रीं क्रीं क्रीं चैव नैऋत्यां ह्रीं ह्रीं च पश्चिमेवतु। हूं हूं पातु मरुत्कोणे स्वाहा पातु सदोत्तरे ॥२४॥ महाकाली खड्गहस्ता रक्षःकोणे सदावतु। तारो माया वधूः कूर्चं फट्कारोयं महामनुः ॥२५॥ खड्गकर्तृधरा चारा चोर्ध्वदिशं सदावतु। ह्रीं स्त्रीं हूं फट् च पाताले मां पातु चैकजटा सती तारा तु उहिता खेऽव्यान्महानीलसरस्वती ॥२६॥ इति ते कथितं देव्याः कवचं मन्त्रविग्रहम्। यद्धृत्वा पठनाद्भीमः क्रोधाख्यो भैरवः स्मृतः ॥२७॥ सुरासुरमुनीन्द्राणां कर्ता हर्ता भवेत्स्वयम्। यस्याज्ञया मधुमती याति सा साधकालयम् ॥२८॥ भूतिन्याद्याश्च डाकिन्यो यक्षिण्याद्याश्च खेचराः। आज्ञां गृह्णन्ति तास्तस्य कवचस्य प्रसादतः ॥२९॥

एतदेव परं ब्रह्मकवचं मन्मुखोदितम्। देवीमभ्यर्च्य गन्धाद्यैर्मूलेनैव पठेत्सकृतम् ॥३०॥ सम्वत्सरकृतायास्तु पूजायाः फलमाप्नुयात्। भूर्जे विलिखितं चैतत्गुटिकां काञ्चनस्थिताम् ॥३१॥ धारयेद्दक्षिणे बाहौ कण्ठे वा यदि वान्यतः। सर्वैश्वर्ययुतो भूत्वा त्रैलोक्यं वशमानयेत् ॥३२॥ तस्य गेहे वसेल्लक्ष्मीर्वाणी च वदनाम्बुजे। ब्रह्मास्त्रादीनि शस्त्राणि तद्गात्रे यान्ति सौम्यताम् ॥३३॥ इदं कवचमज्ञात्वा यो भजेच्छिन्नमस्तकाम्। सोपि शस्त्रप्रहारेणमृत्युमाप्नोति सत्वरम् ॥३४॥

यह परमब्रह्म कवच मेरे मुख से निकला है। गन्ध आदि से देवी की पूजा करके जो साधक मूलमन्त्र के साथ इस कवच को एक बार पढ़ता है उसे एक वर्ष की पूजा का फल मिलता है। भोजपत्र पर इसे लिखकर गोली बना स्वर्ण के बीच में रखकर दाहिने हाथ में या कण्ठ में या अन्य कहीं धारण करने से समस्त ऐश्वर्यो से युक्त होकर साधक तीनों लोकों को वश में कर सकता है। उसके घर में लक्ष्मी

तथा मुख में वाणी निवास करती है। ब्रह्मास्त्र आदि शस्त्र उसके शरीर में सौम्यता को प्राप्त हो जाते हैं। इस कवच को बिना जाने को छिन्नमस्ता का भजन करता है वह शीघ्र शस्त्र प्रहार से मृत्यु को प्राप्त होता है।

इति भैरवतन्त्रे भैरवभैरवीसम्वादे त्रैलोक्यविजयं
नाम छिन्नमस्ता कवचं समाप्तम्।

छिन्नमस्तास्तोत्र

नाभौ शुभ्रारविन्दं तदुपरि विलसन्मण्डलं चण्डरश्मेः संसारस्यैकसारां त्रिभुवनजननीं धर्मकर्मार्थदात्रीम्। तस्मिन्मध्ये त्रिभागे त्रितयतनुधरां छिन्नमस्तां प्रशस्तां तां बन्दे छिन्नमस्तां शमनभयहरां योगिनीं योगमुद्राम्।।१।। नाभौ शुभ्रसरोज वक्त्रविलसद्बन्धूकपुष्पारुणं भास्वद्भास्करमण्डलं तदुदरे तद्योनिचक्रं महत्। तन्मध्ये विपरीतमैथुनरतप्रद्युम्नसत्कामिनीपृष्ठस्थां तरुणार्क कोटिविलसत्तेजःस्वरूपां शिवाम्।।१।। वामे च्छिन्नशिरोधरां तदितरे पाणौ महत्कर्तृकां प्रत्यालीढपदां दिगंतवसनामुन्मुक्तकेशव्रजाम्। छिन्नात्मीयशिरःसमुच्छलदसृग्धारां पिबन्तीं परां बालदित्यसमप्रकाशविलसन्नेत्रत्र्योद्भासिनीम्।।२।। वामादन्यत्र नालं बहुगहनगलद्रक्तधाराभिरुच्चैः पायन्तीमस्थिभूषां करकमलसत्कर्तृकामुग्ररूपाम्। रक्ताभां रक्तकेशीमपगतवसनां वर्णिनीमात्मशक्तिं प्रत्यालीढोरुपादामरुणितनयनां योगिनीं योनिमुद्राम्।।३।। दिग्वस्त्रां मुक्तकेशीं प्रलयघनघटाघोटरूपां प्रचण्डां दंष्ट्रादुष्प्रेक्ष्यवक्त्रोदरविवरलसल्लोलजिह्वाग्रभासाम्। विद्युल्लोलाक्षियुग्मां हृदयतटलसद्भोगिनीमात्ममूर्ति सद्यश्छिन्नात्मकण्ठप्रगलितरुधिरैर्डाकिनींवर्द्धयन्तीम्।।४।। ब्रह्मेशानाच्युताद्यैः शिरसि विनिहितां मन्दपादारविंदैराद्यैर्योगीन्द्रमुख्यैः प्रतिपदमनिशं चिंतितां चिंत्यरूपाम्। संसारे सारभूतां त्रिभुवनजननीं छिन्नमस्तां प्रशस्तामिष्टां तमिष्टादात्रीं कलिकलुषहरां चेतसा चिंतयामि।।५।। उत्पत्तिस्थितिसंहृतीर्घटयितुं धत्ते त्रिरूपां तनुं त्रैगुण्याज्जगतो यदीयविकृतिर्ब्रह्माच्युतः शूलभृत्। तामाद्यां प्रकृतिं स्मरामि मनसा सर्वार्थसंसिद्धयेयस्याः स्मेरपदारविन्दयुगले लाभं भजन्तेऽमराः।।६।। अभिलषितपरस्त्रीयोगपूजापरोहं बहुविधजनभावारम्भसम्भावितोहम्। पशुजनविमुखोहं भैरवीसंयुतोहं गुरुचरणपरोहं भैरवोहं शिवोहम्।।७।।

इदं स्तोत्रं महापुण्यं ब्रह्मणा भाषितं पुरा। सर्वसिद्धिप्रदं साक्षान्महापातकनाशनम्।।८।। यः पठेत्प्रातरुत्थाय देव्याः सन्निहितो भवेत्। तस्य सिद्धिर्भवेद्देवि वांछितार्थप्रदायिनी।।९।। धनं धान्यं सुतान् जायां हयं हस्तिनमेव च। वसुन्धरां महाविद्यामष्टसिद्धिर्लभेद्ध्रुवम्।।१०।।

यह महापुण्यकारक स्तोत्र है। इसे ब्रह्मा ने बहुत पहले कहा था। यह समस्त सिद्धियों का दाता और साक्षात् महापाप का नाशक है।।८।। जो प्रातः उठकर देवी के निकट जाकर इसका पाठ करता है, हे देवि! उसे अभीष्टदायिनी सिद्धि प्राप्त होती है। धन, धान्य, पुत्र, पत्नी, घोड़ा, हाथी, भूमि, महाविद्या तथा आठों सिद्धियाँ निश्चिच रूप से प्राप्त होती हैं।।१०।।

वैयाघ्राजिनरञ्जितस्य जघने रम्ये प्रलम्बोदरे खर्वानिर्वचनीयसर्वसुभगे मुण्डावलीमण्डिते कर्तृं कुन्दरुचिं विचित्रकलितां ज्ञाने दधाने पदेमातर्भक्त जनानुकम्पिनि महामायेऽस्तु तुभ्यं नमः।।११।।

इति श्रीब्रह्मविरचितं छिन्नमस्ता स्तोत्रं समाप्तम्।

प्रचण्डचण्डिका (छिन्नमस्ता) स्तोत्र

आनन्दयित्रि परमेश्वरि वेदगर्भे मातः पुरन्दरपुरान्तरलब्धनेत्रे। लक्ष्मीमशेषजगतां परिभावयन्तः

सन्तो भजन्ति भवतीन्धनदेशलब्ध्यै ।। १ ।। लज्जानुगां विमलविद्रुमकान्तिकान्तां कान्तानुरागरसिकाः 'परमेश्वरि त्वाम् । ये भावयन्ति मनसा मनुजास्त एते सीमन्तिनीभिरनिशं परिभाव्यमानाः ।।२।। मायामयीं निखिलपातककोटिकूटविद्राविणीं भृशमसंशयिनो भजन्ति । त्वां पद्मसुन्दरतनुं तरुणारुणास्यां पाशांकुशाभयवराद्यकरां वरास्त्रैः ।।३ ।। ते तर्ककर्कशधियः श्रुतिशास्त्रशिल्पैश्छन्दोभिशोभितमुखाः सकलागमज्ञाः । सर्वज्ञलब्धविभवाः कुमुदेन्दुवर्णां ये वाग्भवे च भवतीं परिभावयन्ति ।। ४ ।। वज्रप्रणुन्नहृदयासमयद्रुहस्ते वैरोचने मदनमन्दिरगास्यमातः । मायाद्वयानुगतविग्रहभूतिषाऽसि दिव्यास्त्रवह्निवनितानु गताऽसि धन्ये ।। ५ ।। वृत्तत्रयाष्टदलवह्निपुरःसरस्य मार्तण्डमण्डलगतां परिभावयन्ति । ये वह्निकूटसदृशीं मणिपूरकान्तस्ते कालकंटकबिडम्बनचञ्चवः स्युः ।। ६ ।। कालागुरुभ्रमरचन्दनकुण्डगोलखण्डैरनंगमदनोद्भवमादनीभिः । सिंदूरकुंकुमपटीरहिमैर्विधाय सन्मण्डलं तदुपरीह यजेन्मृडानीम् ।। ७ ।। चञ्चत्तडिन्मिहिरकोटिकरां विचेलामुद्यत्कबन्धरुधिरां त्रिभुजां त्रिनेत्राम् । वामे विकीर्णकचशीर्षकरे परे तामीडे परं परमकर्तृकया समेताम् ।। ८ ।। कामेश्वरांगनिलयां कलया सुधांशोर्विभ्राजमानहृदयामपरे स्मरन्ति । सुप्ताहिराजसदृशीं परमेश्वरस्थां त्वामद्रिराजतनये च समानमानाः ।। ९ ।। लिंगत्रयो परिगतामपि वह्निचक्रपीठानुगां सरसिजासनसन्निविष्टाम् । सुप्तांप्रबोध्य भवतीं मनुजा गुरूक्तहूंकार वायुवशिभिर्मनसा भजन्ति ।। १० ।। सुभ्रासि शांतिककथासु तथैव पीता स्तम्भे रिपोरथ च शुभ्रतरासि मातः । उच्चाटनेप्यसितकर्मसुकर्मणि त्वं संसेव्यसे स्फटिककान्तिरनन्तचारे ।।११।। त्वामुत्पलैर्मधुयुतैर्मधुनोपनीतैर्गव्यैः पयोविलुलितैः शतमेव कुण्डे । साज्यैश्चतोषयति यः पुरुषस्त्रिसंध्यं षण्मासतो भवति शक्रसमो हि भूमौ ।। १२ ।। जाग्रत्स्वपन्नपि शिवे तव मन्त्रराजमेवं विचिन्तयति यो मनसाविधिज्ञः । संसारसागरसमुद्धरणे वहित्रं चित्रं न भूतजननेपि जगत्सु पुंसः ।। १३ ।। इयं विद्या वन्द्या हरिहरविरंचिप्रभृतिभिः पुरारातेरन्तुःपुरमिदमगम्यं पशुजनैः । सुधामन्दानन्दैः पशुपतिसमानव्यसनिभिः सुधासेव्यैः सद्भिर्गुरुचरणसंसारचतुरैः ।। १४ ।। कुण्डे वा मण्डले वा शुचिरथ मनुना भावयत्येव मन्त्री संस्थाप्योच्चैर्जुहोति प्रसवसुफलदैः पद्मपालाशकानाम् । हैमं क्षीरिस्तिलैर्वा समधुककुसुमैर्मालतीबन्धुजातीश्वेतैरब्धंसकानामपि वरसमिधा संपदे सर्वसिद्धयै ।। १५ ।। अन्धः साज्यं समांसं दधियुतमथ वा योन्वहं यामिनीनां मध्ये देव्यैददाति प्रभवति गृहगा श्रीरमुष्यावखंडा । आज्यं मांसं सरक्तं तिलयुतमथ वा तण्डुलं पायसं वा हुत्वा मांसं त्रिसंध्यं स भवति मनुजोभूतिभिर्भूतनाथः ।। १६ ।। इदं देव्या स्तोत्रं पठति मनुजो यस्त्रिसमयं शुचिर्भूत्वा विश्वे भवति धनदो वासवसमः । वशा भूपाः कान्ता निखिलारिपुहन्तुः सुरगणा भवन्त्युच्चैर्वाचो यदिह ननु मासैस्त्रिभिरपि ।। १७ ।।

इति श्रीशंकराचार्यविरचितः प्रचण्डचण्डिकास्तवराजः' समाप्तः ।

छिन्नमस्ताष्टोत्तरशतनामस्तोत्र

श्रीपार्वत्युवाच ।

नाम्नां सहस्रं परमं छिन्नमस्ताप्रियं शुभम् । कथितं भवता शम्भोसद्यः शत्रुनिकृन्तनम् ।। १ ।। पुनः पृच्छाम्यहं देव कृपां कुरु ममोपरि । सहस्रनाम पाठेन अशक्तो यः पुमान् भवेत् ।। २ ।। तेन किं पठ्यते नाथ तन्मे ब्रूहिंकृपामय ।

---

१ अशुद्धस्यास्यस्तोत्रस्य शुद्धिर्ग्रन्थान्तरादावेदनीयासुधीभिः ।

श्री पार्वती बोली : हे शम्भो ! आपने छिन्नमस्ता के प्रिय तथा शुभ एवं शत्रुनाशक सहस्रनाम को मुझे बताया। मेरे ऊपर आप कृपा करें। मैं पुनः पूछती हूं कि जो मनुष्य सहस्रनाम् के पाठ में अशक्त हो हे नाथ कृपामय! वह क्या पाठ करे? इसे बतायें।

श्रीसदाशिव उवाच।

अष्टोत्तरशतं नाम्नां पठ्यते तेन सर्वदा।। ३ ।। सहस्रनामपाठस्य फलं प्राप्नोपि निश्चितम्।

श्री सदाशिव बोलेः हे देवि! ऐसे व्यक्ति को अष्टोत्तर शतनाम का पाठ करना चाहिए। वह इससे सहस्रनाम का फल अवश्य प्राप्त करता है।

विनियोग : ॐ अस्य श्रीछिन्नमस्ताष्टोत्तरशतनामस्तोत्रमन्त्रस्य सदाशिवऋषिरनुष्टुप्छन्दः श्रीछिन्नस्ता देवता मम सकलसिद्धिप्राप्तये पाठे विनियोगः।

ॐ छिन्नमस्ता महाविद्या महाभीमा महोदरी। चण्डेश्वरी चण्डमाता चण्डमुण्डप्रभञ्जिनी।। ४ ।। महाचण्डा चण्डरूपा चण्डिका चण्डखण्डिनी। क्रोधिनी क्रोधजननी क्रोधरूपा कुहूः कला।। ५ ।। कोपातुरा कोपयुता कोपसंहारकारिणी। वज्रवैरोचनी वज्रा वज्रकल्पा च डाकिनी।। ६ ।। डाकिनीकर्मनिरता डाकिनीकर्मपूजिता। डाकिनीसङ्गनिरता डाकिनीप्रेमपूरिता।। ७।। खट्वाङ्गधारिणी खर्वाखड्गखर्परधारिणी। प्रेतासना प्रेतयुता प्रेतसङ्गविहारिणी।। ८ ।। छिन्नमुण्डधरा छिन्नचण्डविद्या च चित्रिणी। घोररूपा घोरदृष्टिर्घोररावा घनोदरी।। ९ ।। योगिनी योगनिरता जपयज्ञपरायणा। योनिचक्रमयी योनिर्योनिचक्रप्रवर्तिनी।। १० ।। योनिमुद्रा योनिगम्या योनिमन्त्रनिवासिनी। यन्त्ररूपा यन्त्रमयी यन्त्रेशी यन्त्रपूजिता।। ११ ।। कीर्त्या कपर्दिनी काली कङ्काली कलविकारिणी। आरक्ता रक्तनयना रक्तपानपरायणा।। १२ ।। भवानी भूतिदा भूतिर्भूतिदात्री च भैरवी। भैरवाचारनिरता भूतभैरवसेविता।। १३ ।। भीमा भीमेश्वरी देवी भीमनादपरायणा। भवाराध्या भवनुता भवसागरतारिणी।। १४।। भद्रकाली भद्रतनुर्भद्ररूपा च भद्रिका। भद्ररूपा महाभद्रा सुभद्रा भद्रपालिनी।। १५।। सुभव्या भव्यवदना सुमुखी सिद्धसेविता। सिद्धिदा सिद्धिनिवहा सिद्धासिद्धनिषेविता।। १६ ।। सुभदा सुभगा शुद्धा शुद्धासत्त्वा शुभावहा। श्रेष्ठा दृष्टिमयी देवी दृष्टिसंहारकारिणी।। १७।। शर्वाणी सर्वगा सर्वा सर्वमङ्गलकारिणी। शिवा शान्ता शान्तिरूपा मृडानी मदनातुरा।। १८।।

इति ते कथितं देवि स्तोत्रं परमदुर्भलभम्। गुह्याद्गुह्यतरं गोप्यं गोपनीयं प्रयत्नतः ।। १९ ।। किमत्र बहुनोक्तेन त्वदग्रे प्राणवल्लभे। मारणं मोहनं देवि ह्युच्चाटनमतः परम्।। २० ।। स्तम्भनादिककर्माणि ऋद्धयसिद्धयोऽपि च। त्रिकालपठनादस्य सर्वे सिद्धयन्त्यसंशयम्।। २१ ।। महोत्तमं स्तोत्रमिदं वरानने मयेरितं नित्यमनन्युबुद्धयः। पठन्ति ये भक्तियुता नरोत्तमा भवेन्नतेषां रिपुभिः पराजयः ।। २२ ।।

हे देवि! यह परमदुर्लभ स्तोत्र मैंने तुम्हे बताया है। यह गोप्य से भी गोप्यतर है। इसको प्रयत्न से गुप्त रखना चाहिये। हे प्राणवल्लभे! तुम्हारे सामने यहाँ अधिक कहने से क्या लाभ? हे देवि! मारण, मोहन, उच्चाटन और स्तम्भन आदि कर्म, समस्त ऋद्धियाँ तथा सिद्धियाँ भी तीनों संध्याओं में इसका पाठ करने से सिद्ध हो जाती हैं। इसमें कोई संशय नहीं है। हे वरानने! जो अनन्य बुद्धिवाले मनुष्य हैं वे मेरे कहे इस परमोत्तम स्तोत्र को नित्य भक्तिपूर्वक पढ़ते हैं। वे मनुष्यों में श्रेष्ठ हैं तथा शत्रुओं से उनकी पराजय नहीं होती।

इति श्रीछिन्नमस्ताष्टोत्तरशतनामस्तोत्रं समाप्तम्।।

छिन्नमस्तासहस्रनामस्तोत्र

श्रीदेव्युवाच। वद देव महादेव सर्वशास्त्रविदांवर। कृपां कुरु जगन्नाथ कथयस्व मम प्रभो॥ १॥ प्रचण्डचण्डिका देवी सर्वलोकहितैषिणी। तस्याश्च कथितं सर्वं स्तवं च कवचादिकम्॥ २॥ इदानीं छिन्नमस्ताया नाम्नां साहस्रकं शुभम्। त्वं प्रकाशय मे देव कृपया भक्तवत्सल॥ ३॥

श्री देवी बोली : हे देव, समस्त शास्त्रों के जानने वाले, हे महादेव, हे जगन्नाथ! आप मुझ पर कृपा करें तथा बतायें। प्रचण्डचण्डिका देवी सारे संसार की हितैषिणी हैं। उनका सभी स्तव तथा कवच आदि आपने बतला दिया। इस समय छिन्नमस्ता के शुभ सहस्रनाम स्तोत्र को, हे देव, हे भक्तवत्सल! आप मुझे बतावें।

श्रीशिव उवाच। शृणु देवि प्रवक्ष्यामि छिन्नायाः समनोहरम्। गोपनीयं प्रयत्नेन यदीच्छेदात्मनोहितम्॥ ४॥ न वक्तव्यं च कुत्रापि प्राणैः कण्ठगतैरपि। तच्छृणुष्व महेशानि सर्वं तत्कथयामि ते॥ ५॥ विना पूजां विना ध्यानं विनां जाप्येन सिद्ध्यति। विना ध्यानं तथा देवि विना भूतादिशोधनम्॥ ६॥ पठनादेव सिद्धिः स्यात्सत्यंसत्यं वरानने। पुरा कैलासशिखरे सर्वदेवसभालये॥ ७॥ परिपप्रच्छ कथितं तथा शृणु वरानने॥ ८॥

श्री शिव बोलेः हे देवि! छिन्नमस्ता के मनोहर सहस्रनाम स्तोत्र को मैं कहूंगा। यदि अपना भला चाहे तो मनुष्य को इसे प्रयत्न से गुप्त रखना चाहिये। कहीं पर भी इसे प्रकट नहीं करना चाहिये चाहे प्राणों पर भी संकट क्यों न आ जाय। इस सहस्रनाम को, हे महेशानि! तुम सुनो मैं तुम्हे बतला रहा हूं। हे देवि! बिना पूजा के, बिना ध्यान के तथा बिना जप के, बिना ध्यान और बिना भूतादि शोधन के, पठनमात्र से यह सिद्ध होता है। हे वरानने! मैं तुम्हे सत्य कह रहा हूँ, सत्य कह रहा हूँ। बहुत पहले समस्त देवताओं के सभास्थान कैलाश शिखर पर हे वरानने! जो कहा गया था उसे तुम सुनो :

विनियोग : ॐ अस्य श्रीप्रचण्डचण्डिकासहस्रनामस्तोत्रस्य भैरवऋषिः सम्राट्छन्दः प्रचण्डचण्डिका देवता धर्मार्थकाममोक्षार्थे पाठे विनियोगः।

ॐ प्रचण्डचण्डिका चण्डा चण्डदेव्यविनाशिनी। चामुण्डा च सुचण्डा च चपला चारुदेहिनी॥ ९॥ ललज्जिह्वा चलद्रक्ता चारुचन्द्रनिभानना। चकोराक्षी चण्डनादा चञ्चला च मनोन्मदा॥ १०॥ चेतना चितिसंस्था च चित्कला ज्ञानरूपिणी। महाभयङ्करी देवी वरदाभयधारिणी॥ ११॥ भवाढ्या भवरूपा च भवबन्धविमोचिनी। भवानी भुवनेशी च भवसंसारतारिणी॥ १२॥ भवाब्धिर्भवमोक्षा च भवबन्धविघातिनी। भागीरथी भगस्था च भाग्यभोग्यप्रदायिनी॥ १३॥ कमला कामदा दुर्गा दुर्गबन्धविमोचिनी। दुर्द्दर्शना दुर्गरूपा दुर्ज्ञेया दुर्गनाशिनी॥ १४॥ दीनदुःखहरा नित्या नित्यशोकविनाशिनी। नित्यानन्दमया देवी नित्यं कल्याणकारिणी॥ १५॥ सर्वार्थसाधनकरी सर्वसिद्धिस्वरूपिणी। सर्वक्षोभणशक्तिश्च सर्वविद्राविणी परा॥ १६॥ सर्वरञ्जनशक्तिश्च सर्वोन्मादस्वरूपिणी। सर्वज्ञा सिद्धिदात्री च सिद्धविद्यास्वरूपिणी॥ १७॥ सकला निष्कला सिद्धा कलातीता कलामयी। कुलज्ञा कुलरूपा च चक्षुरानन्ददायिनी॥ १८॥ कुलीना सामरूपा च कामरूपा मनोहरा। कमलस्था कञ्जमुखी कुञ्जरेश्वरगामिनी॥ १९॥ कुलरूपा कोटराक्षी कमलैश्वर्यदायिनी। कुन्ती ककुद्मिनी कुल्ला कुरुकुल्ला करालिका॥ २०॥ कामेश्वरी काममाता कामतापविमोचिनी। कामरूपा कामसत्त्वा कामकौतुककारिणी॥ २१॥ कारुण्यहृदया क्रीं क्रीं मन्त्ररूपा च कोटरा। कौमोदकी कुमुदिनी कैवल्या कुलवासिनी॥ २२॥ केशवी केशवाराध्या केशिदैत्यनिषूदिनी। क्लेशहा क्लेशरहिता क्लेशसङ्घविनाशिनी॥ २३॥ कराली च

करालास्या करालासुरनाशिनी । करालचर्मासिधरा करालकलनाशिनी ॥ २४ ॥ कङ्किनी कङ्कनिरता कपालवरधारिणी । खड्गहस्ता त्रिनेत्रा च खण्डमुण्डासिधारिणी ॥ २५ ॥ खलहा खलहन्त्री च क्षरन्ती खगता सदा । गङ्गागौतमपूज्या च गौरी गन्धर्ववासिनी ॥ २६ ॥ गन्धर्वा गगणाराध्या गणा गन्धर्वसेविता । गणत्कारगणा देवी निर्गुणा च गुणात्मिका ॥ २७ ॥ गुणता गुणदात्री च गुणगौरवदायिनी । गणेशमाता गम्भीरा गणना ज्योतिकारिणी ॥ २८ ॥ गौराङ्गी च गयागम्यागौतमस्थानवासिनी । गदाधरप्रिया ज्ञेया ज्ञानगम्या गुहेश्वरी ॥ २९ ॥ गायत्री च गुणवती गुणातीता गुणेश्वरी । गणेशजननी देवी गणेशवरदायिनी ॥ ३० ॥ गणाध्यक्षनुता नित्या गणाध्यक्षप्रपूजिता । गिरीशरमणी देवी गिरीशपरिवन्दिता ॥ ३१ ॥ गतिदा गतिहा गीता गौतमी गुरुसविता । गुरुपूज्या गुरूयुता गुरुसेवनतत्परा ॥ ३२ ॥ गन्धद्वारा च गन्धाढ्या गन्धात्मा गन्धकारिणी । गीर्वाणपतिसम्पूज्या गीर्वाणपतितुष्टिदा ॥ ३३ ॥ गीर्वाणाधीशरमणी गीर्वाणाधीशवन्दिता । गीर्वाणाधीशसंसेव्या गीर्वाणाधीशहर्षदा ॥ ३४ ॥ गानशक्तिर्गानगम्या गानशक्तिप्रदायिनी । गानविद्या गानसिद्धा गानसन्तुष्टमानसा ॥ ३५ ॥ गानातीता गानगीता गानहर्षप्रपूरिता । गन्धर्वपतिसंहृष्टा गन्धर्वगुणमण्डिता ॥ ३६ ॥ गन्धर्वगणसंसेव्या गन्धर्वगणमध्यगा । गन्धर्वगणकुशला गन्धर्वगणपूजिता ॥ ३७ ॥ गन्धर्वगणनिरता गन्धर्वगणभूषिता । घर्घरा घोररूपा च घोरघुर्घुरनादिनी ॥ ३८ ॥ धर्मबिन्दुसमुद्भूता घर्मबिन्दुस्वरूपिणी । घण्टारवा घनरवा घनरूपा घनोदरी ॥ ३९ ॥ घोरसत्त्वा च घनदा घण्टानादविनोदिनी । घोरचाण्डालिनी घोरा घोरचण्डविनाशिनी ॥ ४० ॥ घोरदानवदमनी घोरदानवनाशिनी । घोरकर्मादिरहिता घोरकर्मनिषेविता ॥ ४१ ॥ घोरतत्त्वमयी देवी घोरतत्त्वविमोचिनी । घोरकर्मादिरहिता घोरकर्मादिपूरिता ॥ ४२ ॥ घोरकर्मादिनिरता घोरकर्मप्रवर्द्धिनी । घोरभूतप्रमथिनी घोरवेतालनाशिनी ॥ ४३ ॥ घोरदावाग्निदमनी घोरशत्रुनिषूदिनी । घोरमन्त्रयुता चैव घोरमन्त्रप्रपूजिता ॥ ४४ ॥ घोरमन्त्रमनोभिज्ञा घोरमन्त्रफलप्रदा । घोरमन्त्रनिधिश्चैव घोरमन्त्रकृतास्पदा ॥ ४५ ॥ घोरमन्त्रेश्वरी देवी घोरमन्त्रार्थमानसा । घोरमन्त्रार्थतत्त्वज्ञा घोरमन्त्रार्थपारगा ॥ ४६ ॥ घोरमन्त्रार्थविभवा घोरमन्त्रार्थबोधिनी । घोरमन्त्रार्थनिचया घोरमन्त्रार्थजन्मभूः ॥ ४७ ॥ घोरमन्त्रजपरता घोरमन्त्रजपोद्यता । ङकारवर्णनिलया ङकाराक्षरमण्डिता ॥ ४८ ॥ ङकारापररूपा च ङकाराक्षररूपिणी । चित्ररूपा चित्रनाडी चारुकेशी चयप्रभा ॥ ४९ ॥ चञ्चला चञ्चलाकारा चारुरूपा च चण्डिका । चतुर्वेदमयी चण्डा चण्डालगणमण्डिता ॥ ५० ॥ चाण्डालच्छेदिनी चण्डतपोनिर्मूलकारिणी । चतुर्भुजा चण्डरूपा चण्डमुण्डविनाशिनी ॥ ५१ ॥ चन्द्रिका चन्द्रकीर्तिश्च चन्द्रकान्तिस्तथैव च । चन्द्रास्या चन्द्ररूपा च चन्द्रमौलिस्वरूपिणी ॥ ५२ ॥ चन्द्रमौलिप्रिया चन्द्रमौलि सन्तुष्टमानसा ॥ चकोरबन्धुरमणी चकोरबन्धुपूजिता ॥ ५३ ॥ चक्ररूपा चक्रमयी चक्राकारस्वरूपिणी । चक्रपाणिप्रिया चक्रपाणि प्रीतिदायिनी ॥ ५४ ॥ चक्रपाणिरसाभिज्ञा चक्रपाणिवरप्रदा । चक्रपाणिवरोन्मत्ता चक्रपाणिस्वरूपिणी ॥ ५५ ॥ चक्रपाणीश्वरी नित्यं चक्रपाणिनमस्कृता । चक्रपाणिसमुद्भूता चक्रपाणिगुणास्पदा ॥ ५६ ॥ चन्द्रावली चन्द्रवती चन्द्रकोटिसमप्रभा । चन्दनार्चितपादाब्जा चन्दनान्वितमस्तका ॥ ५७ ॥ चारुकीर्तिश्चारुनेत्रा चारुचन्द्रविभूषणा । चारुभूषा चारुवेषा चारुवेषप्रदायिनी ॥ ५८ ॥ चारुभूषा भूषिताङ्गी चतुर्वक्त्रवरप्रदा । चतुर्वक्त्रसमाराध्या

चतुर्वक्त्रसमाश्रिता ॥ ५९ ॥ चतुर्वक्त्रचतुर्वाहा चतुर्थी च चतुर्दशी। चित्रा चर्मण्वती चैत्री चन्द्रभागा च चम्पका ॥ ६० ॥ चतुर्द्दशयमाकारा चतुर्दशयमानुगा। चतुर्दशयमप्रीता चतुर्दशयमप्रिया ॥ ६१ ॥ छलस्था चिद्ररूपा च छद्मदा छद्मराजिका। छिन्नमस्ता तथा छिन्ना छिन्नमुण्डविधारिणी ॥ ६२ ॥ जयदा जयरूपा च जयन्ती जयमोहिनी। जया जीवनसंस्था च जालन्धरनिवासिनी ॥ ६३ ॥ ज्वालामुखी ज्वालदात्री जाज्वल्यदहनोपमा। जगद्वन्द्या जगत्पूज्या जगत्त्राणपरायणा ॥ ६४ ॥ जगती जगदाधारा जन्ममृत्युजरापहा। जननी जन्मभूमिश्च जन्मदा जयशालिनी ॥ ६५ ॥ ज्वररोगहरा ज्वाला ज्वालामालाप्रपूरिता। जम्भारातीश्वरी जम्भारातिवैभवकारिणी ॥ ६६ ॥ जम्भारातिस्तुता जम्भारातिशत्रुनिषूदिनी। जयदुर्गा जयाराध्या जयकाली जयेश्वरी ॥ ६७ ॥ जयतारा जयातीता जयशङ्करवल्लभा। जयदा जह्नुतनया जलधिवासकारिणी ॥ ६८ ॥ जलधिव्याधिदमनी जलधिज्वरनाशिनी। जंगमेशी जाड्यहरा जाड्यसंघनिवारिणी ॥ ६९ ॥ जाड्यग्रस्तजनातीता जाड्यरोगनिवारिणी। जन्मदात्री जन्महर्त्री जयघोषसमन्विता ॥ ७० ॥ जपयोगसमायुक्ता जपयोगविनोदिनी। जपयोगप्रिया जाप्या जपातीता जयस्वना ॥ ७१ ॥ जायाभावस्थिता जाया जायाभावप्रपूरिणी। जपाकुसुमसंकांशा जपाकुसुमपूजिता ॥ ७२ ॥ जपाकुसुमसम्प्रीता जपा कुसुममण्डिता। जपाकुसुमवद्भासा जपाकुसुमरूपिणी ॥ ७३ ॥ जमदग्निस्वरूपा च जानकी जनकात्मजा। झंझावातप्रमुक्ताङ्गी झोरझंकारवासिनी ॥ ७४ ॥ झंकारकारिणी झंझावातरूपा च झंकरी। ञकाराणुस्वरूपा च टनटंकारनादिनी ॥ ७५ ॥ टंकारी टंकुवाणी च ठकाराक्षररूपिणी। डिण्डिमा च तथा डिम्भा डिण्डुडिण्डिमनादिनी ॥ ७६ ॥ ढक्वामयी ढिलमयी नृत्यशब्दा विलासिनी। ढक्का ढक्केश्वरी ढक्काशब्दरूपा तथैव च ॥ ७७ ॥ ढक्कानादप्रिया ढक्कानादसन्तुष्टमानसा। णकारा णाक्षरमयी णाक्षरादिस्वरूपिणी ॥ ७८ ॥ त्रिपुरा त्रिपुरमयी त्रिशक्तिस्त्रिगुणात्मिका। तामसी च त्रिलोकेशी त्रिपुरा च त्रयीश्वरी ॥ ७९ ॥ त्रिविधा च त्रिरूपा च त्रिनेत्रा च त्रिरूपिणी। तारिणी तरला तारा तारकारिप्रपूजिता ॥८०॥ तारकारिसमाराध्या तारकारिवरप्रदा। तारकारिप्रसूस्तन्वी तरुणी तरलप्रभा ॥८१॥ त्रिरूपा च त्रिपुरगा त्रिशूलवरधारिणी। त्रिशूलिनी तन्त्रमयी तन्त्रशास्त्रविशारदा ॥८२॥ तन्त्ररूपा तपोमूर्तिस्तन्त्रमन्त्रस्वरूपिणी। तडित्तडिल्लताकारा तत्त्वज्ञानप्रदायिनी ॥८३॥ तत्त्वज्ञानेश्वरी देवी तत्त्वज्ञानप्रमोदिनी। त्रयीमयी त्रयीसेव्या त्र्यक्षरी त्र्यक्षरेश्वरी ॥८४॥ तापविध्वंसिनी तापसंघनिर्मूलकारिणी। त्रासकर्त्री त्रासहर्त्री त्रासदात्री च त्रासहा ॥८५॥ तिथीशा तिथिरूपा च तिथिस्था तिथिपूजिता। तिलोत्तमा च तिलदा तिलप्रीता तिलेश्वरी ॥८६॥ त्रिगुणा त्रिगुणाकारा त्रिपुरी त्रिपुरात्मिका। त्रिकुटा त्रिकुटाकारा त्रिकूटाचलमध्यगा ॥८७॥ त्रिजटा च त्रिनेत्रा च त्रिनेत्रवरसुन्दरी। तृतीया च त्रिवर्षा च त्रिविधा त्रिमतेश्वरी ॥८८॥ त्रिकोणस्था त्रिकोणेशी त्रिकोणयन्त्रमध्यगा। त्रिसंध्या च त्रिसंध्यार्च्या त्रिपदा त्रिपदास्पदा ॥८९॥ स्थानस्थिता स्थलस्था च धन्यस्थलनिवासिनी। थकाराक्षररूपा च स्थूलरूपा तथैव च ॥९०॥ स्थूलहस्ता तथा स्थूला स्थैर्यरूपप्रकाशिनी। दुर्गा दुर्गार्तिहन्त्री च दुर्गबन्धविमोचिनी ॥९१॥ देवी दानवसंहन्त्री दनुजेष्ठनिषूदिनी। दारापत्यप्रदा नित्या शङ्करार्द्धाङ्गधारिणी ॥९२॥ दिव्याङ्गी देववाता च देवदुष्टविनाशिनी। दीनदुःखहरा दीनतापनिर्मूलकारिणी ॥९३॥ दीनमाता दीनसेव्या दीनदम्भविनाशिनी। दनुजध्वंसिनी देवी

देवकी देववल्लभा ।।९४।। दानवारिप्रियादीर्घा दानवारिप्रपूजिता। दीर्घस्वरा दीर्घतनुर्दीर्घदुर्गतिनाशिनी ।।९५।। दीर्घनेत्रा दीर्घचक्षुर्दीर्घकेशी दिगम्बरा। दिगम्बरप्रियादान्ता दिगम्बरस्वरूपिणी ।।९६।। दुःखहीना दुःखहरा दुःखसागरतारिणी। दुःखदारिद्र्यशमनी दुःखदारिद्र्यकारिणी ।।९७।। दुःखदा दुस्सहा दुष्टखण्डनैकस्वरूपिणी। देववामा देवसेव्या देवशक्तिप्रदायिनी ।।९८।। दामिनी दामिनीप्रीता दामिनीशतसुन्दरी। दामिनीशतसंसेव्या दामिनीदामभूषिता ।।९९।। देवताभावसन्तुष्टा देवताशतमध्यगा। दयार्द्रा च दयारूपा दयादानपरायणा ।।१००।। दयाशीला दयासारा दयासागरसंस्थिता। दशविद्यात्मिका देवी दशविद्यास्वरूपिणी ।।१०१।। धरणी धनदा धात्री धन्या धन्यपराशिवा। धर्मरूपा धनिष्ठा च धेया च धीरगोचरा ।।१०२।। धर्मराजेश्वरी धर्मकर्मरूपा धनेश्वरी। धनुर्विद्या धनुर्गम्या धनुर्द्धरवरप्रदा ।।१०३।। धर्मशीला धर्मलीला धर्मकर्मविवर्जिता। धर्मदा धर्मनिरता धर्मपाखण्डखण्डिनी ।।१०४।। धर्मेशीधर्मरूपा च धर्मराजवरप्रदा। धर्मिणी धर्मगेहस्था धर्माधर्मस्वरूपिणी ।।१०५।। धनदा धनदप्रीता धनधान्यसमृद्धिदा। धनधान्यसमृद्धिस्था धनधान्यविनाशिनी ।।१०६।। धर्मनिष्ठा धर्मधीरा धर्ममार्गरता सदा। धर्मबीजकृतस्थाना धर्मबीजसुरक्षिणी ।।१०७।। धर्मबीजेश्वरी धर्मबीजरूपा च धर्मगा। धर्मबीजसमुद्भूता धर्मबीजसमाश्रिता ।।१०८।। धराधरपतिप्राणा धराधरपतिस्तुता। धराधरेन्द्रतनुजा धराधरेन्द्रवन्दिता ।।१०९।। धराधरेन्द्रगेहस्था धराधरेन्द्रपालिनी। धराधरेन्द्रसर्वार्तिनाशिनी धर्मपालिनी ।।११०।। नवीना निर्मला नित्या नागराजप्रपूजिता। नागेश्वरी नागमाता नागकन्या च नग्निका ।।१११।। निर्लेपा निर्विकल्पा च निर्लोमा निरुपद्रवा। निराहारा निराकारा निरञ्जनस्वरूपिणी ।।११२।। नागिनी नागविभवा नागराजपरिस्तुता। नागराजगुणज्ञा च नागराजसुखप्रदा ।।११३।। नागलोकगता नित्यं नागलोकनिवासिनी। नागलोकेश्वरी नागभागिनी नागपूजिता ।।११४।। नागमध्यस्थिता नागमोहसंक्षोभदायिनी। नृत्यप्रिया नृत्यवती नृत्यगीतपरायणा ।।११५।। नृत्येश्वरी नर्तकी च नृत्यरूपा निराश्रया। नारायणी नरेन्द्रस्था नरमुण्डास्थिमालिनी ।।११६।। नरमांसप्रिया नित्या नररक्तप्रिया सदा। नरराजेश्वरी नारीरूपा नारीस्वरूपिणी ।।११७।। नारीगणार्चिता नारीमध्यगा नूतनाम्बरा। नर्मदा च नदीरूपा नदीसंगमसंस्थिता ।।११८।। नर्मदेश्वरसम्प्रीता नर्मदेश्वररूपिणी। पद्मावती पद्ममुखी पद्मकिञ्जल्कवासिनी ।।११९।। पट्टवस्त्रपरीधाना पद्मरागविभूषिता। परमा प्रीतिदा नित्या प्रेतासननिवासिनी ।।१२०।। परिपूर्णरसोन्मत्ता प्रेमविह्वलवल्लभा। पवित्राशवनिःपूता प्रेयसीपरमात्मिका ।।१२१।। प्रियव्रतपरा नित्या परमप्रेमदायिनी। पुष्पप्रिया पद्मकोशा पद्मधर्मनिवासिनी ।।१२२।। फेत्कारिणी तन्त्ररूपा फेरूफेरवनादिनी। वंशिनी वंशरूपा च बगला कामरूपिणी ।।१२३।। वाङ्मयी वसुधा धृष्या वाग्भवाख्या वरा नरा। बुद्धिदा बुद्धिरूपा च विद्या वादस्वरूपिणी ।।१२४।। बाला वृद्धमयीरूपा वाणी वाक्यनिवासिनी। वरुणा वाग्वती वीरा वीरभूषणभूषिता ।।१२५।। वीरभद्रार्चितपदा वीरभद्रप्रसूरपि। वेदमार्गरता वेदमन्त्ररूपा वषट्प्रिया ।।१२६।। वीणावाद्यसमायुक्ता वीणावाद्यपरायणा। वीणारवा तथा वीणाशब्दरूपा च वैष्णवी ।।१२७।। वैष्णवाचारनिरता वैष्णवाचारतत्परा। विष्णुसेव्या विष्णुपत्नी विष्णुरूपा

वरानना ॥१२८॥ विश्वेश्वरी विश्वमाता विश्वनिर्माणकारिणी। विश्वरूपा च विश्वेशी विश्वसंहारकारिणी ॥१२९॥ भैरवी भैरवाराध्या भूतभैरव सेविता। भैरवेशी तथा भीमा भैरवेश्वरतुष्टिदा ॥१३०॥ भैरवाधीशरमणी भैरवाधीशपालिनी। भीमेश्वरी भीममाता भीमशब्दपरायणा ॥१३१॥ भीमरूपा च भीमेशी भीमा भीमवरप्रदा। भीमपूजितपादाब्जा भीमभैरवपालिनी ॥१३२॥ भीमासुरध्वंसकरी भीमदुष्ठविनाशिनी। भुवना भुवनाराध्या भवानी भूतिदा सदा ॥१३३॥ भयदाभयहन्त्री च अभयाऽभयरूपिणी। भीमनादा विह्वला च भयभीतिविनाशिनी ॥१३४॥ मत्ता प्रमत्तरूपा च मदोन्मत्तस्वरूपिणी। मान्या मनोज्ञामाना च मङ्गला च मनोहरा ॥१३५॥ माननीया महापूज्या महिषी दुष्टमर्द्दिनी। महिषासुरहन्त्री च मातंगी मयवासिनी ॥१३६॥ माध्वी मधुमयी मुद्रा मुद्रिका मन्त्ररूपिणी। महाविश्वेश्वरी दूती मौलिचन्द्रप्रकाशिनी ॥१३७॥ यशः स्वरूपिणी देवी योगमार्गप्रदायिनी। योगिनी योगगम्या च याम्येशी योगरूपिणी ॥१३८॥ यज्ञांगी च योगमयी जपरूपा जपात्मिका। युगाख्या च युगान्ता च योनिमण्डलवासिनी ॥१३९॥ अयोनिजा योगनिद्रा योगानन्दप्रदायिनी। रमा रतिप्रिया नित्या रतिरागविवर्द्धिनी ॥१४०॥ रमणीरासमम्भूता रम्या रासप्रिया रसा। रणोत्कण्ठा रणस्था च वरा रंगप्रदायिनी ॥१४१॥ रेवती रणजैत्री च रसोद्भूता रणोत्सवा॥ लतालावण्यरूपा च लवणाब्धिस्वरूपिणी ॥१४२॥ लवङ्गकुसुमाराध्या लोलजिह्वा च लेलिहा। वशिनी वनसंस्था च वनपुष्पप्रिया वरा ॥१४३॥ प्राणेश्वरी बुद्धिरूपा बुद्धिदात्री बुधात्मिका। शमनी श्वेतवर्णा च शाङ्करी शिवभाषिणी ॥१४४॥ शाम्यरूपा शक्तिरूपा शक्तिबिन्दुनिवासिनी। सर्वेश्वरी सर्वदात्री सर्वमाता च शर्वरी ॥१४५॥ शाम्भवी सिद्धिदासिद्धा सुषुम्नासुरभासिनी। सहस्रदलमध्यस्था सहस्रदलवर्त्तिनी ॥१४६॥ हरप्रिया हरध्येया हूंकारबीजरूपिणी। लङ्केश्वरी च तरला लोममांसप्रपूजिता ॥१४७॥ क्षेम्या क्षेमकरी क्षामा क्षीरबिन्दुस्वरूपिणी। क्षिप्तचित्तप्रदा नित्या क्षौमवस्त्रविलासिनी ॥१४८॥ छिन्ना च छिन्नरूपा च क्षुधा क्षौत्काररूपिणी। सर्ववर्णमयी देवी सर्वसम्पत्प्रदायिनी ॥१४९॥ सर्वसम्पत्प्रदात्री च सम्पदापद्विभूषिता। सत्त्वरूपा च सर्वार्था सर्वदेवप्रपूजिता ॥१५०॥ सर्वेश्वरी सर्वमाता सर्वज्ञा सुरसात्मिका। सिन्धुर्मन्दाकिनी गङ्गा नदी सागररूपिणी ॥१५१॥ सुकेशी मुक्तकेशी च डाकिनी वरवर्णिनी। ज्ञानदा ज्ञानगगना सोममण्डलवासिनी ॥१५२॥ आकाशनिलया नित्या परमाकाशरूपिणी। अन्नपूर्णा महानित्या महादेवरसोद्भवा ॥१५३॥ मङ्गला कालिका चण्डा चण्डनादातिभीषणा। चण्डासुरस्य मथिनी चामुण्डा चपलात्मिका ॥१५४॥ चण्डी चामरकेशी च चलत्कुण्डलधारिणी। मुण्डमालाधरा नित्या खण्डमुण्डविलासिनी ॥१५५॥ खड्गहस्ता मुण्डहस्ता वरहस्ता वरप्रदा। असिचर्मधरा नित्या पाशांकुशधरा परा ॥१५६॥ शूलहस्ता शिवहस्ता घण्टानादविलासिनी। धनुर्बाणधराऽऽदित्या नागहस्ता नगात्मजा ॥१५७॥ महिषासुरहन्त्री च रक्तबीजविनाशिनी। रक्तरूपा रक्तगा च रक्तहस्ता भयप्रदा ॥१५८॥ असिता च धर्मधरा पाशांकुशधरा परा। धनुर्बाणधरा नित्या धूम्रलोचननाशिनी ॥१५९॥ परस्था देवतामूर्तिः शर्वाणी शारदा परा। नानावर्णविभूषांगी नानारागसमापिनी ॥१६०॥ पशुवस्त्रपरीधाना पुष्पायुधधरा परा। मुक्तरञ्जितमालाढ्या मुक्ताहारविलासिनी ॥१६१॥ स्वर्णकुण्डलभूषा च स्वर्णसिंहासनस्थिता। सुन्दराङ्गी सुवर्णाभा

शाम्भवी शकटात्मिका ॥१६२॥ सर्वलोकेशविद्या च मोह सम्मोहकारिणी। श्रेयसी सृष्टिरूपा च छिन्नच्छद्ममयीछला ॥१६३॥ छिन्नमुण्डधरा नित्या नित्यानन्दविधायिनी। नन्दा पूर्णा च रिक्ता च तिथयः पूर्णषोडशी ॥१६४॥ कुहूः संक्रान्तिरूपा च पञ्चपर्वविलासिनी। पञ्चबाणधरा नित्या पञ्चमप्रीतिदा परा ॥१६५॥ पञ्चपत्राभिलाषा च पञ्चामृतविलासिनी। पञ्चाली पञ्चमी देवी पञ्चरक्तप्रसारिणी ॥१६६॥ पञ्चबाणधरा नित्या नित्यदात्री दयापरा। पललादिप्रिया नित्याऽपशुगम्या परेशिता ॥१६७॥ परा पररहस्या च परमप्रेमविह्वला। कुलीना केशिमार्गस्था कुलमार्गप्रकाशिनी ॥१६८॥ कुलाकुलस्वरूपा च कुलार्णवमयी कुला। रुक्मा च कालरूपा च कालकम्पनकारिणी ॥१६९॥ विलासरूपिणी भद्रा कुलाकुलनमस्कृता। कुबेरवित्तधात्री च कुमारजननी परा ॥१७०॥ कुमारीरूपसंस्था च कुमारीपूजनाम्बिका। कुरङ्गनयना देवी दिनेशास्याऽपराजिता ॥१७१॥ कुण्डली कदली सेना कुमार्गरहिता वरा। अनन्तरूपाऽनन्तस्था आनन्दसिन्धुवासिनी ॥१७२॥ इलास्वरूपिणी देवी ईईभेदभयङ्करी। इङ्गला पिङ्गला नाडी इकाराक्षररूपिणी ॥१७३॥ उमा उत्पत्तिरूपा च उच्चभावविनाशिनी। ऋग्वेदा च निराराध्या यजुर्वेदप्रपूजिता ॥१७४॥ सामवेदेन सङ्गीता अथर्ववेदभाषिणी। ऋकाररूपिणी ऋक्षा निरक्षरस्वरूपिणी ॥१७५॥ अहिदुर्गासमाचारा इकारार्णस्वरूपिणी। ॐकारा प्रणवस्था च ॐकारादिस्वरूपिणी ॥१७६॥ अनुलोमविलोमस्था थकारवर्णसम्भवा। पञ्चाशद्वर्णबीजाढ्या पञ्चाशन्मुण्डमालिका ॥१७७॥ प्रत्येका दशसंख्या च षोडशी छिन्नमस्तका। षडङ्गयुवतीपूज्या षडङ्गरूपवर्जिता ॥१७८॥ षडवक्त्रसंश्रिता नित्या विश्वेशी खड्गदालया। मालामन्त्रमयी मन्त्रजपमाता मदालसा ॥१७९॥ सर्वविश्वेश्वरी शक्तिः सर्वानन्दप्रदायिनी। इति श्रीछिन्नमस्तायाः नामसाहस्रमुत्तमम् ॥१८०॥

पूजाक्रमेण कथितं साधकानां सुखावहम्। गोपनीयं गोपनीयं गोपनीयं न संशयः ॥१८१॥ अर्द्धरात्रे मुक्तकेशो भक्तियुक्तो भवेन्नरः। जपित्वा पूजयित्वा च पठेन्नामसहस्रकम् ॥१८२॥ विद्यासिद्धिर्भवेत्तस्य षण्मासाभ्यासयोगतः। येन केन प्रकारेण देवीभक्तिपरो भवेत् ॥१८३॥ अखिलान्स्तम्भयेल्लोकान्राज्ञोऽपि मोहयेत्सदा। आकर्षयेद्देवशक्तिं मारयेद्देवि विद्विषम् ॥१८४॥ शत्रवो दासतां यान्ति पापानि यान्ति संक्षयम्। मृत्युश्च क्षयतां याति पठनाद्भाषणात्प्रिये ॥१८५॥ प्रशस्तायाः प्रसादेन किन्न सिद्ध्यति भूतले। इदं रहस्यं परमं परं स्वस्त्ययनं महत् ॥१८६॥ धृत्वा बाहौ महासिद्धिः प्राप्यते नात्र संशयः। अनया सदृशी विद्या विद्यते न महेश्वरि ॥१८७॥ वारमेकं तु योधीते सर्वसिद्धीश्वरो भवेत्। कुलवारे कुलाष्टम्यां कुहूसंक्रान्तिपर्वसु ॥१८८॥ यश्चेमां पठेत विद्यां तस्य सम्यक्फलं शृणु। अष्टोत्तरशतं जप्त्वा पठेन्नामसहस्रकम् ॥१८९॥ भक्त्यास्तुत्वा महादेवि सर्वपापात्प्रमुच्यते। सर्वपापैर्विनिर्मुक्तः सर्वसिद्धीश्वरो भवेत् ॥१९०॥ अष्टम्यां वा निशीथे च चतुष्पथगतो नरः। माषभक्तबलिं दत्त्वा पठेन्नामसहस्रकम् ॥१९१॥ सुदर्शवामवेद्यां तु मासत्रयविधानतः। दुर्जयः कामरूपश्च महाबलपराक्रमः ॥१९२॥ कुमारीपूजनं नाम मन्त्रमात्रं पठेन्नरः। एतन्मन्त्रस्य पठनात्सर्वसिद्धीश्वरो भवेत् ॥१९३॥ इति ते कथितं देवि सर्वसिद्धिपरं नरः। जप्त्वा स्तुत्वा महादेवीं सर्वपापैः प्रमुच्यते ॥१९४॥ न प्रकाश्यमिदं देवि सर्वदेवनमस्कृतम्। इदं रहस्यं परमं गोप्तव्यं पशुसंकटे॥१९५॥ इति सकलविभूतेर्हेतुभूतं प्रशस्तं पठति य इह मर्त्यश्छिन्नमस्तास्तवश्च। धनदा इव धनाढ्यो माननीयोनृपाणां स भवति च जनानामाश्रयः सिद्धिवेत्ता ॥१९६॥

पूजाक्रम से साधकों के लिए सुखदायक सहस्रनाम स्तोत्र मैंने बता दिया है। यह गोपनीय है, गोपनीय है, गोपनीय है। इसमें कोई संशय नहीं है। आधीरात को बाल खोलकर भक्तियुक्त होकर मनुष्य जप तथा पूजा करके सहस्रनाम का पाठ करे। इससे छः मास के अन्दर विद्या की सिद्धि होती है। हर प्रकार से मनुष्य को देवी का भक्त होना चाहिये। इससे साधक समस्त लोगों का स्तम्भन तथा राजाओं का मोहन कर सकता है। शक्ति का आकर्षण कर सकता है तथा शत्रुओं का मारण कर सकंता है। शत्रु ऐसे साधक के दास हो जाते हैं। हे प्राणप्रिये! इसके पाठ और भाषण से मृत्यु भाग जाती है। प्रशस्ता देवी के प्रसाद से पृथिवी पर क्या नहीं सिद्ध हो सकता? यह परम रहस्य है; यह परम स्वस्त्ययन है। इसे बाहु में धारण करने से महासिद्धि की प्राप्ति होती है। इसमें कोई संशय नहीं है। हे महेश्वरि! इसके समान कोई विद्या नहीं है। इसे जो एक बार पढ़ता है वह सभी सिद्धियों का स्वामी हो जाता है। मङ्गलवार, शुक्रवार या रविवार, अष्टमी तिथि को, अमावस्या या संक्रान्ति पर्वपर जो इस विद्या को पढ़ता है उसका फल अच्छी प्रकार सुनो। एक सौ आठ मन्त्र का जप करके जो सहस्रनाम स्तोत्र का भक्ति से पाठ करता है, हे महादेवि! वह सभी पापों से मुक्त हो जाता है। सब पापों से मुक्त होकर सब सिद्धियों का स्वामी हो जाता है। अष्टमी की रात को चौराहे पर जाकर मनुष्य उड़द और भात की बलि देकर सुदर्शन वामवेदी पर तीन मास तक विधान से सहस्राम स्तोत्र का पाठ करे। इस मन्त्र के पाठ से मनुष्य सब सिद्धियों का स्वामी हो जाता है। हे देवि! यह मैंने सर्वसिद्धिदायक स्तोत्र तुम्हें बता दिया। मनुष्य इसका जप तथा महादेवी का स्मरण करके समस्त पापों से मुक्त हो जाता है। हे देवि! इसे कभी प्रकट नहीं करना चाहिये। इसे सभी देवताओं ने सम्मान दिया है। यह परम रहस्य है। जीवन का संकट उपस्थित होने पर भी इसे गुप्त रखना चाहिये। यह समस्त विभूतियों का कारणस्वरूप श्रेष्ठ स्तोत्र है। जो इस छिन्नमस्ता स्तोत्र को पढ़ता है, वह कुबेर के समान धनाढ्य होता है। सिद्धियों का ज्ञाता वह राजाओं का मान्य और सामान्य लोगों का आश्रयदाता होता है।

इति श्रीविश्वसारतन्त्रे शिवपार्वतीसम्वादे श्रीछिन्नमस्तासहस्रनामस्तोत्रं सम्पूर्णम्।

छिन्नमस्ताहृदयस्तोत्र

श्रीपार्वत्युवाच।

श्रुतं पूजादिकं सम्यग्भवद्वक्त्राब्जनिःसृतम्। हृदयं छिन्नमस्तायाः श्रोतुमिच्छामि साम्प्रतम् ॥१॥

पार्वती बोली : मैंने आपके मुख से प्रकट हुए पूजादिक को अच्छी प्रकार सुन लिया। इस समय मैं छिन्नमस्ता के हृदय स्तोत्र को सुनना चाहती हूं।

महादेव उवाच।

नाद्यावधि मया प्रोक्तं कस्यापि प्राणवल्लभे। यत्त्वया परिपृष्टोहं वक्ष्ये प्रीत्यै तव प्रिये ॥२॥

महादेव बोले : हे प्राणवल्लभे! मैंने आज तक किसी को भी इसे नहीं बतलाया। तुमने पूछा है इसलिए प्रीति के कारण, हे प्रिये! मैं तुम्हे बतला रहा हूं:

विनियोग : ॐ अस्य श्रीछिन्नमस्ताहृदयस्तोत्रमन्त्रस्य भैरवऋषिः सम्राट्छन्दः छिन्नमस्ता देवता हूं बीजं ॐ शक्तिः ह्रीं कीलकं शत्रुक्षयकरणार्थे पाठे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास : ॐ भैरवऋषये नमः शिरसि १। सम्राट्छन्दसे नमो मुखे २ छिन्नमस्तादेवतायै नमो हृदि ३। हूं बीजाय नमो गुह्ये ४। शक्तये नमः पादयोः ५। ह्रीं कीलकाय नमो नाभौ ६। विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ७। इति ऋष्यादि न्यासः।

करन्यास : ॐ अंगुष्ठाभ्यां नमः १। ॐ हूं तर्जनीभ्यां नमः २। ॐ ह्रीं मध्यमाभ्यां नमः ३। ॐ ऐं अनामिकाभ्यां नमः ४। ॐ क्लीं कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५। ॐ हूं करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ६। इति करन्यासः।

हृदयादिषडङ्गन्यासः ॐ हृदयाय नमः १। ॐ हूं शिरसे स्वाहा २। ॐ ह्रीं शिखायै वषट् ३। ॐ ऐं कवचाय हुं ४। ॐ क्लीं नेत्रत्रयाय वौषट् ५। ॐ हूं अस्त्राय फट् ६। इति हृदयादिषडङ्गन्यासः।

अथ ध्यानं :

रक्ताभां रक्तकेशीं करकमललसत्कर्तृकां कालकान्तिं विच्छिन्नात्मीयमुण्डासृगरुणबहुलोदग्रधारां पिबन्तीम्। विघ्नाभ्रौघप्रचण्डश्वसनसमनिभां सेवितां सिद्धसंघैः पद्माक्षीं छिन्नमस्तां छलकरदितिजच्छेदिनीं संस्मरामि ॥१॥ वन्देऽहञ्छिन्नमस्तां तां छिन्नमुण्डधरां पराम्। छिन्नग्रीवोच्छटाच्छन्नां क्षौमवस्त्रपरिच्छदाम् ॥२॥ सर्वदा सुरसंघेन सेवितांघ्रिसरोरुहाम्। सेवे सकलसम्पत्त्यै छिन्नमस्तां शुभप्रदाम् ॥३॥ यज्ञानां योगयज्ञाय या तु जाता युगेयुगे। दानवान्तकरीं देवीच्छिन्नमस्तां भजामि ताम् ॥४॥ वैरोचनीं वरारोहां वामदेवविवर्द्धिताम्। कोटिसूर्यप्रभां वन्दे विद्युद्वर्णाक्षिमण्डिताम् ॥५॥ निजकण्ठोच्छलद्रक्तधारयाया मुहुर्मुहुः। योगिनीस्तन्पर्यन्त्युग्रा तस्याश्चरणमाश्रये ॥६॥ हूमित्येकाक्षरं मन्त्रं यदीयं युक्तमानसः। यो जपेत्तस्य विद्वेषी भस्मतां याति तां भजे ॥७॥ हूं स्वाहेति मनुं सम्यग्यः स्मरत्यर्तिमान्नरः। छिनत्ति छिन्नमस्ता या तस्य बाधां नमामि ताम् ॥८॥ यस्याः कटाक्षमात्रेण क्रूरभूतादयो द्रुतम्। दूरतः संपलायन्ते छिन्नमस्तां भजामि ताम् ॥९॥ क्षितितलपरिरक्षाक्षान्तरोषा सुदक्षा छलयुतखलकक्षाच्छेदने क्षान्तिलक्ष्या। क्षितिदितिजसुपक्षा क्षोणिपाक्षयशिक्षा जयतुजयतु चाक्षा छिन्नमस्तारिभक्षा ॥१०॥ कलिकलुषकलानां कर्तने कर्त्तृहस्ता सुरकुवलयकाशा मन्दभानुप्रकाशा। असुरकुलकलापत्रासिकाऽम्लालमूर्तिर्जयतुजयतु काली छिन्नमस्ता कराली ॥११॥ भुवनभरणभूमिभ्राजमानानुभावा भवभवविभवानां भारणोद्धातभूतिः। द्विजकुलकमलानां भासिनी भानुमूर्तिर्भवतु भवतु वाणी छिन्नमस्ता भवानी ॥१२॥ मम रिपुगणमाशु छेतुमुग्रं कृपाणं सपदि जननि तीक्ष्णं छिन्नमुण्डं गृहाण। भवतु तव यशोलं छिन्धि शत्रुन् खलान्मे मम च परिदिशेष्टं छिन्नमस्ते क्षमस्व ॥१३॥ छिन्नग्रीवा छिन्नमस्ता छिन्नमुण्डधराऽक्षता। क्षोदक्षेमकरी स्वक्षा क्षोणीशाच्छादनक्षमा ॥१४॥ वैरोचनी वरारोहा बलिदान प्रहर्षिता। बलिपूजितपादाब्जा वासुदेवप्रपूजिता ॥१५॥ इति द्वादश नामानि छिन्नमस्ताप्रियाणि यः। स्मरेत्प्रातः समुत्थाय तस्य नश्यन्ति शत्रवः ॥१६॥ यां स्मृत्वा सन्ति सद्यः सकलसुरगणाः सर्वदा सम्पदाढ्याः शत्रूणां संघमाहत्यविशदवदनाः स्वस्थचिताः श्रयन्ति। तस्या संकल्पवन्तः सरसिजचरणं सन्ततं संश्रयन्ति साद्या श्रीशादिसेव्या सुफलतु सुतरां छिन्नमस्ता प्रशस्ता ॥१७॥

इदं हृदयमज्ञात्वा हंतुमिच्छति यो द्विषम्। कथं तस्याचिरं शत्रुर्नाशमेष्यति पार्वति ॥१८॥ यदीच्छेन्नाशनं शत्रोः शीघ्रमेतत्पठेन्नरः। छिन्नमस्ता प्रसन्ना हि ददाति फलमीप्सितम् ॥१९॥ शत्रुप्रशमनं पुण्यं समीप्सितफल प्रदम्। आयुरारोग्यदं चैव पठताम् पुण्यसाधनम् ॥२०॥

इस हृदय स्तोत्र को बिना जाने जो शत्रु को मारने की इच्छा करता है, हे पार्वती! उसका शत्रु शीघ्र कैसे नष्ट होगा? यदि शत्रु का शीघ्र नाश चाहे तो इस स्तोत्र को शीघ्र पढ़ना चाहिये। प्रसन्न होने पर छिन्नमस्ता अभीष्ट फल प्रदान करती है। यह स्तोत्र शत्रु का नाशक है, पुण्यप्रद है तथा अभीप्सित फल प्रदान करने वाला है। यह पाठ करने वालों को आयु तथा आरोग्य प्रदान करता है और पुण्य का साधन है।

इति श्रीनन्द्यावर्ते महादेवपार्वतीसंवादे श्रीछिन्नमस्ताहृदयस्तोत्रं समाप्तम्।

इति श्रीमन्त्रमहार्णवे द्वित्तीयखण्डे छिन्नमस्तातन्त्रे नवमस्तरंग ॥९॥

दशम तरङ्ग

धूमावती तन्त्र

मन्त्रमहोदधि में धूमावती मन्त्र इस प्रकार है:

धूं[1] धूं धूमावती स्वाहा।

यह अष्टाक्षर मन्त्र है:

अस्य विधानं:

विनियोग: अस्य धूमावतीमन्त्रस्य पिप्पलादऋषिः निवृच्छन्दः ज्येष्ठा[2] देवता धूंबीजं[3] स्वाहा शक्तिः धूमावती कीलकं ममाभीष्टसिध्यर्थे[4] जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास: ॐ पिप्पलादऋषये नमः शिरसि १। निवृच्छन्दसे नमः मुखे २। ज्येष्ठादेवतायै नमः हृदि ३। धूं बीजाय नमः गुह्ये ४। स्वाहाशक्तये नमः पादयोः ५। धूमावती कीलकाय नमः नाभौ ६। विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ७। इति ऋष्यादिन्यासः।

करन्यास: ॐ धूं धूं अंगुष्ठाभ्यां नमः १। ॐ धूं तर्जनीभ्यां नमः २। ॐ मां मध्यमाभ्यां नमः ३। ॐ वं अनामिकाभ्यां नमः ४। ॐ तीं कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५। ॐ स्वाहा करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ६। इति करन्यासः[5]।

हृदयादिषडङ्गन्यास: ॐ धूं धूँ हृदयाय नमः १। ॐ धूं शिरसे स्वाहा २। मां शिखायै वषट् ३। ॐ वं कवचाय हुं ४। ॐ तिं नेत्रत्रयाय वौषट् ५। ॐ स्वाहा अस्त्राय फट् ६। इति हृदयादिषडंगन्यासः।

इस प्रकार न्यास करने के पश्चात् ध्यान करे।

अध ध्यानं:

अत्युच्चा मलिनाम्बराखिलजनोद्वेगावहा दुर्मना रूक्षाक्षित्रितया विशालदशना सूर्योदरी चञ्चला। प्रस्वेदाम्बुचिता क्षुधाकुलतनुः कृष्णातिरूक्षाप्रभा ध्येया मुक्तकचा सदाप्रियकलिर्धूमावती मन्त्रिणा॥१॥

तन्त्रांतरेपि ध्यानं यथा:

विवर्णा चञ्चला दुष्टा दीर्घा च मलिनाम्बरा। विमुक्तकुन्तला रूक्षा विधवा विरलद्विजा। काकध्वजरथारूढा विलम्बितपयोधरा। शूर्पहस्तातिरक्ताक्षीधृतहस्ता वरान्विता। प्रवृद्धघोणा तु भृशं कुटिला कुटिलेक्षणा। क्षुत्पिपासार्दिता नित्यं भयदा कलहास्पदा॥२॥

इति ध्यायेत्। ततः पीठादौ रचिते सर्वतोभद्रमण्डले मण्डूकादिपरतत्त्वान्तपीठदेवताः संस्थाप्य ॐ मं मण्डूकादिपरतत्त्वान्तपीठदेवताभ्यो नमः। इति पीठदेवताः सम्पूज्य नव पीठशक्तीः पूजयेत्।

---

१ तन्त्रान्तरेपि धूं धूं धूमावति ठः ठः। इति मन्त्रः।

२ तन्त्रान्तरे धूमावती देवता।

३ इति बीजादिकं मतान्तरेपि ज्ञेयम्।

४ शत्रुहनने जपे विनियोगः।

५ तन्त्रान्तरेपि धां धीं धूं धैं धौं धः इति षड्बीजैः षडंगं कुर्यात्।

धूमावती ध्यान

विवर्णा चञ्चला दुष्टा दीर्घा च मलिनाम्बरा।
विमुक्तकुन्तला रूक्षा विधवाविरलद्विजा।।
काकध्वजरथारूढा विलम्बितपयोधरा।
शूर्पहस्तातिरक्ताक्षीधृतहस्ता वरान्विता।।
प्रवृद्धघोणा तु भृशं कुटिला कुटिलेक्षणा।
क्षुत्पिपासार्दिता नित्यं भयदा कलहास्पदा।।

पृ० ५१२

इस प्रकार ध्यान करने के बाद पीठादि पर बनाये गये सर्वतोभद्रमण्डल में मण्डूकादि से लेकर परतत्वान्त पीठदेवताओं को संस्थापित करके "ॐ मं मण्डूकादि परतत्वान्तपीठदेवताभ्यो नमः" इस मन्त्र से पीठदेवताओं की पूजा करके नवपीठ शक्तियों की पूजा इस प्रकार करनी चाहिये।

पूर्वाद्यष्टसु दिक्षु ॐ कामदायै नमः १। ॐ मानदायै नमः २। ॐ नक्तायै नमः ३। मधुरायै नमः ४। ॐ मधुराननायै नमः ५। ॐ नर्मदायै नमः ६। ॐ भोगदायै नमः ७। ॐ नन्दायै नमः ८। मध्ये ॐ प्राणदायै नमः ९।

इति पीठशक्तीः पूजयेत्। ततः स्वर्णादिनिर्मितं यन्त्रं मूर्तिं वा ताम्रपात्रे निधाय घृतेनाभ्यज्य तदुपरि दुग्धधारां जलधारां च दत्त्वा स्वच्छवस्त्रेण प्रोक्ष्य ॐ धूमावतीयोगपीठाय नमः। इति मन्त्रेण पुष्पाद्यासनं दत्त्वा पीठमध्ये संस्थाप्य प्रतिष्ठां च कृत्वा पुनर्ध्यात्वा मूलेन मूर्तिं प्रकल्प्य पाद्यादिपुष्पान्तैरुपचारैः सम्पूज्य देव्याज्ञां गृहीत्वा आवरणपूजां कुर्यात्। पुष्पाञ्जलिमादाय संविन्मये परे देवि परामृतरसप्रिये। अनुज्ञां देहि मातस्त्वं परिवारार्चनाय मे। इति पठित्वा पुष्पाञ्जलिं दद्यात्। इत्याज्ञां गृहीत्वा षट्कोणकेसरेषु आग्नेयादिचतुर्दिक्षु मध्ये दिक्षु च षडंगानि पूजयेत्।

इन मन्त्रों से पीठशक्तियों की पूजा करके स्वर्ण आदि से निर्मित यन्त्र और मूर्ति को ताम्रपात्र में रखकर घी से उसका अभ्यङ्ग करके उसे दूध और जल से स्नान करा कर स्वच्छ वस्त्र से पोंछ कर "ॐ धूमावतीयोगपीठाय नमः" इस मन्त्र से पुष्प आदि का आसन देकर पीठ के बीच में प्रतिष्ठित करके पुनः ध्यान करके मूल से मूर्ति की कल्पना करके पाद्य आदि से पुष्पदान पर्यन्त उपचारों से पूजा करके देवी से आज्ञा लेकर आवरण पूजा करे जैसा कि आगे कहा जा रहा है: पुष्पाञ्जलि लेकर "ॐ संविन्मये परे देवि परामृतरसप्रिये। अनुज्ञां देहि मातस्त्वं परिवारार्चनाय मे।" यह पढ़ कर पुष्पाञ्जलि देवे। इस प्रकार आज्ञा लेकर षट्कोण केसरों में आग्नेयी आदि चारों दिशाओं तथा मध्य दिशाओं में षडङ्ग का इस प्रकार पूजन करे। (धूमावती पूजन यन्त्र देखिये चित्र १९)

ॐ धूं धूं हृदयाय नमः[1]। हृदय श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। इति सर्वत्र १। ॐ धूं शिरसे स्वाहा[2]। शिरः श्रीपा० २। ॐ मां शिखायै वषट्[3]। शिखाश्रीपा० ३। ॐ वं नमः कवचाय[4] हुं। कवचश्रीपा० ४। ॐ तिं नेत्रत्रयाय वौषट्[5]। नेत्रत्रयश्रीपा० ५। ॐ स्वाहा अस्त्राय फट्[6]। अस्त्रश्रीपा० ६।

इस प्रकार षडङ्ग पूजन करना चाहिये। इसके बाद पुष्पाञ्जलि लेकर मूल का उच्चारण करके: अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले। भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम्॥ १॥" यह पढ़कर पुष्पाञ्जलि देकर: "पूजितास्तर्पितास्सन्तु" यह बोले। इति प्रथमावरण॥ १॥

ततोष्टदले पूज्यपूजकयोरन्तरालं प्राची तदनुसारेण अन्याः दिशाः प्रकल्प्य प्राचीक्रमेण।

इसके बाद अष्टदल में पूज्य और पूजक के अन्तराल को पूर्व दिशा मानकर तदनुसार अन्य दिशाओं की कल्पना करके पूर्वादि क्रम से:

ॐ क्षुधायै नमः[7]। क्षुधाश्रीपा० १। ॐ तृष्णायै नमः[8]। तृष्णाश्रीपा० २। ॐ रत्यै नमः[9]। रतिश्रीपा० ३। ॐ निद्रायै नमः[10]। निद्राश्रीपा० ४। ॐ निर्ऋत्यै नमः[11]। निर्ऋतिश्रीपा० ५। ॐ दुर्गत्यै नमः[12]। दुर्गतिश्रीपा० ६। ॐ रुषायै नमः[13]। रुषाश्रीपा० ७। ॐ अक्षमायै नमः[14]। अक्षमाश्रीपा० ८।

इत्यष्टौ शक्तीः पूजयित्वा पुष्पाञ्जलिं दद्यात्। इति द्वितीयावरणम्॥२॥

इससे आठ शक्तियों की पूजा करके पुष्पाञ्जलि दे। इति द्वितीयावरण॥ २॥

ततो भूपूरे पूर्वादिक्रमेण इन्द्रादि दशदिक्पालान्[15-24] वज्राद्यायुधानि[25-34] च पूजयित्वा पुष्पाञ्जलिं दद्यात्। इत्यावरणपूजां कृत्वा धूपादिनमस्कारान्तं सम्पूज्य श्मशाने दिगम्बरो भूत्वा जपं कुर्यात्। अस्य पुरश्चरणमेकलक्षजपः। तिलमिश्रितघृतेन दशांशतो होमः तत्तद्दशांशेन तर्पणमार्जन ब्राह्मणभोजनानि कुर्यात्। एवं कृते मन्त्रः सिद्धो भवति। एतस्मिन्सिद्धे मन्त्रे मन्त्री प्रयोगान् साधयेत्।

इसके बाद भूपुर में पूर्वादि क्रम से इन्द्र आदि दश दिक्पालों तथा उनके वज्र आदि आयुधों की पूजा करके पुष्पाञ्जलि देनी चाहिये। इस प्रकार आवरण पूजा करके धूपदान से नमस्कार तक पूजा करके श्मशान में सर्वथा नग्न होकर जप करना चाहिये। इसका पुरश्चरण एक लाख जप है। जप का दशांश तिलमिश्रित घी से होम और तत्तद्दशांश तर्पण, मार्जन एवं ब्राह्मण भोजन कराना चाहिये। ऐसा करने से मन्त्र सिद्ध होता है। इस मन्त्र के सिद्ध होने से साधक प्रयोगों को सिद्ध करे।

एवं ध्यात्वा जपेल्लक्षं श्मशाने विगताम्बरः। निशाभोजी दशांशेन तिलैर्हवनमाचरेत्॥ १॥ एवं ज्येष्ठां समाराध्य सिद्धो मन्त्रः प्रजायते।

इस प्रकार ध्यान करके श्मशान में एकदम नग्न होकर मात्र रात्रि में भोजन करने वाला साधक जप के दशांश संख्यानुसार तिल से होम करे। इस प्रकार ज्येष्ठा की पूजा करने के बाद मन्त्र सिद्ध होता है।

प्रयोगो यथा: उपोष्य[1] कृष्णभूताहे नग्नो मुक्तशिरोरुहः॥ २॥ शून्यागारे श्मशाने वा कान्तारे भूधरेऽथवा। प्रत्यहं प्रजपेन्निर्भीर्ध्यायन् देवीं शवासनाः॥ ३॥ एवं लक्षं जपन्मन्त्री नाशयेदचिरादरीन्। जुहुयाल्लवणोपेतराजिकां निशि तत्फलम्॥ ४॥

प्रयोग यथा: कृष्ण चतुदर्शी के दिन उपवास करके सिर के बाल खुले तथा नग्न होकर शून्य घर में, श्मशान में, वन में या भूधरे में शव पर बैठ कर देवी का ध्यान करते हुए जप करना चाहिये। इस प्रकार साधक एक लाख जप करता हुआ रात्रि में राई में नमक मिलाकर होम करे। इसका फल यह होता है कि साधक शीघ्र ही शुत्रुओं का नाश कर देता है।

फेत्कारिणीतन्त्रे प्रयोगविशेषः अस्थ्युपरि लिखेन्मन्त्रं तस्मिन् स्थाप्य शिवं यजेत्। अवष्टभ्य शिवं शत्रुनाम्ना प्रजपेन्मनुम्॥ ५॥

फेत्कारिणी तन्त्र में विशेष प्रयोग इस प्रकार कहा गया है: साधक हड्डी के ऊपर मन्त्र को लिखे, उसमें शिव को स्थापित करके जप करे। शिव को अवष्टभ्य करके शत्रु के नाम से मनु (मन्त्र) का जप करे।

सहस्रार्धमतः शत्रुर्ज्वरेण परिगृह्यते: पञ्चगव्येन शान्तिः स्याज्ज्वरस्य पयसापि वा॥ ६॥ कृत्वा मन्त्रे रिपोराख्यामरण्यामिनी दले। उत्साहो जायते शत्रोर्मनोरयुतजापतः॥ ७॥ दग्ध्वा काकं श्मशानाग्नौ तद्भस्मादाय मन्त्रितम्[2]। शीर्षे विरोधिनः क्षिप्त्वा उच्चाटो जायते क्षणात्॥ ८॥ श्मशानभस्मना कृत्वा शिवं तस्योपरि न्यसेत्। विरोधिनामसंरुद्धं कृष्णपक्षे समर्चयेत्। महिषीरूप मासाद्य स्वप्ने शत्रुं विनाशयेत्॥ ९॥ मन्त्रेणानेन निखनेतद्भस्म रिपुमन्दिरे। शत्रुमुच्चाटयेन्नूनं नात्र कार्या विचारणा॥ १०॥ श्मशानभस्मना लिङ्गं कृत्वा पुष्पादिनार्चयेत्। भवन्निति सम्भाव्य मनसा कर्म चिन्तयम्॥ ११॥ निम्बकाकच्छदावेकीकृत्य चाष्टशतं जपेत। दद्याद्धूपं साध्यनाम्ना[3] सद्यो विद्वेषयेदरीन्॥ १२॥ चितिकाष्ठानले क्षीरहोमाच्छान्तिः सदा भवेत्। रजोधूमप्रदानेन गृध्ररूपेण कालिका॥ १३॥ मारयत्यरिमागत्य शान्तिनिर्माल्यधूपतः। वाराहकर्णधूपेन हन्याच्छूकररूपिणी॥ १४॥ अश्वत्थपत्रधूपेन शान्तिर्भवति नान्यथा। शान्तिः सर्वापि चावश्यं पञ्चगव्येन जायते। क्षीरेण चापि देवेशि मधुरत्रितयेन वा॥ १५॥ इत्यष्टाक्षरी धूपावतीमन्त्रप्रयोगः।

पाँच सौ मन्त्र के जप के बाद शत्रु ज्वर के पीड़ित होता है। ज्वर की शान्ति पञ्चगव्य या जल

---

१ फेत्कारिणीतन्त्रे: जपेत्कृष्णचतुर्दर्श्यां पुरश्चरणसिद्धये। उपवासरतो मन्त्री शून्यागारे दिवानिशम्। श्मशाने विपिने वापिं जपेल्लक्षं तु वाग्यतः। सोष्णीषः सार्द्धवासाश्च पुरश्चरणकर्मणि।

२ अथोत्तरशतमभिमन्त्रयेत्।

३ अमुकं विद्वेषयेति मूलेन धूपं दद्यात्।

से होती है। मन्त्र में शत्रु का नाम लेकर वन में आधीरात को एक लाख शत्रु मन्त्र का जप करने से साधक के मन में उत्साह उत्पन्न होता है। श्मशान की अग्नि में कौवे को जलाकर अभिमन्त्रित उसके भस्म को लेकर शत्रु के सिर पर फेकने से तत्काल उसका उच्चाटन होता है। कृष्णपक्ष में श्मशान के भस्म से शिवलिङ्ग बनाकर उसपर शत्रु के नाम से युक्त न्यास करके उसका पूजन करे। इससे स्वप्न में भैंसे का रूप धारण करके वह शत्रु का विनाश कर देता है। इस मन्त्र से शत्रु के घर में भस्म को गाड़ देवे। इससे शत्रु का उच्चाटन होता है, इसमें विचार करने की आवश्यकता नहीं। श्मशान के भस्म से शिवलिङ्ग बनाकर मन से कर्म चिन्तन करता हुआ, हे भगवन्! इस प्रकार निवेदन करके पुष्पादि से पूजा करे। नीम तथा कौवे का पङ्ख एक में मिलाकर एक सौ आठ जप करना चाहिये। इससे देवता के नाम से धूप देने से साधक तत्काल शत्रुओं में परस्पर विद्वेष उत्पन्न कर देता है। चिता की लकड़ी की अग्नि में दूध का होम करने से सदा शान्ति होती है। नारी रज का धूम प्रदान करने से कालिका गृध्र के रूप में आकर शत्रु को मारती है। शान्ति निर्माल्यधूप से, वराहकर्ण जड़ी के धूप से काली सूअर का रूप धारण करके शत्रु को मार डालती है। पीपल के पत्तों के धूप से शान्ति होती है अन्य किसी उपाय से नहीं। हे देवेशि! पञ्चगव्य, दूध या मधुरत्रय से सभी प्रकार की शान्ति हो जाती है।

इति अष्टाक्षरी धूमावती मन्त्रप्रयोग।

धूमावती कवच

श्रीपार्वत्युवाच।

धूमावत्यर्चनं शम्भो श्रुतं विस्तरयो मया। कवचं श्रोतुमिच्छामि तस्या देव वदस्व मे।

पार्वतीजी बोली: हे शम्भो! मैंने विस्तार से धूमावती की पूजा सुनी, हे देव! अब मैं कवच सुनना चाहती हूं, उसे मुझे आप बतायें।

श्री भैरव उवाच।

शृणु देवि परं गुह्यं न प्रकाश्यं कलौ युगे। कवचं श्रीधूमवत्याः शत्रुनिग्रहकारकम्॥ २॥ ब्रह्माद्या देवि सततं यद्वशादरिघातिनः। योगिनी भवन्ति शत्रुघ्ना यस्या ध्यानप्रभावतः॥ ३॥

भैरव बोले: हे देवि! यह शत्रु का दमन करने वाला धूमावती का कवच कलियुग में अत्यन्त गोप्य है। हे देवि! ब्रह्मा आदि देव इसके कारण सदा ही शत्रु का संहार करने वाले हुए है। इसके ध्यान के प्रभाव से योगिजन शत्रु का नाश करने वाले होते हैं।

विनियोग: ॐ अस्य श्रीधूमावतीकवचस्य पिप्पलादऋषिरनुष्टुप्छन्दः श्रीधूमावती देवता धूं बीजं स्वाहा शक्तिः धूमावती कीलकं शत्रुहनने पाठे विनियोगः।

ॐधूं बीजं मे शिरः पातु धूं ललाटं सदावतु। धूमा नेत्रयुगं पातु वती कर्णौ सदावतु॥ ४॥ दीर्घा तूदरमध्ये तु नाभिं मे मलिनाम्बरा। शूर्पहस्ता पातु गुह्यं रूक्षा रक्षतु जानुनी॥ ५॥ मुखं मे पातु भीमाख्या स्वाहा रक्षतु नासिकाम्। सर्वविद्याऽवतु कण्ठ विवर्णा बाहुयुग्मकम्॥ ६॥ चञ्चला हृदयं पातु धृष्टा पार्श्वे सदाऽवतु। धूमहस्ता सदाऽवतु धूमहस्ता सदा पातु पादौ पातु भयावहा॥ ७॥ प्रवृद्धरोमा तु भृशं कुटिला कुटिलेक्षणा। क्षुत्पिपासार्दिता देवी भयदा कलहप्रिया॥ ८॥ सर्वाङ्ग पातु मे देवी सर्वशत्रुविनाशिनी।

इति ते कथितं पुण्यं कवचं भुवि दुर्लभम्॥ ९॥ न प्रकाश्यं न प्रकाश्यं न प्रकाश्यं कलौ युगे। पठनीय महादेवि त्रिसन्ध्यं ध्यानतत्परैः॥ १०॥ दुष्टाभिचारो देवेशि तद्गात्रं नैव संस्पृशेत्॥ ११॥ इति भैरवी भैरवसम्वादे धूमावतीतत्त्वे धूमावतीकवचं सम्पूर्णम्।

हे देवि! यह पुण्य कवच जो मैंने तुम से कहा है, वह दुर्लभ है। कलियुग में इसे प्रकाशित न करना। प्रातः मध्याह्न तथा सायं ध्यानतत्पर होकर इसका पाठ करना चाहिये। हे देवि! दुष्टाभिचार इसके साधक के शरीर का स्पर्श नहीं कर सकते।

धूमावतीस्तोत्र

प्रातर्या स्यात्कुमारी कुसुमकलिकया जापमाला जपन्ती मध्याह्ने प्रौढरूपा विकसितवदना चारुनेत्रा निशायाम्। संध्यायां वृद्धरूपा गलितकुचयुगा मुण्डमालां वहन्ती सा देवी देवदेवी त्रिभुवनजननी कालिका पातु युष्मान् ॥ १ ॥ बद्ध्वा खट्वाङ्गखेटौ कपिलवरजटामण्डलं पद्मयोनेः कृत्वा दैत्योत्तमाङ्गैः स्रजमुरसि शिरःशेखरं तार्क्ष्यपक्षैः। पूर्ण रक्तैः सुराणां यम महिषमहाशृङ्गमादाय पाणौ पायाद्वो वन्द्यमानप्रलयमुदितया भैरवः कालरात्र्याम् ॥ २ ॥ चर्वन्तीमस्थिखण्डं प्रकटकटकटाशब्दसंघातमुग्रं कुर्वाणा प्रेतमध्ये कहहकहकहाहास्यमुग्रं कृशाङ्गी। नित्यं नित्यप्रसक्ता डमरुडिमडिमान् स्फारयन्ती मुखाब्जं पायान्नश्चण्डिकेयं झझमझझझमाजल्पमाना भ्रमन्ती ॥ ३ ॥ टंटंटंटंटंटाप्रकरटमटमाना घण्टां वहन्ती स्फेंस्फेंस्फेंस्कारकारा टकटकितहसा नादसंघट्टभीमा। लोलन्मुण्डाग्रमाला ललहलहलहालोललोलाग्रवाचं चर्वन्ती चण्डमुण्डं मटमटमटितैश्चर्वयन्ती पुनातु ॥ ४ ॥ वामे कर्णे मृगांकं प्रलप परिगतं दक्षिणे सूर्यबिम्बं कण्ठे नक्षत्रहारं वरविकटजटाजूटके मुण्डमालाम्। स्कन्धे कृत्वोरगेन्द्रध्वजनिकरयुतं ब्रह्मकंकालभारं संहारे धारयन्ती मम हरतु भयं भद्रदा भद्रकाली ॥ ५ ॥ तैलाभ्यक्तैकवेणी त्रपुमयविलसत्कर्णिकाक्रान्तकर्णा लौहेनैकेन कृत्वा चरणनलिन कामात्मनः पादशोभाम्। दिग्वासा रासभेन ग्रसति जगदिदं या यवाकर्णपूरा वर्षिण्यातिप्रवृद्धा ध्वजविततभुजा सासि देवि त्वमेव ॥ ६ ॥ संग्रामे हेतिकृत्तैः सरुधिरदशनैर्यद्भटानां शिरोभिर्मालामाबद्ध्य मूर्ध्नि ध्वजविततभुजा त्वं श्मशाने प्रविष्टा। दृष्टा भूतप्रभूतैः पृथुतरज घनाबद्धनागेन्द्रकाञ्ची शूलाग्रव्यग्रहस्ता मधुरुधिरसदाताम्रनेत्रा निशायाम् ॥ ७ ॥ दंष्ट्रारौद्रे मुखेऽस्मिंस्तव विशति जगद्देवि सर्वं क्षणार्द्धात् संसारस्यान्तकाले नररुधिरवशासम्प्लवे धूमधूम्रे। काली कापालिकी सा शवशयनरता योगिनी योगमुद्रा रक्ता ऋद्धिः सभास्था मरणभयहरा त्वं शिवा चण्डघण्टा ॥ ८ ॥

धूमावत्यष्टकं पुण्यं सर्वापद्विनिवारकम्। यः पठेत्साधको भक्त्या सिद्धिं विंदति वाञ्छिताम् ॥ ९ ॥
महापदि महाघोरे महारोगे महारणे। शत्रूच्चाटे मारणादौ जन्तूनां मोहने तथा ॥ १० ॥
पठेत्स्तोत्रमिदं देवि सर्वत्र सिद्धिभाग्भवेत्। देवदानवगन्धर्वा यक्षराक्षसपन्नगाः ॥ ११ ॥
सिंहव्याघ्रादिकाः सर्वे स्तोत्रस्मरणमात्रतः। दूराद्दूरतरं यान्ति किं पुनर्मानुषादयः ॥ १२ ॥
स्तोत्रेणानेन देवेशि किं न सिद्ध्यति भूतले। सर्वशान्तिर्भवेद्देवि अन्ते निर्वाणतां व्रजेत् ॥ १३ ॥

यह धूमावती अष्टक पुण्य स्तोत्र सब पापों का निवारण करने वाला है। जो साधक भक्ति से इसका पाठ करता है वह वांछित फलों की सिद्धि को पाता है। भारी आपत्ति में, महारोग में, महायुद्ध में, शत्रु के उच्चाटन में, शत्रु के मारण में तथा प्राणियों के मोहन में, हे देवि! जो इस स्तोत्र को पढ़ता है वह सर्वत्र सफलता को प्राप्त करता है। देव, दानव, गन्धर्व, यक्ष, राक्षस, सर्प, सिंह, व्याघ्र आदि सभी स्तोत्र के स्मरण मात्र से दूर, बहुत दूर भाग जाते हैं, फिर मनुष्य आदि का क्या कहना। हे देवेशि! इस स्तोत्र से पृथिवी पर क्या सिद्ध नहीं हो सकता? हे देवि! इस स्तोत्र से सभी प्रकार की शांति हो जाती है और साधक अन्त में मुक्ति को प्राप्त करता है।

इत्यूर्ध्वाम्नाये धूमावतीस्तोत्रं समाप्तम्।

धूमावत्यष्टोत्तरशतनामस्तोत्र

ईश्वर उवाच।

ॐधूमावती धूम्रवर्णा धूम्रापानपरायणा। धूम्राक्षमथिनी धन्या धन्यस्थाननिवासिनी ॥ १ ॥ अघोराचारसन्तुष्टा अघोराचारमण्डिता। अघोरमन्त्रसम्प्रीता अघोरमन्त्रसम्पूजिता ॥ २ ॥ अट्टाट्टहासनिरता मलिनाम्बरधारिणी। वृद्धा विरूपा विधवा विद्या च विरलद्विजा ॥ ३ ॥ प्रवृद्धघोणा कुमुखी कुटिला कुटिलेक्षणा। कराली च करालास्या कंकाली शूर्पधारिणी ॥ ४ ॥ काकध्वजरथारूढा केवला कठिना कुहूः। क्षुत्पिपासार्दिता नित्या ललज्जिह्वा दिगम्बरा ॥ ५ ॥ दीर्घोदरी दीर्घरवा दीर्घाङ्गी दीर्घमस्तका। विमुक्तकुन्तला कीर्त्या कैलासस्थानवासिनी ॥ ६ ॥ क्रूरा कालस्वरूपा च कालचक्रप्रवर्तिनी। विवर्णा चञ्चला दुष्टा दुष्टविध्वंसकारिणी ॥ ७ ॥ चण्डी चण्डस्वरूपा च चामुण्डा चण्डनिःस्वना। चण्डवेगा चण्डगतिश्चण्डमुण्डविनाशिनी ॥ ८ ॥ चाण्डालिनी चित्ररेखा चित्राङ्गी चित्ररूपिणी। कृष्णा कपर्दिनी कुल्ला कृष्णरूपा क्रियावती ॥ ९ ॥ कुम्भस्तनी महोन्मत्ता मदिरापानविह्वला। चतुर्भुजा ललज्जिह्वा शत्रुसंहारकारिणी ॥ १० ॥ शवारूढा शवगता श्मशानस्थानवासिनी। दुराराध्या दुराचारा दुर्जनप्रीतिदायिनी ॥ ११ ॥ निर्मांसा च निराकारा धूमहस्ता वरान्विता। कलहा च कलिप्रीता कलिकल्मषनाशिनी ॥ १२ ॥ महाकालस्वरूपा च महाकालप्रपूजिता। महादेवप्रिया मेधा महासंकटनाशिनी ॥ १३ ॥ भक्तप्रिया भक्तगतिर्भक्तशत्रुविनाशिनी। भैरवी भुवना भीमा भारती भुवनात्मिका ॥ १४ ॥ भरुण्डा भीमनयना त्रिनेत्रा बहुरूपिणी। त्रिलोकेशी त्रिकालज्ञा त्रिस्वरूपा त्रयीतनुः ॥ १५ ॥ त्रिमूर्तिश्च तथा तन्वी त्रिशक्तिश्च त्रिशूलिनी। इति धूमामहत्स्तोत्रं नाम्नामष्टशतात्मकम् ॥ १६ ॥

मया ते कथितं देवि शत्रुसंघविनाशनम्। कारागारे रिपुग्रस्ते महोत्पाते महाभये ॥ १७ ॥ इदं स्तोत्रं पठेन्मर्त्यो मुच्यते सर्वसङ्कटैः। गुह्याद्गुह्यतरं गुह्यं गोपनीयं प्रयत्नतः। चतुष्पदार्थदं नृणां सर्वसम्पत्प्रदायकम् ॥ १८ ॥

हे देवि! मैंने शत्रुसमूहविनाशक यह स्तोत्र तुम्हें बताया। कारागार में, शत्रु से त्रस्त होने पर, भारी उत्पात होने पर तथा भारी भय के उपस्थित होने पर जो इस स्तोत्र का पाठ करता है, वह समस्त सङ्कटों से मुक्त हो जाता है। यह स्तोत्र गोप्य से भी गोप्यतर है। प्रयत्नपूर्वक इसको गुप्त रखना चाहिये।

इति धूमावत्यष्टोत्तरशतनामस्तोत्रं समाप्तम्।

धूमावतीसहस्रनामस्तोत्र

श्रीभैरव्युवाच।

धूमावत्या धर्मरात्र्याः कथयस्व महेश्वर। सहस्रनामस्तोत्रं मे सर्वसिद्धिप्रदायकम ॥ १ ॥

भैरवी बोलीं: हे महेश्वर! धर्मरात्रि धूमावती का सर्वसिद्धिदायक सहस्रनामस्तोत्र आप मुझे बतायें।

श्रीभैरव उवाच।

शृणु देवि महामाये प्रिये प्राणस्वरूपिणी। सहस्रनामस्तोत्रं मे भवशत्रु विनाशनम् ॥ २ ॥

भैरव बोले: हे देवि, महामाये, प्राणस्वरूपिणी, प्रिये! संसार के शत्रुओं का विनाश करने वाला यह सहस्रनाम स्तोत्र सुनो :

विनियोग: ॐ अस्य श्रीधूमावतीसहस्रनामस्तोत्रस्य पिप्पलाद ऋषिः पंक्तिश्छन्दो धूमावती देवता शत्रुविनिग्रहे पाठे विनियोगः।

धूमाधूमवती धूमा धूमपानपरायणा। धौता धौतगिरा धाम्नी धूमेश्वरनिवासिनी ॥ ३ ॥ अनन्ताऽनन्तरूपा च अकाराकाररूपिणी। आद्या आनन्ददा नन्दा इकारा इन्द्ररूपिणी ॥ ४ ॥ घनधान्यार्थवाणीदा यशोधर्मप्रियेष्टदा। भाग्यसौभाग्यभक्तिस्था गृहपर्वतवासिनी ॥ ५ ॥ रामरावण सुग्रीवमोहदा हनुमत्प्रिया। वेदशास्त्रपुराणज्ञा ज्योतिश्छन्दःस्वरूपिणी ॥ ६ ॥ चातुर्यचारुरुचिरा रञ्जनप्रेम तोषदा। कमलासनसुधावक्त्रा चन्द्रहासा स्मितानना ।७॥ चतुरा चारुकेशी च चतुर्वर्गप्रदा मुदा। कला कलाधरा धीरा धारिणी वसुनीरदा ॥ ८ ॥ हीरा हीरकवर्णाभा हरिणायतलोचना। दम्भमोहक्रोधलोभस्नेहद्वेषहरा परा ॥ ९ ॥ नरदेवकरी रामा रामानन्द मनोहरा। योगभोगक्रोधलोभहरा हरनमस्कृता ॥१०॥ दानमानज्ञानमानपानगानसुखप्रदा। गजगोश्वप्रदा गञ्जा भूतिदा भूतनाशिनी ॥ ११ ॥ भवभावा तथा बाला वरदा हरवल्लभा। भगभङ्गभया माला मालतीमालना हृदा ॥ १२ ॥ जालवालहालकालक पालप्रियवादिनी। करञ्जशील गुञ्जाढ्या चूतांकुरनिवासिनी ॥ १३ ॥ पनसस्था पानसक्ता पनशेशकुटुम्बिनी। पावनी पावनाधारापूर्णा पूर्ण मनोरथा ॥ १४ ॥ पूत पूतकला पौरा पुराणसुरसुन्दरी। परेशी परदा पारा परत्मा परमोहिनी ॥१५॥ जगन्माया जगत्कर्त्री जगत्कीर्तिर्जगन्मयी। जननी जयिनी जायाजिता जिनजयप्रदा ॥ १६ ॥ कीर्तिज्ञानध्यानमानदायिनी दानवेश्वरी। काव्य व्याकरणज्ञा काप्रज्ञा प्राज्ञानदायिनी ॥ १७ ॥ विज्ञाज्ञा विज्ञजयदा विज्ञा विज्ञप्रपूजिता। परावरेज्या वरदा पारदा शारदा दरा ॥ १८ ॥ दारिणी देवदूती च दमना दमनामदा। परमज्ञानगम्या च परेशी परगा परा ॥ १९ ॥ यज्ञा यज्ञप्रदा यज्ञज्ञानकार्यकरी शुभा। शोभिनी शुभ्रपथिनी निशुम्भासुरमर्द्दिनी ॥ २० ॥ शाम्भवी शम्भुपत्नी च शम्भुजाया शुभानना। शाङ्करी शङ्कराराध्या सन्ध्या सन्ध्यासुधर्मिणी ॥ २१ ॥ शत्रुघ्नी शत्रुहा शत्रुप्रदा शात्रवनाशिनी। शैवी शिवलया शैला शैलराजप्रिया सदा ॥ २२ ॥ शर्वरी शर्वरी शम्भुः सुधाढ्या सौधवासिनी। सगुणा गुणरूपा च गौरवी भैरवारवा ॥ २३ ॥ गौराङ्गी गौरदेहा च गौरी गुरुमती गुरुः। गौर्गौर्गव्यस्वरूपा च गुणानन्दस्वरूपिणी ॥ २४ ॥ गणेशगणदा गुण्या गुणागौरववाञ्छिता। गणमाता गणाराध्या गणकोटि विनाशिनी ॥ २५ ॥ दुर्गा दुर्जनहन्त्री च दुर्जनप्रीतिदायिनी। स्वर्गापवर्गदा दात्री दीना दीनदयावती ॥ २६ ॥ दुर्निरीक्ष्या दुरादुःस्था दौःस्थ्यभञ्जनकारिणी। श्वेतपाण्डुरकृष्णाभा कालदा कालनाशिनी ॥ २७ ॥ कर्मनर्मकरी नर्मा धर्मा धर्मविनाशिनी। गौरी गौरवदा गोदा गणदा गायनप्रिया ॥ २८ ॥ गङ्गा भागीरथी भङ्गा भगा भाग्यविवर्द्धिनी। भवानी भवहन्त्री च भैरवी भैरवासना ॥ २९ ॥ भीमा भीमरवा भैमी भीमानन्द प्रदायिनी। शरण्या शरणा शम्या शशिनी शङ्खनाशिनी ॥ ३० ॥ गुणा गुणकरी गौणी प्रिया प्रीतिप्रदायिनी। जगमोहनकर्त्री च जगदानन्ददायिनी ॥ ३१ ॥ जिता जाया च विजया विजया जयदायिनी। कामा काली करालास्या खर्वा खञ्जा खरागदा ॥ ३२ ॥ गर्वा गुरुत्मती धर्मा घर्घरा घोरनादिनी। चराचरी चराराध्या छिन्ना छिन्नमनोरथा ॥ ३३ ॥ छिन्नमस्ता जया जाप्या जगज्जाया च झर्झरी। झकारा झीष्कृतिष्टीका टङ्का टङ्कारनादिनी ॥ ३४ ॥ ठीका ठक्कुरठक्काङ्गी ठठठाङ्कार ढुण्ढुरा। ढुण्ढीता राजतीर्णा च तालस्था भ्रमनाशिनी ॥ ३५ ॥ थकारा थकरादात्री दीपा दीपविनाशिनी। धन्या धना धनवती नर्मदा नर्ममोदिनी ॥ ३६ ॥ पद्मा पद्मावती पीता स्फान्ता फूत्कारकारिणी। फुल्ला ब्रह्ममयी ब्राह्मी ब्रह्मानन्दप्रदायिनी ॥ ३७ ॥ भवाराध्या भवाध्यक्षा भगाली

मन्दगामिनी। मदिरा मदिरेक्षा च यशोदा यमपूजिता ॥ ३८ ॥ याम्या राम्या रामरूपा रमणी ललितालता। लङ्केश्वरी वाक्प्रदा वाच्या सदाश्रमवासिनी ॥ ३९ ॥ श्रान्ता शकाररूपा च षकारा खरवाहना। सह्याद्रिरूपा सानन्दा हरिणी हरिरूपिणी ॥ ४० ॥ हराराध्या बालवा च लवङ्गप्रेमतोषिता। क्षपाक्षयप्रदा क्षीरा अकारादिस्वरूपिणी ॥ ४१ ॥ कालिका कालमूर्तिश्च कलहा कलहप्रिया। शिवा शन्दायिनी सौम्या शत्रुनिग्रहकारिणी ॥ ४२ ॥ भवानी भवमूर्तिश्च शर्वाणी सर्वमङ्गला। शत्रुविद्राविणी शैवी शुम्भासुरविनाशिनी ॥ ४३ ॥ धकारमन्त्ररूपा च धूंबीजपरितोषिता। धनाध्यक्षसुता धीरा धरारूपा धरावती ॥ ४४ ॥ चर्विणी चन्द्रपूज्या च छन्दोरूपा छटावती। छाया छायावती स्वच्छा छेदिनी भेदिनी क्षमा ॥ ४५ ॥ वल्गिनी वर्द्धिनी वन्द्या वेदमाता बुधस्तुता। धारा धारावती धन्या धर्मदानपरायणा ॥ ४६ ॥ गर्विणी गुरुपूज्या च ज्ञानदात्री गुणान्विता। धर्मिणी धर्मरूपा च घण्टानादपरायणा ॥४७॥ घण्टानिनादिनी घूर्णा घूर्णिता घोररूपिणी। कलिघ्नी कलिदूती च कलिपूज्य कलिप्रिया ॥ ४८ ॥ कालनिर्णाशिनी काल्या काव्यदा कालरूपिणी। वर्षिणी वृष्टिदा वृष्टिर्महावृष्टिनिवारिणी ॥ ४९ ॥ घातिनी घाटिनी घोण्टा घातकी घनरूपिणी। धूंबीजा धूंजपा नन्दा धूंबीजजपतोषिता ॥ ५० ॥ धूंधूंबीजजपासक्ता धूंधूंबीजपरायणा। धूंकारहर्षिणी धूमा घनदा धनगर्विता ॥ ५१ ॥ पद्मावती पद्ममाला पद्मयोनिप्रपूजिता। अपारा पूर्णपूर्णा तु पूर्णिमापरिवन्दिता ॥ ५२ ॥ फलदा फलभोक्त्री च फलिनी फलदायिनी। फूत्कारिणी फलावाप्त्री फलभोक्त्री फलाविन्ता ॥ ५३ ॥ वारिणी वारणप्रीता वारिपाथोधिपारगा। विवर्णा धूम्रनयना धूम्राक्षी धूम्ररूपिणी ॥ ५४ ॥ नीतिर्नीतिस्वरूपा च नीतिज्ञा नयकोविदा। तारिणी तरिरूपा च तत्त्वज्ञानपरायणा ॥ ५५ ॥ स्थूला स्थूलाधरा स्थात्री उत्तमस्थानवासिनी। स्थूला पद्मपदस्थाना स्थानभ्रष्टा स्थलस्थिता ॥ ५६ ॥ शोषिणी शोभिनी शीता शीतपानीयपायिनी। शारिणी शाङ्खिनी शुद्धा शङ्खासुरविनाशिनी ॥ ५७ ॥ शर्वरी शर्वरीपूज्या शर्वरीशप्रपूजिता। शर्वरीजागृता योग्या योगिनी योगिवन्दिता ॥ ५८ ॥ योगिनीगणसंसेव्या योगिनीयोगभाविता। योगमार्गरता युक्ता योगमार्गानुसारिणी ॥ ५९ ॥ योगभावा योगयुक्ता यामिनीपतिवन्दिता। अयोग्या योधिनी योद्ध्री युद्धकर्मविशारदा ॥ ६० ॥ युद्धमार्गरतानन्ता युद्धस्थाननिवासिनी। सिद्धा सिद्धेश्वरी सिद्धिः सिद्धिगेहनिवासिनी ॥ ६१ ॥ सिद्धरीतिः सिद्धप्रीतिः सिद्धा सिद्धान्तकारिणी। सिद्धगम्या सिद्धपूज्या सिद्धवन्द्या सुसिद्धिदा ॥ ६२ ॥ साधिनी साधनप्रीता साध्या साधनकारिणी। साधनीया साध्यसाध्या साध्यसंघसुशोभिनी। साध्वी साधुस्वभावा सा साधुसन्ततिदायिनी। साधुपूज्या साधुवन्द्या साधुसन्दर्शनोद्यता ॥ ६४ ॥ साधुदृटा साधुपृष्टा साधुपोषणतत्परा। सात्त्विकी सत्त्वसंसिद्धा सत्त्वसेव्या सुखोदया ॥ ६५ ॥ सत्त्ववृद्धिकरी शान्ता सत्त्वसंहर्षमानसा। सत्त्वज्ञाना सत्त्वविद्या सत्त्वसिद्धान्तकारिणी ॥ ६६ ॥ सत्त्ववृद्धिः सत्त्वसिद्धिः सत्त्वसम्पन्नमानसा। चारुरूपा चारुदेहा चारुचञ्चललोचना ॥ ६७ ॥ छद्मिनी छद्मसंकल्पा छद्मवार्ता क्षमाप्रिया। हठिनी हठसम्प्रीतिर्हठवार्ता हठोद्यमा ॥ ६८ ॥ हठकार्या हठधर्मा हठकर्मपरायणा। हठसम्भोगनिरता हठात्काररतिप्रिया ॥ ६९ ॥ हठसम्भेदिनी हृद्या हृद्यवार्ता हरिप्रिया। हरिणी हरिणीदृष्टिर्हरिणीमांसभक्षणा ॥ ७० ॥ हरिणाक्षी हरिणापा हरिणीगण हर्षदा। हरिणीगणसंहन्त्री हरिणीपरिपोषिका ॥ ७१ ॥ हरिणीमृगयासक्ता हरिणीमानपुरः सरा। दीना दीनकृतिर्दूना द्राविणी

द्रविणप्रदा ॥ ७२ ॥ द्रविणाचलसम्वासा द्रविता द्रव्यसंयुक्ता। दीर्घा दीर्घपदा दृश्या दर्शनीया दृढ़ाकृतिः ॥ ७३ ॥ दृढा दुष्टमतिर्दुष्टा द्वेषिणी द्वेषिभञ्जिनी। दोषिणी दोषसंयुक्ता दुष्टशत्रुविनाशिनी ॥ ७४ ॥ देवतार्तिहरा दुष्टदैत्यसंघविदारिणी। दुष्टदानवहन्त्री च दुष्टदैत्यनिषूदिनी ॥ ७५ ॥ देवताप्राणदा देवी देवदुर्गतिनाशिनी। नटनायकसंसेव्या नर्त्तकी नर्त्तकप्रिया ॥ ७६ ॥ नाट्यविद्या नाट्यकर्त्री नादिनी नादकारिणी। नवीना नूतना नव्या नवीनवस्त्रधारिणी। ॥ ७७ ॥ नव्यभूषा नव्यमाल्या नव्यालङ्कारशोभिता। नकारवादिनी नभ्या नवभूषणभूषिता ॥ ७८ ॥ नीचमार्गा नीचभूमिर्नीचमार्गगतिर्गतिः। नाथसेव्या नाथभक्ता नाथानन्दप्रदायिनी ॥ ७९ ॥ नम्रा नम्रगतिर्नेत्री निदानवाक्यवादिनी। नारीमध्यस्थिता नारी नारीमध्यगताऽनघा ॥ ८० ॥ नारीप्रीतिर्नराराध्या नरनाम प्रकाशिनी। रती रतिप्रिया रम्या रतिप्रेमा रतिप्रदा ॥ ८१ ॥ रतिस्थानस्थिताऽऽराध्या रहिहर्षप्रदायिनी। रतिरूपा रतिध्याना रतिरीतिसुधारिणी ॥ ८२ ॥ रतिरासमहोल्लासा रतिरासविहारिणी। रक्तिकान्तस्तुता राशी राशिरक्षणकारिणी ॥ ८३ ॥ अरूपा शुद्धरूपा च सुरूपा रूपगर्विता। रूपयोवनसम्पन्ना रूपराशी रमावती ॥ ८४ ॥ रोधिनी रोषिणी रुष्टा रोषिरुद्धा रसप्रदा। मादिनी मदनप्रीता मधुमत्ता मधुप्रदा ॥ ८५ ॥ मद्यपा मद्यपध्येया मद्यपप्राणरक्षिणी। मद्यपानन्ददात्री च मद्यपप्रेमतोषिता ॥ ८६ ॥ मद्यपानरता मत्ता पद्यपानविहारिणी। मदिरा मदिरारक्ता मदिरापानहर्षिणी ॥ ८७ ॥ मदिरापानसन्तुष्टा मदिरापानमोहिनी। मदिरामानसा मुग्धा माध्वीपा मदिराप्रदा ॥ ८८ ॥ माध्वीदानसदानन्दा माध्वीपानरता सदा। मोदिनी मोदसन्दात्री मुदिता मोदमानसा ॥ ८९ ॥ मोदकर्त्री मोददात्री मोदमङ्गलकारिणी। मोदकादानसन्तुष्टा मोदकग्रहणक्षमा ॥ ९० ॥ मोदकालब्धिसंक्रुद्धा मोदकप्राप्तितोषिणी। मांसादा मांससम्भक्षा मांसभक्षणहर्षिणी ॥ ९१ ॥ मांसपाकपरप्रेमा मांसपाकालयस्थिता। मत्स्यमांसकृतास्वादामकारपञ्चकार्चिता ॥ ९२ ॥ मुद्रा मुद्रान्विता माता महामोहा मनस्विनी। मुद्रिका मुद्रिकायुक्ता मुद्रिकाकृतलक्षणा ॥ ९३ ॥ मुद्रिकालंकृता माद्री मन्दराचलवासिनी। भन्दराचलसंसेव्या मन्दराचलवासिनी ॥ ९४ ॥ मन्दरध्येयपादाब्जा मन्दरारण्यवासिनी। मन्दुरावासिनी मन्दा मारिणी मारिका मिता ॥ ९५ ॥ महामारी महामारीश-मिनी शवसंस्थिता। शवमांसकृताहारा श्मशानालयवासिनी ॥ ९६ ॥ श्मशानसिद्धिसंहृष्टा श्मशान भवनस्थिता। श्मशानशयनागारा श्मशानभस्मलेपिता ॥ ९७ ॥ श्मशानभस्मभीमाङ्गी श्मशानावासकारिणी। शामिनी शमनाराध्या शमनस्तुतिवन्दिता ॥ ९८ ॥ शमनाचारसन्तुष्टा शमनागारवासिनी शमनस्वामिनी शान्तिः शान्तसज्जनपूरिता ॥ ९९ ॥ शान्तापूजापरा शान्ता शान्तागारप्रभोजिनी। शान्तपूज्या शान्तवन्द्या शान्तग्रहसुधारिणी ॥ १०० ॥ शान्तरूपा शान्तियुक्ता शान्तचन्द्रप्रभाऽमला। अमला विमलाऽम्लाना मालतीकुञ्जवासिनी ॥ १०१ ॥ मालतीपुष्पसम्प्रीता मालतीपुष्पपूजिता। महोग्रा महती मध्या मध्यदेशनिवासिनी ॥ १०२ ॥ मध्यमध्वनिसम्प्रीता मध्यमध्वनिकारिणी। मध्यमा मध्यमप्रीतिर्मध्यमप्रेतपूरिता ॥ १०३ ॥ मध्याङ्गचित्रवसना मध्यखिन्ना महोद्धता। महेन्द्रसुरसम्पूज्या महेन्द्रपरिवन्दिता ॥ १०४ ॥ महेन्द्रजालसंयुक्ता महेन्द्रजालकारिणी। महेन्द्रमानिता मान्या मानिनीगणमध्यगा ॥ १०५ ॥ मानिनीमानसंप्रीता मानविध्वंसकारिणी। मानिन्याकर्षिणी मुक्तिर्मुक्तिदात्री सुमुक्तिता ॥ १०६ ॥ मुक्तिद्वेषकरी मूल्यकारिणी मूल्यहारिणी।

निर्मूला मूलसंयुक्ता मूलिनी मूलमन्त्रिणी ॥ १०७ ॥ मूलमन्त्रकृतार्हाद्या मूलमन्त्रार्घहर्षिणी । मूलमन्त्रप्रतिष्ठात्री मूलमन्त्रप्रहर्षिणी ॥ १०८ ॥ मूलमन्त्रप्रसन्नास्या मूलमन्त्रप्रपूजिता । मूलमन्त्रप्रणेत्री च मूलमन्त्रकृतार्चना ॥ १०९ ॥ मूलमन्त्रप्रहृष्टात्मा मूलविद्या मलापहा । विद्याऽविद्या वटस्था च वटवृक्षनिवासिनी ॥ ११० ॥ वटवृक्षकृतस्थाना वटपूजापरायणा । वटपूजापरिप्रीता वटदर्शन लालसा ॥ १११ ॥ वटपूजाकृताह्लादा वटपूजाविवर्द्धिनी । वशिनी विवशाराध्या वशीकरणमन्त्रिणी ॥ ११२ ॥ वशीकरणसम्प्रीता वशीकारकसिद्धिदा । बटुका बटुकाराध्या बटुकाहारदायिनी ॥ ११३ ॥ बटुकार्चापरा पूज्या बटुकार्चाविवर्द्धिनी बटुकानन्दकर्त्री च बटुकप्राणरक्षिणी ॥ ११४ ॥ बटुकेज्याप्रदाऽपारा पारिणी पार्वतीप्रिया । पर्वताग्रकृतावासा पर्वतेन्द्रप्रपूजिता ॥ ११५ ॥ पार्वतीपतिपूज्या च पार्वतीपतिहर्षदा । पार्वतीपतिबुद्धिस्था पार्वतीपतिमोहिनी ॥ ११६ ॥ पार्वतीयद्विजाराध्या पर्वतस्था प्रतारिणी । पद्मला पद्मिनी पद्मा पद्ममालाविभूषिता ॥ ११७ ॥ पद्मजाढ्यपदा पद्ममालालंकृतमस्तका । पद्मार्चितपदद्वन्द्वा पद्महस्ता पयोधिजा ॥ ११८ ॥ पयोधिपारगंत्री च पयोधिपरिकीर्तिता । पाथोधिपारगा पूता पल्वलाम्बुप्रतर्पिता ॥ ११९ ॥ पल्वलान्तः पयोमग्ना पवमानगतिर्गतिः । पयःपाना पयोदात्री पानीयपरिकांक्षिणी ॥ १२० ॥ पयोजमालाभरणा मुण्डमालाविभूषणा । मुण्डिनी मुण्डहन्त्री च मुण्डिता मुण्डशोभिता ॥ १२१ ॥ मणिभूषा मणिग्रीवा मणिमालाविराजिता । महामोहा महाशौर्या महामाया महाहवा ॥ १२२ ॥ मानवी मानवीपूज्या मनुवंशविवर्द्धिनी । मठिनी मठसंहन्त्री मठसम्पत्तिहारिणी ॥ १२३ ॥ महाक्रोधवती मूढा मूढशत्रुविनाशिनी । पाठीनभोजिनी पूर्णा पूर्णहारविहारिणी ॥ १२४ ॥ प्रलयानलतुल्याभा प्रलयानलरूपिणी । प्रलयार्णव संमग्ना प्रलयाब्धिविहारिणी ॥ १२५ ॥ महाप्रलयसम्भूता महाप्रलयकारिणी । महाप्रलयसम्प्रीता महाप्रलयसाधिनी ॥ १२६ ॥ महाप्रलयसम्पूज्या महाप्रलयमोदिनी । छेदिनी छिन्नमुण्डोग्रा छिन्ना छिन्न रुहार्थिनी ॥ १२७ ॥ शत्रुसंछेदिनी छन्ना क्षोदिनी क्षोदकारिणी । लक्षिणी लक्षसम्पूज्या लक्षिता लक्षणान्विता ॥१२८॥ लक्षशस्त्रासमायुक्ता लक्षबाणप्रमोचिनी । लक्षपूजापराऽलक्ष्या लक्षकोदण्डखण्डिनी ॥१२९॥ लक्षकोदण्डसंयुक्ता लक्षकोदण्डधारिणी । लक्षलीलालया लभ्या लक्षागारनिवासिनी ॥१३०॥ लक्षलोभपरा लोला लक्षभक्तप्रपूजिता । लोकिनी लोकसम्पूज्या लोकरक्षणकारिणी ॥१३१॥ लोकवन्दितपादाब्जा लोकमोहनकारिणी । ललिता लालिता लीना लोकसंहारकारिणी ॥१३२॥ लोकलीलाकरी लोक्या लोकसम्भवकारिणी । भूतशुद्धिकरी भूतरक्षिणी भूतपोषिणी ॥१३३॥ भूतवेतालसंयुक्ता भूतसेनासमावृता । भूतप्रेतपिशाचादिस्वामिनी भूतपूजिता ॥१३४॥ डाकिनीशाकिनीडेया डिण्डिमारावकारिणी । डमरुवाद्यसन्तुष्टा डमरुवाद्यकारिणी ॥ १३५॥ हूंकारकारिणी होत्री हविनी हवनार्थिनी । हासिनी ह्रासिनी हास्यहर्षिणी हठवादिनी ॥१३६॥ अट्टाट्टहासिनी टीका टीकानिर्माणकारिणी । टङ्किनी टङ्किता टङ्का टङ्कामात्रसुवर्णदा ॥१३७॥ टङ्कारिणी टकाराढ्यशत्रुत्रोटनकारिणी । त्रुटिता त्रुटिरूपा च त्रुटिसन्देहकारिणी ॥१३८॥ तर्षिणी तृट्परिक्लान्ता क्षुत्क्षामा क्षुत्परिप्लुता । अक्षिणी तक्षिणी भिक्षाप्रार्थिनी शत्रुभक्षिणी ॥१३९॥ कांक्षिणी कुट्टिनी क्रूरा कुट्टिनीवेश्मवासिनी । कुट्टिनीकोटिसम्पूज्या कुट्टिनीकुलमार्गिणी ॥१४०॥ कुट्टिनी कुलसंरक्षा कुट्टिनीकुलरक्षिणी । कालापाशावृता कन्या

कुमारीपूजनप्रिया ॥१४१॥ कौमुदी कौमुदीहृष्टा करुणादृष्टिसंयुता। कौतुकाचारनिपुणा कौतुकागारवासिनी ॥१४२॥ काकपक्षधरा काकरक्षिणी काकसंवृता। काकाङ्करथसंस्थाना काकाङ्कस्यन्दनस्थिता ॥१४३॥ काकिनी काकदृष्टिश्च काकभक्षणदायिनी। काकामाता काकयोनिः काकमण्डलमण्डिता ॥१४४॥ काकदर्शनसंशीला काकसङ्कीर्णमन्दिरा। काकध्यानस्थदेहादिध्यानगम्याऽधमावृता ॥१४५॥ धनिनी धनिसंसेव्या धनच्छेदनकारिणी। धुन्धुरा धुन्धुराकारा धूम्रलोचनघातिनी ॥१४६॥ धूङ्कारिणी च धूंमन्त्रपूजिता धर्मनाशिनी। धूम्रवर्णा च धूम्राक्षी धूम्राक्षासुरघातिनी ॥१४७॥ धूंबीजजपसन्तुष्टा धूंबीजजपमानसा। धूंबजजपपूजार्हा धूंबीजजपकारिणी ॥१४८॥ धूंबीजकर्षिता धृष्या धर्षिणी धृष्टमानसा। धूलिप्रक्षेपिणी धूलिव्याप्तधम्मिल्लधारिणी ॥१४९॥ धूंबीजजपमालाढ्या धूंबीजनिन्दकान्तका। धर्मविद्वेषिणी धर्मरक्षिणी धर्मतोषिता ॥१५०॥ धारास्तम्भकरी धूर्ता धारावारिविलासिनी। धां धीं धूं धैं मन्त्रवर्णा धौंधः स्वाहास्वरूपिणी ॥१५१॥ धरित्रीपूजिता धूर्वा धान्यच्छेदनकारिणी। धिक्कारिणी सुधीपूज्या धामोद्यानानिवासिनी ॥१५२॥ धामोद्यानपयोदात्री धामधूलिप्रधूलिता। महाध्वनिमती धूप्या धूपामोदप्रहर्षिणी ॥१५३॥ धूपादानमतिप्रीता धूपदानविनोदिनी। धीवरीगणसम्पूज्या धीवरीवरदायिनी ॥१५४॥ धीवरीगणमध्यस्था धीवरीधामवासिनी। धीवरीगणगोप्त्री च धीवरीगणतोषिता ॥१५५॥ धीवरीधनदात्री च धीवरीप्राणरक्षिणी। धात्रीशा धातृसम्पूज्या धात्रीवृक्षसमाश्रया ॥१५६॥ धात्रीपूजनकर्त्री च धात्रीरोपणकारिणी। धूम्रपान रतासक्ता धूम्रपानरतेष्टदा ॥१५७॥ धूम्रपानकरानन्दा धूम्रवर्षणकारिणी। धन्यशब्दश्रुतिप्रीता धुन्धुकारिजनच्छिदा ॥१५८॥ धुन्धुकारीष्टसन्दात्री धुन्धुकारिसुमुक्तिदा। धुन्धुकार्याराध्यरूपा धुन्धुकारिमनःस्थिता ॥१५९॥ धुन्धुकारिहिताकांक्षी धुन्धुकारिहितैषिणी। धिन्धिमाराविणी ध्यात्री ध्यानगम्या धनार्थिनी ॥१६०॥ धोरिणी धोरणप्रीता धोरिणी घोररूपिणी। धरित्रीरक्षिणी देवी धराप्रलयकारिणी ॥१६१॥ धराधरसुताऽशेषधाराधरसमद्युतिः। धनाध्यक्षा धनप्राप्तिर्धनधान्यविवर्द्धिनी ॥१६२॥ धनाकर्षणकर्त्री च धनाहरणकारिणी। धनच्छेदनकर्त्री च धनहीना धनप्रिया ॥१६३॥ धनसंवृद्धिसम्पन्ना धनदानपरायणा। धनहृष्टा धनपुष्टा दानाध्ययनकारिणी ॥१६४॥ धनरक्षा धनप्राणा धनानन्दकरी सदा। शत्रुहन्त्री शवारूढा शत्रुसंहारकारिणी ॥१६५॥ शत्रुपक्षक्षतिप्रीता शत्रुपक्षनिषूदिनी। शत्रुग्रीवाच्छिदा छाया शत्रुपद्धतिखण्डिनी ॥१६६॥ शत्रुप्राणहरा हाय्या शत्रून्मूलनकारिणी। शत्रुकार्यविहन्त्री च साङ्गशत्रुविनाशिनी ॥१६७॥ सांगशत्रुकुलच्छेत्री शत्रुसद्मप्रदाहिनी। सांगसायुध सर्वारिसर्वसम्पत्तिनाशिनी ॥१६८॥ साङ्गसायुधसर्वारिदेहगेहप्रदाहिनी। इतीदं धूमरूपिण्याः स्तोत्रं नामसहस्रकम् ॥१६९॥

यः पठेच्छून्यभवने सन्ध्यान्ते यतमानसः। मदिरामोदयुक्तो वै देवीध्यानपरायणः ॥१७०॥ तस्य शत्रुः क्षयं याति यदि शक्रसमोपि वै। भवपाशहरं पुण्यं धूमावत्याः प्रियं महत् ॥१७१॥ स्तोत्रं सहस्रनामाख्यं मम वक्त्राद्विनिर्गतम् ॥ पठेद्वा शृणुयाद्वापि शत्रुघातकरो भवेत् ॥१७२॥ न देयं परशिष्यायाऽभक्ताय प्राणवल्लभे। देयं शिष्याय भक्ताय देवीभक्तपराय च। इदं रहस्यं परमं दुर्लभं दुष्टचेतसाम् ॥१७३॥

सायंकाल के बाद मदिरा के गन्ध से युक्त देवी में ध्यान लगाये हुए, मन को एकाग्र कर जो साधक इस धूमावती सहस्रनाम स्तोत्र का पाठ करता है उसका शत्रु विनाश को प्राप्त हो जाता है चाहे वह

इन्द्र के समान भी क्यों न हो। यह धूमावती सहस्रनाम स्तोत्र मेरे मुख से निकला हुआ है। यह संसार के बन्धनों से मुक्ति दिलाने वाला, पुण्य तथा धूमावती का परम प्रिय स्तोत्र है। जो इसे पढ़े या सुने वह शत्रु का नाश करने वाला होता है। हे प्राणवल्लभे, अन्य के शिष्य को तथा जो भक्त न हो उसे नहीं देना चाहिए। जो भक्त हो और विशेष रूप से देवीभक्त शिष्य हो उसे इस स्तोत्र को देना चाहिये। दुष्ट स्वभाव वालों के लिए यह स्तोत्र अत्यन्त दुर्लभ तथा रहस्यमय है।

इति श्रीभैरवीतन्त्रे भैरवीभैरवसम्वादे धूमावतीसहस्रनामस्तोत्रं समाप्तम्।

धूमावतीहृदय

विनियोग : ॐ अस्य श्रीधूमावतीहृदयस्तोत्रमन्त्रस्य पिप्पलाद ऋषिरनुष्टुप्छन्दः श्रीधूमावती देवता धूं बीजं ह्रीं शक्तिः क्लीं कीलकं सर्वशत्रुसंहरणे पाठे विनियोगः।

हृदयादिषडङ्गन्यास : ॐ धां हृदयाय नमः १। ॐ धीं शिरसे स्वाहा २। ॐ धूं शिखायै वषट् ३। ॐ धैं कवचाय हुम् ४। ॐ धौं नेत्रत्रयाय वौषट् ५। ॐ धः अस्त्राय फट् ६। इति हृदयादिषडङ्गन्यासः।

इसी प्रकार करन्यास करे।

अथ ध्यानम् :

ॐ धूम्राभां धूम्रवस्त्रां प्रकटितदशनां मुक्तवालाम्बराढ्यां काकाङ्कस्यन्दनस्थां धवलकरयुगां शूर्पहस्तातिरूक्षाम्। नित्यं क्षुत्क्षामदेहां मुहुरतिकुटिलां वारिवांछाविचित्रां ध्यायेद्धूमावतीं वामनयनयुगलां भीतिदां भीषणास्याम्॥१॥

कल्पादौ या कालिकाद्याऽचीकलन्मधुकैटभौ। कल्पान्ते त्रिजगत्सर्वं धूमावतीं भजामि ताम्॥२॥ गुणागाराऽगम्यगुणा या गुणागुणवर्धिनी। गीता वेदार्थतत्त्वज्ञैर्धूमावतीं भजामि ताम्॥३॥ खट्वाङ्गधारिणी खर्वाखण्डिनी खलरक्षसाम्। धारिणी खेटकस्यापि धूमावतीं भजामि ताम्॥४॥ घूर्णघूर्णकरा घोरा घूर्णिताक्षी घनस्वना। घातिनी घातकानां या धूमावतीं भजामि ताम्॥५॥ चर्वन्तीमस्थिखण्डानां चण्डमुण्डविदारिणीम्। चण्डाट्टहासिनीं देवीं भजे धूमावतीमहम्॥६॥ छिन्नग्रीवां क्षताच्छन्नां छिन्नमस्तस्वरूपिणीम्। छेदिनीं दुष्टसङ्घानां भजे धूमावतीमहम्॥७॥ जाता या याचिता देवैरसुराणां विघातिनी। जल्पन्ती बहु गर्जन्ती भजे तां धूम्ररूपिणीम्॥८॥ झङ्कारकारिणीं झंझां झंझमाझमवादिनीम्। झटित्याकर्षिणीं देवीं भजे धूमावतीमहम्॥९॥ टीपटङ्कारसंयुक्तां धनुष्टंकारकारिणीम्। घोरां घनघटाटोपां वन्दे धूमावतीमहम्॥१०॥ ठंठंठंठंमनुप्रीतिं ठःठःमन्त्रस्वरूपिणीम्। ठमकाह्वगति प्रीतां भजे धूमावतीमहम्॥११॥ डमरूडिंडिमारावां डाकिनीगणमण्डिताम्। डाकिनीभोगसन्तुष्टां भजे धूमावतीमहम्॥१२॥ ढक्कानादेन सन्तुष्टां ढक्कावादकसिद्धिदाम्। ढक्कावादचलच्चित्तां भजे धूमावतीमहम्॥१३॥ तत्त्ववार्त्ताप्रियप्राणां भवपाथोधितारिणीम्। तारस्वरूपिणीं तारां भजे धूमावतीमहम्॥१४॥ थांथींथूंथैंमन्त्ररूपां थैंथौंथंथःस्वरूपिणीम्। थकारवर्णसर्वस्वां भजे धूमावतीमहम्॥१५॥ दुर्गास्वरूपिणीं देवीं दुष्टदानवदारिणीम्। देवदैत्यकृतध्वंसां वन्दे धूमावतीमहम्॥१६॥ ध्वान्ताकारांघकध्वंसांमुक्तधम्मिल्लधारिणीम्। धूमधाराप्रभां धीरां भजे धूमावतीमहम्॥१७॥ नर्तकीनटनप्रीतां नाट्यकर्मविवर्द्धिनीम्। नारसिंहींनराराध्यां नौमि धूमावतीमहम्॥१८॥

पार्वतीपतिसम्पूज्यां पर्वतोपरिवासिनीम्। पद्मारूपां पद्मपूज्यां नौमि धूमावतीमहम् ॥१९॥ फूत्कारसहितश्वासां फट्मन्त्रफलदायिनीम्। फेत्कारिगणसंसेव्यां सेवे धूमावतीमहम् ॥२०॥ बलिपूज्यां बलाराध्यां बगलारूपिणीं वराम्। ब्रह्मादिवंदिताम् विद्यां वन्दे धूमावतीमहम् ॥२१॥ भव्यरूपां भावाराध्यां भुवनेशीस्वरूपिणीम्। भक्तभव्यप्रदां देवीं भजे धूमावतीमहम् ॥२२॥ मायां मधुमतीं मान्यां मकरध्वजमानिताम्। मत्स्यमांसमहास्वादां मन्ये धूमावतीमहम् ॥२३॥ योगयज्ञप्रसन्नास्यां योगिनीपरिसेविताम्। यशोदां यज्ञफलदां यजे धूमावतीमहम् ॥२४॥ रामाराध्यपदद्वन्द्वां रावणध्वंसकारिणीम्। रमेशरमणीं पूज्यामहं धूमावतीं श्रये ॥२५॥ लक्षलीलाकलालक्ष्यां लोकवन्द्यपदाम्बुजाम्। लम्बितां बीजकोशाढ्यां वन्दे धूमावतीमहम् ॥२६॥ बकपूज्यपदाम्भोजां बकध्यानपरायणाम्। बालां बकारिसंध्येयां वन्दे धूमावतीमहम् ॥२७॥ शाङ्करीं शङ्करप्राणां सङ्कटध्वंसकारिणीम्। शत्रुसंहारिणीं शुद्धां श्रये धूमावतीमहम् ॥२८॥ षडाननारिसंहन्त्रीं षोडशीरूपधारिणीम्। षड्रसास्वादिनीं सौम्यां सेवे धूमावतीमहम् ॥२९॥ सुरसेवितपादाब्जां सुरसौख्यप्रदायिनीम्। सुन्दरीगणसंसेव्यां सेवे धूमावतीमहम् ॥३०॥ हेरम्बजननीं योग्यां हास्यलास्यविहारिणीम्। हारिणीं शत्रुसङ्घानां सेवे धूमावतीमहम् ॥३१॥ क्षीरोदतीरसम्वासां क्षीरपानप्रहर्षिताम्। क्षणदेशेज्यपादाब्जां सेवे धूमावतीमहम् ॥३२॥

चतुस्त्रिंशद्वर्णकानां प्रतिवर्णादिनामभिः। कृतं तु हृदयं स्तोत्रं धूमावत्याः सुसिद्धिदम् ॥३३॥ य इदं पठति स्तोत्रं पवित्रं पापनाशनम्। स प्राप्नोति परां सिद्धिं धूमावत्याः प्रसादतः ॥३४॥ पठन्नेकाग्रचित्तो यो यद्यदिच्छति मानवः। सत्सर्वं समवाप्नोति सत्यं सत्यं वदाम्यहम् ॥३५॥

चौबीस वर्णों का प्रत्येक वर्ण के नाम से उत्तम सिद्धि प्रदान करने वाला यह धूमावती देवी का हृदयस्तोत्र बनाया गया है। जो इस पवित्र पापनाशक स्तोत्र को पढ़ता है वह धूमावती के प्रसाद से परम सिद्धि को प्राप्त करता है। जो मनुष्य एकाग्रचित्त होकर इसका पाठ करता है, वह जो इच्छा करता है वह सब पा लेता है, यह मैं परम सत्य कहता हूं।

इति धूमावतीहृदयं समाप्तम्

इति श्रीमन्त्रमहार्णवे द्वितीय खण्डे धूमावतीतन्त्रे

दशमस्तरङ्गः ॥१०॥

बगलामुखी ध्यान

मध्ये सुधाब्धि मणिमण्डप रत्नसिंहासनोपरिगताम्परिपीतवर्णाम्।
पीताम्बराभरण माल्यविभूषिताङ्गीं देवीं नमामि धृतमुद्गरवैरिजिह्वाम्।।
जिह्वाग्रमादाय करेण देवीं वामेन शत्रून्परिपीडयन्तीम्।
गदाभिघातेन च दक्षिणेन पीताम्बराढ्यान्द्विभुजान्नमामि।।

पृ० ५२६

एकादश तरङ्ग

बगलामुखी तन्त्र

तत्रादौ पटलप्रारम्भ:

अथ प्रवक्ष्ये शत्रूणां स्तम्भिनीं बगलामुखीम्। साधकानां हितार्थाय स्तम्भनाय वैरिणाम् ॥१॥ तन्त्रान्तरेपि।

साधकों के हित के लिए तथा वैरियों के स्तम्भन के लिए शत्रुस्तम्भिनी बगलामुखी देवी का मैं वर्णन करूँगा। दूसरे तन्त्र में भी कहा गया है:

ब्रह्मास्त्रं च प्रवक्ष्यामि सद्यःप्रत्ययकारणम्। यस्य स्मरणमात्रेण पवनोपि स्थिरायते ॥२॥

शीघ्र ही विश्वासदायक ब्रह्मास्त्र मैं कहूंगा, जिसके स्मरण मात्र से पवन भी स्थिर हो जाता है।

मन्त्रो यथा मन्त्रमहोदधौ:

मन्त्रमहोदधि में मन्त्र इस प्रकार है:

ॐ ह्लीं बगलामुखि सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय जिह्वां कीलय बुद्धिं विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा। इति षट्त्रिंशदक्षरो मन्त्रः।

अस्य विधानम्:

आचम्य प्राणानायम्य देशकालौ संकीर्त्य मम श्रीबगलामुख्यमुकमन्त्रसिद्ध्यर्थे श्रीबगलामुखीप्रसादार्थममुकसंख्यापरिमितजपं तत्तद्दशांशेन हवनतर्पणमार्जनब्राह्मणभोजनरूपपुरश्चरणं (अमुकसंख्यापरिमितजपरूपपुरश्चरणं वा) अहं करिष्ये। इति संकल्प्य।

आचमन और प्राणायाम करने के बाद देशकाल संकीर्तन करके बगलामुखी मन्त्र की सिद्धि के लिए जप संख्या के निर्देश, और तत्तद्दशांश से क्रमशः हवन, तर्पण, मार्जन और ब्राह्मणभोजन रूप पुरश्चरण करने का संकल्प करे।

विनियोग: ॐ अस्य श्रीबगलामुखीमन्त्रस्य नारदऋषिः बृहतीच्छन्दः बगलामुखी देवताह्लीं बीजं स्वाहा शक्तिः ममाखिलावाप्तये जपे विनियोगः

इससे जल फेंक दे।

ऋष्यादिन्यास: ॐ नारदऋषये नमः शिरसि १। बृहतीच्छन्दसे नमः मुखे २। बगलादेवतायै नमः हृदि ३। ह्लीं बीजाय नमः गुह्ये ४। स्वाहाशक्तये नमः पादयोः ५। विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ६। इति ऋष्यादिन्यासः।

करन्यास: ॐ ह्लीं अंगुष्ठाभ्यां नमः १। बगलामुखि तर्जनीभ्यां नमः २। सर्वदुष्टानां मध्यमाभ्यां नमः ३। वाचं मुखं पदं स्तम्भय अनामिकाभ्यां नमः ४। जिह्वां कीलय कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५। बुद्धिं विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ६। इति करन्यासः।

ऋष्यादिषडङ्गन्यास: ॐ ह्लीं हृदयाय नमः १। बगलामुखि शिरसे स्वाहा २। सर्वदुष्टानां शिखायै वषट् ३। वाचं मुखं पदं स्तम्भय कवचाय हुम् ४। जिह्वां कीलय नेत्रत्रयाय वौषट् ५। बुद्धिं विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा अस्त्राय फट् ६। इति हृदयादिषडङ्गन्यासः।

तन्त्रान्तरेपि (न्यासेऽविशेषः)

मूलं पठित्वा आत्मतत्त्वव्यापिनीं श्रीबगलामुखीश्रीपादुकां पूजयामि इति मूलाधारे १। मूलं पठित्वा विद्यातत्त्वव्यापिनीं श्रीबगलामुखीश्रीपादुकां पूजयामि इति हृदये २। मूलं पठित्वा शिवतत्त्वव्यापिनीं श्रीबगलामुखीश्रीपादुकां पूजयामि इति शिरसि ३। मूलं पठित्वा सर्वतत्त्वव्यापिनीं श्रीबगलामुखीश्रीपादुकां पूजयामि इति सर्वाङ्गे ४।

इस प्रकार न्यास करके ध्यान करे।

अथ ध्यानम्।

ॐ सौवर्णासनसंस्थितां त्रिनयनं पीतांशुकोल्लासिनीं हेमाभाङ्गरुचिं शशाङ्कमुकुटां सच्चम्पकस्रग्युताम्। हस्तैर्मुद्गरपाशवज्ररशनाः संविभ्रतीं भूषणैर्व्याप्ताङ्गीं बगलामुखीं त्रिजगतां संस्तम्भिनीं चिन्तयेत्॥१॥

तन्त्रान्तरेपि।

मध्येसुधाब्धि मणिमण्डपरत्नवेदीसिंहासनोपरिगतां परिपीतवर्णाम्। पीताम्बराभरण-माल्यविभूषिताङ्गीं देवीं नमामि धृतमुद्गरवैरिजिह्वाम्॥२॥ जिह्वाग्रमादाय करेण देवीं वामेन शत्रुं परिपीडयन्तीम्। गदाभिघातेन च दक्षिणेन पीताम्बराढ्यां द्विभुजां नमामि॥३॥

एवं ध्यात्वा मानसोपचारैः सम्पूज्य पीठपूजां कुर्यात्। तद्यथा : पीठादौ रचिते सर्वतोभद्रमण्डले मण्डूकादिपरतत्त्वान्तपीठदेवताः संस्थाप्य ॐ मं मण्डूकादिपरतत्त्वान्तपीठदेवताभ्यो नमः। इति सम्पूज्य नवपीठशक्तीः पूजयेत्।

इससे ध्यान करके मानसोपचारों से पूजा करके इस प्रकार पीठपूजा करे। पीठ आदि पर रचित सर्वतोभद्रमण्डल में मण्डूकादि परतत्त्वान्त पीठदेवताओं को स्थापित करके 'ॐ मं मण्डूकादि परतत्वान्त पीठदेवताभ्यो नमः' इस मन्त्र से पूजा करके नव पीठशक्तियों की इस प्रकार पूजा करे।

पूर्वाद्यष्टसु दिक्षु ॐ जयायै नमः १। ॐ विजयायै नमः २। ॐ अजितायै नमः ३। ॐ अपराजितायै नमः ४। ॐ नित्यायै नमः ५। ॐ विलासिन्यै नमः ६। ॐ दोग्ध्र्यै नमः ७। ॐ अघोरायै नमः ८। मध्ये ॐ मङ्गलायै नमः ९।

इति पीठशक्तीः पूजयेत्। ततः स्वर्णादिनिर्मितं यन्त्रं ताम्रपात्रे निधाय घृतेनाभ्यज्य तदुपरि दुग्धधारां जलधारां च दत्त्वा स्वच्छवस्त्रेण सम्प्रोक्ष्य तदुपरि चन्दनागुरुकर्पूरेण पूजनार्थं यन्त्रं विलिख्य। ॐ ह्लीं बगलामुखीयोगपीठाय नमः इति मन्त्रेण पुष्पाद्यासनं दत्त्वा पीठमध्ये संस्थाप्य प्रतिष्ठां च कृत्वा पुनर्ध्यात्वा मूलेन मूर्ति प्रकल्प्य पाद्यादिपुष्पान्तैरुपचारैः सम्पूज्य देव्याज्ञां गृहीत्वा आवरणपूजां कुर्यात्। तद्यथा :

इन मन्त्रों से पीठशक्तियों की पूजा करे। इसके बाद सोने से निर्मित यन्त्र को ताम्रपत्र में रखकर उसपर घी का अभ्यङ्ग करके उसपर दूध और जल की धारा दे। तदन्तर उसे स्वच्छ वस्त्र से पोंछ कर उसके ऊपर चन्दन, अगर और कपूर से पूजा के लिए यन्त्र लिखे। "ॐ ह्लीं बगलामुखी योगपीठाय नमः" इस मन्त्र से पुष्पाद्यासन देकर पीठ के बीच में स्थापित करके उसकी प्रतिष्ठा करके ध्यान करके मूल से मूर्ति की प्रकल्पना करके पाद्य आदि से पुष्पाञ्जलि दानपर्यन्त उक्त उपचारों से पूजा करके देवी से आज्ञा लेकर आवरणपूजा करे।

ॐ सविन्मये परे देवि परामृतरसप्रिये। अनुज्ञां देहि बगले परिवारार्चनाय मे।"

यह पढ़कर पुष्पांजलि देवें। आज्ञा लेकर इस प्रकार आवरण पूजा आरम्भ करे। (बगलामुखी पूजनयन्त्र देखिये चित्र २०)

तत्रः त्रिकोणमध्ये ईशान्यादिक्रमेण ॐ सत्त्वाय नमः[1]। सत्त्वश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। इति सर्वत्र १। ॐ रजसे नमः[2] रजःश्रीपा० २। ॐ तमसे नमः[3]। तमःश्रीपा० ३।

इति त्रिगुणान् पूजयेत्। ततःपुष्पाञ्जलिमादाय मूलमुच्चार्य।

इस प्रकार तीन गुणों की पूजा करे। इसके बाद पुष्पांजलि लेकर मूल का उच्चारण करके :

ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले। भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥१॥

इति पठित्वा पुष्पाञ्जलिं च दत्त्वा विशेषार्घाद्बिन्दुं निः क्षिप्य पूजितास्तर्पिताः सन्तु इति वदेत्। इति प्रथमावरणम् ॥१॥

यह पढ़कर पुष्पांजलि देकर विशेष अर्घ से बिन्दु का निक्षेप करके "पूजितास्तर्पितास्सन्तु" यह कहे। इति प्रथमावरण ॥१॥

ततः षट्कोणकेसरेषु आग्नेयादिचतुर्विदिक्षु मध्ये दिक्षु च।

इसके बाद षट्कोण केसरों में आग्नेयी आदि चारों विदिशाओं और मध्य दिशाओं में :

ॐ ह्लीं हृदयाय नमः[4]। हृदयश्रीपा०। बगलामुखि शिरसे स्वाहा[5]। शिरःश्रीपा० २। सर्वदुष्टानां शिखायै वषट्[6]। शिखाश्रीपा० ३। वाचं पादं मुखं स्तम्भय कवचाय हुम्[7]। कवचश्रीपा० ४। जिह्वां कीलय नेत्रत्रयाय वौषट्[8]। नेत्रत्रयश्रीपा० ५। बुद्धिं विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा अस्त्राय फट्[9]। अस्त्रश्रीपा० ॥६॥

इति षडङ्गानि पूजयित्वा पुष्पाञ्जलिं दद्यात्। इति द्वितीयावरणम् ॥२॥

इससे षडङ्गों की पूजा करके पुष्पांजलि देवे। इति द्वितीयावरण ॥२॥

ततोष्टदले पूज्यपूजकयोरन्तरालं प्राची तदनुसारेण अन्याः दिशः प्रकल्प्य प्राचीक्रमेण :

इसके बाद अष्टदलों में पूज्य और पूजक के बीच में पूर्वदिशा मानकर तदनुसार अन्य दिशाओं की कल्पना करके पूर्वादि क्रम से :

ॐ ब्राह्म्यै नमः[10]। ब्राह्मीश्रीपा० १। ॐ माहेश्वर्यै नमः[11]। माहेश्वरीश्रीपा० २। ॐ कौमार्यै नमः[12]। कौमारीश्रीपा० ३। ॐ वैष्णव्यै नमः[13]। वैष्णवीश्रीपा० ४। ॐ वाराह्यै नमः[14]। बाराहीश्रीपा० ५। ॐ इन्द्राण्यै नमः[15]। इन्द्राणीश्रीपा० ६। ॐ चामुण्डायै नमः[16]। चामुण्डाश्रीपा० ७। ॐ महालक्ष्म्यै नमः[17]। महालक्ष्मीश्रीपा० ८।

इत्यष्टो मातरः सम्पूज्य पुष्पाञ्जलिं दद्यात्। इति तृतीयावरणम् ॥३॥

इससे आठ माताओं की पूजा करके पुष्पांजलि देवे। इति तृतीयावरण ॥३॥

तस्योपरि ब्राह्म्यादिसमीपे।

उसके ऊपर ब्राह्मयादि के समीप :

ॐ श्रसिताङ्गभैरवाय नमः[18]। असिताङ्गभैरवश्रीपा० १। ॐ रुरुभैरवाय नमः[19]। रुरुभैरवश्रीपा० २। ॐ चण्डभैरवाय नमः[20]। चण्डभैरवश्रीपा० ३। ॐ क्रोधभैरवाय नमः[21]। क्रोधभैरवश्रीपा०। ॐ उन्मत्तभैरवाय नमः[22]। उन्मत्तभैरवश्रीपा० ५। ॐ कपाल भैरवाय नमः[23]। कपालभैरवश्रीपा० ६। ॐ भीषणभैरवाय नमः[24]। भीषणभैरवश्रीपा० ७। संहारभैरवाय नमः[25]। संहारभैरवश्रीपा० ८।

इत्यष्टौ भैरवान् पूजयित्वा पुष्पाञ्जलिं दद्यात्। इति चतुर्थावरणम् ॥४॥

इससे आठ भैरवों की पूजा करके पुष्पांजलि देवे। इति चतुर्थावरण ॥४॥

ततः षोडशदलेषु प्राचीक्रमेण :

इसके बाद षोडश दलों में पूर्वादि क्रम से :

ॐ मङ्गलायै नमः[26]। मङ्गलाश्रीपा० १। ॐ स्तंभिन्यै नमः[27]। स्तंभिनीश्रीपा० २। ॐ जृम्भिण्यै नमः[28]। जृम्भिणीश्रीपा ३। ॐ मोहिन्यै नमः[29]। मोहिनीश्रीपादुकां पूजयामि ४। ॐ वश्यायै नमः[30]। वश्याश्रीपा० ५। ॐ बलायै नमः[31]। बलाश्रीपा० ६। ॐ अचलायै नमः[32]। अचलाश्रीपा० ७। ॐ भूधरायै नमः[33]। भूधराश्रीपा० ८। ॐ कल्मषायै नमः[34]। कल्मषाश्रीपादु० ९। ॐ धात्र्यै नमः[35]। धात्रीश्रीपा० १०। ॐ कलनायै नमः[36]। कलनाश्रीपा० ११। ॐ कालाकर्षिण्यै नमः[37]। कालाकर्षिणीश्रीपा०१२। ॐ भ्रामिकायै नमः[38]। भ्रामिकाश्रीपा० १३। ॐ मन्दगमनायै नमः[39]।

मन्दगमनाश्रीपा० १४। ॐ भोगस्थायै नमः[४०]। भोगस्थाश्रीपादुकां० १५। ॐ भाविकायै नमः[४१]। भाविकाश्रीपा० १६।

इति षोडश शक्तीः सम्पूज्य पुष्पाञ्जलिं दद्यात्। इति पञ्चमावरणम्॥५॥

इससे षोडश शक्तियों की पूजा करके पुष्पांजलि देवे। इति पञ्चमावरण।५।

ततो भूपुराभ्यन्तरे पूर्वादिचतुर्दिक्षु।

इसके बाद भूपुर के भीतर पूर्वादि चारों दिशाओं में :

ॐ गणपतये नमः[४२]। गणपतिश्रीपा० १। ॐ बटुकाय नमः[४३]। बटुकश्रीपा० २। ॐ योगिनीभ्यो नमः[४४]। योगिनीश्रीपा० ३। ॐ क्षेत्रपालाय नमः[४५]। क्षेत्रपालश्रीपा० ४।

इति द्वारपालान् पूजयित्वा पुष्पाञ्जलिं दद्यात्। इति षष्ठावरणम्॥६॥

इनसे द्वारपालों की पूजा करके पुष्पांजलि देवे। इति षष्ठावरण॥६॥

ततो भूपुराद्बहिः पूर्वे।

इसके बाद भूपुर के बाहर पूर्वादि दिशाओं में :

ॐ लं इन्द्राय नमः[४६]। इन्द्रश्रीपा० १। अग्निकोणे ॐ रं अग्नये नमः[४७]। अग्निश्रीपा० २। दक्षिणे ॐ मं यमाय नमः[४८]। यमश्रीपा० ३। निर्ऋतिकोणे ॐ क्षं निर्ऋतये नमः[४९]। निर्ऋतिश्रीपा० ४। पश्चिमे ॐ वं वरुणाय नमः[५०]। वरुणश्रीपा० ५। वायुकोणे ॐ यं वायवे नमः[५१]। वायुश्रीपा० ६। उत्तरे ॐ कुं कुबेराय नमः[५२] कुबेरश्रीपा० ७। ॐ ईशानकोणे ॐ हं ईशानाय नमः[५३]। ईशानश्रीपा० ८। इन्द्रेशानयोर्मध्ये ॐ आं ब्रह्मणे नमः[५४]। ब्रह्मश्रीपा० ९। वरुणनिर्ऋत्योर्मध्ये ॐ ह्रीं अनन्ताय नमः[५५]। अनन्तश्रीपा० १०।

इति दशदिक्पालान् पूजयेत्। ततो इन्द्रादिसमीपे।

इससे दस दिक्पालों की पूजा करे। उसके बाद इन्द्रादि के समीप :

ॐ वं वज्राय नमः[५६]। वज्रश्रीपा० १। ॐ शं शक्त्ये नमः[५७]। शक्तिश्रीपा० २। ॐ दं दण्डाय नमः[५८]। दण्डश्रीपा० ३। ॐ खं खड्गाय नमः[५९]। खड्गश्रीपा० ४। ॐ पं पाशाय नमः[६०]। पाशश्रीपा० ५। ॐ अं अंकुशाय नमः[६१]। अंकुशश्रीपा० ६। ॐ गं गदायै नमः[६२]। गदाश्रीपा० ७। ॐ त्रिं त्रिशूलाय नमः[६३]। त्रिशूलश्रीपा० ८। ॐ पं पद्माय नमः[६४]। पद्मश्रीपा० ९। ॐ चं चक्राय नमः[६५]। चक्रश्रीपा० १०।

इत्यस्त्राणि सम्पूज्य पुष्पाञ्जलिं दद्यात्। इति सप्तमावरणम्॥७॥

इन मन्त्रों से अस्त्रों की पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवे। इति सप्तमावरण॥७॥

इत्यावरणपूजां कृत्वा धूपादिनमस्कारान्तं सम्पूज्य जपं कुर्यात्। अस्य पुरश्चरणं लक्षजपः चम्पककुसुमैर्दशांशतो होमः तत्तद्दशांशेन तर्पणमार्जन ब्राह्मणभोजनानि कुर्यात्। एवं कृते मन्त्रः सिद्धो भवति एतस्मिन्सिद्धे मन्त्रे मन्त्री प्रयोगान् साधयेत्। तथाच :

इस प्रकार आवरणपूजा करके धूपदान से लेकर नमस्कार पर्यन्त पूजा करके जप करे। इसका पुरश्चरण एक लाख जप है। चम्पा के फूलों से दशांश होम और तत्तद्दशांश तर्पण, मार्जन और ब्राह्मणभोजन करे। ऐसा करने पर मन्त्र सिद्ध होता है। इसके सिद्ध होने पर साधक प्रयोगों की साधना करे। जैसा कि कहा गया है :

एवं ध्यात्वा जपेल्लक्षमयुतं चम्पकोद्भवैः। कुसुमैर्जुहुयात्पीठे पूर्वोक्ते पूजयेदिमाम्॥१॥ इत्थं सिद्धमनुर्मन्त्री स्तम्भयेद्देवतादिकान्। पीतवस्त्रस्तदासीनः[1] पीतमाल्यानुलेपनः॥२॥ पीतपुष्पैर्यजेद्देवीं

---

१ तन्त्रान्तरेपि : पीताम्बरधरो भूत्वा पूर्वाशभिमुखं स्थितः। लक्षमेकं जपेन्मन्त्री हरिद्राग्रन्थिमालया। ब्रह्मचर्यरतो नित्यं प्रयतो ध्यानतत्परःप्रियंग्वाश्चरसेनापि पीतपुष्पैश्च होमयेत्। जपमन्त्रप्रयोगेण मन्त्रं चाप्ययुतं जपेत्।

हरिद्रोत्थस्रजाजपन्। पीतां ध्यायन् भगवतीं प्रयोगेष्वयुतं जपेत् ॥३॥

इस प्रकार ध्यान करके एक लाख जप करे। तदनन्तर दस हजार चम्पा के फूलों से होम करके पूर्वोक्त पीठ में इस देवी की पूजा करे। इस प्रकार साधक मन्त्र को सिद्ध करके देवतादि को स्तम्भित करे। पीला वस्त्र पहने हुए, पीले आसन पर बैठे हुए, पीली माला पहने हुए, साधक पीले फूलों से होम करे। हल्दी की बनी माला से जप करता हुआ साधक पीतवर्ण वाली देवी भगवती का ध्यान करता हुआ प्रयोगों में दश हजार जप करे।

त्रिमध्वाक्ततिलैर्होमो[1] नृणां वश्यकरो मतः। मधुरत्रितयाक्तैः स्यादाकर्षो लवणैर्ध्रुवम् ॥४॥ तैलाभ्यक्तैर्निम्बपत्रैर्होमो विद्वेषकारकः। तालंलोणहरिद्राभिर्द्विषां संस्तम्भनं भवेत् ॥५॥ अङ्गारधूमं राजीश्च माहिषं गुग्गुलं निशि। श्मशानपावके हुत्वा नाशयेदचिरादरीन् ॥६॥ गरुतो[2] गृध्रकाकानां कटुतैलं बिभीतकम्। गृहधूमं चितावह्नौ हुत्वा प्रोच्चाटयेद्रिपून् ॥७॥ दूर्वागुडूचीलाजान्यो मधुरत्रितयान्वितान्। जुहोति सोखिलान्रोगान् शमयेद्दर्शनादपि ॥८॥ पर्वताग्रे महारण्ये नदीसङ्गे शिवालये। ब्रह्मचर्यरतो लक्षंजपेदखिलसिद्धये ॥९॥ एकवर्णगवीदुग्धं शर्करामधुसंयुतम्। त्रिशतं मन्त्रितं पीतं हन्याद्विषपराभवम् ॥१०॥

मधु, घी और शर्करा से युक्त तिलों से किया जाने वाला होम मनुष्यों को वश में करने वाला माना गया है। मधु, घी और शर्करा से युक्त नमक से किया जाने वाला होम निश्चय ही आकर्षण करने वाला होता है। तेल से युक्त निम्ब पत्र से किया जाने वाला होम विद्वेष कराने वाला होता है। हरिताल, नमक और हल्दी से किया जाने वाला होम शत्रुओं का स्तम्भन करने वाला होता है। रात्रि में श्मशान की अग्नि में, कोयला, घर का धूम, राई और माहिष गुग्गल का होम करके साधक शीघ्र ही शत्रु का नाश कर देता है। गिद्ध तथा कौये के पङ्ख, कड़वा तेल, बहेड़ा और घर का धूम, चिता की अग्नि में होम करके साधक शत्रुओं में उच्चाटन कर देता है। दूब, गुरुच और लावा को मधु, घी और शकर के साथ मिलाकर जो होम करता है वह समस्त रोगों को दर्शनमात्र से शान्त कर देता है। पर्वत पर, महावन में, नदी के तट पर, शिवालय में समस्त कामनाओं की सिद्धियों के लिए एक लाख जप करे। मधु और शकर से मिश्रित एक रङ्ग की गाय का दूध तीन सौ मन्त्रों से अभिमन्त्रित करके पीने से सभी विषों की शक्ति समाप्त हो जाती है।.

श्वेतपालाशकाष्ठेन रचिते रम्यपादुके। अलक्तरञ्जिले लक्षं मन्त्रयेन्मनुनामुना ॥११॥ तदारूढः पुमान् गच्छेत्क्षणेन शतयोजनम्।

श्वेत पलाश की लकड़ी से बनी उत्तम खड़ाऊँ को आलता से रङ्ग कर उसे इस मन्त्र से एक लाख बार अभिमन्त्रित करना चाहिये। इस खड़ाऊँ को पहन कर मनुष्य एक क्षण में सौ योजना जा सकता है।

पारदं च शिलांतालपिष्टं मधुसमन्वितम् ॥१२॥ मनुना मन्त्रयेल्लक्षं लिंपेत्तेनाखिलां तनुम्। अदृश्यः स्यान्नृणामेष आश्चर्यं दृश्यतामिदम् ॥१३॥

पारा, मैनसिल और हरताल को मधु के साथ पीसकर इस मन्त्र से एक लाख बार अभिमन्त्रित कर उस लेप को अपने पूरे शरीर पर लेप करने से मनुष्य अदृश्य हो जाता है। इस दृश्य को देखने वाले आश्चर्यचकित हो जाते हैं।

षट्कोणे विलिखेद्बीजं साध्यनामान्वितं मनोः। हरितालनिशाचूर्णैरुन्मत्तरससंयुतैः[3] ॥१४॥ शेषाक्षरैः समावीतं धरागेहविराजितम्। तद्यन्त्रं स्थापितप्राणपीतसूत्रेण वेष्टयेत् ॥१५॥

---

१ त्रिमध्वाक्तः मधुघ्रतशर्कराक्तम्। २ गुरुतः पक्षान्।

३ धत्तूररसाक्तहरिद्राचूर्णेन षट्कोणेष्वमुकं स्तम्भयेति वर्णयुक्तं ह्लीं इति बीजं विलिख्य मन्त्रशेषार्णैः सम्वेष्ट्योपरि चतुरस्रेण वेष्टितं पीतसूत्रवीतं कृत्वा भ्रमत्कुम्भकारचक्रस्थमृदा रचित वृषोदरे प्रक्षिप्य हरितालेन संलिप्य वृष प्रत्यहं पूजयेत् स्तम्भनं फलम्।

भ्राम्यत्कुलालचक्रस्थां गृहीत्वा मृत्तिका तथा। रचयेद्वृषभं रम्यं यन्त्रं तन्मध्यतः क्षिपेत् ॥१६॥ हरितालेन संलिप्य वृषं प्रत्यहमर्चयेत्। स्तम्भयेद्विद्विषां वाचं गतिं कार्य परम्पराम् ॥१७॥

हरिताल और हल्दी के चूर्ण को धतूरे के रस में मिलाकर उससे षट्कोण में बीज (ह्लीं) के साथ "अमुकं स्तम्भय" लिखे। फिर मन्त्र के शेष अक्षरों से उसे वेष्टित कर भूपुर बनाये। तदन्तर उस यन्त्र में प्राणप्रतिष्ठा करके पीले धागे से उसे वेष्टित कर दे। फिर घूमते हुए कुम्हार के चाक से मिट्टी लाकर उससे एक सुन्दर बैल बनावे। उसके अन्दर इस यन्त्र को रख दे। फिर उस वृषभ पर हरिताल का लेप कर प्रतिदिन उसकी पूजा करे। इससे साधक शत्रुओं की वाणी एवं सभी कार्यकलापों की परम्पराओं को स्तम्भित कर देता है। (बगलामुखी स्तम्भनयन्त्र देखिये चित्र २१)।

आदाय वामहस्तेन प्रेतभूमिस्थखर्परम्। अङ्गारेण चितास्थेन तत्र यन्त्रं समालिखेत् ॥१८॥ मन्त्रितं निहितं भूमौ रिपूणां स्तम्भयेद्गतिम्।

श्मशान भूमि में बाएँ हाथ से खप्पर लेकर उसपर चिता के कोयले से यन्त्र को लिखे। उस यन्त्र को अभिमन्त्रित करके शत्रु की भूमि में गाड़ देने से शत्रुओं की गति स्तम्भित हो जाती है।

प्रेतवस्त्रे लिखेद्यन्त्रमङ्गारेणैव तत्पुनः ॥१९॥ मण्डूकवदने न्यस्य पीतवस्त्रेण वेष्टितम्। पूजितं पीतपुष्पैस्तद्वाचं संस्तम्भयेद्विषाम् ॥२०॥

इसी मन्त्र को शव के वस्त्र पर चिता के कोयले से लिखकर मेढक के मुँह में रखे और उसे पीले वस्त्र से लपेट कर पीले पुष्पों से उसकी पूजा करे तो साधक शत्रुओं की वाणी को स्तम्भित कर देता है।

यद्भूमौ भविता दिव्यं तत्र यन्त्रं समालिखेत्। मार्जितं तद्वृषापत्रैर्दिव्यस्तम्भनकृद्भवेत् ॥२१॥

जहाँ पर दिव्य घटनायें घटित होती हों, वहाँ पर इस यन्त्र को लिख कर अडूसे के पत्तों से उसका मार्जन करे। इससे साधक दिव्य घटनाओं का स्तम्भन कर देता है।

इन्द्रवारुणिकामूलं सप्तशो मनुमन्त्रितम्। क्षिप्तं जले दिव्यकृतं जलस्तम्भनकारकम् ॥२२॥

इन्द्रवारुणी की जड़ को सात बार मन्त्र से अभिमन्त्रित करके जल में डाल दे। इससे वरुण आदि देवों द्वारा कृत जलवर्षा आदि का स्तम्भन हो जाता है।

किं भूरिणा साधकेन मन्त्रः सम्यगुपासितः। शत्रूणां गतिबुद्ध्यादेस्तम्भनो नात्र संशयः ॥२३॥

अधिक कहने से क्या! अच्छी प्रकार इस मन्त्र की साधना करने पर यह शत्रुओं की हर प्रकार की गति तथा बुद्धि का स्तम्भन करने वाला होता है, इसमें कोई संशय नहीं है।

इति बगलामुखीषट्त्रिंशदक्षरमन्त्रप्रयोगः।

बगलामुखी कवच

ॐ कैलासाचलमध्यगं पुरहरं शान्तं त्रिनेत्रं शिवं वामस्था कवचं प्रणम्य गिरिजा भूतिप्रदं पृच्छति। देवी श्रीबगलामुखी रिपुकुलारण्याग्निरूपा च या तस्याश्शापविमुक्तमन्त्रसहितं प्रीत्याऽधुना ब्रूहि माम् ॥१॥

कैलाश पर्वत के मध्य शिखर पर पुरहर शांत, त्रिनेत्र शिवजी के बाये ओर बैठी पार्वती जी प्रणाम करके उनसे कल्याण देनेवाले कवच को पूछ रही हैं: 'हे शिवजी, जो अरण्यरूप शत्रुकुल के लिए अग्नि के समान बगलामुखी है उसका मन्त्रसहित शापविमुक्त कवच आप मुझे बताये।

श्रीशङ्कर उवाच।

देवि श्रीभववल्लभे शृणु महामन्त्रं विभूतिप्रदं देव्या वर्मयुतं समस्तसुखदं साम्राज्यदं मुक्तिदम्।

श्रीशंकरजी बोले : हे देवि श्रीवल्लभे ! तुम देवी के कवचयुक्त समस्त सुखदायक साम्राज्यप्रद तथा मुक्तिप्रद महामन्त्र को सुनो।

तारं रुद्रवधूविरञ्चिमहिले विष्णुप्रिये कामयुक् कान्ते श्रीबगलानने मम रिपून्नाशय युग्मं त्विति ॥२॥ ऐश्वर्याणि पदं च देहि युगलं शीघ्रं मनोवाञ्छितं कार्यं साधय युग्मयुक् शिववधूवह्निप्रियान्तो मनुः।

तार (ॐ) रुद्रवध्धू (ह्रीं) विरञ्चिमहिले (ऐं) विष्णुप्रिये (श्रीं) कामयुक्कान्ते (क्लीं), फिर 'श्रीबगलानने मम रिपून्नाशय नाशय ममैश्वर्याणि' यह पद देकर देहि युगलं (देहि, देहि), फिर 'शीघ्रमनोवांछितं कार्यं साधय युग्मयुक् (साधय साधय), शिववधू (ह्रीं), और अन्त में वह्निप्रिया (स्वाहा) लगाकर मन्त्र बनता है। पूरा मन्त्र इस प्रकार हुआ : ॐ ह्रीं ऐं श्रीं क्लीं श्रीबगलानने मम रिपून्नाशय नाशय ममैश्वर्याणि देहि देहि शीघ्रम्मनोवांछितं कार्यं साधय साधय ह्रीं स्वाहा"।

कंसारेस्तनयं च बीजमपराशक्तिं च वाणीं तथा कीलं श्रीमति भैरवर्षिसहितं छन्दोविराट् संयुतम् ॥३॥ स्वेष्टार्थस्य परस्य चापि नितरां कार्यस्य सम्प्राप्तये नानासाध्यमहागदस्य नियतन्नाशाय वीर्याप्तये। ध्यात्वा श्रीबगलाननां मनुवरं जप्त्वा सहस्राख्यकं दीर्घैः षट्कयुतैश्च रुद्रमहिलाबीजैर्विन्यस्याङ्गके ॥४॥

इन श्लोकों में विनियोग और विभिन्न न्यासविधियों का संकेत है जिनके विस्तृत स्वरूप के लिये नीचे देखिये।

विनियोग : ॐ अस्य श्रीबगलामुखीब्रह्मास्त्रमन्त्रकवचस्य भैरवऋषिर्विराट्छन्दः श्रीबगलामुखी देवता क्लीं बीजं ऐं शक्तिः श्रीं कीलकं मम परस्य च मनोभिलषितेष्टकार्यसिद्धये जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास : ॐ भैरवऋषये नमः शिरसि १। विराट् छन्दसे नमः मुखे २। बगलामुखीदेवतायै नमः हृदि ३। क्लीं बीजाय नमः गुह्ये ४। ऐं शक्तये नमः पादयोः ५। श्रीं कीलकाय नमः सर्वाङ्गे ६। इति ऋष्यादिन्यासः।

करन्यास : ॐ ह्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः १। ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः २। ॐ ह्रूं मध्यमाभ्यां नमः ३। ॐ ह्रैं अनामिकाभ्यां नमः ४। ॐ ह्रौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५। ॐ ह्रः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ६। इति करन्यासः।

हृदयादिषडङ्गन्यास : ॐ ह्रां हृदयाय नमः १। ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा २। ॐ ह्रूं शिखायै वषट् ३। ॐ ह्रैं कवचाय हुम् ४। ॐ ह्रौं नेत्रत्रयाय वौषट् ५। ॐ ह्रः अस्त्राय फट् ६। इति हृदयादिषडङ्गयासः।

अथ ध्यानम् :

ॐ सौवर्णासनसंस्थितां त्रिनयनां पीतांशुकोल्लासिनी **हेमाभाङ्गरुचिं शशाङ्कमुकुटां स्रक्चम्पकस्रग्युताम्। हस्तैर्मुद्गरपाशबद्धरसनां संबिभ्रतीम्भूषणव्याप्ताङ्गीम्बगलामुखीं त्रिजगतां संस्तम्भिनीं चिन्तये ॥५॥**

शिरो मे पातु ॐ ह्रीं ऐं श्रीं क्लीं पातु ललाटकम्। सम्बोधनपदं पातु नेत्रे श्रीबगलानने ॥६॥ श्रुती मम रिपुं पातु नासिकान्नाशय द्वयम्। पातु गण्डौ सदा मामैश्वर्याण्यन्तं तु मस्तकम् ॥७॥ देहि द्वन्द्वं सदा जिह्वां पातु शीघ्रं वचो मम। कण्ठदेशं स नः पातु वांछितं बाहुमूलकम् ॥८॥ कार्यं साधय द्वन्द्वं तु करौ पातु सदा मम। मायायुक्ता तथा स्वाहा हृदयं पातु सर्वदा ॥९॥ अष्टाधिकचत्वारिंशद्दण्डाढ्या बगलामुखी। रक्षां करोतु सर्वत्र गृहेऽरण्ये सदा मम ॥१०॥ ब्रह्मास्त्राख्यो मनुः पातु सर्वाङ्गे सर्वसंधिषु। मन्त्रराजः सदा रक्षां करोतु मम सर्वदा ॥११॥ ॐ

ह्रीं पातु नाभि देशं कटिं मे बगलाऽवतु। मुखी वर्णद्वयं पातु लिङ्गं मे मुष्कयुग्मकम् ॥१२॥ जानुनी सर्वदुष्टानां पातु मे वर्णपञ्चकम्। वाचं मुखं तथा पादं षडर्णा परमेश्वरी ॥१३॥ जङ्घायुग्मे सदा पातु बगला रिपुमोहिनी। स्तम्भयेति पदं पृष्ठं पातु वर्णत्रयं मम ॥१४॥ जिह्वां वर्णद्वयं पातु गुल्फौ मे कीलयेति च। पादोर्ध्वे सर्वदा पातु बुद्धिं पादतले मम॥१५॥ विनाशयपदं पातु पादांगुल्योर्नखानि मे। ह्रीं बीजं सर्वदा पातु बुद्धीन्द्रियवचांसि मे ॥१६॥ सर्वाङ्गं प्रणवः पातु स्वाहा रोमाणि मेऽवतु। ब्राह्मी पूर्वदले पातु चाग्नेयां विष्णुवल्लभा ॥१७॥ माहेशी दक्षिणे पातु चामुण्डा राक्षसेऽवतु। कौमारी पश्चिमे पातु वायव्ये चापराजिता ॥१८॥ वाराही चोत्तरे पातु नारसिंही शिवेऽवतु। ऊर्ध्वं पातु महालक्ष्मीः पाताले शारदाऽवतु ॥१९॥ इत्यष्टौ शक्तयः पान्तु सायुधाश्च सवाहनाः। राजद्वारे महादुर्गे पातु मां गणनायकः ॥२०॥ श्मशाने जलमध्ये च भैरवश्च सदाऽवतु। द्विभुजा रक्तवसनाः सर्वाभरणभूषिताः ॥२१॥ योगिन्यः सर्वदा पान्तु महारण्ये सदा मम।

इति ते कथितं देवि कवचं परमाद्भुतम् ॥२२॥ श्रीविश्वविजयं नाम कीर्तिश्रीविजयप्रदम्।

हे देवि, कीर्ति और विजय प्रदान करने वाला अद्भुत यह विश्वविजय नामक कवच मैंने तुम्हें बता दिया।

अपुत्रो लभते पुत्रं धीरं शूरं शतायुषम् ॥२३॥ निर्धनो धनमाप्नोति कवचस्यास्य पाठतः। जपित्वा मन्त्रराजं तु ध्यात्वा श्रीबगलामुखीम् ॥२४॥ पठेदिदं हि कवचं निशायां नियमात्तु यः। यंयं कामयते कामं साध्या साध्यं महीतले ॥२५॥ तंतं काममवाप्नोति सप्तरात्रेण शाङ्करि। गुरुं ध्यात्वा सुरां पीत्वा रात्रौ शक्तिसमन्वितः ॥२६॥ कवचं यः पठेद्देवि तस्याऽसाध्यं न किञ्चन। यं ध्यात्वा प्रजपेन्मत्रं सहस्रं कवचं पठेत् ॥२७॥ त्रिरात्रेण वशं याति तस्य तन्नात्र संशयः। लिखित्वा प्रतिमां शत्रोः सतालेन हरिद्रया ॥२८॥ लिखित्वा हृदि तन्नाम तं ध्यात्वा प्रजपेन्मनुम्। एकविंशद्दिनं यावत्प्रत्यहं च सहस्रकम् ॥२९॥ जप्त्वा पठेत्तु कवचं चतुर्विंशतिवारकम्। संस्तम्भो जायते शत्रोर्नात्र कार्या विचारणा ॥३०॥

जिसे पुत्र न हो वह धीर शूरवीर तथा सौ वर्ष की आयुवाला पुत्र पाता है। निर्धन व्यक्ति इस कवच के पाठ से धन पाता है। हे शाङ्करि ! जो मनुष्य बगलामुखी का ध्यान और इस मन्त्रराज का जप करके नियम से इस कवच का पाठ करता है, वह इस पृथिवी पर साध्य या असाध्य जिस-जिस की इच्छा करता है उसे वह सात रात्रि के बाद प्राप्त कर लेता है। हे देवि, जो व्यक्ति रात्रि में गुरु का ध्यान करके यथाशक्ति सुरा पीकर इस कवच का पाठ करे उसके लिए कुछ भी असाध्य नहीं है। जो व्यक्ति किसी का ध्यान करके १ हजार मन्त्र का जप करके कवच का पाठ करे तो वह तीन रात्रि के बाद वश में हो जाता है, इसमें कोई संदेह नहीं है। हरिताल तथा हल्दी से शत्रु की प्रतिमा अंकित करके हृदय से शत्रु के नाम का ध्यान करके इक्कीस दिन तक प्रतिदिन एक हजार मन्त्र का जप करे। इसके बाद चौबीस बार कवच का पाठ करे तो शत्रु का स्तम्भन हो जाता है। इसमें कोई विचार करने की आवश्यकता नहीं है।

विवादे विजयस्तस्य संग्रामे जयमाप्नुयात्। श्मशाने च भयं नास्ति कवचस्य प्रभावतः ॥ ३१ ॥

इस कवच का पाठ करने वाले व्यक्ति का इसके प्रभाव से विवाद में विजय तथा संग्राम में जय होता है, और उसे श्मशान में भय नहीं लगता।

नवनीतं चाभिमन्त्र्य स्त्रीणां दद्यान्महेश्वरि। वन्ध्याणां जायते पुत्रो विद्याबलसमन्वितः ॥ ३२ ॥

हे पार्वती! नवनीत को इस मन्त्र से अभिमन्त्रित करके यदि वन्ध्या स्त्री को दिया जाय तो उसे विद्या और बल से युक्त पुत्र उत्पन्न होता है।

श्मशानाङ्गारमादाय भौमे रात्रौ शनावथ। पादोदकेन स्पृष्टा च लिखेल्लोहशलाकयां॥ ३३॥
भूमौ शत्रोः स्वरूपञ्च हृदि नाम समालिखेत्। हस्तं तद्धृदये दत्त्वा कवचं तिथिवारकम्॥ ३४॥
ध्यात्वा जपेन्मन्त्रराजं नवरात्रं प्रयत्नतः। म्रियते ज्वरदाहेन दशमेऽह्नि न संशयः॥ ३५॥

सोमवार या शनिवार की रात्रि में शमशान से कोयला लेकर पादोदक से उसका घोल बनाये। उससे लोहे की शलाका से भूमि पर शत्रु का स्वरूप अङ्कित करे। फिर हृदय पर उसका नाम लिखे। उसके हृदय पर हाथ रखकर तिथि तथा बार का ध्यान करके नवरात्रि तक प्रयत्न से इस मन्त्रराज कवच का जप करे। इससे शत्रु दसवे दिन ज्वरदाह से मर जाता है। इसमें कोई संशय नहीं है।

भूर्जपत्रेष्विदं स्तोत्रमष्टगन्धेन संलिखेत्। धारयेद्दक्षिणे बाहौ नारी वामभुजे तथा॥ ३६॥
संग्रामे जयमाप्नोति नारी पुत्रवती भवेत्। ब्रह्मास्त्रादीनि शस्त्राणि नैव कृन्तन्ति तज्जनम्॥ ३७॥

भोजपत्र पर इस स्तोत्र को अष्टगन्ध से लिखकर पुरुष दाहिने तथा स्त्री बायें हाथ में बाधे तो पुरुष संग्राम में विजयी और नारी पुत्रवती होती है तथा ब्रह्मास्त्र आदि अस्त्र उन्हें कोई हानि नहीं पहुँचाते।

सम्पूज्यं कवचं नित्यं पूजायाः फलमालभेत्। वृहस्पतिसमो वापि विभवे धनदोपमः॥ ३८॥
कामतुल्यश्च नारीणां शत्रूणाञ्च यमोपमः। कवितालहरी तस्य भवेद्गङ्गाप्रवाहवत्॥ ३९॥
गद्यपद्यमयी वाणी भवेद्देवीप्रसादतः।

नित्य कवच की पूजा करके मनुष्यं वृहस्पति के समान बुद्धिमान, कुबेर के समान धनी, स्त्रियो के लिए कामदेव के समान सुन्दर, या शत्रुओं के लिए यमराज के समान हो जाता है। देवी की प्रसन्नता से गङ्गा के प्रवाह के समान उसकी कविता लहरी उत्पन्न होती है और उसकी वाणी गद्य-पद्यमयी हो जाती है।

एकादशशतं यावत्पुरश्चरणमुच्यते॥ ४०॥ पुरश्चर्याविहीनं तु न चेदं फलदायकम्। न देयं परशिष्येभ्यो दुष्टेभ्यश्च विशेषतः॥ ४१॥ देयं शिष्याय भक्ताय पञ्चत्वं चान्यथाप्नुयात्। इदं कवचमज्ञात्वा भजेद्यो बगलामुखीम्॥ ४२॥ शतकोटिं जपित्वा तु तस्य सिद्धिर्न जायते॥ ४३॥

इसका पुरश्चरण ग्यारह सौ मन्त्र का जप होता है। पुरश्चरण के बिना यह फलदायक नहीं होता। इस मन्त्र को दूसरे शिष्यों को और विशेष रूप से दुष्टों को नहीं देना चाहिये। भक्त शिष्यों को इसे देना चाहिये। अन्यथा साधक मृत्यु को प्राप्त हो जाता है। जो साधक इस कवच को जाने बिना बगलामुखी की साधना करता है, उसे शतकोटि जप करने पर भी सिद्धि प्राप्त नहीं होती।

दाराढ्यो मनुजोऽस्य लक्षजपतः प्राप्नोति सिद्धिं परां विद्यां श्रीविजयं तथा सुनियतं धीराश्च वीरा वराः। ब्रह्मास्त्राख्यमनुं विलिख्य नितरां भूर्जेष्टगन्धेन वै धृत्वा राजपुरं व्रजन्ति खलु ये दासोस्ति तेषां नृपः॥ ४४॥

बहुत स्त्रियों वाला मनुष्य इस मन्त्र का एक लाख जप करने से परमसिद्धि तथा निश्चित विजय को प्राप्त करता है। भोजपत्र पर अष्टगंध से इस ब्रह्मास्त्र मन्त्र को लिखकर उसे धारण करके जो राजदरबार में जाता है उसका राजा दास बन जाता है।

इति विश्वसारोद्धारतन्त्रे पार्वतीश्वरसम्वादे
बगलामुखीकवचं समाप्तत्।

बगलामुखी (पीताम्बरा) सहस्रनामस्तोत्र

सुरालयप्रधाने तु देवदेवं महेश्वरम्। शैलाधिराजतनया संग्रहे तमुवाच ह॥ १॥

हिमालय पर देवाधिदेव महेश्वर से पार्वतीजी ने संक्षेप में पूछा :

श्रीदेव्युवाच।

परमेष्ठिन् परं धान प्रधानपरमेश्वर। नाम्नां सहस्रं बगलामुख्यास्त्वं ब्रूहि वल्लभ ॥ २ ॥

पार्वतीजी बोलीः हे परमेष्ठिन, हे परमधाम, हे प्रधान परमेश्वर, हे प्रिय ! आप बगलामुखी सहस्रनाम मुझे बतायें।

ईश्वर उवाच।

शृणु देवि प्रवक्ष्यामि नामधेयसहस्रकम्। परब्रह्मास्त्रविद्यायाश्चतुर्वर्गफलप्रदम् ॥ ३ ॥ गुह्याद्गुह्यतरं देवि सर्वसिद्धैकवन्दितम्। अतिगुप्ततरं विद्यासर्वतन्त्रेषु गोपितम् ॥ ४ ॥ विशेषतः कलियुगे महासिद्धयोघदायि तत्। गोपनीयं गोपनीयं गोपयीयं प्रयत्नतः ॥ ५ ॥ अप्रकाश्यमिदं सत्यं स्वयोनिरिव सुव्रते। रोधिनी विघ्नसङ्घानां मोहिनी परयोषिताम ॥ ६ ॥ स्तम्भिनी राजसैन्यानां वादिनी परवादिनाम्।

ईश्वर बोले : हे देवि, सुनो मैं तुम्हें परमब्रह्मास्त्र विद्या का सहस्रनाम बताता हूं। यह चतुवर्ग का फल देनेवाला, अत्यन्त गोपनीय सर्वसिद्धिप्रद, अत्यन्त गुप्त समस्त तन्त्रों में जो गुप्त है वह कलियुग में महासिद्धि का देनेवाला है। इसे प्रयत्न से गुप्त रखना, गुप्त रखना। हे सुब्रते, अपनी योनि के समान इसे गुप्त रखना चाहिये। समस्त विघ्नों को यह रोकने वाली विद्या है। परायी स्त्रियों को यह मोहित और राजा की सेनाओं को स्तम्भित करने वाली है।

पुरा चैकार्णवे घोरे काले परमभैरवः ॥ ७ ॥ सुन्दरीसहितो देवः केशवः क्लेशनाशनः। उरगासनमासीनो योगनिद्रामुपागमत् ॥ ८ ॥ निद्राकाले च ते काले मया प्रोक्तः सनातनः। महास्तम्भकरं देवीस्तोत्रं वा शतनामकम् ॥ ९ ॥ सहस्रनाम परमं वद देवस्य कस्यचित्।

एक समय घोर एकार्णव में परम भैरव और क्लेशनाशक विष्णुभगवान् लक्ष्मीजी के साथ नाग पर बैठे हुए योग निद्रामग्न हो गये। उसी समय मैंने उनसे कहा : "आपने महास्तम्भनकारी देवीशतनामस्तोत्र बतलाया है। अब आप हमें किसी देवता के सहस्रनाम स्तोत्र का उपदेश करें।"

श्रीभगवानुवाच।

शृणु शङ्करदेवेश परमातिरहस्यकम् ॥१०॥ अजोहं यत्प्रसादेन विष्णुः सर्वेश्वरेश्वरः। गोपनीयं प्रयत्नेन प्रकाशात्सिद्धिहानिकृत् ॥११॥

भगवान् बोले : हे देवेश शङ्कर! तुम परम अति रहस्य को सुनो जिसकी प्रसन्नता से मैं अजन्मा और सर्वेश्वर हुआ हूं। इसे प्रयत्न से गुप्त रखना चाहिये। प्रकाशन से सिद्धिहानि होती है।

ॐ अस्य श्रीपीताम्बरासहस्रनामस्तोत्रमन्त्रस्य भगवान् सदाशिवऋषिरनुष्टुप्छन्दश्श्रीजगद्वश्यकरी पीताम्बरा देवता सर्वाभिष्टसिद्ध्यर्थे पाठे विनियोगः। अथ ध्यानम् : पीताम्बरपरीधानां पीनोन्नतपयोधराम्। जटामुकुटशोभाढ्यां पीतभूमिसुखासनाम् ॥१२॥ शत्रोर्जिह्वां मुद्गरं च विभ्रतीं परमां कलाम्। सर्वागमपुराणेषु विख्यातां भुवनत्रये ॥१३॥ जगद्विध्वंसिनीन्देवीमजरामरकारिणीम्। तान्नामामि महामायां महदैश्वर्यदायिनीम् ॥१४॥ सृष्टिस्थितिविनाशानामादिभूतां महेश्वरीम्। गोप्यां सर्वप्रयत्नेन शृणु तां कथयामि ते ॥१५॥ प्रणवं पूर्वमुद्धृत्य स्थिरमायां ततो वदेत्। बगलामुखी सर्वेति दुष्टानां वाचमेव च ॥१६॥ मुखं पदं स्तम्भयेति जिह्वां कीलय बुद्धिमत्। विनाशयेति तारं च स्थिरमायां ततो वदेत् ॥१७॥ वह्निप्रियां ततो मन्त्रश्चतुर्वर्गफलप्रदः। ब्रह्मास्त्रं ब्रह्मविद्या च ब्रह्ममाता सनातनी ॥१८॥ माहेशी ब्रह्मकैवल्यं बगला ब्रह्मचारिणी। नित्यानन्दा नित्यसिद्धा नित्यरूपा निरामया ॥१९॥ सन्धारिणी महामाया कटाक्षक्षेमकारिणी। कमला विमला लीला रत्नकान्तिगुणाश्रिता ॥२०॥ कामप्रिया कामरता कामा

कामस्वरूपिणी। मङ्गला विजया जाया सर्वमङ्गलकारिणी ॥२१॥ कामिनी कामिनीकाम्या कामुका कारचारिणी। कामप्रिया कामरता कामा कामस्वरूपिणी ॥२२॥ कामाख्या कामबीजस्था कामपीठनिवासिनी। कामदा कामहा काली कपाली च करालिका ॥२३॥ कन्सारिः कमला कामा कैलासेश्वरवल्लभा। कात्यायनी केशवा च करुणा कामकेलिभुक् ॥२४॥ क्रिया कीर्तिः कृत्तिका च काशिका मथुरा शिवा। कालाक्षी कालिका काली धवलाननसुन्दरी ॥२५॥ खेचरी च खमूर्तिश्च क्षुद्रा क्षुद्रक्षुधावरा। खड्गहस्ता खड्गरता खड्गिनी खर्परप्रिया ॥२६॥ गङ्गा गौरी गामिनी च गीता गोत्रविवर्द्धिनी। गोधरा गोकरा गोधा गन्धर्वपुरवासिनी ॥२७॥ गन्धर्वा गन्धर्वकला गोपती गरुडासना। गोविन्दभावा गोविन्दा गान्धारी गन्धमादिनी ॥२८॥ गौराङ्गी गोपिकामूर्तिर्गोपीगोष्ठनिवासिनी। गन्धा गजेन्द्रगा मान्या गदाधरप्रिया ग्रहा ॥२९॥ घोरघोरा घोररूपा घरश्रोणी घनप्रभा दैत्येन्द्रप्रबला घण्टावादिनी घोरनिःस्वना ॥३०॥ डाकिन्युमा उपेन्द्रा च उर्वशी उरगासना। उत्तमा उन्नता उन्ना उत्तमस्थानवासिनी ॥३१॥ चामुण्डा मुण्डिका चण्डी चण्डदर्पहरेति च। उग्रचण्डा चण्डचण्डा चण्डदैत्यविनाशिनी ॥३२॥ चण्डरूपा प्रचण्डा च चण्डा चण्डशरीरिणी। चतुर्भुजा प्रचण्डा च चराचरनिवासिनी ॥३३॥ क्षत्रप्रायशिरोवाहा छला छलतरा छली। क्षत्ररूपा क्षत्रधरा क्षत्रियक्षयकारिणी ॥३४॥ जया च जयदुर्गा च जयन्ती जयदा परा। जायिनी जयिनी ज्योत्सना जटाधरप्रिया जिता ॥३५॥ जितेन्द्रिया जितक्रोधा जयमाना जनेश्वरी। जितमृत्युर्जरातीता जाह्नवी जनकात्मजा ॥३६॥ झङ्कारा झंझरी झण्टा झङ्कारी झकशोभिनी। झखा झमेशा झंकारी योनिकल्याणदायिनी ॥३७॥ झर्झरा झमुरी झारा झरा झरतरा परा झंझाझमेता झंकारी झणा कल्याणदायिनी ॥३८॥ ईमनामानसी चिन्त्या ईमुना शंकरप्रिया। टङ्कारी टिटिका टीका टंकिनी च टवर्गगा ॥३९॥ टापाटोपा टटपतिष्टमनी टमनप्रिया। ठकारधारिणी ठीका ठंकरी ठिकरप्रिया ॥४०॥ ठेकठासा ठकरती ठामिनी ठमनप्रिया। डारहा डाकिनी डारा डामरा डामरप्रिया ॥४१॥ डखिनी डडयुक्ता च डमरूकरवल्लभा। ढक्का ढक्की ढक्कनादा ढोलशब्दप्रबोधिनी ॥४२॥ ढामिनी ढामनप्रीता ढगतन्त्रप्रकाशिनी अनेकरूपिणी अम्बा अणिमासिद्धिदायिनी ॥४३॥ अमन्त्रिणी अणुकरी अणुमद्भानुसंस्थिता। तारा तन्त्रावती तन्त्रा तत्त्वरूपा तपस्विनी ॥४४॥ तरङ्गिणी तत्त्वपरा तन्त्रिका तन्त्रविग्रहा। तपोरूपा तत्त्वदात्री तपःप्रीतिप्रधर्षिणी ॥४५॥ तन्त्रा यन्त्रार्चनपरा तलातलनिवासिनी। तल्पदा त्वल्पदा काम्या स्थिरा स्थिरतरा स्थितिः ॥४६॥ स्थाणुप्रिया स्थलपरा स्थिता स्थानप्रदायिनी। दिगम्बरा दयारूपा दावाग्नि दमनी दमा ॥४७॥ दुर्गा दुर्गपरा देवी दुष्टदैत्यविनाशिनी। दमनप्रमदा दैत्यदयादानपरायणा ॥४८॥ दुर्गार्तिनाशिनी दान्ता दम्भिनी दम्भवर्जिता। दिगम्बरप्रिया दम्भा दैत्यदम्भविदारिणी ॥४९॥ दमना दन्तसौन्दर्या दानवेन्द्रविनाशिनी। दयाधरा च दमनी दर्भपत्रविलासिनी ॥५०॥ धरिणी धारिणी धात्री धराधरधरप्रिया। धराधरसुता देवी सुधर्मा धर्मचारिणी ॥५१॥ धर्मज्ञा धवला धूला धनदा धनवर्द्धिनी। धीराऽधीरा धीरतरा धीरसिद्धिप्रदायिनी ॥५२॥ धन्वन्तरिधरा धीरा ध्येया ध्यानस्वरूपिणी। नारायणी नारसिंही नित्यानन्दानरोत्तमा ॥५३॥ नक्ता नक्तवती नित्या नीलजीमूतसन्निभा। नीलाङ्गी नीलवस्त्रा च नीलपर्वतवासिनी ॥५४॥ सुनीलपुष्पखचिता नीलजम्बुसमप्रभा। नित्याख्या षोडशी विद्या नित्या नित्यसुखावहा ॥५५॥ नर्मदानन्दनाऽऽनन्दा

नन्दानन्दविवर्द्धिनी। यशोदानन्दतनया नन्दनोद्यानवासिनी ।।५६।। नागान्तकानागवृद्धा नागपत्नी च नागिनी। नमिताशेषजनता नमस्कारवती नमः ।।५७।। पीताम्बरा पार्वती च पीताम्बरविभूषिता। पीतमाल्याम्बरधरा पीताभापिङ्गमूर्द्धजा ।।५८।। पीतपुष्पार्चनरता पीतपुष्पसमर्चिता। परप्रभा पितृपतिः परसैन्यविनाशिनी ।।५९।। परमा परतन्त्रा च परमन्त्रा परात्परा। परा विद्या परा सिद्धिः परस्थानप्रदायिनी ।।६०।। पुष्पा पुष्पवती नित्या पुष्पमालाविभूषिता। पूरातना पूर्व परा परसिद्धिप्रदायिनी ।।६१।। पीता नितम्बिनी पीता पीतोन्नतपयःस्तनी। प्रेमा प्रमध्यमा शेषा पद्मपत्रविलासिनी ।।६२।। पद्मावती पद्मनेत्रा पद्मा पद्ममुखी परा। पद्मासना पद्मप्रिया पद्मरागस्वरूपिणी ।।६३।। पावनी पालिका पात्री परदा वरदा शिवा। प्रेतसंस्था परानन्दा परब्रह्मस्वरूपिणी ।।६४।। जिनेश्वरप्रिया देवी पशुरक्तरतिप्रिया पशुमांसप्रियाऽपर्णा परामृतपरायणा ।।६५।। पाशिनी पाशिका चापि पशुघ्नी पशुभाषिणी। फुल्लारविन्दवदना फुल्लोत्पलशरीरिणी ।।६६।। परानन्दप्रदा वीणा पशुपाशविनाशिनी ।।६७।। फूत्कारा फूत्परा फेनी फुल्लेन्दीवरलोचना ।।६७।। फट्मन्त्रा स्फटिका स्वाहा स्फोटा च फट्स्वरूपिणी। स्फाटिका घुटिका घोरा स्फटिकाद्रिस्वरूपिणी ।।६८।। वराङ्गना वरधरा वाराही वासुकीवरा। विन्दुस्था विन्दुनी वाणी बिन्दुचक्रनिवासिनी ।।६९।। विद्याधरी विशालाक्षी काशीवासिजनप्रिया। वेदविद्या विरूपाक्षी विश्वयुग्बहुरूपिणी ।।७०।। ब्रह्मशक्तिर्विष्णुशक्तिः पञ्चवक्त्रा शिवप्रिया वैकुण्ठवासिनी देवी वैकुण्ठपददायिनी ।।७१।। ब्रह्मरूपा विष्णुरूपा परब्रह्ममहेश्वरी। भवप्रिया भवोद्भावा भवरूपा भवोत्तमा ।।७२।। भवापारा भवाधारा भाग्यवत्प्रियकारिणी। भद्रा सुभद्रा भवदा शुम्भदैत्य-विनाशिनी ।।७३।। भवानी भैरवी भीमा भद्रकाली सुभद्रिका। भगिनी भगरूपा च भगमाना भगोत्तमा ।।७४।। भगप्रिया भगवती भगवासा भगाकरा। भगसृष्टा भाग्यवती भगरूपा भगासिनी ।।७५।। भगलिङ्गप्रिया देवी भगलिङ्गपरायणा। भगलिङ्गस्वरूपा च भगलिङ्गविनोदिनी ।।७६।। भगलिङ्गरता देवी भगलिङ्गनिवासिनी। भगमाला भगकला भगाधारा भगाम्बरा ।।७७।। भगवेगा भगाभूषा भगेन्द्रा भाग्यरूपिणी। भगलिङ्गाङ्गसम्भोगा भगलिङ्गासवावहा ।।७८।। भगलिङ्गसमाधुर्या भगलिङ्गनिवेशिता भगलिङ्गसुपूज्या च भगलिङ्गसमन्विता ।।७९।। भगलिङ्गविरक्ता च भगलिङ्गसमावृता। माधवी माधवीमान्या मधुरा मधुमानिनी ।।८०।। मन्दहासा महामाया मोहिनी महदुत्तमा। महामोहा महाविद्या महाघोरा महास्मृतिः ।।८१।। मनस्विनी मानवती मोदिनी मधुरानना। मेनका मानिनी मान्या मणिरत्नविभूषणा ।।८२।। मल्लिका मौलिका माला मालाधरमदोत्तमा। मदना सुन्दरी मेधा मधुमत्ता मधुप्रिया ।।८३।। मत्तहंसा समोन्नासा मत्तसिंहमहासना। महेन्द्रवल्लभा भीमा मौल्यं च मिथुनात्मजा ।।८४।। महाकाल महाकाली मनोबुद्धिर्महोत्कटा। माहेश्वरी महामाया महिषासुरघातिनी ।।८५।। मधुरा कीर्तिमत्ता च मत्ता मातङ्गगामिनी। मदप्रिया मांसरता मत्तयुक्काम कारिणी ।।८६।। मैथुन्यवल्लभा देवी महानन्दा महोत्सवा। मारीचिर्मारतिर्माया मनोबुद्धिप्रदायिनी ।।८७।। मोहा मोक्षा महालक्ष्मीर्महत्पदप्रदायिनी। यमरूपा च यमुना जयन्ती च जयप्रदा ।।८८।। याम्या यमवती युद्धा यदोः कुलविवर्द्धिनी। रमा रामा रामपत्नी रत्नमाला रतिप्रिया ।।८९।। रत्नसिंहासनस्था च रत्नाभरणमण्डिता। रमणी रमणीया च रत्या रसपरायणा ।।९०।। रसानन्दारतवती रघूणां कुलवर्द्धिनी। रमणारिपरिभ्राज्या रैधा राधिकरत्नजा ।।९१।। रावीरसस्वरूपा

च रात्रिराजसुखावहा। ऋतुजा ऋतुदा ऋद्धा ऋतुरूपा ऋतुप्रिया ।।९२।। रक्तप्रिया रक्तवती रङ्गिणी रक्तदन्तिका। लक्ष्मीर्लज्जा च लतिका लीलालग्नानिताक्षिणी ।।९३।। लीला लीलावती लोमाहर्षाह्लादनपट्टिका। ब्रह्मस्थिता ब्रह्मरूपा ब्रह्मणी वेदवन्दिता ।।९४।। ब्रह्मोद्भवा ब्रह्मकला ब्रह्माणी ब्रह्मबोधिनी। वेदाङ्गना वेदरूपा वनिता विनतावसा ।।९५।। बाला च युवती वृद्धा ब्रह्मकर्मपरायणा। विन्ध्यस्था विन्ध्यवासी च बिन्दुयुक् बिन्दुभूषणा ।।९६।। विद्यावती वेदधारी व्यापिका बर्हिणी कला। वामाचारप्रिया वह्निर्वामाचारपरायणा ।।९७।। वामाचाररता देवी वामदेवप्रियोत्तमा। बुद्धेन्द्रिया विबुद्धा च बुद्धाचरणमालिनी ।।९८।। बन्धमोचनकर्त्री च वारुणा वरुणालया । शिव शिवप्रिया शुद्धा शुद्धाङ्गी शुक्लवर्णिका ।।९९।। शुक्लपुष्पप्रिया शुक्ला शिवधर्मपरायणा। शुक्लस्था शुक्लिनी शुक्लरूपा शुक्लपशुप्रिया ।।१००।। शुक्रस्था शुक्रिणी शुक्रा शुक्ररूपा च शुक्रिका। षण्मुखी च षडङ्गा च षट्चक्रविनिवासिनी ।।१०१।। षड्ग्रन्थियुक्ता षोढा च षण्माता च षडात्मिका। षडङ्गयुवती देवी षडङ्गप्रकृतिर्वशी ।।१०२।। षडानना षड्रसा च षष्ठी षष्ठेश्वरी प्रिया। षड्वादा षोडशी च षोढान्यासस्वरूपिणी ।।१०३।। षट्चक्रभेदनकरी षट्चक्रस्वरूपिणी। षोडशस्वररूपा च षण्मुखी षट्पदान्विता ।।१०४।। सनकादिस्वरूपा च शिवधर्मपरायणा। सिद्धा सिद्धेश्वरी शुद्धा सुरमाता स्वरोत्तमा ।।१०५।। सिद्धविद्या सिद्धमाता सिद्धा सिद्धस्वरूपिणी। हरा हरिप्रिया हारा हरिणी हरियुक् तथा ।।१०६।। हरिरूपा हरिधरा हरिणाक्षी हरिप्रिया। हेतुप्रिया हेतुरता हिताहितस्वरूपिणी ।।१०७।। क्षमा क्षमावती क्षीता क्षुद्रघण्टाविभूषणा। क्षयङ्करी क्षितीशा च क्षीणमध्यसुशोभना ।।१०८।। अजाऽनन्ता अपर्णा च अहल्या शेषशायिनी स्वान्तर्गता च साधू नामन्तरानन्तरूपिणी ।।१०९।। अरूपा अमला चार्द्धा अनन्तगुणशालिनी। स्वविद्या विद्यका विद्याविद्या चार्विन्दुलोचना ।।११०।। अपराजिता जातवेदा अजपा अमरावती। अल्पा स्वल्पा अनल्पाऽऽद्या अणिमासिद्धिदायिनी ।।१११।। अष्ट सिद्धिप्रदा देवी रूपलक्षणसंयुता। अरविन्दमुखा देवी भोगसौख्यप्रदायिनी ।।११२।। आदिविद्या आदिभूता आदिसिद्धिप्रदायिनी। सीत्काररूपिणी देवी सर्वासनविभूषिता ।।११३।। इन्द्रप्रिया च इन्द्राणी इन्द्रप्रस्थनिवासिनी। इन्द्राक्षी इन्द्रवज्रा च इन्द्रमद्योक्षिणी तथा ।।११४।। इलाकामनिवासा च ईश्वरीश्वरवल्लभा। जननी चेश्वरी दीना भेदा चेश्वरकर्मकृत ।।११५।। उमा कात्यायनी ऊर्ध्वा मीना चोत्तरवासिनी। उमापतिप्रिया देवी शिवा चोङ्काररूपिणी ।।११६।। उरगेन्द्रशिरोरत्ना उरगोरगवल्लभा उद्यानवासिनी माला प्रशस्तमणिभूषणा ।।११७।। ऊर्ध्वदन्तोत्तमाङ्गी च उत्तमा चोर्ध्वकेशिनी। उमा सिद्धिप्रदा या च उरगासनसंस्थिता ।।११८।। ऋषिपुत्री ऋषिच्छन्दा ऋद्धिसिद्धिप्रदायिनी। उत्सवोत्सवसीमन्ता कामिका च गुणान्विता ।।११९।। एला एकारविद्या च एणी विद्याधरा तथा। ॐ कारवलयोपेता ॐ कारपरमा कला ।।१२०।। ॐ वदवद वाणी च ॐ काराक्षरमण्डिता। ऐन्द्री कुलिशहस्ता च ॐ लोकपरवासिनी ।।१२१।। ॐ कारमध्यबीजा च ॐ नमोरूपधारिणी। परब्रह्मस्वरूपा च अंशुकांशुकवल्लभा ।।१२२।। ॐ कारा अःफड्मन्त्रा च अक्षाक्षरविभूषिता। अमन्त्रा मन्त्ररूपा च पदशोभासमन्विता ।।१२३।। प्रणवोङ्काररूपा च प्रणवोच्चारभाक् पुनः। ह्रींकाररूपा ह्रींकारी वाग्बीजाक्षरभूषणा ।।१२४।। हृल्लेखा सिद्धियोगा च हृत्पद्मासनसंस्थिता। बीजाख्य नेत्रहृदया ह्रींबीजा भुवनेश्वरी ।।१२५।। क्लींकामराजा क्लिन्ना च चतुर्वर्गफलप्रप्रदा। क्लीं क्लीं क्लींरूपिका देवी क्रीं क्रीं क्रींनामधारिणी ।।१२६।। कमला शक्तिबीजा च पाशांकुशविभूषिता। श्रीं श्रींकारा महाविद्या श्रद्धा श्रद्धावती तथा ।।१२७।। ॐ ऐं क्लीं ह्रीं श्रीं परा च क्लींकारी परमाकला। ह्रीं क्लीं श्रींकाररूपा च सर्वकर्मफलप्रदा ।।१२८।। सर्वाढ्या सर्वदेवी च सर्वसिद्धिप्रदा तथा। सर्वज्ञा सर्वशक्तिश्च वाग्विभूतिप्रदायिनी ।।१२९।। सर्वमोक्षप्रदा

देवी सर्वभोगप्रदायिनी। गुणेन्द्रवल्लभा वामा सर्वशक्तिप्रदायिनी ॥१३०॥ सर्वानन्दमयी चैव सर्वसिद्धिप्रदायिनी। सर्व चक्रेश्वरी देवी सर्वसिद्धेश्वरी तथा ॥१३१॥ सर्वप्रियङ्करी चैव सर्वसौख्यप्रदायिनी। सर्वानन्दप्रदा देवी ब्रह्मानन्दप्रदायिनी ॥१३२॥ मनोवांछितदात्री च मनोबुद्धिसमन्विता। अकारादिक्षकारान्ता दुर्गा दुर्गार्तिनाशिनी ॥१३३॥ पद्मनेत्रा सुनेत्रा च स्वधा स्वाहा वषट्करी। स्ववर्गा देववर्गा च तवर्गा च समन्विता ॥१३४॥ अन्तस्था वेश्मरूपा च नवदुर्गा नरोत्तमा। तत्त्वसिद्धिप्रदा नीता तथा नीलपताकिनी ॥१३५॥ नित्यरूपा निशाकारी स्तम्भिनी मोहिनीति च। वशंकरी तथोच्चाटी उन्माद्याकर्षिणीति च ॥१३६॥ मातङ्गी मधुमत्ता च अणिमा लघिमा तथा। सिद्धा मोक्षप्रदा नित्या नित्यानन्दप्रदायिनी ॥१३७॥ रक्ताङ्गी रक्तनेत्रा च रक्तचन्दन भूषिता। स्वल्पसिद्धिः सुकल्पा च दिव्यचारणशुक्रभा ॥१३८॥ संक्रान्तिः सर्वविद्या च सप्तवासरभूषिता। प्रथमा च द्वितीया च तृतीया च चतुर्थिका ॥१३९॥ पञ्चमी चैव षष्ठी च विशुद्धा सप्तमी तथा। अष्टमी नवमी चैव दशम्येकादशी तथा ॥१४०॥ द्वादशी त्रयोदशी च चतुर्दश्यथ पूर्णिमा। अमावस्या तथा पूर्वा उत्तरा परिपूर्णिमा ॥१४१॥ खड्गिनी चक्रिणी घोरा गदिनी शूलिनी तथा। भुशुण्डी चापिनी बाणा सर्वायुधविभूषणा ॥१४२॥ कुलेश्वरी कुलवन्ती कुलाचारपरायणा। कुलकर्मसुरक्ता च कुलाचारप्रवर्द्धिनी ॥१४३॥ कीर्तिः श्रीश्च रमा रामा धर्मायै सततं नमः। क्षमाधृतिः स्मृतिर्मेधा कल्पवृक्षनिवासिनी ॥१४४॥ उग्रा उग्रप्रभा गौरी वेदविद्याविबोधिनी। साध्या सिद्धा सुसिद्धा च विप्ररूपा तथैव च ॥१४५॥ काली कराली काल्या च कालदैत्यविनाशिनी। कौलिनी कालिमा चैव कचटतपवर्णिका ॥१४६॥ जयिनी जयमुक्ता च जयदा जृम्भिणी तथा। स्राविणी द्राविणी देवी भरुण्डा विन्ध्यवासिनी ॥१४७॥ ज्योतिर्भूता च जयदा ज्वालामालासमाकुला। भिन्ना भिन्नप्रकाशा च विभिन्नभिन्नरूपिणी ॥१४८॥ अश्विनी भरणी चैव नक्षत्रसम्भवान्विता। काश्यपी विनताख्याता दितिजा दितिरेव च ॥१४९॥ कीर्तिः कामप्रिया देवी कीर्त्या कीर्तिविवर्द्धिनी। सद्योमांससमालब्धा सद्यश्छिन्नासिशंकरा ॥१५०॥ दक्षिणा चोत्तरा पूर्वा पश्चिमा दिक् तथैव च। अग्निनैर्ऋतिवायव्या ईशान्यादिक्तथा स्मृता ॥१५१॥ ऊर्ध्वाङ्गधोगता श्वेता कृष्णा रक्ता च पीतका। चतुर्वर्गा चतुर्वर्णा चतुर्मात्रात्मिकाक्षरा ॥१५२॥ चतुर्मुखी चतुर्वेदा चतुर्विद्या चतुर्मुखा। चतुर्गणा चतुर्माता चतुर्वर्गफलप्रदा ॥१५३॥ धात्री विधात्री मिथुना नारी नायकवासिनी। सुरामुदा मोदवती मोदिनी मेनकात्मजा ॥१५४॥ ऊर्ध्वकाली सिद्धिकाली दक्षिणा कालिका शिवा। नील्या सरस्वती सत्त्वा बगला छिन्नमस्तका ॥१५५॥ सर्वेश्वरी सिद्धविद्या परा परमदेवता। हिंगुला हिंगुलाङ्गी च हिंगुलाधरवासिनी ॥१५६॥ हिंगुलोत्तमवर्णाभा हिंगुलावरणा च सा। जाग्रती च जगन्माता जगदीश्वरवल्लभा ॥१५७॥ जनार्द्दनप्रिया देवी जययुक्ता जयप्रदा। जगदानन्दकारी च जगदाह्लादकारिणी ॥१५८॥ ज्ञानदानकरी यज्ञा जानकी जनकप्रिया। जयन्ती जयदा नित्या ज्वलदग्निसमप्रभा ॥१५९॥ बिम्बाधरा च विम्बोष्ठी कैलासाचलवासिनी। विभवा वडवाग्निश्च अग्निहोत्रफलप्रदा ॥१६०॥ मन्त्ररूपा च परा देवी तथैव गुरुरूपिणी। गया गङ्गा गोमती च प्रभासा पुष्करापि च ॥१६१॥ विन्ध्याचलरता देवी विन्ध्याचलनिवासिनी। बहुर्बहुसुन्दरी च कंसासुरविनासिनी ॥१६२॥ शूलिनी शूलहस्ता च वज्रा वज्रधरापि च। दुर्गा शिवा शान्तिकरी ब्रह्माणी ब्राह्मणप्रिया ॥१६३॥ सर्वलोकप्रणेत्री च सर्वरोगहरापि च। मङ्गला शोभना शुद्धा निष्कला

परमा कला ॥१६४॥ विश्वेश्वरी विश्वमाता ललिता वासितानना। सदाशिवा उमा क्षेमा चण्डिका चण्डविक्रमा ॥१६५॥ सर्वदेवमयी देवी सर्वागमभयापहा। ब्रह्मेशविष्णुनमिता सर्वकल्याणकारिणी ॥१६६॥ योगिनी योगमाता च योगीन्द्रहृदयस्थिता। योगिजाया योगवती योगीन्द्रानन्दयोगिनी ॥१६७॥ इन्द्रादिनमिता देवी ईश्वरी चेश्वरप्रिया। विशुद्धिदा भयहरा भक्तद्वेषिभयङ्करी ॥१६८॥ भगवेषा कामिनी च मरुण्डा भयकारिणी। बलभद्रप्रियाकारा संसारार्णवतारिणी ॥१६९॥ पञ्चभूता सर्वभूता विभूतिर्भूतिधारिणी। सिंहवाहा महामोहा मोहपाशविनाशिनी ॥१७०॥ मन्दुरा मदिरा मुद्रा मुद्रामुद्गरधारिणी। सावित्री च महादेवी परप्रियविनायका ॥१७१॥ यमदूती च पिङ्गाक्षी वैष्णवी शङ्करी तथा। चन्द्रप्रिया चन्द्ररता चन्दनारण्यवासिनी ॥१७२॥ चन्द्रनेत्रसमायुक्ता चण्डदैत्यविनाशिनी। सर्वेश्वरी यक्षिणी च किराती राक्षसी तथा ॥१७३॥ महाभोगवती देवी महामोक्षप्रदायिनी। विश्वहन्त्री विश्वरूपा विश्वसंहारकारिणी ॥१७४॥ धात्री च सर्वलोकाना हितकारणकामिनी। कमला सूक्ष्मदा देवी धात्री हरविनाशिनी ॥१७५॥ सुरेन्द्रपूजिता सिद्धा महातेजोवतीति च। परा रूपवती देवी त्रैलोक्याकर्षकारिणी ॥१७६॥ इति ते कथितं देवि पीतानामसहस्रकम्।

पठेद्वा पाठयेद्वापि सर्वसिद्धिर्भवेत्प्रिये ॥१७७॥ इति मे विष्णुना प्रोक्तं महास्तम्भकरं पदम्। प्रातःकाले च मध्याह्ने सन्ध्याकाले च पार्वति ॥१७८॥ एकचितः पठेदेतत्सर्वसिद्धिर्भविष्यति। एकवारं पठेद्यस्तु सर्वपापक्षयो भवेत् ॥१७९॥ द्विवारं प्रपठेद्यस्तु विघ्नेश्वरसमो भवेत्। त्रिवारं पठनाद्देवि सर्वं सिद्ध्यति सर्वथा ॥१८०॥ स्तवस्यास्य प्रभावेण साक्षाद्भवति सुव्रते। मोक्षार्थी लभते मोक्षं धनार्थी लभते धनम् ॥१८१॥ विद्यार्थी लभते विद्यां तर्कव्याकरणान्विताम्। महित्वं वत्सरान्ताच्च शत्रुहानिः प्रजायते ॥१८२॥ क्षोणीपतिर्वशस्तस्य स्मरेण सदृशो भवेत्। यः पठेत्सर्वदा भक्त्या श्रेयस्तु भवति प्रिये ॥१८३॥ गणाध्यक्षप्रतिनिधिः कविः काव्यपरो वरः। गोपनीयं प्रयत्नेन जननीजारवत्सदा ॥१८४॥ हेतुयुक्तो भवेन्नित्यं शक्तियुक्तः सदा भवेत्। य इदं पठते नित्यं शिवेन सदृशो भवेत् ॥१८५॥ जीवन्धर्मार्थभोगी स्यान्मृतो मोक्षपतिर्भवेत्। सत्यं सत्यं महादेवि सत्यं सत्यं न संशयः ॥ १८६॥ स्तवस्यास्य प्रभावेण देवेन सह मोदते। सुचिताश्च सुराः सर्वे स्तवराजस्य कीर्त्तनात् ॥१८७॥ पीताम्बरपरीधाना पीतगन्धानुलेपना। परमोदयकीर्तिः स्यात्परतः सुरसुन्दरी ॥१८८॥

हे प्रिये! जो इसे पढ़ता या पढ़ाता है उसे सब सिद्धियाँ प्राप्त होती हैं। इसे विष्णु भगवान् ने कहा है। यह महास्तम्भनकारी है। हे पार्वती! प्रातः, मध्याह्न तथा सायंकाल जो एकाग्रचित्त होकर इसका पाठ करता है, उसे सब सिद्धियाँ प्राप्त होती हैं। जो एक बार पढ़ता है, उसके सभी पापों का नाश हो जाता है। जो दो बार इसका पाठ करता है वह गणेश के समान हो जाता है। हे देवि! तीन बार इसका पाठ करने से सर्वथा समस्त सिद्धियाँ प्राप्त होती हैं। इस स्तोत्र के पाठ से साक्षात् सिद्धि प्राप्त होती है। मोक्षार्थी मोक्ष पाता है, धनार्थी धन पाता है, विद्यार्थी विद्या, तर्क और व्याकरण से युक्त विद्या पाता है। एक वर्ष के बाद साधक महत्व को प्राप्त करता है और उसके शत्रुओं का नाश हो जाता है। राजा उसके वश में हो जाता है और वह कामदेव के समान सुन्दर हो जाता है। हे प्रिये! जो सदा भक्ति से इसका पाठ करता है, उसका कल्याण होता है। वह गणाध्यक्ष बन जाता है। वह कविता करने वाला

श्रेष्ठ कवि हो जाता है। माता के जार के समान इस स्तोत्र को गोपनीय रखना चाहिये। सदा साधन एवं शक्ति से युक्त होना चाहिये। जो इसका नित्य पाठ करता है, वह शिव के समान हो जाता है। जीवन में वह धर्म और अर्थ का उपभोग करने वाला होता है और मरने पर उसे मोक्ष प्राप्त होता है। हे महादेवि! यह सत्य है, सत्य है, सत्य है, इसमें तनिक भी संशय नहीं है। इस स्तोत्र के प्रभाव से साधक देवता के साथ आनन्द करता है। इस स्तवराज के पाठ से सभी देवता स्वस्थ हो जाते हैं। वह देवी पीताम्बर धारण करने वाली, पीत गन्ध और अनुलेपन लगाने वाली, परम उत्कर्ष तथा यश देने वाली, परम सुरसुन्दरी है।

इति श्रीउत्कटशम्बरे नागेन्द्रप्रयाणतन्त्रे षोडशसाहस्रे विष्णुशंकरसम्वादे पीताम्बरासहस्रनामस्तोत्रं समाप्तम्।

बगलामुखीस्तोत्र

चलत्कनककुण्डलोल्लसितचारुगण्डस्थलीं लसत्कनकचम्पकद्युतिमदिन्दुबिम्बाननाम्। गदाहतविपक्षकां कलितलोलजिह्वां चलां स्मरामि बगलामुखीं विमुखवाङ्मनस्स्तम्भिनीम्॥ १॥ पीयूषोदधिमध्यचारुविलसद्रक्तोत्पले मण्डपे सत्सिंहासनमौलिपातितरिपुं प्रेतासनाध्यासिनीम्। स्वर्णाभां करपीडितारिरसनां भ्राम्यद्गदां बिभ्रतीमित्थं ध्यायपि यान्ति तस्य सहसा सद्योथ सर्वापदः॥ २॥ देवि त्वच्चरणाम्बुजार्चनकृते यः पीतपुष्पाञ्जलीन् भक्त्या वामकरे निधाय च मनुं मन्त्री मनोज्ञाक्षरम्। पीठध्यानपरोऽथ कुम्भकवशाद्बीजं स्मरेत्पार्थिवं तस्यामित्रमुखस्य वाचि हृदये जाड्यं भवेत्तक्षणात्॥ ३॥ वादी मूकति रंकति क्षितिपतिर्वैश्वानरः शीतति क्रोधी शाम्यति दुर्जनः सुजनति क्षिप्रानुगः खञ्जति। गर्वी खर्वति सर्वविच्च जडति त्वन्मन्त्रिणा यन्त्रितः श्रीर्नित्ये बगलामुखि प्रतिदिनं कल्याणि तुभ्यं नमः॥ ४॥ मन्त्रस्तावदलं विपक्षदलने स्तोत्रं पवित्रं च ते यन्त्रं वादिनियन्त्रणं त्रिजगतां जैत्रं च चित्रं च ते। मातः श्रीबगलेति नाम ललितं यस्यास्ति जन्तोर्मुखे त्वन्नामग्रहणेन संसदि मुखे स्तम्भो भवेद्वादिनाम्॥ ५॥ दुष्टस्तम्भनमुग्रविघ्नशमनं दारिद्र्यविद्रावणं भूभृत्सन्दमनं चलन्मृगदृशां चेतःसमाकर्षणम्। सौभाग्यैकेनितनं समदृशः कारुण्यपूर्णेक्षणं मृत्योर्मारणमाविरस्तु पुरतो मातस्त्वदीयं वपुः॥ ६॥ मातर्भञ्जय मद्विपक्षवदनं जिह्वा च संकीलय ब्राह्मीं मुद्रय दैत्यदेवधिषणामुग्रां गतिं स्तम्भय। शत्रूश्चूर्णय देवि तीक्ष्णगदया गौराङ्गि पीताम्बरे विघ्नौघं बगले हर प्रणमतां कारुण्यपूर्णे क्षणे॥ ७॥ मातर्भैरवि भद्रकालि विजये वाराहि विश्वाश्रये श्रीविद्ये समये महेशि बगले कामेशि वामे रमे। मातङ्गि त्रिपुरे परात्परतरे स्वर्गापवर्गप्रदे दासोऽहं शरणागतः करुणया विश्वेश्वरि त्राहि माम्॥ ८॥ संरम्भे चौरसंघे प्रहरणसमये बन्धने व्याधिमध्ये विद्यावादे विवादे प्रकुपितनृपतौ दिव्यकाले निशायाम्। वश्ये वा स्तम्भने वा रिपु वाधसमये निर्ज वा जने वा गच्छंस्तिष्ठन् त्रिकालं यदि पठति शिवं प्राप्नुयादाशु धीरः॥ ९॥ त्वं विद्या परमा त्रिलोकजननी। विघ्नौघसंछेदिनी योषित्कर्षणकारिणी जनमनःसम्मोहसन्दायिनी। स्तम्भोत्सारणकारिणी पशुमनः सम्मोहसन्दायिनी। जिह्वाकीलनभैरवी विजयते ब्रह्मादिमन्त्रो यथा॥ १०॥ विद्या लक्ष्मीर्नित्यसौभाग्यमायुः पुत्रैः पौत्रैः सर्वसाम्राज्यसिद्धिः। मानो भोगो वश्यमारोग्यसौख्यं प्राप्तं

तत्तद्भूतलेऽस्मिन्नरेण ॥ ११ ॥ त्वत्कृते जपसन्नाहं गदितं परमेश्वरि। दुष्टानां निग्रहार्थाय तद्गृहाण नमोस्तु ते ॥ १२ ॥ पीताम्बरां द्विभुजां च त्रिनेत्रां गात्रकोमलाम्। शिलामुद्गरहस्तां च स्मरे तां बगलामुखीम् ॥ १३ ॥

ब्रह्मास्त्रमिति विख्यातं त्रिषु लोकेषु विश्रुतम्। गुरुभक्ताय दातव्यं न देयं यस्य कस्य चित् ॥ १४ ॥ नित्यं स्तोत्रमिदं पवित्रमिह यो देव्याः पठत्यादराद्धृत्वा यन्त्रमिदं तथैव समरे बाहौ करे वा गले। राजानोऽप्यरयो मदान्धकरिणस्सर्पा मृगेन्द्रादिकारस्ते वै यान्ति विमोहिता रिपुगणा लक्ष्मीः स्थिरा सिद्धयः॥ १५ ॥

यह तीनों लोकों में ब्रह्मास्त्र के नाम से विख्यात है। गुरुभक्त को ही इसे देना चाहिये। ऐरे-गैरे को इसे नहीं देना चाहिये। जो मनुष्य पवित्र होकर इस देवी के स्तोत्र को आदरपूर्वक पढ़ता है तथा इसके यन्त्र को हाथ या गले में बाँधकर संग्राम में जाता है उससे राजा शत्रु, मदान्ध हाथी, साँप और शेर आदि तथा रिपुगण विमोहित हो जाते हैं तथा सिद्धियाँ और लक्ष्मी स्थिर हो जाती हैं।

इति रुद्रयामले तन्त्रे श्रीबगलामुखीस्तोत्रं समाप्तम्।

बगलामुखीशतनामस्तोत्र

नारद उवाच।

भगवन्देवदेवेश सृष्टिस्थितिलयात्मक। शतमष्टोत्तरं नाम्नां बगलाया वदाधुना ॥ १ ॥

नारद बोले: हे देवदेवेश भगवन्! सृष्टि, स्थिति और प्रलय के कारणस्वरूप आप मुझे अष्टोत्तर शतनाम बगलामुखी स्तोत्र का उपदेश करें।

श्रीभगवानुवाच। शृणु वत्स प्रवक्ष्यामि नाम्नामष्टोत्तरं शतम्। पीताम्बर्या महादेव्याः स्तोत्रं पापप्रणाशनम् ॥ २ ॥ यस्य प्रपठनात्सद्यो वादी मूको भवेत्क्षणात्। रिपूणां स्तम्भनं याति सत्यंसत्यं वदाम्यहम् ॥ ३ ॥

श्रीभगवान् बोले: हे वत्स, सुनो, मैं तुम्हे पीताम्बरा महादेवी का पापनाशक अष्टोत्तर शतनाम स्तोत्र बतलाता हूं, जिसके पढ़ने से गूंगा तत्काल ही वक्ता हो जाता है तथा शत्रुओं का स्तम्भन हो जाता है। यह मैं सत्य कहता हूं, सत्य कहता हूं।

विनियोग: ॐ अस्य श्रीपीताम्बर्यष्टोत्तरशतनामस्तोत्रस्य सदाशिवऋषिः अनुष्टुप्छन्दः श्रीपीताम्बरा देवता श्रीपीताम्बराप्रीतये पाठे विनियोगः।

ॐ बगला विष्णुवनिता विष्णुशंकरभामिनी। बहुला वेदमाता च महाविष्णुप्रसूरपि ॥ १ ॥ महामत्स्या महाकूर्मा महावाराहरूपिणी। नारसिंहप्रिया रम्या वामना बटरूपिणी ॥ २ ॥ जामदग्न्यस्वरूपा च रामा रामप्रपूजिता। कृष्णाकपर्दिनी कृत्या कलहा कलकारिणी ॥ ३ ॥ बुद्धिरूपा बुद्धभार्या बौद्धपाखण्डखण्डिनी। कल्किरूपा कलिहरा कलिदुर्गतिनाशिनी ॥ ४ ॥ कोटिसूर्यप्रतीकाशा कोटिकन्दर्पमोहिनी। केवला कठिना काली कला कैवल्यदायिनी ॥ ५ ॥ केशवी केशवाराध्या किशोरी केशवस्तुता। रुद्ररूपा रुद्रमूर्ती रुद्राणी रुद्रदेवता ॥ ६ ॥ नक्षत्ररूपा नक्षत्रा नक्षत्रेशप्रपूजिता। नक्षत्रेशप्रिया नित्या नक्षत्रपतिवन्दिता ॥ ७ ॥ नागिनी नागजननी नागराजप्रवन्दिता। नागेश्वरी नागकन्या नागरी च नगात्मजा ॥ ८ ॥ नगाधिराजतनया

नगराजप्रपूजिता। नवीना नीरदा पीता श्यामा सौन्दर्यकारिणी॥ ९॥ रक्ता नीला घना शुभ्रा श्वेता सौभाग्यदायिनी। सुन्दरी सौभगा सौम्या स्वर्णाभा स्वर्गतिप्रदा॥ १०॥ रिपुत्रासकरी रेखा शत्रुसंहारकारिणी। भामिनी च तथा माया स्तम्भिनी मोहिनी शुभा॥ ११॥ रागद्वेषकरी रात्री रौरवध्वंसकारिणी। यक्षिणी सिद्धनिवहा सिद्धेशा सिद्धिरूपिणी॥ १२॥ लंकापतिध्वंसकरी लंकेशी रिपुवन्दिता। लंकानाथकुलहरा महारावणहारिणी॥ १३॥ देवदानवसिद्धौघपूजिता परमेश्वरी। पराणुरूपा परमा परतन्त्रविनाशिनी॥ १४॥ वरदा वरदाराध्या वरदानपरायणा। वरदेशप्रिया वीरा वीरभूषणभूषिता॥ १५॥ वसुदा बहुदा वाणी ब्रह्मरूपा वरानना। बलदा पीतवसना पीतभूषणभूषिता॥ १६॥ पीतपुष्पप्रिया पीतहारा पीतस्वरूपिणी।

इति ते कथितं विप्र नाम्नामष्टोत्तरं शतम्॥ १७॥ यः पठेत्पाठयेद्वापि शृणुयाद्वा समाहितः। तस्य शत्रुः क्षयं सद्यो याति नैवात्र संशयः ॥ १८॥ प्रभातकाले प्रयतो मनुष्यः पठेत्सुभक्त्या परिचिन्त्य पीताम्। द्रुतं भवेत्तस्य समस्तबुद्धिर्विनाशमायाति च तस्य शत्रुः ॥ १९॥

हे विप्र, यह मैंने अष्टोत्तरशतनाम स्तोत्र का उपदेश तुम्हें किया। जो एकाग्रचित्त होकर इसे पढ़ता, पढ़ाता या सुनता है तत्काल उसका शत्रु विनष्ट हो जाता है, इसमें कोई संशय नहीं है। जो मनुष्य प्रातःकाल संयत होकर पीताम्बरा बगलामुखी का ध्यान करके भक्तिपूर्वक इस स्तोत्र का पाठ करता है, उसकी बुद्धि शीघ्र ही व्यवस्थित हो जाती है और उसके शत्रु विनाश को प्राप्त हो जाते हैं।

इति विष्णुयामले नारदविष्णुसम्वादे श्रीबगलाष्टोत्तरशतनामस्तोत्रं समाप्तम्।

इति श्रीमन्त्रमहार्णवे द्वितीयखण्डे बगलातन्त्रे एकादशस्तरङ्गः ॥ ११॥

मातंगी ध्यान

श्यामाङ्गीं शशिशेखरां त्रिनयनां वेदैः करैर्बिभ्रतीं
पाशं खेटमथांकुशं दृढमसिं नाशाय भक्तद्विषाम्।
रत्नालङ्करणप्रभोज्वलतनुं भास्वत्किरीटां शुभां
मातङ्गीं मनसा स्मरामि सदयां सर्वार्थसिद्धिप्रदाम्।।

पृ० ५५३

द्वादश तरङ्ग

मातङ्गी तन्त्र

तत्रादौ पटलप्रारम्भः।

अथ वक्ष्ये महादेवीं मातङ्गीं सर्वसिद्धिदाम्। अस्याः पूजनमात्रेण वाक्‌सिद्धिं लभते ध्रुवम्।।१।।

मैं सब सिद्धियों को देने वाली महादेवी मातङ्गी की साधना बतलाऊँगा। इसके पूजन मात्र से मनुष्य निश्चित रूप से वाणी की सिद्धि प्राप्त करता है।

अथ द्वात्रिंशदक्षरो मातङ्गीमन्त्रप्रयोगः।

मन्त्रमहोदधि में मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ ह्रीं ऐं श्रीं नमो भगवति उच्छिष्टचाण्डालि श्रीमातङ्गेश्वरि सर्वजनवशंकरि स्वाहा।

यह बत्तीस अक्षरों का मन्त्र है।

अस्य विधानम् :

विनियोग : अस्य मन्त्रस्य मतङ्गऋषिरनुष्टुप्छन्दो मातङ्गी देवता ममाभीष्टसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास : ॐ मतङ्गऋषये नमः शिरसि।।१।। अनुष्टुप्छन्दसे नमः मुखे।।२।। मातङ्गी देवतायै नमो हृदि।।३।। विनियोगाय नमः सर्वांगे।।४।। इति ऋष्यादिन्यासः।

करन्यास : ॐ ह्रीं ऐं श्रीं अंगुष्ठाभ्यां नमः १। नमो भगवति तर्जनीभ्यां नमः २। उच्छिष्टचाण्डालि मध्यमाभ्यां नमः ३। श्रीमातंगेश्वरि अनामिकाभ्यां नमः ४। सर्वजनवशंकरी कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५। स्वाहा करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ६। इति करन्यासः।

हृदयादिषडङ्गन्यास : ॐ ह्रीं ऐं श्रीं हृदयाय नमः।।१।। नमो भगवति शिरसे स्वाहा।।२।। उच्छिष्टचाण्डालि शिखायै वषट्।।३।। श्रीमातङ्गेश्वरि कवचाय हुम्।।४।। सर्वजनवशंकरि नेत्रत्रयाय वौषट्।।५।। स्वाहा अस्त्राय फट्।।६।। इति हृदयादिषडङ्गन्यासः।

इस प्रकार न्यास करके ध्यान करें।

अथ ध्यानम्।

ॐ घनश्यामलाङ्गीं स्थितां रत्नपीठे शुकस्योदितं शृण्वतीं रक्त वस्त्राम्। सुरापानमत्तां सरोजस्थितां श्रीं भजे वल्लकीं वादयन्तीं मतङ्गीम्।।१।।

इति ध्यायेत्। ततः पीठादौ रचिते सर्वतोभद्रमण्डले मण्डूकादिपरतत्त्वान्तपीठदेवताः संस्थाप्य ॐ मं मण्डूकादिपरतत्त्वान्तपीठदेवताभ्यो नमः। इति मन्त्रेण पीठदेवताः सम्पूज्य नव पीठशक्तीः पूजयेत्।

इस प्रकार ध्यान करने के बाद पीठ आदि पर रचित सर्वतोभद्रमण्डल में मण्डूकादि परतत्त्वान्त पीठदेवताओं को स्थापित करके "ॐ मं मण्डूकादि परतत्वान्त पीठदेवताभ्यो नमः" इस मन्त्र से पीठ देवताओं की पूजा करके नव पीठ शक्तियों की इस प्रकार पूजा करें :

पूर्वादिक्रमेण अष्टसु दिक्षु ॐ विभूत्यै मातंग्यै नमः १। ॐ उन्नत्यै मातंग्यै नमः २। ॐ कान्त्यै मातंग्यै नमः ३। ॐ सृष्ट्यै मातंग्यै नमः ४। ॐ कीर्त्यै मातंग्यै नमः ५। ॐ सन्नत्यै मातंग्यै नमः६। ॐ व्युष्ट्यै मातंग्यै नमः ७। ॐ उत्कृष्टये मातंग्ये नमः ८। मध्ये ॐ ऋद्धयै मातंग्यै नमः ६। इससे पीठ शक्तियों की पूजा करें।

ततः स्वर्णादिनिर्मितं यन्त्रं मूर्ति वा ताम्रपात्रे निधाय धृतेनाभ्यज्य तदुपरि दुग्धधारां जलधारां च दत्त्वा स्वच्छवस्त्रेण प्रोक्ष्य ॐ ह्रीं सर्वशक्तिकमलासनाय नमः। इति मन्त्रेण पुष्पाद्यासनं दत्त्वा पीठमध्ये संस्थाप्य प्रतिष्ठां च कृत्वा पुनर्ध्यात्वा मूलेन मूर्तिं प्रकल्प्य पाद्यादिपुष्पान्तैरुपचारैः संपूज्य देव्याज्ञां गृहीत्वा आवरणपूजां कुर्यात्।

इसके बाद स्वर्णादि से निर्मित मूर्ति या यन्त्र को ताम्रपत्र में रखकर घी से उसका अभ्यङ्ग करके उस पर दूध और जल की धारा देकर स्वच्छ वस्त्र से पोंछकर "ॐ ह्रीं सर्वशक्ति कमलासनाय नमः" इस मन्त्र से पुष्पादि आसन देकर पीठ के मध्य में रख उसमें प्राणप्रतिष्ठा करके ध्यान करके मूलमन्त्र से मूर्ति की कल्पना करके पाद्यादि से लेकर पुष्पाञ्जलिदान पर्यन्त उपचारों से पूजा करके देवी की आज्ञा लेकर इस प्रकार आवरण पूजा करें।

पुष्पाञ्जलि लेकर "ॐ संविन्मये परे देवि परामृतरसप्रिये। अनुज्ञां देहि मातङ्गि परिवारार्चनाय मे।" यह पढ़कर पुष्पाञजलि देकर विशेष अर्घ से विन्दु डाल कर "पूजितास्तर्पिताः सन्तु" यह कहें। इस प्रकार आज्ञा लेकर आवरण पूजा करें। (मातङ्गी द्वात्रिंशदक्षरमन्त्रयन्त्र देखिये चित्र २२)

तत्र त्रिकोणे ॐ[1] ह्रीं ऐं श्रीं रत्यै मातंग्यै नमः। श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः इति सर्वत्र।।१।। ॐ ह्रीं[2] ऐं श्रीं प्रीत्यै मातंग्यै नमः। प्रीतिश्रीपा०।।२।। ॐ ह्रीं[3] ऐं श्रीं मनोभवायै मातंग्यै नमः। मनोभवाश्रीपा०।।३।।

इससे पूजन करने के बाद पुष्पांजलि लेकर मूलमन्त्र का उच्चारण करके "अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले। भक्त्यां समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम्।" यह पढ़ कर पुष्पांजलि देकर विशेष अर्घ्यबिन्दु छिड़ककर "पूजितास्तर्पिताः सन्तु" यह कह कर पुष्पांजलि दें। इति प्रथमावरण।।१।।

ततः वट्कोणकेसरेषु आग्नेययादि चतुर्दिक्षु मध्ये दिक्षु च।

इसके बाद षट्कोण–केसरों में आग्नेयी आदि चार तथा मध्य दिशाओं में :

ॐ ह्रीं[4] ऐं श्री हृदयाय नमः। हृदयश्रीपा० १। नमो भगवति[5] शिरसे स्वाहा। शिरःश्रीपा० २। उच्छिष्टचाण्डालि[6] शिखायै वषट्। शिखाश्रीपा० ३। श्रीमातङ्गेश्वरि कवचाय[7] हुम्। कवचश्रीपा०४। सर्वजन वशङ्करि नेत्रत्रयाय वौषट्[8]। नेत्रत्रययश्रीपा० ५। स्वाहाऽस्त्राय[9] फट्। अस्त्रश्रीपा० ६।

इससे षडङ्गों की पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवें। इति द्वितीयावरण।।२।।

ततोऽष्टदलेषु पूज्यपूजकयोरन्तरालं प्राची तदनुसारेण अन्याः दिशः प्रकल्प्य प्राचीक्रमेण।

इसके बाद पूज्य और पूजक के अन्तराल को पूर्व दिशा मानकर तदनुसार अन्य दिशाओं की कल्पना करके प्राची क्रम से :

ॐ ह्रीं ऐं श्रीं[10] ब्राह्मै मातंग्यै नमः। ब्राह्मीश्रीपा० १। ॐ ह्रीं ऐं श्रीं माहेश्वर्यै[11] मातंग्यै नमः। माहेश्वरीश्रीपा० २। ॐ ह्रीं ऐं श्रीं कौमार्यै[12] मातंग्यै नमः। कौमारीश्रीपा० ३। ॐ ह्रीं ऐं श्री वैष्णव्यै[13] मातंग्यै नमः। वैष्णवीश्रीपा० ४। ॐ ह्रीं ऐं श्री[14] वाराह्यै मातंग्यै नमः। वाराहीश्रीपा० ५। ॐ ह्रीं ऐं श्रीं इन्द्राण्यै[15] मातंग्यै नमः। इन्द्राणीश्रीपा० ६। ॐ ह्रीं ऐं श्रीं चामुण्डायै[16] मातंग्ये नमः। चामुण्डाश्रीपा० ७। ॐ ह्रीं ऐं श्रीं महालक्ष्म्यै[17] मातंग्यै नमः। महालक्ष्मीश्रीपा० ८।

इससे आठ शक्तियों की पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवें। इति तृतीयावरण।।३।।

ततोष्टदलेषु द्वितीयेषु प्राचीक्रमणे :।

इसके बाद दूसरे आठ दलों में प्राचीक्रम से :

ॐ ह्रीं ऐं श्रीं असितांगभैरवाय[१८] मातंग्यै नमः। असितांगभैरवश्रीपा० १। ॐ ह्रीं ऐं श्रीं रुरुभैरवाय[१९] मातंग्यै नमः। रुरुभैरवश्रीपा० २। ॐ ऐं ह्रीं ऐं श्रीं चण्डभैरवाय[२०] मातंग्यै नमः। चण्डभैरवश्रीपा० ३। ॐ ह्रीं ऐं श्रीं क्रोधभैरवाय[२१] मातंग्यै नमः। क्रोधभैरवश्रीपा० ४। ॐ ह्रीं ऐं श्रीं उन्मत्तभैरवाय[२२] मातंग्यै नमः। उन्मत्तभैरवश्रीपा० ५। ॐ ह्रीं श्रीं कपालभैरवाय[२३] मातंग्यै नमः। कपालभैरवश्रीपा० ६। ॐ ह्रीं ऐं श्रीं भीषणभैरवाय[२४] मातंग्यै नमः। भीषणभैरवश्रीपा० ७। ॐ ह्रीं ऐं श्रीं संहारभैरवाय[२५] मातंग्यै नमः। संहारभैरव श्रीपा०।।८।।

इससे आठ भैरवों की पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवें। इति चतुर्थावरण।।४।।

ततः षोडशदलेषु प्राचीक्रमेण।

इसके बाद सोलह दलों में प्राची क्रम से :

ॐ ह्रीं ऐं श्रीं वामायै[२६] मातंग्यै नमः। वामाश्रीपा० १। ॐ ह्रीं ऐं श्रीं ज्येष्ठायै[२७] मातंग्यै नमः। ज्येष्ठाश्रीपा० २। ॐ ह्रीं ऐं श्रीं रोद्र्यै मातंग्यै[२८] नमः। रौद्रीश्रीपा० ३। ॐ ह्रीं ऐं श्रीं शान्त्यै मातंग्यै[२९] नमः। शान्तिश्रीपा० ४। ॐ ह्रीं ऐं श्रीं श्रद्धायै मातंग्यै नमः[३०]। श्रद्धाश्रीपा० ५। ॐ ह्रीं ऐं श्रीं माहेश्वर्यै मातंग्यै नमः[३१]। माहेश्वरीश्रीपा० ६। ॐ ह्रीं ऐं श्रीं क्रियायै मातंग्यै नमः[३२]। क्रियाश्रीपा० ७। ॐ ह्रीं ऐं श्रीं लक्ष्म्यै मातंग्यै नमः[३३]। लक्ष्मीश्रीपा० ८। ॐ ह्रीं ऐं श्रीं सृष्ट्यै मातंग्यै नमः[३४]। सृष्टिश्रीपा० ९। ॐ ह्रीं ऐं श्रीं मोहिन्यै मातंग्यै नमः[३५]। मोहिनीश्रीपा० १०। ॐ ह्रीं ऐं श्रीं प्रमथायै मातंग्यै नमः[३६]। प्रमथाश्रीपा० ११। ॐ ह्रीं ऐं श्रीं श्वासिन्यै मातंग्यै नमः[३७]। श्वासिनीश्रीपा० १२। ॐ ह्रीं ऐं श्रीं विद्युल्लतायै मातंग्यै नमः[३८]। विद्युल्लताश्रीपा० १३। ॐ ह्रीं ऐं श्रीं सुन्दर्यै मातंग्यै नमः[३९]। सुन्दरी श्रीपा० १४। ॐ ह्रीं ऐं श्रीं नन्दायै मातंग्यै नमः[४०]। नन्दाश्रीपा० १५। ॐ ह्रीं ऐं श्रीं नन्दबुद्ध्यै मातंग्यै नमः[४१]। नन्दबुद्धिश्रीपा० १६।

इससे सोलहों की पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवें। इति पञ्चमावरण।।५।।

इसके बाद भूपुर के अन्दर चारों दिशाओं में प्राची क्रम से :

ॐ ह्रीं ऐं श्रीं[४२] मातंग्यै मातंग्यै नमः। मातङ्गीश्रीपा० १। ॐ ह्रीं ऐं श्रीं महामातंग्यें[४३] मातंग्यै नमः। महामातङ्गी श्रीपा० २। ॐ ह्रीं ऐं श्रीं महालक्ष्मै[४४] मातंग्यै नमः। महालक्ष्मीश्रीपा० ३। ॐ ह्रीं ऐं श्रीं सिद्धये[४५] मातंग्यै नमः। सिद्धिश्रीपा० ४।

आग्नेयादिविक्षु च ॐ ह्रीं ऐं श्रीं विघ्नेशाय[४६] मातंग्यै नमः। विघ्नेश श्रीपा० १। ॐ ह्रीं ऐं श्रीं दुर्गायै[४७] मातंग्यै नमः। दुर्गाश्रीपा० २। ॐ ह्रीं ऐं श्रीं[४८] बटुकाय मातंग्यै नमः। बटुकश्रीपा० ३। ॐ ह्रीं ऐं श्रीं क्षेत्रपालाय[४९] मातंग्यै नमः। क्षेत्रपालश्रीपा० ४।।

इससे आठ द्वारपालों की पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवें। इति षष्ठावरण।।६।।

ततो भूपुराद्बहिः पूर्वादिक्रमेण इन्द्रादिदशदिक्पालान[५०-५९] वज्राद्यायुधानि[६०-६९] च एवमेव सम्पूज्य पुष्पाञ्जलिं दद्यात्। इति सप्तमावरण।।७।।

इसके बाद भूपुर से बाहर पूर्वादि क्रम से इन्द्रादि दश दिक्पालों तथा उनके वज्र आदि आयुधों की इसी प्रकार पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवें। इति सप्तमावरण।।७।।

इत्यावरणपूजां कृत्वा धूपादिनमस्कारान्तं सम्पूज्य जपं कुर्यात्। अस्य पुरश्चरणमयुत जपः। मध्वक्तैर्मधुपुष्पैर्दशांशतो होमः। तत्तद्दशांशेन तर्पणमार्जनब्राह्मणभोजनानि कुर्यात्। एवं कृते मन्त्रः सिद्धो भवति एतस्मिन्सिद्धे मन्त्रे मन्त्री प्रयोगान् साधयेत्।

इस प्रकार आवरण पूजा करके धूपादि से लेकर नमस्कार पर्यन्त पूजा करके जप करना चाहिये। इसका पुरश्चरण दश हजार जप है। मधु से युक्त महुए के फूलों से दशांश होम करना चाहिये। फिर तत्तद्दशांश तर्पण, मार्जन और ब्राह्मण भोजन करना चाहिये। इस प्रकार करने से मन्त्र सिद्ध होता है। इसके सिद्ध हो जाने से साधक मन्त्र से प्रयोगों को सिद्ध करें।

जपोयुतं सहस्रं तु होमः पुष्पैर्मधूकजैः मध्वक्तैः पूजयेत्पीठं वक्ष्यमाण विधानतः ।।१।। एवं यः पूजयेत्तस्य सिद्धिरित्थं मनोर्भवेत्।

जप दश हजार या एक हजार, तथा होम मधु से युक्त महुए के फूल से होना चाहिये। इस प्रकार आगे कहे गये विधान के अनुसार पीठ की पूजा करनी चाहिये। इससे जो पूजा करता है उसकी सिद्धि इस प्रकार होती है :

मल्लिकाकुसुमैर्होमाद्धोगो राज्यं च बिल्वजैः।।२।। पत्रैः फलैर्वा वश्या स्याज्जनता ब्रह्मवृक्षजैः। रोगनाशोऽमृताखण्डैर्निम्बैः श्रीस्तण्डुलैरपि।।३।। आकृष्टिं लवणैर्विद्यात्तगरैर्वेतसैर्जलम्। लवणैर्निम्बतैलाक्तैः शत्रुनाशोंधसोऽशनम्।।४।। निशाचूर्णयुतैर्लोणैर्होमात्स्यात्स्तम्भनं नृणाम्। रक्तचन्दनकर्पूरमांसीकुंकुमरोचनैः।।५।। चन्दनागुरुकर्पूरैर्गन्धाष्टकमुदीरितम्। एतद्धोमाज्जगद्वश्यं जायते मन्त्रिणो ध्रुवम्।।६।। एतत्पिष्ट्वा शतं जप्त्वा तिलकेन जगत्प्रियः। कदलीफल होमेन सर्वेष्टं समवाप्नुयात्। किं बहूक्तेन मातङ्गी पूजिता कामदा नृणाम्।।७।। मध्वक्तलोणरचितां पुत्तलीं दक्षिणांघ्रितः। हूयादष्टोत्तरशतं खादिराग्नौ वशं निशि।।८।।

मल्लिका के फूलों से होम करने से योग प्राप्त होता है। बेल के फूलों से होम करने से राज्य की प्राप्ति होती है। पलाश के पत्तों या फलों से होम करने से जनता वश में होती है। गिलोय के टुकड़ों से होम करने से रोगों का नाश होता है। नीम के टुकड़ों से तथा चावल से होम करने से लक्ष्मी की प्राप्ति होती है। नीम के तेल से सिक्त नमक से होम करने से शत्रु का नाश होता है। नमक से होम करने से आकर्षण होता है। तगर और वेतस से होम करने पर जल की सिद्धि होती है। नीम के तेल से सिक्त नमक से होम करने पर शत्रु का नाश तथा अन्न के आहार की सिद्धि होती है। हल्दी के चूर्ण से युक्त नमक से होम करने से मनुष्यों का स्तम्भन होता है। लाल चन्दन, कपूर, जटामांसी, केसर, गोरोचन, चन्दन, अगर और कपूर यह गन्धाष्टक कहलाता है। इससे होम करने से संसार साधक के वश में हो जाता है यह निश्चित है। इस गन्धाष्टक को पीस कर सौ बार जप करके तिलक करने से साधक जगत्प्रिय हो जाता है। केले के फल से होम करने से समस्त इच्छाओं की सिद्धि प्राप्त करता है। बहुत कहने से क्या; पूजन से मातंगी देवी मनुष्य की समस्त कामनाओं को सिद्ध करने वाली होती हैं। मधु से सिक्त नमक से बनायी गयी पुतली को दाहिने पैर की ओर से एक सौ आठ बार रात्रि में खैर की अग्नि में होम करने से वश में करने की सिद्धि प्राप्त होती है।

शालिपिष्टमयीं तां तु भक्षयेत्स्त्रीवशीकृतौ। कृष्णभूतनिशि ध्वांक्षोदरे क्षिप्त्वा समुद्रजम्।।९।। नीलसूत्रेण सम्वेष्ट्य चिंताग्नौ प्रदहेदमुम्। सहस्रजप्तं तद्भस्म यस्मै दद्यात्स दासवत्।।१०।।

साठी के चावल से आटे से पुतली बनाकर खाने से स्त्री को वश में करने की सिद्धि प्राप्त होती है। कृष्णपक्ष की रात्रि में शङ्ख को कौये के पेट में डालकर नीले धागे से लपेट कर चिता की अग्नि में उसे जला दें फिर उसकी भस्म को एक हजार जाप से अभिमन्त्रित करके साधक जिसे दे वह उसका दास हो जाता है।

इति द्वात्रिंशदक्षर मातङ्गीमन्त्र प्रयोगः।

अथ मातङ्गीभेदेन लघुश्यामामन्त्रप्रयोगः।

मन्त्र महोदधि में यह मन्त्र इस प्रकार है :

ऐं नम उच्छिष्टचाण्डालि मातङ्गी सर्ववशङ्करि स्वाहा।

यह बीस अक्षरों वाला मन्त्र है।

अस्य विधानम् :

विनियोग : अस्य लघुश्यामामन्त्रस्य मदनऋषिः निचृद्गायत्रीच्छन्दः देवी लघुश्यामा देवता ऐं बीजं स्वाहा शक्तिः ममाखिलाभीष्टसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास : ॐ मदनऋषये नमः शिरसि। निचृद्गायत्रीच्छन्दसे नमः मुखे २। देवीलघुश्यामादेवतायै नमः हृदि ३। ऐं बीजाय नमः गुह्ये ४। स्वाहा शक्तये नमः पादयोः ५। विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ६। इति ऋष्यादिन्यासः।

ऐं रत्यै नमः मूर्ध्नि १। ह्रीं प्रीत्यै नमो हृदि २। क्लीं मनोभवायै नमः पादयोः ३। ऐं इच्छाशक्त्यै नमो मुखे ४। ह्रीं ज्ञानशक्त्यै नमः कण्ठे ५। क्लीं क्रियाशक्त्यै नमो लिङ्गे ६। इससे न्यास करें।

बाणन्यास : ततो द्रां द्रावणबाणाय नमः शिरसि १। द्रीं शोषणबाणाय नमो मुखे २। क्लीं तापनबाणाय नमो हृदि ३। ब्लूं मोहनबाणाय नमो गुह्ये ४। सः उन्मादनबाणाय नमः पादयोः।।५।। इति बाणन्यासः।

करन्यास : ऐं नमः अङ्गुष्ठाभ्यां नमः १। उच्छिष्ट तर्जनीभ्यां नमः २। चाण्डालि मध्यमाभ्यां नमः ३। मातंग्यनामिकाभ्यां नमः ४। सर्ववशङ्करि कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५। स्वाहा करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।।६।। इति करन्यासः।

हृदयादिषडङ्गन्यास : ऐं नमः हृदयाय नमः १। उच्छिष्ट शिरसे स्वाहा २। चाण्डालि शिखायै वषट् ३। मातङ्गी कवचाय हुम् ४। सर्ववशङ्करि नेत्रत्रयाय वौषट् ५। स्वाहा अस्त्राय फट् ६। इति हृदयादिषडङ्गन्यासः।

मातृकान्यास : आं क्षां ब्राह्मीकन्यकायै नमो मूर्ध्नि १। ईं लां माहेश्वरीकन्यकायै नमो वामांसे २। ऊं हाँ कौमारीकन्यकायै नमो वामपार्श्वे ३। ऋं सां वैष्णवीकन्यकायै नमः नाभौ ४। लृं षां वाराहीकन्यकायै नमो दक्षपार्श्वे ५। ऐं शाँ इन्द्राणीकन्यकायै नमः दक्षांसे ६। औं वां चामुण्डाकन्यकायै नमः ककुदि ७। अः लां महालक्ष्मीकन्यकायै नमो हृदि ८। इति मातृकान्यासः।

सिद्धिन्यास : ॐ ऐं अणिमासिद्धिकन्यकायै नमो ललाटे १। ॐ ऐं महिमासिद्धिकन्यकायै नमः भ्रूमध्ये २। ॐ ऐं लघिमासिद्धिकन्यकायै नमः कण्ठे ३। ॐ ऐं गरिमासिद्धिकन्यकायै नमो हृदि ४। ॐ ऐं असितासिद्धिकन्यकायै नमः नाभौ ५। ॐ ऐं वशितासिद्धिकन्यकायै नमः आधारे।।६।। ॐ ऐं प्राकाम्यसिद्धिकन्यकायै नमो लिङ्गे।।७।। ॐ ऐं प्राप्तिसिद्धिकन्यकायै नमो मूर्ध्नि।।८।। इति सिद्धिन्यासः।

अप्सरोन्यास : ॐ क्लीं उर्वश्यप्सरःकन्यकायै नमो मूर्ध्नि १। ॐ क्लीं मेनकाप्सरःकन्यकायै नमः ललाटे २। ॐ क्लीं रम्भाप्सरःकन्यकायै नमो दक्षनेत्रे ३। ॐ क्लीं घृताच्यप्सरःकन्यकायै नमः वामनेत्रे ४। ॐ क्लीं पुञ्जिकस्थल्यप्सरःकन्यकायै नमः वक्त्रे ५। ॐ क्लीं सुकेश्यप्सरःकन्यकायै नमो दक्षकर्णे ६। ॐ क्लीं मञ्जुघोषाप्सरःकन्यकायै नमो वामकर्णे ७। ॐ क्लीं महारङ्गवत्यप्सरःकन्यकायै नमः ककुदि ८। इत्यप्सरोन्यासः।

अष्टकन्यान्यास : ॐ क्लीं यक्षकन्यकायै नमो दक्षांसे। क्लीं गन्धर्वकन्यकायै नमो वामांसे २। क्लीं सिद्धकन्यकायै नमो हृदि ३। क्लीं नरकन्यकायै नमो दक्षस्तने ४। क्लीं नागकन्यकायै नमो

वामस्तने ५। क्लीं विद्याधरकन्यकायै नमो जठरे। क्लीं किंपुरुषकन्यकायै नमो गुह्ये ७। क्लीं पिशाचकन्यकायै नमः आधारे ८। इत्यष्टकन्यान्यासः।

मन्त्रवर्णन्यास : ॐ नमः दक्षिणबाहुमूले १। ॐ नं नमः दक्षिणकूर्परे २। ॐ मं नमः दक्षिणमणिबन्धे ३। ॐ उं नमः दक्षहस्तांगुलिमूले ४। ॐ च्छि नमः दक्षहस्तांगुल्यग्रे ५। ॐ ष्टं नमः वामबाहुमूले ६। ॐ चां नमः वामकूर्परे ७। ॐ डां नमः वाममणिबन्धे ८। ॐ लिं नमः वामहस्तांगुलिमूले ९। ॐ मां नमः वामहस्तांगुल्यग्रे १०। ॐ तं नमः दक्षपादमूले ११। ॐ गिं नमः दक्षजानुनि १२। ॐ सं नमः दक्षगुल्फे १३। ॐ वैं नमः दक्षपादांगुलिमूले १४। ॐ वं नमः दक्षपादांगुल्यग्रे १५। ॐ शं नमः वामपादमूले १६। ॐ कं नमः वामजानुनि १७। ॐ रिं नमः वामगुल्फे १८। ॐ स्वां नमः वामपादांगुलिमूले १९। ॐ हां नमः वामपादांगुल्यग्रे २०। इति मन्त्रवर्णन्यासः।

एवं न्यासं कृत्वा सुवर्णवर्णान्तरीयं द्वीपं तत्र यद्रत्नमन्दिरं तन्मध्यगे सिंहासने स्थितां ध्यायेत्।

इस प्रकार न्यास करके सुवर्णवर्णान्तरीय द्वीप में जो रत्नों से बना मन्दिर है उसमें सिंहासन पर बैठी देवी का ध्यान करें।

अथ ध्यानम् :

ॐ माणिक्याभरणान्वितां स्मितमुखीं नीलोत्पलाभां वरां रम्यालक्तकलिप्तपादकमलां नेत्रत्रयोल्लासिनीम्। वीणावादनतत्परां सुरनतां कीरच्छदश्यामलां मातङ्गीं शशिशेखरामनु–भजेत्तांबूलपूर्णाननाम्।।१।।

इति ध्यात्वा मानसोपचारैः सम्पूजयेत्। ततः पीठादौ रचिते सर्वतोभद्रमण्डले मण्डूकादिपरतत्त्वान्तपीठदेवताः संस्थाप्य ॐ मं मण्डूकादिपरतत्त्वान्तपीठदेवताभ्यो नमः। इति पीठदेवताः सम्पूज्य नव पीठशक्तीः पूजयेत्।

इससे ध्यान करके मानसोपचारों से अच्छी तरह पूजा करें। इसके बाद पीठ आदि पर बनाये गये सर्वतोभद्रमण्डल में मण्डूकादि से लेकर परतत्वान्त पीठ देवताओं को स्थापित करके "ॐ मं मण्डूकादि परतत्त्वान्त पीठदेवताभ्यो नमः" इससे पीठ देवताओं की पूजा करके नव पीठशक्तियों की इस प्रकार पूजा करें।

पूर्वाद्यष्टदिक्षु ॐ भूत्यै लघुश्यामायै नमः १। ॐ उन्नत्यै लघुश्यामायै नमः २। ॐ कान्त्यै लघुश्यामायै नमः ३। ॐ सृष्टयै लघुश्यमायै नमः ४। ॐ कीर्त्यै लघुश्यामायै नमः ५। ॐ सन्नत्यै लघुश्यामायै नमः ६। ॐ व्युष्ट्यै लघुश्यामायै नमः ७। ॐ उत्कृष्ट्यै लघुश्यामायै नमः ८। मध्ये ॐ ऋद्ध्यै लघुश्यामायै नमः ९।

इति पीठशक्तीः पूजयेत्। ततः स्वर्णादिपत्रे त्रिकोणपञ्चकोणाष्टदलषोडशपत्रे भूपूरं लिखित्वा तत्ताम्रपात्रे निधाय घृतेनाभ्यज्य तदुपरि दुग्धधारां जलधारां च दत्त्वा स्वच्छवस्त्रेण सम्प्रोक्ष्य ॐ ह्रीं सर्वशक्तिकमलासनाय नमः इति मन्त्रेण पुष्पाद्यासनं दत्त्वा पीठमध्ये संस्थाप्य प्रतिष्ठां च कृत्वा मुनर्ध्यात्वा मूलेन मूर्तिं प्रकल्प्य।

इस प्रकार पीठशक्तियों की पूजा करें। इसके बाद सोने आदि के पत्र पर त्रिकोण, पञ्चकोण, अष्टदल, षोडशदल पत्र पर भूपुर लिखकर ताम्र पात्र में रख कर उस पर घी का अभ्यङ्ग करके उसके ऊपर दूध और जल की धारा देकर उसे स्वच्छ वस्त्र से पोंछ कर "ॐ ह्रीं सर्वशक्ति कमलासनाय नमः" इस मन्त्र से पुष्पाद्यासन देकर पीठ के बीच में उसे रखकर उसमें प्राणप्रतिष्ठा करके पुनः ध्यान करके मूलमन्त्र से मूर्ति की कल्पना करके :

ऐं शुकप्रियायै[1] विद्महे क्लीं कामेश्वरि धीमहि। तन्नः श्यामा प्रचोदयात्।

इति गायत्रीमन्त्रेण यागवस्तूनि संप्रोक्ष पाद्यादिपुष्पान्तरुपचारैः संपूज्य देव्याज्ञां गृहीत्वा आवरणपूजां कुर्यात्।

इस गायत्री मन्त्र से यज्ञ–वस्तुओं का सम्प्रोक्षण करके पाद्यादिपुष्पान्त उपचारों से पूजा करके देवी की आज्ञा लेकर इस प्रकार आवरण पूजा करें। (मातङ्गी विंशत्यक्षरीमन्त्रपूजनं यन्त्र देखिये चित्र २३)

पुष्पाञ्जलि लेकर " ॐ संविन्मये परे देवि परामृत रसप्रिये। अनुज्ञां देहि देवेशि परिवारार्चनाय मे।।१।।" यह पढ़ कर पुष्पाञ्जलि देवें।

इस प्रकार आज्ञा लेकर त्रिकोण में देवी के आगे :

ॐ ऐं रत्यै नमः[1]। रतिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। इति सर्वत्र।।१।। देवीदक्षिणतः। ॐ ह्रीं प्रीत्यै नमः[2]। प्रीतिश्रीपा० २। देवीवामे। ॐ क्लीं मनोभवायै नमः[3]। मनोभवाश्रीपा०।।३।।

इससे पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवें। इति प्रथमावरण।।१।।

उसके ऊपर त्रिकोण में देवी के आगे :

ॐ ऐं इच्छाशक्त्यै नमः[4]। इच्छाशक्तिश्रीपा० १। देवीदक्षिणतः ॐ ह्रीं ज्ञानशक्त्यै नमः[5]। ज्ञानशक्तिःश्रीपा० २। देवीवामे ॐ क्लीं क्रियाशक्त्यै नमः[6]। क्रियाशक्तिश्रीपा० ३।

इससे पूजा करें। इसके बाद पुष्पाञ्जलि लेकर मूल मन्त्र का उच्चारण करके "अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले। भक्त्या समर्पये तुभ्यं द्वितीयावरणार्चनम्।।१।।" यह पढ़कर पुष्पाञ्जलि देकर विशेष अर्घ्य बिन्दुओं को डालकर "पूजिताः तर्पिता सन्तु" यह कहें। इति द्वितीयावरण।।२।।

इसके बाद पञ्चकोणों में आग्नेयादि क्रम से :

ॐ द्रावणबाणाय नमः[7]। द्रावणवाणश्रीपा० १। द्रीं शोषणबाणाय नमः[8]। शोषणबाण श्रीपा० २। क्लीं तापनबाणाय नमः[9]। तापनबाणश्रीपा० ३। ब्लूं मोहनबाणाय नमः[10]। मोहनबाणश्रीपा० ४। सः उन्मादनबाणाय नमः[11]। उन्मादनबाणश्रीपा० ५।

इससे बाणों की पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवें। इति तृतीयावरण।।३।।

इसके बाद पञ्चकोणाग्रों में आग्नेयादि चारों दिशाओं में और मध्य दिशा में :

ऐं नमः हृदयाय नमः[12]। हृदयश्रीपा० १। उच्छिष्ट शिरसे स्वाहा[13]। शिरःश्रीपा० २। चाण्डालि शिखायै वषट्[14]। शिखाश्रीपा० ३। मातङ्गी कवचाय हुम्[15]। कवचश्रीपा० ४। सर्ववशङ्करि नेत्रत्रयाय वौषट्[16]। नेत्रत्रयश्रीपा० ५। स्वाहास्त्राय फट्[17]। अस्त्रश्रीपा० ६।

इससे षडङ्गों की पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवें। इति चतुर्थावरण।।४।।

इसके बाद अष्टदलों में पूज्य–पूजक के बीच प्राची दिशा को मान कर तदनुसार अन्य दिशाओं की कल्पना करके प्राची क्रम से :

आं क्षां ब्राह्मीकन्यकायै नमः[18]। ब्राह्मीकन्यकाश्रीपा० १। ईं लां माहेश्वरीकन्यकायै नमः[19]। माहेश्वरीकन्यकाश्रीपा० २। ऊं हां कौमारीकन्यकायै नमः[20]। कौमारीकन्यकाश्रीपा० ३। ॠं सा वैष्णवीकन्यकायै नमः[21]।वैष्णवीकन्यकाश्रीपा० ४। लॄं षां वाराहीकन्यकायै नमः[22]। वाराहीकन्यकाश्रीपा० ५।ऐं शां इन्द्राणीकन्यकायै नमः[23]। इन्द्राणीकन्यकाश्रीपा० ६। औं वां चामुण्डाकन्यकायै नमः[24]। चामुण्डाकन्यकाश्रीपा० ७। अः लां महालक्ष्मीकन्यकायै नमः[25]। महालक्ष्मीकन्यकाश्रीपा० ८।

इससे पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवें। इति पञ्चमावरण।।५।।

---

१. एषादिता तु मातङ्गी गायत्री सर्वसिद्धिदा। अनया यागवस्तूनि प्रोक्षेत्तस्याः समर्चने।

इसके बाद अष्टदलाग्रों में उनके समीप :

ॐ ऐं अणिमासिद्धिकन्यकायै नमः[२६] । अणिमासिद्धिकन्यकाश्रीपा० १। ॐ ऐं महिमासिद्धिकन्यकायै नमः[२७]। महिमासिद्धिकन्यकाश्रीपा० २। ॐ ऐं लघिमासिद्धिकन्यकायै नमः[२८]। लघिमासिद्धि-कन्यकाश्रीपा० ३। ॐ ऐं गरिमासिद्धिकन्यकायै नमः[२९]। गरिमासिद्धिकन्यकाश्रीपा० ४। ॐ ऐं असितासिद्धिकन्यकायै नमः[३०]। असितासिद्धिकन्यकाश्रीपा० ५। ॐ ऐं वशितासिद्धिकन्यकायै नमः[३१]। वशिता सिद्धिकन्यकाश्रीपा० ६। ॐ ऐं प्राकाम्यसिद्धिकन्यकायै नमः[३२] । प्राकाम्य सिद्धिकन्यकाश्रीपा० ७। ॐ ऐं प्राप्तिसिद्धिकन्यकायै नमः[३३] प्राप्तिसिद्धिकन्यकाश्रीपा० ८।

इससे पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवें। इति षष्ठावरण।।६।।

इसके बाद षोडशदलों में प्राची क्रम से :

ॐ क्लीं उर्वश्यप्सरःकन्यकायै नमः[३४]। उर्वश्यप्सरःकन्यकाश्रीपा० १। ॐ क्लीं मेनकाप्सरःकन्यकायै नमः[३५]। मेनकाप्सरःकन्यकाश्रीपा० २। ॐ क्लीं रम्भाप्सरःकन्यकायै नमः[३६]। रम्भाप्सरःकन्यकाश्रीपा० ३। ॐ क्लीं घृताच्यप्सरः कन्यकायै नमः[३७]। घृताच्यप्सरःकन्यकाश्रीपा० ४। ॐ क्लीं पुंजिकस्थल्यप्सरःकन्यकायै नमः[३८]। पुजिकस्यल्यप्सरःकन्यकाश्रीपा० ५। ॐ क्लीं सुकेश्यप्सरःकन्यकायै नमः[३९]। सुकेश्यप्सरःकन्यकाश्रीपा० ६। ॐ क्लीं मञ्जुघोषाप्सरःकन्यकायै नमः[४०]। मञ्जुघोषाप्सरःकन्यकाश्रीपा० ७। ॐ क्लीं महारंगवत्यप्सरः कन्यकायै नमः[४१]। महारंगवत्यप्सरः कन्यकाश्रीपा० ८। ॐ क्लीं यक्षकन्यकायै नमः[४२]। यक्षकन्यकाश्रीपा० ९। ॐ क्लीं गन्धर्वकन्यकायै नमः[४३]। गन्धर्वकन्यकाश्रीपा० १०। ॐ क्लीं सिद्धकन्यकायै नमः[४४]। सिद्ध कन्यकाश्रीपा० ११। ॐ क्लीं नरकन्यकायै नमः[४५]। नरकन्यकाश्रीपा० १२। ॐ क्लीं नागकन्यकायै नमः[४६]। नागकन्यकाश्रीपा० १३। ॐ विद्याधरकन्यकायै नमः[४७]। विद्याधरकन्यकाश्रीपा०।।१४।। ॐ क्लीं किंपुरुषकन्यकायै नमः[४८]। किंपुरुषकन्यकाश्रीपा० १५। ॐ क्लीं पिशाचकन्यकायै नमः[४९]। पिशाचकन्यकाश्रीपा० १६।

इससे पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवें। इति सप्तमावरण।।७।।

इसके बाद भूपुर के भीतर प्राची दिशा में :

ॐ गजाननायै योगिन्यै नमः[५०]। गजाननायोगिनीश्रीपा० १। ॐ सिंहमुख्यै योगिन्यै नमः[५१]। सिंहमुखी योगिनीश्रीपा० २। ॐ गृध्रास्यायै योगिन्यै नमः[५२]। गृध्रास्यायोगिनीश्रीपा० ३। ॐ काकतुण्डिकायै योगिन्यै नमः[५३]। काकतुण्डिकायोगिनीश्रीपा० ४। ॐ उष्ट्रग्रीवायै योगिन्यै नमः[५४]। उष्ट्रग्रीवायोगिनीश्रीपा० ५। ॐ हयग्रीवायै योगिन्यै नमः[५५]। हयग्रीवायोगिनीश्रीपा० ६। ॐ वाराह्यै योगिन्यै नमः[५६]। वाराहीयोगिनीश्रीपा० ७। ॐ शरभाननायै योगिन्यै नमः[५७]। शरभाननायोगिनीश्रीपा० ८। ॐ उलूकिकायै योगिन्यै नमः[५८]। उलूकिकायोगिनीश्रीपा० ९। ॐ शिवारावायै योगिन्यै नमः[५९]। शिवारावायोगिनीश्रीपा० १०। ॐ मयूर्यै योगिन्यै नमः[६०]। मयूरीयोगिनीश्रीपा० ११। ॐ विकटाननायै योगिन्यै नमः[६१]। विकटाननायोगिनीश्रीपा० १२। ॐ अष्टवक्त्रायै योगिन्यै नमः[६२]। अष्टवक्त्रायोगिनीश्रीपा० १३। ॐ कोटराक्ष्यै योगिन्यै नमः[६३]। कोटराक्षीयोगिनीश्रीपा० १४। ॐ कुब्जकायै योगिन्यै नमः[६४]। कुब्जकायोगिनीश्रीपा० १५। ॐ विकटलोचनायै योगिन्यै नमः[६५]। विकटलोचनायोगिनीश्रीपा० १६।

इससे षोडश योगिनियों की पूजा करें।

इसके बाद दक्षिण में :

ॐ शुष्कोदर्य्यै योगिन्यै नमः[६६]। शुष्कोदरीयोगिनीश्रीपा० १। ॐ ललज्जिह्वायै योगिन्यै नमः[६७]। ललज्जिह्वायोगिनीश्रीपा० २। ॐ अश्वदंष्ट्रायोगिन्यै नमः[६८]। अश्वदंष्ट्रायोगिनीश्रीपा० ३। ॐ वानराननायै योगिन्यै नमः[६९]। वानराननायोगिनीश्रीपा० ४। ॐ ऋक्षाक्ष्यै योगिन्यै नमः[७०]। ऋक्षाक्षीयोगिनीश्रीपा० ५। ॐ केकराक्ष्यै योगिन्यै नमः[७१]। केकराक्षी योगिनीश्रीपा० ६। ॐ वृहत्तुण्डायै योगिन्यै नमः[७२]। वृहत्तुण्डायोगिनीश्रीपा० ७। ॐ सुराप्रियायै योगिन्यै नमः[७३]। सुराप्रियायोगिनीश्रीपा० ८। ॐ कपालहस्तायै योगिन्यै नमः[७४]। कपालहस्तायोगिनीश्रीपा० ९। ॐ रक्ताक्ष्यैयोगिन्यै नमः[७५]। रक्ताक्षीयोगिनीश्रीपा० १०। ॐ शुक्यै योगिन्यै नमः[७६]। शुकीयोगिनीश्रीपा० ११। ॐ श्येन्यै योगिन्यै नमः[७७]। श्येनीयोगिनीश्रीपा० १२। ॐ कपोतिकायै योगिन्यै नमः[७८]। कपोतिकायोगिनीश्रीपा० १३। ॐ पाशहस्तायै योगिन्यै नमः[७९]। पाशहस्तायोगिनीश्रीपा० १४। ॐ दण्डहस्तायै योगिन्यै नमः[८०]। दण्डहस्तायोगिनीश्रीपा० १५। ॐ प्रचण्डायै योगिन्यै नमः[८१]। प्रचण्डायोगिनीश्रीपा० १६।

इससे षोडश योगिनियों की पूजा करें।

इसके बाद पश्चिम द्वार पर :

ॐ चण्डविक्रमायै योगिन्यै नमः[८२]। चण्डविक्रमायोगिनीश्रीपा० १। ॐ शिशुघ्न्यै योगिन्यै नमः[८३]। शिशुघ्नीयोगिनीश्रीपा० २। ॐ पापहन्त्र्यै नमः[८४]। पापहन्त्रीयोगिनीश्रीपा० ३। ॐ काल्यै योगिन्यै नमः[८५]। कालीयोगिनीश्रीपा० ४। ॐ रुधिरपायिन्यै योगिन्यै नमः[८६]। रुधिरपायिनी–योगिनीश्रीपा० ५। ॐ वसाधयायै योगिन्यै नमः[८७]। वसाधयायोगिनीश्रीपा० ६। ॐ गर्भभक्षायै योगिन्यै नमः[८८]। गर्भभक्षायोगिनीश्रीपा० ७। ॐ शवहस्तायै योगिन्यै नमः[८९]। शवहस्तायोगिनीश्रीपा० ८। ॐ अन्त्रमालिन्यै योगिन्यै नमः[९०]। अन्त्रमालिनीयोगिनीश्रीपा० ९। ॐ स्थूलकेशिन्यै योगिन्यै नमः[९१] स्थूलकेशिनी योगिनी श्रीपा० १०। ॐ वृहत्कुक्ष्यै योगिन्यै नमः[९२]। बृहत्कुक्षियोगिनीश्रीपा० ११। ॐ सर्पास्यायै योगिन्यै नमः[९३]। सर्पास्यायोगिनीश्रीपा० १२। ॐ प्रेत वाहनायै योगिन्यै नमः[९४]। प्रेतवाहनायोगिनीश्रीपा० १३। ॐ दंदशूककरायै योगिन्यै नमः[९५]। दंदशूककरायोगिनीश्रीपा० १४। क्रौंच्यै योगिन्यै नमः[९६]। क्रौंचीयोगिनीश्रीपा० १५। ॐ मृगशीर्षायै योगिन्यै नमः[९७]। मृगशीर्षायोगिनीश्रीपा० १६।

इससे षोडश योगिनियों की पूजा करें।

इसके बाद उत्तर द्वार पर :

ॐ वृषाननायै योगिन्यै नमः[९८]। वृषाननायोगिनीश्रीपा० १। ॐ वृत्तास्यायै योगिन्यै नमः[९९]। वृत्तास्यायोगिनीश्रीपा० २। ॐ घूमनिःश्वासायै योगिन्यै नमः[१००]। घूमिनःश्वासायोगिनीश्रीपा० ३। ॐ व्योमैकचरणायै योगिन्यै नमः[१०१]। व्योमैकचरणायोगिनीश्रीपा० ४। ॐ ऊर्ध्वदृशे योगिन्यै नमः[१०२]। ऊर्ध्वदृग्योगिनीश्रीपा० ५। ॐ तापिन्यै योगिन्यै नमः[१०३]। तापिनीयोगिनीश्रीपा० ६। ॐ शोषिण्यै योगिन्यै नमः[१०४]। शोषिणीयोगिनीश्रीपा० ७। ॐ दृष्ट्यै योगिन्यै नमः[१०५]। दृष्टियोगिनीश्रीपा० ८। ॐ कोटरायै योगिन्यै नमः[१०६]। कोटरायोगिनीश्रीपा० ९। ॐ स्थूलनासिकायै योगिन्यै नमः[१०७]। स्थूलनासिकायोगिनीश्रीपा० १०। ॐ विद्युत्प्रभायै योगिन्यै नमः[१०८]। विद्युत्प्रभायोगिनीश्रीपा० ११। ॐ बलाकास्यायै योगिन्यै नमः[१०९]। बलाकास्यायोगिनीश्रीपा० १२। ॐ मार्जार्यै योगिन्यै नमः[११०]। मार्ज्जारीयोगिनीश्रीपादुकां पूजया० १३। ॐ कटपूतनायै योगिन्यै नमः[१११]। कटपूतनायोगिनीश्रीपा० १४। ॐ अट्टाट्टहासायै योगिन्यै नमः[११२]। अट्टाट्टहासायोगिनीश्रीपा० १५। ॐ कामाक्ष्यै योगिन्यै नमः[११३]। कामाक्षीयोगिनीश्रीपा० १६।

इससे षोडश योगिनियों की पूजा करें।

इस प्रकार चौंसठ योगिनियों[1] की पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवें। इत्यष्टमावरण।।८।।

इसके बाद भूपुर के भीतर :

अग्निकोणे ॐ बं बटुकाय नमः[114]। बटुकश्रीपा० १। नैर्ऋत्यकोणे ॐ गं गणपतये नमः[115]। गणपतिश्रीपा० २। वायुकोणे ॐ क्षं क्षेत्रपालाय नमः[116]। क्षेत्रपालश्रीपा० ३। ईशानकोणे ॐ दुं दुर्गायै नमः[117]। दुर्गाश्रीपा० ४।

इस प्रकार पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवें। इति नवमावरण।।९।।

ततो दशमावरणे भूपूराद्बहिः पूर्वादिक्रमेण इन्द्रादिदशदिक्पालान्[118-127] पूजयित्वा पुष्पाञ्जलिं दद्यात्।।१०।।

इसके बाद दशमावरण में भूपुर के बाहर पूर्वादि क्रम से इन्द्रादि दश दिक्पालों की पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवें। इति दशमावरण।।१०।।

एकादशावरणे इन्द्रादिसमीपे वज्राद्यस्त्राणि[128-137] पूजयित्वा पुष्पाञ्जलिं दद्यात्।।११।।

एकादश आवरण में इन्द्रादि के समीप वज्रादि अस्त्रों की पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवें। इति एकादशावरण।।११।।

उसके बाहर पूर्व आदि चारों दिशाओं में :

ॐ तत्तत्संज्ञवाद्येभ्यो नमः[138]। तत्तत्संज्ञवाद्यश्रीपा० १। ॐ विततवाद्याय नमः[139]। विततवाद्यश्रीपा० २। ॐ घनवाद्याय नमः[140]। घनवाद्यश्रीपा० ३। ॐ सुषिराभिधवाद्याय नमः[141]। सुषिरवाद्यश्रीपा० ४।

इस प्रकार चतुर्वाद्यों की पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवें। इति द्वादशावरण।।१२।।

इत्यावरणपूजां कृत्वा धूपादिनमस्कारान्तं सम्पूज्य जपं कुर्यात्। अस्य पुरश्चरणमेकलक्षजपः। मधूकपुष्पैः समिद्भिर्वा दशांशतो होमः। तत्तद्दशांशेन तर्पणमार्जनब्राह्मणभोजनानि कुर्यात्। एवं कृते मन्त्रः सिद्धो भवति। एतस्मिन्सिद्धे मन्त्री मातङ्गीमन्त्रोक्तप्रयोगान् साधयेत्।

इस प्रकार आवरणों की पूजा करके धूपादि से लेकर नमस्कार पर्यन्त पूजा करके जप करें। इसका पुरश्चरण एक लाख जप है। महुये के फूल या समिधाओं से दशांश होम तथा होम से तत्तद्दशांश तर्पण, मार्जन और ब्राह्मण भोजन करें। ऐसा करने पर मन्त्र सिद्ध होता है। इसके सिद्ध हो जाने पर साधक मातङ्गी मन्त्र में कहे गये प्रयोगों को सिद्ध करें।

लक्षं जपेन्मधूकोत्थैर्जुहुयादयुत शुभैः। द्वादशावरणैरेवं लघु श्यामां यजेत्तु यः। सर्वासां सम्पदां पात्रमचिराज्जायते स ना।।१।। राजानो राजपुत्राश्च सुदृशो न मदमन्थराः। दासा मनोवचःकायैर्भवन्त्यस्या उपासितुः।।२।। शाकिनीप्रेतभूताश्च धर्षितुं तन्न शक्नुगुः। भूरिणा किमिहोक्तेन देवीयमखिलेष्टदा।।३।। यन्मन्त्रस्मरणादेव नरो देवोपमो भवेत्। देव्या उपासकैः पुंभिः स्त्रियो निन्द्या न जातु चित्।।४।। देवीवन्माननीयास्ता मनोभीष्टमभीप्सुभिः। मातङ्गीमन्त्रसम्प्रोक्ताः प्रयोगा अत्र कीर्तिताः।।५।।

जो साधक एक लाख मन्त्र का जप करे तथा दश हजार महुए के फूल या समिधा से होम करे और इस प्रकार द्वादश आवरणों से लघु श्यामा की पूजा करे वह शीघ्र समस्त सम्पत्तियों का पात्र बन जाता है। उन्मत्त राजे और राजपुत्र मन, वाणी और शरीर से साधक के वश में हो जाते हैं। उसे शाकिनी, डाकिनी तथा भूत, प्रेत बाधा नहीं पहुँचा सकते। अधिक कहने से

---

१. नश्यन्ति भूतशाकिन्यै आशां नामश्रुतरेपि।

क्या, यह मातङ्गी देवी समस्त इच्छाओं की पूर्ति करने वाली हैं। जिसके मन्त्र के स्मरणमात्र से मनुष्य देवता बन जाता है, उस देवी के उपासक को चाहिये कि वह स्त्रियों की निन्दा कभी न करे। जो लोग अपने मनकी इच्छा को सफल बनाना चाहते हैं, उन्हें चाहिए कि वे स्त्रियों का देवी के समान ही सम्मान करें। मातङ्गी मन्त्र में कहे गये प्रयोग यहाँ बताये गये।

इति विंशत्यक्षरेलघुश्यामामन्त्रप्रयोगः।

अथ मातङ्गीदशाक्षरमन्त्रप्रयोगः।

तन्त्रसार में यह मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ ह्रीं क्लीं हूं मातंग्यै फट् स्वाहा।

यह दशाक्षर मन्त्र है।

अस्य विधानम् :

विनियोग : अस्य मन्त्रस्य दक्षिणामूर्तिऋषिर्विराट् छन्दः मातङ्गी देवता ह्रीं बीजं हूं शक्तिः क्लीं कोलकं सर्वेष्टसिद्धये जपे विनियोगः।

ऋष्यादिषडङ्गन्यास : ॐ दक्षिणामूर्तिऋषये नमः शिरसि १। विराट् छन्दसे नमः मुखे २। मातङ्गी देवतायै नमो हृदि ३। ह्रीं बीजाय नमो गुह्ये ४। हूं शक्तये नमः पादयोः ५। क्लीं कीलकाय नमः नाभौ ६। विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ७। इति ऋष्यादिन्यासः।

करन्यास : ॐ ह्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः २। ॐ ह्रूँ मध्यमाभ्यां नमः ३। ॐ ह्रैं अनामिकाभ्यां नमः ४। ॐ ह्रौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५। ॐ ह्रः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ६। इति करन्यासः।

इसी प्रकार हृदयादि षडङ्गन्यास करके ध्यान करें :

अथ ध्यानम्।

श्यामाङ्गी शशिशेखरं त्रिनयनां वेदैः करैर्बिभ्रतीं पाशं खेटमथांकुशं दृढमसिं नाशाय भक्तद्विषाम्। रत्नालङ्करणप्रभोज्ज्वलतनुं भास्वत्किरीटां शुभां मातङ्गी मनसा स्मरामि सदयां सर्वार्थसिद्धिप्रदाम्।।१।।

इति ध्यायेत्। ततः पीठादौ रचिते सर्वतोभद्रमण्डले मण्डूकादिपरत्त्वांतपीठदेवताः संस्थाप्य ॐ मं मण्डूकादिपरतत्त्वांतपीठदेवताभ्यो नमः इति संपूज्य पूर्वोक्तनवपीठ शक्तिः पूजयेत्।

इससे ध्यान करने के बाद पीठादि पर बनाये गये सर्वतोभद्रमण्डल में मण्डूकादि परतत्वान्त पीठदेवताओं को संस्थापित करके "ॐ मं मण्डूकादि परतत्वान्त पीठदेवताभ्यो नमः" इससे पूजा करके पूर्वोक्त नव पीठशक्तियों की पूजा करें।

ततः स्वर्णादिनिर्मितं यन्त्रं अग्न्युत्तारणपूर्वकम्। ॐ ह्रीं सर्वशक्तिकमलासनाय नमः। इति मन्त्रेण पुष्पाद्यासनं दत्त्वा पीठमध्ये संस्थाप्य पुनर्ध्यात्वा आवाहनादिपुष्पान्तैरुपचारैः सम्पूज्य आवरणपूजां कुर्यात्।।

इसके बाद स्वर्णादि से बनाये यन्त्र को अग्न्युत्तारणपूर्वक "ॐ ह्रीं सर्वशक्ति कमलासनाय नमः" इस मन्त्र से पुष्पाद्यासन देकर पीठ के बीच में संस्थापित करके पुनः ध्यान करके आवाहनादि से लेकर पुष्पांजलिदान तक सभी उपचारों से पूजा करके इस प्रकार आवरण पूजा करें।

अष्टदलेषु प्राचीक्रमणे ॐ रत्यै नमः१। ॐ प्रीत्यै नमः २। ॐ मनोभवायै नमः ३। ॐ क्रियायै नमः ४। ॐ शुद्धायै नमः ५। ॐ अनङ्गकुसुमायै नमः ६। ॐ अनङ्गमदनायै नमः ७। ॐ मदनालसायै नमः ८।

इससे आठ शक्तियों की पूजा करें। इति प्रथमावरण।।१।।

ततो भूपुरे इन्द्रादिदशदिक्पालान्। वज्राद्यायुधानि च सम्पूजयेत्। इत्यावरणपूजां कृत्वा धूपादि नमस्कारान्तं सम्पूज्य पायसशर्करानैवेद्यं च दत्त्वा जपं कुर्यात्। अस्य पुरश्चरणं प्रतिदिनं षट्सहस्रं जपेत्। तथा च पुरश्चरणकाले तु षट्सहस्रं मनुं जपेत्। तद्दशांशं हुनेदाज्यैः शर्करामधुभिः सह।।१।। ब्रह्मवृक्षोद्भवैः काष्ठैः साधकः शक्तिभिः सह। एवं पुरस्क्रिया कृत्वा प्रयोगविधिमाचरेत्।।२।। चतुःपथे श्मशाने वा कलामध्ये च मांत्रिकः। मत्स्यं मांसं पायसं च दद्याद्धूपं च गुग्गुलम्।।३।। रात्रियोगेन कर्तव्यं सदा पूर्णश्च साधकः। एवं प्रयोग मात्रेण कविता जायते ध्रुवम्।।४।। अग्निस्तम्भं जलस्तम्भं वाक्स्तम्भं कारयेध्रुवम्। मन्त्री जयति शत्रूंश्च ताक्ष्यों भोगिकुलं यथा।।५।। शास्त्रे वादे कवित्वे च वृहस्पतिरिवापरः। अनेनैव विधानेन मातङ्गी सिद्धिदायिनी।।६।। नूनं तद्गृहमागत्य कुबेरैर्दीयते वसु। विना मत्स्यैर्विनामांसैर्नार्चयेत्परदेवताम्।।७।।

इसके बाद भूपुर में इन्द्रादि दश दिक्पालों की तथा वज्रादि उनके शस्त्रों की पूजा करें। इस प्रकार आवरण पूजा करके धूपादि नमस्कार पर्यन्त अच्छी तरह पूजा करके खीर, शकर और नैवेद्य देकर जप करें। इसका पुरश्चरण प्रतिदिन छः हजार मन्त्र जप करना है। कहा भी गया है : पुरश्चरण काल में छः हजार मन्त्र का जप करना चाहिये। उसका दशांश शकर और मधु के साथ घी तथा पलाश की समिधाओं से होम करना चाहिये। इस प्रकार पूर्वकार्य करके प्रयोग विधि करना चाहिये। साधक को चाहिये कि वह चतुष्पथ, श्मशान या कलाभध्य में मछली, मांस, खीर तथा गुग्गुल का धूप देवें। यह सब कार्य रात्रि में करना चाहिये। इससे साधक की कामना पूर्ण होती है। इस प्रयोग मात्र से निश्चित रूप से कविता की धारा फूट पड़ती है। यह अग्नि का स्तम्भन, जल का स्तम्भन तथा वाणी का स्तम्भन निश्चित रूप से करता है। साधक शत्रुओं को जीत लेता है जैसे ताक्ष्य समस्त सर्पकुल को जीत लेता है। इस मन्त्र की सिद्धि से साधक शास्त्र में, वाद–विवाद में तथा कवित्व में एक दूसरा वृहस्पति बन जाता है। इसी प्रकार से मातङ्गी देवी सिद्धि देने वाली होती हैं। निश्चय ही साधक के घर में आकर कुबेर धन देते हैं। इस परमदेवता की पूजा बिना मछली और मांस के नहीं करनी चाहिये।

इति मातङ्गीदशाक्षरमन्त्रप्रयोगः।

अथ मातङ्गी भेदेन सुमुखीमन्त्र[1] प्रयोगः।।

मन्त्रमहोदधौ।। अथ वक्ष्ये परां विद्यां सुमुखीमतिगोपिताम्। यां लब्ध्वा देशिको विद्वान्न शोचति कृताकृते।।१।। मन्त्रो यथा

मन्त्र महोदधि में कहा गया है : अत्यन्त गुप्त, श्रेष्ठ सुमुखी विद्या को मैं कहूँगा जिसको पाकर विद्वान् साधक कृताकृत कर्मों को नहीं सोचने लगता। मन्त्र यह है :

उच्छिष्टचाण्डालिनी सुमुखी देवि महापिशाचिनी ह्रीं ठः ठः ठः।

यह बाइस अक्षरों का मन्त्र है।

अस्य विधानम्।

विनियोग : अस्य सुमुखीमन्त्रस्य भैरवऋषिगायत्रीच्छन्दः सुमुखी देवता ममाभीष्टसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

---

१. अस्य सुमुखीप्रयोगस्य सुमुखींपूजनयंत्रँ पूर्वपृष्ठे द्रष्टब्यम्।

ऋष्यादिन्यास : ॐ भैरवऋषये नमः शिरसि १। गायत्रीछन्दसे नमः मुखे २। सुमुखीदेवतायै नमो हृदि ३। विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ४। इति ऋष्यादिन्यासः।।

करन्यास : ॐ उच्छिष्टचाण्डालिनि अँगुष्ठाभ्यां नमः १। समुखि तर्जनीभ्यां नमः २। देवि मध्यमाभ्यां नमः ३। महापिशाचिनि अनामिकाभ्यां नमः ४। ह्रीं कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५। ठः ठः ठः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ६। इति करन्यासः।

हृदयादिषडङ्गन्यास : उच्छिष्टचाण्डालिनि हृदयाय नमः १। सुमुखि शिरसे स्वाहा २। देवि शिखायै वषट् ३। महापिशाचिनि कवचाय हुम् ४। ह्रीं नेत्रत्रायाय वौषट् ५। ठः ठः ठः अस्त्राय फट् ६। इति हृदयादिषडङ्गन्यासः।

इस प्रकार न्यास करके ध्यान करें।

अथ ध्यानम्।

ॐ गुञ्जानिर्मितहारभूषितकुचां सद्यौवनोल्लासिनीं हस्ताभ्यां नृकपालखड्गलतिके रम्ये मुदा बिभ्रतीम्। रक्तालंकृतिवस्त्रलेपनलसद्देहप्रभां ध्यायतां नृणां श्रीसुमुखीं शवासनगताम् स्युः सर्वदा सम्पदः।।१।।

फेत्कारिणीतन्त्रोक्तध्यानं यथा।

शवोपरि समासीनां रक्ताम्बरपरिच्छदाम्। रक्तालङ्कारसंयुक्तां गुञ्जाहारविभूषिताम्। शोडशाब्दां च युवतीं पीनोन्नतपयोधराम्। कपालकर्तृकाहस्तां परं ज्योतिःस्वरूपिणीम्।।२।।

इति ध्यायेत्। ततः पीठादौ रचिते सर्वतोभद्रमण्डले मण्डूकादिपरतत्त्वान्तपीठदेवताः संस्थाप्य ॐ मं मण्डूकादिपरत्त्वान्तपीठदेवताभ्यो नमः इति पीठ देवताः सम्पूज्य पीठशक्तीः पूजयेत्। तत्र क्रमः।

इस प्रकार ध्यान करें। इसके बाद पीठादि पर बनाये गये सर्वतोभद्रमण्डल में मण्डूकादि परतत्वान्त पीठदेवताओं को संस्थापित करके "ॐ मं मण्डूकादि परतत्वान्त पीठदेवताभ्यो नमः" इससे पीठदेवताओं की पूजा करके पीठशक्तियों की पूजा करें। उसमें क्रम यह है :

पूर्वाद्यष्टसु दिक्षु ॐ जयायै नमः १। ॐ विजयायै नमः २। ॐ अजितायै नमः ३। ॐ अपराजितायै नमः ४। ॐ नित्यायै नमः ५। ॐ विलासिन्यै नमः ६। ॐ दोग्ध्यै नमः ७। ॐ अघोरायै नमः ८।

पीठ मध्ये ॐ मङ्गलायै नमः ६।

इति नवपीठशक्तीः पूजयेत्। ततः स्वर्णादिनिर्मितं यन्त्रं मूर्तिं वा ताम्रपात्रे निधाय घृतेनाभ्यज्य तदुपरि दुग्धधारां जलधारां च दत्त्वा स्वच्छवस्त्रेण प्रोक्ष्य ॐ ह्रीं सुमुखीयोगपीठात्मने नमः। इति मन्त्रेण पुष्पाद्यासनं दत्त्वा पीठमध्ये संस्थाप्य पद्धतिमार्गेण प्रतिष्ठां च कृत्वा मूलेन मूर्तिं प्रकल्प्य पाद्यादिपुष्पान्तैरुपचारैः सम्पूज्य देव्याज्ञां गृहीत्वा आवरणपूजां कुर्यात्। तत्र क्रमः

इससे नव पीठशक्तियों की पूजा करें। इसके बाद स्वर्णादि से निर्मित यन्त्र या मूर्ति को ताम्रपात्र में रख कर घी से उसका अभ्यङ्ग करके उसके ऊपर दूध तथा जल की धारा डालकर स्वच्छ वस्त्र से पोंछ कर "ॐ ह्रीं सुमुखीयोगपीठात्मने नमः" इस मन्त्र से पुष्पाद्यासन देकर उसे पीठ के बीच में रख कर पद्धति के अनुसार प्राणप्रतिष्ठा करके मूलमन्त्र से मूर्ति की कल्पना करके पाद्यादि से लेकर पुष्पाञ्जलि दान तक सभी उपचारों से पूजा करके देवी की आज्ञा लेकर आवरण पूजा करें। उसमें क्रम इस प्रकार है :

पुष्पाञ्जलिमादाय ॐ सन्विन्मये परे देवि परामृतरसप्रिये। अनुज्ञां देहि सुमुखि परिवारार्चनाय मे।।१।। इति पठित्वा पुष्पाञ्जलिं च दत्त्वा पूजितास्तर्पिताः सन्तु इति वदेत्। इत्याज्ञां गृहीत्वा आवरणपूजामारभेत्। ततः पूज्यपूजकयोरन्तरालं प्राची तदनुसारेणे अन्या दिशः प्रकल्प्य प्राचीक्रमेण पञ्चकोणेषु।

पुष्पाञ्जलि लेकर "ॐ संविन्मये परे देवि परामृतरसप्रिये। अनुज्ञां देहि सुमुखि परिवारार्चनाय मे।" यह पढ़ कर पुष्पाञ्जलि देकर "पूजितास्तर्पिताः सन्तु" यह बोलें। इस प्रकार आज्ञा लेकर आवरण–पूजा का आरम्भ करें। इसके बाद पूज्य और पूजक के बीच में पूर्व दिशा तथा तदनुसार अन्य दिशाओं की कल्पना करके पूर्वादि क्रम से पाँच कोनों में (सुमुखी पूजनयन्त्र देखिये चित्र २४) :

ॐ चन्द्रायै नमः[१]। चन्द्राश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः १। इति सर्वत्र। ॐ चन्द्राननायै नमः[२]। चन्द्राननाश्रीपा० २। ॐ चारूमुख्यै नमः[३]। चारुमुखीश्रीपा० ३। ॐ चामीकरप्रभायै नमः[४]। चामीकरप्रभाश्रीपा० ४। ॐ चतुरायै नमः[५]। चतुराश्रीपा० ५।

इससे पञ्चाङ्ग देवताओं की पूजा करें। इसके बाद पुष्पाञ्जलि लेकर मूलमन्त्र का उच्चारण करके "अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले। भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम्।।१।।" यह पढ़कर पुष्पाञ्जलि देकर विशेष अर्घ्यबिन्दु डालकर "पूजितास्तर्पिताः सन्तु" यह कहें। इति प्रथमावरण।।१।।

इसके बाद अष्टदलों में प्राची क्रम से :

ॐ ब्राह्मयै नमः[६]। ब्राह्मश्रीपा० १। ॐ माहेश्वर्यै नमः[७]। माहेश्वरी श्रीपा० २। ॐ कौमार्यै नमः[८]। कौमारीश्रीपा० ३। ॐ वैष्णव्यै नमः[९]। वैष्णवीश्रीपा० ४। ॐ वाराह्यै नमः[१०]। वाराहीश्री० ५। ॐ इन्द्राण्यै नमः[११]। इन्द्राणीश्रीपा० ६। ॐ चामुण्डायै नमः[१२]। चामुण्डाश्रीपा० ७। ॐ महालक्ष्म्यै नमः[१३]। महालक्ष्मीश्रीपा० ८।

इससे आठों की पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवें। इति द्वितीयावरण।।२।।

इसके बाद षोडश दलों में प्राची क्रम से :

ॐ कलायै नमः[१४] कलाश्रीपा० १। ॐ कलानिधये नमः[१५]। कलानिधि श्रीपा० २। ॐ काल्यै नमः[१६]। कालीश्रीपा० ३। ॐ कमलायै नमः[१७]। कमलाश्रीपा० ४। ॐ क्रियायै नमः[१८]। क्रियाश्रीपा० ५। ॐ कृपायै नमः[१९] कृपाश्रीपा० ६। ॐ कुलायै नमः[२०]। कुलाश्रीपा० ७। ॐ कुलीनायै नमः[२१]। कुलीनाश्रीपा० ८। ॐ कल्याण्यै नमः[२२]। कल्याणीश्रीपा० ९। ॐ कुमार्यै नमः[२३]। कुमारीश्रीपा० १०। ॐ कलभाषिण्यै नमः[२४]। कलभाषिणीश्रीपा० ११। ॐ करालाख्यायै नमः[२५]। करालाख्याश्रीपा० १२। ॐ किशोर्यै नमः[२६]। किशोरी श्रीपा० १३। ॐ कोमलायै नमः[२७]। कोमला श्रीपा० १४। ॐ कुलभूषणायै नमः[२८]। कुलभूषणाश्रीपा० १५। ॐ कल्पदायै नमः[२९]। कल्पदा श्रीपा० १६।

इस प्रकार सोलह देवताओं की पूजा करके देवी को पुष्पाञ्जलि अर्पण करें। इति तृतीयावरण।।३।।

ततो भूपुरे इन्द्रादिदशदिक्पालान्[३०-३९] वज्राद्यायुधानि च[४०] सम्पूजयेत्[४१-४९]। इत्यावरणपूजां कृत्वा धूपादिनमस्कारान्तं सम्पूज्य जपं कुर्यात्। अस्य पुरश्चरणं लक्षजपः। किंशुकपुष्पैः समिद्भिर्वा दशांशतो होमः। तत्तद्दशांशेन तर्पण मार्जनब्राह्मणभोजनानि कुर्यात्। एवं कृते मन्त्रः सिद्धो भवति। एतस्मिन्सिद्धे मन्त्रे मन्त्री प्रयोगान् साधयेत्।।

इसके बाद भूपुर में इन्द्रादि दश दिक्पालों की तथा उनके वज्र आदि आयुधों की पूजा करें। इस प्रकार आवरण पूजा करके धूपदानादि से लेकर नमस्कार पर्यन्त पूजा करके जप

करें। इसका पुरश्चरण एक लाख मन्त्र का जप है। पलाश के फूलों से अथवा समिधाओं से दशांश होम करें और तत्तद्दशांश तर्पण, मार्जन तथा ब्राह्मण भोजन करें। ऐसा करने से मन्त्र सिद्ध होता है। इस मन्त्र के सिद्ध होने पर साधक प्रयोगों को सिद्ध करे।

लक्षमेकं जपेन्मन्त्रं दशांशं किंशुकोद्भवैः। पुष्पैः समिद्वरैर्वापि जुहुयान्मन्त्रसिद्धये।।१।। इत्थं जपादिभिः सिद्धे मनौ काम्यानि साधयेत्। भुक्त्वौदनमनाचम्य जपेन्मन्त्रमनन्यधीः।।२।। उच्छिष्टोऽयुतमेकं यः स भवेत्सम्पदां पदम्। उच्छिष्टेनैव भक्तेन बलिं दद्यान्निरन्तरम्।।३।। दध्नाभ्यक्तैः प्रजुहुयाल्लक्षं सिद्धार्थतण्डुलैः। राजानो मन्त्रिणस्तस्य भवन्ति वशगाः क्षणात्।।४।। शस्त्राणिवशगानिस्युर्हुतान्मार्जारमांसतः। धनर्द्धिश्छागमांसेन विद्याप्राप्तिस्तु पायसैः।।५।। मधुपायससंयुक्तस्त्रीरजोयुक्तवाससा। होममाचरतः पुंसो जनता वशवर्तिनी।।६।। मधुसर्पिर्युतैर्नागवल्लीपत्रैर्महाश्रियः। सद्योनिहतमार्जारमांसेन मधुसर्पिषा।।७।। युक्तेनांत्यजकेशाद्यैर्हुतैराकर्षति स्त्रियः। मध्वक्तशशमांसेन तत्फलं विद्यया सह।।८।। उन्मत्ततरुभिर्दीप्ते चिताग्नौ जुहुयाच्छदैः। कोकिलाकाकयोर्मन्त्री मारयेदचिरादरीन्।।९।।

एक लाख मन्त्र का जप करें तथा उसका दशांश (दश हजार) पलाश के फूलों या समिधाओं से मन्त्र की सिद्धि के लिए होम करें। इस प्रकार जपादि से मन्त्र की सिद्धि होने पर प्रयोगों को सिद्ध करें। भात खाकर आचमन किये बिना ही मन को एकाग्र करके मन्त्र का जप करें। जो जूठे मुह इस मन्त्र का दश हजार जप करता है, वह सम्पत्तियों का धाम बन जाता है। जूठे मुह ही निरन्तर बलि देना चाहिये। दही से सिक्त पीली सरसों और चावल से हवन करना चाहिये। क्षण में ही राजा और मन्त्री सब ऐसे साधक के वश में हो जाते हैं। बिल्ली के मांस का होम करने से शस्त्र वश में हो जाते हैं। बकरे के मांस का होम करने से धन और समृद्धि प्राप्त होती है। खीर से होम करने से विद्या की प्राप्ति होती है। मधुयुक्त खीर और स्त्री के रज से युक्त वस्त्र से होम करने से जनता साधक के वश में हो जाती है। मधु तथा घी से युक्त पान के पत्तों से होम करने से महासमृद्धि की प्राप्ति होती है। मधु और घी के साथ तत्काल मारी गयी बिल्ली के मांस को चाण्डाल के बालों के साथ होम करने से स्त्री का आकर्षण होता है। मधु से युक्त खरहे के मांस से होम करने से विद्या की सिद्धि होती है। धतूरे की समिधाओं से प्रदीप्त चिता की अग्नि में कोयल और कौए के पंखों से होम करने से साधक शीघ्र ही शत्रुओं को मार देता है।

वायसोलूकयोः पत्रैर्होमाद्विद्वेषयेदरीन्। गर्भपातः सगर्भाणामुलूकच्छदनैर्भवेत्।।१०।। आज्याक्तैर्बिल्वपत्रैर्यो मासमेकं सहस्रकम्। प्रत्यहं जुहुयात्तेन वन्ध्यापि लभते सुतम्।।११।। सौभाग्यार्थं दुर्भगाया बन्धूककुसुमैर्नवैः। मधुनाक्तैः प्रजुहुयात्स्त्रीणामाकृष्टयेऽपि तैः।।१२।। निर्जने सदनेऽरण्ये प्रेतावासे चतुष्पथे। बलिं दत्त्वा प्रजपतः सहस्रं चाष्टसंयुतम्।।१३।। उच्छिष्टस्य च सा देवी प्रत्यक्षा जायतेऽचिरात्। यत्र नोक्ता होमसंख्याऽयुतं तत्र विनिर्दिशेत्।।१४।। वाममार्गेण सुमुखी शीघ्रं काम विधायिनी। भोजनान्ते तथोच्छिष्टैर्जप्या सा स्वेष्टसिद्धये।।१५।। न शीघ्रफलदा देवी सुमुखीसदृशी परा। तस्या मन्त्रजपादेव प्रसिध्यन्ति मनोरथा।।१६।।

कौए और उल्लू के पंखों से होम करने से साधक शत्रुओं में विद्वेष उत्पन्न कर देता है। उल्लू के पंख का होम करने से सगर्भा स्त्रियों का गर्भपात हो जाता है। जो साधक घी से

सिक्त बेल के हजार पत्रों से एक मास तक प्रतिदिन होम करता है उससे बन्ध्या भी पुत्र प्राप्त कर लेती है। दुर्भगा के सौभाग्य के लिए तथा स्त्रियों के आकर्षण के लिए मधु से सिक्त बन्धूक के नवीन फूलों से होम करना चाहिये। निर्जन घर में, वन में, श्मशान में तथा चौराहे पर बलि देकर एक हजार आठ मन्त्र का जप करने से वह उच्छिष्ट देवी शीघ्र ही प्रत्यक्ष होती हैं। जहाँ होम की संख्या नहीं बतायी गयी है वहाँ दश हजार समझना चाहिये। वाममार्ग विधि से सुमुखी देवी शीघ्र इच्छानुसार फल देने वाली होती हैं। भोजन के बाद जूठे मुँह अपनी अभीष्ट सिद्धि के लिए देवी का जप करना चाहिये। सुमुखी देवी के समान शीघ्र फल देने वाली दूसरी कोई देवी नहीं हैं। उसके मन्त्र के जप से मनुष्य के मनोरथ सिद्ध हो जाते हैं।

इति सुमुखी मन्त्रप्रयोगः।

मातङ्गीसुमुखी कवच

श्रीपार्वत्युवाच।

देवदेव महादेव सृष्टिसंहारकारक। मातंग्या कवचं ब्रूहि यदि स्नेहाऽस्ति ते मयि।।१।।

श्री पार्वती बोलीं : हे देवदेव महादेव, सृष्टिसंहारकारक ! यदि आप का मुझ पर स्नेह है तो आप मातङ्गी देवी का कवच मुझे बतायें।

शिव उवाच।

अत्यन्तगोपनं गुह्यं कवचं सर्वकामदम्। तव प्रीत्या मयाऽऽख्यातं नान्येषु कथ्यते शुभे।।२।। शपथं कुरु मे देवि यदि किञ्चित्प्रकाशसे। अनया सदृशी विद्या न भूता न भविष्यति।।३।। शवासनां रक्तवस्त्रां युवतीं सर्वसिद्धिदाम। एवं ध्यात्वा महादेवीं पठेत्कवचमुत्तमम्।।४।।

शिवजी बोले : हे शुभे ! सब कामनाओं को देने वाला अत्यन्त गोप्य कवच मैं तुम्हारे प्रेम से तुम्हें बता रहा हूँ। इसे किसी दूसरे को नहीं बताना। तुम शपथ लो कि तुम किसी से इसे नहीं कहोगी। इसके समान कोई विद्या नहीं हुई है न होगी। लाल वस्त्र पहने शव पर बैठी हुई सब सिद्धियों को देने वाली युवती महादेवी का ध्यान करके उत्तम कवच का पाठ करें।

उच्छिष्टं रक्षतु शिरः शिखां चाण्डालिनी ततः। सुमुखी कवचं रक्षेद्देवी रक्षुतु चक्षुषी।।५।। महापिशाचिनी पायान्नासिकां ह्रीं सदाऽवतु। ठः पातु कण्ठेदेशं मे ठः पातु हृदयं तथा।।६।। ठो भुजौ बाहुमूले च सदा रक्षतु चण्डिका। ऐं च रक्षुतु पादौ मे सौः कुक्षिं सर्वतः शिवा।।७।। ऐं ह्रीं कटिदेशं च आं ह्रीं संधिषु सर्वदा ज्येष्ठमातंग्यंगुलीर्मे अंगुल्यग्रे नमामि च।।८।। उच्छिष्टचाण्डालि मां पातु त्रैलोक्यस्य वशङ्करी। शिवे स्वाहा शरीरं मे सर्वसौभाग्यदायिनी।।९।। उच्छिष्टचाण्डालि मातङ्गि सर्ववशङ्करि नमः। स्वाहा स्तनद्वयं पातु सर्वशत्रुविनाशिनी।।१०।।

अत्यन्तगोपनं देवि देवैरपि सुदुर्लभम्। भ्रष्टेभ्यः साधकेभ्योपि द्रष्टव्यं न कदाचन।।११।। दत्तेन सिद्धिहानिः स्यात्सर्वथा न प्रकाश्यताम्। उच्छिष्टेन बलिं दत्त्वा शनौ वा मङ्गले निशि।।१२।। रजस्वलाभगं स्पृष्ट्वा जपेन्मन्त्रं च साधकः। रजस्वलाया वस्त्रेण होमं कुर्यात्सदा सुधीः।।१३।। सिद्धविद्या इतो नास्ति नियमो नास्ति कश्चन। अष्टसहस्रं जपेन्मन्त्रं

दशांशं हवनादिकम् ।।१४।। भूर्जपत्रे लिखित्वा च रक्तसूत्रेण वेष्टयेत्। प्राणप्रतिष्ठामन्त्रेण जीवन्यासं समाचरेत् ।।१५।। स्वर्णमध्ये तु संस्थाप्य धारयेद्दक्षिणे करे। सर्वसिद्धिर्भवेत्तस्य अचिरात्पुत्रवान्भवेत् ।।१६।। स्त्रीभिर्वामकरे धार्यं बहुपुत्रा भवेत्तदा। वन्ध्या वा काकवन्ध्या वा मृतवत्सा च साङ्गना ।।१७।। जीवद्वत्सा भवेत्सापि समृद्धिर्भवति ध्रुवम्। शक्तिपूजां सदा कुर्याच्छिवाबलिं प्रदापयेत् ।।१८।। इदं कवचज्ञात्वा मातङ्गीं यो जपेत्सदा। तस्य सिद्धिर्न भवति पुरश्चरणलक्षतः ।।१९।।

हे देवि ! यह देवताओं के लिए भी दुर्लभ, अत्यन्त गोपनीय कवच है। भ्रष्ट साधकों को इसे कभी नहीं दिखाना चाहिये। इसे दूसरे को देने से सिद्धि को हानि पहुँचती है। किसी प्रकार भी इसका प्रकाशन नहीं करना चाहिये। रात्रि में जूठे मुँह मङ्गलवार या शनिवार को बलि देकर रजस्वला के भग को स्पर्श करके साधक को मन्त्र का जाप करना चाहिये, तथ उसे सदा रजस्वला के रजोवस्त्र से होम करना चाहिये। इससे बढ़कर कोई सिद्ध विद्या नहीं है। इसके साधन में कोई नियम भी नहीं है। आठ हजार मन्त्र का जप करना चाहिये तथा तत्तद्दशांश हवन, तर्पण, ब्राह्मण भोजन आदि करना चाहिये। भोजपत्र पर इस मन्त्र को लिख कर लाल धागे से बाँध कर प्राणप्रतिष्ठा के मन्त्र से उसमें प्राणप्रतिष्ठा करें। तदनन्तर उसे सोने के यन्त्र में रखकर जो दाहिने हाथ में धारण करे उसे सभी सिद्धियाँ प्राप्त होती हैं। शीघ्र ही वह पुत्रवान् भी होता है। स्त्री को इसे बाएँ हाथ में बाँधना चाहिये। इससे वह बहुत पुत्रों वाली होती है। चाहे बन्ध्या हो या जिसका बच्चा होकर मर जाता हो वह भी जीवित पुत्रों वाली होती है और उसे निश्चित रूप से समृद्धि प्राप्त होती है। शक्ति की सदा पूजा करनी चाहिये तथा शिवा को बलि देनी चाहिये। इस कवच को बिना जाने जो मातङ्गी देवी का सदा जप करता है उसको लाख पुरश्चरण से भी सिद्धि नहीं प्राप्त होती।

इति श्रीरुद्रयामले तन्त्रे मातङ्गीसुमुखीकवचं समाप्तम्।

मातङ्गीकवच (द्वितीय)

श्रीदेव्युवाच।

साधु साधु महादेव कथयस्व सुरेश्वर। मातङ्गीकवचं दिव्यं सर्वसिद्धिकरं नृणाम् ।।१।।

श्रीदेवी बोलीं : साधु, साधु हे महादेव, सुरेश्वर ! आप मनुष्यों को समस्त सिद्धियों को देनेवाले दिव्य मातङ्गी कवच का उपदेश करें।

श्रीश्वर उवाच।।

शृणु देवि प्रवक्ष्यामि मातङ्गीकवचं शुभम्। गोपनीयम् महादेवि मौनी जापं समाचरेत् ।।२।।

श्रीईश्वर बोले : हे देवी ! सुनो, मैं तुम्हें शुभ मातङ्गी कवच का उपदेश कर रहा हूँ। हे महादेवि ! इसे गुप्त रखना चाहिये तथा मौन होकर इसका जप करना चाहिये।

विनियोग : अस्य श्रीमातङ्गीकवचस्य दक्षिणामूर्तिर्ऋषिर्विराट्छन्दो मातङ्गी देवता चतुर्वर्गसिद्धये पाठे विनियोगः।

ॐ शिरो मातङ्गिनी पातु भुवनेशी तु चक्षुषी। तोडला कर्णयुगलं त्रिपुरा वदनं मम ।।३।। पातु कण्ठे महामाया हृदि माहेश्वरी तथा। त्रिपुष्पा पार्श्वयोः पातु गुदे कामेश्वरी

मम।।४।। ऊरुद्वये तथा चण्डी जंघयोश्च हरप्रिया। महामाया पादयुग्मे सर्वाङ्गेषु कुलेश्वरी।।५।। अङ्गं प्रत्यंगकं चैव सदा रक्षतु वैष्णवी। ब्रह्मरन्ध्रे सदा रक्षेन्मातङ्गीनाम संस्थिता।।६।। रक्षेन्नित्यं ललाटे सा महापिशाचिनीति च। नेत्रयोः सुमुखी रक्षेद्देवी रक्षतु नासिकाम्।।७।। महापिशाचिनीं पायान्मुखे रक्षतु सर्वदा। लज्जा रक्षतु मां दन्ताञ्चोष्ठौ संमार्जनीकरा।।८।। चिबुके कण्ठदेशे च ठकारत्रितयं पुनः। सविसर्गं महादेवि हृदयं पातु सर्वदा।।६।। नाभिं रक्षतु मां लोला कालिकावतु लोचने। उदरे पातु चामुण्डा लिंगे कात्यायनी तथा।।१०।। उग्र तारा गुदे पातु पादौ रक्षतु चाम्बिका। भुजौ रक्षतु शर्वाणीं हृदयं चण्डभूषणा।।११। जिह्वायां मातृका रक्षेत्पूर्वे रक्षतु पुष्टिका। विजया दक्षिणे पातु मेधा रक्षतु वारुणे।।१२।। नैर्ऋत्यां सुदया रक्षेद्वायव्यां पातु लक्ष्मणा। ऐशान्यां रक्षेन्मां देवी मातङ्गी शुभकारिणी।।१३।। रक्षेत्सुरेशी चाग्नेये बगला पातु चोत्तरे। ऊर्ध्वं पातु महादेवि देवानां हितकारिणी।।१४।। पाताले पातु मां नित्यं वशिनी विश्वरूपिणी। प्रणवं च तमोमाया कामवीजं च कूर्चकम्।।१५।। मातङ्गिनी ङेयुतास्त्रं वह्निजाया वधिर्मनुः। सार्द्धैकादशवर्णा सा सर्वत्र पातु मां सदा।।१६।।

इति ते कथितं देवि गुह्याद्गुह्यतरं परम्। त्रैलोक्यमङ्गलं नाम कवचं देवदुर्लभम्।।१७।। य इदं प्रपठेन्नित्यं जायते सम्पदालयम्। परमैश्वर्यमतुलं प्राप्नुयान्नात्र संशयः।।१८।। गुरुमभ्यर्च्य विधिवत् कवचं प्रपठेद्यदि ऐश्वर्यं सुकवित्वं च वाक्सिद्धिं लभते ध्रुवम्।।१६।। नित्यं तस्यं तु मातङ्गी महिला मङ्गलं चरेत्। ब्रह्मा विष्णुश्च रुद्रश्च ये देवाः सुरसत्तमाः।।२०।। ब्रह्मराक्षसवेताला ग्रहाद्यां भूतजातयः। तं दृष्ट्वा साधकं देवि लज्जायुक्ता भवन्ति ते।।२१।। कवचं धारयेद्यस्तु सर्वासिद्धिं लभेदध्रुवम्। राजा नोऽपि च दासत्वं षट्कर्माणि च साधयेत्।।२२।। सिद्धो भवति सर्वत्र किमन्यैर्बहुभाषितैः। इदं कवचमज्ञात्वा मातङ्गीं यो भजेन्नरः।।२३।। अल्पायुर्निर्द्धनो मूर्खो भवत्येव न सशयः। गुरौ भक्तिः सदा कार्या कवचे च दृढा मतिः।।२४।। तस्मै मातङ्गिनी देवी सर्वसिद्धिं प्रयच्छति।।२५।।

हे देवि ! यह मैंने तुम्हें अत्यन्त गोपनीय परम त्रैलोक्यमङ्गलनामक देवदुर्लभ कवच का उपदेश किया। जो इसे नित्य पढ़ेगा वह समस्त सम्पत्तियों का धाम बन जायगा और उसे अतुल परमैश्वर्य प्राप्त होगा, इसमें कोई संशय नहीं है। यदि साधक गुरु की विधिवत् पूजा करके इस कवच का पाठ करे तो वह निश्चित रूप से ऐश्वर्य, सुन्दर कविता करने की शक्ति और वाणी की सिद्धि प्राप्त करेगा। मातङ्गी देवी सदा उसका मंगल करती हैं। ब्रह्मा, विष्णु, रुद्र तथा देवों में श्रेष्ठ जो देव हैं वे, ब्रह्मराक्षस, वेताल, ग्रहादि, भूत–पिशाच आदि उस साधक को देख कर लज्जायुक्त हो जाते हैं। जो इस कवच को धारण करता है वह निश्चित ही सभी सिद्धियों को प्राप्त करता है। राजा भी उसके दास हो जाते हैं तथा वह मारण–मोहनादि छहों कर्मों को भी सिद्ध कर सकता है। अधिक कहने से क्या वह सर्वत्र सिद्ध हो जाता है। इस कवच को बिना जाने जो मातङ्गी का जप करता है, वह अल्पायु, निर्धन तथा मूर्ख हो जाता है इसमें कोई सन्देह नहीं है। गुरु में सदा भक्ति रखनी चाहिये तथा कवच में दृढ़ श्रद्धा होनी चाहिये। जो इस प्रकार रहता है उसे मातङ्गी देवी सभी सिद्धियाँ प्रदान करती हैं।

इति नन्द्यावर्ते उत्तरखण्डे त्वरितफलदायिनी

मातङ्गिनी कवचं समाप्तम्

मातङ्गीस्तोत्र

ईश्वर उवाच।

आराध्य मातश्चरणाम्बुजे ते ब्रह्मादयो विस्तृतकीर्तिमापः। अन्ये परं वा विभवंमुनीन्द्राः परां श्रियं भक्तिभरेण चान्ये।।१।। नमामि देवीं नवचन्द्रमौलेर्मातङ्गिनीं चन्द्रकलावतंसाम्। आम्नायप्राप्तिप्रतिपादितार्थं प्रबोधयन्तीं प्रियमादरेण।।२।। विनम्रदेवासुरमौलिरत्नैर्नीराजितं ते चरणारविन्दम्। भजन्ति ये देवि महीपतीनां व्रजन्ति ते सम्पदमादरेण।।३।। कृतार्थयन्तीं पदवीं पदाभ्यामास्फालयन्तीं कृतवल्लकीं ताम्। मातंगिनीं सद्धृदयान्धिनोमि लीलांशुकां शुद्धनितम्बबिम्बाम्।।४।। तालीदलेनार्पित कर्णभूषां माध्वीमदोद्घूर्णितनेत्रपद्माम्। घनस्तनीं शम्भुवधूं नमामि तडिल्लताकान्तिमनर्घ्यभूषाम्।।५।। चिरेण लक्ष्यं नवलोमराज्या स्मरामि भक्त्या जगतामधीशे।। वलित्रयाढ्यं तव मध्यमम्ब नीलोत्पलांशुश्रियमावहन्त्याः।।६।। कान्त्या कटाक्षैः कमलाकराणां कदम्बमालाञ्चितकेशपाशाम्। मातङ्गकन्यां हृदि भावयामि ध्यायेयमारक्तकपोलबिम्बाम्।।७।। बिम्बाधरन्यस्तललामवश्यमालीललीलालकमायताक्षम्। मन्दस्मितं ते वदनं महेशि स्तुत्यानया शङ्करधर्मपत्निम्।।८।। मातङ्गिनीं वागधिदेवतां तां स्तुवन्ति ये भक्तियुता मनुष्याः। परां श्रियं नित्यमुपाश्रयन्ति परत्र कैलासतले वसन्ति।।९।। उद्भानुमरीचिवीचिविलसद्वासो वसानां परां गौरीं सङ्गतिपानकर्परकरामानन्दकन्दोद्भवाम्। गुञ्जाहारचलद्विहारहृदयामापीनतुङ्गस्तनीं मत्तस्मेरमुखीं नमामि सुमुखीं शावासनासे-दुषीम्।।१०।।

इति रुद्रयामले मातङ्गीस्तोत्रं समाप्तम्।

अथ मातङ्गीशतनामस्तोत्र

श्रीभैरव्युवाच। भगवञ्छोतुमिच्छामि मातंग्याः शतनामकम्। यद्गुह्यं सर्वतन्त्रेषु न कस्यापि प्रकाशितम्।।१।।

श्री भैरवी बोलीं : हे भगवान, मैं मातङ्गी देवी के शतनाम स्नोत्र को सुनना चाहती हूँ जो सभी तन्त्रों में गोपनीय है और जिसे किसी को भी नहीं बताया गया है।

श्री भैरव उवाच। शृणु देवी प्रवक्ष्यामि रहस्यातिरहस्यकम्। नाख्येयं यत्र कुत्रापि पठनीयं परात्परम्।।२।। यस्यैकवारपठनात्सर्वे विघ्ना उपद्रवाः। नश्यन्ति तत्क्षणाद्देवि वह्निना तूलराशिवत्।।३।। प्रसन्ना जायते देवि मातङ्गी चास्य पाठतः। सहस्रनामपठने यत्फलं परिकीर्तितम्। तत्कोटिगुणितं देवि नामाष्टशतकं शुभम्।।४।।

श्री भैरव बोले : हे देवि ! सुनो, अत्यन्त गोपनीय शतनाम मैं तुम्हें बता रहा हूँ। यत्र–तत्र इस परम श्रेष्ठ स्तोत्र को न कहना चाहिए न पढ़ना चाहिए। इसका एक बार पाठ करने से सभी विघ्न और उपद्रव उसी प्रकार नष्ट हो जाते हैं जैसे अग्नि से रूई का ढेर नष्ट हो जाता है। इसके पाठ से मातङ्गी देवी प्रसन्न होती हैं। सहस्रनाम पाठ से जो फल कहा गया है उससे करोड़ गुना फल इस शुभ एक सौ आठ नाम के पाठ से होता है।

विनियोग : ॐ अस्य श्रीमातङ्गीशतनामस्तोत्रस्य भगवान्मतगऋषिरनुष्टुप्छन्दो मातङ्गीदेवता मातङ्गीप्रीतये पाठे विनियोगः।

महामत्तमातङ्गिनी सिद्धिरूपा तथा योगिनी भद्रकाली रमा च। भवानी भयप्रीतिदाभूतियुक्ता भवाराधिता भूतिसम्पत्करी च।।१।। जनाधीशमाता धनागारदृष्टिर्द्धनेशार्चिता धीरवापी वराङ्गी। प्रकृष्टा प्रभारूपिणी कामरूपा प्रहृष्टा महाकीर्तिदा कर्णनाली।।२।। काली भगा घोररूपा भगाङ्गी भगाह्वा भगप्रीतिदा भीमरूपा। भवानी महाकौशिकी कोशपूर्णा किशोरी किशोरप्रिया नन्दईहा।।३।। महाकरणा कारणा कर्मशीला कपाली प्रसिद्धा महासिद्धखण्डा। मकारप्रिया मानरूपा महेशीमलोल्लासिनी लास्यलीलालयाङ्गी।।४।। क्षमाक्षेमशीला क्षपाकारिणी चाक्षयप्रीतिदा भूतियुक्ता भवानी। भवाराधिता भूतिसत्यात्मिका च प्रभोद्भासिता भानुभास्वत्करा च।।५।। धराधीशमाता धनागारदृष्टिर्द्धनेशार्चिता धीवरा धीवराङ्गी। प्रकृष्टप्रभारूपिणी प्राणरूपा प्रकृष्टस्वरूपा स्वरूपप्रिया च।।६।। चलत्कुण्डला कामिनीकान्तयुक्ता कपाला चला कालकोद्धारिणी च। कदम्बप्रिया कोटरी कोटदेहा क्रमा कीर्तिदा कर्णरूपा च काक्ष्मी।।७।। क्षमाङ्गी क्षयप्रेमरूपा क्षया च क्षयाक्षा क्षयाह्वा क्षयप्रान्तरा च। क्षवत्कामिनी क्षारणी क्षीरपूर्णा शिवाङ्गी च। शाङ्कभरी शाक देहा।।८।। महाशाकयज्ञा फलप्राशका च शकाह्वाशकाह्वाशकाख्या शका च। शकाक्षान्तरोषा सुरोषा सुरेखा महाशेषयज्ञोपवीतप्रिया च।।६।। जयन्ती जया जाग्रती योग्यरूपा जयाङ्गा जपध्यान–संतुष्टसंज्ञा। जयप्राणरूपा जयस्वर्णदेहा जयज्वालिनी यामिनी याम्यरूपा।।१०।। जगन्मातृरूपा जगप्रक्षणा च स्वधावौषडन्ता विलम्बाविलम्बा। शडङ्गा महालम्बरूपासिहस्ता पदाहारिणी हारिणी हारिणी च।।११।। महामङ्गला मङ्गलप्रेमकीर्तिर्निशुम्भक्षिदा शुम्भदर्पत्वहा च। तथाऽनन्दबीजादिमुक्ति स्वरूपा तथा चण्डमुण्डापदा मुख्यचण्डा।।१२।।प्रचण्डाऽप्रचण्डा महाचण्डवेगा चलच्चामरा चामरा चन्द्रकीर्तिः। सुचामीकरा चित्रभूषोज्ज्वलाङ्गी सुसङ्गीतगीतश्च पायादपायात्।।१३।।

इति ते कथितं देवि नाम्नामष्टोत्तरं शतम्। गोप्यं च सर्वतन्त्रेषु गोपनीयं च सर्वदा।।१४।। एतस्य सतताभ्यासात्साक्षाद्देवो महेश्वरः। त्रिसन्ध्यं च महाभक्त्या पठनीयं सुखोदयाम्।।१५।। न तस्य दुष्करं किञ्चिज्जायते स्पर्शतः क्षणात्। सुकृतं यत्तदेवाप्तं तस्मादावर्त्तयेत्सदा।।१६।। सदैव सन्निधौ तस्य देवी वसति सादरम्। अयोगा ये त एवाग्रें सुयोगाश्च भवन्ति वै। त एव मित्र भूताश्च भवन्ति तत्प्रसादतः।।१७।। विषाणि नोपसर्पन्ति व्याधयो न स्पृशन्ति तान्। लूताविस्फोटकाः सर्वे शमं यान्ति च तत्क्षणात्।।१८।। जरापलितनिर्मुक्तः कल्पजीवी भवेन्नरः। अपि किं बहुनोक्तेन सान्निध्यं फलमाप्नुयात्।।१६।। यावन्मया पुरा प्रोक्तं फलं साहस्त्रनामकम्। तत्सर्वं लभते मर्त्यो महामायाप्रसादतः।।२०।।

हे देवि ! यह एक सौ आठ नामों वाला स्तोत्र मैंने तुम्हें बताया। यह तन्त्रों में गोपनीय है तथा इसे सदा गुप्त रखना। इसके निरन्तर अभ्यास से साधक साक्षात् देव महेश्वर बन जाता है। प्रातः, मध्याह्न तथा सायंकाल तीनों सन्ध्याओं में अत्यन्त भक्ति के साथ सुख देने वाले इस स्तोत्र का पाठ करना चाहिए। जो ऐसा करता है उसके स्पर्श मात्र से कोई कार्य कठिन नहीं रह जाता । जो जो पुण्य होते हैं वे प्राप्त हो जाते हैं। इस लिए स्तोत्र का सदा पाठ करना चाहिए। जो इसका पाठ करता है उसके निकट देवी आदर के साथ निवास करती हैं। जो दुर्योग होते हैं वे निश्चय ही आगे सुयोग बन जाते हैं। इसके प्रसाद से वे दुर्योग मित्र बन जाते

हैं। जो इसका पाठ करता है उसके निकट विष और रोग नहीं आते। लूता, फोड़े फून्सी आदि तत्काल शान्त हो जाते हैं। इसका पाठ करने वाला व्यक्ति बृद्धावस्था और बालों के पकने आदि दोषों से मुक्त होकर कल्प जीवी हो जाता है। और अधिक कहने से क्या, वह देवी के निकट पहुँच जाता है। मैंने सहस्रनाम पाठ में जो फल कहा है उसे फल को महामाया देवी के प्रसाद से मनुष्य इस शतनाम पाठ से प्राप्त कर लेता है।

इति श्रीरुद्रयामले मातङ्गीशतनामस्तोत्रं समाप्तम्।

मातङ्गीसहस्रनामस्तोत्र

ईश्वरं उवाच। शृणु देवि प्रवक्ष्यामि साम्प्रतं तत्त्वतः परम। नाम्नां सहस्रं परमं सुमुख्याः सिद्धयेहितम्।।१।। सहस्रनामपाठी यः सर्वत्र विजयी भवेत्। पराभवो न तस्यास्ति सभायां वा महारणे।।२।। यथा तुष्टा भवेद्देवी सुमुखी चास्य पाठतः। तथा भवति देवेशि साधकः शिव एव सः।।३।। अश्वमेधसहस्राणि वाजपेयस्य कोटयः। सकृत्पाठेन जायन्ते प्रसन्ना सुमुखी भवेत्।।४।।

ईश्वर बोले : हे देवि ! सुनो मैं यथार्थ रूप से सिद्धि के लिए हितकारी श्रेष्ठ सुमुखी देवी का सहस्रनाम स्तोत्र तुम्हें बताऊँगा। जो सहस्रनाम स्तोत्र का पाठ करने वाला है वह सर्वत्र विजयी होता है। सभा में या संग्राम में उसकी पराजय नहीं होती। जिस प्रकार सुमुखी देवि इसके पाठ से प्रसन्न होती हैं उसी प्रकार साधक स्वयं शिव बन जाता है। हजारों अश्वमेध और करोड़ों वाजपेय यज्ञों के फल एक बार इसके पाउ से प्राप्त हो जाते हैं और सुमुखी देवी प्रसन्न हो जाती हैं।

मातङ्गाऽस्य ऋषिश्छन्दोऽनुष्टुप् देवी समीरिता। सुमुखी विनियोगः स्यात् सर्वसम्पत्तिहेतवे।।५।। एवं ध्यात्वा पठेदेतद्यदीच्छेत्सिद्धिमात्मनः।।६।।

अथ ध्यानम् :

देवीं षोडशवार्षिकीं शवगतां माध्वीरसाघूर्णितां श्यामाङ्गीमरुणाम्बरां पृथुकुचां गुञ्जावलीशोभिताम्। हस्ताभ्यां दधतीं कपालममलं तीक्ष्णं तथा कर्त्रिकां ध्यायेन्मानसपङ्कजे भगवतीमुच्छिष्टचाण्डालिनीम्।।१।। ॐ सुमुखी शेमुषी सेव्या सुरसा शशिशेखरा। समानास्या साधनी च समस्तसुरसम्मुखी।।२।। सर्वसम्पत्तिजननी सम्मदा सिन्धुसेविनी। शम्भुसीमन्तिनी सौम्या समाराध्या सुधारसा।।३।। सारङ्गासवलीवेला लावण्यवनमालिनी। वनजाक्षी वनचरी वनी वनविनोदिनी।।४।। वेगिनी वेगदा वेगा बगलस्था बलाधिका। काली कालप्रिया केली कामला कालकामिनी।।५।। कमला कमलस्था च कमलस्था कलावती। कुलीना कुटिला कान्ता कोकिला कलभाषिणी।।६।। कीरा केलिकरा काली कपालिन्यपि कालिका। केशिनी च कशावर्ता कौशाम्भी केशवप्रिया।।७।। काली काशी महाकालसङ्काशा केशदायिनी। कुण्डला च कुलस्था च कुण्डलाङ्गदमण्डिता।।८।। कुण्डपद्मा कुमुदिनी कुमुदप्रीतिवर्द्धिनी। कुण्डप्रिया कुण्डरुचिः कुरङ्गनयनाकुला।।६।। कुन्दबिम्बालिनदिनी कुसुम्भकुसुमाकरा। काञ्चीकनकशोभाड्या क्वणकिंत्ककिणिकाकटिः।।१०।। कठोरकरणा काष्ठा कौमुदी कण्डवत्यपि। कपर्दिनी

कपटिनी कठिनी कलकण्डिनी।।११।। कीरहस्ता कुमारी च कुरुढकुसुमप्रिया। कुञ्जरस्था कुञ्जरता कुम्भी कुम्भस्तनी कला।।१२।। कुम्भिकाङ्गा करभोरूः कदलीकुशशायिनी। कुपिता कोटरस्था च कङ्काली कन्दलालया।।१३।। कपालवासिनी केशी कम्पमान शिरोरुहा। कादम्बरी कदम्बस्था कुंकुमप्रेमधारिणी।।१४।। कुटुम्बिनी कृपायुक्ता क्रतुः क्रतुकरप्रिया। कात्यायनी कृत्तिका च कार्तिकी कुशवर्तिनी।।१५।। कामपत्नी कामदात्री कामेशी कामवन्दिता। कामरूपा कामरतिः कामाख्या ज्ञानमोहिनी।।१६।। खड्गिनी खेचरी खञ्जा खञ्जरीटेक्षणा खगा। खरगा खरनादा च खरस्था खेलनप्रिया।।१७।। खरांशुः खेलिनी खट्वा खरा खट्वाङ्गधारिणी। खरखण्डिन्यपि ख्यातिः खण्डिता खण्डनप्रिया।।१८।। खण्डप्रिया खण्डखाद्या खण्डसिन्धुश्च खण्डिनी। गङ्गा गोदावरी गौरी गौतम्यपि च गोमती।।१९।। गंगा गया गगनगा गारुडी गरुडध्वजा। गीता गीतप्रिया गेया गुणप्रीतिर्गुरुर्गिरी।।२०।। गोर्गौरी गण्डसदना गोकुला गोप्रतारिणी। गोप्ता गोविन्दिनी गूढा गूढविग्रस्तगुञ्जिनी।।२१।। गजगा गोपिनी गोपी गोक्षा जयप्रिया गणा। गिरिभूपालदुहिता गोगा गोकुलवासिनी।।२२।। घनस्तनी घनरुचिर्घनोरुर्घननिस्स्वना। घुङ्कारिणी घुक्षकरी घूघूकपरिवारिता।।२३।। घण्टानादप्रिया घण्टा घोटा घोटकवाहिनी। घोररूपा च घोरा घृतप्रीतिर्घृताञ्जनी।।२४।। घृताची घृतवृष्टिश्च घण्टाघटघटावृता। घटस्था घटना घातकरी घातनिवारिणी।।२५।। चञ्चरीकी चकोरी चामुण्डा चीरधारिणी। चातुरी चपला चञ्चुश्चिता चिन्तामणिस्थिता।।२६।। चातुर्वर्ण्यमयी चञ्चुश्चोराचार्या चमत्कृतिः। चक्रवर्तिवधूश्चित्रा चक्रांगी चक्रमोदिनी।।२७।। चेतश्चरी चित्तवृत्तिश्चेतना चेतनप्रिया। चापिनी चम्पकप्रीतिश्चण्डा चण्डालवासिनी।।२८।। चिरञ्जीविनी तच्चित्ता चिञ्चामूलनिवासिनी। छुरिका छत्रमध्यस्था छिन्दा छिन्दकरी छिदा।।२९।। छुच्छुन्दरी छलप्रीतिश्छुच्छुन्दरिनिभस्वना। छलिनी छत्रदा छिन्ना छिण्टिच्छेदकरी छटा।।३०।। छद्मिनी छान्दसी छाया छरुच्छन्दकरीत्यपि। जयदाजयदा जाती जायिनी जामला जतुः।।३१।। जम्बूप्रिया जीवनस्था जङ्गमा जङ्ग प्रिया। जपापुष्पप्रिया जप्या जगज्जीवा जगज्जनिः।।३२।। जगज्जन्तुप्रधाना च जगज्जीवपरा जवा। जातिप्रिया जीवनस्था जीमूतसदृशीरुचिः।।३३।। जन्या जनहिता जाया जन्मभूर्ज्जम्भसी जभूः।।३४।। जयदा जगदावासा जायिनी ज्वरकृच्छजित्। जपा च जपती जप्या जपार्हा जायिनी जना।।३५।। जालन्धरमयी जानुर्जालौका जाप्यभूषणा। जगज्जीवमयी जीवा जरत्कारुर्जनप्रिया।।३६।। जगतीजननिरता जगच्छोभाकरी जवा। जगतीत्राणकृज्जङ्घा जातीफलविनोदिनी।।३७।। जातीपुष्पप्रिया ज्वाला जातिहा जातिरूपिणी। जीमूतवाहनरुचिर्जीमूता जीर्णवस्त्रकृत्।।३८।। जीर्णवस्त्रधरा जीर्णा ज्वलती जालनाशिनी। जगत्क्षोभकरी जातिर्जगत्क्षोभविनाशिनी।।३९।। जनापवादा जीवा च जननी गृहवासिनी। जनानुरागा जानुस्था जलवासा जलार्तिकृत।।४०।। जलजा जलवेला च जलचक्रनिवासिनी। जलमुक्ता जलारोहा जलजा जलजेक्षण।।४१।। जलप्रिया जलौका च जलशोभावती तथा। जलविस्फूर्जितवपुर्ज्वलत्पावकशोभिनी।।४२।। झिन्झा झिल्लमयी झिञ्झाझणत्कारकरी जया। झंझी झंपकरी झंपा झंपत्रासनिवारिणी।।४३।। टंकारस्था टंककरी टंकारकरणांहसा। टंकारोट्टकृतष्ठीवा डिण्डीरवसनावृता।।४४।। डाकिनी डामरी चैव डिण्डिमध्वनिनादिनी। डकारनिस्स्व नरुचिस्तपिनी तापिनी तथा।।४५।। तरुणी तुन्दिला तुन्दा तामसी च तमः

प्रिया। ताम्रा ताम्रवती तन्तुस्तुन्दिलातुलसंभवा।।४६।। तुलाकोटिसुवेगा च तुल्यकामा तुलाश्रया। तुदनी तुननी तुम्बा तुल्यकाला तुलाश्रवा।।४७।। तुमुला तुलजा तुल्या तुलादानकरी तथा। तुल्यवेगा तुल्यगतिस्तुलाकोटिनिनादिनी।।४८।। ताम्रौष्ठा ताम्रपर्णी च तमः संक्षोभकारिणी। त्वरिता ज्वरहा तीरा तारकेशी तमालिनी।।४९।। तमोदानवती तामतालस्थानवती तमी। तामसी च तमिस्रा च तीव्रा तीव्रपराक्रमा।।५०।। तटस्था तिलतैलाक्ता तरुणी तपनद्युतिः तिलोत्तमा च तिलकृत्तारकाधीशशेखरा।।५१।। तिलपुष्पप्रिया तारा तारकेशी कुटुम्बिनी। स्थाणुपत्नी स्थिरकरी स्थूलसम्पद्विवर्द्धिनी।।५२।। स्थितिः स्थैर्यस्थविष्ठा च स्थपतिः स्थूलविग्रहा। स्थूलस्थलवती स्थाली स्थलसङ्ग विवर्द्धिनी।।५३।। दण्डिनी दन्तिनी दामा दरिद्रा दीनवत्सला। देवी देववधूर्दित्या दामिनी देवभूषणा। दयादमवती दीनवत्सला दाडिमस्तनी।।५४।। देवमूर्तिकरा दैत्या दारिणी देवतानता। दोलाक्रीडा दयालुश्च दम्पती देवतामयी। दशादीपस्थिता दोषा दोषहा दोषकारिणी।।५५।। दुर्गा दुर्गार्तिशमनी दुर्गम्या दुर्गवासिनी। दुर्गन्धनाशिनी दुःस्था दुःखप्रशमकारिणी।।५६।। दुर्गन्धा दुन्दुभिध्वान्ता दूरस्था दूरवासिनी। वरदा वरदात्री च दुर्व्याधदयिता दमी।।५७।। धुरन्धरा धुरीणा च धौरेयी धनदायिनी। धीरारवा धरित्री च धर्मदा धीरमानसा।।५८।। धनुर्द्धरा च धमनी धमनीधूर्तविग्रहा। धूम्रवर्णा धूम्रपाना धूमला धूममोदिनी।।५९।। नन्दिनी नन्दिनी नन्दा नन्दिनी नन्दबालिका। नवीना नर्मदा नर्मनेमिर्नियमनिस्स्वना।।६०।। निर्मला निगमाधारा निम्नगा नग्नकामिनी। नीला निरत्ना निर्वाणा निर्लोभा निर्गुणा नतिः।।६१।। नीलग्रीवा निरीहा च निरञ्जनजनानवा। निर्गुण्डिका च निर्गुण्डा निर्नासा नासिकाभिधा।।६२।। पताकिनी पताका च पत्रप्रीतिः पयस्विनी। पीना पीस्तनी पत्नी पवनाशा निशामयी।।६३।। परा परपरा काली पारकृत्यभुजप्रिया। पवनस्था च पवना पवनप्रीतिवर्द्धिनी।।६४।। पशुवृद्धिकरी पुष्पपोषिका पुष्टिवर्द्धिनी। पुष्पिणी पुस्तककरा पूर्णिमाऽतलवासिनी।।६५।। पेशी पाशकरी पाशा पांशुहा पांशुला पशुः। पटुः पराशा परशुधारिणी पाशिनी तथा।।६६।। पापघ्नी पतिपत्नी च पतिता पतितापनी। पिशाची च पिशाचनी पिशिताशनतोषिणी।।७६।। पानदा पानपात्री च पानदानकरोद्यता। पेया प्रसिद्धा पीयूषा पूर्णा पूर्णमनोरथा।।६८।। पतङ्गाभा पतङ्गा च पौनःपुन्यमिवापरा। पङ्किला पङ्कमग्ना च पानीया पञ्जरस्थिरता।।६९।। पञ्चमी पञ्चयज्ञा च पञ्चता पञ्चमप्रिया। पिचुमन्दा पुण्डरीका पिकी पिङ्गललोचना।।७०।। प्रियंगुमञ्जरी पिण्डी पण्डिता पाण्डुरप्रभा। प्रेतासना प्रियालस्था पाण्डुघ्नी पीनसापहा।।७१।। फलिनी फलदात्री च फलश्रीः फलभूषणा। फूत्कारकारिणी स्फारी फुल्ला फुल्लाम्बुजानना।।७२।। स्फुलिङ्गहा स्फीतमतिः स्फीतकीर्तिकरी तथा। बलमाया बलारातिर्बलिनी बलबर्द्धिनी।।७३।। वेणुवाद्या वनचरी विरञ्चिजनयित्र्यपि। विद्याप्रदा महाविद्या बोधिनी बोधदायिनी।।७४।। बुद्धमाता च बुद्धा च वनमालावती वरा। वरदा वारुणी वीणा वीणावादनतत्परा।।७५।। विनोदिनी विनोदस्था वैष्णवी विष्णुवल्लभा। वैद्या वैद्यचिकित्सा च विवशा विश्व विश्रुता।।७६।। विद्यौघविह्वला वेला वित्तदा विगतज्वरा। विरावा विवरीकारा बिम्बोष्ठी बिम्बवत्सला।।७७।। विन्ध्यस्था वरवन्द्या च वीरस्थानवरा च वित्। वेदान्तवेद्या विजया

विजया विजयप्रदा।।७८।। विरोगिवन्दिनी वन्ध्या वन्द्यबन्धनिवारिणी। भगिनी भगमाला च भवानी भवनाशिनी।।७६।। भीमा भीमानना भीमा भंगुरा भीमदर्शना। भिल्ली भिल्लधरा भीरुर्भरुण्डा भीर्भयावहा।।८०।। भगसर्पिण्यपि भगा भगरूपा भगालया। भगासना भगाभोगा भेरीझङ्काररञ्जिता।।८१।। भीषणा भीषणारावाभगवत्यहिभूषणा। भारद्वाजा भोगदात्री भूतिघ्नी भूतिभूषणा।।८२।। भूमिदा भूमिदात्री च भूपतिर्भरदायिनी। भ्रमरी भ्रामरी भाला भूपालकुलसंस्थिता।।८३।। माता मनोहरा माया मानिनी मोहिनी मही। महालक्ष्मीर्मदक्षीबा मदिरा मदिरालया।।८४।। मदोद्धता मतङ्गस्था माधवी मधुमर्द्दिनी। मोदा मोदकरी मेधा मेध्या मध्याधिपस्थिता।।८५।। मद्यपा मांसलोमस्था मोदिनी मैथुनोद्यता। मूर्द्धावती महामाया मायामहिममन्दिरा।।८६।। महामाला महाविद्या महामारी महेश्वरी। महादेववधूर्मान्या मथुरा मेरुमण्डिता।।८७।। मेदखिनी मिलिन्दाक्षी महिषासुरमर्द्दिनी। मण्डस्था भगस्था च मदिरारागगर्विता।।८८।। मोक्षदा मुण्डमाला च माला मालाविलासिनी। मातङ्गिनी च मातङ्गी मातङ्गतनयापि च।।८६।। मधुस्रवा मधुरसा बन्धूककुसुमप्रिया। यामिनी यामिनीनाथभूषा यावकरञ्जिता।।६०।। यवांकुरप्रिया यामा यवनी यवनार्द्दिनी। यमघ्नी यमकल्पा च यजमानस्वरूपिणी।।६१।। यज्ञा यज्ञयजुर्यक्षी यशोनिष्कम्पकारिणी। यक्षिणी यक्षजननी यशोदायासधारिणी।।६२।। यशस्सूत्रप्रदायामा यज्ञकर्मकरीत्यपि। यशस्विनी यकारस्था यूपस्तम्भनिवासिनी।।६३।। रञ्जिता राजपत्नी च रमा रेखा रवीरणा। रजोवती रजश्चित्रा रञ्जनी रजनीपतिः।।६४।। रोगिणी रजनी राज्ञो राज्यदा राज्यवर्द्धिनी। राजवन्ती राजनीतिस्तथा रजतवासिनी।।६५।। रमणी रमणीया च रामा रामावती रतिः। रेतोरती रतोत्साहा रोगघ्नी रोगकारिणी।।६६।। रङ्गा रङ्गवती रागा रागज्ञा रागकृद्दया। रामिका रजकी रेवा रजनी रङ्गलोचना।।६७।। रक्तचर्मधरा रङ्गी रङ्गस्था रङ्गवाहिनी। रमा रम्भाफलप्रीति रम्भोरू राघवप्रिया।।६८।। रङ्गा रङ्गाङ्गमधुरा रोदसी च महारवा। रोगकृद्रोगहन्त्री चरोगभृद्रोगस्राविणी।।६६।। बन्दी बन्दिस्तुता बन्धुर्बन्धूक-कुसुमाधरा। वन्दिता वन्द्यमाना च वैद्रावी वेदविद्विधा।।१००।। विकोपा विकपाला च विकस्था विङ्कवत्सला। वेदिर्विलग्नलग्ना च विधिविङ्ककरी विधा।।१०१।। शङ्खिनी शङ्खवलया शङ्खमालावती शमी। शङ्खपात्राशिनी शङ्खस्वना शङ्खगला शशी।।१०२।। शबरी शाम्बरी शम्भुः शम्भुकेशा शरासिनी। शवा श्येनवती श्यामा श्यामाङ्गी श्यामलोचना।।१०३।। श्मशानस्थाश्मशाना च श्मशानस्थानभूषणा। शमदा शमहन्त्री च शङ्खिनी शङ्करोषणा।।१०४।। शान्तिश्शान्तिप्रदा शेषा शेषाख्या शेषशायिनी। शेमुषीशोषिणी शेषा शौर्या शौर्यशरा शरी।।१०५।। शापदा शापहा शापा शापपन्था सदाशिवा। भृङ्गिणी भङ्गिपलभुक् शङ्करी शाङ्करी शिवा।।१०६।। शवस्था शवभुक् शान्ता शवकर्णा शवोदरी। शाविनी शवशिन्शा श्रीः शवा च शवशायिनी।।१०७।। शवकुण्डलिनी शैवा शीकरा शिशिराशना। शवकाश्री शवश्रीका शवमाला शवाकृतिः।।१०८।। स्रवन्ती संकुचा शक्तिश्शन्तनुश्शवदायिनी। सिन्धुः सरस्वती सिन्धुस्सुन्दरी सुन्दरानना।।१०६।। साधुः सिद्धिप्रदात्री च सिद्धा सिद्धसरस्वती। सन्ततिस्सम्पदासम्विच्छङ्किसम्पत्तिदायिनी।।११०।। सपत्नी सरसा सारा सारस्वतकरी सुधा। सुरा समांसाशना च समाराध्या समस्तदा।।१११।। समधीस्सामदा

सीमा सम्मोहा समदर्शना। सामतिस्सामदा सीमा सावित्री सविधा सती।।११२।। सवना सवनासारा सवरा सावरा समी। सिमरा सतता साध्वी सध्रीची ससहायिनी।।११३।। हंसी हंसगतिर्हंसी हंसोज्ज्वलनिचोलयुक्। हलिनी हालिनी हाला हलश्रीर्हरवल्लभा।।११४।। हला हलवती ह्येषा हेला हर्षविवर्द्धिनी। हंतिर्हंता हया हाहाहताऽहंतातिकारिणी।।११५।। हङ्कारी हंकृतिर्हङ्का हीहीहाहाहिता हिता। हीतिर्हेमप्रदा हारा राविणी हरिसम्मता।।११६।। होरा होत्री होलिका च होमा होमहर्विर्हविः। हारिणी हरिणीनेत्रा हिमाचलनिवासिनी।।११७।। लम्बोदरी लम्बकर्णा लम्बिका लम्बविग्रहा। लीला लीलावती लोला ललना ललिता लता।।११८।। ललामलोचना लोम्या लोलाक्षी सत्कुलालया। लपत्नी लपती लम्या लोपामुद्रा ललन्तिका।।११६।। लतिका लङ्घिनी लङ्घा लालिमा लघुमध्यमा। लघीयसी लघूदर्या लूता लूताविनाशिनी।।१२०।। लोमशा लोमलम्बी च लुलन्ती च लुलुम्पती। लुलायस्था बलहरी लङ्कापुरपुरन्दरा।।१२१।। लक्ष्मीर्लक्ष्मीप्रदाऽलभ्या लाक्षाक्षी लुलितप्रभा। क्षणाक्षणक्षुक्षुक्षीणा क्षमा क्षान्तिः क्षमावती।।१२२।। क्षमा क्षामोदरी क्षेम्या क्षोभभृत्क्षत्रियाङ्गना। क्षया क्षयकरी क्षीरा क्षीरदा क्षीरसागरा।।१२३।। क्षेमङ्करी क्षयकरी क्षयकृत्क्षयदा क्षतिः। क्षुद्रिका क्षुद्रिका क्षुद्रा क्षुत्क्षामा क्षीणपातका।।१२४।। मातुः सहस्रनामेदं सुमुख्याः सिद्धिदायकम्। यः पठेत्प्रयतो नित्यं स एव स्यान्महेश्वरः।।१२५।। अनाचारात्पठेन्नित्यं दरिद्रो धनवान्भवेत्। मूकः स्याद्वाक्पतिर्देवि रोगी नीरोगतां व्रजेत्।।१२६।। पुत्रार्थी पुत्रमाप्नोति त्रिषु लोकेषु विश्रुतम्। वन्ध्यापि सूते सत्पुत्रं विदुषस्सदृशं गुरोः।।१२७।। सत्यं च बहुधा भूयाद्गावश्च बहुदुग्धदाः। राजानः पादनम्राः स्युस्तस्य हासा इव स्फुटाः।।१२८।। अरयस्संक्षयं यान्ति मनसा संस्मृता अपि दर्शनादेव जायन्ते नरा नार्योपि तद्वशाः।।१२६।। कर्ता हर्ता स्वयं वीरो जायेते नात्र संशयः। यंयं कामयते कामं तन्तं प्राप्नोति निश्चितम्।।१३०।। दुरितं न च तस्यास्ति नास्ति शोकः कथंचन। चतुष्पथेऽर्द्धरात्रे च यः पठेत्साधकोत्तमः।।१३१।। एकाकी निर्भयो वीरो दशवारं स्तवोत्तमम्। मनसा चिन्तितं कार्यं तस्य सिद्धयेन्न संशयः।।१३२।। विना सहस्रनाम्नां यो जपेन्मन्त्रं कदाचन। न सिद्धिर्जायते तस्य कल्पकोटिशतैरपि।।१३३।। कुजवारे श्मशाने वा मध्याह्ने यो जपेत्सदा। कृतकृत्यस्स जायेत कर्ता हर्ता मृणामिह।।१३४।। रोगार्तोर्द्धनिशायां यः पठेदासनसंस्थितः। सद्यो नीरोगतामेति यदि स्यान्निर्भयस्तदा।।१३५।।

यह माता सुमुखी मातङ्गी देवि का सिद्धिदायक सहस्र नाम स्तोत्र है। जो नियम से इस स्तोत्र का पाठ करता है वह स्वयं महेश्वर हो जाता है। सदाचार के साथ जो इसे पढ़ेगा वह यदि दरिद्र हो तो धनवान हो जायेगा। हे देवी ! यदि वह गूंगा है तो वह वाक्यपतिं बन जायगा। यदि वह रोगी है तो निरोग हो जायेगा। पुत्र चाहने वाला इसके पाठ से पुत्रवान् हो जाता है। यह तीनों लोकों में विश्रुत है। वन्ध्या स्त्री बृहस्पति के सामान उत्तम पुत्र को जन्म देती है। साधक की बाणी प्रायः सत्य होती है। उसकी गायें बहुत दूध देने वाली होती हैं। उसके हास के समान चरणों पर राजे लोग झुक जाते हैं। स्मरण मात्र से उसके शत्रु विनष्ट हो जाते हैं। दर्शन मात्र से स्त्रियाँ और पुरुष उसके वश में हो जाते हैं। वह बीर स्वयं कर्ता–हर्ता हो जाता है। इसमें कोई संशय नहीं है। वह जो कामना करता है वह सब निश्चित रूप से प्राप्त कर लेता है। उसे कोई दुःख नहीं होता। किसी प्रकार का शोक उसे नहीं होता। जो वीर साधक

आधी रात में चौराहे पर अकेले निर्भय होकर इस उत्तम सहस्रनाम स्तोत्र का दश बार पाठ करता है उसका मन में सोचा हुआ कार्य भी सिद्ध हो जाता है, इसमें कोई संशय नहीं है। जो साधक कभी सहस्र नाम के बिना ही मन्त्र का जाप करता है उसे करोड़ों कल्पों में भी सिद्धि प्राप्त नहीं होती। मङ्गलवार को श्मशान में या मध्याह्न में जो साधक सदा इसका जप करता है वह कृतकत्य होकर मनुष्यों में कर्ता–हर्ता स्वयं हो जाता है। जो रोगी आधी रात को आसन पर बैठकर इसका पाठ करता है वह, यदि उस समय निर्भय रहे तो, शीघ्र ही रोग रहित हो जाता है।

अर्द्ध रात्रे श्मशाने वा शनिवारे जपेन्मनुम्। अष्टोत्तरसहस्रं तु दशावारं जपेत्ततः।।१३६।। सहस्रनाम चैतद्धि तदा याति स्वयं शिवा। महापवनरूपेण घोरगोमायुनादिनी।।१३७।। ततो यदि न भीति स्यात्तदा देहीति वाग्भवेत्। तदा पशुबलिं दद्यात्स्वयं गृह्णाति चण्डिका।।१३८।। यथेष्टं च वरं दत्त्वा प्रयाति सुमुखी शिवा।

आधी रात को श्मशान में या रविवार को मन्त्र का जप करना चाहिये। इसके बाद एक हजार आठ सहस्रनाम स्तोत्र का दशबार जप करना चाहिये। तब घोर आँधी के रूप में शृगालिनी की ध्वनि करती हुयी स्वयं शिवा देवी आती हैं। उस समय यदि भय न लगे तो 'दो' यह वाणी प्रकट होती है। उस समय पशुबलि देना चाहिये। चण्डिका देवी स्वयं उस बलि को ग्रहण करती हैं और वह सुमुखी शिवा देवी यथेष्ट वर देकर चली जाती हैं।

रोचनागुरुकस्तूरीकर्पूरैश्च सचन्दनैः।।१३६।। कुंकुमेन दिने श्रेष्ठे लिखित्वा भूर्जपत्रके। शुभनक्षत्रयोगे च कृतमारुतसत्क्रियः।।१४०।। कृत्वा सम्पातनविधिं धारयेद्दक्षिणे करे। सहस्रनाम स्वर्णस्थं कण्ठे वा विजितेन्द्रियः।।१४१।। तदा यं प्रणमेन्मन्त्री क्रुद्धस्य म्रियते नरः। दुष्टश्वापदजन्तूनां न भीः कुत्रापि जायते।।१४२।। बालकानामियं रक्षा गर्भिणीनामपि प्रिये। मोहनस्तम्भनाकर्षमारणोच्चाटनानि च।।१४३।। यन्त्रधारणतो नूनं जायन्ते साधकस्य तु। नीलवस्त्रे विलिख्यैतत्तध्वजे स्थापयेद्यपि।।१४४।। तदा नष्टा भवत्येव चप्रण्डाप्यरिवाहिनी। एतज्ज्प्तं महाभस्म ललाटे यदि धारयेत्।।१४५।। तद्विलोकन एव स्युः प्राणिनस्तस्य किंकराः। राजपत्न्योपि विवशाः किमन्याः पुरयोषितः।।१४६।। एतज्जप्तं पिबेतोयं मासेन स्यान्महाकविः। पण्डितश्च महावादी जायते नात्र संशयः।।१४७।। अयुतं च पठेत्स्तोत्रं पुरश्चरणसिद्धये। दशांशं कमलैर्हुत्वा त्रिमध्वाक्तैर्विधानतः।।१४८।। स्वयमायाति कमला वाण्या सह तदालये। मन्त्रो निःकीलतामेति सुमुखी सुमुखी भवेत्।।१४६।। अनन्तं च भवेत्पुण्यमपुण्यं च क्षयं व्रजेत्।

किसी अच्छे दिन भोजपत्र पर गोरोचन, अगर, कस्तूरी, कपूर तथा चन्दन से युक्त केसर से मन्त्र को लिख कर शुभ नक्षत्र के समय हनुमानजी की पूजा करके सम्पातन विधि के बाद सोने के यन्त्र में भर कर दक्षिण हाथ में या गले में जितेन्द्रिय होकर धारण करें। तब साधक क्रुद्ध होकर जिसे प्रणाम करें वह मनुष्य मर जाता हैं और उसे दुष्ट जानवरों से कहीं भी भय नहीं होता। हे प्रिये! इससे बालकों और गर्भिणी स्त्रियों की रक्षा होती है। मोहन, स्तम्भन, आकर्षण, मारण तथा उच्चाटन साधक के मन्त्र धारण करने से निश्चित रूप से सिद्ध होते हैं। नीले वस्त्र पर इसे लिखकर ध्वजा में लगावें तो शत्रुओं की प्रचण्ड सेना भी नष्ट हो जाती है। इसके जप से अभिमन्त्रित महाभस्म को ललाट पर धारण करना चाहिये। उसके दर्शनमात्र से प्राणी उसके वश में हो जाते हैं। राजपत्नियाँ भी विवश हो जाती हैं फिर साधारण नागरिक स्त्रियों की

क्या कथा। यदि इस जप से अभिमन्त्रित जल को एक मास तक कोई पान करे तो वह महाकवि, पण्डित और महाशास्त्रार्थी हो जाता है इसमें कोई संशय नहीं है। पुरश्चरण की सिद्धि के लिए दस हजार स्तोत्र का पाठ करना चाहिये। पाठ का दशांश विधानपूर्वक त्रिमधु (मधु, घी, शकर) से सिक्त कमलों से होम करने के बाद साधक के घर में कमला देवी वाणी के साथ स्वयं आती हैं, मन्त्र निष्कीलित हो जाता है और सुमुखी देवी यथार्थ में सुमुखी हो जाती हैं। साधक को अनन्त पुण्य होता है तथा जो अपुण्य है उसका नाश हो जाता है।

पुष्करादिषु तीर्थेषु स्नानतो यत्फलं भवेत्।।१५०।। तत्फलं लभते जन्तुः सुमुख्याः स्तोत्रपाठतः। एतदुक्तं रहस्यं ते स्वसर्वस्वं वरानने।।१५१।। न प्रकाश्यं त्वया देवि यदि सिद्धिं त्वमिच्छसि। प्रकाशनादसिद्धिस्स्यात्कुपिता सुमुखी भवेत्।।१५२।। नातः परतरं लोके सिद्धिदं प्राणिनामहि।।१५३।।

पुष्करादि तीर्थों में स्नान से जो फल होता है वह फल सुमुखी देवी के स्तोत्रपाठ से प्राप्त कर लेता है। हे वरानने ! यह रहस्यमय और मेरा सर्वस्व है जिसे मैंने तुम्हें बता दिया है। हे देवि ! यदि तुम सिद्धि चाहती हो तो इसे कभी प्रकाशित न करना। इसके प्रकाशन से सिद्धि का नाश होता है तथा देवी क्रुद्ध होती हैं। प्राणियों के लिए संसार में इससे बढ़ कर कोई सिद्धि देने वाला नहीं है।

वन्दे श्रीसुमुखीं प्रसन्नवदनां पूर्णेन्दुबिम्बाननां सिन्दूराङ्कितमस्तकां मधुमदोल्लोलोच्चमुक्तावलीम्। श्यामां कज्जलिकाकरां करगतं चाध्यापयन्तीं शुकं गुञ्जापुञ्जविभूषणां सकरुणामामुक्तवेणीलताम्।।१५४।।

प्रसन्नबदन, पूर्णचन्द्रमा के समान मुखवाली, सिन्दूरांकित मस्तकवाली, सुरा के मद से कम्पन करती हुई, मोती की मालाओं वाली, काजल के समान काली, हाथ में तोता लेकर उसे पढ़ाती हुई, गुञ्जापुञ्जविभूषणा, करुणायुक्त तथा बिखरे बालों वाली श्री सुमुखी देवी को मैं नमस्कार करता हूँ।

इति श्रीनन्द्यावर्ततन्त्रे उत्तरखण्डे मातङ्गीसहस्रनाम स्तोत्रं सम्पूर्णम्।

मातङ्गीहृदय

एकदा कौतुकाविष्टा भैरवं भूतसेवितम्। भैरवी परिपप्रच्छ सर्वभूतहिते रता।।१।।

एक समय उत्कण्ठायुक्त और समस्त प्राणियों के हित में तत्पर भैरवी ने भूतों से सेवित भैरव से प्रश्न किया।

श्रीभैरव्युवाच।

भगवन्सर्वधर्मज्ञ भूतवात्सल्यभावन। अहं तु वेत्तुमिच्छामि सर्वभूतोपकारम्।।२।। केन मन्त्रेण जप्तेन स्तोत्रेण पठितेन च। सर्वथा श्रेयसाम्प्राप्तिर्भूतानां भूतिमिच्छताम्।।३।।

भैरवी बोलीं : हे प्राणियों के प्रति दयामय, धर्मज्ञ भगवान् ! मैं समस्त प्राणियों के उपकारक मन्त्र को जानना चाहती हूं। किस मन्त्र के जप से या किस स्तोत्र के पढ़ने से कल्याण चाहने वालों को श्रेय की प्राप्ति होती है।

श्रीभैरव उवाच।

शृणु देवि तव स्नेहात्प्रायो गोप्यमपि प्रिये। कथयिष्यामि तत्सर्वं सुखसम्पत्करं शुभम्।।४।। पठतां शृण्वतां नित्यं सर्वसम्पतित्तदायकम्। विद्यैश्वर्यसुखावाप्ति–

मङ्गलप्रदमुत्तमम् ।।५।। मातंग्या हृदयं स्तोत्र दुःखदारिद्र्यभञ्जनम्। मङ्गलं मङ्गलानां च अस्ति सर्वसुखप्रदम् ।।६।।

श्रीभैरव बोले : हे प्रिय देवि, सुनो ! मैं तुम्हारे प्रेम से परम गोपनीय, सुख–सम्पत्तिकारक, शुभ, पढ़ने और सुनने वालों को नित्य सभी सम्पत्तियों, समस्त एश्वर्यों और सुखों को देने वाला, मङ्गलप्रद तथा उत्तम मातङ्गी देवी का हृदयस्तोत्र तुम्हें बताऊँगा। यह दुःख और दरिद्रता का नाश करने वाला, मङ्गलों का भी मङ्गला तथा समस्त सुखों को देने वाला है।

विनियोग : ॐ अस्य श्रीमातङ्गीहृदयस्तोत्रमन्त्रस्य दक्षिणामूर्तिर्ऋषिर्विराट्छन्दो मातङ्गी देवता ह्रीं बीजं हूं शक्तिः क्लीं कीलकं सर्ववाञ्छितार्थसिद्धये पाठे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास : दक्षिणामूर्तिऋषये नमः शिरसि १। विराट्छन्दसे नमः मुखे २। मातङ्गीदेवतायै नमः हृदि ३। ह्रीं बीजाय नमः गुह्ये ४। हूं शक्तये नमः पादयोः ५। क्लीं कीलकाय नमो नाभौ ६। विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ७। इति ऋष्यादिन्यासः।

हृदयादिषडङ्गन्यास : ॐ ह्रीं हृदयाय नमः १। ॐ क्लीं शिरसे स्वाहा २। ॐ हूं शिखायै वषट् ३। ॐ ह्रीं नेत्रत्रयाय वौषट् ४। ॐ क्लीं कवचाय हुम् ५। ॐ हूं अस्त्राय फट् ६। इति हृदयादिषडङ्गन्यासः।

करन्यास : ॐ ह्रीं अंगुष्ठाभ्यां नमः १। ॐ क्लीं तर्जनीभ्यां नमः २। ॐ हूं मध्यमाभ्यां नमः ३। ॐ ह्रीं अनामिकाभ्यां नमः ४। ॐ क्लीं कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५। ॐ हूं करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ६। इति करन्यासः।

अथ ध्यानम्।

ॐ श्यामां शुभ्रांशुभालां त्रिकमलनयनां रत्नसिंहासनस्थां भक्ताभीष्टप्रदात्रीं सुरनिकरकरासेव्यकञ्जांघ्रियुग्माम्। नीलाम्भोजां शुकान्तिं निशिचरनिकरारण्यदावाग्निरूपां पाशं खड्गंचतुर्भिर्वरकमलकरैःखेटकंचांकुश्च। (मातङ्गीमावहन्तीमभिमतफलदां मोदिनीं चिन्तयामि)।।७।। नमस्ते मातंग्यै मृदुमुदिततन्वै तनुमतां परश्रेयोदायै कमलचरण-ध्यानमनसाम्। सदा संसेव्यायै सदसि पिबुधैर्दिव्यधिषणैर्दयार्द्रायै देव्यै दुरितदलनोद्दण्डमनसे।।८।। परं मातस्ते यो जपति मनुमव्यग्रहृदयः कवित्वं कल्पानां कलयति सुकल्यः प्रतिपदम्। अपि प्रायो रम्यामृतमयपदा तस्य ललिता नटीमन्या वाणी नटति रसनायां चपलिता।।९।। तव ध्यायन्तो ये वपुरनुजपन्ति प्रवलितं सदा मन्त्रं मातर्न हि भवति तेषां परिभवः। कदम्बानां मालाः शिरसि तव युञ्जन्ति सदये भवन्ति प्रायस्ते युवतिजनयूथस्ववशगाः।।१०।। सरोजैस्साहस्रैस्सरसिजपदद्वन्द्वमपि ये सहस्रं नामोक्त्वा तदपि तव ङेन्तं मनुमितम्। पृथङनाम्ना तेनायुत कलितमर्चन्ति खलु ते सदा देवव्रातप्रणमितपदांभोजयुगलाः।।११।। तव प्रीत्यै मातर्ददति बलिमाधाय बलिना समत्स्यं मांसं वा सुरुचिरसितं राजरुचितम्। सुपुण्या ये स्वान्तस्तवचरणमोदैकरसिका अहो भाग्यं तेषां त्रिभुवनमलं वश्यमखिलम्।।१२।। लसल्लोलश्रोत्राभरणकिरणक्रान्तिकलितं गितस्मित्यापन्नप्रतिभितममत्रं विकरितम् मुखाम्भोजं मातस्तव परिलुठद्भ्रूमधुकरं रमा ये ध्यायन्ति त्यजति न हि तेषां सुभवनम्।।१३।। परः श्रीमातंग्या जयति हृदयाख्यस्सुमनसामयं सेव्यस्सद्योभिमतफलदश्चातिललितः। नरा ये शृण्वन्ति स्तवमपि पठन्तीममनिशं न तेषां दुःप्राप्यं जगति यदलभ्यं दिविषदाम्।।१४।।

धनार्थी धनमाप्नोति दारार्थी सुन्दरीं प्रियाम्। सुतार्थी लभते पुत्रं स्तवस्यास्य प्रकीर्तनात्।।१५।। विद्यार्थी लभते विद्यां विविधां विभवप्रदाम्। जयार्थी पठनादस्य जयं प्राप्नोति निश्चितम्।।१६।। नष्टराज्यो लभेद्राज्यं सर्वसम्पत्समाश्रितम्। कुबेरसमसम्पत्तिः स भवेद्धृदयं पठन्।।१७।। किमंत्र बहुनोक्तेन यद्यदिच्छति मानवः। मातङ्गीहृदयस्तोत्र-पाठात्तत्सर्वमाप्नुयात्।।१८।।

इसे स्तोत्र का पाठ करने से धन चाहने वाला धन प्राप्त करता है। स्त्री चाहने वाला सुन्दरी प्रिय स्त्री को प्राप्त करता है। पुत्र चाहने वाला पुत्र को पाता है। विद्या चाहने वाला अनेक प्रकार की सम्पत्तियों को देने वाली विद्या प्राप्त करता है। जय चाहने वाला इसके पाठ से निश्चित रूप से जय प्राप्त करता है। जिसका राज्य नष्ट हो गया है वह समस्त सम्पित्तियों से युक्त राज्य प्राप्त करता है। इस हृदय स्तोत्र का पाठ करने से मनुष्य कुबेर के समान सम्पत्तिशाली हो जाता है। यहाँ अधिक कहने से क्या काम, मनुष्य जो चाहता है उस सबको मातङ्गी स्तोत्र के पाठ से वह प्राप्त कर लेता है।

इति श्रीदक्षिणामूर्तिसंहितायां श्रीमातङ्गीहृदयस्तोत्रं समाप्तम्।

इति श्रीमन्त्रमहार्णवे द्वितीयखण्डे मातङ्गीतन्त्रे द्वादशस्तरङ्ग।।१२।।

त्रयोदश तरङ्ग

कमलात्मिका (लक्ष्मी) तन्त्र

तत्रादौ पटल

अथ वक्ष्ये श्रियो मन्त्रान् श्रीसौभाग्यफलप्रदान्। यस्याः कटाक्षमात्रेण त्रैलोक्यमतिवर्तते।।१।।

जिस लक्ष्मी के कटाक्ष मात्र से तीनों लोकों पर विजय प्राप्त हो जाती है उन्हीं सौभाग्यफलप्रदायक लक्ष्मी के मन्त्रों को मैं कहूंगा।

अथ लक्ष्म्या एकाक्षरबीजमन्त्रप्रयोगः।

लक्ष्मी के एकाक्षर बीजमन्त्र का प्रयोगः

शारदा तिलक में मन्त्र इस प्रकार है :

(श्रीं) इत्येकाक्षरबीजमन्त्रः।

'श्रीं' यह एकाक्षर बीजमन्त्र है।

अस्य विधानम्

विनियोग : अस्य मन्त्रस्य भृगुर्ऋषिः। निवृच्छन्दः। श्रीलक्ष्मीर्देवता। मम धनाप्तये जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास : भृगुऋषये नमः शिरसि १। निवृच्छन्दसे नमः मुखे २। श्रीलक्ष्मीदेवतायै नमः हृदि ३। विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ४। इति ऋष्यादिन्यासः।

करन्यास : ॐ श्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः १। ॐ श्रीं तर्जनीभ्यां नमः २। ॐ श्रूं मध्यमाभ्यां नमः ३। ॐ श्रैं अनामिकाभ्यां नमः ४। ॐ श्रौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५। ॐ श्रः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ६। इति करन्यास।

हृदयादिषडङ्गन्यास : ॐ श्रां हृदयाय नमः १। ॐ श्रीं शिरसे स्वाहा २। ॐ श्रूं शिखायै वषट् ३। ॐ श्रैं कवचाय हुम् ४। ॐ श्रौं नेत्रत्रयाय वौषट् ५। ॐ श्रः अस्त्राय फट् ६। इति हृदयादिषडङ्गन्यासः।

इस प्रकार न्यास विधि करके ध्यान करें :

अथ ध्यानम्।

ॐकान्त्याकाञ्चनसन्निभां हिमगिरिप्रख्यैश्चतुर्भिर्गजैर्हस्तोत्क्षिप्तहिरण्मयामृतघटै-रासिच्यमानाश्रियम्। बिभ्राणां वरमब्जयुग्मभयं हस्तैः किरीटोज्ज्वलां क्षौमाबद्ध-नितम्बबिम्बलसितां वन्देऽविन्दस्थिताम्।।१।।

एवं ध्यात्वा सर्वतोभद्रमण्डले मण्डूकादिपरतत्वान्त पीठदेवताः संस्थाप्य ॐमं मण्डूकादिपरतत्त्वान्तपीठदेवताभ्यो नमः। इति पीठदेवताः सम्पूज्य। ततः पूर्वाद्यष्टसु दिक्षु नवपीठशक्तीः पूजयेत्।

कमलात्मिका (लक्ष्मी) ध्यान

कान्त्या काञ्चनसन्निभां हिमगिरिप्रख्यैश्चतुर्भिर्गजै-
हस्तोत्क्षिप्त हिरण्यामृतघटैरासिच्यमानां श्रियम्।।
बिभ्राणां वरमब्जयुग्ममभयं हस्तैः किरीटोज्वलां
क्षौमाबद्धनितम्बबिम्बललितां वन्देऽरविन्दस्थिताम्।।

पृ० ५७२

इस प्रकार ध्यान करके सर्वतोभद्र मण्डल में मण्डूकादि परतत्त्वान्त पीठदेवताओं को स्थापित करके "ॐ मं मण्डूकादि परतत्त्वान्त पीठदेवताभ्यो नमः" इससे पीठदेवताओं की पूजा करके पूर्व आदि आठ दिशाओं में इस प्रकार नव पीठशक्तियों की पूजा करें :

ॐ विभूत्यै नमः १। ॐ उन्मन्यै नमः २। ॐ कान्त्यै नमः ३। ॐ सुष्ट्यै नमः ४। ॐ कीर्त्यै नमः ५। ॐ सन्नत्यै नमः ६। ॐ पुष्ट्यै नमः ७। ॐ उत्कृष्ट्यै नमः ८। पीठमध्ये। ॐ ऋद्ध्यै नमः ६।

इति पीठशक्तीः सम्पूजयेत्। ततः स्वर्णादिनिर्मितं यन्त्रमग्न्युत्तारणपूर्वकं श्रीं कमलासनाय नमः। इति मन्त्रेण पुष्पाद्यासनं दत्त्वा पीठमध्ये संस्थाप्य प्राणप्रतिष्ठां कृत्वा मूलेन मूर्तिं प्रकल्प्य आवाहनादिपुष्पान्तैरुपचारैः सम्पूज्य देव्याज्ञां गृहीत्वा आवरणपूजां कुर्यात्।

इन मन्त्रों से पीठ शक्तियों की पूजा करें। इसके बाद स्वर्णादि से निर्मित यन्त्र में अग्न्युत्तारणपूर्वक "श्रीं कमलासनाय नमः" इस मन्त्र से पुष्पाद्यासन देकर पीठ के मध्य संस्थापित करके उसमें प्राण–प्रतिष्ठा करके मूलमन्त्र से मूर्ति की कल्पना करके आवाहन आदि से पुष्पाञ्जलि दानपर्यन्त उपचारों से पूजा करके देवी की आज्ञा लेकर इस प्रकार आवरण पूजा करें (लक्ष्मी का एकाक्षर बीजमन्त्र पूजन यन्त्र देखिये चित्र २५)।

षट्कोणकेसरेषु। अग्निकोणे। ॐ हृदयाय नमः[1] १। नैर्ऋत्ये। ॐ श्रीं शिरसे स्वाहा[2] २। वायव्ये।ॐ श्रूँ शिखायै वषट्[3] ३। ईशान्ये। ॐ श्रैं कवचाय[4] हुम् ४।पूज्यपूजकयोर्मध्ये। ॐ श्रौं नेत्रत्रयाय वौषट्[5] ५। देवीपश्चिमे। ॐ श्रः अस्त्राय फट्[6] ६।

इति षडङ्गानि पूजयेत्। ततः पुष्पाञ्जलिमादाय मूलमुच्चार्य ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले। भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमा वरणार्चनम्।।१।। इति पठित्वा पुष्पाञ्जलिं च दत्त्वा पूजितास्तर्पिताः सन्तु इति वदेत्। इति प्रथमावरणम्।।१।।

इससे षडङ्गों की पूजा करें। इसके बाद पुष्पाञ्जलि लेकर मूल का उच्चारण करके "ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले। भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम्।" इसे पढ़ कर पुष्पाञ्जलि देकर "पूजितास्तर्पिताः सन्तु।" यह कहें। इति प्रथमावरण।।१।।

पूज्यपूजकयोरन्तरालं प्राची। तदनुसारेणान्या दिशः प्रकल्प्य प्राच्यादिचतुर्दिक्षु विदिक्षु च।

पूज्य और पूजक के अन्तराल में प्राची दिशा होनी चाहिये। तदनुसार अन्य दिशाओं की कल्पनाा करके प्राच्यादि चारो दिशाओं और उपदिशाओं में :

पूर्वे। ॐ वासुदेवाय नमः[7] वासुदेवश्रीपादुका पूजयामि तर्पयामि नमः १। इति सर्वत्र। दक्षिणे। ॐ संकर्षणाय नमः[8] संकर्षणश्रीपा० २। पश्चिमे। ॐ प्रद्युम्नाय नमः[9] प्रद्युम्नश्रीपा० ३। उत्तरे। ॐ अनिरुद्धाय नमः[10] अनिरुद्धश्रीपा० ४। अग्निकोणे। ॐ दमकाय नमः[11] दमकश्रीपा० ५। निर्ऋतिकोणे। ॐ सलिलाय नमः[12] सलिलश्रीपा० ६। वायव्ये। ॐ गुग्गुलाय नमः[13] गुग्गुलश्रीपा० ७। ईशान्ये ॐ कुरुंटकाय नमः[14] कुरुंटकश्रीपा० ८। देव्या दक्षिणे। ॐ शङ्खनिधये नमः[15] शंख–निधिश्रीपा० ६। ॐ वसुधायै नमः[16] वसुधाश्रीपा० १०। वामे। ॐ पद्मनिधये[17] नमः पद्मनिधिश्रीपा० ११। ॐ वसुमत्यै नमः[18] वसुमतिश्रीपा० १२।

इति द्वादशदैवतानि पूजयित्वा पुष्पाञ्जलिं दद्यात्। इति द्वितीयावरणम्।।२।।

इससे बारह देवताओं की पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवें। इति द्वितीयावरण।।२।।

इसके बाद पत्राग्रों में पूर्वादि क्रम से :

ॐ बलाक्यै नमः[19] बलाकीश्रीपा० १। ॐ विमलायै नमः[20] विमलाश्रीपा० २। ॐ कमलायै नमः[21] कमलाश्रीपा० ३। ॐ वनमालिकायै नमः[22] वनमालिका श्रीपा० ४।ॐ विभीषिकायै नमः[23] ॐ विभीषिकाश्रीपा० ५। ॐ मालिकायै नमः[24] मालिकाश्रीपा० ६। ॐ शाङ्कर्यै नमः[25] शाङ्करीश्रीपा० ७। ॐ वसुमालिकायै नमः[26] वसुमालिकाश्रीपा० ८।

इससे पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवें। इति तृतीयावरण।।३।।

इसके बाद भूपुर के भीतर पूर्वादि क्रम से :

ॐ लृं इन्द्राय नमः[27] १। ॐ रं अग्नये नमः[28]। ॐ मं यमाय नमः[29] ३। ॐ क्षं निऋतये नमः[30] ४। ॐ वं वरुणाय नमः[31] ५। ॐ यं वायवे नमः[32] ६। ॐ कुं कुबेराय नमः[33] ७। ॐ हं ईशानाय नमः[34] ८। ईशानपूर्वयोर्मध्ये। ॐ आं ब्रह्मणे नमः[35] ९। निर्ऋतिपश्चिमयोर्मध्ये। ॐ ह्रीं अनन्ताय नमः[36] १०।

इससे दश दिक्पालों की पूजा करें। तदुपरान्त उसके बारह :

ॐ वं वज्राय नमः[37] १। ॐ शंशक्तये नमः २[38]। ॐ दं दण्डाय नमः[39] ३। ॐ खं खड्गाय नमः[40] ४। ॐ पां पाशाय नमः[41] ५। ॐ अं अकुशाय नमः[42] ६। ॐ गं गदायै नमः[43] ७। ॐ त्रिं त्रिशूलाय नमः[44] ८। ॐ पं पद्माय नमः[45] ९। ॐ चं चक्राय नमः[46] १०।

इत्यस्त्राणि पूजयेत। इत्यावरणपूजां कृत्वा धूपादिनीराजनान्तंसम्पूज्य जपं कुर्यात्। अस्य पुरश्चरणं द्वादशलक्ष जपः। द्वादशसहस्रकमलंपुष्पहोमः। तत्तद्दशांशेन तर्पणमार्जनब्राह्मणभोजनानि च कुर्यात्। एवं कृते मन्त्रः सिद्धो भवति। एतस्मिन्सिद्धे मन्त्रे मन्त्री प्रयोगान् साधयेत्। तथाच : भानुलक्षं जपेन्मन्त्रं दीक्षितो विजितेन्द्रियः। तत्सहस्रं प्रजुहुयात्कमलैर्मधुरोक्षितैः।।१।। जपान्ते जुहुयान्मन्त्री तिलैर्वा मधुराप्लुतैः। बैल्वैः फलैर्वा जुहुयात्त्रिभिर्वा साधकोत्तमः।।२।। इत्थं यो भजते देवीं विधिना साधकोत्तमः। धनधान्यसमृद्धिः स्याच्छ्रियमाप्नोत्यनिन्दिताम्।।३।। वक्षःप्रमाणे सलिले स्थित्वा मन्त्रमिमं जपेत्। त्रिलक्षं प्रजपेन्मन्त्रं वांछितं लभते धनम्।।४।।अशोकवह्नौ जुहुयात्तण्डुलैराज्यलोलितैः। वशयत्यचिरादेव त्रैलोक्यमपि मन्त्रवित्।।५।। जुहुयात्तण्डुलैः शुद्धैरर्काग्नौ नियुतं वशी। राज्यश्रियमवाप्नोति राजपुत्रो महीयसीम्।।६।। जुहुयात्खादिरे वह्नौ तण्डुलैर्मधुरोक्षितैः। राजा वश्यो भवेच्छीघ्रं महालक्ष्मीश्च वर्द्धते।।७।।

इससे अस्त्रों की पूजा करें। इस प्रकार आवरण पूजा करके धूपदान से लेकर नीराजन पर्यन्त पूजा करके जप करें। इसका पुरश्चरण बारह लाख जप है। द्वादशसहस्र कमल पुष्पों से होम करें और तत्तद्दशांश से तर्पण, मार्जन तथा ब्राह्मण भोजन करें। ऐसा करने पर मन्त्र सिद्ध होता है। इस मन्त्र के सिद्ध हो जाने पर साधक प्रयोगों को सिद्ध करे। कहा भी गया है : दीक्षा लेकर इन्द्रियों पर विजय प्राप्त कर बारह लाख मन्त्र का जप करें। तदनुसार बारह हजार मधु, घी तथा शकर से युक्त कमलपुष्पों से आहुति देनी चाहिए। जप के बाद साधक मधु, घी तथा शकर के साथ तिल से होम करें। अथवा मधु,घी तथा शहद से परिप्लुत बेल के फलों से होम करें। इस प्रकार जो उत्तम साधक विधिपूर्वक देवी की उपासना करता है, उसे धन–धान्य की समृद्धि प्राप्त होती है और वह यश से समन्वित लक्ष्मी को प्राप्त करता है। यदि साधक वक्ष–प्रमाण जल में खड़ा होकर इस मन्त्र का तीन लाख जप करे तो वह वाच्छित धन प्राप्त करता है। साधक अशोक की समिधाओं से प्रदीप्त अग्नि में घी से सिक्त चावलों से यदि होम करे तो शीघ्र ही तीनों लोकों को वश में कर लेता है। यदि इन्द्रियजयी राजपुत्र मदार

की समिधाओं से प्रदीप्त शुद्ध अग्नि में चावल से दस लाख होम करे तो चिरन्तन राज्यश्री को प्राप्त करता है। यदि साधक खैर की समिधा से प्रदीप्त अग्नि में मधु, घी तथा शकर से युक्त चावलों से होम करे तो राजा शीघ्र वश में हो जाता है और उसकी महालक्ष्मी बढ़ती है।

बिल्वच्छायामधिवसन् बिल्वमिश्रहविष्यभुक्। सम्वत्सरद्वयं हुत्वा तत्फलैरथवाम्बुजैः।।८।।
साधकेन्द्रो महालक्ष्मीं चक्षुषा पश्यन्ति ध्रुवम्।

यदि साधक बेल की छाया में रहता हुआ और बेल से मिश्रित हविष्य का आहार करता हुआ दो वर्ष तक बेल से या कमल से हवन करे तो वह महालक्ष्मी का निश्चित रूप से दर्शन करता है।

हविषा घृतसिक्तेन पायसेन ससर्पिषा।।९।। हुत्वा श्रियमवाप्नोति नियुतं मन्त्रवित्तमः।
मधुराक्तारुणाम्भोजैर्जुहुयाल्लक्षमादरात्। न मुञ्चति रमा तस्या वंशमाभूतसम्प्लवम्।।१०।।

साधक घी से युक्त खीर तथा घी से युक्त हविष्य से दस लाख आहुति देकर लक्ष्मी को प्राप्त करता है। मधु, घी तथा शकर से सिक्त लाल कमलों से आदरपूर्वक होम करने से लक्ष्मी उसे नहीं छोड़ती और सारा संसार उसके वश में हो जाता है।

इत्येकाक्षरलक्ष्मीबीजमन्त्रप्रयोगः।

अथ चतुरक्षरलक्ष्मीबीजमन्त्रप्रयोगः।

ऐं श्रीं ह्रीं क्लीं। इति चतुरक्षरो लक्ष्मीबीजात्मको मन्त्रः।

शारदा तिलक में मन्त्र इस प्रकार है : "ऐं श्रीं ह्रीं क्लीं" यह चारों अक्षरों वाला लक्ष्मी का बीजात्मक मन्त्र है।

अस्य विधानम्

करन्यास : ॐ श्रीं अंगुष्ठाभ्यां नमः १। ॐ श्रीं तर्जनीभ्यां नमः २। ॐ श्रूं मध्यमाभ्यां नमः ३। ॐ श्रैं अनामिकाभ्यां नमः ४। ॐ श्रौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५। ॐ श्रः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ६। इति करन्यासः।

हृदयादिषडङ्गन्यास : ॐ श्रीं हृदयाय नमः १। ॐ श्रीं शिरसे स्वाहा २। ॐ श्रूं शिखायै वषट् ३। ॐ श्रैं कवचाय हुम् ४। ॐ श्रौं नेत्रत्रयाय वौषट् ५। ॐ श्रः अस्त्राय फट् ६। इति हृदयादिषडगन्यासः।

इस प्रकार न्यासविधि करके ध्यान करें।

अथ ध्यानम्

ॐ माणिक्यप्रतिप्रभां हिमनिभैस्तुंगैश्चतुर्भिर्गजैर्हस्ताग्राहितरत्नकुम्भसलिलै- रासिच्यमानां मुदा। हस्ताब्जैर्वरदानमम्बुजयुगाभीतीर्दधानां हरेः। कान्तां कांक्षितपारिजातलतिकां वन्दे सरोजासनाम्।।१।।

इति ध्यायेत्। अस्य पूजादिकं सर्वं पूर्ववत्। अस्य पुरश्चरणं द्वादशलक्षजपः। तथाचः
भानुलक्षं हविष्याशी जपेदन्ते सरोरुहैः। जुहुयादरुणैः फुल्लैः तत्सहस्रं जितेन्द्रियः।।१।।
कुर्यात्प्रयोगांस्तत्रस्थान्मनुना तेन साधकः। निधिभिः सेव्यते नित्यं मूर्तिमद्भिरुपासितैः।।२।।

इस प्रकार ध्यान करके सब पूजा आदि पूर्ववत् करना चाहिये। इसका पुरश्चरण बारह लाख जप है। जैसा कि कहा गया है :

साधक हविष्याशी रह कर तथा जितेन्द्रिय होकर बारह लाख मन्त्र का जप करें। जप के बाद लाल फूले हुए कमलों से बारह हजार होम करें। इसके बाद साधक मन्त्र से वहाँ प्रयोग करें। इसकी सिद्धि से निधियाँ स्वयं मूर्तिमती होकर साधक की सेवा करती हैं।

इति चतुरक्षरलक्ष्मीबीजात्मकमन्त्रप्रयोगः

अथ दशाक्षरलक्ष्मीमन्त्रप्रयोगः।

ॐ नमः कमलवासिन्यै स्वाहा। इति दशाक्षरमन्त्रः।

शारदातिलक में मन्त्र इस प्रकार है : "ॐ नमः कमलवासिन्यै स्वाहा।" यह दशाक्षर मन्त्र हैं।

विनियोग : अस्य मन्त्रस्य दक्षऋषिः विराट्छन्दः श्रीलक्ष्मीर्देवता सर्वेष्टसिद्धये जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास : दक्षऋषये नमः शिरसि १। विराट्छन्दसे नमः मुखे २। श्रियै देवतायै नमः हृदि ३। विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ४। इति ऋष्यादिन्यासः।

करन्यास : ॐ देव्यै नमोंगुष्ठाभ्यां नमः १। ॐ पद्मिन्यै नमस्तर्जनीभ्यां नमः २। ॐ विष्णुपत्न्यै नमो मध्यमाभ्यां नमः ३। ॐ वरदायै नमोऽनामिकाभ्यां नमः ४। ॐ कमलायै नमः कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५। इति करन्यासः।

नेत्रहीन पञ्चाङ्गन्यास : ॐ देव्यै नमो हृदयाय नमः १। ॐ पद्मिन्यै नमः शिरसे स्वाहा २। ॐ विष्णुपत्न्यै नमः शिखायै वषट् ३। ॐ वरदायै नमः कवचाय हुम् ४। ॐ कमलायै नमः अस्त्राय फट् ५। इति नेत्रहीनपञ्चाङ्गन्यासः[1]।

इस प्रकार न्यासविधि करके ध्यान करें :

अथ ध्यानम्।

ॐ आसीना सरसीरुहे स्मितमुखी हस्ताम्बुजैर्बिभ्रती दानं पद्मयुगाभये च वपुषा सौदामिनिसन्निभा। मुक्ताहारविराजमानपृथुलोत्तुङ्गस्तनोद्भासिनी पायाद्वः कमला कटाक्षविभवैरानन्दयन्ती हरिम्।।१।।

एवं ध्यात्वा पूर्वोक्तपीठशक्तिभिः सहपीठपूजां विधाय ततः स्वर्णादिनिर्मितं यन्त्रं आसनमन्त्रेणासनं दत्त्वा पीठमध्ये संस्थाप्य पुनर्ध्यात्वा मूलेन मूर्तिं प्रकल्प्य वाहनादिपुष्पान्तैरुपचारैः। सम्पूज्य देव्याज्ञां गृहीत्वा आवरणपूजां कुर्यात्। तत्र क्रमः।

इस प्रकार ध्यान करके पूर्वोक्त पीठशक्तियों के साथ पीठ की पूजा करके स्वर्णादि से निर्मित यन्त्र को आसनमन्त्र से आसन देकर पीठ के मध्य में रख कर फिर ध्यान करके मूलमन्त्र से मूर्ति की कल्पना करके आवाहन आदि से लेकर पुष्पाञ्जलि दान पर्यन्त उपचारों से पूजा करके देवी की आज्ञा लेकर आवरण की पूजा करें। उसमें क्रम यह है (लक्ष्मी दशाक्षर मन्त्रयन्त्र देखिये चित्र २६)

षट्कोणकेसरेषु। अग्निकोणे। ॐ देव्यै नमो हृदयाय नमः[1]।।१।। निर्ऋतिकोणे। ॐ पद्मिन्यै नमः[2] शिरसे स्वाहा २। वायव्ये। ॐ विष्णुपत्न्यै नमः[3] शिखायै वषट् ३। ईशान्ये। ॐ वरदायै नमः[4] कवचाय हुम् ४। देविपश्चिमे ॐ कमलरूपायै[5] नमोऽस्त्राय फट् ५।

इति पञ्चाङ्गानि पूजयेत्। ततः पुष्पाञ्जलिमादाय मूलमुच्चार्य ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले। भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम्।।१।। इति पठित्वा पुष्पाञ्जलिं च दत्त्वा विशेषार्घाद्बिन्दुं निक्षिप्य पूजितास्तर्पिताः सन्तु इति वदेत्। इति प्रथमावरणम्।।१।।

इस प्रकार पञ्चाङ्ग की पूजा करें। इसके बाद पुष्पाञ्जलि लेकर मूलमन्त्र का उच्चारण करके "ॐ अभीष्टसिद्धिं में देहि शरणागतवत्सले। भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम्।।१।।"

साधक यह पढ़कर पुष्पाञ्जलि देकर विशेष अर्घ से विन्दु डाल कर 'पूजितास्तर्पिताः सन्तु' यह कहें। इति प्रथमावरण।।१।।

---

१ पञ्चाङ्गानि मनोर्यत्र तत्र नेत्रमनु त्यजेत्।

ततः पूज्यपूजकयोरन्तरालं प्राची। तदनुसारेण अन्याः दिशः प्रकल्प्याष्टदलेषु प्राचीक्रमेण।

इसके बाद पूज्य और पूजक के अन्तराल को पूर्व दिशा मानकर तदनुसार अन्य दिशाओं की कल्पना करके आठों दलों में पूर्व दिशा क्रम से :

ॐ बलाक्यै नमः[६] १। ॐ विमलायै नमः[७] १। ॐ कमलायै नमः[८] ३। ॐ वनमालिकायै नमः[६]४। ॐ विभीषकायै नमः[१०] ५। ॐ मालिकायै नमः[११] ६। शांकर्यै नमः[१२] ७। ॐ वसुमालिकायै नमः[१३]८।

इत्यष्टौ पूजयित्वा पुष्पाञ्जलि दद्यात्। इति द्वितीयावरणम्।।२।।

इस प्रकार आठों की पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवें। इति द्वितीयावरण।।२।।

ततो भूपुरे पूर्वादिक्रमेण इन्द्रादीन् वज्रादींश्च पूजयेत्। इत्यावरणपूजां कृत्वा धूपादिनीराजनान्तं सम्पूज्य जपं कुर्यात्। अस्य पुरश्चरणं दशलक्षजपः। जपदशांशेन होमः तत्तद्दशांशेन तर्पणमार्जनब्राह्मणभोजनानि कुर्यात्। एवं कृते मन्त्रः सिद्धो भवति। एतस्मिन्सिद्धे मन्त्रे मन्त्री प्रयोगान् साधयेत्।

इसके बाद भूपुर में पूर्व आदि क्रम से इन्द्र आदि देवताओं तथा वज्र आदि उनके अस्त्रों की पूजा करें। इस प्रकार आवरण पूजा करके धूपदान से लेकर नीराजन तक पूजा करके जप करें। इसका पुरश्चरण दश लाख जप है। जप का दशांश होम होता है, और तत्तद्दशांश तर्पण, मार्जन तथा ब्राह्मण भोजन करें। ऐसा करने पर मन्त्र सिद्ध होता है। इसके सिद्ध होने पर साधक प्रयोगों को सिद्ध करे।

दशलक्षं जपेन्मन्त्रं मन्त्रविद्विजितेन्द्रियः। दशांशं जुहुयान्मन्त्री मधुराक्तैः सरोरुहैः।।१।।
इति सम्पूज्यदेवीं सम्पदामालयं भवेत्। समुद्रगायां सरिति कण्ठमात्रे जले स्थितः।।२।।
त्रिलक्षं प्रजपेन्मन्त्री साक्षाद्वैश्रवणो भवेत्। आराध्योत्तरनक्षत्रे देवीं स्रक् चन्दनादिभिः।।३।।
नन्द्यावर्तभवैः पुष्पै सहस्रं जुहुयात्ततः। पूर्णमास्यां फलैर्बैल्वैर्जुहुयान्मधुराप्लुतैः।।४।।
पञ्चम्यां विशदाम्भोजैः शुक्रवारे सुगन्धिभिः। अन्यैर्वा विशदैः पुष्पै प्रतिमासं विशालधीः।
स भवेदब्दमात्रेण सर्वदा सम्पदां निधिः।।५।।

मन्त्रविद् साधक जितेन्द्रिय होकर दश लाख मन्त्र का जप करें। जप का दशांश मधु, घी तथा शकर से सिक्त लाल कमलों से होम करें। इस प्रकार जो समुद्र में गिरने वाली नदी में कण्ठमात्र जल में खड़ा होकर देवी की पूजा करता है वह सम्पत्तियों का धाम बन जाता है। उत्तराषाढा, उत्तरा भाद्रपद तथा उत्तरा फाल्गुनी में माला तथा चन्दन आदि से देवी की पूजा करके तीन लाख जप करने साधक साक्षात् वैश्रवण बन जाता है। इसके बाद नन्द्यावर्त फूलों से एक हजार होम करें। पूर्णमासी में मधु, घी तथा शकर से युक्त वेलों से होम करें। पञ्चमी को बड़े कमल के फूलों से और शुक्रवार को सुगन्धित अन्य बड़े फूलों से हवन करें। इसके बाद पूर्णमासी में घी, मधु तथा शकर से युक्त बेल के फलों से होम करें। जो इस प्रकार करता है वह एक वर्ष में समस्त सम्पत्तियों का निधि बन जाता है।

इति दशाक्षरलक्ष्मीमन्त्रप्रयोगः।

अथ सप्तविंशत्यक्षरमहालक्ष्मीमन्त्रप्रयोगः।

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीदप्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महालक्ष्म्यै नमः। इति सप्तविंशत्यक्षरो मन्त्रः।

शारदातिलक में मन्त्र से प्रकार है : 'ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महालक्ष्म्यै नमः" यह सत्ताइस अक्षरों का मन्त्र है।

अस्य विधानम्।

विनियोग : अस्य मन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः गायत्रीच्छन्दः श्रीमहालक्ष्मीर्देवता श्रीं बीजं नमः शक्तिः सर्वेष्टसिद्धये जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास : ॐ ब्रह्मऋषये नमः शिरसि १। ॐ गायत्रीच्छन्दसे नमः मुखे २। ॐ महालक्ष्मीदेवतायै नमः हृदि ३। ॐ श्रीं बीजाय नमः गुह्ये ४। ॐ नमः शक्तये नमः पादयोः ५। ॐ विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे। इति ऋष्यादिन्यासः।

करन्यास : ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले श्रीं ह्रीं श्रीं अंगुष्ठाभ्यां नमः १। ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमलालये श्रीं ह्रीं श्रीं तर्जनीभ्यां नमः २। ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं मध्यमाभ्यां नमः ३। ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं अनामिकाभ्यां नमः ४। ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं महालक्ष्म्यै श्रीं ह्रीं श्रीं कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५। इति करन्यासः।

नेत्रहीनपञ्चाङ्गन्यास : ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले श्रीं ह्रीं श्रीं हृदयाय नमः १। ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमलालये श्रीं ह्रीं श्रीं शिरसे स्वाहा २। ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं शिखायै वषट् ३। ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं कवचाय हुम् ४। ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं महालक्ष्म्यै श्रीं ह्रीं श्रीं अस्त्राय फट् ५। इति नेत्र[1]हीनपंचांगन्यासः।

इस प्रकार न्यासविधि करके ध्यान करें।

अथ ध्यानम्।

ॐ सिंदूरारुणकान्तिमब्जवसतिं सौंदर्यवारान्निधिं कोटीरांगदहार कुण्डलकटी-सूत्रादिभिर्भूषिताम्। हस्ताब्जैर्वसुपत्रमब्जयुगलादर्शौ वहन्तीं परामावीतां परिचारिकाभिरनिशं ध्यायेत्प्रियां शार्ङ्गिणः।। १।।

इति ध्यात्वा पूर्ववत् पीठपूजां विधाय स्वर्णादिनिर्मितं यन्त्रं अग्न्युत्तारणपूर्वकं आसन मन्त्रेणासनं दत्त्वा पीठमध्ये संस्थाप्य पुनर्ध्यात्वा मूलेन मूर्तिं प्रकल्प्य आवाहनादिपुष्पान्तैरुपचारैः सम्पूज्य देव्याज्ञां गृहीत्वा आवरणपूजां कुर्यात्।

इस प्रकार ध्यान करके पूर्ववत् पीठपूजा करके स्वर्णादि से निर्मित यन्त्र को अग्न्युत्तारणपूर्वक आसनमन्त्र से आसन देकर पीठ के बीच में रखकर पुनः ध्यान करके मूलमन्त्र से मूर्ति की कल्पना करके आवाहन से लेकर पुष्पाञ्जलिदान तक सभी उपचारों से पूजा करके देवी से आज्ञा लेकर इस प्रकार आवरण पूजा करें। (लक्ष्मी सप्तविंशत्यक्षर मन्त्रपूजन यन्त्र देखिये चित्र २७)।

षट्कोणकेसरों में :

अग्निकोणे ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले श्रीं ह्रीं श्रीं हृदयाय नमः[1]। निर्ऋतिकोणे ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमलालये श्रीं ह्रीं श्रीं शिरसे स्वाहा[2] २। वायव्ये ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं शिखायै वषट्[3]३। ईशान्ये ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं कवचाय हुम्[4] ४। देवीपश्चिमे ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं महालक्ष्म्यै श्रीं ह्रीं श्रीं अस्त्राय फट्[5] ५।

इति पञ्चाङ्गानि पूजयेत। ततः पुष्पाञ्जलिमादाय मूलमुच्चार्य ॐ अभिष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले। भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम्।।१।। इति पठित्वा पुष्पाञ्जलिं च दत्त्वा पूजितास्तर्पिताः सन्तु इति वदेत्। इति प्रथमावरणम्।।१।।

इस प्रकार पञ्चाङ्गों की पूजा करें। इसके बाद पुष्पांजलिं लेकर मूलमन्त्र का उच्चारण करके

---

१ पञ्चाङ्गानि मनोर्यत्र तत्र नेत्रमनुं त्यजेत्।

"ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले। भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम्।।१।।" यह पढ़कर पुष्पाञ्जलि देकर "पूजितास्तर्पिताः सन्तु" यह कहें। इति प्रथमावरण।।१।।

पूज्यपूजकयोर्मध्ये प्राचीं प्रकल्प्य ततोष्टदलेषु पूर्वादिक्रमेण।

पूज्य और पूजक के बीच पूर्व दिशा को प्रकल्पित करके पूर्वादि क्रम से आठों दलों में :

ॐ श्रीधराय[६] नमः श्रीधरश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः १। इति सर्वत्र। ॐ हृषीकेशाय नमः[७] हृषीकेशश्रीपा० २। ॐ वैकुण्ठाय नमः[८] वैकुण्ठश्रीपा० ३। ॐ विश्वरूपाय नमः[९] विश्वरूपश्रीपा० ४। ॐ वासुदेवाय नमः[१०] वासुदेवश्रीपा० ५। ॐ सङ्कर्षणाय नमः[११] सङ्कर्षणश्रीपा० ६। ॐ प्रद्युम्नाय नमः[१२] प्रद्युम्नश्रीपा० ७। ॐ अनिरुद्धाय नमः[१३] अनिरुद्धश्रीपा० ८।

इससे आठों की पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवें। इति द्वितीयावरण।।२।।

इसके बाद अष्टदलों के बीच पूर्वादि क्रम से :

ॐ भारत्यै नमः[१४] भारतीश्रीपा० १। ॐ पार्वत्य नमः[१५] पार्वतीश्रीपा० २। ॐ चान्द्रयै नमः[१६] चान्द्रीश्रीपा० ३। ॐ शच्यै नमः[१७] शचीश्रीपा० ४। ॐ दमकांय नमः[१८] दमकाश्रीपा० ५। ॐ सलिलाय नमः[१९] सलिलश्रीपा० ६। ॐ गुग्गुलवे नमः[२०] गुग्गुलश्रीपा० ७। ॐ कुरुण्टकाय नमः[२१] कुरुण्टकश्रीपा० ८।

इससे आठों की पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवें। इति तृतीयावरण।।३।।

इसके बाद अष्टदलाग्रों में :

ॐ अनुरागाय महालक्ष्मीबाणाय नमः[२२] १। ॐ संवादाय महालक्ष्मीबाणाय नमः[२३] २। ॐ विजयाय महालक्ष्मीबाणाय नमः[२४] ३। ॐ वल्लभाय महालक्ष्मीबाणाय नमः[२५] ४। ॐ मदाय महालक्ष्मीबाणाय नमः[२६] ५। ॐ हर्षाय महालक्ष्मीबाणाय नमः[२७] ६। ॐ बलाय महालक्ष्मीबाणाय नमः[२८] ७। ॐ तेजसे महालक्ष्मीबाणाय नमः[२९] ८।

इससे आठ बाणों की पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवें। इति चतुर्थावरण।।४।।

ततो भूपुरे पूर्वादिक्रमेण इद्रादीन् वज्रादींश्च पूजयेत्। इत्यावरणपूजां कृत्वा धूपादिनीराजनान्तं सम्पूज्य जपं कुर्यात्। अस्य पुरश्चरणं लक्षजपः। तत्तद्दशांशेन होमतर्पणमार्जनब्राह्मणभोजनानि कुर्यात्। एवं कृते मन्त्रः सिद्धो भवति। एतस्मिन्सिद्धे मन्त्रे मन्त्री प्रयोगान् साधयेत्। तथा चः लक्षं जपेत्फलैर्बैल्वैर्जुहुयान्मधुरोक्षितैः। दशांशसंस्कृते वह्नौ प्राक्प्रोक्तेनैव वर्त्मना।।१।। अनेन विधिना देवीं महालक्ष्मीमुपासते। ये तेषु निवसेल्लक्ष्मीरस्मरन्ती निजालयम्।।२।। उत्पलैर्जुहुयाल्लक्षं चन्दनाम्भसि लोलितैः। शत्रूणां लभते राज्यं विना युद्धेन पार्थिवः।।३।। जपन्राजसभां गच्छेत्सम्भाव्येत तया नरः।

इसके बाद भूपुर में पूर्वादि क्रम से इन्द्रादि देवताओं तथा वज्र आदि उनके आयुधों की पूजा करें। इस प्रकार आवरण पूजा करके धूपदान से लेकर नीराजन तक पूजा करके जप करें। इसका पुरश्चरण एक लाख जप है और तत्तद्दशांश होम, तर्पण, मार्जन तथा ब्राह्मण भोजन करें। ऐसा करने पर मन्त्र सिद्ध होता है। इसके सिद्ध होने पर साधक योगों को सिद्ध करे। कहा भी गया है : एक लाख मन्त्र का जप करना चाहिये। इसके बाद मधु, घी तथा शकर से युक्त बेल के फलों से पूर्वोक्त नियमानुसार दशांश होम करना चाहिये। जो लोग इस विधि से देवी की उपासना करते हैं उनके घर में देवी अपने घर को भूलकर निवास करती हैं। यदि राजा चन्दन के जल में एक लाख कमलों को सिक्त करके हवन करें तो बिना युद्ध के शत्रु के राज्य को प्राप्त करता है।

दूर्वा देवी महालक्ष्मीर्विष्णुक्रान्ता मधुव्रता ।।४।। मुशली शत्रुवल्ली च सदाभद्राञलिप्रिया। हरिचन्दनकर्पूरचन्दनाकोलरोचनाः ।।५।। मालूरकेसरौ कुष्ठं सर्वं पिष्ट्वा निशारसैः। अष्टोतरसहस्त्रं तुं जपित्वा तिलकक्रियाम् ।।६।। कुर्वतो मन्त्रिणः सर्वे वशे तिष्ठंत्यहर्निशम्। श्रियो मन्त्रं भजेन्मन्त्री श्रीसूक्तान्यपि संजपेत् ।।७।। भूयसीं श्रियमाकांक्षन् सत्यवादी भवेत्सदा। प्रत्यगाशामुखोऽश्नीयात्स्थितः पूर्वं प्रियं वदेत् ।।८।। पूजयेद्गन्धपुष्पाद्यैरात्मानं नियतः शुचिः। शयीत शुद्धशय्यायां तरुण्या सह नान्यथा ।।६।। नग्नो नावतरेदम्भस्तैलाभ्यक्तो न भक्षयेत्। हरिद्रां न मुखे लिम्पेन्न स्वपेदशुचिः क्वचित् ।।१०।। न वृथा विलिखेद्भूमिं न बिल्वं द्रोणमम्बुजम्। धारयेन्मूर्ध्नि नैवाद्याल्लोणं तैलं च केवलम् ।।११।। मलिनो न भवेज्जातु कुत्सितान्नं न भक्षयेत्। द्रोणपङ्कजबिल्वानि पद्भ्यां जातु न लङ्घयेत् ।।१२।। सहदेवीमिन्द्रवल्लीं श्रीवल्लीं विष्णुवल्लभाम्। कन्याम्बुजप्रवालं च धारयेन्मूर्ध्नि सर्वदा ।।१३।। इत्याचारपरो नित्यं विष्णु भक्तो दृढव्रतः। श्रियमाप्नोति महतीं देवानामपि दुर्लभाम् ।।१४।।

दूब, सहदेई, लक्ष्मीबल्ली, विष्णुक्रान्ता, मधुव्रता, मुशली, इन्द्रवारुणी, नागरमोथा, लज्जालू, पीतचन्दन, कपूर, श्वेतचन्दन, अंकोल, गोरोचन, बेल, नागकेसर तथा कुछ कुष्ठ को हल्दी के रस में पीस कर एक सौ आठ मन्त्र का जप करके तिलक लगाने से मन्त्रिगण साधक के वश में होकर रातदिन तत्पर रहते हैं। अधिक धन की इच्छा करता हुआ सदा सत्याचारी रह कर साधक लक्ष्मी के मन्त्र का जप करे तथा श्रीसूक्त का भी जप करे। पूर्व की ओर मुख करके भोजन करे और पूर्व की ओर मुख करकें बैठे तथा सत्य बोले। शुद्ध और जितेन्द्रिय होकर गन्ध–पुष्प आदि से साधक अपनी पूजा नित्य करे। शय्या पर युवती के साथ शयन करे अकेले नहीं। पानी में नङ्गा होकर न उतरे। तेल मर्दन करके भोजन न करें। हल्दी का लेप मुख पर न करें। कहीं पर अपवित्र होकर न शयन करें। व्यर्थ भूमि न कुरेदे। बेल, गूमा या कमल को सिर पर धारण करें और नमक या तेल अकेले–अकेले न खायें। कभी मलिन न रहें। निन्दित अन्न न खायें। गूमा, बेल तथा कमल को पैरों से कभी न लाँघे। सहदेई, इन्द्रवारुणी, लक्ष्मीलता, विष्णुक्रान्ता, घीकुआर, कमल तथा प्रवाल सदा सिरपर धारण करें। इस प्रकार के आचारों से युक्त होकर नित्य विष्णुभक्त और व्रत में निष्ठावान् होकर जो रहता है वह देवदुर्लभ महती समृद्धि को प्राप्त करता है।

इति सप्तविंशत्यक्षरमहालक्ष्मीमन्त्रप्रयोगः।

अथ द्वादशाक्षर महालक्ष्मीमन्त्रप्रयोगः।

ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं सौं जगत्प्रसूत्यै नमः। इति द्वादशाक्षरो मन्त्रः।

शारदा तिलक में मन्त्र इस प्रकार है : ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं सौं जगत्प्रसूत्यै नमः। यह द्वादशाक्षर मन्त्र है।

अस्य विधानम्।

विनियोग : अस्य मन्त्रस्य ब्रह्माऋषिः गायत्रीच्छन्दः श्रीजगन्माता महालक्ष्मीर्देवता श्रीं बीजं सर्वेष्टसिद्धये जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास : ॐ ब्रह्मऋषये नमः शिरसि १। गायत्रीच्छन्दसे नमः मुखे २। श्रीजगन्माता महालक्ष्म्यै नमः हृदि ३। श्रीं बीजाय नमः गुह्ये ४। विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ५। इति ऋष्यादिन्यासः।

करन्यास : मूल से हाथ धोकर ॐ ऐं अंगुष्ठाभ्यां नमः १। ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः २। ॐ श्रीं मध्यमाभ्यां नमः ३। ॐ क्लीं अनामिकाभ्यां नमः ४। ॐ सौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५। ॐ जगत्प्रसूत्यै करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ६। इति करन्यासः।

इसके बाद "ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं सौं जगत्प्रसूत्यै नमः" से मस्तकादिचरणान्त व्यापक न्यास करें। इससे न्यास करके इस प्रकार मन्त्रवर्णन्यास करें :

मन्त्रवर्णन्यास : ॐ ऐं नमः मूर्ध्नि १। ॐ ह्रीं नमः मुखे २। ॐ श्रीं नमः हृदये ३। ॐ क्लीं नमः गुह्ये ४। ॐ सौं नमः पादयोः ५। इस प्रकार न्यास करके हृदय पर हाथ रखकर सप्तवर्ण न्यास करें। इसमें क्रम यह है : ॐ जं नमः त्वचि ६। ॐ गत् नमः रक्ते ७। ॐ प्रं नमः मांसे ८। ॐ सूं नमः मेदसि ६। ॐ त्यैं नमः अस्थ्नि १०। ॐ नं नमः मज्जायाम् ११। ॐ मं नमः शुक्रे १२। इस प्रकार न्यास करें। इति मन्त्रवर्णन्यासः।

करन्यास : ॐ ऐं ज्ञानाय अंगुष्ठाभ्यां नमः १। ॐ ह्रीं ऐश्वर्याय तर्जनीभ्यां नमः २। ॐ श्रीं शक्तये मध्यमाभ्यां नमः ३। ॐ क्लीं बलाय अनामिकाभ्यां नमः ४। ॐ सौं वीर्याय कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५। ॐ जगत्प्रसूत्यै नमस्तेजसे करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ६। इति करन्यासः।

हृदयादिषडङ्गन्यास : ॐ ऐं ज्ञानाय हृदयाय नमः १। ॐ ह्रीं ऐश्वर्याय शिरसे स्वाहा २। ॐ श्रीं शक्तये शिखायै वषट् ३। ॐ क्लीं बलाय कवचाय हुम् ४। ॐ सौं वीर्याय नेत्रत्रयाय वौषट् ५। ॐ जगत्प्रसूत्यै नमस्तेजसे अस्त्राय फट् ६। इति हृदयादिषडङ्गन्यासः।

एवं न्यासविधिं कृत्वोद्यानस्मरणं कुर्यात्।

इस प्रकार न्यासविधि करके उद्यान का स्मरण करें। यथा :

चम्पकाशोकपुन्नागपाटलैरुपशोभितम् लवङ्गमालतीबिल्वदेवदारुनमेरुभिः।।१।। मन्दारपारिजाताद्यैः कल्पवृक्षैः सुपुष्पितैः। चन्दनैः कर्णिकारैश्च मातुलिङ्गैश्च वञ्जुलैः।।२।। दाडिमीलकुचाङ्कोलैः पूगैः कुरवकैरपि। कदलीकुन्दमन्दारनालिकेरैरलंकृतैः।।३।। अन्यैः सुगन्धि पुष्पाद्यैर्वृक्षसंघैश्च मण्डितम्। मालतीमल्लिकाजातीकेतकीशतपत्रकैः।।४।। पारन्तीतुलसीनन्द्यावर्तैर्दमनकैरपि। सर्वर्तुकुसुमोपेतैर्नमद्भिरुपशोभितम्।।५।। मन्दमारुतसंभिन्नकुसुमामोदिदिङ्मुखम्। तस्य मध्ये सदोत्फुल्लैः कुमुदोत्पलपङ्कजैः।।६।। सौगन्धिकैश्च कह्लारैर्नवैः कुवलयैरपि। हंससारसकारण्डैर्भ्रमरैश्चक्रनामभिः।।७।। अन्यैः कलकलारावैर्विहंगैरुपशोभितम्। महासरसि तन्मध्ये पुलिनेऽतिमनोहरे।।८।। परितः पारिजाताद्यं मण्डपं मणिकुट्टिमम्। उद्यदादित्यसङ्काशं भास्वरं शशिशीतलम्।।६।। चतुर्द्वारसमायुक्तं हेमप्राकार शोभितम्। रत्नोपक्लृप्तिसंशोभिकपाटाष्टकसंयुतम्।।१०।। नवरत्नसमाक्लृप्तं तुङ्गगीपुरतोरणम्। हेमदण्डसमालम्बिध्वजादलिपरिष्कृतम्।।११।। नवरत्नसमाबद्धस्तम्भराजिविराजितम्। सहस्रदीपसंयुक्तदीपं दण्डविराजितम्।।१२।। तप्तहाटकसंक्लृप्तवातायनमनोहरम्। नानावर्णांशुकोद्बद्धसुवर्णशतकोटिभिः।।१३।। किङ्किणीमल्लिकायुक्तपताकाभिरलंकृतम्। जातरूपमयै रत्नविचित्रैरतिविस्तृतैः।।१४।। माणिक्यरत्नवैदूर्यस्वर्णमालावलीयुतैः। अन्तरान्तरसम्बद्धरत्नैर्दृष्टिमनोहरैः।।१५।। विचित्रैश्चित्रवर्णैश्च वितानैरुपशोभितम्। सर्वरत्नसमायुक्तं हेमकुट्टिममुज्ज्वलम्।।१६।। केतकीमालतीजातीचम्पकोत्पलकेसरैः। मल्लिका तुलसीजातीनन्द्यावर्तकदम्बकैः।।१७।। एतैरन्यैश्च कुसुमैरलंकृतमहीतलम्। अम्बुकाश्मीरकस्तूरीमृगनाभितमालकैः।।१८।। चन्दनागुरुकर्पूरैरामोदितदिगन्तरम्। एवं सञ्चिन्त्य मनसा मण्डपं सुमनोहरम्।।१६।। तन्मध्ये भावयेन्मन्त्री पारिजातं मनोहरम्। तस्याधस्तात्स्मरेन्मन्त्री रत्नसिंहासनं शुभम् तस्मिन्सञ्चिंतयेद्देवीं महालक्ष्मीं मनोरमाम्।।२०।।

इत्युद्यानस्मरणं कृत्वा महालक्ष्मीं ध्यायेत्।

इस प्रकार उद्यान का स्मरण करके महालक्ष्मी का ध्यान करें।

अथ ध्यानम् :

बालार्कद्युतिमिन्दुखण्डविलसत्कोटीरहारोज्ज्वलां रत्नाकल्पविभूषितां कुचनतां शालैः करैर्मञ्जरीम्। पद्मं कौस्तुभरत्नमप्यविरतं सम्बिभ्रतीं सस्मितां फुल्लाम्भोजविलोचनत्रययुतां ध्यायेत्परां देवताम्।।१।। सिञ्जन्मञ्जीरसंशोभिपदाम्भोजविराजिताम्। नवरत्नगणाकीर्ण-काञ्चीदामविभूषिताम्।।२।। मुक्तामाणिक्यवैदूर्यसम्बद्धोदरबन्धनाम्। विभ्राजमानां मध्येन वलित्रितयशोभिताम्।।३।। जाह्नवीसरिदावर्तशोभिनाभिविभूषिताम्। पाटीरपङ्क कर्पूरकुम्कुमालंकृतस्तनीम्।।४।। वारिवाहविनिर्मुक्तमुक्तादामगरीयसीम्। वहन्तीमुत्तरासङ्गं दुकूलपरिकल्पिताम्।।५।। तप्तकाञ्चनसन्नद्धवैदूर्याङ्गदभूषणाम्। पद्मरागस्फुरद्वर्णकङ्कणाढ्यकराम्बुजाम्।।६।। माणिक्यशकलाबद्धमुद्रिकाभिरलंकृताम्। तप्तहाटकसंक्लृप्तमालग्रैवेयशोभिताम्।।७।। विचित्रविविधाकल्पकम्बुसंकाशकन्धराम्। उद्यद्दिनकराकारमणिताटङ्कमण्डिताम्।।८।। रत्नाङ्कितलसत्स्वर्णकर्णपूरोपशोभिताम्। जयाविद्रुमलावण्यललिताधरपल्लवाम्।।९।। दाडिमीफलबीजाभदन्तपंक्तिविभूषिताम्। कलङ्ककार्श्यनिर्मुक्तशरच्चन्द्रनिभाननाम्।।१०।। पुण्डरीकदलाकारनयनत्रय सुन्दरीम्। भ्रूलताजितकन्दर्पकरकार्मुकविभ्रमाम्।।११।। विलसत्तिलपुष्पश्रीविजयोद्यतनासिकाम्। ललाटकान्तिविभवविजितार्द्धसुधाकराम।।१२।। सान्द्रसौरभसम्पन्नकस्तूरीतिलकांकिताम्। मत्तालिमालाविलसदलकाढ्यमुखाम्बुजाम्।।१३।। पारिजातप्रसूनश्रीवाहिधम्मिल्लबन्धनाम्। अनर्घ्यरत्नघटितमुकुटाङ्कितमस्तकाम्।।१४।। सर्वलावण्यवसतिं भवनं विभ्रमश्रियः। तेजसां जन्मभूमिं तां महालक्ष्मीं मनोहराम्।।१५।।

इति ध्यात्वा सर्वतोभद्रमण्डले पूर्ववत पीठपूजां विधाय स्वर्णादिनिर्मितं यन्त्रं अग्न्युत्तारणपूर्वकं आसनमन्त्रेणासनं दत्त्वा पीठमध्ये संस्थाप्य पुनर्ध्यात्वा मूलेन मूर्तिं प्रकल्प्य आवाहनादिपुष्पान्तैरुपचारैः सम्पूज्य देव्याज्ञां गृहत्वा आवरणपूजां कुर्यात्। तत्र क्रमः।

इस प्रकार ध्यान करके सर्वतोभद्रमण्डल में पूर्ववत् पीठपूजा करके स्वर्ण आदि से निर्मित यन्त्र को अग्न्युत्तारणपूर्वक आसनमन्त्र से आसन देकर पीठ के बीच में स्थापित करके पुनः ध्यान करके मूलमन्त्र से मूर्ति की कल्पना कर आवाहन आदि से लेकर पुष्पाञ्जलिदान तक सभी उपचारों से पूजा करके देवी से आज्ञा लेकर आवरण पूजा करें। उसमें क्रम यह है (द्वादशाक्षर महालक्ष्मी मन्त्रयन्त्र, देखिये चित्र २८)।

देव्या दक्षिणे ॐ शंकरनन्दनाय नमः[1]। शंकरनन्दनश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः १। एवं सर्वत्र[1]। देव्या वामे ॐ पुष्पधन्वने[2] नमः। पुष्पधन्वश्रीपा०।।२।। इति पूजयेत्।

ततः पुष्पाञ्जलिमादाय मूलमुच्चार्य ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले। भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम्। इति पठित्वा पुष्पाञ्जलिं च दत्त्वा पूजितास्तर्पिताः सन्तु इति वदेत्। इति प्रथमावरणम्।।१।।

---

१ श्रीपदं पूर्वमुच्चार्य पादुकापदमुद्धरेत्। पूज्यामि नमः पश्चात्पूजयेदङ्गदेवताः।

इसके बाद पुष्पाञ्जलि लेकर मूल का उच्चारण करके "ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले। भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम्।" यह पढ़ कर पुष्पाञ्जलि देकर "पूजितास्तर्पिताः सन्तु" यह कहें। इति प्रथमावरण।।१।।

इसके बाद षट्कोण–केसरा में :

अग्निकोणे ॐ ऐं ज्ञानाय हृदयाय नमः[३]। हृदयश्रीपा० १। निर्ऋतिकोणे ॐ ह्रीं ऐश्वर्याय शिरसेस्वाहा[४]। शिरः श्रीपा० २। वायव्ये ॐ श्रीं शक्तये शिखायै[५] वषट्। शिखाश्रीपा० ३। ईशान्ये ॐ क्लीं बलाय कवचाय[६] हुम्। कवचश्रीपा० ४। पूज्यपूजकयोर्मध्ये ॐ सौवीर्याय नेत्रत्रयाय वौषट्[७]। नेत्रत्रयश्रीपा० ५। देव्याः पश्चिमे ॐ जगत्प्रसूत्यै नमस्तेजसे अस्त्राय[८] फट्। अस्त्रश्रीपा० ६।

इससे षड्ङ्गों की पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवें। इति द्वितीयावरण।।२।।

ततोष्टदलेषु पूज्यपूजकयोर्मध्ये प्राची। तदनुसारेण अन्या दिशः प्रकल्प्य पूर्वादिक्रमेण।

इसके बाद अष्टदलों में पूज्य और पूजक के अन्तराल को पूर्व दिशा मान कर और तदनुसार अन्य दिशाओं की कल्पना करके पूर्वादि क्रम से :

ॐ उमायै नमः[९]। उमाश्रीपा० १। ॐ श्रियै नमः[१०]। श्रीश्रीपा० २। ॐ सरस्वत्यै नमः[११]। सरस्वतीश्रीपा० ३। ॐ दुर्गायै नमः[१२]। दुर्गाश्रीपादुकां पू० ४। ॐ धरण्यै नमः[१३] धरणिश्रीपा० ५। ॐ गायत्र्यै नमः[१४]। गायत्रीश्रीपा० ६। ॐ देव्यै नमः[१५]। देवीश्रीपा० ७। ॐ उषायै नमः[१६]। उषाश्रीपा० ८।

इस प्रकार आठ शक्तियों की पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवें। इति तृतीयावरण।।३।।

इसके बाद देवी के दक्षिण :

ॐ जह्नुसुतायै नमः[१७]। जह्नु सुताश्रीपा० १। देव्यो वामे ॐ सूर्यसुतायै नमः [१८] सूर्यसुताश्रीपा० २। ततः पुनर्देव्या दक्षिणे ॐ शङ्खनिधये नमः[१९]। शङ्खनिधिश्रीपा. ३। पुनर्देव्या वामे ॐ पद्मनिधये नमः[२०]। पद्मनिधिश्रीपा० ४।

पश्चिमे धृतातपत्रं वरुणं पूजयित्वा पुष्पाञ्जलि दद्यात्। इति चातुर्थावरणम्।।४।।

पश्चिम में आतपत्र (छत्र) धारी वरुण की पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवें। इति चतुर्थावरण।।४।।

इसके बाद अष्टदलाग्रों में पूर्वादि क्रम से :

ॐ सूर्याय नमः[२१]। सूर्यश्रीपा० १। ॐ सोमाय नमः[२२]। सोमश्रीपा० २। ॐ भौमाय नमः[२३]। भौमश्रीपा० ३। ॐ बुधाय नमः[२४]। बुधश्रीपा० ४। ॐ बृहस्पतये नमः[२५]। बृहस्पतिश्रीपा० ५। ॐ शुक्राय नमः[२६]। शुक्रश्रीपा० ६। ॐ शनैश्चराय नमः[२७]! शनैश्चरश्रीपा० ७। ॐ राहवे केतवे नमः[२८]। राहुकेतुश्रीपा० ८।

इससे नव ग्रहों की पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवें। इति पञ्चमावरण।।५।।

इसके बाद भूपुर के भीतर :

ॐ ऐरावताय नमः[२९]। ऐरावतश्रीपा० १। ॐ पुण्डरीकाय नमः[३०]। पुण्डरीकश्रीपा० २। ॐ वामनाय नमः[३१]। वामनश्रीपा० ३। ॐ कुमुदाय नमः[३२]। कुमुदश्रीपा० ४। ॐ अञ्जनाय नमः[३३]। अञ्जनश्रीपा० ५। ॐ पुष्पदन्ताय नमः[३४]। पुष्पदन्तश्रीपा० ६। ॐ सार्वभौमाय नमः[३५]। सार्वभौमश्रीपा० ७। ॐ सुप्रतीकाय नमः[३६]। सुप्रतीकश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ८।

इससे आठ दिग्गजों की पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवें। इति षष्ठावरण।।६।।

इसके बाद भूपुर में इन्द्रादि देवताओं तथा उनके वज्रादि आयुधों की पूजा करें :

इत्यावरणपूजां कृत्वा धूपादिनीराजनान्तं सम्पूज्य पुनर्ध्यात्वा जपं कुर्यात्। अस्य पुरश्चरणं द्वादशलक्षजपः। जपदशांशतो घृतहोमः। पुनः श्रीफलैः पद्मैः प्रत्येकमयुत होमः।

ततोयुतद्वयमितं तर्पणं कुर्यात्। एवं कृते मन्त्रः सिद्धो भवति। एतस्मिन्सिद्धे मन्त्रे मन्त्री प्रयोगान् साधयेत्। तथाच : भानुलक्षं जपेन्मन्त्रं दशांशं जुहुयाद्घृतैः। जुहुयाच्छीफलैः पद्मैः प्रत्येकमयुतं ततः।।१।। तर्पयेत्सतिलैः शुद्धैः सुगन्धैरयुतद्वयम्। आगमोक्तेन विधिना सुगन्धैः सुमनोहरैः। पूजयेद्गंधपुष्पाद्यैर्देवीमन्वहमादरत्।।२।।

इस प्रकार आवरण पूजा करके धूपादि दान से नीराजनान्त पूजा करके पुनः ध्यान करके जप करें। इसका पुरश्चरण बारह लाख जप है। जप का दशांश घी से होम करना है। पुनः बेल तथा कमल प्रत्येक से दश–दश हजार होम करना है। इसके बाद बीस हजार बार तर्पण करें। ऐसा करने पर मन्त्र सिद्ध होता है। इस मन्त्र के सिद्ध होने पर साधक प्रयोगों को सिद्ध करें। बारह लाख जप करना चाहिये। उसका दशांश घी से होम करना चाहिये। इसके बाद बेल तथा कमल प्रत्येक से दश–दश हजार होम करना चाहिये। इसके बाद शुद्ध सुगन्धित तिल सहित जल से बीस हजार बार तर्पण तथा आगमोक्त विधि से सुगन्धित और सुन्दर फूलों तथा गन्ध, पुष्प, पाद्य आदि से देवी का आदरपूर्वक पूजन करें।

दूर्वाभिराज्यसिक्ताभिर्जुहुयादायुषे नरः। दशरात्रं समिद्धेऽग्नावष्टोत्तरसहस्रकम्।।३।। गुडूचीराज्यसंसिक्ता जुहुयात्सप्तवासरम्। अष्टोत्तरसहस्रं यः स जीवेच्छरदां शतम्।।४।। हुत्वा तिलान् धृताभ्यक्तान्दीर्घपायुरवाप्नुयात्। आरभ्यार्क दिनं मन्त्री दशरात्रं दिनेदिने।।५।। आज्याक्तार्कसमिद्धोमादारोग्यं लभते ध्रुवम्। कण्ठमात्रोदके स्थित्वा ध्यात्वा देवीं दिवाकरे।।६।। ऊर्ध्वबाहुर्दशशतमष्टोत्तरमिमं हुनेत्। आरोग्यं लभते सद्यो वाञ्छितान्यपि मन्त्रवित्।।७।।

मनुष्य आयु की प्राप्ति के लिए प्रदीप्त अग्नि में एक हजार आठ बार घी से सिक्त दूबों से दश रात्रि तक होम करें। घी से युक्त गिलोय से सात दिन तक जो एक हजार आठ बार होम करता है, वह सौ वर्ष तक जीवित रहता है। रविवार से प्रारम्भ करके दश रात्रियों तक प्रतिदिन जो घी से सिक्त तिलों से होम करता है वह दीर्घायु प्राप्त करता है। घी में सिक्त मदार की समिधाओं से होम करने से मनुष्य निश्चित रूप से आरोग्य प्राप्त करता है। जो साधक कण्ठ तक जल में सूर्योदय के समय खड़ा होकर दोनों हाथों को ऊपर उठा कर देवी का ध्यान करके एक हजार आठ आहुतियों का होम करता है वह तत्काल आरोग्य प्राप्त करता है और उसकी कामनायें भी पूर्ण हो जाती हैं।

शालीभिर्जुह्वतो नित्यमष्टोत्तरसहस्रकम्। अचिरादेव महती लक्ष्मीः सञ्जायते ध्रुवम्।।८।। प्रसूनैर्जुहुयान्मन्त्री लक्ष्मीवल्लीसमुद्भवैः। नन्द्यावर्त समुत्थैश्च सिद्धार्थैश्च घृताप्लुतैः। महतीं श्रियमाप्नोति मान्यते सर्वजन्तुभिः।।९।।

चावल से नित्य होम करनेवाले को भी शीघ्र ही निश्चित रूप से महती लक्ष्मी प्राप्त होती है। घृत से युक्त लक्ष्मीवल्ली (मेषशृङ्गी) और नन्द्यावर्त के पुष्पों से तथा पीली सरसों से जो साधक होम करता है वह भी महती समृद्धि को प्राप्त करता है तथा समस्त प्राणियों में मान्य होता है।

मरीचजीरकोन्मिश्रैर्नारिकेलरजः प्लुतैः। सगुडैराज्यसम्पक्वैरपूपैराज्यलोलितैः ।। जुहुयात्पायसाहारो मन्त्रविद्विजितेन्द्रियः।।१०।। अष्टोत्तरशतं नित्यं मण्डलाद्धनदो भवेत्।

खीर का आहार करता हुआ जितेन्द्रिय होकर जो मन्त्रविद् साधक काली मिर्च, जीरा तथा नारियल के रज से प्लुत गुड़ सहित घी में पके घृतप्लुत पूओं से एक सौ आठ आहुतियों द्वारा नित्य होम करता है वह उनचास दिन में कुबेर के समान धनवान हो जाता है।

हविषा गुडमिश्रेण जुहुयादर्थवान्भवेत् ।।११।। जया पुष्पाणि जुहुयादष्टोत्तरसहस्रकम्। गृहीत्वा प्रजपेद्भस्म नागवल्लीसमन्वितम्।।१२।। तिलकं तनुयात्तेन सर्ववश्यकरोभवेत्।

गुड़मिश्रित हविष्य से होम करने से साधक धनवान होता है। जपापुष्पों से एक हजार आठ बार होम करने से, उसकी भस्म को नागवल्ली से समन्वित कर जप करके उससे तिलक लगाने से साधक सभी को वश में कर लेता है।

ब्रह्म वृक्षसमित्पुष्पैर्ब्राह्मणान्वशयेद्वशी।।१३।।

पलाश की समिधाओं और पुष्पों से होम करने से साधक ब्राह्मणों को वश में कर लेता है।

जातीपुष्पैश्च राजानं वैश्यान् रक्तोत्पलैः शुभैः। शूद्रान्नीलोत्पलैर्हुत्वा वशयेन्मन्त्रविन्नरः।।१४।।

चमेली के पुष्पों से होम करने साधक राजा को, शुभ लाल कमलों से होम करने से वैश्यों का तथा नीले कमलों से होम करने से शूद्रों को वश में कर लेता है।

पुष्पैर्मधूकजैर्हुत्वा वशमानयति स्त्रियः।

महुये के पुष्पों से होम करने से साधक स्त्रियों को वश में कर लेता है।

कृत्वा नवपदात्मानं मण्डलं यन्त्रभूषितम्।।१५।। अभिषेकं प्रकुर्वीत विधिना सर्वसिद्धये। कलशान्स्थापयेत्तेषु पदेषु शुभलक्षणान्।।१६।। चन्दनालिप्तसर्वाङ्गान् दूर्वाक्षतसमन्वितान्। दुकूलवेष्टितानेतान्पूरयेत्तीर्थवारिणा।।१७।। नवरत्नसमाबद्धं कर्षकाञ्चनकल्पितम्। मध्यकुम्भे क्षिपेत्पद्मं यन्त्राढ्यं देशिकोत्तमः।।१८।। चन्दनोशीरकर्पूरजातीकङ्कोलकुंकुमम्। कुष्ठागरुतमालैलायुतं सम्पिष्य भागतः।।१९।। बिलोड्य सर्वकुम्भेषु रत्नान्यापि विनिक्षिपेत्। लक्ष्मीदूर्वासदाभद्रासहदेवीमधुव्रताः।।२०।। मुशली शक्रवल्ली च क्रान्तापामार्गपत्रकान्। प्रियंगुमुद्गगोधूमव्रीहींश्च सतिलान्यवान्।।२१।। शालितण्डुलमाषांश्च प्रक्षाल्यैतेषु निक्षिपेत्। धात्रीलकुचबिल्वानां कदलीनालिकेरयोः।।२२।। फलान्यपि विनिक्षिप्य पुष्पाण्येतानि निक्षिपेत्। पद्मं सौगन्धिकं जातिं मल्लिकां बकुलं तथा।।२३।। चम्पकाशोकपुन्नागतुलसीकेतकोद्भवान्। पल्लवान्वटाश्वत्थप्लक्षोदुंबर–शाखिनाम्।।२४।। बह्मकूर्चं विनिक्षिप्य चम्पकैः सफलान्वितैः पिधाय कुम्भवक्त्राणि क्षौमैराच्छादयेत्ततः।।२५।। आवाह्य मध्यकलशे महालक्ष्मीं प्रपूजयेत्। यजेदुमाद्याः शिष्टेषु कलशेष्वष्टसु क्रमात्।।२६।। गन्धैर्मनोहरैः पुष्पैर्धूपदीपसमन्वितैः। निवेद्य भक्ष्यभोज्यानि तान्स्पृष्ट्वा प्रजपेन्मनुम्।।२७।।

यन्त्रभूषित नवपदात्मक मण्डल को लिख कर (शारदातिलकटीकायां राघवभट्टः नवपदात्मानं तृतीयोक्त नवनामयन्त्रभूषित वक्ष्यमाण यन्त्र तन्मध्य पद्मकर्णिकायां लिखेदित्यर्थः) सर्वसिद्धयों के लिए उसका विधिवत् अभिषेक करें। तदनन्तर प्रत्येक पद में चन्दन से सर्वाङ्ग लिप्त एवं दूर्वा तथा अक्षतों से समन्वित उत्तम लक्षणयुक्त कलशों की स्थापना करें। फिर उन्हें रेशमी वस्त्रों से वेष्टित करके उनमें तीर्थों का जल भर दें। उत्तम आचार्य को चाहिये कि नव रत्नों से समाबद्ध एक कर्ष स्वर्ण से कल्पित और यन्त्र से संयुक्त पद्म को मध्य कुम्भ में डाल दें। चन्दन, उशीर, कपूर, जाती, कङ्कोल, कुंकुम, कुष्ठ, अगर, तमाल तथा एला समान भाग पीस कर सभी कुम्भों में विलोडित करें तथा रत्न भी डाल दें। लक्ष्मी, दूर्वा, सदाभद्रा, सहदेवी, मधुव्रता, मुशली, शक्रवल्ली, क्रान्ता, अपामार्ग, इनके पत्रों को और प्रियंगु, मृद्ग, गोधूम, ब्रीहि, तिल, यव, शालितण्डुल तथा माष इस सबको धोकर उक्त कुम्भों में डाल दें। धात्री, लकुच,

बिल्व, कदली तथा नारियल के फलों को भी उनमें डाल दें। पद्म, सौगन्धिक, जाती मल्लिका, बकुल, चम्पा, अशोक, पुन्नाग, तुलसी तथा केतकी के पुष्प भी उनमें डालें। वट, अश्वत्थ, प्लक्ष तथा उदुम्बर वृक्षों के पत्रों और सफलान्वित चम्पक के साथ ब्रह्मकूर्च को निक्षिप्त करके कुम्भों के मुखों को बन्द कर क्षौमवस्त्रों से उन्हें ढँक दें। मध्य कलश में लक्ष्मी का आवाहन करके उनकी पूजा करें। शेष आठ कलशों में उमा की पूजा करें। मनोहर गन्धमय पुष्पों से धूप–दीप के साथ भक्ष्य–भोज्य द्रव्यों का निवेदन कर उन कुम्भों का स्पर्श करके मन्त्र का जप करें।

त्रिसहस्रं जपस्यान्ते साध्यमानीय संयतम्। संस्थाप्य स्थण्डिले पीठं तस्मिंस्तं विनिवेशयेत्।।२८।। रम्यैरावरणैर्वस्त्रैरलंकृत्य तमादरात्। सुमङ्गलाभिर्नारीभिः क्षिप्तपुष्पाक्षतान्वितम्।।२९।। अर्चितानां द्विजातीनामाशीर्वादपुरःसरम्। नदत्सु पञ्चवाद्येषु मुहुर्ते शोभने सुधीः।।३०।। मध्यस्थं कुम्भमुत्सृज्य महालक्ष्मीमनुस्मरन्। अभिषिञ्चेत्क्रमादन्यैः कलशैरपि देशिकः।।३१।। करेणास्य शिरः स्पृष्ट्वा प्रयुञ्जीताशिषं गुरुम्। भद्रमस्तु शिवं चास्तु महालक्ष्मीः प्रसीदतु।।३२।। रक्षन्तु त्वां सदा देवाः सम्पदः सन्तु सर्वदा। अथोत्थायाभिषिक्तः सन् वाससी परिधाय च।।३३।। यथाविधि समाचम्य दण्डवत्प्रणमेद्गुरुम्। वस्त्रैराभरणैर्धान्यैर्धनैर्गोमहिषादिभिः।।३४।। दासीदासैश्च विधिवत्तोषयेद्देवताधिया। ब्राह्मणान्भोजयेत्पश्चाद्दीनांधकृपणैः सह।।३५।। महान्तमुत्सवं कुर्याद्भवने बन्धुभिः सह। तदा कृतार्थमात्मानं मन्यते मनुजोत्तमः।।३६।। अभिषिक्तो नरपतिः परान् विजयतेऽचिरात्। पदेच्छुः पदमाप्नोति राजपुत्रो न संशयः।।३७।। अभिषिक्ता सती वन्ध्या सूते पुत्रं महामतिम्। महारोगेषु जातेषु कृत्याद्रोहेषु देशिकः।।३८।। भूतेषु दुर्निमित्तादौ विदध्याद–भिषेचनम्। सर्वसम्पत्करं पुंसां सर्वसौभाग्यसिद्धिदम्।।३९।। सर्वरोगप्रशमनं सर्वापद्विनिवारणम्। गर्भरक्षाकरं स्त्रीणां दीर्घायुर्जनकं परम्।।४०।। प्रसूतानामपि स्त्रीणां सूतिकागाररक्षकम्। प्रनष्टपुष्पगर्भाणां पुष्पगर्भाभिरक्षणम्।।४१।। आसन्नशत्रुभीतानां नाशनं च महीभृताम्। अभिषेकमिमं प्राहुरागमार्थविशारदाः।।४२।।

तीन हजार जप के बाद साधक संयत साध्य को लाकर स्थण्डिल पर पीठ की स्थापना कर उसपर उसे रम्य वस्त्राभूषणों से अलंकृत करके आदरपूर्वक बैठायें। उसके ऊपर सुमङ्गली नारियों से पुष्प और अक्षत का प्रक्षेपण करायें। पूजित विप्रों के आशीर्वादपूर्वक पाँच वाद्यों के बजाये जाने पर शुभ मुहूर्त में महालक्ष्मी का स्मरण करते हुए मध्य में स्थित कलश को उठाकर साधक यजमान को स्नान करायें। इसी प्रकार अन्य कलशों से भी स्नान करायें। गुरु अपने हाथ से यजमान के शिर को स्पर्श करके आशीर्वाद दे कि "तुम्हारा कल्याण हो, मङ्गल हो, लक्ष्मीजी तुम पर प्रसन्न हों। सभी देवता तुम्हारी रक्षा करें।" इसके बाद यजमान स्नान करके उठे और दो वस्त्र धारण करेः एक अधोवस्त्र और एक उत्तरीय। तदनन्तर यथाविधि आचमन करके गुरु को दण्डवत् प्रणाम करे तथा वस्त्र, आभूषण, धन, धान्य, गाय, भैंस, दास, दासी आदि द्वारा देवबुद्धि से उनका सत्कार करें। इसके बाद ब्राह्मणों को भोजन करायें। तदनन्तर निर्धन, अन्धे, लङ्गड़े, लूले, अपङ्ग आदि को भोजन करायें। अपने घर में बन्धु–बान्धवों के साथ भारी उत्सव करें। तब वह उत्तम पुरुष अपने को कृतार्थ समझता है। वह अभिषिक्त होकर शत्रुओं को शीघ्र जीत लेता है। पद चाहने वाला राजपुत्र पद प्राप्त करता है। बन्ध्या स्त्री अभिषिक्त होकर अत्यन्त बुद्धिमान् पुत्र को जन्म देती है। महारोग होने पर, कृत्या–द्रोह होने पर, प्राणियों में कोई दैवी बाधा उपस्थित होने पर साधक अभिषेक करें। मनुष्यों को समस्त सम्पत्तियों को देने वाला, सभी सौभाग्य और

सिद्धियों को देने वाला, सभी रोगों को शमन करने वाला, स्त्रियों के गर्भ का रक्षक, दीर्घ आयु का जनक, जच्चा –बच्चा के घर की रक्षा करने वाला, जिन स्त्रियों का रजोधर्म नष्ट हो गया है उनके पुष्प और गर्भ की रक्षा करने वाला, निकट आये शत्रु से डरे हुए राजाओं के शत्रु का नाश करने वाला, आगम शास्त्र के विद्वानों ने इस अभिषेक को कहा है।

इति द्वादशाक्षरलक्ष्मीमन्त्रप्रयोगः।

अथ त्रयोविंशत्यक्षरलक्ष्मीमन्त्रप्रयोगः।

प्राकृत ग्रन्थ में मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं लक्ष्मीरागच्छागच्छ मम मन्दिरे तिष्ठतिष्ठ स्वाहा।

यह तेईस अक्षरों वाला मन्त्र है।

अस्य विधानम् :

अष्टोत्तरशतं प्रतिदिनं जपेत्। लक्ष्मीः प्रसन्ना भवति द्रव्यं च ददाति।

प्रतिदिन एक सौ आठ बार जपने से लक्ष्मी प्रसन्न हो द्रव्य प्रदान करती हैं।

इति त्रयोविंशत्यक्षरलक्ष्मीमन्त्रप्रयोगः।

अथ सिद्धलक्ष्म्येकादशाक्षरमन्त्रप्रयोगः।

मन्त्र इस प्रकार है : ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं सिद्धलक्ष्म्यै नमः। इति मन्त्रः।

अस्य विधानम् :

विनियोगः ॐ अस्य श्रीसिद्धलक्ष्मीमन्त्रस्य हिरण्यगर्भऋषिः अनुष्टुप्छन्दः श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वत्यो देवताः श्रीं बीजं ह्रीं शक्तिः क्लीं कीलकं मम सर्वक्लेशपीडापरिहारार्थं सर्वदुःखदादिद्र्यनाशनार्थं सर्वकार्यसिद्ध्यर्थं च श्रीसिद्ध–लक्ष्मी–मन्त्रजपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास : ॐ हिरण्यगर्भऋषये नमः शिरसि १। अनुष्टप्छन्दसे नमः मुखे २। श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीदेवताभ्यो नमः हृदि ३। श्रीं बीजाय नमः लिङ्गे ४। ह्रीं शक्तये नमः पादयोः ५। क्लीं कीलकाय नमो नाभौ ६। विनियोगाय नमः सर्वाङ्गेषु ७। इति ऋष्यादिन्यासः।

करन्यास : ॐ श्रीं अंगुष्ठाभ्यां नमः १। ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः २। ॐ क्लीं मध्यमाभ्यां नमः ३। ॐ श्रीं अनामिकाभ्यां नमः ४। ॐ सिद्धलक्ष्म्यै कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५। ॐ नमः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः। इति करन्यासः।

हृदयादिषडङ्गन्यास : ॐ श्रीं हृदयाय नमः १। ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा २। ॐ क्लीं शिखायै वषट् ३। ॐ श्रीं कवचाय हुम् ४। ॐ सिद्धलक्ष्म्यै नेत्रत्रयाय वौषट् ५। ॐ नमः अस्त्राय फट् ६। इति हृदयादिषडङ्गन्यासः।

अथ ध्यानम् :

ब्राह्मीं च वैष्णवीं भद्रां षड्भुजां च चतुर्मुखीम्। त्रिनेत्रां खड्गशूलाभी पद्मचक्रगदा–धराम्।।१।। पीताम्बरधरां देवीं नानालङ्कारभूषिताम्। तेजः पुञ्जधरीं श्रेष्ठीं ध्यायेद्बालकुमारिकाम्।।२।।

इति ध्यात्वा पूर्वोक्तपीठपूजां विधाय ततः स्वर्णादिनिर्मितं यन्त्रं मूर्तिं वा ताम्रपात्रे निधाय घृतेनाभ्यज्य तदुपरि दुग्धधारां जलधारां च दत्त्वा स्वच्छवस्त्रेण प्रोक्ष्य ॐ सिद्धलक्ष्मीपद्मपीठाय नमः इत्यासनमन्त्रेणासनं दत्त्वा पीठमध्ये संस्थाप्य पुनर्ध्यात्वा

मूलेनावाहनादिपंश्चोपचारैः सम्पूज्य देवीं ध्यात्वा मूलमन्त्रं जपेत्। अस्य पुरश्चरणमेकलक्षजपः। तत्तद्दशांशेन होमतर्पणमार्जनब्राह्मणभोजनानि कुर्यात्। एवं कृते मन्त्रः सिद्धो भवति। एतस्मिन्सिद्धे मन्त्रे मन्त्री प्रयोगान् साधयेत्। तथा च रौप्यदीपमादाय गोघृतेनापूर्य एकादशतन्तुभिः पुष्पवर्तिकां निक्षिप्य मूलेन दीपं समर्पयामि। इति प्रज्वाल्य पूर्वाभिमुखं स्थित्वा शर्कराया नैवेद्यं निवेद्य स्फटिकमालामादाय हृदये धारयन् देवीं ध्यात्वा मन्त्रार्थं स्मरन् त्रिसन्ध्यं मूलमन्त्रमष्टोत्तर शतं प्रतिदिनं जपेत्। जपादौ जपान्ते च स्तोत्रं पठेत्।

इससे ध्यान करके पूर्वोक्त पीठपूजा करके स्वर्णादि से निर्मित यन्त्र या मूर्ति को ताम्रपात्र में रख कर घी से उसका अभ्यङ्ग करके उस पर दूध तथा जल की धारा देकर स्वच्छ वस्त्र से उसे पोंछ कर "ॐ सिद्धलच्मी पद्मपीठाय नमः" इस आसनमन्त्र से आसन देकर पीठ के मध्य में स्थापित करके मूलमन्त्र से आवाहन से लेकर पञ्चोपचारों से पूजा करके देवी का ध्यान करके मूलमन्त्र का जप करें। इसका पुरश्चरण एक लाख जप है। उसका दशांश होम तथा तत्तद्दशांश तर्पण, मार्जन और ब्राह्मण भोजन करें। इस प्रकार करने मन्त्र सिद्ध होता है। इस मन्त्र के सिद्ध होने पर साधक प्रयोगों को सिद्ध करें और चाँदी का दीपक लेकर गोघृत से भरकर ग्यारह तन्तुओं से पुष्पवर्तिका बनाकर उस दीपक में रख दें। मूलमन्त्र से "दीप समर्पयामि" इससे जलाकर पूरब की ओर मुख करके शकर का नैवेद्य देकर स्फटिक की माला लेकर हृदय में धारण करते हुए देवी का ध्यान करके मन्त्र के अर्थ का स्मरण करते हुए प्रातः, मध्याह्न तथा सायं तीनों सन्ध्याओं में मूलमन्त्र का एक सौ आठ बार प्रतिदिन जप करें। जप के प्रारम्भ में तथा जप के अन्त में स्तोत्र का पाठ करें।

सिद्धलक्ष्मीस्तोत्र

विनियोग : ॐ अस्य श्रीसिद्धलक्ष्मीस्तोत्रमन्त्रस्य हिरण्यगर्भऋषिः अनुष्टुप्छन्दः श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वत्यो देवताः श्रीं बीजं ह्रीं शक्तिः क्लीं कीलकं मम सर्वक्लेशपीडापरिहारार्थं सर्वदुःखदारिद्र्यनाशनार्थं सर्वकार्यसिध्यर्थं च श्रीसिद्धलक्ष्मीस्तोत्रपाठे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास : ॐ हिरण्यगर्भऋषये नमः शिरसि १। अनुष्टुप्छन्दसे नमो मुखे २। श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीदेवताभ्यो नमो हृदिः ३। श्रीं बीजाय नमो गुह्ये ४। ह्रीं शक्तये नमः पादयोः ५। क्लीं कीलकाय नमो नाभौ। विनियोगाय नमः सर्वाङ्गेषु।।७।। इति ऋष्यादिन्यासः।

करन्यास : ॐ श्रीं सिद्धलक्ष्म्यै अंगुष्ठाभ्यां नमः १। ॐ ह्रीं विष्णुतेजसे तर्जनीभ्यां नमः २। ॐ क्लीं अमुतानन्दायै मध्यमाभ्यां नमः ३। ॐ श्रीं दैत्यमालिन्यै अनामिकाभ्यां नमः ४। ॐ ह्रीं तेजःप्रकाशिन्यै कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५। ॐ क्लीं ब्राह्मयै वैष्णव्यै रुद्राण्यै करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ६। इति करन्यासः।

हृदयादिषडङ्गन्यास : ॐ श्रीं सिद्धलक्ष्म्यै हृदयाय नमः १। ॐ ह्रीं विष्णुतेजसे शिरसे स्वाहा २। ॐ क्लीं अमृतानन्दायै शिखायै वषट् ३। ॐ श्रीं दैत्य मालिन्यै कवचाय हुम् ४। ॐ ह्री तेजःप्रकाशिन्यै नेत्रत्रयाय वौषट् ५। ॐ क्लीं ब्राह्मयै वैष्णव्यै रुद्राण्यै अस्त्राय फट्।।६।। इति हृदयादिषडङ्गन्यासः।

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं सिद्धलक्ष्म्यै नमः। इति मन्त्रेण तालत्रयं दिग्बन्धनं च कुर्यात्। "ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं सिद्धलक्ष्म्यै नमः" इस मन्त्र से तीन ताल द्वारा दिग्बन्धन करें।

अथ ध्यानम्।

ब्राह्मीं च वैष्णवीं भद्रां षड्भुजां च चतुर्मुखीम्। त्रिनेत्रां खड्गत्रिशूलपद्मचक्रगदा धराम्।।१।। पीताम्बरधरां देवीं नानालङ्कारभूषिताम्। तेजःपुञ्जधरीं श्रेष्ठां ध्यायेद्बाल–कुमारिकाम्।।२।।

इस प्रकार ध्यान करके स्तोत्र का पाठ करें।

ॐकारं लक्ष्मीरूपं तु विष्णुं हृदयमव्ययम् विष्णुमानन्दमव्यक्तं ह्रींकारं बीजरूपिणीम्।।१।। कलीं अमृतानन्दनीं भद्रां सदात्यानन्ददायिनीम्। श्रीं दैत्यशमनीं शक्तिं मालिनीं शत्रुमर्दिनीम्।।२।। तेजःप्रकाशिनीं देवीं वरदां शुभकारिणीम्। ब्राह्मीं च वैष्णीं रोद्रीं कालिकारूपशोभिनीम्।।३।। अकारे लक्ष्मीरूपं तु उकारे विष्णुमव्ययम्। (ध्यायेदितिशेषः।) मकारः पुरुषोऽव्यक्तो देवी प्रणव उच्यते।।४।। सूर्यकोटिप्रतीकाशं चन्द्रकोटिसमप्रभम्। तन्मध्ये निकरं सूक्ष्मं ब्रह्मरूपं व्यवस्थितम्।।५।। ॐकारं परमानन्दं सदैव सुखसुन्दरीम्। सिद्धलक्ष्मि मोक्षलक्ष्मि आद्यलक्ष्मि नमोऽस्तु ते।।६।। सर्वमङ्गलमाङ्गल्ये शिवे सवार्थसाधिके। शरण्ये त्र्यंबके गौरि नारायणि नमोऽस्तु ते। प्रथमं त्र्यंबका गौरी द्वितीयं वैष्णवी तथा।।७।। तृतीयं कमला प्रोक्ता चतुर्थं सुन्दरी तथा। पञ्चमं विष्णुशक्तिश्च षष्ठं कात्यायनी तथा।।८।। वाराहीसप्तमं चैव ह्यष्टमं हरिवल्लभा। नवमं खड्गिनी प्रोक्ता दशमं चैव देविका।।९।। एकादशं सिद्धलक्ष्मीर्द्वादशं हंसवाहिनी।

एतत्स्तोत्रवरं देव्या ये पठन्ति सदा नराः।।१०।। सर्वापद्भ्यो विमुच्यन्ते नात्र कार्या विचारणा। एकमासं द्विमासं च त्रिमासं च चतुस्तथा।।११।। पञ्चमासं च षण्मासं त्रिकालं यः सदा पठेत्। ब्राह्मणः क्लेशितो दुःखी दारिद्र्यामय पीडितः।।१२।। जन्मान्तरसहस्रोत्थैर्मुच्यते सर्वकिल्बिषैः। दरिद्रो लभते लक्ष्मीमपुत्रः पुत्रवान्भवेत्।।१३।। धन्यो यशस्वी शत्रुघ्नो वह्निचौरभयेषु च। शाकिनीभूतवेतालसर्पव्याघ्रनिपातने।।१४।। राजद्वारे सभास्थाने कारागृहनिबन्धने। ईश्वरेण कृतं स्तोत्रं प्राणिनां हितकारकम्।।१५।। स्तुवन्तु ब्राह्मणा नित्यं दारिद्र्यं न च बाधते। सर्वपापहरा लक्ष्मीः सर्वसिद्धिप्रदायिनी।।१६।।

जो मनुष्य देवी के इस स्तोत्र को सदा पढ़ते हैं वे सभी आपत्तियों से मुक्त हो जाते हैं। इसमें विचार नहीं करना चाहिये। एक महीना, दो महीना, तीन महीना, चार महीना, पाँच महीना या छः महीना तीनों सन्ध्याओं में जो सदा इस स्तोत्र को पढ़ता है, वह ब्राह्मण यदि दुःखी हो, दरिद्र हो या रोगी हो तो सभी हजारों जन्मों के पापों से मुक्त हो जाता है। दरिद्र लक्ष्मी को प्रापत करता है और पुत्ररहित पुत्रवान् हो जाता है। अग्नि और चोर का भय उपस्थित होने पर, शाकिनी, डाकिनी, भूत, बेताल, सर्प और व्याघ्र आदि जानवरों का आकमण होने पर, राजा के दरबार में, सभास्थल में, कारागृह में वह मनुष्य धन्य, यशस्वी और शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने वाला होता है। प्राणियों का हितकारक यह स्तोत्र ईश्वर द्वारा बनाया गया है। ब्राह्मण नित्य इसका पाठ करे तो दारिद्र्य की बाधा नहीं होगी। लक्ष्मी देवी सभी पापों का हरण करनेवाली और सब सिद्धियों को देने वाली हैं।

इति श्रीब्रह्मपुराणे ईश्वरविष्णुसम्वादे श्रीसिद्धलक्ष्मी
मन्त्रस्तोत्रविधानं समाप्तम्।

अथ ज्येष्ठालक्ष्मीमन्त्रप्रयोगः।

मन्त्रमहोदधि में धन की वृद्धि करनेवाला ज्येष्ठालक्ष्मी महामन्त्र इस प्रकार बताया गया है :

ऐं ह्रीं श्रीं ज्येष्ठालक्ष्मि स्वयंभुवे ह्रीं ज्येष्ठायै नमः।

यह सप्तदशाक्षर मन्त्र है।

अस्य विधानम्।

विनियोग : अस्य ज्येष्ठालक्ष्मीमन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः अष्टिश्छन्दः ज्येष्ठालक्ष्मीर्देवता ह्रीं बीजं श्रीं शक्तिः ममाभीष्टसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास : ॐ ब्रह्मऋषये नमः शिरसि १। अष्टिश्छन्दसे नमो मुखे २। ज्येष्ठालक्ष्मीदेवतायै नमः हृदि ३। ह्रीं बीजाय नमः लिङ्गे ४। श्रीं शक्तये नमः पादयोः ५। विनियोगाय नमः सर्वाङ्गेषु ६। इति ऋष्यादिन्यासः।

करन्यास : ऐं ह्रीं श्रीं अंगुष्ठाभ्यां नमः १। ज्येष्ठालक्ष्मि तर्जनीभ्यां नमः २। स्वयंभुवे मध्यमाभ्यां नमः ३। ह्रीं अनामिकाभ्यां नमः ४। ज्येष्ठायै कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५। नमः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ६। इति करन्यासः।

हृदयादिषडङ्गन्यास : ऐं ह्रीं श्रीं हृदयाय नमः १। ज्येष्ठालक्ष्मि शिरसे स्वाहा २। स्वयंभुवे शिखायै वषट् ३। ह्रीं कवचाय हुम् ४। ज्येष्ठायै नेत्रत्रयाय वौषट् ५। नमः अस्त्राय फट् ६। इति हृदयादिषडङ्गन्यासः।

मन्त्रवर्णन्यास : ॐ ऐं नमः शिरसि १। ॐ ह्रीं नमो भ्रूमध्ये २। ॐ श्रीं नमो मुखे ३। ॐ जेष्ठालक्ष्म्यै नमः हृदि ४। ॐ स्वयम्भुवे नमः नाभौ ५। ॐ ह्रीं नमः आधारे ६। ॐ ज्येष्ठायै नमः जानुनि ७। ॐ नमो नमः पादयोः ८। इति मन्त्रवर्णन्यासः।

इस प्रकार न्यास करके ध्यान करें।

अथ ध्यानम् : ॐ उद्यद्भास्करसन्निभा स्मितमुखी रक्ताम्बरालेपना सत्कुम्भं धनभाजनं सृणिमथो पाशं करैर्बिभ्रती पद्मस्था कमलेक्षणा दृढ़कुचा सौंदर्यवारान्नि–धिर्ध्यातव्या सकलाभिलाषफलदा श्रीज्येष्ठलक्ष्मीरियम्।।१।। इति ध्यायेत्।

ततः पीठादौ रचिते सर्वतोभद्रमण्डले मण्डूकादिपरतत्त्वान्तपीठदेवताः संस्थाप्य ॐ मं मण्डूकादिपरतत्त्वान्त पीठदेवताभ्यो नमः। इति पीठदेवताः सम्पूज्य नवपीठशक्तीः पूजयेत्।

इसके बाद पीठादि पर रचित सर्वतोभद्रमण्डल में मण्डूकादि परतत्वान्त पीठदेवताओं को स्थापित करके "ॐ मं मण्डूकादि परतत्वान्त पीठदेवताभ्यो नमः" इससे पीठदेवताओं की पूजा करके नव पीठशक्तियों की इस प्रकार पूजा करें:

पूर्वाद्यष्टदिक्षु ॐ लोहिताक्ष्यै नमः १। ॐ विरूपायै नमः २। ॐ कराल्यै नमः ३। ॐ नीललोहितायै नमः ४। ॐ समदायै नमः ५। ॐ वारुण्यै नमः ६। ॐ पुष्ट्यै नमः ७। ॐ अमोघायै नमः ८। मध्ये ॐ विश्वमोहिन्यै नमः ९।

इति पीठशक्तीः पूजयेत्। ततः स्वर्णादिनिर्मितं यन्त्रं मूर्तिं वा ताम्रपात्रे निधाय घृतेनाभ्यज्य तदुपरि दुग्धधारां जलधारां च दत्त्वा स्वच्छवस्त्रेण सम्प्रोक्ष्य ॐ रक्तज्येष्ठायै विद्महे नीलज्येष्ठायै धीमहि। तन्नो लक्ष्मि प्रचोदयात्। इति गायत्रीमन्त्रेण पुष्पाद्यासनं दत्त्वा पीठमध्ये संस्थाप्य प्रतिष्ठां च कृत्वा मूलेन मूर्तिं प्रकल्प्य पाद्यादिपुष्पान्तैरुपचारैः सम्पूज्य देवयाज्ञां गृहीत्वा आवरणपूजां कुर्यात्।

इस प्रकार नव पीठशक्तियों की पूजा करने के बाद स्वर्णादि से निर्मित यन्त्र या मूर्ति को ताम्रपात्र में रख कर घी से उसका अभ्यङ्ग करके उस पर दुग्धधारा और जलधारा डालकर

स्वच्छ वस्त्र से उसे पोंछकर "ॐ रक्तज्येष्ठायै विद्महे नील ज्येष्ठायै धीमहि। तन्नो लक्ष्मि प्रचोदयात्।" इस गायत्री मन्त्र से पुष्पाद्यासन देकर पीठ के मध्य में स्थापित करके प्राणप्रतिष्ठा करके, मूलमन्त्र से मूर्ति की कल्पना करके पाद्यादिपुष्पान्त उपचारों से पूजन कर देवी की आज्ञा लेकर इस प्रकार आवरण पूजा करें :

पुष्पाञ्जलिमादाय मूलमुच्चार्य ॐ संविन्मये परे देवि परामृतरसप्रिये। अनुज्ञां देहि ज्येष्ठायै परिवारर्चनाय मे।।१।। इति पठित्वा पुष्पाञ्जलिं दद्यात्। इत्याज्ञां गृहीत्वा षट्कोणकेसरेषु आग्नेयादिचतुर्षु दिक्षु मध्येदिक्षु च।

पुष्पाञ्जलि लेकर मूलमन्त्र का उच्चारण करके "ॐ संविन्मये परे देवि परामृतरसप्रिये। अनुज्ञां देहि ज्येष्ठायै परिवारर्चनाय मे।।१।।" इसे पढ़कर पुष्पाञ्जलि दें। इस प्रकार आज्ञा लेकर षट्कोण केसरों में आग्नेयादि चारों दिशाओं में और मध्य दिशा में (ज्येष्ठालक्ष्मी मन्त्र पूजन यन्त्र देखिये चित्र २६)

ऐं ह्रीं श्रीं हृदयाय नमः[१]। हृदयश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः १। इति सर्वत्र। ज्येष्ठालक्ष्मि शिरसे स्वाहा[२]। शिरःश्रीपा० २। स्वयंभुवे शिखायै वषट्[३]। शिखाश्रीपा० ३। ह्रीं कवचाय हुम्[४]। कवचश्रीपा० ४। ज्येष्ठायै नेत्रत्रयाय वौषट्[५]। नेत्रत्रयश्रीपा० ५। नमः अस्त्राय फट्[६]। अस्त्रा श्रीपा० ६।

इति षडङ्गानि पूजयेत् ततः पुष्पाञ्जलिमादाय मूलमुच्चार्यै अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले। भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम्।।१।। इति पठित्वा पुष्पाञ्जलि च दत्वा पूजितास्तर्पिताः सन्तु इति वदेत्। इति प्रथमावरणम्।।१।।

इससे षडङ्गों की पूजा करके पुष्पाञ्जलि लेकर मूलमन्त्र का उच्चारण करके "अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले। भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम्।।१।।" यह पढ़कर पुष्पाञ्जलि देकर "पूजितास्तर्पिताः सन्तु" यह कहें। इति प्रथमावरण।।१।।

ततोष्टदलेषु पूज्यपूजकयोरन्तरालं प्राची। तदनुसारेण अन्याः दिशः प्रकल्प्य प्राचीक्रमेण।

इसके बाद पूज्य और पूजक के अन्तराल को प्राची दिशा मानते हुये तदनुसार अन्य दिशाओं की कल्पना करके प्राची क्रम से :

ॐ ब्राह्मयै नमः[७] ब्राह्मीश्रीपा० १। ॐ माहेश्वर्यै नमः[८]। माहेश्वरी श्रीपा० २। ॐ कौमार्यै नमः[९]। कौमारीश्रीपा० ३। ॐ वैष्णवै नमः[१०]। वैष्णवश्रीपा० ४। ॐ वाराह्यै नमः[११]। वाराही श्रीपा० ५। ॐ इन्द्राण्यै नमः[१२]। इन्द्राणीश्रीपा० ६। ॐ चामुण्डायै नमः[१३]। चामुण्डाश्रीपा० ७। ॐ महालक्ष्म्यै नमः[१४]। महालक्ष्मीश्रीपा० ८।

इत्यष्टौ मातरः सम्पूज्य पुष्पाञ्जलिं दद्यात्। इति द्वितीयावरणम्।।२।।

इससे अष्टमाताओं की पूजा करके पुष्पाञ्जलि दें। इति द्वितीयावरण।।२।।

ततोभूपुरे पूर्वादिक्रमेणेन्द्रादिदिक्पालान् वज्राद्यायुधानि च सम्पूज्य पुष्पांजलिं दद्यात्।

इसके बाद भूपुर में पूर्वादिक्रम से इन्द्रादि दिक्पालों और वज्रादि उनके आयुधों की पूजा करके पुष्पाञ्जलि दें।

इत्यावरणपूजां कृत्वा धूपादिनमस्कारान्तं सम्पूज्य जपं कुर्यात्। अस्य पुरश्चरणं लक्षजपः। आज्याक्तमिश्रितपायसेन दशांशतो होमः। तत्तद्दशांशेन तर्पणमार्जनब्राह्मणभोजनानि कुर्यात्। एवं कृते मन्त्रः सिद्धो भवति। एतस्मिन्सिद्धे मन्त्रे मन्त्री प्रयोगान् साधयेत्।

इस प्रकार आवरण पूजा करके धूपदान से लेकर नमस्कारान्त उपचारों से पूजा करके जप करें। इसका पुरश्चरण एक लाख जप है। घी से युक्त खीर से दशांश होम करें तथा तत्तद्दशांश

तर्पण, मार्जन और ब्राह्मण भोजन करें। इस प्रकार करने से मन्त्र सिद्ध होता है। मन्त्र के सिद्ध होने पर साधक प्रयोगों को सिद्ध करें।

लक्षं जपेत्पायसेन जुहुयात्तद्दशांशतः। आज्यात्तेन यजेत्पीठे वक्ष्यमाणे महाश्रियम्।।१।।
इत्थं जपादिभिः सिद्धो मनुर्दद्यादभीप्सितम्।

एक लाख जप करके उसका दशांश घी मिश्रित खीर से होम करें और वक्ष्यमाण पीठ पर महालक्ष्मी का पूजन करें। इस प्रकार जपादि से सिद्ध मन्त्र अभीप्सित फल देता है।

इति सप्तदशाक्षरज्येष्ठालक्ष्मीमन्त्रप्रयोगः।

अथ वसुधालक्ष्मीमन्त्रप्रयोगः।

मन्त्रो यथा : ॐ ग्लौं श्रीं अन्नं मह्यन्नं मे देह्यन्नाधिपतये ममान्नं प्रदापय स्वाहा श्रीं ग्लौं ॐ। यह अट्ठाइस अक्षरों का मन्त्र है।

अस्य विधानम् :

विनियोग : अस्य वसुधासंज्ञकज्येष्ठालक्ष्मीमन्त्रस्य ब्रह्मऋषिः निचृद्गायत्रीच्छन्दः वसुधादेवता ग्लौ बीजं श्रीं शक्तिः ममाभीष्टप्राप्त्यै जपे विनियोगः

ऋष्यादिन्यास : ॐ ब्रह्मऋषये नमः शिरसि १। निचृद्गायत्रीच्छन्दसे नमो मुखे २। वसुधाश्रीदेवतायै नमो हृदि ३। ग्लौं बीजाय नमो लिङ्गे ४। श्रीं शक्तये नमः पादयोः ५। विनियोगाय नमः सर्वाङ्गेषु ६। इति ऋष्यादिन्यासः।

करन्यास : ॐ अन्नं महि ग्लां श्रीं अंगुष्ठाभ्यां नमः १। ॐ अन्नं मे देहि ग्लीं श्रीं तर्जनीभ्यां नमः २। ॐ अन्नाधिपतये ग्लूँ श्रीं मध्यमाभ्यां नमः ३। ॐ ममान्नं प्रदापय ग्लौं श्रीं अनामिकाभ्यां नमः ४। ॐ स्वाहा ग्लौं श्रीं कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५। इति करन्यासः।

पञ्चाङ्गन्यास : ॐ अन्नं महि ग्लां श्रीं हृदयाय नमः १। ॐ अन्नं मे देहि ग्लीं श्रीं शिरसे स्वाहा २। ॐ अन्नाधिपतये ग्लूं श्रीं शिखायै वषट् ३। ॐ ममान्नं प्रदापय ग्लैं श्रीं कवचाय हुम् ४। ॐ स्वाहा ग्लौं श्रीं अस्त्राय फट् ५। इति पञ्चाङ्गन्यासः।

इस प्रकार न्यास करके स्वर्णदीप में देवी का ध्यान करें :

अथ ध्यानम् :

ॐ कल्पद्रुमाधो मणिवेदिकायां समास्थिते वस्त्रविभूषणाढ्ये। भूमिश्रियौ वाञ्छितवामदक्षे सञ्चिन्तयेद्देवमुनीन्द्रवन्द्ये।।१।।

इति ध्यात्वा सर्वतोभद्रमण्डले मण्डूकादि परतत्त्वान्त पीठदेवताः संस्थाप्य ॐ मं मण्डूकादिपरतत्त्वान्तपीठदेवताभ्यो नमः। इति सम्पूज्य नवपीठशक्तीः पूजयेत्।
इससे ध्यान करके सर्वतोभद्रमण्डल में मण्डूकादि परतत्त्वान्त पीठदेवताओं को स्थापित करके "ॐ मं मण्डूकादिपरतत्त्वान्तपीठदेवताभ्यो नमः।" इससे पीठ देवताओं की पूजा करके नव पीठ शक्तियों की इस प्रकार पूजा करें :

पूर्वाद्यष्टसु दिक्षु ॐ विमलायै नमः १। ॐ मुत्कर्षिण्यै नमः २। ॐ ज्ञानायै नमः ३। ॐ क्रियायै नमः ४। ॐ योगायै नमः ५। ॐ प्रह्व्यै नमः ६। ॐ सत्यायै नमः ७। ॐ ईशानायै नमः ८। मध्ये ॐ अनुग्रहायै नमः ९।

इति पीठशक्तीः पूजयेत्। ततः स्वर्णादिनिर्मितं यन्त्रं मूर्तिं वा ताम्रपात्रे निधाय घृतेनाभ्यज्य तदुपरि दुग्धधारां जलधारां च दत्त्वा स्वच्छवस्त्रेण प्रोक्ष्य ॐ नमो भगवते विष्णवे सर्वभूतात्मसंयोगपद्मपीठात्मने नमः। इति मन्त्रेण पुष्पाद्यासनं दत्त्वा पीठमध्ये

संस्थाप्य प्रतिष्ठां च कृत्वा मूलेन मूर्तिं प्रकल्प्य पाद्यादिपुष्पान्तैरुपचारैः सम्पूज्य देव्याज्ञां गृहीत्वा आवरणपूजां कुर्यात्।

इन मन्त्रों से पीठशक्तियों की पूजा करने के बाद स्वर्णादि से बने यन्त्र या मूर्ति को ताम्रपात्र में रखकर घी से उसका अभ्यङ्ग करके उसके ऊपर दूध और जल की धारा देकर स्वच्छ वस्त्र से उसे पोंछ कर "ॐ नमो भगवते विष्णवे सर्वभूतात्मसंयोगपद्यपीठात्मने नमः।" इस मन्त्र से पुष्प और पाद्य का आसन देकर पीठ के मध्य उसे स्थापित करके उसमें प्राणप्रतिष्ठा करके मूलमन्त्र से मूर्ति की कल्पना करके पाद्यादि से पुष्पाञ्जलिदान पर्यन्त उपचारों से पूजा करके दे५ की आज्ञा लेकर इस आवरण पूजा करें (वसुधालक्ष्मी पूजन यन्त्र देखिये चित्र ३०)।

पुष्पाञ्जलिमादाय ॐ संविन्मये परे देवि परामृतरसप्रिये। अनुज्ञां देहि वसुधे परिवारार्चनाय मे।।१।। इति पठित्वा पुष्पाञ्जलि दद्यात्। इत्याज्ञां गृहीत्वा षट्कोणकेसरेषु आग्नेयादिचतुर्दिक्षु मध्येदिक्षु च।

पुष्पाञ्जलि लेकर "ॐ संविन्मये परे देवि परामृत रसप्रिये। अनुज्ञां देहि वसुधे परिवारार्चनाय मे।।१।।" इस पढ़कर पुष्पाञ्जलि दें। इस प्रकार आज्ञा लेकर षट्कोण केसरों में आग्नेयादि चारों दिशाओं और मध्य दिशा में :

ॐ अन्नं महि ग्लां श्रीं हृदयाय नमः[१]। हृदयश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः १। इति सर्वत्र। ॐ अन्नं मे देहि ग्लीं श्रीं शिरसे स्वाहा[२]। शिरः श्रीपा० २। ॐ अन्नाधिपतये ग्लूँ श्रीं शिखायै वषट्[३]। शिखाश्रीपा० ३। ॐ ममान्नं प्रदापय ग्लैं श्रीं कवचाय हुम्[४]। कवचश्रीपा० ४। ॐ स्वाहा ग्लौं श्रीं अस्त्राय फट्[५]। अस्त्रश्रीपा० ५।

इति पञ्चाङ्गानि पूजयेत्। ततः पुष्पाञ्जलिमादाय मूलमुच्चार्य : अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले। भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम्।।१।। इति पठित्वा पुष्पाञ्जलि च दत्त्वा पूजितास्तर्पिताः सन्तु इति वदेत्। इति प्रथमावरणम्।।१।।

इससे पञ्चाङ्गों का पूजन करें। इसके बाद पुष्पाञ्जलि लेकर मूलमन्त्र का उच्चारण करके "अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले। भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम्।।१।।" इसे पढ़कर पुष्पाञ्जलि देकर "पूजितास्तर्पिताः सन्तु" यह कहें। इति प्रथमावरण।।१।।

ततः पूज्यपूजकयोरन्तरालं प्राची। तदुसारेण अन्याः दिशः प्रकल्प्य प्राची क्रमेणाष्टदलेषु चतुर्दिक्षु।

इसके बाद पूज्य और पूजक के अन्तराल को प्राची दिशा मानकर तथा तदनुसार अन्य दिशाओं की कल्पना करके प्राची क्रम से अष्टदलों में चारों दिशाओं में :

ॐ पृथिव्यै नमः[७]। पृथ्वीश्रीपा० १। ॐ अग्नये नमः[८]। अग्निश्रीपा० २। ॐ जलाय नमः[९]। जलश्रीपा० ३। ॐ मारुताय नमः[१०]। मारुतश्रीपा० ४। आग्नेययादिविदिक्षु च ॐ निवृत्त्यै नमः[११]। निवृत्तिश्रीपा० ५। ॐ प्रतिष्ठायै नमः[१२]। प्रतिष्ठाश्रीपा० ६। ॐ विद्यायै नमः[१३]। विद्याश्रीपा० ७। ॐ शान्त्यै नमः[१४]। शान्तिश्रीपा० ८।

इससे आठों की पूजा करके पुष्पाञ्जलि दें। इति द्वितीयावरण।।२।।

इसके बाद अष्टदलाग्रों में प्राची क्रम से :

ॐ बलाकायै नमः[१५]। बलाकाश्रीपा० १। ॐ विमलायै नमः[१६]। विमलाश्रीपा० २। ॐ कमलायै नमः[१७]। कमलाश्रीपा० ३। ॐ वनमालायै नमः[१८]। वनमालाश्रीपा० ४। ॐ विभीषायै नमः[१९]। विभीषाश्रीपा० ५। ॐ मालिकायै नमः[२०]। मालिकाश्रीपा० ६। ॐ शाङ्कर्यै नमः[२१]। शाङ्करीश्रीपा० ७। ॐ वसुमालिकायै नमः[२२]। वसकुमालिकाश्रीपा० ८।

इससे अष्टशक्तियों की पूजा करके पुष्पाञ्जलि दें। इति तृतीयावरण।।३।।

ततो भूपूरे पूर्वादिक्रमेण इन्द्रादिदशदिक्पालान्[२३-३२] वज्राद्यायुधानि[३३-४२] च सम्पूज्य जपं कुर्यात्। अस्य पुरश्चरणं लक्षजपः। घृतान्नेन दशांशतो होमः। तत्तद्दशांशेन तर्पणमार्जनब्राह्मणभोजनानि कुर्यात्। एवं कृते मन्त्रः सिद्धो भवति। एतस्मिन्सिद्धे मन्त्रे मन्त्री प्रयोगान् साधयेत्।

इसके बाद भूपुर में पूर्वादि क्रम से इन्द्रादि दश दिक्पालों की तथा वज्र आदि उनके आयुधों की पूजा करके जप करें। इसका पुरश्चरण एक लाख जप है। जप का दशांश घी से सिक्त अन्न का होम है। होम से दशांश तर्पण और तत्तद्दशांश मार्जन तथा ब्राह्मणभोजन करें। ऐसा करने से मन्त्र सिद्ध होता है। इस मन्त्र के सिद्ध होने पर साधक प्रयोगों को सिद्ध करें।

लक्षमेकं तपेन्मन्त्रं तद्दशांशं धृताप्लुतैः। अन्नैर्हुत्त्वा यजेत्पीठे वैष्णवे वसुधाश्रियौ।।१।। इत्थं सपरिवारे यो धरालक्ष्म्यौ जपादिभिः। आराधयेत्स लभते महतीमन्नसम्पदम्।।२।। आज्याक्तैश्च तिलैर्बिल्वसमिद्भिर्जुहुयाच्छ्रिये। साज्येन पायसेनापि फलैः पत्रैश्च बिल्वजैः।।३।। जपतामुं महामन्त्रं होमः कार्यो दिनेदिने। दशसंख्यैः कुबेरस्य मनुनेध्मैर्वटोद्भवैः।।४।। होम काले कुबेरं तु चिन्तयेदग्निमध्यगम्।

एक लाख मन्त्रों का जप करें। जप का दशांश घृत से सिक्त अन्न से होम करके वैष्णव पीठ पर वसुधालक्ष्मी का पूजन करें। इस प्रकार सपरिवार जो जप आदि से वसुधालक्ष्मी का पूजन करता है वह महती अन्न सम्पदा प्राप्त करता है। घृत से सिक्त तिलों और बेल की समिधाओं से लक्ष्मी के लिए होम करना चाहिये। इस मन्त्र का जप करने वालों को प्रतिदिन घी सहित खीर, बेल के पत्रों तथा फलों से होम करना चाहिये। कुबेर के मन्त्र (ॐ वैश्रवणाय स्वाहा) से बरगद की समिधाओं द्वारा दश बार होम करें तथा होम के समय अग्नि के मध्य कुबेर का इस प्रकार ध्यान करें।

कुबेर ध्यानं यथा :

धनपूर्णं स्वर्णकुम्भं तथा रत्नकरण्डकम्।।५।। हस्ताभ्यां विप्लुतं खर्वकरपादं च तुन्दिलम्। वटाधस्ताद्रत्नपीठोपविष्टं सुस्मिताननम्। एवं कृतहुतो मन्त्री लक्ष्म्या जयति वित्तपम्।।६।।

इससे कुबेर का ध्यान करें।

इति वसुधालक्ष्म्यष्टाविंशत्यक्षर मन्त्रप्रयोगः।

लक्ष्मीकवच

अथ वक्ष्ये महेशानि कवचं सर्वकामदम्। यस्य विज्ञानमात्रेण भवेत्साक्षात्सदा शिवः।।१।। नार्चनं तस्य देवेशि मन्त्रमात्रं जपेन्नरः। स भवेत्पार्वतीपुत्रः सर्वशास्त्रपुरस्कृतः।।२।। विद्यार्थिनां सदा सेव्या धन दात्री विशेषतः। धनार्थिभिस्सदा सेव्या कमला विष्णुवल्लभा।।३।।

हे महेशानि ! मैं समस्त कामनाओं को पूर्ण करने वाला कवच तुम्हें बताऊँगा जिसके विज्ञानमात्र से मनुष्य साक्षात् शिव हो जाता है। हे देवेशि ! इसमें अर्चन नहीं है। मनुष्य मन्त्र का जप करे। वह जप के प्रभाव से पार्वतीजी का पुत्र और समस्त शास्त्रों से पुरस्कृत हो जाता है। विद्यार्थियों के लिए यह सदा सेव्य तथा विशेष रूप से धन देने वाला है। धनार्थियों को इन विष्णुवल्लभा कमला देवी की सदा सेवा करनी चाहिये।

विनियोग : अस्याश्चतुरक्षराविष्णुवनितायाः कवचस्य श्रीभगवान् शिव ऋषिरनष्टप्छन्दो वाग्भवा देवता वाग्भवं बीजं लज्जा शक्ती रमा कीलकं कामबीजात्मकं कवचं मम सुकवित्वपाण्डित्यसमृद्धिसिद्धये पाठे विनियोगः।

ऐंकारो मस्तके पातु वाग्भवा सर्वसिद्धिदा। ह्रीं पातु चक्षुषोर्मध्ये चक्षुर्युग्मे च शाङ्करी।।४।। जिह्वायां मुखवृत्ते च कर्णयार्दन्तयोर्नसि। ओष्ठाधारे दन्तपंक्तौ तालुमूले हनौ पुनः।।५।। पातु मां विष्णुवनिता लक्ष्मीः श्रीवर्णरूपिणी। कर्णयुग्मे भुजद्वन्द्वे स्तनद्वन्द्वे च पार्वती।।६।। हृदये मणिबन्धे च ग्रीवायां पार्श्वर्द्वयोः। पृष्ठदेशे तथा गुह्ये वामे च दक्षिणे तथा।।७।। उपस्थे च नितम्बे च नाभौ जङ्घाद्वये पुनः। जानुचक्रे पदद्वन्द्वे घुटिकेंगुलिमूलके।।८।। स्वधा तु प्राणशक्त्यां वा सीमान्यां मस्तके तथा। सर्वाङ्गें पातु कामेशी महादेवी समुन्नतिः।।६।। पुष्टिः पातु महा माया उत्कृष्टिः सर्वदाऽवतु। ऋद्धिः पातु सदा देवी सर्वत्र शम्भुवल्लभा।।१०।। वाग्भवा सर्वदा पातु पातु मां हरगेहिनी। रमा पातु महादेवी पातु माया स्वराट् स्वयम्।।११।। सवाङ्गे पातु मां लक्ष्मीर्विष्णुमाया सुरेश्वरी। विजया पातु भवने जया पातु सदा मम।।१२।। शिवदूती सदा पातु सुन्दरी पातु सर्वदा। भैरवी पातु सर्वत्र भेरुण्डा सर्वदाऽवतु।।१३।। त्वरिता पातु मां नित्यमुग्रतारा सदाऽवतु। पातु मां कालिका नित्यं कालरात्रिः सदाऽवतु।।१४।। नवदुर्गा सदा पान्तु कामाख्या सर्वदाऽवतु। योगिन्यः सर्वदा पान्तु मुद्राः पान्तु सदा मम।।१५।। मात्राः पान्तु सदा देव्यश्चक्रस्था योगिनीगणाः। सर्वत्र सर्वकार्येषु सर्वकर्मसु सर्वादा।।१६।। पातु मां देवदेवी च लक्ष्मीः सर्वसमृद्धिदा।

इति ते कथितं दिव्यं कवचं सर्वसिद्धये।।१७।। यत्र तत्र न वक्तव्यं यदीच्छेदात्मनो हितम्। शठाय भक्तिहीनाय निन्दकाय महेश्वरि।।१८।। न्यूनाङ्गेह्यतिरिक्ताङ्गे दर्शयेन्न कदाचन। न स्तवं दर्शयेद्दिव्यं दर्शनाच्छिवहा भवेत्।।१६।। कुलीनाय महेशाय दुर्गाभक्तिपराय च। वैष्णवाय विशुद्धाय दद्यात्कवचमुत्तमम्।।२०।। निजशिष्याय शान्ताय धनिने कुलिने तथा। दद्यात्कवचमित्युक्तं सर्वतन्त्रसमन्वितम।।२१।। शनौ मङ्गलवारे च रक्तचन्दनकैस्तथा। यावकेन लिखेन्मन्त्रं सर्वचक्रसमन्वितम्।।२२।। विलिखेत्कवचं दिव्यं स्वयम्भुकुसुमैः शुभैः। स्वशुक्रैः परशुक्रैश्च नानागन्धसमन्वितैः।।२३।। गोरोचनाकुंकुमेन रक्तचन्दनकेन वा। सुतिथौ शुभयोगे वा श्रवणायां रवेर्दिने।।२४।। अश्विन्यां कृत्तिकायां वा फाल्गुन्यां वा मघासु च। पूर्वाभाद्रपदायोगे स्वात्यां मङ्गलवासरे।।२५।। विलिखेत्प्रपठेत्स्तोत्रं शुभयोगे सुरालये। आयुष्मत्प्रीतियोगे च ब्रह्मयोगे विशेषतः।।२६।। इन्द्रयोगे शुभे योगे शुक्लयोगे तथैव च। कौलवे बालवे चैव वणिजे चैव सत्तमः।।२७।। शून्यागारे श्मशाने वा विजने च विशेषतः। कुमारीं पूजयित्वा च यजेद्देवीं सनातनीम्।।२८।। मत्स्यैर्मांसैः शाकमूलैः पूजयेत्परदेवताम्। घृताद्यैः सोमकरणैः पुष्पधूपैर्विशेषतः।।२६।। ब्राह्मणान्भोजयित्वा च पूजयेत्परमेश्वरीम्। आखेटकमुपाख्यानं तत्र कुर्याद्दिनत्रयम्।।३०।। तदा कुर्यान्महारक्षां शङ्करेण प्रभाषिताम् मारणद्वेषणादीनि लभते नात्र संशयः। स भवेत्पार्वतीपुत्रः सर्वशास्त्रपुरस्कृतः।।३१।। गुरुर्देवो हरः साक्षात्पत्नी तस्य हरप्रिया। अभेदेन यजेद्यस्तु तस्य सिद्धिरदूरतः।।३२।।

हे महेश्वरि ! यह दिव्य कवच सब सिद्धियों के लिए मैनें तुम्हें बताया है। यदि साधक अपना कल्याण चाहे तो जहाँ कहीं इसे न बतायें। शठ, भक्तिहीन, निन्दक, न्यून अङ्ग वालों और अधिक अङ्ग वालों को इसे कभी नहीं दिखाना चाहिये। स्तोत्र को किसी को नहीं दिखाना चाहिये क्योंकि दिखाने से शिव का घातक हो जाता है। कुलीन और महेश तथा दुर्गा की भक्ति में श्रद्धा रखने वाले विशुद्ध वैष्णव को, शान्त, धनी और कुलीन अपने शिष्य को यह उत्तम सभी तन्त्रों से युक्त कवच देना चाहिये। शनिवार और मङ्गलवार को रक्त चन्दन से या महावर से सभी चक्रों से युक्त दिव्य कवच को स्वयंभूकुसुम, स्ववीर्य, अन्य के वीर्य, अनेक सुगन्धियों से युक्त, गोरोचन, केसर और लाल चन्दन से उत्तम तिथि, शुभ योग अथवा रवि के दिन श्रवणा, अश्विनी, कृत्तिका, फाल्गुनी या मघा, पूर्वभाद्रपदा या स्वाति नक्षत्र में मङ्गलवार को स्वयं लिखें और मन्दिर में शुभ योग में इसका पाठ करें। आयुष्मत्प्रीतियोग में तथा विशेष रूप से ब्रह्म योग में, शुभ शुक्ल योग में, कौलव, बालव या बणिज में, शून्य घर में, श्मशान में अथवा विशेषतः एकान्त स्थान में कुमारी की पूजा करके सनातनी देवी की आराधना करें। मछली, माँस, शाक और मूल से घृत आदि से, विशेष रूप से पुष्प–धूप आदि से इस श्रेष्ठ देवता की पूजा करें। ब्राह्मणों को भोजन कराकर परमेश्वरी की पूजा करें। वहाँ पर तीन दिन तक आखेट (शिकार) की कहानी कहें। उस समय शङ्कर द्वारा कहे गये महारक्षा (कवच) का पाठ करना चाहिये। इससे साधक मारण और द्वेषण की सिद्धि प्राप्त करता है, इसमें संशय नहीं है। वह पार्वतीपुत्र और सभी शास्त्रों का ज्ञाता हो जाता है। शिवजी साक्षात् गुरु हैं, पत्नी साक्षात् हरप्रिया है। जो अभेद बुद्धि से पूजा करता है, सिद्धि उसके पास उपस्थित हो जाती है।

पठति य इह मर्त्यो नित्यमार्द्रान्तरात्मा जपफलमनुमेवं लक्ष्यते सद्विशेषम्। स भवति पदमुच्चैः सम्पदां पादनम्रक्षितिपमुकुटलक्ष्मीलक्षणानां चिराय।।३३।।

इस संसार में जो मनुष्य गद्गद अन्तरात्मा से इस प्रकार के जप फलों को देने वाले मन्त्र को इस दृष्टि से देखता है, उसके चरणों को राजाओं के मुकुटों की लक्ष्मी बहुत दिनों तक चूमने लगती हैं।

इति विश्वसारतन्त्रे लक्ष्मीकवचं समाप्तम्।

लक्ष्मीस्तोत्रम्

त्रैलोक्यपूजिते देवि कमले विष्णुवल्लभे। यथा त्वमचला कृष्णे तथा भव मयि स्थिरा।।१।। कमला चञ्चला लक्ष्मीश्चला भूतिर्हरिप्रिया। पद्मा पद्मालया सम्यगुच्चैः श्रीपद्म–धारिणी।।२।। द्वादशैतानि नामानि लक्ष्मीं सम्पूज्य यः पठेत्। स्थिरा लक्ष्मीर्भवेत्तस्य पुत्रदारादिभिः सह।।३।।

इति विश्वसारतन्त्रे लक्ष्मीस्तोत्रं समाप्तम्।

कमलाया अष्टोत्तरशतनामस्तोत्र

श्रीशिव उवाच। शतमष्टोत्तरं नाम्नां कमलाया वरानने। प्रवक्ष्याम्यतिगुह्यं हि न कदापि प्रकाशयेत्।।१।।

श्री शिवजी बोले : हे वरानने ! कमला के एक सौ आठ नाम मैं तुम्हें बताऊँगा जो अत्यन्त गोपनीय हैं। इसे कभी भी प्रकाशित नहीं करना चाहिये।

महामाया महालक्ष्मीर्महावाणी महेश्वरी। महादेवी महारात्रिर्महिषासुरमर्दिनी।।२।। कालरात्रिः कुहूः पूर्णा नन्दाऽद्या भद्रिका निशा। जया रिक्ता महाशक्तिर्देवमाता कृशोदरी।।३।। शचीन्द्राणी शक्रनुता शङ्करप्रियवल्लभा। महावराहजननी मदनोन्मथिनी मही।।४।। वैकुण्ठनाथरमणी विष्णुवक्षस्थलस्थिता। विश्वेश्वरी विश्वमाता वरदाऽभयदा शिवा।।५।। शूलिनी चक्रिणी मा च पाशिनी शङ्खधारिणी। गदिनी मुण्डमाला च कमला करुणालया।।६।। पद्माक्षधारिणी ह्यम्बा महाविष्णु प्रियङ्करी। गोलोकनाथरमणी गोलोकेश्वरपूजिता।।७।। गया गङ्गा च यमुना गोमती गरुडासना। गण्डकी सरयूस्तापी रेवा चैव पयस्विनी।।८।। नर्मदा चैव कावेरी केदारस्थलवासिनी। किशोरी केशवनुता महेन्द्रपरिवन्दिता।।६।। ब्रह्मादिदेवनिर्माणकारिणी देवपूजिता। कोटिब्रह्माण्डमध्यस्था कोटिब्रह्माण्डकारिणी।।१०।। श्रुतिरूपा श्रुतिकरी श्रुतिस्मृतिपरायणा। इन्दिरा सिन्धुतनया मातङ्गी लोकमातृका।।११।। त्रिलोकजननी तन्त्रा तन्त्रमन्त्रस्वरूपिणी। तरुणी च तमोहन्त्री मङ्गला मङ्गलायना।।१२।। मधुकैटभमथिनी शुम्भासुरविनाशिनी। निशुम्भादिहरा माता हरिशङ्करपूजिता।।१३।। सर्वदेवमयी सर्वा शरणागतपालिनी। शरण्या शम्भुवनिता सिन्धुतीरनिवासिनी।।१४।। गन्धर्वगानरसिका गीता गोविन्दवल्लभा। त्रैलोक्यपालिनी तत्त्वरूपा तारुण्यपूरिता।।१५।। चन्द्रावली चन्द्रमुखी चन्द्रिका चन्द्रपूजिता। चन्द्रा शशाङ्कभगिनी गीतवाद्यपरायणा।।१६।। सृष्टिरूपा सृष्टिकरी सृष्टिसंहारकारिणी।

इति ते कथितं देवि रमानामशताष्टकम्।।१७।। त्रिसन्ध्यं प्रयतो भूत्वा पठेदेतत्समाहितः। यंयं कामयते कामं तंतं प्राप्नोत्यसंशयम्।।१८।।

हे देवि ! मैने ये रमा के एक सौ आठ नाम तुम्हें बता दिये हैं। जो प्रातः, मध्याह्न तथा सायंकाल शान्त चित्त होकर इस स्तोत्र को पढता है वह जो–जो इच्छा करता है वह सब प्राप्त करता है।

इमं स्तवं यः पठतीह मर्त्यो वैकुण्ठपत्न्याः परमादरेण। धनाधिपाद्यैः परिवन्दितः स्यात् प्रयास्यति श्रीपदमन्तकाले।।१६।।

जो मनुष्य वैकुण्ठपत्नी के इस स्तोत्र को अत्यन्त आदर के साथ पढता है, वह राजाओं से वन्दित होकर मृत्यु के बाद विष्णुधाम को प्राप्त होता है।

इति कमलाया अष्टोत्तरशतनामस्तोत्रं सम्पूर्णम्।

लक्ष्मीसहस्त्रनामस्तोत्र

ॐ तामाह्वयामि सुभगां लक्ष्मीं त्रैलोक्यपूजिताम्। ऐह्येहि देवि पद्माक्षि पद्माकरकृतालये।।१।। आगच्छागच्छ वरदे पश्य मां स्वेन चक्षुषा। आयाह्यायाहि धर्मार्थ–काममोक्षमये शुभे।।२।। एवंविधैः स्तुतिपदैः सत्यैस्सत्यार्थसंस्तुता। कनीयसी महाभागा चन्द्रेण परमात्मना।।३।। निशाकरश्च सा देवी भ्रातरौ द्वौ पयोनिधेः। उत्पन्नमात्रौ तावास्तां शिवकेशवसंश्रितौ।।४।। सनत्कुमारस्तमृषिं समाभाष्य पुरातनम्। प्रोक्तवानितिहासं तु लक्ष्म्याः स्तोत्रमनुत्तमम्।।५।। अथेदृशान्महाघोराद्दारिद्र्यान्नरकात्कथम्। मुक्तिर्भवति लोकेऽस्मिन् दारिद्र्यं याति भस्मताम्।।६।। सनत्कुमार उवाच। पूर्वं कृतयुगे ब्रह्मा भगवान् सर्वलोककृत्। सृष्टिं नानाविधां कृत्वा पश्चाच्चिन्तामुपेयिवान्।।७।। किमाहाराः प्रजास्त्वेताः सम्भविष्यन्ति भूतले। तथैव चासान्दारिद्र्यात्कथमुत्तरणं भवेत्।।८।। दारिद्र्यान्मरणं

श्रेयस्त्विति सञ्चिन्त्य चेतसि। क्षीरोदस्योत्तरे कूले जगाम कमलोद्भवः।।६।। तत्र तीव्रं तपस्तप्त्वा कदाचित्परमेश्वरम्। ददर्श पुण्डरीकाक्षं वासदेवं जगद्गुरुम्।।१०।। सर्वज्ञं सर्वशक्तीनां सर्वावासं सनातनम् सर्वेश्वरं वासुदेवं विष्णुं लक्ष्मीपतिं प्रभुम्।।११।। सोमकोटिप्रतीकाशं क्षीरोदविमले जले। अनन्तभोगशयनं विश्रान्तं श्रीनिकेतनम्।।१२।। कोटिसूर्यप्रतीकाशं महायोगेश्वरेश्वरम्। योगनिद्रारतं श्रीशं सर्वावासं सुरेश्वरम्।।१३।। जगदुत्पत्तिसंहारस्थितिकारणकारणम्। लक्ष्म्यादिशक्तिकरणं जातमण्डलमण्डितम्।।१४।। आयुधैर्देहवद्भिश्च चक्राद्यैः परिवारितम्। दुर्निरीक्ष्यं सुरैः सिद्धैर्महायोनिशतैरपि।।१५।। आधारं सर्वशक्तीनां परं तेजः सुदुस्सहम्। प्रबुद्धं देवमीशानं दृष्ट्वा कमलसम्भवः।।१६।। शिरस्यञ्जलिमाधाय स्तोत्रं पूर्वमुवाच ह। मनोवांछितसिद्धिं त्वं पुरयस्व महेश्वर।।१७।। जितं ते पुण्डरीकाक्ष नमस्ते विश्वभावन। नमस्तेऽस्तु हृषीकेश महापुरुषपूर्वज।।१८।। सर्वेश्वर जयानन्द सर्वावास परात्पर। प्रसीद मम भक्तस्य छिंधि सन्देहजं तमः।।१६।। एवंस्तुतः स भगवान् ब्राह्मणाऽव्यक्तजन्मना। प्रसादाभिमुखः प्राह हरिर्विश्रान्तलोचनः।।२०।। श्रीभगवानुवाच। हिरण्यगर्भ तुष्टोऽस्मि ब्रूहि यत्तेऽभिवांछितम्। तद्वक्ष्यामि न सन्देहो भक्तोसि मम सुव्रत।।२१।। केशवाद्वचनं श्रुत्वा करुणाविष्टचेतनः। प्रत्युवाच महाबुद्धिर्भगवन्तं जनार्दनम्।।२२।। चतुर्विधं भवस्यास्य भूतसर्गस्य केशव। परित्राणाय मे ब्रूहि रहस्यं परमाद्भुतम्।।२३।। दारिद्र्यशमनं धन्यं मनोज्ञं पावनं परम्। सर्वेश्वर महाबुद्धे स्वरूपं भैरवं महत्।।२४।। श्रियः सर्वातिशायिन्यास्तथा ज्ञानं च शाश्वतम्। नामानि चैव मुख्यानि यानि गौणानि चाच्युत।।२५।। त्वद्वक्त्रकमलोत्थानि श्रोतुमिच्छामि तत्त्वतः। इति तस्य वचः श्रुत्वा प्रतिवाक्यमुवाच सः।।२६।। श्रीभगवानुवाच। महाविभूतिसंयुक्ता षाड्गुण्यवपुषः प्रभोः। भगवद्वासुदेवस्य नित्यं चैषाऽनपायिनी।।२७।। एकैव वर्त्ततेऽभिन्ना ज्योत्स्नेव हिमदीधितेः। सर्वशक्त्यात्मिका चैव विश्वं व्याप्य व्यवस्थिता।।२८।। सर्वैश्वर्यगुणोपेता नित्यशुद्धस्वरूपिणी। प्राणशक्तिः परा ह्येषा सर्वेषां प्राणिनां भुवि।।२६।। शक्तीनां चैव सर्वासां योनिभूता पर कला। अहं तस्याः परं नाम्नां सहस्रमिदमुत्तमम्।।३०।। शृणुष्वावहितो भूत्वा परमैश्वर्यभूतिदम्। देव्याख्यास्मृतिमात्रेण दारिद्र्यं याति भस्मताम्।।३१।। श्रीः पद्मा प्रकृतिः सत्त्वा शान्ता चिच्छक्तिरव्यया। केवला निष्कला शुद्धा व्यापिनी व्योमविग्रहा।।३२।। व्योमपद्मकृताधारा परा व्योमा मतोद्भवा। निर्व्योमा व्योममध्यस्था पंचव्योमपदाश्रिता।।३३।। अच्युता व्योमनिलया परमानन्दरूपिणी। नित्यशुद्धा नित्यतृप्ता निर्विकारा निरीक्षणा।।३४।। ज्ञानशक्तिः कर्तृशक्तिर्भोक्तृशक्तिः शिखावहा। स्नेहाभासा निरानन्दा विभूतिर्विमला चला।।३५।। अनन्ता वैष्णवी व्यक्ता विश्वानन्दा विकाशिनी। शक्तिर्विभिन्नसर्वार्तिः समुद्रपरितोषिणी।।३६।। मूर्तिः सनातनी हार्दी निस्तरङ्गा निरामया। ज्ञानज्ञेया ज्ञानगम्या ज्ञानज्ञेयविकासिनी।।३७।। स्वच्छन्दशक्तिर्गहना निष्कम्पाऽर्चिः सुनिर्मला। स्वरूपा सर्वगाऽपारा बृंहिणी सुगुणोर्जिता।।३८।। अकलङ्का निराधारा निस्सङ्कल्पा निराश्रया। असङ्कीर्णा सुशान्ता च शाश्वती भासुरी स्थिरा।।३६।। अनौपम्या निर्विकल्पा निर्यन्त्रा यन्त्रवाहिनी। अभेद्या भेदिनी भिन्ना भारती वैखरी खगा।।४०।। अग्राह्या ग्राहिका गूढ़ा गम्भीरा विश्वगोपिनी। अनिर्देश्याऽप्रतिहता निर्बीजा पावनी

परा।।४१।। अप्रतर्क्याऽपरिमिता भवभ्रान्तिविनाशिनी। एका द्विरूपा त्रिविधा असंख्याता सुरेश्वरी।।४२।। सुप्रतिष्ठा महाधात्री स्थितिर्वृद्धिर्ध्रुवा गतिः। ईश्वरी महिमा ऋद्धिः प्रमोदा उज्ज्वलोद्यमा।।४३।। अक्षया वर्द्धमाना च सुप्रकाशा विहङ्गमा। नीरजा जननी नित्या जया रोचिष्मती शुभा।।४४।। तपोनुदा च ज्वाला च सुदीप्तिश्चांशुमालिनी। अप्रमेया त्रिधा सूक्ष्मा परा निर्माणदायिनी।।४५।। अवदाता सुशुद्धा च अमोघाख्या परम्परा। सन्धानकी शुद्धविद्या सर्वभूतमहेश्वरी।।४६।। लक्ष्मीस्तुष्टिर्महाधीरा शान्तिरापूरणेन वा। अनुग्रहाशक्तिराद्या जगज्ज्येष्ठा जगद्विधिः।।४७।। सत्या प्रह्वा क्रियायोग्या ह्यपर्णाह्लादिनी शिवा। सम्पूर्णाह्लादिनी शुद्धा ज्योतिष्मत्यमतावहा।।४८।। रजोवत्यर्कप्रतिभाऽकर्षिणी कर्षिणी रसा। परा वसुमती देवी कान्तिः शान्तिर्मतिः कला।।४६।। कला कलंकरहिता विशालोद्दीपनी रतिः। सम्बोधिनी हारिणी च प्रभावा भवभूतिदा।।५०। अमृतस्यन्दिनी जीवा जननी खण्डिका स्थिरा। धूमा कलावती पूर्णा भासुरा सुमती रसा।।५१।। शुद्धा ध्वनिः सृतिः सृष्टिर्विकृतिः कृष्टिरेव च। प्रापणी प्राणदा प्रह्वा विश्वा पाण्डुरवासिनी।।५२।। अवनिर्वज्रनलिका चित्रा ब्रह्माण्डवासिनी। अनन्तरूपाऽनन्तात्माऽनन्तस्थाऽनन्तसम्भवा।।५३।। महाशक्तिः प्राणशक्तिः प्राणदात्री रतिम्भरा। महासमूहा निखिला इच्छाधारा सुखावहा।।५४।। प्रत्यक्षलक्ष्मीर्निष्कम्पा प्ररोहाबुद्धि गोचरा। नानादेहा महावर्ता बहुदेहविकासिनी।।५५।। सहस्राणी प्रधाना च न्यायवस्तुप्रकाशिका। सर्वाभिलाषपूर्णेच्छा सर्वा सर्वार्थभाषिणी।।५६।। नानास्वरूपचिद्धात्री शब्दपूर्वा पुरातना। व्यक्ताऽव्यक्ता जीवकेशा सर्वेच्छापरिपूरिता।।५७।। सङ्कल्पसिद्धा सांख्येया तत्त्वगर्भा धरावहा। भूतरूपा चित्स्वरूपा त्रिगुणा गुणगर्विता।।५८।। प्रजापतीश्वरी रौद्री सर्वाधारा सुखावहा कल्याणवाहिका कल्या कलिकल्मषनाशिनी।।५६।। निरूपोद्भिन्नसन्ताना सुयन्त्रा त्रिगुणालया। महामाया योगमाया महायोगेश्वरी प्रिया।।६०।। महास्त्री विमला कीर्तिर्जया लक्ष्मीर्निरञ्जना प्रकृतिर्भगवन्माया शक्तिर्निद्रा। यशस्करी।।६१।। चिन्ता बुद्धिर्यशः प्रज्ञा शान्तिराप्तातिवर्द्धिनी। प्रद्युम्नमाता साध्वी च सुखसौभाग्यसिद्धिदा।।६२।। काष्ठा निष्ठा प्रतिष्ठा च ज्येष्ठा श्रेष्ठा जयावहा। सर्वातिशायिनी प्रीतिर्विश्वशक्तिर्महाबला।।६३।। वरिष्ठा विजया वीरा जयन्ती विजयप्रदा। हृद्गृहा गोपिनी गुह्या गणगन्धर्वसेविता।।६४।। योगीश्वरी योगमाया योगिनी योगसिद्धिदा। महायोगेश्वरवृता योगा योगेश्वरप्रिया।।६५।। ब्रह्मेन्द्ररुद्रनमिता सुरासुरवरप्रदा। त्रिवर्त्मगा त्रिलोकस्था त्रिविक्रमपदोद्भवा।।६६।। सुतारा तारिणी तारा दुर्गा सन्तारिणी परा। सुतारिणी तारयन्ती भूरितारेश्वरप्रभा।।६७।। गुह्यविद्या यज्ञविद्या महाविद्यासुशोभिता। अध्यात्मविद्या विघ्नेशी पद्मस्था परमेष्ठिनी।।६८।। आन्वीक्षिकी त्रयी वार्त्ता दण्डनीतिर्नयात्मिका। गौरी वागीश्वरी गोप्त्री गायत्री कमलोद्भवा।।६६।। विश्वम्भरा विश्वरूपा विश्वमाता वसुप्रदा। सिद्धिः स्वाहा स्वधा स्वस्ति सुधा सर्वार्थसाधिनी।।७०।। इच्छा सृष्टिर्द्युतिर्भूतिः कीर्तिः श्रद्धा दया मतिः। श्रुतिर्मेधा धृतिर्ह्रीः श्रीर्विद्या विबुधवन्दिता।।७१।। अनसूया घृणा नीतिर्निर्वृतिः काम-धूक्करा। प्रतिज्ञासन्ततिर्भूतिर्द्यौः प्रज्ञा विश्वमानिनी।।७२।। समृतिर्वाग्विश्वजननी पश्यन्ती मध्यमा समा। सन्ध्या मेधा प्रभा भीमा सर्वाकारा सरस्वती।।७३।। कांक्षा माया महामाया मोहिनी माधवप्रिया। सौम्याभोगा महाभोगा भोगिनी भोगदायिनी।।७४।। सुधौतकनकप्रख्या

सुवर्णकमलासना। हिरण्यगर्भा सुश्रोणी हारिणी रमणी रमा।।७५।। चन्द्रा हिरण्मयी ज्योत्सना रम्या शोभा शुभावहा। त्रैलोक्यमण्डना नारी नरेश्वरार्चिता।।७६।। त्रैलोक्यसुन्दरी रामा महाविभववाहिनी। पद्मस्था पद्मनिलया पद्ममालाविभूषिता।।७७।। पद्मयुग्मधरा कान्ता दिव्याभरणभूषिता। विचित्ररत्नमुकुटा विचित्राम्बरभूषणा।।७८।। विचित्रमाल्यगन्धाढ्या विचित्रायुधवाहना। महानारायणी देवी वैष्णवी वीरवन्दिता।।७९।। कालसङ्कर्षिणी घोरा तत्त्वसङ्कर्षिणी कला। जगत्सम्पूरणी विश्वा महाविभवभूषणा।।८०।। वारुणी वरदा व्याख्या घण्टाकर्णविराजिता। नृसिंही भैरवी ब्राह्मी भास्करी व्योमचारिणी।।८१।। ऐन्द्री कामधेनुः सृष्टिः कामयोनिर्महाप्रभा। दृष्टा काम्या विश्वशक्तिर्जगत्यात्मदर्शना।।८२।। गरुडारूढहृदया चान्द्री श्रीर्मधुरानना। महोग्ररूपा वाराही नारसिंही हतासुरा।।८३।। युगान्तहुतभुग्ज्वाला कराला पिङ्गला कला। त्रैलोक्यभूषणा भीमा श्यामा त्रैलोक्यमोहिनी।।८४।। महोत्कटा महारक्ता महाचण्डा महासना। शङ्खिनी लेखिनी स्वस्था लिखिता खेचरेश्वरी।।८५।। भद्रकाली चैव वीरा कौमारी भवमालिनी। कल्याणी कामधुग्ज्वालामुखी चोत्पलमालिका।।८६।। बालिका धनदा सूर्या हृदयोत्पलमालिका। अजिता वर्षिणी रीतिर्भरुण्डा गरुडासना।।८७।। वैश्वानरी महामाया महाकाली विभीषणा। महामन्दारविभवा शिवानन्दा रतिप्रिया।।८८।। उद्रीतिः पद्म माला च धमवेगा विभावनी। सत्क्रिया देवसेना च हिरण्यरजताश्रया।।८९।। सहसावर्तमाना च हस्तिनादप्रबोधिनी। हिरण्यपद्मवर्णा च हरिभद्रा सुदुर्द्धरा।।९०।। सूर्या हिरण्यप्रकटसदृशी हेममालिनी। पद्मानना नित्य पुष्टा देवमाताऽमृतोद्भवा।।९१।। महाधना च या शृङ्गी कार्दमी कम्बुकन्धरा। आदित्यवर्णा चन्द्राभा गन्धद्वारा दुरासदा।।९२।। वरार्चिता वरारोहा वरेण्या विष्णुवल्लभा। कल्याणी वरदा वामा वामेशी विन्ध्यवासिनी।।९३।। योगनिद्रा योगरता देवकी कामरूपिणी। कंसविद्राविणी दुर्गा कौमारी कौशिकी क्षमा।।९४।। कात्यायनी कालरात्रिर्निशितृप्ता सुदुर्जया। विरूपाक्षी विशालाक्षी भक्तानां परिरक्षिणी।।९५।। बहुरूपा स्वरूपा च विरूपा रूपवर्जिता। घण्टानिनादबहुला जीमूतध्वनिनिःस्वना।।९६।। महादेवेन्द्रमथिनी भ्रुकुटीकुटिलानना। सत्योपयाचिता चैका कौबेरी ब्रह्मचारिणी।।९७।। आर्या यशोदासुतदा धर्मकामार्थमोक्षदा। दारिद्र्यदुःखशमनी घोरदुर्गार्तिनाशिनी।।९८।। भक्तार्तिशमनी भव्या भवभर्गापहारिणी। क्षीराब्धितनया पद्म कमला धरणीधरा।।९९।।रुक्मिणी रोहिणी सीता सत्यभामा यशस्विनी। प्रज्ञाधाराऽमिता–बुद्धिर्वेदमाता यशोवती।।१००।। समाधिर्भावना मैत्री करुणा भक्तवत्सला। अंतर्वेदी दक्षिणा च ब्रह्मचर्यपरागतिः।।१०१।। दीक्षा वीक्षा परीक्षा च समीक्षा वीरत्वसला। अम्बिका सुरभिः सिद्धा सिद्धविद्या–धरार्चिता।।१०२।। सुदीप्ता लेलिहाना च कराला विश्वपूरका। विश्वसंहारिणी दीप्तिस्तापनी ताण्डवप्रिया।।१०३।। उद्भवा विरजा राज्ञी तापनी विन्दुमालिनी। क्षीरधारासुप्रभावा लोकमाता सुवर्चसा।।१०४।। हव्यगर्भा चाज्यगर्भा जुह्वतो यज्ञसम्भवा। आप्यायनी पावनी च दहनी दहनाश्रया।।१०५।। मातृका माधवी मुच्या मोक्षलक्ष्मीर्महर्द्धिदा। सर्वकामप्रदा भद्रा सुभद्रा सर्वमङ्गला।।१०६।। श्वेता सुशुक्लवसना शुक्लमाल्यानुलेपना। हंसा हीनकरी हंसी हृद्या हृत्यकमलालया।।१०७।। सितातपत्रा सुश्रोणी पद्मपत्रायते क्षणा। सावित्री सत्यसङ्कल्पा कामदा कामकामिनी।।१०८।। दर्शनीया

दृशा स्पृश्या सेव्या वराङ्गना। भोगप्रिया भोगवती भोगीन्द्रशयनासना।।१०६।। आर्द्रा पुष्करिणी पुण्या पावनी पापसूदनी। श्रीमती च शुभाकारा परमैश्वर्यभूतिदा।।११०।। अचिन्त्यानन्तविभवा भवभावविभावनी। निश्रेणिः सर्वदेहस्था सर्वभूतनमस्कृता।।१११।। बला बलाधिका देवी गौतमी गोकुलालया। तोषणी पूर्णचन्द्राभा एकानन्दा शतानना।।११२।। उद्याननगरद्वारहर्म्योपवनवासिनी। कूष्माण्डीदारुणा चण्डा किराती नन्दनालया।।११३।। कालायना कालगम्या भयदा भयनाशिनी। सौदामिनी मेघरवा दैत्यदानवमर्दिनी।।११४।। जगन्माता भयकरी भूतधात्री सुदुर्लभा। काश्यपी शुभदाना च वनमाला शुभा वरा।।११५।। धन्या धन्येश्वरी धन्या रत्नदा वसुवर्द्धिनी। गान्धर्वी रेवती गंगा शकुनी विमलानना।।११६।। इडा शान्तिकरी चैव तामसी कमलालया। आज्यपा वज्रकौमारी सोमपा कुसुमाश्रया।।११७।। जगत्प्रिया च सरथा दुर्जया खगवाहना। मनोभवा कामचारा सिद्धचारणसेविता।।११८।। व्योमलक्ष्मीर्महालक्ष्मीस्तेजोलक्ष्मीः सुजाज्वला। रसलक्ष्मीर्जगद्योनिर्गन्धलक्ष्मीर्वनाश्रया।।११६।। श्रवणा श्रावणा नेत्रा रसनाप्राणचारिणी। विरिञ्चिमाता विभवा वरवारिजवाहना।।१२०।। वीर्या वीरेश्वरी वन्द्या विशोका वसुवर्द्धिनी। अनाहता कुण्डलिनी नलिनी वनवासिनी।।१२१।। गान्धारिणीन्द्रनमिता सुरेन्द्रनमिता सती। सर्वमङ्गलमाङ्गल्या सर्वकामसमृद्धिदा।।१२२।। सर्वानन्दा महानन्दा सत्कीर्तिः सिद्धसेविता। सिनीवाली कुहू राका अमा चानुमतिर्द्युतिः।।१२३।। अरुन्धती वसुमती भार्गवी वास्तु देवता। मायूरी वज्रवेताली वज्रहस्ता वरानना।।१२४।। अनघा धरणिर्धीरा धमनी मणिभूषणा। राजश्रीरूपसंहिता ब्रह्मश्रीर्ब्रह्मवन्दिता।।१२५।। जयश्रीर्जयदा ज्ञेया सर्गश्रीः स्वर्गतिः सताम्। सुपुष्पा पुष्पनिलया फलश्रीर्निष्कलप्रिया।।१२६।। धनुर्लक्ष्मीस्त्वमिलिता परक्रोधनिवारिणी। कद्रूर्द्धनायुः कपिला सुरसा सुरमोहिनी।।१२७।। महाश्वेता महानीला महामूर्तिर्विषापहा। सुप्रभा ज्वालिनी दीप्तिस्तृप्तिर्व्याप्तिः प्रभाकरी।।१२८।। तेजोवती पद्मबोधा मदलेखारुणावती। रत्ना रत्नावलीभूता शतधामा शतापहा।।१२६।। त्रिगुणा घोषिणी रक्ष्या नर्दिनी घोषवर्जिता। साध्याऽदितिर्दितिर्देवी मृगवाहा मृगाङ्कगा।।१३०।। चित्रनीलोत्पलगता वृषरत्नाकराश्रया। हिरण्यरजतद्वन्द्वा शङ्खभद्रासनस्थिता।।१३१।। गोमूत्रगोमयक्षीरदधिसर्पिर्जलाश्रया। मरीचिश्चीरवसाना पूर्णा चन्द्रार्कविष्टरा।।१३२।। सुसूक्ष्मा निर्वृतिस्थूला निवृत्तारातिरेव च। मरीचिज्वालिनी धूम्रा हव्यवाहा हिरण्यदा।।१३३।। दायिनी कालिनी सिद्धिः शोषिणी सम्प्रबोधिनी। भास्वरा संहतिस्तीक्ष्णा प्रचण्डज्वलनोज्ज्वला।।१३४।। साङ्गा प्रचण्डा दीप्ता च वैद्युतिः सुमहाद्युतिः। कपिला नीररक्ता च सुषुम्ना विस्फुलिङ्गिनी।।१३५।। अर्चिष्मती रिपुहरा दीर्घा धूमावली जरा। सम्पूर्णमण्डला पूषा स्रंसिनी सुमनोहरा।।१३६।। जया पुष्टिकरी च्छाया मानसा हृदयोज्ज्वला। सुवर्णकारिणी श्रेष्ठा मृतसञ्जीवनी रणे।।१३७।। विशल्यकरणी शुभ्रा सन्धिनी परमौषधिः। ब्रह्मिष्ठा ब्रह्मसहिता ऐन्दवी रत्नसम्भवा।।१३८।। विद्युत्प्रभा बिन्दुमती त्रिस्वभावगुणाम्बिका। नित्योदिता नित्यदृष्टा नित्यकामकरीषिणी।।१३६।। पद्माङ्का वज्रचिह्ना च वक्रदण्डा विभासिनी। विदेहपूजिता कन्या माया विजयवाहिनी।।१४०।। मानिनी मङ्गला मान्या मानिनी मानदायिनी। विश्वेश्वरी गणवती मण्डला मण्डलेश्वरी।।१४१।। हरिप्रिया भौमसुता मनोज्ञा मतिदायिनी। प्रत्यंगिरा सोमगुप्ता मनोभिज्ञा वदन्मतिः।।१४२।।

यशोधरा रत्नमाला कृष्णा त्रैलोक्यबन्धिनी। अमृताधारिणी हर्षा विनता वल्लकी शची।।१४३।। संकल्पा भामिनी मिश्रा कादम्बर्यामृता प्रभा। आगता निर्गता वज्रा सुहिता सहिताऽक्षता।।१४४।। सर्वार्थसाधनकरी धातुर्द्धारणिकामला। करुणाधारसम्भूता कमलाक्षी शशिप्रिया।।१४५।। सौम्यरूपा महादीप्ता महाज्वाला विकासिनी। माला काञ्चनमाला च सद्वज्रा कनकप्रभा।।१४६।। प्रक्रियापरमा योक्त्री क्षोभिका च सुखोदया। विजृम्भणा च वज्राख्या शृङ्खला कमलेक्षणा।।१४७।। जयंकरी मधुमती हरिता शशिनी शिवा। मूलप्रकृतिरीशानी योगमाता मनोजवा।।१४८।। धर्मोदया भानुमती सर्वाभासा सुखावहा। धुरन्धरा च बाला च धर्मसेव्या तथागता।।१४६।। सुकुमारा सौम्यमुखी सौम्यसम्बोधनोत्तमा। सुमुखी सर्वतोभद्र गुह्य शक्तिर्गुहालया।।१५०।। हलायुधा च कावीरा सर्वशास्त्रसुधारिणी। व्योमशक्तिर्महादेहा व्योमगा मगुमन्मयी।।१५१।। गङ्गा वितस्ता यमुना चन्द्रभागा सरस्वती। तिलोत्तमोर्वशी रम्भा स्वामिनी सुरसुन्दरी।।१५२।। बाणप्रहरणा बाला बिम्बोष्ठी चारुहासिनी। ककुद्मिनी चारुपृष्ठा दृष्टादृष्टफलप्रदा।।१५३।। काम्यचरी च काम्या च कामाचारविहारिणी। हिमशैलेन्द्रसंकाशा गजेन्द्रवरवाहना।।१५४।। अशेषसुखसौभाग्यसम्पदां योनिरुत्तमा। सर्वोत्कृष्टा सर्वमयी सर्वा सर्वेश्वरप्रिया।।१५५।। सर्वाङ्गयोनिः साऽव्यक्ता सम्प्रधानेश्वरेश्वरी। विष्णुवक्षःस्थलगता किमतः परमुच्यते।।१५६।। परा निर्महिमा देवी हरिवक्षःस्थला श्रया। सा देवी पापहन्त्री च सान्निध्यं कुरुतान्मम।।१५७।। इति नाम्नां सहस्रं तु लक्ष्म्याः प्रोक्तं शुभावहम्। परावरेण भेदेन मुख्यगौणैन भागतः।।१५८।। यश्चैतत्कीर्तयेन्नित्यं शृणु याद्वपि पद्मज। शुचिः समाहितो भूत्वा भक्तिश्रद्धासमन्वितः।।१५६।। श्रीनिवासं समभ्यर्च्य पुष्पधूपाबुलेपनैः। भोगैश्च मधुपर्काद्यैर्यथाशक्ति जगद्गुरुम्।।१६०।। तत्पार्श्वस्थां श्रियं देवीं सम्पूज्य श्रीधर प्रियाम्। ततो नामसहस्रेण तोषयेत्परमेश्वरीम्।।१६१।।

नानारत्नावलीस्तोत्रमिदं यः सततं पठेत्। प्रसादाभिमुखी लक्ष्मीः सर्वं तस्मै प्रयच्छति।।१६२।। यस्या लक्ष्म्याश्च सम्भूताः शक्तयो विश्वगाः सदा। कारणत्वं न तिष्ठन्ति जगत्यस्मिश्चराचरे।।१६३।। तस्मीत्प्रीता जगन्माता श्रीर्यस्याच्युतवल्लभा। सुप्रीता शक्तयस्तस्य सिद्धिमिष्टां दिशन्ति हि।।१६४।। एक एव जगत्स्वामी शक्तिमानच्युतः प्रभुः। तदंशशक्तिमन्तोऽन्ये ब्रह्मेशानादयो यथा।।१६५।। तथैवका परा शक्तिश्श्रीस्तस्य करुणाश्रया। ज्ञानादिषाड्गुण्यमयी या प्रोक्ता प्रकृतिः परा।।१६६।। एकैकशक्तिश्श्रीस्तस्या द्वितीयात्मनि वर्त्तते। परा परेशी सर्वेशी सर्वाकारा सनातनी।।१६७।। अनन्तना–मधेया च शक्ति चक्रस्य नायिका। जगच्चराचरमिदं सर्वं व्याप्य व्यवस्थिता।।१६८।। तस्मादेकैव परमा श्रीर्ज्ञेया विश्वरूपिणी। सौम्या सौम्येन रूपेण संस्थिता नटजीववत्।।१६६।। योयो जगति पुंभावः स विष्णुरिति निश्चयः। याया तु नारीभावस्था तत्र लक्ष्मीर्व्यवस्थिता।।१७०।। प्रकृतेः पुरुषाच्चान्यस्तृतीयो नैव विद्यते। अथ किं बहुनोक्तेन नरनारीमयो हरिः।।१७१।। अनेकभेदभिन्नस्तु क्रियते परमेश्वरः। महाविभूतिं दयितां ये स्तुवन्त्यच्युतप्रियाम्।।१७२।। ते प्राप्नुवन्ति परमां लक्ष्मीं संशुद्धचेतसः। पद्मयोनिरिदं प्राप्य पठंस्तोत्रमिदं क्रमात्।।१७३।। दिव्यमष्टगुणैश्वर्यं तत्प्रसादाच्च लब्धवान्। सकामानाञ्च फलदामकामानाञ्च मोक्षदाम्।।१७४।। पुस्तकाख्यां भयत्रात्रीं सितवस्त्रां त्रिलोचनाम्। महापद्मनिषण्णां तां लक्ष्मीमजरतां नमः।।१७५।।

करयुगलगृहीतं पूर्णकुम्भं दधाना क्वचिदमलगतस्था शङ्खपद्माक्षपाणिः। क्वचिदपि दयिताङ्गे चामरव्यग्रहस्ता क्वचिदपि सृणिपाशं बिभ्रती हेमकान्तिः।।१७६।।

जो इस नाना रत्नावली स्तोत्र का सदा पाठ करता है उसे लक्ष्मी प्रसन्न होकर सब कुछ देती हैं। संसार की समस्त शक्तियाँ जिस लक्ष्मी से उत्पन्न होती हैं, वे इस चराचर जगत् में कारण रूप से नहीं रहतीं। इस लिए जगन्माता विष्णुवल्लभा लक्ष्मी जिस पर प्रसन्न हो जाती हैं, उसे समस्त शक्तियाँ निश्चित रूप से इष्ट सिद्धि प्रदान करती हैं। एक ही शक्तिमान् विष्णुभगवान् जगत्स्वामी हैं।। उनके अंशभूत ब्रह्मा शिव आदि शक्तिमान् है। उसी प्रकार एक ही करुणाश्रया श्री शक्ति है, जो कि ज्ञान आदि षाड्गुण्यमयी और परा प्रकृति कही गयी है। एक ही श्री शक्ति है। दूसरी शक्तियाँ उसी में निहित हैं। वह परा, परेशी, सर्वेशी, सर्वकारा, सनातनी आदि अनन्त नामों वाली शक्ति–चक्र की नायिका है और इस चराचर जगत् में व्याप्त होकर व्यवस्थित है। इसलिये एक ही विश्वरूपिणी श्री को जानना चाहिए। नट जीव के समान सौम्या सौम्यरूप से संस्थित हैं। संसार में जो–जो पुम्भाव है, वह सब विष्णु स्वरूप है। जो–जो नारी भाव हैं उन सब में लक्ष्मी व्यवस्थित हैं। प्रकृति तथा पुरुष से भिन्न तीसरा कुछ भी नहीं है। अधिक कहने से क्या लाभ ? हरि नरनारीमय हैं। परमेश्वर अनेक भेदों से भिन्न किया जाता है। जो विष्णुप्रिया पत्नी महाविभूति लक्ष्मी जी की स्तुति करते हैं, वे शुद्ध चित्त वाले परम लक्ष्मी को प्राप्त होते हैं। ब्रह्मा जी ने इस स्तोत्र को पाकर इसका क्रम से पाठ करते हुए उनके प्रसाद से अष्टगुणों से युक्त दिव्य ऐश्वर्य को प्राप्त किया। सकाम स्तुति करने वालों को फल देने वाली तथा निष्काम स्तुति करने वालों को मुक्ति देने वाली, पुस्तकाख्या, भयत्रात्री, सितवस्त्रा, त्रिलोचना, महापद्मस्थिता, अजरा लक्ष्मी को मेरा नमस्कार हो। करयुगलगृहीत पूर्ण कुम्भ को धारण किये हुये, क्वचित् अमलगतस्था, शङ्खपद्माक्षपाणि, क्वचित् पति के अङ्ग पर चामर डुलाती हुई क्वचित् सृणिपाश धारण किये हुये स्वर्ण कान्तिमयी लक्ष्मी जी सुशोभित हैं।।१६२–१७६।।

इति ब्रह्मपुराणे काश्मीरवर्णने हिरण्यगर्भहृदये सर्वकामप्रदायकं
पुरुषोत्तमप्रोक्तं लक्ष्मीसहस्रनामस्तोत्रं समाप्तम्।

लक्ष्मीहृदयस्तोत्र

विनियोग : आद्यादिश्रीमहालक्ष्मीहृदयमालामन्त्रस्य भार्गव ऋषिः आद्यादि–श्रीमहालक्ष्मीर्देवता अनुष्टुबादिनानाछन्दांसि श्रीं बीजं ह्रीं शक्तिः ऐं कीलकम् आद्यादिमहालक्ष्मीप्रसादसिद्ध्यर्थं पाठे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास : ॐ भार्गवऋषये नमः शिरसि १। ॐ अनुष्टुबादिनानाच्छन्दोभ्यो नमो मुखे २। ॐ आद्यादिश्रीमहालक्ष्म्यै देवतायै नमो हृदये ३। ॐ श्रीं बीजाय नमो गुह्ये ४। ॐ ह्रीं शक्तये नमः पादयोः ५। ॐ ऐं कीलकाय नमो नाभौ ६। ॐ विनियोगाय नमः सर्वाङ्गेषु ७। इति ऋष्यादिन्यासः।

करन्यास : ॐ श्रीं अंगुष्ठाभ्यां नमः १। ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः २। ॐ ऐं मध्यमाभ्यां नमः ३। ॐ श्रीं अनामिकाभ्यां नमः ४। ॐ ह्रीं कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५। ॐ ऐं करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ६। इति करन्यासः।

हृदयादिषडङ्गन्यास : ॐ श्रीं हृदयाय नमः १। ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा २। ॐ ऐं शिखायै वषट् ३। ॐ श्रीं कवचाय हुम् ४। ॐ ह्रीं नेत्रत्रयाय वौषट् ५। ॐ ऐं अस्त्राय फट् ६। ॐ श्रीं ह्रीं ऐं इति दिग्बन्धः। इति हृदयादिन्यासः।

अथ ध्यानम् :

हस्तद्वयेन कमले धारयन्तीं स्वलीलया। हारनूपुरसंयुक्तां लक्ष्मीं देवीं विचिन्तये।।१।।

इति ध्यात्वा सम्पूज्य ॐ शङ्खचक्रगदाहस्ते शुभ्रवर्णे सुवासिनि। मम देहि वरं लक्ष्मि सर्वसिद्धिप्रदायिनि।।२।। इति सम्प्रार्थ्य। ॐ श्रीं ह्रीं ऐं महालक्ष्म्यै कमलधारिण्यै सिंहवाहिन्यै स्वाहा। इति मन्त्रं जपित्वा पुनः पूर्ववद्धृदयादिषडङ्गन्यासं कृत्वा स्तोत्रं पठेत्।

इस प्रकार ध्यान और पूजा करके "ॐ शंखचक्रगदाहस्ते शुभ्रवर्णे सुवासिनि मम देहि वरं लक्ष्मि सर्वसिद्धिप्रदायिनि।" इससे प्रार्थना करके "ॐ ह्रीं ऐं महालक्ष्म्यै कमलधारिण्यै सिंहवाहिन्यै स्वाहा" इस मन्त्र को जप कर पुनः पूर्ववत् हृदयादि षडङ्गन्यास करके स्तोत्र का पाठ करना चाहिये। यथा :

वन्दे लक्ष्मीं परशिवमयीं शुद्धजाम्बूनदाभां तेजोरूपां कनकवसनां सर्वभूषोज्ज्वलाङ्गीम्। बीजापूरं कनककलशं हेमपद्मं दधानामाद्यां शक्तिं सकलजननीं विष्णुवामाङ्कसंस्थाम्।।१।। श्रीमत्सौभाग्यजननीं स्तौमि लक्ष्मीं सनातनीम्। सर्वकामफलावाप्तिसाधनैकसुखादहाम्।।२।। स्मरामि नित्यं देवेशि त्वया प्रेरितमानसाः। त्वदाज्ञां शिरसा धृत्वा भजामि परमेश्वरीम्।।३।। समस्तसम्पत्सुखदां महाश्रियं समस्तसौभाग्यकरीं महाश्रियम्। समस्तकल्याणकरीं महाश्रियं भजाम्यहं ज्ञानकरीं महाश्रियम्।।४।। विज्ञानसम्पत्सुखदां सनातनीं विचित्रवाग्भूतिकरीं मनोहराम्। अनन्तसामोदसुखप्रदायिनीं नमाम्यहं भूतिकरीं हरिप्रियाम्।।५।। समस्त भूतान्तरसंस्थिता त्वं समस्त भोक्त्रीश्वरि विश्वरूपे। तन्नास्ति यत्त्वद्व्यतिरिक्तवस्तु त्वत्पादपद्मं प्रणमाम्यहं श्रीः।।६।। दारिद्र्यदुःखौघतमोपहंत्री त्वत्पादपद्मं मयि सन्निधत्स्व। दीनार्तिविच्छेदनहेतुभूतैः कृपाकटाक्षैरभिषिञ्च मां श्रीः।।७।। अम्ब प्रसीद करुणा–सुधयार्द्रदृष्ट्या मां त्वत्कृपाद्रविणगेहमिमंकुरुष्व। आलोकय प्रणतहृद्गतशोकहंत्री त्वत्पादपद्मयुगलं प्रणमाम्यहं श्रीः।।८।। शान्त्यै नमोस्तु शरणागतरक्षणायै कान्त्यै नमोस्तु कमनीयगुणाश्रयायै। क्षान्त्यै नमोस्तु दुरितक्षयकारणायै धात्र्यै नमोऽस्तु धनधान्य–समृद्धिदायै।।९।। शक्त्यै नमोऽस्तु शशिशेखरसंस्तुतायै रत्यै नमोऽस्तु रजनीकरसोदरायै। भक्त्यै नमोऽस्तु भवसागरतारकायै मत्यै नमोऽस्तु मधुसूदनवल्लभायै।।१०।। लक्ष्म्यै नमोऽस्तु शुभलक्षणलक्षितायै सिद्ध्यै नमोऽस्तु शिवसिद्धसुपूजितायै। धृत्यै नमोऽस्त्वमितदुर्गतिभञ्जनायै गत्यै नमोऽस्तु वरसद्गतिदायिकायै।।११।। देव्यै नमोऽस्तु दिवि देवगणार्चितायै भूत्यै नमोऽस्तु भवनार्तिविनाशनायै। दात्र्यै नमोऽस्तु धरणीधरवल्लभायै पुष्ट्यै नमोःस्तु पुरुषोत्तमवल्लभायै।।१२।। सुतीव्रदारिद्र्यविदुःखहन्त्र्यै नमोऽस्तु ते सर्वभयापहन्त्र्यै। श्रीविष्णुवक्षःस्थलसंस्थितायै नमोनमस्सर्वविभूतिदायै।।१३।। जयतुजयतु लक्ष्मीर्लक्षणालंकृताङ्गी जयतुजयतु पद्मा पद्मसद्माभिवन्द्या। जयतुजयतु विद्या विष्णु वामाङ्कसंस्था ज़यतुजयतु सम्यक् सर्वसम्पत्करी श्रीः।।१४।। जयतुजयतु देवी देवसङ्घाभिपूज्या जयतुजयतु भद्रा भार्गवी भाग्यरूपा। जयतुजयतु नित्या निर्मलज्ञानवेद्या जयतुजयतु सत्या सर्वभूतान्तरस्था।।१५।। जयतुजयतु रम्या रत्नगर्भान्तरस्था जयतुजयतु शुद्धा शुद्धजाम्बूनदाभा जयतुजयतु कान्ता कान्तिमद्भासिताङ्गी जयतुजयतु शान्ता शीघ्रमागच्छ सौम्ये।।१६।। यस्याः कलाद्याः कमलोद्भवाद्या रुद्राश्च शक्रप्रमुखाश्च देवाः।

जीवन्ति सर्वा अपि शक्तयस्ताः प्रभुत्वमाप्ताः परमायुषस्ते।।१७।। लिलेख निटिले विधिर्मम लिपिं विसृज्यान्तरं त्वया विलिखितव्यमेतदिति तत्फलप्राप्तये। तदन्तरफले स्फुटं कमलवासिनी श्रीरमां समर्पय समुद्रिकां सकलभाग्य संसूचिकाम्।।१८।। कलया ते यथा देवि जीवन्ति सचराचराः। तथा सम्पत्करे लक्ष्मि सर्वदा सम्प्रसीद मे।।१६।। यथा विष्णुर्ध्रुवे नित्यं स्वकलां संन्यवेशयत्। तथैव स्वकलां लक्ष्मि मयि सम्यक् समर्पय।।२०।। सर्वसौख्यप्रदे देवि भक्तानामभयप्रदे। अचलां कुरु यत्नेन कलां मयि निवेशिताम्।।२१।। मुदास्तां मद्भाले परमपदलक्ष्मीः स्फुटकला सदा वैकुण्ठश्रीर्निवसतु कला मे नयनयोः। वसेत्सत्ये लोके मम् वचसि लक्ष्मीवरकला श्रियः श्वेतद्वीपे निवसतु कला मे स्वकरयोः।।२२।। तावन्नित्यं ममाङ्गेषु क्षीराब्धौ श्रीकला वसेत्। सूर्यचन्द्रमसौ यावद्यावल्लक्ष्मीपतिः श्रियाः।।२३।। सर्वमंगलसंम्पूर्णा सर्वैश्वर्यसमन्विता। आद्यादिश्री महालक्ष्मि त्वत्कला मयि तिष्ठतु।।२४।। अज्ञानतिमिरं हन्तुं शुद्धज्ञानप्रकाशिका। सर्वैश्वर्यप्रदा मेस्तु त्वत्कला मयि संस्थिता।।२५।। अलक्ष्मीं हरतु क्षिप्रं तमः सूर्यप्रभा यथा। वितनोतु मम श्रेयस्त्वत्कला मयि संस्थिता।।२६।। ऐश्वर्यमंगलोत्पत्तिस्त्वत्कलायान्निधीयते। मयि तस्मात्कृतार्थोऽस्मि पात्रमस्मि स्थितेस्तव।।२७।। भवदावेशभाग्यार्हो भाग्यवानस्मि भार्गवि। त्वत्प्रसादात्पवित्रोऽहं लोकमातर्नमोऽस्तु ते।।२८।। पुनासि मां त्वं कलयैव यस्मादतः समागच्छ ममाग्रतस्त्वम्। परम्पदं श्रीर्भव सुप्रसन्ना मय्यच्युते न प्रविशादिलक्ष्मि।।२६।। श्रीवैकुण्ठस्थिते लक्ष्मि समागच्छ ममाग्रतः। नारायणेन सह मां कृपादृष्ट्याऽवलोकय।।३०।। सत्यलोकस्थिते लक्ष्मि त्वं ममागच्छ सन्निधिम्। वासुदेवेन सहिता प्रसीद वरदा भव।।३१।। श्वेतद्वीपस्थिते लक्ष्मि शीघ्रमागच्छ सुव्रते। विष्णुना सहिते देवि जगन्मातः प्रसीद मे।।३२।। क्षीराम्बुधिस्थिते लक्ष्मि समागच्छ समाधवे। त्वकृपा-दृष्टिसुधया सततं मां विलोकय।।३३।। रत्नगर्भस्थिते लक्ष्मि परिपूर्णे हिरण्मये। समागच्छ समागच्छ स्थित्वाऽऽशु पुरतो मम।।३४।। स्थिरा भव महालक्ष्मि निश्चला भव निर्मले। प्रसन्ने कमले देवि प्रसन्नहृदया भव।।३५।। श्रीधरे श्रीमहाभूते त्वदन्तःस्थं महानिधिम्। शीघ्रमुद्धृत्य परतः प्रदर्शय समर्पय।।३६।। वसुन्धरे श्रीवसुधे वसुदोग्ध्रि कृपामये। त्वत्कुक्षिगतसर्वस्वं शीघ्रं मे संप्रदर्शय।।३७।। विष्णुप्रिये रत्नगर्भे समस्तफलदे शिवे। त्वद्गर्भगतहेमादीन् सम्प्रदर्शय दर्शय।।३८।। रसातलगते लक्ष्मि शीघ्रमागच्छ मे पुरः। न जाने परमं रूपं मातर्मे संप्रदर्शय।।३६।। आविर्भव मनोवेगाच्छीघ्रमागच्छ मे पुरः। मा वत्स भैरिहेत्युक्त्वा कामं गौरिव रक्ष माम्।।४०।। देवि शीघ्रं समागच्छ धरणीगर्भसंस्थिते। मातस्त्वद्भृत्यभृत्योऽहं मृगये त्वा कुतूहलात्।।४१।। उत्तिष्ठ जागृहि त्वं मे समुत्तिष्ठसुजागृहि। अक्षयान्हेमकलशान् सुवर्णेन सुपूरितान्।।४२।। निक्षेपान्मे समाकृष्य समुद्धृत्य ममाग्रतः। समुन्नतानना भूत्वा समाधेहि धरान्तरात्।।४३।। मत्सन्निधिं समागच्छ मदाहितकृपारसात्। प्रसीद श्रेयसान्दोग्ध्रि लक्ष्मि मे नयनाग्रतः।।४४।। अत्रोपविश लक्ष्मि त्वं स्थिरा भव हिरण्मये। सुस्थिरा भव संप्रीत्या प्रसीद वरदा भव।।४५।। आनीय त्वं तथा देवि निधीन्मे सम्प्रदर्शय। अद्य क्षणेन सहसा दत्त्वा संरक्ष मां सदा।।४६।। मयि तिष्ठ तथा नित्यं यथेन्द्रादिषु तिष्ठसि। अभयं कुरु मे देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते।।४७।। समागच्छ महालक्ष्मि शुद्धजाम्बूनदप्रभे।

प्रसीद पुरतः स्थित्वा प्रणतं मां विलोकय।।४८।। भुवङ्गता भासि लक्ष्मि यत्रयत्र हिरण्मयी। तत्रतत्र स्थिता त्वं मे तव रूपं प्रदर्शय।।४९।। क्रीडते बहुधा भूमौ परिपूर्णहिरण्मये। मम मूर्द्धनि ते हस्तमविलम्बितमर्पय।।५०।। फलद्भाग्योदये लक्ष्मि समस्तपुरवासिनि। प्रसीद मे महालक्ष्मि परिपूर्णमनोरथे।।५१।। अयोध्यादिषु सर्वेषु नगरेषु समास्थिते। वैभवै- र्विविधैर्युक्ता समागच्छ बलान्विते।।५२।। समागच्छ समागच्छ ममाग्रे भव सुस्थिरा। करुणारसनिष्पन्दनेत्रद्वयविलासिनी।।५३।। सन्निधत्स्व महालक्ष्मि त्वत्पाणिं मम मस्तके। करुणा सुधया मां त्वमभिषिञ्च स्थिरीकुरु।।५४।। सर्वराजगृहे लक्ष्मि समागच्छ मुदान्विते। स्थित्वाशु पुरतो मेऽद्य प्रसादेनाभयं कुरु।।।५५।। सादरं मस्तके हस्तं मम त्वं कृपयार्पय। सर्वराजगृहे लक्ष्मि त्वत्काला मयि तिष्ठतु।।५६।।आद्यादिश्रीमहालक्ष्मि विष्णुवामांकसंस्थिते। प्रत्यक्षं कुरु मे रूपं रक्ष मां शरणागतम्।।५७।। प्रसीद मे महालक्ष्मि सुप्रसीद महाशिवे। अचला भव संप्रीत्या सुस्थिरा भव मद्गृहे।।५८।। यावत्तिष्ठन्ति देवाश्च यावत्त्वन्नाम तिष्ठति। यावद्विष्णुश्च यावत्त्वं तावत्कुरु कृपां मयि।।५९।। चान्द्री कला यथा शुक्ले वर्द्धते सा दिनेदिने। तथा दया ते मय्येव वर्द्धतामभिवर्द्धताम्।।६०।। यथा वैकुण्ठनगरे यथा वै क्षीरसागरे। तथा मद्भवने तिष्ठ स्थिरा श्रीविष्णुना सह।।६१।। योगिनां हृदये नित्यं यथा तिष्ठसि विष्णुना। तथा मद्भवने तिष्ठ स्थिरा श्रीविष्णुना सह।।६२।। नारायणस्य हृदये भवती यथास्ते नारायणोपि तव हृत्कमले यथाऽऽस्ते। नारायणस्त्वमपि नित्यमुभौ तथैव तौ तिष्ठतां हृदि ममापि दयावति श्रीः।।६३।। विज्ञानवृद्धिं हृदये कुरु श्रीः सौभाग्यवृद्धिं कुरु मे गृहे श्रीः दयासुवृद्धिं कुरुतां मयि श्रीः सुवर्णवृद्धिं कुरु मे गृहे श्रीः।।६४।। न मां त्यजेथाः श्रितकल्पवल्लि सद्भक्तचिन्तामणिकामधेनो। विश्वस्य मातर्भव सुप्रसन्ना गृहे कलत्रेषु च पुत्रवर्गे।।६५।। आद्यादिमाये त्वमजाण्डबीजं त्वमेव साकारनिराकृतिस्त्वम्। त्वया धृताश्चाब्जभवाण्ड सङ्घाश्चित्रं चरितं तव देवि विष्णोः।।६६।। ब्रह्मरुद्रादयो देवा वेदाश्चापि न शक्नुयुः। महिमानं तव स्तोतुं मन्दोऽहं शुक्नुयां कथम्।।६७।। अम्ब त्वद्वत्सवाक्यानि सूक्तासूक्तानि यानि च। तानि स्वीकुरु सर्वज्ञे दयालुत्वेन सादरम्।।६८।। भवतीं शरणं गत्वा कृतार्थाः स्युः पुरातनाः। इति सञ्चिन्त्य मनसा त्वामहं शरणं व्रजे।।६९।। अनन्ता नित्यसुखिनस्त्वद्भक्तास्त्वत्परायणाः। इति वेदप्रमाणाद्धि देवि त्वां शरणं व्रजे।।७०।। तव प्रतिज्ञा मद्भक्ता न नश्यन्तीत्यपि क्वचित्। इति सञ्चिन्त्य सञ्चिन्त्य प्राणान्सन्धारयाम्यहम्।।७१।। त्वदधीनस्त्वहं मातस्त्वत्कृपा मयि विद्यते। यावत्सम्पूर्णकामः स्यात्तावद्देहि दयानिधे।।७२।। क्षणमात्रं न शक्नोमि जीवितुं त्वत्कृपां विना। न जीवन्तीह जलजा जलं त्यक्त्वा जलग्रहाः।।७३।। यथा हि पुत्रवात्सल्याज्जननी प्रस्नुतस्तनी। वत्सं त्वरितमागत्य सम्प्रीणयति वत्सला।।७४।। यदि स्यां तव पुत्रोऽहं माता त्वं यदि मामकी। दयापयोधरस्तन्यसुधाभिरभिषिञ्च माम्।।७५।। मृग्यो न गुणलेशोऽपि मयि दोषैकमन्दिरे। पांसूनां वृष्टिबिन्दूनां दोषाणाञ्च न मे मितिः।।७६।। पापिनामहमेवाग्रयो दयालूनां त्वमग्रणीः। दयनीयो मदन्योऽस्ति तव कोऽत्र जगत्त्रये।।७७।। विधिनाहं न सृष्टश्चेन्न स्यात्तव दयालुता। आमयो वा न सृष्टश्चेदौषधस्य वृथोदयः।।७८।। कृपा मदग्रजा किं ते अहं किं वा तदग्रजः। विचार्य देहि मे वित्तं तव देवि दयानिधे।।७९।। माता पिता त्वं गुरुसद्गतिः

श्रीस्त्वमेव सञ्जीवनहेतुभूता। अन्यत्र मन्ये जगदेकनाथे त्वमेव सर्वं मम देवि सत्ये।।८०।। आद्यादिलक्ष्मीर्भव सुप्रसन्ना विशुद्धविज्ञानसुखैकदोग्ध्री। अज्ञानहन्त्री त्रिगुणातिरिक्ता प्रज्ञाननेत्री भव सुप्रसन्ना।।८१।। अशेषवाग्जाड्यमलापहन्त्री नवंनवं स्पष्टसुवाक्प्रदायिनी। ममेह जिह्वाग्रसुरङ्गनर्त्तकी भव प्रसन्ना वदने च मे श्रीः।।८२।। समस्तसम्पत्सुविराजमाना समस्ततेजश्चयभासमाना। विष्णुप्रिये त्वं भव दीप्यमाना वाग्देवता मे नयने प्रसन्ना।।८३।। सर्वप्रदर्शे सकलार्थदे त्वं प्रभासुलावण्यदयाप्रदोग्ध्री। सुवर्णदे त्वं सुमुखी भव श्रीर्हिरण्मयी मे नयने प्रसन्ना।।८४।। सर्वार्थदा सर्वजगत्प्रसूतिः सर्वेश्वरी सर्वभयापहन्त्री। सर्वोन्नता त्वं सुमुखी भव श्रीर्हिरण्मयी मे नयने प्रसन्ना।।८५।। समस्तविघ्नौघविनाशकारिणी समस्तभक्तोद्धरणे विचक्षणा। अनन्तसौभाग्यसुखप्रदायिनी हिरण्मयी मे नयने प्रसन्ना।।८६।। देवि प्रसीद दयनीयतमाय मह्यं देवाधिनाथभवदेवगणाधिवन्द्ये। मातस्तथैव भव सन्निहिता दृशोर्मे पत्या समं मम मुखे भव सुप्रसन्ना।।८७।। मा वत्स भैरभयदानकरोऽर्पितस्ते मौलौ ममेति मम दीनदयानुकम्पे। मातः समर्पय मुदा करुणा कटाक्षं माङ्गल्यबीजमिह नः सृजः जन्म मातः।।८८।। कटाक्ष इह कामधुक्तव मनस्तु चिन्तामणिः करः सुरतरुः सदा नवनिधि स्त्वमेवेन्दिरे। भवे तव दयारसो मम रसायनं चान्वहं मुखं तव कलानिधिर्विविधवाञ्छितार्थप्रदम्।।८९।। यथा रसस्पर्शनतोऽयसोपि सुवर्णता स्यात्कमले तथा ते। कटाक्षसंस्पर्शनतो जनानाम मंगलानामपि मंगलं त्वम्।।९०।। देहीति नास्तीति वचः प्रवेशाद्भीतो रमे त्वां शरणं प्रपद्ये। अतः सदाऽस्मिन्नभयप्रदा त्वं सहैव पत्या मयि सन्निधेहि।।९१।। कल्पद्रुमेण मणिना सहिता सुरम्या श्रीस्ते कलामहि रसेन रसायनेन। आस्तां यतो मम शिरः करदृष्टिपादस्पृष्टाः सुवर्णवपुषः स्थिरजङ्गमाः स्युः।।९२।। आद्यादिविष्णोः स्थिरधर्म्मपत्नी त्वमेव पत्या मयि सन्निधेहि। आद्यादिलक्ष्मि त्वदनुग्रहेण पदेपदे मे निधिदर्शनम् स्यात्।।९३।। आद्यादिलक्ष्मी हृदयं पठेद्यः स राज्यलक्ष्मीमचलां तनोति। महादरिद्रोऽपि भवेद्धनाढ्यस्तदन्वये श्रीः स्थिरतां प्रयाति।।९४।। अस्य स्मरणमात्रेण तुष्टा स्याद्विष्णुवल्लभा। तस्याभीष्टं ददात्याशु तं पालयति पुत्रवत्।।९५।। इदं रहस्यं हृदयं सर्वकामफलप्रदम्। जपः पञ्चसहस्रं तु पुरश्चरणमुच्यते।।९६।। त्रिकालमेककालं वा नरो भक्तिसमन्वितः। यः पठेच्छृणुयाद्वापि स याति परमां श्रियम्।।९७।। महालक्ष्मीं समुद्दिश्य निशि भार्गववासरे। इदं श्रीहृदयम् जप्त्वा पञ्चवारं धनी भवेत्।।९८।। अनेन हृदयेनान्नं गर्भिण्या अभिमन्त्रितम्। ददाति तत्कुले पुत्रो जायते श्रीपतिः स्वयम्।।९९।। नरेण वाऽथवा नार्य्या लक्ष्मीहृदयमन्त्रिते। जले पीते च तद्वंशे मन्दभाग्यो न जायते।।१००।। य आश्विने मासि च शुक्लपक्ष रमोत्सवे सन्निहिते सुभक्त्या। पठेत्तथैकोत्तरवारवृद्ध्या लभेत्स सौवर्णमयीं सुवृष्टिम्।।१०१।। य एकभक्तोऽन्वहमेकवर्षं विशुद्धधीः सप्ततिवारजापी स मन्दभाग्योपि रमाकटाक्षाद्भवेत्सहस्राक्षशताधिकश्रीः।।१०२।। श्रीशांघ्रिभक्तिं हरिदासदास्यं प्रसन्नमन्त्रार्थदृढैकनिष्ठाम्। गुरोः स्मृतिं निर्मलबोधबुद्धिं प्रदेहि मातः परमं पदं श्रियम् ।।१०३।। पृथ्वीपतित्वं पुरुषोत्तमत्वं विभूतिवासं विविधार्थसिद्धिम्। सम्पूर्णकीर्तिं बहुवर्षभोगं प्रदेहि मे लक्ष्मि पुनः पुनस्त्वम्।।१०४।। वादार्थसिद्धिं जनवश्यताञ्च वयःस्थिरत्वं ललनासुभोगम्। पौत्रादिलब्धिं सकलार्थसिद्धिं प्रदेहि मे भार्गवि

जन्मजन्मनि।।१०५।। अथ शिरोबीजम्। ॐ यं हं कं लं पं श्रीम्।।१०६।। ध्यायेल्लक्ष्मीं प्रहसितमुखीं कोटिबालार्कभासं विद्युद्वर्णाम्बरवरधरां भूषणाढ्यां सुशोभाम्। बीजापूरं सरसिजयुगं बिभ्रतीं स्वर्णपात्रं भर्त्रा युक्तां मुहुरभयदा मह्यमप्यच्युतश्री।।१०७।। मह्यातिगुह्यगोप्त्री त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम्। सिद्धिर्भवतु मे देवि त्वत्प्रसादान्मयि स्थिरा।।१०८।।

इति श्रीअथर्वणरहस्ये लक्ष्मीहृदयस्तोत्रं सम्पूर्णम्।

लक्ष्मीसूक्त

ॐ हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्णरजतस्रजाम्। चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो ममावह।।१।। ताम्म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्। यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम्।।२।। अश्वपूर्णां रथमध्यां हस्तिनादप्रमोदिनीम्। श्रियन्देवीमुपह्वये श्रीर्मा देवीर्जुषताम्।।३।। कांसोस्मि तां हिरण्यप्राकरामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम्। पद्मे स्थितां पद्मवर्णां तामिहोपह्वये श्रियम्।।४।। चान्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं श्रियं लोके देवजुष्टामुदाराम्। तां पद्मनेमिं शरणमहं प्रपद्ये अलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणोमि।।५।। आदित्यवर्णे तपसोधिजातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथ बिल्वः। तस्य फलानि तपसानुदन्तु मायान्तरायाश्च बाह्या अलक्ष्मीः।।६।। उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह। प्रादुर्भूतोसुराष्ट्रेऽस्मिन्कीर्तिं मृद्धिं ददातु मे।।७।। क्षुत्पिपासामला ज्येष्ठा अलक्ष्मीर्नाशयाम्यहम्। अभूतिमसमृद्धिं च सर्वान्निर्गुद मे गृहात्।।८।। गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टाङ्करोषिणीम्। ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम्।।९।। मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि। पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः।।१०।। कर्दमेन प्रजा भूता मयि सम्भ्रमकर्दम। श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम्।।११।। आपः सृजन्तु स्निग्धानि चिक्लीतं वस मे गृहे। निच देवोम्मातरं श्रियं वासय मे कुले।।१२।। आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम्। सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो ममावह।।१३।। आर्द्रां यः करणीं यष्टिं पिङ्गलां पद्ममालिनीम्। चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो ममावह।।१४।। ताम्म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्। यस्यां हिरण्यं प्रभूतं गावो दास्योश्वान्विन्देयं पुरुषानहम्।।१५।। यः शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहुयादाज्यमन्वहम्। श्रियः पञ्चदशर्चं च श्रीकामः सततं जपेत्।।१६।।

इति श्रीसूक्तम्।

इति श्रीमन्त्रमहार्णवे द्वितीयखण्डे लक्ष्मीतन्त्रे त्रयोदशस्तरङ्गः।।१३।।

चतुर्दश तरङ्ग

कुमारीतन्त्र

[1]रुद्रयामलोत्तरखण्डीयषष्ठपटले।

अथ वर्षभेदेन कुमारीभेदः।

एकवर्षा भवेत्सन्ध्या द्विवर्षा च सरस्वती। त्रिवर्षा च त्रिधामूर्तिश्चतुर्वर्षा च कालिका।।१।। सुभगा पञ्चवर्षा तु षड्वर्षा च भवेदुमा। सप्तभिर्भिल्लिनी साक्षादष्टवर्षा तु कुब्जिका।।२।। नवभिः कालसन्दर्भा दशभिश्चापराजिता। एकादशे तु रुद्राणी द्वादशाब्दे तु भैरवी।।३।। त्रयोदशे महालक्ष्मीर्द्विसप्ता पीठनायिका। क्षेत्रज्ञा पञ्चदशाभिः षोडशे चाम्बिका मता।।४।। एवं क्रमेण संगृह्य यावत्पुष्पं न जायते। प्रतिपदादिपूर्णान्तं वृद्धिभेदेन पूजयेत्।।५।।

रुद्रयामल के उत्तर खण्ड के षष्ट पटल में वर्षभेद से कुमारीभेद का इस प्रकार वर्णन है : एक वर्ष की कुमारी सन्ध्या और दो वर्ष की सरस्वती कहलाती हैं। तीन वर्ष की त्रिधामूर्ति और चार वर्ष की कालिका कहलाती हैं। पाँच वर्ष की सुभगा और छः वर्ष की उमा कहलाती हैं। सात वर्ष की भिल्लिनी और आठ वर्ष की साक्षात् कुब्जिका कहलाती हैं। ग्यारह वर्ष की रुद्राणी तथा बारह वर्ष की भैरवी कहलाती हैं। तेरह वर्ष की महालक्ष्मी और चौदह वर्ष की पीठनायिका कहलाती हैं। पन्द्रह वर्ष की क्षेत्रज्ञा और सोलह वर्ष की अम्बिका कहलाती हैं। इस प्रकार क्रम से संग्रह करके, जब तक उनमें पुष्प न उत्पन्न हो, तब तक प्रंतिपदा से लेकर पूर्णिमापर्यन्त वृद्धिभेद से पूजा करें।

विश्वसारे तु : अष्टवर्षा तु सा कन्या भवेद्गौरी वरानने। नववर्षा रोहिणी सा दशवर्षा तु कन्यका।।६।। अत ऊर्ध्वं महामाया भवेत्सैव रजस्वला। आरभ्य द्वादशाब्दच्च चावद्विंशतिसंख्यकम्।।७।। सुकुमारी च सा प्रोक्ता सर्वतन्त्रसमन्विता। या पाषाणधातूनां तेजोरूपेण संस्थिता ।।८।। जीवजन्तुषु देवेशि किं वक्तव्यमतः परम्। यत्र नास्ति महामाया तत्र किञ्चिन्न विद्यते।।९।।

विश्वसार तन्त्र के अनुसार, हे वरानने! वह कुमारी आठ वर्ष में गौरी हो जाती है। वहीं नव वर्ष में रोहिणी तथा दश वर्ष में कन्यका कहलाती है। इसके बाद वह महामाया हो जाती है और वही रजस्वला कहलाती है। बारह वर्ष से बीस वर्ष तक उसे सब तन्त्रों में सुकुमारी कहा गया है, जो पाषाण धातुओं के तेजोरूप में स्थित है। हे देवि! समस्त जीव–जन्तुओं में यही स्थिति है। इससे अधिक क्या कहा जा सकता है। जहाँ पर महामाया नहीं है, वहाँ कुछ भी नहीं है।

कुब्जिकातन्त्रे सप्तमपटले तु विशेषः पञ्चमाब्दात्समारभ्य यावद्द्वादशवार्षिकी। कुमारी सा भवेद्देवी निजरूपप्रकाशिनी।।१०।। षड्वर्षां च समारभ्य यावच्च नववार्षिकी।

---

१ बृहन्नीलतन्त्रेपि : एकवर्षेत्यादि सर्वं एवमेव केवलं द्विसप्ता नायिका स्मृता इति भेदः।

तावच्चैव महेशानि साधकाभीष्टसिद्धये।।११।। अष्टवर्षां समारभ्य यावत्त्रयोदशब्दिकी। कुलजां तां विजानीयात्तत्र पूजां समाचरेत्।।१२।। दशवर्षां समारभ्य यावत्षोडशवार्षिकी। युवतीं तां विजानीयाद्देवतान्तां विचिन्तयेत्।।१३।।

कुब्जिका तन्त्र के सप्तम पटल में यह विशेष है : पाँच वर्ष से लेकर बारह वर्ष तक की कन्या, हे देवि ! अपने रूप को प्रकाशित करने वाली कुमारी कहलाती है। छह वर्ष से लेकर नव वर्ष तक की कन्या, हे महेशानि ! साधक की अभीष्टसिद्धि के लिए उपयुक्त होती है। आठ वर्ष से लेकर तेरह वर्ष की अवस्था तक की कन्या कुलजा कहलाती है और उसमें पूजा करनी चाहिये। दश वर्ष से लेकर सोलह वर्ष तक अवस्था वाली युवती कहलाती है। उसे देवता के समान समझना चाहिये।

यामले तु विशेषः : द्वितीयवत्सरादूर्ध्वं यावत्स्यादष्टमाब्दकम्। तावज्जप्त्वा पूजयित्वा कन्यां सुन्दरमोहिनीम्।।१४।।

यामल में इस प्रकार कुछ विशेष कहा गया है : दूसरे वर्ष से ऊपर जब तक आठ वर्ष तक की हो तब तक सुन्दर मोहिनी कन्या की जप और पूजा करनी चाहिये।

अथ कुमारीणां वर्णभेदो यथा।

रुद्रयामले उत्तरखण्डे सप्तमपटले :

नटीकन्यां हीनकन्यां तथा कापालिकन्यकाम्। रजकस्यापि कन्यां च तथा नापितकन्यकाम।।१५।। गोपालकन्यकाञ्चैव ब्राह्मणस्यापि कन्यकाम्। शूद्रकन्यां वैद्यकन्यां तथा वैश्यस्य कन्यकाम्।।१६।। चण्डालकन्यकां वापि यत्र कुत्राश्रमे स्थिताम्। सुहृद्वर्गस्य कन्यां च समानीय प्रयत्नतः।।१७।।

रुद्रयामल के उत्तर खण्ड के सातवें पटल में कुमारियों का वर्णभेद इस प्रकार वर्णितहै :नटी की कन्या, हीन जाति की कन्या, कापालिक की कन्या, धोबी की कन्या, नाई की कन्या, गोपालक की कन्या, ब्राह्मण की कन्या, शूद्र की कन्या, वैश्य की कन्या, वैद्य की कन्या और चाण्डाल की कन्या, चाहे जिस किसी आश्रम में स्थित हो, और सुहृद्वर्ग की कन्या : इनमें से किसी भी कन्या को प्रयत्नपूर्वक लायें।

योगिनीतन्त्रे : तस्मात्तां पूजयेद्बालां सर्वजातिसमुद्भवाम्। जाति भेदो न कर्तव्यः कुमारीपूजने शिवे।।१८।। जातिभेदान्महेशानि नरकान्तर्निवर्तते। विचिकित्सापरो मन्त्री ध्रुवं स पातकी भवेत्।।१९।। देवीबुद्ध्या महाभक्तस्तस्मात्तां परिपूजयेत्। सर्वविद्यास्वरूपा हि कुमारी नात्र संशयः।।२०।। यदि भाग्यवशाद्देवि वेश्याकुलसमुद्भवाम। कुमारीं लभते कान्ते सर्वस्वेनापि साधकः।।२१।। यत्नतः पूजयेत्तां तु स्वर्णरौप्यादिभिर्मुदा। तदा तस्य महासिद्धिर्जायते नात्र संशयः।।२२।।

योगिनी तन्त्र के अनुसार : इसलिये सब जातियों में उत्पन्न कन्याओं की पूजा करनी चाहिये। हे शिवे, कुमारीपूजन में जातिभेद नहीं करना चाहिय। हे महेशानि ! जातिभेद करने साधक नरक में जाता है। शङ्का में पड़ा हुआ मन्त्रसाधक निश्चित रूप से पातकी होता है। इसलिए देवीबुद्धि से कुमारी का पूजन करना चाहिये। कुमारी समस्त विद्यास्वरूपा है। इसमें कोई संशय नहीं है। हे देवि ! यदि भाग्य से वेश्या–कुलोत्पन्न कोई कुमारी सर्वस्व देकर भी मिल जाय तो साधक को यत्नपूर्वक स्वर्ण, रौप्य आदि देकर प्रसन्न होकर उसकी पूजा करनी चाहिये। तब साधक को महासिद्धि की प्राप्ति होती है, इसमें कोई संशय नहीं है।

अथ कुमारीदानक्रमफलम्।

विवाहयेत्स्वयं कन्यां ब्रह्महत्या विनश्यति। यो यश्च पुण्यकाले तु कन्यादानं समापयेत्।।२३।। भुक्तिमुक्तिफलं तस्य सौभाग्यं सर्वसम्पदः। रुद्रलोके वसेन्नित्यं त्रिनेत्रो भगवान्हरः।।२४।। तीर्थकोटिसहस्राणि अश्वमेधशतानि च। तत्फलं लभते मर्त्यो यस्तु कन्यां विवाहयेत्।।२५।। वालुकाः सागरे ज्ञेयास्तावदब्दसहस्रकम्। एकैकं कुलमुद्धृत्य रुद्रलोके महीयते।।२६।। तत्तदिष्टदेवतायाः प्रीतये तुष्टये सुधीः। कन्यादानं समाहृत्य मुक्तिमाप्नोति भैरव।।२७।। तत्तज्जातीयकन्यायास्तत्तद्बुद्ध्या च साधकः। विभाव्य शिवरूपत्वं सम्प्रदानीयकन्यके।।२८।। पूर्णरूपं शिवं ध्यात्वा वरं सर्वाङ्गसुन्दरम्। तेजोमयं यशः कान्तं कालभैरवरूपिणम्।।२९।। बटुकेशं महादेवं वरयेत्साधकाग्रणीः।

कन्या का स्वयं विवाह कराना चाहिए। जो पुण्यकाल में कन्यादान करता है उसका ब्रह्महत्या का पाप नष्ट हो जाता है। उसको भोग, मोक्ष सब प्राप्त होता है। उसे सौभाग्य और सारी सम्पत्तियाँ प्राप्त होती है। वह रुद्र लोक में त्रिनेत्र शिव के रूप में नित्य निवास करता है। जो कन्या का विवाह कराता है, वह करोड़ों तीर्थों और हजारों अश्वमेधों का फल प्राप्त करता है। बालू के सागर में जितने बालू के कण हैं, उतने वर्षों तक अपने प्रत्येक कुल का उद्धार करके रुद्र–लोक में शोभा पाता है। तत्तदिष्ट देवता की प्रसन्नता के लिए बुद्धिमान् साधक, हे भैरव, कन्यादान करके मुक्ति प्राप्त करता है। तत्तज्जाति की कन्याओं को उस उस बुद्धि से कन्या में शिवरूपत्व की भावना करके साधक विवाहनीय कन्या में सर्वाङ्गसुन्दर, तेजोमय यशस्वी, काल भैरवरूपी, पूर्ण शिव का ध्यान करके बटुकेश महादेव से वर माँगे।

बालारूपाञ्च त्रैलाक्यसुन्दरीं वरवर्णिनीम्।।३०।। नानालंकारनम्राङ्गीं भद्रविद्या प्रकाशिनीम्। चारुहास्यां महानन्दहृदयां शुभदां शुभाम्।।३१।। ध्यात्वा द्वादशपत्राब्जे पूर्णचन्द्रनिभाननाम्। सम्प्रदानं समानीय तत्तन्मन्त्रेण दापयेत्।।३२।।

बारह पंखड़ियों वाले कमल पर बैठी बालारूप, त्रैलोक्यसुन्दरी, वरवर्णिनी, नाना अलंकारों से सुशोभित, भद्र विद्याओं को प्रकाशित करने वाली, चारुहासिनी, महानन्दहृदया, शुभदा, शुभा, पूर्ण चन्द्रमुखी देवी का ध्यान करके जिस कुलकुमारी को देना हो, उसे लाकर मन्त्र से प्रदान करें।

अथ कुमारीपूजाप्रयोगः :

पूजादिनात्पूर्वदिने गंधपुष्पाक्षतादिभिर्मूलेन भगवति कुमारि पूजार्थं त्वं मया निमन्त्रिताऽसि मां कृतार्थयेति निमन्त्र्य प्रातराहूय प्रदक्षिणीकृत्योद्वर्तनाद्यैः स्नापयित्वा गंधतैलेन शरीरं संस्कुर्यात्। केशान् परिष्कृत्य ललाटे सिन्दूरं नयनयोः कज्जलं सर्वाङ्गे चन्दनं दत्त्वा वस्त्रालंकारैराभूष्य पादौ प्रक्षाल्य अष्टदलपीठोपरि समावेश्य ताम्बूलेन मुखं संशोध्य देशकालौ स्मृत्वाऽमुकफलप्राप्तयेमुककर्मण्यमुकदेव्याः प्रीतये कुमारीणां पूजनं करिष्ये। इति संकल्प्य न्यासान कुर्यात्।

अथ कुमारीपूजाप्रयोग : पूजादिन से पूर्व दिन गन्ध, पुष्प, अक्षत आदि के द्वारा मूलमन्त्र से 'भगवति कुमारि पूजार्थं त्वं मया निमन्त्रितासि मां कृतार्थय' इस प्रकार निमन्त्रण देकर प्रातः बुलाकर उसकी प्रदक्षिणा करके उद्वर्तन आदि से स्नान कराकर तेल से शरीर का संस्कार करें। केशों को परिष्कृत करके, ललाट में सिंदूर, आँखों में काजल तथा सर्वाङ्ग में चन्दन लगाकर वस्त्रालङ्कारों से आभूषित कर पादप्रक्षालन करके अष्टदल पीठ पर उसे बैठाकर ताम्बूल से मुख

शुद्ध करके देशकाल का स्मरण करके "अमुक फल प्राप्तयेऽमुककर्मण्यमुकदेव्याः प्रीतये कुमारीणां पूजनं करिष्ये" ऐसां संकल्प करके इस प्रकार न्यास करें।

हृदयादिषडङ्गन्यास : ॐ क्लां कुलकुमारिके हृदयाय नमः।।१।। ॐ क्लीं कुलकुमारिके शिरसे स्वाहा।।२।। ॐ क्लूँ कुलकुमारिके शिखायै वषट् ३। ॐ क्लैं कुलकुमारिके कवचाय हुम् ४। ॐ क्लौं कुलकुमारिके नेत्रत्रयाय वौषट् ५। ॐ क्लः कुलकुमारिके अस्त्राय फट् ६। इति हृदयादिषडङ्गन्यासः।

इसी प्रकार करन्यास भी करें। तदनन्तर ध्यान करें।

अथ ध्यानम् :

ॐ शंखकुन्देन्दुधवलां द्विभुजां वरदाभयाम्। चन्द्रमध्यमहाम्भोज हावभाव-विराजिताम्।।१।। बालरूपां च त्रैलोक्यसुन्दरीं वरवर्णिनीम्। नानालङ्कारनम्राङ्गीम्भद्र-विद्याप्रकाशिनीम्।।२।। चारुहास्यां महानन्दहृदयां शुभदां शुभाम्।।३।।

एवं ध्यात्वाऽत्मशिरसि करं दत्त्वा मानसोपचारैः सम्पूज्य गन्धादिपूजनं कुर्यात्। तथा चः ऐं ह्रीं श्रीं हूँ हसौः सन्ध्यायै कुमार्यै नमः। एवं पूर्वबीजान्युच्चार्य्य सरस्वत्यै कुमार्य्यै नम इत्यादिवत्सरानुक्रमेण चतुर्थ्यन्तेन नाम्ना आसनादिभिः षोडशभिरुपचारैः सम्पूजयेत्।

इस प्रकार ध्यान करके अपने शिर पर हाथ रखकर मानसोपचार से पूजा करके गन्धादि से इस प्रकार पूजा करें : "ऐं ह्रीं श्रीं हूं हसौः सन्ध्यायै कुमा यर्यै नमः।" इस प्रकार पूर्व बीजमन्त्रों का उच्चारण करके 'सरस्वत्यै कुमायर्यै नमः' इत्यादि वर्ष के क्रम से चतुर्थ्यन्त नाम से आसन आदि षोडशोपचारों से इस प्रकार पूजा करें :

ऐं ह्रीं श्रीं हूँ हसौः कुलकुलमारिकायै नमः। जलं समर्पयामि।।१।। इदं पाद्यमेवमिद-मर्ध्यमिदमाचमनीयमिदमनुलेपनमेतेऽक्षता एतानि पुष्पाणि एष धूप एष दीप इदं नैवेद्यमिदं ताम्बूलमिति पूजयित्वा षडङ्गन्यासविधिना षडङ्गानि पूजयेत्।

"ऐं ह्रीं श्रीं हूँ हसौः कुलकुमारिकायै नमः जलं जमर्पयामि।।१।। इसी मन्त्र से 'जलं' के स्थान पर पाद्यं, अर्घ्यं, आचमनीयं, अनुलेपनं, अक्षतं, पुष्पं, धूपं, दीपं, नैवेद्यं, ताम्बूलं आदि को भी राख कर समर्पित करें। (यथाः "ऐं ह्रीं श्रीं हूँ हसौः कुलमारिकायै नमः। पाद्यं समर्पयामि" इत्यादि। इसके बाद षडङ्गन्यासविधि से इस प्रकार षडङ्गों की पूजा करें।

तत्र क्रमस्तु कुमार्या हृदयं दक्षिणहस्तेन धृत्वा महातेजोमयं शुक्लवर्णं विभाव्य।

इसमें क्रम यह है : दाहिने हाथ से कुमारी के हृदय को स्पर्श करके 'यह महातेजोमय और शुक्लवर्ण हैं' ऐसी भावना करके।

ऐं ह्रीं श्रीं हूँ हसौः कुलकुमारिके हृदयाय नमः। हृदयश्रीपादुकां पूजयामि। इति सर्वत्र।

शिरः शुक्लवर्णं सर्वमयं विभाव्य।

'शिर शुक्लवर्ण और सर्वमय है' ऐसी भावना करके :

हैं ह्रीं श्रीं ऐं कुलकुमारिके शिरसे स्वाहा। शिरःश्रीपा० २।

शिखां नीलाञ्जनप्रभां विभाव्य।

'शित्वा नीलाञ्जन के समान है' ऐसी भावना करके :

श्रीं कुलकुमारिके शिखायै वषट्। शिखाश्रीपा० ३।

कवचं प्रथमारुणसंकाशं सुतेजस्कं विभाव्य।

'कवच प्रथम अरुण के समान तेज युक्त है' ऐसी भावना करके :

ऐं कुलकुमारिके कवचाय हुं। कवचश्रीपा० ४।

ततो नेत्रत्रयं सर्वबीजमयं महाप्रभं रक्तवर्णं कोटिजपापुष्पोज्ज्वलं विभाव्य।

इसके बाद, 'नेत्रत्रय सर्ववीजमय, महाप्रभ, रक्तवर्ण कोटि जपापुष्पों के समान उज्जवल है' ऐसी भावना करके।

ऐं कुलकुमारिके नेत्रत्रयाय वौषट्। नेत्रत्रयश्रीपा० ५। ह्रीं कुलकुमारिके अस्त्राय फट्। अस्त्रश्रीपा० ६।

इति षडङ्गानि पूजयित्वा षोडशनामभिः षोडशवारं पूजयेत्।

इस प्रकार षडङ्गों की पूजा करके षोडश नामों से षोडश बार इस प्रकार पूजा करें :

ॐ ऐं सन्ध्यायै नमः १। ॐ ऐं सरस्वत्यै नमः २। ॐ ऐं त्रिमूर्त्यै नमः ३। ॐ ऐं कालिकायै नमः ४। ॐ ऐं सुभगायै नमः ५। ॐ ऐं उमायै नमः ६। ॐ ऐं मालिन्यै नमः ७। ॐ ऐं कुब्जिकायै नमः ८। ॐ ऐं कालसङ्कर्षिण्यै नमः ६। ॐ ऐं अपराजितायै नमः १०। ॐ ऐं रुद्राण्यै नमः ११। ॐ ऐं भैरव्यै नमः १२। ॐ ऐं महालक्ष्म्यै नमः १३। ॐ ऐं पीठनायिकायै नमः १४। ॐ ऐं क्षेत्रज्ञायै नमः १५। ॐ ऐं चर्चिकायै नमः १६।

इति सम्पूज्य नवनामभिः पूजयेत्।

इस प्रकार पूजा करके नव नामों से इस प्रकार पूजा करें।

ॐ ह्रीं कौमार्यै नमः १। ॐ ह्रीं त्रिपुरायै नमः २। ॐ ह्रीं कल्याण्यै नमः ३। ॐ ह्रीं रोहिण्यै नमः ४। ॐ ह्रीं कामिन्यै नमः ५। ॐ ह्रीं चण्डिकायै नमः ६। ॐ ह्रीं शाङ्कर्यै नमः ७। ॐ ह्रीं दुर्गायै नमः ८। ॐ ह्रीं सुभद्रायै नमः ६।

इति नामभिः सम्पूज्य "ॐ ह्रीं हंसः कुलकुमारिकायै नमः पुष्पाञलिं समर्पयामि।" इति पुष्पाञलित्रयं दत्त्वा तत्राङ्गे स्वेष्टदेवीमावाह्य सम्पूज्य प्रदक्षिणीकृत्य प्रणमेत्।

इस प्रकार नामों से पूजा करके 'ॐ ह्रीं हंसः कुलकुमारिकायै नमः पुष्पाञलि समर्पयामि' इससे तीन पुष्पाञलि देकर उसके अंग में अपनी इष्टदेवी का आवाहन करके पूजा तथा प्रदक्षिणा करने के बाद इस प्रकार प्रणाम करें :

ॐ जगत्पूज्ये जगद्वन्द्ये सर्वशक्तिस्वरूपिणि। पूजां गृहाण कौमारि जगन्मातर्नमोऽस्तु ते।।१।। त्रिपुरां त्रिगुणां धात्रीं ज्ञानमार्गस्वरूपिणीम्। त्रैलोक्यवन्दितां देवीं त्रिमूर्तिं पूजयाम्यहम्।।२।। कालात्मिकां कालभीतां कारुण्यहृदयां शिवाम्। कारुण्यजननीं नित्यां कल्याणीं पूजयाम्यहम्।।३।। अणिमादिगुणोपेतामकारादिस्वरात्मिकाम्। शक्तिभेदात्मिकां लक्ष्मीं रोहिणीं पूजयाम्यहम्।।४।। कलाधारां कलारूपां कालचण्डस्वरूपिणीम्। कामदां करुणाधारां कामिनीं पूजयाम्यहम।।५।। चण्डधारां चण्डमायां चण्डमुण्डविनाशिनीम्। प्रणमामि च देवेशीं चण्डिकां पूजयाम्यहम्।।६।। सुखानन्दकरीं शान्तां सर्वदेवनमस्कृताम्। सर्वभूतात्मिकां देवीं शाङ्करीं पूजयाम्यहम्।।७।। दुर्गमे दुस्तरे चैव दुःखत्रयविनाशिनीम्। पूजयामि सदा भक्त्या दुर्गां दुर्गे नमाम्यहम्।।८।। सुन्दरीं स्वर्णवर्णाभां सुख सौभाग्यदायिनीम्। सुभद्रजननीं देवीं सुभद्रां प्रणमाम्यहम्।।६।।

इति प्रणम्य ततस्तस्याः कुण्डबिले सपरिवारं बालभैरवं ध्यात्वा "ॐ कुलकुमारिके सपरिवारबालभैरवाय नमः।" एवं गन्धपुष्पाभ्यां सम्पूजयेत्।

इस प्रकार प्रणाम करके उसके कुण्डबिल में सपरिवार बालभैरव का 'ॐ कुलकुमारिके सपरिवारबालभैरवाय नमः' इस मन्त्र से गन्ध–पुष्पों द्वारा पूजा करें।

ततः ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं हूँ हसौः कुलकुमारिके नमः स्वाहा।

इति कुमारीमूलमन्त्रं स्वीय मन्त्रं वा यथाशक्ति जपित्वा प्राणायामं कृत्वा जपं समर्प्य स्तवकचादिकं पठित्वा अष्टाङ्गं पञ्चाङ्गं वा प्रणम्य दक्षिणां दद्यात्। अस्य पुरश्चरणं लक्षजपः। तत्तद्दशांशेन होमतर्पणमार्जनब्राह्मणभोजनानि कुर्यात्।

इसके बाद "ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं हूँ हसौः कुलकुमारिके नमः स्वाहा" इस कुमारी मूलमन्त्र का या स्वीय मन्त्र का यथाशक्ति जप करके प्राणायाम के पश्चात् जप समर्पित करें। तदुपरान्त स्तोत्र, कवचादि का पाठ करके अष्टाङ्ग या पञ्चाङ्ग प्रणाम करके दक्षिणा देवें। इसका पुरश्चरण एक लाख जप है। जप से तत्तद्दशांश होम, तर्पण, मार्जन और ब्राह्मणभोजन करें।

अथ वक्ष्ये महादेव्याः कुमार्या जपहोमकम्। लक्षसंख्याजपं कृत्वा मायां वा वाग्भवं रमाम्।।१।। कालीबीजं वापि नाथ मायां वा कामबीजकम्। सदाशिवेन पुटितं बिन्दुचन्द्रविभूषितम्।।२।। अथवा प्रणवेनापि पुटितं त्रिदशेश्वर जपित्वा मूलमन्त्रञ्च लक्षसंख्या विधानमः।।३।। तद्दशांशेन महाहोमं घृताक्तैर्बिल्वपत्रकैः अथवा श्वेतपुष्पैश्च कुंदपुष्पैर्महाफलम्।।४।। एवं क्रमेण जुहुयात्करवीरप्रसूनकैः। घृताक्तै केवलैर्वापि चन्दनागुरुमिश्रितैः।।५।।

हे महादेव ! अब मैं कुमारी के जप और होम का वर्णन करूँगी। हे नाथ ! माया (ह्रीं) या वाग्भव (ऐं) या रमा (श्रीं) या काली (क्रीं) अथवा कामबीज (क्लीं) को विन्दुचन्द्र–विभूषित सदाशिव (हौं) से सम्पुटित कर एक लाख जप करें। अथवा हे त्रिदेश्वर ! प्रणव (ॐ) से सम्पुटित मूलमन्त्र का विधानपूर्वक एक लाख जप करके उसका दशांश घृताक्त बिल्वपत्रों से, अथवा श्वेत पुष्पों से या कुन्द के पुष्पों से होम करने से महाफल प्राप्त होता है। इसी प्रकार कम से घृताक्त कनेर के पुष्पों से या केवल कनेर के पुष्पों अथवा चन्दन अगर मिश्रित कनेर के पुष्पों से होम करना चाहिये।

हविष्याशी दिवा भागे रात्रौ पूजापरो भवेत्। निजपूजावशेषैस्तु कुलद्रव्यैः प्रपूजयेत्।।६।। रविसंख्यं जपेत्तत्र परमानन्दरूपधृक्। जपान्ते जुहुयान्मन्त्री मदुक्तद्रव्यसंयुतैः।।७।। ततः प्राणात्मकं वायुं शोधयित्वा पुनः पुनः। प्राणायामत्रयं कृत्वा चाष्टाङ्गैः प्रणमेन्मुदा।।८।। प्रणामसमये नाथ इदं स्तोत्रं पठेद्यतिः। कवचं च तथा पाठ्यं कुमारीणामथापि वा।।९।। निजदेव्या महास्तोत्रं पठेद्धि कवचं ततः। कुमारीणां महादेव सहस्रं नाम साष्टकम्।।१०।। पठित्वा सिद्धिमाप्नोति नात्र कार्या विचारणा। तदशक्तौ स्वदेव्यास्तु सहस्रनाम मंगलम्। अष्टोत्तरं पठेन्नाथ सिद्धयाकांक्षी न संशयः।।११।। तासां स्तोत्रं शुभं नाथ शृणु सर्वत्र मंगलम्। अकस्मात्सिद्धिमाप्नोति पठित्वा साधकोत्तमः।।१२।।

दिन में हविष्याशी होते हुए पूजातत्पर होना चाहिये। शिवपूजन से अवशिष्ट कुल द्रव्यों से पूजा करनी चाहिये। इसके बाद परमानन्दरूप धारण करके बारह जप करें और जप के अन्त में मेरे द्वारा उक्त द्रव्यों से साधक होम करें। इसके बाद प्राणवायु का पुनः पुनः शोधन करके तीन प्राणायाम करके मुदित मन से साष्टाङ्ग प्रणाम करें। हे नाथ ! प्राणायाम के सयम यति इस स्तोत्र का और कवच का पाठ करें, अथवा कुमारियों या निजदेवी के महास्तोत्र का और कवच का पाठ करें। हे महादेव ! कुमारियों के अष्टोत्तरसहस्रनाम का पाठ करके साधक सिद्धि प्राप्त करता है, इसमें कुछ विचार करने की आवश्यकता नहीं है। इसमें अशक्त होने पर स्वदेवी का अष्टोत्तर सहस्रनाम मङ्गलकारी होता है। हे नाथ ! सिद्धि के आकांक्षी को निःसंशय इसे पढ़ना

चाहिये। हे नाथ, सुनिये ! उन देवियों के शुभ स्तोत्र सर्वत्र मङ्गलकारी होते हैं और उत्तम साधक उनके पढ़ने से अकस्मात् सिद्धि प्राप्त करता है।

अग्रे संस्थाप्य तास्सर्वा रत्नकोटिसुशीतलाः। ततः स्तोत्रं पठेद्धीमान् समाहितमना वशी।।१३।। महादिव्याचाररतो वीरभावोल्बणोऽपि वा। एवं क्रमेण प्रपठेद्भक्तिभाव–परायणः।।१४।। महाविद्यामहासेवाभक्तिश्रद्धाप्लुतार्पितः। महाज्ञानी भवेत्क्षिप्रं वाञ्छा–सिद्धिमवाप्नुयात्।।१५।।

अपने आगे करोड़ों रत्नों से भी अतिशीतल उन सभी कुमारी देवियों को स्थापित करके समाहित चित्त होकर बुद्धिमान जितेन्द्रिय साधक स्तोत्र का पाठ करें। वह चाहे दिव्याचाररत हो या वीरभावोल्बण, उसे भक्तिभावपरायण होकर कम से स्तोत्र का पाठ करना चाहिये। साधक महाविद्या, महासेवा, महाभक्ति तथा महाश्रद्धा से युक्त होकर यदि पाठ करे तो शीघ्र ही महाज्ञानी होकर इच्छानुसार सिद्धि प्राप्त करता है।

कुब्जिकातन्त्रे : अन्नं वस्त्रं तथा नीरं कुमार्य्यै यो ददाति हि। अन्नं मेरुसमं देव जलं च सागरोपमम्।।१६।। वस्त्रैः कोटिसहस्राब्दशिवलोके महीयते। पूजोपकरणानीह कुमार्य्यै यो ददाति हि। सन्तुष्टा देवता तस्य पुत्रत्वे सानुकल्पते।।१७।।

कुब्जिका तंन्त्र में कहा गया है कि जो मनुष्य कुमारी को अन्न, वस्त्र तथा जल देता है, उसका अन्न पर्वत के समान तथा जल समुद्र के समान असीम हो जाता है। वस्त्र देने से वह खरबों वर्षों तक शिवलोक में निवास करता है। जो कुमारी को पूजोपकरण देता है उससे संतुष्ट होकर देवता उसके पुत्र रूप में उत्पन्न होते हैं।

योगिनीतन्त्रे पूर्वखण्डे सप्तदशपटले : कुमारीपूजनफलं वक्तुं नार्हामि सुन्दरि। जिह्वाकोटिसहस्रैस्तु वक्त्रकोटिशतैरपि।।१८।।

योगिनी तन्त्र के पूर्णखण्ड के सत्रहवें पटल में कहा गया है कि, हे सुन्दरि, मै। कुमारीपूजन का फल सहस्रकोटि जिह्वाओं और शतकोटि मुखों से भी कहने में असमर्थ हूँ।

यामलेपि : कुमारी पूज्यते यत्र स देशः क्षितिपावनः। महापुण्यतमो भूयात्सम्मन्तात्क्राशपञ्चकम्।।१६।।

यामल में भी कहा है कि जिस देश में कुमारी–पूजन होता है वह देश समस्त पृथिवी पर पवित्र स्थान हो जाता है। उस स्थान के चारों ओर पाँच कोश तक समस्त भूभाग पुण्यतम हो जाता है।

महापर्वसु सर्वेषु विशेषाच्च पवित्रके। महानवम्यां देवेशि कुमारीं च प्रपूजयेत्।।२०।।
हे पवित्र देवेशि ! महापर्वो पर, विशेष रूप से महानवमी में कुमारी की पूजा करनी चाहिये।

तस्मात्षोडशपर्यन्तं युवतीति प्रचक्षते। तत्र भावप्रकाशस्स्यात्स भावः परमो मतः।।२१।। रक्षितव्याः प्रयत्नेन अक्षतास्ताः प्रकारयेत्। महापूजादिकं कृत्वा वस्त्रालङ्कारभोजनैः।।२२।। पूजयेन्मन्दभाग्योपि लभते जयमङ्गलम्।। अन्येषां कथने नाथ प्रयोजनमहाफलम्।।२३।।

इसलिये कुमारी षोडश वर्ष पर्यन्त युवती कही जाती है। उसमें भावप्रकाश हो जाता है। भाव ही श्रेष्ठ माना गया है। उसकी प्रयत्नपूर्वक रक्षा करनी चाहिये। उसे अक्षतयोनि के रूप में यत्नपूर्वक रखना चाहिये। वस्त्र, अलङ्कार और आभूषणादि से कुमारी की महापूजा आदि यह मन्द भाग्यवाला भी करता है तो वह जय और मङ्गल को प्राप्त करता है। हे नाथ ! दूसरे को

जो कन्या पूजन की बात बताता है, उसे महाफल प्राप्त होता है।

विधिना पूजयेद्यस्तु दिव्यवीरपशुस्थितः। भावत्रये महासौख्यं दिव्यकर्मणि सत्फलम्।।२४।। दिव्यभावस्थितस्साक्षात्तन्त्रमन्त्रफलं लभेत्। कुमारीपूजनादेव कुमारीभोजनादिभिः।।२५।।

जो व्यक्ति दिव्य भाव में, वीर भाव में या पशु भाव में स्थित होकर विधिपूर्वक कुमारीपूजन करता है, उसे महासुख प्राप्त होता है। तीनों भावों में कुमारी पूजन रूप दिव्य कर्म करने पर उत्तम फल प्राप्त होता है। दिव्य भाव में स्थित होकर जो मनुष्य कुमारी पूजन करता है या कुमारियों को भोजन कराता है उसे तन्त्र–मन्त्र का साक्षात् फल मिलता है।

एकद्वित्र्यादिबीजानां फलदा नात्र संशयः। ताभ्यः पुष्पं फलं दत्त्वा अनुलेपादिकं तथा।।२६।। बालप्रियं च नैवेद्यं दत्त्वा तद्भावभावितः। मृदा तदङ्गमात्मानं बालभावविचेष्टितम्।।२७।। अतिप्रियकथालापक्रीडाकौतूहलान्वितः। यथार्थं तत्प्रियं तन्त्रं कृत्वा सिद्धीश्वरो भवेत्।।२८।। कन्या सर्वसमृद्धिस्स्यात्कन्या सर्वं परं तपः। होमो मन्त्रार्चनं नित्यक्रिया कौलिकसन्क्रिया।।२९।। नानाफलमहाधर्मः कुमारीपूजनं विना। तत्तत्कर्मफलं नाथ प्राप्नोति साधकोत्तमः।।३०।।

कुमारीपूजन के द्वारा एक, दो या तीन बीजों की पूजा फलदायक होती है इसमें कोई संशय नहीं है। कुमारियों को फूल, फल, अनुलेपन, बालप्रिय नैवेद्य (मिष्ठान) आदि देकर और तद्भावभावित होकर, अङ्गों को मिट्टी से लिप्त कर बालभावोचित चेष्टाओं से अत्यन्त प्रिय कथालाप तथा क्रीड़ा करते हुये उन्हें (कुमारियों को) जो प्रिय हो वह कर्म करनेवाला मनुष्य सिद्धियों का स्वामी बन जाता है। कन्या समस्त सिद्धियों का रूप है। कन्या सम्पूर्ण और परम तप है। होम, मन्त्र, पूजा, नित्यक्रिया, कौलिकों का सत्कार तथा नाना फलों को देने वाले बड़े–बड़े धर्म कुमारी पूजन के बिना व्यर्थ हैं। हे नाथ ! कुमारी पूजन से साधक इन सभी कर्मों का फल साधक प्राप्त कर लेता है।

फलं कोटिगुणं वीरः कुमारीपूजया लभेत्। कुसुमाञ्जलिपूर्णञ्च कन्यायै कुलपण्डितः।।३१।। ददाति यदि तत्पुष्पं कोटिमेरुहिरण्यवत्। तद्दानजं महापुण्यं क्षणादेव समालभेत्।।३२।। कुमारी भोजिता येन त्रैलोक्यं तेन भोजिताम्। कुमारीपूजनं कुर्यात्सर्वकर्मफलाप्तये।।३३।। पूजयेत्परमानन्दैरात्मध्यानपरायणः। मम पूजां यः करोति प्रत्यहं शुद्धभक्तितः।।३४।। तस्य वश्यं कुमारीणां पूजनं भोजनं रवेः। तेजोरूपं विधोश्चाग्नेः सर्वभावैः प्रकाशते।।३५।। तत्पूजनात्तदालापाद्भोजनादपि तच्छुभात्। मम प्रीतिर्भवेत्साक्षादेवता गुप्तसंस्थिता।।३६।। बालभैरवदेवस्य कामिनी वदकस्य च। पुत्रस्य सर्वलोकैस्तु पूजितस्य महौजसः।।३७।। पूजाभिर्विविधैर्द्रव्यैः कुमारी देवपूजिता। कुमारी देवता प्रोक्ता सर्वतो जगदीश्वरी।।३८।। पूजार्थं सर्वलोकस्य समानीय सुरेश्वरीम्। पूजयन्ति महादेवीं गुप्तभावनिवासिनीम्।।३९।। सदा भोजन वाछाढ्या मान्यां संतुष्टहासिनी। वृथा न रौति सा देवी कुमारी देवनायिका।।४०।। सरस्वतीस्वरूपा सा पूज्यते सर्वनायकैः शिवभक्तैर्विष्णु–भक्तैस्तथान्यदेवपूजिताः।।४१।। सर्वलोकैः पूजिता सा चावश्यं पूज्यते बुधैः। पूजया लभते पुत्रान्पूजया लभते श्रियम्।।४२।। पूजया धनमाप्नोति पूजया लभते महीम्। पूजया लभते लक्ष्मीं सरस्वतीं महौजसम्।।४३।। महाविद्या प्रसीदन्ति सर्वे देवा न संशयः।

कालभैरवब्रह्मेन्द्रब्राह्मणा ब्रह्मवेदिनः।।४४।। रुद्रश्च देववर्गाश्च वैष्णवा ब्रह्मरूपिणः। अवताराश्च द्विभुजा वैष्णवा मनुशोभिताः।।४५।। अन्ये दिक्पालदेवाश्च चराचरगुरुस्तथा। नानाविद्याश्रिताः सर्वे दानवाः कूटशालिनः।।४६।। उपसर्गस्थिता येये तेते तुष्टा न संशयः। यद्यहं शुद्धरूपा हि अन्यलोके च का कथा।।४७।। कुमारीपूजनं कृत्वा त्रलौक्यं वशमानयेत्। महाक्रान्तिर्भवेत्क्षिप्रं सर्वपुण्यफलप्रदम्।।४८।। तत्तन्मन्त्र–समुल्लेखात्क्षणात्पुण्यायुतं लभेत्। मन्त्रेण पुटितं कृत्वा जप्त्वा सिद्धीश्वरो भवेत्।।४६।।

कुमारीपूजा से वीर करोड़ गुना फल प्राप्त करता है। यदि कुलपण्डित फूलों से भरी अञलि कुमारी को देता है तो स्वर्णमय करोड़ों मेरुपर्वतों के समान कुमारी को दान देने का फल तत्काल प्राप्त कर लेता है। जिसने एक कुमारी को भोजन करा दिया, उसने त्रैलोक्य को भोजन करा दिया। समस्त कर्मों के फल की प्राप्ति के लिए मनुष्य कुमारी–पूजन करे। पार्वतीजी कहती हैं कि, आत्मा के ध्यान में लगा हुआ आनन्दपूर्वक शुद्ध भक्ति के साथ प्रतिदिन जो व्यक्ति मेरी पूजा करता है कुमारियों का पूजन और भोजन उसके वश में है। उसके लिए सूर्य, चन्द्रमा और अग्नि का तेज अपने सभी भावों से प्रकाशित होता है। कुमारी के पूजन से, उससे बातचीत करने से, उसे भोजन कराने से, उसका शुभकार्य करने से मेरी प्रसन्नता होती है। कुमारी में साक्षात् देवता गुप्त रूप से स्थित है। समस्त लोकों द्वारा पूजित, कामिनीवदक, महाबलवान् पुत्र बालभैरवदेव की पूजा के विविध द्रव्यों से कुमारी देवपूजिता है। कुमारी देवता कही गयी है। वह समस्त संसार की जगदीश्वरी है। समस्त लोकों की पूजा के लिए कुमारी को लाकर उसमें गुप्त रूप से निवास करने वाली महादेवी सन्तुष्टहासिनी सुरेश्वरी देवी की पूजा सदा भोजनादि से करनी चाहिये। देवनायिका देवी कुमारी व्यर्थ नहीं रोती। शिवभक्त, विष्णुभक्त, समस्तनायक तथा अन्य देवों से सरस्वती रूपी कुमारी पूजी जाती हैं। वह समस्त लोकों से पूजी जाती हैं इसलिए बुद्धिमानों का कर्तव्य है कि वे उसकी पूजा करें। मनुष्य कुमारीपूजा से पुत्रों को और लक्ष्मी को पाता है। कुमारी की पूजा से मनुष्य धन और बलवती विद्या को पाता है। कुमारी पूजन से महाविद्या तथा सभी देव प्रसन्न होते हैं इसमें संशय नहीं है। कुमारी पूजन से कालभैरव ब्रह्मा, वेदज्ञानी ब्राह्मण, रुद्र, देववर्ग, ब्रह्मरूपी वैष्णव, द्विभुज अवतार, मन्त्रों से सुशोभित वैष्णव, अन्य दिक्पाल, चराचर गुरु तथा नाना विद्याश्रित कूटशाली सभी दानव, और उपसर्गस्थित जो–जो लोग हैं वे सब प्रसन्न हो जाते हैं इसमें संशय नहीं है। जब कि शुद्धरूपा मैं स्वयं इससे प्रसन्न हो जाती हूं तब अन्य लोक में रहने वाले दवेताओं की क्या कथा है? कुमारी पूजन करके मनुष्य तीनों लोकों को वश में कर लेता है। इससे शीघ्र ही सबको पुण्यफल देने वाली भारी क्रान्ति होती है। इस मन्त्र के लिखने से क्षण में ही दश हजार गुना पुण्यफल् मनुष्य प्राप्त होता है। मन्त्र का सम्पुटित करके जप करने से मनुष्य सभी सिद्धियों का स्वामी हो जाता है।

यद्यत्प्रकारमुद्दिश्य वदामि सुरसुन्दरि। तत्तत्कार्यमवश्यं च भिन्नबुद्धिं न कारयेत्।।५०।।

हे सुरसुन्दरि, मैं जो जो पूजा के प्रकार तुम्हें बताता हूँ, उन सबको तुम्हें अवश्य करना चाहिये। इसमें भेद बुद्धि कभी नहीं करना चाहिये।

बृहन्नीलतन्त्रे : महाभयातिदुर्भिक्षाद्युत्पातास्तु कुलेश्वरि। दुःखस्वप्नभयमृत्युश्च ये चान्ये च समुद्भवाः।।५१।। कुमारीपूजनादेव न ते च प्रभवन्ति हि। नित्यं क्रमेण देवेशि पूजयेद्विधिपूर्वकम्।।५२।। घ्नन्ति विघ्नान्पूजिताश्च भयं शत्रून्महोत्कटान्। ग्रहा रोगाः क्षयं यान्ति भूतवेतालपन्नगाः।।५३।।

वृहन्नील तन्त्र में कहा गया है कि, हे कुलेश्वरि, महाभय, दुर्भिक्ष आदि उत्पात, दुःस्वप्न, मृत्यु तथा जो अन्य भारी उपद्रव होते हैं वे सब कुमारीपूजन करने से अपना प्रभाव नहीं दिखला पाते। हे देवेशि, क्रम से विधिपूर्वक नित्य ही कुमारीपूजन करना चाहिए। कुमारीपूजा करने वाले महोत्कट शत्रुओं और विघ्नों को नष्ट कर देते हैं। ग्रह, रोग, भूत, वैताल भी इससे नष्ट हो जाते हैं।

तन्त्रान्तरेऽपि : शृणु नाथ कुलार्थं मे कुमारीपूजने मनुम्। महाविद्यामहामन्त्रं सिद्धमन्त्रं ना संशयः।।५४।। एतन्मन्त्रप्रभावेण जीवन्मुक्तो भवेत्सुधीः। अन्ते देवीपदं याति सत्यमानन्दभैरव।।५५।। ऐहिका सुखसम्पत्तिर्मधुमत्याः प्रसादतः। अवश्यं प्राप्नुयान्मर्त्यो विश्रामं कुरु शङ्कर।।५६।। वाग्भवेन वपुःक्षोभं मायाबीजे गुणाष्टकम्। श्रियो बीजे श्रियो लाभो मायाबीजे रिपुक्षयः।।५७।। भैरवेण तु बीजेन खेचरत्वं सुरादिभिः।

दूसरे तन्त्र में भी कहा गया है: हे नाथ, कुल के लिये कुमारीपूजन के लिए मैं महाविद्या महामन्त्र बतला रही हूँ जो कि सिद्ध मन्त्र है। इसमें संशय नहीं है। इस मन्त्र के प्रभाव से मनुष्य जीवन्मुक्त हो जाता है। हे आनन्दभैरव ! अन्त में वह देवी के धाम को प्राप्त हो जाता है यह सत्य है। मधुमती कुमारी के प्रभाव से ऐहिक सुख सम्पत्ति मनुष्य, अवश्य प्राप्त करता है। हे शङ्कर ! अब तुम विश्राम करो। वाग्भव से वपुःक्षोभ, मायाबीज से गुणाष्टक की प्राप्ति, श्रीबीज से श्रीलाभ, मायाबीज से शत्रु का नाश और भैरवबीज से देवताओं के साथ खेचरत्व प्राप्त होता है।

कुमारिका ह्यहं नाथ सदा त्वं हि कुमारकः।।५८।। शतमष्टोत्तरं वापि एकां वा परिपूजयेत्। पूजिताः परिपूज्यन्ते ह्यविघ्नन्त्यवमानिताः।।५९।। कुमारी योगिनी साक्षात्कुमारी परदेवता।

हे नाथ, मैं तो सदा कुमारी हूँ और आप सदा कुमार हैं। एक सौ आठ या एक कुमारी की पूजा करनी चाहिए। कुमारियाँ पूजा प्राप्त करके कल्याण करती हैं और अपमानित होने पर विघ्न उपस्थित करती हैं। कुमारी योगिनी है, कुमारी साक्षात् पर देवता है।

असुरा दुष्टनागाश्च येये दुष्टग्रहा अपि।।६०।। भूतवेतालगन्धर्वा डाकिनीयक्षराक्षसाः। या चान्या देवतास्सर्वा भूर्भुवस्वश्च भैरवाः।।६१।। पृथिव्यादीनि सर्वाणि ब्रह्माण्डं सचराचरम्। ब्रह्मा विष्णुश्च रुद्रश्च ईश्वरश्च सदाशिवः।।६२।। सन्तुष्टाः सर्वतुष्टाश्च यस्तु कन्यां प्रपूजयेत्। विधियुक्तां कुमारीन्तु भोजयेच्चैव भैरव।।६३।। पाद्यार्घ्यं च तथा धूपं कुंकुमं चन्दनं शुभम्। भक्तिभावेन सम्पूज्य कुमारीभ्यो निवेदयेत्।।६४।।

असुर, भूत, वैताल, गन्धर्व, डाकिनी, यक्ष, राक्षस, अन्य सभी देवता, भूः भुवः, स्वः, भैरव, पृथिव्यादि सभी सचराचर ब्रह्माण्ड, ब्रह्मा, विष्णु, रुद्र, ईश्वर, सदाशिव सभी उससे सन्तुष्ट हो जाते हैं। हे भैरव ! विधिपूर्वक कुमारी को भोजन कराना और भक्तिभाव से पूजा करके पाद्य, अर्घ्य, धूप, कुंकुम तथा शुभ चन्दन आदि कुमारियों को देना चाहिये।

इति कुमारीपटलं समाप्तम्।

कुमारीकवच

अथातः संप्रवक्ष्यामि कुमारीकवचं शुभम्। त्रैलोक्यमङ्गलं नाम महापातकनाशनम्।।१।।
पठनाद्धारणाल्लोका महासिद्धाः प्रभाकरः। शक्रो देवाधिपः श्रीमान्देवगुरुर्बृहस्पतिः।।२।।
सम्यक्तेजोमयो वह्निर्धर्मराजो भयानकः। वरुणो देवपूज्यो हि जलानामधिपस्स्वयम्।।३।।

सर्वहर्ता महावायुः कुमारः कुञरेश्वरः। धनाधिपः प्रियश्शम्भोस्सर्वे देवा दिगीश्वराः।।४।। स एकः प्रभुरेकात्मा सर्वेशो निर्मलोदयाः। एतत्कवचपाठेन सर्वे भूपा धनाधिपाः।।५।।

अब मैं यहाँ शुभ कुमारी कवच बजाऊँगी। यह तीनों लोकों में मङ्गल करने वाला है और पापों का नाश करने वाला है। इसके पठन तथा धारण से लोग महासिद्ध हो जाते हैं। देवाधिदेव इन्द्र, देवगुरु, वृहस्पति, तेजामय अग्नि, भयानक धर्मराज, देवपूज्य जल के स्वामी वरुण, सर्वहर्त्ता वायु, कुमार, गणेश, कुबेर, शिव के प्रिय, सभी देव, दिक्पाल, निर्मल सर्वेश्वर, ये सभी और सब राजा भी इस कवच के पाठ से धन के स्वामी हो गये।

प्रणवो मे शिरः पातु माया सन्ध्यात्मिका सती। ललाटोर्ध्वं महामाया पातु मे श्रीसरस्वती।।६।। कामाख्या बटुकेशानी त्रिमूर्तिर्भालमेव तु। चामुण्डा बीजरूपा च वदनं कालिका मम।।७।। पातु मां सूर्य्यगा नित्यं तथा नेत्रद्वय मम। कर्णयुग्मं कामबीजस्वरूपोमा तपस्विनी।।८।। रसनाग्रं तथा पातु वाग्देवी मालिनी मम। तमोवस्था कामरूपा दन्ताग्रं कुब्जिका मम।।९।। देवी प्रणवरूपा सा पातु नित्यं शिरो मम। ओष्ठाधरौ शक्तिबीजात्मिका स्वाहास्वरूपिणी।।१०।। गलदेशं महारौद्री पातु मे चापराजिता। क्षौं बीजं मे सदा कण्ठं रुद्राणी स्वाहयान्विता।।११।। हृदयं षोडशी विद्या पातु षोडशसुस्वरा। द्वौ बाहू पातु सर्वत्र महालक्ष्मीः प्रधानिका।।१२।। सर्वमन्त्रस्वरूपा मे चोदरं पीठनायिका। पार्श्वयुग्मं तथा पातु हृद्देवी वाग्भवात्मिका।।१३।। कैशोरी कटिदेशं मे मायाबीजस्वरूपिणी। जंघायुग्मं जयन्ती मे योगिनी कुल्लुकावृता।।१४।। सर्वाङ्गमम्बिका देवी पातु मन्त्रार्थगामिनी। केशाग्रं कमला देवी नासाग्रं नरमोहिनी।।१५।। चुबुकं चण्डिका देवी कुमारी पातु मे सदा। हृदयं ललिता देवी पृष्ठं पर्वतवासिनी।।१६।। त्रिशक्तिः षोडशी देवी लिंङ्गं गुह्यं सदावतु। श्मशाने चाम्बिका देवी गङ्गा गर्भे च भैरवी।।१७।। शून्यागारं पञ्चमुद्रा मन्त्रयन्त्रप्रकाशिनी। चतुष्पथे सदा पातु मामेव वज्रधारिणी।।१८।। शवासनगता चण्डा मुण्डमालाविभूषिता। पातु मामेव लिंङ्गे च ईश्वरी शक्तिरूपिणी।।१९।। वने पातु महाबाला महारण्ये रणप्रिया। महाजले तडागे च शत्रुमध्ये सरस्वती।।२०।। महाकाशपथे पृथ्वी पातु मां शीतला सदा। रणमध्ये राजलक्ष्मीः कुमारी कुलकामिनी।।२१।। अर्द्धनारीश्वरी पातु मम पादतलं मही। नवलक्षमहाविद्या कुमारीरूपधारिणी।।२२।। कोटिसूर्यप्रतीकाशा चन्द्रकोटिसुशीतला। पातु मां वरदा बाणी बटुकेश्वरकामिनी।।२३।।

इति ते कथितं नाथ कवचं परमाद्भुतम्। कुमार्याः कुलदायिन्याः पञ्चतत्त्वार्थपारगम्।।२४।।
यो जपेत्पञ्चतत्त्वेन स्त्रोत्रेण कवचेन च। आकाशगामिनी सिद्धिर्भवेत्तस्य न संशयः।।२५।।
वज्रदेहो भवेत्क्षिप्रं कवचस्य प्रसादतः। सर्वसिद्धीश्वरो योगी ज्ञानी भवति यः पठेत्।।२६।।
विवादे व्यवहारे च संग्रामे कुलमण्डले।। महापथे श्मशाने च योग सिद्धयुद्भवेषु च।।२७।।
पठित्वा फलमाप्नोति सत्यंसत्यं कुलेश्वर। वशीकरणमेतद्धि सर्वत्र जयदं शुभम्।।२८।।
पुण्यव्रती पठेन्नित्यं यतिः श्रीमान्भवेद्ध्रुवम्। सिद्धविद्याकुमारी च ददाति सिद्धिमुत्तमाम्।।२९।।
पठेद्यः शृणुयाद्वापि स भवेत्कल्पपादपः। भुक्तिं मुक्तिं तुष्टिपुष्टी राजलक्ष्मीं सुसम्पदम्।।३०।।
प्राप्नोति साधकश्रेष्ठो धारयित्वा भवेज्जयी। असाध्यं साधयेद्विद्वान्पठित्वा कवचं शुभम्।।३१।।
कुलीनानां महासौख्यं धर्मार्थकाममोक्षदम्। योगिनां दिवसे नित्यं कुमारीं पूजयेन्निशि।।३२।।

उपचारविशेषेण त्रैलोक्यं वशमानयेत्। पललेनाशनेनापि मत्स्येन मुद्रया सह।।३३।।
नानाभक्ष्येण भोज्येन गन्धद्रव्येण साधकः। माल्येन स्वर्णरजतालङ्कारेण सुचेलकैः।।३४।।
पूजयित्वा जपित्वा च तर्पयित्वा वराननाम्। यज्ञदानतपस्याभिः प्रयोगेण महेश्वर।।३५।।
स्तुत्वा कुमारीकवचं यः पठेदेव भावतः। तस्य सिद्धिर्भवेत्क्षिप्रं राजराजेश्वरो भवेत्।।३६।।
वांछाफलमवाप्नोति यद्यन्मनसि वर्त्तते। भूर्जपत्रे लिखित्वा यः कवचं धारयेद्यदि।।३७।।
शनिमङ्गलवारे च नवम्यामष्टमीदिने। चतुर्दश्यां पौर्णमास्यां कृष्णपक्षे विशेषतः।।३८।।
लिखित्वा धारयेद्विद्वानुत्तराभिमुखो भवेत्। महापातकयुक्तोपि मुक्तः स्यात्सर्व पातकैः।।३९।।
योषिद्वामभुजे धृत्वा सर्वकल्याणमालभेत्। बहुपुत्रान्विता कान्ता सर्वसम्पत्तिसंयुक्ता।।४०।।
तथैव पुरुषश्रेष्ठो दक्षिणे धारयेद्भुजे। इहैव दिव्यदेहः स्यात्पद्मासनसमप्रभः।।४१।।
शिवलोके परं याति वायुवेगो निरामयः। सूर्यमण्डलमाभेद्य परं मोक्षमवाप्नुयात्।।४२।।

हे नाथ, मैंने यह कुलदायिनी कुमारी पञ्चतत्वार्थपारग परम अद्भुत कवच आपको बताया। जो मनुष्य पञ्चतत्व के स्तोत्र और कवच के साथ जप करता है, उसे आकाश में उड़ने की सिद्धि प्राप्त होती है इसमें कोई संशय नहीं है। कवच के प्रसाद से वह बज्रदेह हो जाता है। जो इसका पाठ करता है, वह सर्वसिद्धियों का स्वामी, योगी, और ज्ञानी हो जाता है। विवाद में, व्यवहार में, संग्राम में, कुलमण्डल में, महापथ में, श्मशान में, योगसिद्धियों के उद्भव में फल प्राप्त करता है। हे कुलेश्वर ! मैं यह सत्य कहती हूँ। यह वशीकरण है, और सर्वत्र जय प्रदान करने वाला है। पुण्य व्रत करता हुआ जो इन्द्रियविजयी इसका नित्य पाठ करता है, वह निश्चय ही लक्ष्मीवान् होता है। सिद्धविद्या कुमारी उत्तम सिद्धि को देती है। जो साधक इसे पढ़ता या सुनता है। वह कल्पवृक्ष हो जाता है। वह भुक्ति, मुक्ति, तुष्टि, पुष्टि, राजलक्ष्मी तथा उत्तम सम्पत्ति प्राप्त करता है और जो इसे धारण करता है, वह विजयी हो जाता है। इस शुभ कवच को पढ़कार बुद्धिमान् साधक असाध्य कार्यों को भी सिद्ध कर लेता है। कुलीन योगियों को धर्म, अर्थ, काम तथा मोक्ष देने वाला महासुख प्राप्त होता है। दिन में, रात में नित्य कुमारी की पूजा करनी चाहिए। विशेष उपचार से साधक तीनों लोकों को वश में कर सकता है। साधक यदि मांस, मछली, मुद्रा के साथ नाना प्रकार के भक्ष्य भोज्य और गन्ध द्रव्य, माला, सोने–चाँदी के अलङ्कार तथा वस्त्रों के साथ कुमारी का पूजन तथा तर्पण करके यज्ञ, बान तथा तपस्यापूर्वक स्तुति करके कुमारी कवच को भावसहित पढ़ता है तो उसे शीघ्र ही सिद्धि प्राप्त हो जाती है और वह राजेश्वर बन जाता है। भोजपत्र पर लिखकर जो साधक कवच को धारण करता है, उसके मन में जो इष्ट है वह सब पूर्ण हो जाता है। शनिवार, मङ्गलवार, नवमी, अष्टमी के दिन, चतुर्दशी पौर्णमासी विशेष रूप से कृष्ण पक्ष में भोजपत्र पर लिखकर उत्तराभिमुख होकर जो विद्वान् साधक धारण करता है वह यदि महापातकी हो तो भी सभी पापों से मुक्त हो जाता है। स्त्री बाएँ हाथ में धारण करके समस्त कल्याणों को प्राप्त करती है। वह बहुत पुत्रों वाली तथा समस्त सम्पत्तियों से युक्त होती है। उसी प्रकार पुरुष भी दाहिने हाथ में धारण करे तो वह इसी संसार में दिव्य देहवाला रोगरहित होकर ब्रह्मा के समान हो जाता है और वायुवेग से शिवलोक में जाता है। वह सूर्यमण्डल का भेदन करके परम मोक्ष को प्राप्त करता है।

लोकानामतिसौख्यदं भयहरं श्रीपादभक्तिप्रदं मोक्षार्थं कवचं शुभं प्रपठतामानन्द–

सिन्धूद्भवम्। पन्थानं कलिकालघोरकलुषध्वंसैकहेतुं जयं ये लोकाः प्रपठन्ति धर्म–मतुलं मोक्षं व्रजन्ति क्षणात्।।४३।।

अत्यन्त सुख देने वाला, भय को हरण करने वाला, श्री देवी के चरणों में भक्ति प्रदान करने वाला, मोक्ष के लिए समुद्र से उत्पन्न कलिकाल में घोर पाप के नाश का कारण स्वरूप इस शुभ कवच का जप और पाठ जो करते हैं वे ही असीम धर्म और क्षण में मोक्ष को प्राप्त होते हैं।

इति रुद्रयामले उत्तरतन्त्रे महातन्त्रोद्दीपने कुमार्य्युपचर्च्या
विन्यासे कुमारीकवचोल्लासे सिद्धमन्त्रप्रकरणे भावनिर्णय
कुमारी कवचं समाप्तम्।

कुमारीस्तोत्र

भैरव उवाच।

देवेन्द्रादय इन्दुकोटिकिरणां वाराणसीवासिनीं विद्यां वाग्भवकामिनीं त्रिनयनां सूक्ष्मत्रियागामिनीम्। चण्डोद्वेगनिकृन्तनीं त्रिजगतां धात्रीं कुमारीं वरां मूलाम्भोरुहवासिनीं शशिमुखीं सम्पूजयन्ति श्रियम्।।१।। भाव्यां देवगणैः शिवेन्द्रयतिभिर्मोक्षार्थिभिर्बालिकां सन्ध्यां नित्यगुणोदयां द्विजगणश्रेष्ठोदयांशारुहाम्। शुक्लाभां परमेश्वरीं शुभकरीं भद्रां विशालाननां गायत्रीं गणमातरं दिनपतिं कृष्णां च वृद्धां भजे।।२।। बालां बालकपूजितां गुणयुतां विद्यावतां मोक्षदां धात्रीं शुक्लसरस्वतीं नरवरां वाग्वादिनीं चण्डिकाम्। स्वाधिष्ठानहरप्रियां प्रियकरीं वेदान्तविद्याप्रदां नित्यं मोक्षहिताय योगवपुषां चैतन्यरूपां भजे।।३।। नानारत्नसमूहनिर्मितगृहे पूज्यां सुरैर्बालिकां वन्दे नन्दनकानने मनसि सिद्धान्तैकबीजानने। अर्थं देहि निरर्थकाय वपुषे हित्वा कुमारीं कलां मह्यं मातृकुमारिके च त्रिविधा मूर्त्या च तेजामयी।।४।। हालाहालकरालिकां कुलपथोल्लासैः कराब्जोद्वहां नासामोदकरालिनीं हि भजतां कामातिरिक्तप्रदाम्। बालोऽहं बटुकेश्वरस्य चरणाम्भोजाश्रितोऽहं सदा हि त्वां बालकुमारिके शिरसि शुक्लाम्भोरुहे सम्भजे।।५।। सूर्याह्लादबलाकिनीं कलिमहापापार्दितापापहां तेजोगां भुवि सूर्य्यगां भयहरां तेजोमयीं कालिकाम्। वन्दे हृत्कमले सदा रविदले बालेन्द्रविद्यां सतीं साक्षात्सिद्धिकरीं कुमारि विमले त्वामाद्यरूपेश्वरीम्।।६।। नित्यं श्रीकुलकामिनीं कुलवतीं कौलामुनामम्बिकां नानायोगविलासिनीं सुरमणीं नित्यां तपस्यान्विताम्। वेदान्तार्थविशेषदेशवसनभाषाविशेषस्थितां वन्दे पर्वतराजराजतनयां कालप्रिये त्वामहम्।।७।। कौमारीं कुलमालिनीं रिपुगणक्षोभाग्निसन्दायिनीं रक्ताभानयनां शुभां परममार्गां मुक्तिसंज्ञाप्रदाम्। भार्यां भोगवतीं पतिं त्रिभुवनेष्वामोदपञ्चाननां पञ्चास्यप्रियकामिनीं भयहरां सर्पादिहारां भजे।।८।। चन्द्रास्यां चरणद्वयां भुजमहाशोभाविनोदीं नदीं मोहादिक्षयकारिणीं वरकरां श्रीकुब्जिकां सुन्दरीम्। ये नित्यं परिपूजयन्ति सहसा राजेन्द्रचूडामणिं सम्पत्तिं धनमायुषं त्रिजगतां व्याप्येश्वरत्वं जगुः।।९।। योगीशं भुवनेश्वरं प्रियकरं श्रीकालसन्दर्भया शोभासागरगामिनं

सुरतरुं वांछाफलोद्दीपनम्। लोकानामघनाशनाय शिवया श्रीसंज्ञया विद्यया धर्मप्राणसदैवतं प्रणमतां कल्पद्रुमं भावये।।१०।। विद्यान्तामपराजितां मदनगामामोदमत्तानना हृत्पद्मस्थितपादुकां कुलकलां कात्यायनीं भैरवीम्। ये ये पुण्यधियो भजन्ति परमानन्दाब्धिमध्ये मुदा सर्वाच्छादिततेजसाऽभयकरीं मोक्षाय सत्कीर्तये।।११।। रुद्राणीं प्रणमामि पद्मवदनां कोट्यर्कतेजोमयीं नानालंकृत भूषणां कुलभुजामानन्दसन्दायिनीम्। श्री मायां कमलान्वितां हृदिगतां सन्तानबीजक्रियां वन्दे वाग्भवरूपिणीं कुलवधूं हूंकारबीजोद्भवाम्।।१२।। नमामि वरभैरवीं क्षितितलाधकालानलां मृणालकुसुमारुणां भुवनदोषसंशोधिनीम्। जगद्भयहरां परां हरति या च योगेश्वरी ममापदमहर्निशं सकलभोगदां तामहम्।।१३।। साम्राज्यं प्रददाति या भगवती विद्या महालक्षणा साक्षादष्टसमृद्धिदा भुवि महालक्ष्मीः कुलक्षोभहा। स्वाधिष्ठानसुपङ्कजे विवसितां विष्णोरनन्तश्रियं वन्दे राजपदप्रदां शुभकरीं कौलेश्वरीं सर्वदा।।१४।। पीठानामधिपाधिपामसुरहां विद्यां शुभां नायिकां सर्वालङ्करणान्वितां त्रिजगतां क्षोभापहां वारुणीम्। वन्दे पीठगनायिकां त्रिभुवनच्छायाभिराच्छादितां सर्वेषां हितकारिणीं जयवतामानन्दरूपेश्वरीम्।।१५।। क्षेत्रज्ञां मदविह्वलां कुलवतीं सिद्धप्रियां प्रेयसीं शम्भोः श्रीबटुकेश्वरस्य महतामानन्दसञ्चारिणीम्। साक्षादात्मपरोद्गमां निजमनः क्षोभपहां शाकिनीं वाक्यार्थप्रकटामहं रजतभां वन्दे महाभैरवीम्।।१६।। सुपूर्णविधुवन्मुखीं कमलमध्यसम्भाविनीं शिरोदशशते दलेऽमृतमहाब्धिधाराधराम्। प्रणामफलदायिनीं सकलराजवश्यां गुणां नमामि परमाम्बिकां विषयपाशसंहारिणीम्।।१७।। साक्षादहं त्रिभुवनेऽमृतपूर्णदेहां सन्ध्यादिदेविकललः कुलपण्डितेन्द्राम। तन्नो भजे सुरवरे वरकालिके त्वां सिद्धानले प्रतिदिनं प्रणमामि भक्त्या। भक्तिं धनं जयपदं यदि देहि दास्यं तस्मिन्महामधुमतीलघुगेहभार्य्याम्।।१८।।

एतत्स्तोत्रप्रसादेन कविताबाक्यपतिर्भवेत्। महासिद्धीश्वरो दिव्यो वीरभावपरायणः।।१९।। सर्वत्र जयमाप्नोति स हि स्याद्धरवल्लभः। वाचामीशो भवेत्क्षिप्रं कामरूपी भवेन्नरः।।२०।। पशुरेव महावीरो दिव्यो भवति निश्चितम्। क्रमशोप्यष्टसिद्धिः स्याद्वाग्मी भवति निश्चितम्।।२१।। सर्वविद्याः प्रसीदन्ति तुष्टास्सर्वदिगीश्वराः। वह्निः शीतलतां याति जलस्तम्भं स कारयेत्।।२२।। धनवान्पुत्रवान्राजा इहलोके भवेन्नरः। स सञ्चरति वैकुण्ठे कैलासे शिव–सन्निधौ।।२३।। मुक्त एव महादेव यो नित्यं सर्वदा पठेत्। महाविद्यापदाम्भोजं स हि पश्यति निश्चितम्।।२४।।

इस स्तोत्र के प्रसाद के साधक कविता और वाणी का स्वामी हो जाता है। वीरभावपरायण होकर वह दिव्य महासिद्धियों का स्वामी बन जाता है। वह सर्वत्र विजय प्राप्त करता है और शिवजी का प्यारा हो जाता है। वह वाणी का स्वामी तथा इच्छानुसार रूप धारण करने वाला हो जाता है। वह पशु निश्चित रूप से महावीर हो जाता है। क्रमशः वह वाग्मी हो जाता है तथा निश्चित रूप से आठों सिद्धियों को प्राप्त करता है। उस पर समस्त विद्याएँ प्रसन्न हो जाती हैं तथा समस्त दिक्पाल तुष्ट हो जाते हैं। उसके सामने अग्नि शीतल हो जाती है तथा वह जल का स्तम्भन कर देता है। वह इस संसार में धनवान्, पुत्रवान् तथा राजा होता है। वह कैलास पर्वत पर बैकुण्ठ में शिव के निकट विचरण करता है। जो नित्य इसका पाठ करता है वह मुक्त

होकर स्वयं महादेव बन जाता है। महाविद्या के चरणकमल को वह निश्चित रूप से देखता है।

इति कुमारीस्तोत्रं समाप्तम्।

कुमारीसहस्रनामस्तोत्र

आनन्दभैरव उवाच।

विनियोग : अस्याः श्रीकुमार्याः सहस्रनामस्तोत्रस्य बटुकभैरव ऋषिरनुष्टुप्छन्दः कुमारी देवता सर्वमन्त्रसिद्धिसमृद्धये विनियोगः।

ॐ कुमारी कौशिकी काली कुरुकुल्ला कुलेश्वरी। कनकाभा काञ्चनाभा कमला कालकामिनी।।१।। कपालिनी कालरूपा कौमारी कुलबालिका। कान्ता कुमारकान्ता च कारणा करिगामिनी।।२।। कन्धकान्ता कौलकान्ता कृतकर्मफलप्रदा। कार्याकार्यप्रवक्त्री च कंसहन्त्री कुरुक्षया।।३।। कृष्णकान्ता कालरात्रिः कर्णेषुधारशीकरा। कामहा कपिला काला कालिका कुरुकामिनी।।४।। कुरुक्षेत्रप्रिया कोला कुन्ती कामातुरातुरा। कलञ्जभक्षा कैकेयी काकपुच्छध्वजा कला।।५।। कमला कामलक्ष्मीश्च कमलाननकामिनी। कामधेनुस्वरूपा च कामहा कामवर्द्धिनी।।६।। कामदा कामपूज्या च कामातीता कलावती। कौमारी कारणाढ्या च कैशोरी कुशलाकुला।।७।। कुम्बग्रीवा कृष्णनिभा कामराजप्रियाकृतिः। कङ्कणालङ्कृता कङ्का केवला काकिनी करा।।८।। किरातिनी काकभक्षी करालवदेना कुशा। केशिनी केशिहा केशा केशीष्टा च कविप्रिया।।९।। कविनाथस्वरूपा च कटुवाणी कटुस्थिता। कोटरा कोटराक्षी च करनाटकवासिनी।।१०।। कटकस्था काष्ठसंस्था कन्दर्पा केतकीप्रिया। केलिप्रिया कम्बलस्था कालदैत्यविनाशिनी।।११।। केतकी पुष्पशोभाढ्या कर्पूरपूर्णजिह्विका। कर्पूरकरका काला कैलासगिरिवासिनी।।१२।। कुशासनस्था कादम्बा कुञ्जरेशी कुलानना खर्वा खड्गधरा खड्गा खिलहाखिलवृद्धिदा।।१३।। खञ्जना खररूपा च खाराम्लतिक्तमध्यगा खेलना खेटककरा खरवाक्या खरोत्कटा।।१४।। खद्योतचञ्चला खेला खद्योता खगवाहिनी। खेटकस्था खला खस्था खेचरी खेचरप्रिया।।१५।। खचरा खचरप्रेमा खलाढ्या खचरानना। खेचरेशी खरोग्रा च खेचरप्रिय भाषिणी।।१६।। खर्जूरासवसंवर्ता खर्जूरफलभोगिनी। खातमध्यस्थिता खाता खाताम्बु– परिपूजिनी।।१७।। खातिः खातजलानन्दा खलुना खञ्जनागतिः। खल्वा खरतरा खारी खारोद्वेगनिकृन्तनी।।१८।। गगनस्था च गीता च गम्भीरनादिनी गया। गङ्गा गभीरा गौरी च गणनाथप्रिया गतिः।।१९।। गुरुभक्ता ग्लानिहीना गेहिनी गोपिनी गिरा। गोगणस्था गाणपत्या गिरिजा गिरिपूजिता।।२०।। गिरिकान्ता गणस्था च गिरिकन्या गणेश्वरी।

गाधिराजसुता ग्रीवा गुर्वी गुरुश्च शाङ्करी।।२१।। गन्धर्वयामिनीगीता गायत्री गुणदा गुणा। गुग्गलस्था गुरोः पूज्या गीतानन्दप्रकाशिनी।।२२।। गयासुरप्रिया गेहा गवाक्षजालमध्यगा। गुरुकन्या गुराः पत्नी गहना गुरुनादिनी।।२३।। गुल्फवायुस्थिता गुल्फगर्दभा गर्दभप्रिया। गुह्या गुह्यगणस्था च गरिमा गैरिका गुदा।।२४।। गुदोर्द्धस्था च गलिता गणिका गोलका गणा। गान्धर्वी गाननगरी गन्धर्वगणपूजिता।।२५।। घोरनादा घोरमुखी घोरा धर्म–

निवारिणी। घनदा घनवर्णा च घनवाहनवाहना।।२६।। घर्घरध्वनिचपला घोटा घटपटी घटी। घटिता घटना घोणा घनरूपा घनेश्वरी।।२७।। घुष्यातीता घर्घरा च घोराननविमोहिनी। घोरनेत्रा घनरुचा घोरभैरवकन्यका।।२८।। घाता घातकरा घात्या घ्राणा घ्राणगवासिनी। घोरान्धकारसंस्था च घसना घस्वरा घरा।।२६।। घोटकस्था घोटका च घोटकेश्वरवाहना। घननीलमणिश्यामा घर्घरेश्वरकामिनी।।३०।। ङकारकूटसम्पन्ना ङकारचक्रगामिनी। ङकारी ङसशा चैव ङीयनीता ङकारिणी।।३१।। चन्द्रमण्डलमध्यस्था चतुरा चारुहासिनी। चारुचन्द्रमुखी चैव चलाङ्गसुगतिप्रिया।।३२।।चञ्चला चपला चण्डी चेकिताना चरुस्थिता। चलिता चालना चार्वी चारुभ्रमरनादिनी।।३३।। चोरहा चन्द्रनिलया चान्द्री चक्रपुरस्थिता। चक्रकीला चक्ररूपा चक्रस्था चक्रसिद्धिदा।।३४।। चक्रिणी चक्रहस्ता च चक्रनाथकुलप्रिया। चक्राभेद्या चक्रकुला चक्रमण्डलशोभिता।।३५।। चक्रेश्वरप्रिया चैला चैलाजिनकुशोत्तरा। चतुर्वेदस्थिता चण्डा चन्द्रकोटिसुशीतला।।३६।। चतुर्गुणा चन्द्रवर्णा चातुरी चतुरप्रिया। चक्षुष्या चक्षुर्वसतिश्चलका चलनप्रिया।।३७।। चार्वंगी चन्द्रनिलया चलदम्बुजलोचना। चर्वरीशा चारुमुखी चारुदन्ता चरस्थिता।।३८।। चषकस्थासवा चेता चेतःस्था चैत्रपूजिता। चाक्षुषी चन्द्रमालिनी चन्द्रहासमणिप्रभा।।३६।। छत्रस्था छत्ररूपा च छत्रच्छायावनस्थिता छलज्ञा छेश्वरा छाया छायाछिन्नशवा छला।।४०।। छत्राचरणशोभाढ्या छत्रिणां छत्रधारिणी। छिन्नातीता छिन्नमस्ता छिन्नकेशा छलोद्भवा।।४१।। छलहा छलदा छाला छिन्ना छन्नजन प्रिया छलाछला छम्भवती छम्भसम्बनिवासिनी।।४२।। छद्मगन्धा छदा छन्ना छद्मकेशा छकारिका। छागलारक्ताभक्षा च छागलामोदरक्तपा।।४३।। छगलण्डेशकन्या च छगलण्डकुमारिका। छविका छुरिकाकारा छुरिकारिविनाशिनी।।४४। छिन्ननासा छिन्नहासा छोललोला छलोदरी। छलोद्वेगा छागरीजमाला छागवरप्रदा।।४५।। जटिला जठरश्रीदा जरा यज्ञप्रिया जया। यन्त्रस्था जीवजा जीवा जयदा जीवयोगदा।।४६।। जयिनी जमलस्था जामलोद्भवनायिका जामलप्रियकन्या च जामलेशी जवप्रिया।।४७।। जवाकोटिसमप्रख्या जपापुष्पप्रिया जना। जलस्था जागरिमया जरातीता जलस्थिता।।४८।। जीवहा जीवकन्या च जनार्दनकुमारिका। जातुका जलपूज्या च जगन्नाथादिकामिनी।।४६।। जीर्णाङ्गी जीर्णहीना च जीमूतात्यन्तशोभिता। जामदा जमदा जृम्भा जृम्भणान्ता–दिधारिणी।।५०।। जयिनी जारजप्रीता जगदानन्दवर्द्धिनी। यमलार्जुनदर्पघ्नी यमलार्जुनभञ्जिनी।।५१।। जय त्रिजगदानन्दा जामलोल्लाससिद्धिदा। जयमाला जापसिद्धिर्जपयज्ञप्रकाशिनी।।५२।। जाम्बुवती जाम्बुवतः कन्यका जलजा जया। जवहन्त्री जगद्बुद्धिर्जगत्कर्त्री जगद्गतिः।।५३।। जीवनी जीविनी जाया जगन्माता जनेश्वरी। झंझना झङ्कमध्यस्था झणत्कारस्वरूपिणी।।५४।। झणत्झणद्वह्निरूपा झनना झल्लरीश्वरी झटिताक्षा झरा झंझा झर्झराधरकन्यका।।५५।। झणत्कारी झना झन्ता झङ्कारमालया वृता। झङ्कारी झर्झरी झिल्ली झल्लेश्वरनिवासिनी।।५६।। ञकारी ञकिराती च ञकारबीजमालिनी। ञनमोऽन्ता ञकारान्ता ञलारपरमेश्वरी।।५७।। ञान्तबीजपुत्रकरा ञेकनेत्रैककामिनी। ञकनेत्रा ञस्वरूपा ञजहा ञहरीतकी।।५८।। टुण्टुनी टङ्कहस्ता च टान्तवर्गा टलावती।। टपला टालवालाख्या टङ्कारध्वनिरूपिणी।।५६।। टलाती टाक्षरातीता

टित्कारादिकुमारिका।। टाङ्कास्त्रधारिणी टाना टामोटार्णलभाषिणी।।६०।। टङ्कारी–विधना टाका टका टकविमोहिनी। टङ्कार धरनामा हाटिवी खेचरनादिनी।।६१।। ठठङ्कारी ठाठरूपा ठकारबीजकारणा। डमरूप्रियवाद्या च डामरस्था डरीजिका।।६२।। डान्तवर्गा डमरुका डरस्था डोरडामरा। डगरार्द्धा डलातीता डदारुकेश्वरी डुता।।६३।। ढार्द्धनारीश्वरा ढामा ढक्कारी ढलना ढला। ढकस्था ढेश्वरसुता ढेमनाभावढोनना।।६४।। णोमाकान्तेश्वरी णान्तवर्गस्था णतुनावती। णनोमालङ्ककल्याणी णाक्षवी णाक्षबीजिका।।६५।। तुलसीतन्तुसूक्ष्माख्या तारल्या तैलगन्धिका। तपस्या तापससुता तारिणी तरुणी तला।।६६।। तन्त्रस्था तारकब्रह्मस्वरूपा तन्तुमध्यगा। तालभक्षा त्रिधामूर्तिस्तारका तैलभक्षिका।।६७।। तारोभ्राता तमाला च तकारा तिन्तिडी प्रिया। तपस्या तालसन्दर्भा तर्जयन्ती कुमारिका।।६८।। तोकाचारा तलोद्वेगा तक्षका तक्षकप्रिया। तक्षकालंकृता तोषा तावद्रूपा तलप्रिया।।६९।। तलास्त्रधारिणी तपा तपसां फलदायिनी। तल्वल्वप्रहरालीता तलारिगणनाशिनी।।७०।। तुला तौली तोलका च तलस्था तलपालिका। तरुणा तप्तबुद्धिस्था तप्ताप्रधारिणी तपा।।७१।। तन्त्रप्रकाशकरणी तन्त्रार्थदायिनी तथा। तुषारकिरणाङ्गी च चतुर्धावासवप्रभा।।७२।। तैलमार्गाभिसूता च तन्त्रसिद्धिफलप्रदा। ताम्रपर्णा ताम्रकेशा ताम्रपात्रप्रिया तमा।।७३।। तमोगुणप्रिया तोला तक्षकारिनिवारिणी। तोषयुक्ता तमायाची तमषोढेश्वरप्रिया।।७४।। तुलना तुल्यरुचिरा तुल्यबुद्धिस्त्रिधामतिः। तक्षभक्षा तालसिद्धिस्त्रस्तस्था त्रस्तगामिनी।।७५।। तलया तैलभा ताली तन्त्रगोपनतत्परा। तन्त्रमन्त्रप्रकाशा च त्रसरेणुस्वरूपिणी।।७६।। त्रिंशदर्शप्रिया तुष्टा तुष्टिस्तुष्टजनप्रिया। थाकारकूटदण्डीशाथदण्डीशप्रियाथवा।।७७।। थकाराक्षररूढाङ्गी थान्तवर्गार्थकारिका। थान्ता थमीश्वरी थाका थकारबीजमालिनी।।७८।। दक्षदामप्रिया दोषा दोषजालवनाश्रिता दशादशनघोरा च देवी दासप्रिया दया।।७९।। दैत्यहन्त्री परा दैत्या दैत्यानां मर्द्दिनी दिशा। दन्ता दान्तप्रिया दामा दामन्ता दीर्घकेशिका।।८०।। दशना रक्तवर्णा च दरीगृहनिवासिनी। देवमाता दुर्लभा च दीर्घाङ्गी दासकन्यका।।८१।। दशनश्रीदीर्घनेत्रा दीर्घनासा च दोषहा। दमयन्ती दलस्था च द्वेषहन्त्री दशास्थिता।।८२।। देशेषिका दिशिगता दशनास्त्रविनाशिनी। दारिद्र्यहा दरिद्रस्था दरिद्रधनदायिनी।।८३।। दन्तुरा देशभाषा च देशस्था देशनायिका। द्वेषरूपा द्वेषहन्त्री द्वेषारिगणमोहिनी।।८४।। दामोदरस्थाननादा दलानां वलदायिनी। दिग्दर्शनस्थानदर्शदर्शनप्रियवादिनी।।८५।। दामोदरप्रिया दान्ता दामोदरकलेवरा। द्रविणी द्राविणी दाशा दक्षकन्या दला दृढा।।८६।। दृढासना दासशक्तिर्द्वन्द्वयुद्धप्रकाशिनी। दधिप्रिया दधिस्था च दधिमङ्गलकारिणी।।८७।। दर्पहा दर्पदा दर्पा दर्भपुण्यप्रिया दधिः। दर्भस्था द्रुपदसुता द्रौपदी द्रुपदप्रिया।।८८।। धर्मचिन्ता धनाध्यक्षा धनेश्वरवरप्रदा। धनहा धनदा धन्वी धनुर्हस्ता धनुःप्रिया।।८९।। धरणिर्वीर्यरूपा च धनस्था धनमोहिनी। धीरा धीरप्रियाधारा धराधरणतत्परा।।९०।। धान्यदा धान्यबीजा च धर्माधर्मस्वरूपिणी। धाराधरस्था धन्या च धर्मपुञ्जनिवासिनी।।९१।। धनाढ्यप्रियकन्या च धन्यलोकैश्च सेविता। धर्मार्थकाममोक्षाङ्गी धर्मार्थकाममोक्षदा।।९२।। धराधरा धुरीणा च धवला धवलामुखी। धरा च धामरूपा च ध्रुवा ध्रौव्या

ध्रुवप्रिया।।६३।। धनेशी धारणाख्या च धर्मनिन्दाविनाशिनी। धर्मतेजोमयी धर्म्या धैर्याग्रगर्भमोहिनी।।६४।। धारणा धौतवसना धत्तूरफलभोगिनी। नारायणी नरेन्द्रस्था नारायणकलेवरा।।६५।। नरनारायणप्रीता धर्मनिन्दाविमोहिता। नित्या नापितकन्या च नयनस्था नरप्रिया।।६६।। नाम्नी नामप्रिया नारा नारायणसुता नरा। नवीननायकप्रीता नव्या नवफलप्रिया।।६७।। नवीनकुसुमप्रीता नवीनानां ध्वजानुता। नारी निम्नस्थिता निन्दा नन्दिनी नन्दकारिका।।६८।। नवपुष्पमहाप्रीता नवपुष्पसुगन्धिका। नन्दनस्था नन्दकन्या नन्दमोक्षप्रदायिनी।।६६।। नमिता नमभेदा च नाम्नार्तवनमोहिनी। नवबुद्धिप्रियानेका नाकस्था नागकन्यका।।१००।। निन्दाहीना नवोल्लासा नाकस्थानप्रदायिनी। निम्बचक्षुःस्थिता निम्बा नानक्षेक्षनिवासिनी।।१०१।। नाश्यातीता नीलवर्णा नीलवर्णा सरस्वती। नभस्था नायकप्रीता नायकप्रियकामिनी।।१०२।। नैववर्णा निराहारा निरीहाणां रजःप्रिया। निम्ननाभिप्रभाकारा नरेन्द्रहस्तपूजिता।।१०३।। नलस्थिता नलप्रीता नलराजकुमारिका। परमेश्वरी परानन्दा परापरविभेदिका।।१०४।। परमा परचक्रस्था पार्वती पर्वतप्रिया। परमेशी पर्व नानापुष्पमाल्यप्रिया परा।।१०५।। परा प्रिया प्रीतिदात्री प्रीता प्रथमकामिनी। प्रथमा प्रथमप्रीता पुष्पगन्धप्रिया परा।।१०६।। पैष्टीपानरता पीना पीनस्तनसुशोभना परमानरता पुंसां पाशहस्ता पशुप्रिया।।१०७।। पललानन्दरसिका पलालधूमरूपिणी। पलाशपुष्पसङ्काशा पलाशपुष्पमालिनी।।१०८।। प्रेमभूता पद्ममुखी पद्मरागसुमानिनी। पद्ममाला पापहरा पतिप्रेमविलासिनी।।१०६।। पञ्चाननमनोहारी पञ्चवक्त्रप्रकाशिनी। फलमूलाशना फाली फलदा फाल्गुनप्रिया।।११०।। फलनाथप्रिया फल्वी फल्वकृत्या फलोन्मुखी। फेत्कारीतन्त्रमुख्या च फेत्कारगणपूजिता।।१११।। फेरवी फेरवसुता फलोभोगोद्भवा फला। फलप्रिया फलासक्ता फाल्गुनानन्ददायिनी।।११२।। फालभोगोत्तरा फेला फुल्लाम्भोजनिवासिनी। वासुदेवग्रहस्था च वासवी वीरपूजिता।।११३।। विषभक्षा बुधसुधा ब्लुङ्कारी ब्लुवरप्रदा। बृही बृहस्पतिर्वाचा वाचस्पतिवरप्रदा।।११४।। वेदाचारी वेद्यपरा वसुवक्त्रस्थिता विभा। बोधज्ञा वौषडाख्या च वंशीवदनपूजिता।।११५।। वज्रकान्ता वक्रगतिर्बदरीवंशवर्द्धिनी। भारती भवरश्रीदा भवपत्नी भवात्मजा।।११६।। भवानी भाविनी भीमा भिषक् भाष्यातुरिस्थिता। भूर्भुवःस्वःस्वरूपा च भूशार्ता भेकनादिनी।।११७।। भीतिर्भङ्गप्रिया भङ्गा भङ्गहा भङ्गहारिणी। भर्ता भगवती भाग्या भगीरथनमस्कृता।।११८।। भगमाला भूतनाथेश्वरी भार्गवपूजिता। भृगुवंशा भीतिहरा भूमिर्भुजगहारिणी।।११६।। भालचन्द्रा भल्वबाला भवभूतिविभूतिदा। भवरस्था मत्तगतिर्मदमत्ता मदप्रिया।।१२०।। मदिराष्टदशभूजा मदिरामत्तगामिनी। मदिरासिद्धिदा मध्या मदान्तगतिसिद्धिदा।।१२१।। मीनभक्षा मीनरूपा मुद्रा मुद्गप्रिया गतिः। मुशला मुक्तिदा मूर्ता मूकीकरणतत्परा।।१२२।। मूषार्ता मृगतृष्णा च मेषभक्षणतत्परा मैथुनानन्दसिद्धिश्च मैथुनानलसिद्धिदा।।१२३।। महालक्ष्मीर्भैरवी च महेन्द्रपीठनायिका। मनःस्था माधवी मुख्या महादेवमनोरमा।।१२४।। यशोदा याचना यास्या यमराजप्रिया यमा। यशोराशिविभूषाङ्गी यतिप्रेमकलावती।।१२५।। रमणी रामपत्नी च रिपुहा रीतिमध्यगा। रुद्राणी रूपदा रूपा रूपसुन्दर–धारिणी।।१२६।। रेतःस्था रेतसः प्रीता रेतःस्थाननिवासिनी। रैन्द्रा देवसुतारेदा

रिपुवर्गान्तकप्रिया।।१२७।। रोमावलीन्द्रजननी रोमकूपजगत्पतिः। रौप्यवर्णा रौद्रवर्णा रौप्यालङ्कारभूषणा।।१२८।। रङ्गणा रङ्गरागस्था रणवह्निकुलेश्वरी लक्ष्मीर्लाङ्गललीला च लाङ्गली कुलकामिनी।।१२६।। लिपिरूपा लीढपादा लतातन्तुस्वरूपिणी। लिम्पती लेलिहा लोला लोमराप्रियसिद्धिदा।।१३०।। लौकिकी लोकसिद्धिर्हि लङ्कानाथकुमारिका। लक्षण लक्ष्मीहीना च लप्रिया लार्णमध्यगा।।१३१।। विवसा वसनावेशा विस्वत्कुलकन्यका। वातस्था वातरूपा च वेत्रमध्यनिवासिनी।।१३२।। श्मशानभूमिमध्यस्था श्मशान-साधनप्रिया। शवस्था परसिद्धार्थां शववक्षसि शोभिता।।१३३।। शरणागतपाल्या च शिवकन्या शिवप्रिया। षटचक्रभेदिनी षोढान्यासजालदृढानना।।१३४।। सन्ध्या सरस्वती सुन्द्या सूर्यगा शारदा सती। हरिप्रिया हरा हाला लावण्यस्था क्षमा क्षुधा।।१३५।। क्षेत्रज्ञा सिद्धिदात्री च अम्बिका अपराजिता। आद्या इन्द्राप्रिया ईशा उमा ऊढा ऋतुप्रिया।।१३६।। सुतुण्डा स्वरबीजान्ता हरिवेशादिसिद्धिदा। एकादशीव्रतस्था च ह्यैन्द्री ह्यौषधिसिद्धिदा।।१३७।। औपकारी अंशरूपा अस्त्रबीजप्रकाशिनी। इत्येतत्कामुकीनाथकुमारीणां सुमङ्गलम्।।१३८।। त्रैलोक्यफलदं नित्यमष्टोत्तरसहस्रकम्। महास्तोत्रं धर्मसारं धनधान्य सुतप्रदम्।।१३६।।

सर्वविद्याफलोल्लासं भक्तिमान् यः पठेत्सुधीः। स सर्वदा दिवा रात्रौ सम्भवेन्मुक्तिमार्गगः।।१४०।। सर्वत्र जयमाप्नोति वीराणां वल्लभो भवेत्। सर्वदेववशं याति वशीभूताश्च मानवाः।।१४१।। ब्रह्माण्डे ये च शंसन्ति ते तुष्टा नात्र संशयः। ये वशन्ति च भूलोके देवतुल्यपराक्रमाः।।१४२।। ते सर्वे भृत्यतुल्याश्च सत्यंसत्यं कुलेश्वर। अकस्मात्सिद्धिमाप्नोति होमेन यजनेन च ।।१४३।। जाप्येन कवचाद्येन महास्तोत्रार्थपाठतः। विना यज्ञैर्विना दानैर्विना जप्यैर्लभेत्फलम्।।१४४।। यः पठेत्स्तोत्रकं नाम चाष्टोत्तरसहस्रकम्। तस्य शान्तिर्भवेत्क्षिप्रं कन्यास्तोत्रं पठेत्ततः।।१४५।। वारत्रयप्रपाठेन राजानं वशमानयेत्। एकवारं पठेन्मत्री धर्मकामार्थमोक्षभाक्।।१४६।। त्रिदिनं प्रपेठद्विद्वान्यदि पुत्रं समिच्छति। वारत्रयक्रमेणैव वारैकक्रमतोऽपि वा।।१४७।। पठित्वा धनरत्नानामधिपः सर्ववित्तमः। त्रिजगन्मोहयेन्मन्त्री वत्सरार्द्धप्रपाठतः।।१४८।। वत्सरं व्याप्य यदि वा भक्तिभावेन यः पठेत्। चिरजीवी खेचरत्वं प्राप्य योगी भवेन्नरः।।१४६।। महाहवस्थितं वर्ण पश्यति स्थिरमानसः। महिलामण्डले स्थित्वा शक्तियुक्तः पठेत्सुधीः।।१५०।। स भवेत्साधकश्रेष्ठः क्षीरी कल्पद्रुमो भवेत्। सर्वदा यः पठेन्नाथ भावोद्गतकलेवरः।।१५१।। दर्शनात्स्तम्भनं कर्तं क्षमो भवति साधकः। जलादिस्तम्भने शक्तो वह्निस्तम्भादिसिद्धिभाक्।।१५२।। वायुवेगी महावाग्मी वेदज्ञो भवति ध्रुवम्। कविनाथो महाविद्यो बन्धकः पण्डितो भवेत्।।१५३।। सर्वदेशाधिपो भूत्वा देवपुत्रः स्वयं भवेत्। कान्तिश्रियं यशो बुद्धिं प्राप्नोति बलवान् पतिः।।१५४।। अष्टसिद्धियुतो नाथ यः पठेदर्थसिद्धये। उटजेऽरण्यमध्ये च पर्वते घोरकानने।।१५५।। वने वा प्रेतभूमौ च शरोपरि महारणे। ग्रामभङ्गे गृहे वाऽपि शून्यागारे नदीतटे।।१५६।। गङ्गागर्भे महापीठे योनिपीठे गुरोर्गृहे। धर्मक्षेत्रे देवगृहे कन्यागारे कुलालये।।१५७।। प्रान्तरे गोष्ठमध्ये वा राजादिभयहीनके। निर्भयादिस्वदेशेषु शिवलिङ्गालयेऽथवा।।१५८।। भूगर्ते चैकलिङ्गे वा ग्राम्यदेशे शिवाकुले। अश्वत्थमूले बिल्वे वा कुलवृक्षसमीपतः।।१५६।। अन्येषु सिद्धिदेशेषु कुलरूपश्च साधकः। दिव्यो वा

वीरभावस्थो पृष्ट्वा कन्याः कुलाकुलौ।।१६०।। कुलद्रव्यैश्च विविधैः सिद्धिद्रव्यैश्च साधकः। मांसीरसेन जुहुयान्मदात्तकरसेन च।।१६१।। हुतशेषं कुलद्रव्यं ताभ्यो दद्यात्सुसिद्धये। तासामुच्छिष्टमानीय जुहुयाद्वक्त्रपङ्कजे।।१६२।। घृणालज्जाविनिर्मुक्तः साधकः स्थिरमानसः। पिबेन्मांसरसं मन्त्री सदानन्दो महाबली।।१६३।। महामांसाष्टकं ताभ्यो मदिराकुम्भपूरितम्। तारमायारमावह्निजायामन्त्रं पठनत्सुधीः।।१६४।। नैवेद्यविधिदानेन पठित्वा स्तोत्रमङ्गलम्। स्वयं प्रसादं भुक्त्वा हि सर्वविद्याधिपो भवेत्।।१६५।। सूकरस्योष्ठमांसेन पीनमीनेन मुद्रया। महाशवघटेनापि दत्त्वा पठति यो नरः।।१६६।। ध्रुवं स सर्वगामी स्याद्विना होमेन पूजया। रुद्ररूपी भवेन्नित्यं महाकालात्मको भवेत्।।१६७।। सर्वपुण्यफलं नाथ कुलात्प्राप्नोति साधकः। क्षीराब्धिरत्नकोशेशो विपद्गामी च योगिराट्।।१६८।। भक्त्या नाथ दयासिन्धु-र्निष्कामत्वं लभेद् ध्रुवम्। महाशत्रुपातने च महाशत्रुभये तथा।।१६९।। वारैकपाठमात्रेण शत्रूणां वधमानयेत्। शत्रून् संहरते क्षिप्रमन्धकारं यथा रविः।।१७०।। उच्चाटने मारणे च भवेद् घोरतरे नये। पठनाद्धारणान्मर्त्यो देवा वा राक्षसादयः।।१७१।। प्राप्नुवन्त्यञ्सा शान्तिं कुमारीनामपाठतः। पुरुषो दक्षिणे बाहौ नारी वामकरे तथा।।१७२।। धृत्वा पुत्रादिसम्पत्तिं लभते नात्र संशयः। न पूजा न जपः स्नानं पुरश्चर्याविधिश्च न।।१७३।। अकस्मात्सिद्धिमाप्नोति सहस्रनामपाठतः। सर्वयज्ञफलं नाथ प्राप्नोति साधकः क्षणात्।।१७४।। मन्त्रार्थं मन्त्रचैतन्यं योनिमुद्रास्वरूपकम्। कोटिवर्षशतेनापि फलं वक्तुं न शक्यते।।१७५।। ममाज्ञया मोक्षमुपैति साधको गजान्तकं नाथ सहस्रनाम। पठेन्मनुष्यो यदि भक्तिभावतस्तदादि सर्वत्र फलोदयं लभेत्।।१७६।।

जो भक्तिमान् सुधी साधक समस्त विद्याओं का फल देने वाले, समस्त धर्मों के सार, धन, धान्य और पुत्रों के दाता, तीनों लोकों के फल को देने वाले, अष्टोत्तर सहस्रनाम कुमारीमहास्तोत्र का नित्य पाठ करता है वह दिन–रात सभी समयों में मुक्तिमार्ग का पथिक हो जाता है। सर्वत्र जय को प्राप्त करता है तथा वीरों का प्रिय हो जाता है। समस्त देवों के वश में हो जाता है और सभी मनुष्य उसके वश में हो जाते हैं। हे कुलेश्वर ! ब्रह्माण्ड में जो शासन करते हैं वे उससे सन्तुष्ट रहते हैं। जो भूलोक में देवों के समान पराक्रम वाले रहते हैं, वे सब उसके दास तुल्य हो जाते हैं। साधक कवचादि महास्तोत्र के जप, पाठ, होम और यज्ञ से अकस्मात सिद्धि प्राप्त करता है। इसके पाठ से मनुष्य बिना यज्ञ, दान और जप के अकस्मात सिद्धि को प्राप्त करता है। जो अष्टोत्तर सहस्रनाम स्तोत्र को पढ़ता है उसे शीघ्र शान्ति प्राप्त होती है। इसके बाद उसे कन्यास्तोत्र पढ़ना चाहिये। तीन बार के पाठ से साधक राजा को वश में ला सकता है। एक बार पढ़ने से साधक धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष को पाने वाला हो जाता है। विद्वान् साधक यदि पुत्र चाहता है तो उसे तीन दिन तक पाठ करना चाहिये। यह पाठ वारत्रय के क्रम से या वारैकक्रम से हो सकता है। सब कुछ जानने वाला साधक इस स्तोत्र का पाठ करके धन–रत्नों का स्वामी हो जाता है। छः महीने के पाठ से साधक तीनों लोकों को मोहित कर लेता है। जो भक्तिभाव के साथ एक वर्ष तक इसका पाठ करता है वह चिरंजीवी योगी होकर आकाश में उड़ने वाला हो जाता है। स्थिरचित्त वाला साधक महायुद्ध के वर्ण को देखता है। महिलाओं के बीच बैठ कर सुधी साधक शक्तियुक्त होकर यदि इस स्तोत्र का पाठ करें तो वह क्षीरी कल्पद्रुम के समान हो जाता है। हे नाथ ! जो भावनापूर्वक सदा इसका पाठ करता है वह साधक दर्शनमात्र से स्तम्भन करने में समर्थ होता है। जलादि के

स्तम्भन में वह समर्थ होता है और अग्नि के स्तम्भन की सिद्धि भी उसे प्राप्त हो जाती है। वह वाग्मी, वायु के समान शक्तिशाली तथा वेदज्ञ निश्चित रूप से हो जाता है। जो साधक इसे अपने अङ्ग में बाँध लेता है वह कवियों का स्वामी, महाविद्वान् और पण्डित हो जाता है। वह सम्पूर्ण देशों का स्वामी होकर स्वयं देवपुत्र हो जाता है। वह बलवानों का स्वामी होकर कान्ति, श्री, यश तथा बुद्धि को प्राप्त करता है। हे नाथ ! जो धन की सिद्धि के लिए इसका पाठ करता है वह आठों सिद्धियों से युक्त हो जाता है। कुटी में, वन में, पर्वत पर, घोर जङ्गल में, वन में, प्रेतभूमि में, युद्धभूमि में, बाणों पर, उजड़े गाँव या घर में , सूने घर में या नदी के तट पर, गङ्गा के गर्भ में, महापीठ में, योनिपीठ में या गुरु के घर में, धर्मक्षेत्र में, देवगृह में, कन्यागार में, कुलालय में, सुनसान मार्ग में, गोशाला में, राजादि के भय से रहित स्थान में, भयरहित अपने देश में, शिवालय में, भूगर्त में या एकलिङ्ग ग्राम में, अथवा श्रृगालों से व्याप्त ग्राम्य देश में, अश्वत्थ वृक्ष के नीचे, बेल वृक्ष के नीचे या कुल वृक्ष के नीचे तथा अन्य सिद्धि–देशों में कुलरूप दिव्य या वीर भाव में स्थित साधक को कुल–अकुल तथा कन्याओं से अनुज्ञा लेकर कुलद्रव्यों तथा अनेक प्रकार के सिद्धिद्रव्यों के साथ जटामांसी के रस से या मदात्तक के रस से होम करना चाहिये। सिद्धि के लिए हवन का शेष कुलद्रव्य कन्याओं को देना चाहिये। उनका जूठा लाकर अपने मुख में हवन करना चाहिये। साधक घृणा और लज्जा से रहित, स्थिरचित्त होकर आनन्दित और महाबली होकर मांसरस पान करें। तार, माया, रमा और वह्निजाया के मन्त्रबीजों को पढ़ता हुआ सुधी साधक नैवेद्य–विधिदान से स्तोत्रमङ्गल को पढ़कर उन कन्याओं का मदिरा से भरे घड़े सहित महामांसाष्टक दे। तत्पश्चात् स्वयं प्रसाद खाकर साधक समस्त विद्याओं का स्वामी हो जाता है। सूअर के थूथुन का मांस, माटी मछली का मांस, मुद्रा तथा महाशवघट भी देकर जो इसका पाठ करता है वह निश्चित रूप से होम और पूजा के बिना सर्वत्र कान्तिवाला हो जाता है। वह रुद्ररूप महाकाल के समान हो जाता है। हे नाथ ! साधक कुल से सब पुण्यफल प्राप्त कर लेता है। हे नाथ ! भक्ति से साधक क्षीराब्धि के रत्नों का स्वामी, आकाशगामी, योगिराज तथा दया का सागर होकर निश्चित रूप से निष्कामत्व को प्राप्त करता है। महाशत्रु–पातन में तथा महाशत्रुभय में एक बार पाठ से ही शत्रुओं का बध कर देता है। वह शत्रुओं का शीघ्र ही उसी प्रकार संहार कर देता है जिस प्रकार सूर्य अन्धकार को दूर कर देता है। उच्चाटन, मारण तथा अत्यन्त कठिन व्यवहार में, इसके पाठ या इसके धारण करने से मनुष्य, देव या राक्षस आदि शीघ्र ही शान्ति प्राप्त करते हैं। पुरुष दाहिने हाथ में स्त्री बायें हाथ में बाँध कर पुत्रादि सम्पत्ति को प्राप्त करते हैं इसमें कोई संशय नहीं है। इसमें न तो पूजा, न जप, न स्नान, न विधिपूर्वक पुरश्चरण करने की आवश्यकता पड़ती है बल्कि कुमारी सहस्रनाम के पाठ से अकस्मात् सिद्धि प्राप्त होती है। हे नाथ ! समस्त यज्ञों का फल साधक क्षण में प्राप्त करता है। मन्त्र का अर्थ, मन्त्र की प्राणप्रतिष्ठा, योनिमुद्रा का स्वरूप अरबों वर्षों में भी कहना सम्भव नहीं है। मेरी आज्ञा से साधक मोक्ष को प्राप्त करता है। हे नाथ ! जो मनुष्य इस सिंहरूपी कुमारी सहस्रनाम स्तोत्र का पाठ भक्तिभाव से करता है वह सर्वत्र फल की सिद्धि प्राप्त करता है।

मोक्षं सत्फलभोगिनां स्तववरं सारं परानन्ददं ये नित्यं हि मुदा पठन्ति सफलं सार्थं च चिन्ताकुलाः। तेषां वे प्रभवेद्धि कीर्तिकमला श्रीरामतुल्यो जयी कंदर्पायुततुल्य रूपगुणवान क्रोधे तु रुद्रोपमः।।१७७।।

सत्कर्मों का फल भोगने वालों के लिए मोक्षदायक, परमानन्द और साररूप इस श्रेष्ठ स्तोत्र को जो चिन्ताकुल मनुष्य अर्थसहित प्रसन्नता से नित्य पढ़ते हैं, उनकी कीर्ति और लक्ष्मी बढ़ती

हैं, वे श्रीराम के समान जयी और अयुत कन्दर्पतुल्य रूप–गुण वाले होकर क्रोध में रुद्र के समान हो जाते हैं।

इति श्रीरुद्रयामले उत्तरतन्त्रे महातन्त्रोद्दीपने
कुमारीसहस्रनामस्तोत्रं समाप्तम्।

कुमारीतर्पणात्मकस्तोत्र

श्रृणु नाथ प्रवक्ष्यामि कुमारीतर्पणादिकम्। यासां तर्पणमात्रेण कुलसिद्धिर्भवेद्–ध्रुवम्।।१।।

हे नाथ! आप सुनें, मैं आप को कुमारी तर्पणादिक बताऊँगी जिनके तर्पणमात्र से निश्चित रूप से कुलसिद्धि होती है।

कुलबालां मूलपद्मस्थिताङ्कामविहारिणीम्। शतधा मूलमन्त्रेण तर्पयामि सुतुष्टये।।२।। मूलपङ्कजयोगाङ्गीं कुमारीं श्रीसरस्वतीम्। तर्पयामि कुलद्रव्यैस्तव संतोषहेतवे।।३।। चारुमूलाधारपद्मे षड्दलान्तः प्रकाशिनीम्। श्रीबीजेन तर्पयामि भोगमोक्षाय केवलम्।।४।। स्वाधिष्ठानकुलोल्लासविष्णुसंकेतगामिनीम्। कालिकां निजबीजेन तर्पयामि कुलामृतैः।।५।। स्वाधिष्ठानाख्यपद्मस्थां महातेजोमयीं शिवाम्। सूर्याणां शीर्षमधुना तर्पयामि कुलेश्वरीम्।।६।। मणिपूराब्जमध्येषु मनोहरकलेवराम्। उमादेवीं तर्पयामि मायाबीजेन पार्वतीम्।।७।। मणिपूरांभोजमध्ये त्रैलोक्यपरिपूजिताम्। मानिनीं मलचित्तस्य सद्बुद्ध्यै तर्पयाम्यहम्।।८।। मणिपूरस्थितां रौद्रीं परमानन्दबर्द्धिनीम्। आकाशगामिनीं देवीं कुब्जिकां तर्पयाम्यहम्।।६।। तर्पयामि महादेवीं मन्त्रसाधनतत्पराम्। योगिनीं कालसन्दर्भां तर्पयामि कुलाननाम्।।१०।। शक्तिमन्त्रप्रदां रौद्रीं लोलजिह्वसमाकुलाम्। अपराजितां महादेवीं तर्पयामि कुलेश्वरीम्।।११।। महाकौलप्रियां सिद्धां रुद्रलोकसुखप्रदाम्। रुद्राणीं रुद्रकिरणां तर्पयामि मधुप्रियाम्।।१२।। षोडश स्वरसंसिद्धिं महारौरवनाशिनीम्। महामद्यपानचित्तां भैरवीं प्रणमाम्यहम्।।१३।। त्रैलोक्यवरदां देवीं श्रीबीजमालया वृताम्। महालक्ष्मीं भवैश्वर्यां तर्पयाम्यहमम्बिके।।१४।। लोकानां हितकर्त्रीं च हिताहितजनप्रियाम्। तर्पयामि रमाबीजपीठाद्यां पीठनायिकाम्।।१५।। जयन्तीं वेदवेदाङ्गमातरं सूर्यमातरम्। तर्पयामि सुधाभिश्र क्षेत्रज्ञां मायया वृताम्।।१६।। तर्पयामि कुलानन्द पारगां परमाननाम्। तर्पयाम्यम्बिकां देवीं मायालक्ष्मीं हृदि स्थिताम्।।१७।। सर्वासां चरणद्वयाम्बुजतलं चैतन्य विद्यावतां सौख्यार्थं शुभषोडशस्वरयुतां श्रीषोडशीं मङ्गलाम्। आनन्दार्णवपद्मरागखचिते सिंहासने शोभितां त्वां नित्यं परितर्पयामि सकले श्वेताब्जमध्यासने।।१८।।

ये नित्यं सुप्रतिष्ठितं च सकलस्तोत्राङ्गसंतर्पणं विद्यादाननिदानमोक्षपरमं मायामयं यान्ति ते। नो सन्ति क्षिति मण्डलेश्वरि गणास्सर्वे विपत्कारका राजानं वशयन्ति योगसकलं नित्या भवन्ति क्षणात्।।१६।।

जो साधक नित्य सुप्रतिष्ठित समस्त स्तोत्राङ्गसन्तर्पक, विद्यादान के कारण दूसरे मायामय मोक्षस्वरूप इस तर्पण स्तोत्र को प्राप्त करते हैं उनके लिए भूमण्डलेश्वरी महाकाली के गण विपत्ति या हानि पहुँचाने वाले नहीं होते। वे समस्त साधनों से सम्पन्न राजाओं को भी क्षण में वश में कर लेते हैं।

तर्पणात्मकमोक्षाख्यं पठते यदि मानुषः। अष्टैश्वर्ययुतो भूत्वा वत्सरान्मां प्रपश्यति।।२०।। महायोगी भवेन्नाथ मासादभ्यासतः प्रभो। त्रैलोक्यां क्षोभयेत्क्षिप्रं वाञ्छाफलमवाप्नुयात्।।२१।। यः पठेदेकभावेन स तर्पणफलं लभेत्। पूजाफलमवाप्नोति कुमारीस्तोत्रपाठतः।।२२।। यो न कुर्यात्कुमार्यर्चां स्तोत्रं च नित्यमङ्गलम्। स भवेत्पशुकल्पोऽत्र मृत्युस्तस्य पदेपदे।।२३।।

जो मनुष्य तर्पणात्मक मोक्षाख्य इस स्तोत्र को पढ़ता है वह आठों ऐश्वर्य से युक्त होकर एक वर्ष के बाद मुझे देखता है। हे नाथ ! एक मास के बाद वह महायोगी हो जाता है। वह शीघ्र तीनों लोकों को कँपा देता है तथा इच्छानुसार फल प्राप्त करता है। जो एक भाव से इस तर्पणस्तोत्र का पाठ करता है वह तर्पण का फल प्राप्त करता है। वह कुमारी स्तोत्र के पाठ से पूजा का फल प्राप्त करता है। जो कुमारी की पूजा नहीं करता, स्तोत्र और नित्यमङ्गल पाठ नहीं करता वह इस संसार में पशु के समान होता है तथा उसे पद–पद पर मृत्यु का सामना करना पड़ता है।

इति रुद्रयामले उत्तरखण्डे महातन्त्रोद्दीपने कुमार्युपचर्याविन्यासे
सिद्धमन्त्रप्रकरणे दिव्यभावनिर्णये भैरवीसम्वादे
कुमारीतर्पणात्मकस्तोत्रं समाप्तम्।
इति श्रीमन्त्रमहार्णवे द्वितीय खण्डे कुमारीतन्त्रे चतुर्दशस्तरङ्ग।।१४।।

पञ्चदश तरङ्ग

कालिन्दी तन्त्र

गर्गाचार्यसंहितायां माधुर्यखण्डे :

गर्गाचार्य संहिता के माधुर्य खण्ड में :

श्री नारद उवाच।

व्रजेशो हि पुराधीशो गोपो नन्दो धनी महान्। तद्गृहं मङ्गलो गत्वा कुटुम्बभरणाक्षमः। अदात्सहस्रशस्तस्मै पोषणार्थं स्वकन्यकाः।।१।। जाता मत्स्यवरात्तास्तु समुद्रे गोपकन्यकाः। तथाऽन्याश्चात्रिवाचापि पृथिव्या दोहनान्नृप।।२।। बर्हिष्मतीपुरन्ध्र्यो या जाता जातिस्मराः पराः। तथान्याप्सरसोऽभूवन्वरान्नारायणस्य च।।३।। तथा सुतलवासिन्यो वामनस्य वरात्स्त्रियः। तथा नागेन्द्रकन्याश्च जाताः शेषवरात्परात्।।४।। ताभ्यो दुर्वाससा दत्तं कृष्णापञ्चाङ्गमद्भुतम्। तेन सम्पूज्य यमुनां वव्रिरे श्रीपतिं वरम्।।५।।

नारदजी बोले : वज्र के राजा गोपेश्वरनन्द बहुत बड़े धनी थे। एक दिन अपने कुटुम्ब के भरण–पोषण में असमर्थ मङ्गल नामक एक मछुआ आया। उसने अपनी हजारों कन्याओं को पोषण के लिए नन्द को दिया। समुद्र में वे सब कन्यायें गोपकन्यायें हो गईं। हे नृप! अत्रि की वाणी से पृथिवी के दोहन द्वारा अन्य कन्यायें, बहिष्मती तथा पुरन्ध्री, पूर्वजन्म को स्मरण करने वाली हुईं। कुछ अन्य कन्याये नारायण के वर से अप्सरायें बन गईं वामन के वर से कुछ अन्य कन्याये सुतलवासिनी हो गईं। शेषावतार के वर से कुछ अन्य कन्यायें नागेन्द्र पुत्रियाँ हुईं जिन्हें दुर्वासा ऋषि ने अद्भुत कृष्णपञ्चाङ्ग दिया। उससे उन नागेन्द्र कन्याओं ने यमुना की पूजा करके नारायण को अपने पति के रूप में प्राप्त करने का वर माँगा।

एकदा श्रीहरिस्ताभिर्वृन्दारण्ये मनोहरे। यमुनानिकटे दिव्ये पुंस्कोकिल मधुव्रते।।६।। मधुपध्वनिसंयुक्ते कूजत्कोकिलसारसे। मधुमासे मन्दवायौ वसन्तलतिकावृते।।७।। दोलोत्सवं समारेभे हरिर्मदनमोहनः। कदम्बवृक्षे रहसि कल्पवृक्षमनोहरे।।८।। कालिन्दीजलकल्लोलकोलाहलसमाकुले। सद्दोलाखेलनं चक्रुस्ता गोप्यः प्रेमविह्वलाः।।९।। राधया कीर्तिसुतया चन्द्रकोटिप्रकाशया। रेजे वृन्दावने कृष्णो यथा रत्या रतीश्वरः।।१०।। एवं प्राप्ताश्रयाः सर्वाः श्रीकृष्णं नन्दनन्दनम्। परिपूर्णतमं साक्षात्तासां किं वर्ण्यते तपः।।११।।

एक समय मदनमोहन श्रीकृष्ण ने मनोहर यमुना के निकट सुन्दर कोयल और भ्रमरों की ध्वनियों से युक्त, कोयल और सारस के कूजन से व्याप्त, मधुमास में मन्दवायु के प्रवाह में कालिन्दी के जलकल्लोल से आकुल, वसन्त की लताओं से आच्छादित वृन्दावन के एकान्त में कल्पवृक्ष के समान कदम्ब वृक्ष पर उन गोपियों के साथ दोलनोत्सव प्रारम्भ किया। वे गोपियाँ प्रेमविह्वल होकर, करोड़ों चन्द्रमा के समान प्रकाशमान कीर्तिकसुता राधा के साथ दोलनक्रीड़ा करने लगीं। उस समय श्री कृष्ण भी वृन्दावन में उसी प्रकार शोभित हुये जैसे रति के साथ कामदेव। इस

प्रकार जिन सब शुभ गोपियों ने परिपूर्णतम्, नन्दनन्दन श्रीकृष्ण को साक्षात् प्राप्त किया उनके तप का क्या वर्णन किया जाय।

नागेन्द्रकन्यकाः सर्वाश्चैत्रमासे मनोहरे। बलभद्रं हरिं प्राप्ताः कृष्णातीरे तु ताः शुभाः।।१२।। इदं मया ते कथितं गोपीनां चरितं शुभम्। सर्वपापहरं पुण्यं किं भूयः श्रोतुमिच्छसि।।१३।।

वे सब नागेन्द्र कन्यायें मनोहर चैत्रमास में बलभद्र तथा श्रीकृष्ण को यमुना तट पर प्राप्त हुई। यह मैंने गोपियों के शुभ चरित्रों को बताया जो सब पापों का हरण करने वाला है। अब और पुनः तुम क्या सुनना चाहते हो?

बहुलाश्व उवाच।

यमुनायाश्च पञ्चाङ्गं दत्तं दुर्वाससा मुने। गोपीभ्यो येन गोविन्दः प्राप्तस्तद् ब्रूहि मां प्रभो।।१४।।

बहुलाश्व बोले : हे मुने, हे प्रभो ! दुर्वासा मुनि ने जो यमुना का पञ्चाङ्ग गोपियों को दिया और जिससे उन सबको गोविन्द प्राप्त हुये, उसे आप मुझे बताइये।

श्रीनारद उवाच।

अत्रैवोदाहरन्तीममितिहासं पुरातनम्। यस्य श्रवणमात्रेण पापहानिः परा भवेत्।।१५।।

श्रीनारदजी बोले : इस विषय में एक पुरातन इतिहास का उदाहरण मिलता है जिसके श्रवणमात्र से बहुत भारी पापों का भी नाश होता है।

अयोध्याधिपतिः श्रीमान्मान्धाता राजसत्तमः। मृगयां विचरन् प्राप्तः सौभरेराश्रमं शुभम्।।१६।। वृन्दावने स्थितं साक्षात्कृष्णातीरे मनोहरे। नत्वा जामातरं राजा सौभरिं प्राह मानदः।।१७।। मान्धातोवाच। भगवन्सर्ववित्साक्षात्त्वं परावरवित्तमः। लोकानां तमसान्धानां दिव्यसूर्य इवापरः।।१८।। इह लोके भवेद्राज्यं सर्वसिद्धिसमन्वितम्। अमुत्र कृष्णसारूप्यं येन स्यात्तद्वदाशुमे।।१९।।

अयोध्या के राजा, नृपोत्तम मान्धाता आखेट खेलते हुये सौभरि के शुभ आश्रम पर पहुँचे जो कि यमुना तट पर मनोहर वृन्दावन में स्थित था। सम्मान देने वाले राजा मान्धाता अपने जामाता सौभरि को नमस्कार करके बोले : हे भगवन् ! आप भूत–भविष्य सबको जाने वालों में श्रेष्ठ हैं। अज्ञानरूपी अन्धकार से अन्धे लोगों के लिये आप दिव्य द्वितीय सूर्य के समान हैं। जिस क्रिया से इस संसार में सब सिद्धियों से समन्वित राज्य प्राप्त हो तथा दूसरे जन्म में भगवान् श्रीकृष्ण का सारूप्य प्राप्त हो उसे आप शीघ्र मुझे बताइये।

सौभरिरुवाच। यमुनायाश्च पञ्चाङ्गं वदिष्यामि तवाग्रतः। सर्वसिद्धि करं शश्वत्कृष्णसारूप्यकारणम्।।२०।। यावत्सूर्य उदेति स्म यावच्च प्रतितिष्ठति। तावद्राज्यप्रदं चात्र श्रीकृष्णवशकारकम्।।२१।। कवचं च स्तवं नाम्नां सहस्रं पटलं तथा। पद्धतिं सूर्यवंशेन्द्र पञ्चाङ्गानि विदुर्बुधाः।।२२।।

सौभरि बोले : मैं आपको यमुना का पञ्चाङ्ग बताऊँगा जो सभी सिद्धियों का करने वाला तथा शीघ्र ही श्रीकृष्ण के सारूप्य का कारण है। जब तक सूर्य आता है और जब तक अस्त होता है तब तक यह राज्य देने वाला तथा श्रीकृष्ण को वश में करने वाला है। हे सूर्यवंशेन्द्र! कवच, स्तोत्र, सहस्रनाम, पटल तथा पद्धति इन्हें विद्वानों ने पञ्चाङ्ग कहा है।

तत्रादौ यमुनापटलप्रारम्भः।

आदि में यमुना पटल का प्रारम्भ।

मान्धातोवाच।

कृष्णायाः पटलं पुण्य कामदं पद्धतिं तथा। वद मां मुनिशार्दूल त्वं साक्षाज्ज्ञान–शेवधिः।।१।।

मान्धाता बोले : हे मुनिशार्दूल ! यमुना के पुण्य पटल तथा इच्छाओं को पूर्ण करने वाली पद्धति को आप मुझे बतायें क्योंकि आप साक्षात् ज्ञान की निधि हैं।

सौभरिरुवाच।

पटलं पद्धतिं वक्ष्ये यमुनाया महामते। कृत्वा श्रुत्वाऽथ जप्त्वा वा जीवन्मुक्तो भवेन्नरः।।२।। मन्त्रो यथा : ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं कालिन्दी देव्यै नमः। इत्येकादशाक्षरो मन्त्रः।

सौभरि बोले : हे महामते ! मैं आप को यमुना का पटल तथा पद्धति बता रहा हूँ, जिसका पाठ करके, जप करके और सुन करके मनुष्य जीवन्मुक्त हो जाता है। मन्त्र यह है : "ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं कालिन्दी देव्यै नमः" यह एकादशाक्षर मन्त्र है।

अस्य विधानम् :

विनियोग : ॐ अस्य श्रीकालिन्दीमन्त्रस्य सौभरिर्ऋषिः अनुष्टुप्छन्दः श्रीयमुना देवता ह्रीं बीजं श्रीं शक्तिः क्लीं कीलकं श्रीकलिन्दनन्दिनीप्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास : ॐ सौभरि ऋषये नमः शिरसि १। अनुष्टुप्छन्दसे नमो मुखे २। श्री यमुना देवतायै नमो हृदि ३। ह्रीं बीजाय नमो गुह्ये ४। श्रीं शक्तये नमः पादयोः ५। क्लीं कीलकाय नमो नाभौ ६। विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ७। इति ऋष्यादिन्यासः।

करन्यास : ॐ अंगुष्ठाभ्या नमः १। ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः २। श्रीं मध्यमाभ्यां नमः ३। क्लीं अनामिकाभ्यां नमः ४। कालिन्दीदेव्यै कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५। नमः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ६। इति करन्यासः।

हृदयादिषडङ्गन्यासः : ॐ हृदयाय नमः १। ह्रीं शिरसे स्वाहा २। श्रीं शिखायै वषट् ३। क्लीं कवचाये हुम् ४। कालिन्दीदेव्यै नेत्रत्रयाय वौषट् ५। नमः अस्त्राय फट्। इति हृदयादिषडङ्गन्यासः।

इस प्रकार न्यास करके ध्यान करें।

अथ ध्यानम् :

ॐ श्यामाम्भोजनेत्रां सघनघनरुचिं रत्नमञ्जीरकूजत्काञ्चीकेयूरयुक्तां कनकमणिमये बिभ्रतीं कुण्डले द्वे। भ्राजच्छ्रीनीलवस्त्रां स्फुरदमलचलद्धारभारां मनोज्ञां ध्याये मार्तण्डपुत्रीं तनुकिरणचयोद्दीप्तदीपाभिरामाम्।।१।।

इति ध्यायेत्। ततः पीठादौ रचिते सर्वतोभद्रमण्डले मण्डूकादिपरतत्त्वान्तपीठदेवताः संस्थाप्य ॐ मं मण्डूकादिपरतत्त्वान्तपीठदेवताभ्यो नमः इति पीठदेवताः सम्पूज्य मध्ये देवीसिंहासनं स्थापयेत्। ततः स्वर्णादिनिर्मितं यन्त्रपत्रं ताम्रपात्रे निधाय घृतेनाभ्यज्य तदुपरि दुग्धधारां जलधारां चाग्न्युत्तारणमन्त्रोच्चारपूर्वकं दत्वा स्वच्छवस्त्रेण सम्प्रोक्ष्य देव्यष्टगन्धेन कर्णिकाषोडशदलभूपुरात्मकं यन्त्रं लिखित्वा ॐ नमो भगवत्यै कलिन्दनन्दिन्यै सूर्यकन्यकायै यमभगिन्यै श्रीकृष्णप्रियायै यूथीभूतायै पद्मपीठायै नमः। इति मन्त्रेण पुष्पाद्यासनं दत्त्वा सिंहासनोपरि संस्थाप्य च प्रतिष्ठां कुर्यात्। ततः कर्णिकामध्ये श्रीकृष्णेन सह कालिन्दीं ध्यात्वा ॐ नमो भगवत्यै कलिन्दनन्दिन्यै सूर्यकन्यकायै यमभगिन्यै श्रीकृष्णप्रियायै

यूथीभूतायै पद्मपीठायै नमः। इति मन्त्रेण पुष्पाद्यासनं दत्त्वा सिंहासनोपरि संस्थाप्य च प्रतिष्ठास्वाहा। कुर्यात ततः कर्णिकामधो श्रीकृष्णेन सह कालिंदीं ध्यात्वा ॐ नमो भगवत्यै कलिंदनंदिन्यै सूर्यकन्यकायै यमभगिन्यै श्री कृष्णाप्रियायै यूथीभूतायै स्वाहा। इति मन्त्रेण वाहनादिपुष्पान्तैरुपचारैः सम्पूज्य देव्याज्ञां गृहीत्वा आवरणूपजां कुर्यात्। तथा चः पुष्पाञ्जलिमादाय मूलमुच्चार्य ॐ सविन्मये परे देवि परामृतरसप्रिये। अनुज्ञां देहि यमुने परिवारर्चनाय मे।।१।। इति पठित्वा पुष्पाञ्जलिं दद्यात्। इत्याज्ञां गृहीत्वा आवरण पूजामारभेत्।

इससे ध्यान करें। इसके बाद रचित पीठादि पर सर्वतोभद्रमण्डल में मण्डूकादि परतत्त्वान्त पीठदेवताओं को स्थापित करके "ॐ मं मण्डूकादि परतत्त्वान्त पीठदेवताभ्यो नमः" इससे पीठदेवताओं की पूजा करके मध्य में देवी सिंहासन स्थापित करें। इसके बाद स्वर्णादि से निर्मित यन्त्र पत्र को ताम्रपात्र में रखकर घी से उस पर अभ्यङ्ग करके अग्न्युत्तारण मन्त्रोपचारणपूर्वक उस पर दूध तथा जल की धारा डाल कर स्वच्छ वस्त्र से पोंछ कर देव्यष्टगन्ध से कर्णिका, षोडशदल, भूपुरात्मक यन्त्र को लिखकर "ॐ नमो भगवत्यै कलिन्दनन्दिन्यै सूर्यकन्यायै यम भगिन्यै श्रीकृष्णप्रियायै यूथीभूतायै पद्मपीठायै नमः" इस मन्त्र से पुष्पाद्यासन देकर सिंहासन पर स्थापित करके उसमें प्राणप्रतिष्ठा करें। इसके बाद कर्णिका के मध्य में श्रीकृष्ण के साथ कालिन्दी का ध्यान करके "ॐ नमो भगवत्यै कलिन्दनन्दिन्यै सूर्यकन्ययायै यमभगिन्यै श्रीकृष्णप्रियायै यूथीभूतायै स्वाहा" इस मन्त्र से वाहनादि से लेकर पुष्पाञ्जलिदानान्त उपचारों के साथ पूजा करके देवी की आज्ञा लेकर आवरण की पूजा करें और पुष्पाञ्जलि देकर मूलमन्त्र का उच्चारण करके "ॐ संविन्मये परे देवि परामृत रसिप्रिये। अनुज्ञां देहि यमुने परिवारार्चनाय मे।" यह पढ़कर पुष्पाञ्जलि देवें। इस प्रकार आज्ञा लेकर आवरण पूजा आरम्भ करें। (यमुनापूजन यन्त्र देखिये चित्र ३१)।

ततः पूज्यपूजकयोरन्तरालं प्राची। तदनुसारेण अन्या दिशः प्रकल्प्य प्राचीक्रमेण षोडशदलेषु।

इसके बाद पूज्य और पूजक के अन्तराल को पूर्व दिशा मानकर तदनुसार अन्य दिशाओं की कल्पना करके पूर्वादि क्रम से षोडश दलों में :

ॐ जाह्नव्यै नमः[१]। जाह्नवीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः १। इति सर्वत्र। ॐ विरजायै नमः[२]। विरजाश्रीपा० २। ॐ कृष्णायै नमः[३]। कृष्णाश्रीपा० ३। ॐ चन्द्रभागायै नमः[४]। चन्द्रभागाश्रीपा० ४। ॐ सरस्वत्यै नमः[५]। सरस्वतीश्रीपा० ५। ॐ गोमत्यै नमः[६]। गोमतीश्रीपा० ६। ॐ कौशिक्यै नमः[७]। कौशिकीश्रीपा० ७। ॐ वेण्यै नमः वेणीश्रीपा० ८। ॐ सिन्धवे नमः[९]। सिन्धुश्रीपा० ९। ॐ गोदावर्यै नमः[१०]। गोदावरी श्रीपा० १०। ॐ वेदस्मृत्यै नमः[११]। वेदस्मृतिश्रीपा० ११।। ॐ वेत्रवत्यै नमः[१२]। वेत्रवतीश्रीपा० १२। ॐ शतद्रवै नमः[१३]। शतद्रुश्रीपा० १३। ॐ सरयवै नमः[१४]। सरयूश्रीपा० १४। ॐ ऋषिकुल्यायै नमः[१५]। ऋषिकुल्याश्रीपा० १५। ॐ ककुद्मत्यै नमः[१६]। ककुद्मतीश्रीपा० १६।

इति षोडशदेवताः पूजयेत्। ततः पुष्पाञ्जलिमादाय मूलमुच्चार्य ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले। भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम्।।१।। इति पठित्वा पुष्पाञ्जलिं च दत्त्वा विशेषार्घाद्बिन्दुं निक्षिप्य पूजितास्तर्पिताः सन्तु इति वदेत्। इति प्रथमावरणम्।।१।।

इन मन्त्रों से सोलह देवताओं की पूजा करें। इसके बाद पुष्पाञ्जलि लेकर मूल का उच्चारण करके "ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले। भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम्।" यह पढ़ कर पुष्पाञ्जलि देकर विशेष अर्घ से विन्दु फेंक कर "पूजितास्तर्पिताः सन्तु" यह कहें। इति प्रथमावरण।।१।।

ततः भपराभ्यन्तरे चतुर्दिक्षु पूर्वादिक्रमेण।

इसके बाद भूपुर के भीतर चारों दिशाओं में पूर्वादि क्रम से :

ॐ वृन्दावनाय नमः[१७]। वृन्दावनश्रीपा० १। ॐ गोवर्द्धनाय नमः[१८]। गोवर्द्धनश्रीपा० २। ॐ वृन्दायै नमः[१९]। वृन्दाश्रीपा० ३। ॐ तुलस्यै नमः[२०]। तुलसीश्रीपा० ४।

इति चतुरः पूजयित्वा पुष्पाञ्जलिं दद्यात्। इति द्वितीयावरणम्।।२।।

इससे चारों की पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवें। इति द्वितीयावरण।।२।।

ततो भूपुराद्वहिः पूर्वादिक्रमेण।

इसके बाद भूपुर के बारह पूर्वादि क्रम से :

ॐ लं इन्द्राय नमः[२१] १। ॐ रं अग्नये नमः[२२] २। ॐ मं यमाय नमः[२३] ३। ॐ क्षं निर्ऋत्ये नमः[२४] ४। ॐ वं वरुणाय नमः[२५] ५। ॐ यं वायवे नमः[२६] ६। ॐ कुं कुबेराय नमः[२७] ७। ॐ हं ईशानाय नमः[२८] ८। इन्द्रेशानयोर्मध्ये ॐ आं ब्राह्मणे नमः[२९] ९। वरुणनिर्ऋतिमध्ये ॐ ह्रीं अनन्ताय नमः[३०] १०।

इति दशदिक्पालान् पूजयेत्। ततत्समीपे।

इससे दश दिक्पालों की पूजा करें। फिर उनके समीप :

ॐ वं वज्राय नमः[३१] १। ॐ शं शक्तये नमः[३२] २। ॐ दं दण्डाय नमः[३३] ३। ॐ खं खड्गाय नमः[३४] ४। ॐ पां पाशाय नमः[३५] ५। ॐ अं अंकुशाय नमः[३६] ६। ॐ गदायै नमः[३७] ७। ॐ त्रिं त्रिशूलाय नमः[३८] ८। ॐ पं पद्माय नमः[३९] ९। ॐ चं चक्राय नमः[४०] १०।

इत्यस्त्राणि पूजयेत्। इत्यावरणपूजां धूपादिनमस्कारान्तं सम्पूज्य जपं कुर्यात्। अस्य पुरश्चरणमेकादशलक्षजपः तत्तद्दशांशेन होमतर्पणमार्जनब्राह्मणभोजनानि कुर्यात्। एवं कृते मन्त्रः सिद्धो भवति। मनस ईप्सितं ददाति।

इससे अस्त्रों की पूजा करें। इस प्रकार आवरण पूजा और धूपदान से नमस्कार पर्यन्त पूजा करके जप करें। इसका पुरश्चरण ग्यारह लाख जप है। तत्तद्दशांश से होम, तर्पण, मार्जन और ब्राह्मण भोजन करें। ऐसा करने पर मन्त्र सिद्ध होता है और मनोवांछित फल देता है।

जप्त्वैकादाशलक्षाणि मन्त्रसिद्धिर्भवेद्ध्रुवि। जनैः प्रार्थ्याश्च ये कामाः सर्वे प्राप्याः स्वतश्च ते।।१।। यावत्सम्पूर्णतां याति पुरश्चरणमेव हि। तावद्भवेद्ब्रह्मचारी जपेन्मौनव्रती द्विजः।।२।। यवभोजी भूमिशायी पत्रभुग्जितमानसः। कामं क्रोधं तथा लोभं मोहं द्वेषं विसृज्य सः।।३।। भक्त्या परमया राजन् वर्तमानस्तु देशिकः। ब्राह्मे मुहूर्त उत्थाय ध्यात्वा देवीं कलिन्दजाम्।।४।। अरुणोदयवेलायां नद्यां स्नानं समाचरेत्। मध्याह्ने चापि सन्ध्यायां सन्ध्यावन्दनतत्परः।।५।। समाप्ते नियमे राजन् कालिन्दीतीरमास्थितः। दशलक्षं ब्राह्मणानां सपुत्राणां महात्मनाम्।।६।। पूजयित्वा गन्धपुष्पैर्दत्त्वा तेभ्यः सुभोजनम्। वस्त्रभूषणसौवर्णपात्राणि प्रस्फुरन्ति च।।७।। दक्षिणाश्च शुभा दद्यात्ततः सिद्धिर्भवेत्खलु। कुरु त्वं नियमं सर्वं किं भूयः श्रोतुमिच्छसि।।८।।

ग्यारह लाख मन्त्र का जप करने पर मन्त्र की सिद्धि होती है। इसके बाद मनुष्य जो कामना करता है वह सब स्वतः प्राप्त होता है। जब तक पुरश्चरण पूर्ण न हो तब तक साधक ब्रह्मचारी मौनव्रती होकर जप करे। यव का भोजन करें। भूमि पर सोयें, पत्रों का भोजन करें। मन को वश में रखे। काम, क्रोध, लोभ, मोह तथा द्वेष को छोड़कर वह परम भक्ति से वर्तमान ब्राह्म

मुहूर्त में उठकर कालिन्दी देवी का ध्यान करके अरुणोदय बेला में नदी में स्नान करे। मध्याह्न तथा सायंकाल भी सन्ध्या–वन्दन में तत्पर रहे। हे राजन्! नियम के समाप्त हो जाने पर कालिन्दी के किनारे रहता हुआ दश लाख सपुत्र ब्राह्मणों की पूजा करके गन्ध–पुष्पों के साथ उन्हें उत्तम भोजन देकर वस्त्र, आभूषण, पात्र और दक्षिणा देवे। इसके बाद निश्चित रूप से सिद्धि प्राप्त होती है। हे राजन्! आप सब नियमों को करें। पुनः आप क्या सुनना चाहते हैं ?

इत्येकादशाक्षरयमुनामन्त्रपटलं समाप्तम्।

यमुना कवच

मान्धातोवाच।

यमुनायाः कृष्णराज्ञाः कवचं सर्वतोऽमलम्। देहि मह्यं महाभाग धारयिष्याम्यहं सदा।।१।।

मान्धाता बोले : हे महाभाग! श्रीकृष्ण की रानी यमुना के सर्वप्रकार से पवित्र कवच को आप मुझे दें। मैं उसे सदा धारण करूँगा।

सौभरिरुवाच।

यमुनायाश्च कवचं सर्वरक्षाकरं नृणाम्। चतुःपदार्थदं साक्षाच्छृणु राजन्महामते।।२।।

सौभरि बोले : हे महामते राजन्! यमुना का कवच मनुष्यों की सर्वप्रकार से रक्षा करने वाला तथा धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष इन चारों पदार्थों को साक्षात् प्रदान करने वाला है।

कृष्णां चतुर्भुजां श्यामां पुण्डरीकदलेक्षणाम्।रथस्थां सुन्दरीं ध्यात्वा धारयेत्कवचं ततः।।३।। स्नातः पूर्वमुखो मौनी कृतसन्ध्यः कुशासने। कुशैर्बद्धशिखो विप्रः पठेद्वै स्वस्तिकासनः।।४।। यमुना मे शिरः पातु कृष्णा नेत्रद्वयं सदा। श्यामा भ्रूभङ्गदेशं च नासिकां नाकवासिनी।।५।। कपोलौ पातु मे साक्षात्परमानन्दरूपिणी! कृष्णवामांससम्भूता पातु कर्णद्वयं मम।।६।। अधरौ पातु कालिन्दी चिबुकं सूर्यकन्यका। यमस्वसा कन्धरं च हृदयं मे महानदी।।७।। कृष्णप्रिया पातु पृष्ठं तटिनी मे भुजद्वयम्। श्रोणीतटं च सुश्रोणी कटिं मे चारुदर्शना।।८।। ऊरुद्वयं तु रम्भोरूर्जानुनी अधिमेदिनी। गुल्फौ रासेश्वरी पातु पादौ पापापहारिणी।।९।। अन्तर्बहिरधश्चोर्ध्वं दिशासु विदिशासु च। समन्तात्पातु जगतः परिपूर्णतमप्रिया।।१०।।

इदं श्रीयमुनायाश्च कवचं परमाद्भुतम्। दशवारं पठेद्भक्त्या निर्धनो धनवान् भवेत्।।११।। त्रिभिर्मासैः पठेद्धीमान् ब्रह्मचारी मिताशनः। सर्वराज्याधिपत्यं च प्राप्नोति नात्र संशयः।।१२।। दशोत्तरशतं नित्यं त्रिमासावधि भक्तितः। यः पठेत्प्रयतो भूत्वा तस्य किंकिं न जायते।।१३।। यः पठेत्प्रातरुत्थाय सर्वतीर्थ फलं लभेत्। अन्ते व्रजेत्परं धाम गोलोकं योगिदुर्लभम्।।१४।।

श्री यमुना के इस परम अद्भुत कवच को जो दश बार भक्तिपूर्वक पढ़ता है वह धनवान् हो जाता है। तीन मास तक मिताहारी और ब्रह्मचारी रहते हुये जो इसका पाठ करता है वह सर्वराज्यों का आधिपत्य प्राप्त कर लेता है इसमें कोई संशय नहीं है। जो प्रतिदिन दश के वृद्धिक्रम से भक्तिपूर्वक तीन मास तक जितेन्द्रिय होकर इस कवच का पाठ करता है उसे क्या नहीं प्राप्त हो सकता। अर्थात् उसे सब कुछ प्राप्त हो जाता है। जो प्रातः उठ कर इसका पाठ करता है

उसे सब तीर्थों का फल प्राप्त होता है। अन्त में योगियों के लिए भी दुर्लभ गोलोक धाम को वह प्राप्त होता है।

इति श्रीमद्गर्गाचार्यसंहितायां श्रीमाधुर्यखण्डे श्रीसौभरिमान्धातृ
संवादे श्रीयमुनाकवचं समाप्तम्।

यमुना स्तव

मान्धातोवाच।

यमुनायाः : स्तवं दिव्यं सर्वसिद्धिकरं परम्। सौभरे मुनिशार्दूल वद मां कृपयात्वरन्।।१।।

मान्धाता बोले : हे मुनिशार्दूल सौभरे ! आप सब सिद्धियों को करने वाले दिव्य स्तोत्र का मुझे शीघ्र उपदेश करें।

श्रीसौभरिरुवाच।

मार्तण्डकन्यकायास्तु स्तवं शृणु महामते। सर्वसिद्धिकरं भूमौ चातुर्वर्ग्यफलप्रदम्।।२।।

श्री सौभरि बोले : हे महामते, आप सब सिद्धियों के दाता तथा धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष चारों फलों के दाता सूर्यकन्या यमुना के दिव्य स्तोत्र को सुनें :

ॐ कृष्णवामांसभूतायै कृष्णायै सततं नमः। नमः श्रीकृष्णरूपिण्यै कृष्णे तुभ्यं नमोनमः।।३।। यः पापपङ्काम्बुकलङ्ककुत्सितः कामीकुधीः सत्सु कलिं करोति हि। वृन्दावनं धाम ददाति तस्मै नदन्मिलिन्दारिकलिन्दनन्दिनी।।४।। कृष्णे साक्षात्कृष्णरूपा त्वमेव वेगावर्ते वर्तते मत्स्यरूपी। ऊर्मावूर्मौ कूर्मरूपी सदा ते बिन्दौबिन्दौ भाति गोविन्ददेवः।।५।। वन्दे लीलावर्ती त्वां सघनघननिभां कृष्णवामांसभूतां वेगं वै वैरजाख्यं सकलजलचयं खण्डयन्तीं बलात्स्वात्। छित्त्वा ब्रह्माण्ड मारात्सुरनगरनगान् गण्डशैलादिदुर्गान् भित्त्वा भूखण्डमध्ये तटिनि वृतवतीमूर्तिमालां प्रयान्तीम्।।६।। दिव्यं कौ नामधेयं श्रुतमथ यमुने दण्डयत्यद्रितुल्यं पापव्यूहं त्वखण्डं वसतु मम गिरां मण्डलेऽनुक्षणं तत्। दण्ड्यांश्चाकार्यदण्ड्यान्सकृदपि वचसा खण्डितं यद्गृहीतं भ्रातुर्मार्तण्डसूनोररतिपरिदृढस्ते प्रचण्डोऽतिदण्डः।।७।। रज्जुर्वा विषयान्धकूपतरणे पापाखुदर्वीकरीवेण्युष्णिक् च विराजमूर्तिशिरसो मालास्ति वा सुन्दरी। धन्यं भाग्यमतः परं भुवि नृणां यत्रादिकृद्वल्लभा गोलोकेप्यतिदुर्लभाति सुभगा भात्यद्वितीया नदी।।८।। गोपीगोकुलगोपकेलिकलिते कालिन्दि कृष्णप्रभे त्वत्कूले जललोलगोलविचलत्कल्लोलकोलाहलः। त्वत्कान्तारकुतूहलालिकुलकृज्झङ्कारके–काकुलः कूजत्कोकिलसंकुलो व्रजलताल‌ङ्कारभृत्पातु माम्।।९।। भवन्ति जिह्वास्तनु रोमतुल्या गिरो याद भूसिकता इवासुः। तदप्यलं यान्ति न ते गुणान्तं सन्तो महान्तः किल शेषतुल्याः।।१०।। कलिन्दगिरिनन्दिनीस्तव उषस्ययं वा परः श्रुतश्च यदि पाठितो भुवि तनोति सन्मङ्गलम्। जनोपि यदि धारेयत्किल पठेच्च यो नित्यशः स याति परमं पदं निजनिकुञ्जलीलावृतम्।।११।।

इति श्रीमद्गर्गाचार्यसंहितायां श्रीमाधुर्यखण्डे श्रीसौभरि
मान्धातृ सम्वादे श्रीयमुनास्तवराजः समाप्तः।

यमुना सहस्रनाम स्तोत्र

मान्धातोवाच : नाम्नां सहस्रं कृष्णायाः सर्वसिद्धिकरं परम्। वद मां मुनिशार्दूल त्वं सर्वज्ञो निरामयः।।१।।

मान्धाता बोले : हे मुनिशार्दूल ! आप सर्वज्ञ और निरामय हैं। आप मुझे सर्वसिद्धिकारक परम श्रेष्ठ यमुना जी के सहस्रनाम स्तोत्र का उपदेश करें।

सौभरिरुवाच। नाम्नां सहस्रं कालिन्द्या मान्धातस्ते वदाम्यहम्। सर्वसिद्धिकरं दिव्यं श्रीकृष्णवशकारकम्।।२।।

सौभरि बोले : हे मान्धाता ! मैं आपको कालिन्दी का सहस्रनाम बतलाता हूँ जो कि सर्वासिद्धिकारक, दिव्य और श्रीकृष्ण को वश में करनेवाला है:

विनियोग : ॐ अस्य श्रीकालिन्दीसहस्रनामस्तोत्रमन्त्रस्य सौभरिर्ऋषिः श्रीयमुनादेवता अनुष्टुप्छंदः मायाबीजमिति कीलकं रमाबीजमिति शक्तिः श्रीकलिन्दनन्दिनीप्रसादसिद्ध्यर्थे पाठे विनियोगः।

अथ ध्यानम् :

ॐ श्यामामम्भोजनेत्रां सघनघनरुचिं रत्नमञ्जीरकूजत्काञ्चीकेयुरयुक्तां कनकमणिमये बिभ्रतीं कुण्डले द्वे। भ्राजच्छीनीलवस्त्रां स्फुरदमलचलद्धारभारां मनोज्ञां ध्यायेन्मार्तण्डपुत्रीं तनुकिरणचयोद्दीप्तदीपाभिरामाम्।।३।। ॐ कालिन्दी यमुना कृष्णा कृष्णरूपा सनातनी। कृष्णवामांससम्भूता परमानन्दरूपिणी।।४।। गोलोकवासिनी श्यामा वृन्दावनविनोदिनी। राधासखी रासलीला रासमण्डलमण्डिता।।५।। निकुञ्जमाधवी वल्ली रङ्गवल्लीमनोहरा। श्रीरासमण्डली भूता यूथीभूता हरिप्रिया।।६।। गोलोकतटिनी दिव्या निकुञ्जतलवासिनी। दीर्घोर्मिवेगगम्भीरा पुष्पपल्ववासिनी।।७।। घनश्यामा मेघमाला बलाका पद्ममालिनी। परिपूर्णतमा पूर्णा पूर्णब्रह्मप्रिया परा।।८।। महावेगवती साक्षान्निकुञ्ज द्वारनिर्गता। महानदी मन्दगतिर्विरजा वेगभेदिनी।।९।। अनेकब्रह्माण्डगता ब्रह्मद्रवसमाकुला। गङ्गा मिश्रा निर्मलाभा निर्जला सरितां वरा।।१०।। रत्नबद्धोभयतटा हंसपद्मादिसंकुला। नदी निर्मलपानीया सर्वब्रह्माण्डपावनी।।११।। वैकुण्ठपरिखीभूता परिखा पापहारिणी। ब्रह्मलोकागता ब्राह्मी स्वर्गा स्वर्गनिवासिनी।।१२।। उल्लसन्तीं प्रोत्पतन्ती मेरुमालामहोज्ज्वला। श्रीगङ्गाम्भः शिखरिणी गण्डशैलविभेदिनी।।१३।। देशान्पुनन्ती गच्छन्ती महती भूमिमध्यगा। मार्तण्डतनुजा पुण्या कलिन्दगिरिनन्दिनी।।१४।। यमस्वसामन्दहासा सुद्विजा रचिताम्बरा। नीलाम्बरा पद्ममुखी चरन्ती चारुदर्शना।।१५।। रम्भोरूः पद्मनयना माधवी प्रमदोत्तमा। तपश्चरन्ती सुश्रोणी कुजन्नूपुरमेखला।।१६।। जलस्थिता श्यामलाङ्गी खाण्डवाभा विहारिणी। गाण्डीविभाषिणी वन्या श्रीकृष्णाम्बरमिच्छति।।१७।। द्वारकागमना राज्ञी पट्टराज्ञी परं गता। महाराज्ञी रत्नभूषा गोमतीतीरचारिणी।।१८।। स्वकीया स्वमुखा स्वार्था स्वीयकार्यार्थ साधिनी। नवलाङ्गाऽबला मुग्धाः वराङ्गा वामलोचना।।१९।। अज्ञातयौवनाऽदीना प्रभा कान्तिर्द्युतिश्छविः। सोमाभा परमा कीर्तिः कुशला ज्ञातयौवना।।२०।। नवोढा मध्यगा मध्या प्रौढिः प्रौढा प्रगल्भका। धीराऽधीरा धैर्यधरा ज्येष्ठा श्रेष्ठा कुलाङ्गना।।२१।। क्षणप्रभा

चञ्चलार्चा विद्युत्सौदामिनी तडित् । स्वाधीनपतिका लक्ष्मीः पुष्टा स्वाधीनभर्तृका ।।२२।। कलहान्तरिता भीरुरिच्छा प्रोत्कण्ठिताकुला। कशिपुस्था दिव्यशयया गोविन्द-हृतमानसा ।।२३।। खण्डिता खण्डशोभाढ्या विप्रलब्धा- भिसारिका। विरहार्ता विरहिणी नारी प्रोषितभर्तृका ।।२४।। मानिनी मानदा प्राज्ञा मन्दारवनवासिनी। झङ्कारिणी झणत्कारी रणन्मञ्जीरनूपुरा ।।२५।। मेखला मेखलाकाञ्ची श्रीकाञ्ची काञ्चनामयी। कंचुकी कंचुकमणिः श्रीकण्ठाढ्या महामणिः ।।२६।। श्रीहारिणी पद्महरा मुक्ता मुक्ताफलार्चिता। रत्नकङ्कणकेयूरा स्फुरदंगुलिभूषणा ।।२७।। दर्पणा दर्पणीभूता दुष्टदर्पविनाशिनी। कम्बुग्रीवा कम्बुधरा ग्रैवेयकविराजिता ।।२८।। ताटङ्किनी दन्तधरा हेमकुण्डलमण्डिता। शिखाभूषा भालपुष्पा नासामौक्तिकशोभिता ।।२६।। मणिभूमिगता देवी रैवताद्रिविहारिणी। वृन्दावनगता वृन्दा वृन्दारण्यनिवासिनी ।।३०।। वृन्दावनलता माध्वी वृन्दारण्यविभूषणा। सौन्दर्यलहरी लक्ष्मीर्मधुरातीर्थवासिनी ।।३१।। विश्रान्तवासिनी काम्या रम्या गोकुलवासिनी। रमणस्थलशोभाढ्या महावनमहानदी ।।३२।। प्रणता प्रोन्नता पुष्टा भारती भारतार्चिता। तीर्थराजगतिर्गात्रा गङ्गासागरसङ्गमा ।।३३।। सप्ताब्धिभेदिनी लोला सप्तद्वीप गता बलात्। लुठन्ती शैलभिद्यन्ती स्फुरन्ती वेगवत्तरा ।।३४।। काञ्चनी काञ्चनीभूमिः काञ्चनीभूमिभाविता। लोकदृष्टिर्लोकलीला लोकालोकाचलार्चिता ।।२५।। शैलोद्गता स्वर्गगता स्वर्गार्च्या स्वर्गपूजिता। वृन्दावनवनाध्यक्षा रक्षा कक्षा तटी पटी ।।३६।। असिकुण्डगता कच्छा स्वच्छन्दोच्छलितादिजा। कुहरस्था रयप्रस्था प्रस्था शान्तेतरातुरा ।।३७।। अम्बुच्छटासीकराभा दुर्दरा दुर्दरीधरा। पापांकुशा पापसिंही पापद्रुमकुठारिणी ।।३८।। पुण्यसङ्घा पुण्यकीर्तिः पुण्यदा पुण्यवर्द्धिनी मधोर्वननदी मुख्या तुला तालवनस्थिता ।।३६।। कुमुद्वननदी कुब्जा कुमुदाम्भोजवर्द्धिनी। प्लवरूपा वेगवती सिंहसर्वादिवाहिनी ।।४०।। वहुली बहुदा बह्वी बहुला वनवन्दिता। राधा कुण्डकुलाराध्या कृष्णा कुण्डजलाश्रिता ।।४१।। ललिता कुण्डगा घण्टा विशाखा कुण्डमण्डिता। गोविन्दकुण्डनिलया गोपकुण्डतरङ्गिणी ।।४२।। श्रीगङ्गा मानसी गङ्गा कुसुमाम्बरभाविनी। गोवर्धिनी गोधनाढ्या मयूरी वरवर्णिनी ।।४३।। सारसी नीलकण्ठाभा कूजत्कोकिलपोतकी। गिरिराजप्रभूर्भूरिरातपत्रातपत्रिणी। गोवर्द्धनाङ्का गोदन्ती दिव्यौषधिनिधिः श्रुतिः। पारदी पारदमयी नारदी शारदी भृतिः ।।४५।। श्रीकृष्णचरणांकस्था कामा कामवनाश्रिता। कामाटवीनन्दिनी च नन्दग्राममहीधरा ।।४६।। बृहत्सानुद्युतिः प्रोता नन्दीश्वरसमन्विता। काकली कोकिलमयी भाण्डारकुशकौशला ।।४७।। लोहार्गलप्रदाकाराका श्मीरवसनावृता। बर्हिषदी शोणपुरी शूरक्षेत्रपुराधिका ।।४८।। नानाभरणशोभाढ्या नानावर्ण समन्विता। नानानारीकदम्बाढ्या नानावस्त्रविराजिता ।।४६।। नानालोकगता वीचिर्नानाजलसमन्विता। स्त्रीरत्नं रत्ननिलया ललनारत्नरञ्जिनी ।।५०।। रङ्गिणी रङ्गभूमाढ्या रङ्गा रङ्गमहीरुहा। राजविद्या राजगुह्या जगत्कीर्तिर्घनाघना ।।५१।। विलोल घण्टा कृष्णाङ्गी कृष्णदेहसमुद्भवा। नीलपङ्कजवर्णाभा नीलपङ्कजहारिणी ।।५२।। नीलाभा नीलपद्माढ्या नीलाम्भोरुहवासिनी। नागवल्ली नागपुरी नागवल्लीदलार्चिता ।।५३।। ताम्बूलचर्चिता चर्चा मकरन्दमनोहरा। सकेसरा केसरिणी केशपाशाभिशोभिता ।।५४।। कज्जलाभा कज्जलाक्ता कज्जलीकलितांजना। अलक्तचरणा ताम्रा लालाताम्र-

कृताम्बरा।।५५।। सिन्दूरिता लिप्तवाणी सुश्रीः श्रीखण्डमण्डिता। पाटीरपङ्कवसना जटामांसीरुचाम्बरा।।५६।। आगर्यगुरुगन्धाक्ता तगराश्रितमारुता। सुगन्धितैलरुचिरा कुन्तलालिः सुकुन्तला।।५७।। शकुन्तलाऽपांसुला च पातिव्रत्यपरायणा। सूर्यकोटिप्रभा सूर्यकन्या सूर्यसमुद्भवा।।५८।। कोटिसूर्यप्रतीकाशा सूर्यजा सूर्यनन्दिनी। संज्ञा संज्ञासुता स्वेच्छा संज्ञामोदप्रदायिनी।।५९।। संज्ञापुत्री स्फुरच्छाया तपन्ती तापकारिणी। सावर्ण्यानुभवा वेदी वडवा सौख्यदायिनी।।६०।। शनैश्चरानुजा कीला चन्द्रवंशविवर्द्धिनी। चन्द्रवंश–वधूश्चन्द्रा चन्द्रावलिसहायिनी।।६१।। चन्द्रावती चन्द्रलेखा चन्द्रकान्तानुगांशुका। भैरवी पिङ्गलाशङ्की लीलावत्यागरीमयी।।६२।। धनश्रीर्देवगान्धारी स्वर्मणिर्गुणवर्द्धिनी। व्रज–मल्लार्यन्धकारी विचित्रा जयकारिणी।।६३।। गान्धारी मञ्जरी टोडी गुर्ज्जर्यासावरी जया। कर्णाटी रागिणी गौडी वैराटी गारवाटिका।।६४।। चतुश्चन्द्रकला हेरी तैलङ्गी विजयावती। ताली तालस्वरा गानक्रिया मात्राप्रकाशिनी।।६५।। वैशाखी चंचला चारुर्माचारी घुंघटी घटा। वैरागरी सोरठीशा कैदारी जलधारिका।।६६।। कामाकरश्रीकल्याणी गौडकल्याणमिश्रिता। रामसञ्जीविनी हेला मन्दारी कामरूपिणी।।६७।। सारङ्गी मारुति होढा सागरी कामवादिनी। वैभासी मङ्गला चान्द्री रासमण्डलमण्डना।।६८।। कामधेनुः कामलता कामदा कमनीयका। कल्प वृक्षस्थली स्थूला क्षुधा सौधनिवासिनी।।६९।। गोलोकवासिनी सुभ्रूर्यष्टिभृद्द्वारपालिका। शृङ्गारप्रकरा शृङ्गा स्वच्छा शय्योपकारिका।।७०।। पार्षदा सुमुखीसेव्या श्रीवृन्दावनपालिका। निकुञ्जभृत्कुञ्जपुञ्जा गुञ्जाभरण भूषिता।।७१।। निकुञ्जवासिनी प्रेष्यो गोवर्द्धनतटीभवा। विशाखा ललिता रामा नीरुजा मधुमाधवी।।७२।। एकानेकसखी शुक्ला सखीमध्या महामनाः श्रुतिरूपा ऋषिरूपा मैथिलाः कौशलाः स्त्रियः।।७३।। अयोध्यापुरवासिन्यो यज्ञसीताः पुलिन्दकाः। रमा वैकुण्ठवासिन्यः श्वेतद्वीपसखीजनाः।।७४।। ऊर्ध्ववैकुण्ठवासिन्यो दिव्या जितपदाश्रिताः। श्रीलोकाचलवासिन्यः श्रीसख्यः सागरोद्भवाः।।७५।। दिव्या अदिव्या दिव्याङ्गा व्याप्तस्त्रिगुणवृत्तयः। भूमिगोप्यो देवनार्यो लता औषधिवीरुधः।।७६।। जालन्धर्यः सिन्धुसुताः पृथु बर्हिष्मतीभवाः। दिव्याम्बरा अप्सरसः सौतला नागकन्यकाः।।७७।। परं धाम परं ब्रह्मपौरुषा प्रकृतिः परा। तटस्था गुणभूर्गीता गुणागुणामयी गुणा।।७८।। चिद्धना सदसन्माला दृष्टिर्दृश्या गुणाकरा। महत्तत्त्वमहङ्कारों मनो बुद्धिः प्रचेतना।।७९।। चेतो वृत्तिः स्वान्तरात्मा चतुर्द्धाचतुरक्षरा। चतुर्व्यूहश्चतुमूर्तिर्व्योमवायुरदोजलम्।।८०।। मही शब्दो रसो गन्धः स्पर्शो रूपमनेकधा। कर्मेन्द्रियं कर्ममयी ज्ञानं ज्ञानेन्द्रियं द्विधा।।८१।। त्रिधाधिभूतमध्यात्ममधिदैवमधिस्थितम्। ज्ञानशक्तिः क्रियाशक्तिः सर्वदेवा–धिदेवता।।८२।। तत्त्वसङ्घा विराण्मूर्तिर्धारणा धारणामयी। श्रुतिः समृतिर्वेदमूर्तिः संहिता गर्गसंहिता।।८३।। पाराशरी सैव सृष्टिः पारहंसी विधातृका। याज्ञवल्की भागवती श्रीमद्भगवतार्चिता।।८४।। रामायणमयी रम्या पुराणपुरुषप्रिया। पुराणमूर्तिः पुण्याङ्गी शास्त्रमूर्तिर्महोन्नता।।८५।। रामायणमयी रम्या पुराणपुरुषप्रिया। पुराणमूर्तिः पुण्यांगी शास्त्रमूर्तिर्महोन्नता।।८५।। मनीषा धिषणा बुद्धिर्वाणी धीः शेमुषी मतिः। गायत्री वेदसावित्री ब्रह्माणी ब्रह्मलक्षणा।।८६।। दुर्गापर्णा सती सत्या पार्वती चण्डिकाम्बिका। आर्या दाक्षायणी दाक्षी दक्षयज्ञविघातिनी।।८७।। पुलोमजा शचीन्द्राणी

वेदी देववरार्पिता। वायुनाधारिणी धन्या वायवी वायुवेगगा।।८८।। यमानुजा संयमनी संज्ञाच्छाया स्फुरद्द्युतिः। रत्नदेवी रत्नवृन्दा तारा तरणिमण्डला।।८६।। रुचिः शान्तिः क्षमा शोभा दया दक्षा द्युतिस्त्रपा। तलतुष्टिर्विभा पुष्टिः संतुष्टि पुष्टभावना।।६०।। चतुर्भुजा चारुनेत्रा द्विभुजाष्टभुजा बला। शङ्खहस्ता पद्महस्ता चक्रहस्ता गदाधरा।।६१।। निषङ्गधारिणी चर्मखड्ग पाणिर्धनुर्धरा। धनुष्टंकारिणी योद्ध्री दैत्योद्भटविनाशिनी।।६२।। रथस्था गरुडारूढा श्रीकृष्णहृदयस्थिता। वंशीधरा कृष्णवेषा स्रग्विणी वनमालिनी।।६३।। किरीटधारिणी याना मन्दमन्दगतिर्गतः। चन्द्रकोटिप्रतीकाशा तन्वी कोमलविग्रहा।।६४।। भैष्मी भीष्मसुता भीमा रुक्मिणी रुक्मिरूपिणी। सत्यभामा जाम्बवती सत्या भद्रा सुदक्षिणा।।६५।। मित्रवृन्दा सखीवृन्दा वृन्दारण्यध्वजोर्ध्वगा। शृङ्गारकारिणी शृङ्गा शृङ्गभूः शृङ्गदाशुगा।।६६।। तितिक्षेक्षा स्मृतिः स्पर्धा स्पृहा श्रद्धा स्वनिर्वृतिः। ईशा तृष्णामिधा प्रीतिर्हिता याञ्चाक्लमा कृषिः।।६७।। आशा निद्रा योगनिद्रा योगिनी योगदा युगा। निष्ठा प्रतिष्ठा समितिः सत्त्वप्रकृतिरुत्तमा।।६८।। तमः प्रकृतिर्दुर्मर्षा रजः प्रकृतिरानतिः। क्रियाऽक्रियाऽकृतिर्ग्लानिः सात्त्विक्याध्यात्मिकी वृषा।।६६।। सेवा शिखामणिर्वृद्धिराहूतिः सुमतिर्द्युभूः। रज्जुर्द्विदाम्नी षड्वर्गा संहिता सौख्यदायनी।।१००।। मुक्तिः प्रीक्तिर्देशभाषा प्रकृतिः पिङ्गलोद्भवा। नागभावा नागभूषा नागरी नगरी नगा।।१०१।। नौर्नौका भवनौर्भाव्या भवसागरसेतुका। मनोमयी दारुमयी सैकती सिकतामयी।।१०२।। लेख्या लेप्या मणिमयी प्रतिमा हेमनिर्मिता। शैली शैलभवा शीला शीकारामा चलाचला।।१०३।। अस्थिता स्वस्थिता तूली वैदिकी तान्त्रिकी विधिः। सन्ध्या सन्ध्याभ्रवसना वेदसन्धिः सुधामयी।।१०४।। सायन्तनी शिखावेध्या सूक्ष्मा जीवकला कृतिः। आत्मभूता भाविताऽण्वी प्रह्वा कमलकर्णिका।।१०५।। नीराजनी महाविद्या कन्दली कार्यसाधिनी। पूजा प्रतिष्ठा विपुला पुनन्ती पारलौकिकी।।१०६।। शुक्लशुक्तिर्मौक्तिका च प्रतीतिः परमेश्वरी। विराजोष्णिग् विराट् वेणी वेणुका वेणुनादिनी।।१०७।। आवर्तिनी वार्तिकदा वार्त्ता वृत्तिर्विमानगा। सासाढ्यरासिनी सासी रासमण्डलमण्डली।।१०८।। गोपगोपीश्वरी गोपी गोपी गोपालवन्दिता। गोचारिणी गोपनदी गोपानन्दप्रदायिनी।।१०६।। पशव्यदा गौपसेव्या कोटिशो गोगणावृता। गोपानुगा गोपवती गोविन्दपदपादुका।।११०।। वृषभानुसुता राधा श्रीकृष्णवशकारिणी। कृष्णप्राणाधिका शश्वद्रसिका रसिकेश्वरी।।१११।। अवटोदा ताम्रपर्णी कृतमाला विहायसी। कृष्णा वेणी भीमरथी तापी रेवा महापगा।।११२।। वैयासकी च कावेरी तुङ्गभद्रा सरस्वती। चन्द्रभागा वेत्रवती गोविन्दपदपादुका।।११३।। गोमती कौशिकी सिन्धुर्बाणगङ्गातिसिद्धिदा। गोदावरी रत्नमाला गङ्गा मन्दाकिनी बला।।११४।। स्वर्णदी जाह्नवी वेला वैष्णवी मङ्गलालया। बाला विष्णुप्रदीपोक्ता सिन्धुसागरसङ्गता।।११५।। गङ्गासागर शोभाढ्या सामुद्री रत्नदा धुनी। भागीरथी स्वर्धुनी भूः श्रीवामनपदच्युता।।११६।। लक्ष्मी रमा रामणीया भार्गवी विष्णु वल्लभा। सीतार्चिर्जानकी माता कलङ्करहिता कला।।११७।। कृष्णपादाब्जसम्भूतासर्वा त्रिपथगामिनी। धरा विश्वम्भराऽनन्ता भूमिर्धात्री क्षमामयी।।११८।। स्थिरा धरित्री धरणिरुर्वी शेषफणस्थिता। अयोध्या राघवपुरी कौशिकी रघुवंशजा।।११६।। मथुरा माथुरी पन्था यादवी ध्रुवपूजिता। माया पूर्बिल्वनीला

द्वार्गङ्गाद्वारविनिर्गता।।१२०।। कुशावर्त मयी ध्रौव्या ध्रुवमण्डलमध्यगा। काशी शिवपुरी शेषा विन्ध्या वाराणसी शिवा।।१२१।। अवन्तिका देवपुरी प्रोज्ज्वलोज्जयिनी जिता। द्वारावती द्वारकामा कुशभूता कुशस्थली।।१२२।। महापुरी सप्तपुरी नन्दिग्रामस्थलस्थिता। शास्त्रग्रामशिलादित्या शंभलग्राममध्यगा।।१२३।। वंश गोपालिनी क्षिप्रा हरिमन्दिरवर्त्तिनी। बर्हिष्मती हस्तिपुरी शक्रप्रस्थनिवासिनी।।१२४।। दाडिमी सैंधवी जम्बुः पौष्करी पुष्करप्रसूः। उत्पलावर्तगमना नैमिषी नैमिषावृता।।१२५।। कुरुजाङ्गलभूः काली हैमवत्यर्बुदी बुधा। शूकरक्षेत्रविदिता श्वेतवाराहधारिता।।१२६।। सर्वतीर्थमयी तीर्था तीर्थानां कीर्तिकारिणी। हारिणी सर्वदोषाणां दायिनी सर्वसम्पदाम्।।१२७।। वर्द्धिनी तेजसां साक्षात्द्गर्भवासनिकृंतनी। गोलोकधामधनिनी। निकुञ्जनिजमञ्जरी।।१२८।। सर्वोत्तमा सर्वपुण्या सर्वसौन्दर्यशृङ्खला। सर्वतीर्थोपरिगता सर्वतीर्थाधिदेवता।।१२६।।

नाम्नां सहस्रं कालिन्द्याः कीर्तिदं कामदं परम्। महापापहरं पुण्यमायुर्वर्द्धनमुत्तमम्।।१३०।। एकवारं पठेद्रात्रौ चोरेभ्यो न भयं भवेत्। द्विवारं प्रपठेन्मार्गे दस्युभ्यो न भयं क्वचित्।।१३१।। द्वितीयां तु समारभ्य पठेत्पूर्णावधि द्विजः। दशवारमिदं भक्त्या ध्यात्वा देवीं कलिन्दजाम्।।१३२।। रोगी रोगत्प्रमुच्येत बद्धो मुच्येत बन्धनात्। गुर्विणी जनयेत्पुत्रं विद्यार्थी पंडितो भवेत्।।१३३।। मोहनं स्तम्भनं शश्वद्वशीकरणमेव च। उच्चाटनं घातनं च शोषणं दीपनं तथा।।१३४।। उन्मादनं तापनं च निधिदर्शनमेव च। यद्यद्वांछति चित्तेन तत्तप्राप्नोति मानवः।।१३५।। ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चस्वी राजन्यो जगतीपतिः। वैश्यो निधिपतिर्भूयाच्छूद्रः श्रुत्वा तु निर्मलः।।१३६।। पूजाकाले तु यो नित्यं पठेत भक्तिभावतः। लिप्यते न स पापेन पद्मपत्रमिवाम्भसा।।१३७।।

यह कालिन्दी सहस्रनाम परम कीर्तिदायक और कामनाओं को पूर्ण करने वाला है। यह महापापों का हरण करने वाला है तथा पुण्यकारक और उत्तम आयु को बढ़ाने वाला है। रात में एक बार यदि मनुष्य पाठ करे तो उसे चोर का भय नहीं रहेगा। मार्ग में दो बार यदि इसका पाठ करे तो कहीं भी डाकुओं का भय नहीं रहेगा। यमुना देवी का ध्यान करके जो द्विज भक्तिपूर्वक द्वितीया से प्रारम्भ करके पूर्णावधि पर्यन्त इसका दश बार पाठ करता है वह यदि रोगी हो तो रोग से मुक्त हो जाता है। यदि बन्धन में हो तो बन्धन से मुक्त हो जाता है। यदि गर्भिणी स्त्री हो तो पुत्र को जन्म देती है। यदि विद्यार्थी हो तो वह पण्डित हो जाता है। मोहन, स्तम्भन, वशीकरण, उच्चाटन, मारण, शोषण, तथा दीपन, उन्मादन, तापन और निधि का दर्शन, आदि जो–जो मन में चाहता है मनुष्य वह सब प्राप्त कर लेता है। ब्राह्मण ब्रह्मवर्चस्वी, क्षत्रिय संसार का स्वामी तथा वैश्य धन का स्वामी हो जाता है। शूद्र इसे सुन कर पवित्र हो जाता है। पूजा के समय जो भक्तिभाव से नित्य इसका पाठ करता है वह जल में कमलपत्र के समान पाप से लिप्त नहीं होता।

शतवारं पठेन्नियं वर्षावधिमतः परम्। पटलं पद्धतिं कृत्वा स्तवं च कवचं तथा।।१३८।। सप्तद्वीपमहीराज्यं प्राप्नुयान्नात्र संशयः। निष्कारणं पठेद्यस्तु यमुनाभक्तिसंयुतः।।१३६।। त्रैवर्ग्यमेत्य सुकृती जीवन्मुक्तो भवेदिह।।१४०।। निकुञ्जलीलाललितं मनोहरं कलिन्दजाकूल लताकदम्बकम्। वृन्दावनोन्मत्तमिलिन्दशब्दितं व्रजेत्स गोलोकमिदं पठेच्च यः।।१४१।।

जो पटल और पद्धति के साथ स्तोत्र और कवच का पाठ करके एक वर्ष तक सौ बार नित्य पाठ करता है वह सातों द्वीपों का राज्य प्राप्त करता है, इसमें कोई संशय नहीं है। जो निष्कारण यमुना की भक्ति से युक्त होकर इसका पाठ करता है वह पुण्यात्मा धर्म, अर्थ और काम को प्राप्त करके इस संसार में जीवनमुक्त हो जाता है। जो इस यमुना सहस्रनाम का पाठ करता हो वह निकुंजो की लीला से सुन्दर, मनोहर लताओं से घिरे यमुना के किनारे वृन्दावन में, जहाँ भौंरों का शब्द गूँज रहा है, उस गोलोक को प्राप्त करता है।

इति श्रीमद्गर्गाचार्यसंहितायां श्रीमाधुर्यखण्डे श्रीसौभरिमान्धातृ सम्वादे श्रीयमुनासहस्रनामस्तोत्रं समाप्तम्।

इति श्रीमन्त्रमहार्णवे द्वितीयखण्डे यमुनातन्त्रे पञ्चदशस्तरंगः।।१४२।।

षोडश तरङ्ग

मिश्र तन्त्र (प्रथम)

आसुरीमहाकल्पप्रयोग

मन्त्रमहोदधौ : वक्ष्याम्यथर्ववेदोक्तमासुरीविधिमुत्तमम्। तारादिरासुरीमन्त्रो दशोत्तर–शताक्षरः।।१।। मन्त्रो यथा :

मन्त्र महोदधि में कहा गया है : मैं अथर्ववेदोक्त उत्तम आसुरी विधि को बता रहा हूँ। एक सौ दश अक्षरों का तारादि आसुरी मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ कटुके कटुकपत्रे सुभगे आसुरि रक्ते रक्तवाससे अथवर्णस्य दुहिते अघोरे अघोरकर्मकारिके अमुकस्य गतिं दहदह उपविष्टस्य गुदं दहदह सुप्तस्य मनो दहदह प्रबुद्धस्य हृदयं दहदह हनहन पचपच तावद्देह तावत्पच यावन्मे वशमायाति हुं फट् स्वाहा। इति दशोत्तरशताक्षरो मन्त्रः।

अस्य विधानम् :

विनियोग : अस्य आसुरीमन्त्रस्य अङ्गिरा ऋषिः विराट्छन्दः आसुरी देवता ॐ बीजं स्वाहा शक्तिः हुं कीलकं ममाभीष्टसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास : अङ्गिरोऋषये नमः शिरसि १। विराट्छन्दसे नमो मुखे २। आसुरीदेवतायै नमो हृदि ३। ॐ बीजाय नमो लिङ्गे ४। स्वाहाशक्तये नमः पादयोः ५। हुं कीलकाय नमो नाभौ ६। विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे। इति ऋष्यादिन्यासः।

करन्यास : ॐ कटुके कटुकपत्रे हुँ फट् स्वाहा अंगुष्ठाभ्यां नमः १। सुभगे आसुरि हुंफट्स्वाहा तर्जनीभ्या नमः २। रक्ते रक्तवाससे हुंफट् स्वाहा मध्यमाभ्यां नमः ३। अथवर्णस्य दुहिते हुं फट् स्वाहा अनामिकाभ्यां नमः ४। अघोरे अघोर कर्मकारिके हुं फट् स्वाहा कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५। अमुकस्य गतिं दहदह उपविष्टस्य गुदं दहदह सुप्तस्य मनो दहदह प्रबुद्धस्य हृदयं दहदह हनहन पचपच तावद्दह तावत्पच यावन्मे वशमायाति हुंफट् स्वाहा करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ६। इति करन्यासः।

हृदयादिषडङ्गन्यास : ॐ कटुके कटुकपत्रे हुंफट्स्वाहा हृदयाय नमः १। सुभगे आसुरि हुंफट्स्वाहा शिरसे स्वाहा २। रक्ते रक्तवाससे हुंफट्स्वाहा शिखायै वषट् ३। अथर्वणस्य दुहिते हुंफट्स्वाहा कवचाय हुँ ४। अघोरे अघोरकर्मकारिके हुंफट्स्वाहा नेत्रत्रयाय वौषट् ५। अमुकस्य गतिं दहदह उपविष्टस्य गुदं दहद्रह सुप्तस्य मनो दहदह प्रबुद्धस्य हृदयं दहदह हनहन पचपच तावद्दह तावत्पच यावन्मे वशमायाति हुंफट्स्वाहा अस्त्राय फट् ६। इति हृदयादिषडङ्गन्यासः।

इस प्रकार न्यास करके ध्यान करें :

अथ ध्यानम् :

ॐ शरच्चन्द्रकान्तिर्वराभीतिशूलं सृणिं हस्तपद्मैर्दधानाम्बुजस्था विभूषाम्बरा–ढ्याहियज्ञोपवीता मुदेथर्वपुत्री करोत्वासुरी नः।।१।।

इति ध्यात्वा मानसोपचारैः सम्पूज्य जपं कुर्यात्। अस्य पुरश्चरणमयुत जपः। धृताक्तराजिकया दशांशतो होमः। एवं कृते मन्त्रः सिद्धो भवति। एतस्मिन्सिद्धे मन्त्रे मन्त्री प्रयोगान् साधयेत्। अयुतं प्रजपेन्मन्त्रं जुहुयात्तद्दशांशतः। घृताक्तराजिकां वह्नौ ततः सिद्धो भवेन्मनुः। सिद्धे मन्त्रे प्रकुर्वीत प्रयोगानिष्टसिद्धये।।१।।

इस प्रकार ध्यान करके मानसोपचार से पूजा करके जप करें। इसका पुरश्चरण दश हजार जप है। घी से लिप्त राई से जप का दशांश होम करना चाहिये। ऐसा करने पर मन्त्र सिद्ध होता है। इसके सिद्ध होने पर साधक प्रयोग को सिद्ध करे। दश हजार मन्त्र का जप और उसका दशांश होम करना चाहिये। तब जाकर मन्त्र सिद्ध होता है। मन्त्र के सिद्ध होने पर इष्टसिद्धि के लिए प्रयोगों करना चाहिये।

पञ्चाङ्गामासुरीं[१-२] मन्त्री गृहीत्वा मन्त्रयेच्छतम्। तया धूपितमात्मानं यो जिघ्रेत्स वशो भवेत्। मध्वाक्तामासुरीं[३] हुत्वा सहस्रं वशयेज्जगत्।।२।।

साधक राइ का पञ्चाङ्ग लेकर उसे सौ बार अभिमन्त्रित करके उससे अपने शरीर को धूपित करें। इसके बाद उसे सूंघेगा वह वश में हो जायेगा। मधु से युक्त राई का होम करके मनुष्य हजारों को वश में कर सकता है।

अन्यः कल्पः : राजिकाप्रतिमां कृत्वा दक्षांघ्रेर्मस्तकावधि। अष्टोत्तरशतं खण्डान् जुहुयादसिना कृतान्।।३।। नार्याः प्रतिकृतेर्वामपादादिहवनं चरेत्। एवं कुर्यात्स सप्ताहं रजींधनचितेऽनले[४]।।४।। स सपत्नोऽपि[५] मृत्यन्तं दासो जायेत मन्त्रिणः। स्त्रीलिङ्गोह[६]: प्रकर्तव्यो मन्त्रे नारीवशीकृतौ।।५।।

अन्य कल्प : राई से प्रतिमा बनाकर दाहिने पैर से सिर तक तलवार से उसके एक सौ आठ टुकड़े करके होम करें। नारी की प्रतिमा हो तो बाएँ पैर से मस्तक तक टुकड़े करके हवन करें। इस प्रकार राई की समिधा से प्रदीप्त अग्नि में एक सप्ताह तक होम करने से शत्रु मृत्यु पर्यन्त साधक का दास हो जाता है। नारी के वशीकरण में स्त्रीलिङ्ग की कल्पना करनी चाहिये।

अन्यः कल्पः : कटुतैलान्वितां राजीं निम्बपत्रयुतां रिपोः। नामयुङ्मनुना हुत्वा ज्वरिणं कुरुते रिपुम्।।६।। एवं राजीं सलवणां हुत्वा स्फोटो भवेदरेः। अर्कदुग्धाक्तत्द्धोमान्नेत्रे नाशयते रिपोः।।७।।

अन्य कल्पः कड़वा तेल तथा निम्बपत्र से युक्त राई को शत्रु के नाम से इस मन्त्र से होम करने से शत्रु ज्वरपीड़ित हो जाता है। इसी प्रकार नमक के साथ राई का होम करने से शत्रु को फोड़े होते हैं। मदार का दूध मिला कर राई का होम करने से शत्रु के नेत्रों का नाश होता है।

अन्यः कल्पः : साधको राजिकां हुत्वा ब्राह्मणं वशयेद्ध्रुवम्। क्षत्रियं[७] तु गुडाभ्यक्तां

---

१. पञ्चाङ्गा : मूलशाखापत्रपुष्पफलान्विताम्।

२. आसुरीं : राजिकाम्।

३. मध्यवक्तां : खण्डघृतक्षौद्रयुताम्।

४. राजिकाकाष्ठदीप्ते चिताग्नौ।

५. सपत्नोपि शत्रुरपि देहान्तपर्यतं दासः स्यात् किमुतान्यः।

६. स्त्रींङ्गोहः नार्या वशीकरणे प्रतिमाहेमादौ मन्त्रे स्थितानाममुकस्येति स्थाने देवदत्तस्योपविष्टस्येत्यादीनां षष्ठयन्तानां पदानां उपविष्टायाः सुप्ताया इत्याद्यूहो विधेयः।

७. गुडयुतां राजीं हुत्वा क्षत्रिये वशयेत् दध्याक्तां हुत्वा वैश्यं होममानमष्टोत्तरशतं सर्वत्र।

वैश्यं दधियुतां च ताम्।।८।।शूद्रं लवणसंयुक्तां हुत्वा तां साष्टकं शतम्। आसुरीसमिधं हुत्वा मध्यवक्तां लभते निधिम्।।६।।

अन्य कल्प : साधक राई का होम करके निश्चयरूप से ब्राह्मण को वश में कर लेता है। गुड़ से मिश्रित राई के होम से क्षत्रिय को वश में कर लेता है। दही से मिश्रित राई के होम से वैश्य को वश में कर लेता है। नमक से युक्त राई का एक सौ आठ बार होम करने से शूद्र को वश में कर लेता है। मधु से सिक्त राई की समिधा से होम करने से मनुष्य निधि पाता है।

अन्यः कल्पः : तोयपूर्णे घटे मन्त्री राजिकापल्लवान्विते। आवाह्य तां पूजयित्वा शतं मूलेन मन्त्रयेत्।।१०।। तेनाभिषिक्तं मनुजमलक्ष्मी राधयो रुजः। उपसर्गाः[1] पलायन्ते परित्यज्यातिदूरतः।।११।।

अन्य कल्प : राई के पत्तों से युक्त जल से पूर्ण घड़े में आवाहन करके मूलमन्त्र से सौ बार उसे अभिमन्त्रित करें। उस जल से स्नान कराये गये मनुष्य की अलक्ष्मी, रोग, मानसिक बाधायें सब दूर भाग जाते हैं।

अन्यः कल्पः : असुरीकुसुमं शीतं[2] प्रियंगु नागकेसरम्। मनःशिला च तगरमेतत्सर्वं विचूर्णितम्।।१२।। शताभिमन्त्रितं साध्यमूर्ध्नि क्षिप्तं वशंवदम्[3]।।१३।।

अन्य कल्प : राई के फूल, चन्दन, प्रियंगु, नागकेसर, मैनसिल, तगर यह सब महीन पीस कर सौ बार इसे अभिमन्त्रित करके साध्य के सिर पर छोड़ने से वह वश में हो जाता है।

अन्यः कल्पः : निम्बकाष्ठसमिद्धेग्नावासुरीं सर्षपान्विताम्। अष्टोत्तरशतं हुत्वा सप्ताहं दक्षिणामुखः।।१४।। विदध्यादचिराच्छत्रुं सूर्यसूनुगृहातिथिम्[4]।।१५।। किं कुर्यान्नृपतिः क्रुद्धः किं कुर्यू रिपुवोऽखिलाः। कुद्धः कालोपि किं कुर्यादासुरी चेदुपासिता।।१६।।

अन्य कल्प : नीम की समिधाओं से प्रदीप्त अग्नि में सरसों के साथ राई का एक सौ आठ बार दक्षिण ओर मुख करके होम करने से साधक शत्रु को शीघ्र ही यमराज का अतिथि बना देता है। उस साधक का कुद्ध नृपति क्या करेगा, सभी कुद्ध शत्रु भी क्या करेंगे, कुद्ध काल भी क्या करेगा जिसने आसुरी महाकल्प की सिद्धि की है।

ग्रंथाननेकानालोक्य मन्त्रा गुप्ततमा मया। हिताय सुधियां ख्याता विस्तरादुपरम्यते।।१७।। इत्यासुरीमहाकल्पः।

अनेक ग्रन्थों को देखकर अत्यन्त गुप्त मन्त्रों को सज्जनों के लिए मैनें प्रकट किया है। अधिक विस्तार नहीं कर रहा हूँ।

कालरात्रि मन्त्रप्रयोग ।

मन्त्र महोदधि में मन्त्र यह है :

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं काह्लेश्वरि सर्वजनमनोहरे सर्वमुखस्तंभिनि सर्व राजवशङ्करि सर्वदुष्टनिर्दलिनि सर्वस्त्रीपुरुषाकर्षिणी बंदिशृंङ्खलास्त्रोटय त्रोटय सर्वशत्रून् भञ्जय भञ्जय द्वेष्टृन् निर्दलय निर्दलय सर्वं स्तंभ्य स्तंभय मोहनास्त्रेण द्वेषिणा उच्चाटय उच्चाटय सर्वं वशं कुरु कुरु स्वाहा देहि देहि सर्वं कालरात्रि कामिनि गणेश्वरि नमः।

---

१ उपसर्गा उपद्रवाः

२ शीतं चन्दनम्ः।

३ वशंवदं वशकृतम्ः।

४ सूर्यसूनुगृहातिथिं यमार्तिथिं मृतमित्यर्थः।

यह एक सौ तैंतीस अक्षरों का मन्त्र है।

अस्य विधानम् :

विनियोग : अस्य कालरात्रिमन्त्रस्य दक्ष ऋषिः जगतीच्छन्दः अलर्क–निवासिनीकालरात्रिर्देवता क्रीं बीजं मायाराज्ञीति शक्तिः ममाभीष्ट सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास : ॐ दक्षऋषये नमः शिरसि १। जगतीच्छन्दसे नमो मुखे २। अलर्कनिवासिनीकालरात्रिदेवतायै नमा हृदि ३। क्रींबीजाय नमो लिंगे ४। मायाराज्ञीतिशक्तये नमः पादयोः ५। विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ६। इति ऋष्यादिन्यासः।

करन्यास : अंगुष्ठाभ्यां नमः १। ऐं तर्जनीभ्यां नमः २। ह्रीं मध्यमाभ्यां नमः ३। क्लीं अनामिकाभ्यां नमः ४। श्रीं कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५। इति पञ्चांङ्गुलीषु कराङ्गन्यासः।

हृदयादिषडङ्गन्यास : ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं काह्लेश्वरि सर्वजनमनोहरे सर्वमुखस्तम्भिनि हृदयाय नमः १। सर्वराजवशङ्करि सर्वदुष्टनिर्दलिनि सर्वस्त्रीपुरुषाकर्षिणि शिरसे स्वाहा २। वन्दिशृङ्खलस्त्रोटय त्रोटय सर्वशत्रून् भञ्जय भञ्जय शिखायै वषट् ३। द्वेष्टॄन् निर्दलय निर्दलय सर्वं स्तम्भ्य स्तम्भय कवचाय हुं ४। मोहनास्त्रेण द्वेषिण उच्चाटय उच्चाटय सर्वं वशं कुरु कुरु स्वाहा नेत्रत्रयाय वौषट् ५। देहि देहि सर्व कालरात्रि कामिनि गणेश्वरि नमः अस्त्राय फट् ६। इति हृदयादिषडङ्गन्यासः।

इस प्रकार न्यास करके ध्यान करें।

अथ ध्यानं :

ॐ उद्यन्मार्तण्डकान्तिं विगलितकबरीं कृष्णवस्त्रावृताङ्गीं दण्डं[1] लिङ्गं कराब्जैर्वरमथ भुवनं संदधानां त्रिनेत्राम्। नानाकल्पैर्विभासं[2] स्मितमुखकमलां सेवितां देवसंघैर्मायाराज्ञीं मनोभूशरविकलतनूमाश्रयें[3] कालरात्रिम्।।१।।

इति ध्यात्वा मानसोपचारैः सम्पूजयेत्। ततः पीठादौ रचिते सर्वतोभद्रमण्डले मण्डूकादिपरतत्त्वान्तपीठदेवताः संस्थाप्य ॐ मं मण्डूकादि परतत्त्वान्तपीठदेवताभ्यो नमः इति सम्पूज्य नव पीठशक्तीः पूजयेत्। पूर्वादिक्रमेण।

इससे ध्यान करके मानसोपचारों से पूजा करें। इसके बाद पीठादि में रचित सर्वतोभद्रमण्डल में मण्डूकादि परतत्वान्त पीठदेवताओं को स्थापित करके "ॐ मं मण्डूकादि परतत्वान्त पीठदेवताभ्यो नमः" इससे पूजा करके नव पीठशक्तियों की पूजा करें। पूर्वादि क्रम से :

ॐ जयायै नमः १। ॐ विजयायै नमः २। ॐ अजितायै नमः ३। ॐ अपराजितायै नमः ४। ॐ नित्यायै नमः ५। ॐ विलासिन्यै नमः ६। ॐ दौग्ध्र्यै नमः ७। ॐ अघोरायै नमः ८। मध्यै ॐ मङ्गलायै नमः ९।

इति पूजयेत्। ततो भूर्जपत्रे बिन्दुत्रिकोणषट्कोणवृत्ताष्टदलवृत्तषोडशदलवृत्तं च कार्यपरत्वेनं[4] लेखन्यादिद्वारा लिखित्वा तस्योपरि त्रिरेखात्मकभूपुरं विनिर्माय ॐ

---

१ दण्डवरे दक्षयोः लिङ्गभुवने वामयोः भुवनं ब्रह्माण्डम्।

२ नानाकल्पैर्विभासं विविधाभरणसमूहशोभिताम्।

३ मनोभूशरविकलतनूं कामबाणव्याकुलशरीराम्।

४ तद्यंत्रं विलिखेद्भूर्जे क्षीरद्रोः फलकेपि वा। शान्तये त्वष्टगन्धेन लेखन्या चम्पकोत्थया। कचूरागुरुकर्पूररोचनारक्तचन्दनम्। कुंकुम चन्दनं वापि कस्तूरीत्यष्टगन्धकम्। सिन्दूरहिंगुलाभ्यां च वश्याय विलिखेत्सुधीः। सारसोद्भवलेखन्या स्तम्भने कोकिलच्छदैः। हरितालहरिद्राभ्यां मारणे वायसच्छदैः। धत्तूरभानुनिर्गुंडीखराश्वमहिषासृजा। एवं विलिखिते यन्त्रे कुर्यादावर्णार्चनम्।

कालरात्रियोगपीठात्मने नमः। इति मन्त्रेण पुष्पाद्यासनं दत्त्वा पीठमध्ये संस्थाप्य प्रतिष्ठां च कृत्वा पुनर्ध्यात्वा बिन्दौ मूलेन मूर्तिं प्रकल्प्य आवहनादिपुष्पान्तैरुपचारैः सम्पूज्य आवरणपूजां कुर्यात्।

इससे पूजा करें। इसके बाद भोजपत्र पर विन्दु, त्रिकोण, षट्कोण, वृत्त, अष्टदल, वृत्त, षोडशदल, वृत्त बनाकर कार्यपरक लेखनी के द्वारा लिख कर उसके ऊपर त्रिरेखात्मक भूपुर बनाकर "ॐ कालरात्रि योगपीठात्मने नमः" इस मन्त्र से पुष्पाद्यासन देकर पीठ के बीच में उसे संस्थापित करके उसमें प्राणप्रतिष्ठा करें। पुनः ध्यान करके बिन्दु में मूलतन्त्र से मूर्ति की कल्पना करके आवाहन से लेकर पुष्पाञ्जलि दान पर्यन्त उपचारों से पूजा करके इस प्रकार आवरण पूजा करें। (कालरात्रि पूजन यन्त्र देखिये चित्र ३२) :

पुष्पाञ्जलिमादाय मूलमुच्चार्य ॐ संविन्मये परे देवि परामृतरसप्रिये। अनुज्ञां देहि कालरात्रि परिवारार्चनाय मे।।१।। इति पठित्वा पुष्पाञ्जलिं दद्यात्। इत्याज्ञां गृहीत्वा आवरणपूजामारभेत्।

पुष्पाञ्जलि लेकर मूल का उच्चारण करके "ॐ संविन्मये परे देवि परामृत रसप्रिये। अनुज्ञां देहि कालरात्रि परिवारर्चनाय मे।" यह पढ़ कर पुष्पाञ्जलि देवें। इस प्रकार आज्ञा लेकर आवरण पूजा आरम्भ करें।

तत्र त्रिकोणे पूज्यपूज्यकयोरन्तरालं प्राची। तदनुसारेण अन्या दिशः प्रकल्प्य प्राचीक्रमेण वामावर्तेन च :

वहाँ त्रिकोण में पूज्य और पूजक के अन्तराल को पूर्व दिशा मान कर और तदनुसार अन्य दिशाओं की कल्पना करके पूर्वादि क्रम से वामावर्त :

ॐ संमोहिन्यै नमः[2]। संमोहिनीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः १। इति सर्वत्र। ॐ मोहिन्यै नमः[3]। मोहिनीश्रीपा २। ॐ विमोहिन्यै नमः[4]। विमोहिनीश्रीपा० ३।

इति पूजयेत्। ततः पुष्पाञ्जलिमादाय मूलमुच्चार्य ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले। भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम्।।१।। इति पठित्वा पुष्पाञ्जलिं दत्त्वा पूजितास्तर्पिताः संतु इति वदेत्। इति प्रथमावरणम्।।१।।

इस प्रकार पूजा करें। इसके बाद पुष्पाञ्जलि लेकर मूल का उच्चारण करके "ॐ अभीष्टसिद्धि मे देहि शरणागतवत्सले। भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम्।" यह पढ़ कर पुष्पाञ्जलि देकर "पूजितास्तर्पिताः सन्तु" यह कहें। इति प्रथमावरण।।१।।

ततः षट्कोणकेसरेषु आग्नेय्यादिचतुर्दिक्षु मध्ये दिक्षु च :

इसके बाद षट्कोण केसरों में आग्नेय आदि चारो दिशाओं और मध्य दिशा में :

ॐ हृदयाय नमः[5]। हृदयश्रीपा० १। ॐ शिरसे स्वाहा[6]। शिरः श्रीपा० २। ॐ शिखायै वषट्[7]। शिखाश्रीपा० ३। ॐ कवचाय हुम्[8]। कवचश्रीपा० ४। ॐ नेत्रत्रयाय वौषट्[9]। नेत्रत्रयश्रीपा० ५। ॐ अस्त्राय फट्[10]। अस्त्रश्रीपा० ६।

इति षडङ्गानि पूजयित्वा पुष्पाञ्जलिं दद्यात्। इति द्वितीयावरणम्।।२।।

इस प्रकार षडगों की पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवें। इति द्वितीयावरण।।२।।

इसके बाद वृत्त में वामावर्त से :

ॐ अं आं नमः १। ॐ इं ईं नमः २। ॐ उं ऊं नमः ३। ॐ ऋं ॠं नमः ४। ॐ ऌं ॡं नमः ५। ॐ एं ऐं नमः ६। ॐ ओं औं नमः ७। ॐ अं अः नमः ८।

इति षोडशस्वरान् पूजयित्वा पुष्पाञ्जलिं दद्यात्। इति तृतीयावरणम्।।३।।

इससे षोडश स्वरों की पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवें। इति तृतीयावरण।।३।।

इसके बाद अष्टदलों में वामावर्त :

ॐ ब्राह्मयै नमः[११]। ब्राह्मीश्रीपा० १। ॐ माहेश्वर्यै नमः[१२]। माहेश्वरीश्रीपा० २। ॐ कौमार्यै नमः[१३]। कौमारीश्रीपा० ३। ॐ वैष्णव्यै नमः[१४]। वैष्णवश्रीपा० ४। ॐ वाराह्यै नमः[१५]। वाराहीश्रीपा० ५। ॐ इन्द्राण्यै नमः[१६]। इन्द्राणीश्रीपा० ६। ॐ चामुण्डायै नमः[१७]। चामुण्डाश्रीपा० ७। ॐ महालक्ष्म्यै नमः[१८]। महालक्ष्मीश्रीपा० ८।

इत्यष्टौ मातरः पूजयित्वा पुष्पाञ्जलिं दद्यात्। इति चतुर्थावरणम्।।४।।

इनसे आठ माताओं की पूजा करके पुष्पांजलि देवे। इति चतुर्थावरण।।४।।

पुनः वृत्त में :

ॐ कं नमः १। ॐ खं नमः २। ॐ गं नमः ३। ॐ घं नमः। ॐ ङं नमः ५। ॐ चं नमः ६। ॐ छं नमः ७। ॐ जं नमः ८। ॐ झं नमः ९। ॐ ञं नमः १०। ॐ टं नमः ११। ॐ ठं नमः १२। ॐ डं नमः १३। ॐ ढं नमः १४। ॐ णं नमः १५। ॐ तं नमः १६। ॐ थं नमः १७। ॐ दं नमः १८। ॐ धं नमः १९। ॐ नं नमः २०। ॐ पं नमः २१। ॐ फं नमः २२। ॐ बं नमः २३। ॐ भं नमः २४। ॐ मं नमः २५। ॐ यं नमः २६। ॐ रं नमः २७। ॐ लं नमः २८। ॐ वं नमः २९। ॐ शं नमः ३०। ॐ षं नमः ३१। ॐ सं नमः ३२। ॐ हं नमः ३३। ॐ ळं नमः ३४। ॐ क्षं नमः ३५।

इति पूजयित्वा पुष्पाञ्जलिं दद्यात्। इति पञ्चमावरणम्।।५।।

इस प्रकार पूजा करके पुष्पाञ्जलिं देवें। इति पञ्चमावरण।।५।।

इसके बाद षोडशदलों में वामावर्त :

ॐ उर्वश्यै नमः[१९]। उर्वशीश्रीपा० १। ॐ मेनकायै नमः[२०]। मेनकाश्रीपा० २। ॐ रम्भायै नमः[२१]। रम्भाश्रीपा० ३। ॐ घृताच्यै नमः[२२]। घृताचीश्रीपादुकां पूजया० ४। ॐ मञ्जुघोषायै नमः[२३]। मञ्जुघोषाश्रीपा० ५। ॐ सहजन्यायै नमः[२४]। सहजन्या श्रीपा० ६। ॐ सुकेश्यै नमः[२५]। सुकेशीश्रीपा० ७। ॐ तिलोत्तमायै नमः[२६]। तिलोत्तमाश्रीपा० ८। ॐ गान्धर्व्यै नमः[२७]। गान्धर्वीश्रीपा० ९। ॐ सिद्धकन्यायै नमः[२८]। सिद्धकन्याश्रीपा० १०। ॐ किन्नर्यै नमः[२९]। किन्नरीश्रीपा० ११। ॐ नागकन्यकायै नमः[३०]। नागकन्यकाश्रीपा० १२। ॐ विद्याधर्यै नमः[३१]। विद्याधरीश्रीपा० १३। ॐ किंपुरुषायै नमः[३२]। किंपुरुषाश्रीपा० १४। ॐ यक्षिण्यै नमः[३३]। यक्षिणीश्रीपा० १५। ॐ पिशाच्यै नमः[३४]। पिशाचीश्रीपा० १६।

इति षोडशदेवताः पूजयित्वा पुष्पाञ्जलिं दद्यात्। इति षष्ठावरणम्।।६।।

इस प्रकार षोडश देवताओं की पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवें। इति षष्ठावरण।६

पुनः वृत्त में :

ॐ परमात्मने नमः[३५]। परमात्मश्रीपा० १। ऐं सरस्वतयै नमः[३६]। सरस्वतीश्रीपा० २। ह्रीं गौर्यै नमः[३७]। गौरीश्रीपा० ३। क्लीं कामायै नमः[३८]। कामाश्रीपा० ४। श्रीं रमायै नमः[३९]। रमाश्रीपा० ५। द्रां द्रविण्यै नमः[४०]। द्रविणीश्रीपा० ६। द्रीं क्षोभिण्यै नमः[४१]। क्षोभिणीश्रीपा० ७। क्लीं वशीकरिण्यै नमः[४२]। वशीकरिणीश्रीपा० ८। ब्लूँ कर्षिण्यै नमः[४३]। कर्षिणीश्रीपा० ९। सः सम्मोहिन्यै नमः[४४]। सम्मोहिनीश्रीपा० १०।।

इति पूजयित्वा पुष्पाञ्जलिं दद्यात्। इति सप्तमावरणम्।।७।।

इस प्रकार पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवें। इति सप्तमावरण।।७।।

इसके बाद भूपुर के अन्दर प्राच्यादि क्रम से :

ॐ अणिमायै नमः[४५]। अणिमाश्रीपा० १। ॐ लघिमायै नमः[४६]। लघिमाश्रीपा० २। ॐ महिमायै नमः[४७]। महिमाश्रीपा० ३। ॐ अशितायै नमः[४८]। अशिताश्रीपा० ४। ॐ वशितायै नमः[४९]। वशिताश्रीपा० ५। ॐ कामपूरण्यै नमः[५०]। कामपूरणीश्रीपा० ६। ॐ गरिमायै नमः[५१]। गरिमाश्रीपा० ७। ॐ प्राप्त्यै नमः[५२]। प्राप्तिश्रीपा० ८।

इत्यष्टसिद्धीः पूजयित्वा पुष्पाञ्जलिं दद्यात्। इत्यष्टमावरणम्।।८।।

इससे अष्टसिद्धियों की पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवें। इत्यष्टमावरण।।८।।

इसके बाद भूपुर की प्रथम रेखा में चारों दिशाओं में :

ॐ इच्छाशक्त्यै[५३-५६-५९-६२] नमः। इच्छाशक्तिश्रीपा० १। ॐ क्रियाशक्त्यै[५४-५७-६०-६३] नमः। क्रियाशक्तिश्रीपा० २। ॐ ज्ञानशक्त्यै[५५-५८-६१-६४] नमः। ज्ञानशक्तिश्रीपा० ३। इति पूजयेत्। इसके बाद मध्यरेखा में ॐ रुद्राय[६५-६८-७१-७४] नमः रुद्रश्रीपा० १। ॐ विष्णवे[६६-६९-७२-७५] नमः। विष्णुश्रीपा० २। ॐ ब्रह्मणे[६७-७०-७३-७६] नमः। ब्रह्मश्रीपा० ३। इति पूजयेत्। इसके बाद अन्तिम रेखा पर ॐ सत्त्वार्य[७७-८०-८३] नमः[८६]। सत्त्वश्रीपा० १। ॐ रजसे[७८-८१-८४-८७] नमः। रजः श्रीपा० २। ॐ[७९-८२-८५-८८] तमसे नमः। तमः श्रीपा० ३।

इस प्रकार पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवें। इति नवमावरण।।९।।

इसके बाद भूपुर के बाहर पूर्व आदि चारों दिशाओं में :

ॐ गणेशाय नमः[८९]। गणेशश्रीपा० १। ॐ क्षेत्रपालाय नमः[९०]। क्षेत्रपालश्रीपा० २। ॐ बटुकाय नमः[९१]। बटुकश्रीपा० ३। ॐ योगिनीभ्यो नमः[९२]। योगिनीश्रीपा० ४।

इति द्वारपालान् पूजयित्वा पुष्पाञ्जलिं दद्यात्। इति दशमावरणम्।।१०।।

इस प्रकार द्वारपालों की पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवें। इति दशमावरण।१०।।

इसके बाद भूपुर से बाहर पूर्वादि क्रम से :

ॐ लं इन्द्राय नमः[९३]। इन्द्रश्रीपा० १। ॐ रं अग्नये नमः[९४]। अग्निश्रीपा० २। ॐ मं यमाय नमः[९५]। यमश्रीपा० ३। ॐ क्षं निर्ऋतये नमः[९६]। निर्ऋतिश्रीपा० ४। ॐ वं वरुणाय नमः[९७]। वरुणश्रीपा० ५। ॐ शं वायवे नमः[९८]। वायुश्रीपा० ६। ॐ कुं कुबेराय नमः[९९]। कुबेरश्रीपा० ७। ॐ हं ईशानाय नमः[१००]। ईशानश्रीपा० ८। पूर्वेशानयोर्मध्ये ॐ ओं ब्रह्मणे नमः[१०१]। ब्रह्मश्रीपा० ९। वरुणनिर्ऋति–मध्ये ॐ ह्रीं अनन्ताय नमः[१०२]। अनन्तश्रीपा० १०।

इस प्रकार पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवें। इत्येकादशावरण।।११।।

इसके बाद इन्द्रादि के समीप :

ॐ वं वज्राय नमः[१०३] १। ॐ शं शक्तये नमः[१०४] २। ॐ दं दण्डाय नमः[१०५] ३। ॐ खं खंगाय नमः[१०६] ४। ॐ पां पाशाय नमः[१०७] ५। ॐ अं अंकुशाय नमः[१०८] ६। ॐ गं गदायै नमः [१०९]७। ॐ त्रिं त्रिशूलाय नमः[११०] ८। ॐ पं पद्माय नमः[१११] ९। ॐ चक्राय नमः[११२] १०।

इस प्रकार पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवें। इति द्वादशावरण।।१२।।

इति बाह्यार्चनं कृत्वा पुनः देवीपार्श्वे प्राच्यादिचतुर्दिक्षु।

इस प्रकार वाह्यार्चन करके फिर देवी के पार्श्व में पूर्व आदि चारों दिशाओं में :

प्राच्यां ॐ मायायै नमः[११३]। मायाश्रीपा० १। ॐ कालरात्र्यै नमः[११४]। कालरात्रि श्रीपा० २। ॐ वटवासिन्यै नमः[११५]। वटवासिनीश्रीपा० ३। दक्षिणे ॐ गणेश्वर्यै नमः[११६]। गणेश्वरीश्रीपा० १। ॐ काह्लाख्यायै नमः[११७]। काह्लाख्याश्रीपा० २। ॐ व्यापिकायै नमः[११८]। व्यापिकाश्रीपा० ३। पश्चिमे ॐ अलर्कवासिन्यै नमः[११९]। अलर्कवासिनीश्रीपा० १। ॐ मायाराज्ञ्यै नमः[१२०]। मायाराज्ञीश्रीपा० २। ॐ

मदनप्रियायै नमः[121]। मदनप्रियाश्रीपा० ३। उत्तरे ॐ रत्यै नमः[122]। रतिश्रीपा० १। ॐ लक्ष्म्यै नमः[123]। लक्ष्मीश्रीपा० ॐ काल्लेश्वर्यै नमः[124]। काल्लेश्वरीश्रीपा० ३।

इति पूजयित्वा पुष्पाञ्जलिं दद्यात्। इति त्रयोदशावरणम्।।२३।।

इस प्रकार पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवें। इति त्रयोदशावरण।।१३।।

इत्यावरणपूजां कृत्वा धूपादिनमस्कारान्तं सम्पूज्य मूलेन् मद्यादिबलिं दत्त्वा जपं कुर्यात्। अस्य पुरश्चरणमयुतजपः। तद्दशांशतो होमः। तत्तद्दशांशेन तर्पणमार्जनब्राह्मणभोजनानि कुर्यात्। एवं कृते मन्त्रः सिद्धो भवति। एतस्मिन्सिद्धे मन्त्रे मन्त्री षट् प्रयोगान् साधयेत्।

इस प्रकार आवरण पूजा करके धूपदान से लेकर नमस्कार पर्यन्त पूजा करके मूलमन्त्र से मद्य आदि की बलि देकर जप करें। इसका पुरश्चरण दश हजार जप है। जप से दशांश होम होता है। होम से तत्तद्दशांश तर्पण, मार्जन ब्राह्मण भोजन करें। ऐसा करने से मन्त्र सिद्ध होता है। इसके सिद्ध होने पर साधक षट्प्रयोगों को सिद्ध करे।

अयुतं प्रजपेन्मन्त्रं दशांशं जुहुयात्तिलैः। पयोरुहैर्वा विप्रेन्द्रान् सन्तर्प्य श्रेय आप्नुयात्।।१।। एवं सम्पूजिता स्वेष्टं कालरात्रिः प्रयच्छति। सिद्धे मन्त्री प्रकुर्वीत प्रयोगानिष्टसिद्धये।।२।।

साधक दश हजार मन्त्र का जप करे। जप से दशांश तिल से या कमलों से होम करें। ब्राह्मणों को तर्पित करने से वह श्रेय को प्राप्त होता है। इस प्रकार पूजित कालरात्रि इच्छानुसार फल देती है। मन्त्र के सिद्ध हो जाने पर साधक इष्टसिद्धि के लिए प्रयोग करें।

अथ षट्प्रयोगविधानं।

तत्रादौ वशीकरणप्रयोगः।

साधकः शनिवासरे सन्ध्याकाले तडागं गत्वा ॐ नमो जलौकायै जलौकायै सर्वजनं वशं कुरु कुरु हुम्। इति मन्त्रेण हरिद्राक्तक्षतपुष्पैर्जलं सम्पूज्य गृहं गत्वा देवीं स्मरन्निशि भूमौ शयीत। प्रातस्तस्मात्सरसो जलौकाद्वयमादाय छायाशुष्कं कृत्वा संचूर्ण्य तच्चूर्णयुक्तेन कृष्णकार्पाससूत्रेण वर्तिं कृत्वा कुलालचक्रानीतमृन्निर्मिते पात्रे तां निधाय भ्रमतस्तैल यन्त्रात्तिलतैलमादाय तत्र निक्षिप्य वेश्यागृहादग्निमानीय कुचिलाप्रसिद्धतरोः काष्ठैस्तां प्रज्वाल्य तेन तत्पात्रे दीपं कृत्वा हरिद्रारसकृते त्रिकोणषट्कोणचतुरस्रके यन्त्रे मध्ये लाजान् प्रक्षिप्य तदुपरि दीपपात्रं स्थापयित्वा दीपे कालरात्रिमावाह्य सावरणां सम्पूज्य नवीनखर्परं दीपोपरि धृत्वा कज्जलं पातयेत्। तत्कज्जलमादाय पश्चिमाभिमुखः ॐ ऐं क्लीं ह्रीं श्रीं ग्लौं ब्लू हसौं नमः काल्लेश्वरि सर्वान्मोहय मोहय कृष्णे कृष्णवर्णे कृष्णाम्बरसमन्विते सर्वानाकर्षय आकर्षय शीघ्रं वशं कुरु कुरु हुं ऐं क्लीं श्रीं। इति मन्त्रेण शतत्रयवारमभिमन्त्रयेत्। ततो दीपाद्देवीमात्मनि संयोज्य तत्कज्जलं भौमवारे नवनीतमर्दितं पात्रे संस्थाप्य तदग्रे वह्निं संस्थाप्य संस्कृत्य मधूक पुष्पैरष्टोत्तरशतं मूलेन हुत्वा कुमारीबटुक स्त्रियो मधुर भोजनेन भोजयेत्। तदञ्जनकृत तिलको जगद्वशयेदित्यादिफलं स्पष्टम्।

साधक शनिवार के दिन सायंकाल तालाब पर जाकर "ॐ नमो जलौकायै जलौकायै सर्वजनं वशं कुरु कुरु हुम्।" इस मन्त्र से हल्दीयुक्त अक्षत और फूलों से जल की पूजा करके घर जाकर देवी का स्मरण करता हुआ रात में भूमि पर शयन करें। प्रातःकाल उस तालाब से दो जोंक

लाकर छाया में सुखाकर चूर्ण करके उस चूर्ण से युक्त काले कपास के सूत से बत्ती बनाकर कुम्हार के चाक से मिट्टी लाकर उससे बनाये गये पात्र में उसे रखकर घूमते हुए तेल के कोल्हू से तेल लेकर उसमें डालकर वेश्या के घर से अग्नि लाकर कुचिला के वृक्ष की लकड़ियों से उस बत्ती को जलाकर उससे उस पात्र में दीप बनाकर हल्दी के रस से बनाये गये त्रिकोण षट्कोण तथा चतुष्कोण यन्त्र के बीच में धान का लावा फेंक कर उसके ऊपर दीप पात्र रख कर दीप में कालरात्रि का आवाहन करके आवरणसहित उनकी पूजा करके नया खपड़े का टुकड़ा दीये पर रख कर काजल पारे। उसे काजल को लेकर पश्चिम की ओर मुख करके "ॐ ऐं क्लीं ह्रीं श्रीं ग्लौं ब्लूँ हसौं नमः काह्लेश्वरि सर्वान्मोहय मोहय कृष्णे कृष्णवर्णे कृष्णाम्बरसमन्विते सर्वानाकर्षय आकर्षय शीघ्रं वशं कुरु कुरु हुं ऐं क्लीं श्रीं।" इस मन्त्र से तीन सौ बार अभिमन्त्रित करें। इसके बाद दीप से देवी को अपनी आत्मा में सम्बन्धित कर उस काजल को मङ्गलवार के दिन मक्खन से मर्दित पात्र में रख कर उसके आगे अग्नि की स्थापना करके महुआ के फूलों से एक सौ आठ बार मूलमन्त्र से होम करके कुमारी, बच्चे और स्त्रियों को मधुर भोजन करायें। उस अञ्जन से तिलक करके संसार को वश में करने इत्यादि का फल स्पष्ट है। (वशीकरण यन्त्र देखिये चित्र ३३)

तेनाञ्जनेन रचिततिलको मन्त्रिसत्तमः। दर्शनादेव वशयेन्नरनारीनरेश्वरान्। दुग्धेनादौ प्रदत्तं तन्नराणां वशकारकम्। तेन स्पृष्टो नरो नूनं दासः स्पर्शयितुर्भवेत्। वशीकरणमा ख्यातं स्तम्भनं प्रोच्यतेऽधुना।।१।।

अस अञ्जन का तिलक लगाये हुये उत्तम साधक दर्शनमात्र से नर, नारी और राजाओं को वश में कर लेता है। प्रारम्भ में दूध के साथ दिया हुआ वह मनुष्यों को वश में करने वाला होता है। उससे स्पृष्ट मनुष्य निश्चय ही स्पर्शकर्ता का दास हो जाता है। यह वशीकरण हो गया अब मैं स्तम्भन कह रहा हूँ।

अथ स्तम्भनप्रयोगः।

रवौ हरिद्रारोचनाकुष्ठतगरैर्गोमूत्रपिष्टैर्मसिं कृत्वा हरिद्रारंजिते वस्त्रेऽष्टदलं कृत्वाऽमुकं स्तम्भयेति मध्ये ॐ ॐ ग्लौं ग्लौं चटचटेति वर्णान् दलेषु लिखेत्। तद्वस्त्रं पीतसूत्रेण सम्वेष्ट्य कोकिलतरोः [1]सप्तकीलकान्कृत्वा तैर्विध्वाऽर्कपत्रैः सम्वेष्ट्य [2]वल्मीकरन्ध्रे प्रक्षिप्य [3]मेषमूत्रमुपरि सिच्य रन्ध्रोपरि शिलां संस्थाप्य तत्र स्थितो हरिद्रामणिभिर्मालामादाय नैर्ऋत्याभिमुखः ॐ ह्लां ह्लीं हलूं कामाक्षि मायारूपिणि सर्वमनोहारिणि स्तम्भय स्तम्भय रोधय रोधय मोहय मोहय क्लां क्लीं क्लूँ कामाक्षि काह्लेश्वरि हुं हुं हुं इति मन्त्रं सहस्रं जपेत्। एवं कृते रिपुस्तम्भः।।२।।

रविवार के दिन हल्दी, गोरोचन, कूठ तथा तगर को गोमूत्र में पीसकर रोशनाई बनाकर हल्दी से रँगे वस्त्र में अष्टदल बनायें। उसमें बीच में ॐ ॐ ग्लौं ग्लौं चट् चट् इन वर्णों को दलों में लिखें। उस वस्त्र को पीले सूत से लपेटकर कोकिल वृक्ष की सात कीलें बनाकर उनसे सफेद मदार के पत्तों को लपेट कर दीमकों के रन्ध पर फेंक कर ऊपर से भेड़ी के मूत्र का अभिसिञ्चन करके छिद्र पर पत्थर रख कर वहाँ पर बैठ कर हल्दी की माला लेकर नैर्ऋत्य

---

१ कुचिला तालमखाना वा

२ दीमकरन्ध्रे

३ मेषसूत्रेण परिपूरयेत्।

दिशा की ओर मुख करके "ॐ ह्लां ह्लीं हलूं कामाक्षि मायारूपिणी सर्वमनोहारिणि स्तम्भय स्तम्भय रोधय रोधय मोहय मोहय क्लां क्लीं क्लूं कामाक्षि काह्लेश्वरि हुं हुं हुं" इस मन्त्र का हजार बार जप करें। ऐसा करने पर शत्रु का स्तम्भन होता है (स्तम्भन यन्त्र देखिये चित्र ३४)।

अथ मोहनप्रयोगः।

रविवारे हरिद्रां नारीदुग्धेन पिष्ट्वा तद्रसेन भूर्जपत्रे मध्यकामबीजयुतं वृत्तं कृत्वा दशकामबीजैः सम्वेष्ट्य पुनर्वृत्तं कृत्वा द्वादश कामबीजैः संवेष्ट्य पुनर्वृत्तं कृत्वा षोडश कामबीजैः सम्वेष्ट्योपरिबीजयुक् षट्कोणं कृत्वा सर्वं वाग्बीजं मध्यस्थं कुर्यात्। तद्यन्त्रोपरि स्थित्वा पञ्चदिनं प्रत्यहं क्रुद्धमानसः सहस्रं दशाक्षरं जपेत्। मन्त्रो यथा : ॐ क्लीं कामाय क्लीं कामिन्यै क्लीम्। इति जपदशांशेन तिलतैलेनैव[1] जुहुयात्। होमोत्थभस्मना तिलकेन तद्यन्त्रधारणेन च विश्वं मोहयेत्।

रविवार के दिन हल्दी को नारी के दुग्ध में पीस कर उस रस से भोजपत्र के मध्य कामबीज युक्त वृत्त बनाकर दश कामबीजों से घेर कर फिर वृत्त बनाकर बारह कामबीजों से घेर कर पुनः वृत्त बनाकर सोलह कामबीजों से घेर कर ऊपर बीजयुक्त षट्कोण बनाकर सम्पूर्ण वाग्बीज को मध्य में स्थित करें। उस यन्त्र के ऊपर बैठ कर पाँच दिन तक प्रतिदिन क्रुद्ध मनवाला एक हजार दशाक्षर मन्त्र का जप करें। मन्त्र यह है: "ॐ क्लीं कामाय क्लीं कामिन्यै क्लीं।" जप के दशांश से तिल के तेल से होम करें। होम के भस्म से तिलक लगाने तथा उस यन्त्र को धारण करने से साधक सारे संसार को मोह लेता है। (मोहनकर यन्त्र देखिये चित्र ३५)।

होमोत्थभस्मना कुर्वन् तिलकं नरसत्तमः। मोहयेदखिलं विश्वं तद्यन्त्रस्यापि धारणात्। उक्तं मोहनमाकर्षं वक्ष्ये साधकसत्तम।।३।।

होम के भस्म से तिलक करनेवाला तथा यन्त्र को धारण करनेवाला मनुष्य सारे संसार को मोह लेता है। हे साधकसत्तम ! मोहन मन्त्र तो बता दिया गया। अब आकर्षण मन्त्र बताया जायगा।

अथाकर्षणप्रयोगः।

कृष्णाष्टम्यां कृष्णचतुर्दश्यां कुजरव्यन्यतरयुक्तायां प्रातर्नाभिमात्रे जले स्थित्वा मूलमेकादशशतं प्रजप्य गृहमागत्य शरीरं तैलेनाभ्यज्य पीठेऽनैर्नराकारं योषिदाकारं वा विलिख्य लज्जावतीपत्रैस्तं[2] सम्पूज्य लज्जावतीमूलरसेन सम्प्रोक्ष्य तदग्रेऽमुं मन्त्रं षष्ट्याधिकशतं[3] जपेत्। मन्त्रो यथाः ॐ नमः कालिकायै सर्वाकर्षिण्यै अमुकीमाकर्षयाकर्षय शीघ्रमान यानय आं ह्रीं क्रों भद्रकाल्यै नमः। ततः पञ्चाशत्करवीरपुष्पैः अं अमुकीमाकर्षयाकर्षय नमः। आं अमुकीमित्यादि पञ्चाशद्वर्णपूर्वकपञ्चाशन्मन्त्रैरकैकमन्त्रद्वारावा प्रतिपुष्पैस्त–माकारं[4] पूजयेत्। ततो धूपदीपनैवेद्यानि कृत्वा तदग्रेऽग्निं प्रतिष्ठाप्य

१ तिलाज्यैर्वा जुहुयात्।

२ लज्जावती लज्जालुः स्पर्शमात्रेण यत्पत्राणि संकुचन्ति सा लज्जालुः।

३ शंत षष्ट्यधिकं जप्त्वा लोहितैः करवीरजैः। पञ्चाशत्प्रतिमैर्मन्त्री पूजयेल्लिखिताकृतिम्। मातृकावर्णमेकैकं तन्नामाकर्षयद्वयम्। नम इत्यभिअप्य पुष्पमेकैकमर्पयेत्। धूपदीपनैवद्यानि कृत्वा होमं समाचरेत्।

४ नराकारं स्त्र्याकारं तत्प्रतिमां पूजयेत्।

तत्राज्याक्तचणकै:[1] शतं मधुनोक्तमनुना हुत्वा कुमारीकर्तितेन कृष्णकार्पाससूत्रेणाष्टाविंशति तन्तुनिर्मितं स्वदेहमितं दोरकं कृत्वाऽऽकर्षमन्त्रेणाष्टोत्तर शतं ग्रन्थीन् दत्त्वा तद्धारणान्नरं नारीं चाकर्षतीति।

कृष्णाष्टमी मङ्गलवार तथा कृष्ण चतुर्दशी रविवार को प्रातःकाल नाभिमात्र जल में खड़े होकर मूलमन्त्र का ग्यारह सौ जाप करके घर आकर शरीर में तेल लगाकर पीठ पर अञ्जन से स्त्री या पुरुष की मूर्ति बना कर उसका लाजवन्ती के पत्रों से पूजन कर उसके जड़ के रस से प्रोक्षण करना चाहिये। फिर उसके आगे एक सौ आठ मन्त्र का जप करें। मन्त्र यह है : "ॐ नमः कालिकायै सर्वाकर्षिण्यै अमुकीमाकर्षयाकर्षय शीघ्रमानयानय आं ह्रीं क्रों भद्रकाल्यै नमः।" इसके बाद पचास कने के फूलों से अं अमुकीमाकर्षय आकर्षय नमः। आं अमुकीम् इत्यादि पचास वर्णपूर्वक पचास मन्त्रों से एक एक मन्त्र द्वारा या प्रति पुष्प से उस आकार की पूजा करें। इसके बाद धूप दीप और नैवेद्य देकर उसके आगे अग्नि की स्थापना करके घी से सिक्त चने तथा मधु द्वारा सौ होम करके अपने शरीर की लम्बाई वाले कुमारी द्वारा कते कपास के काले अट्ठाइस तन्तुओं द्वारा निर्मित सूत में आकर्षण मन्त्र द्वारा एक सौ आठ ग्रन्थि देकर उसके धारण करने से पुरुष या स्त्री को साधक आकृष्ट करता है।

कृष्णकार्पाससूत्रस्य कुमारीनिर्मितस्य च। गुणं देहमितं कृत्वा अष्टाविंशतितन्तुभिः। आकर्षमनुना दद्याद्ग्रन्थीनष्टोत्तरं शतम्। तद्दोरके धृते शीघ्रमायाति स्त्री नरोपि वा। त्रिरात्राद्ग्राममध्यस्थोऽन्य देश्यो नवरात्रतः उक्तमाकर्षणमिदमुच्चाटनमथोच्यते।।४।।

कुमारी द्वारा कपासनिर्मित काले धागे के अट्ठाइस तारों से निर्मित डोरी में एक सौ आठ गाँठे देनी चाहिये। उस डोरी के धारण करने पुरुष या स्त्री शीघ्र आ जाते है। ग्राम में यदि वे हों तो तीन रात में और यदि ग्राम से बाहर हों तो नव रात में आ जाते हैं। यह आकर्षण मन्त्र बता दिया गया अब उच्चाटन मन्त्र बताया जा रहा है।

अथ उच्चाटनप्रयोगः।

कृष्णचतुर्दश्यां शून्यगृहे नीलवस्त्रावृतो मुक्तकचो मुक्तशिखो दक्षिणाभिमुखः कुक्कुटासने चोपविश्य ग्रन्थियुक्तया मुञ्जरज्ज्वा मालया निशिसहस्रद्वयममुं मन्त्रं जपेत्। मन्त्रो यथा : ॐ ल्बूं स्लूं म्लूं क्ष्लूं कालरात्रि महाध्वांक्षि अमुककमाशूच्चाटयोच्चाटय छिन्धि भिन्धि स्वाहा हौं कामाक्षि क्रौं इति जपेत्। ततः शतद्वयमनेनैव मन्त्रेण सर्षपैर्हुत्वा तैलोदकयुतेन सर्षपपिण्याकेन तेन मनुना बलिं दद्यात्। एवं सप्ताहं कृते उच्चाटनसिद्धिः। तथा चः एवं कृते सप्तरात्र देशाद्दूरं व्रजेदरिः।।५।।

शून्य घर में कृष्ण चतुर्दशी के दिन नीला वस्त्र धारण करके बाल और शिखा खुला रखें। दक्षिण तरफ मुख करके कुक्कुट आसन से बैठ कर ग्रन्थियुक्त मूंज की रस्सी की माला से रात्रि में दो हजार इस मन्त्र का जप करें। मन्त्र यह है : ल्बूं स्लूं म्लूं क्ष्लूं कालरात्रि महाध्वांक्षि अमुकमाशु उच्चाटय उच्चाटय छिन्धि भिन्धि स्वाहा हौं कामाक्षि कौं" यह जपें। इसके बाद इसी मन्त्र से दौ सौ बार सरसों से होम करके तेल और जल से युक्त सरसों के पिण्डे से उस मन्त्र से बलि देवें। इस प्रकार एक सप्ताह करने से उच्चाटन सिद्धि होता है। इस प्रकार सात दिन तक करने शत्रु दूर देश चला जाता है।

---

१ चणकैराज्यसम्भिश्रैराकर्षणमुदोहृतम्।

अथ विद्वेषणप्रयोगः।

प्रीतिमतोर्द्वयोर्जन्म[1] वृक्षोत्थं फलकद्वयं[2] विधाय तत्र रासभीक्षीरमर्दितेन विषाष्टकेनोपरि नामयुक्तमकारद्वयं विलिख्य तत्स्पृष्ट्वा निशि सहस्रममुं मन्त्रं जपेत्। मन्त्रो यथा : ॐ ह्रौं ग्लौं ह्सौं भ्रौं भगवति दण्डधारिणि अमुकममुकं शीघ्रं विद्वेषय विद्वेषय रोधय रोधय भञ्जय भञ्जय श्रीं मायाराज्ञ्यै ॐ हुं हुं हुं इति जपेत्। ततः खरमहिषाश्वपुच्छरोमकृतया रज्ज्वा तत्फलकद्वयं मिथो बद्ध्वा वल्मीकरन्ध्रे निखाय पुनर्मन्त्रं सहस्रं जपेत्। एवं विद्वेषणसिद्धिः। वल्मीकरन्ध्रे निखनेत् पुनस्तावज्जपेन्नरः। सप्ताहाज्जायते वैरं तयोः प्रीतिमतोरपि।।६।।

दो मित्रों के जन्म नक्षत्र वाले वृक्षों की लकड़ी से दो पीढ़े बनाकर उनपर गदही के दूध से लेप करके उसके ऊपर विषाष्टक से नामयुक्त दो अकार लिखकर उसे छूकर रात में इस मन्त्र को एक हजार बार जपें। मन्त्र यह हैः "ॐ ह्रौं ग्लौं हसौं भ्रौं भगवति दण्धारिणि अमुकं अमुकं शीघ्रं विद्वेषय विद्वेषय रोधय रोध्य भञ्जय भञ्जय श्रीं मायाराज्ञ्यै ॐ हुं हुं हुं।" इसके बाद गदहा, भैंसा, कुत्ता की पूँछ के बालों को काट कर उससे रस्सी बनाकर उन दोनों पीढ़ों को बाँध कर दीमक वामी के छिद्र में गाड़कर फिर एक हजार मन्त्र का जप करें। इस प्रकार विद्वेषण की सिद्धि होती है। वल्मीक छिद्र में उसे गाड़ देवें फिर मनुष्य एक सप्ताह जप करे तो दोनों मित्रों में बैर हो जाता है।

अथ मारणप्रयोगः

कुजवारयुतायां कृष्णचतुर्दश्यां दिने गोशालाचतुष्पथश्मशानान्य तरस्मान्मृदमानीय विडङ्गकरवीरार्कपुष्पयुतां कृत्वा श्मशाने निर्जनालये वा उपविश्य विशिखो[3] नीलवस्त्रधरो भूत्वा नीलवस्त्रोपरि निशि तया मृदा पुत्तलीं कृत्वा हृदि वैरिनाम लिखित्वा प्राणान्प्रतिष्ठाप्य श्मशानवस्त्रेणाच्छाद्य तैलेनाभ्यज्य खराश्वमहिषरुधिरेण संस्नाप्य रक्तचन्दनेन विलिप्य धत्तूरपुष्पैः सम्पूज्य तदग्रे श्मशानाग्निं संस्थाप्य तदग्नौ वचासर्षपभल्लातकधत्तूर–बीजमिश्रितैरष्टोत्तरशतं जुहुयात्। मन्त्रो यथा : ॐ म्रां म्रीं म्रूँ मृतीश्वरि कृंकृत्ये अमुकं शीघ्रं मारय मारय क्रों इति मन्त्रेण सर्वं कुर्यात्। ततः पुत्तलीशिरश्छित्त्वाऽग्नौ हुत्वा पूर्णाहुतिं कुर्यात्। एकमेकविंशतिरात्र्यन्ते रिपुर्म्रियते। ततः प्रायश्चित्तं कुर्यात्। तथा च : कर्मस्वेवं विधेष्वादौ भैरवाय बलिं दिशेत्। माषान्नपलमद्याद्यैरेवं सिद्धिर्भवेद्ध्रुवम्।

कृष्ण चतुर्दशी मंगलवार के दिन गोशाला, चौराहा, श्मशान इनमें से किसी एक स्थान से मिट्टी लाकर विडंग और कनेर के फूलों को मिलाकर श्मशान या निर्जन स्थान में बैठकर बाल और शिखा को खोलकर नीले वस्त्र धारण करके नीले वस्त्र के ऊपर रात्रि में उस मिट्टी से पुतली बनाकर उसके हृदय पर शत्रु का नाम लिखकर उसमें प्राणप्रतिष्ठा करके कफन से उसे ढंक कर उसे तेल मर्दन करके गदहे, घोड़े और भैंसे के रक्त से नहला कर लाल चन्दन लगाकर धतूरे के फूलों से उसकी पूजा करके उसके आगे श्मशान की अग्नि स्थापित कर उस अग्नि में बचा, सरसों, भिलावा, धतूरे के बीज से मिश्रित द्रव्यों से एक सौ आठ होम करना चाहिये। मन्त्र यह हैः "ॐ म्रां म्रीं म्रूं मृतीश्वरि कृं कृत्ये अमुकं शीघ्रं मारय मारय क्रों।" इस मन्त्र

---

१ जन्मनक्षतरूद्भम्।

२ फलकद्वयं कृत्वा।

३ शिखामुक्तो।

से सब कार्य करें। अनन्तर पुत्तली के शिर को काटकर अग्नि में होम कर पूर्णाहुति करें। इस प्रकार इक्कीसवीं रात्रि के अन्त में शत्रु मर जाता है। असके अनन्तंर साधक प्रायश्चित करे। इंस प्रकार के कर्मों के आदि में भैरव को माषान्नपलल आदि से बलि देनी चाहिये। इस प्रकार करने से निश्चित रूप से सिद्धि होती है।

इति कालरात्रिमन्त्रप्रयोगः।

अथ वार्तालीमन्त्रप्रयोगः।

मन्त्रमहोदधौ : ॐ ऐं ग्लौं ऐं नमो भगवति वार्तालि वाराहि वराहमुखि ऐं ग्लौं ऐं अन्धे अन्धिनि नमो रुन्धे रुन्धिनी नमो जम्भे जम्भिनि नमो मोहे मोहिनि नमः स्तम्भे स्तम्भिनि नम ऐं ग्लौं ऐं सर्वदुष्टप्रदुष्टानां सर्वेषां सर्ववाक्यपदचित्तचक्षुर्मुखगतिजिह्वास्तम्भं कुरुकुरु शीघ्रं वशं कुरुकुरु ऐं ग्लौं ऐं ठः ठः ठः ठः हुं फट् स्वाहाः।

यह ११४ अक्षरोंवाला मन्त्र है।

अस्य विधानम् :

विनियोग : अस्य श्रीवार्तालीमन्त्रस्य शिव ऋषिः जगतीच्छन्दः वार्ताली देवता (मतान्तरे) ग्लौं बीजं स्वाहा शक्तिः ममाखिलावांप्तये जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास : ॐ शिवऋषये नमः शिरसि १। जगतीच्छन्दसे नमो मुखे २। वार्तालीदेवतायै नमो हृदि ३। ग्लौं बीजाय नमो लिङ्गे ४। स्वाहा शक्तये नमः पादयो ५। विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ६। इति ऋष्यादिन्यासः।

करन्यास : ॐ वार्तालि अंगुष्ठाभ्यां नमः १। ॐ वाराहि तर्जनीभ्यां नमः २। ॐ वराहमुखि मध्यमाभ्यां नमः ३। ॐ अन्धे अन्धिनि अनामिकाभ्यां नमः ४। ॐ रुन्धे रुन्धिनी कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५। ॐ जम्भे जम्भिनि करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ६। इति करन्यासः।

हृदयादिषडङ्गन्यास : ॐ वार्तालि हृदयाय नमः १। ॐ वाराहि शिरसे स्वाहा २। ॐ वराहमुखि शिखायै वषट् ३। ॐ अन्धे अंधिनि कवचाय हुं ४। ॐ रुन्धे रुन्धिनि नेत्रत्रयाय वौषट् ५। ॐ जम्भे जम्भिनि अस्त्राय फट् ६। इति हृदयादिषडङ्गन्यासः।

इससे न्यास करके ध्यान करें :

अथ ध्यानम् :

ॐ रक्ताम्भोरुहकर्णिकोपरिगते शावासने संस्थितां मुण्डस्रक्परिराजमानहृदयां नीलाश्मसद्रोचिषम्। हस्ताब्जैर्मुशलं हलाभयवरान् संबिभ्रतीं सत्कुचां वार्तालीमरुणाम्बरां त्रिनयनां वन्दे वराहाननाम्।।१।।

एवं ध्यायेत्। ततः पीठादौ रचिते सर्वतोभद्र मण्डले मण्डूकादिपरतत्त्वान्तपीठदेवताः संस्थाप्य ॐ मं मण्डूकादिपरतत्त्वान्तपीठदेवताभ्यो नमः इति पीठदेवताः सम्पूज्य नव पीठशक्तीः पूजयेत्।

इस प्रकार ध्यान करें। इसके बाद पीठादि पर रचित सर्वतोभद्रमण्डल में मण्डूकादि परतत्त्वान्त पीठदेवताओं को स्थापित करके "ॐ मं मण्डूकादि परतत्वान्त पीठदेवताभ्यो नमः" इससे पीठदेवताओं की पूजा करके नव पीठशक्तियों की इस प्रकार पूजा करें।

पूर्वादिक्रमेण ॐ जयायै नमः १! ॐ विजयायै नमः २। ॐ जितायै नमः ३। ॐ अपराजितायै नमः ४। ॐ नित्यायै नमः ५। ॐ विलासिन्यै नमः ६। ॐ दोग्ध्र्यै नमः ७। ॐ अघोरायै नमः ८। मध्ये ॐ मङ्गलायै नमः ६।

इति पूजयेत्। ततः स्वर्णादिनिर्मितं यन्त्रपत्रं ताम्रपात्रे निधाय धृतेनाभ्यज्य तदुपरि दुग्धधारां जलधारां च दत्त्वा स्वच्छवस्त्रेण प्रोक्ष्य तस्योपरि गोरोचनहरिद्राचन्दनागुरुकुंकुमेन त्रिकोणपञ्चास्रषट्कोणाष्टदलशतदलं सहस्रदलं च विनिर्माय तस्योपरि भुपूरं लिखित्वा[1] ॐ ग्लौं वार्ताल्यै कैलासाचलमध्यस्थितायै नमः। इति मन्त्रेण पुष्पाद्यासनं दत्त्वा पीठ–मध्ये संस्थाप्य पुनर्ध्यात्वा त्रिकोणान्तरे मूलेन मूर्तिं प्रकल्प्य पाद्यादिपुष्पान्तैरुपचारैः सम्पूज्य देव्याज्ञां गृहीत्वा आवरणपूजां कुर्यात्।

इस प्रकार पूजा करें। इसके बाद स्वर्ण आदि से निर्मित मन्त्रपत्र को ताम्रपात्र में रखकर घी से मर्दन करके उसके ऊपर दूध तथा जल की धारा देकर स्वच्छ वस्त्र से पोंछ कर उसके ऊपर गोरोचन, हल्दी, चन्दन, अगर तथा केसर से त्रिकोण, पञ्चकोण, षट्कोण, अष्टदल, शतदल, सहस्रदल बनाकर उसके ऊपर भूपुर लिखकर "ॐ ग्लौं वार्ताल्यै कैलासाचलमध्यस्थितायै नमः" इस मन्त्र से पुष्पाद्यासन देकर पीठ के बीच में स्थापित करके प्राद्यादि से पुष्पाञ्जलिदान पर्यन्त उपचारों से पूजा करके देवी से आज्ञा लेकर इस प्रकार आवरण पूजा करें। (वार्ताली पूजन यन्त्र देखिये चित्र ३६)।

पुष्पाञ्जलिमादाय संविन्मये परे देवि परामृतरस प्रिये। अनुज्ञां देहि वार्तालि परिवारार्चनाय मे।।१।। इति पठित्वा पुष्पाञ्जलिं दद्यात्।

पुष्पाञ्जलि लेकर "ॐ संविन्मये परे देवि परामृतरसप्रिये। अनुज्ञां देहि वार्तालि परिवारार्चनाय मे।।१।।" इसे पढ़कर पुष्पाञ्जलि देवें।

इत्याज्ञां गृहीत्वा षट्कोणकेसरेषु आग्नेयादिचतुर्दिक्षु मध्ये दिक्षु च।

इस प्रकार आज्ञा लेकर षट्कोण केसरों में आग्नेयी आदि चारों दिशाओं में तथा मध्य दिशाओं में :

ॐ वार्तालि हृदयाय नमः[1]। हृदयश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।।१।। इति सर्वत्र। ॐ वाराहि शिरसे स्वाहा[2]। शिरःश्रीपा० २। ॐ वराहमुखि शिखायै वषट्[3]। शिखाश्रीपा० ३। ॐ अन्धे अन्धिनि कवचाय[4] हूं। कवच श्रीपा० ४। ॐ रुन्धे रुन्धिनि नेत्रत्रयाय वौषट्[5]। नेत्रत्रयश्रीपा०५। ॐ जम्भे जम्भिनि अस्त्राय फट्[6]। अस्त्रश्रीपा० ६।

इससे षडङ्गो की पूजा करके त्रिकोण में ऐशान्यादि क्रम से :

ॐ वार्ताल्यै नमः[7] वार्तालीश्रीपा० १। ॐ वाराह्यै नमः[8] वाराहीश्रीपा० २। ॐ वराहमुख्यै नमः[9] वराहमुखीश्रीपा०३।

इति पूजयेत्। ततः पुष्पाञ्जलिमादाय मूलमुच्चार्य अभिष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले। भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम्।।१।। इति पठित्वा पुष्पाञ्जलिं च दत्त्वा पूजितास्तर्पिताः सन्तु इति वदेत्। इति प्रथमावरणम्।।१।।

इस प्रकार पूजा करे। इसके बाद पुष्पाञ्जलि लेकर मूलमन्त्र का उच्चारण करके "अभीष्टसिद्धिं में देहि शरणागतवत्सले। भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम्।।१।।" इसे पढ़कर पुष्पाञ्जलि देकर "पूजितास्तर्पिताः सन्तु" यह कहें। इति प्रथमावरण।।१।।

इसके बाद पञ्चास्र में आग्नेय आदि क्रम से :

---

१ स्वर्णे रूप्ये तथा ताम्रे भूर्जपत्रेऽथ दारुणि लिखेद्गोरोचनारात्रिचन्दनागुरुकुंकुमैः। योनि पंचाष्टषट्कोणाष्टपत्रशतपत्रकम्। सहस्रदलभूबिम्बरुन्वीतद्वार संयुतम्। कैलासाचलमध्यस्थं पीठमेतद्विचिन्तयेत्।

ॐ अन्धिन्यै नमः[१०]। अन्धिनीश्रीपा० १। ॐ रुन्धिन्यै नमः[११] रुन्धिनीश्रीपा० २। ॐ जम्भिन्यै नमः[१२]। जम्भिनीश्रीपा० ३। ॐ मोहिन्यै नमः[१३] मोहिनीश्रीपा० ४। ॐ स्तम्भिन्यै नमः[१४] स्तम्भिनीश्रीपा० ५।

इति पूजयित्वा पुष्पाञ्जलिं दद्यात्। इति द्वितीयावरणम्।।२।।

इसके बाद पुनः षट्कोण के ऊपर आग्नेयादि क्रम से :

ॐ डाकिन्यै नमः[१५] डाकिनी श्रीपादुकां पूज० १। ॐ राकिन्यै नमः[१६] राकिनीश्रीपा० २। ॐ लाकिन्यै नमः[१७] लाकिनीश्रीपा० ३। ॐ काकिन्यै नमः[१८] काकिनीश्रीपा० ४। ॐ शाकिन्यै नमः[१९] शाकिनीश्रीपा० ५। ॐ हाकिन्यै नमः[२०] हाकिनीश्रीपा० ६।

इससे पूजा करके षट्कोण के दक्षिण पार्श्व में :

ॐ स्तभिन्यै दक्षहस्तेन वरधरायै वामकरेण मुशलधरायै नमः। स्तम्भिनीश्रीपा० १।

इससे स्तम्भिनी की पूजा करके षट्कोण के वाम पार्श्व में :

ॐ क्रोधिन्यै दक्षहस्तेन कपालधारिण्यै नमः। क्रोधिनीश्रीपा० २।

इससे पूजा करके षट्कोणाग्रों में देवीसुत चण्ड की इस प्रकार पूजा करें :

शूलं नागं च डमरुं कपालं दधतं करैः। इन्द्रनीलनिभं नग्नं जटाभार विराजितम्।।१।।

इससे ध्यान करके :

ॐ देवीसुताय चण्डोच्चण्डाय नमः इति पूजयेत्।।३।।

इससे पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवें। इति तृतीयावरण।।३।।

ततः पूज्यपूजकयोरन्तरालं प्राची। तदनुसारेण अन्याः दिशः प्रकल्प्य प्राचीक्रमेण।

इसके बाद पूज्य और पूजक के अन्तराल को प्राची मानकर तदनुसार अन्य दिशाओं की कल्पना करके प्राची क्रम से :

ॐ वार्ताल्यै नमः[२१]। वार्तालीश्रीपा० १। ॐ वाराह्यै नमः[२२] वाराहीश्रीपा० २। ॐ वराहमुख्यै नमः[२३] वराहमुखीश्रीपा० ३। ॐ अन्धिन्यै नमः[२४] अन्धिनीश्रीपा० ४। ॐ रुधिन्यै नमः[२५] रुन्धिनीश्रीपा० ५। ॐ जम्भिन्यै नमः[२६] जम्भिनीश्रीपा० ६। ॐ मोहिन्यै नमः[२७]। मोहिनीश्रीपा० ७। ॐ स्तम्भिन्यै नमः[२८]। स्तम्भिनीश्रीपा० ८।

इससे आठों की पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवें। इति चतुर्थावरण।।४।।

ततः शतपत्रे प्राचीक्रमेण रुद्रां[१] एकादश वीरभद्रादयः। अर्का द्वादश धात्रादयः। वसवोष्टौ धरादयः। आश्विनौ नासत्यदस्रौ। इति त्रयस्त्रिंशद्देवा एकैकपत्रे त्रिके पूज्याः। शेषैकपत्रे :

इसके बाद शतपत्र में प्राची क्रम से वीरभद्र आदि एकादश रुद्र, धाता आदि द्वादश अर्क, धरा आदि आठ वसु, दो अश्विनीकुमार नासत्य तथा दस्र, इन तैंतीस देवों की एक एक पत्र पर पूजा करें। शेष एक पत्र पर :

"ॐ जम्भिनीस्तम्भिनीभ्यां नमः जम्भिनीस्तम्भिनी श्रीपा०। ॐ सिंहाय नमः १। ॐ महिषाय नमः २।

इति पूजयित्वा पुष्पाञ्जलिं दद्यात्। इति पञ्चमावरणम्।

इससे पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवें। इति पञ्चमावरण।।५।।

ततः सहस्रपत्रे क्रौं वाराह्यै नमः। इति मन्त्रेण सहस्रवारं वाराहीमेव पूजयित्वा पुष्पाञ्जलिं दद्यात्। इति षष्ठावरणम्।।६।।

---

१ शतपत्रेषु सम्पूज्या रुद्रार्कौ वसवोऽश्विनौ। त्रिरेकैकान्त्यपत्रेषु जाम्भिनी स्तम्भिनीयुतां।

इसके बाद सहस्रपत्र में 'क्रौं वाराह्यै नमः' इस मन्त्र से सहस्र बार वाराही की ही पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवें। इति षष्ठावरण।।६।।

ततो भूपूराभ्यन्तरे प्राचीद्वारदेशे।

इसके बाद भूपुर के भीतर प्राची द्वार देश में :

ॐ बं बटुकाय नमः[२९] १। दक्षिणे ॐ क्षं क्षेत्रपालाय नमः[३०] २। पश्चिमे ॐ यां योगिनीभ्यो नमः[३१] ३। उत्तरे ॐ गं गणपतये नमः[३२] ४।

इति गणेशं पूजयेत्। इति पूजयित्वा पुष्पाञ्जलिं दद्यात्। इति सप्तमावरणम्।।७।।

इससे गणेश की पूजा करें। इस प्रकार पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवे। इति सप्तमावरण।।७।।

ततो भूपुराद्बहिः इन्द्रादिदशदिक्पालान्[३३–४३] वज्राद्यायुधानि[३४–५३] च पूजयित्वा पुष्पाञ्जलिं दद्यात्। इत्यावरणपूजां कृत्वा धूपादिनमस्कारान्तं सम्पूज्य पूजान्ते बटुकादिभ्यो बलिमन्त्रेण बलिं दद्यात्।

इसके बाद भूपुर से बाहर इन्द्र आदि दश दिक्पालों तथा वज्र आदि आयुधों की पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवें। इस प्रकार आवरण पूजा करके धूपदान से लेकर नमस्कार पर्यन्त पूजा करके पूजा के अन्त में बटुक आदि को बलि मन्त्र से इस प्रकार बलि देवे।

ॐ ऐह्येहि देवीपुत्र बटुकनाथ कपिलजटाभारभासुर त्रिनेत्र ज्वालामुख सर्वविघ्नान्नाशय नाशय सर्वोपचारसहितं बलिं गृह्ण गह्ण स्वाहा। इति मन्त्रेण बटवे बलिं दत्त्वा अंगुष्ठतर्जनीलग्नमुद्रां प्रदर्शयेत्।।१।।

ॐ एह्येहि देवीपुत्र बटुकनाथ कपिल जटाभारभासुर त्रिनेत्र ज्वालामुख सर्वविघ्नान्नाशय नाशय सर्वोपचार सहितं बलिं गृह्ण गृह्ण स्वाहा। इस मन्त्र से बटु को बलि देकर अंगुष्ठ तथा तर्जनी से लग्न मुद्रा प्रदर्शित करे।

ॐ क्षां क्षीं क्षूं क्षैं क्षौं क्षः हुं स्थाने क्षेत्रपालेश सर्वकामं पूरय स्वाहा। इति मन्त्रेण क्षेत्रपालाय बलिं दत्त्वा वामहस्तांगुष्ठानामिकालग्नक्षेत्रपालबलिमुद्रां प्रदर्शयेत्।।२।।

"ॐ क्षां क्षीं क्षूं क्षैं क्षौं क्षः हुं स्थाने क्षेत्रपालेश सर्वकामं पूरय स्वाहा।" इस मन्त्र से क्षेत्रपाल को बलि देकर बाएँ हाथ के अंगुष्ठ और अनामिका से लग्नक्षेत्रपाल बलिमुद्रा को प्रदर्शित करे।।२।।

ऊर्ध्वं ब्रह्माण्डतो वा दिवि गगनतले भूतले निष्कले वा पाताले वाऽनलेवा सलिलपवनयोर्यत्र कुत्र स्थिता वा। क्षेत्रे पीठोपपीठादिषु च कृतपदा धूपदीपादिकेन प्रीता देव्यः सदा नः शुभबलिविधिना पांतु वीरेन्द्रवन्द्याः। यां योगिनीभ्यः स्वाहा। इति मन्त्रेण योगिनीभ्यो बलिं दत्त्वा अनामामध्यमांगुष्ठलग्नयोगिनीबलिमुद्रां प्रदर्शयेत्।।३।।

ब्रह्माण्ड से ऊपर, द्युलोक में, गगनतल में, भूतल में या निष्कल, पाताल, अनल, सलिल या पवन में, जहाँ कहीं भी स्थित हों, क्षेत्र, पीठ या उपपीठ आदि में जहाँ स्थित हों वहाँ धूप दीप आदि से प्रसन्न होकर वीरेन्द्रों से वन्दनीय देवियाँ सदा हमारी रक्षा करें। 'या योगिनीभ्यः स्वाहा।' इस मन्त्र से योगिनियों को बलि देकर अनामिका, मध्यमा तथा अंगुष्ठ से लग्नयोगिनीबलिमुद्रा प्रदर्शित करें।।३।।

ॐ गां गीं गूं गं गणपतये वरवरद सर्वजनं मे वशमानय सर्वोपचारसहितं बलिं गृह्णगृह्ण स्वाहा। इति मन्त्रेण गणेशाय बलिं दत्त्वा किंचद्वक्रीकृतमध्यां गणनाथबलिमुद्रां प्रदर्शयेत।।४।।

'ॐ गां गीं गूं गं गणपतये वर वरद सर्वजनं वशमानय सर्वोपचारसहितं बलिं गृह्ण गृह्ण स्वाहा।' इस मन्त्र से गणेश को बलि देकर मध्यमा अंगुली को कुछ टेढ़ी करके गणनाथबलिमुद्रा प्रदर्शित करे।

इति बलिं दत्त्वा हस्तौ प्रक्षाल्याचामेत्। ततः पुनर्देवीं ध्यात्वा जपं कुर्यात्।

इस प्रकार बलि देकर हाथ धोकर आचमन करें। इसके बाद पुनः देवी का ध्यान करके जप करें।

अस्य पुरश्चरणं सप्तदशसहस्रजपः तिलैर्बन्धूककुसुमैर्मधुरान्वितैर्दशांशतो होमः। तत्तद्दशांशेन तर्पणमार्जनब्राह्मणभोजनानि कुर्यात्। एवं कृते मन्त्रः सिद्धो भवति। एतस्मिन्सिद्धे मन्त्रे मन्त्री प्रयोगान् साधेयत्।

इसका पुरश्चरण सप्तदश सहस्र जप है। जप का दशांश मधुरान्वित तिल तथा बन्धूक कुसुमों से होम करना चाहिये। होम से दशांश तर्पण, तर्पण से दशांश मार्जन और मार्जन से दशांश ब्राह्मणभोजन करना चाहिये। ऐसा करने से मन्त्र सिद्ध होता है। इस मन्त्र के सिद्ध होने पर साधक प्रयोगों को सिद्ध करे।

सप्तदशसहस्राणि प्रजपेत्तद्दशांशतः। तिलैर्बन्धूककुसुमैर्जुहुयान्मधुरान्वितैः।।१।। एवं सम्पूज्य संस्तुत्य नवात्मन्युपसंहरेत्। सिद्धमन्त्रः प्रकुर्वीत प्रयोगाच्छिवभाषितान्।।२।। हरिद्रया चन्दनेन लाक्षया गुरुणापि च। पुरेण विविधैर्मांसैर्जुहुयादिष्टसिद्धये।।३।। हरिद्रामालया कुर्याज्जपं स्तम्भनकर्मणि। स्फटिकैः पद्मबीजैश्च रुद्राक्षैः शुभकर्मणि।।४।। स्वर्णादिपत्रैः सुरया बन्धूककुसुमैस्तिलैः। वाराहीं तर्पयेत्सम्यक् कामसम्पूर्तये नरः।।५।। चतुःशतं तु तापिच्छैर्जुहुयात्स्तम्भनेच्छया[1]। लाजचूर्णतिलैः कुर्यात्खरमेषासृजाऽन्वितैः।।६।। पिण्डं मनोहरं तं तु पूजयेत्तर्पयेदपि। सपत्नसदनं[2] सांगमेतस्यै विनिवेदयेत्।।७।। कुण्डे पिण्डं निधायामुं जुहुयात्तत्र चायुतम्। एकविंशतिरात्रीषु लाजै रक्तसमन्वितैः।।८।। एवं कृते वैरिवृन्दं भक्ष्यते योगिनीगणैः। देवीयन्त्रं समालिख्य नूत्ने कौलालखर्परे।।९।। वज्रमध्ये साध्यनाम लिखेत्कर्मसमन्वितम्।[3] कृष्णपुष्पैः समभ्यर्च्य निक्षिपेत्त्वरिवेश्मनि।।१०।। रिपुमुच्चाटयेच्छीघ्रं स्थितं वर्षशतान्यपि। वादित्रे यन्त्रमालिख्य वादयेत्समरान्तरे।।११।। श्रुत्वा तद्रवसंत्रस्ताः पलायन्ते विरोधिनः। पाषाणे लिखितं रात्र्या[4] पीतपुष्पेषु निःक्षिपेत्।।१२।। सम्पूजितमधोवक्त्रं वाचं संस्तम्भयेद्द्विषाम्। तापकार्याग्निनिक्षिप्तं[5] जले दोषप्रदं भवेत्।।१३।। साध्यर्क्षतरुगर्भस्थं[6] शत्रूणां दुःखदायकम्। किं बहूक्तेन सर्वेष्टं साधयेत्साधितं नृणाम्।।१४।।

सत्रह हजार मन्त्रों का जप करें। जप दशांश तिल, गुलदुपहरिया के फूल, मधु, घी तथा शकर से होन करे। इस प्रकार पूजा, स्तुति और नमस्कार करके मन्त्र का उपसंहार करें। मन्त्र सिद्ध हो जाने पर शिवजी द्वारा कहे गये प्रयोगों को करें। हल्दी, चन्दन, लाह और अगर, गुग्गुल

---

१ तापिच्छं नाम तमालपत्रम्।

२ सपत्नसदनं शत्रुगृहमेतस्मै पिण्डाय।

३ अमुकमुच्चाटयेति क्रियातुतम्।

४ रात्र्या हरिद्रया।

५ पाषाणे लिखित्वाऽग्नौ निक्षिप्तं तापकारि।

६ साध्यस्य यज्जन्मनक्षत्रं तद्वृक्षमध्ये क्षिप्तं तेषां दुःखदं तच्च निर्णयप्रकरणे ज्ञेयम्।

तथा अनेक प्रकार के मांसों से इष्टसिद्धि के लिए हवन करना चाहिये। स्तम्भन कर्म में हल्दी की माला से जप करना चाहिये। स्फटिक, कमल के बीज और रुद्राक्ष की माला से शुभ कर्मों में जप करना चाहिये। अपनी कामना की पूर्ति के लिए स्वर्णादि पत्रों, सुरा और गुलदुपहरिया के फूलों से तथा तिलों से वाराही देवी को अच्छी तरह तृप्त करना चाहिये। स्तम्भन की इच्छा से तमालपत्रों से चार सौ आहुति देनी चाहिये। गधा और भेड़ के रक्त तथा धान के लावा के चूर्ण से एक मनोहर पिण्ड बनाना और उसकी पूजा तथा तर्पण करना चाहिये। फिर वह पिण्डरूपी सांगशत्रुसदन देवी को समर्पित कर देना चाहिये। कुण्ड में उस पिण्ड को रख कर रक्त से मिश्रित लावा के साथ इक्कीस रात्रि तक दश हजार आहुति देनी चाहिये। ऐसा करने पर योगिनियाँ शत्रूदल को खा जाती हैं। देवीयन्त्र (वार्ताली स्तम्भन यन्त्र देखिये चित्र ३७) को कुम्हार के नये खपड़े पर लिखकर वज्र के बीच में कर्म समन्वित साध्य का नाम लिखें। काले फूलों से उसकी पूजा करके शत्रु के घर में उसे फेंक देने से वह शत्रु शीघ्र उच्चाटन कर देता है चाहे वह सौ वर्ष से स्थित क्यों न हो। बाजे पर यन्त्र को लिखकर युद्धभूमि में बजाने से उसकी ध्वनि को सुनकर उससे सन्त्रस्त विरोधी भाग जाते हैं। पत्थर पर उस यन्त्र को हल्दी से लिख कर पीले फूलों में फेंक देवें। अधोचक्र की पूजा करके उसे अग्नि में तपाने से वह शत्रु की वाणी को स्तम्भित कर देता है। पानी में डालना हानिकर होता है। साध्य के नक्षत्र के वृक्ष के नीचे गाड़ने से शत्रुओं को दुःखदायक होता है। अधिक कहने से क्या? इसे सिद्ध करने से यह मनुष्यों के सभी मनोवाछितों की सिद्धि कर देता है।

इति चतुर्दशोत्तरः शताक्षरी वार्तालीमन्त्रप्रयोगः।

इति श्रीम. त्रमहार्णवे द्वितीयखण्डे मिश्रतन्त्रे (१) षोडशस्तरंग

सप्तदश तरङ्ग

मिश्रतरङ्ग (२)

तत्रादौ महिषमर्दिनीमन्त्रप्रयोगः।

आदि में महिषमर्दिनी मन्त्र का प्रयोग बताया जा रहा है :

मन्त्रो यथा शारदातिलके :

शारदा तिलक में मंत्र इस प्रकार है।

महिषमर्दिनी स्वाहा।

यह अष्टाक्षर मन्त्र[1] है।

अस्य विधानम् :

विनियोग : ॐ अस्य श्रीमहिषमर्दिनीमन्त्रस्य नारदऋषिः गायत्रीछन्दः महिषमर्दिनी देवता सर्वेष्टसिद्धये जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास : ॐ नारदऋषये नमः शिरसि १। गायत्रीच्छन्दसे नमो मुखे २। महिषमर्दिनीदेवतायै नमो हृदि ३। विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ४। इति ऋष्यादिन्यासः।

करन्यास : महिषहिंसिके हुंफट् अंगुष्ठाभ्यां नमः १। महिषश (त्रो) त्रीशांगि हुंफट् तर्जनीभ्यां नमः २। महिषं भीषयभीषय हुं फट् मध्यमाभ्यां नमः ३। महिषं हनहन देवि हुं फट् अनामिकाभ्यां नमः ४। महिषसूदिनि हुफट् कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५। इति करन्यासः।

पञ्चाङ्गन्यास : महिषहिंसिके हुंफट् हृदयाय नमः १। महिषश (त्रो) त्रीशांगि हुंफट् शिरसे स्वाहा २। महिषं भीषयभीषय हुंफट् शिखायै वषट् ३। महिषं हनहन देवि हुंफट् कवचाय हुम् ४। महिषसूदिनि हुफट् अस्त्राय फट् ५। इति पञ्चाङ्गन्यासः[2]।

इस प्रकार न्यास विधि करके ध्यान करें।

अथ ध्यानम् :

गारुडोपलसन्निभां मणिमौलिकुण्डलमण्डितां नौमि भालविलोचनां महिषोत्तमाङ्गनिषेदुषीम्। चक्रशङ्खकृपाणखेटकबाणकार्मुकशूलकांस्तर्जनीमपि बिभ्रतीं निजबाहुभिः शखिशेखराम्।।१।।

एवं ध्यात्वा सर्वतोभद्रमण्डले मं मण्डूकादिपरतत्त्वान्तपीठदेवताभ्यो नमः इति पीठदेवताः सम्पूज्य पीठशक्तिं पूजयेत्।

इस प्रकार ध्यान करके सर्वतोभद्रमण्डल में "ॐ मं मण्डूकादि परतत्त्सानपीठदेवताभ्यो नमः" इससे पीठदेवताओं की पूजा करके पीठशक्तियों की इस प्रकार पूजा करें।

---

१ विश्वसारतन्त्रेः प्रणवाद्यां जपेद्विद्यां वा जपेत्सुधीः। वधूबीजादिकां वापि कवचाद्यां जपेत्तथा। सर्वकालेषु सर्वत्र कामाद्यां प्रजपेत्सुधीः। वाग्भवाद्यां जपेत्तां तु देवीं वाक्यविशुद्धये। इति नवाक्षरो मन्त्रः। विना बीजैर्महाविद्या निर्वीर्या परिकीर्तिता। पुटितां बीजयुग्मेन मुखे युग्मकदेशके। दशाक्षरीसमा नास्ति विद्या त्रिभुवनेश्वरी। प्रणवं च तथा मायाभवेद्विद्या पुनर्दश। कामं प्रणवमित्युक्ता भवेद्विद्या पुनर्दश। इति विशेषः।

२ पञ्चाङ्गानिमनोर्यत्र तत्र नत्र मनुं त्यजेत्।

पूर्वादिक्रमेण : ॐ जयायै नमः १। ॐ विजयायै नमः २। ॐ अजितायै नमः ३। ॐ अपराजितायै नमः ४। ॐ नित्यायै नमः ५। ॐ विलासिन्यै नमः ६। ॐ दोग्ध्र्यै नमः ७। ॐ अघोरायै नमः ८। मध्ये ॐ मंगलायै नमः ९।

इति पीठशक्तीः सम्पूज्य स्वर्णादिनिर्मितं मन्त्रं अग्न्युत्तारणपूर्वकं ह्रीं आधारशक्तये नमः इति पुष्पाद्यासनं दत्त्वा पीठमध्ये संस्थाप्य तत्र प्राणप्रतिष्ठां च कृत्वा पुनर्ध्यात्वा मूलेन मूर्मि प्रकल्प्य आवाहनादिपुष्पान्तैरुपचारैः सम्पूज्य देव्याज्ञां गृहीत्वा आवरणपूजां कुर्यात्। तत्र क्रमः :

इस प्रकार पीठशक्तियों की पूजा करके स्वर्णादि से निर्मित यन्त्र को अग्न्युत्तारण पूर्वक "ह्रीं आधारशक्तये नमः" इससे पुष्पादि आसन देकर पीठ के बीच में उसे स्थापित कर उसमें प्राणप्रतिष्ठा करके पुनः ध्यान करके मूल से मूर्ति की कल्पना करके आवाहनादि से लेकर पुष्पाञ्जलि दानपर्यन्त उपचारों से पूजा करके देवी की आज्ञा लेकर आवरण पूजा करें। उसमें यह क्रम है (महिषमर्दिनी पूजन यन्त्र देखिये चित्र ३८) :

षट्कोणकेसरेषु अग्निकोणे महिषहिंसिके हुं फट् हृदयाय नमः[1] १। निर्ऋतिकोणे महिषश (त्रो) त्रीशाङ्कि हुंफट् शिरसे स्वाहा[2] २। वायुकोणे महिषं भीषयभीषय हुं फट् शिखायै वषट्[3] ३। ईशाने महिषं हनहन देवि हुंफट् कवचाय हुम्[4] ४। देवीपश्चिमे महिषसूदिनि हुंफट् अस्त्राय फट्[5] ५।

इस प्रकार पञ्चाङ्गों की पूजा करें। इति प्रथमावरण।।१।।

ततोष्टदलेषु पूज्यपूजकयोर्मध्ये प्राचीं प्रकल्प्य पूर्वादिक्रमेण :

इसके बाद अष्टदलों में पूज्य पूजक के अन्तराल को पूर्व दिशा मानकर पूर्वादि क्रम से :

ॐ आं दुर्गायै नमः[6]। दुर्गाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः १। इति सर्वत्र। ॐ ईं वरवाणिन्यै नमः[7]। वरवर्णिनीश्रीपा० २। ॐ ऊं आर्यायै नमः[8]। आर्याश्रीपा ३। ॐ ॠं कनकप्रभायै नमः[9]। कनकप्रभाश्रीपा० ४। ॐ लृं कृत्तिकायै नमः[10]। कृत्तिकाश्रीपादु० ५। ॐ ऐं अभयप्रदायै नमः[11]। अभयप्रदाश्रीपा० ६। ॐ औं कन्यायै नमः[12]। कन्याश्रीपा० ७। ॐ अः सुरूपायै नमः[13]। सुरूपाश्रीपा० ८।

इससे आठ शक्तियों की पूजा करें। इति द्वितीयावरण।।२।।

पत्राग्रों में पूर्वादि क्रम से :

यं चक्राय नमः[14] १। रं शंखाय नमः[15] २। लं खड्गाय नमः[16] ३। वं खेटकाय नमः[17] ४। शं बाणाय नमः[18] ५। षं धनुषे नमः[19] ६। सं शूलाय नमः[20] ७। हं कपालाय नमः[21] ८।

इस प्रकार अस्त्रों की पूजा करें। इति तृतीयावरण।।३।।

ततो भूपुरे इन्द्रादीन् वज्रादींश्च पूजयेत्। इत्यावरणपूजां कृत्वा धूपादिनीराजनान्तं सम्पूज्य जपं कुर्यात्। अस्य पुरश्चरणमष्टलक्षजपः। तत्सहस्रं होमः तत्तद्दशांशेन तर्पणमार्जनब्राह्मणभोजनानि कुर्यात्। एवं कृते मन्त्रः सिद्धो भवति। एतस्मिन्सिद्धे मन्त्रे मन्त्री प्रयोगान् साधयेत्।

इसके बाद भूपुर के मध्य इन्द्रादि तथा वज्रादि की पूजा करें।

इस प्रकार आवरण पूजा करके धूपादि से लेकर नीराजन पर्यन्त पूजा करके जप करें। इसका पुरश्चरण आठ लाख जप है। आठ हजार होम है। तत्तद्दशांश तर्पण, मार्जन तथा ब्राह्मणभोजन है। ऐसा करने पर मन्त्र सिद्ध होता है। इसके सिद्ध होने पर साधक प्रयोगों को सिद्ध करे।

अष्टलक्षं जपेन्मन्त्रं तत्सहस्रं तिलैः शुभैः। वशयेत्तिलहोमेन नरान्नरपतीनपि।।१।।
सिद्धार्थैर्जुहुयान्मन्त्री रोगान्मुच्येत तत्क्षणात्। पद्मैर्हुत्वा जयेच्छत्रून्दूर्वाभिः शान्तिमाप्नुयात्।।२।।
पलाशकुसुमैर्वृष्टिर्धान्यैर्धान्यश्रियं व्रजेत्। काकपक्षैः कृतो होमो द्वेषं वितनुते नृणाम्।।३।।
मरीच होमान्मरणं रिपुराप्नोति सर्वथा। क्षुद्रादिचोरेभूताद्यान्ध्यात्वा देवी विनाशयेत्।।४।।

साधक आठ लाख मन्त्र का जप करे। उतने ही हजार शुभ तिलों की आहुतियाँ देवें। तिल के होम से नर और नरपतियों को साधक अपने वश में कर लेता है। साधक यदि पीली सरसों से होम करे तो रोग से तत्काल मुक्त हो जाता है। कमल तथा दूब से होम करने से साधक शांति प्राप्त करता है। पलाश के फूलों से होम करने से वर्षा होती है और अन्न से होम करने से धन धान्य की प्राप्ति होती है। कौए के पंखों से होम करने से मनुष्यों में द्वेष का विस्तार होता है। मरिच के होम से निश्चित रूप से शत्रु मृत्यु प्राप्त करता है। देवी का ध्यान करके क्षुद्र चोर तथा भूत प्रेत आदि को साधक नष्ट कर देता है।

इति महिषमर्दिनीमन्त्रप्रयोगः।

महिषमर्दिनी कवच

अथ वक्ष्ये महादेवीकवचं सर्वकामदम्। यस्य प्रसादमासाद्य भवेत्साक्षात्सदाशिवः।।१।।
ॐकारं पूर्वमुच्चार्य मन्त्री मन्त्रस्य सिद्धये। प्रपठेत्कवचं नित्यं मन्त्रवर्णस्य सिद्धये।।२।।

अब मैं महिषमर्दिनी के कवच को कहूँगा जिसका प्रसाद प्राप्त करके साधक सदाशिव बन जाता है। साधक ॐकार का उच्चारण करके मन्त्र की सिद्धि के लिए नित्य कवच का पाठ करे :

विनियोग : ॐ महिषर्दिन्याः कवचस्य भगवान्महाकाल ऋषिः अनुष्टुप्छन्दः आद्या शक्तिः महिषमर्दिनी देवता चतुर्वर्गफलप्राप्तये जपे विनियोगः ।।३।। क्लीं पातु मस्तके देवी कामिनी कामदायिनी। मकारे पातु मां देवी चक्षुर्युग्मं महेश्वरी ।।४।। हिकारे पातु वदने हिंगुलासुरनायिका। षकारे पातु मां श्वेता जिह्वायां त्वपराजिता।।५।। मकारे पातु मां देवी मर्दिनी सुरनायिका। र्दिकारे पातु मां देवी सावित्री कालनाशिनी।।६।। निकारे पातु मां नित्या हृदये वामपार्श्वयोः। नाभौ लिङ्गे गुदे कण्ठे कर्णयोः पार्श्वयोस्तथा।।७।। शिखायां कवचे पादे मुखजङ्घायुगे तथा। सर्वाङ्गे पातु मां स्वाहा सर्वशक्तिसमन्विता।।८।। कामाद्या पातु मां स्वाहा सर्वाङ्गे पातु मर्दिनी। दशाक्षरी महाविद्या सर्वाङ्गे पातु मर्दिनी।।९।। मर्दिनी पातु सततं मर्दिनी रक्षयेत्सदा। राजस्थाने तथा दुर्गे सिंहव्याघ्रभ्यादिषु श्मशाने प्रान्तरे दुर्गे नौकायां वह्निमध्यतः। दुर्गा पातु सदा देवी आर्या पातु सदाशिवा।।११।। प्रभा पातु महेशानी गगने पातु सर्वदा। कृत्तिका पातु सततमभया सर्वदाऽवतु।।१२।। प्रभा पातु महामाया माया पातु सदा मम। नन्दिनी पातु सततं सुप्रभा सर्वदाऽवतु।।१३।। विजया पातु सर्वत्र देव्यङ्गे नव शक्तयः। शक्तयः पान्तु सततं मुद्राः पान्तु सदा मम।।१४।। जया पातु सदा सूक्ष्मा विशुद्धा पातु सर्वदा। डाकिन्यः पान्तु सततं सिद्धाः पान्तु सदा मम।।१५।। सर्वत्र सर्वदा पातु देवी महिषमर्दिनी।

इति ते कथितं दिव्यं कवचं सर्वकामदम्।।१६।। यत्र तत्र न वक्तव्यं गोपितव्यं प्रयत्नतः। गोपितं सर्वतन्त्रेषु विश्वसारे प्रकाशितम्।।१७।। सर्वत्र सुलभा विद्या कवचं दुर्लभं

महत्।। शठाय भक्तिहीनाय निन्दकाय महेश्वरि।।१८।। न्यूनाङ्गे ह्यतिरिक्ताङ्गे क्रूरे मिथ्यातिभाषिणि। न स्तवं दर्शयेद्दिव्यं कवचं सुरदुर्लभम्।।१६।। यत्र तत्र न वक्तव्यं शङ्करेण च भाषितम्। दत्त्वा तेभ्यो महेशानि नश्यन्ति सिद्धयः क्रमात्।।२०।। मन्त्राः पराङ्मुखा यान्ति शापं दत्त्वा सुदारुणम्। अशुभं च भवेत्तस्य तस्माद्यत्नेन गोपयेत्।।२१।। गोरोचनाकुकुमेन भूर्जपत्रे महेश्वरि। लिखित्वा शुभयोगेन ब्राह्मैन्द्रे वैधृतौ तथा ।।२२।। आयुष्मत्सिद्धियोगे च बालवे कौलेवपि वा। वाणिजे श्रवणायां च रेवत्यां वा पुनर्वसौ।।२३।। उत्तरात्रययोगेषु तथा पूर्वात्रयेषु च। अश्विन्यां वाऽथ रोहिण्यां तृतीयानवमीतिथौ।।२४।। अष्टाम्यां वा चतुर्दश्यां षष्ठ्यां वा पञ्चमितिथौ। आमायां वा पूर्णिमायां निशायां प्रान्तरे तथा।।२५।। एकलिङ्गे श्मशाने च शून्यागारे शिवालये। गुरुणावैष्णवैर्वापि स्वयम्भू-कुसुमैस्तथा।।२६।। शुक्लैर्वा रक्तकुसुमैश्चन्दनै रक्तसंयुतैः। शवाङ्गरचितावस्त्रे लिखित्वा धारयेत्पुनः।।२७।। तस्य सर्वार्थसिद्धिः स्याच्छंकरेणैव भाषितम्। कुमारीं पूजयित्वा च देवीसूक्तं निवेद्य च।।२८।। पठित्वा पूजयेद्विप्रान्धनवान्वेदपारगान्। आखेटकमुपाख्यानं कुमार्यैव दिनत्रयम्।।२६।। तदा धरेन्महारक्षां कवचं सर्वकामदम्। नाधयो व्याधयस्तस्य दुःखशोकैर्भयं क्वचित्।।३०।। वादी मूको भवेदृष्ट्वा राजा च सेवकायते। मासमेकं पठेद्यस्तु प्रत्यहं नियतः शुचिः।।३१।। दिवा भवेद्धविष्याशी रात्रौ शक्ति परायणः। षट्सहस्रप्रमाणेन प्रत्यहं प्रजपेत्सदा।।३२।। षण्मासैर्वा त्रिभिर्मासैर्विद्वद्वरो भवति ध्रुवम्। अपुत्रो लभते पुत्रं निर्धनो धनमाप्नुयात्।।३३।। अरोगी वलवान्श्चैव राजा च दासतामियात्। रजस्वलाभगे नित्यं जपेद्विद्यां समाहितः। एवं यः कुरुते धीमान्स एव श्रीसदाशिवः।।३४।।

यह मैंने सम्पूर्ण कामनाओं को पूर्ण करने वाला दिव्य कवच तुम्हें बताया है। इधर उधर इसे किसी को नहीं बताना चाहिये। प्रयत्न से इसे गुप्त रखना चाहिये। सभी तन्त्रों में इसे गुप्त कहा गया है। यह विश्वसार तन्त्र में प्रकाशित है। विद्या सर्वत्र सुलभ हो परन्तु कवच दुर्लभ है। हे महेश्वरि ! भक्तिहीन, शठ और निंदक को इसे नहीं देना चाहिये। हीन अङ्ग वाले तथा अधिक अङ्ग वाले, क्रूर तथा मिथ्याभाषी व्यक्ति को इसे नहीं देना चाहिये। देवताओं के लिए भी दुर्लभ यह दिव्य कवच किसी को भी नहीं दिखलाना चाहिये। जहाँ तहाँ इसे नहीं कहना चाहिये। यह शङ्कर द्वारा कहा गया है। पूर्वोक्त लोगों को इसे देने से क्रमशः सिद्धियों का नाश हो जाता है तथा मन्त्र अत्यन्त दारुण शाप देकर पराङ्मुख हो जाते हैं। इसे बताने वाले का अशुभ हो जाता है इसलिये यत्न से इसकी रक्षा करनी चाहिये। ब्राह्म, ऐन्द्र, वैधृति, आयुष्मान्, सिद्धि, बालव, कौलव और वणिज शुभ योगों में, श्रवण, रेवती, पुनर्वसू, उत्तराषाढा, उत्तरा फाल्गुनी तथा उत्तरा भाद्रपद, और पूर्वाषाढा, पूर्वाफाल्गुनी तथा पूर्वाभाद्रपदा, अश्विनी और रोहिणी नक्षत्रों में, तृतीया, नवमी, अष्टमी, चतुदर्शी, षष्ठी तथा पञ्चमी तिथियों में, अमावस्या और पौर्णमासी की रात्रि में तथा एकान्त में जहाँ एक शिवालय हो वहाँ या शून्य घर में या शून्य शिवालय से गुरु (अगर), वैष्णव (कमल), स्वयम्भू कुसुमों, सफेद या लाल फूलों तथा सफेद या लाल चन्दन से युक्त श्मशान के कोयले से शव के वस्त्र पर लिख कर इसे धारण करें तो उसके सभी अर्थों की सिद्धि होती है, ऐसा शङ्करजी ने ही कहा है। कुमारी की पूजा करके देवीसूक्त के पाठ का निवेदन करने के बाद धनवान् साधक कुमारी के साथ आखेटक उपाख्यान को पढ़कर, वेदविद् ब्राह्मणों को भोजन कराकर तब सब कामनाओं को देने वाले महारक्षाकवच को धारण करे तो

उसे कहीं पर शारीरिकं या मानसिक कष्ट नहीं होगा और दुःख या शोक का भी भय नहीं रहेगा। ऐसे साधक को देख कर वादी मूक हो जाता है। राजा उसका दास हो जाता है। जो एक मास तक प्रतिदिन नियमित रूप से पवित्र होकर इसका पाठ करता है, दिन में हविष्यान्न खाता है, रात्रि में शक्ति की उपासना करता है तथा प्रतिदिन छः हजार प्रमाण से जप करता है वह छः मास में या तीनमास में निश्चित रूप से विद्वान होता है। जिसको पुत्र नहीं है वह पुत्र प्राप्त करता है। जो निर्धन है वह धनवान हो जाता है। रोगी नीरोग हो जाता है तथा निर्बल बलवान् हो जाता है एवं राजा उसका दास हो जाता है। जो समाहित चित्त होकर रजस्वला भग पर नित्य विद्या का जप करता है वह धीमान् एवं सदाशिव हो जाता है।

इति विश्वसारतन्त्रे महिषमर्दिन्याः कवचं समाप्तम्।

रेणुकाशबरी मन्त्रप्रयोगः

मन्त्र महोदधि में मन्त्र इस प्रकार हैः

ॐ श्रीं ह्रीं क्रों ऐं।

यह पञ्चाक्षर मन्त्र है।

अस्यविधानम्।

विनियोग : अस्य रेणुकाशबरीमन्त्रस्य भैरवऋषिः पंक्तिश्छन्दः रेणुकाशबरी देवता ममाभीष्टसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास : ॐ भैरवऋषये नमः शिरसि १। पंक्तिच्छन्दसे नमो मुखे २। रेणुकाशबरी देवतायै नमो हृदि ३। विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ४।

करन्यास : ॐ नमो अंगुष्ठाभ्यां नमः १। श्रींनमस्तर्जनीभ्यां नमः २। ह्रीं नमो मध्यमाभ्यां नमः ३। क्रों नमः अनामिकाभ्यां नमः ४। ऐं नमः कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५। ॐ श्रीं ह्रीं क्रों ऐं करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ६। इति करन्यासः।

हृदयादिषडङ्गन्यास : ॐ नमो हृदयाय नमः १। श्रीं नमः शिरसे स्वाहा २। ह्रीं नमः शिखायै वषट् ३। क्रों नमः कवचाय हुं ४। ऐं नमः नेत्रत्रयाय वौषट् ५। ॐ श्रीं ह्रीं क्रों ऐं अस्त्राय फट् ६। इति हृदयादिषडङ्गन्यासः।

अथ ध्यानं : ॐ हेमाद्रिसानावुद्याने नानाद्रुममनोहरे। रत्नमण्डपमध्यस्थवेदिकायां स्थितां स्मरेत्। इत्युद्यानं स्मृत्वा तत्र ध्यायेत्। ॐ गुञ्जाफलाकल्पितहाररम्यां श्रुत्योः शिखण्डं शिखिनी वहन्तीम्। कोदण्डबाणौ दधतीं कराभ्यां कटिस्थवल्कां शबरीं स्मरेयम्।।१।।

इति ध्यायेत्। ततः सर्वतोभद्रमण्डले आधारशक्त्यादिपरतत्त्वान्तपीठदेवताः संस्थाप्य ॐ आं आधारशक्त्यादिपरतत्त्वान्तपीठदेवताभ्यो नमः। इति पीठदेवताः सम्पूज्य नव पीठशक्तीः पूजयेत्।

इससे ध्यान करने के बाद सर्वतोभद्रमण्डल में आधारशक्ति से लेकर परतत्त्वान्त पीठदेवताओं को स्थापित करके "ॐ आं आधारशक्त्यादि परतत्त्वान्त पीठदेवताभ्यो नमः" इससे पीठदेवताओं की पूजा करके नवपीठशक्तियों की इस प्रकार पूजा करें।

पूर्वादिक्रमेण ॐ जयायै नमः १। ॐ विजयायै नमः २। ॐ अजितायै नमः ३। ॐ अपराजितायै नमः ४। ॐ नित्यायै नमः ५। ॐ विलासिन्यै नमः ६। ॐ दोग्ध्र्यै नमः ७। ॐ अघोरायै नमः ८। मध्ये ॐ मङ्गलायै नमः ९।

इति पूजयेत्। ततः स्वर्णादिनिर्मितं यन्त्रं मूर्तिं वा ताम्रपात्रे निधाय घृतेनाभ्यज्य तदुपरि दुग्धधारां जलधारां च दत्त्वा स्वच्छवस्त्रेण प्रोक्ष्य ॐ सर्वबुद्धिप्रदे वर्णनीये सर्वसिद्धिप्रदे डाकिनीये ॐ रेणुकाशबरि एह्येहि नमः। इति मन्त्रेण पुष्पाद्यासनं दत्त्वा पीठमध्ये संस्थाप्य प्रतिष्ठां च कृत्वा मूलेन मूर्मि प्रकल्प्य पाद्यादिपुष्पान्तैरुपचारैः सम्पूज्य देव्याज्ञां गृहीत्वा आवरणपूजां कुर्यात्।

इससे पूजा करें। इसके बाद स्वर्णनिर्मित यन्त्र या मूर्ति को ताम्रपात्र में रख कर घी से अभ्यंग करके उसके ऊपर घी तथा दूध की धार डाल कर स्वच्छ वस्त्र से पोंछ कर "ॐ सर्वबुद्धिप्रदे वर्णनीये सर्वसिद्धिप्रदे डाकिनीये ॐ रेणुकाशबरि एह्येहि नमः" इस मन्त्र से पुष्प आदि का आसन देकर पीठ के मध्य स्थापित करके प्राणप्रतिष्ठा करके मूलमन्त्र से मूर्ति की कल्पना करके पाद्यादिपुष्पान्त उपचारों से पूजा करके देवी की आज्ञा लेकर इस प्रकार आवरण पूजा करें (रेणुका शबरी पूजन यन्त्र देखिये चित्र ३६)।

पुष्पाञ्जलिमादाय ॐ संविन्मये परे देवि परामृतरसप्रिये। अनुज्ञां देहि मे मातः परिवारर्चनायते। इति पठित्वा पुष्पाञ्जलिं च दत्वा देव्याज्ञां गृहीत्वा आवरणपूजां कुर्यात्।

पुष्पाञ्जलिं लेकर "ॐ संविन्मये परे देवि परामृतरसप्रिये। अनुज्ञां देहि मे मातः परिवारार्चनायते।" इसे पढ़ कर पुष्पाञ्जलि देकर देवी की आज्ञा लेकर आवरण पूजा करें।

ततः षट्कोणकेसरेषु आग्नेयादिचतुर्दिक्षु मध्ये दिक्षु च।

इसके बाद षट्कोण केसरों में आग्नेयादि चारों दिशाओं में और मध्य दिशाओं में :

ॐ हृदयाय नमः[१]। हृदयश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः १। इति सर्वत्र। श्रींशिरसे स्वाहा[२]। शिरःश्रीपा० २। ह्रीं शिखायै वषट्[३]। शिखाश्रीपा० ३। क्रों कवचाय हुम्[४]। कवचश्रीपा० ४। ऐंनेत्रत्रयाय वौषट्[५]। नेत्रत्रयश्रीपा० ५। ॐ श्रीं ह्रीं क्रों ऐं अस्त्राय फट्[६] अस्त्रश्रीपा० ६।

इति षडङ्गानि पूजयेत्। ततः पुष्पाञ्जलिमादाय मूलमुच्चार्य ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले। भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम्।।१।। इति पठित्वा पुष्पाञ्जलिं च दत्त्वा पूजितास्तर्पिताः सन्तु इति वदेत। इति प्रथमावरणम्।।१।।

इससे षडङ्गों की पूजा करें। इसके बाद पुष्पाञ्जलि लेकर मूलमन्त्र का उच्चारण करके "ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले। भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम्" कह कर पुष्पाञ्जलि देकर 'पूजितास्तर्पिताःन्तु' यह कहें। इति प्रथमावरण।।१।।

ततोष्टदलेषु पूज्यपूजकयोरन्तरालं प्राची। तदनुसारेण अन्या दिशः प्रकल्प्य प्राचीक्रमेण।

इसके बाद अष्टदलों में पूज्य पूजक के अन्तराल को पूर्वदिशा मानकर तदनुसार अन्य दिशाओं की कल्पना करके प्राची क्रम से :

ॐ हुंकार्यै नमः[७]। हुंकारीश्रीपा० १। ॐ खेचर्यै नमः[८]। खेचरीश्रीपा० २। ॐ चण्डास्यायै नमः[९]। चण्डास्याश्रीपा० ३। ॐ छेदिन्यै नमः[१०]। छेदिनीश्रीपा०। ॐ क्षेपणायै नमः[११]। क्षेपणाश्रीपा० ५। ॐ स्त्रियै नमः[१२] स्त्रीश्रीपा० ६। ॐ हुंकार्यै नमः[१३]। हुंकारीश्रीपा० ७। ॐ क्षेमकार्यै नमः[१४]। क्षेमकारीश्रीपा० ८।

इत्यष्टौ शक्तीः सम्पूज्य पुष्पाञ्जलिं दद्यात्। इति द्वितीयावरणम्।।२।।

इस प्रकार आठ शक्तियों की पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवें। इति द्वितीयावरण।।२।।

ततो भूपुरे पूर्वादिक्रमेण इन्द्रादिदशदिक्पालान्[१५-२४] वज्राद्यायुधानि[२५-३४] च पूजयेत्।

इसके बाद भूपुर में पूर्वादि क्रम से इन्द्रादि दशदिक्पालों को तथा उनके वज्र आदि आयुधों की पूजा करें।

इत्यावरणपूजां कृत्वां धूपादिनमस्कारान्तं सम्पूज्य जपं कुर्यात्। अस्य पुरश्चरणं पञ्चलक्षजपः। बिल्वकाष्ठदीप्ताग्नौ बिल्वफलैर्दशांशतो होमः तत्तद्दशांशेन तर्पणमार्जन-ब्राह्मणभोजनानि कुर्यात्। एवं कृते मन्त्रः सिद्धो भवति। एतस्मिन्सिद्धे मन्त्रे मन्त्री प्रयोगान् साधयेत्।

इस प्रकार आवरण पूजा करके धूपदान से लेकर नमस्कार पर्यन्त पूजा करके जप करें। इसका पुरश्चरण पाँच लाख जप है। बेल की समिधाओं से प्रदीप्त अग्नि में बेल के फलों से जप का दशांश होम करना चाहिये। होम का तत्तद्दशांश तर्पण, मार्जन तथा ब्राह्मण भोज करना चाहिए। ऐसा करने से मन्त्र सिद्ध होने पर साधक प्रयोगों को सिद्ध करे।

ध्यात्वैवं प्रजपेल्लक्षपञ्चकं दद्दशांशतः। फलैर्बैल्वैः प्रजुहुयात्तत्काष्ठैरेधितेऽनले।।१।।
एवं सिद्धं मनुं सम्यक्कृत्वा कर्मणि योजयेत्। मल्लीपुष्पैर्जना वश्या इक्षुदण्डैर्धनाप्तयः।।२।।
पञ्चगव्यैर्धेनवः स्युरशोककुसुमैस्तुताः। इन्दीवरैः कृते होमे नृपपत्नी वंशवदा।।३।।
अन्नाप्तिरन्नैः सकलं मधूकैर्वाच्छितं भवेत्। प्रोदिता शबरी विद्या कलौ त्वरितसिद्धिदा।।४।।

ध्यान करके पाँच लाख जप करें, जप का दशांश बेल की समिधाओं से प्रदीप्त अग्नि में बेल से होम करें। इस प्रकार मन्त्र को सिद्ध करके उसे कर्म में लगाना चाहिये। मल्लिका के फूलों से मनुष्य वश में हो जाते हैं। गन्ने के टुकड़ों से होम करने पर धन प्राप्त होता है। पञ्चगव्य से होम करने पर गायें प्राप्त होती हैं। अशोक के पुष्पों से होम करने पुत्र प्राप्त होते हैं। कमलों से होम करने पर रानी वश में होती है। अन्न से होम करने पर अन्न की प्राप्ति होती है। महुए के फूलों से होम करने पर मनोवांछित फल प्राप्त होता है। कलि में शबरी विद्या शीघ्र सिद्धि देने वाली कही गई है।

इति रेणुकाशबरीपञ्चाक्षर मन्त्रप्रयोगः।

अन्नपूर्णामन्त्रप्रयोग

मन्त्रमहोदधौ : अन्नपूर्णेश्वरीमन्त्रं वक्ष्येऽभीष्टप्रदायकम्। कुबेरोयामुपास्याशु लब्धवा-न्निधिनाथताम् शम्भोः सख्यं दिगीशत्वं कैलासाधीशतामपि।।१।। मन्त्रो यथा :

मन्त्र महोदधि में कहा गया है : इच्छानुसार फल देने वाला अन्नपूर्णेश्वरी मन्त्र मैं कह रहा हूँ। कुबेर इसकी साधना से निधियों के नाथ हो गये; साथ ही उन्होंने शिवजी के साथ मित्रता, दिक्पालत्व तथा कैलास का स्वामित्व भी पा लिया। मन्त्र यह है :

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं नमो भगवति माहेश्वरि अन्नपूर्णे स्वाहा।

यह बीस अक्षरों का मन्त्र है।

अस्य विधानम् :

विनियोग : अस्यान्नपूर्णामन्त्रस्य द्रुहिणऋषिः[1] कृतिच्छन्द अन्नपूर्णेशी देवता ममाखिलसिद्ध्यर्थं जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास : ॐ द्रुहिणऋषये नमः शिरसि १। कृतिच्छन्दसे नमः मुखे २। अन्नपूर्णादेवतायै नमो हृदि ३। विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ४। इति ऋष्यादिन्यासः।

---

१. द्रुहिणी ब्रह्मा।

करन्यास : ॐ ह्रां अगुंष्ठाभ्यां नमः १। ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः २। ॐ ह्रू मध्यमाभ्यां नमः ३। ॐ ह्रैं अनामिकाभ्यां नमः ४। ॐ ह्रौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५। ॐ ह्रः करतलकरपृष्ठाभ्यां नम ६। इति करन्यासः।

ह्रदयादिषडङ्गन्यास : ॐ ह्रां ह्रदयाय नमः १। ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा २। ॐ ह्रूँ शिखायै वषट् ३। ॐ ह्रैं कवचाय हुं ४। ॐ ह्रौं नेत्रत्रयाय वौषट् ५। ॐ अस्त्राय फट् ६। इति ह्रदयादिषडङ्गन्यासः।

वर्णन्यास : ॐ नमो मुखे १। ह्रीं नमो दक्षनासापुटे २। श्रीं नमो वामनासापुटे ३। क्लीं नमो दक्षनेत्रे ४। नमो नमो वामनेत्रे ५। भगवति नमो दक्षिणकर्णे ६। माहेश्वरि नमो वामकर्णे ७। अन्नपूर्णे नमो लिङ्गे ८। स्वाहा नमो गुदे ९। इति वर्णन्यासः।

इस प्रकार न्यास करके ध्यान करें।

अथ ध्यानम् :

तप्तस्वर्णनिभा शशाङ्कमुकुटा रत्नप्रभाभासुरा नानावस्त्रविराजिता त्रिनयना भूमिरमाभ्यां युता। दर्वीं हाटकभाजनं च दधती रम्योच्चपीनस्तनी नित्यं तं शिवमाकलय मुदिता ध्येयान्नपूर्णेश्वरी।।१।।

इति ध्यायेत्। ततः पीठादौ रचिते सर्वतोभद्रमण्डले मण्डूकादिपरतत्त्वान्तपीठदेवताः संस्थाप्य ॐ मं मण्डूकादिपरतत्त्वान्तपीठदेवताभ्यो नमः। इति पीठदेवताः सम्पूज्य नवपीठशक्तीः पूजयेत्।

इस प्रकार ध्यान करने के बाद पीठादि पर रचित सर्वतोभद्रमण्डल में मण्डूकादि परतत्त्वान्त पीठदेवताओं को स्थापित करके "ॐ मं मण्डूकादि परतत्त्वान्त पीठदेवताभ्यो नमः" इससे पीठदेवताओं की पूजा करके नवपीठशक्तियों की इस प्रकार पूजा करें।

पूर्वाद्यष्टसु दिक्षु ॐ जयायै नमः १। ॐ विजयायै नमः २। ॐ अपरायै नमः ३। ॐ अपराजितायै नमः ४। ॐ नित्यायै नमः ५। ॐ विलासिन्यै नमः ६। ॐ दोग्ध्र्यै नमः ७। ॐ अघोरायै नमः ८। मध्ये ॐ मङ्गलायै नमः ९।

इति पीठशक्तीः पूजयेत्। ततः स्वर्णादिनिर्मितपत्रे त्रिकोणं विलिख्य तदुपरि षट्कोणचतुर्दलाष्टदलं च तदुपरि षोडशदलं तदुपरि भूपुरेण युतं यन्त्रं कृत्वा तत्ताम्रपात्रे निधाय धृतेनाभ्यज्य तदुपरि दुग्धारां जलधारां च दत्त्वास्वच्छवस्त्रेण प्रोक्ष्य ॐ ह्रीं अन्नपूर्णे पद्मासनाय नमः। इति मन्त्रेण पुष्पाद्यासनं दत्त्वा पीठमध्ये संस्थाप्य प्रतिष्ठां च कृत्वा मूलेन मूर्तिं प्रकल्प्य पाद्यादिपुष्पान्तैरुपचारैः सम्पूज्य देव्याज्ञां गृहीत्वा आवरणपूजां कुर्यात्। तद्यथा : पुष्पाञ्जलिमादाय सविन्मये परे देवि परामृतरसप्रिये। अनुज्ञां देहि देवेशि परिवारार्चनाय मे।।१।। इति पठित्वा पुष्पाञ्जलिं दद्यात्।

इस प्रकार पीठशक्तियों की पूजा करें। इसके स्वर्ण आदि से निर्मित पत्र में त्रिकोण लिख कर उसके ऊपर षट्कोण, चतुर्दल, अष्टदल, तथा उसके ऊपर षोडशदल, और उसके ऊपर भूपुर से युक्त यन्त्र बनाकर उसे ताम्रपात्र में रख कर घी से अभ्यङ्ग करके उस पर दुग्धधारा तथा जलधारा डालकर स्वच्छ वस्त्र से पोंछ कर "ॐ ह्रीं अन्नपूर्णे पद्मासनाय नमः" इस मन्त्र से पुष्पाद्यासन देकर पीठ के बीच में उसे स्थापित करके उसमें प्राणप्रतिष्ठा करके मूलमन्त्र से मूर्ति की कल्पना करके पाद्य आदि से लेकर पुष्पदानपर्यन्त उपचारों से पूजा करके देवी की आज्ञा लेकर आवरणपूजा करे। (अन्नपूर्णा पूजनयन्त्र देखिये चित्र ४०)। पुष्पाञ्जलि लेकर "ॐ संविन्मये परे देवि परामृतरसप्रिये। अनुज्ञां देहि देवेशि परिवारार्चनाय मे।" यह पढ़ कर पुष्पाञ्जलि अर्पित करें।

इत्याज्ञां गृहीत्वा त्रिकोणे आग्नेयादिक्रमेण अग्निकोणे।

इस प्रकार आज्ञा लेकर त्रिकोण में आग्नेयादि क्रम से अग्निकोण में :

ॐ ह्रौं नमः शिवाय[1]। शिवश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः १।

इस मन्त्र से शिव की पूजा करें।।१।।

वायुकोणे ॐ नमो भगवते वराहरूपाय भूर्भुवःस्वःपतये भूपित्वं मे देहि दापय स्वाहा[2]। वराहश्रीपा० २।

इस मन्त्र से वराह की पूजा करें।।२।।

ईशानकोणे ॐ नमो नारायणाय[3]। नारायणश्रीपा० ३।

इस मन्त्र से नारायण की पूजा करें।।३।।

इति सम्पूज्य पुष्पाञ्जलिं गृहीत्वा : अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सले। भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम्। इति पठित्वा पुष्पाञ्जलिं दत्त्वा पूजितास्तर्पिताः सन्तु इति वदेत्। इति प्रथमावरणम्।।१।।

इस प्रकार पूजा करके पुष्पाञ्जलि लेकर "अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले। भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम्।" इसे पढ़ कर पुष्पाञ्जलि देकर "पूजितास्तर्पिताः सन्तु" यह कहे। इति प्रथमावरण।।१।।

ततः षट्कोणकेसरेषु आग्नेयादिचतुर्दिक्षु मध्ये दिक्षु च।

इसके बाद षट्कोण केसरों में आग्नेयादि चारों दिशाओं में और मध्य दिशाओं में।

ॐ ह्रां हृदयाय नमः[4]। हृदयश्रीपा० १। ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा[5]। शिरःश्रीपा० २। ॐ ह्रूं शिखायै वषट्[6]। शिखाश्रीपा० ३। ॐ ह्रैं कवचाय हुम्[7]। कवचश्रीपा० ४। ॐ ह्रौं नेत्रत्रयाय वौषट्[8]। नेत्रत्रयायश्रीपा० ५। ॐ ह्रः अस्त्राय फट्[9]। अस्त्रश्रीपा० ६।

इससे षडङ्गों की पूजा करें।

देवीवामभागे ॐ ग्लौं अन्नं मह्यन्नं मे देह्यन्नाधिपतये ममान्नं प्रदापय स्वाहा[10]। ग्लौं पृथिव्यै नमः। पृथिवीश्रीपा० ७।

इस मन्त्र से भूमि की पूजा करें।।१।।

देवीदक्षिणतः ॐ श्रीं अन्नं मह्यन्नं मे देह्यन्नाधिपतये ममान्नं प्रदापय स्वाहा[11]। श्रीं श्रीलक्ष्म्यै नमः। लक्ष्मीश्रीपा०।

इति मन्त्रेण लक्ष्मीं सम्पूज्य पुष्पाञ्जलिं दद्यात्। इति द्वितीयावरणम्।।२।।

इस मन्त्र से लक्ष्मी की पूजा करके पुष्पाञ्जलि दें। इति द्वितीयावरण।।२।।

ततश्चतुर्दले पूज्यपूजकयोरन्तरालं प्राची। तदनुसारेण अन्या–दिशः प्रकल्प्य प्राचीक्रमेण चतुर्दिक्षु।

इसके बाद चतुर्दल में पूज्य और पूजक के अन्तराल को प्राची दिशा मानकर तदनुसार अन्य दिशाओं की कल्पना करके प्राचीक्रम से चारों दिशाओं में :

ॐ अपरायै नमः[12]। अपराश्रीपा० १। ह्रीं भुवनेश्वर्यै नमः[13]। भुवनेश्वरीश्रीपादुकां २। श्रीं कमलायै नमः[14]। कमलाश्रीपा० ३। क्लीं सुभगायै नमः[15]। सुभगाश्रीपा० ४।

इससे पूजा करके पुष्पाञ्जलि दें। इति तृतीयावरण।।१।।

इसके बाद अष्टदल में प्राची क्रम से :

ॐ ब्राह्मयै नमः[16]। ब्राह्मीश्रीपा० १। ॐ माहेश्वर्यै नमः[17]। माहेश्वरी श्रीपा० २। ॐ कौमार्यै नमः[18]। कौमारीश्रीपा० ३। ॐ वैष्णव्यै नमः[19]। वैष्णवश्रीपा० ४। ॐ वाराह्यै नमः[20]। वाराहीश्रीपा० ५। ॐ

इन्द्राण्यै नमः[21]। इन्द्राणीश्रीपा० ६। ॐ चामुण्डायै नमः[22]। चामुण्डाश्रीपा० ७। ॐ महालक्ष्म्यै नमः[23]। महालक्ष्मीश्रीपा० ८।

इससे आठ देवियों की पूजा करके पुष्पाञ्जलि दें। इति चतुर्थावरण।।४।।

इसके बाद षोडशदल में प्राचीक्रम से :

ॐ अं अमृतायै नमः[24]। अमृताश्रीपा० १। ॐ मां मानदायै नमः[25]। मानदाश्रीपा० २। ॐ तुं तुष्टयै नमः[26]। तुष्टिश्रीपा० ३। ॐ पुं पुष्ट्यै नमः[27] पुष्टिश्रीपा० ४। ॐ प्रीं प्रीत्यै नमः[28]। प्रीतिश्रीपा० ५। ॐ रं रत्यै नमः[29]। रतिश्रीपा० ६। ॐ ह्रीं ह्रियै नमः[30]। ह्री श्रीपा० ७। ॐ श्रीं श्रियै नमः[31]। श्रीश्रीपा० ८। ॐ स्वां स्वधायै नमः[32]। स्वधाश्रीपा० ९। ॐ स्वां स्वाहायै नमः[33]। स्वाहाश्रीपा० १०। ॐ ज्यों ज्योत्सनायै नमः[34]। ज्योत्सनाश्रीपा० ११। ॐ हैं हेमवत्यै नमः[35]। हेमवतीश्रीपा० १२। ॐ छां छायायै नमः[36]। छायाश्रीपा० १३। ॐ पूं पूर्णिमायै नमः[37]। पूर्णिमाश्रीपा० १४। ॐ निं नित्यायै नमः[38]। नित्याश्रीपा० १५। ॐ अं अमावस्यायै नमः[39]। अमावस्याश्रीपा० १६।

इस प्रकार पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवें। इति पञ्चमावरण।।५।।

ततोभूपुराद्बहिः पूर्वादिक्रमेण इन्द्रादिदशदिक्पालान् वज्राद्यायुधानि च सम्पूज्य पुष्पाञ्जलिं दद्यात्।

इसके बाद भूपुर से बाहर पूर्वादिक्रम से इन्द्रादि दश दिक्पालों तथा वज्र आदि उनके आयुधों की पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवें।

इत्यावरणपूजां कृत्वा धूपादिनमस्कारन्तं सम्पूज्य जपं कुर्यात्। अस्य पुरश्चरणं लक्षजपः। घृतमिश्रितचरुणा दशांशतो होमः। तत्तद्दशांशेन तर्पणमार्जनब्राह्मणभोजनानि कुर्यात्। एवं कृते मन्त्रः सिद्धो भवति। एतस्मिन्सिद्धे मन्त्रे मन्त्री प्रयोगान साधयेत्। तथा च : लक्षं जपोऽयुतं होमो घृतयुक्तस्य वै चरोः। जयादिनवशक्त्याढ्ये पीठे पूजा समीरिता।।१।। इत्थं जपादिभिः सिद्धे मन्त्रेऽस्मिन्धनसंचयैः। कुबेरसदृशो मन्त्री जायते जनवन्दितः।।२।।

इस प्रकार आवरण पूजा करके धूपदान से लेकर नमस्कारपर्यन्त पूजा करके जप करें। इसका पुरश्चरण एक लाख जप है। घृत मिश्रित चरु से दशांश होम होता है, और तत्तद्दशंश से तर्पण, मार्जन और ब्राह्मण भोजन होता है। इस प्रकार करने पर मन्त्र सिद्ध होता है। मन्त्र के सिद्ध होने पर साधक प्रयोगों को सिद्ध करे। इसका एक लाख जप और घृतयुंक्त चरू से दश सहस्र होम करना चाहिये। जया आदि नव शक्तियों से पूर्ण पीठ पर पूजा कही गयी है। इस प्रकार जप आदि से इस मन्त्र के सिद्ध होने पर साधक धन संचयों से कुबेर के समान हो जाता है और जनता में सम्मानित होता है।

इति विंशत्यक्षरान्नपूर्णा मन्त्रप्रयोगः।

मन्त्र महोदधि के अनुसार मन्त्रान्तर :

ॐ ह्रीं नमो भगवति माहेश्वर्यन्नपूर्णे स्वाहा।

इत्याष्टादशाक्षरो मन्त्रः। द्वि[2] नेत्र[2] वेद[4] वेदा[4] ब्धि[4] नेत्रा[2] र्णैरंगमीरितम्। इति प्रथमो मन्त्रः।

यह अट्ठारह अक्षरों का मन्त्र है। इस मन्त्र के २, २, ४, ४, ४, एवं २ अक्षरों से षडङ्गन्यास करना चाहिये (यथाः ॐ ह्रीं हृदयाय नमः। नमः शिरसे स्वाहा। भगवति शिखायै वषट्। माहेश्वरि कवचाय हुम्। अन्नपूर्णे नेत्रत्रयाय वौषट्। स्वाहा अस्त्राय फट्)। यह प्रथम मन्त्र है।

अन्य : ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं नमो भगवति माहेश्वरि ममाभिमतमन्नं देहि देहि अन्नपूर्णे स्वाहा।

इत्येकत्रिंशदक्षरो मन्त्रः। [४]युगां [६]गवेद [२]सप्ता [७]ब्धि [४]षडर्णैर [६]गकल्पना।

इति द्वितीयो मन्त्रः

यह ३१ अक्षरों का मन्त्र है। इस मन्त्र के ४, ६, ४, ७, ४ एवं ६ अक्षरों से षडङ्गन्यास करना चाहिये (यथाः ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं हृदयाय नमः। नमो भगवति शिरसे स्वाहा। माहेश्वरि शिखायै वषट्। ममाभिमतमन्नं कवचाय हुम्। देहि देहि नेत्रत्रयाय वौषट्। अन्नपूर्णे स्वाहा अस्त्राय फट्)। यह द्वितीय मन्त्र है।

अन्यश्च ॐ श्रीं ह्रीं नमो भगवति प्रसन्नपारिजातेश्वर्यन्नपूर्णे स्वाहा।

इति चतुर्विंशत्यक्षरो मन्त्रः। [३]रामाक्षि [२]वेद [४]निधि [६]भि [४]वेंदद्व्यर्णैः [२]षडङ्गकम्। इति तृतीयो मन्त्रः।

यह २४ अक्षरों का मन्त्र है। इस मन्त्र के ३, २, ४, ६, ४, एवं २ अक्षरों से षडङ्गन्यास करना चाहिये (यथाः ॐ श्रीं ह्रीं हृदयाय नमः। नमो शिरसे स्वाहा। भगवति शिखायै वषट्। प्रसन्नपारिजातेश्वरि कवचाय हुम्। अन्नपूर्णे नेत्रत्रयाय वौषट्। स्वाहा अस्त्राय फट्)। यह तृतीय मन्त्र है।

अन्यश्च ॐ श्रीं ह्रीं नमो भगवति माहेश्वरि प्रसन्नवरदेऽन्नपूर्णे स्वाहा।

इति पञ्चविंशत्यक्षरो मन्त्रः। स्याद्रा[३] मष[६] ड्यु[४] ग्ष[६] ड्वेद[४] नेत्रा[२] णैस्तत्षडङ्गकम्। इति चतुर्थो मन्त्रः।

यह २५ अक्षरों का मन्त्र है। इस मन्त्र के ३, ६, ४, ६, ४ एवं २ अक्षरों से षडङ्गन्यास करना चाहिये (यथाः ॐ श्रीं ह्रीं हृदयाय नमः। नमः भगवति शिरसे स्वाहा। माहेश्वरि शिखायै वषट्। प्रसन्नवदने कवचाय हुम्। अन्नपूर्णे नेत्रत्रयाय वौषट्। स्वाहा अस्त्राय फट्)। यह चतुर्थ मन्त्र है।

एषां चतुर्णां मन्त्राणामन्यत्सर्वं तु पूर्ववत्।

इन चारों मन्त्रों के विनियोग, ध्यान एवं पूजन आदि समस्त कृत्य पूर्वोक्त मन्त्र के समान हैं।

इत्यन्नपूर्णामन्त्रभेदाः।

अन्नपूर्णाकवच

देव्युवाच।

भवता त्वन्नपूर्णाया याया विद्याः सुदुर्ल्लभाः। कृपया कथिताः सर्वाः श्रुताश्चाधिगता मया।।१।। सांप्रतं श्रोतुमिच्छामि कवचं मन्त्रविग्रहम्।

देवी बोली : अन्नपूर्णा की जो जो विद्यायें अत्यन्त दुर्लभ हैं उन्हें आपने मुझे बतला दिया। मैंने भी उन्हें ग्रहण कर लिया। इस समय मैं कवच के मन्त्र को सुनना चाहती हूँ।

ईश्वर उवाच।

शृणु पार्वति वक्ष्यामि सावधानावधारय।।२।। ब्रह्मविद्यास्वरूपं च महदैश्वर्यदायकम्। पठनाद्धारणान्मर्त्यस्त्रैलोक्यैश्वर्यभाग्भवेत्।।३।।

ईश्वर बोले : हे पार्वति, तुम सावधान होकर सुनो! ब्रह्मविद्या का स्वरूप बड़ा ही ऐश्वर्यदायक है। इसके पढ़ने और धारण करने से मनुष्य तीनों लोकों के ऐश्वर्य का भागी हो जाता है।

विनियोग : त्रैलोक्यरक्षणस्यास्य कवचस्य ऋषिः शिवः। छन्दो विराट् देवता स्यादन्नपूर्णा समृद्धिदा।।४।। धर्मार्थकाममोक्षेषु विनियोगः प्रकीर्तितः।

ह्रीं नमो भगवत्यन्ते माहेश्वरिपदं ततः।।५।। अन्नपूर्णे ततः स्वाहा चैषा सप्तदशाक्षरी। पातु मामन्नपूर्णा सा या ख्याता भुवनत्रये।।६।। विमायाप्रणवाद्यैषा तथा सप्तदशाक्षरी। यात्वन्नपूर्णा सर्वाङ्गे रत्नकुम्भान्नपात्रदा।।७।। श्रीबीजाद्या तथैवैषा द्विरन्ध्रार्णा तथा मुखम्। प्रणवाद्या भ्रुवौ पातु कण्ठं वाग्बीजपूर्विका।।८।। कामबीजादिका चैषा हृदयं तु महेश्वरी। ऐं श्रीं ह्रीं च नमोन्ते च भगवतीपदं ततः।।६।। माहेश्वरी पदं चान्नपूर्णे स्वाहेति पातु मे। नाभिमेकार्णविंशर्णा पायान्माहेश्वरी सदा।।१०।। तारं माया रमा कामः षोडशार्णा ततः परम्। शिरःस्था सर्वदा पातु विंशत्यर्णात्मिका परा।।११।। अन्नपूर्णा महाविद्या ह्रीं पातु भुवनेश्वरी। शिरः श्रीं ह्रीं तथा क्लीं च त्रिपुटा पातु मे गुदम्।।१२।। षट्दीर्घभाजा बीजेन षडङ्गानि पुनन्तु माम्। इन्द्रो मां पातु पूर्वे च वह्निकोणेऽनलोऽवतु।।१३।। यमो मां दक्षिणे पातु नैर्ऋत्यां निर्ऋतिश्च माम्। पश्चिमे वरुणः पातु वायव्यां पवनोऽवतु।।१४।। कुबेरश्चोत्तरे पातु चैशान्यां शङ्करोऽवतु। ऊर्ध्वाधः पातु सततं ब्रह्मानन्तो यथाक्रमात्।।१५।। पान्तु वज्राद्यायुधानि दशदिक्षु यथाक्रमात्। इति ते कथितं पुण्यं त्रैलोक्यरक्षणं परम्।।१६।। यद्धृत्वा पठनाद्देवाः सर्वैश्वर्यमवाप्नुयुः ब्रह्मा विष्णुश्च रुद्रश्च धारणात्पठनाद्यतः।।१७।। सृजत्यवति हन्त्येव कल्पेकल्पे पृथक्पृथक्। पुष्पाञ्जल्यष्टकं देव्यै मूलेनैव समर्पयेत्।।१८।। कवचस्यास्य पठनात्पूजायाः फलमाप्नुयात्। वाणी वक्त्रे वसेत्तस्य सत्यं सत्यं न संशयः।।१६।। अष्टोत्तरशतं चास्य पुरश्चर्याविधिः स्मृतः। भूर्जे विलिख्य गुटिकां स्वर्णस्थां धारयेद्यदि।।२०।। कण्ठे वा दक्षिणे बाहौ सोपि पुण्यवतां वरः। ब्रह्मास्त्रादीनि शस्त्राणि तद्गात्रं प्राप्य पार्वति। माल्यानि कुसुमान्येव सुखदानि भवन्ति हि।।२१।।

मैंने यह परम् पुण्य त्रैलोक्यरक्षण नामक कवच तुमको बताया है। इस कवच को पढ़ने से मनुष्य पूजा का फल प्राप्त करता है। उसके मुख में वाणी का निवास होता है। मैं सत्य कहता हूँ इसमें तनिक भी संशय नहीं है। एक सौ आठ इसकी पुरश्चरणविधि है। यदि मनुष्य भोजपत्र पर इसे लिखकर सोने की तावीज में रख कर कण्ठ या बायें हाथ में धारण करें तो ब्रह्मास्त्र आदि अस्त्र उसके शरीर का स्पर्श करके माला के फूलों की तरह सुखदायी हो जाते हैं।

इति भैरवतन्त्रेऽन्नपूर्णाकवचं समाप्तम्।

अन्नपूर्णा स्तोत्र

ॐ नमः कल्याणदे देवि नमः शङ्करवल्लभे। नमो मुक्तिप्रदे देवि ह्यन्नपूर्णे नमोऽस्तु ते।।१।। नमो मायागृहीताङ्गि नमः शङ्करवल्लभे। माहेश्वरि नमस्तुभ्यमन्नपूर्णे नमोऽस्तु ते।।२।। अन्नपूर्णे हव्यवाहपत्नीरूपे हरप्रिये। कलाकाष्ठास्वरूपे च ह्यन्नपूर्णे नमोऽस्तु ते।।३।। उद्यद्भानुसहस्राभे नयनत्रयभूषिते। चन्द्रचूडे महादेवि ह्यन्नपूर्णे नमोऽस्तु ते।।४।। विचित्रवसने देवि त्वन्नदानरतेऽनघे। शिवनृत्यकृतामोदे ह्यन्नपूर्णे नमोऽस्तु ते।।५।। षट्कोणपद्ममध्यस्थे षडङ्गयुवतीमये। ब्रह्माण्यादिस्वरूपे च ह्यन्नपूर्णे नमोऽस्तु ते।।६।। देवि चन्द्रकलापीठे सर्वसाम्राज्यदायिनि। सर्वानन्दकरे देवि ह्यन्नपूर्णे नमोऽस्तु ते।।७।। साधकाभीष्टदे देवि भवदुः ख विनाशिनि। कुचभारनते देवि ह्यन्नपूर्णे नमोऽस्तु ते।।८।। इन्द्राद्यर्चित पादाब्जे रुद्रादिरूपधारिणि। सर्वसम्पत्प्रदे देवि ह्यन्नपूर्णे नमोऽस्तु ते।।६।।

पूजाकाले पठेद्यस्तु स्तोत्रमेतत्समाहितः। तस्य गेहे स्थिरा लक्ष्मीर्जायते नात्र संशयः।।१०।। प्रातःकाले पठेद्यस्तु मन्त्रजापपुरःसरम्। तस्यैवान्नसमृद्धिः स्याद्वर्द्धमाना दिनेदिने।।११।। यस्मै कस्मै न दातव्यं न प्रकाश्यं कदाचन। प्रकाशात्सिद्धि–हानिस्तद्गोपायेद्यत्नतः सुधीः।।१२।।

जो पूजा के समय समहित वित्त होकर इस स्तोत्र पढ़ता है उसके घर में लक्ष्मी स्थिर हो जाती है इसमें संशय नहीं है। जो प्रातःकाल मन्त्र जाप के साथ इसे पढ़ता है उसको अन्न की समृद्धि प्राप्त होती है, और वह दिनों दिन बढ़ती रहती है। जिस किसी को यह स्तोत्र नहीं बताना चाहिये। इसे प्रकाशित करने से सिद्धि की हानि होती है इसीलिये बुद्धिमान व्यक्ति को इसे गुप्त रखना चाहिये।

इति श्रीभैरवतन्त्रेऽन्नपूर्णास्तोत्रं समाप्तम्।

पृथ्वीमन्त्रप्रयोग

शारदातिलक में मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ नमो भगवत्यै धरण्यै धरणिधरे स्वाहा।

यह १६ अक्षरों का मन्त्र है :

विनियोग : अस्य मन्त्रस्य वराहऋषिर्निवृच्छन्दः वसुधा देवता सर्वेष्टसिद्धये जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास : ॐ वराहऋषये नमः शिरसि १। निवृच्छन्दसे नमो मुखे २। वसुधादेवतायै नमो हृदि ३। विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ४। इति ऋष्यादिन्यासः।

करन्यास : ॐ नमो अंगुष्ठाभ्यां नमः १। भगवत्यै तर्जनीभ्यां नमः २। धरण्यै मध्यमाभ्यां नमः ३। धरणिधरे अनामिकाभ्यां नमः ४। घरे कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५। स्वाहा करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ६। इति करन्यासः।

हृदयादिषडङ्गन्यास : ॐ नमो हृदयाय नमः १। भगवत्यै शिरसे स्वाहा २। धरण्यै शिखायै वषट् ३। धरणिधरे कवचाय हुम् ४। धरे नेत्रत्रयाय वौषट् ५। स्वाहा अस्त्राय फट् ६।

इस प्रकार न्यास करके ध्यान करें।

अथ ध्यानम्।

श्यामां विचित्रांशुकरत्नभूषणां पद्मासनां तुङ्गपयोधरानताम्। इन्दीवरे द्वे नवशालिमञ्जरीं शुकं दधानां वसुधां भजामहे।।१।।

एवं ध्यात्वा सर्वतोभद्रमण्डले मं मण्डूकादिपरतत्त्वान्तपीठदेवताभ्यो नमः। इति पीठदेवताः सम्पूज्य पीठशक्तिं पूजयेत्। तत्र क्रम :

इस प्रकार ध्यान करके सर्वतोभद्रमण्डल में "ॐ मं मण्डूकादि परतत्त्वान्त पीठदेवताभ्यो नमः" इससे पीठदेवताओं की पूजा करके पीठशक्ति की पूजा करे। उसमें क्रम यह है:

पूर्वादिक्रमेण। ॐ विमलायै नमः १। ॐ उत्कर्षिण्यै नमः २। ॐ ज्ञानायै नमः ३। ॐ क्रियायै नमः ४। ॐ योगायै नमः ५। ॐ प्रह्वायै नमः ६। ॐ सत्यायै नमः ७। ॐ ईशानायै नमः ८। मध्ये ॐ अनुग्रहायै नमः ६।

इति नव पीठशक्तीः पूजयेत्। ततः स्वर्णादिनिर्मितं यन्त्रं अग्न्युत्तारणपूर्वकं ॐ नमो भगवत्यै धरण्यै सर्वात्मसंयोगपद्मपीठायै नमः। इति मन्त्रेण पुष्पाद्यासनं दत्त्वा पीठमध्ये

संस्थाप्य प्राणप्रतिष्ठां च कृत्वा पुनर्ध्यात्वा मूलेन मूर्तिं प्रकल्प्य आवाहनादिपुष्पान्तैरुपचारैः सम्पूज्य देव्याज्ञां गृहीत्वा आवरण पूजां कुर्यात्।" तत्र क्रमः।

इस प्रकार नव पीठशक्तियों की पूजा करें। इसके बाद स्वर्ण आदि से निर्मित यन्त्र को अग्न्युत्तारणपूर्वक "ॐ नमो भगवत्यै धरण्यै सर्वात्म संयोग पद्मपीठायै नमः" इस मन्त्र से पुष्पाद्यासन देकर पीठ के बीच में उसे संस्थापित करके प्राणप्रतिष्ठा करके पुनः ध्यान करके मूल मूर्ति कल्पना करके आवाहन से लेकर पुष्पाञ्जलि दानपर्यन्त उपचारों से पूजा करके देवी की आज्ञा लेकर आवरण पूजा करें। उसमें क्रम यह है :

षट्कोणकेसरेषु अग्निकोणे ॐ नमो हृदयाय नमः १। निर्ऋतिकोणे भगवत्यै शिरसे स्वाहा २। वायव्ये धरण्यै शिखायै वषट् ३। ऐशाने धरणिधरे कवचाय हुम् ४। पूज्यपूजकयोर्मध्ये धरे नेत्रत्रयाय वौषट ५। देवीपश्चिमे स्वाहा अस्त्राय फट् ६।

इससे षडङ्गों की पूजा करें। इति प्रथमावरण।।१।।

इसके बाद अष्टदलों में :

पूर्वे ॐ आकाशय नमः १। दक्षिणे ॐ अग्नये नमः २। पश्चिमे ॐ जलाय नमः ३। उत्तरे ॐ वायवे नमः ४। अग्निकोणे ॐ आकाशकलायै नमः ५। निर्ऋतिकोणे ॐ अग्निकलायै नमः ६। पश्चिमे ॐ जलकलायै नमः ७। उत्तरे ॐ वायुकलायै नमः ८।

इससे अष्ट देवताओं की पूजा करें। इति द्वितीयावरण।।२।।

इसके बाद भूपुर में : पूर्वादिक्रमेण ॐ लं इन्द्राय नमः १। ॐ रं अग्नये नमः २। ॐ मं यमाय नमः ३। ॐ क्षं निर्ऋतये नमः ४। ॐ वं वरुणाय नमः ५। ॐ यं वायवे नमः ६। ॐ कुं कुबेराय नमः ७। ॐ हं ईशानाय नमः ८।

इससे पूजा करें फिर उसके बाहर : ॐ वं वज्राय नमः १। ॐ शं शक्तये नमः २। ॐ दं दण्डाय नमः ३। ॐ खं खड्गाय नमः ४। ॐ पं पाशाय नमः ५। ॐ अं अंकुशाय नमः ६। ॐ गं गदायै नमः ७। ॐ त्रिं त्रिशूलाय नमः ८। ॐ पं पद्माय नमः ९। ॐ चं चक्राय नमः १०।

इति पूजयेत्। इत्यावरणपूजां कृत्वा धूपादिनीराजनान्तं सम्पूज्य जपं कुर्यात्। अस्य पुरश्चरणं लक्षात्मको जपः तत्तद्दशांशेन होमतर्पणमार्जनब्राह्मणभोजनानि कुर्यात्। एवं कृते मन्त्रः सिद्धो भवति। एतस्मिन्सिद्धे मन्त्रे मन्त्री प्रयोगान् साधयेत्।

इस प्रकार पूजा करें। आवरण पूजा करके धूपदान से नीराजन पर्यन्त पूजा करके जप करें। इसका पुरश्चरण एक लाख जप है। तत्तद्दशांश से होम, तर्पण, मार्जन तथा ब्राह्मणभोजन करें। ऐसा करने पर मन्त्र सिद्ध होता है। इस मन्त्र के सिद्ध हो जाने पर साधक प्रयोगों को सिद्ध करे।

लक्षमेकं जपेन्मन्त्री धराहृदयमादरात्। ससर्पिषा पायसेन जुहुयातद्दशांशतः।।१।। एवं सिद्धमनुर्मन्त्री साधयेत्स्वमनोरथान्। मधुत्रितयसंयुक्तैर्जुहुयादरुणोत्पलैः।।२।। सहस्रशो भूसमृद्धिस्तथा नीलोत्पलैर्भवेत्। प्रियंगुपुष्पैर्मध्वक्तैर्धनधान्यमहाश्रियः।।३।। मञ्जरीं शालिसम्भूतां मधुरत्रयलोलिताम्। जुहुयात्साधिते वह्नौ मण्डलात्स्याद्धरापतिः।।४।। शुक्रवारे दिनमुखे गृहीत्वा साध्यभूमृदम्। तामम्भसि विनिक्षिप्य शोधितेत्र चरुं पचेत्।।५।। पयोघृताभ्यां सहितं जुहुयात्तं हुताशने। षण्मासं शुक्रवारेषु हुत्वैवं प्राप्नुयाद्धराम्।।६।। धरामेवं जपेन्मन्त्री पशुरत्नधनादिभिः। धराया वल्लभः स स्यान्नात्र कार्या विचारणा।।७।।

साधक भूमिहृदय का आदर से एक लाख जप करें। उसका दशांश घीयुक्त खीर से हवन करें। इस प्रकार मन्त्र सिद्ध हो जाने पर साधक अपने मनोरथों को सिद्ध करे। मधु, घी तथा

शकर से युक्त लाल तथा नीले कमलों से हवन करें तो हजारों प्रकार से भूमि की समृद्धि होती है। मधु से युक्त प्रियंगु के फलों से होम करने पर धन, धान्य की भारी समृद्धि प्राप्त होती है। मधु, घी तथा शकर से लिप्त शालि की मञ्जरियों से गोलकुण्ड में अग्नि तैयार करके उसमें होम करने साधक भूमि का स्वामी होता है। छः मास तक शुक्रवार के दिन प्रातःकाल जिस भूमि की इच्छा हो वहाँ की थोड़ी मिट्टी लेकर उसे जल में डाल कर उसमें चरु पकावें। उसमें दूध तथा घी मिलाकर छः मास तक अग्नि में होम करके साधक भूमि को पाता है। इस प्रकार भूमिमन्त्र जप करता हुआ साधक पशु, रत्न तथा धन आदि से पृथिवी का स्वामी हो जाता है। इसमें कोई विचार नहीं करना चाहिये।

इति पृथ्वीमन्त्रप्रयोगः समाप्तः।

गंगामन्त्रप्रयोग

मन्त्रमहोदधि में मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ नमः शिवायै नारायण्यै दशहरायै गङ्गायै स्वाहा। इति विंशत्यक्षरो मन्त्रः।

यह बीस अक्षरों का मन्त्र है।

अस्य विधानम् :

विनियोग : अस्य मन्त्रस्य वेदव्यास ऋषिः कृतिच्छन्दः गङ्गा देवता ममाभीष्टसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास : ॐ वेदव्यासऋषये नमः शिरसि १। कृतिच्छन्दसे नमो मुखे २। गङ्गादेवतायै नमो हृदि ३। विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ४। इति ऋष्यादिन्यासः।

करन्यास : ॐ नमः अंगुष्ठाभ्यां नमः १। शिवायै तर्जनीभ्यां नमः २। नारायण्यै मध्यमाभ्यां नमः ३। दशहरायै अनामिकाभ्यां नमः ४। गङ्गायै कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५। स्वाहा करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ६। इति करन्यासः।

हृदयादिषडङ्गन्यास : ॐ नमो हृदयाय नमः १। शिवायै शिरसे स्वाहा २। नारायण्यै शिखायै वषट् ३। दशहरायै कवचाय हुम् ४। गङ्गायै नेत्रत्रयायै वौषट् ५। स्वाहा अस्त्राय फट् ६। इति हृदयादिषडङ्गन्यासः।

इस प्रकार न्यास करके ध्यान करें।

अथ ध्यानम् :

उत्फुल्लामलपुण्डरीकरुचिरा कृष्णेशविन्ध्यात्मिका कुम्भेष्टाभयतोय जानि दधती श्वेताम्बरालङ्कृता। हृष्टास्या शशिशेखराऽखिलनदीशोणादिभिः सेविता ध्येया पापविनाशिनी मकरगा भागीरथी साधकैः।।१।।

इति ध्यात्वा मांसोपचारैः पूजयेत्। ततः पीठादौ रचिते सर्वतोभद्रमण्डले मण्डूकादिपरतत्त्वान्तपीठदेवताः संस्थाप्य ॐ मं मण्डूकादिपरतत्त्वान्तपीठदेवताभ्यो नमः। इति पीठदेवताः सम्पूज्य नव पीठशक्तीः पूजयेत्।

इससे ध्यान करके मांस के उपचारों से पूजा करें। इसके बाद पीठादि में रचित सर्वतोभद्रमण्डल में मण्डूकादिपरतत्त्वान्त पीठदेवताओं की स्थापना करके "ॐ मं मण्डूकादिपरतत्त्वान्त पीठदेवताभ्यो नमः" इससे पीठदेवताओं की पूजा करके नव पीठशक्तियों की इस प्रकार पूजा करें।

पूर्वादिक्रमेण ॐ जयायै नमः १। ॐ विजयायै नमः २। ॐ अजितायै नमः ३। ॐ अपराजितायै नमः ४। ॐ नित्यायै नमः ५। ॐ विलासिन्यै नमः ६। ॐ दोग्ध्र्यै नमः ७। ॐ अघोरायै नमः ८। मध्ये ॐ मङ्गलायै नमः ९।

इति पूजयेत् ततः स्वर्णादिनिर्मितं यन्त्रं मूर्तिं वा ताम्रपात्रे निधाय घृतेनाभ्यज्य तदुपरि दुग्धधारां जलधारां च दत्त्वा स्वच्छवस्त्रेण प्रोक्ष्य ॐ गङ्गायै पुष्पासनायै नमः। इति पुष्पाद्यासनं दत्त्वा पीठमध्ये संस्थाप्य प्रतिष्ठां च कृत्वा पुनर्ध्यात्वा मूलेन मूर्तिं प्रकल्प्य आवाहनादिपुष्पान्तैरुपचारैः सम्पूज्य देव्याज्ञया आवरणपूजां कुर्यात्।

इससे पूजा करें। इसके बाद स्वर्ण आदि से निर्मित यन्त्र या मूर्ति को ताम्र पात्र में रख कर घृत से अभ्यङ्ग करके उसके ऊपर दूध तथा जल की धारा डालकर स्वच्छ वस्त्र से पोंछ कर "ॐ गङ्गायै पुष्पासनायै नमः" इससे पुष्पाद्यासन देकर पीठ के बीच में उसे स्थापित करके उसमें प्राणप्रतिष्ठा करके पुनः ध्यान करके मूलमन्त्र से मूर्ति की कल्पना करके आवाहन से लेकर पुष्पाञ्जलि दानपर्यन्त उपचारों से पूजा करके देवी की आज्ञा से इस प्रकार आवरण पूजा करें।

पुष्पाञ्जलिमादाय ॐ संविन्मये परे देवि परामृतरसप्रिये। अनुज्ञां देहि मे गङ्गे परिवारार्चनहेतवे।।१।। इति पठित्वा पुष्पाञ्जलिं च दत्त्वा पूजितास्तर्पिताः सन्तु इति वदेत्। इत्याज्ञां गृहीत्वा आवरणपूजामारभेत्।

पुष्पाञ्जलि लेकर "ॐ संविन्मये परे देवि परामृतरसप्रिये। अनुज्ञां देहि मे गङ्गे परिवारर्चन हेतवे।" यह पढ़ कर पुष्पाञ्जलि देकर "पूजितास्तर्पिताः सन्तु" यह कहें। इससे आज्ञा लेकर आवरण पूजा आरम्भ करें। (गङ्गा आवरणपूजा यन्त्र देखिये चित्र ४१) :

षट्कोण केसरों में आग्नेयादि चारों दिशाओं में और मध्य दिशाओं में :

ॐ नमः हृदयाय नमः[1]। हृदय श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।।१।। इति सर्वत्र। ॐ शिवायै शिरसे स्वाहा[2]। शिरः श्रीपा २। ॐ नारायण्यै शिखायै वषट्[3]। शिखाश्रीपा० ३। ॐ दशहरायै कवचाय हुम्[4]। कवचश्रीपा० ४। ॐ गङ्गायै नेत्रत्रयाय वौषट्[5]। नेत्रश्रीपा० ५। ॐ स्वाहा अस्त्राय फट्[6]। अस्त्रश्रीपा० ६।

इति षडङ्गानि पूजयेत्। ततः पुष्पाञ्जलिमादाय ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले। भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम्।।१।। इति पठित्वा पुष्पाञ्जलिं च दत्त्वा पूजितास्तर्पिताः सन्तु इति वदेत्। इति प्रथमावरणम्।।१।।

इससे षडङ्गों की पूजा करनी चाहिये। इसके बाद पुष्पाञ्जलि देकर "अभीष्ट सिद्धि मे देहि शरणागतवत्सले। भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम्" यह पढ़ कर पुष्पाञ्जलि देकर "पूजितास्तर्पिताः सन्तु" यह कहें। इति प्रथमावरण।१।

ततोष्टदले पूज्यपूजकयोरन्तरालं प्राची। तदनुसारेण अन्या दिशः प्रकल्प्य प्राचीक्रमेण[1]।

इसके बाद पूज्य और पूजक के अन्तराल को पूर्व दिशा मान कर तदनुसार अन्य दिशाओं की कल्पना करके अष्टदलों में पूर्वादि क्रम से :

ॐ रुद्राय नमः[7]। रुद्रश्रीपा० १। ॐ विष्णवे नमः[8]। विष्णुश्रीपा० २। ॐ ब्रह्मणे नमः[9]। ब्रह्मश्रीपा० ३। ॐ सूर्याय नमः[10]। सूर्यश्रीपा० ४। ॐ हिमाचलाय नमः[11]। हिमाचलश्रीपा० ५। ॐ मैनाकाय नमः[12]। मैनाकश्रीपा० ६। ॐ भगीरथाय नमः[13]। भगीरथश्रीपा० ७। ॐ उमापतये नमः[14]। उमापतिश्रीपा० ८।

---

१ प्रयजेत्केसरेष्वङ्गं दले रुद्रं हरिं विधिम्। सूर्यं हिमाचलं मेना भगीरथमपांपतिम्। दलाग्रतो मीनकर्ममण्डकान्मकरानपि। हंसान् कारण्डवांश्चक्रवाकान् सारसकान् यजेत्।

इत्यष्टौ पूजयित्वा पुष्पाञ्जलिं दद्यात्। इति द्वितीयावरणम्।।२।।

इससे आठों की पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवें। इति द्वितीयावरण।।२।।

इसके बाद अष्टदलाग्रों में रुद्र आदि के समीप :

ॐ मीनाय नमः[१५] १। ॐ कूमार्य नमः[१६] २। ॐ मण्डूकाय नमः[१७] ३। ॐ मकराय नमः[१८] ४। ॐ हंसाय नमः[१९] ५। ॐ चक्रवाकाय नमः[२०] ६। ॐ वकाय नमः[२१] ७। ॐ सारसाय नमः[२२] ८।

इत्यष्टौ पूजयित्वा पुष्पाञ्जलिं दद्यात्। इति तृतीयावरणम्।।३।।

इससे आठों की पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवें। इति तृतीयावरण।।३।।

ततो भूपुरे पूर्वादिक्रमेण इन्द्रादिदशदि[२३-३२] क्पालान् वज्राद्या[३३-४२] युधानि च सम्पूज्य पुष्पाञ्जलिं दद्यात्।

इसके बाद भूपुर में पूर्वादि क्रम से इन्द्र आदि दश दिक्पालों तथा वज्र आदि उनके आयुधों की पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवें।

इत्यावरणपूजां कृत्वा धूपादिनमस्कारान्तं सम्पूज्य जपं कुर्यात्। यस्य पुरश्चरणं लक्षजपः। तिलाज्येन दशांशतो होमः। एवं कृते मन्त्रः सिद्धो भवति। एतस्मिन्सिद्धे मन्त्रे मन्त्री प्रयोगान् साधयेत्।

इस प्रकार आवरण पूजा करके धूपादि दान से लेकर नमस्कार पर्यन्त पूजाकरके जप करें। इसका पुरश्चरण एक लाख जप है। तिल और घी से जप का दशांश होम करना चाहिये। ऐसा करने पर मन्त्र सिद्ध होता है। इस मन्त्र के सिद्ध होने पर साधक प्रयोगों को सिद्ध करें।

लक्षं जपेद्दशांशेन जुहुयात्सघृतैस्तिलैः एवं संसाधितो मन्त्रोऽभीष्टं यच्छति मन्त्रिणाम्।।१।। ज्येष्ठशुक्लदशम्यां तां विशेषेण भजेद्बुधः। दद्याद्दशभ्यो विप्रेभ्यो दशप्रस्थमितान् तिलान्।।२।। जप्त्वा सहस्रं हुत्वा चोपोष्य तत्र विकल्मषः। सर्वभोगासमायुक्तो जायते मानवोभुवि।।३।।

एक लाख जप करना चाहिये उसके दशांश से घी युक्त तिल से होम करना चाहिये। इस प्रकार से सिद्ध किया गया मन्त्र अभीष्ट फल देता है। ज्येष्ठ शुक्ल दशमी को गङ्गाजी की उपासना विशेष रूप से करनी चाहिये। दश ब्राह्मणों को दश सेर तिल देना चाहिये। उपवास के बाद एक हजार जप करके तथा हवन करके मनुष्य पवित्र होकर समस्त भोगों से युक्त हो जाता है।

इति विंशत्यक्षरगङ्गा मन्त्रप्रयोगः।

मन्त्र महोदधि में गङ्गा के मन्त्रभेदों का इस प्रकार वर्णन है :

ॐ नमो भगवति ऐं हिलिहिलि मिलिमिलि गङ्गे मां पावय पावय स्वाहा।

यह २७ अक्षरों का मन्त्र है।

ॐ नमो हृदयाय नमः १। भगवति शिरसे स्वाहा २। ऐं हिलिहिल मिलिमिलि शिखायै वषट् ३। गङ्गे मां पावय पावय कवचाय हुम् ४। स्वाहा नेत्रत्रयाय वौषट् ५। इससे पञ्चाङ्ग न्यास करें।।१।।

अन्यः। ऐं हिलिहिलि मिलिमिलि गङ्गे मां पावय पावय स्वाहा।

यह बीस अक्षरों का मन्त्र है।

ऐं हिलिहिलि हृदयाय नमः १। मिलिमिलि शिरसे स्वाहा २। गङ्गे मां शिखायै वषट् ३। पावय कवचाय हुम् ४। पावय नेत्रत्रयाय वौषट् ५। स्वाहा अस्त्राय फट् ६। इससे षडङ्गन्यास करें।

अन्यः। ॐ हिलिहिलि मिलिमिलि गङ्गे देवि नमः।

यह पन्द्रह अक्षरों का मन्त्र है।

ॐ हिलि हृदयाय नमः १। ॐ हिलि शिरसे स्वाहा २। ॐ मिलिमिलि शिखायै वषट् ३।

गंगे कवचाय हुम् ४। देवि नेत्रत्रयाय वौषट् ५। नमः अस्त्राय फट् ६। इस प्रकार न्यास करें।

अन्यः। ॐ ह्रीं श्रीं नमो भगवति गङ्गे दयिते नमो हुं फट्।

यह १८ अक्षरों का मन्त्र है।

ॐ ह्रीं श्रीं हृदयाय नमः १। नमः शिरसे स्वाहा २। भगवति शिखायै वषट् ३। गङ्गे दयिते कवचाय हुम् ४। नमो नेत्रत्रयाय वौषट् ५। हुंफट् अस्त्राय फट् ६। इस प्रकार न्यास करें।

अन्यत् ध्यानपूजादिकं सर्वं पूर्ववत्। तथा च : चतुर्णां मन्त्राणामुपास्तिः पूर्ववन्मता इति वचनात्।

इस प्रकार गङ्गामन्त्र विंशत्यक्षर, सप्त विंशत्यक्षर, पञ्चदशाक्षर तथा अष्टादशाक्षर। चार प्रकार के होते हैं। इनमें ध्यान पूजादिक पूर्ववत ही होता है और इन चारों मन्त्रों की उपासना भी पूर्ववत ही होती है। कहा भी गया है : "एषां चतुर्णां मन्त्राणामुपास्तिः पूर्ववन्मता।"

इति गंगामन्त्रप्रयोगः।

मणिकर्णिकामन्त्रप्रयोग

मन्त्रमहोदधि में मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं ॐ मणिकर्णिके नमः ॐ ।

यह चतुर्दशाक्षर मन्त्र है।

अस्य विधानम्।

विनियोग : अस्य मन्त्रस्य वेदव्यासऋषिः शक्वरीच्छन्दः श्रीमणिकर्णिका देवता ममाभीष्टसिद्धयर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास : ॐ वेदव्यासऋषये नमः शिरसि १। शक्वरीच्छन्दसे नमो मुखे २। मणिकर्णिकादेवतायै नमो हृदि ३। विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।।४।। इति ऋष्यादिन्यासः।

हृदयादिषडङ्गन्यास : ॐ हृदयाय नमः १। ऐं ह्रीं शिरसे स्वाहा २। श्रीं क्लीं शिखायै वषट् ३। ॐ कवचाय हुम् ४। मणिकर्णिके नेत्रत्रयाय वौषट् ५। नमः ॐ अस्त्राय फट् ६। इति हृदयादिषडङ्गन्यासः।

इस प्रकार न्यास करके ध्यान करें।

अथ ध्यानम् :

फुल्लेन्दीवरनिर्मितां करतले मालामसव्ये करे बीजापूरफलं सिताम्बुजमयीं मालां दधानां हृदि। श्वेतक्षौमवृता शरद्विधुनिभा त्र्यक्षा निबद्धाञ्जलिर्ध्यातव्या मणिकर्णिका रविसभा तोयेशकाष्ठामुखी।।१।।

इति ध्यात्वा मानसोपचारैः सम्पूजयेत्। ततः पीठादौ रचिते सर्वतोभद्रमण्डले मण्डूकादि परतत्त्वान्तपीठदेवताः संस्थाप्य ॐ मं मण्डूकादिपरतत्त्वान्तपीठदेवताभ्यो नमः। इति सम्पूज्य नव पीठशक्तीः पूजयेत्।

इस प्रकार ध्यान करके मानसोपचारों से पूजा करें। इसके बाद पीठ आदि पर रचित सर्वतोभद्रमण्डल में मण्डूकादिपरतत्त्वान्त पीठदेवताओं की स्थापना करके "ॐ मं मण्डूकादि परतत्वान्त पीठदेवताभ्यो नमः" इससे पूजा करके नव पीठशक्तियों की पूजा करें।

पूर्वादिक्रमेण ॐ जयायै नमः १। ॐ विजयायै नमः २। ॐ अजितायै नमः ३। ॐ अपराजितायै नमः ४। ॐ नित्यायै नमः ५। ॐ विलासिन्यै नमः ६। ॐ दोग्ध्यै नमः ७। ॐ अघोरायै नमः ८। मध्ये ॐ मङ्गलायै नमः ९।

इति पूजयेत। ततः स्वर्णादिनिर्मितं यन्त्रं मूर्तिं वा ताम्रपात्रे निधाय घृतेनाभ्यज्य तदुपरि दुग्धधारां जलधारां च दत्त्वा स्वच्छवस्त्रेण सम्प्रोक्ष्य पुष्पाद्यासनं दत्त्वा पीठ मध्ये संस्थाप्य प्रतिष्ठां च कृत्वा पुनर्ध्यात्वा मूलेन मूर्तिं प्रकल्प्यावाहनादिपुष्पान्ततैरुपचारैः सम्पूज्य आवरणपूजां कुर्यात्।

इससे पूजा करने के बाद स्वर्ण आदि से निर्मित मन्त्र या मूर्ति को ताम्रपात्र में रख कर उस पर घी का अभ्यङ्ग लगा कर उस पर दूध तथा जल की धारा छोड़कर स्वच्छ वस्त्र से पोंछ कर पुष्पादि आसन देकर पीठ के मध्य में उसे स्थापित करके उसमें प्राणप्रतिष्ठा करके पुनः ध्यान करके मूलमन्त्र मूर्ति की कल्पना करके आवाहन से लेकर पुष्पाञ्जलि दान पर्यन्त उपचारों से पूजा करके आवरण पूजा करे। (मणिकर्णिका पूजन यन्त्र देखिये चित्र ४२) :

षट्कोण केसरों में आग्नेयादि चारो दिशाओं तथा मध्य दिशाओं में :

ॐ हृदयाय नमः[1]। हृदयश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः १। इति सर्वत्र। ऐं ह्रीं शिरसे स्वाहा[2]। शिरःश्रीपा० २। श्रीं क्लीं शिखायै वषट्[3]। शिखा श्रीपा० ३। ॐ कवचाय हुम्[4]। कवचश्रीपा० ४। मणिकर्णिके नेत्रत्रयाय वौषट्[5]। नेत्रत्रयश्रीपा० ५। नमः अस्त्राय फट्[6]। अस्त्रश्रीपा० ६।

इति षडङ्गानि पूजयेत। ततः पुष्पाञ्जलिमादाय मूलमुच्चार्य ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले। भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम्।।१।। इति पठित्वा पुष्पाञ्जलिं च दत्त्वा पूजितास्तर्पिताः सन्तु इति वदेत्। इति प्रथमावरणम्।।१।।

इस प्रकार षडङ्गों की पूजा करें। इसके बाद पुष्पाञ्जलि लेकर मूलमन्त्र का उच्चारण करके "ॐ अभीष्टसिद्धि मे देहि शरणागतवत्सले। भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम्।" यह पढ़ कर पुष्पाञ्जलि देकर "पूजितास्तर्पिताः सन्तु।" यह कहें। इति प्रथमावरण।।१।।

ततोष्टदले पूज्यपूजकयोरन्तरालं प्राची। तदनुसारेण अन्या दिशः प्रकल्प्य।

इसके बाद अष्टदलों में पूज्य और पूजक के अन्तराल को पूर्व दिशा मानकर तदनुसार अन्य दिशाओं की कल्पना करके :

प्राचीक्रमेण ॐ रुद्राय नमः[7]। रुद्रश्रीपा० १। ॐ विष्णवे नमः[8]। विष्णुश्रीपा० २। ॐ ब्रह्मणे नमः[9]। ब्रह्मश्रीपा० ३। ॐ सूर्याय नमः[10]। सूर्यश्रीपा० ४। ॐ हिमाचलाय नमः[11]। हिमाचलश्रीपा० ५। ॐ मैनाकाय नमः[12]। मैनाकश्रीपा० ६। ॐ भगीरथाय नमः[13]। भगीरथश्रीपा० ७। ॐ उमापतये नमः[14]। उमापतिश्रीपा० ८।

इस प्रकार आठ देवताओं की पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवें। इति द्वितीयावरण।।२।।

इसके बाद अष्टदलाग्रों में रुद्रादि के समीप :

ॐ मीनाय नमः[15] १। ॐ कूर्माय नमः[16] २। ॐ मण्डूकाय नमः[17] ३। ॐ मकराय नमः[18] ४। ॐ हंसाय नमः[19] ५। ॐ चक्रवाकाय नमः[20] ६। ॐ बकाय नमः[21] ७। ॐ सारसाय नमः[22] ८।

इससे आठ देवताओं की पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवें। इति तृतीयावरण।।३।।

ततो भूपुरे पूर्वादिक्रमेण इन्द्रादिदशदिक्पालान् वज्राद्यायुधानि च सम्पूज्य पुष्पाञ्जलिं दद्यात्। इत्यावरणपूजां कृत्वा धूपादिनमस्कारान्तं सम्पूज्य जपं कुर्यात्। अस्य पुरश्चरणं त्रिलक्षजपः। तद्दशांशतो होमः। एवं कृते मन्त्रः सिद्धो भवति। एतस्मिन्सिद्धे मन्त्रे मन्त्री प्रयोगान् साधयेत्।

इसके बाद भूपुर में पूर्वादि क्रम से इन्द्र आदि दश दिक्पालों तथा वज्र आदि उनके आयुधों की पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवें। इस प्रकार आवरण पूजा करके धूपदान से लेकर नमस्कार पर्यन्त उपचारों से पूजा करके जप करें। इसका पुरश्चरण तीन लाख जप है। जप का दशांश होम से करना चाहिये। ऐसा करने पर मन्त्र सिद्ध होता है। इस मन्त्र के सिद्ध होने पर साधक को प्रयोग सिद्ध करना चाहिये।

लक्षत्रयं जपेन्मन्त्रं जुहुयात्तद्दशांशतः। पुण्डरीकैस्त्रिमध्वक्तैर्यजेत्तां गङ्गया समम्।।१।।
अयं मनुर्जनैर्जप्तो मोक्षलक्ष्मीं प्रयच्छति। सुखं समस्तं सन्तानं सौभाग्यं धन सञ्चयम्।।२।।
विधायोपासनां सर्वां मणिकर्ण्या उपासकः। कुदेशेपि मृतो याति ब्रह्मैवामलमव्ययम्।।३।।

तीन लाख जप करना चाहिये और उसका दशांश मधु, घी तथा शकर से युक्त कमलों द्वारा होम करना चाहिये। मनुष्य द्वारा जपा गया यह मन्त्र मोक्ष और लक्ष्मी, समस्त सुख तथा सौभाग्य को देता है। समस्त उपासना को करके मणिकर्णिका का उपासके कुदेश में भी मरने पर पवित्र ब्रह्म को प्राप्त करता है।

मन्त्र भेद इस प्रकार है :

ॐ मं मणिकर्णिके प्रणवात्मिके नमः।

अन्य सब कृत्य पूर्ववत है :

इति मणिकर्णिका मन्त्रप्रयोगः।

शीतलामन्त्रप्रयोग

मन्त्रमहोदधि में मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ ह्रीं श्रीं शीतलायै नमः।

यह ६ अक्षरों का मन्त्र है।

अस्य विधानम् :

विनियोग : अस्य शीतला मन्त्रस्य उपमन्युऋषिः बृहतीच्छन्दः शीतला देवता ममाभीष्टसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास : ॐ उपमन्युऋषये नमः शिरसि १। बृहतीच्छन्दसे नमो मुखे २। शीतलादेवतायै नमो हृदि ३। विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे। इति ऋष्यादिन्यासः।

करन्यास : ॐ ह्रीं श्रीं अंगुष्ठाभ्यां नमः १। ॐ ह्रीं श्रीं तर्जनीभ्यां नमः २। ॐ ह्रीं श्रीं मध्यमाभ्यां नमः ३। ॐ ह्रीं श्रीं अनामिकाभ्यां नमः ४। ॐ ह्रीं श्रीं कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५। ॐ ह्रीं श्रीं करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ६। इति करन्यासः।

इसी तरह हृदयादिषडङ्गन्यास करके ध्यान करें।

अथ ध्यानम् :

ॐ दिग्वाससं मार्जनिकां च शूर्पं करद्वये संदधतीं घनाभाम्। श्रीशीतलां सर्वरुजार्तिहन्त्रीं रक्ताङ्गरागस्रजमर्चयामि।।१।।

इति ध्यायेत्। ततः पीठादौ रचिते सर्वतोभद्रमण्डले मण्डूकादिपरतत्त्वान्तपीठदेवताः संस्थाप्य ॐ मं मण्डूकादिपरतत्त्वान्तपीठदेवताभ्यो नमः। इति सम्पूज्य नव पीठशक्तीः पूजयेत्।

इस प्रकार ध्यान करके पीठादि पर रचित सर्वतोभद्रमण्डल में मण्डूकादिपरतत्त्वान्त पीठदेवताओं की स्थापना करके "ॐ मं मण्डूकादिपरतत्त्वान्त पीठदेवताभ्यो नमः" इससे पूजा करके नव पीठशक्तियों की पूजा करें।

पूर्वादिक्रमेण ॐ जयायै नमः १। ॐ विजयायै नमः २। ॐ अजितायै नमः ३। ॐ अपराजितायै नमः ४। ॐ नित्यायै नमः ५। ॐ विलासिन्यै नमः ६। ॐ दोग्ध्र्यै नमः ७। ॐ अघोरायै नमः ८। मध्ये ॐ मङ्गलायै नमः ९।

इति पूजयेत्। ततः स्वर्णादिनिर्मितां प्रतिमां ताम्रपात्रे निधाय घृतेनाभ्यज्य तदुपरि दुग्धधारां जलधारां च दत्त्वा स्वच्छवस्त्रेण सम्प्रोक्ष्य ॐ शीतलाया योगपीठाय नमः। इति मन्त्रेण पुष्पाद्यासनं दत्त्वा पीठमध्ये संस्थाप्य प्रतिष्ठां च कृत्या पुनर्ध्यात्वा आवहनादिनमस्कारान्तं सम्पूज्य जपं कुर्यात्। अस्य पुरश्चरणमयुतजपः। पायसान्नेन दशांशतो होमः।

इस प्रकार पूजा करें। इसके बाद स्वर्णादि से निर्मित प्रतिमा को ताम्रपात्र में रख कर घी से अभ्यङ्ग करके उसके ऊपर दूध और जल की धारा डाल कर स्वच्छ वस्त्र से पोंछ कर "ॐ शीतलाया योगीपठाय नमः" इस मन्त्र से पुष्पाद्यासन देकर पीठ के मध्य में उसे संस्थापित करके उसमें प्राण प्रतिष्ठा करके पुनः ध्यान करके आवाहन से लेकर नमस्कार पर्यन्त पूजा करके जप करें। इसका पुरश्चरण दस लाख जप है। जप का दशांश खीर से होम करना चाहिये।

अयुतं प्रजपेन्मन्त्रं पायसेन सहस्रकम्। जुहुयात्पूर्ववत्पीठे स्फोटानां नाशिनी त्वियम्।।१।। नाभिमात्रे जले स्थित्वा यः सहस्रं जपेन्मनुम्। तेन सम्मार्जितास्तीव्राः स्फोटा नश्यन्ति तत्क्षणात्।।२।।

दश सहस्र मन्त्र का जप करना चाहिये तथा पूर्वपीठ पर खीर से एक हजार होम करना चाहिये। यह शीतला देवी फोड़े फुन्सियों का नाश करने वाली हैं। नाभिमात्र जल में स्थित होकर जो एक हजार इस मन्त्र का जप करता है, उसके फुन्सी तथा तीव्र फोड़े भी तत्क्षण शान्त हो जाते हैं।

इति नवाक्षर शीतलामन्त्रप्रयोगः।

ज्वालामुखीमन्त्रप्रयोगः

प्राकृत ग्रन्थ में मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं सिंहेश्वरि ज्वालामुखि जृंभिणि स्तम्भिनि मोहिनि वशीकरिणि परधनमोहिनि सर्वारिष्टनिवारिणि शत्रुगणसंहारिणि सुबुद्धिदायिनि ओ आं क्रौं ह्रीं त्राहित्राहि क्षोभयक्षोभय अमुकं मे वशं कुरुकुरु स्वाहा।

यह एक सौ तिरासी अक्षरों का मन्त्र है।

अस्य विधानम् :

इस मन्त्र को दीपमालिका की रात्रि से प्रतिदिन ११०० जप करें, चमेली का पुष्प चढ़ायें, और बरफी तथा हिंगुल इत्यादि का नैवेद्य रखें। इस प्रकार इक्कीस दिन करने से मनोवांछित प्राप्त होता है।

इति ज्वालामुखीमन्त्रप्रयोगः।

इन्द्राक्षीस्तोत्र

अथ ध्यानम् :

इन्द्राक्षीं द्विभुजां देवीं पीतवस्त्रसमन्विताम्। वामहस्ते वज्रधरां दक्षिणे च वरप्रदाम्।।१।। इन्द्राक्षीं नाम सज्योतिर्नानारत्नविभूषिताम्। प्रसन्नवदनाम्भोजा-मप्सरोगणसेविताम्।।२।।

इन्द्र उवाच।

इन्द्राक्षी नाम सा देवि दैवतैः समुदाहृता। गौरी शाकम्भरी देवी दुर्गानाम्नाऽतिविश्रुता।।३।।
कात्यायनी महादेवी चन्द्रघण्टा महातपा। गायत्री सा च सावित्री ब्रह्माणी ब्रह्मवादिनी।।४।।
नारायणी भद्रकाली रुद्राणी कृष्णपिङ्गला। अग्निज्वाला रौद्रमुखी कालरात्रिस्तपस्विनी।।५।।
मेघश्यामा सहस्राक्षी विष्णुमाया जलोदरी। महोदरी मुक्तकेशी घोररूपा महाबला।।६।।
अच्युता भद्रदा नन्दा रोगहन्त्री शिवप्रिया। शिवदूती कराली च प्रत्यक्षपरमेश्वरी।।७।।
महिषासुरहन्त्री च चामुण्डा सप्तमातरः। इन्द्राणी इन्द्ररूपा च रुद्रशक्तिः परायणा।।८।।
शिवा च शिवरूपा च शिवशक्तिपरायणा। सदा सम्मोहिनी देवी सुन्दरी भुवनेश्वरी।।९।।
आर्या दाक्षायणी चैव गिरिजा मेनकात्मजा। वाराही नारसिंही च भीमा भैरवनादिनी।।१०।।
श्रुतिः स्मृतिर्धृतिर्मेधा विद्या लक्ष्मीः सरस्वती। अनन्ता विजया पूर्णा मानस्तोकापराजिता।।११।।
भवानी पार्वती दुर्गा हैमवत्यम्बिका शिवा। शिवा भवानी रुद्राणी शङ्करार्द्धशरीरिणी।।१२।।
मृत्युञ्जया महामाया सर्वरोगप्रणाशिनी। ऐरावतगजारूढा भूषिता कङ्कणप्रभा।।१३।।

एतैर्नामपदैर्दिव्यैः स्तुता शक्रेण धीमता। शतमावर्तते यस्तु मुच्यते व्याधि-बन्धनात्।।१४।। आवर्तयेत्सहस्रं यो लभते वांछितं फलम्। इन्द्रेण कथितं स्तोत्रं सत्यमेव न संशयः।।१५।।

इन दिव्य नामपदों से बुद्धिमान् इन्द्र के द्वारा इन्द्राक्षी देवी की स्तुति की गयी है। जो इसका सौ बार पाठ करता है वह व्याधि के बन्धनों से छूट जाता है। जो एक हजार पाठ करता है वह मनोवांछित फल प्राप्त करता है। इन्द्र ने इस स्तोत्र को कहा है। यह सत्य है इसमें संशय नहीं है।

इति श्रीइन्द्रांक्षिस्तोत्रं सम्पूर्णम्।

अथ जैनमते पद्मावतीस्तोत्रतन्त्रम्

कूटमन्त्रोद्धारपूर्वक कार्यपरत्व पुरश्चरण–विधानः

ॐश्रीमद्गीर्वाणचक्रस्फुटमुकुटतटीदिव्यमाणिक्यमालाज्योतिर्ज्वालाकराला स्फुरितमकरिकाघृष्टपादारविन्दे। व्याघ्रोरुल्कासहस्रज्वलदनलशिखालोलपाशांकुशाढ्ये आंक्रोंह्रींमन्त्ररूपे क्षपितकलिमले रक्ष मां देवि पद्मे।।१।।

देवगण के मुकुटों में जटित दिव्य मणि माणिक्यामाला से स्फुटित कराल ज्योतिरूपी मकरिका द्वारा घृष्ट चरण कमलों वाली, व्याघ्र तथा प्रज्वलित सहस्त्रों उल्काओं की लोल अग्निशिखाओं के समान, पाश तथा अंकुशधारिणी, आं क्रों ह्रीं मन्त्रस्वरूपे, कलिमलनाशिनी, हे पद्मावती देवी ! तू मेरी रक्षा कर।।१।।

"श्रीमदादि" इस पहले श्लोक का छः मास तक नित्य एकान्त में एक सहस्त्र जप करने से श्रीनामा देवी का निःसन्देह दर्शन होता है। मन्त्रोद्धारः "आं क्रों ह्रीं"। यह मन्त्र हत्या के पाप से शरीर को निवृत करता है और कुष्ठादि रोगों को दूर करता है। इस मन्त्र का प्रतिदिन रुद्राक्ष की माला से १२१ बार जप करने और मत्स्य का ध्यान करने से बलिहत्या, स्त्रीहत्या, राजहत्या, योगिहत्या, सर्पहत्या तथा कुटुम्बहत्या आदि के सब पाप दूर होते हैं। इस मत्स्य यन्त्र (देखिये चित्र ४३) को चंदन से लिखकर मंत्र का जप करने से सब कार्यों की सिद्धि होती है क्योंकि यह मंत्र पार्श्वनाथ जी को स्मरण था। पार्श्वनाथ जी सदैव इसका स्मरण करते थे। यह मंत्र स्वर्ग दाता है।

गीर्वाण चक्र (देखिये चित्र ४४) मुकुट में रखने से दैत्य, राक्षस, किन्नर, भूत, प्रेत, पिचाश, मृद्गल, गन्धर्व आदि सबके उपद्रव दूर होते हैं। इस मन्त्रोद्धार अथवा श्लोक को मास के दूसरे शनिवार से प्रारम्भ करना चाहिये। अन्य तिथि या वार में इसका आरम्भ नहीं करना चाहिये।

इति प्रथम श्लोकविधान।।१।।

भित्त्वा पातालमूलं चलचलिचलितं व्याललीलाकराले विद्युद्दण्डप्रचण्डप्रहरणसहिते सद्भुजैस्तर्जयन्ति। दैत्येन्द्रक्रूरदंष्ट्राकटकटघटिते स्पष्टभीमाट्टहास्ये मायाजीमूत-मालाकुहरितगगने रक्ष मां देवि पद्मे।।२।।

पातालभेदिनी, चञ्चलगामिनी, सर्वलीलाकराले, विद्युद्दण्डप्रचण्डप्रहरणशील, पाणिपल्लवतर्जनशीले, राक्षसेन्द्रवत् क्रुरदन्त कट कट ध्वनिकारिणी विस्पष्टमहाट्टहासिनी, मायामेघमालाच्छादिताकाशमण्डले ! पद्मे देवि ! तू मेरी रक्षा कर।।२।।

"भित्वापातालादि" इस दूसरे श्लोक से जल को अभिमन्त्रित करके छींटा मारने से भूत, प्रेत, पिशाच, किन्नर, यक्ष आदि के उपद्रव शान्त होते हैं। यदि अग्नि, अस्थि, जल, पवन आदि की वर्षा होती हो तो वह भी शान्त होती है।

इति द्वितीय श्लोकविधान।।२।।

कूजत्कोदण्डकाण्डोड्डमरविद्युतक्रूरघोरोपसर्गं दिव्यं वज्रातपत्रं प्रगुणमणिरण-त्किंकिणीक्वाणरम्यम्। भास्वद्वैडूर्यदण्डं मदनविजयिनं भूतिदं पार्श्वनाथं सा देवी पद्महस्ता विघटयुत महाडामरं मामकीनम्।।३।।

ध्वनि करते हुये धनुष की विद्युत के समान क्रूर प्रभाव उत्पन्न करने वाले, जटित मणियों की किङ्किणी को रम्य ध्वनि से गुआयमान दिव्य वज्ररूपी छत्रधारी, मदनविजयी ऐश्वर्यदायक, प्रज्वलित वैदूर्यमय दण्डधारी पार्श्वनाथ को, पद्यहस्ता देवी मेरे विघ्नों के निवारण के लिये प्रेरित करें।।३।।

इस 'कूजत्कोदण्डकाण्डे', तीसरे श्लोक से प्रातःकाल शिखा में तीन गाँठ देने से मुष्ट आदि उपसर्ग मिट जाते हैं।

इति तृतीय श्लोकविधान।।३।।

भृङ्गीकालीकरालीपरिजनसहिते चण्डचामुण्डनित्ये क्षांक्षीक्षूंक्षः क्षणार्द्धेक्षितरिपुनिवहे ह्रींमहामन्त्रवश्ये। भ्रां भ्रीं भ्रूं (भ्रः) भंगसंगभृकुटिपुटतटीत्रासितोद्दामदैत्ये ड्रां ड्रीं ड्रूं ड्रः प्रचण्डे स्तुतितवमुखरे रक्ष मां देवि पद्मे।।४।।

हे देवि पद्मावति ! आप भृङ्गी, काली और कराली रूप में क्रमशः चण्डी, चामुण्डा और नित्यानन्दी परिजनों (सखियों से) युक्त होकर हमारी रक्षा करें। क्षां, क्षीं क्षूं, क्षः स्वरूपा भृङ्गी देवी ! तुम ह्रीं महामन्त्र के वशीभूत हो। तुम क्षणार्द्ध में हमारे शत्रुओं का नाश करें। भ्रां भ्रीं भ्रः स्वरूपा कालीनामा देवी ! तुम अपने भृकुटि के चमत्कार से दैत्यों के समूह का उपसर्ग करके हमारी रक्षा करो। ड्रां ड्रीं ड्रूं ड्रः स्वरूपा कराली ! हमारे सुख में सदैव विराजमान रहो।

"भृङ्गीकालीकराली" इस चौथे श्लोक का स्मरण करने से संग्राम में तथा राजकुल के महाकष्ट में सहायता प्राप्त होती है। भृङ्गी, काली और कराली, इन तीनों देवियों का पृथक् पृथक् मन्त्रोद्धार इस प्रकार करना चाहिये :

प्रथम, भृङ्गीनामा देवी ने चण्डीनामा सखी से युक्त होकर जो मन्त्रस्वरुप धारण किया वह इस प्रकार है : "ॐ ह्रीं भृंगी क्षां ॐ भृंगी क्षीं ॐ ह्रीं भृंगी क्षूं ॐ ह्रीं भृंगी क्षः" यह चतुरक्षर मन्त्र है।

इसका विधान :

शनिवार की अमावस्या को अथवा ग्रहण के समय बैठ कर रुद्राक्ष की माला से मन्त्र का जप करने से साक्षात् वैरियों का नाश होता है। अथवा गधे के दाँतों की माला बनाकर तीन दिन में दश हजार मन्त्र जपने से बैरी का सकुटुम्ब नाश होता है।

दूसरी, कालीनामा देवी ने चामुण्डा सखी से युक्त जो चतुरक्षरी मन्त्ररूप धारण किया वह मन्त्र इस प्रकार हैः 'ॐ ह्रीं कालीं भ्रां ॐ ह्रीं काली भ्रीं ॐ ह्रीं कालीं भ्रूं ॐ ह्रीं कालीं भ्रः' यह चतुरक्षर मन्त्र है।

इसका विधान :

इस मन्त्र को बालों की माला से छः मास तक स्मरण करने दैत्य प्रसन्न होते हैं। इक्कीस बार अर्द्धरात्रि में स्मरण करने से साक्षात् स्वप्नदर्शन होता है।

तीसरी, करालीनामा देवी ने नित्यानन्द सखी से युक्त चतुरक्षर जो मन्त्ररूप धारण किया है वह मन्त्र इस प्रकार हैः 'ॐ ह्रीं करालीं ड्रां ॐ ह्रीं करालीं ड्रीं ॐ ह्रीं करालीं ड्रूं ॐ ह्रीं करालीं ड्रः' यह चतुरक्षर मन्त्र है।

इसका विधान :

इस मन्त्र को मूँगे की माला से इक्कीस हजार तीन रात्रि दिवस पद्मासन में बैठकर स्मरण करने और निश्चल ध्यान रखने से करालीनामा देवी सरस्वती प्रचण्ड वाग्वादिनी रूप धारण कर मुख में प्रवेश करती हैं।

इति चतुर्थ श्लोकविधान।।४।।

चञ्चत्काञ्चीकलापे स्तनतटविलसत्तारहारावलीके प्रोत्फुल्लोत्पारिजातद्रुम कुसुम–महामञ्जरीपूज्यपादे। ह्रां ह्रीं क्लीं क्लीं समेते भुवनवशङ्करि क्षोभिणि द्राविणि त्वं आं क्रों ऐं (ॐ) पद्महस्ते कुरुकुरुघटने रक्ष मां देवि पद्मे।।५।।

चञ्चत्काञ्ची कलापे, स्तन तट शोभित रजतमाला धारिणि, विकसित पारिजात वृक्ष पुष्पा महामञ्जरी पूजित चरणे, ह्रां ह्रीं क्लीं क्लीं सहिते, भुवनवशकारिणि, क्षोभिणि, द्राविणि, आं क्रों ऐं ॐ स्वरूपे पद्महस्ते। कुरु कुरु घटने, पद्मे देवि ! तू मेरी रक्षा कर।

'चञ्चत्काञ्ची' इस पाँचवे श्लोक का जप करने से वशीकरण होता है। इस श्लोक का मन्त्रोद्धार इस प्रकार है। मन्त्रः 'ॐ ह्रीं आं द्रां–ॐ ह्रीं क्रों द्रीं– ॐ ह्रीं ऐं क्लीं– ॐ ह्रीं ॐ ब्लीं' इति बीजमन्त्रः।

इति पञ्चम श्लोकविधान।।५।।

लीलाव्यालोलनीलोत्पलदलनयने प्रज्वलद्वाडवाग्नित्रुट्यज्ज्वाला– स्फुलिंगस्फुर–दरुणकरोदग्रवज्राग्रहस्ते। ह्लां ह्लां ह्लूं ह्लः हरन्ताहरहरहहहुंकारभीमैकनादे पद्मे पद्मासनस्थे व्यपनय दुरितं देवदेवेन्द्रवन्द्ये।।६।।

लीला व्यालोल नीलोत्पल दल नेत्रे प्रज्वलित वाडवानल की अग्नि की ज्वालास्फुलिंगागं के समान अरुण लोहित उच्च वज्राग्रहस्ते, ह्लां ह्लां ह्लूं ह्लः हरन्ता हरहरहह हुंकार भीमनादकारिणि, पद्मासनस्थे, देवेन्द्रवन्द्ये, पद्मे ! मेरे दुख को तू दूर कर।

'लीलाव्यालो' इस श्लोक के पाठ से सब अपराध, हत्यादि के पाप दूर होते हैं।

मन्त्रोद्धारः ॐ ह्लां ह्लीं ह्लूं ह्लः हर हर हहः ठः ठः। इस मन्त्र का एकाग्रचित्त हो स्मरण करना चाहिये।

इति षष्ठ श्लोकविधान।।६।।

प्रातर्बालार्करश्मिच्छुरितघनमहासान्द्रसिंदूरधूलीसन्ध्यारागारुणाङ्गि त्रिदशवर–वधूवन्द्य–पादारविन्दे। चञ्चच्चण्डासिधारा हरति रिपुकुलं कुण्डलोद्घृष्टगण्डे स्रां स्रीं स्रूं स्रः स्मरन्ती मदगजगमने रक्ष मां देवि पद्मे।।७।।

प्रातःकालीन सूर्य की रश्मियों के समान शोभित, अत्यन्त सघन सिन्दूरी धूलि के समान संध्यारागवत अरुणाङ्गि, देव स्त्रीगण पूजित चरणे ! तुम्हारी प्रचण्ड खड्गधारा शत्रु का नाश करती है। हे कुण्डलघर्षित गण्डमण्डले, स्रां स्रीं स्रूं स्रः को स्मरण करती हुई मदोन्मत्त गजगामिनि पद्मे देवि ! तू मेरी रक्षा कर।।७।।

"प्रातर्बालार्क" इस श्लोक से ईश्वरी का सदैव ध्यान करें।

मन्त्रोद्धारः ॐ स्रां ॐ स्रीं ॐ स्रूं ॐ स्रः। इस मन्त्र का सन्ध्या समय छः मास स्मरण करके और बिसगच्छ के पुष्प को २१ बार अभिमन्त्रित करके वैरी की शयया पर डालने से वैरी के शरीर में निःसन्देह आघात होगा।

इति सप्तम श्लोकविधान।।७।।

गर्जन्नीरदगर्भनिर्गतडिज्ज्वाला सहस्रस्फुरत्सद्वज्रांकुशपाशपङ्कजकरा भक्त्यामरैरर्चिता। सद्यः पुष्पितपारिजातरुचिरं दिव्यं वपुर्बिभ्रती सा मां पातु सदा प्रसन्नवदना पद्मावती देवता।।८।।

गरजते हुये मेघों के गर्भ से निकलती हुई सहस्रों ज्वालाओं के समान फड़कते वज्र, पाश, अंकुश और कमलयुक्त हाथों वाली, देवताओं द्वारा भक्तिपूर्वक पूजित, तत्काल पुष्पित पारिजात तरु के समान दिव्य शरीर धारण किये हुये, प्रसन्न वदना पद्मावती देवी ! तू सदा मेरी रक्षा कर।।८।।

"गर्जन्नीरद" इस आठवें श्लोक से दुर्भिक्ष में ध्यान करने से मेघमाला प्रकट होकर दर्शन देती हैं, भक्तजनों की रक्षा करती हैं और अमोघ वर्षा करती हैं। पुनः इस श्लोक को उलटा पढ़ने से उसकी शान्ति होती है।

इत्यष्टम श्लोकविधान।।८।।

विस्तीर्णे पद्मपीठे कमलदलनिभासोचिते कामगुप्ते लां तां ग्रीं श्रीं समेते प्रहसितवदने नित्यहस्ते प्रहस्ते। रक्तैरक्तोज्वलाङ्गि प्रतिवहसि सदा वाग्भवे कामराजे हंसारूढे सुनेत्रे भगवति वरदे रक्ष मां देवि पद्मे।।९।।

विस्तीर्ण पद्मदलपीठासीने, कामगुप्ते, लां तां ग्रीं श्रीं इतिचतुराक्षरी विद्यायुक्ते, प्रहसितवदने, नित्यहस्ते प्रहस्ते, रजोगुणयुक्ते, रक्तोज्वलाङ्गि सदा वाग्भवस्वरूपे, कामाराजमन्त्रयुक्ते, हंसारूढे, सुनेत्रे, वरदे भगवति, पद्मावति ! तू मेरी रक्षा कर।

"विस्तीर्णे" से आरम्भ इस नवें श्लोक का पाठ करने से हंसारूठ भवानी का दर्शन होता है। इस मन्त्र को अष्टगन्ध से हल्दी की कलम से ग्रहण की रात्रि में लिख कर मुकुट में रखने से मनोभिलषित इष्टप्राप्ति होती, इसमें सन्देह नहीं है। (मन्त्र यन्त्र देखिये चित्र ४५)

इति नवम श्लोकविधान।।९।।

जिह्वाग्रे नासिकान्ते हृदि मनसि दृशि श्रोतयोर्नाभिपद्मे स्कन्धे कण्ठे ललाटे शिरसि च भुजयोः पृष्ठपार्श्वप्रदेशे। सर्वाङ्गोपाङ्गशुद्धेऽप्यतिशयभुवने दिव्यरूपं स्वरूपं ध्यायामः सर्वकालं प्रणवबलयुतं पार्श्वनाथैकशब्दम्।।१०।।

सर्वाङ्गोपाङ्ग शुद्धे, अतिशयभुवन, दिव्यरूप, स्वरूप प्रणवयुक्त "पार्श्वनाथ" इस एक शब्द का हम सदा ध्यान करते हैं। तू हमारे बिह्वाग्र, नासिकान्त, हृदय, मन, दृष्टि, श्रोत्र, नाभिकमल, स्कन्ध, कण्ठ, ललाट, शिर, भुजा, पृष्ठ तथा पार्श्वदेश की रक्षा कर।

"जिह्वाग्रे" से आरम्भ इस दसवें श्लोक का नित्य ध्यान करने से ॐकार शब्द निराकाररूप निरञ्जज पद प्रदान करता है। इस मन्त्र से झाड़ने से सभी दोष मिट जाते हैं। इस मन्त्र से अपनी रक्षा करना चाहे तो मन्त्र को पढ़ कर शिखा गाँठ लगायें। सदैव पाठ करने से यह मन्त्र शुभ गति प्रदान करता है।

इति दशम् श्लोकविधान।।१०।।

खड्गैः कोदण्डकाण्डैर्मुशलहलकर्णैर्वह्निनाराचचक्रैः शम्पाशल्य त्रिशूलैर्वरपन- सफलैर्मुद्‌गरैर्मुष्टिदण्डैः। पाशैः पाषाणवृक्षैर्वरगिरिसहितैरिष्टशस्त्रैरमात्यैर्दुष्टानां दारयन्ती वरभुजललिते रक्ष मां देवि पद्मे।।११।।

हे वर भुजललिते पद्मावति ! खड्ग, धनुष्, मुशल, हल, अंकुश, बह्नि, नाराच, चक्र, विद्युत, बरछी, त्रिशूल, गोफिया, मुद्‌गर, मुष्टि, दण्ड पाश, पाषाण, वृक्ष, गिरि सहित इष्ट शस्त्रों से अमात्यसहित दुष्टों का दलन करती हुई तू मेरी रक्षा कर।

"खड्गैः" इस ग्यारहवें श्लोक के पाठ से अनन्त भुजधारी ईश्वरी भक्तों के शत्रुओं का नाश करती है।

इत्येकादश श्लोकविधान।।११।।

ब्रह्माणी कालरात्री भगवति वरदे चण्डि चामुण्डि नित्ये मातर्गन्धारि गौरी धृतिमति विजये कीर्तिह्रीस्तुत्यपादे। संग्रामे शत्रुमध्ये जयज्वलनजले वेष्टितेऽन्यैः सुरास्त्रैः क्षां क्षी क्षूं क्षः क्षणार्द्धे क्षतरिपुनिवहे रक्ष मां देवि पद्मे।।१२।।

हे भगवति, हे वरदे, हे चण्डि, हे चामुण्डे, हे नित्ये, हे गान्धारि, हे धृतिमति, हे विजये, कीर्ति और ह्रीं द्वारा पूजित चरणे, हे मातः ! तुम ब्रह्माणी, कालरात्री तथा गौरी हो। तुम संग्राम तथा शत्रु के मध्य में जय देनेवाली हो। अग्नि में जल देनेवाली हो। अन्य देवों के अस्त्रों से युक्त हो। क्षां क्षीं क्षूं क्षः इति चतुरक्षरी मन्त्रस्वरूप हो। तुम क्षणार्द्ध में ही शत्रुओं के दल को विनष्ट करने वाली हो। हे पद्मावती ! तुम हमारी रक्षा करो।

"ब्रह्माणी" से आरम्भ बारहवें श्लोक के प्राठ से अनन्त उपसर्गों से रक्षा होती है। मन्त्रोद्धारः ॐ क्षां ॐ क्षीं ॐ क्षूं ॐ क्षः स्वाहा। इस मन्त्र को पढ़ कर वैरियों के समूह में जाने से वे सभी मित्रवत् हो जाते हैं।

इति द्वादश श्लोकविधान।।१२।।

भूविश्वेकणचन्द्रबिम्बपृथिवीयुग्मैकसंख्याक्रमाच्चन्द्राम्भोनिधि वाणरूप- वसुदिग्दि- क्‌खेचरेशादिषु। ऐश्वर्य रिपुमारिविश्वभयहृत्क्षोभन्तरा या विषा लक्ष्मीलक्षणभारती गुरुमुखान्मन्त्रनिमान् देवते।।१३।।

हे लक्ष्मि, हे शुभलक्षणेयुक्ते, हे सरस्वति, मन्त्रयेक्ते हे सरस्वति, मंत्रयुक्ते देवि ! तू गुरुमुख से इन मन्त्रों को देवता विषयक प्रयोग में प्रकाशन कर।

"भूविश्वे" से आरम्भ इस तेरहवें श्लोक के पाठ से साक्षात् देवी का दर्शन होता है। मन्त्रोद्धार (देखियें चतुर्मुख यन्त्र चित्र ४६)। इस चतुर्मुख यन्त्र को कटि में बांधने से भगन्दर, प्लीहा, गोला, कठोदर, सोफोदर, जलोदर, वायुशूल, सर्वशूल, पक्षाघात, चतुरशीति वातरोग ये सब दूर होते हैं। इस श्लोक द्वारा नीम की छाल से झाड़ देने से उक्त सभी दोष नष्ट हो जाते है और जीवन में सुख प्राप्त होता है। अथवा चतुर्मुख यन्त्र को गूगल के रस से भोजपत्र पर अथवा जलभांगरे के रस से शिला या पीपल के पत्र पर लिख कर बाँधने और श्लोक से ही झाड़ने से सर्पादि विष दूर होते हैं। इसमें अन्यथा नहीं होता।

यदि पद्मावती स्थापन यन्त्र (देखिये चित्र ४७) की दीपमालिका से प्रथम रात्रि को अष्ट–गन्ध से सुवर्ण पर लिख कर उसके ऊपर पद्मावती की स्थापना करें और "ब्रह्माणी कालरात्रि" से आरम्भ बारहवें श्लोक का रातभर जप करें, सोयें नहीं, तदनन्तर दीपमालिका की रात्रि को पूजन करके मन्त्र का जप करें तो आकाशवाणी होती है। इसके बाद इय यन्त्र को भुजा में धारण करने से अनेक कार्य सिद्ध होता हैं। इसमें अन्यथा नहीं होता।

इति त्रयोदश श्लोकविधान।।१३।।

यस्या देवैर्नरेन्द्रैरमरपतिगणैः किन्नरैर्दानवेन्द्रैः सिद्धैर्नागेन्द्रयक्षैर्नरमुकुटतटी–घृष्टपादारविन्दे। सौम्ये सौभाग्यलक्ष्मी दजित कलिमले पद्मकल्याणमाले अम्बे काले समाधिं प्रकटय परमं रक्ष मां देवि पद्मे।।१४।।

देवों, नरेन्द्रों, देवेन्द्रगणों, किन्नरों, दानवेन्द्रों, सिद्धों, नागेन्द्रों, यक्षों और नर मुकुटों से घृष्ट पादारविन्दे, सौम्ये, सौभाग्यलक्ष्मी द्वारा दलित कलिमले, पद्म कल्याणमाले, कालरूपे, अम्बे, पद्मावती देवि ! तू परम समाधि को प्रकाशित कर तथा मेरी रक्षा कर।

"यस्या देवैः" से आरम्भ इस श्लोक के पाठ से शरीर के अनन्त रोगों का नाश होता है।

इति चतुदर्श श्लोकविधान।।१४।।

धूपैश्चन्दनतण्डुलैः शुभमहागन्धैःसुमन्त्रालिकैर्नानावर्णफलैर्विचित्रकुसुमैर्दिव्यै–र्मनोहारिभिः। दीपैर्नैवेद्यवस्त्रैरनुभुवनकरैर्भक्तियुक्तं प्रदाय राज्यं हेतुर्गृहाण भगवति वरदे रक्ष मां देवि पद्मे।।१५।।

धूप, चन्दन, तण्डुल, शुभ महागन्ध, सुमन्त्रालिक, नाना वर्ण के फल, विचित्र कुसुम, दिव्य मनोहारी दीप नैवेद्य तथा वस्त्रों के साथ भक्तियुक्त राज्य प्राप्ति हेतुभूत यह पूजा, हे भगवती, वरदे, हे पद्मावति देवि ! तू स्वीकार कर तथा मेरी रक्षा कर।

"धूपैश्चन्दन" से आरम्भ इस श्लोक का पाठ करके राज्य के लिये माता की सेवा अर्चना करनी चाहिये।

इति पञ्चादश श्लोकविधान।।१५।।

तारां त्वं सुगतागमे भगवती गौरीति शैलागमे वज्रा कौलिकशासने जिनमते पद्मावती विश्रुता। गायत्री श्रुतिशालिनां प्रकृतिरित्युक्तासि सांख्यायने मातर्भारति किं प्रभूतभणितैर्व्याप्तं समस्तं त्वया।।१६।।

हे मातः भारति ! अधिक कहने से क्या ! बौद्ध लोग आपको तारा के नाम से पूजते हैं। सुगत आगम में आप भगवती के नाम से स्मृत हैं। शैवागम में आप गौरी नाम से विश्रुत हैं। कौलिक शासन में आप वज्रा नाम से प्रसिद्ध हैं। जैनमत में आप पद्मावती के नाम से पूजी

जाती हैं। वेद मतानुयायियों में आप गायत्री नाम से पूजी जाती हैं। सांख्यवादियों में आप प्रकृति नाम से विश्रुत हैं। हे मातः ! आप सारे संसार में व्याप्त हैं।

"तारां त्वां" से आरम्भ इस श्लोक के पाठ से सर्वत्र ईश्वरी षड्दर्शनों में व्याप रही है।

इति षोडश श्लोकविधान।।१६।।

संजप्ता करवीररक्तकुसुमैः पुष्पैश्चिरं संचितैः सम्भिर्घृतगुग्गुलौघमधुभिः कुण्डे त्रिकोणे कृते। होमार्थं कृतषोडशांगुलिसमं वह्नौ दशांशं जपेन्मां वाचावद सिंहदेवि सहसा पद्मावती विश्रुता।।१७।।

चिरकाल से संचित करवीर के पुष्पों में घृत, गुगल तथा मधु मिलाकर १६ अंगुल परिमाण वाले त्रिकोण कुण्ड में प्रदीप्त अग्नि में हवन करें। उसका दशांश जप करें। हे सिंहदेवि ! तू पद्मावती नाम से विश्रुत है। तू तत्काल दर्शन देने का वचन दे।

"—सञप्ता" श्लोक के पाठ से देवी साक्षात् दर्शन देती हैं।

इसका विधान :

धूपैश्चन्द" से आरम्भ पन्द्रहवें श्लोक से पूजा करें। रक्तननैल का पुष्प, गूगल, घृत, दश जाति की वसा, इन सबको मिला कर त्रिकोण कुण्ड में 'ॐ भूविश्वेक्षरणर्द्धे' इस मन्त्र के आदि–अन्त में 'ॐ मौं जैं मैं' इन बीजों को लगा कर इस मन्त्र से होम करें। दीपमालिका, होली या ग्रहण से प्रारम्भ करके एकान्त स्थान में ३ दिन जप करने और बलि देने से देवी का दर्शन होता है। बलि देने के समय ध्वति होती है, इसमें सन्देह नहीं है।

इति सप्तदश श्लोकविधान।।१७।।

ह्रींकारे चन्द्रमध्ये पुनरपि वलये षोडशावर्तपूर्णे बाह्ये कण्ठी रवेष्टे कमलदलयुते मूलमन्त्रे प्रयुक्ते। साक्षात्त्रैलोक्यवश्यं पुरुषवशकृतं मन्त्रराजेन राजमेतत्तत्वं स्वरूपं प्रथमपदमिदं पातु मां पार्श्वनाथ।।१८।।

ह्रींकार तत्त्वस्वरूप प्रथम पद में यह मन्त्र कहा गया है। वह श्री पार्श्वनाथ का बोधक है। इस मन्त्र का उद्धार इस प्रकार है। ह्रींकारयुक्त, चन्द्रमायुक्त, कङ्कणाकार, षोडश कोष्टक वाला जिसके ऊपर आठ कमलों की किरणें हैं यह यन्त्रराज त्रैलोक्य वशीकरण और गति मुक्तिदाता है। हे पार्श्वनाथ ! आप मेरी रक्षा करें। (यन्त्र देखिये चित्र ४८)

"ह्रीं कारे" से आरम्भ इस श्लोक के जप से ही 'त्रैलोक्य मोहनी' का ज्ञान होता है।

इत्यष्टादश श्लोकविधान।।१८।।

क्षुद्रोपद्रवरोगशोकहरणा दारिद्र्यविद्राविणी व्यालव्याघ्रहरा फणित्रयधरा देहप्रभाभासुरा। पातालाधिपतिः प्रियप्रणयिनी चिन्तामणिः प्राणिनां श्रीमत्पार्श्वजिनेशशासनसुरी पद्मावती देवता।।१९।।

क्षुद्र उपद्रव रोगशोकहारिणी, दारिद्र्य विनाशिनी, व्याल भयहारिणी, फणित्रयधरा, तेजस्वरूपिणी, पातालाधिपति प्रियप्रणयिनी, प्राणियों की चिन्तामणि श्रीमत्पार्श्वनाथ के शासन की देवता पद्मावती देवी हैं।

"क्षुद्रोपद्रव" से आरम्भ इस श्लोक के जप से दुष्ट उपसर्ग दूर होते हैं। और दारिद्र्य का नाश होता है।

इत्येकोनविंशति श्लोकविधान।।१९।।

भक्तानां देहि सिद्धिं मम सकलमलं देवि दूरीकरु त्वं सर्वेषां धार्मिकाणां सतत नियमितं वांछितं पूरयस्व। संसाराब्धौ निमग्नं प्रगुणगुणयुतं जीवराशिं च पाहि श्रीमज्जैनेन्द्रधर्मं प्रकटय विमलं देवि पद्मावति त्वम्।।२०।।

हे पद्मावति देवि ! तू भक्तों को सिद्धि दे। मेरे समस्त दोषों को दूरकर सभी धार्मिक लोगों के समस्त नियमित वांछितो को पूरा कर। संसार सागर में निमग्न अगणित जीवों की रक्षा कर। श्रीमज्जैनेन्द्र के विमल धर्म को प्रकट कर।

"भक्तानां देहि सिद्धिं" से आरम्भ श्लोक के पाठ से ईश्वरी दर्शन देकर मनोवाञ्छित फल देती है।

इति विंशश्लोकविधान।।२०।।

पाताले कृशताविषं विषधरा घूर्णयन्ति ब्रह्माण्डजाः स्वर्भूमीपतिदेवदानवगणाः सूर्येन्दुज्योतिर्गणाः। कल्पेन्द्राः स्तुतपादपङ्कजनुतामुक्तामणीचुम्बिता सा त्रैलोक्यनुता–मातिस्त्रिभुवनैस्तुल्या स्तुता सर्वदा।।२१।।

हे मातः ! आप ही तीनों भुवनों के बाहर–भीतर सर्वत्र विचरण कर रही हैं। तीनों भुवनों के इन्द्र, धरणेन्द्र चक्रवर्ती आप की ही पूजा करते हैं। पाताल में धरणेन्द्र पद्मावती का रूप धारण कर पाताल से निकले और तदनन्तर सर्प सर्पिणी का रूप धरकर तीनों लोकों को बनाया। स्वर्गलोक में इन्द्र और इन्द्राणी का रूप आपने ही धारण किया । देव, दैत्य, सूर्य, चन्द्रमा को भी आप पूजनीय है। स्वर्गलोक के देवता आपके चरणारविन्द की स्तुति करते है। देवताओं के मुकुटमणियों से आपके चरण कमल चुम्बित हो रहे हैं। हे मातः आप तीनों लोकों में श्रेष्ठ है।

यह मन्त्र रक्षा रूप है। इससे शिखा में गॉठ देने से सर्वत्र रक्षा होती है।

इन्येकविंश श्लोकविधान।।२१।।

दिव्यं स्तोत्रं पवित्रं पटुतरपटुताभक्तिपूर्वं त्रिसन्ध्यं लक्ष्मीसौभाग्यरूपं दलितकलिमलं मङ्गलं मङ्गलानाम्। पूज्यं कल्याणमालां जनयति सततं पार्श्वनाथप्रसादाद्देवि पद्मावती नः प्रहसितवदना या स्तुता दानवेन्द्रैः।।२२।।

इस दिव्य पवित्र स्रोत को पटुतरपटुता तथा भक्तिपूर्वक प्रातः, मध्याह्न तथा सायंकाल पढ़ने से पार्श्वनाथ के प्रसाद से, प्रहसितवदना, दानवेन्द्र बन्दिता, पद्मावती देवी सौभाग्यरूप लक्ष्मी, दलित कलिमल मङ्गलों का भी मङ्गल और पूजनीय कल्याणों की शृंखला को निरन्तर उद्भूत करती हैं।

'दिव्य स्तोत्रं पवित्रं" इस बाइसवें श्लोक के पाठ से अनन्त ऋद्धिवृद्धि, सौभाग्य, पुत्र, कुटुम्ब की वृद्धि तथा सबका रोगनाश होता है।

इति द्वाविंशति श्लोकविधान।।२२।।

मातः पद्मिनि पद्मरागरुचिरैः पद्मप्रसूनानने पद्मे पद्मवनस्थिते परिलसत्पद्माक्षि पद्मालये। पद्ममोहनि पद्मरागरुचिरे पद्मप्रसूनार्चिते पद्मोल्लासिनि पद्मनाभिनिलये पद्मालये पाहि माम्।।२३।।

हे पद्मप्रसूनानने, पद्मे ! पद्मवनस्थिते, परिलसत्पद्माक्षि, पद्मालये, हे पद्ममोहिनि, हे पद्मराग रुचिरे, पद्मप्रसूनार्चिते, पद्मोल्लासिनि, हे पद्मानाभिनिलये, हे हे पद्मालये! आप मेरी रक्षा करें।

"मातः पद्मिनि" इस श्लोक से पद्म द्वारा भवानीं की सेवा करने से ईश्वरी का कमलरूप दर्शन प्राप्त होता है।

इति त्रयोविंश श्लोकविधान।।२३।।

कोपंज्रन्शहंसकुवलयकलितोद्दामलीलाप्रबन्धे ज्रां ज्रीं ज्रूं ज्रः पवित्रे शशिकर–धवले प्रक्षरत्क्षीरगौरे। व्यालव्याबद्धजूटे प्रबलबलमहाकाल कूटं हरन्ती हाहाहुङ्कारनादे द्विकरकमले रक्ष मां देवि पद्मे।।२४।।

हे पद्मे, कोपंज्रंश हंस कुवलय कलितोद्दाम लीलाप्रबन्धे, जां ज्रीं ज़ूं ज्रः चतुरक्षर मन्त्रपवित्रे, शशिधरधवले, प्रक्षरत्क्षीर गौरे, व्यालव्याबद्धजूटे, प्रबलबलमहाकलकूटविषहारिणि। हाहाहुंकारनादे, द्विकरकमले, हे पद्मे तू मेरी रक्षा कर।

यन्त्रोद्धार : तांबा सुवर्ण या पीपल के पत्र पर दूध से प्रतिदिन मन्त्र लिखें, छः मास तक इसे पढ़ें और यन्त्र को नित्य बीस बार लिखें, यदि चूक हो तो घोल का पान कर जाय। छः मास तक इस प्रकार एकान्त में क्रिया करें, इसे गुप्त रखें, दूध चावल का भोजन करें, कुश की शय्या पर शयन कर, ब्रह्मचर्य का पालन करें और चित्त में दृढ़ता रखें। ऐसा करने से यह मन्त्र मनोवांछित फल प्रदान करता है।

इति चतुर्विंशति श्लोकविधान।।२४।।

षट्कोणे चक्रमध्ये प्रणववरयुते वाग्भवे कामराजे हंसारूढे सबिन्दुं विकसितकमले कर्णिकाग्रे निधाय। नित्यं क्लिन्ने मदद्रे द्रवयसि सततं सांकुशे पाशहस्ते ध्यानात्संक्षोभकारी त्रिभुवनवशकृद्रक्ष मां देवि पद्मे।।२५।।

हे मातः, षटकोण चक्रमध्य विराजिते, प्रणववरयुते, वाग्भवे, कामराजे, हे हंसारूढे, विकसित कमल किरण विराजमाने, नित्यस्वरूपे, संसारलिप्ते, द्विभुजधारिणी पाशांकुशधारिणि, नित्ये, क्लिन्ने, मदद्रे, ध्यान करने से संक्षोभकारिणि, त्रिभुवन वशकारिणि, देवि पद्मे! तू मेरी रक्षा कर।

इसका यन्त्र अष्टगन्ध से दीपमालिका की रात को लिख कर भुजा में तथा मस्तक में धारण करने सकल लोकों का वशीकरण होता है। इसमें सन्देह नहीं है।

इति पञ्चविंश श्लोकविधान।।२५।।

आं क्रों ह्रीं पञ्चवर्णैर्लिखितरसदले चक्रमध्ये सह क्लीं क्रौं क्रीं पत्रान्त राले स्वरपरिकलिते वायुना वेष्टिताङ्गी। ह्रीं वेष्टारक्तपुष्पैर्जपितदलमहाक्षोभिणी द्राविणी त्वं त्रैलोक्यं चालयन्ती सपदि जनहिते रक्ष मां देवि पद्मे।।२६।।

आं क्रों ह्रीं पञ्चवर्ण लिखित रसदले, चक्रमध्ये सह क्लीं क्रौं क्रीं पत्रान्तराले, स्वर परिकलिते, वायुवेष्टितागि, ह्रीं वेष्टिते, रक्त पुष्पों से जपित दलमहाक्षोभिणि, द्राविणि ! तू तीनों लोकों को गति प्रदान करने वाली है। हे जनकल्याण कारिणि ! पद्मे तू मेरी रक्षा कर।

पुत्रार्थी लभते पुत्रं धनार्थी लभते धनम्। आत्मार्थी लभते मोक्षं देवि हे त्वत्प्रसादतः।।२७।।

यन्त्रोद्धार देखिये चित्र ४६। कण्डीरकाला के पुष्पों या अगथिया के पुष्पों से प्रयोग करने और छः मास तक २१,००० मन्त्र का जप करने से देवी का साक्षात्कार होता है। त्रैलोक्य को कम्पायमान करती हुई विकराल रूप धारण कर देवी दर्शन देती है। ऐसा तमोगुण रूप धारण कर देवी भक्तजनों को समृद्धि देती है। मन्त्र यह हैः "ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं पद्मावती लकल चराचर त्रैलोक्य व्यापी ह्रीं क्लीं प्लूं ह्रां ह्रीं ह्रो ह्रौ ह्रौं ह्रों ह्रः ऋद्धि वृद्धि कुरु कुरु स्वाहा।" इस मन्त्र का २१,००० जप करने से सम्पूर्ण सिद्धि प्राप्त होती है।

इति सप्तविंशति श्लोकविधान।।२७।।

इति पद्मावतीस्तोत्रम्।

इति श्रीमन्त्र महार्णवे द्वितीय खण्डे सप्तदशस्तरङ्ग।।१७।।

इति द्वितीय खण्डं समाप्तम्।

यन्त्र चित्रावली

चित्र १ (पृ० ११)

ब्रह्मगायत्रीपूजनयन्त्रम्

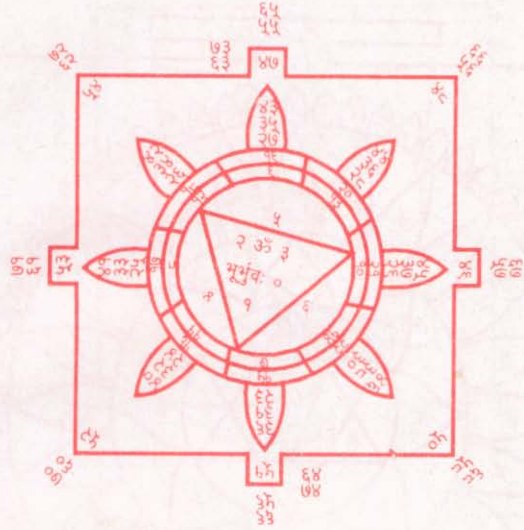

चित्र २ (पृ० ८६)

अथ दुर्गायन्त्रपूजनम्

चित्र ३ (पृ० ७७)

दुर्गानवार्णमन्त्रयन्त्रम् ।

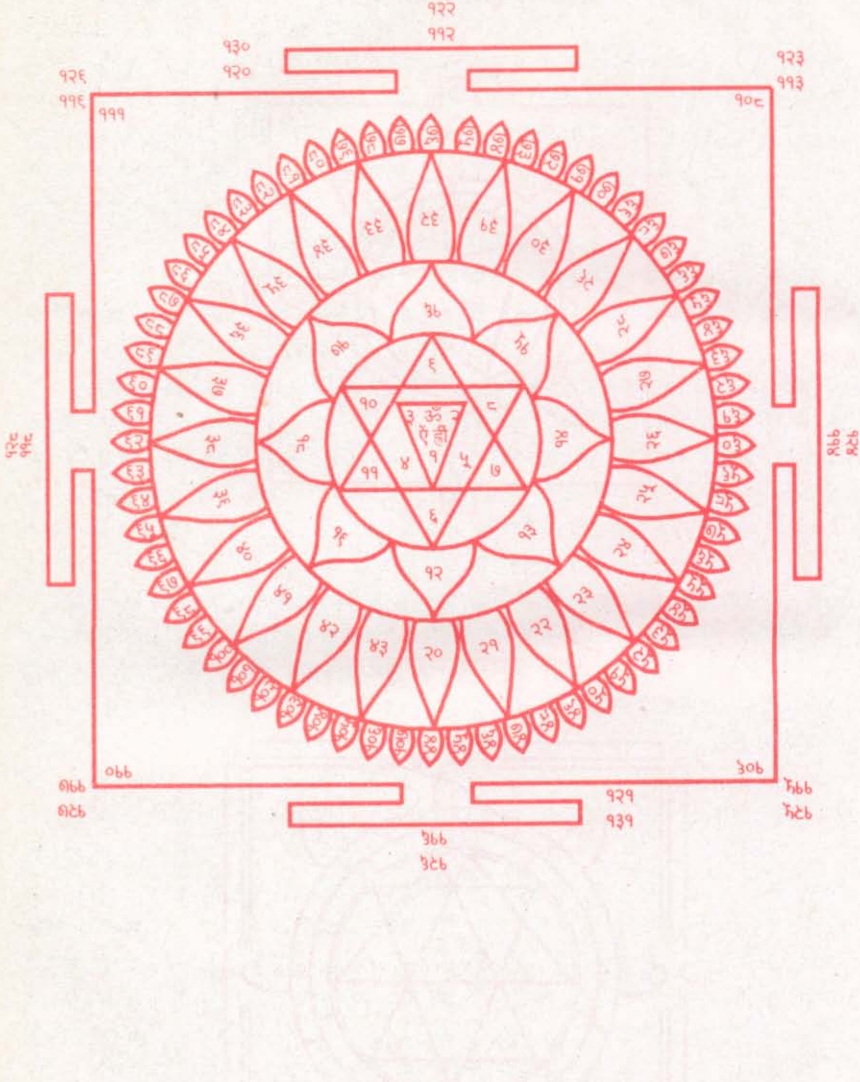

चित्र ४ (पृ० १०८)

शूलिनीदुर्गापूजनयन्त्रम् ।

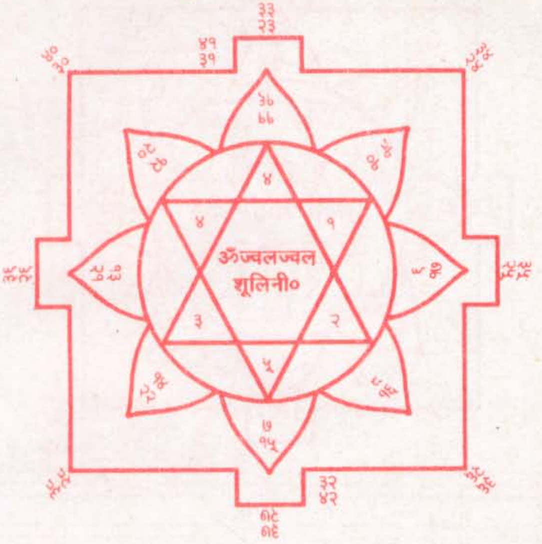

चित्र ५ (पृ० ३४५)

दक्षिणकालीपूजनयन्त्रम् ।

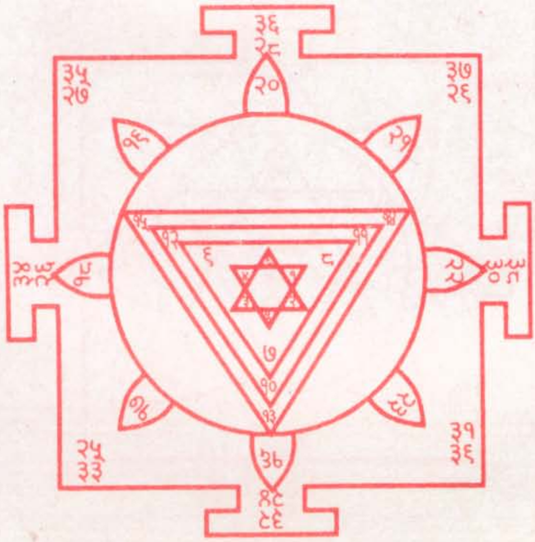

चित्र ६ (पृ० ३५०)

श्मशानकालीपूजनयन्त्रम्।

चित्र ७ (पृ० ३८२)

तारापूजनयन्त्रम्।

चित्र ८ (पृ० ३८६)

ताराधारणयन्त्रम्

चित्र ९ (पृ० ३८९)

महाविद्या (विद्याराज्ञी) पूजनयन्त्रम्।

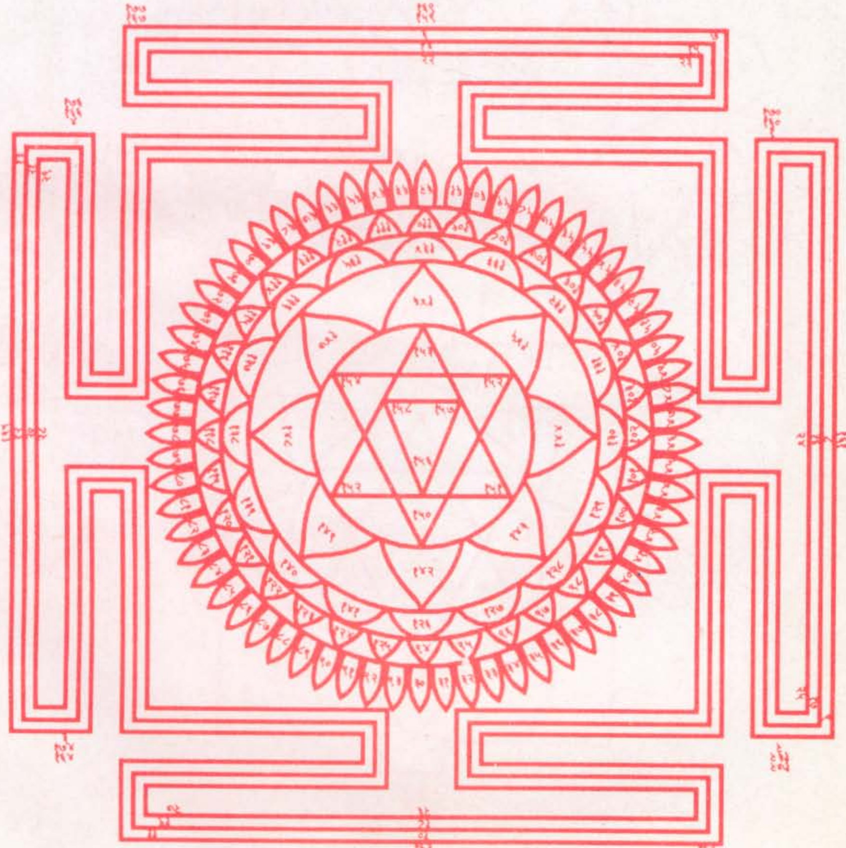

चित्रा १० (पृ० ३९८)

सरस्वतीदशाक्षरमन्त्रपूजनम् ।

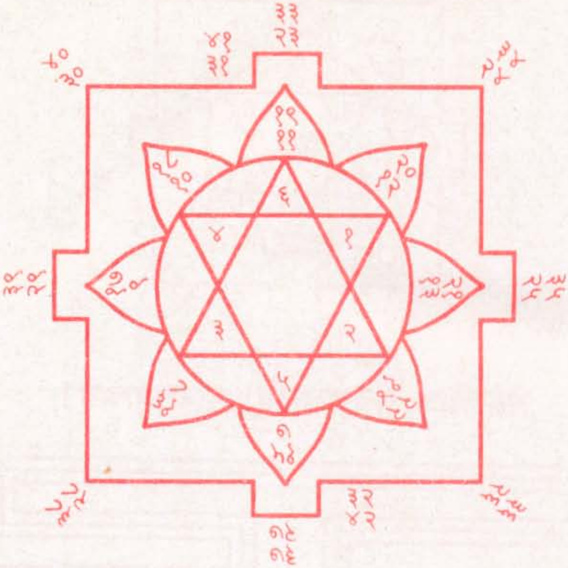

चित्रा ११ (पृ० ४०१)

सरस्वतीद्यक्षरमन्त्रपूजनम् ।

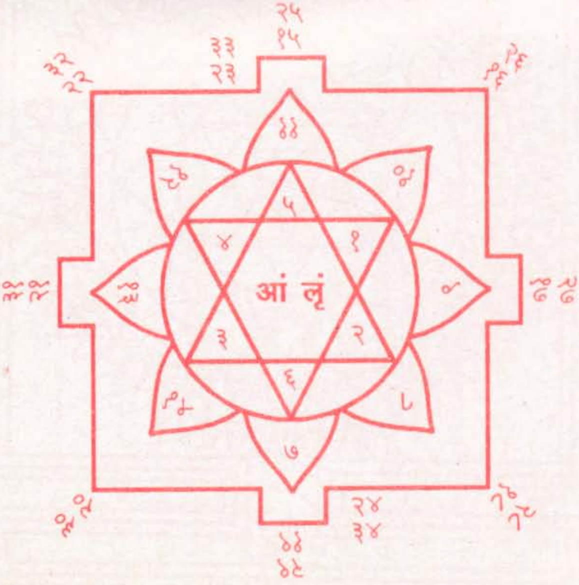

चित्र १२ (पृ० ४०८)

कृष्णदेवी (तारणी) पूजनयन्त्रम्।

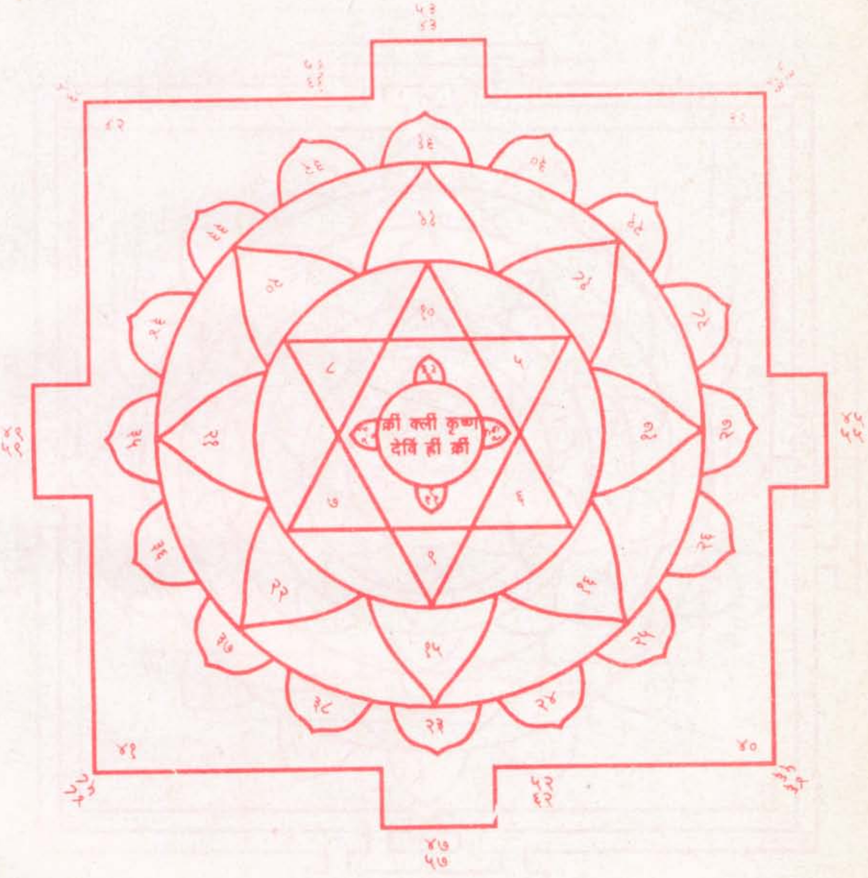

चित्र १३ (पृ० ४३५)

श्रीचक्रंषोडशीपूजनयन्त्रम्।

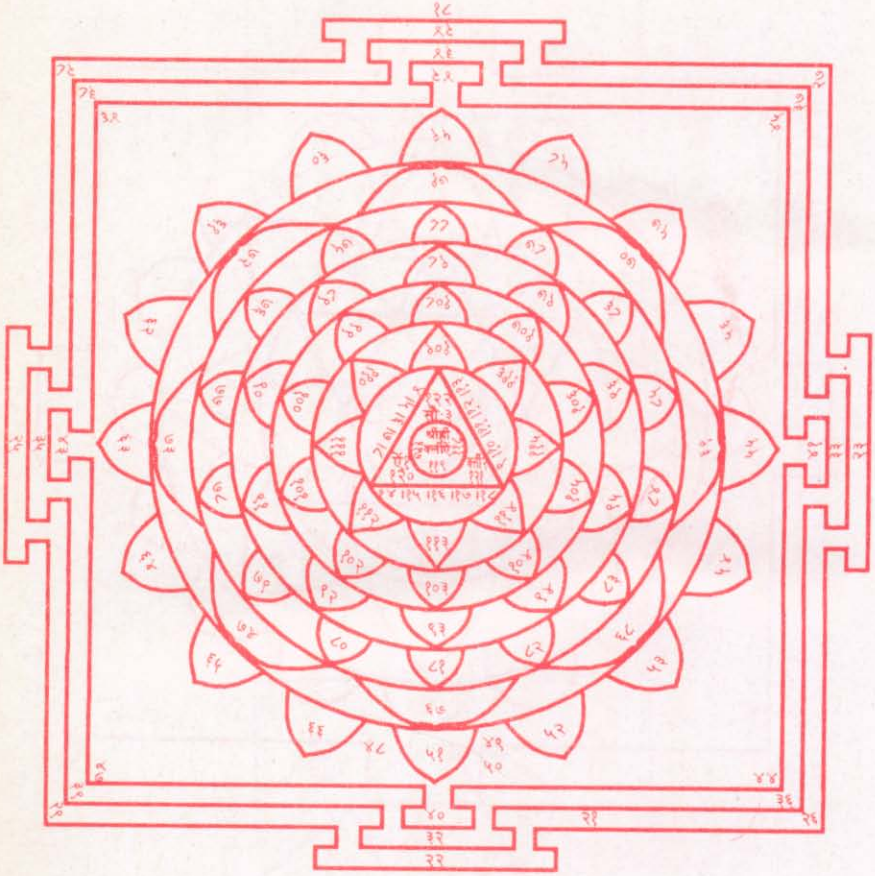

चित्र १४ (पृ० ४४२)

बालात्रिपुरापूजनयन्त्रम् ।

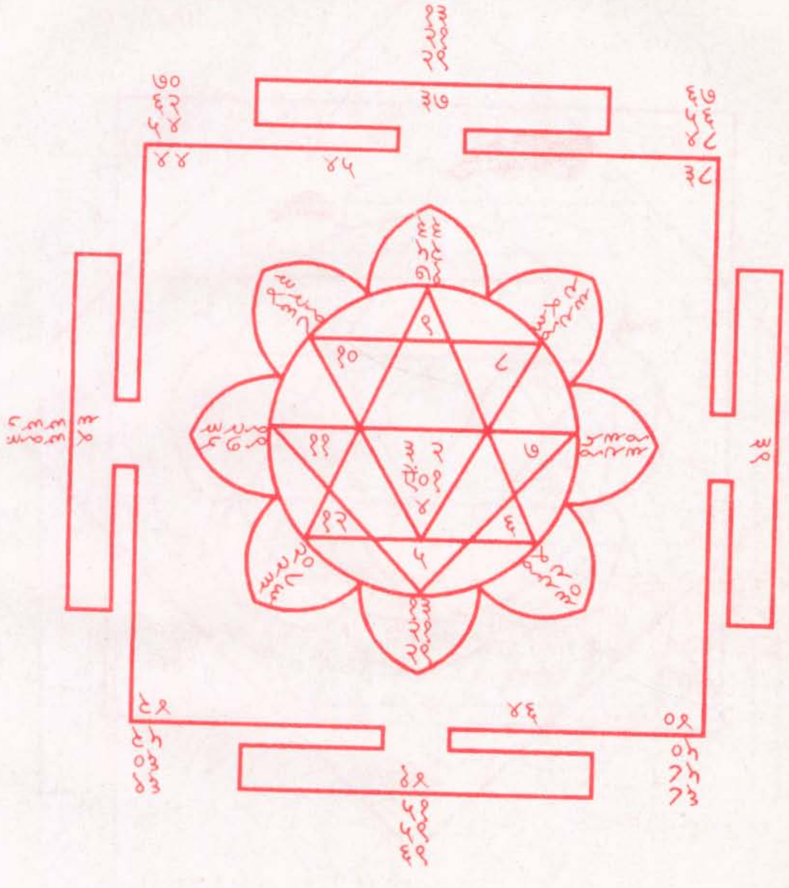

चित्र १५ (पृ० ४४८)

बालाधारणयन्त्रम् ।

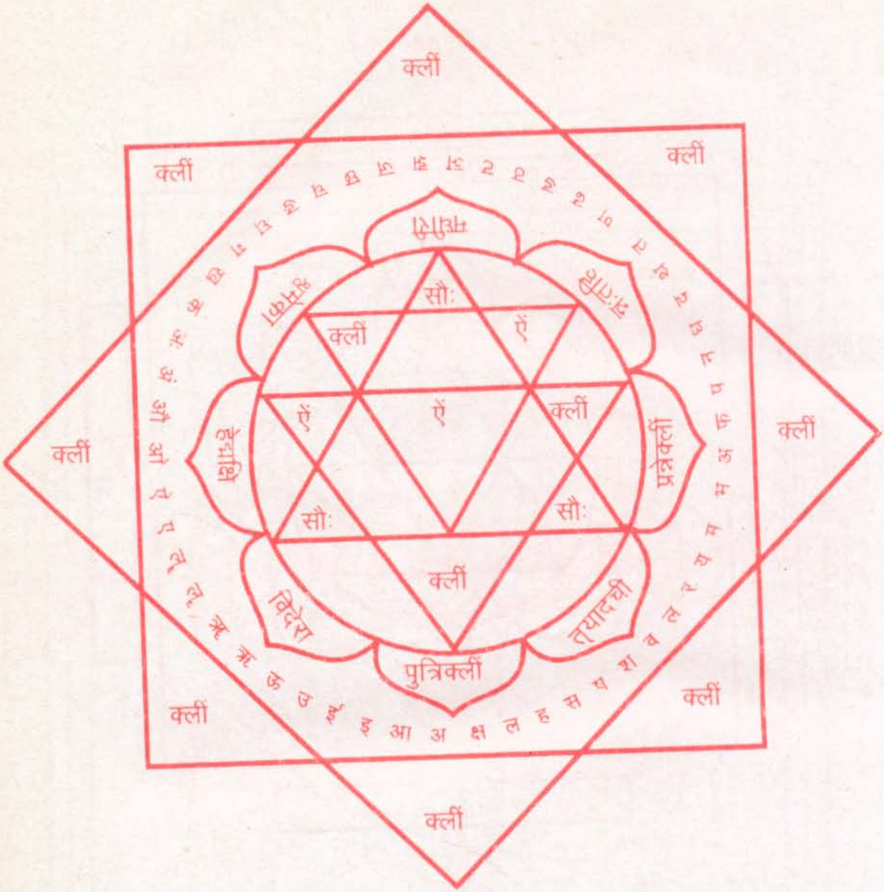

चित्र १६ (पृ० ४६३)

भुवनेश्वरीपूजनयन्त्रम्

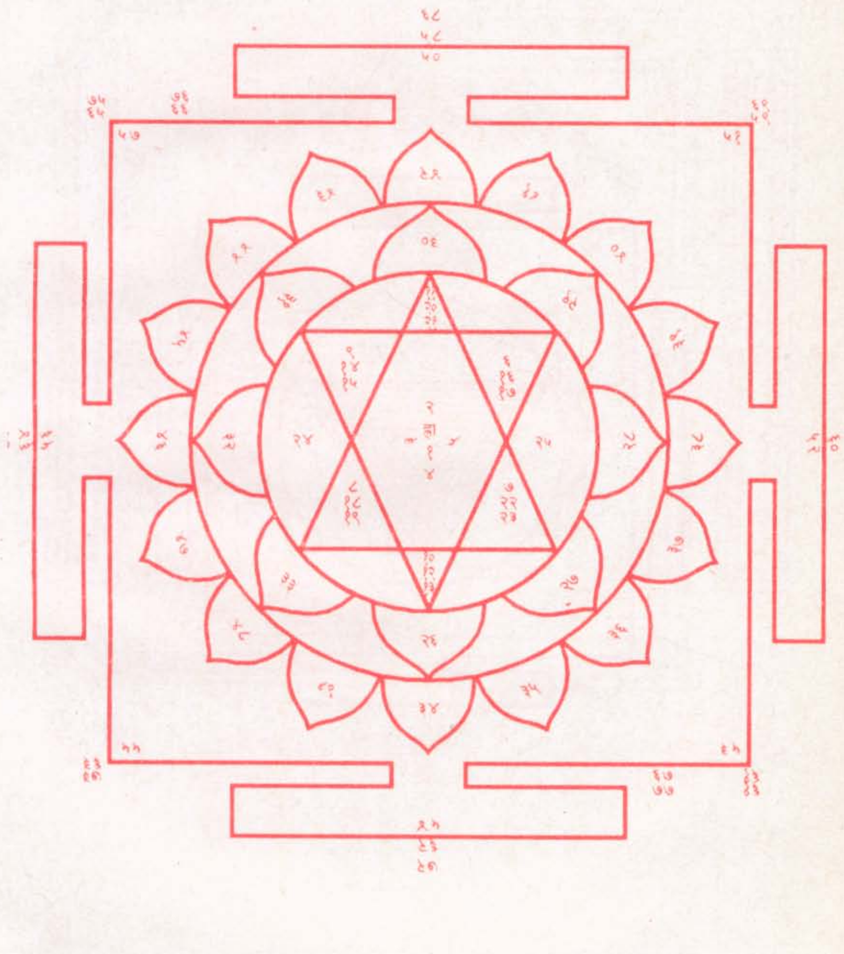

चित्र १७ (पृ० ४८०)
त्रिपुरभैरवी यन्त्र

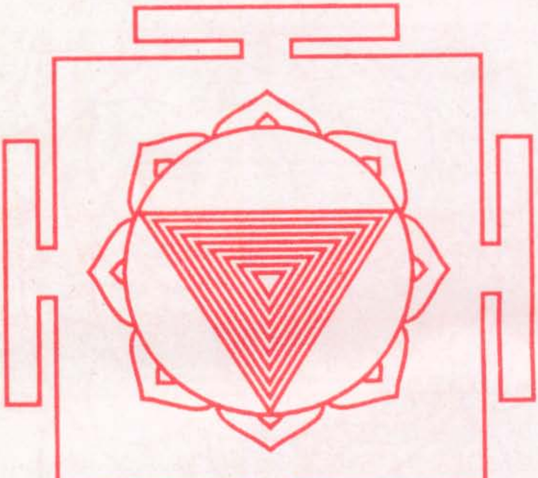

चित्र १८ (पृ० ४९६)

छिन्नमस्तापूजन यन्त्र

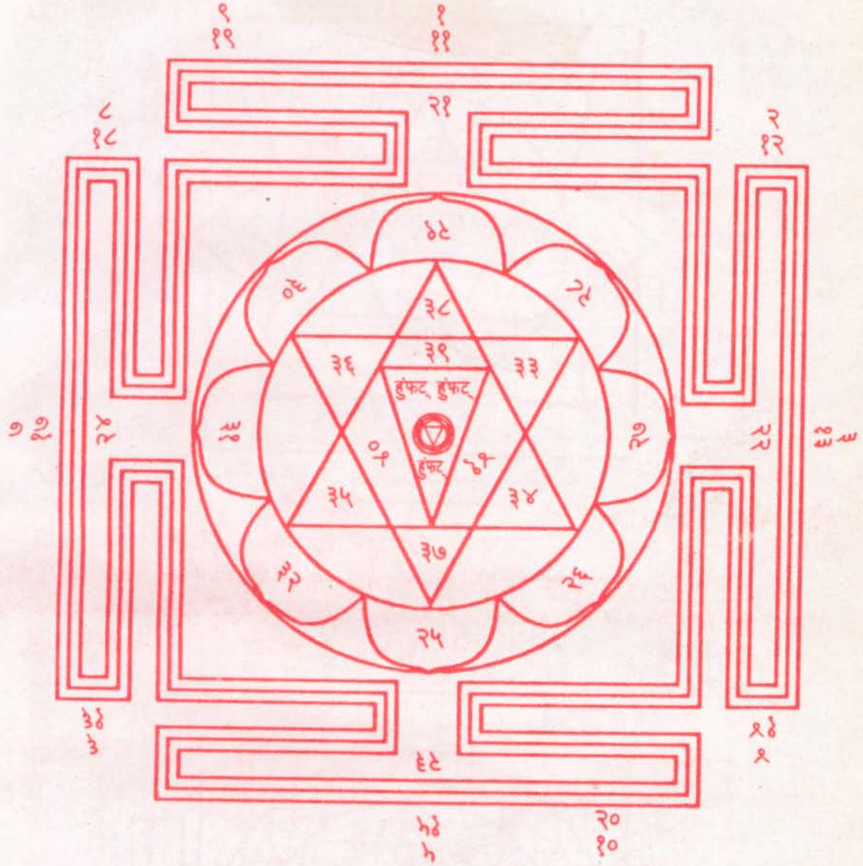

चित्र १९ (पृ० ५१३)

धूमावतीपूजनयन्त्रम् ।

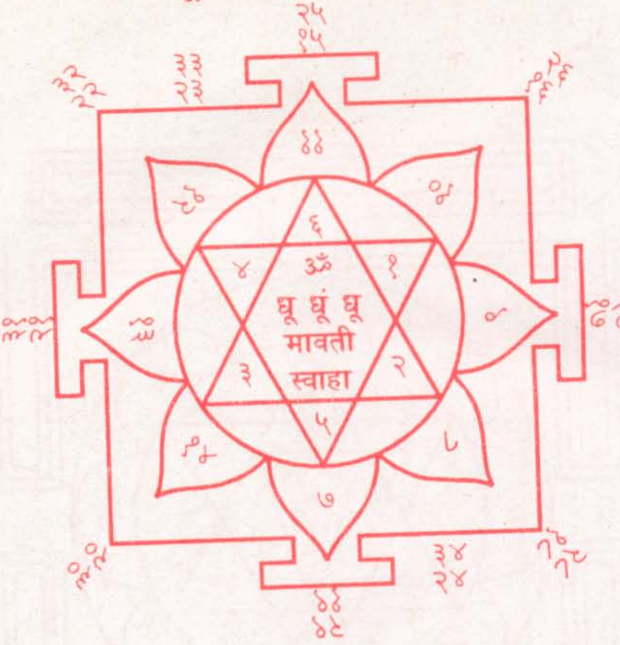

चित्र २० (पृ० ५२६)

बगलामुखीपूजनयन्त्र

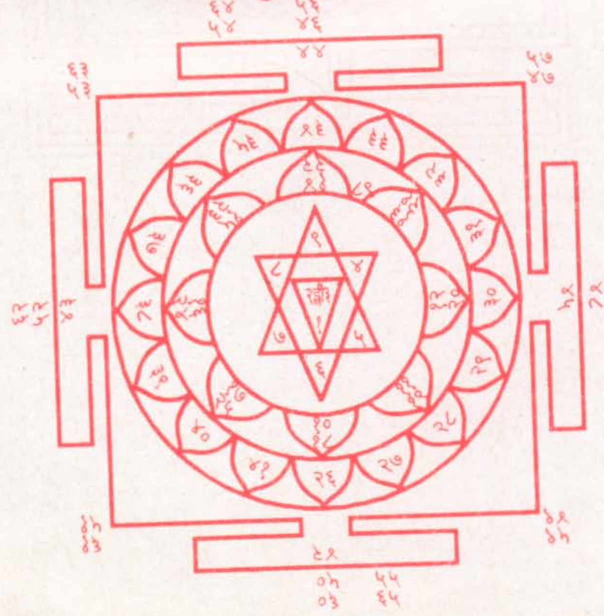

चित्र २२ (पृ० ५४४) **मातङ्गी द्वात्रिंशदक्षर यन्त्र**

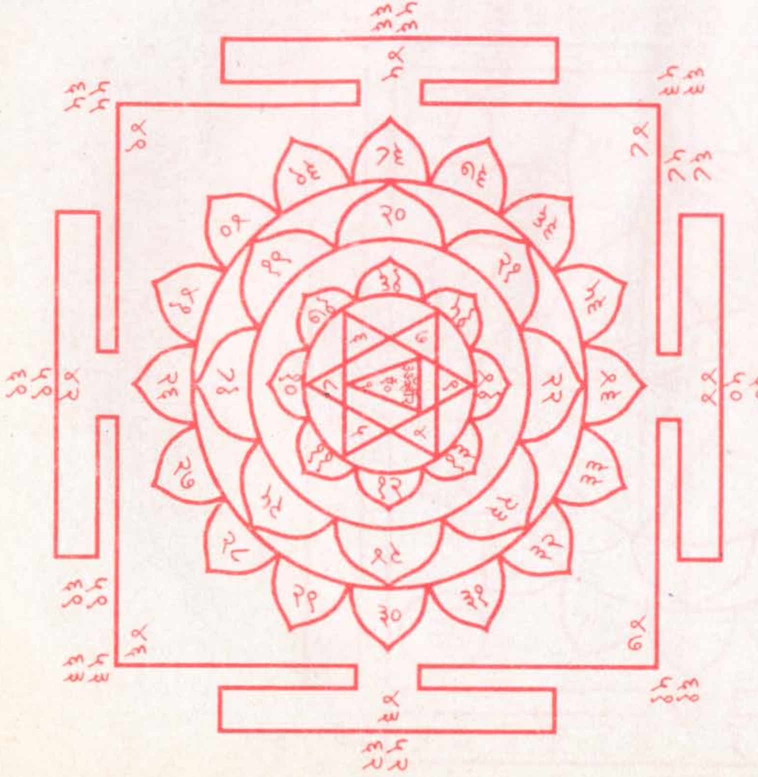

चित्र २१ (पृ० ५३०)

बगलमुखीस्तम्भन यन्त्र

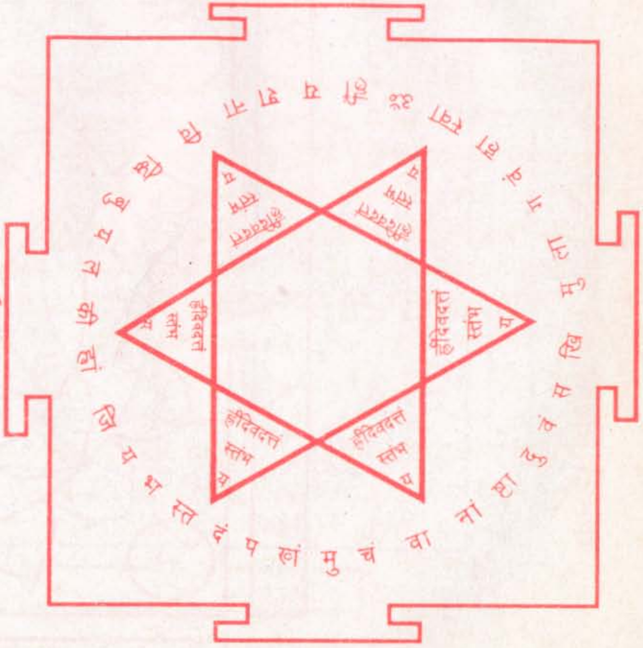

चित्र २३ (पृ० ५४९)

मातङ्गी विंशत्यक्षरी मन्त्र पूजन यन्त्र

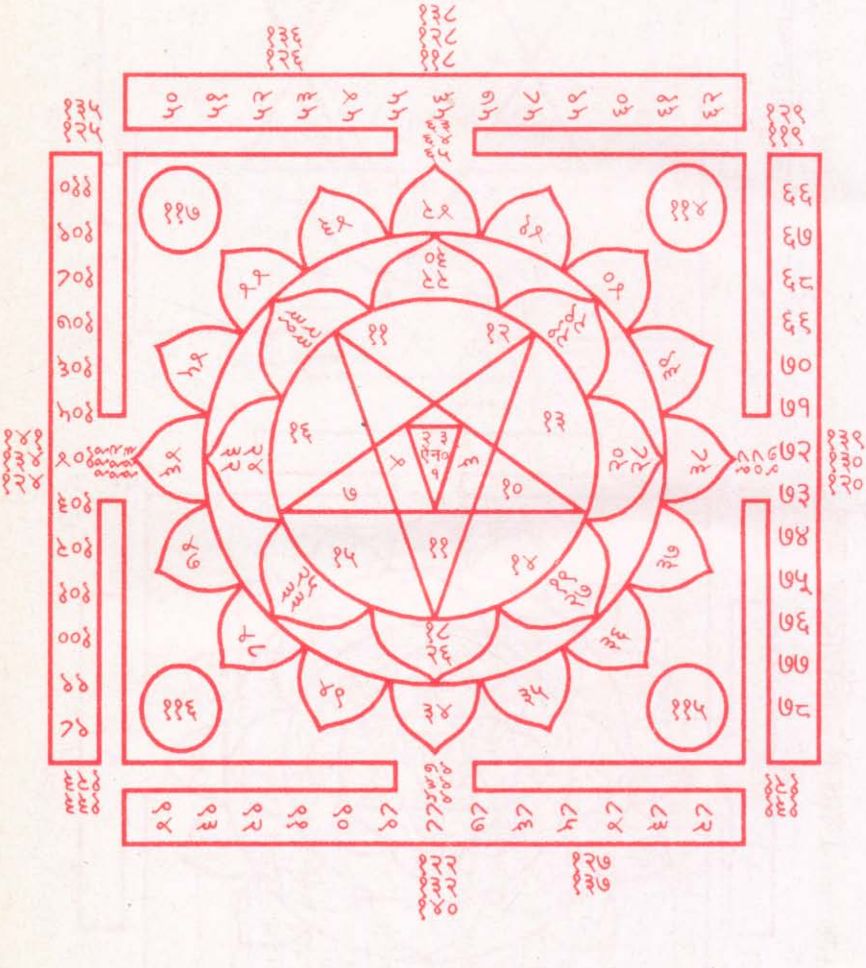

चित्र २४ (पृ० ५५६)

सुमुखीपूजन यन्त्र

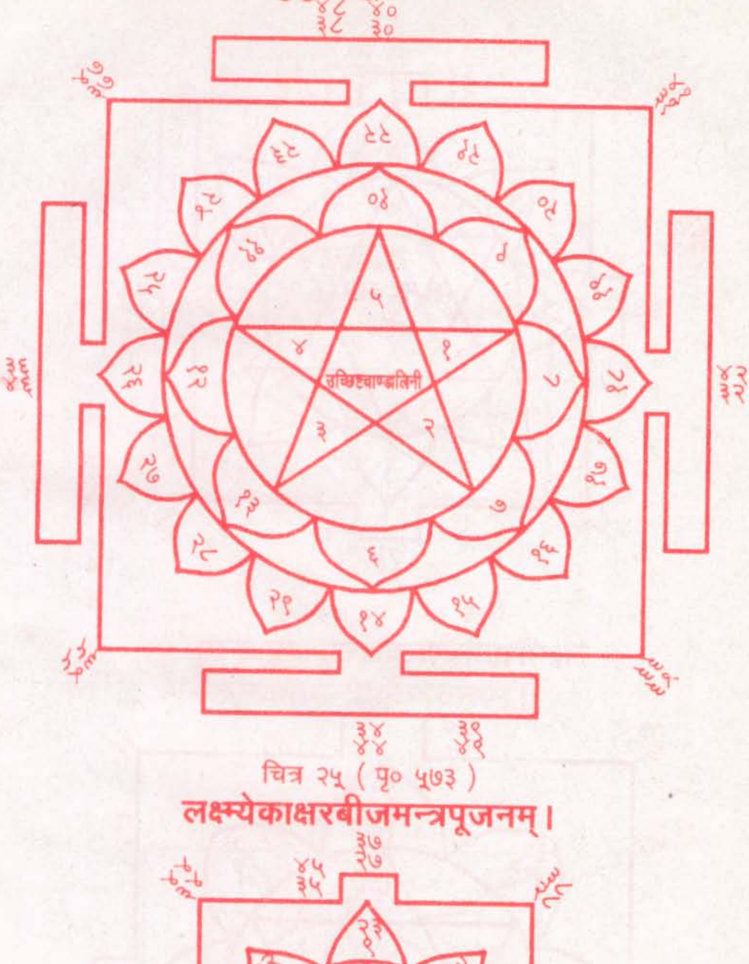

चित्र २५ (पृ० ५७३)

लक्ष्म्येकाक्षरबीजमन्त्रपूजनम् ।

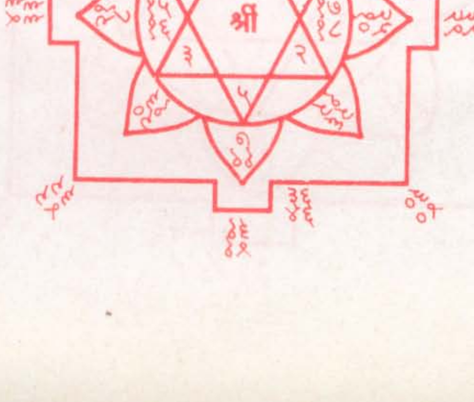

चित्र २६ (पृ० ५७६)

लक्ष्मीदशाक्षरमन्त्रयन्त्रम् ।

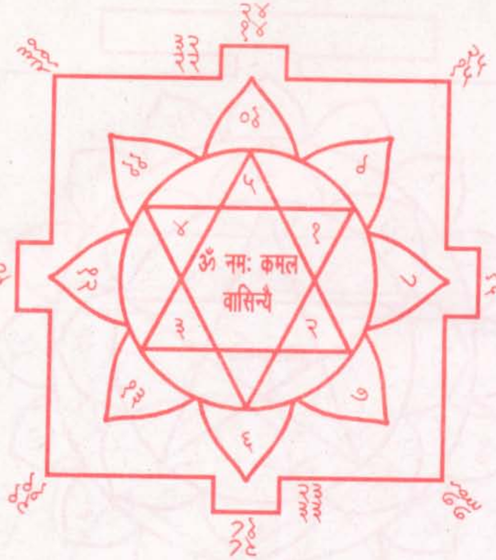

चित्र २७ (पृ० ५७८)

लक्ष्मीसप्तविंशत्यक्षरमन्त्रपूजनम्

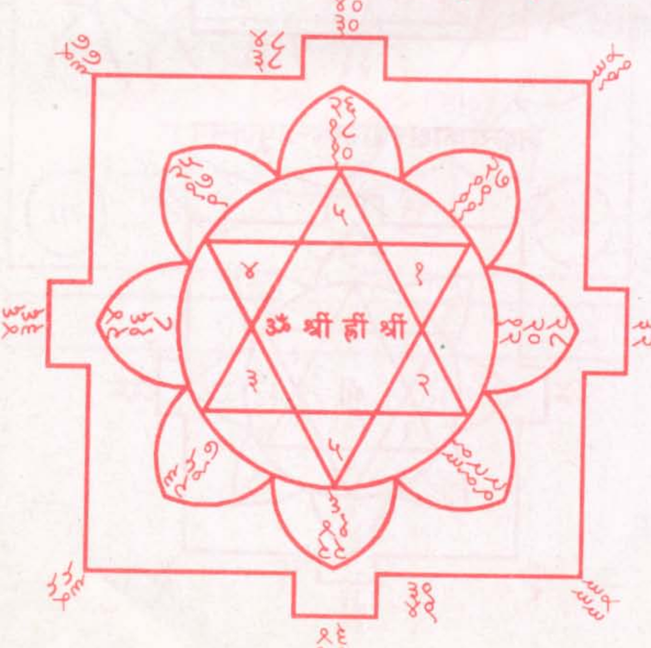

चित्र २८ (पृ० ५८२)

द्वादशाक्षरमहालक्ष्मीमन्त्रयन्त्रम् ।

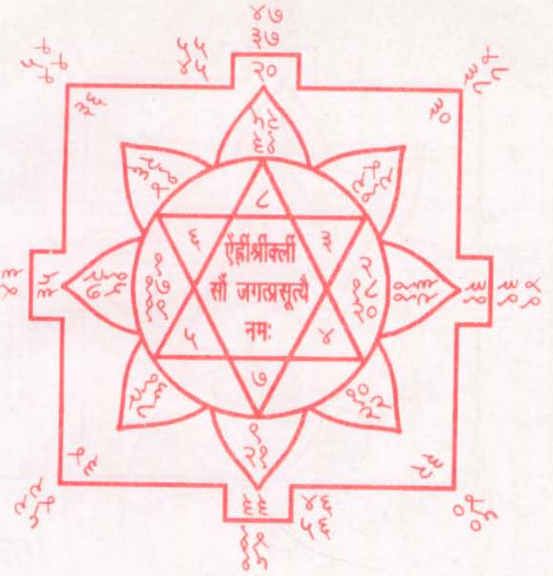

चित्र २९ (पृ० ५९१)

ज्येष्ठालक्ष्मीमन्त्रपूजनयन्त्रम् ।

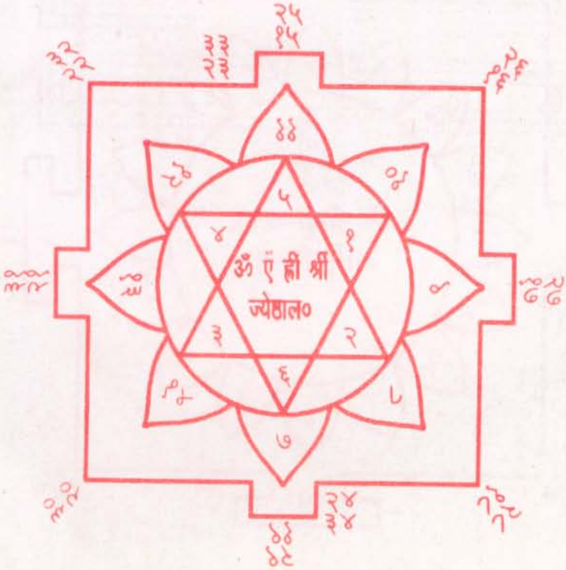

चित्र ३० (पृ० ५९३)

वसुधालक्ष्मीपूजनयंत्रम् ।

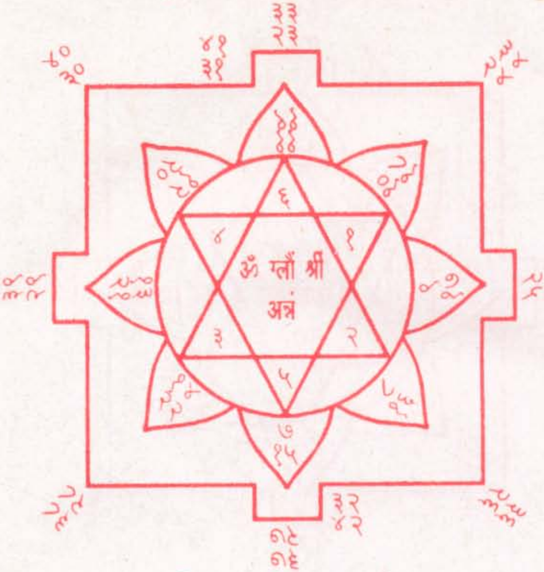

चित्र ३१ (पृ० ६३५)

यमुनापूजनयन्त्रम् ।

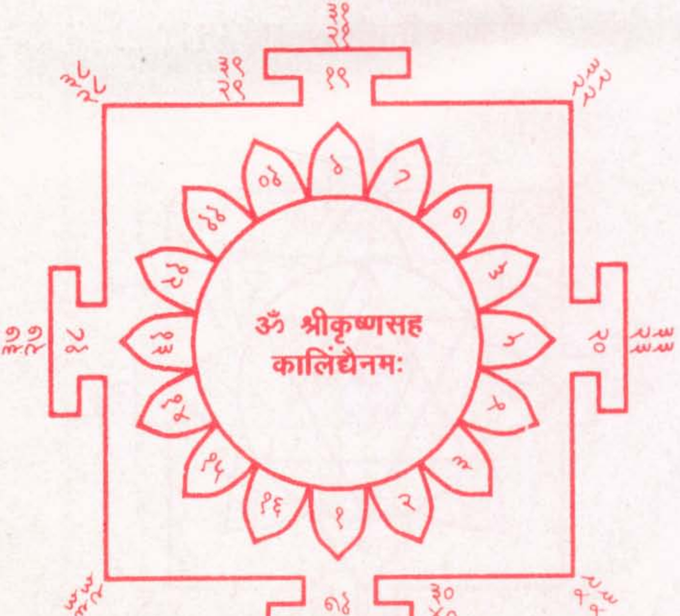

चित्र ३२ (पृ० ६४९)

अथ कालरात्रिपूजनयन्त्रम्।

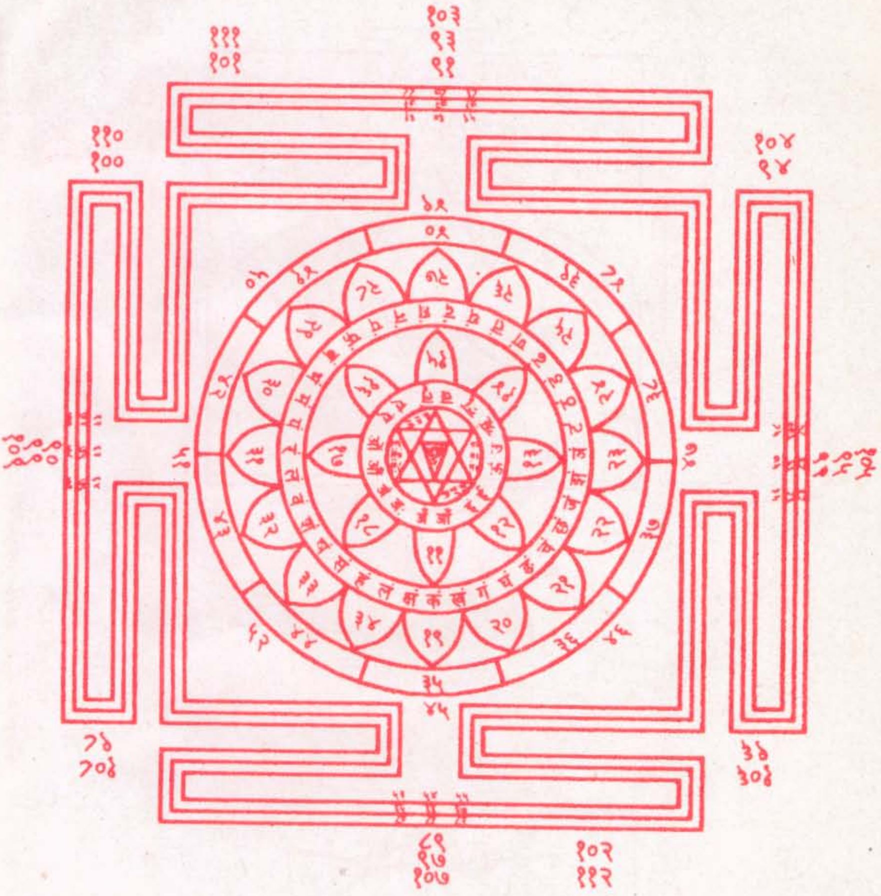

चित्र ३३ (पृ० ६५३)
वशीकरण यन्त्र

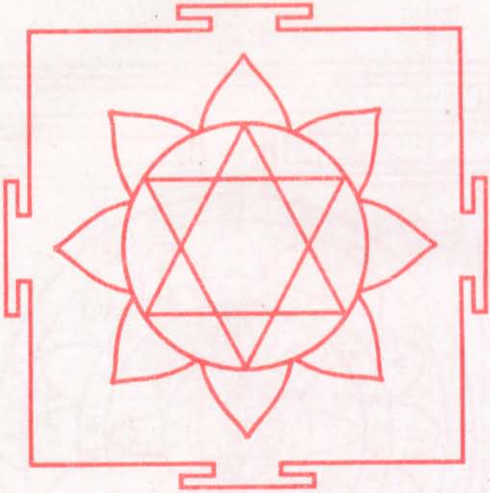

चित्र ३४ (पृ० ६५४)
स्तम्भन यन्त्र

चित्र ३५ (पृ० ६५४)

मोहनकरयन्त्रम्।

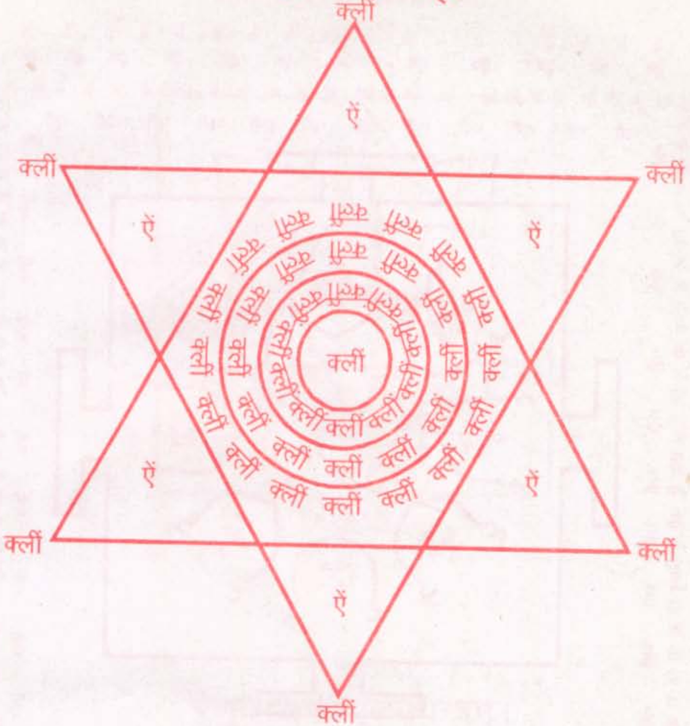

चित्र ३६ (पृ० ६५८)

अथ वर्तालीपूजनयन्त्रम्।

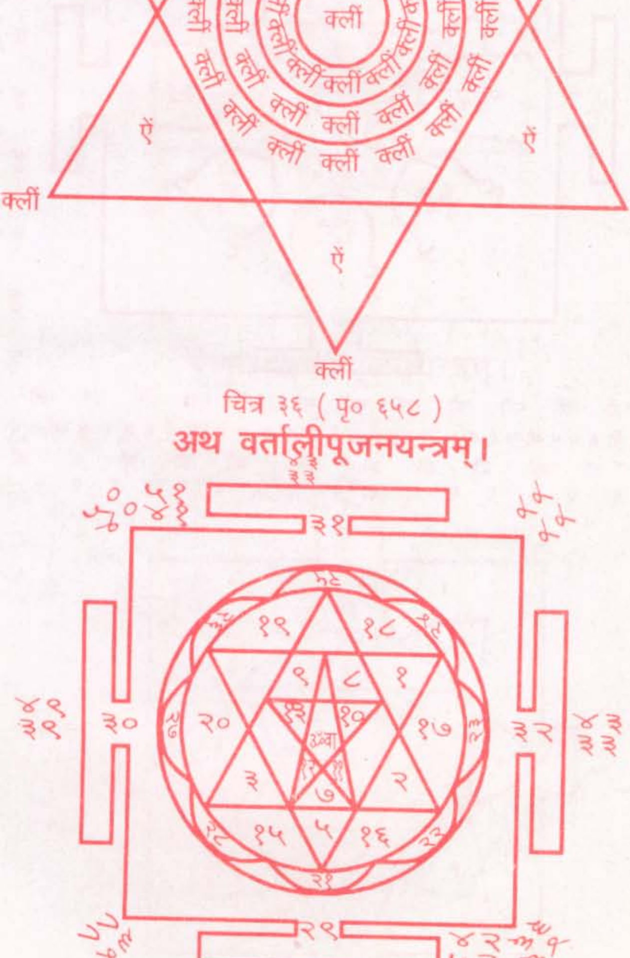

चित्र ३७ (पृ० ६६२)

वार्तालीस्तम्भन यन्त्र

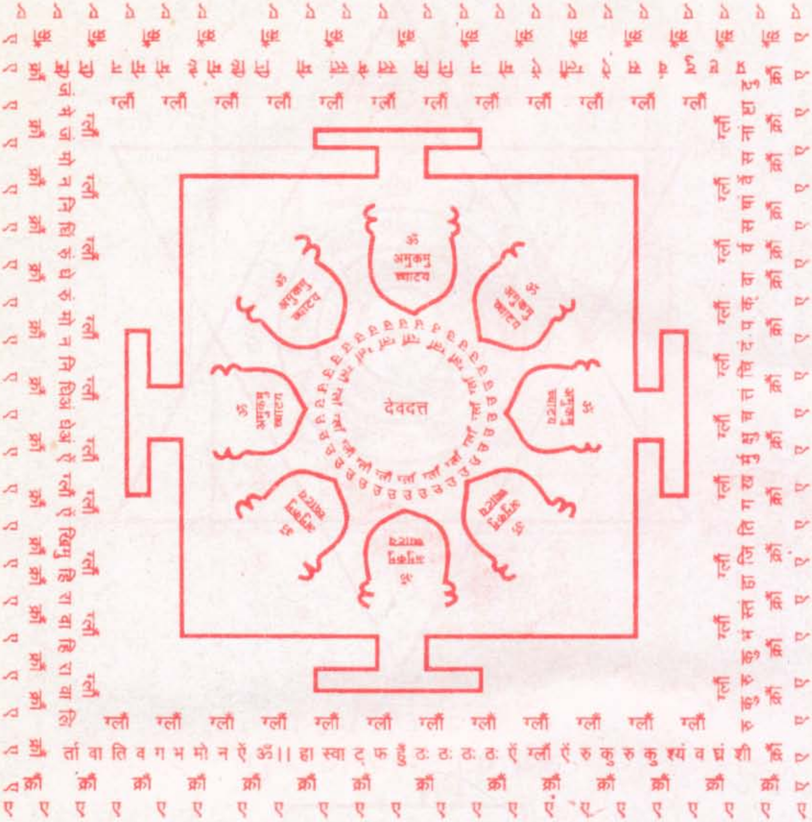

चित्र ३८ (पृ० ६६४)

महिषमर्दिनीपूजनयन्त्रम् ।

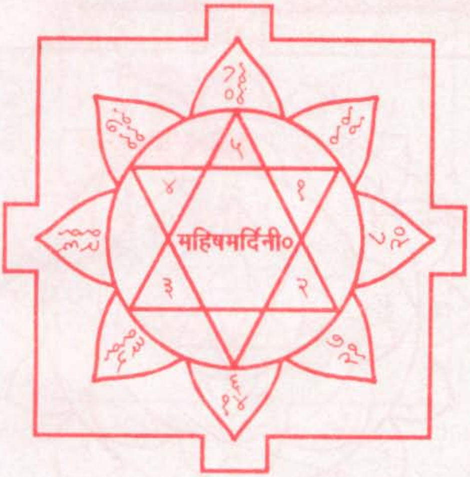

चित्र ३९ (पृ० ६६८)

रेणुकाशबरीपूजनयन्त्रम् ।

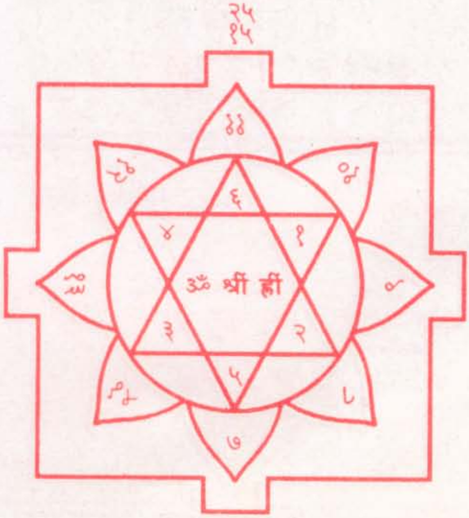

चित्र ४० (पृ० ६७०)

अन्नपूर्णापूजनयन्त्रम्।

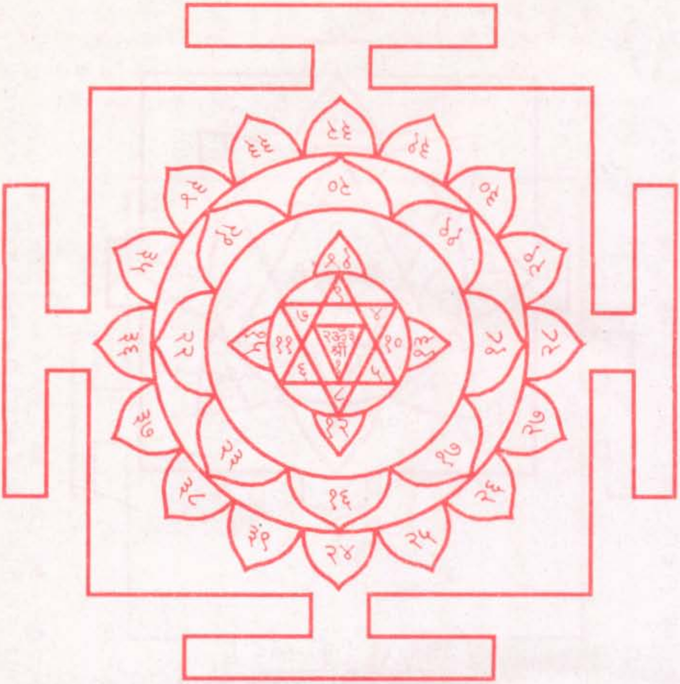

चित्र ४१ (पृ० ६७८)

गंगाऽऽवरणपूजनयन्त्रम्।

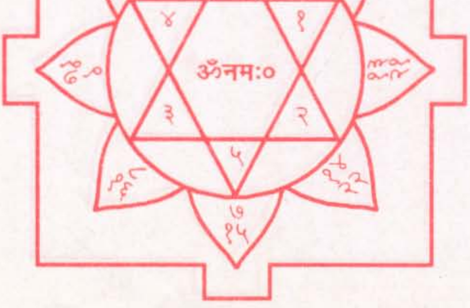

चित्र ४२ (पृ० ६८१)

मणिकर्णिकापूजनयन्त्रम्।

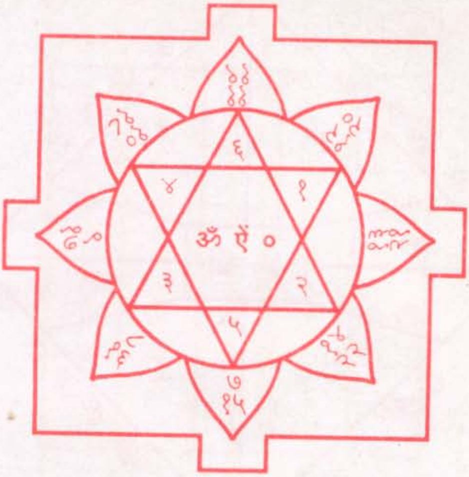

चित्र ४३ (पृ० ६८५)

मच्छायन्त्रम्।

चित्र ४४ (पृ० ६८५)

गीर्वाणच०

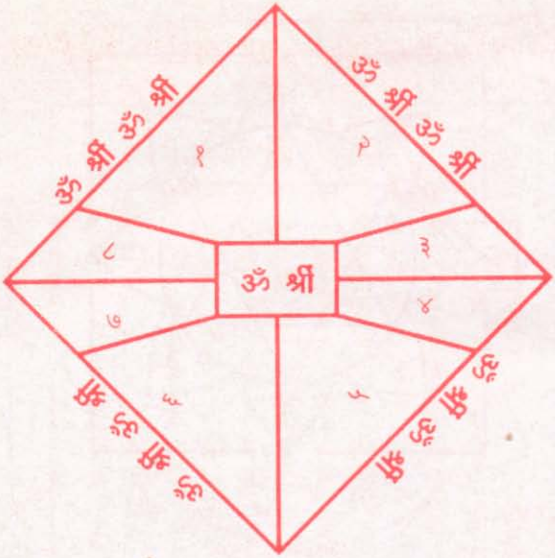

चित्र ४५ (पृ० ६८८)

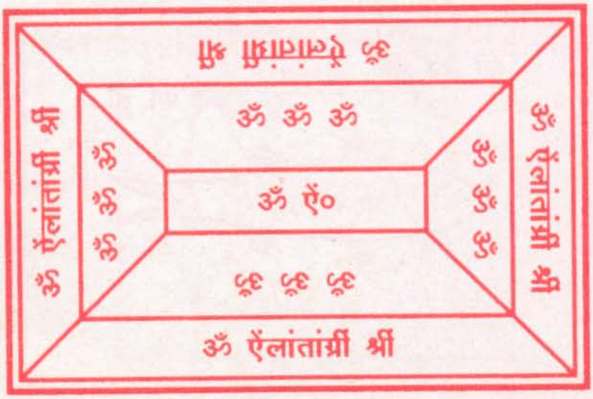

चित्र ४६ (पृ० ६८९)

चतुर्मुखयन्त्रम्।

	ह्रीं		श्रीं	
ॐ	१	५	४	पद्म ॐ
रणे	८	६	५	व ह्रीं
निवा	१०	८	६	नी ह्रीं
दोष	६	१०	९	वर ह्रीं
	सर्व		दो	

चित्र ४७ (पृ० ६८९)

पद्मावतीस्थापनयन्त्रम्।

	रं	रं	रं	रं	रं	रं	रं	रं	
रं	भू	एक	चन्द्र	भू	एक	ब्रिंब	पृथ्वी	एक	रं
रं	ईक्षण	विश्व	युग्म	विश्व	युग्म	एक	युग्म	युग्म	रं
रं	पृथ्वी	बिंब	ईक्षण	ईक्षण	पृथ्वी	पृथ्वी	चन्द्र	विश्व	रं
रं	भू	विश्व	ईक्षण	चन्द्र	बिंब	पृथ्वी	युग्म	एक	रं
रं	एक	युग्म	पृथ्वी	बिंब	चन्द्र	ईक्षण	विश्व	भू	रं
रं	चन्द्र	एक	ईक्षण	पृथ्वी	पृथ्वी	पृथ्वी	ईक्षण	बिंब	रं
रं	ईक्षण	विश्व	युग्म	युग्म	बिंब	एक	युग्म	युग्म	रं
रं	भू	पृथ्वी	बिंब	एक	भू	विश्व	ईक्षण	एक	रं
	रं	रं	रं	रं	रं	रं	रं	रं	

चित्र ४८ (पृ० ६९०)

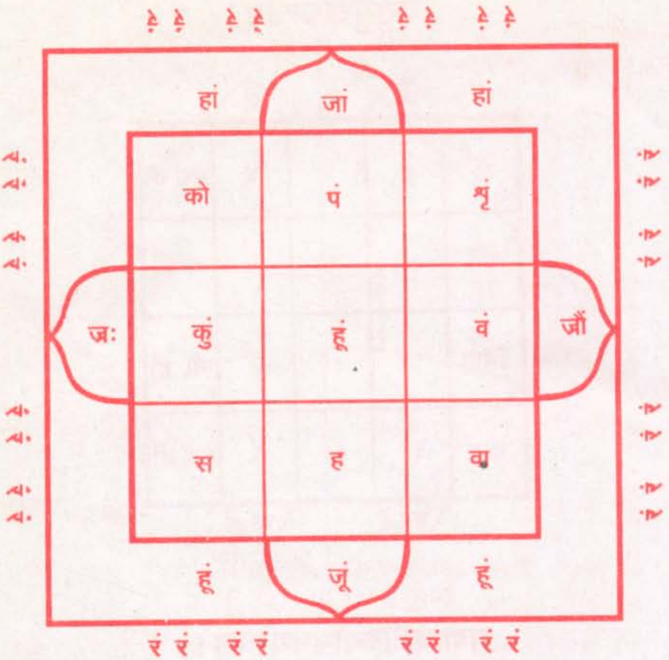

चित्र ४९ (पृ० ६९२)

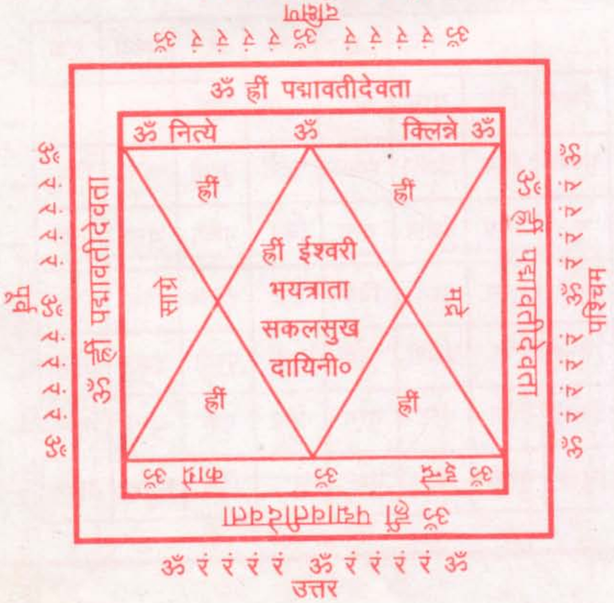

हमारे महत्त्वपूर्ण प्रकाशन

1. मन्त्र महोदधि (मूल एवं हिन्दी अनुवाद) मूल्य : 350/-
2. हिन्दी मन्त्रमहार्णव (मूल एवं हिन्दी अनुवाद)
   मूल्य : देवी खण्ड ४००/, मूल्य : देवता खण्ड ४००/ मूल्य : मिश्र खण्ड 200/-
3. कुलार्णव तन्त्र (मूल एवं अंग्रेजी अनुवाद) मूल्य : 200/-
4. सप्तशतीसर्वस्वम् (नानाविधिसप्तशतीरहस्यसंग्रहः)
   पण्डितसरयू प्रसादेन संगृहीतः मूल्य : 100/-
5. शिवस्वरोदय (मूल एवं अंग्रेजी अनुवाद सहित) मूल्य : 75/-
6. वामकेश्वरीमतम् (मूल एवं अंग्रेजी अनुवाद सहित) मूल्य : 50/-
7. कौलज्ञाननिर्णय (मूल एवं अंग्रेजी अनुवाद सहित) मूल्य : 100/-
8. डामर तंत्र (मूल एवं अंग्रेजी अनुवाद) मूल्य : 50/-
9. डामर तंत्र (मूल एवं हिन्दी अनुवाद) मूल्य : 35/-
10. मन्त्र रामायण (मूल एवं हिन्दी अनुवाद) मूल्य : 30/-
11. कामरत्नतंत्रम् (मूल एवं हिन्दी अनुवाद) मूल्य : 60/-
12. अद्भुत रामायण (मर्हिष वाल्मीकि कृत) मूल्य : 50/-
13. भूत डामर तंत्र (मूल एवं हिन्दी अनुवाद) मूल्य : 40/-

14. शाक्तानन्दतरङ्गिणी (मूल एवं हिन्दी अनुवाद) मूल्य : 100/-

15. गणेशसहस्रनाम स्तोत्रम् मूल्य : 35/-

16. सामुद्रिक शास्त्रम् (मूल एवं भावार्थबोधिनी टीका सहित) मूल्य : 40/-

17. श्यामारहस्यम् (मूल एवं हिन्दी अनुवाद) प्रेस में

18 Mantra Mahodhadhi (Text in Nagari Script & Text in Roman with English Translation) by : Ram Kumar Rai
Price : Vol. I Rs. 400/-, Price : Vol. II Rs. 400/-

19 Encyclopedia of Yoga (Ram Kumar Rai) Rs. : 200/-

20 Encyclopedia of Indian Erotices (Ram Kumar Rai) Rs. : 150/-

21 Dictionaries of TANTRASASTRA (Ram Kumar Rai) Rs. : 100/-

22 Rudratas Sringaratilaka and Ruyyaka's Sahridayalila Rs. : 40/-

हिन्दी एवं संस्कृत में प्रथम बार प्रकाशित पुस्तकें

योनितन्त्र

(मूल एवं हिन्दी अनुवाद सहित)

मूल्य : ७५.००

श्रीकृष्णानन्द आगमवागीश कृत

हिन्दी बृहत तन्त्रसार

(मूल एवं हिन्दी अनुवाद सहित)

अतिशीघ्र

आगमतत्त्व विलास

(मूलमात्र)

अतिशीघ्र